Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1361
12
19.7.93

1362
17.8.94

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च (प्रथम) 1990 रु. 6.00

सरिता

होली विशेषांक

1990
MAR--APR

In. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

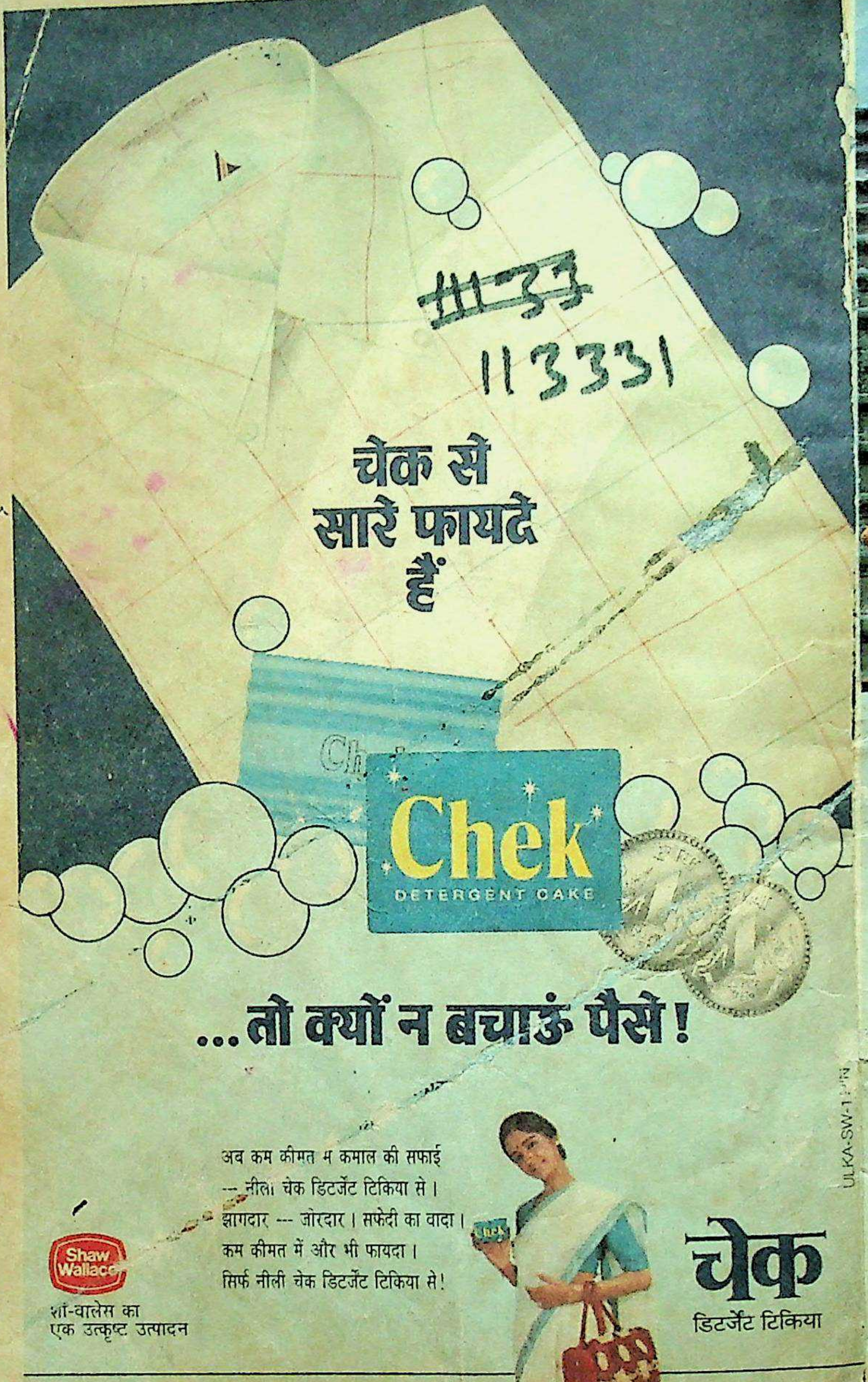

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरुआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सेरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सेरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सेरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सेरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सेरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

6 महीने से

4 महीने से

6 महीने से

मुफ़्त! सेरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सेरेलॅक, पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

Nestlé

FSL/5112/HIN

सेरेलॅक का वादा : स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली विशेषांक

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ

अंक 837 मार्च (प्रथम) 1990

कथा साहित्य

52 **सतरंगा इंद्रधनुष**
दो परिवारों को मिलाने वाले बच्चे

78 **पहली होली**
भाभी को चुपके से भंग पिला देने वाला देवर

94 **चोरचोर**
होली के दिन घर में शराब की दावत

104 **ओएओए से पीड़ित**
पाप संगीत से चिढ़ने वाली काकी

124 **प्रतिदान**
कठोर उपशासक को मात देने वाली युवती

137 **कनक घट**
सुंदरता के मद में चूर लड़की का व्यवहार

148 **बंद लिफाफा**
विकलांग युवक से शादी करने वाली युवती

154 **जरूरत**
परिस्थितियों से घबरा कर पलायन

163 **माटी की मूरत**
रिश्वत न स्वीकारने वाला व्यक्ति

113331

लेख

22 **प्रधान मंत्री की सुरक्षा**
कितनी और कैसी?

31 **आयकर हटाओ**
देश की प्रगति के लिए आवश्यक

35 **जमुना**
प्रसिद्ध अभिनेत्री व सांसद से भेंटवार्ता

45 **लो फिर आ गई होली**
त्योहार के प्रति लोगों की बदलती धारणाएं

67 **देवरजीजा से होली खेलें लेकिन**
भावनाओं पर नियंत्रण रख कर

69 **होली पर रंग खेलें**
रंगों से सचेत रहने की सलाह

73 **रंग नहीं भावनाएं उड़ेलिए**
होली की गरिमा व मर्यादा बनाए रखें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

99 आइए आप से पूछताछ करें
टोकाटाकी की आदत का इलाज
111 विवाहित पुत्री का हस्तक्षेप
मायके से संबंधों में कटुता
117 आप भी राक गार्डन बनाइए
आंगन का सदुपयोग
119 शराबी पति और आप
पति को राह पर लाने के तरीके
169 मधुमेह
एक खतरनाक बीमारी

कविताएं

72 किस के रंग रंगी हो गोरी
83 आया री सखी फाग
103 कुरसी मार गई
123 टेसू को बांधों मत
147 पिया संग होली
162 जग लगता एक रंगोली

16 तुम ने कैसी खेली होली!
50 होली ऐसी मसखरी

स्तंभ

8 आप के पत्र
18 सरित प्रवाह
30 जीवन की मुसकान
51 हमारी बेड़ियां
66 पाठकों की समस्याएं
84 नए पकवान
110 ये पत्नियां
182 कटूक्तियां
183 चंचल छाया

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :

दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.

अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

©दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. को ही भेजें.

चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.

मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 265 रु., (हवाई डाक से)650 रु.

मूल्य : एक प्रति 6.00 रुपए, वार्षिक 144 रुपए.

वायुसेवा अधिभार 50 पैसे प्रति :

सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर और अकारस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब कैस्पर के 4 महकते अस्त्र, सदा करेंगे मच्छरसेना को त्रस्त

अब जानी-मानी अंतर्राष्ट्रीय कंपनी Roussel® के तकनीकी सहयोग से बन रहे हैं कैस्पर मैट. देश में ये पहले मैट हैं जो पूरी शक्ति से मच्छर भगाते हैं, साथ ही 4 खुशबुओं से घर भी महकाते हैं. आज ही ले आइये चंदन, गुलाब, लैवेंडर या रेगुलर महक वाले कैस्पर मैट और कैस्पर रेगुलर या कॉर्डलैस मशीन. फिर देखिये इस महकती महाभारत में मच्छरों की हार.

कैस्पर

टैनवाला का उत्कृष्ट उत्पादन

मच्छरों के महकते दुश्मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

सरित प्रवाह/जनवरी/द्वितीय

प्रसार माध्यमों की स्वायत्तता पर आप के विचार बड़े सटीक लगे.

वास्तव में भारत में कोई भी सरकार आकाशवाणी और दूरदर्शन को स्वायत्तता देने का जोखिम जल्दी मोल नहीं ले सकती क्योंकि इस से उस की छवि को खतरा हो सकता है. हां, नाम के लिए थोड़ी बहुत स्वायत्तता जरूर दे सकती है, जैसा कि वर्तमान सरकार कर रही है. सच तो यह है कि सत्ता से बाहर रहने पर सभी स्वतंत्रता का दम भरते हैं लेकिन सत्ता में आने पर पुरानी लीक पर ही चलने लगते हैं.

राष्ट्रीय मोरचे की सरकार ने दावा किया था कि जब उस की सरकार बनेगी तो प्रसार माध्यमों को स्वायत्तता प्रदान की जाएगी. वायदे के मुताबिक उस ने 'प्रसार भारती' नामक निगम स्थापित करने का विधेयक पेश कर दिया और साथ ही यह भी कहा कि इस विधेयक पर बहस कराने के कारण अंतिम निर्णय होने में एक वर्ष का समय लगेगा.

इस विधेयक पर बहस की आवश्यकता तो है क्योंकि जब इस का तीनचौथाई खर्च सरकार वहन करेगी और इस के तीनों सदस्यों को राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति तथा उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायधीश मनोनीत करेंगे तो स्वतंत्रता रह कहां गई. इस के अलावा यह निगम संसद के प्रति उत्तरदायी होगा. संसद के प्रति उत्तरदायित्व का मतलब है बहुमत दल या फिर दूसरे शब्दों में सरकार के प्रति उत्तरदायी होना. चाहे वह मिलीजुली सरकार हो या एक दलीय सरकार.

दरअसल प्रसार भारती विधेयक पेश करने से पूर्व बहस की कोई आवश्यकता नहीं होती अगर सरकार बी.बी.सी. (ब्रिटिश ब्रोडकास्टिंग कारपोरेशन) की तरह इस को बिलकुल स्वतंत्र कर देती. लेकिन सरकार ने यह विधेयक जानबूझ कर पेश किया और इस को बहस का मुद्दा बनाया. इस से सरकार की कमजोरी का पता चलता है.

—अनिलकुमार श्रीवास्तव

*

दरअसल आकाशवाणी और दूरदर्शन सत्ता परिवर्तन के बाद से ही करीबकरीब स्वायत्त हो गए प्रतीत हो रहे हैं.

कांग्रेस (इ) के पांच वर्ष के शासनकाल के दौरान एक मरतबा भी विपक्ष के किसी नेता का वक्तव्य प्रसारित नहीं किया गया जबकि राष्ट्रीय मोरचे की सरकार के सत्ता संभालते ही दूरदर्शन व आकाशवाणी पर सप्ताह में औसतन तीन या चार दफा भूतपूर्व प्रधान मंत्री तथा प्रमुख विपक्षी नेता का बयान देखनेसुनने को मिल ही जाता है. —राजेश झांब

*

प्रसार भारती निगम विधेयक के बारे में आप ने जो जानकारी दी उस से तो यही आभास होता है कि बड़े मियां तो बड़े मियां, छोटे मियां सुभान अल्लाह.

—सतीशचंद्र

*

आतंकवादियों द्वारा राजनीतिबाजों व उन के रिश्तेदारों के अपहरण पर आप के विचार काफी हद तक प्रशंसनीय हैं.

वैसे आतंकवादियों को छोड़े जाने की यह परंपरा सर्वथा गलत है. देश के लिए बड़ीबड़ी कुरबानियां देने की बातें करने वाले इन नेताओं को अपनी बेटी को कुरबान हो जाने देना था और आतंकवादियों का सफाया करने की मुहिम छेड़ देनी चाहिए थी.

इस तरह आतंकवादियों को छोड़े जाने का सिलसिला चल पड़ा तो आतताइयों के हौसले बढ़ते जाएंगे. और फिर पुलिस किसकिस राजनीतिबाज के कौनकौन से रिश्तेदार की सुरक्षा कब तक करती रह सकती है? —कामेश राजपूत 'नालायक'

*

बेतुका ज्योतिष

लेख 'ज्योतिषियों की भविष्यवाणियां : लग गया तो तीर नहीं तो तुक्का' (जनवरी/द्वितीय) बेहद सटीक तथा विचारोत्तेजक लगा.

चुनाव से पहले बड़ेबड़े ज्योतिषियों द्वारा की गई भविष्यवाणियों में से 90% से भी अधिक गलत साबित हुई हैं. संयोग से कुछ ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों के ठीक निकलने से वे काफी शेखी बघार रहे हैं. अगर ज्योतिष शास्त्र गणित या विज्ञान होता, जैसा कि अकसर ज्योतिषी कहा करते हैं, तो सभी एक सी ही भविष्यवाणियां करते.

अब जनता को चाहिए कि वह ज्योतिषियों के बहकावे में न आए तथा इस अंधविश्वास को जड़मूल से समाप्त करने का प्रयास करे. —हेमंतकुमार धरफले 'नायक'

*

नवंबर में हुए आम चुनाव से पहले सभी अखबारों एवं कुछ पत्रिकाओं में तथाकथित भविष्यद्रष्टाओं ने राजीव गांधी को भारत का फिर से प्रधान मंत्री बना दिया था. मगर चुनाव नतीजों ने इन महानुभावों की 'योग्यता' पर प्रश्नचिह्न लगा दिया. अब ये लोग इस बात पर अनुसंधान कर रहे हैं कि उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेहत से जुड़ी कुछ दिल की बातें.

ब्रिटैनिया व्हाइटल रिफ़ाइन्ड ऑइल.
स्वाद और सेहत का एकदम सही मेल.

जरा सोचिए आपके पति, हर समय अपने काम में जी जान से लगे हुए, रोज की उलझनों से कैसे निपटते रहते हैं. उनकी ये सारी मेहनत है आपके और आपके परिवार के लिए.

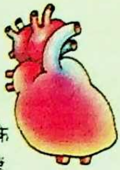

आप जानती हैं, इतनी मेहनत का दिल पर क्या असर होता है ? पर अब गौर करने की बात ये है कि आप क्या करें जिससे आपके पति हमेशा खुश और तन्दुरुस्त रहें.

अच्छी सेहत के लिए अच्छा क्या है ?

वैज्ञानिक खोजबीन से ये पता चला है कि अन्सैचुरेटिड फ़ैटी ऐसिड्ज़ - दोनों, मोनो और पॉली - कॉलस्ट्रॉल पर रोकथाम रखने में मदद करते हैं. ये, पकाने के बहुत से तेलों में होते हैं. पर, सभी तेलों में से सिर्फ़ सोया ऑइल में ही **सही** तालमेल है.

ब्रिटैनिया व्हाइटल रिफ़ाइन्ड सोया ऑइल में सैचुरेटिड फ़ैट्स कम और अन्सैचुरेटिड फ़ैट्स ज़्यादा हैं. उसे बनाने वाले हैं ब्रिटैनिया, यानि ये १००% शुद्ध है. तभी तो इसमें पका खाना, दिल की खूबी को बनाए रखता है.... और आपके परिवार की सेहत को.

व्हाइटल सोया रिफ़ाइन्ड ऑइल

अन्सैचुरेटिड फ़ैट्स	मोनोअन्सैचुरेटिड फ़ैट्स	पॉलीअन्सैचुरेटिड फ़ैट्स
८५%	२२.८%	५७.८%

वो स्वाद जो पूरे परिवार को भाए.

ज़्यादातर लोगों के मन में ये बात बैठ गई है कि खाने को अगर पौष्टिक बनाया जाए तो वो स्वादिष्ट नहीं रह पाएगा. ब्रिटैनिया को इस बात पर बहुत आश्चर्य होता है : व्हाइटल ऑइल इतना हल्का और शुध्द है कि इसका, खाने के स्वाभाविक स्वाद पर कोई असर नहीं पड़ता. व्हाइटल रिफ़ाइन्ड सोया ऑइल इस्तेमाल में भी किफ़ायती है.

ब्रिटैनिया
व्हाइटल
शुद्ध रिफाइन्ड कुकिंग ऑइल
"दिल की बात"

O&M2992HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भविष्यवाणी आखिर गलत कैसे हुई.

यह अफसोस की बात है कि अधिकांश लोग ऐसी बेतुकी बातों पर विश्वास करते हैं और तकरीबन सभी पत्रिकाएं इस बकवास को छापती रहती हैं.

हाथ देखने की बजाय यदि हाथ से कर्म किया जाए तो परिणाम अच्छा निकलता है. 'मार्ग' (मार्केटिंग और रिसर्च ग्रुप) ने भी संसदीय चुनाव क्षेत्रों में जा कर चुनावी आंकड़ों को इकट्ठा कर के वैज्ञानिक तरीके से चुनाव से पहले जो परिणाम बताए थे वे शतप्रतिशत सही निकले. —दिवाकर भुइयां

*

वास्तव में ज्योतिषी इस ठग विद्या से जनता को मूर्ख बना कर अपनी स्वार्थ सिद्धि करते हैं. चुनाव से पूर्व किसी भी पार्टी या प्रत्याशी से पैसा ले कर ये लोग उन के जीत जाने का प्रचार करते हैं, ताकि लोग उन्हें वोट दें. इस तरह ये ज्योतिषी धोखे की कमाई से अपना पेट पालते हैं. ऐसे लोगों पर क्यों न मुकदमा चला कर उन्हें जेल की हवा खिलाई जाए?

इसी अंक में प्रकाशित कहानी 'हलाला' बड़ी ही दिलचस्प लगी. उस से पता चलता है कि इसलाम में कैसेकैसे विचित्र नियम हैं. हदद् अध्यादेश भी एक ऐसा ही विचित्र कानून है जिस में बेकुसूर मुसलिम महिलाएं बलात्कार के मुकदमों में स्वयं जिना बिल जब्र का शिकार बन जाती हैं. आश्चर्य है कि मुसलिम जनता इस कानून के खिलाफ अभी तक कोई आवाज नहीं उठा सकी है. मजहब के नाम पर ये लोग किसी भी अत्याचार को सहन करने के आदी हो गए हैं, परंतु जब जरा सी इन की बुराई बताई जाए तो ये इसलाम को खतरे में जान कर बगावत करने को तैयार हो जाते हैं.

'वेदों में क्या है?' शीर्षक के अंतर्गत सरिता ने हिंदुओं की आंखें खोलने का प्रयास किया था किंतु किसी के भी कान पर जूं नहीं रेंगी. आज भी यज्ञ और होमहवन के नाम पर लाखों रुपए व्यर्थ फूंके जाते हैं. यदि यही पैसा बचा कर गरीबों की सहायता के काम में लगाया जाए तो राष्ट्र को बहुत लाभ हो सकता है किंतु धर्मांधता की जड़ें बहुत गहरी जमी हुई हैं जो हिंदुओं के दिलों पर कुठाराघात कर रही हैं.

—एच.एन. त्रिपाठी

हदूद अध्यादेश

लेख 'हदूद अध्यादेश पाकिस्तानी महिलाओं की गरदन पर लटकती कानूनी तलवार' (जनवरी/द्वितीय) पढ़ कर मन वेदना से भर उठा.

आश्चर्य तो इस बात पर हुआ कि स्वयं एक महिला के प्रधान मंत्री होते हुए भी पाकिस्तान में महिलाओं की हालत इतनी खराब है. कम से कम ऐसे वयस्क संबंधों पर तो किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए जो दोनों पक्षों की पूर्ण रजामंदी से हुए हों.

प्रसार भारती विधेयक के बारे में सरित प्रवाह में कही बातों से मैं पूर्णतः सहमत नहीं हूं. संसद के प्रति उत्तरदायी होने के बावजूद भी प्रसार भारती निगम स्वतंत्र रह सकता है. बी.बी.सी. ब्रिटिश संसद के प्रति जवाबदेह है किंतु उस की निष्पक्षता पर कोई उंगली नहीं उठा सकता. —जगदीश विदिशा

*

बच्चे और फिल्में

लेख 'बच्चों को कैसी फिल्में दिखाएं?' (जनवरी/द्वितीय) रोचक व शिक्षाप्रद लगा. यह अभिभावकों की कठिनाई को दूर करेगा.

वैसे आजकल शिक्षाप्रद तथा बच्चों की फिल्में बननी लगभग बंद ही हो गई हैं. हिंसा तथा मारधाड़ वाली फिल्में ही ज्यादा बनती हैं, जिन्हें देख कर बच्चे भी हिंसात्मक प्रवृत्ति अपनाने लगते हैं.

फिल्म निर्माताओं को चाहिए कि वे मारधाड़ वाली फिल्मों से हट कर बच्चों के लिए ज्ञानवर्द्धक तथा मनोरंजक फिल्में बनाएं क्योंकि बच्चे गीली मिट्टी की तरह होते हैं. उन्हें जैसा सांचा दिया जाएगा वे वैसे ही ढल जाएंगे. वैसे भी आजकल चलचित्र बच्चों के जीवन में बुरी तरह छाया हुआ है. हमें बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा करने चाहिए ताकि वे बड़े हो कर मानव समाज की सेवा कर सकें तथा देश के प्रति अपने कर्तव्य को समझ सकें. —एन. कोटवानी

*

आजकल हिंसा, मारधाड़, चोरी, डकैती, हत्या, बलात्कार व भौंडी प्रेमकहानियों पर आधारित फिल्में ही ज्यादा आ रही हैं. इन फिल्मों में जो भी अच्छाबुरा दिखाया जाता है वह बच्चों पर अपनी छाप अवश्य

सरिता के स्वामित्व व अन्य विवरण संबंधी जानकारी फार्म 4, देखिए नियम 8

1. प्रकाशन का स्थान : नई दिल्ली. 2. प्रकाशन अवधि : पाक्षिक. 3, 4 व 5. मुद्रक, प्रकाशक व संपादक का नाम : विश्वनाथ. राष्ट्रीयता: भारतीय. पता: ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो इस समाचारपत्र के मालिक व हिस्सेदार हैं या जो इस की पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर होल्डर हैं : दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि., ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मैं विश्वनाथ, घोषित करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं.

(ह.) विश्वनाथ, प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

के स्तंभों के बारे में सूचना

सरिता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट और सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पूरा पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी, अतः वापसी के लिए टिकट या टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने का कष्ट न करें. एक से अधिक स्तंभों की सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर भेजी जा सकती है.

भेजी गई सामग्री मौलिक और कम से कम शब्दों में होनी चाहिए. किसी भी पत्रपत्रिका से चुराई हुई या सुनीसुनाई नहीं होनी चाहिए. हर संस्मरण के साथ मौलिकता का निम्न लिखित प्रमाणपत्र अवश्य भेजें. इसे स्पष्ट शब्दों में अलग कागज पर भेजें.

"प्रमाणित किया जाता है कि... शब्दों से आरंभ होने वाली मेरी रचना (अनुभव / चुटकुला / पकवान विधि) नितांत मौलिक है व इसे कहीं से लिया नहीं गया है और पुरस्कार के एवज में इस का प्रकाशन अधिकार (कापीराइट) मैं दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. को दे रहा हूं. स्पष्ट हस्ताक्षर."

जिन संस्मरणों के साथ मौलिकता संबंधी प्रमाणपत्र संलग्न नहीं होगा उन पर विचार नहीं किया जाएगा.

अपने संस्मरण इस पते पर भेजें:

संपादकीय विभाग, सरिता, ई–3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली–110055.

छोड़ता है. इस छाप की बच्चों के चरित्र निर्माण में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है.

अभिभावकों को सचेत हो जाना चाहिए ताकि उन के बच्चों में भौतिकवादी दृष्टिकोण न पनपने पाए और वे दुराग्रही व जिद्दी न बनें. 'चिल्ड्रन फिल्म सोसाइटी' को भी इस ओर समुचित ध्यान देने की आवश्यकता है. —विक्रम सिंह नेगी

*

मार्गदर्शक कहानी

कहानी 'चक्रव्यूह' (जनवरी/द्वितीय) मन को झकझोर गई.

नायिका की अज्ञानता और भावुकता स्वाभाविक तो थी परंतु उसे आत्महत्या जैसा घिनौना विकल्प नहीं चुनना चाहिए था. नायिका नीना अगर थोड़े धैर्य और विवेक से काम लेती तो डेविड उसे इस तरह चकमा नहीं दे सकता था.

कहानी प्रेमीप्रेमिकाओं के लिए मार्गदर्शक थी, यदि वे इस ओर ध्यान दें. कहानीकार ने जो विषय चुना है वह आज के खुले माहौल के हिसाब से अच्छा है. प्रेम में महज शारीरिक संबंधों को ही प्राथमिकता नहीं दी जानी चाहिए. —सुधा चतुर्वेदी

*

सराहनीय कदम

सरिता द्वारा 26 जनवरी को जनता से अपने मकानों, कार्यालयों आदि पर 'तिरंगा झंडा' फहराने की जो अपील की थी वह एक सराहनीय कदम था. पत्रिका के इस रचनात्मक आंदोलन की जितनी प्रशंसा की जाए कम है.

सभी भारतीयों को अपने राष्ट्रीय पर्व अन्य त्योहारों की भांति ही मनाने चाहिए तभी हमारा देश एकता एवं अखंडता की मिसाल पेश कर सकेगा. —मनोज नीरज

*

आरक्षण का आधार आर्थिक हो

पिछले कुछ दिनों से चल रहा आरक्षण विरोधी आंदोलन शनैःशनैः पूरे देश में फैलता जा रहा है. आरक्षण विरोधी विषय ने आंदोलन का रूप तभी से लिया जब से नई सरकार ने आरक्षण आगामी 10 वर्षों तक बढ़ाने की बात कही.

यद्यपि जातिगत आरक्षण का विरोध इस से पूर्व भी होता रहा है, क्योंकि जाति विशेष में ही कमजोर व्यक्ति हों, ऐसा नहीं है. आज अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्ग में ऐसे व्यक्ति मिल जाएंगे जो संपन्न होते हुए भी सरकारी आरक्षण नीति का लाभ उठा रहे हैं.

दूसरी ओर सवर्ण होते हुए भी निम्न आय की परिधि में रहने वालों की संख्या भी कम नहीं है. वे उन तथाकथित कमजोर लोगों से अधिक सरकारी सहायता के हकदार हैं. अतः आरक्षण का आधार निश्चित ही जातिगत न हो कर आर्थिक होना चाहिए.

—नरेश कौशल ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च 1990

सुमन सौरभ

किशोरों की सचेतक पत्रिका

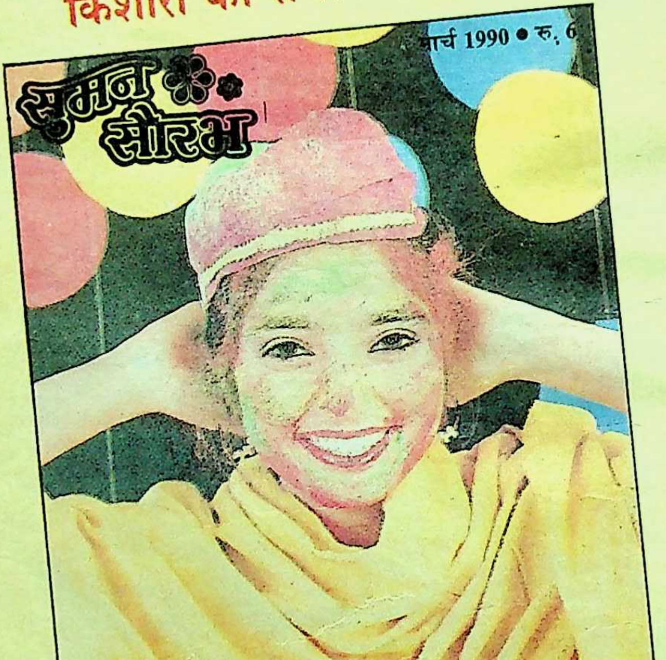

गुदगुदी विशेषांक

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन सौरभ

मार्च 1990

गुदगुदी विशेषांक

प्रमुख आकर्षण

एक मुशायरा इंटरनेशनल

अमरूद इलाहाबादी, कुल्हड़ चाटपुरी, नकलची बेहिसाब, टुपिया टोंटपुरी, धांसू तमंचवी और झम्मन मियां की शेरोशायरी से भरपूर हास्य एकांकी

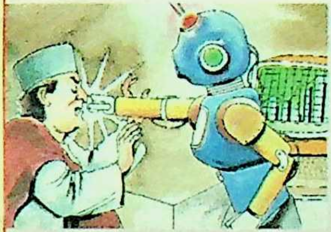

पुलिस स्टेशन 21वीं सदी का

20 वीं सदी और 21 वीं सदी के पुलिस स्टेशनों का अंतर कहकहों के बीच बताती हास्य एकांकी.

होली पर

बचपन में मनाई रंगारंग होली के विषय में लेखक की एक अविस्मरणीय घटना.

खोजाजी की कचौरियां

कचौरियों के चक्कर में फंसे खोजाजी को गांव वालों ने कैसे भूत समझ लिया ?

साथ में अन्य रोचक सामग्री व सभी स्थायी स्तंभ.

सरिता के पाठकों को सुमनसौरभ के वार्षिक शुल्क पर

25% की विशेष छूट

60/- रु. के स्थान पर केवल 45/- रु. भेजें.

सुमन सौरभ ई- 3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055	नाम... पता... .... पिन कोड.................. ☐☐☐☐☐☐ हस्ताक्षर... पोस्टल आर्डर/बैंक ड्राफ्ट नं............................

अपनी प्रति आज ही खरीदिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम ने कैसी खेली होली !

तुम ने भी कैसी खेली होली!
यों दूर खड़े ही,
बिना रंगे ही,
नयनों से खेली.
नहीं अंग लगे तुम
नहीं गले मिले तुम
बिन जोराजोरी
खेली कैसी तुम ने होली!
वसन रहे कोरे के कोरे
अंग रहे गोरे के गोरे
नेह रंग से खेली.
अंदर तक रंग गई
भीतर तक भीगी
कैसी खेली तुम ने होली!

—आलोक यादव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद हैं वो दिन जब आप हाथी-घोड़ों

कुत्ते-बिल्लियों के बीच सोते थे?

आप इन नन्हे-मुन्ने जानवरों से

एक पल भी बिछड़ने को तैयार न थे.

अब वही रिश्ते अपने बच्चों को भी

बनाने दीजिये.

सिबाका के नन्हे-मुन्ने जानवर लौट आये हैं।

सिर्फ़ २०० ग्राम फ़ैमिली पैक्स में उपलब्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह

कशमीर में पिछले पांच वर्षों से बराबर असंतोष बढ़ता रहा है जिस का मुख्य कारण राजीव गांधी का पहले फारूख अब्दुल्ला की सरकार को बरखास्त करना, फिर उस के साथ सांझा सरकार बनाना. चाहे फारूख अब्दुल्ला मुख्य मंत्री थे, पर राज्य का लगभग सारा संचालन नई दिल्ली से ही होता था—अगर राजीव गांधी का हाथ देश के हर मामले में न हो तो प्रधान मंत्री और संसद में विशाल बहुमत होने का फायदा ही क्या?

नतीजा यह हुआ कि फारूख साहब अपनी मौजमस्ती में लिप्त हो गए और प्रशासन अधर में छोड़ दिया गया. जनता का कोई खयाल रखने वाला नहीं रहा. राजीव सरकार की समझ यह थी कि जब हम प्रतिवर्ष कई हजार करोड़ रुपए कशमीर को अनुदान में दे रहे हैं, हर खाद्य सामग्री को लागत से कम मूल्य पर सस्ता कर के बेचा जा रहा है, और सैलानियों को आकर्षित करने के लिए संसार व देश भर में बड़ेबड़े विज्ञापन छापे जा रहे हैं, तो कशमीरियों को और क्या चाहिए? परंतु इन से जनता को लाभ नहीं था. केवल सरकारी अमले को अधिक पैसा मिल रहा था.

कशमीर में नीचे से ऊपर तक शिक्षा मुफ्त होने के कारण शिक्षित नौजवानों की एक फौज खड़ी हो गई. पर इन के लिए कोई काम नहीं था—न कोई उद्योग, न कोई धंधा. फलस्वरूप पाकिस्तान के एजेंटों को, कठमुल्लाओं को, सुनहरा मौका मिल गया. उन्होंने समझाना शुरू किया कि कशमीरियों की सारी मुसीबतों का बस एक ही हल है—भारत से अलग होना, और इसलामी पाकिस्तान से मिलना.

मजहब की पुकार बड़ी सुहावनी होती है—मानव के पेड़ों पर से उतरने के समय से होशियार लोगों का यह सब से पुराना धंधा/पेशा है, और आज सब से विशाल, सब से अधिक संगठित (चाहे टुकड़ों में बंटा हुआ), सब से अधिक मालदार व शक्तिशाली धंधा है. इस के नाम पर जुनून बड़ी आसानी से और तीव्र गति से चढ़ाया जा सकता है. हर व्यक्ति हमेशा किसी न किसी परेशानी में लिप्त रहता है. मजहब/धर्म उसे दम/दिलासा देता है, स्वर्ग/जन्नत का बड़ा सुहावना प्रलोभन देता, सारे दुखदर्द दूर करने का वायदा करता है.

इस सब से कशमीर में अनेक कट्टरपंथी कठमुल्ला दल बन गए हैं जिन का एकमात्र उद्देश्य कशमीर को मजहब के नाम पर भारत से अलग कराना और पाकिस्तान से मिलाना हो गया है.

न फारूख अब्दुल्ला ने, न राजीव सरकार ने इस प्रवृत्ति को रोकने और अपने पक्ष में मोड़ने का कोई प्रयत्न किया. फलस्वरूप कानून और व्यवस्था सरकार के हाथों से निकल कर मजहबी आतंकवादियों के हाथ में पहुंच गई. और अब सिवाय कठोर कदमों के, दमन के, पुलिस की गोलियों के, और कोई चारा नहीं रहा है. राष्ट्रीय मोरचा सरकार को मजबूर हो कर जगमोहन को राज्यपाल नियुक्त करना पड़ा जिन्होंने स्थिति पर काफी काबू पा लिया है. पर अंततः तो जनमानस को ही अपने पक्ष में करना होगा, जो गोली से नहीं, जनता को जनता के काम में लगाने से ही होगा.

*

ऐसी स्थिति में पाकिस्तान को कशमीर पर अपना हक जमाने का पूरा मौका मिला है. उस ने कशमीरियों के द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मनिर्णय, स्वाधीनता का सवाल जोर-शोर से उठाया है. पाकिस्तान न केवल कशमीरियों को बगावत के लिए उकसा रहा है, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी जनमत संग्रह द्वारा आत्मनिर्णय की मांग कर रहा है.

पाकिस्तानी सरकारी रेडियो और टीवी कशमीरियों को हर रोज हर समय बराबर भड़का रहे हैं कि उठो, शहीद हो जाओ, आजाद हो जाओ. जिहाद पर कमर कस लो.

उस ने अपने यहां भी मुहाजिद (धर्म युद्ध करने वाले) तैयार करने शुरू किए हैं जो भारत में घुसने का प्रयत्न करेंगे. इन में से कुछ ने तो 5 फरवरी को भारत की सीमा पार कर के घुसने का भी प्रयत्न किया पर भारतीय सुरक्षा बल ने गोली चला कर उन्हें मार भगाया.

पाकिस्तान जहां कशमीरियों के आत्मनिर्णय की बात करता है वहां सिंधियों, बलूचियों व पठानों के आत्मनिर्णय की अवहेलना कर रहा है. आज सिंध प्रांत में घोर उपद्रव हो रहे हैं जहां भारत से गए हुए मुसलमान अपने प्रति व्यवहार से क्षुब्ध हो कर गोलियों, बमों, राकटों से अपनी बात मनवाने की कोशिश कर रहे हैं. उन का कहना है कि उन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक बना डाला गया है और इसलिए वे भी आजादी चाहते हैं.

उधर सिंध के मुसलमान भी पंजाबी मुसलमानों से खार खाए बैठे हैं—पाकिस्तान सरकार यद्यपि एक सिंधी नागरिक (बेनजीर भुट्टो) द्वारा चलाई जा रही है, पर पंजाब प्रांत की सरकार ने लगभग बगावत का झंडा खड़ा कर दिया है. फौज और प्रशासन पर पूरी तरह पंजाबियों का कब्जा है और यह सिंधियों, बलूचियों व पठानों को गुलाम बनाए रखना चाहते हैं.

जब पाकिस्तान सरकार कशमीरियों की स्वाधीनता का प्रश्न उठाती है तब भारत सरकार को भी सिंध, बलूचिस्तान व सीमांत के पठान क्षेत्र की आजादी के लिए मांग करनी चाहिए तभी पाकिस्तान सरकार को अपनी गलती का बोध होगा—कोई सरकार अपने देश के किसी हिस्से के नागरिकों को अलग, स्वाधीन नहीं होने दे सकती.

*

आजकल शेयर बाजार में काफी मंदी चल रही है. राष्ट्रीय मोरचा सरकार के आने के समय तो शेयरों के भावों में उछाला आया था, पर अब काफी ढील है. अच्छी से अच्छी कंपनियों के शेयर लुढ़क रहे हैं. मंदड़िए (बेचने वाले सट्टेबाज) बराबर दाम घटवा रहे हैं. पहले यदि ऐसी स्थिति आती थी तो सरकारी वित्तीय निगम—जीवन बीमा निगम, भारतीय यूनिट ट्रस्ट व सरकारी बैंक बाजार में घुस कर शेयर खरीद लिया करते थे. परंतु जब से जीवन बीमा निगम व बैंक आफ बड़ौदा की मारफत रिलायंस के धीरूभाई अंबानी द्वारा लारसेन व टूब्रो जैसी बड़ी कंपनी ली गई, तब से इन निगमों की कार्यविधि की काफी आलोचना हुई. फलस्वरूप भारत सरकार के वित्त मंत्रालय ने, सुना है, यह आदेश दे दिया है कि सरकारी वित्तीय संस्थाएं बाजार में इस प्रकार के शेयरों से खेलना बंद करें. इसलिए आजकल वित्त निगम बाजार में शेयरों के भाव बनाए रखने का कोई प्रयत्न नहीं कर रहे हैं.

पर जनसाधारण की बचत शेयर बाजार में आए, इस के लिए आवश्यक है कि शेयरों के भाव उन के वास्तविक मूल्यों से केवल सट्टेबाजों के कारण नीचे नहीं गिरने दिए जाएं. सरकार यह सोच सकती है कि इस से उसे क्या फर्क पड़ता है. जनता की बचत शेयरों में नहीं लगी तो सरकारी बैंकों में जमा हो रही है. परंतु यह ख़याल गलत है. बैंकों को भी तो जमा कराने वालों के धन को कहीं किसी उत्पादन क्षेत्र में लगाना होता है अन्यथा वे स्वयं खातेदारों को ब्याज कहां से देंगे? सरकारी ऋण पत्रों में तो ब्याज मामूली ही मिलता है. फिर अगर शेयरों में धन नहीं लगेगा तो उद्योग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसे चलेंगे?

पूर्वी यूरोप व रूस की नई क्रांति ने यह तो साबित कर ही दिया है कि वास्तविक उत्पादन तो निजी क्षेत्र में ही हो सकता है. सरकारी उत्पादन महंगा व घटिया होता है जिस से कोई प्रगति नहीं हो सकती, न जनता की कोई आवश्यकता पूरी हो सकती है.

इसलिए सरकार को ध्यान देना चाहिए कि शेयर बाजार न तो बेकार में आसमान छुए, न ही नीचे पाताल में गिरने पाए. इस के लिए उचित प्रोत्साहन देने वाली वित्तीय व कर नीति की आवश्यकता है. जितने अधिक टैक्स लगेंगे उतना ही कारोबार व उद्यमी व्यक्ति हतोत्साह होगा. चाहे व्यवस्था की मांग हो, चाहे विकास के नाम पर, सरकारी खर्च पर नियंत्रण रखना बहुत आवश्यक है. जैसे भूतपूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी कहते थे. सरकारी खर्च में 15 पैसे ही वास्तव में जनता को लाभ पहुंचाते हैं, 85 पैसे तो बिचौलिए, सरकारी अमला खा जाता है या नष्ट कर देता है. कभीकभी गलत आदमी भी सही बात कह देता है.

*

राष्ट्रपति जार्ज बुश ने नए अमरीकी बजट में मंगल ग्रह पर मानव को भेजने के लिए खोज, अनुसंधान इत्यादि की मद में काफी मोटी रकम निश्चित की है. अनुमान है कि इस प्रयास को सफल बनाने में अभी 20 वर्ष लग जाएंगे.

उधर रूस भी इस ओर बढ़ रहा है. यद्यपि उस के यहां आर्थिक संकट बहुत है, पर विज्ञान और टेक्नोलोजी, विशेषतः जिस का संबंध युद्ध और यौद्धिक सामग्री से हो, उस पर कोताही नहीं की जाती.

अच्छा तो यही रहे कि मंगल ग्रह पर मानव को भेजने का काम सारे संपन्न, उन्नत देश एक साथ मिल कर करें. अब यूरोप के सारे देश 1992 में एक हो जाएंगे. यूरोपीय समुदाय व संयुक्त राष्ट्र अमरीका से जापान के संबंध बहुत गहरे हैं. रूस भी गोरबाचोफ के राज में अमरीका के निकट आ रहा है और कम्यूनिज्म का सिवाय नाम के सभी महत्त्वपूर्ण दिशाओं के त्याग करने के बाद और 'सारे संसार के मजदूर एक हो जाओ' के नारे के अंतर्गत संसार व्यापी साम्राज्य बनाने के स्वप्न को तिलांजलि दे कर मानव स्वभाव के अनुकूल राज्य व्यवस्था बना रहा है.

इस प्रकार जब सारे संसार में द्वेष की भावना का अंत हो रहा है तो मंगल ग्रह तक आदमी को पहुंचाने के काम में व अंतरिक्ष की अन्य खोजों के लिए संयुक्त प्रयास क्यों न हो?

*

वित्त मंत्री मधु दंडवते ने सरकारी बैंकों से कहा है कि राष्ट्रीय मोरचे के चुनाव वायदों में प्रमुख 10,000 रुपए तक किसानों, मजदूरों और अन्य गरीब लोगों द्वारा लिए गए ऋण की माफी के लिए उचित कार्यविधि पर गौर करे ताकि यह काफी धीरेधीरे, कई चरणों में कार्यान्वित हो जाए.

वास्तविकता तो यह है कि ये लगभग सारे ऋण जो तथाकथित गरीब लोगों को दिए गए हैं वे वसूल ही नहीं हो सकते, चाहे इस के लिए कितने ही कठोर कदम उठाए जाएं.

जब इंदिरा व राजीव सरकारों ने ये ऋण बांटने का सिलसिला चलाया था, तभी सब को मालूम था कि ये ऋण वापस नहीं हो सकते क्योंकि स्वयं इन्हें लेने वालों को तो केवल आधा या तिहाई ही मिला. बाकी तो कांग्रेसियों व बैंक अमले ने पहले ही आपस में बांट लिया था. यह कर्ज मेलों की योजना तो बनी ही कांग्रेसियों को अनुदान देने के लिए थी, जनसाधारण के लिए नहीं. कांग्रेस नेतृत्व ने अपने कार्यकर्ताओं, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की जयजयकार करने वालों के लिए बजाय अपने कोष से देने के सरकारी बैंकों के खजाने खोल दिए—आलोचना करने वाले आलोचना करते रहे, हमारी हुकूमत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है हम चाहे जो कर सकते हैं. तुम रोकने वाले कौन?

इस लूट को बैंकों ने अपनी सेवाओं के दाम बढ़ा कर कुछ पूरा करने की कोशिश की है, पर अभी भी अधिकांश रकम बहीखातों में पड़ी है, पर पूरी तरह नाकाबिले वसूल है.

इसलिए कर्ज माफ करने न करने का प्रश्न तो केवल औपचारिकता है. आवश्यकता तो यह है कि इस रकम को तत्काल बट्टे खाते में डाल कर बैंकों के बहीखाते को सही बना लिया जाए ताकि वे सचाई प्रकट करें, झूठ नहीं.

*

नई दिल्ली में स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय देश का सब से अधिक सरकारी धन प्राप्त करने वाला शिक्षण संस्थान है. इस के साथ जवाहरलाल नेहरू का नाम जुड़ा है और उन्हीं की यशोगाथा गाने के लिए इसे बनाया गया था. इसलिए इसे नेहरू खानदान की सरकारें मुक्त हस्त से पैसा देती रही हैं. पर जितना धन इसे मिलता है उस के एक अंश का भी सदुपयोग नहीं होता. ज्यादातर यह धन उड़ाया जाता है—बढ़िया मकान, बढ़िया साजसामान, बढ़िया वेतन, बढ़िया छात्रवृत्तियां व छात्रसुविधाएं. नाममात्र की फीस, पर उपलब्धि के नाम पर शून्य. यह सरकारी नौकरियों की बाट देखते नवयुवकयुवतियों का एक अड्डा बन गया है जहां उन्हें एक मोटी रकम बिना किसी निश्चित अवधि के बिना कोई काम किए 'फैलोशिप' के नाम पर मिलती रहती है.

यहां का प्रबंध हमेशा वादविवाद के घेरे में रहता है. कोई कुलपति टिकने नहीं पाता, छात्रों में अनुशासन है ही नहीं. अनुसंधान या शिक्षा के क्षेत्र में कोई नई उपलब्धियां नहीं हैं. हर रोज छात्र शिक्षक संघर्ष होते रहते हैं. हड़तालें होती हैं. हर मायने में यह एक सफेद हाथी है, और जवाहरलाल नेहरू के प्रशंसक और भक्त लोग कह सकते हैं कि यह उन के नाम पर बट्टा है.

आवश्यकता इस बात की है कि इस विश्वविद्यालय की अनुदान राशि बेरहमी से काटी जाए. शिक्षकों व विद्यार्थियों को जैसा काम वैसा दाम का सबक सिखाया जाए ताकि गरीब जनता से टैक्सों द्वारा वसूल किए धन से निखट्टू लोग ऐश न फरमा सकें.

113331

इसी सिलसिले में यहां के विद्यार्थियों की एक मांग पर गौर करें: उन्होंने मांग की है कि लड़कियों को लड़कों के कमरों में जाने और रहने पर जो पाबंदी लगाई गई है वह फौरन हटा ली जाए अन्यथा इस के लिए हड़ताल, आंदोलन किए जाएंगे.

जब मजे करने ही हैं तो पूरी तरह क्यों न किए जाएं?

*

रूस की संसद ने फैसला किया है कि जहां अब तक सारा उद्योगधंधा, कृषि, इत्यादि सब सरकारी हुआ करते थे और सारी जनता सरकारी नौकर थी वहां अब आगे से व्यक्तिगत निजी उद्योग और खेती को प्रोत्साहन दिया जाएगा. सरकारी उद्योगों को तो अभी निजी क्षेत्र में नहीं बदला जाएगा पर आगे चल कर संभावना यही है कि जिन सरकारी उद्योगों में घाटा होता है वे या तो बंद कर दिए जाएंगे या बेच दिए जाएंगे.

इस प्रकार रूस में, जहां मार्क्सवाद, समाजवाद और तथाकथित शोषण रहित समाज को बनाने का परीक्षण 70 वर्ष तक चलता रहा, वही देश अब उसे असम्मान के साथ दफना रहा है.

मानव को यह परीक्षण बड़ा महंगा पड़ा है. इस के अंतर्गत 10 करोड़ व्यक्ति रूस के सत्तारूढ़ कम्यूनिस्टों ने मार डाले. लगभग इतने ही चीन में मौत के घाट उतारे गए. अन्य देशों में भी, जहां मार्क्सवाद समाजवाद का प्रचलन किया गया, लाखों की संख्या में हत्याएं की गईं, क्योंकि यह 'मजहब' इस की छूट देता है कि विरोधी को मारना सब से बड़ा सवाब का काम है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधानमंत्री की सुरक्षा कि

लेख ● सुरेंद्र द्विवेदी

सरकारी तंत्र में प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति की शारीरिक सुरक्षा के लिए स्पष्ट नियम व कानून हैं. उन्हीं मानदंडों के अनुरूप उन की सुरक्षा का दायित्व सरकार और पुलिस पर होता है. उन का उल्लंघन अक्षम्य अपराध की परिधि में आता है.

परंतु देश के इतिहास में यह पहला अवसर है, जब भूतपूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी और उन के परिवार की सुरक्षा के प्रश्न को ले कर एक नया विवाद खड़ा हो गया है कि क्या उन की सुरक्षाव्यवस्था पूर्ववत कायम रखी जाए, जो उन्हें देश के प्रधान मंत्री के नाते हासिल थी या उस में कटौती की जाए.

एक समय में ही दो व्यक्तियों प्रधान मंत्री और पूर्व प्रधान मंत्री और संसद में विपक्ष के नेता को सर्वोच्च स्तर की सुरक्षा की गारंटी का सवाल है. यह मुद्दा लोकतांत्रिक देश के कानूनी, राजनीतिक और नैतिक पहलू से जुड़ गया है. परंतु यह मामला सुरक्षा का कम राजनीतिक प्रश्न अधिक बन गया है, जिस के कारण उलझाव पैदा हुआ है.

प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति की सुरक्षा-व्यवस्था अंगरेजों के शासनकाल से चली आ रही 'ब्लू बुक' अर्थात 'नीली किताब' में अंकित नियम, कानूनों के निर्देशन के आधार पर की जाती है. यह नीली किताब करीब 70 वर्ष पुरानी है.

अंगरेज वायसराय की सुरक्षा के लिए यह नीली किताब संकलित की गई थी. स्वतंत्रता के बाद यह संशोधित रूप में 1951 में प्रकाशित की गई. नई परिस्थितियों एवं आवश्यकता के अनुरूप इस का 1981 में नया संस्करण प्रकाशित किया गया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितनी और कैसी ?

यह सही है कि राजीव गांधी का नाम आतंकवादियों की हिट लिस्ट में है और उन की रक्षा करना भी सरकार का दायित्व है, लेकिन कानूनी तौर पर विशेष सुरक्षा दस्ते की सेवाएं जब राष्ट्रपति और कैबिनेट स्तर के अन्य मंत्रियों को भी उपलब्ध नहीं है तो फिर पूर्व प्रधान मंत्री के लिए यह सुरक्षाव्यवस्था क्यों?

राजीव गांधी के शासनकाल में आतंकवादियों की नई चुनौतियों और खतरों के संदर्भ में 1988 में इस की पूरी समीक्षा की गई थी. इस समीक्षा के बाद प्रधान मंत्री राजीव गांधी की सुरक्षाव्यवस्था कड़ी कर के अमरीकी राष्ट्रपति के समकक्ष बना दी गई. उस समय तत्कालीन लोक दल नेता हेमवतीनंदन बहुगुणा ने राजीव गांधी को सुरक्षा की दृष्टि से विश्व के सर्वाधिक महंगे प्रधान मंत्री होने की संज्ञा दी थी.

कांग्रेस के सत्ताच्युत होने और केंद्र में विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय मोरचे की सरकार बनने के बाद देश के वातावरण में व्याप्त खिंचाव कम हुआ है. नई सरकार ने नए माहौल में अपनी और अन्य मंत्रियों की सुरक्षा को ढीला किया है. लोगों को उन से मिलने तथा उन की दिल्ली अथवा बाहर की यात्रा के दौरान सुरक्षा के

भूतपूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी विशेष सुरक्षा दस्ते के घेरे में : विपक्ष के नेता के रूप में सुरक्षा का मामला एक नया प्रश्नचिह्न ले कर उभरा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तामझाम को समेटा गया है.

प्रधान मंत्री आवास की घेराबंदी तोड़ी गई है. यह प्रधान मंत्री और सरकार को जनता के नजदीक लाने का प्रयास है. इस नए बदले माहौल में राजीव गांधी की सुरक्षा नए प्रश्नचिह्न ले कर खड़ी हो गई है और बदली हुई परिस्थितियों से तालमेल नहीं बैठ पा रहा है.

प्रधान मंत्री पद से हटने के दो महीने बाद तक उन की सुरक्षाव्यवस्था पूर्ववत कायम थी. परंतु पद से हटने के बाद भी इस सुरक्षाव्यवस्था को चालू रखने की मांग ने कानूनी एवं 'औचित्य के प्रश्न' का रूप ग्रहण कर लिया है. कांग्रेस और उस के नेता राजीव गांधी की सुरक्षा में तनिक भी ढील के लिए तैयार नहीं है और उन की सुरक्षा में किसी कटौती के प्रश्न को देश के सामने एक भावनात्मक मुद्दे के रूप में उभारने की कोशिश की जा रही है.

स्वर्ण मंदिर में सिख आतंकवादियों के खिलाफ की गई 'ब्लू स्टार' सैनिक कारवाई और तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की उन के निवासस्थान पर की गई दर्दनाक हत्या के बाद नए प्रधान मंत्री राजीव गांधी की सुरक्षा विशेष महत्त्वपूर्ण बन गई थी.

प्रधान मंत्री की सुरक्षा निर्बाध बनाने के लिए 1986 में कैबिनेट सचिवालय के अधीन विशेष सुरक्षा दस्ते की स्थापना की गई. दो वर्ष बाद मई 1988 में संसदीय अधिनियम के अंतर्गत मात्र प्रधान मंत्री की सुरक्षा के लिए विशेष सुरक्षा दस्ता बनाया गया. इस अधिनियम के अंतर्गत राष्ट्रपति की सुरक्षाव्यवस्था विशेष सुरक्षा दस्ते से अलग कर दी गई.

इस नए सुरक्षा दस्ते के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था सोवियत संघ और इटली में की गई. इस में सभी पुलिस इंस्पेक्टर पद के अधिकारी हैं. सुरक्षा प्रणाली में सक्षम एवं कुशल इस 'ब्लैक कमांडो' दस्ते के लिए विदेशों से करोड़ों रुपए के विशेष सुरक्षा उपकरण आयात किए गए.

इस विशेष सुरक्षा दस्ते में विभिन्न सुरक्षा बलों से 12 सौ कमांडो चुन कर शामिल किए गए जिस में से विशेष रूप से प्रशिक्षित कमांडो बराबर प्रधान मंत्री की सुरक्षा में तैनात रहते थे. बाकी कमांडो

राजीव गांधी का नया निवासस्थान : सरकार द्वारा अधिकतम सुरक्षा प्रदान करने का हर संभव प्रयास. ▼

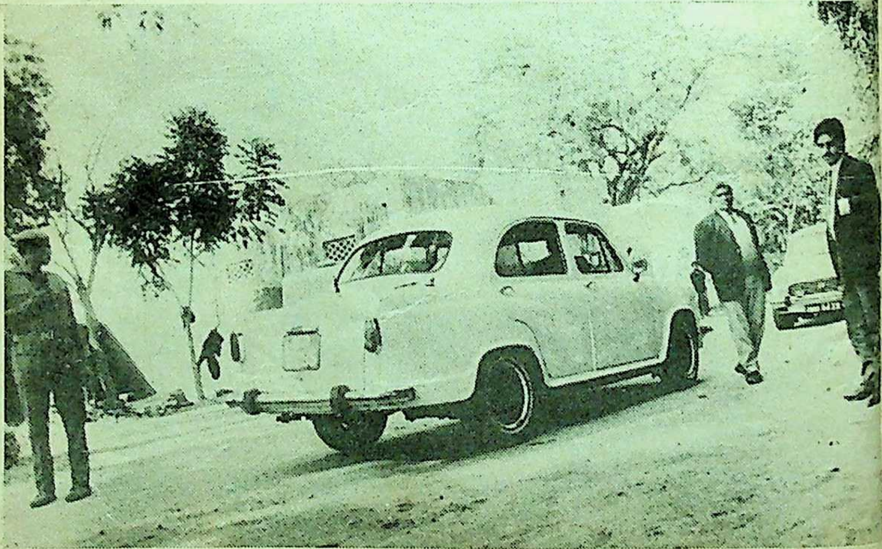

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : आवश्यकता के अनुरूप सुरक्षाव्यवस्था की मांग.

प्रशासनिक समन्वय के कामकाज में लगाए जाते थे. इन की बदली होने पर नए दस्ते की तैनाती के पूर्व देश और विदेश में पुनः प्रशिक्षण प्रावधान रहा है.

इस विशेष सुरक्षा दस्ते को संसदीय अधिनियम के अंतर्गत विशेष अधिकार प्रदान किए गए हैं तथा उसे कुछ मौलिक अधिकारों से वंचित कर दिया गया. राजीव गांधी अपनी सत्ता के अंतिम वर्षों में इसी दस्ते के संरक्षण में रहे हैं. इस कड़ी सुरक्षाव्यवस्था का व्यक्तिगत पहलू यह रहा है कि राजीव गांधी को चाहने के बाद भी उन्मुक्त हवा और वातावरण उपलब्ध नहीं रहा. अपने मित्रों, रिश्तेदारों एवं सहयोगियों से निर्बाध रूप से मिलने की गुंजाइस नहीं रह गई थी.

प्रधान मंत्री के निवास और कार्यालय में इन कमांडों की इजाजत के बिना एक पत्ता भी हिलना संभव नहीं था. इस के कारण राजीव गांधी को स्वयं खीज का शिकार होना पड़ता रहा है. सत्ता से बाहर होने के बाद शायद उन्हें कुछ मानसिक राहत मिली होगी. परंतु लगता है, यह उन्हें स्वीकार नहीं है.

राजीव गांधी की सुरक्षा का दूसरा पहलू सामाजिक है. यह काम जनता एवं सरकारी सहयोगियों से संबंध रखता है. इस का काफी विकृत रूप उभर कर सामने आया. दिल्ली की किसी सड़क से प्रधान मंत्री के काफिले का गुजरने का अर्थ था, आम लोगों की आफत. यातायात बंद, आवागमन ठप, लोगों को अपनी गाड़ियों के इंजन बंद कर ने तथा राजीव गांधी के यात्रा मार्ग की विपरीत दिशा में मुंह कर के खड़ा होने के लिए मजबूर होना पड़ता था.

यदि उन का कोई कार्यक्रम किसी आवासी क्षेत्र में हुआ तो लोगों के घरों के दरवाजे एवं खिड़कियां सुरक्षा की दृष्टि से बंद करने का नियम बन गया था. इन उपायों से उन की सुरक्षा कितनी मजबूत हुई, यह तो पता नहीं, परंतु इन छोटीछोटी घटनाओं से राजीव गांधी आम जनता के मन से जरूर उखड़ते चले गए. इस सब का पांच वर्ष के भीतर ही उन की भारी पराजय में काफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ योगदान है. सत्ता परिवर्तन के साथ नए प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने इस बेतुकी सुरक्षाव्यवस्था के तामझाम में कटौती कर दी है और अधिकारियों को निर्देश दिया है कि उन की सुरक्षाव्यवस्था को आवश्यकता के अनुरूप बनाया जाए तथा उस में दिखावे का पुट नहीं रहना चाहिए.

राजीव गांधी के पांच वर्ष के कार्यकाल में सुरक्षा का एक विशेष आलम था. बदले हुए माहौल में यदि उन की चर्चा की जाए तो लोगों को हंसी आएगी. पिछले वर्ष अगस्त में राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरामन राजीव गांधी के जन्म दिवस के अवसर पर उन के निवास स्थान पर मुबारकबाद देने गए. सुरक्षा कमांडो पूरी तरह जागरूक थे.

रामविलास पासवान

श्रम एवं कल्याण मंत्री से दो टूक बातचीत

केंद्रीय श्रम एवं कल्याण मंत्री रामविलास पासवान ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि कांग्रेस पार्टी राजीव गांधी के सुरक्षा के मामले को उछाल कर राजनीतिक लाभ उठाना चाहती है. उन्होंने प्रधान मंत्री को पत्र लिख कर अनुरोध किया है कि राजीव गांधी को विरोधी दल के नेता होने के नाते कैबिनेट स्तर के मंत्री का दर्जा प्राप्त है, अतः उन की सुरक्षा पद के अनुसार ही होनी चाहिए.

प्रस्तुत हैं उन से की गई बातचीत के अंश:

प्रश्न: पूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी की सुरक्षा को ले कर विवाद का क्या कारण है?

उत्तर: यह विवाद अवश्य है, परंतु इस में कोई दम नहीं है. यह प्रधान मंत्री या पूर्व प्रधान मंत्री की सुरक्षा का मामला नहीं है, वरन यह मसला राजीव गांधी की व्यक्तिगत सुरक्षा का है. जिस व्यक्ति की सुरक्षा के बारे में इतना हल्ला किया जा रहा है, उस व्यक्ति की सुरक्षा पर प्रधान मंत्री की सुरक्षा से ज्यादा सुरक्षाव्यवस्था है.

प्रश्न: क्या पूर्व प्रधान मंत्री को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करने का दायित्व सरकार पर नहीं है, जबकि उन के जीवन को आतंकवादियों से खतरा है?

उत्तर: पूर्व प्रधान मंत्री के जीवन की सुरक्षा करना सरकार का पहला कर्तव्य है, चाहे उन के जीवन को खतरा हो या नहीं. लेकिन सरकार को जहां राजीव गांधी के जीवन की चिंता है, वहीं उसे एक आम आदमी के जीवन की भी फिक्र है. पूर्व प्रधान मंत्री का दर्जा कैबिनेट स्तर के मंत्री का है. आज जितनी कैबिनेट मंत्री की सुरक्षा है, उस से सौ गुना राजीव गांधी की सुरक्षाव्यवस्था है. कैबिनेट स्तर के किसी मंत्री के सुरक्षाकर्मियों को अलग से कार की व्यवस्था नहीं है, जबकि राजीव गांधी के आगेपीछे सुरक्षा गाड़ियों का तांता लगा है.

प्रश्न: वर्तमान सुरक्षा विवाद को देखते हुए क्या पूर्व प्रधान मंत्री की सुरक्षा के बारे में नया कानून बनाने अथवा नए सोच की जरूरत है?

उत्तर: एक नई आचार संहिता बनाने की जरूरत है, जिस में प्रधान मंत्री, विरोधी दल के नेता और लोकसभा अध्यक्ष के लिए एक आवास की व्यवस्था हो.

विरोधी दल के नेता को सरकार की ओर से क्या सुविधाएं मिलेंगी और उस की कितनी सुरक्षा व्यवस्था होगी, इस की स्पष्ट व्याख्या होनी चाहिए.

प्रश्न: कांग्रेसी नेता और राजीव गांधी विशेष सुरक्षा दस्ते की वापसी को ले कर बेहद दुखी हैं. इस दस्ते के बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रपति की गाड़ी रोक ली गई और उस में बैठे लोगों के प्रति आश्वस्त होने के बाद उन्हें अंदर जाने दिया गया. यानी प्रधान मंत्री की सुरक्षा को राष्ट्रपति से भी खतरा था. घटना हो गई, परंतु इसे एक बड़े 'प्रोटोकाल' का उल्लंघन माना गया और सुरक्षा दस्ते के प्रमुख की छुट्टी कर दी गई.

मई 1989 में देश के समाज कल्याण मंत्रियों का सम्मेलन विज्ञान भवन में आयोजित था. राजीव गांधी संबोधन के लिए उस में आने वाले थे. विभिन्न राज्यों से आए मंत्रियों तथा उन के सचिवों को लिखित रूप से निर्देशित किया गया कि वे सुरक्षा की दृष्टि से अपने साथ कोई किताब या बस्ता न लाएं. उन के ब्रीफकेस और बैग बाहर ही जमा करा लिए गए.

राजीव गांधी की सुरक्षा उन्हें शायद अधूरी लगती है.

उत्तर: प्रधान मंत्री पद से हटने के बाद भी राजीव गांधी ने दो महीने तक विशेष सुरक्षा दस्ते की सुरक्षा बरकरार रख कर संसदीय कानून का उल्लंघन किया है. जिस दिन वह अपने पद से हटे थे, उसी दिन उन्हें विशेष सुरक्षा दस्ते को लौटा देना चाहिए था. वास्तव में सुरक्षा संबंधी शिकायत प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को होनी चाहिए, जो दो महीने तक विशेष सुरक्षा दस्ते की सुरक्षा से वंचित रहे.

प्रश्न: क्या यह सच है कि राजीव गांधी के सुरक्षा प्रश्न को राजनीतिक मामला बनाया जा रहा है?

उत्तर: कांग्रेस इस से राजनीतिक लाभ उठाना चाहती है. उन्हें राजीव की सुरक्षा के बजाय इस बात की अधिक चिंता है कि राजनीतिक सत्ता छिन जाने के बाद उसे कैसे हासिल किया जाए. नए प्रधान मंत्री तो पंजाब में भी खुलेआम घूमते हैं, लेकिन राजीव गांधी को लाल किले पर भी भय का भूत नजर आता है.

प्रश्न: सरकार ने राजीव गांधी की सुरक्षा के लिए जो इंतजाम किए हैं, क्या वे पर्याप्त हैं?

उत्तर: राजीव गांधी की सुरक्षा-व्यवस्था जरूरत से ज्यादा है. यदि एक व्यक्ति की सुरक्षा पर एक करोड़ रुपया खर्च होगा, तो इस अनुपात से बजट का एक बड़ा हिस्सा विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा पर ही चला जाएगा और सामाजिक कार्यों एवं विकास के लिए कुछ बचेगा ही नहीं.

प्रश्न: राजीव गांधी देश के कितने महंगे प्रधान मंत्री साबित हुए हैं? क्या उन की कड़ी सुरक्षाव्यवस्था लोकतंत्र प्रणाली से मेल खाती है?

उत्तर: राजीव गांधी की सुरक्षा पर पिछले कई वर्षों से सर्वाधिक खर्च किया गया है. उन की हार का एक प्रमुख कारण उन की कड़ी सुरक्षाव्यवस्था रही है, जिस ने आम जनता को उन से दूर कर दिया. उन की सुरक्षाव्यवस्था से राष्ट्रीय मोरचा सरकार को राजनीतिक घाटा नहीं है, घाटा आर्थिक अधिक है.

प्रश्न: बदले हुए माहौल में राजीव गांधी को कितनी सुरक्षा की जरूरत है?

उत्तर: राजीव गांधी को वर्तमान परिस्थितियों में कैबिनेट स्तर के मंत्री से 10 गुना से अधिक सुरक्षा नहीं दी जानी चाहिए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमलापति त्रिपाठी : नई सरकार की गफलत से यदि राजीव गांधी के जीवन को कुछ हो गया तो सत्तारूढ सरकार भी नहीं बच पाएगी.

साउथ ब्लाक स्थित प्रधान मंत्री कार्यालय में योजना आयोग से संबंधित बैठक थी. उस समय डाक्टर मनमोहन सिंह सिद्धू योजना आयोग के उपाध्यक्ष हुआ करते थे. प्रधान मंत्री कक्ष तक पहुंचने के पहले उन्हें प्रवेशद्वार पर सुरक्षा तलाशी देनी पड़ी. मंत्रिपरिषद के सदस्यों के साथ भी ऐसे हादसे होते रहे हैं. लेकिन उन की मजबूरी थी और वे अपने नेता अथवा व्यवस्था के खिलाफ बोल नहीं सकते थे.

यह सही है कि पंजाब की घटनाओं के संदर्भ में राजीव गांधी आतंकवादियों की 'हिट लिस्ट' में सब से ऊपर हैं. वर्तमान सरकार का यह दायित्व है कि वह पूर्व प्रधान मंत्री और उन के परिवार को सुरक्षा प्रदान करे. परंतु उन्हें वह सब सुरक्षाव्यवस्था प्रदान करना नामुमकिन है जो उन्हें प्रधान मंत्री के नाते प्राप्त थी. फिर भी सरकार को उन की उन आतंकवादियों से रक्षा करनी चाहिए, जिन से उन के जीवन को खतरा है.

फरवरी के प्रथम सप्ताह में राजीव गांधी के सुरक्षा दस्ते को वापस लिए जाने के सरकारी निर्णय के खिलाफ कांग्रेसियों में तीखी प्रतिक्रिया हुई और उन्होंने यहां तक चेतावनी दे डाली कि वे राजीव गांधी की सुरक्षा में किसी कटौती या ढिलाई को सहन नहीं करेंगे.

राजीव गांधी की ओर से पार्टी के प्रवक्ता ने राजीव गांधी की सुरक्षा से विशेष सुरक्षा दस्ते की वापसी को अनुचित बताया और कहा कि इस की स्थापना राजीव गांधी के जीवन की रक्षा के लिए की गई थी. उन के जीवन को खतरा बने रहने के बाद भी कुशल दस्ते की वापसी न केवल अनुचित है वरन उन के जीवन से खिलवाड़ है.

इस के बदले में पार्टी ने सुझाव दिया कि सरकार संबंधित कानूनों में संशोधन करने के लिए अध्यादेश ला सकती है. इस के साथ ही पार्टी प्रवक्ता ने इस बात पर अफसोस जाहिर किया कि पिछली कांग्रेस सरकार यह एहसास करने में असफल रही कि यह भी नौबत आ सकती है कि राजीव गांधी सत्ता से बाहर भी हो सकते हैं, अन्यथा उन की व्यक्तिगत सुरक्षा को कानूनी रूप दिया जा सकता था.

राजीव गांधी के अलावा पूर्व गृह मंत्री बूटा सिंह को भी उन की सुरक्षा में कटौती किए जाने पर तकलीफ है और वह कहते हैं कि सरकार उन की सुरक्षा कम कर के आतंकवादियों को संतुष्ट कर रही है.

कांग्रेस के वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध नेता कमलापति त्रिपाठी ने प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से राजीव गांधी की सुरक्षा के बारे में व्यक्तिगत रूप से भी बात की और यहां तक चेतावनी दे डाली कि सरकार की गफलत से यदि राजीव गांधी के जीवन को कुछ हो जाता है तो नई सरकार भी नहीं बच पाएगी.

कांग्रेसी नेताओं के इस रुख से साफ है कि कांग्रेस पार्टी चुनाव में पराजय के बाद सुरक्षा के मुद्दे को आम जनता का मुद्दा बनाने का प्रयास कर रही है, जिस से नई सरकार को देश के भावनात्मक कठघरे में खड़ा किया जा सके और पार्टी एवं उस के नेता के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोई हुई सहानुभूति पुनः प्राप्त की जा सके. सरकार द्वारा आवश्यक सुरक्षा प्रबंध कर दिए जाने के बाद यह मामला सुरक्षा का कम राजनीतिक अधिक बनता जा रहा है.

प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने राजीव गांधी की सुरक्षाव्यवस्था के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया है कि पद से बाहर हो जाने के बाद भी उन की सुरक्षा पर एक करोड़ रुपए प्रतिवर्ष सरकारी खजाने से खर्च होंगे और उन की चौकसी के लिए 150 राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड तैनात रहेंगे. उन्हें तथा उन के परिवारजनों को 'बुलेट प्रूफ' गाड़ियां उपलब्ध होंगी. इस के बाद भी राजीव गांधी और उन की पार्टी को शिकायत है कि उन की सुरक्षा के लिए विशेष सुरक्षा दस्ते को क्यों तैनात नहीं किया जा रहा है, जो अब तक उन की सुरक्षा करता रहा है.

इस बारे में दो मत नहीं है कि राजीव गांधी की पर्याप्त सुरक्षा की जानी चाहिए. इस आरोप से बचने के लिए कि बदले की भावना से कुछ किया जा रहा है, सरकार ने उन्हें अधिकतम सुरक्षा प्रदान की है. परंतु सुरक्षा के नाम पर राजीव गांधी का प्रधान मंत्री के समकक्ष बाह्य रूप खड़ा किया जाना शायद अधिक उचित नहीं माना जा सकता है. यह सरकार की अपनी मजबूरी है.

विशेष सुरक्षा दस्ता विशेष परिस्थितियों में प्रधान मंत्री की सुरक्षा के लिए गठित किया गया था. राष्ट्राध्यक्ष को भी इस विशेष सुविधा से वंचित रखा गया है. कानूनी तौर से जब राष्ट्रपति और कैबिनेट के अन्य मंत्रियों को यह सुरक्षा प्राप्त नहीं हो सकती है तो यह कैसे न्यायसंगत हो सकता है कि यह सुरक्षा किसी व्यक्ति को पूर्व पदाधिकारी के रूप में दी जाए.

यदि ऐसा होता है तो विशेष सुरक्षा दस्ते की सुरक्षा सुविधा अन्य वर्तमान राजनेताओं के लिए उपलब्ध कराना जरूरी हो जाएगा. फिलहाल सरकार ने विशेष सुरक्षा दस्ते को विघटित न करने तथा प्रधान मंत्री तक ही उस की सुरक्षा का दायित्व सीमित रखने का फैसला किया है. ●

"मेरे पति दूरदर्शी न होते तो हम सचमुच मुसीबत में फंस जाते. चुनाव हारने के डर से पार्टी से मिला फंड इन्होंने बचा लिया था."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुसकान

मैं विश्वविद्यालय परिसर में स्थित बैंक से कुछ रुपए निकालने गया था. हाथ में टोकन लिए प्रतीक्षा करते जब कुछ विलंब हुआ तो मैं ने बैंक के अंदर जा कर कारण जानना चाहा.

जब लौट कर आया तो मेरी बारी आ चुकी थी. मैं ने टोकन के लिए जेब में हाथ डाला तो काटो तो खून नहीं. जेब में टोकन नहीं था.

मेरी परेशानी देख कर रोकड़िए ने मुसकराते हुए मुझे संबोधित किया, "आप गलती से और शायद जल्दी में टोकन खिड़की पर ही भूल गए थे. आप के पास खड़े एक विद्यार्थी ने वह टोकन मुझे दे दिया था. अब आप कृपया अपने रुपए ले लें."

—विनोद आनंद

*

मैं साइकिल पर स्कूल से घर आ रही थी. मेरा बैग कैरियर पर था. जब मैं घर पहुंची तो यह देख कर हैरान रह गई कि मेरा बैग कहीं गिर गया है. बैग में कापीकिताबों के अलावा विद्यालय शुल्क भी था जो किसी कारणवश मैं उस दिन जमा नहीं कर सकी थी.

रात में एक व्यक्ति खोजतेखोजते मेरे घर आया. उस ने मेरा बैग मुझे सौंप दिया. पूछने पर उस ने बताया कि उसे बैग रास्ते में पड़ा मिला था. पहले वह उस में मिले मेरी एक सहेली के पते पर गए. और सहेली से मेरा पता ले कर बैग देने मेरे घर आए थे.

—संगीता शर्मा

*

भयंकर बरसात के उस मौसम में एक दिन मैं ने सुबहसुबह स्कूल जाने का निश्चय किया. बारिश की वजह से मैं दीवारों की ओट में लुकताछिपता जा रहा था कि अचानक एक दीवार ने ढहना शुरू कर दिया. यह सब इतना अचानक हुआ कि मैं अभी पूरी तरह संभल भी न पाया था कि मलबे ने मुझे पूरी तरह ढक लिया. मुझे कुछ नहीं सूझ रहा था.

वह तो भला हो उस महिला सफाई कर्मचारी का, जिस ने चिल्लाचिल्ला कर गांव के लोगों को इकट्ठा कर लिया, वरना तो किसी को मालूम ही नहीं होता कि मैं मलबे में दबा हुआ हूं.

उस के बाद मुझे चरखा दादरी स्थित हस्पताल पहुंचाया गया, जहां मेरा इलाज हो सका.

—नरेंद्र कु. अनेजा

*

मध्य रात्रि का समय था. पंचगनी हस्पताल से वापिस घर आते वक्त मेरी सहेली की कार खराब हो गई. काफी प्रयास के बावजूद उस के पति गाड़ी ठीक न कर सके.

संयोग से एक अन्य कार वहां आ कर रुक गई, जिस में एक परिवार यात्रा कर रहा था. हालांकि उन्हें दूर जाना था, इस के बावजूद उस परिवार के दो सदस्यों ने डेढ़ घंटा मेहनत की तब कहीं जा कर कार पुनः चालू हो सकी.

गाड़ी ठीक न होने की दशा में उस रात की भयंकरता की कल्पना कर मेरी सहेली आज भी उस परिवार के बड़प्पन की बात करती है.

— कुसुम बसंत ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने की पहली तारीख है. बैंक मैनेजर की पत्नी शाम को अपने पति के लौटने का इंतजार बेसब्री से कर रही है क्योंकि उस के पति को पदोन्नति के पश्चात इस महीने से 7,000 रुपए मासिक वेतन जो मिलेगा. उस ने 7,000 रुपए के खर्च का बजट बना रखा है—अपने लिए साड़ी, मुन्ने के लिए नई पोशाक, पति के लिए सफारी सूट का कपड़ा इत्यादि. लेकिन शाम को पति ले कर आते हैं केवल 5,500 रुपए. बाकी रकम कहां गई? इस प्रश्न का उत्तर मुंह लटका कर पति महाशय देते हैं, "इनकम टैक्स कट गया" और, पत्नी लगती है कोसने अपनी सौत आयकर को.

रात अधिक हो चुकी है. सब सो चुके हैं लेकिन सेठजी जाग रहे हैं और दुकान पर चारपांच मुनीमगुमाश्तों के रहते हुए भी अपने हाथ से ही कुछ परचियां पता नहीं कहां से निकाल कर उन्हें एक छोटी डायरी में छोटेछोटे अक्षरों में लिख रहे हैं. क्या लिख

लेख ● रामनिवास लखोटिया

आयकर हटाओ

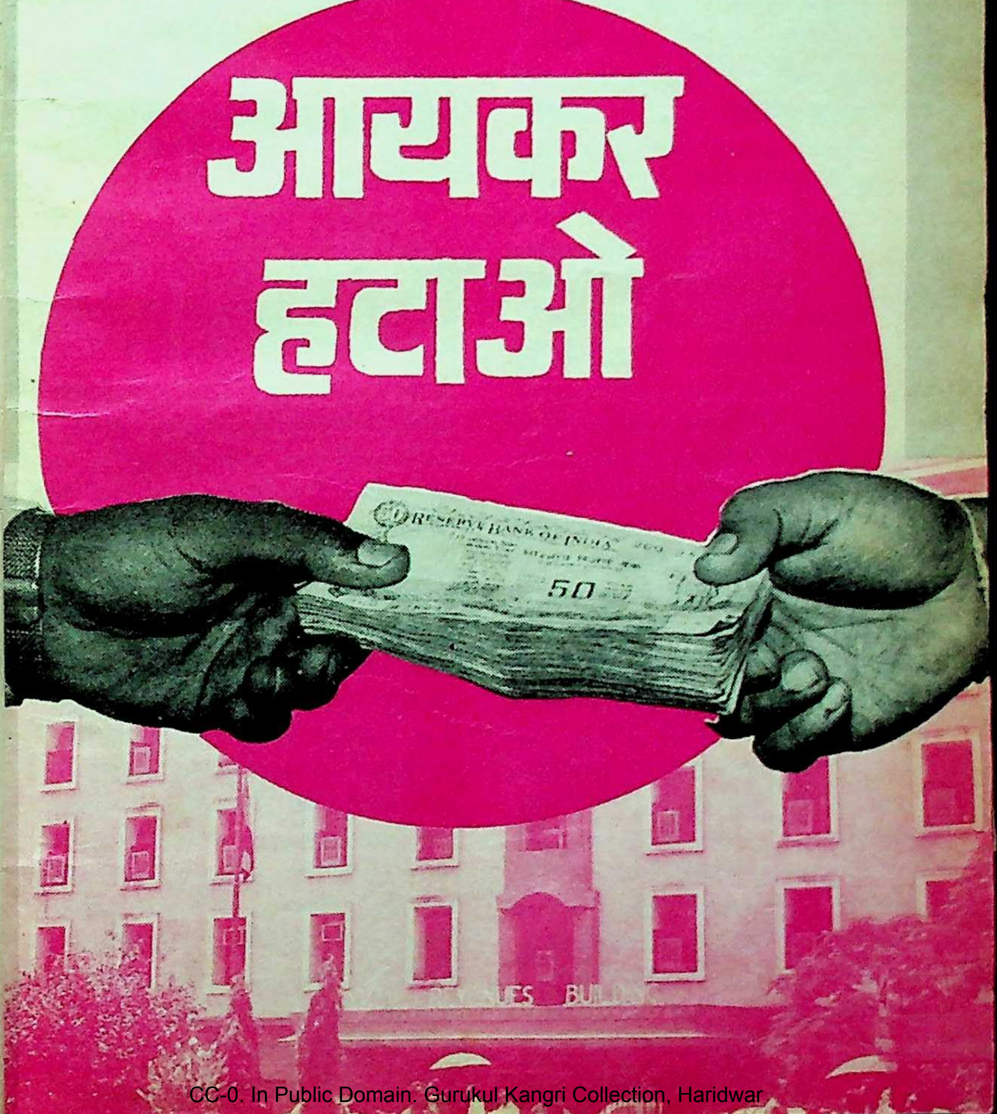

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं? बहीखाते से बाहर के लेनदेन, खरीदफरोख्त का हिसाब. ऐसा ही जाने कितने लोग कशमीर से कन्याकुमारी तक कर रहे हैं.

अब आइए, नई दिल्ली की भव्य कालोनी के एक बड़े पार्क में, जहां एक बड़ा सुंदर सा शामियाना सजा है. नए चमकदार झाड़ों की रोशनी से आंखें चुंधिया रही हैं. हजारों मेहमान शादी की दावत पर आजा रहे हैं. लाखों का खर्च है लेकिन बहियों में दिखाया जा रहा है मात्र 10,000 रुपया. इसी प्रकार बाजारों में फैशन की होड़ सी लगी रहती है. परंतु गरीब दिन पर दिन गरीब होता जा रहा है और अमीर दिन पर दिन अधिक अमीर.

कालेधन में वृद्धि. सार्वजनिक वित्त एवं नीति संबंधी राष्ट्रीय परिषद ने 1985 में एक बड़े सर्वेक्षण के पश्चात अपनी रिपोर्ट में इस आश्चर्यजनक रहस्य का उद्घाटन किया कि प्रत्येक वर्ष कम से कम 37,000 करोड़ रुपए का टैक्स से बचाया धन देश में इकट्ठा होता है. जिस का आर्थिक स्थिति एवं नैतिकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. जबकि कुल आयकर जो सरकार प्राप्त कर पाती है, वह इस कालेधन की तुलना में नगण्य है.

केंद्रीय बजट के अनुसार वित्तीय वर्ष 1989-90 में निगमकर (कंपनियों पर लगने वाला आयकर) की अनुमानित आय 4,755 करोड़ रुपए होगी तथा वास्तविक आयकर की कुल 1,117 करोड़ रुपए. इस के

कालेधन की समस्या से निबटने और देश व देशवासियों की उन्नति के लिए यह जरूरी है कि कालेधन का पूरी तरह सफाया हो. लेकिन सवाल है कि ऐसा कैसे हो? इस का एक ही हल हो सकता है—आयकर को पूरी तरह समाप्त कर देना और इस के लिए जरूरी है सरकार की अदम्य इच्छा शक्ति. क्या सरकार ऐसा कर पाएगी?

ऐसी हालत में आम आदमी सोचने को विवश हो जाता है कि ऐसी अनेक समस्याओं का मूल कारण क्या है? अनुसंधान करने पर पता लगता है कि उस रोग का नाम है—इनकम टैक्स अर्थात आयकर. भारत की अधिकांश आर्थिक बीमारियों का इलाज केवल एक मूल रोग का उपचार करने से यानी इनकम टैक्स के हटाने से ही हो जाएगा. 'गरीबी हटाओ' का नारा तो केवल वोटों की राजनीति तक ही सीमित रहा, लेकिन 'आयकर हटाओ' केवल नारा नहीं, बल्कि हकीकत है, एक आवश्यकता है, एक ऐसी रामबाण दवा है जिस से सारे कष्ट कट जाएंगे. हां, आयकर के साथसाथ उपहार कर तथा धनकर भी हटाना ही होगा.

यह एक विडंबना है कि जितने रुपए पर आयकर लगता है उस से कहीं अधिक आमदनी आयकर लगने से वंचित रह जाती है. परिणाम होता है कर की चोरी एवं

अतिरिक्त धनकर से अनुमानतः मात्र 120 करोड़ रुपए आय होगी. इस के विपरीत सीमा शुल्क तथा उत्पादन शुल्क आदि से वर्ष 1989-90 में अनुमानतः आय होगी 40,380 करोड़ रुपए.

आयकर हटाने से ही कालेधन एवं घोषित धन का भेद समाप्त हो जाएगा. फिर आमदनी और संपत्ति को छिपा कर रखने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी और न ही रहेगी आयकर चोरी की समस्या. बैंकों में खुल कर अरबों रुपया जमा होगा, जिस का उपयोग राष्ट्र के आर्थिक विकास में होगा. जितना राजस्व केंद्र सरकार को आयकर के हटाने से कम मिलेगा उससे कहीं अधिक पूर्ति तो बढ़े हुए उत्पादन पर उत्पादन शुल्क के माध्यम से ही हो जाएगी. बिक्री कर की चोरी न्यूनतम होगी क्योंकि आयकर का भय नहीं रहेगा और बिक्रीकर का भार व्यापारी आसानी से ग्राहक पर डाल सकेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की आर्थिक प्रगति के लिए आयकर कर्मचारियों को नए कार्यों में समाविष्ट कर देना ही आयकर उन्मूलन की पहली मुख्य समस्या का विकल्प है.

अंततः बिक्रीकर भी समाप्त कर के उस के स्थान पर उत्पादन शुल्क ही लगाना होगा.

आर्थिक विषमता में कमी: आयकर लगाने का एक बड़ा उद्देश्य जो उस के पक्ष में बताया जाता है वह है आर्थिक विषमता को कम करना. लेकिन सही स्थिति यह है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आयकर कानून के बावजूद आर्थिक विषमता बढ़ी है, घटी नहीं. बल्कि बेहिसाबी धन वालों की एक नई जमात बन गई है, जो आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था के लिए नासूर बन गई है. इसलिए आयकर हटाने से आर्थिक विषमता कम ही होगी, बढ़ेगी नहीं.

बेबुनियाद आयकर छापों से मुक्ति: आयकर कानून के अंतर्गत आयकर अधिकारी अघोषित आय व संपत्ति की खोज निकालने के लिए छापे डालते हैं और घरपरिवार की गोपनीयता पर कुठाराघात करते हैं. जब आयकर ही नहीं रहेगा तो अमानुषिक छापों से जनता को भी राहत मिलेगी और मुजफ्फरनगर जैसी घटनाओं से अफसरों को भी. इस प्रकार हिंसा के स्थान पर प्रेम व सौहार्द का वातावरण बनेगा. फिर आयकर के मामले में दंड, जुर्माना, जेल आदि सजाओं की आवश्यकता ही नहीं रहेगी.

वेतनभोगी कर्मचारी को राहत: आयकर हटाने से सब से अधिक राहत मिलेगी वेतनभोगी कर्मचारियों को. जब आयकर के कृत्रिम कानून ही नहीं रहेंगे तो मालिक अपने कर्मचारियों को स्पष्ट रूप से बिना किसी दुरावछिपाव के वेतन, भत्ते एवं अन्य लाभ दे सकेंगे, न कि नियमों को तोड़मरोड़ कर गलत ढंग से. इस प्रकार कर्मचारियों को वेतनभत्ते तथा अन्य सुविधाएं खुल कर मिल सकेंगी.

विदेशी मुद्रा में वृद्धि: यह निर्विवाद है कि निर्यात मुनाफे पर आयकर हटाने से भारत के निर्यात व्यापार में आशातीत वृद्धि हुई है. आयकर हटाने से विदेशी मुद्रा के अर्जित होने पर कोई भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा. जैसे कृषि पर आयकर नहीं होने से कृषि उत्पादन को बढ़ावा मिला है, वैसे ही आयकर के हटाने से आर्थिक प्रगति और विशेषकर विदेशी मुद्रा के अर्जित करने में प्रेरणा मिलेगी. व्यापारी वर्ग अपनी अर्जित विदेशी मुद्रा को विदेशों में अनियमित ढंग से न रख कर नियमित ढंग से भारत में ही लाना पसंद करेगा. जब उसे यह मालूम होगा कि उसे आयकर एवं धन कर से पूर्ण मुक्ति मिल रही है.

अनैतिकता और भ्रष्टाचार की समाप्ति: आयकर हटने से जिस राष्ट्रीय बीमारी पर सब से बड़ा कुठाराघात होगा वह है—अनैतिकता. आज कालेधन को पकड़ने के लिए सरकार अनैतिकता को बढ़ावा दे रही है. छिपी आय की गुप्त सूचना देने पर आयकरमुक्त इनाम के कारण घरेलू नौकर, ईर्ष्यालू रिश्तेदार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनीम, असंतुष्ट कर्मचारी आदि ऐसे इनाम के लोभ में विश्वास का गला घोंट कर उन बातों को आयकर अधिकारियों के समक्ष जाहिर करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते जो कि उन पर भरोसे के कारण उन्हें मालूम हुई थीं. जब आयकर ही नहीं रहेगा तो इस प्रकार के विश्वासघात एवं अनैतिक इनामों की आवश्यकता ही नहीं रहेगी.

आर्थिक विकास को बढ़ावा: आयकर के हटते ही जो सब से बड़ा लाभ होगा, वह है देश की आर्थिक उन्नति को. इस के बाद में सब धन एक जैसा ही होगा. इस समय जो करोड़ों घंटे आयकर को बचाने, आय को छिपाने आदि में खर्च होते हैं, वे देश की आर्थिक प्रगति के लिए लगेंगे. समय का दुरुपयोग रुकेगा. हजारों टन कागज की बचत होगी. इस से पेड़ कम काटने पड़ेंगे. तो फिर पर्यावरण सुधरेगा और स्वास्थ्य तथा आम जीवन पद्धति में सुधार होगा. आयकर की लाखों अपीलों में करोड़ों घंटों का समय नष्ट करने के बजाय उस समय का सदुपयोग देश की औद्योगिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए हो सकेगा.

यह सर्वविदित है कि हमारा आयकर कानून कितना जटिल है. 1985 के बाद ही सरलीकरण के नाम पर उस में सैकड़ों परिवर्तन किए गए हैं और कई परिवर्तनों को बिना लागू किए ही निरस्त करना पड़ा है. इससे देश की प्रबुद्ध जनता के करोड़ों घंटे व्यर्थ में ही नष्ट हो गए हैं और हो रहे हैं. जब आयकर ही हट जाएगा तो यह सब श्रम बचेगा और देश की आर्थिक प्रगति में लग सकेगा.

आयकर हटाने से फुजूल खर्चों पर भी अंकुश लगेगा. आज आयकर में कटौती मिलने के कारण कई फालतू वायुयान यात्राएं, होटल खर्च, दिखावे के खर्चे, विज्ञापन खर्च आदि हो रहे हैं. जब आयकर ही नहीं रहेगा तो आयकर की कटौती से संबंधित अरबों रुपए के फुजूल खर्चे स्वतः ही कम हो जाएंगे, जिस से देश की बचत पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा.

इस प्रकार आयकर हटाने से लाभ ही लाभ है. तो फिर सरकार आयकर हटाने में क्यों संकोच करती है. इस का एक मात्र कारण है आर्थिक मामलों में निर्भीकता की कमी. आयकर उन्मूलन से जो पहली समस्या पैदा होगी वह है कि आयकर दफ्तर के अफसरों एवं कर्मचारियों का क्या किया जाए. इस का हल आसान है. देश की आर्थिक प्रगति के लिए नए कार्यों में उन्हें धीरेधीरे समाविष्ट कर लिया जाएगा.

केंद्रीय सरकार के राजस्व में आयकर हटाने से लगभग 6,000 करोड़ रुपए की कमी होगी. सरकार के सामने यह सब से बड़ी समस्या है. लेकिन वास्तव में यह समस्या रहेगी ही नहीं. जब कालाधन समाप्त हो कर देश की आर्थिक प्रगति में बैंकों के माध्यम से खुला धन सामने आएगा तो बढ़े हुए उत्पादन पर अतिरिक्त उत्पादन शुल्क से ही राजस्व की अधिकांश कमी की पूर्ति हो जाएगी.

फिर सरकार को भी अपने खर्चे में कटौती करनी होगी. 1989-90 के बजट के अनुसार वित्तीय वर्ष 1989-90 में अनुमानित राजस्व भुगतान की राशि है 85,295 करोड़ रुपए. इस में केवल 5% की कटौती एवं सूझबूझ से खर्चे की कमी करने से ही लगभग 4,000 करोड़ रुपए की बचत हो सकती है. कुल मिला कर सरकार को उत्पादन शुल्क आदि से ज्यादा ही राजस्व मिलेगा.

ऐसी दशा में राजस्व की कमी का तो प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि सरकार के अपने अनुभव के आधार पर ही यह कहा जा सकता है कि थोड़ा सा आयकर कम करने से आयकर राजस्व बढ़ा ही है, घटा नहीं. तो फिर पूर्णतः आयकर हटाने से तो देश की जो प्रगति होगी और देशवासियों को जो राहत मिलेगी वह अवर्णनीय है. इस प्रकार राष्ट्र को 21 वीं शताब्दी में ले जाने के लिए एक नया आर्थिक ढांचा देश के सामने प्रशस्त होगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आंध्र प्रदेश में कांग्रेस के लिए रास्ता मैं ने ही साफ किया था."

जमुना

प्रसिद्ध अभिनेत्री व सांसद

भेंटवार्त्ता • प्रदीप कुमार श्रीवास्तव

राष्ट्रपति के अभिभाषण के दिन संसद के केंद्रीय कक्ष में दो महिला सांसद पूरे कक्ष के आकर्षण का मुख्य केंद्र बनी हुई थीं. संयोग से दोनों ने ही लगभग एक ही तरह की हरे रंग की सुनहरे बार्डर वाली साड़ी पहन रखी थी. दोनों दक्षिण भारत से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा के लिए चुनी गई थीं. दोनों ने ही दक्षिण भारतीय भाषाओं की फिल्मों के साथसाथ हिंदी फिल्मों में भी मुख्य अभिनेत्री की भूमिका में 25 वर्षों से भी अधिक समय तक काम किया था. पर अभी भी उन के चेहरे की आभा तथा व्यक्तित्व का आकर्षण जस का तस बना हुआ था.

इन में एक तो वैजयंती माला थीं. वह पिछली लोकसभा की भी सदस्या रह चुकी थीं. दूसरी आंध्र प्रदेश के राजामुंदरी निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित हो कर लोकसभा में पहुंचीं मशहूर अभिनेत्री जमुना थीं. जमुना हालांकि पहली बार लोकसभा में पहुंची हैं, पर उन का राजनीतिक महत्त्व वैजयंती माला से फिलहाल काफी अधिक है. आंध्र प्रदेश की राजनीति में छाए नंदमुरि तारक रामाराव के फिल्मी करिश्मे को न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश में जिस समय रामाराव का जादू सिर चढ़ कर बोल रहा था, उस समय उन का विरोध करना आसान नहीं था. लेकिन राजामुंदरी से लोकसभा के लिए चुनी गई मशहूर अभिनेत्री जमुना ने न केवल रामाराव का विरोध किया बल्कि हाल में हुए चुनावों में कांग्रेस को आंध्र में ऐतिहासिक विजय भी दिलवाई. प्रस्तुत है उन से की गई बातचीत के प्रमुख अंश.

केवल उन्होंने पहली बार तोड़ा था बल्कि बकौल उन के तेलगू देशम की हवा के विरुद्ध उन्होंने वहां कांग्रेस के लिए रास्ता भी तैयार किया था.

यह वह समय था जब रामाराव की 'तेलुगू देशम पार्टी' आंध्र प्रदेश में भारी बहुमत के साथ सत्ता में बनी हुई थी और लोकसभा में भी गैर कांग्रेसी दलों में सब से अधिक सीट प्राप्त होने की वजह से उसे प्रमुख विपक्षी दल का दर्जा प्राप्त था. 'कृष्ण' की भूमिका के लिए आंध्र प्रदेश में लोकप्रिय बने तत्कालीन मुख्य मंत्री नंदमुरि तारक रामाराव के विरुद्ध फिल्मों में सत्यभामा की भूमिका के लिए मशहूर जमुना के भाषणों को आंध्र प्रदेश की आम जनता ने पहले आश्चर्य से सुना, फिर समझने की कोशिश की. कुछ ही दिनों में जमुना आंध्र प्रदेश में कांग्रेस की चुनाव सभाओं के लिए भारी भीड़ जुटाने का मुख्य साधन बन गईं.

पिछले दिनों नई लोक सभा के प्रथम सत्र में जब जमुना दिल्ली आई थीं तो उन की फिल्मी, सामाजिक व राजनीतिक भूमिका को ले कर उन से देर तक बातचीत हुई. पूरी बातचीत में कई बार उन के खुले ठहाके सुनने को मिले. जमुना हिंदी भी अच्छी बोलती हैं, पर हिंदी बोलते समय उच्चारण में प्रादेशिकता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है.

अभी तक जमुना करीब 200 तेलुगू, तमिल, कन्नड़ व हिंदी फिल्मों में काम कर चुकी हैं. "बचपन में नाटकों में भाग लेती थी. एक बार दक्षिणी फिल्मों के मशहूर निर्मातानिर्देशक व अभिनेता डाक्टर राजाराव ने मुझे स्टेज पर काम करते देखा. अपनी फिल्म में काम करने का 'आफर' दिया. 1952 में मेरी पहली फिल्म 'पट्टीलू' (मायका) बनी. उस समय मैं 13 वर्ष की थी. 'पट्टीलू' में मैं हीरोइन थी."

यह संयोग है कि नंदमुरि तारक रामाराव की प्रमुख आलोचक बनी जमुना की पहली हिंदी फिल्म 'नया आदमी' में फिल्म के हीरो नंदमुरि तारक रामाराव ही थे. फिल्म अत्यंत सफल हुई. इस फिल्म में अनवर हुसैन व हेलन को छोड़ कर बाकी सारे कलाकार दक्षिण के ही थे. 'नया आदमी' के बाद रामाराव और जमुना की

◀ जमुना सत्यभामा की भूमिका में : रामाराव के साथ कई फिल्मों में अभिनय करने पर भी उन के विरोध का सब से पहले बीड़ा उठाया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी लगभग 50 फिल्मों में आई.

जमुना की अन्य हिंदी फिल्मों में 'मिस मेरी', 'हमराही' (राजेंद्रकुमार के साथ), 'मिलन', 'बेटीबेटे' (सुनील दत्त के साथ), 'रिश्तेनाते' (राजकुमार के साथ), 'नौकर बीवी का' (धर्मेंद्र के साथ) दुलहन आदि प्रमुख हैं. 'मिलन' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला था. जमुना की आखिरी हिंदी फिल्म 'राजतिलक' है. अनेक सितारों वाली फिल्म राजतिलक में राजमाता की मुख्य भूमिका (कमल हासन की मां) उन्होंने ही की थी.

बातचीत में जमुना अपनी सामाजिक उपलब्धियों पर अधिक जोर देती रहीं. करीब 12 वर्ष पहले उन्होंने सामाजिक क्रियाकलापों में हिस्सा लेना शुरू किया था. इस क्षेत्र में वह अपनी सब से बड़ी उपलब्धि 'आंध्र प्रदेश प्रोफेशनल थिएटर आर्टिस्ट फेडरेशन' को मानती हैं.

उन्होंने इस के लिए कई वर्षों तक प्रयास किया है. पेशेवर रंगकर्मी संघ दरअसल एक ऐसी संस्था है जिस के न केवल रंगमंच के कलाकार बल्कि लोक नृत्य, हस्तशिल्प व उसी तरह की अन्य कलाविधाओं

जो लोग रामाराव के सिवाय किसी और को कुछ मानते ही न थे वे भी जमुना की सभाओं में जुटने लगे थे.

से जुड़े लोग भी सदस्य बन सकते हैं. उन की कई तरह से मदद की जाती है.

"दो साल तक मैं ने घूमघूम कर इन कलाकारों को इकट्ठा किया है. इस समय इस संस्था में करीब 10 हजार सदस्य हैं. उन को संस्था की ओर से उन के काम में आने वाले औजार, वाद्ययंत्र आदि बंटवाए गए. सरकार से भूमि का पट्टा दिलवाया गया. इस के पहले आंध्र प्रदेश में किसी कलाकार को एक गज जमीन भी नहीं दी गई थी. मैं ने अपनी संस्था की सहायता से 3000 लोगों को 25-25 गज भूमि का पट्टा दिलवाया. इन में से 25 व्यक्ति तो मेरे निर्वाचन क्षेत्र राजामुंदरी के ही हैं. इस के अलावा इन को हम समयसमय पर सम्मानित भी करते हैं, केवल प्रमाणपत्रों व शालदुपट्टों से ही नहीं, बल्कि ठोस आर्थिक सहायता के साथ."

जमुना गर्व के साथ बताती हैं कि फेडरेशन द्वारा कई वृद्ध कलाकारों को 50 से 100 रुपए प्रतिमास वृद्धावस्था पेंशन दी जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है. "इस के लिए एक पैसे की भी सरकारी सहायता नहीं ली गई."

इस ओर आप का ध्यान कैसे गया? इस के जवाब में उन का दिया गया तर्क बेहद प्रभावशाली था. "मैं ने देखा सामाजिक आधार पर गरीब व पिछड़े लोगों को कुछ सहायता मिल ही जाती है, जैसे आरक्षण के जरिए, बैंकों द्वारा दिए गए ऋण के जरिए. पर जो गरीब व असहाय कलाकार हैं उन को कोई नहीं पूछता. चूंकि मैं खुद कलाकार हूं, इसलिए मैं दूसरे कलाकारों के दर्द को आसानी से समझ सकती हूं. मैं ने यह भी देखा है कि अधिकतर लोग फिल्मों में रंगमंच के जरिए पहुंचते हैं, पर एक बार फिल्म में प्रवेश पाने के बाद वे रंगमंच को भूल जाते हैं. मैं ऐसा नहीं चाहती थी."

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सामाजिक कार्यों, फिल्म व राजनीति जैसे व्यस्त क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग लेने के बावजूद जमुना का घरेलू जीवन खुशहाल व सफल माना जाएगा. इन के पति रमन राव हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय में प्राणी विज्ञान के प्रोफेसर हैं. अपनी पत्नी के कैरियर में उन का शुरू से ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है. दो बच्चों में बड़ा बेटा बंगलौर में इंजीनियरिंग की शिक्षा ले रहा है. छोटी बेटी 10 वर्ष की है और हैदराबाद में चौथी कक्षा में पढ़ रही है.

जब जमुना से बात हो रही थी तो उन का लड़का वमसी कृष्णा भी वहां मौजूद था. हालांकि अपनी मां के राजनीतिक कामकाज में वमसी भी हाथ बंटाता है, पर यह पूछे जाने पर कि क्या भविष्य में उस का भी राजनीति में आने का इरादा है, इस ने दोटूक जवाब दिया, "संभवतः यह आखिरी चीज होगी जिस के बारे में मैं सोचूंगा." पर फिल्म लाइन के बारे में पूछने पर उस ने हिचकते हुए जवाब दिया, "अभी इस बारे में मैं ने कुछ सोचा नहीं है. ऐसा कोई प्रस्ताव आया तो मैं मां से राय लूंगा." जमुना के सक्रिय राजनीति में आने से परिवार पर पड़े किसी प्रभाव के बारे में पूछने पर उस ने हंसते हुए बताया, "मां का जीवन शुरू से ही व्यस्त रहा है. पिताजी के साथसाथ हम लोगों को भी बचपन से ही आदत बन गई है."

राजामुंदरी क्षेत्र से अच्छेखासे वोटों से हुई अपनी जीत के बारे में जमुना बताती हैं कि उन के घरेलू जीवन का भी यहां के लोगों पर, विशेष कर महिला वर्ग पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ा है. "बहुत कम फिल्म अभिनेत्रियों की निजी जिंदगी इस तरह साफसुथरी होती है. मेरा प्रेमविवाह नहीं है. किसी 'प्रेम प्रसंग' की चर्चा भी कभी नहीं रही. पतिपत्नी व बच्चों के बीच भरपूर प्यार है. इस ने मुझे लोकप्रिय बनाने में सहायता की. औरतों ने मुझे अभिनेत्री से अधिक घरेलू महिला के रूप में पसंद किया है. व्यस्तता के बावजूद मैं अपने घर का पूरा ध्यान रखती हूं. मेरे निर्वाचन क्षेत्र में महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक है. राजामुंदरी में महिलाओं के वोट पुरुषों से करीब 50 हजार ज्यादा हैं."

फिल्मी, सामाजिक जीवन की तरह जमुना का राजनीतिक जीवन भी अभी तक सफल कहा जाएगा. हालांकि 1985 में मंगलगिरि के विधान सभा उपचुनाव में कांग्रेस की टिकट पर वह चुनाव लड़ी थीं और उस में हार गई थीं, पर इस हार को वह 'एन.टी.आर. की सामंतशाही प्रवृत्ति' का परिणाम बताती हैं. उन के अनुसार मंगलगिरि के प्रशासनिक अधिकारियों को रामाराव ने किसी भी तरह 'जमुना को पराजित करने का' निर्देश दिया था.

बहरहाल 1983 से सक्रिय राजनीतिक जीवन की शुरुआत करने के बाद जमुना धीरेधीरे आंध्र प्रदेश की जनता में लोकप्रिय बनती गईं. आंध्र प्रदेश की करीब 50 फीसदी जनता इन को सुन चुकी है. वह चुनाव प्रचार के दौरान पूरे आंध्र प्रदेश का दौरा कर चुकी हैं.

पिछले नगरपालिका के चुनावों में भी कांग्रेस की ओर से चुनाव प्रचार की प्रमुख जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई थी. उन के अनुसार लोकसभा के साथ हुए विधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमुना केवल तेलुगू फिल्मों तक ही सीमित नहीं रही थीं, उन्होंने कई हिंदी फिल्मों में भी सफलतापूर्वक अभिनय किया.

सभाई चुनावों में उन के लोकसभाई निर्वाचन क्षेत्र में सात में से छः विधान सभा सीटें कांग्रेस उन की लोकप्रियता व उन के धुआंधार चुनाव प्रचार के कारण ही अपनी झोली में डालने में कामयाब हुई है, "हालांकि इन सीटों पर कुछ कांग्रेसी उम्मीदवार अत्यंत कमजोर थे."

प्रश्नः आप राजनीति में कैसे आईं?

उत्तरः दरअसल मेरी सामाजिक गतिविधियों को देख कर 1978 में चेन्ना रेड्डी (आंध्रप्रदेश के तत्कालीन व वर्तमान मुख्य मंत्री) ने विधान सभा के चुनाव के लिए मुझे कांग्रेस पार्टी का टिकट देने की पेशकश की थी, पर उस समय मैं ने चुनाव लड़ने से इनकार किया था.

सक्रिय राजनीति में मैं 1983 से आई. उस समय रामाराव का आंध्र प्रदेश पर वर्चस्व था. कांग्रेस में रामाराव के मुकाबले के लिए फिल्म उद्योग में से किसी को लाने की कोशिश चल रही थी. संभवतः इस के लिए किसी ने इंदिरा गांधी को मेरा नाम सुझाया. अगस्त 1983 में दिल्ली से माखनलाल फोतेदार ने मुझे फोन किया कि इंदिरा गांधी मुझ से मिलना चाहती हैं.

हालांकि जब इंदिरा गांधी केंद्र में सूचना व प्रसारण मंत्री थीं तब से वह मुझे जानतीमानती थीं. पर हमारा यह संबंध केवल 'कला' की वजह से था. इंदिरा गांधी से जब मैं ने भेंट की तो उन्होंने मुझे कांग्रेस के लिए काम करने को कहा. मैं उन के व्यक्तित्व से प्रभावित थी और मैं ने हामी भर ली. उसी साल मेरा नाम आंध्र प्रदेश कांग्रेस कार्यकारी समिति में डाल दिया गया. इस के बाद मैं ने प्रदेश में घूमघूम कर रामाराव के विरुद्ध जनसभाओं में भाषण देना शुरू कर दिया.

प्रश्नः फिल्मों में बोलने व खुले मंच से आम जनता को संबोधित करने में अंतर होता है. क्या राजनीतिक भाषण करते समय शुरू में आप को परेशानी का अनुभव नहीं हुआ?

उत्तरः इस संबंध में मुझे खुद आश्चर्य है. शुरू में जब मैं ने आम सभाओं में बोलना शुरू किया तो उस समय मैं नहीं जानती थी कि मैं कैसे बोलूंगी, लेकिन मैं ने देखा मैं दोदो घंटे तेलुगू भाषा में धाराप्रवाह बोल रही हूं. मुझे अपनी इस प्रतिभा का पहले से अंदाजा नहीं था और मैं स्वयं इस से प्रभावित भी हुई. बाद में मैं ने महसूस किया कि मेरा यह गुण पैतृक है. मेरे पिताजी, मेरी मां, मेरे दादा जी स्वतंत्रता सेनानी और अच्छे वक्ता रह चुके हैं.

प्रश्नः रामाराव के साथ आप कई फिल्मों में रह चुकी हैं. आप लोगों की जोड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण व सत्यभामा के रूप में काफी मशहूर भी रही. आप ने अपने पुराने साथी के विरुद्ध जब बोलना शुरू किया तो शुरूशुरू में तो वहां की जनता पर उस का कुछ विपरीत असर ही पड़ा होगा?

उत्तर: मैं ने शुरू में वहां की जनता को यही तो बताना चाहा कि मैं रामाराव की सह अभिनेत्री होते हुए भी उन का आज क्यों विरोध कर रही हूं. रामाराव की कथनी व करनी में अंतर बताती थी. उस समय उन के विरुद्ध अगर कोई और कांग्रेसी बोलने की कोशिश करता तो पत्थर बरसने लगते. पर मेरी बात को लोगों ने सुनना शुरू कर दिया था.

आंध प्रदेश में कांग्रेस के लिए रास्ता मैं ने ही तैयार किया था. कांग्रेस में शामिल होने के कुछ महीने बाद नवंबर 1983 में 'पेद्दपल्ली' का विधान सभा उपचुनाव आया. आंध में तेलुगू देशम का प्रभाव था तो पेद्दपल्ली पर कम्यूनिस्टों का असर. रातदिन मैं वहां चुनाव सभाओं को संबोधित करती थी. मैं ने दो दिनों में 65 जनसभाओं में भाग लिया. कांग्रेस की सीट वहां से निकल गई. कांग्रेस के लिए वह उपचुनाव शायद इतिहास बन गया. पहली बार आंध प्रदेश के लोगों को मालूम हुआ कि रामाराव का जादू व प्रभाव झूठ है.

प्रश्न: एक संसद सदस्या की हैसियत से आगे काम करने के लिए आप ने अपनी खातिर क्या लक्ष्य निर्धारित किए हैं?

उत्तर: जाहिर है महिलाओं की समस्याओं पर मेरा सब से अधिक ध्यान रहेगा, पर चूंकि शुरू से मैं सामाजिक गतिविधियों से जुड़ी हूं इसलिए मैं गरीबों व दलितों के उत्थान के लिए भी काम करना चाहती हूं.

प्रश्न: दक्षिण भारत में आप ने राजनीतिक महिला के रूप में पहचान बना ली है. उत्तर भारत का आप कब दौरा कर रही हैं?

उत्तर: (हंसते हुए) उधर भी जाना चाहती हूं. जब आदेश मिलेगा तो उधर जरूर आऊंगी.

प्रश्न: अकसर देखा गया है कि चुने जाने के बाद सांसद, विशेष कर फिल्म क्षेत्र से आए सांसद अपने चुनाव क्षेत्र को भूल जाते हैं, राष्ट्रीय मुद्दों में उलझे रहते हैं या फिर फिल्म इंडस्ट्री को भी देखते रहते हैं. आप ने अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं पर भी क्या गौर किया है?

उत्तर: मैं ने अपने क्षेत्र में लोगों से केवल एक ही वादा किया है. मैं ने उन से कहा है, मैं आप से यहां बराबर मिला करूंगी.

जहां तक फिल्मों का सवाल है, मैं दो जगह पांव रखना नहीं चाहती. मैं ने अनन्य रूप से सक्रिय राजनीति को चुना है.

प्रश्न: राष्ट्रीय मोरचा सरकार के बारे में आप एक विपक्षी सांसद के रूप में क्या सोचती हैं? क्या यह पांच साल तक टिकी रहेगी?

उत्तर: उन्हें भी मौका मिलना चाहिए. वैसे इंतजार कीजिए व देखिए आगे क्या होता है.

प्रश्न: बोफोर्स जैसे घोटालों के विषय में पिछली सरकार की भूमिका के बारे में?

उत्तर: देखिए, अब आप मुझे विवादास्पद मुद्दों पर घसीट रहे हैं. इन मामलों को रहने ही दीजिए. वैसे यह सारा कुछ इन लोगों का बनाया 'स्कैंडल' (मिथ्या लांछन) है.

प्रश्न: अच्छा एक अंतिम व व्यक्तिगत प्रश्न. आप ने करीब 30 वर्षों तक फिल्मों में नायिका के रूप में काम किया है, पर आज भी आप का आकर्षण उसी तरह बना हुआ है. आप के इस चिरस्थायी सौंदर्य का रहस्य?

उत्तर: (बेतहाशा हंसते हुए) अब यह सवाल रहने दीजिए.

प्रश्न: हमारी पाठिकाएं तो कम से कम इस की वजह जरूर जानना चाहेंगी?

उत्तर: वजह कोई खास नहीं. मैं अच्छे परिवार से संबंधित हूं. अच्छी आदतें हैं. शुद्ध शाकाहारी भोजन. शराब से परहेज रखती हूं. कभीकभी समय मिला तो हलका व्यायाम कर लेती हूं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

dinesh

THE CHOICE OF LEADING FASHION HOUSES INTERNATIONALLY

AUTHORISED DEALERS: BIHARSHARIF: BIHAR CLOTH AGENCY • CHHAPARIA VASTRALAYA • CHAS: KASHI VASTRALAYA • RAHUL • RAJASHREE • DHANBAD: HARNAMSINGH AVTARSINGH • JANTA SILK HOUSE • SAGAR • SWAGAT • GIRIDIH: SHREE SHYAM

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमंग भरे होली के मौसम में नए
उत्साह के साथ

मुक्ता

मार्च (प्रथम) 1990

होली अंक

रंग, गुलाल, छेड़छाड़ और स्नेह के इस अवसर पर नई साजसज्जा व विविध सामग्री से भरपूर

इस अंक में–

जानकारी पूर्ण लेख, होली के रंग में रंगी कहानियां तथा उमंग के रंग से सराबोर कविताएं. तथा सभी स्थायी स्तंभ.

अपनी प्रति आज ही खरीदें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

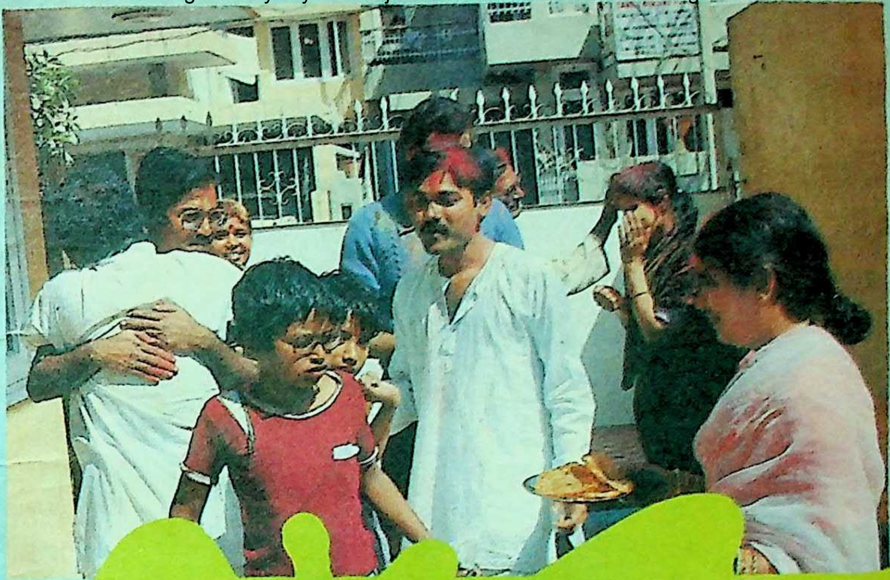

लो फिर आ गई होली

लेख • सरला अग्रवाल

जैसे ही बाग में आम के पेड़ों पर बौर आने शुरू होते और कोयल 'कूकू' कर के मधुर स्वर लहरी छेड़ती, सरसों के खेत पीली चादर ओढ़ मुसकराते, सर्दी कुछ धीमी पड़ने लगती, हम सभी बच्चों को लगता कि 'होली' आने ही वाली है. हम बच्चे बरसभर होली की प्रतीक्षा करते.

लगता, यही त्योहार तो बच्चों के लिए विशेषरूप से मनाया जाता है. जब पूरे जोरशोर से मौजमस्ती में भरे बच्चे हर किसी पर यहां तक कि बड़ेबूढ़ों पर भी रंग फेंक सकते थे. कभी बूट पालिश तो कभी गहरे बैंगनी या नीले रंग को तेल में मिला कर तो कभी एल्यूमिनियम पेंट अपने परिचितों, पड़ोसियों या सहेलियों के गालों पर बड़े प्रेम से लगातेलगवाते और फिर तालियां बजा कर स्थिति का आनंद लेते. जो जितना दूसरों को रंग पाता वह उस वर्ष उतना ही अधिक सहेलियों, मित्रों में सम्मान पाता, मानो उस ने बड़ा बहादुरी का काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समय था जब लोग महीनों पहले से होली का इंतजार करने लगते थे. स्त्री हो या पुरुष, जीजा हो या साली या फिर देवर भाभी, सभी एकदूसरे पर जम कर रंग डालते थे. लेकिन आजकल होली के इस हुड़दंग को फूहड़ता की संज्ञा दी जाने लगी है. आखिर क्यों बदल गई हैं लोगों की मान्यताएं?

किया हो.

किशोरकिशोरियां तो ऐसा हुड़दंग मचाते कि बस मजा ही आ जाता. घर के कठोर अनुशासन व कार्यप्रणाली को उस दिन ताक पर रख दिया जाता. न कोई कुछ कहता और न कोई कुछ सुनता ही, मानो उस दिन सब को पूर्ण स्वतंत्रता हो.

सच, बचपन में हम खूब होली खेलते थे. महीनों पहले से मन में होली के सपने संजोने लगते थे. 'इस बार मंझली भाभी को खूब रंगेंगे' और 'वीना के छोटे जीजाजी की अच्छी तरह गत बनानी है. बड़े हीरो बनते है.'

छोटे बच्चे तो हफ्ते भर पहले से ही बड़ेबड़े आलू छांट कर, बीच से दो टुकड़ों में काट लेते थे और उन पर उलटे शब्द 'गधा', 'पागल' आदि चाकू से खोद कर नीली स्याही में डुबो कर मार्ग पर जानेआने वालों के पीछे से पीठ पर लगा देते थे. कुरते या कमीज पर छप जाता था. 'गधा' या 'पागल.' फिर सभी एकत्रित बच्चे तालियां बजा कर खूब हंसते और खुश होते थे. और तब वे परिचितअपरिचित भी तो केवल हंस-मुसकरा कर, हाथ मारने की मुद्रा में उठा कर, 'चल हट शैतान' कह कर ही आगे बढ़ जाते थे.

हफ्ता भर पहले से ही सब लोग बाजारों में पुराने कपड़े पहन कर ही घर से बाहर निकलने लगते थे. पता था कि ये शैतान वानरसेना कहीं भी जाओ बख्शेगी नहीं.

पर आज यदि कोई बच्चा ऐसा दुस्साहस कर बैठे तो वह भरे बाजार में लोगों की फजीहत व 'ताजपोशी' का शिकार हो जाए. हां, होली वाले दिन तो आज भी यह सब चलता है.

फरवरी का महीना आते ही घरों की छतों पर आलू के कतले, पापड़, दाल की मंगोड़ी व चावल की कचरियां बननी आरंभ हो जातीं. फिर काली गाजरों की सुर्ख, खट्टी, चटपटी कांजी घड़े भरभर कर डाली जाती.

होली वाले दिन के लिए तो कई दिन पहले से ही कड़ाही चढ़ जाती. स्त्रियां, गुझिया, पापड़ी, बेसन के सेव, मट्ठी, खस्ताकचौड़ी, दहीबड़े, गुलाबजामुन, मीठे-नमकीन पोर वगैरह बनातीं. आसपड़ोस व परिचितों, संबंधियों में इस बात की होड़ सी लगी रहती कि किस के घर कितने व्यंजन बने हैं.

रंग खेलने आने वालों के लिए पहले से ही थालियां सजा कर रख दी जातीं. पान के बीड़े लगा कर तैयार रखे जाते. एक थाली में रंगबिरंगे गुलाल. जो भी रंग खेलने आता, सभी को गुलाल लगाने के बाद घर के बड़ेबूढ़े तथा महिलाएं मनुहार करकर के अपने हाथों बनी मिठाई, नमकीन खिलातीं. बड़ी उमंग के साथ कहा जाता 'जरा हमारे घर की गुझिया तो चख कर देखिए, अब जरा हमारे दही बड़े तो खाइए. अब गुलाब जामुन हो जाएं.'

पर अब पहले वाला उत्साह कहां रहा है? अब तो अधिकतर लोग पहले से ही होली के आगमन पर डरे रहते हैं. 'क्या फूहड़, अशिष्ट और बेहूदा त्योहार है. हमें तो जरा भी पसंद नहीं. मुझे तो नफरत है होली से.' ऐसी टिप्पणियां सुनाई पड़ती हैं, 'होली' को ले कर. लोगों की मान्यताएं ही बदल गई हैं, पर परंपरा की लीक को न जाने क्यों पीटे जा रहे हैं.

पहले इतना शोरशराबा व इतने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े भले ही होली से कतराने लगे हों. लेकिन बच्चे भला कहां किसी की मानने वाले हैं. वे तो अब भी हफ्तों पहले रंग लिए तैयार रहते हैं.

सामूहिक उत्सव थे ही नहीं. तब लोग त्योहारों की प्रतीक्षा बड़े उत्साह से करते थे और त्योहारों को सामूहिक उत्सवों की तरह मनाया जाता था.

होली के दिन तो शहर के सभी रिश्तेदार तथा अड़ोसीपड़ोसी सब एक जगह इकट्ठे होते थे. घरों के आंगन या बालकनियों में बड़ेबड़े कुंड व टबों में रात से ही टेसू के फूल भिगो कर रंग बनाया जाता था या फिर रंगने वाले लालनीले रंग घोल कर रखे जाते थे. बड़े उत्साह से लोग आने वाले अतिथियों पर वह रंग डालते थे. सभी एकदूसरे पर बालटी भरभर कर, लोटे भरभर कर, बच्चे पीतल की पिचकारियों से रंग डालते व मुंह पर गुलाल मलते थे. इस में खासी छीनाझपटी व धरपकड़ होती.

स्त्री हो चाहे पुरुष, जीजासाली, देवरभाभी, पड़ोस की हो या सगी मानो उन का तो एकदूसरे से होली खेलने का अधिकार था. किसी के भी मन में स्त्रीपुरुष संबंधों को ले कर इस दिन कोई प्रश्न नहीं उठता था. बच्चों से ले कर बूढ़ों तक सभी होली का आनंद उठाते और अपने सारे दुखदर्द भूल कर हंसीखुशी के रंगों में सराबोर हो जाते.

इस प्रकार मौजस्ती, हासपरिहास व उन्मुक्तता भरे पर्व की दीवानगी व मस्ती न जाने कहां गायब होती जा रही है. परिवारों में आदर, मानसम्मान की भावना भी लुप्त होती जा रही है. और नैतिक असुरक्षा लोगों में इतनी घर करती जा रही है कि आपसी नटखटपन व छेड़छाड़ के रिश्ते (देवरभाभी, जीजासाली/सलहज) पति की आंखों की किरकिरी बन गए हैं.

दिनोदिन बढ़ती महंगाई, साफसुथरे घरआंगन, ऊंचा होता जीवनस्तर तथा शिक्षा का बढ़ता प्रसार, महिलाओं का कामकाजी हो कर अति व्यस्तता की चादर ओढ़ना सभी जैसे मिलजुल कर होली के मौजमस्ती व रंग भरे त्योहार को मुंह चिढ़ाचिढ़ा कर अलविदा कह रहे हैं.

हां, हमारे दूरदर्शन और रेडियो में हम आज भी होली की रात्रि को समाचारों में जब देखतेसुनते हैं कि 'आज पूरे देशभर में होली का त्योहार परंपरागत ढंग से बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया' तो अवश्य हम कुछ क्षणों के लिए उमंग और उल्लास महसूस करने लगते हैं. और सोचने लगते हैं कि क्या हमें ही अपने इस रंगउमंग भरे त्योहार से चिढ़ है? क्या केवल हम ही दिन भर घर में दुबके हुए बैठे रहे और सोचते रहे कि जब बाहर रंग का गुबार निकल चुकेगा, लोग नहानेधोने लग जाएंगे तभी घर से बाहर निकलेंगे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन
हैं, वे तो
हते हैं.

होती.
साली,
नो उन
धिकार
धों को
ता था.
ली का
ई भूल
जाते.
हास व
स्ती न
रवारों
लुप्त
लोगों
ापसी
भाभी,
ों की

सुथरे
तथा
ों का
चादर
नी के
मुंह

में हम
रों में
भर में
बड़े
गया'
और
ोचने
उमंग
म ही
और
ुबार
एंगे
●

रिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली ऐसी मसखरी

कजरारे नयना हंसें निरखनिरख दरपन,
बौराई ऐसी उमर छू बैठ बचपन.

ढोल बजे, ढोलक बजी, गूंजे चौंसठ राग,
केसरिया पगड़ी कसे मस्त हो उठा फाग.

सतरंगी चूनर उड़ी, उड़े अबीर गुलाल,
रंगधार में रंग गए इत्र फुलेल रूमाल.

सांससांस महुआ घुला, नजरनजर केसर,
हर घूंघट भौजी लगे, हर बांका देवर.

फागुन सा मौसम कहां, रचे रंगोली द्वार,
गले लगा कर नेह का घोले तनमन ज्वार.

होली नवरस गागरी अनुपम इस के साज
पीत भोर राधा लगे, लगे शाम नटराज.

टेसू फुलवा की छुअन मुग्ध करे सब अंग,
वशीकरण से लग रहे पिचकारी के रंग.

मार कनखिया छुप गई नैनन बाण चढ़ाय,
होली ऐसी मसखरी छेड़छेड़ इतराय.

—सावित्री परमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

मेरे गांव में यह रिवाज है कि जिस दिन लड़केलड़की की शादी होती है, उस दिन लड़कालड़की भूखे रहते हैं तथा शादी संपन्न होने के बाद खाना खाते हैं.

पिछले दिनों मेरे चचेरे भाई की शादी थी. चारपांच दिन पहले बीमार होने के कारण वह बहुत कमजोर हो गया था. लेकिन परंपरा के अनुसार उसे भूखा रखा गया और खाली पेट दवा खाने पर मजबूर किया गया. परिणामस्वरूप उस की हालत बहुत खराब हो गई —ललित कुमार

*

हमारे यहां विभिन्न अवसरों पर गाय को रोटी खिलाने की प्रथा है. एक बार मौनी अमावस्या पर मेरी सहेली की मां गाय को रोटी खिला रही थी. तभी एक कुत्ता दौड़ता हुआ आया और गाय के मुंह की रोटी ले कर भागने लगा. सहेली की मां को कुत्ते की यह हरकत नागवार गुजरी. वह कुत्ते से रोटी छीनने लगी. इस छीनाझपटी में कुत्ते ने उसे काट लिया. परिणाम स्वरूप उसे महीनों हस्पताल के चक्कर लगाने पड़े.

—संगीता सेठी

*

हमारे यहां किसी महिला के बच्चा होने के पश्चात, प्यास लगने पर भी उसे छः दिन तक पानी नहीं दिया जाता है. ऐसी मान्यता है कि पानी पीने से बच्चे की मृत्यु हो जाती है.

एक बार हमारे गांव में एक महिला को बच्चा हुआ. दूसरे दिन दवाओं के कारण उसे जोरों की प्यास लगी. लेकिन प्रथा के अनुसार घर वालों ने पानी देने से मना कर दिया. परिणामस्वरूप प्यास के कारण उस महिला की मृत्यु हो गई. —देवेंद्रकुमार वर्मा

हमारे यहां की प्रथानुसार नवजात शिशु के जन्म के छठे दिन उसे हवन कुंड के धुएं के बीच रखा जाता है और मां पंडित द्वारा दिए गए कपड़े को कमर में बांध कर ही बच्चे को धुएं में से उठाती है.

हमारे पड़ोसी के बच्चे के जन्म के अवसर पर भी यही हुआ. किंतु पंडित द्वारा बच्चे की मां को दिया गया कपड़ा चूंकि छोटा था, अतः वह कमर पर बांध न सकी. अब बगैर उस कपड़े को बांधे बच्चे को उठाती कैसे. परिणाम यह हुआ कि धुएं के बीच तड़पता नवजात शिशु बेहोश हो गया.

किसी तरह बच्चे को हस्पताल पहुंचाया गया, तब जा कर कहीं उस की जान बची. —दुर्गाप्रसाद शर्मा

*

कुमाऊं में 'खतड़वा' त्योहार के दिन एक गुंबदनुमा आकृति में लड़कियों का ढेर लगा कर शाम को स्त्रियां अपनेअपने घर से लाई गई मशाल से अग्नि प्रज्वलित करती हैं. किंतु मशाल वहां लाने से पूर्व घर के हर कोने को मशाल से छुआया जाता है.

हमारी भाभीजी भी जब पिछली बरसात में ऐसा कर रही थीं तो जरा सी असावधानी से अचानक खूंटी पर टंगी कमीज में जो आग लगी तो वह घर का लगभग आधे से अधिक सामान जला कर ही शांत हुई. —संजय कुमार ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

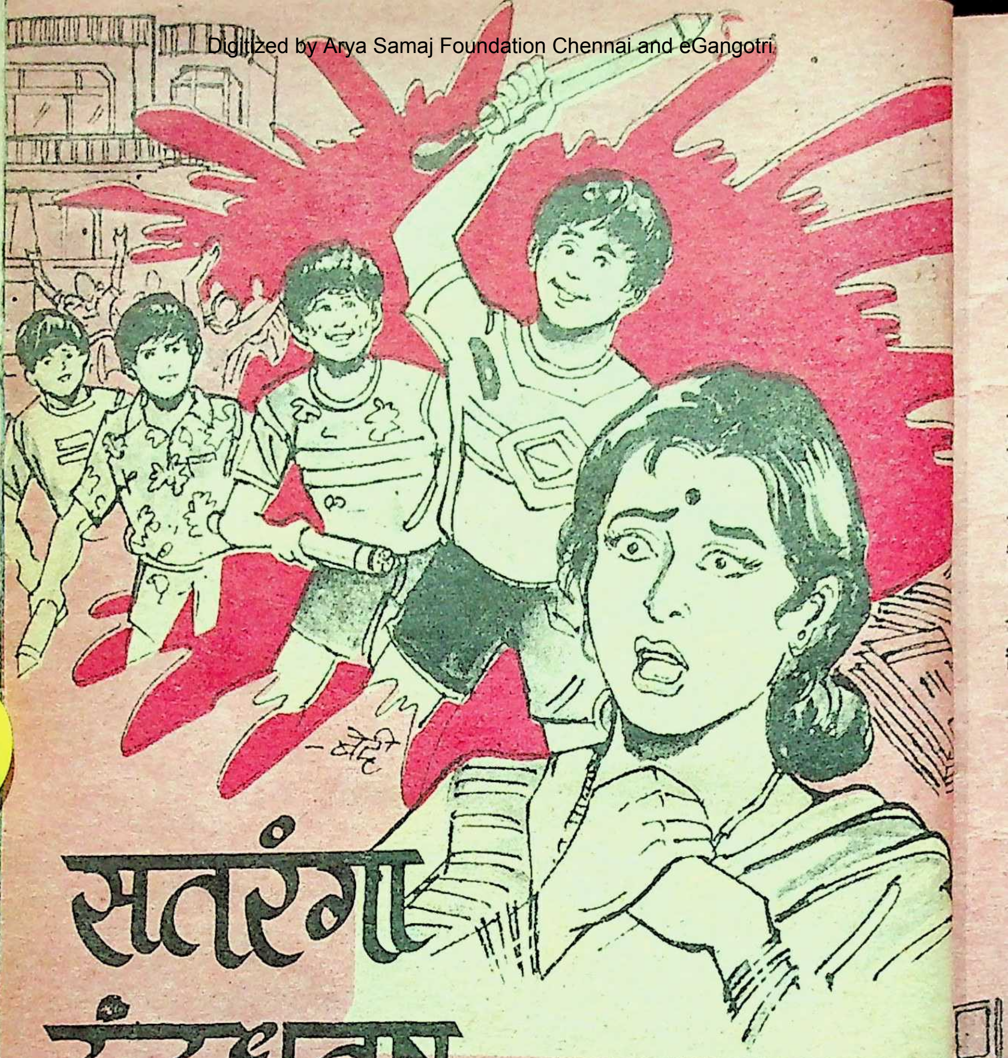

सतरंगा इंद्रधनुष

कहानी • सर्वेश वार्ष्णेय

होली में कई दिन बाकी थे, लेकिन गली के बच्चों ने, अभी से धूम-धड़ाका मचामचा कर लोगों को तंग करना शुरू कर दिया था. जो भी घर से बाहर निकलता बच्चों की टोली पिचकारियां और पानी से भरे गुब्बारे लेले कर उस का पीछा करने लगती. फिर घर से निकलने वाले की मुसीबत ही आ जाती. सिर से पैर तक पानी से सराबोर किए बगैर बच्चे कहां छोड़ते थे.

कुसुम, घर का आवश्यक सामान खरीदने महल्ले की दुकान पर गई तो लौटते वक्त बच्चों की भीड़ ने उसे घेर लिया और 'होली है भई होली है... बुरा न मानो होली है' गीत गाते हुए उस के ऊपर रंगों की बौछार करने लगे.

कुसुम कहती रही, ''मेरे ऊपर पानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली में अभी कुछ दिन बाकी थे लेकिन महल्ले के बच्चों पर शरारत का रंग पूरी तरह से चढ़ा हुआ था ऐसे ही खेलखेल में वे एक शरारत ऐसी कर बैठे जिस ने दो परिवारों की आपसी रंजिश को दोस्ती में बदल दिया.

मत डालो, टोकरी में चीनी, मैदा रखा है, पानी में भीग कर पूरे सामान का सत्यानास हो जाएगा."

परंतु बच्चे कहां मानने वाले थे, बंदरों की भांति उछलकूद मचा कर सिर से पैर तक कुसुम को भिगो कर रख दिया. अपनेआप को बचाने की हड़बड़ी में कुसुम के हाथ से टोकरी फिसल पड़ी. काफी सामान मिट्टी में मिल गया.

खिसियाई, झुंझलाई कुसुम का क्रोध यह देख कर और बढ़ गया कि उस का बेटा विवेक भी बच्चों की इस भीड़ में सम्मिलित था और खीखी कर के हंस रहा था.

"घर आएगा तो पीटपीट कर अक्ल ठिकाने कर दूंगी." कुसुम ऊंचे स्वर में बोली.

"मां, होली है, बुरा न मानो होली है." कहता हुआ विवेक अपने मित्रों के साथ जा मिला.

बचाखुचा सामान टोकरी में सहेज कर कुसुम घर लौटी तो उस की हालत देख कर शैली हंस पड़ी, "भाभी, लाल, हरे, नीले, पीले रंगों में मिल कर तुम्हारा गोरा रंग और अधिक निखर आया है."

"तुम दोनों बुआ, भतीजे तो हर वक्त हंसी में ही डूबे रहते हो, सामान भीगने से जो

"कौन दे गया यह पत्र." चिट्ठी पढ़ते ही सुरेश के चेहरे का रंग उड़ गया.

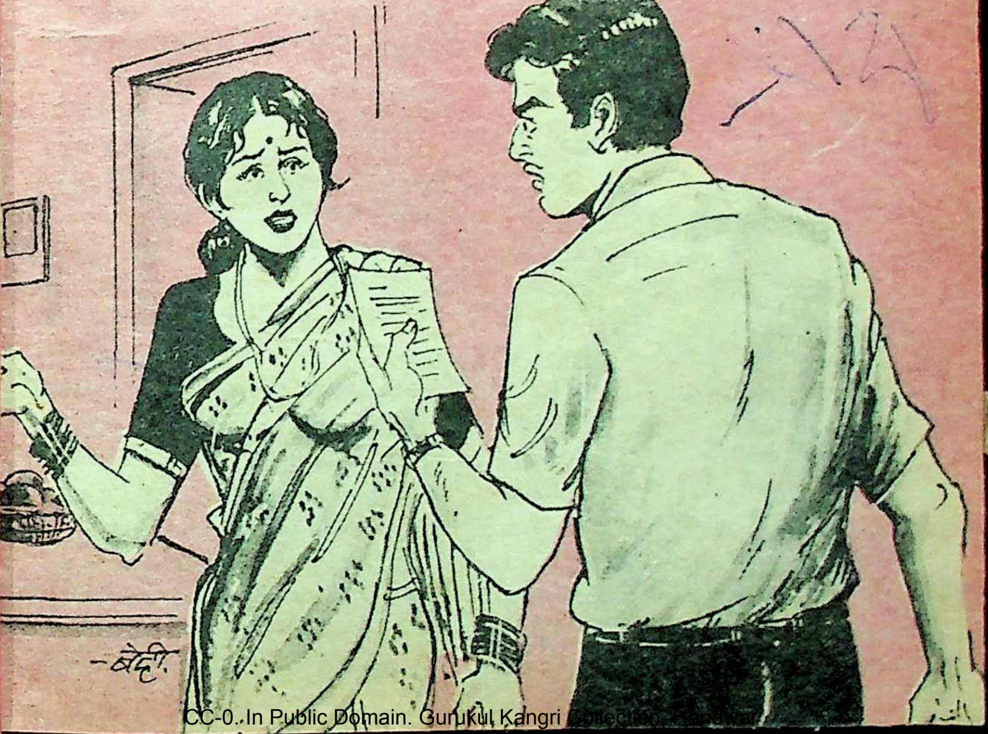

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नुकसान हुआ है, उस की परवाह नहीं है.'' कुसुम बरामदे में खड़ी हो कर टोकरी का सामान निकाल कर मेज पर रखने लगी.

अचानक कुसुम का ध्यान मेज पर ईंट के टुकड़े से दबा कर रखे गए एक कागज की ओर गया, 'कैसी चिट्ठी है? कौन रख गया है?' सोचती हुई उत्सुकतावश वह पत्र उठा कर पढ़ने लगी.

उस पत्र को पढ़ते ही कुसुम अपने होश खो बैठी, ''शैली, यह चिट्ठी यहां कौन लाया था?''

''मालूम नहीं, मैं तो अंदर थी'' शैली कुसुम के पास सिमट आई. ''क्या लिखा है, इस में? तुम इतनी घबरा क्यों रही हो?''

''इस में... इस में धमकी दी गई है कि अगर हम ने होली के दिन शाम के सात बजे सूरजकुंड पर 50 हजार रुपए नहीं पहुंचाए, तो वे लोग हमारे विवेक का अपरहण कर लेंगे. तुम अभी बाहर जा कर विवेक को बुला लाओ.''

डरती, घबराती शैली बाहर निकल कर विवेक को पुकारने लगी, विवेक बच्चों के साथ खेलता हुआ गली के नुक्कड़ तक चला गया था. शैली विवेक का हाथ थाम कर उसे घर की ओर घसीट लाई.

विवेक हैरानी से पूछता रह गया, ''क्या हुआ बूआ, खेलने क्यों नहीं देतीं?''

शैली ने विवेक को घर के अंदर कर के दरवाजे की कुंडी चढ़ा दी. फिर कुसुम की ओर उन्मुख हुई, ''विवेक आ गया है. अब तो कपड़े बदल लो, भाभी.''

बेटे को सामने देख कर कुसुम की जान में जान आई. वह बेटे को समझाने लगी, ''जमाना खराब है, घर से बाहर मत निकलना. शैली इसे छत पर ले जाओ, वहीं से होली की धूमधाम देख कर मन लगाता रहेगा.''

कपड़े बदल कर कुसुम रात के भोजन के लिए सब्जी काटने लगी, लेकिन मन किसी काम में नहीं लग रहा था. हर पल यही लग रहा था कि जैसे अपराधियों की खूंखार नजरें उन के मकान पर लगी हैं. दरवाजा तोड़ कर कभी भी कोई घर में घुस कर विवेक का अपहरण कर सकता है.

दरवाजे की घंटी बजी तो कुसुम बुरी तरह से घबरा गई कि कहीं कोई बदमाश तो नहीं. उस ने खिड़की से झांक कर देखा, बाहर सुरेश था.

सुरेश अंदर आ गया तो कुसुम ने फिर से दरवाजा बंद कर लिया.

''क्या हुआ, कुशल तो है. खासी परेशान नजर आ रही हो.'' सुरेश ने आश्चर्य से पूछा.

कुसुम ने पति की ओर वह कागज का टुकड़ा बढ़ा दिया.

पढ़ते ही सुरेश के चेहरे का रंग उड़ गया, ''कौन दे गया यह पत्र?''

''पता नहीं, बरामदे में मेज पर रखा मिला था. अब क्या होगा, सुरेश. मेरा मन बहुत घबरा रहा है.''

''विवेक कहां है?''

''छत पर है. मैं ने शैली को समझा दिया है कि वह घर के सभी काम छोड़ कर विवेक की निगरानी करे. मेरी समझ में नहीं आता कि हम कब तक बच्चे को घर में कैद कर के रख पाएंगे. वह कभी भी हमारी आंख बचा कर बाहर निकल सकता है. अभी तो उस के स्कूल की होली की छुट्टियां भी नहीं हुई हैं.''

''मैं अभी थाने में जा कर रिपोर्ट लिखा कर आता हूं.'' सुरेश ने उतावली से कहा.

''नहींनहीं,'' कुसुम ने उस का रास्ता रोक लिया, ''ऐसी भूल मत करना, सुना नहीं है पुलिस में सूचना करने से ऐसे अपराधी चिढ़ जाते हैं और क्रोधित हो कर अपहृत बच्चे की जान ले डालते हैं.''

''फिर क्या होगा?'' हताश सा सुरेश सिर थाम कर कुरसी पर बैठ गया.

''हम उन्हें 50 हजार रुपए दे देंगे. रुपए बच्चे से अधिक कीमती थोड़े ही हैं.''

''मेरे पास कहां है, इतना रुपया. फिर इस का क्या आश्वासन है कि अपराधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

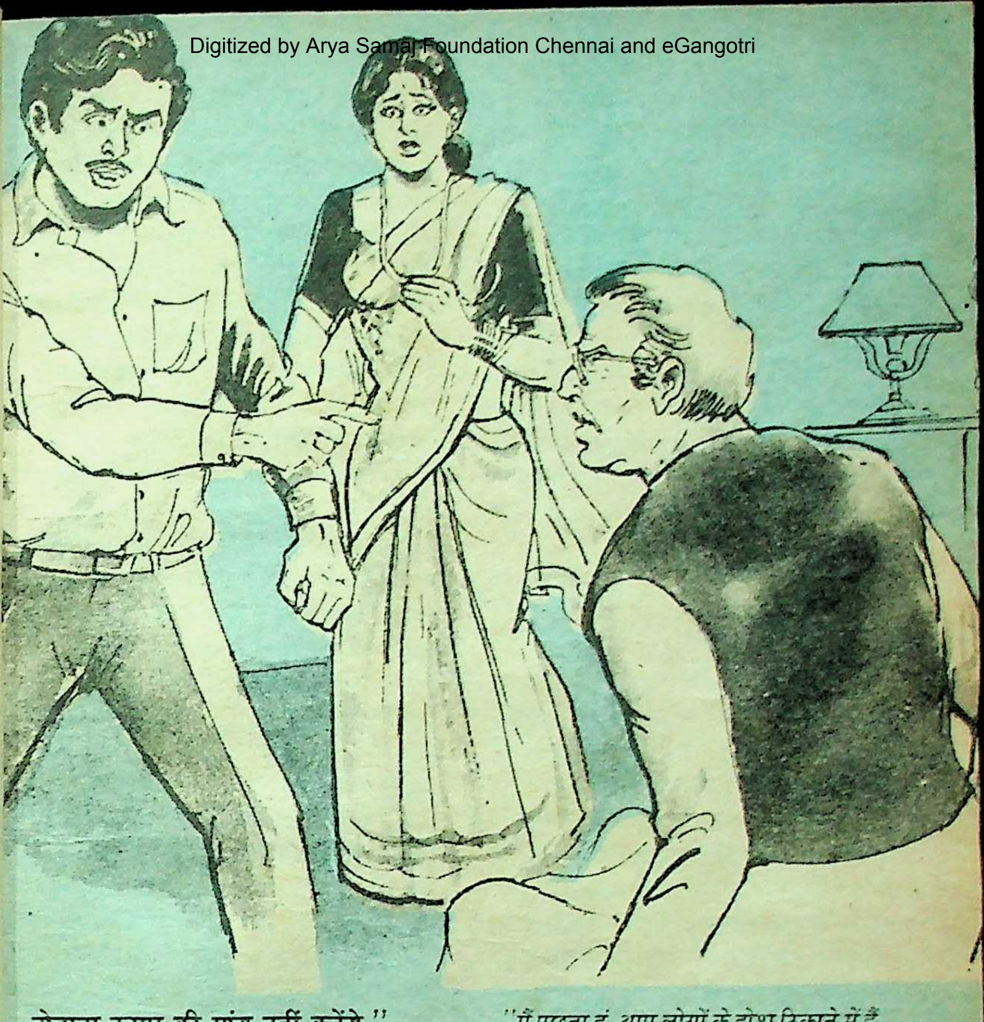

दोबारा रुपए की मांग नहीं करेंगे.''

''मैं अपने सभी आभूषण बेच डालूंगी, लेकिन अपने इकलौते बेटे को मौत की आगोश में नहीं जाने दूंगी.''

सुरेश का दिमाग तेजी से घूम रहा था. वह सोचने लगा, 'यह काम किसी पेशेवर अपराधी का न हो कर किसी दुश्मन का भी हो सकता है. दुनिया में दुश्मनों की कमी थोड़े ही है. दूसरों को अच्छा खातापीता देख कर किसे खुशी होती है भला?''

अकस्मात सुरेश के मन में आया कि सामने वाले पड़ोसी हिमांशु के परिवार के साथ उन के परिवार की पीढ़ियों पुरानी शत्रुता चली आ रही है, हो सकता है

''मैं पूछता हूं, आप लोगों के होश ठिकाने में हैं या नहीं. पहले चिट्ठी लिखी, फिर बंदूकधारी हमारे सिर पर बैठा दिए. क्या हम अपने घर में कैद हो कर बैठे रहें.'' [illegible] हंसराज के सामने सीना तान कर कहा ▲

हिमांशु ने ही रुपयों के लालच में विवेक का अपहरण कराने की योजना बना ली हो.

तुरंत उस ने रसोई घर में से कुसुम को और छत से शैली और विवेक को पुकार लिया. फिर उतावलेपन से पूछा, ''क्या आजकल में तुम सब ने हिमांशु के घर में कोई तबदीली महसूस की है?''

''कल हिमांशु की पत्नी मीना बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुश दिखाई दे रही थी." कुसुम याद करती हुई बोली.

शैली को भी कुछ याद आया, "भाभी, जब तुम शाम को बरामदे में खड़ी हो कर वह पत्र पढ़ रही थी तो हिमांशु के पिताजी घूरघूर कर तुम्हारी ओर देख रहे थे."

"साफ जाहिर हो गया है कि यह सब हिमांशु के सठियाए बाप के सठियाए दिमाग की उपज है. बूढ़े को कोई काम तो है नहीं, खाली पड़ापड़ा ऊलजलूल बातें सोचता रहता है. विक्की बेटे, इधर आओ." सुरेश ने विवेक को गोद में बैठा कर प्यार से पूछना शुरू किया, "बताओ बेटा, क्या दीपक के दादाजी ने तुम से आज कोई बात कही थी."

विवेक नन्हेनन्हे हाथों पर चेहरा टिका कर सोचने लगा, "आज नहीं कल कहा था."

"क्या कहा था?" सब उत्सुकतावश विवेक की ओर झुक गए.

"गुब्बारे फेंकने के लिए मना किया था और दो टाफियां खाने को दी थीं."

"कुछ और भी कहा होगा, याद करो."

सात वर्ष का मासूम विवेक इस से अधिक और कुछ नहीं बता पाया.

"अवश्य इस बुड्ढे ने इसे प्यार से पटाने की कोशिश की होगी. सुनो बेटा, अब कभी दीपक के पिताजी व दादाजी तुम्हें कुछ खाने को दें तो मत खाना."

"अच्छा पिताजी." विवेक ने हां में सिर हिलाया.

"दीपक के साथ खेलना भी मत. वह बुलाए तो भी उस के घर मत जाना."

"पर दीपक तो मेरा दोस्त है."

"दोस्त नहीं दुश्मन है, कितना मना किया है इसे, उस के साथ खेलने को." सुरेश ने तीखेपन से कुसुम को घूरा. "तुम इसे दीपक के साथ क्यों खेलने देती हो?"

"मेरी बात मानता ही कहां है. अब मैं इसे घर में बंद कर के रखूंगी. तब इसे अक्ल आएगी. लेकिन अब करें क्या? क्यों न, तुम अभी जा कर हिमांशु के पिता से उस चिट्ठी के बारे में पता कर आओ."

"वह बुड्ढा कैसे मान लेगा कि यह उस का कियाधरा है. शैली तुम बरामदे में बैठ कर सामने वाले घर पर निगाह रखो, मैं दोचार मित्रों से सलाहमशवरा कर के आता हूं." सुरेश दरवाजा खोल कर बाहर चला गया.

शैली बरामदे की बिजली बंद कर के अंधेरे कोने में छिप कर सामने देखने लगी.

विवेक बाहर निकलने लगा तो कुसुम ने उसे घसीट कर बैठक में ले जा कर टीवी के सामने बैठा दिया.

फिर कुसुम दरवाजा अंदर से बंद कर के चौके में जा कर सब्जी बनाने लगी. वह अभी आटा गूंध रही थी कि शैली ने बाहर से दरवाजा पीटना शुरू कर दिया.

"क्या हुआ?" घबरा कर कुसुम आटा सने हाथों से दरवाजे की ओर लपकी.

"जल्दी दरवाजा खोलो." शैली ने जोर से कहा.

कुसुम ने दरवाजा खोल कर शैली को अंदर खींच लिया तो वह बोली, "हिमांशु और उस की पत्नी और पिताजी सभी अपने घर की गैलरी में खड़े हो कर न मालूम क्या फसफसा रहे थे अभी बाहर से दो लंबेतगड़े, गुंडेनुमा आदमी उन के घर के अंदर गए हैं."

कुसुम और अधिक घबरा गई. "जरूर वे सब हमारे विक्की का अपहरण कर के कहीं ले जाने की बातें कर रहे होंगे."

"अब क्या होगा, भाभी?" शैली बहुत भयभीत हो उठी थी.

अकस्मात कुसुम को सब्जी के जलने की गंध महसूस हुई तो वह रसोईघर की ओर लपकी.

थोड़ी देर उपरांत सुरेश घर लौट आया और दरवाजा बंद कर के बोला, "मेरे मित्रों की सलाह है कि मुझे हिमांशु और उस के बाप के खिलाफ, पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करानी ही पड़ेगी. लापरवाही करना उचित नहीं है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुसुम ने भी उस का समर्थन किया, "अब तो मुझे भी पक्का यकीन हो चुका है कि वह पत्र हिमांशु के परिवार वालों ने ही रखा था. ये लोग हमारा हमेशा से बुरा करते रहे हैं."

कुसुम और शैली ने सुरेश को हिमांशु के घर की खुसरफुसर व दो गुंडों के देखे जाने की बात सुनाई तो वह क्रोध से भर उठा, "लगता है, वे लोग इस बार रंगों से नहीं खून से होली खेलने का इरादा रखते हैं. इन्हें हम सवा सेर बन कर दिखाएंगे. हमारे बेटे को हाथ तो लगा कर देखें, इन के पूरे घर में आग लगा कर रख दूंगा."

पूरी रात किसी को नींद नहीं आई, सुरेश दिन निकलने की प्रतीक्षा करता रहा, ताकि वह थाने में जा कर हिमांशु के परिवार के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा कर अपने मन का बोझ हलका कर सके.

सुबह जल्दी उठ कर, एक प्याला चाय गले में उतार कर सुरेश थाने जाने के लिए तैयार होने लगा. कुसुम ने विवेक को स्कूल के लिए तैयार होने से मना कर दिया, क्या मालूम कोई रिकशा रुकवा कर विवेक को ले जाए. शैली ने कालिज न जा कर घर पर रहने का निर्णय कर लिया.

सुरेश पुलिस थाने जाने के लिए घर से निकला तो सामने हिमांशु के घर के चबूतरे पर बैठे दो बंदूकधारी उसे घूरघूर कर देखने लगे.

सुरेश को एकाएक ताव आ गया. वह सोचने लगा, 'माना कि वर्षों की खानदानी दुश्मनी है, लेकिन इस प्रकार बंदूकधारियों को दरवाजे पर बैठा कर डराना उचित है क्या? मालूम पड़ता है, हिमांशु और हंसराज कुछ और गुल भी खिलाना चाहते हैं. हमें क्या इन लोगों ने बिलकुल गीदड़ समझ रखा है.'

क्रोध में भर कर सुरेश बजाय सड़क पर जाने के हिमांशु के घर की ओर मुड़ गया.

कुसुम पुकारती रह गई. "क्या करते हो? ऐसी गलती मत करो. ऐसे खतरनाक दुश्मनों से निहत्थे टकराना बेवकूफी है."

सुरेश नहीं रुका, तो घबराई हुई कुसुम उस के पीछेपीछे हिमांशु के घर की ओर लपकी.

दनदनाता हुआ सुरेश बैठक में तख्त पर पसरे हंसराज के सामने सीना तान कर खड़ा हो गया, "मैं पूछता हूं आप लोगों के होश ठिकाने में हैं या नहीं? महल्ले में गड़बड़ मचा रखी है. पहले चिट्ठी लिखी, फिर बंदूकधारी पहरेदार हमारे सिर पर बैठा दिए. क्या हम अपने घर में कैद हो कर बैठे रहें?"

हंसराज हक्काबक्का रह गए, "सुबह-सुबह यह सब क्या कह रहे हो तुम?"

अकस्मात सुरेश व कुसुम को अपने घर आया देख कर हिमांशु और मीना भौचक्के रह गए थे, क्योंकि दोनों परिवारों का आनाजाना, बोलना और उठनाबैठना न के बराबर था.

सुरेश हिमांशु की ओर उन्मुख हुआ, "तुम क्या समझते हो, तुम्हारे इन

दिल

लबों से कुछ कहना चाहा
पर दिल ने हम को मना किया,
अंखियों ने प्यास को दरसाया
बिन कहे ही सब कुछ कहा गया.
—सुनील कुलवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंदूकधारी गुलामों की वजह से डर कर हम अपना पुश्तैनी मकान छोड़ कर कहीं चले जाएंगे. हमें कायर समझ रखा है? बच्चे को उठा लेने की धमकी देते हो. इतने ही हिम्मत वाले हो तो मुझ से लड़ो, बच्चे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है."

वक्त की नजाकत समझ कर मीना ने नम्रतापूर्वक सुरेश और कुसुम से बैठने का आग्रह किया और बोली, "अवश्य ही आप लोगों को कोई गलतफहमी हुई है..."

"गलतफहमी क्यों होगी, पक्का सुबूत हाजिर है. देखो यह पत्र... इस में तुम ने मेरे बेटे को उठा लेने की धमकी दी है. क्या अब भी शरीफ बनने का ढोंग दिखाते रहोगे." सुरेश ने पत्र निकाल कर हिमांशु और हंसराज के सामने लहरा दिया.

"क्या?" वे सब हैरानी से एकदूसरे की ओर ताकने लगे थे.

"समझ में नहीं आता, यह सब क्या हो रहा है. ऐसा ही एक पत्र हमारे पास भी आया है." हिमांशु बोला.

"क्या?" सुरेश और कुसुम बुरी तरह से चौंक उठे थे, " इस का मतलब है, यह काम किसी ओर का है. कौन हो सकता है, वह?"

मीना अंदर जा कर वह पत्र ले आई. फिर दोनों पत्र एकसाथ रख कर बोली, "लो देखो, दोनों की लिखावट एक जैसी है. दोनों पत्र एक ही आदमी के लिखे हुए हैं."

"अब तो तुम्हें विश्वास हो गया कि हम बुरे आदमी नहीं हैं. परंतु तुम्हारे खानदान वाले शुरू से हमारे खानदान को गलत समझते रहे हैं." हिमांशु का स्वर कठोर हो उठा था.

"अरे यह वक्त लड़नेझगड़ने का और खानदानों के गड़े मुरदे उखाड़ने का नहीं है, संयम से काम लो. सुरेश बेटा, यह तुम ने अच्छा किया कि पत्र ले कर यहां चले आए. इस प्रकार यह भेद तो खुल गया कि जो समस्या तुम्हारे साथ है वही हमारे साथ है. सोचना तो यह है कि हमें अब करना क्या चाहिए." हंसराज चिंतित हो कर बोले.

"मालूम पड़ता है, बच्चे उठाने वाला कोई गिरोह शहर में आ गया है." कुसुम ने ठंडी सांस ली.

"घर में बंद बैठेबैठे मेरे दीपक का बुरा हाल हो गया है. गली में सारे बच्चे होली खेल रहे हैं और उसे तरसना पड़ रहा है." मीना बोली.

"यही हाल मेरे विक्की का है." कुसुम ने उदास स्वर में कहा.

"बच्चे घर में बंद कर के ही सुरक्षित रखे जा सकते हैं. कोई बुरी स्थिति बनेगी तो सुरक्षा हेतु होमगार्ड के दो बंदूकधारी जवान तो हैं ही, फिर भी बात चिंता की तो है ही." हंसराज सोच में डूब गए.

"इस मामले में पुलिस भी कुछ नहीं कर सकेगी. पुलिस में सूचना देने का मतलब है, बच्चों से हाथ धो बैठना."

"सुनो" कुसुम सुरेश के कान में फुसफुसाई, "इन से कहो न कि यह अपने बंदूकधारियों से हमारे विक्की की सुरक्षा भी करा दें."

"लेकिन कैसे? ये तो हमारे पुराने दुश्मन हैं."

"यह वक्त दुश्मनी निकालने का नहीं, मिलजुल कर रहने का है. छोड़ो भी बुजुर्गों की बातें. जो लोग कभी के मरखप गए, उन की दुश्मनी को हम क्यों ताजा करें." कुसुम कुछ ऊंचे स्वर में कह गई.

सुन कर मीना ने भी हां में हां मिला दी. "लड़ाईझगड़े बुजुर्गों में हुए थे. हम ने तो नहीं किए. फिर हम लोग क्यों एकदूसरे से चिढ़े बैठे रहते हैं. ठीक है, कुसुम तुम बेफिक्र रहो. हमारे होमगार्ड वाले दीपू के साथसाथ तुम्हारे विक्की की सुरक्षा भी करेंगे."

कुसुम और मीना का सुझाव सभी को पसंद आया.

सुरेश और कुसुम उठ कर वापस जाने लगे तो हंसराज बोल उठे, "जब तुम सब ने पुरानी दुश्मनी समाप्त करने का इरादा कर ही लिया है तो दीपक और विवेक को किस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलती की सजा दी जा रही है? दोनों को एकसाथ खेलने दो."

"यह उचित रहेगा. दोनों का मन तो लग ही जाएगा, इस प्रकार होमगार्डों को भी दिक्कत नहीं रहेगी."

फिर सब ने मिल कर तय किया कि दोनों बच्चों को हंसराज के मकान की छत पर रंगों, पिचकारियों से खेलने दिया जाए.

घर आ कर कुसुम ने विवेक को तैयार कर के दीपक के घर भेज दिया और राहत की सांस ली.

सुरेश के मन का बोझ भी कुछ कम हो गया था. वह तैयार हो कर दफ्तर चला गया.

कुसुम ने समझाबुझा कर शैली को भी कालिज भेज दिया.

दोपहर को वह विवेक का खाना ले कर हंसराज के घर गई तो मालूम हुआ कि विवेक ने दीपक के साथ ही भोजन कर लिया है.

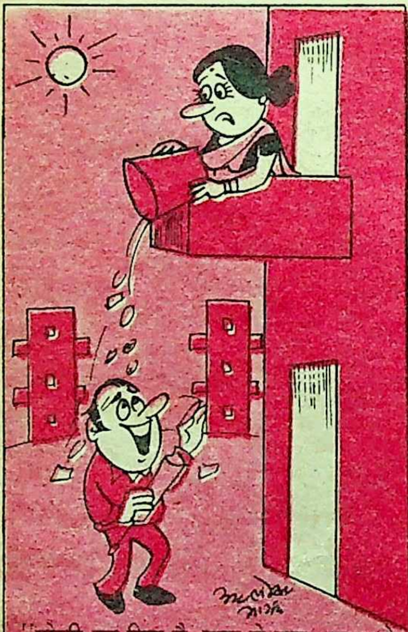

"होली का दिन है, कम से कम आज तो आनेजाने वालों पर कूड़े की जगह रंग डाल दीजिए."

हंसराज ने कुसुम को आश्वस्त किया, "बहू, मेरे लिए जैसा दीपक वैसा ही विवेक है. जब तक यह हमारे घर है, तुम इस के भोजन और सुरक्षा की बिलकुल चिंता मत करो."

लौटते वक्त कुसुम सोच रही थी, पता नहीं क्यों हम वर्षों से इन लोगों को गलत समझते आ रहे हैं. कभी इन लोगों से बात करने की आवश्यकता नहीं समझी. अब पता लगा, पूरे महल्ले में हमारा इन से अधिक कोई हमदर्द नहीं है.

सुरेश दफ्तर से लौटा तो हंसराज ने उसे पुकार लिया और पूछने लगे, "कुछ सोचा इस विषय में कि क्या करना है?"

"चाचाजी, आप के रहते हम अनुभवहीन लोग क्या सोचसमझ सकते हैं. जैसा आप कहेंगे हम कर लेंगे."

"हिमांशु दुकान से लौट कर आए, तब बैठ कर बातें करेंगे. तुम बहू को ले कर आ जाना." हंसराज ने कहा.

रात के आठ बजे हंसराज के घर में बैठक जम गई. हंसराज, हिमांशु, सुरेश, तीनों का विचार बना कि होली के दिन घरों में कड़ी सुरक्षा रखनी आवश्यक है. शाम के सात बजे एक बैग में अखबारों की रद्दी भर कर निश्चित स्थान पर रख आएंगे. जो सुरक्षाकर्मी हमारे साथ रहेंगे, वे और हम मिल कर बदमाशों को पकड़ कर अपनी गिरफ्त में ले लेंगे.

"नहींनहीं, बदमाशों के साथ धोखधड़ी करना बेवकूफी है. वे क्रोध में आ कर और अधिक अनिष्ट कर सकते हैं," कुसुम और मीना एकसाथ कह उठीं.

"लेकिन धमकियों से डर कर एक लाख रुपए दे देना भी तो अक्लमंदी नहीं है." सुरेश झुंझला उठा.

"एक लाख रुपया अधिक प्यारा है, बच्चे प्यारे नहीं हैं." कुसुम का स्वर तेज हो उठा.

"मैं अपने दीपू की जुदाई का सदमा बरदाश्त नहीं कर पाऊंगी."

"मुझे अपना विक्की अपनी जान से भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशिष्टता

वार्तालाप के प्रवाह के मध्य किसी के हस्तक्षेप करने से बड़ी अशिष्टता नहीं हो सकती. —जान लाक

प्यारा है. अगर कोई मेरे विक्की का अपहरण कर के ले गया तो मैं आत्महत्या कर लूंगी."

"ये मर्द लोग हम औरतों की परवाह कहां करते हैं, इन्हें बीवीबच्चों से नहीं दौलत से प्यार होता है." मीना का गला भर आया.

कुसुम भी साड़ी के आंचल से अपने आंसू पोंछने लगी.

हंसराज का मन पिघल उठा वह सांत्वना देते हुए कहने लगे, "ठीक है, जो तुम दोनों की मरजी है, हम वही करेंगे. बैग में नोट नकली नहीं, असली ही भेजे जाएंगे और यह ध्यान रखा जाएगा कि रुपए बदमाशों के हाथों में न पड़ें."

"हम बदमाशों को नोटों से भरे बैग तक पहुंचने से पहले ही दबोच लेंगे." हिमांशु उत्साह से भरा हुआ था.

सुरेश अैर कुसुम, विवेक को साथ ले कर लौटे तो वह बारबार पूछने लगा, "मां तुम ने मुझे आज स्कूल में न भेज कर दीपू के घर क्यों भेज दिया था? मुझे गली में भी नहीं खेलने दिया."

दोनों विवेक को बहलाने का प्रयास करने लगे, लेकिन विवेक कहां चुप रहने वाला था. वह बारबार जिद करने लगा तो परेशान हो कर सुरेश गुंडों की चिट्ठी के बारे में बतलाने लगा.

तभी इशारे से कुसुम ने उसे ऐसा करने से रोक लिया और एकांत में ले जा कर बोली, "उसे यह सब बताने की भूल मत करो, वह डर जाएगा."

सुरेश चुप हो गया, फिर वह रुपयों के प्रबंध के बारे में सोचने लगा.

सुरेश और कुसुम ने बदमाशों के पत्र की बात महल्ले वालों से छिपा कर रखी थी. फिर भी न मालूम कैसे पूरे महल्ले में ये बातें फैल चुकी थीं.

लोग यह भी जान चुके थे कि अब हिमांशु और सुरेश के परिवार की दुश्मनी समाप्त हो चुकी है.

अकस्मात किसी ने दरवाजा भड़भड़ाया. कुसुम ने खोल कर देखा, उन के मकान से सटे मकान वाली वृद्धा घबराई हुई खड़ी थी, वह हताश स्वर में बोली, "देखो बहू किसी ने मेरे अपहरण की धमकी दी है..." वृद्धा ने एक पत्र कुसुम की ओर बढ़ा दिया.

"आप को धमकी?" कुसुम को विश्वास नहीं हुआ कि भला कोई 75 वर्ष की औरत का अपहरण क्यों करेगा?

शैली और सुरेश भी नजदीक आ कर उस पत्र को देखने लगे, इस पत्र का आकार, कागज, लिखावट सभी कुछ उन दोनों पत्रों से बिलकुल मिलता था.

लेकिन यह बात किसी के गले से नहीं उतर पा रही थी कि कोई व्यक्ति एक बुढ़िया का अपहरण कर सकता है और साथ में 50 हजार रुपयों की मांग भी कर सकता है.

वृद्धा कांपती हुई कह रही थी, "मेरे घर में दो वक्त की रोटियों का जुगाड़ भी कठिनाई से होता है तो बताओ, मैं इतनी बड़ी रकम कहां से लाऊं?"

सुरेश गहरे सोच में डूब गया कि यह कैसा अपराधी है जो सभी से 50 हजार रुपए होली के दिन शाम के सात बजे सूरजकुंड पर मांग रहा है.

उस का माथा ठनक उठा कि यह सब किसी की शरारत तो नहीं है. शायद कोई बेवकूफ बना रहा होगा.

कुसुम ने पूछा, "मांजी, यह पत्र आप को कहां मिला और किस ने दिया?"

"कमरे की अलमारी में रखा था." वृद्धा ने कहा.

"अलमारी में?" सब बुरी तरह से चौंक उठे. इस का मतलब है अपराधी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृद्धा के घर में आनाजाना है.

सुरेश के मन में विचार उठा कि इस तीसरे पत्र के बारे में हंसराज के परिवार को बतला देना चाहिए. वह वहां जाने के बारे में सोच ही रहा था कि हंसराज खुद वहां आ पहुंचे, "क्या हुआ सुरेश? कोई नई बात तो नहीं है?"

"यह पत्र देखिए." सुरेश ने कहा.

हंसराज ने सुरेश के हाथों से पत्र ले कर पढ़ा. उन के चेहरे पर चिंता के भाव स्पष्ट हो उठे, "समझ में नहीं आता, हमारे महल्ले वालों से किसी की क्या रंजिश हो सकती है?"

"लेकिन चाचाजी, सोचने की बात यह है कि यह पत्र इन की अलमारी से मिला है. कमरे के अंदर कोई व्यक्ति जाने का साहस कैसे कर सकता है?"

हंसराज कुछ चौंक से पड़े, "हमें भी वह पत्र एक अलमारी से मिला था. हम ने सोचा नौकरानी ने बाहर से ला कर अलमारी में रख दिया होगा."

"हमारे घर में तो कोई नौकरानी भी नहीं है. मैं अपने पोते टीटू के स्कूल की पुस्तकें उठा कर अलमारी में रख रही थी कि तभी..." वृद्धा बोली.

"इस का मतलब है, यह पत्र टीटू की अलमारी में रखा मिला था, विचित्र संयोग है, हमें भी वह पत्र दीपक की अलमारी से मिला था." हंसराज ने कहा.

तभी शैली अंदर से कुसुम को पुकारती बाहर चली आई, "भाभी, भैया दोनों अंदर आ कर देख लो. सब का अपहरणकर्त्ता कान पकड़े खड़ा है."

"क्या? कौन है?" सब अंदर लपके.

सुरेश ने डांटा तो शैली बजाय रूठने के खिलखिला कर हंस पड़ी, "वह चोर कोई और नहीं, हमारा शरारती विक्की है."

"विक्की?" सभी एकसाथ बोल उठे.

सचमुच विवेक कान पकड़े हुए कमरे के एक कोने में खड़ा था. नजदीक मेज पर एक कापी के कई पृष्ठ बिखरे पड़े थे. सभी पर महल्ले के लोगों, बच्चों, औरतों के लिए पचास हजार रुपयों की मांग और अपहरण की धमकी भरे पत्र लिखे हुए थे.

"विक्की तुम ने यह सब क्यों किया? जानते हो तुम्हारी इस शरारत से सब लोग कितने परेशान हुए हैं." सुरेश उसे डांटने लगा.

डांट खा कर विवेक की आंखों से आंसू बरसने लगे थे. रुकरुक कर वह बोला, "पिताजी, दीपक, टीटू, बाबी, निक्कू हम सब मिल कर डाकू का खेल खेल रहे थे. ये सारी चिट्ठियां निक्कू ने लिखी हैं."

हंसराज ने आगे बढ़ कर विवेक को गोद में उठा लिया. दुलार दिखलाते हुए कहने लगे, "अकेला विक्की दोषी नहीं है, महल्ले के सभी बच्चे दोषी हैं. खैर, बच्चे तो ऐसी शरारतें करते ही रहते हैं. हम भी अपने बचपन में डाकुओं के खेल खेला करते थे. विक्की, तुम ने और किसकिस के घर में चिट्ठियां रखी थीं?"

"अपने घर में." विवेक ने मासूमियत से उत्तर दिया.

सब को उस के भोलेपन पर हंसी आ गई.

सब के मन से भारी बोझ उतर चुका था. सब बैठ कर देर तक बच्चों की शरारत को और अपने बेवकूफ बन जाने की बात को याद कर के हंसते रहे.

दोनों परिवारों के लोगों को सब से बड़ी प्रसन्नता यह थी कि वर्षों पुरानी दुश्मनी दोस्ती में बदल चुकी थी, इस का श्रेय भी बच्चों की शरारत को ही था.

होली के त्योहार की खुशी कई गुना अधिक बढ़ चुकी थी.

मीना और कुसुम ने एकसाथ मिल कर होली के पकवान तैयार किए. दोनों परिवारों के लोगों ने एकसाथ बैठ कर भोजन किया. एकदूसरे से गले मिल कर होली की बधाइयां दीं और रंग खेला.

फिर तरहतरह के रंगों की बौछारों के साथ होली की जो धूम मची, वह देखते ही बनती थी. ●

RK SWAMY PCRA 5705 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

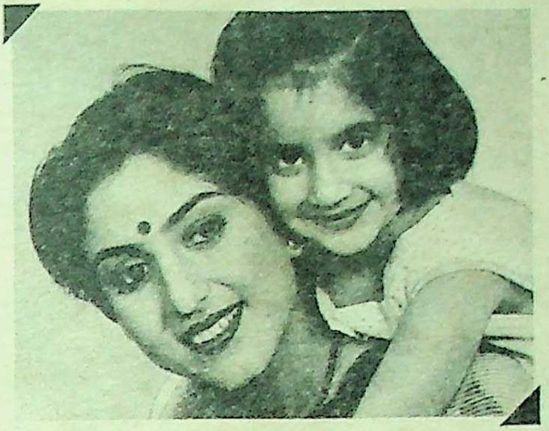

क्या आपकी बेटी बीस साल बाद भी आपको इतना ही चाहेगी?

क्यों नहीं?

उसके भविष्य के लिए आपने सब कुछ तो किया है. उसकी शिक्षा-दीक्षा का पूरा प्रबंध किया है. उसके विवाह के लिए पैसे भी जमा करने शुरू कर दिए हैं.

पर कुकिंग गैर और मिट्टी के तेल के लिए क्या किया?

जब आपकी बेटी अपना घर बसायेगी तब तक उनके भंडार तो शायद ख़त्म हो जाएंगे!

हां, आप उन्हें बचा कर रख सकती हैं. हर रोज़ उनकी बचत करके—भविष्य के लिए, अपनी लाड़ली बेटी के लिए.

ईंधन बचाने के लिए नीचे दिए हुए सरल तरीके अपनाएंगी तो आपकी बेटी हमेशा आपके गुण गायेगी.

- ईंधन बचाने वाले नूतन गैस/मिट्टी के तेल के स्टोवों का उपयोग करें.
- स्टोव जलाने से पहले पकाने की सब सामग्री तैयार करके पास रख लें.
- जहाँ हो सके वहाँ प्रेशर कुकर का इस्तेमाल करें.
- उबाल आते ही लौ कम कर दें.
- पकाने के लिए चौड़े, कम गहरे बर्तनों का इस्तेमाल करें.
- बर्तनों को ढक कर खाना पकाएं.

अधिक जानकारी चाहिए तो हमारी पुस्तिकाएं मुफ्त मंगाने के लिए आज ही हमें पत्र लिखें.

नाम ____________________

पता ____________________

____

शहर __________ ज़िला __________

S

P C R A

पेट्रोलियम कंज़रवेशन
रिसर्च एसोसिएशन
पोस्ट बॉक्स नं. 572
नई दिल्ली-110 001 फ़ोन : 3315868

अपनी बेटी के लिए गैस/मिट्टी का तेल बचाइए

RK SWAMY PCRA 5785 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने अपनी बेटी के लि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...केयरफ़्री क्यों चुना."

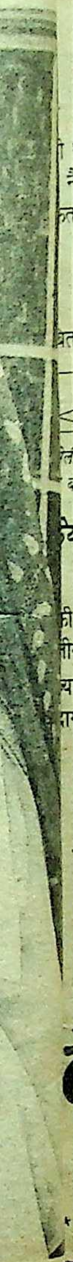

मुझे याद है वो दिन जब मैं अपनी बेटी की उम्र ...ी थी. तब हमें सिर्फ घर में बने कपड़े के पुराने किस्म ... नैपकिन्स के सहारे रहना पड़ता था. कभी-कभी तो ...ितनी शर्म आती थी.

पर अब ज़माना बदल गया है

आज मेरी बिटिया कितनी दौड़-धूप की ज़िन्दगी ...ता रही है. इसीलिए तो मैंने उसके लिए केयरफ़्री सैनिटरी नैपकिन चुना है. और ये इस्तेमाल के लिए एकदम तैयार, आसान और बहुत ही स्वास्थ्यकर भी हैं.

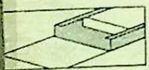

...ली प्लास्टी-शील्ड दुर्घटना ... बचाती है.

...यरफ़्री मेरी बेटी को पूरी सुरक्षा देता है

केयरफ़्री की बनावट बहुत ही गठीली है. बाहर ...ी तरफ है एक अनोखा 'वन्डररैप' और साथ में है ...ीन-तरफा नीली 'प्लास्टी-शील्ड'. इसलिए ये ...यादा नमी सोखता है, ज़्यादा सुरक्षा देता है और फिर ...ाग पड़ने का भी कोई डर नहीं. केयरफ़्री से मेरी बेटी को मिलती है पूरी सुरक्षा और आराम. मुझे ख़ुशी है कि मैंने अपनी बेटी के लिए आज़माई हुई, भरोसेमन्द केयरफ़्री सुरक्षा को ही चुना.

आज के बदलते ज़माने के लिए केयरफ़्री के प्रकार

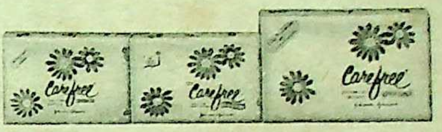

रेग्युलर	डियोडरन्ट	एक्स्ट्रा लार्ज
बेहतर सुरक्षा और बचाव के लिए	ख़ुशबू भरी सुरक्षा के लिए	ज़्यादा स्राव में सुरक्षा और रात के इस्तेमाल के लिए

ऋतुस्राव संबंधी पुस्तिका "अपनी बिटिया को मैं कैसे समझाऊँ", की मुफ़्त कॉपी के लिए, इस पते पर लिखिए : *Personal Products Division, Johnson & Johnson Ltd., 30, Forjett Street, Bombay-400 036.*

केयरफ़्री*

की सुरक्षा और आराम आपके उन जरूरी दिनों के लिए

O&M 5780/HIN

*केयरफ़्री, जॉन्सन एण्ड जॉन्सन यू.एस.ए. का ट्रेडमार्क है

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं 45 वर्षीया विवाहित स्त्री हूं. नौकरी करती हूं जो मुझे अत्यंत संघर्ष के बाद प्राप्त हुई थी. मेरे पति अत्यंत अच्छे हैं और मुझे भरपूर प्रेम करते हैं. समस्या यह है कि अपने कार्यालय के एक सहयोगी की चालाकी और अपनत्व के चक्कर में आ कर सर्वस्व लुटा बैठी हूं. अब भी यदाकदा उस की धौंस के आगे झुकना पड़ता है. पति जानते तो नहीं पर लगता है, उन्हें कुछ आभास हो गया है, क्योंकि सहवास के क्षणों में मैं सहज नहीं हो पाती. पति ने विश्वास में ले कर कई बार पूछना भी चाहा पर मैं टाल गई. चिंता के कारण पति का रक्तचाप बढ़ गया है. उस झंझट के कारण शाम को जब मुझे घर लौटने में देर हो जाती है तो उन की चिंता और भी बढ़ जाती है. पति अच्छे पद पर हैं, मुझे सलाह दीजिए. मैं क्या करूं?

इस तमाम प्रकरण में गलती आप की ही है. चालाकी व अपनत्व से भला कैसे कोई समर्पण करवा सकता है. एक नौकरीपेशा समझदार महिला किसी के कुत्सित इरादों को फौरन भांप सकती है. और फिर इस 'अपनत्व' शब्द से आप का तात्पर्य क्या है? किसी कार्यालय में यह घटना घटित होना भी लगभग नामुमकिन ही है. कहीं ऐसा तो नहीं कि इस सब में आप की भी मूक सहमति हो. बहरहाल, आप अपने उस सहयोगी से भूल कर भी एकांत में न मिलें. साथ ही उस की भरपूर उपेक्षा भी करें. ऐसी स्थिति में उसी कार्यालय में काम करना ठीक न रहेगा. यदि विशेष कठिनाई न हो तो नौकरी ही छोड़ दें. याद रखिए, भूल कर भी उस घटना का जिक्र अपने पति से न करें वरना तमाम उम्र आप को अंगारों की सेज पर सोना होगा.

मेरे नाखून नहीं बढ़ते हैं और जल्दी टूट भी जाते हैं, क्या करूं?

आप अपने नाखूनों पर नियमित रूप से जैतून के तेल की मालिश कीजिए. साथ ही डाक्टर की सलाह से कैल्सियम भी खाना शुरू कर दें. 'नेल हार्डनर' नामक सौंदर्य प्रसाधन को नाखूनों पर लगाएं, इस से उन में मजबूती आएगी.

मैं एक 42 वर्षीया विवाहिता तीन ब[...] की मां हूं, पति की शराब पीने की लत के का[...] परेशान रहती थी कि इस बीच घर में आने [...] एक डाक्टर ने मेरे हृदय की ही मरहमपट्टी [...] दी. उस ने कहा कि वह पत्नी को तलाक दे दे[...] इधर मैं अपने पति को एकतरफा तलाक दे चु[...] थी. उस डाक्टर ने एक बार मेरी मांग भी भर[...] वह तमाम बातें बनाता है पर शादी नहीं कर[...] समाज जानता है कि मैं ने पुनर्विवाह किया है. [...] बच्चे भी मेरे पास इसी वर्ष आ गए हैं. मुझ[...] डाक्टर ने अब तक वैधानिक विवाह क्यों न[...] किया, यही सोच कर बीमार रहने लगी हूं, [...] करूं?

वह व्यक्ति आप से विवाह नहीं करे[...] केवल आप की भावनाओं से खिलवाड़ ही कर[...] रहेगा. यों अचानक अपनी पत्नी व बच्चों [...] छोड़ने का उस के पास औचित्य भी क्या है. प[...] की नापसंदगी की बात केवल इसलिए करता [...] कि आप से भी संबंध कायम रहें. अब इस वर्ष [...] के पास दो बच्चे आए हैं तो क्या उन्हें आप के [...] ने भेजा है. फिर आप का तलाक भी एकतरफा [...] इस का अर्थ है कि तलाक वैध नहीं था. अब [...] चाहें तो अपने पति से बात कर के, यदि वह सह[...] हों तो उन के पास लौट सकती हैं और एक न[...] जीवन आरंभ कर सकती हैं. इस तरह दूसरे व्यक्ति[...] से संबंध रखना तो जीवन बरबाद करना ही है. उ[...] से दो टूक बात कर लीजिए. वह केवल आप [...] खिलौना बनाना चाहता है. सर्वोत्तम है पति के पा[...] बच्चों को ले कर लौट जाना. नहीं तो स्वयं अप[...] पैरों पर खड़े हो कर ही आप को बच्चे पालने हो[...] जो टेढ़ी खीर है.

—कंचन

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जासकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली जैसे खुशनुमा त्योहार में भावनाओं को अपवित्र कर के इस त्योहार का मजा किरकिरा न करें. अपनी भावनाओं पर यदि नियंत्रण रखा जाए तो इस उत्सव का आनंद दोगुना हो सकता है.

लेख • ओम मिश्रा

देवर जीजा से होली जरूर खेलें लेकिन...

पिछले वर्ष होली की ही घटना है. देवर भांग के नशे में भाभी के साथ अश्लील हरकत कर बैठा. इस बात को नजरअंदाज किया जा सकता था, लेकिन जम कर मारपीट हो गई. देवरानी ने जेठानी को पकड़ लिया. उधर बड़े भाई ने छोटे भाई की ठुकाई कर दी. जरा सी बात में होली का उल्लास तनाव में बदल गया.

इसी तरह एक घटना में आशिक मिजाज जीजा ने अपनी 16 वर्षीया साली को होली के दिन संबंधों का अतिक्रमण कर के लगभग अनावृत सा ही कर दिया. ऐसी स्थिति में मातापिता का पारा चढ़ना स्वाभाविक था. परंतु दामाद का कुछ लिहाज कर के वे कुछ नहीं बोले. लेकिन साले से चुपचाप बैठे यह सब नहीं देखा गया. लिहाजा, उस ने संबंधों की परवाह किए बगैर जीजा से दोदो हाथ कर लिए. जीजा फिर कभी उन के घर न आने की दुहाई देते हुए अपना मुंह लटकाए वापस चलते बने.

उक्त दोनों ही घटनाएं दोनों पक्षों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

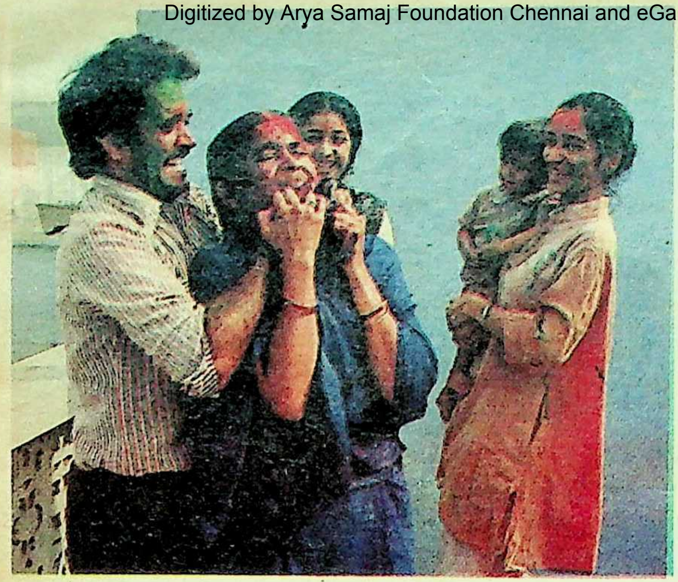

यदि आप की चारछः सहेलियां भी मौजूद हों तो देवर या जीजा से आप शौक से होली खेल सकती हैं.

गलतियों को उजागर करती हैं. होली और मजाकिया संबंधों का यह अर्थ तो नहीं है कि आप अनचाहा और मनचाहा सब कुछ करते रहें और सामने वाला कुछ भी न बोले.

यदि आप देवर अथवा जीजा से होली खेल रही हैं तो इस का मतलब यह नहीं है कि आप सभी सामाजिक मर्यादाओं को ताक पर रख दें. देवर एवं जीजा की होली में भी शालीनता की कुछ सीमाएं तो होती ही हैं. यह तो है नहीं कि होली में आप नारी सुलभ मर्यादाओं को भी भुला बैठें.

यदि किसी भी क्षण देवर अथवा जीजा में से कोई भी बहकता दिखे तो आप को तो सख्ती से पेश आना ही चाहिए, साथ ही देवरानी अथवा बहन को भी ऐसी स्थिति में हस्तक्षेप करने में संकोच नहीं करना चाहिए.

होली के दिन अश्लील हरकत करने वाले जीजा से रेखा ने प्रतिवाद नहीं किया. उधर जब जीजा का मन नहीं माना तो दूसरे दिन उस ने रेखा को बिस्तर पर ही गिरा लिया. वह तो अच्छा रहा कि रेखा के मुंह से चीख निकल गई और तुरंत रेखा के पिता वहां आ पहुंचे.

होली के दिन जीजा अथवा देवर के मन में गलतफहमियां भी बहुत जल्दी पनपती हैं. होली के दिन किया गया हंसीमजाक और रंग लगाते समय यौन उत्तेजना प्राप्त करने वाले यह समझ बैठते हैं कि भाभी अथवा साली उन की किसी भी अश्लील हरकत का प्रतिवाद नहीं करेगी.

उसी क्रम में दूसरे दिन पहले से भी अधिक अशोभनीय तरीके से उसे पकड़ लेने के प्रति उन का साहस बढ़ जाता है.

वैसे होना यह चाहिए कि देवर या जीजा से परिवार वालों की उपस्थिति में ही होली खेलनी चाहिए. यदि उस समय परिवार के सदस्य इधरउधर हों तो देवर या जीजा से होली खेलने से तब तक अवश्य कतराएं जब तक कि घर का कोई महत्त्वपूर्ण सदस्य दोनों के बीच उपस्थित न हो जाए. यदि आप की चारछः सहेलियां भी उपस्थित हैं तो भी देवर अथवा जीजा से आप होली शौक से खेल सकती हैं. सहेलियों के बीच आप के जीजा की हिम्मत मनचाहा करने की नहीं पड़ेगी.

होली के दिन देवर या जीजा से होली खेलने की ज्यादा उत्सुकता दिखाना आप के लिए भी ठीक नहीं है. लेकिन हां, देवर अथवा जीजा से होली के दिन इतना ज्यादा रूखा व्यवहार भी न करें कि सामने वाला बिना होली खेले ही नाराज हो कर वापस चला जाए. ऐसी स्थिति में मध्य मार्ग ही अपनाएं, जिस से कि सीमाएं भी बनी रहें और अगले का मुंह भी न उतरे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली पर रंग खेलें सोचसमझकर

लेख ● डा. अरविंद दुबे

होली रंगों का त्योहार है. ऐसे में अगर मैं आप से यह कहूं कि चूंकि रंगों से आप को नुकसान होता है. इसलिए इस बार से आप होली पर रंगों का प्रयोग न करें तो आप इस पर अमल करने से इनकार कर देंगे. सच भी है, साल में एक बार तो रंगों का त्योहार आए और उस पर रंग न खेलें, यह कैसे हो सकता है. ठीक है, इस बार भी आप रंग खेलें पर कुछ बातों का ध्यान रखें.

रंग किस प्रकार आप को नुकसान पहुंचा सकते हैं, पहले यह जान लेना आवश्यक है. पर इस से भी आवश्यक है यह जानना कि कितनी तरह के रंग बाजार में मिलते हैं या कितनी तरह की चीजें बाजार में होली पर रंगों की तरह उपयोग करने के लिए उपलब्ध हैं.

मूल रूप से दो तरह के रंग उपयोग के लिए बाजार में उपलब्ध होते हैं : एक तो कृत्रिम या संश्लेषित रंग, दूसरे प्राकृतिक पदार्थों से प्राप्त होने वाले रंग. वैसे तो दोनों प्रकार के रंगों में कोई विशेष फर्क नजर नहीं आता, पर आमतौर पर प्राकृतिक पदार्थों से प्राप्त किए जाने वाले रंग इतने चमकीले और शुद्ध नहीं होते. इस के विपरीत पूर्णतया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली यों तो रंगों का त्योहार है. लेकिन कुछ रंग ऐसे भी होते हैं जो प्राणघातक हो सकते हैं. लेकिन रंगों के विषय में अगर आप सावधान रहेंगे तो आप के रंग में भंग नहीं पड़ेगा.

संश्लेषित रंग शुद्ध, चमकीले व पक्के होते हैं. संश्लेषित रंग अधिकतर कुछ एजो रासायनिक क्रियाओं के परिणामस्वरूप बनते हैं, जो बाद में विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा शुद्ध कर लिए जाते हैं.

इस के अतिरिक्त एक और श्रेणी के रंग भी बाजार में उपलब्ध होते हैं. इन्हें अर्धसंश्लेषित रंग कहा जाता है. वस्तुतः इन रंगों का मूल स्रोत तो प्राकृतिक पदार्थ ही होते हैं, पर इन्हें विभिन्न प्रक्रियाओं से शुद्ध कर लिया जाता है. रंगों के ये स्रोत पौधे या जीवजंतु कुछ भी हो सकते हैं. एक प्रकार के कीड़े को मार कर व पीस कर एक चमकीला महावरी रंग तैयार किया जाता है जो बहुतायत से प्रयोग किया जाता है.

रंगों में कुछ ही मूल रंग होते हैं. बाद में कई रंगों को विशेष अनुपात में मिला कर रंगों के विभिन्न शेड प्राप्त कर लिए जाते हैं. इन सब के अतिरिक्त कुछ प्रकार के रासायनिक द्रव यथा, जेंशन वायलेट, सेफ्रेनिन, वार्निश (अधिकतर चमकीली चांदी के रंग की वार्निश), पेंट, स्याहियां आदि वे लोग प्रयोग में लाते हैं जो कि किसी प्रयोगशाला या प्रतिष्ठान से संबंधित होते हैं और ये चीजें उन्हें बिना पैसे के उपलब्ध हो जाती हैं. पक्के व न छूटने वाले रंग लगाने की चाह भी इस प्रकार के रंगों के इस्तेमाल को बढ़ावा देती है.

कुछ व्यक्तियों की त्वचा रंगों के प्रति विशेष संवेदनशील होती है. उन व्यक्तियों में जिन में या जिन के निकट संबंधियों में दमे की या एलर्जी की शिकायत होती है, उन में इस प्रकार के लक्षण उत्पन्न होने की संभावनाएं सर्वाधिक होती हैं. इस के अतिरिक्त अधिकांश लोगों में रंग में मिलावट की जाने वाली अशुद्धियां ही मुख्यतः इस प्रकार की हानियां पहुंचाती हैं. ये अशुद्धियां रंग में मिली बालू, धूल या कोयले के बारीक टुकड़े कुछ भी हो सकती हैं. जब ऐसा रंग विशेषकर आंखों में पड़ जाए तो भयंकर जलन पैदा होती है. जिस में पीड़ित व्यक्ति तत्काल आंखें मलता है. परिणामस्वरूप आंख की पुतली में घाव हो सकते हैं. जिस का परिणाम कम दिखाई देने से ले कर पूर्ण अंधता तक कुछ भी हो सकता है.

कुछ रंग त्वचा पर गहरे चिपकते हैं. जब उन्हें किसी तेज डिटरजेंट साबुन से, किसी खुरदरे कपड़े या खुरदरे पत्थर से रगड़ कर साफ करने का प्रयास किया जाता है तो उस स्थान की त्वचा छिल जाती है. इस प्रकार की छिली त्वचा संक्रमण (छूत) व एलर्जी के लिए अति संवेदनशील होती है. परिणामतः उस स्थान की त्वचा में सूजन से ले कर घाव तक कुछ भी हो सकता है.

कुछ रंगों में छिपे रासायनिक पदार्थ त्वचा की सतह से सीधे क्रिया कर के उस की संरचना पर बुरा प्रभाव डालते हैं. इस से त्वचा में जलन, खुजली, सूजन या घाव हो सकते हैं.

किन रंगों का प्रयोग करें

तो फिर कौन से रंगों का प्रयोग किया जाए? उपर्युक्त हानिकारक तत्त्व वैसे संश्लेषित रंगों में सर्वाधिक होते हैं, पर प्राकृतिक रंग भी इस से अछूते नहीं हैं. होली के दिनों में जो मौसमी रंग बेचने वालों की भीड़ होती है, उन से खरीदे गए रंग सर्वाधिक हानि पहुंचाते हैं. टेसू के फूलों से प्राप्त रंग अब तक सर्वाधिक सुरक्षित, पक्का व उत्तम माना जाता है.

रंग खरीदते समय थोड़ा रंग किसी साफ बरतन में ले कर या हथेली पर रख कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] में कभीकभी ऐसा रंग लगा दिया जाता है, जिस के रासायनिक तत्त्व चेहरे को विकृत ही नहीं करते, व्यक्ति को पूरी तरह अंधा भी कर सकते हैं.

थोड़ा पानी डालें. रंग को उंगली से मिलाएं. फिर इसे नीचे गिरा दें. बरतन की तली को या हथेली को ध्यान से देखें. यदि अब भी इस पर कुछ रंगीन दानेदार पदार्थ रह जाता है तो ऐसे रंग का प्रयोग न करें. वैसे बारीक चूर्ण के रूप में मिलने वाले अच्छे रंगों में यह शिकायत नहीं मिलती है. बारीक रवे के रूप में मिलने वाले रंगों में यह शिकायत अधिकता से मिलती है.

● रंग को किसी ऐसे व्यक्ति पर न डालें जिसे पहले दमा या एलर्जी की शिकायत रहती है या जिस के निकट संबंधियों को यह शिकायत हो. उस से गले मिल कर ही होली मनाएं.

● रंग के स्थान पर अन्य पदार्थों, जैसे पेंट, वार्निश, स्याही व प्रयोगशाला या संस्थान में उपयोग होने वाली डाई आदि का इस्तेमाल न करें.

● रंग को आंखों में जाने से बचाएं.

● बहुधा यह देखा जाता है कि लोग खुरदरे दानेदार रंगों को बहुत गाढ़ा घोल कर हाथों पर लगा लेते हैं. फिर इसे दूसरों के मुंह पर लगाते हैं. ऐसा न करें. इस से दानेदार रंगों के बड़े कण हाथों में चिपके रह जाते हैं जो चेहरे पर खरोंचें पैदा कर देते हैं.

रंग कैसे छुड़ाएं:

चेहरे या शरीर पर लगे रंग को छुड़ाने के लिए तारपीन के तेल में भीगी हुई रूई प्रयोग करें. तेज न रगड़ें, इसे धीरेधीरे छुड़ाएं. गहरे रंग यदि शरीर पर या चेहरे पर लगे हैं तो इस के लिए मैदा या बेसन का प्रयोग करें. आटे की लोई भी काम में ली जा सकती है. इस से न तो त्वचा छिलती है और न खुश्क होती है. यदि संभव हो तो सौंदर्य प्रसाधनों में प्रयोग किए जाने वाले 'रिमूवर' का प्रयोग किया जा सकता है. यदि एक बार में पूरा रंग न छूटे तो अधिक न रगड़ें. कुछ घंटे बाद ही बाकी रंग छुड़ाने का प्रयास करें. नहाने के साबुन से रंग छुड़ाने के बाद त्वचा पर बेबी लोशन या कोई हलकी क्रीम लगाएं.

यदि आंख में रंग पड़ जाए तो उसे रगड़ें नहीं. रगड़ने से आंख में पड़े कण पुतली में धंस कर अधिक नुकसान कर सकते हैं.

होली खेलने वालों में गाढ़े और न छूटने वाले रंगों की चाह जितनी बढ़ती जाती है, उतनी ही दुर्घटनाओं की संभावनाएं बढ़ती जाती हैं. अगर ठीक से सोचें तो आप भी महसूस करेंगे कि पक्का और न उतरने वाला रंग वह नहीं जो आंखों से दिखाई देता है वरन वह है जो दिल से महसूस किया जाता है. आप किसी पर प्यार से रंग डालें, वह कितना भी हलका क्यों न हो, विश्वास कीजिए जिंदगी भर नहीं छूटेगा. और अगर इस रंग डालने में रंग में भंग हुआ तो कितना भी चटख और शोख रंग क्यों न हो, न तब चढ़ेगा, न फिर कभी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस के रंग रंगी हो गोरी

नयनों में हैं रंग अबीर के
अधरों पर हैं गीत प्रीत के.
खोएखोए से चेहरे पर
उभरी हुई लाज की लाली.
किस के प्रणय की मदिरा पी
चाल तुम्हारी है मतवाली.
किस के आने की आहट को
सुनती हो तुम चोरीचोरी
किस के रंग रंगी हो गोरी!

सांससांस में आतुरता ज्यों
कोकिल कूक रही प्राणों में.
किसकी वेणु के स्वर का
गीत तुम्हें अपना लगता है.
किस का नजरों में आ जाना
सतरंगी सपना लगता है.
मन के दरपन में देखा है
किस चंदा को आज चकोरी!
किस के रंग रंगी हो गोरी!

—मंगत बादल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंग नहीं भावनाएं उड़ेलिए

लेख ● सुरभि सक्सेना

होली एक रंगबिरंगा त्योहार है. किंतु इस की सुंदरता भी तभी तक रह सकती है जब तक कि व्यक्ति अपनी मर्यादाएं न भूले. यों होली के माहौल में लोग होश खो बैठते हैं लेकिन अगर जरा सी सावधानी बरत ली जाए तो यह त्योहार न केवल रंगीन बल्कि खुशनुमा भी बन सकता है. इसी तरह जरा सी असावधानी बजाय रिश्तों को दृढ़ और प्रिय बनाने के उन में दरार पैदा कर सकती है.

13 वर्षीया डाली एक खिलंदरी किशोरी हुआ करती थी अभी पिछले साल की शुरुआत तक, परंतु होली का परंपरागत त्योहार आया और उस के जीवन में अंधकार घोल कर चला गया.

हरदम ही डाली से छेड़छाड़ करने वाली उस की जवान भाभी ने बड़ी उमंगों से होली के दो दिन पहले ही रंग और गुब्बारे मंगा लिए थे. ऐन होली की सुबह उस ने गुब्बारे में रंग भर कर लाड़ली ननद को रंग

होली दिलों को मिलाने और खुशियां बरसाने वाला त्योहार है. इसलिए दूसरों पर सिर्फ रूखे रंग ही नहीं अपने मन की सच्ची भावनाओं का सैलाब भी उड़ेलिए. इसी में होली का असली मजा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

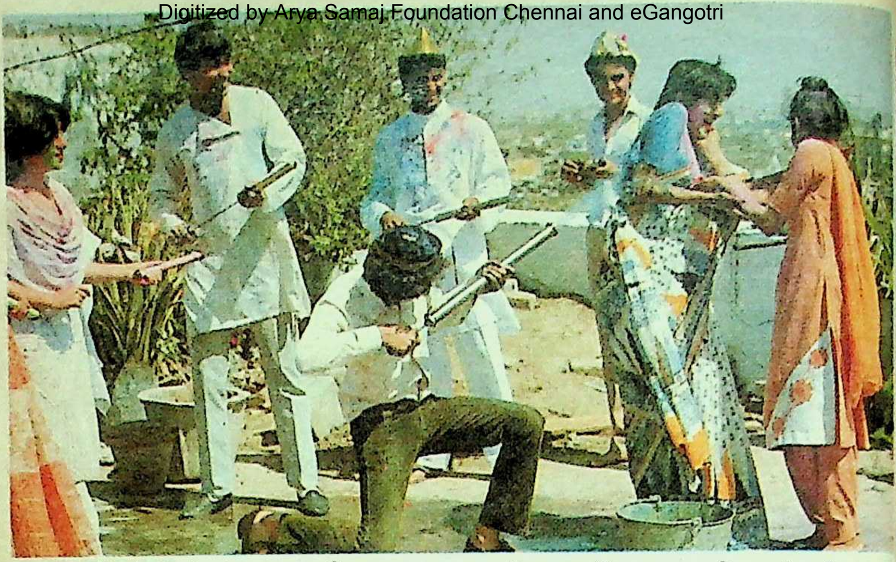

वास्तव में होली के रंग प्यार और अपनत्व को गहरा करने के प्रतीक होते हैं. ▲

में डुबो देना चाहा, किंतु डाली एकदम ही पलट गई और गुब्बारा पूरी तेजी से जा कर उस की दाहिनी कनपटी पर टकरा गया. तमाम भागदौड़ और डाक्टरदवाइयों के बाद भी डाली की दाहिनी आंख बचाई न जा सकी.

मध्यमवर्गीय परिवार के सीमित साधनों में जीने वाली चंचल डाली आज एकदम ही खामोश हो गई है. चाह कर भी परिजन उस की खुशियां वापस नहीं लौटा सकते और वह भाभी जो सिर्फ उसे रंग कर लाड़ लड़ाना चाह रही थी, आज अपराध बोध से ग्रस्त हो कर अपने ही में कैद हो कर रह गई है.

होली के रंग से नहीं, जल्दबाजी और उतावलेपन से सावधान रहने की विशेष आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता को अनिवार्यता ही समझ कर होली का स्वागत करना चाहिए.

गुब्बारे में रंग भर कर फेंक मारना कभी भी खतरनाक साबित हो सकता है इसलिए होली के अवसर पर गुब्बारों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए. रंग ही अगर लगाना है तो वह ऐसे भी घोल कर लगाया जा सकता है. वैसे भी होली के अवसर पर रंग लगाने का अर्थ होता है कि प्यार के रंग में दो लोगों ने एकदूसरे को डुबो दिया. इसलिए रंग लगाते समय प्यार के रंग की मानसिकता बनाएं, न कि तकलीफ देने वाले तेलिया रंगरोगन की जो गहरे चिपक जाते हैं.

वास्तव में होली के रंग प्यार और अपनत्व को गहरा करने के प्रतीक होते हैं. अगर इन रंगों से किसी को कोई परेशानी होती है तो फिर रंगों की अनिवार्यता समाप्त हो जानी चाहिए.

अचला के लिए तो होली शब्द ही आतंक का प्रतीक बन गया है. अभी उसे ससुराल आए महीना भर भी नहीं हुआ था कि होली का रंगीन त्योहार आ गया. देवर बसंत ने रसोई में पहुंच कर खाना पका रही इकलौती भाभी को अचानक रंग डाल कर चौंकाने की चुलबुली इच्छा से पकड़ लिया और बात की बात में घर में दुख छा गया. बसंत के धक्के से अचला के हाथ से दाल का भगौना छूट गया और वह ऊपर से ले कर नीचे तक उबलती दाल से जल गई. बसंत बेचारा रंगवंग सब एक तरफ पटक कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पियर्स का प्यार

स्वच्छ...कोमल...निर्मल

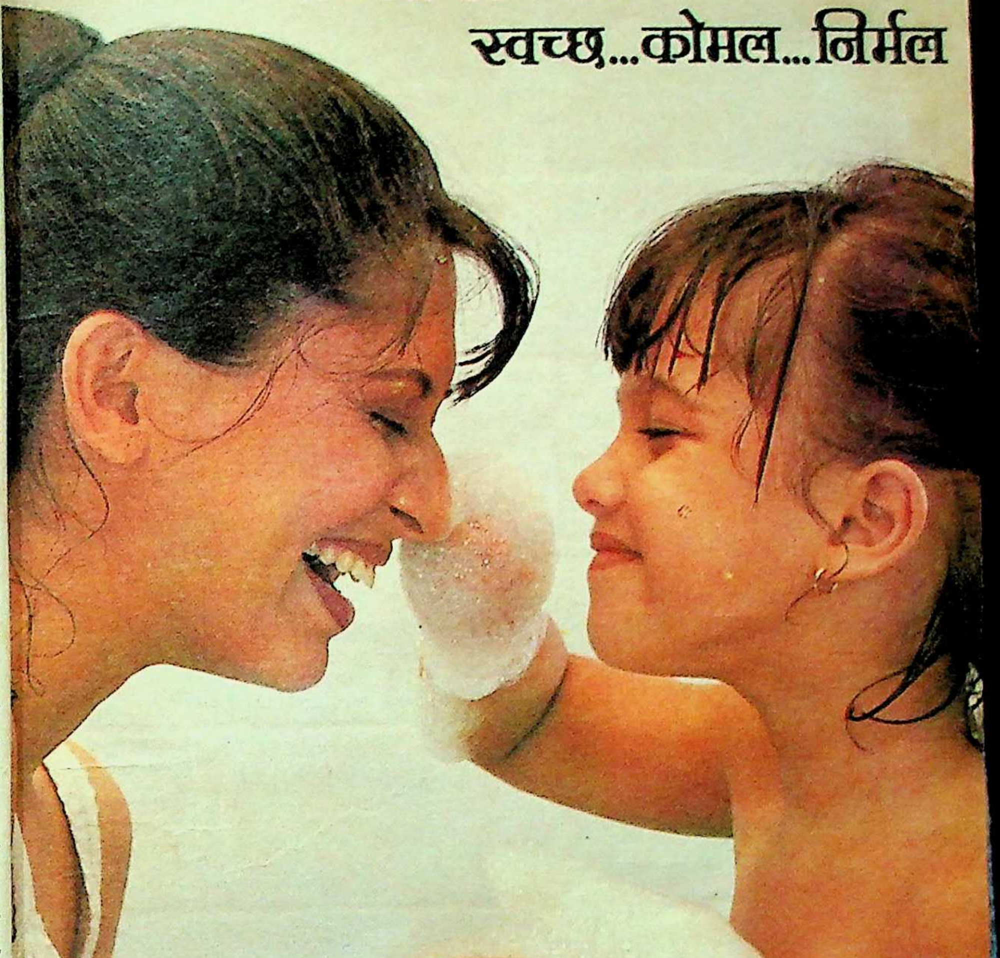

पियर्स का प्यार... महसूस कीजिए.
त्वचा स्वच्छ... कोमल... निर्मल...
बिल्कुल पियर्स की तरह. क्योंकि
पियर्स में कोई ऐसा तत्व नहीं, जो
आपकी त्वचा को हानि पहुंचाए.
स्वच्छ, अम्बर पियर्स में प्यार

की कोमलता झलकती है.
सुंदर नारियों ने ५० से भी
अधिक वर्षों से केवल
पियर्स पर भरोसा किया है.
क्या आपकी त्वचा भी पियर्स
की कोमलता की हक़दार नहीं?

पियर्स त्वचा को … कोमल मासूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाभी को टैक्सी में हस्पताल ले कर भागा.

वास्तव में कोई भी त्योहार ऐसा नहीं है जब प्यार के नाम पर दूसरे व्यक्ति को शारीरिक चोट न पहुंचाई जा सकती हो. इसलिए कई बार लोग अपने व्यक्तिगत मलोमालिन्य को एक तरह से निकाल लेते हैं. होली के हुड़दंग में उठा कर पटक देना, कीचड़गोबर पोत देना और न छूटने वाले रासायनिक रंग लगा देना तो बुरे मन के लोगों का पुराना शगल है.

कालिज के चुनाव को ले कर दो गुटों में मनमुटाव हो गया और यह मनमुटाव गलीच तरीके से होली पर प्रकट हुआ. एक गुट ने न जाने कौन से रंग 'बुरा न मानो' कह कर दूसरे गुट के लड़केलड़कियों के चेहरों पर पोत दिए कि जलन के मारे 23 वर्षीय अनुपम और बी.ए. की नई छात्रा पद्मजा को तत्काल ही हस्पताल में भरती कराना पड़ा. बाद में दोनों किसी तरह बच तो गए पर पद्मजा की खाल सदा के लिए खुरदरी हो गई और अनुपम के शरीर पर तेजाब मिले उस सफेदे का इतना बुरा असर पड़ा कि महीनों उ दवाइयां खानीलगानी पड़ीं.

चौंका देने की भावना से अचानक ज कर रंग डालना कभीकभी प्रफुल्लता पै करने वाला तो कभीकभी दुखद भी साबि होता है.

इसलिए ऐसा नहीं कि रंग डालना ही नहीं चाहिए बल्कि बेहतर तो यह होगा कि रंग डालने से पहले संकेत दे कर सामने वाले व्यक्ति को सचेत कर देना चाहिए.

कभीकभी मरजी के खिलाफ रंग डालना भी अनेक अप्रिय घटनाएं पैदा कर डालता है. वास्तव में जो लोग रंग पसंद नहीं करते हैं उन पर रंग डालना ही नहीं चाहिए, उन पर गुलाल डाल कर होली का त्योहार मनाया जा सकता है.

बिना होश खोए, दूसरे की रुचि और सुविधा को ध्यान में रख कर, मर्यादित हो कर डाला गया रंग ही होली का प्यार होता है. होली मिलन का प्रतीक है. ध्यान रहे किसी आनंद को तभी महसूस किया जा सकता है जबकि सामने वाला व्यक्ति भी उस में बराबर हिस्सा ले रहा हो. सिर्फ अपने जोश में दूसरा भी उस मस्ती में शामिल हो जाएगा, यह केवल भ्रम है.

सब से पहले तो दिल का प्यार में रंगना जरूरी है तभी इनसान बाहरी रंग को उत्साह से ग्रहण करता है. आवश्यक है कि पहले मन की निकटता बनाई जाए फिर बाहरी उपक्रमों की.

सच्चे मन और समर्पित भावना से डाले गए रंग में न तो बदले की भावना होती है और न ही हिंसा की. सच्चे मन से अर्पित किया गया रंग तो क्या, चुटकीभर गुलाल भी महत्त्वपूर्ण होता है. इस बार की होली भी खेलिए तो जरूर लेकिन प्रतीकार और हिंसा से परे हो कर. मन को निर्मल कर के, भावनाओं का सैलाब रंग के माध्यम से उड़ेल दीजिए अपने प्रियजनों के तन पर. यकीन मानिए उन के मन पर रंग जाएगा यह प्यार. बस शर्त यह है कि यह प्यार, केवल प्यार ही हो, प्रतीकार या दिखावा नहीं. ●

यह अंक
आप को कैसा लगा?

सरिता आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरीपूरी कोशिश करते हैं कि सरिता का प्रत्येक अंक आप की रुचि के अनुसार रहे और उस से आप को अधिक से अधिक संतोष हो और वह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे.

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिए. कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई. आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना चाहेंगे. हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे. अपनी आलोचनाएं व सुझाव निम्न पते पर भेजें:

सरिता,
ई-3, दिल्ली प्रेस, झंडेवालान एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूटर/मोटर-साइकल सवार!

अगर आप सोचते हैं कि
मोड़ों पर फ़र्राटे से निकलना
और टायरों की चीख के साथ
वाहन रोकने में आपकी शान है,

तो दोबारा सोचिए...

कहीं ज़िंदगी का सफ़र ही न रुक जाए.

शान न दिखाइए
सड़क पर सावधानी बरतिए.

सुरक्षा से जीवन रक्षा

मुफ़्त पुस्तिका

"मोटर-साइकल सुरक्षित चलाएं"
के लिए यहाँ लिखें :

लॉस प्रिवेन्शन एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया लि.
(जनरल इन्श्योरेन्स इंडस्ट्री द्वारा प्रायोजित)
वॉर्डन हाउस, सर पी.एम. रोड, बंबई-400 001.

CLARION/B/LP/38/182 HIN

हिंदू धर्म का आधार ग्रंथ
सरल, सुलभ भाषा में पहली बार

ऋग्वेद

ऋग्वेद की संपूर्ण "शाकल संहिता" का हिंदी भाषांतर

संस्कृत के श्लोक नहीं,
केवल हिंदी में

भाषांतरकार
डा. गंगासहाय शर्मा, एम.ए. (संस्कृत)
पी.एच.डी. व्याकरणाचार्य

वेद में क्या है, क्या नहीं है, दूसरे से न सुन कर स्वयं पढ़िए. यह वही वेद है जो आज तक गोपनीय विद्या रहा है और जिस के लिए शास्त्र कहते हैं कि शूद्र के कान में यदि इस का एक अक्षर भी पड़ जाए तो उस के कान में पिघला सीसा भर देना चाहिए.

मूल्य रु. 85 डाक व्यय 10/- अतिरिक्त पूरा मूल्य अग्रिम भेजने पर डाक व्यय केवल 5 रुपए.

दिल्ली बुक कंपनी
एम-12 कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.

W/DBC-173

हर हिंदू परिवार के लिए आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

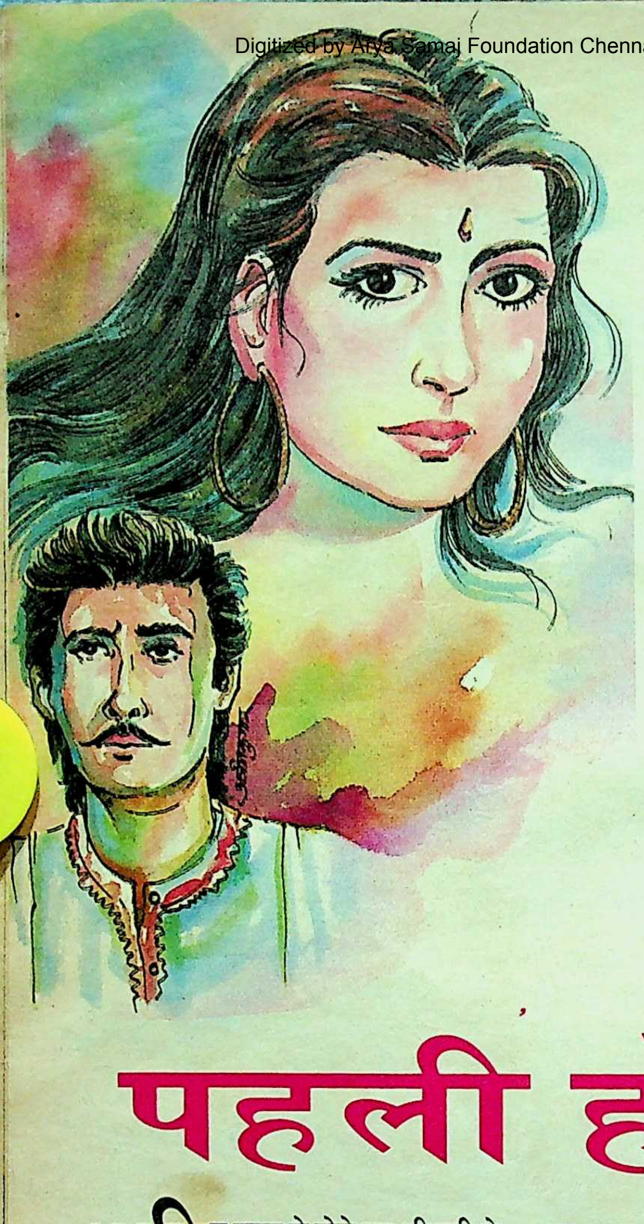

कहानी

छाया श्रीवास्तव

पहली होली

'शीत लहर के होते हुए भी नदी के प्रशस्त तट पर ग्रामीण मेला खचाखच भरा था. बरतनों की दुकान पर काफी भीड़ थी. 'श्याम का मन एक जगह नहीं लग रहा था. उस का परिवार तीन दिन से यहां डेरा डाले था. बड़ा भाई राम, जो नायब तहसीलदार था, अपने अमले के साथ शिविर में ठहरा था.

उन्हीं के निकट दूसरे तंबू में ठहरे थे. मां, चाची, दोनों छो[टी] बहनें कमला, विमला औ[र] विधवा बूआ आई थीं. वे स[ब] जेवरों की जांचपरख में लगी थ[ीं] टूटेफूटे बरतन बेच कर नए ले[...] थे.

'श्याम मेले के कई चक्क[र] लगा लेता, तब भी उस का चंच[ल] मन न भरता. 18 वर्ष क[ा] नवयुवक जैसे वर्ष भर के लि[ए] मेले के एकएक दृश्य को आंखों [में] भर लेना चाहता था. युवतियों [के] झुंड के पीछे वह बरबस खिंच[ा] चला जाता.

अचानक 'श्याम की दृष्[टि] एक दुकान के पास खड़ी ए[क] तरुणी पर अटक गई. उस [के] लहराते केश हवा में उड़ रहे थे[.] भीड़ के साथ वह भी तमाशबीन[ों] में जा कर खड़ा हो गया. नजदीक[ ] जा कर तरुणी का मुख देखने को 'श्याम का मन अकुला रहा था[.]

वह उस के बिलकुल पास जा कर जैसे ही खड़ा हुआ, अचानक चौंक उठा. एकाएक आठ वर्ष पूर्व देखी उस बाला में बचपन का रूप उभरता चला गया. उस ने आंखें मल कर कई बार देखा कि क्या यह वही है या उसे भ्रम हुआ है.

तब केवल वह 10 वर्ष की थी, उसी के बराबर. फिर 'श्याम को वह होली के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

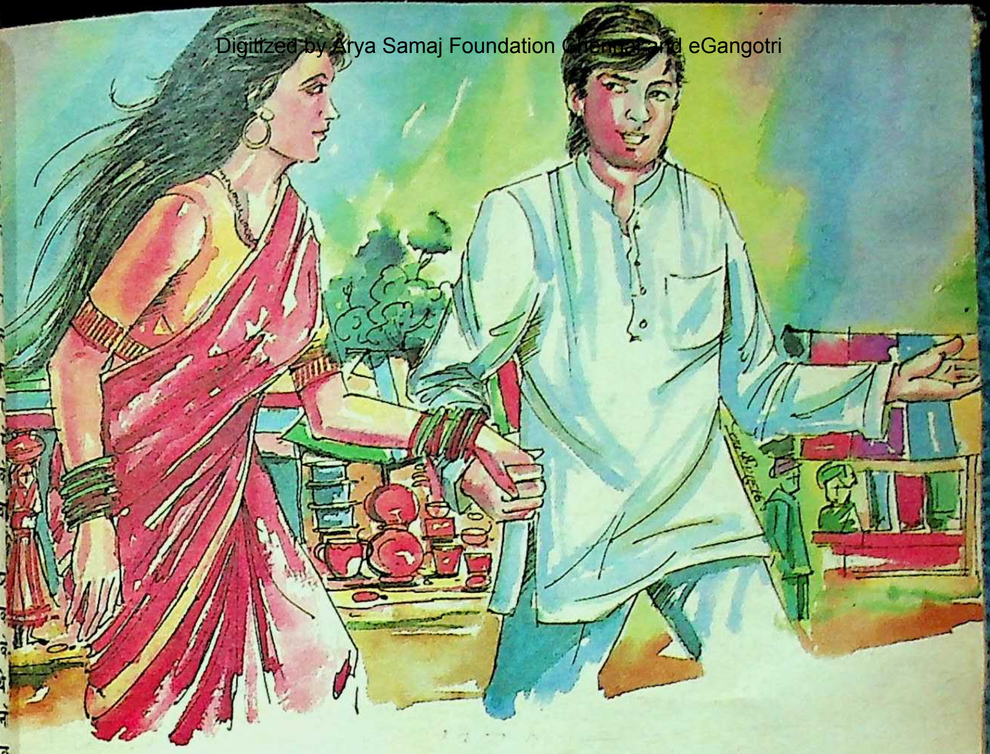

"तो चलो, मैं वहीं चलता हूं, उन से पूछ कर चली चलना." श्याम ने नैनी का हाथ पकड़ कर उसे घसीटते हुए कहा. ▲

हुड़दंग का कांड याद आ गया, जो दो परिवारों को तोड़ता चला गया. क्या यह वही है, जिसे उस के भाई राम ने विदा कराने से इनकार कर दिया है. उस की अपनी सगी भाभी.

तब राम केवल 15 वर्ष का था, जब दादी की जिद पर सुनयना भाभी ब्याह कर आई थीं. आयु थी, केवल नौदस वर्ष, घर भर की कितनी लाड़ली थीं, भाभी. दादी तो उन्हें सिरआंखों पर रखतीं. परंतु क्या यह सच में वही हैं या अन्य कोई?

युवती ने क्षण भर पलट कर उसे देखा, फिर आगे बढ़ चली. वह अपने को रोक नहीं सका और उस के पीछेपीछे चल दिया. भीड़ से बाहर आ कर वह उस के बराबर चलने लगा. फिर समस्त साहस बटोर कर दबे स्वर में बोला 'सुनयना.' तरुणी ने तत्काल गरदन घुमा कर देखा और बोली, "श्याम लाला हो न?"

"अरे, तुम ने खूब पहचाना, भाभी. मैं बहुत देर से पहचानने की कोशिश कर रहा था. बहुत हिम्मत कर के बोल पाया हूं. लग रहा था कि कहीं कोई दूसरी हुई तो जूते न पड़ जाएं."

"हाय, ऐसा कहीं होता है?"

"हां, होता है. और कोई होती तो..."

दसबारह बरस की नन्ही सी बहू नैनी ने अपनी शरारतों से घर भर का मन मोह रखा था, पर एक दिन नैनी की पहली होली में ऐसा तूफान आया जिस ने नैनी को ससुराल से मायके में ला खड़ा किया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या कभी ऐसा हुआ है?" वह शरारत से हंस दी.

"तुम तो यही चाहती हो."

"नहींनहीं, मैं ऐसा क्यों चाहूंगी भला?"

"अच्छा, यह तो बताओ कि तुम ने मुझे पहचाना कैसे?"

"देवदास ने पारो के सिर पर घाव कर के ही तो गहरा लगाव किया था, मन में. मैं अपने दिए घाव को क्या पहचान नहीं पाऊंगी? बचपन के इस अपराध ही ने तो सीता सा बनवास दिया है मुझे."

"राम ने दिया है, भाभी, श्याम ने तो नहीं?" वह हंस कर बोला.

"श्याम ने न दिया होता तो कभी सुध न ली होती अपनी भाभी की?"

"भाभी, एक बात कहूं, बुरा तो न मानेंगी?"

"कहो न...छोटे थे, तब भी तो अपनी बात चलाते थे. कितना तंग करते थे मुझे. तब बुरा मानने की अक्ल कहां थी, सिवाय रोनेचिढ़ने के क्या कर पाती थी? अब तो अक्ल है, क्यों चिढ़ूंगी या बुरा मानूंगी?"

"तब तो हम दोनों बराबरी के थे. तुम्हारे बराबर बहन होती तो उस से भी तो लड़ते. तुम अब समझदार ही नहीं, बहुत सभ्य भी हो गई हो. कुछ पढ़ालिखा भी है? मालूम है, अब कैसी लगती हो?"

"मैं क्या जानूं, कैसी लगती हूं. हां, पढ़ जरूर गई हूं. इसी वर्ष बी. ए. किया है. आगे भी पढ़ने की आकांक्षा है."

"वाह, गजब कर दिया. गजब ही नहीं, कमाल भी. मैं तो एक वर्ष गोल कर गया. भाभी तुम अब बहुत ही सुंदर लगती हो. एक बार राम भैया देख लें तो तुम्हारे चरणों पर ही पड़े रहें. मालूम है, वह नायब तहसीलदार हो गए हैं."

सहसा सुनयना का मुख अरुणाभ हो उठा. लाज से बड़ेबड़े नेत्र झुक गए. रक्तिम अधर कांप कर रह गए.

श्याम क्षण भर मुग्ध भाव से उसे देखता रहा. फिर उस का हाथ पकड़ क एक ओर खींच ले गया. मेले की भीड़ बढ़ती जा रही थी. बीच रास्ते में यों खड़ा होन शोभा नहीं दे रहा था.

"भाभी, मेले में अम्मां, चाची, बूअ और कमला, विमला भी आई हैं."

"अरे, अब तक बताया क्यों नहीं?" उस ने अकबका कर सिर ढक लिया, "कहां हैं, वे लोग?"

"जेवरों की दुकान पर हैं. चलो मिला लाऊं."

"नहीं, बिना अपनी मां, भाभियों को बताए मैं न जा सकूंगी. वे बरतन खरीद रही हैं, उस दुकान पर."

"तो चलो, मैं वहीं चलता हूं. उन से पूछ कर चली चलना." वह उस के साथ दुकान पर जा पहुंचा. सुनयना ने पास जा कर भाभी को टोंचा दिया तो उन्होंने उस की ओर निहारा, "क्या है, सुनयना?"

"इन्हें पहचानो, भाभी."

"कौन है, यह?"

"नमस्ते भाभी, मैं हूं इन का देवर श्याम. पहचाना नहीं?"

"नमस्ते भैया, तुम यहां कहां? तुम लोगों ने पहचाना कैसे एकदूसरे को?"

"यह माथे पर तमगा जो लगा है, न मारने वाला भूल सकता है, न घाव खाने वाला." वह हंस दिया.

"श्याम बाबू, बचपन के इस अपराध ने इतना बड़ा दंड दिया है, मेरी ननद को कि घर भर बिसरा बैठे. ननदोईजी ने तो विदा कराने से ही इनकार कर दिया. क्या इतना बड़ा अपराध हुआ है इन से कि कोई उम्र भर को त्याग दे. छोटीमोटी जाति होती तो दूसरी जगह गौना करा कर घर बसा देते, परंतु ऊंची कही जाने वाली जाति को कहां ठिकाना है?"

"यह मैं क्या जानूं, भाभी मेरी कोई सुनता है? मैं ने तो कभी ऐसा नहीं चाहा था. अम्मा वगैरह आई हैं, उन से मिल लो न. भाभी की मां कहां हैं?"

"वह बरतन खरीद रही हैं."

लगीं
भी
चाच
लोग
समी
लिए
मिल
और
जेव
कि वे
को
बोल
मार्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे ही अपनी जीत पर वह झूमा, उस के क्रोध से सन्नाता हुआ लोटा ठीक श्याम के माथे पर जा कर बैठा. मुंह से चीख के साथ सिर से खून की धार बह निकली.

तभी वह घूमीं और श्याम को घूरने लगीं, "यह कौन हैं, छोटी बहू?"

"सुनयना के देवर हैं. इन के परिवार से भी सब यहीं आए हैं. सास, ससुर, चाचाचाची, बूआ तथा बहनें."

"अरे, समधिन आई हैं क्या? तुम लोग गाड़ी में बरतन रख आओ, तब तक मैं समधिन के पांव पड़ आऊं."

"हम भी चलेंगी, मां, बरतन साथ ही लिए चलते हैं. श्याम बाबू सुनयना को मिलवाना चाहते हैं, अपनी अम्मां से."

"अच्छा तो चलो सब." वह आगे और सब पीछे चल दीं. श्याम की अम्मां जेवरों की दुकान से उठ कर बाहर आई थीं कि वे सब वहां जा पहुंचीं. श्याम अपनी मां को भीड़ से दूर खींच ले गया. फिर हौले से बोला "अम्मां, पहचानो यह कौन हैं?"

"कौन हैं ये लोग?" वह पहचान नहीं पाई.

"यह सुनयना भाभी हैं. ये उन की दोनों भाभियां और मां."

"हाय, यह सुनयना है? इतनी बड़ी, इतनी सुंदर?" उन का मुख अचरज से फैल गया.

"अरी, पैरों पर सिर रख दे अपनी सास के," सुनयना की मां ने कहा.

सुनयना ने सास के पैरों पर माथा रखा तो अब तक के थमे आंसुओं से उन के पांव भीगने लगे.

"अरी उठ, मैं क्या जानूं कि यह उर्वशी सी तू है, मेले में? हम कल से इसे देख रहे थे पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहचान कैसे पाते. बसबस, छोड़ मेरे पैर." अम्मां ने मुसकराते हुए कहा.

तभी सुनयना की मां ने उन के चरण पकड़ लिए, "समधिन, इस को क्षमा करो. अपने घर में टहलनी समझ कर इसे रहने दो. बचपन के अपराध को क्षमा कर दो. कहां जाएगी यह ऐसा रूप और जवानी ले कर?"

"बस समधिन, आगे मत कहो. हम भी तो यही सोचसोच कर मरे जा रहे थे कि पराई बेटी का क्या होगा? परंतु राम माने तब न. वह तो ऐसा चिढ़ा बैठा है, जैसे घाव उसी ने खाया है. कहता है, मैं गंवार, जाहिल बहू ला कर क्या करूंगा? इस पगली ने कांड भी तो ऐसा किया था. तभी से नाराज है."

"समधिन, तुम्हारी बहू अब गंवार नहीं है. बी. ए. तक पढ़ गई है अब एम. ए. करेगी. अब तो इसे क्षमा कर दो."

"ददिया सास बैठी हैं अभी इस की, जो इसे पसंद कर के लाई थीं. उन्हीं की तो दुलारी थी यह. असल में वह मरणासन्न हो गई थीं एक बार, तभी से इसे देखने की रट लगाए थीं कि 'राम की बहू ला दो. मैं मरने से पूर्व बहू का [illegible] देखना चाहती हूं'." श्याम की अम्मां बोलीं.

फिर उन्होंने आगे कहा, "बस यही गलती हुई कि दोनों के छोटी आयु में ब्याह हो गए. न उस में अक्ल, न इस में और ऐसा ही श्याम. यदि राम और उस की दादी हां कर दें तो क्या मैं बहू को स्वीकार नहीं करूंगी? घर के मर्द आए हैं, समधीजी बात कर लें न, अपनी सास को मैं मना लूंगी."

"बहुत कृपा होगी समधिनजी. हम लोग उबर जाएंगे. यह कृपा हमें जीवन भर आप का दास बनाए रखेगी."

वे सब एक वृक्ष के नीचे बैठ गईं. श्याम हंसता हुआ खड़ा रहा. तब तक मेले से चूड़ियां पहन कर दोनों बहनें भी आ गई थीं. भाभी की सुंदरता देख कर वे दोनों बलिहारी हुई जा रही थीं.

इधर अम्मां ने पूरे कांड का ब्योरा देना आरंभ कर दिया था, "तब पहली होली पड़ी थी सुनयना की. आप लोगों ने कितना आग्रह किया था, पर मेरी सास ने इसे मायके नहीं भेजा था. वह हाथों से इस के बाल संवारतीं नहलातीं, साथ खिलातीं, साथ सुलातीं. श्याम के चिढ़ाने पर इस का पक्ष लेतीं. दिन भर देवरभाभी में झगड़े होते, यदि चिढ़ाने को भौजी कहता तो यह मारने दौड़ती. एक बार श्याम ने इस के बाल पकड़ कर पटक दिया. यह खूब चीखीचिल्लाई और दौड़ती हुई दादी से शिकायत करने रसोई तक चली आई. वहां वह दादाजी, इन के पिता, चाचा तथा राम को खाना खिला रही थी. इसे यह शऊर कहां कि दूल्हे के आगे सिर उघाड़ा न जाए. सामने खड़ी हो कर चिल्ला कर बोली, "दादी, दादी...देखो श्याम ने मेरे बाल पकड़ कर मुझे पटक दिया. उसे समझा लो नहीं तो मैं भी ऐसा धक्का दे कर पटकूंगी कि उस के सारे दांत टूट जाएंगे."

"अच्छाअच्छा...चल, मैं डांटती हूं उसे." दादी हंस कर बोली. हम सब सन्न से रह गए कि हम तो अभी तक अपनी सास के आगे मुंह नहीं खोल पाते, घूंघट डालना पड़ता है परंतु दादी की दुलारी के लिए पूरी छूट थी. शर्म से राम का मुंह सुर्ख हो गया था. सारा परिवार नन्ही बहू की बात पर हंस रहा था परंतु वह सिर झुकाए बैठा था. दादी ने श्याम को डांट कर झगड़ा समाप्त किया, परंतु राम मन ही मन क्रोध से उबल रहा था. मौका देख कर चुपके से हम सब की आंख बचा कर जा पहुंचा सुनयना को डांटने कि सब के सामने क्यों चली आई. वह गुस्से से बोला, "अब आएगी दादाजी के सामने ऐसे मुंह खोल कर?"

"हां आऊंगी, क्या कर लोगे मेरा?" यह जवाब दे कर भागी तो राम ने पकड़ कर दो चांटे लगा दिए, "अब आई तो टांगें तोड़ दूंगा."

"यह लगी रोने, सिसकने. हम सब दौड़े पर राम तो यह जा वह जा. यह राम से वैसे ही डरती थी, इस व्यवहार से उस की परछाईं से भी डरने लगी. राम गांव से दूर शहर में पढ़ने

(शेष पृष्ठ 180 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया री सखी फाग

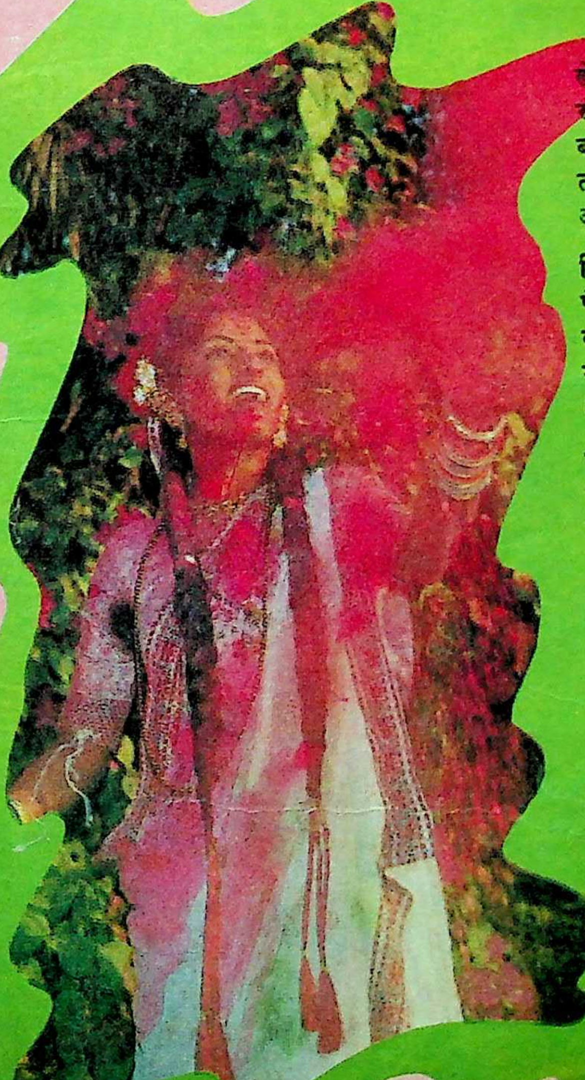

खेलें होली के रंग
रंग चुनर संगसंग,
बहे फागुनी बयार
तनमन पे निखार.
आया री आया सखी फाग.

खिले टेसू के फूल
फैली मंद सुगंध,
कहें सरसों के खेत
मन भाए री बसंत.
आया री आया सखी फाग.

उड़त गुलाल झूमे
मस्त ज्यों बहार,
रजत अबीर सजे
संग द्वारद्वार.
आया री आया सखी फाग.

सखियों ने मारी
आज नैन कटारी,
प्रियतम ने मारी
भरभर पिचकारी.
आया री आया सखी फाग.

—प्रसून

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली के मतवाले व्यंजन

रंगारंग मठरी

सामग्रीः एक किलोग्राम मैदा, 250 ग्राम घी, नमक स्वादानुसार, एक गुच्छी पुदीना, 4-5 हरी मिर्च, एक बड़ा चुकंदर, एक छोटा चम्मच जीरा, आधा छोटा चम्मच सोडा, घी अथवा तेल तलने के लिए.

विधिः पुदीना, हरी मिर्च व जीरे को बारीक पीस लें. चुकंदर को उबाल कर छील कर अलग से पीस लें.

मैदे में सोडा व नमक मिला कर छान लें. अब इस में घी का मोयन मिलाएं. इसे तीन भागों में विभाजित कर लें. एक हिस्से को पुदीना, हरी मिर्च की चटनी के साथ मिला कर हरे रंग में गूंध लें. दूसरे को चुकंदर के गूदे के साथ लाल रंग का गूंधें. तीसरे भाग को सफेद ही बना रहने दें. इसे पानी से कड़ा गूंध लें.

तीनों रंगों का थोड़ाथोड़ा मैदा ले कर छोटेछोटे पेड़े बना लें और पूरी की तरह पतला बेल कर चाकू से गोद दें. और हलकी आंच पर करारा होने तक तलें. होली की रंगीन मठरी तैयार है.

रंगीन शगूफे

सामग्रीः एक किलोग्राम मैदा, आधा कप खसखस, 200 ग्राम सूजी बारीक, 350 ग्राम घी, एक बड़ा चम्मच नमक, दो प्याले चुकंदर का गूदा, आधा छोटा चम्मच सोडा,

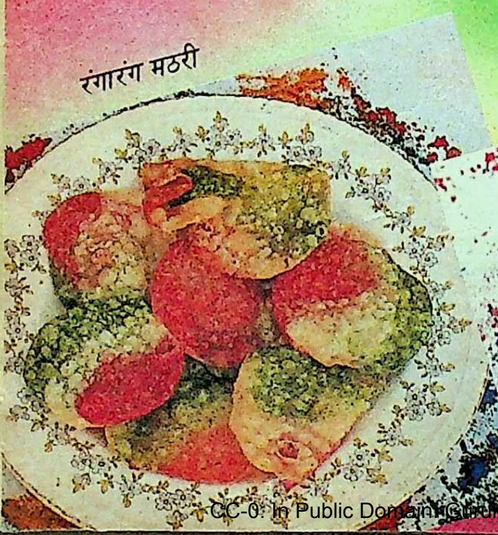
रंगारंग मठरी

रंगीन शगूफे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलने के लिए तेल या घी आवश्यकतानुसार.

विधि: सूजी व मैदे को नमक व सोडा मिला कर छान लें. इस में घी को हलका गरम कर के मोयन दे कर अच्छी तरह मिला लें. इसे में चुकंदर का गूदा मिला कर गूंध लें. (यदि आवश्यकता हो तो पानी का उपयोग करें). इसे गूंध कर आधे घंटे के लिए छोड़ दें, जिस से सूजी फूल जाएगी. इस के छोटेछोटे पेड़े बना कर एकदम पतली पूरी की तरह बेल लें और चाकू से गोद दें. इस पूरी के बीच हलका सा पानी लगा कर खसखस चिपका दें. अब मध्यम आंच पर कुरकुरा होने तक तलें. यह फूल सी खिल उठेगी.

बथुए के नमकपारे

सामग्री: एक गुच्छी (500 ग्राम के लगभग) बथुआ, 500 ग्राम मैदा, नमक स्वादानुसार, 2 हरी मिर्च, एक छोटा चम्मच कलौंजी, चुटकी भर सोडा, 200 ग्राम घी मोयन के लिए, तलने के लिए घी अथवा तेल.

विधि: बथुए को साफ कर के धो कर काट लें. इस में एक कड़छी पानी में सोडा डाल कर मिला कर धीमी आंच पर उबाल लें. (सोडा डालने से पत्तों का हरा रंग पकने पर भी हरा ही बना रहता है). पत्तियां नर्म पड़ने पर छलनी में डाल कर पानी से धो लें, जिस से बथुए की गंध शेष नहीं रहेगी. इस में हरी मिर्च मिला कर एकदम महीन पीस लें.

मैदे में नमक डालें तथा घी गर्म कर के मोयन दे कर अच्छी तरह हथेली से मसलमसल कर मिला कर इकसार कर लें. अब इस मैदे को पिसे हुए बथुए के साथ पूरी के आटे जैसा कड़क गूंधें.

तलने के लिए तेल गर्म करें. इस बथुए वाले आटे की पतली लेकिन बड़ी सी रोटी बेलें. इस पर कलौंजी छिड़क कर हलका सा बेलन से दबा दें. फिर चाकू से नमकपारे काट कर मध्यम आंच पर अच्छी तरह तल लें.

होली के रंगीन त्योहार पर यदि व्यंजन भी रंगों से सराबोर हों तो कहना ही क्या. मुंह में पानी लाने वाले, दिखने में मीठे, परंतु खाने में नमकीन—कुछ ऐसे ही व्यंजन बना कर इस दिन की मस्ती को दोगुना कर खुशी व स्वाद का अनूठा रंग बिखेरें.

बथुए के नमकपारे

तिरंगी गुझियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केक

चकली

हरे रंग के काले सितारे टके नमकपारे तैयार हैं. इसी तरह गाजर अथवा चुकंदर के गूदे से भी विभिन्न रंग के नमकपारे आप तैयार कर सकती हैं.

तिरंगी गुझियां

सामग्री: एक किलोग्राम मैदा, 100 ग्राम सूजी, 350 ग्राम (मोयन के लिए) घी, आधा छोटा चम्मच नमक, एक गुच्छी पालक, एक पाव कद्दू, एक चुकंदर (तीनों को उबाल कर बिना पानी मिलाए पीस लें), 100 ग्राम कार्नफ्लोर और मक्खन, 300 ग्राम भरवां के लिए पाउडर मिल्क, 500 ग्राम पिसी चीनी, 100 ग्राम सूखे मेवे, 6 छोटी इलायची, तलने के लिए घी.

विधि: 100 ग्राम मक्खन में कार्नफ्लोर मिला कर हलके होने तक फेंटिए. (मिश्रण तैयार होने पर परीक्षण के लिए जरा सा पानी में डालें. अगर पानी के ऊपर तैरने लगे तो समझो तैयार है).

मैदे में सूजी, कार्नफ्लोर, नमक व सोडा मिला कर अच्छी तरह छानिए. इस के बाद घी गर्म कर के मोयन दें. फिर इस मिश्रण को तीन भागों में विभाजित करें. एक हिस्से को पालक से गूंधें, दूसरे को कद्दू के मिश्रण से तथा तीसरे को चुकंदर के मिश्रण से. इस तरह तीनों रंगों के आटे तैयार हो जाएंगे. इस मिश्रण को पूरी के आटे जैसा ही रखें, अधिक सख्त नहीं.

इन तीनों रंगों के आटे के अलगअलग पेड़े बनाएं और पलेथन लगा कर रोटी के आकार में पतला बेल लें. कार्नफ्लोर व मक्खन का मिश्रण हर रोटी पर लगा कर उस के ऊपर अलग रंग की रोटी रखें. इस तरह तीनों रंगों की रोटी को मिश्रण लगा कर रोल कर दें और अब बीच से लंबाई की तरफ से काट दें. फिर लंबाई के आकार से आड़ा काट कर छोटेछोटे टुकड़े कर दें. इन टुकड़ों को बिना गोली बनाए ही चकले पर बेलन की सहायता से पूरी की तरह बेल लें. किनारों पर पानी लगा कर बीच में खोए का तैयार भराव भरें और हलकी आंच पर घी में तलें.

कढ़ाई में एकसाथ बहुत सी गुझियां न डालें, नहीं तो पलटने के लिए स्थान न होने पर टूट जाएंगी अथवा खुल जाएंगी.

तलतल कर गुझियां पेपर पर रखती जाएं, जिस से अतिरिक्त घी उन में न रहे. देखने में रंगीन और नाजुक, खाने में स्वादिष्ट गुझियां तैयार हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खस्ता फूल

आलूपनीर के नमकपारे

केक

सामग्री: 4 कप मैदा, एक डब्बा कंडेंस्ड मिल्क, एक कप पिसी चीनी, 100 ग्राम मक्खन, एक कप दूध, 2 छोटे चम्मच बेकिंग पाउडर, खाने वाले गीले रंग पीला, लाल, हरा, आम व स्ट्राबेरी ऐसेंस.

विधि: मैदे में बेकिंग पाउडर डाल कर दोतीन बार छलनी से छान लें जिस से बेकिंग पाउडर पूरी तरह से मैदे में मिल जाए. चीनी और मक्खन को मिला कर इतना फेंटें कि वो अनुपात में दोगुना हो जाए.

दूध को गर्म करें, इस में कंडेंस्ड मिल्क मिला लें. इस में बेकिंग पाउडर मिले मैदे को धीरेधीरे मिलाती जाएं. जब सारा मैदा दूध में मिल जाए तो अच्छी तरह फेंटें और फेंटा हुआ मक्खन व चीनी का मिश्रण इस में मिला कर खूब फेंटें. (ध्यान रहे कि मिश्रण एक ही दिशा में फेंटना जरूरी है वरना केक ज्यादा नहीं फूलेगा).

ओवन गर्म करें (यदि ओवन नहीं है तो प्रेशर कुकर में स्टीम कर के भी बना सकती हैं). स्टीम करते समय कुकर का वेट नहीं लगाते.

इस मिश्रण को तीन भागों में विभाजित कर ऐसेंस मिलाएं किंतु रंग की कुछ बूंदें विभिन्न स्थानों पर डाल कर चमचे के पीछे के हिस्से से लकीर की तरह फैला दें. बेकिंग डिश में बटर पेपर लगा कर एकएक घोल को धीरेधीरे डालती जाएं. रंग लहरों की तरह अलगअलग फैलते जाएंगे. अब इस बेकिंग डिश को ओवन में 230 डिग्री पर आधा घंटा बेक होने दें. केक तैयार होने पर सलाई डाल कर देख लें. यदि सलाई पर केक चिपक रहा है तो अभी और बेक करें. सलाई साफ निकल आए तो केक तैयार है. केक को निकाल कर ठंडा होने दें. फिर इस को मनचाहे आकार के टुकड़ों में काट लें.

चकली

सामग्री: 500 ग्राम आटा, 1½ छोटा चम्मच नमक, 100 ग्राम तिल, एक छोटा चम्मच जीरा, एक छोटा चम्मच काली मिर्च दरदरी पिसी हुई, तलने के लिए तेल.

विधि: साफ पतले सूती कपड़े के टुकड़े को गीला करें, उस में आटे को बांध दें और प्रेशर कुक्कर के कंटेनर में रख कर भाप में प्रेशर के साथ 15 मिनट तक पकाएं. प्रेशर खत्म होने पर कपड़े में बंधे मैदे को थाली में निकाल लें. यह ठोस आकार में होगा. इसे बेलन से दबा कर वापस मैदे की स्थिति में ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आएं. इस भुरभुरे आटे को छलनी से छान लें, जिस से गांठ न रहे. इस में तिल, नमक, जीरा, काली मिर्च मिला लें. अब इस में थोड़ाथोड़ा पानी मिला कर गूंध लें.

कढ़ाई में तेल गर्म करें. इस मिश्रण को चकली मोल्ड में भर कर चकली बना कर गर्म तेल में मध्यम आंच पर तल लें. इस चकली का स्वाद ही निराला है. बिना मोयन के बहुत खस्ता चकली तैयार है.

खस्ता फूल

सामग्रीः 1 किलोग्राम मैदा, एक चुकंदर, आधा कप धनियापुदीने का पेस्ट, एक कप बेसन, 20 ग्राम खसखस, एक कप घी, 2 छोटे चम्मच तेल, 20 ग्राम लौंग, आधा छोटा चम्मच सोडा, तलने के लिए तेल.

विधिः चुकंदर को छील कर कद्दूकस कर लें. नमक लगा कर आधा घंटा छोड़ दें, जिस से चुकंदर पूरी तरह से अपना रस छोड़ देगा.

मैदे में सोडा, नमक और मोयन मिला लें. चुकंदर के मिश्रण को मैदे में अच्छी तरह गूंध दें. पूरी की अपेक्षा कड़ा रखें. बेसन में तेल का मोयन दे कर बेसन को कड़ा गूंध लें. मैदे के एक भाग को धनियापुदीने के पेस्ट से गूंध लें.

चुकंदर के आटे को पतली पूरी के आकार की बेल कर अलग रख दें. बेसन इस से छोटी पूरी बेल कर इस के बीच में पूरी रख कर, आधा काट दें. उसे लपेट ऊपर से लौंग लगा कर मध्यम आंच पर कर पेपर पर रख कर अतिरिक्त निकाल दें. बस, दुरंगा व्यंजन तैयार

आलूपनीर के नमकपा

सामग्रीः आधा कि.ग्रा. आलू, प्याला पनीर, आधा कि.ग्रा. मैदा, चम्मच नमक, एक चम्मच जीरा, आधा कार्नफ्लोर, आधा कप मोयन के वनस्पति.

विधिः आलू उबाल कर मसल लें. में पनीर का पाउडर और नमक, जीरा लें. कार्नफ्लोर व मैदे को अच्छी तरह लें. इस में मोयन मिला कर आलू व पनी मिश्रण के साथ मिला कर गूंध थोड़ाथोड़ा गरम पानी मिला कर इसे गूंध लें.

इस के बड़ेबड़े पेड़े बना लें और चा पर रोटी के आकार में बेल कर चा नमकपारे की तरह मनचाहे आकार में क कर धीमी आंच पर तल लें. खस्ता नमक तैयार हैं, सास या चटनी के साथ परो

पालक की मठरी

सामग्रीः 1 गुच्छी पालक, 2

चम्मच न
एक बड़ा
¼. चम्मच
विधि
पानी डा
निकाल दें
मैदे
लें. वनस्प
इसे पाल
दसपंद्रह
इस
और बेल
छिड़क
मध्यम
दिखने

बादा

स
2 प्याले
नूडल्स,
चम्मच
नमक
चम्मच
उबालें
नूडल्स

पालक की मठरी

बादाम तथा नूडल्स का सूप

नमकीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चम्मच नमक, 6 हरी मिर्च, [illegible] एक बड़ा चम्मच कलौंजी, 1 कप वनस्पति, 1/4 चम्मच सोडा, तलने के लिए तेल.

विधि: पालक को साफ कर के बिना पानी डाले गला लें. हरी मिर्च के बीज निकाल दें. इसे पालक के साथ महीन पीस लें.

मैदे में नमक व सोडा मिला कर छान लें. वनस्पति को पिघला कर इस में मिला दें. इसे पालक के पेस्ट के साथ गूंध लें और दसपंद्रह मिनट के लिए नर्म होने दें.

इस के मठरी के आकार के पेड़े बना लें और बेलने के बाद मठरी पर कलौंजी के दाने छिड़क कर बेलन से दबा दें. मठरी को मध्यम आंच पर तल लें. खाने में पौष्टिक व दिखने में रंगीन मठरी तैयार हैं.

—विजया वासुदेवा

बादाम तथा नूडल्स का सूप

सामग्री : 20 दाने बादाम की गिरियां, 2 प्याले दूध, 2 बड़े चम्मच मैदा, 10 ग्राम नूडल्स, 2 प्याले पानी, 2 दाने मशरूम, 2 चम्मच चावल, 2 प्याले चावल का मांड, नमक और काली मिर्च इच्छानुसार, 1 चम्मच मक्खन, 1 नीबू.

विधि : चावल को दो प्याले पानी में उबालें तथा अच्छी तरह घोट लें. अब नूडल्स को भी दो प्याले पानी में उबाल कर [illegible] लें. फिर नूडल्स के पानी में मैदा घोल कर आंच पर रख कर पकाएं. गाढ़ा होने पर दूध डाल दें तथा घोटे हुए चावल पानी समेत डाल दें. आप यदि मशरूम पसंद करें तो दो दाने मशरूम (खुमी) को बारीक काट कर मिला दें. अब 10 बादाम उबाल कर, छिलका उतार कर मोटा पीस कर मिला दें. बाकी के 10 बादाम छील कर व लंबे काट कर ऊपर से बुरक दें. उबले नूडल्स भी मिला दें. गरमगरम सूप में मक्खन डालें. नीबू काट कर साथ में रख दें. इच्छानुसार नमक, काली मिर्च डाल दें.

मेहमान लोग इसे मीठी खीर समझ कर लेंगे पर जब खाएंगे तो नमकीन सूप पाएंगे. है न होली का सभ्य मजाक?

नमकीन सोफ्टी फलों की चाट के साथ

सामग्री : सोफ्टी के लिए : 1/2 कटोरी आटा (गेहूं का), 1 कटोरी मैदा, 2 बड़े चम्मच दही, 2 चम्मच घी आटे के लिए, 1/2 छोटा चम्मच जीरा, नमकमिर्च इच्छानुसार, तलने के लिए घी.

भरने के लिए : 6 आलू, 1 प्याज, 1 बड़ा चम्मच घी, 1 छोटा चम्मच जीरा, 4-5

नमकीन सोफ्टी फलों की चाट के साथ

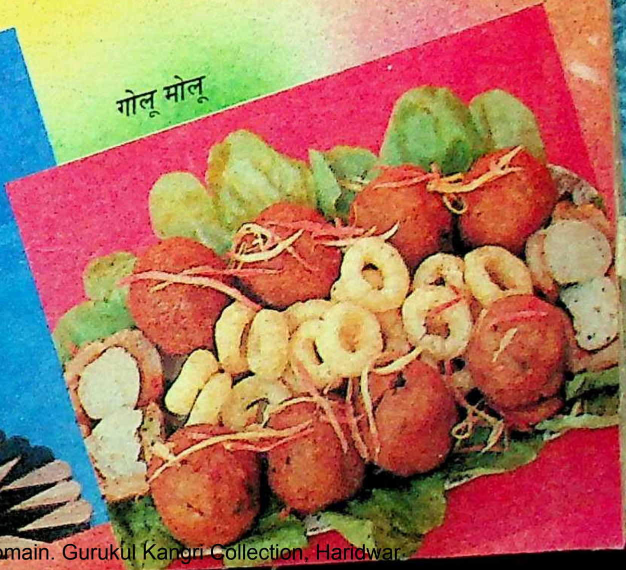

गोलू मोलू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

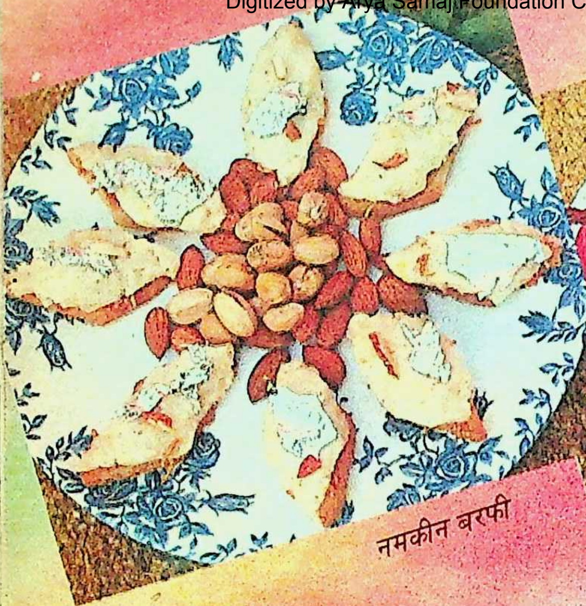

नमकीन बरफी

सूखे मेवे की च

टहनी हरी धनिया, 2-3 हरी मिर्च, 2 नीबू, 250 ग्राम मटर बिना छिले, 5 ग्राम अदरक, नमक, मिर्च इच्छानुसार, 200 ग्राम मशरूम (खुमी).

विधि : आटा, मैदा, दही, 2 चम्मच घी, नमक, जीरा मिला कर आवश्यकतानुसार पानी डाल कर आटा गूंधें. एक घंटे के लिए रख दें. अब छोटीछोटी लोइयां बना कर पूरी के आकार में बेलें तथा तिकोना काट लें. दो तरफ पानी लगा कर पूरी को सोपटी के आकार में बनाएं. और कलछी की डंडी में लटका कर गरम घी में छोड़ें, तथा बादामी होने पर निकाल लें. इस तरह 10-12 सोपटी बन जाएंगी.

मशरूम धो कर गरम पानी में 10 मिनट तक रखें. मटर छील कर दाने निकालें. आलू उबाल कर छील लें. मटर दाने भी उबाल लें. अब कड़ाही में घी डाल कर प्याज को बारीक काट कर जीरे के साथ छौंक दें. उबले आलू (छोटेछोटे काट कर) मटर भी मिला दें. हरी धनिया तथा अदरक डाल दें. नमक तथा लाल मिर्च भी डाल दें. इस तरह सोपटी भरने का मसाला तैयार हो गया.

अब आलू मसाले से सोपटी भरें त मशरूम ऊपर से लगा कर नीबू डाल फलों की चाट के साथ परोसें.

गोलू मोलू

सामग्री : 1 किलो दूध का घर 250 ग्राम पनीर, 1 चम्मच कोर्नफ्लोर, 2 ग्राम चीनी, 1 प्याला पानी, 2-3 बूंदें गुल एसेंस, 8-10 टुकड़े डबलरोटी, 1 कटो दूध, तलने के लिए घी.

विधि : पनीर, कोर्नफ्लोर को अच प्रकार से मसल कर मिला लें और गोलगो लोइयां बना लें. अब चीनी में पानी डाल क चाशनी बना लें और ठंडा कर के इस गुलाब एसेंस डाल दें.

अब पनीर के गोलों को उबलते पानी डाल कर पांच मिनट बाद निकाल क चाशनी में डाल दें. 'मोलू' तो तैयार है.

अब डबलरोटी में दूध मिला कर उ अच्छी तरह गूंध लें. यदि नमकीन खाने तो नमक, हरी धनिया, मिर्च डाल दें. य केवल मीठे खाने हों तो ऐसे ही गूंध लें. अ गोल आकार में बना कर बीच में से खा रख कर तलें. यानी अंगूठे से गोले को खा

रखें.

की ह
'मोल
सला

खाए
हुई
पर
मीठ

डब
10
चांदि
नम
चम्म

नम
अच
डब
हल
बी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

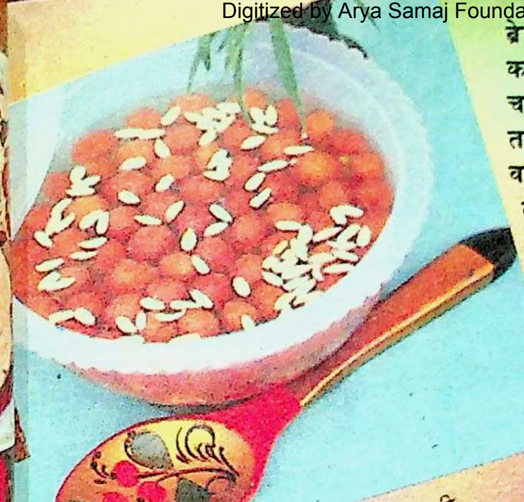

रसीली रसभरी

रखें. इस प्रकार 10-15 गोलू बन जाएंगे.

अब ट्रे में सलाद के पत्ते तथा कद्दूकस की हुई गाजरें फैला दें. अब पनीर के मीठे 'मोलू' निकाल कर ब्रेड के 'गोलू' में भर कर सलाद की ट्रे में रखें.

खाने वाला नमकीन समझ कर खाएगा, लेकिन होंगे मीठे. इच्छानुसार बची हुई चाशनी पनीर के मोलू रखते समय उस पर डाल सकते हैं, लेकिन ब्रेड के गोलू में मीठा नहीं लगे, नहीं तो पोल खुल जाएगी.

नमकीन बरफी

सामग्री : 5 आलू उबले हुए, 5 टुकड़े डबलरोटी के, ½ कटोरी बीकानेरी भुजिया, 10 दाने काजू, 2 नीबू का रस, टमाटर सास, चांदी वरक सजाने के लिए, 5-6 दाने नमकीन पिस्ता या मूंगफली के, ¼ छोटा चम्मच नमक, 2 छोटे चम्मच कोर्नफ्लोर.

विधि : आलू, कोर्नफ्लोर, नीबू रस, नमक, पिसा हुआ काजू (या मूंगफली) अच्छी प्रकार तोड़ कर गूंध लें. अब डबलरोटी को डायमंड आकार में काट कर हलके गुलाबी रंग की होने तक तल लें. बीकानेरी भुजिया में सास मिला कर तली ब्रेड पर लगा दें. अब चकले पर थोड़ा खाने का तेल लगा कर आलू के पेड़े को बेलें तथा चाकू से ब्रेड जैसे आकार में काट कर ब्रेड के तले टुकड़े पर लगा दें. ऊपर से चांदी का वरक लगा दें. इच्छानुसार बादाम या पिस्ता बारीक काट कर बुरक दें.

नमकीन बरफी तैयार है.देखने वाला इसे मीठी बरफी समझ कर उठाएगा.

सूखे मेवे की चक्की

सामग्री: ½ किलो खोया, आधी कटोरी चीनी, आधी कटोरी दूध, 1 बड़ा चम्मच सफेद तिल, 20 ग्राम सूखा मेवा, 10 दाने बादाम या मूंगफली, थोड़ा सूखा नारियल, पिस्ता दो दाने, बाकी इच्छानुसार, पांच बूंदें गुलाब एसेंस.

विधि: चीनी तथा दूध को मिला कर घुलने तक आंच पर रखें. अब एक कड़ाही में सफेद तिल डाल कर हलका सा भूनें. फिर कड़ाही में खोया, चीनी मिला दूध डालें. अच्छी तरह से चलाएं. अब चकले पर रिफाइंड तेल हलका सा लगा दें. तथा गरमगरम खोए को उस पर फैला दें. एक टीन के छोटे डब्बे को उलटा कर के दबा कर खोए को गोल आकार में काटें तथा सूखा मेवा ऊपर से डाल दें, ठंडा होने पर परोसें.

—शोभा छुटानी

रसीली रसभरी

सामग्री: 1 प्याला बेसन, 2 बड़े चम्मच मैदा, 50 ग्राम ताजा पनीर, 2 बड़े चम्मच गाढ़ा ताजा दही, 1 छोटा चम्मच पिघला घी, ¼ छोटा चम्मच बेकिंग पाउडर, तलने के लिए घी, 2 प्याले चीनी चाशनी के लिए, 2 प्याले पानी, गुलाब या केवड़ा एसेंस, 1 छोटा चम्मच खरबूजे के बीज, थोड़ा सा खाने का रंग.

विधि: बेसन, मैदा और बेकिंग पाउडर मिला कर दोतीन बार छानें. पनीर को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी तरह मसल कर उस में दही तथा रंग मिला कर फेंटें. अब बेसन मिश्रण में घी डाल कर मसलें और पनीर व दही के मिश्रण से गूंधें. आवश्यकतानुसार दूध या पानी का छींटा दे कर मुलायम गूंध लें. तैयार मिश्रण को आधा घंटा ढक कर रखें फिर रसभरी के आकार की गोलियां बना कर रख लें.

अब चूल्हे पर एक तरफ चीनी और पानी मिला कर चढ़ाएं और दूसरी तरफ आंच धीमी कर के रसभरियों को गुलाबी तल लें.जब एक तार की चाशनी हो जाए तो रसभरियों को उस में डाल कर तीनचार मिनट उबालें और ढक कर अलग रख दें. करीब दोतीन घंटे बाद जब रस, रसभरियों में भर जाए तो गहरे कटोरे में पलटें. इस में गुलाब या केवड़ा एसेंस डाल कर और खरबूजे के बीजों से सजा कर पेश करें

—पुष्पा मोहता

वेजीटेरियन फिश रोल

सामग्री: 250 ग्राम मैदा, 100 ग्राम घी (जमा हुआ), 1 छोटा चम्मच नमक, ½ प्याला फ्रिज का ठंडा पानी मैदा गूंधने के लिए.

350 ग्राम आलू, 100 ग्राम पनीर, 2 प्याज, 2-3 कली लहसुन, 1 छोटा चम्मच गरममसाला, छौंक के लिए जीरा, नमक, हरी मिर्च, अदरक, हरी धनिया सभी स्वादानुसार, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च, ½ छोटा चम्मच पिसा अमचूर, 2 बड़े चम्मच घी प्याज भूनने के लिए.

विधि: सब से पहले आलू उबाल कर छीलें और लुगदी बना लें. प्याज लंबा बारीक काट कर गुलाबी होने तक तलें. पनीर मसल कर लुगदी बना लें. प्याज गुलाबी होने पर एक तरफ कर के इसी घी में जीरे का छौंक दे कर लुगदी किए हुए आलू, पनीर तथा अन्य मसाले डाल कर भूने और ठंडा होने दें.

मैदे में नमक मिला कर छान लें. घी को उंगलियों की सहायता से मैदे में मिलाएं. घी अच्छी तरह मिल जाने पर ठंडा पानी थोड़ाथोड़ा डाल कर मैदे को खूब कड़ा गूंध लें और 10 मिनट के लिए ढक कर रख दें. 10 मिनट बाद मैदे को निकाल कर हलके हाथ से मल कर एक बड़ा पेड़ा बना लें. एक बड़ी थाली को उलटा कर के उस पर मैदे के पेड़े को बेलें. बीचबीच में सूखा मैदा लगाते जाएं. पूरे पेड़े को 12″ लंबा और 9″ चौड़ा बेलें. फिर ठंडी की हुई आलू की सब्जी को पूरी रोटी पर फैला कर लंबाई में रोल कर लें. दोनों खुले हुए किनारों को अच्छी तरह बंद कर दें.

एक थाली में घी लगा कर (थाली इतनी बड़ी हो कि ओवन में आ जाए तथा उस में रोल भी ठीक से आ सके) रोल को धीरे से उस में रखें. रोल को एक किनारे से तेज चाकू द्वारा 2″ लंबा काटा लगा कर मछली की पूंछ का आकार दें. बीच में भी कुछकुछ दूरी पर चारपांच काटे लगाएं ताकि 'मछली' अंदर तक पक सके. दूसरे किनारे को उंगलियों की सहायता से बंद करें और मुंह का आकार दें. दो काली मिर्च लगा कर आंखें बना दें.

एक बड़ा चम्मच मलाई को हलका सा फेंट कर पूरी मछली के ऊपर लगा दें. अब इस मछली बने रोल को गरम ओवन में 180° सेल्सियस पर भूरा होने तक सेंकें.

सिकने के बाद तेज चाकू से टुकड़े कर के चटनी के साथ परोसें. —मधु कपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी
, ½
मच

कर
रीक
सल
पर
क दे
अन्य

ों को
. घी
पानी
ध लें
. 10
थ से
बड़ी
पेड़े
बाएं.
बेलें.
पूरी
र लें.
बंद

वाली
तथा
को
रे से
कर
में भी
गाएं
दूसरे
करें
लगा

त्र सा
. अब
180°

कर
पूर

रिता

एहसास हलका-हलका!

ोरा में बने भोजन में पाइए एहसास हलका, सेहतमंद

, हलके फ़्लोरा से पका भोजन पचने में बिलकुल आसान.
ज़्यादा स्वादिष्ट भी. क्योंकि फ़्लोरा बनता है धूप में पके
ामुखी के बीज़ों से. जिन्हें विशेष रूप से रिफ़ाइन किया जाता
ाकि फ़्लोरा बने शुद्ध, सुनहरा. तभी तो जगाता है यह भोजन का
ली स्वाद. और असरदार ढंग से कोलेस्ट्रॉल को बढ़ने नहीं देता.
फ़्लोरा में ही पकाइए और अपने परिवार को दिलाइए एहसास
का – हलका!

लोरा रिफ़ाइन्ड सूरजमुखी का तेल
जन बनाए मनपसंद, हलका और सेहतमंद

ोरा की विशेष भेंट !
2/- छूट, फ़्लोरा 1 किलो पर ! मुफ़्त ! एक लिरिल साबुन, फ़्लोरा 2 किलो के साथ ! ... फ़्लोरा 5 किलो के साथ !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

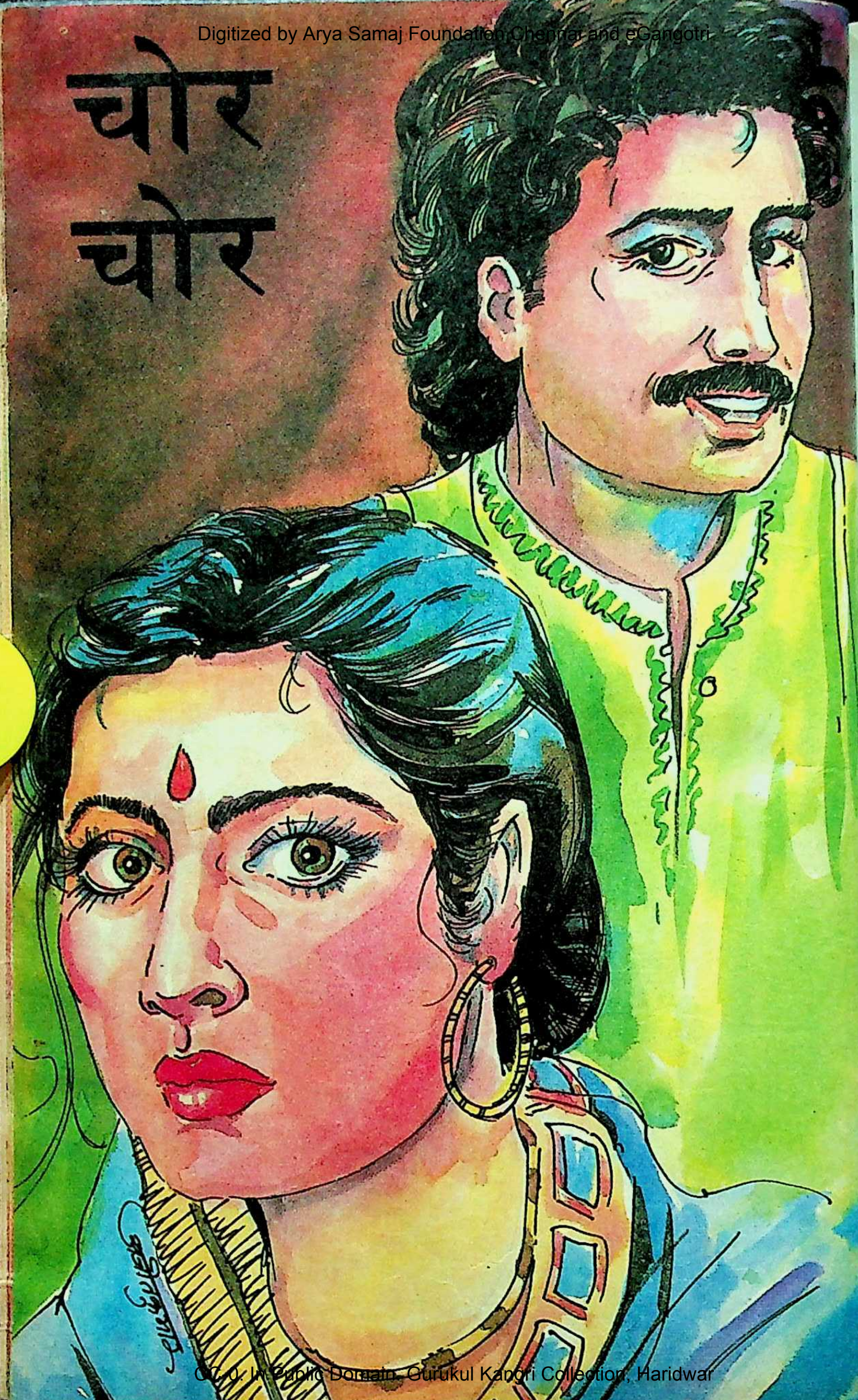

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह कर गया था कि सात बजे तक लौट आऊंगा पर इस समय साढ़े नौ बज रहे थे. टीवी पर धारावाहिक समाप्त हुआ था और अंगरेजी में समाचार आ रहे थे. सुरेखा ने शायद इसी समय टीवी बंद कर दिया. प्रीतम बगल में कंधे से लटका भारी थैला दबाए हुए बाहर खड़ा सोच रहा था, कैसे बिना किसी झंझटझगड़े के अंदर प्रवेश करे.

"दुनिया में सब चोरचोर," प्रियंका ने ऊंचे स्वर में कहा, "कोई छोटा चोर, कोई बड़ा चोर."

"चोर चोरी से जाए पर हेराफेरी से न जाए," अलंकार ने भी उतने ही ऊंचे स्वर में कहा.

"चोरचोर सब मौसेरे भाई," प्रियंका ने हंस कर कहा.

"चोर का भाई जेबकतरा," अलंकार भी हंसा.

सुरेखा ने हंसी में साथ दिया, "चोर की दाढ़ी में तिनका."

अब प्रीतम ने प्रवेश करना ही उचित समझा. दरवाजा धीरे से खटखटाया.

"पिताजी आ गए, पिताजी आ गए." दोनों बच्चे चिल्लाए.

द्वार खोलते हुए सुरेखा ने पूछा, "इतनी देर कहां लगा दी?"

"पहले तो इतना सामान मंगाती हो और फिर देर से आने का कारण पूछती हो." प्रीतम ने आक्रमण करना ही बचाव का उचित साधन समझा.

"लो, इतना ही तो कहा था कि होली है, दहीबड़े खाने हों तो दाल की पीठी ले आना. क्या दाल के खेत में चले गए थे?"

"पीठी वाले ने दुकान बंद कर दी थी. बड़ी मुशकिल से पीछे जा कर उस का घर खुलवाया और खुशामद कर के पीठी पिसवाई. बहुत बड़बड़ा रहा था."

"अरे तो कल आ जाती! होली तो परसों है. मैं ने यही तो कहा था कि सामने से निकलो तो ले आना."

"अब छोड़ो भी. खाना खा लिया बच्चों ने?"

"तुम्हारे बिना कभी खाते हैं, खाना?"

"ओह!" प्रीतम ने हंस कर पूछा, "यह तुम सब चोरचोर का शोर क्यों मचा रहे थे?"

अलंकार ने हंसते हुए कहा, "लो एक और, चोर मचाए शोर."

"छिः, यह भी कोई मुहावरा है?" प्रियंका ने कहा.

सुरेखा ने मुसकरा कर कहा, "चोर के ऊपर मुहावरे याद कर रहे थे. खेल भी हो गया, मुहावरे भी याद हो गए और प्रीतम के बिना समय भी कट गया. पर तुम्हारे माथे पर इतना पसीना क्यों है? क्या कुछ चोरी तो नहीं की?"

प्रीतम बौखलाया पर संभल कर बोला, "सो तो हम दोनों चोर हैं."

"वह कैसे?"

"याद है न, वही मसूरी वाली बात?"

"कौन सी?"

"तुम ने मेरा दिल चुराया और मैं ने तुम्हारी आंखों की नींद."

"धत! बच्चों के सामने ऐसी बातें करते शर्म नहीं आती?"

"आती तो है, पर आजकल के बच्चे तो बड़ों के भी कान काटते हैं. अच्छा तुम खाना लगाओ और मैं अपना बोझ हलका करता हूं. सस्ती गोभी मिल गई सो वह भी

पिछली होली पर प्रीतम और उस के दोस्तों ने जो हरकत की थी उस से सुरेखा ने ठान रखा था कि अब की बार वह ऐसा कुछ नहीं होने देगी, लेकिन प्रीतम कहां मानने वाला था. वो तो सुरेखा ही थी जिस ने ऐसी चाल चली कि प्रीतम चारों खाने चित हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले आया. अब खूब गोभी खाऊंगा. जरा मसाला अच्छा डालना."

सुरेखा के पीठ मोड़ते ही प्रीतम कमरे में घुसा और थैले में से बोतल निकाल कर अलमारी में कपड़ों के नीचे दबा आया. इस तरह उस का असली बोझ हलका हुआ. गोभी और पीठी का थैला रसोई में पहुंचाया. हाथमुंह धो कर कपड़े बदल कर खाने की मेज पर आ गया जहां सब उस का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे.

"तो एक बार फिर होली आ गई." प्रीतम ने मुसकरा कर वातावरण में प्रसन्नता लाने की कोशिश की.

"अब की बार हम बड़ी वाली पिचकारी लेंगे," अलंकार ने कहा.

"मैं भी," प्रियंका ने साथ दिया.

"ठीक है, ठीक है." प्रीतम ने सुरेखा के हाथ पर हाथ रखते हुए पूछा, "और जानेमन, तुम्हारे लिए क्या लाऊं?"

"एक खुशनुमा वातावरण, जिस से होली की याद हमेशा ताजा रहे."

प्रीतम ने मुंह लटका कर कहा, "अब कोशिश तो करूंगा. लेकिन ये गणेश और मुरारी कुछ अधिक ही बहक जाते हैं. इस बार मैं ने टाल दिया था, पर मानेंगे थोड़े ही."

"क्या मतलब?" सुरेखा ने तीखे स्वर में पूछा.

"अब भई, मैं सोच रहा था इस बार कुछ बोतलें महाकोला की ला कर रख लूं."

"हम भी पिएंगे महाकोला." अलंकार ने कहा.

"हम भी पिएंगे महाकोला." प्रियंका ने साथ दिया.

"ठीक है, ठीक है. सब को मिलेगी. पूरा क्रेट ही ले आऊंगा. क्यों सुरेखा?"

"महाकोला ही क्यों?"

"उतने ही दामों में अधिक मजा!" प्रीतम ने विज्ञापन की नकल करते हुए कहा.

बात यों थी कि पिछली होली की बुरी याद ने अभी तक पीछा नहीं छोड़ा था. प्रीतम को शराब पीने की आदत नहीं थी. लेकिन सुरेखा के पिता के कारण उसे भी का चसका लग चुका था. उन्हें तो पीने बाद कुछ होश नहीं रहता था. पीने के का उन्होंने सुरेखा की शादी भी ठीक तरह न की थी. लड़खड़ाते हुए कन्यादान किया धीरेधीरे सब कुछ बेच खाया, केवल बच गया. वह भी इस कारण कि घर मां नाम था और उस ने बेचने या गिरवी रखने बिलकुल इनकार कर दिया था.

प्रीतम जब भी ससुराल जाता था, स उसे पीने के लिए मजबूर कर देते उन की समझ में शराब पिलाने से बढ़ कोई सम्मान व मेहमानदारी हो ही न सकती थी. प्रीतम ने धीरेधीरे सुरापान आनंद लेना आरंभ कर दिया था. सुरेखा कड़े विरोध के कारण वह सुरापान सभ्यता व संस्कृति को घर में तो नहीं सका, हां, कभीकभी दोस्तों के घर बैठ जा था.

पिछली होली पर इन दोस्तों ने ही ताने देदे कर मजबूर कर दिया था कि बार होली में उस के यहां पीने का कार्यक्र भी रहेगा. सुरेखा ने विरोध किया, घर छ जाने की धमकी भी दी.

"बस सुरेखा, इस बार. मैं वादा कर हूं. कान ऊं... तुम्हारे पकड़ता हूं. इन लोगों मेरे ऊपर बहुत उधार चढ़ गया है. बस समझो कि ऋण उतारना है."

"पता नहीं, मैं जिस से घृणा करती उसे घर में लाने का तुम्हें क्यों चाव है? मैं ए घर की तबाही देख चुकी हूं. क्या चाहते कि तुम्हारा हमारा घर भी तबाह हो जा आगे देखो, बच्चों के भविष्य के बारे सोचो."

"सुरेखा, मैं एक और वादा करता इस बार जब आम चुनाव होंगे, मैं तु लोक-सभा की सदस्यता के लिए चुनाव खड़ा करूंगा. तुम्हारे तेजस्वी भाषण से के छक्के छूट जाएंगे."

सुरेखा ने व्यंग्य से कहा, "भली चल लोकसभा की, अरे मेरे भाषण से तुम्हारा

चौका
छूटेगा
हास्य
तो फि
बोतल
लिया
पकवा
बच्चों
साथ
बहुत
कुछ
और
पीछा
चमग
होली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब जाम से जाम टकराए तो क्रोध चकनाचूर हो जाए." गणेश ने तनाव कम करने के लिए जाम लहराते हुए कहा.

चौका भी नहीं छूटा, ओरों का छक्का क्या छूटेगा."

"यही तो कहता हूं, तुम्हारे मधुर हास्य में पुदीने की चटनी की सुगंध आती है. तो फिर..."

"नहीं..."

"हां..."

"नहींनहीं..."

"हांहां..."

होली आई. प्रीतम तगड़े रम की एक बोतल ले आया. सुरेखा ने देखा. मुंह फेर लिया. कुछ बोली नहीं. पकवान बनाती रही. पकवानों की सुगंध घर में फैल रही थी और बच्चों के मुंह में पानी आ रहा था.

तभी गणेश और मुरारी आए और साथ में आया मधुकर. बस्ती में मधुकर बहुत बदनाम था. उसे भनक लग गई थी कि कुछ पीनेपिलाने का मामला है सो गणेश और मुरारी के साथ हो लिया. उन्होंने बहुत पीछा छुड़ाने की कोशिश की परंतु वह चमगादड़ की तरह चिपक गया था. आखिर होली थी, अधिक कुछ कर भी नहीं सकते थे. सब बुरी तरह से रंगे हुए थे. केवल आवाज से पहचाने जाते थे. आते ही एकदूसरे को भींचते हुए गले मिले. बाकी का रंग उंडेला और भाभी से खेलने की फरमाइश की. सुरेखा ने बाहर आने से इनकार कर दिया.

इस पर तीनों गाने लगे, "भाभी सामने आओ, भाभी सामने आओ, भाभी सामने आओ..."

इस नारेबाजी से प्रीतम द्विविधा में पड़ गया. दोस्तों का यह बरताव उसे अच्छा नहीं लग रहा था, परंतु सुरेखा की जिद भी उसे सता रही थी.

अंदर आ कर बोला, "अरे आ जाओ न एक बार. कोई खा थोड़े ही जाएंगे."

"कहा न, नहीं आती. मुझे ये अच्छे नहीं लगते. मैं ने पहले ही मना किया था."

प्रीतम ने नकली मुसकराहट से सुरेखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ठोड़ी छूते हुए कहा, "अब मान भी जाओ. होली का दिन है. क्यों यों बदमजगी करती हो."

अंदर यह बहस चल ही रही थी कि मधुकर अंदर घुस आया. उस के पीछेपीछे गणेश और मुरारी भी आ गए. तीनों प्रीतम और सुरेखा को देख कर हंसने लगे.

"अच्छा तो यह हो रहा है," मधुकर ने कहा और स्नानघर में घुस कर पानी से भरी बालटी उठा लाया और सारी की सारी सुरेखा के ऊपर उलट दी.

सुरेखा सराबोर हो गई, "परंतु उसे इस की चिंता नहीं थी. उसे क्रोध आया इस बात पर कि सारा कमरा ही गंदा कर दिया. क्रोध के मारे वह थरथर कांपने लगी. उस की भृकुटी देख कर तीनों बाहर खिसक आए और प्रीतम की प्रतीक्षा करने लगे. सुरेखा ने आग्नेय नेत्रों से प्रीतम को देखा और स्नानघर में जा कर अंदर से कुंडी लगा ली.

बाहर आ कर प्रीतम ने मधुकर से नाराजगी दिखाते हुए कहा, "यह क्या कर दिया? बड़े मूर्ख हो."

"छोड़ो भी, होली है."

"होली है तो इस का मतलब यह तो नहीं कि तमीज भूल जाओ. अपनी हद के अंदर रहना चाहिए था."

प्रीतम की अप्रसन्नता को देख कर गणेश ने कहा, "अरे यार, होली में थोड़ा बहुत ऐसा हो जाता है. चलो, अब गम गलत कर लिया जाए."

सांस खींच कर प्रीतम बोतल लाने अंदर आ गया. कुछ तनाव हो गया था और उसे भी बोतल की आवश्यकता महसूस हो रही थी.

"जब जाम से जाम टकराए तो क्रोध चकनाचूर हो जाए," गणेश ने जाम लहराते हुए कहा.

"जिंयो प्यारे जियो, होली है जी भर कर पियो," मुरारी ने जाम टकराया.

"भाभी की सेहत के लिए," मधुकर ने कहा, "क्या सेहत पाई है."

इस से पहले कि मधुकर की ज[illegible] फिसलती प्रीतम ने उस की गरदन पकड़ [illegible] कहा, "चुपचाप बैठ, नहीं तो रास्ता नाप[illegible]"

"अभी से? अरे यार, अभी तो [illegible] बोतल की यात्रा तय करनी है." कह [illegible] मधुकर ने एक ही सांस में गिलास खाली [illegible] दिया.

मधुकर को जल्दी ही नशा चढ़ जा[illegible] था. पीता रहा और भाभीभाभी की [illegible] लगाता रहा. जब उसे सब मिल कर दरवा[illegible] के बाहर धकेलने लगे तो वह चिल्लाने ल[illegible]

"नहीं जाता, भाभी से मिले बिना न[illegible] जाऊंगा. दिन भर, रात भर यहीं [illegible] रहूंगा. भाभी, ओ भाभी, जरा सामने तो [illegible] ओ छलिया..."

अंत में गणेश और मुरारी ने, जो [illegible] भी नशे में कुछकुछ लड़खड़ा रहे थे, कि[illegible] तरह से मधुकर को घसीट कर दरवाजे [illegible] बाहर कर दिया. वह बाहर बैठ [illegible] भाभीभाभी की तान लगाने लगा.

कुछ ही देर में भीड़ इकट्ठी हो गई [illegible] इस दृश्य का आनंद लेने लगी. कुछ लोगों [illegible] फिकरे भी कसने शुरू कर दिए. होली [illegible] जोश में मधुकर और प्रीतम को रिश्ते[illegible] भी बना दिया और हाहा, होहो कर के हं[illegible] व अश्लील बातें बकने लगे. मधुकर दुनि[illegible] से बेखबर मूर्खों की तरह हंस रहा था.

अंदर तीनों दोस्तों का नशा धीरेधी[illegible] उतर रहा था. वे अपने व्यवहार पर लज्जि[illegible] थे. जब बाहर रास्ता साफ हुआ तो गणेश [illegible] मुरारी चुपचाप खिसक लिए. प्रीतम औ[illegible] सुरेखा में घमासान युद्ध हुआ जिस की पू[illegible] आशंका थी.

कई दिनों तक बोलचाल बंद रही. [illegible] में प्रीतम ने हथियार डाल दिए और सुरे[illegible] से अपने व दोस्तों के इस अशोभनी[illegible] व्यवहार के लिए क्षमा भी मांग ली. [illegible] दिनों बाद गणेश और मुरारी भी आए औ[illegible] उन्होंने न केवल सुरेखा से क्षमा मांगी बलि[illegible] आगे से कभी सुरापान न करने का व[illegible]

(शेष पृष्ठ 173 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंकारा – गर्भवती महिलाओं के लिए अलकोहल-मुक्त, हानिरहित टॉनिक : फार्माकोलॉजीकल अनुसंधान के परिणाम

यह चिकित्सीय तौर पर सिद्ध हो चुका है कि लगभग 40 से 80% भारतीय स्त्रियां गर्भावस्था के समय 'एनीमिया' – अर्थात रक्त की कमी – की शिकार होती हैं।

इस शिकायत पर काबू पाने, और आयरन (लौह), विटामिन बी-12, रक्त के लाल सेलों तथा हेमोग्लोबिन की कमी को दूर करने में सिंकारा वैज्ञानिक तौर पर प्रभावशाली सिद्ध हो चुका है।

सिंकारा में लौह अत्यंत प्राकृतिक और आसानी से उपलब्ध होने वाली अवस्था में होता है – जड़ी-बूटियों से प्राप्त।

घर-भर के लिए, प्रत्येक ऋतु में उत्तम

सिंकारा से परिवार को और भी लाभ हैं। विशेषतया, इसे इन अवस्थाओं में लेने की सलाह दी जाती है : • साधारण कमज़ोरी व दुर्बलता • थका देने वाले व्यायाम के बाद • रोग से स्वस्थ होने के समय • भूख की कमी • शिशुओं की बढ़ोत्तरी • स्तन-पान कराने वाली माताओं के लिए • स्नायु थकावट तथा रोग की अधिकता • विद्यार्थियों का मानसिक व बौद्धिक विकास, आदि।

अनिवार्य तत्वों,
जड़ी-बूटियों तथा
विटामिनों का
अनोखा मिश्रण

हमदर्द

HTA-5238 HIN

सिंकारा

विश्व-प्रसिद्ध फ़ैमिली टॉनिक,
प्रत्येक ऋतु में उपयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन
LINTAS V G 491 1710 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya

आप भी राक गार्डन बनाइए

आज की जटिल परिस्थितियों में मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है. ऐसे में अपने घर आंगन की थोड़ी सी जगह का उपयोग करते हुए हरियाली का आनंद लेने के लिए आप भी शैल उद्यान यानी राक गार्डन बनाइए.

लेख • सूरज 'जिद्दी'

भारतीय मानस आदिकाल से ही प्रकृति का अनन्य पुजारी रहा है. प्रकृति में खिलने वाले फूलों, लताओं, वृक्षों ने भारतीयों को न केवल मानसिक आनंद प्रदान किया है बल्कि उन के जीवन में नैसर्गिक सौंदर्य चेतना को भी जागृत किया है. परंतु विकास की आधुनिक दौड़ में भौतिक सुविधाओं ने प्रकृति से उसे बहुत दूर कर दिया है. बढ़ते हुए शहर, बहुमंजिली इमारतों की भीड़ ने मानव को धरती और प्राकृतिक सौंदर्य से विमुख कर दिया है. आज तो स्थिति यह है कि वह हरीभरी दूब का कोमल स्पर्श, ताजा महकते फूलों की गंध और शीतल पवन झकोरों के स्पर्श से भी वंचित हो चला है.

इसलिए बढ़ती हुई आधुनिकता में 'राक गार्डन' यानी शैल उद्यान बनाने और हरेभरे संसार में रहने का सिलसिला सभी आंगनों में चल पड़ा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

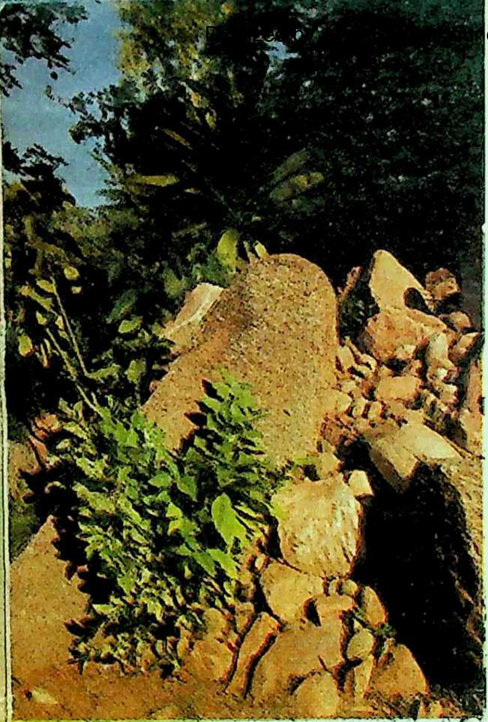

राकरी का उपयोग उन स्थानों को छिपाने भी हो सकता है जो वाटिका की शोभा बढ़ाने योगदान नहीं देते या भद्दे लगते हैं.

शैल उद्यान से हमारा तात्पर्य यहां केवल अपने घर के लान, उद्यान, बगीचे अथवा खुले स्थान में मिट्टी के ढेलों और बड़े पत्थरों की एक पहाड़ी सी बनाना है, जिस पर भांतिभांति के पेड़पौधे लगा कर घर में ही जंगल का आनंद लिया जा सके.

कैसे बनाएं?

भारतीय परिस्थितियों में इस के लिए वृक्षों की सघन छाया में, मिट्टी का ढेर लगा कर उस में पत्थर के बड़ेबड़े टुकड़े सजा कर इस उद्देश्य हेतु उगाए जाने वाले पौधों के लिए उचित वातावरण तैयार किया जाता है. इसे तैयार करते समय नम, छायादार तथा पत्थर के टुकड़ों से भरपूर क्षेत्रों का उपयोग किया जा सकता है.

राक गार्डन या राकरी तैयार करने का लक्ष्य विशिष्ट पौधे के लिए उगने की अवस्था को कृत्रिम रूप से तैयार करना होता है. अत: सर्वप्रथम मिट्टी का उचित आकार का ढेर बना कर उस में जैविक खाद मिलाई जाती है और तब नजदीक के स्थान से प्राप्त पत्थर के सुडौल टुकड़े उस में दबा दिए जाते हैं. इ बात पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाए कि पौधों की प्रत्येक अवस्था में पत्थर के टुक दिखाई पड़ें और उपयुक्त जल निकास तथ नमी की स्थिति लगातार बनी रहे.

राकरी का उपयोग उन स्थानों को छिपाने में भी हो सकता है जो वाटिका की शोभा बढ़ाने में योगदान नहीं देते.

शैल उद्यान की मिट्टी में प्रयुक्त होने वाली जैविक खाद में सड़ी कंपोस्ट तथा पत्ते की खाद श्रेष्ठ है. इन में उगाए जाने वाले पौधे में सुंदर पत्तियों वाले या रसयुक्त पौधे, फर्न छोटे अलंकृत पौधे तथा छाया व नम स्थानों उगने वाले सुंदर पौधे पत्थर के टुकड़ों के बीच की मिट्टी में लगाए जाते हैं. राकरी का स्वरू स्थानीय परिस्थिति, जलवायु तथा रूपरेख के अनुसार भिन्नभिन्न प्रकार का हो सकता है

शैल उद्यान में नागफनी की विभिन्न जातियां, कांटेदार झाड़ियां, रसयुक्त पौधे जैसे यूफोरबिया, ग्वारपाठा, अगेव, बैगनी फूलों वाला चौंगा आदि फर्न तथा एस्परगस की विभिन्न प्रजातियां उगाई जा सकती हैं राकरी में काम आने वाले अन्य पौधों में अलोकेसिया, अगेलोनिया, एंथुरियम, बिल- बर्जिया, गजेनिया, पार्टूलेका, गुलाब (फेयरी क्वीन) सेक्सीफ्रेगा तथा बर्बीना आदि प्रमुख हैं.

राकरी की लंबाई चौड़ाई तथा ऊंचाई उस के लिए उपलब्ध स्थान विशेष पर निर्भर करती है. छोटे मकानों के आंगन के कोने आदि में 5 से 10 फुट की लंबाई तथा पांचसात फुट की ऊंचाई रखी जा सकती है. इस कार्य में आप की सफलता आप की अपनी रुचि तथा सूझबूझ पर निर्भर करती है. यदि भांतिभांति की आकृति और रंगों वाले गोल, चपटे, तिकोने पत्थर एकत्रित कर के इस पर सजाए जाएं तो यह लघु पर्वतप्रदेश आप की बगिया की शोभा में कई गुना वृद्धि कर सकता है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शराबी पति और आप

लेख • शोभा सिन्हा

अंगरेजी समाचार समाप्त होते ही मैं सोने की तैयारी कर रही थी कि घंटी बजी, दरवाजा खोला तो बाहर घबराई हुई सी मेरी पड़ोसिन सुधा खड़ी थी. वह बोली, "सोनू स्कूल की सहेलियों के साथ पिकनिक मनाने गई थी. अभी तक आई नहीं. मुझे चिंता हो रही है. यदि भाई साहब घर हों तो उन्हें जरा पता लगाने भेज दो."

मैं सुधा को बाहर बैठक में बैठा कर अंदर जाने को मुड़ी ही थी कि तेज मोटर साइकिल की आवाज सन्नाटे को चीरती हुई घर के आगे रुकी. साथ ही सुधा की आवाज आई, "सोनू आ गई है जी." मैं वापस सुधा के पास पहुंची तब तक सोनू का दोस्त उसे छोड़ कर जा चुका था.

सुधा बोली, "माफ कीजिएगा, बेवक्त आप को परेशान किया. यह तो रोज ही देर से आते हैं. दफ्तर और शाम को क्लब के बाद तो इन्हें घर के लिए बिलकुल समय ही नहीं मिलता है. बच्चों पर कोई नियंत्रण नहीं है, मेरी बात तो बच्चे सुनते ही नहीं हैं, सोनू पिछले साल फेल हो गई, उस का भाई भी फेल होतेहोते बचा. रोज देर रात गए दोनों लौटते हैं. इन्हें तो काम और पीनेपिलाने की पार्टियों से फुरसत ही

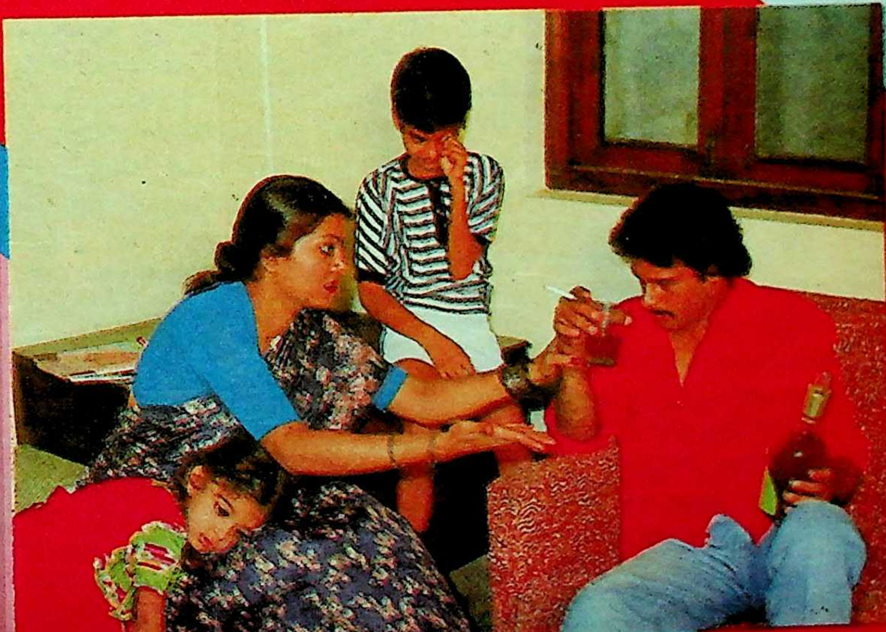

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप के पति शराबी हैं और घर व बच्चों की तरफ ध्यान नहीं देते तो इस का मतलब यह नहीं कि आप उनको दोष देकर खुद भी हाथ पर हाथ धरे बैठी रहें. आपको स्वयं पति के कर्तव्यों को निभाते हुए उनको सुधारने की कोशिश करनी होगी.

नहीं है. मैं तो बस घर की नौकरानी बन कर रह गई हूं. ये बच्चे भी मुझे आदर नहीं देते हैं.

"यह भी मेरी गलती निकालते हैं कि मां हो कर भी बच्चों को सही शिक्षा नहीं दे पाई. अब बाप का भी तो कोई फर्ज होता होगा, बच्चों के प्रति. इन्हें तो ऐसी शराब की लत लगी है कि बस मैं कुछ कहती हूं तो घर में कलह मच जाता है."

इतना कहतेकहते सुधा की आवाज भर्रा गई. मैं ने उसे सांत्वना देते हुए कहा, "आप चिंता न करें, सब ठीक हो जाएगा."

सुधा के घर शराब पीने की आदत को ले कर रोज चिकचिक मची रहती है. कलह और तनाव भरे माहौल में बड़े होते बच्चे आखिर किस रास्ते पर चलेंगे. बच्चे घर के कटुतापूर्ण वातावरण से दूर बाहर सुख की खोज में भटकते हैं और कब गलत राहों पर चल पड़ें, इस का पता उन्हें स्वयं भी नहीं चलता है.

बदलते जीवन मूल्यों के कारण क्लब और पीनेपिलाने की पार्टियां आज आधुनिकता की पहचान बन गई हैं. कई बार पुरुष वर्ग अनचाहे ही इस लत का गुलाम बन जाता है. इस के बाद शुरू होता है पति को सुधारने का दौर और पारिवारिक तनाव.

पतिपत्नी दोनों में किस की अधिक गलती है. किसे सुधारा जाए, कैसे सुधा जाए ये प्रश्न अपनी जगह हैं. शराब छुड़ा के लिए प्रेमपूर्ण व्यवहार करें, अपने घरबा को ठीक रखें और भी न जाने क्याक्य सुझाव दिए जाते हैं. पर भुक्तभोगी बह जानती हैं कि इस लत को छुड़ाना कितन कठिन है.

लेकिन पीने वाले पति को हर गलत के लिए जिम्मेदार ठहरा कर क्या पत्न अपने घर, बच्चों के साथ सही अर्थों में पूर न्याय करती है? यह एक विचारणीय प्रश्न है.

अकसर अपने आसपास हमें सुधा जैसी अनेक बहनें मिल जाएंगी जो बच्चों के बिगड़ने का पूरा दोष पति की इस आदत को देंगी. पर क्या ऐसी बहनें स्वयं दोषी नहीं होतीं?

मेरी चचेरी बहन अनु बेहद समझदार व व्यावहारिक है, विवाह के बाद कुछ वर्षों तक तो सब ठीक चला. फिर पता नहीं कैसे जीजाजी ने शौकिया शराब पीनी शुरू की और समय के साथ न चाहते हुए भी रोज पीने लगे.

अनु शुरू में बेहद परेशान रही. रोज की कलह से पारिवारिक वातावरण तनावपूर्ण हो जाता था और बच्चे गुमसुम से कोनों में दुबक जाते थे. फिर उस ने बड़े होते बच्चों की खातिर घर के बिगड़ते माहौल को सुधारने के लिए कमर कस ली.

घर की हर छोटीबड़ी बात की ओर अनु ध्यान देने लगी. घर में राशन खत्म हो रहा है. किस महीने नए कपड़े बनेंगे. किस रिश्तेदार की शादी में क्या देना है. बच्चों की पढ़ाई कैसी चल रही है. किस विषय में कब ट्यूशन रखनी है. बच्चों के दोस्त कैसे हैं. ऐसी साधारण बातों से ले कर बीमार सास को डाक्टर को कब दिखाना है. दवाई कितने दिन की बची है आदि बातों का ध्यान अनु ही रखने लगी.

शुरू में अनु को परेशानी हुई, पर वह शीघ्र ही हर काम में निपुण हो गई. जिन कामों के लिए पहले अनु पति का मुंह देखती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधा
ब छुड़ा
घरबा
क्याक
गी बह
कितन
र गलत
या पत्
ों में पू
ीय प्रश्
में सुध
बच्चों
ादत क
षी नह
मझदा
कुछ वर्ष
नहीं कै
शुरू क
भी रोज
ही. रोज
तावरण
गुमसुम
स ने बड़
बिगड़ते
कस ली.
की ओर
खत्म हो
गे. किस
. बच्चों
विषय में
स्त कैसे
बीमार
है. दवाई
ातों का
, पर वह
ई. जिन
ह देखती

Are You Worried About The Future Of Your Child?

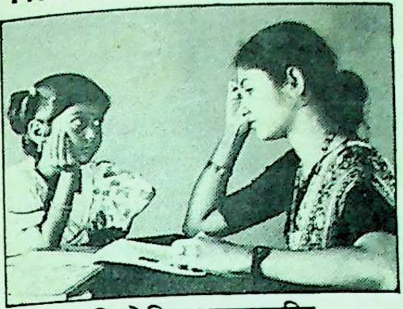

त्रियेणि आकाडमि

APPLICATIONS FOR ALL CLASSES I TO XII FROM BOYS AND GIRLS ARE ENTERTAINED.

THRIVENI ACADEMY
(Affiliated to CBSE)

ADMISSION NOTICE

'A Unique School that is also an ideal home for your child'

* Co-educational. Fully residential for all students and all teachers.
* Provision for study of all major Indian languages.
* Remedial instruction, counselling and career guidance facilities.
* Emphasis on Physical education and outdoor games and sports including yoga, trekking, swimming, riding etc.
* Comfortable living accommodation and wholesome, nutritious vegetarian food.
* Highly qualified and experienced staff interacting with students continuously, inside and outside the class rooms.
* A school that provides modern education with due emphasis on Indian values and traditions.
* Medium of Instruction: English

Advance Registration for June1990 Session can be made now Prospectus and Regn. form Rs.100/- (by DD).

For details contact: **THRIVENI ACADEMY**
5, South Mada Street, Mylapore, Madras - 600 004. India.
Campus: Thriveni Nagar, Vadakkupattu Village.
Via.Singaperumal Koil, Chingleput Dist. - **603 204.**

हिंदू समाज के पथभ्रष्टक तुलसीदास

संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य और हिंदू समाज को स्थायी संबल देने वाला घोषित कर दिया. प्रशंसा की इस चकाचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में क्या थे? वह हिंदू समाज के पथ प्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

हिंदू समाज को पथभ्रष्ट करने वाले इस संत कवि के साहित्यिक आडंबरों की पोल खोल कर उस की वास्तविकता पाठकों के सामने रखना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है. आशा है इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी.

मूल्य 12 रुपए. पुस्तकालयों, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए विशेष छूट केवल 6 रुपए. डाक खर्च 3 रुपए - वी.पी.पी. भेज कर लिए जाएंगें. रजिस्टर्ड डाक से डाक व्यय 5 रुपए. आदेश के साथ 5 रुपए अग्रिम भेजें.

दिल्ली बुक कंपनी 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली - 110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

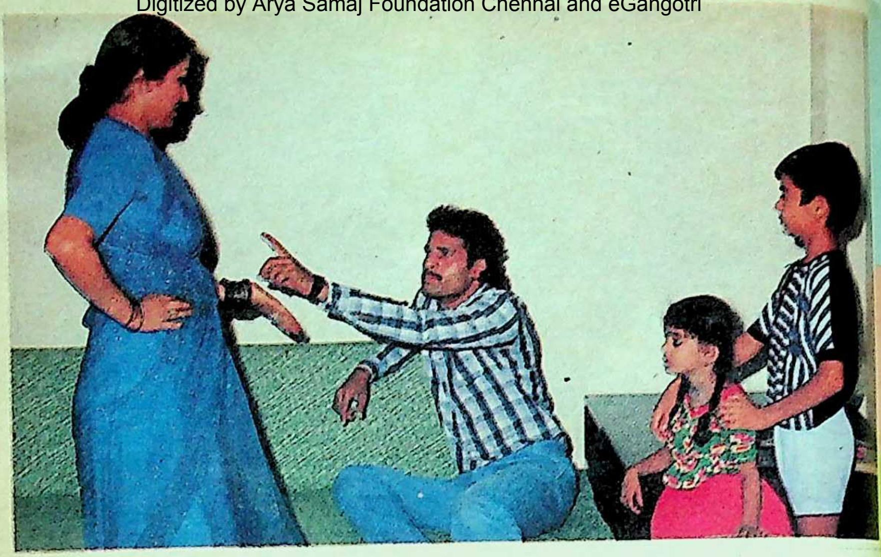

थी, रोज घर में किचकिच होती थी, तनाव रहता था, वे सारे काम अनु ने अपने जिम्मे ले लिए.

बच्चों ने धीरेधीरे मां को पिता के रूप में मान्यता दे दी. पति शुरू से, जो चाह कर भी अपनी इस आदत को नहीं छुड़ा पा रहे थे, धीरेधीरे अपनी आदत पर नियंत्रण करते गए. अब अनु के घर में उस की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता.

सास को शुरू में अजीब लगा, पर अब वह भी अनु की हिम्मत की तारीफ करती है.

समस्या सुधा व अनु दोनों की एक ही थी. पर सुधा ने उसे परंपरागत भारतीय महिला के रूप में देखा जबकि अनु ने स्थिति का दृढ़ता से मुकाबला करते हुए सही राह चुनी.

विपरीत परिस्थितियों में अपने घर को केवल भाग्य के भरोसे न छोड़ें. अपनी किस्मत को कोसने से तो बेहतर है कि परिस्थितियों को सुधारने का प्रयत्न करें. बच्चे व घर केवल पति के ही नहीं, आप के भी हैं. केवल पति की गलत आदत को दोष दे कर आप अपने दायित्व से मुक्त नहीं हो जातीं. पति जैसे भी हों, बच्चों को उन्हें आदर देना ही सिखाएं.

पति का शराब पी कर पत्नी से झगड़ा करना घर के वातावरण को तो कलहपूर्ण बनाता है, साथ ही बच्चों पर भी बुरा असर छोड़ता है.

किंतु यदि परिस्थितियां विपरीत हैं और उन में शिक्षित महिलाएं भी लड़ने और दोषारोपण करने में अपना समय गंवाएंगी तो निश्चित जानिए किसी भी दुष्परिणाम के लिए पति के साथ पत्नियां भी बराबर की जिम्मेदार होंगी.

जीवन में परिस्थितियां हमेशा अनुकूल नहीं रहतीं. सही व्यक्ति वही है जो विपरीत परिस्थितियों को भी अनुकूल बना ले. माना कि यह काम कठिन है, पर असंभव नहीं. प्रयास कीजिए, पति को समझाने के साथसाथ उस की जिम्मेदारियां भी बांटिए. परिवार के छोटेबड़े सभी सदस्य निश्चित रूप से आप के इस प्रयास में आप को सहयोग देंगे. बच्चे भी आप को मार्गदर्शक के रूप में मान्यता देंगे और आप के पति भी अपने आप को आप के प्रति ऋणी महसूस करेंगे. हां, एक बात का अवश्य ध्यान रखें. अपने द्वारा किए गए कार्यों का एहसान न जताएं, पति व बच्चों को स्वयं महसूस करने दें. तभी आप एक सफल पत्नी कहलाने की हकदार बनेंगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेसू को बांधो मत

तितली को बांधो मत
रेशमी रूमालों से
टेसू को बांधो मत
रंग और गुलालों से.

आमों को बांधो मत
मौसमी सवालों से
कोयल को साधो मत
बौर के बवालों से.

दुनिया को देखो मत
भंग के खयालों से
होली को बांधो मत
आग के दलालों से.

—श्रीराम मीना

CC-0. In Pu... gri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवंती राज्य के विदिशा नगर में दो दिन के अंतराल पर ही ऐतिहासिक महत्त्व की वे दोनों घटनाएं घटीं. भारत की सुखसमृद्धि के इस काल में घरकोठार धनधान्य से भरे रहते थे. उत्सवों, त्योहारों में उत्साहउमंग की बहुतायत के कारण उन की सीमारेखा निश्चित करना कठिन था. रंगअबीर का प्रयोग इन दिनों बसंतोत्सव के साथ ही प्रारंभ हो जाता था.

नगर की उच्च अट्टालिका के शीर्ष पर नगर सेठ की पुत्री अपनी सखीसहेलियों सहित फागोत्सव में निमग्न थी. टेसू पुष्पों से संचित व गुलाबजल से सुवासित रंगों से वे एकदूसरे को भिगो रही थीं. गाढ़े रंगों के साथ वे हंसीठिठोली और मधुर व्यंग्योक्तियों द्वारा एकदूसरे के तनमन को भीतर तक सराबोर कर रही थीं. उल्लास से उन का रोमरोम खिला पड़ रहा था. सेठपुत्री सैद्विघीता महादेवी ने अचानक स्वयं पर किए गए रंगों के आघातों का प्रत्युत्तर देने का निश्चय कर लिया.

कहानी ● डा. प्रभात त्यागी

प्रतिदान

होली के दिन अवंति के उपशासक को सेठ पुत्री सैद्विघीता महादेवी ने रंगों से सराबोर कर दिया. तो सारा जनसमूह आतंक से कांप उठा. यहां तक कि सैद्विघीता स्वयं भी डर गई कि न जाने अब क्या होने वाला है?

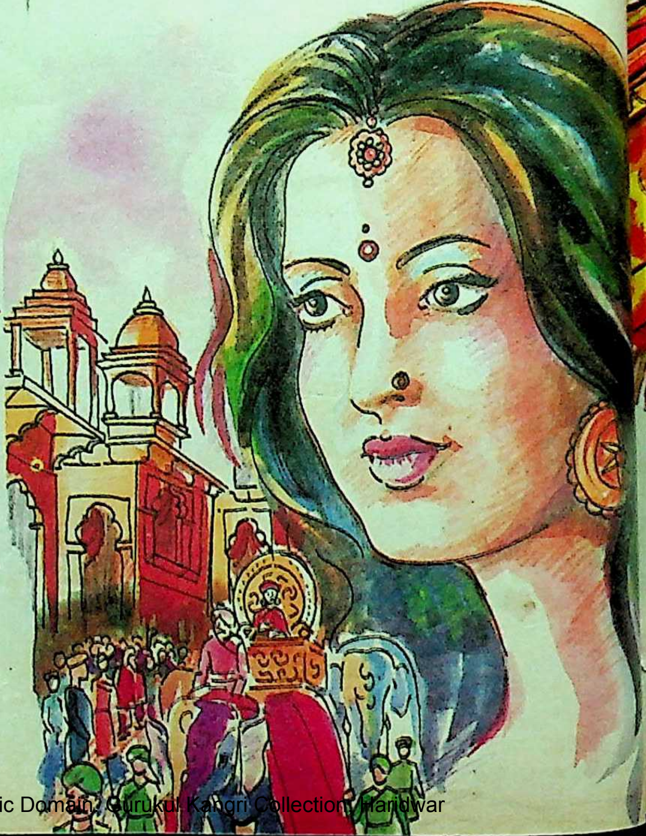

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

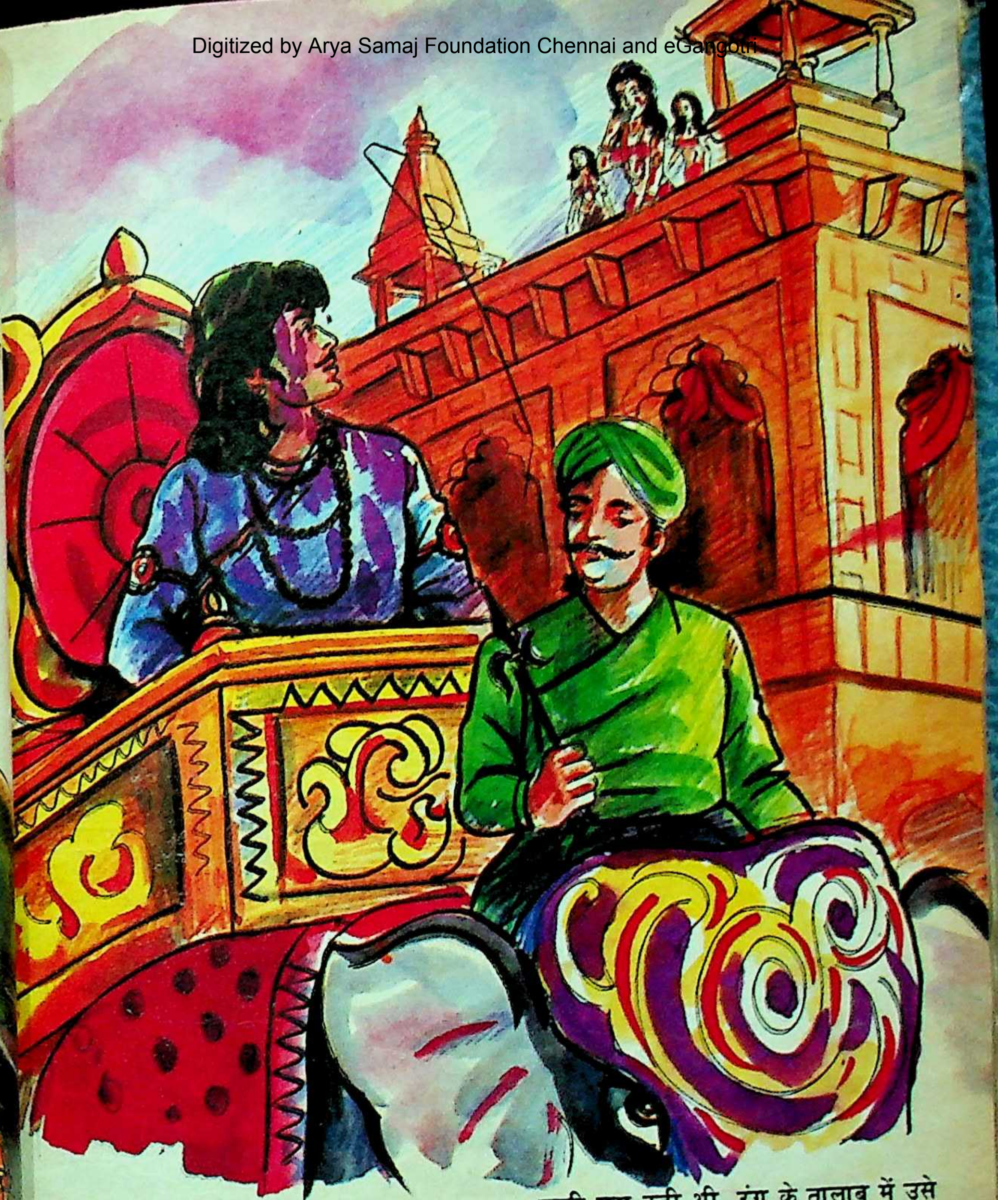

युवक आश्चर्यचकित उस युवती को निहार रहा था जो मुंडेर पर अविरल खिलखिलाहट बिखेर रही थी. ▲

उस के संकेत पर उस की कुछ सहेलियों ने महादेवी की मुंहबोली, सुंदर सखी प्रियदर्शिनी को पीछे से आ कर दबोच लिया क्योंकि वह सब को भिगो कर स्वयं सूखी घूम रही थी. रंग के तालाब में उसे डुबकी दिलाने का कार्यक्रम आगे के लिए स्थगित कर महादेवी ने दो दिन पश्चात प्रयुक्त होने वाले रंगों के ताम्र पात्रों में से एक को हाथों में उठा लिया.

भारी बोझ होते हुए भी वह तीव्र गति से प्रियदर्शिनी की ओर बढ़ी. निश्चित था कि अब प्रियदर्शिनी को भीगो जाने से कोई भी नहीं रोक सकता था. पर जैसे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियदर्शिनी पर सैद्दिघीता ने रंग की चोट करनी चाही, वह चीख उठी "उई मां.." वह विद्युत गति से अपने स्थान पर बैठ भर गई. पात्र का सारा रंग उसे स्पर्श किए बिना, संगमरमरी वातायन से निकल कर बाहर राजमार्ग पर बिखर गया.

सारी सखीसहेलियां अनिष्ट की आशंका से भयग्रस्त हो गईं. किंतु दुस्साहसी महादेवी दौड़ कर अट्टालिका की मुंडेर से राजमार्ग की ओर झांकने लगी. खिलखिलाते हुए वह देखना चाहती थी कि उस के रंग का वार किस व्यक्ति पर हुआ है? स्पष्टतया आनंदातिरेक ही उस के अट्टहास का उद्देश्य था.

उसी पल राजमार्ग पर राजसी गजराज पर आसीन अवंती का प्रस्तावित उपशासक विदिशा की स्थिति का अवलोकन करते हुए निकला. गजराज मंथर गति से आगे बढ़ रहा था. वह स्वर्णाभूषणों, अलंकारों व बहूमूल्य रेशमी वस्त्रों तथा मखमली दुकूलों से सुसज्जित था. उस के मस्तक पर आसीन उस का चालक भी नयनाभिराम वेश धारण किए हुए था.

गजराज की पीठ पर, रत्नजटित सिंहासन पर चंवर डुलाते दो सेवकों के बीच एक युवक गंभीर मुद्रा में नगर का अवलोकन कर रहा था. अपनी शालीन मुखमुद्रा, दर्पपूर्ण दृष्टि तथा अत्यधिक मूल्यवान परिधानों से राज्य का वह उपराजा किसी प्रसिद्ध राजवंश से संबंधित प्रतीत हो रहा था. उस के गजराज पर दृष्टि पड़ते ही राजमार्ग पर गतिमान साधारण जन मस्तक नीचा कर विदिशा के उस राजमार्ग पर प्रतिमा बन कर खड़े हो जाते थे. जब गजराज आगे बढ़ जाता था, तभी वे गतिशील होते थे.

नगर श्रेष्ठि के भवन के नीचे गजराज जैसे ही पहुंचा, अट्टालिका से निकले रंग से सिंहासनारूढ तरुण पूरी तरह भीग गया. पल भर के लिए इस अप्रत्याशित घटना से वह स्तंभित रह गया. क्रोध से वह प्रकंपित हो उठा. उस के नेत्रों से अंगारे निकलने लगे. गजराज के पीछे चलता सुरक्षा दल बिना उस के आदेशों की प्रतीक्षा किए नगर वणिक के भवन पर धावा बोलने के लिए तत्पर हो गया.

"ठहरो." अचानक युवक के मुख से निकले शब्द ने उन्हें अपने स्थान पर स्थिर रहने के लिए बाध्य कर दिया.

युवक आश्चर्यचकित उस युवती को निहार रहा था जो मुंडेर पर से अविरल खिलखिलाहट बिखेर रही थी. सौंदर्य का सजीव स्वरूप थी वह. उस के कंधों से लहराते काले केशों ने उस के सांचे में ढले गोरे मुख को आच्छादित कर दिया था.

अपने बड़ेबड़े नेत्रों, उन्नत ग्रीवा तथा अत्यंत आकर्षक गात से उस ने तरुण की हृदयतंत्री को झंकृत कर दिया था. उस की खिलखिलाहट उसे किसी देवालय की घंटियों जैसी सुमधुर प्रतीत हो रही थी. युवक विशेष रूप से युवती के साहस व संवेदनशीलता से प्रभावित था. आज तक उस की ओर निहारने का किसी ने साहस नहीं किया था, जबकि वह युवती न केवल उस की कुरूप, रंगीन छवि को ताक रही थी, बल्कि वह उस पर खिलखिला भी रही थी.

युवक के आदेश पर महावत ने गजराज को वहीं राजमार्ग के बीचोबीच बैठा दिया. गजराज को उस अट्टालिका के सम्मुख बैठते देख कर राजमार्ग पर चलते साधारण जन में भय की लहर दौड़ गई. गजराज के सिंहासन पर आरूढ तरुण के स्वभाव से वे परिचित थे. उस के क्रोध व कठोरता की कथाएं तो विदिशा के घरघर में प्रचारित हो चुकी थीं.

गजराज से उतर कर तरुण ने एक प्रतिहारी को अपने पास बुला कर उस के कान में फुसफुसा कर कुछ कहा. प्रतिहारी तुरंत अट्टालिका में दाखिल हो गया तथा कुछ पल में ही वह बाहर आ गया.

"जी महामहिम." तरुण को मस्तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

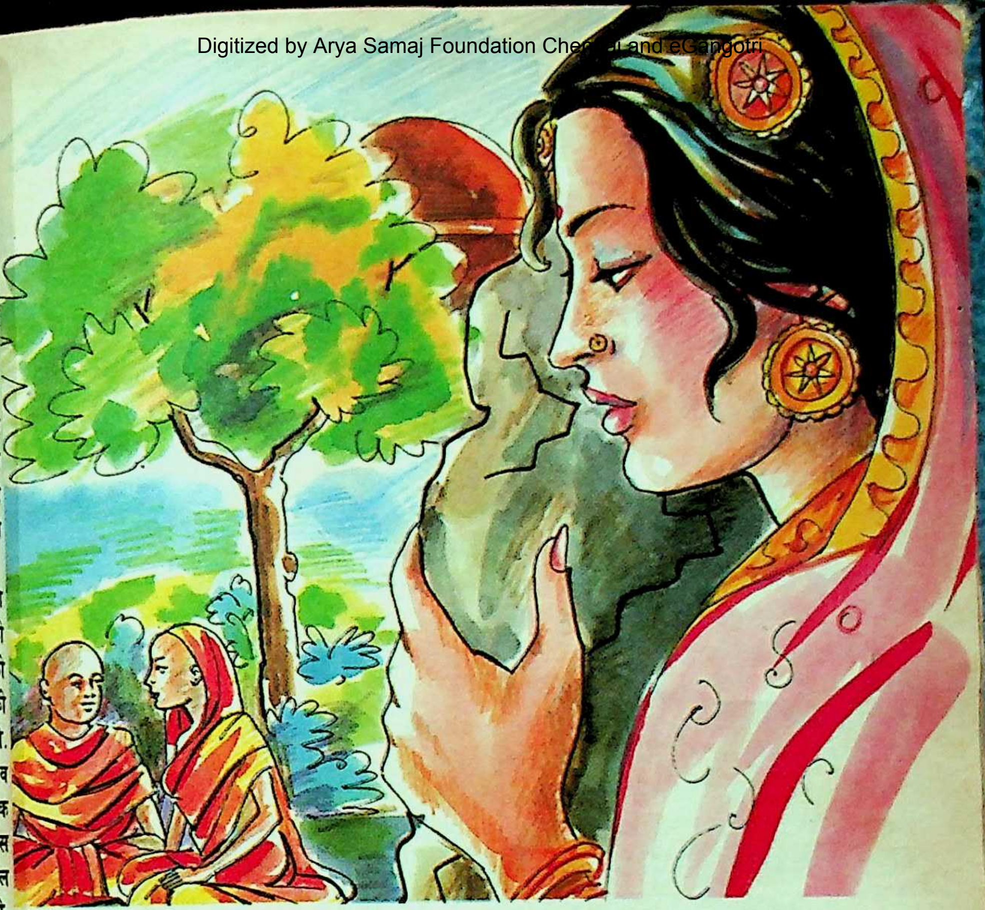

उत्पल मानसी के निकटतर बढ़ता रहा जबकि मानसी, "अरे, दूर तो हटो" कहती हुई अपने स्थान पर अडिग बैठी रही. ▲

झुका कर उस ने सहमति व्यक्त कर दी.

"तो ठीक है, हम अभी आते हैं, हमारी प्रतीक्षा करो," धड़धड़ाते हुए वह प्रथम सोपान पर चढ़ गया. अपने गीले वस्त्रों की उसे तनिक भी चिंता नहीं थी.

भवन में हड़कंप मचा हुआ था. भवन के पुरुषों में विशेष रूप से हाहाकार था. वे पंक्तिबद्ध उसी की प्रतीक्षा कर रहे थे. उस के स्वभाव की उग्रता से परिचित होने के कारण अपनी महादेवी को बचाने हेतु सभी सेवक तरुण के चरणों में लोट गए.

एक वृद्ध सेवक आगे आ कर बोला, "क्षमा नरश्रेष्ठ, हम बेटी सैद्दिघीता की ओर से आप से क्षमा मांगते हैं. उस की अल्पायु तथा अबौद्धिकता को दृष्टिगत रख कर कृपया उस के अपराध का दंड हमें दे दीजिए."

पर तरुण उन की ओर उपेक्षा की दृष्टि डाल कर मौन, अट्टालिका के दूसरे सोपान की ओर बढ़ गया.

जब तरुण ऊपर पहुंचा तो श्रेष्ठिपुत्री की सहेलियां भयंकर रूप से चिताग्रस्त थीं. उन्हें शायद ज्ञात हो चुका था कि राजमार्ग पर भीगने वाला व्यक्ति कौन है. स्वयं सैद्दिघीता भी अब खिलखिलाना छोड़ कर गंभीर मुखमुद्रा बनाए विचारमग्न खड़ी थी.

वह भीग जाने वाले व्यक्ति से अपरिचित थी, पर उस की उच्च वंशीय कुलीनता को तो वह आंखों से ही देख चुकी थी. न जाने उस का स्वभाव कैसा हो? वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीगे जाने पर न जाने कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करे? जब तक वह आगे के कदम के विषय में कुछ निर्णय लेती, अपनी सखियों की चीत्कार से उस की तंद्रा टूट गई.

उस ने अचकचा कर देखा, चोटी से पैर तक भीगा हुआ तरुण उस के सम्मुख खड़ा था. रंगों ने उस के बहुमूल्य वस्त्रों को बदरंग बना दिया था. पर महादेवी की दृष्टि उस के वस्त्रों पर नहीं, तरुण के मुख पर केंद्रित थी. वह मुख अत्यधिक कुरूप व भयावह रूप से भद्दा था. उस का तन भी आबनूस की भांति घोर श्यामवर्णी था. किंतु युवक के अनाकर्षक मुख पर दो बड़े नेत्रों में अधिकतम तेजस्विता व जीवंतता थी.

"हम ने सोचा कि महादेवी को हम से होली खेलने में कठिनाई हो रही है. अतः हम स्वयं ही होली खेलने ऊपर आ गए हैं. जी भर कर हमें आप भिगो दीजिए. हम विश्वास दिलाते हैं कि हम तनिक भी प्रतिरोध नहीं करेंगे."

किंतु सैद्दिघीता तो अवाक खड़ी थी. उसे तनिक भी विश्वास न था कि तरुण इस प्रकार ऊपर आ कर उस से बात करने का साहस करेगा. उस के पिताजी ने तो उस पर आज तक परपुरुष की परछाई तक नहीं पड़ने दी थी. यदि वह विदिशा से आज उज्जयिनी न गए होते तो उन के मन पर क्या बीतती?

युवक अपलक खड़ा युवती के सौंदर्य से अभिभूत था. उस के कोमल गात, संकुचित कटि प्रदेश, भय व लाज से व्याकुल हुए उस के बड़ेबड़े नेत्र, धुनषाकार भौंहें, पतले, रतननारे अधर, पवन के झकोरों के साथ लहराते उस के घने केश, एक अपरिचित व्यक्ति को पहली बार इतनी निकटता से देख कर उत्पन्न सिहरन के कारण गिरताउठता यौवन, मांसल तन तथा रंभा व रति जैसी सुगठित उस की मुखाकृति, सभी युवक को आकर्षक लग रहे थे.

"क्षमा करें मान्यवर," युवती ने साहस कर प्रत्युत्तर दिया, "मैं अपने कृत्य के लि[ए] अत्यधिक दुखी हूं. पर रंग आप पर उड़ेल[ने] का मेरा कोई मंतव्य न था. मेरी सखी [के] अचानक सामने से हट जाने के कारण य[ह] अपराध अनजाने में ही हुआ है. मुझे ज्ञात [न] था कि मेरे इस अपराध के कारण आप [को] इतनी असुविधा होगी. मैं क्षमाप्रार्थिनी हूं किंतु आए अतिथि का स्वागत करना मेर[ा] कर्तव्य है.

"आप ने स्वयं मुझ से होली खेलने [की] इच्छा व्यक्त की है, इसलिए मैं आप [को] निराश करने का साहस नहीं कर सकती पर इस आतिथ्य के लिए मैं तनिक भी खे[द] व्यक्त नहीं करूंगी क्योंकि यह पूर्णतया आ[प] की अपनी इच्छा है."

जब तक परिचारिकाएं व युवक कु[छ] सोचेसमझें, महादेवी रंग से भरा पात्र उठ[ा] लाई और निडरता से युवक पर उड़ेल दिया.

"अरेअरे, महादेवी, रुकिए तो." "सुनिए तो महादेवी." सहेलियां उ[से] रोकती रह गईं, पर महादेवी कह रही थी, "क्षमा करें, श्रीमन, कुदरत ने आप को रू[प] प्रदान नहीं किया. उस ने आप को अन्य को[ई] भी रंग न चढ़ने वाला अंधियारा रंग दिया है, पर मैं ने आप को फिर भी बहुरंग से सज्जित किया है. इस प्रकार धृष्ट होते हुए भी मैं ने प्रकृति के अधूरे कार्य को पूर्ण किया है."

सैद्दिघीता दौड़ कर पैरों में लगाए जा[ने] वाला महावर हथेलियों पर चुपड़ कर ले आई तथा युवक के श्याम मुख पर लपेट कर पुनः खिलखिलाने लगी. सचमुच युवक का मुख दहकता हुआ अंगार प्रतीत होने लगा था.

आश्चर्य का विषय था कि तरुण भी मंदमंद मुसकान बिखेर रहा था.

"सुमुखी, क्या तुम्हें ज्ञात है कि मैं कौन हूं?" युवक का प्रश्न था.

"जी हां, मुझे आप हाड़मांस के साकार मानव दिखाई दे रहे हैं. वैसे आप 'भूतप्रेत' भी होते, जैसा कि आप के रूपरंग से अब स्पष्ट हो रहा है, तब भी आप मुझे भयभीत नहीं कर पाते, क्योंकि मुझे इनसानों से भय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीपेट
'सिंड्रेला'

किचन में सुविधा के लिए बहुउपयोगी जार

अब, टीनों को टटोलना छोड़िए. भारी और टूटने-फूटने वाली बोतलों को अलविदा कहिए... श्रीपेट सिंड्रेला जार बिस्किट, नमक, चाय, कॉफी पाउडर, काजू मिठाइयां, कैंडीज़, वेफ़र्स, शहद... यहां तक कि रिफ़िल पैकों के लिए भी अत्युत्तम.

फूडग्रेड, गंधहीन, न टूटने-फूटने वाली, पारदर्शक, हल्की श्रीपेट बोतलें व जार को इस्तेमाल करने में कितनी सुख सुविधा है खुद अनुभव कीजिए.

भरने के लिए अधिकतम तापमान ६०° सें.

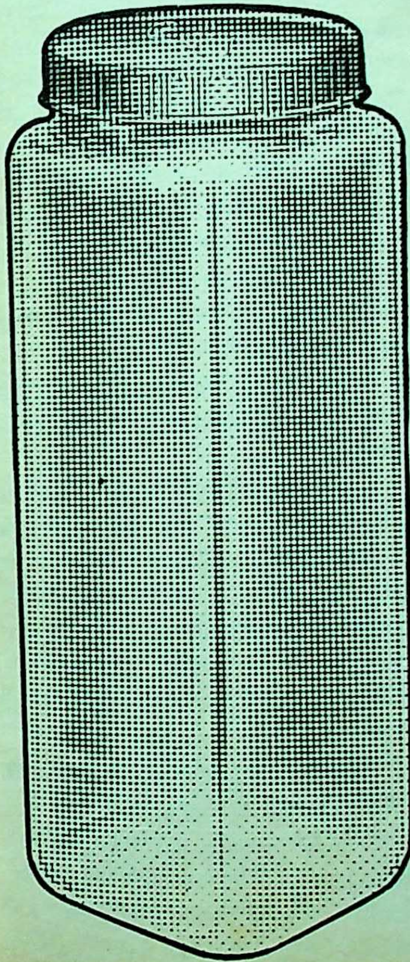

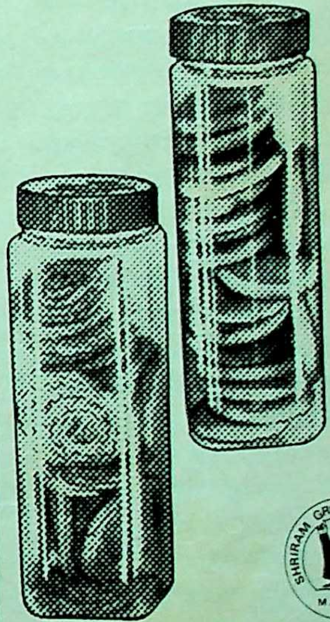

ADWAVE/PET/3823/HN

SHRIRAM GROUP COMPANIES MADRAS

पेट इंडस्ट्रियल कंज़्यूमर पैकेज प्रा. लि.
मूकाम्बिका कॉम्पलैक्स, ३री मंज़िल,
४, लेडी देसिकाचारी रोड, (प्रवेश: सी पी रामास्वामी रोड),
मैलापुर, मद्रास ६०० ००४.
फ़ोन ७३७६८/७४९६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है अन्य किसी भी प्राणी से नहीं." महादेवी स्वयं ही अपनी बात पर अट्टहास कर उठी.

"आप का आदेश हो तो मैं अब जाऊं? होली का रंगोत्सव रचाने की आप की साध तो पूर्ण हो ही गई है?" युवक के शब्दों में शालीनता, सुसंस्कृति थी.

"नहीं, अतिथि श्रेष्ठ, अब तक तो मैं आप के आदेशों का पालन कर रही थी, किंतु अब मेरा आप से अनुरोध है कि कक्ष में तनिक विश्राम कर मुझे कृतार्थ करें."

अंधा क्या मांगे, दो आंखें. युवक तुरंत कक्ष की ओर चल पड़ा. महादेवी तब तक सोपान पर उतर कर अदृश्य हो चुकी थी. तनिक देर में कई परिचारिकाएं सुस्वादु व्यंजन, मिष्ठान्न, स्वर्णाभूषण व धवल परिधान लिए उपस्थित हुईं.

"मान्यवर, आप क्योंकि मेरे साथ होली का रंग खेलने आए हैं, अतः इस भवन की परंपरा के अनुसार मेरी ओर से यह तुच्छ भेंट स्वीकार करें. वस्त्र परिवर्तन कर तथा मिष्ठान्न स्वीकार कर कृपया मुझे आभारप्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करें."

"महादेवी, मैं असमय कोई भोज्य पदार्थ नहीं लेता हूं पर क्योंकि आप का आग्रह है, इसलिए मैं मुंह मीठा कर लेता हूं (बहुत छोटा भाग मिष्टान्न का उठाते हुए) जहां तक इस भेंट का प्रश्न है, मुझे इसे स्वीकार करने में सुखानुभव ही होगा, पर वस्त्र परिवर्तन मैं इसी आधार पर करूंगा कि रंग हटाए बिना ही मैं नए परिधान धारण करूं."

"जैसी आप की इच्छा, नरश्रेष्ठ. तो आप मेरे अपराध का प्रदर्शन सारे नगर में करना चाहते हैं. इस से तो मेरी व तातश्री की बहुत निंदा होगी..." पहली बार उसे पश्चात्ताप का अनुभव हुआ.

"मेरा मंतव्य नहीं है ऐसा करने का, अनजाने ही यह सब कुछ होगा." युवक के व्यंग्य पर वह निरुत्तर हो गई.

कक्ष में जब वह पुनः लौटी तो हंसी मारे लोटपोट हो गई. तरुण के श्या रक्तिम मुख पर स्वर्णरेख युक्त पगड़ी विदूषक बनाए हुए थी. युवक के इंगित स्वर्णाभूषणों वाला थाल पहले से गजराज तक पहुंचा दिया गया था.

गजराज पर पुनः आरूढ हो कर युवक आगे बढ़ा तो जनसाधारण उस कौतुक को देख कर हथेलियों, आंचलों धोती के पल्ले में मुंह छिपा कर मुसकरा रहे. होली के रंग में मत्त अपने क्रूर व उग्र राजा को देख कर उन्हें आश्चर्यमिश्रि प्रसन्नता हो रही थी.

दो दिन पश्चात होलिकोत्सव के स एक राजसी पालकी को अपने घर के द्वार रुकते देख कर नगर श्रेष्ठी के हाथों के तो उड़ गए. किसी विपत्ति की आशंका से भी वह नंगे पांव अट्टालिका के बाहर भाग आय तब तक अवंती का राजुक (उप राजा व अधिकारी) तुषास्य पालकी से उतर क मुख्य द्वार तक पहुंच चुका था.

"आज्ञा मान्यवर."

"क्या हमें अपने गृह में प्रवेश नहीं लें देंगे, नगर श्रेष्ठी?"

"मैं धन्य हूं, जो आप मेरी कुटिया पधारे. आइए न, यह वणिक आप का स्वाग करता है."

"वणिक श्रेष्ठ." गंभीर मुद्रा तुषास्य बोलने लगा. उस की मुखमुद्रा परिवर्तन से नगर श्रेष्ठी का विश्वास उ धोखा दे गया और वह व्याकुल हो क धरती पर गिरतेगिरते बचा.

"आप इतने उत्तेजित क्यों हो रहे हैं मैं तो मात्र यह संदेश आप को देने के लि आया था...."

"संदेश? राजसी मुहरयुक्त? क्या अपराध हो गया है मुझ से?"

"तनिक पढ़िए तो इसे. पर एक चेतावनी इस से पूर्व अवश्य है कि इसे पू गोपनीय रखें. कानोकान इस के विषय किसी को कोई ज्ञान न हो. लीजिए, मैं प देता हूं इसे..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुषास्य ने संदेश पढ़ कर सुना दिया. संदेश समाप्त होने पर नगर श्रेष्ठी के मुख पर कई रंग आजा रहे थे.

"क्या मैं भी साथ में चल सकता हूं श्रीमन?"

"नहीं, आप चाहें तो अलग से पहुंच सकते हैं. मुझे तो अकेले ही इन्हें वहां तक पहुंचाने का आदेश प्राप्त हुआ है."

'पर इस प्रकार...?"

"उन के साथ दो परिचारिकाएं भी पहुंच सकती हैं." राजुक के चले जाने पर शोक संतप्त वणिक चीत्कार कर उठा.

जब कुछ क्षणों के पश्चात अंतःपुर में यह समाचार फैला तो स्त्रियों का रुदन प्रारंभ हो गया. किंतु महादेवी कुछ अन्यमनस्क होते हुए भी अविचलित थी.

पालकी वापस चल कर एक भव्य भवन के सम्मुख जा कर रुकी. पूरे मार्ग में पालकी में भारी परदों व सैनिक दल के कारण बैठी महिलाएं नगर के होली के हुड़दंग से अप्रभावित व अपरिचित रहीं.

अद्‌भूत साजसज्जा युक्त कक्ष में अपनेआप को अकेला पा कर सैद्दिधीता महादेवी बड़ी उत्सुकता से कक्ष की एकएक बहुमूल्य वस्तु को निरखपरख कर विस्मित होती रही.

"कक्ष का अवलोकन समाप्त हो गया हो तो अवंती का उप शासक मौर्य अशोक आप से होली खेलने का अनुग्रह करता है." द्वार पर खड़े उसी तरुण का स्वर सुन कर महादेवी चौंक पड़ी. तो यही है वह क्रूर, कठोर अशोक, जिस की अगणित गाथाएं अवंती, तक्षशिला व मगध के कणकण में व्याप्त हैं?

"वाह, आप का होली का आमंत्रण भी अनोखा है. आप को ज्ञात है, आप के इस मनोरंजक कृत्य से मेरे मातापिता मरणासन्न हो चुके हैं."

"मैं जानता हूं, महादेवी, कि मैं ने बहुत मुर्खतापूर्ण कृत्य किया है. मैं तुरंत किसी को भेज कर उन के निर्मल भय का निराकरण

हवा का झोंका

डूब जाते हैं सनम
जब भी जी चाहे तेरी याद में,
इक हवा का झोंका
ले आते हैं तपते रेगिस्तान में!

—अरुणा वोहरा

करता हूं."

"रहने दीजिए, महामहिम. वे बेटी के मांबाप हैं. जिन्हें ज्ञात है कि बेटी गीले आटे के समान होतीं है, जिसे बाहर निकालने पर कौओं का व भीतर रखने पर चूहों का भय रहता है. जब तक मैं वापस नहीं जाऊंगी, उन दोनों के मन पर सांप लोटता रहेगा.

"मैं क्षमा चाहता हूं, आप से. पर जब से आप ने मुझ से होली खेली है. मैं बेचैन हो उठा हूं. दो ही दिनों में मेरी भूखप्यास मर गई है. बड़ी आतुरता से मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कब होली आए और मैं कब उस के लिए आप को आमंत्रित करूं..."

"अरे, आप अवंती का प्रशासन कैसे संभालते होंगे, जब छोटी सी बात से ही आप इतने व्यग्र व अव्यवस्थित हो उठे हैं? मेरा कहा मानिए और आप किसी बन में कुटिया बना कर वहां निवासस्थान बना लीजिए, राजकार्य आप के बस की बात नहीं है."

एक क्षण के लिए अशोक के नेत्रों में स्फुलिंग से चमके पर दूसरे ही पल मुसकरा कर वह प्रश्न कर रहा था, "यदि आप को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उज्जयिनी की प्रशासिका बना दिया जाए तो कैसा रहेगा?"

"मुझे यह तो ज्ञात नहीं कि कैसा रहेगा, पर यह सत्य है कि मैं दूध का दूध व पानी का पानी कर लोगों के हृदयों पर राज्य करूंगी तथा आप की भांति छोटीछोटी बातों से तनिक भी व्यग्र नहीं होऊंगी."

कक्ष में प्रविष्ट होते हुए महादेवी की दृष्टि एक कोने में रखे रंग के पात्रों पर पड़ चुकी थी. इस समय वह उसी पात्र पर दृष्टि जमाए हुए थी, किंतु उस के प्रयोग का उसे अवसर प्राप्त नहीं हुआ था.

"तो आइए, होली खेली जाए." अशोक के शब्दों पर वह खिलखिला उठी.

"धन्य हैं आप भी. ऐसे बोल रहे हैं, जैसे कोई शिकारी अपने शिकार से कहे, 'चलिएजी मैं आप का शिकार कर लूं.'"

स्वयं अशोक भी उस की बात पर अट्टहास कर उठा. यही अवसर था, जिस की महादेवी प्रतीक्षा कर रही थी. असावधान अशोक की खिलखिलाहट के बीच वह रंग के पात्र के निकट जा पहुंची थी.

"बहुत बुद्धिमान हो तुम..., अरे, कहां चली गईं आप? अशोक ने जैसे ही उस की खोज में कक्ष के बाहर की ओर दृष्टि डाली, महादेवी ने रंग का पात्र उठा कर उस के कंधों पर खाली कर दिया.

"श्रीमानजी, ऐसे खेली जाती है होली." अशोक मौन खड़ा था. महादेवी उन्मुक्त हंसी हंस रही थी. कक्ष का मखमली गद्दा, मसनद व तकिए रंग से तरबतर हो चुके थे. पर उस की भृकुटि तनिक भी टेढ़ी नहीं हुई.

"सच, हम तो बिलकुल ही अपढ़ हैं इस कला में.... उस के नेत्रों की भाषा समझ कर सैद्दिघीता बीरबहूटी हो उठी. उस के कपोल ऊषा की लाली की भांति लाल हो उठे. बेचारा अशोक महादेवी के मुख के इस परिवर्तन को निरख कर बेसुध ही हो उठा.

एक पहर से कुछ पहले अशोक की ओर से दिए गए रत्नों, कर्णफलों, जड़ाऊ मेखला, पायल व कंगन सहित नवीन उत्तरीय, लहंगे तथा चकाचौंध उत्पन्न करती कंचुकी धारण किए जब वह राजप्रासाद से जाने को उद्यत हुई तो अनायास ही एक मुसकान उस के होंठों पर नाच उठी. प्रश्नवाचक मुद्रा में अशोक ने उस की ओर निहारा.

"मैं सोच रही थी कि आप ने मुझ से होली खेलने के लिए मुझे आमंत्रित किया, पर आप तो स्वयं ही मेरे रंगों से भीग गए. भला आप को क्या लाभ हुआ?"

"मेरा लाभ संख्या में नहीं, मात्रा में ही तोला जा सकता है, रूपसी."

"रूपसी? अरे, आप को मेरा सीधा-साधा नाम सैद्दिघीता नहीं आता क्या? नाटक के सूत्रधार या अभिनेताओं की भाषा कैसे बोल रहे हैं आप?" महादेवी के क्रोध के सम्मुख अशोक मौन खड़ा रह गया. वह टुकुरटुकुर ताकता अपने हृदय को कई भागों में विभाजित होता देखता रहा. विडंबना यह थी कि हृदय की हत्या होने, उस का वध होने पर भी वह मौन था.

संध्या के धुंधलके में पालकी से वापस अपनी अट्टालिका की ओर लौटते हुए महादेवी ने अपने साथ के कहारों को आज्ञा दे कर पालकी के दोनों परदे ऊपर उठा लिए थे. जब वह विदिशा (वेत्रवती या बेतवा) नदी के किनारेकिनारे जा रही थी, ऊंचाई पर टेकड़ी पर स्थित एक बौद्ध स्तूप को देख कर उस ने पालकी को रोक देने का कहारों को आदेश दिया, "मैं इस स्तूप की परिक्रमा कर अभी लौटती हूं."

"महादेवी, हम आप की सुरक्षा हेतु साथ चलने की आज्ञा चाहते हैं." सैनिक अधिकारी के शब्द सुन कर वह बोली, "नहीं, मैं कोई पदार्थ या सामग्री नहीं हूं कि कोई मुझे लूट कर ले जाएगा. वैसे भी युवराज अशोक के राज्य में मैं पूर्णतया सुरक्षित हूं." प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा किए बिना वह चौकड़ी भर कर टेकड़ी की ओर दौड़ पड़ी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MARCH (FIRST) 1990

Wages of Indian Secularism: The nation is bleeding. Will the deadly sting of communal violence and lawlessness become part of our life?

Perestroika for the Forces: Arun Singh's report calls for radical reorganisation of Defence management.

"The sick Government Hospitals are resuscitating," says Dr Ponmudi, Health Minister of Tamil Nadu, who aims at providing medical aid to the remotest village.

A visit to the "New World": A world whose glittering lights beckon us to join its vastly different ways of life.

Secrets of successful parenthood: Love and affection is not the only thing your child requires.

When old age comes: Adjustment is the key-word when on the threshold of old age.

Tapping the untapped: Sports talent has to be hunted for even if it means looking for it in the villages.

Short stories, cartoons, humour and much more.

BUY A COPY TODAY

- ***INFORMATIVE***
- ***INSPIRING***
- ***INCISIVE***

HELPS YOU LIVE A BETTER LIFE

Alive

PUBLISHED BY: DELHI PRESS, NEW DELHI — 110055

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेकड़ी के निकट की उन्मुक्त प्रकृति यानी वन, पर्वत व सरिता को देख कर उस का मन नाच उठा. उल्लसित वह आगे बढ़ना ही चाहती थी कि स्तूप के पीछे से भागते आते पदचापों को सुन कर वह विस्मित हो उठी. तुरंत वह चट्टान की ओट में खड़ी हो गई.

पल भर में ही एक बौद्ध भिक्षु व भिक्षणी को एकदूसरे के पीछे दौड़ते देख कर उसे घोर आश्चर्य हुआ. दोनों के सिर घुटे हुए थे, उन के वस्त्र गेरुए थे और दोनों 15-16 वर्ष से अधिक आयु के नहीं थे.

"मानसी, तुम ने आज नगर में कुछ देखा?" वृक्षावलियों के मध्य एक हरेभरे स्थान पर भिक्षुणी के निकट रमण ने बैठते हुए प्रश्न किया.

"उत्पल, तुम्हें मैं ने कितनी बार चेतावनी दी है कि तुम नगर परिक्रमा के समय देखा कम करो. कार्य अधिक किया करो. आज तुम ने दो व्यक्तियों से भी संपर्क स्थापित नहीं किया होगा, जबकि मैं कम से कम 20 पुरुषों व 15 स्त्रियों से भेंट कर उन्हें भगवान बुद्ध के उपदेशों की गरिमा से अवगत करा आई हूं."

"तुम तो मुझ से सभी क्षेत्रों में अग्रणी हो. किंतु अगर मेरे जैसा पिछलग्गू न हो तो तुम्हें अग्रणी कौन मानेगा? फिर तुम ने दो व्यक्तियों से संपर्क की बात कही, एक तुम से भी संपर्क कर रहा हूं. कुल तीन व्यक्ति हो गए न....?"

"बस, तुम्हारे इस निश्छल व्यवहार पर ही तो सारा मठ न्योछावर रहता है. अब यहां एकांत में क्यों लाए हो मुझे? क्या अत्यावश्यक बात करनी थी तुम्हें? शीघ्र कहो, मुझे संध्यापाठ के लिए सामग्री भी व्यवस्थित करनी है."

"तुम न जाने युवती हो कर भी बाह्य लोक से कैसे विमुख रह पाती हो, आश्चर्य है मुझे. मैं तुम्हें यही तो बता रहा था कि विदिशा नगरी में मैं आज जनसाधारण से संपर्क क्यों नहीं कर सका? तनिक और निकट आते हुए उत्पल फुसफुसाया, "तुम्हें ज्ञात है, आज कौन सा दिवस है?"

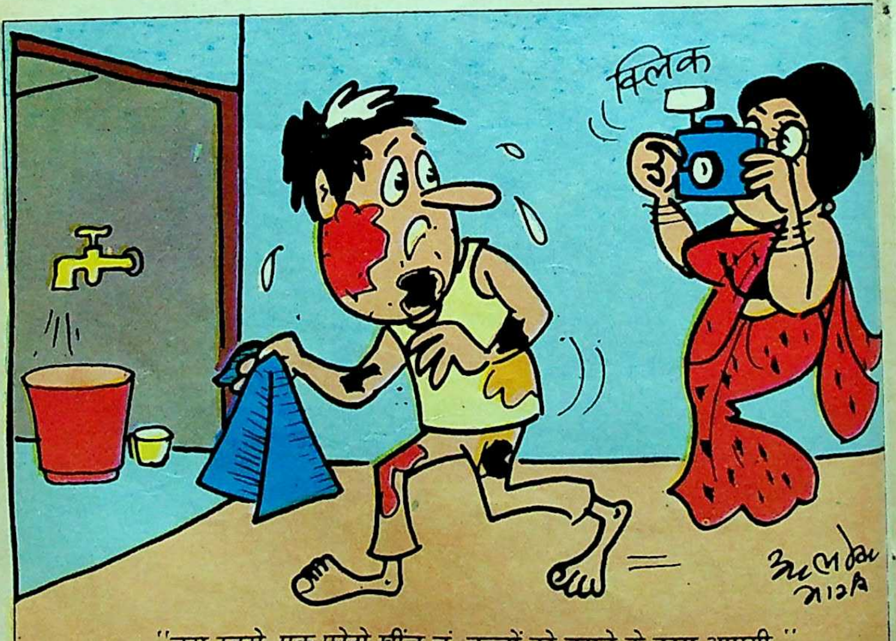

"जरा ठहरो, एक फोटो खींच लूं, बच्चों को डराने के काम आएगी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अरे गुरुवार है आज. इस में फुसफुसाने की क्या बात है?" मानसी की बात पर खिलखिलाते हुए उत्पल बोला, "ओ बुद्धिहीना, आज होली थी."

"हांहां, तो क्या करूं? महात्मा बुद्ध ने होली, दीपावली उत्सवों को कर्मकांडी पंडितों का ढकोसला बताया है."

"बसबस देवी, मैं कोई साधारण जन नहीं हूं, जिसे तुम्हारे तोताछाप बुद्ध स्वामी के उपदेशों की आवश्यकता हो. मैं तो पूछ रहा था कि तुम्हें नगर में स्त्रीपुरुषों, देवरभाभियों, पतिपत्नी को एकदूसरे को रंग लगाते, चुहल करते देख कर क्या कुछ नहीं हुआ?"

"हुआ क्यों नहीं." वह क्रोध से बोली, "मेरा मन कहता रहा कि होली के नाम पर वृथा अपनी कुत्सित भावनाओं व मनोविकारों को प्रदर्शित करने वालों को तड़पातड़पा कर... पर बुद्ध स्वामी ने तो हमारे लिए क्रोध व हिंसा को त्याज्य बताया है. (हाथ जोड़ कर) भगवान, मुझे क्षमा करना." मानसी कुछ शब्द बुदबुदाने लगी.

"तो इस का अर्थ हुआ कि तुम रंग–अबीर से अभी तक अछूती रही हो?"

"नहीं, अछूती तो नहीं रही. आज ही एकदो धृष्ट बालकों ने मेरे गेरुए वस्त्रों को रंगों से भिगोने का असफल प्रयास किया, पर मैं उस से पूर्व ही भाग आई."

"बस तुम में और मुझ में यही तो मुख्य अंतर है कि तुम जहां यथार्थ से दूर भागती हो मैं उस में पैठ कर उसे परखने को उत्सुक रहता हूं और आज यथार्थ यह है कि होली के रंग से कोई रंगीन होने से रह जाए तो वह केवल पशु तुल्य है......"

अपनी बात पूर्ण करते हुए उत्पल ने अपनी झोली में से अबीर की एक मुट्ठी निकाल कर गौरवर्णी मानसी के मुख पर मल दी.

"ओह, तुम मुझे सांसारिकता की ओर घसीट रहे हो."

"चुप रहो मानसी. तुम्हें रंगअबीर में ही सांसारिकता झलक रही है? लो मैं अपने साथ दर्पण का एक टुकड़ा भी ले कर आया हूं, तनिक अपनेआप को इस समय निहारो और देखो कि तुम्हारा रूप कितना स्वाभाविक हो उठा है?"

मानवी अपने वस्त्रों को झाड़ते हुए बुद्ध की शिक्षाओं को मन ही मन दोहराते हुए भी दर्पण में अपनेआप को निहारने का लोभ संवरण न कर सकी.

"सच मानसी, हम व्यर्थ ही बौद्ध ग्रंथों का मनन कर अपने जीवन की होली सुलगा रहे हैं. क्यों न हम अन्य भिक्षुभिक्षुणियों की भांति जो वत्स, कौशल, तक्षशिला अथवा कश्यपपुर के मठों को त्याग चुके हैं, अंग वज्जियों के नगर वैशाली या सौराष्ट्र में जा कर बसेरा कर लें? क्यों, तुम सहमत हो? अभी हमारी आयु ही क्या है, धर्म की गूढ़ता में हमें व्यर्थ रमने से क्या लाभ?"

उत्पल मानसी के निकटतर बढ़ता रहा जबकि मानसी, "अरे दूर तो हटो" कहती हुई अपने स्थान पर अडिग बैठी रही.

"नहींनहीं उत्पल, अच्छा हो तुम मुझे और इस विहार को छोड़ कर अकेले कहीं चले जाओ. ओह, तुम मुझे कमजोर मत बनाओ." वह तेजी से मठ की ओर दौड़ पड़ी.

"मानसी, सुनो तो, रुको." वह भी मठ की ओर भागा.

"यदि कुछ किया नहीं गया तो इस धर्म का पतन सन्निकट है. सैद्दिघीता खड़ीखड़ी चिंतन करती रही. वह स्तूप की ओर न जा कर उलटे पांव पालकी की ओर बढ़ गई. पालकी में बैठ कर भी वह न जाने कौन से तानेबाने बुनती रही.

अपने भवन में वह जैसे ही प्रविष्ट हुई, उस के पिता ने प्रमुदित स्वर में उस की अगवानी की, "बेटी, आज होली के उत्सव

नेता

सच्चे नेता अपने प्रेम के जोर से लोगों के दिल को सदा के लिए बांध लेते हैं.

—पूर्णसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर तू ने मुझे प्रसन्नता का अमृत पिला दिया है."

असमंजस में खड़ी महादेवी को प्रियदर्शनी हाथ पकड़ कर एक विशाल कक्ष में ले गई जो सुंदर वस्तुओं व आभूषणों से भरा हुआ था.

ये सब कुछ तुझे युवराज की भेंट के रूप में भेजा गया है. उन्होंने तेरे साथ विवाह का प्रस्ताव भी भेजा है."

"आ बेटी, मैं तेरी बलैयां ले लूं. तू अवंती की सम्राज्ञी बनेगी." उस की मां ने उसे अपनी छाती से चिपका लिया.

महादेवी अपने कक्ष में विचारमग्न बैठी रही. अशोक का कुरूप मुख, उस की उग्र छवि, भयावह कठोरता की उस की गाथाएं उसे इस विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार करने को प्रेरित कर रही थीं. पर होली से दो दिन पूर्व की उस की भीगी छवि, जब वह गजराज से उतर कर रंग डलवाने के लिए उस के सामने खड़ा हो गया था, एक पहर पूर्व के उस के मुसकानयुक्त कक्ष में भीगे खड़े रूप तथा मसनंद, गद्दे व तकियों के रंगीन हो जाने पर भी शांत खड़े रहने तथा रंग उड़ेलने पर भी कोई प्रतिकार न करना आदि दृश्य व बातें उस के हृदय पर अमिट प्रभाव छोड़ गई थीं.

वह संसार के लिए कैसा ही भयंकर हो, पर कठोर काले तन के कलेवर में छिपी उस की निष्कपट व भोली प्रकृति से वह परिचित हो चुकी थी. फिर भी एक बार विदिशा के स्तूप के निकट उस ने युवराज से जा कर प्रश्न किया, "महामहिम, मैं एक साधारण युवती, आप इतने उच्च राजवंश के उत्तराधिकारी, आप ने क्या सोच कर मुझ से विवाह का प्रस्ताव किया है?"

"महादेवी, तुलना ही करनी है तो यह भी करो कि मेरे जैसे बीभत्स, कुरूप मुख वाले, क्रूर व्यक्ति से तुम ने इतनी आकर्षक होते हुए भी विवाह की बात कैसे स्वीकार कर ली? फिर तुम्हें ज्ञात है कि मेरे पूर्वज चंद्रगुप्त मौर्य व उस की माता, अत्यंत साधारण, निम्नवर्गीय ही थे. तुम तो झोंपड़े में भी रहती होतीं, तब भी मैं तुम से वि[...] रचा लेता. महात्मा बुद्ध से यही तो [...] सीखा है कि तन के रंग से किसी के म[...] रंग का ज्ञान नहीं हो सकता. मैं ने तु[...] गोरे तन से नहीं, तुम्हारे हृदय से वैवा[...] संबंध चाहा है."

उस के प्रत्युत्तर पर महादेवी ने वि[...] के लिए तुरंत स्वीकृति प्रदान कर दी.

जब महादेवी अभिसारिका बनी अ[...] प्रियतम, भारत के सम्राट बने अ[...] महान की प्रतीक्षा कर रही थी तब [...] अचानक उस से आ कर बोला, "प्रिय[...] हम आज तुम्हें अपने एक और दोष से [...] परिचित करा दें कि हम होली के खेल में [...] नहीं, प्रेम व्यापार में भी नितांत कोरे हैं. [...] तुम ने दो बार हमें रंगों से भिगो दिया, [...] मौन तुम्हारे अत्याचार सहते रहे. लेकि[...] आज हमारी बारी है."

"धत!" मुसकरा कर महादेवी [...] उठी, "कोई शिकारी कह कर भी क[...] शिकार कर सका है?"

वैदिशीता महादेवी के पुत्र महेंद्र [...] पुत्री संघमित्रा जब कुछ बड़े हो गए तो [...] सम्राट से बोली, "भारतरत्न, इस देश में [...] बौद्ध धर्म का कोई भविष्य नहीं है क्योंकि [...] कारणों से वह पतनोन्मुख हो चुका है. [...] सोचती हूं कि विदेशों में इस के प्रचार [...] प्रसार से इसे अमरता प्रदान की जा सक[...] है. आप मेरे पुत्र व पुत्री को विदेशों में बौ[...] धर्म के प्रचार हेतु भेजें. लंका से अ[...] अभियान प्रारंभ करें. मैं देश में इस धर्म [...] कुरीतियों को मिटाऊंगी."

"किंतु प्रिये, भारत में बौद्ध धर्म [...] कुरीतियां दूर करने से पूर्व, अपने गोबर[...] की कमियां तो दूर कर लो."

"बड़े वो हैं आप?" लजाते [...] महादेवी ने सम्राट की बांहों में अपना मु[...] छिपा लिया.

पाटलीपुत्र के कक्ष की दीवारें ही [...] के बीच के वार्तालाप को आगे [...] सकीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनक के घट

कहानी ● चंद्रा र. देवत

गरमगरम पकौड़ों की प्लेट के साथ चाय ले कर ज्यों ही कंचन ने बैठक में प्रवेश किया, एकदम ठिठक गई. माथे पर बल पड़ गए. केशव चाय ही पी रहा था. साथ ही हाथों में सांध्यकालीन अखबार था. कंचन के प्रवेश पर, पढ़ने में व्यस्त केशव चौंका. मन ही मन दीर्घ निःश्वास ली. होंठों पर प्रकट में फीकी मुसकान सजा, उस ने औपचारिकता निभाई, "आओ कंचन."

कंचन ने कुछ मुंह फुलाए भीतर आ कर ट्रे जोर से मेज पर पटक दी. भुनभुनाते स्वर में बोली, "मैं ने कहा था, चाय मैं ला रही हूं. फिर इतनी जल्दी क्या थी?"

"तुम्हें काफी देर हो गई थी. मैं थका हुआ था. इसलिए गंगा काका से बनवा ली मैं ने." केशव ने सफाई देनी चाही.

"गंगा काका से या उस कुतिया से?"

"कुतिया?" केशव अचकचा गया. किसी भले की घर की लड़की के मुंह पर ऐसी भाषा अच्छी नहीं लगी थी, "किस की बात कर रही हो?"

"भोले मत बनो. जैसे कुछ समझे ही नहीं."

केशव तब समझ गया, बहुत दुख हुआ था उसे. टालना चाहा भी था, पर खैर! अब फायदा नहीं. इस गाली का प्रयोग कंचन ने निश्चय ही अपनी बड़ी बहन मेधा के लिए किया था. मेधा अच्छी लड़की थी. जहीन, बेहद समझदार, शांत, सरल, गंभीर स्वभाव.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों बहनों में लगभग साल, डेढ़ साल का ही अंतर था. इसी कारण शायद कंचन मेधा को नाम से ही पुकारती थी. बल्कि अपने से बहुत छोटी यानी ओछी मान कर व्यवहार करती थी.

"अब क्यों चुप लगा गए?" कंचन ने चुभते, तीखे स्वर में पूछा.

केशव संभला, "मेधा तुम से बड़ी है. उस के लिए अपशब्दों का प्रयोग तुम्हें शोभा नहीं देता."

केशव ने यों ही अनमने से महज बात टालने की गरज से कह दिया था, किंतु उपदेश सुनना कंचन को गवारा नहीं हुआ. एकदम बरस पड़ी, "और उसे शोभा देता है, मेरी खुशियों में टांग अड़ाना?" कंचन ने दांत पीसे. मैं जानती हूं उस कमीनी को. वह फंसाना चाहती है तुम्हें... पर... मैं कर भी

ज्यादा बात नहीं हुई मेरी उस के साथ.

इस बात ने कंचन का मिजाज थो सुधारा, "आई भी हो तो मुझे क्या? तुम लो, ये पकौड़े खाओ. मैं ने अपने हाथ से ब हैं."

"मेरी इच्छा नहीं है, कंचन. प्लेट जाओ. खाने के साथ खा लूंगा."

"नहीं. अभी खा लो गरमगरम, सामने." कंचन का मन अब एकदम ब चुका था, "लो, मैं अपने हाथ से खिला हूं."

केशव गड़बड़ा गया. दफ्तर से लौ था, थका हुआ था. ऐसे में शांति से चाय चुसकियां लेते अखबार का आनंद ले चाहता था, कंचन से झिकझिक करना नहीं उस ने कंचन की कलाई पकड़ कर उसे रोक की कोशिश की. कंचन को इस में रोमांस

होली के दिन घटी उस भयावह दुर्घटना ने केशव को तोड़ कर रख दिया था. उस ने अपने तमाम सुखों की तिलांजलि ही उस घटना का प्रायश्चित्त समझ लिया था. अभी वह इस दुख से उबर भी नहीं पाया था कि कंचन ने उस की जिंदगी में फिर से तूफान खड़ा कर दिया.

क्या सकती हूं? जब अपना ही सिक्का खोटा हो तो..." उस का गला भर आया, "मेरे दोस्त थोड़े ही हो तुम कि..."

केशव उकता गया. बहुत बुरा लगा था उसे. इसलिए नहीं कि उसे खोटा सिक्का कहा गया था, बल्कि इसलिए कि उसे 'अपना' कहा गया था. किस ने अधिकार दिया कंचन को ऐसा? और फिर वह बहन, जो सचमुच उस की 'अपनी' थी, उस के प्रति जैसे 'शानदार' विचार प्रकट किए थे कंचन ने, उन्हें याद कर तो 'पराया' रहना ज्यादा सुखदायी प्रतीत होता था. बहरहाल कंचन को टोकना अपनी शामत आप बुलाना था.

केशव ने टालते से स्वर में इतना ही कहा, "चाय गंगा काका से ही बनवाई थी मैं ने. मेधा तुम्हारी तरह, ऊपर आते वक्त रास्ते में मिली जरूर थी, परंतु हैलो से

मजा आया. जिद करती, खिलखिलात कंचन लगभग उस की गोद में ही आ पड़ी

केशव चिढ़ गया. जबरन गले पड़ की ओछी हरकतें उस के शरीफाना स्वभा को सुहाती नहीं थी. संयोग से उसी सम नौकर गंगाराम का एक और चाय के प्याले के साथ बैठक में प्रवेश हुआ. वह त अचकचा कर ठिठका और उलटे पैरों लौ गया, किंतु केशव का मुख शर्म व क्रोध लाल हो गया.

गंगाराम पुराना नौकर था. केशव को गोद में खिलाया था उस ने. केशव पित की तरह उस की इज्जत करता था. उस देखते यह बदतमीजी कुछ ज्यादा ही अख गई. कंचन को लगभग धकेल कर क्रु केशव झटके से उठ कर लंबे डग भरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज भी वह खौफनाक दृश्य ज्यों का त्यों आंखों में फिरता है. जब वह नौ लाशें ले कर बंगले पर लौटा था. ▲

अपने सोने के कमरे में जा घुसा. धक्के के कारण संभलतेसंभलते भी कंचन जमीन पर गिर पड़ी.

इतना तिरस्कार! कंचन क्रोध से पागल सी हो उठी. उठ कर बाहर भागी. अपमान व क्रोध से झुलसे अभिमानी हृदय को और तो कुछ नहीं सूझा, जातेजाते ठोकर मार गई मेज को. इसी पर ट्रे रखी थी. मेज उलट गई. साथ ही ट्रे व उस में रखी चाय,

पकौड़े, प्लेटें सभी कुछ. कीमती कालीन का सत्यानास हो गया. मेज का ऊपरी तल पूरा कांच का था. कांच की किरचें बिखर गईं. मगर इस सब से कंचन को क्या? वह रोती, भुनभुनाती बगूले की तरह बाहर जा चुकी थी.

अलबत्ता बरतनों की टकराहट व टूटने की आवाज के कारण गंगाराम ही वापस आया. दृश्य देखा, खासे तटस्थ भाव से. फिर एक अन्य नौकर को पुकार कर सब समेटनेसुधारने का हुक्म दे, आप केशव के शयनकक्ष की ओर चला गया. द्वार खटखटा कर भीतर झांका. चिंतित, परेशान, चिढ़ा बैठा केशव तनिक संयत हुआ. पूछा, "गई?"

स्वीकृति में सिर हिलाते हुए गंगाराम ने चिंतित भाव से पूछा, "ऐसा कब तक चलेगा बबुआ? आज फिर कालीन खराब हो गया, बल्कि आज तो मेज का शीशा भी टूट गया, और..."

"क्या करूं काका?" केशव तो खुद ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परेशान था, "मैं उसे बुलाता थोड़े ही हूं."

"अपने बंगले में क्यों नहीं चलते बबुआ? अब तो पूरा होने को आया. थोड़ाबहुत काम है भी तो हमारे रहते चलता रहेगा."

केशव खामोश हो गया. बड़ी देर की चुप्पी के बाद इतना ही बोला, "मैं सोचूंगा काका."

गंगाराम ने ज्यादा जिद नहीं की. बबुआ की मनःस्थिति उस के लिए अजानी नहीं थी. परेशान सा लौट गया.

केशव बैठा सोचता रहा, क्या करे? उस का निर्माणाधीन बंगला अभी पूरा तैयार नहीं था. फिर भी, अपने रहने लायक कुछ कमरे वह तुरंत तैयार करवा सकता था, किंतु...? आगे केशव सोचना नहीं चाहता था. स्मृति मात्र से मन व्याकुल, आंदोलित हो उठता था. कैसे रह पाएगा अकेला उस वीराने में, जहां कभी कितनी आवाजें, किलकारियां गूंजती थीं? जो कभी एक घर था, केशव का घर.

लौटने को खुद उस का जी नहीं मानता था. यहां, इस इमारत में व आसपास खासा अपनत्व व संगसाथ मिला था उसे. एक कंचन के कारण सब छूट जाए, सो भी मन नहीं था. कंचन इतनी महत्त्वपूर्ण तो नहीं उस के लिए. पर और उपाय भी क्या है? इस रोजरोज की आफत से और तो किसी तरह पीछा छूटने वाला नहीं. तब?

केशव की भी विचित्र कहानी थी. एक संपन्न परिवार में जनमा, उचित स्नेहममता व अनुशासन के साए में पलाबढ़ा. दुख, तकलीफ या अभाव जैसे शब्दों से कभी वास्ता ही नहीं पड़ा. बिना मांगे हर आवश्यकता पूरी हो जाती थी. सुखसुविधासंपन्न, स्नेहमय, सहज पारिवारिक माहौल, सभी कुछ जन्म से ही उपलब्ध रहा.

जब केशव का कालिज में पढ़ते एक ही वर्ष बीता था कि सतर्क पिता की अनुभवी आंखों को पुत्र की सोहबत तनिक गलत लगी. वह समझदार थे, युवा होते पुत्र को उन्होंने रोकटोक या धमकाया नहीं, कोई उपदेश नहीं झाड़े. बस, उसे अपने साथ व्यापार में लगा लिया. वैसे केशव से बड़ा एक बेटा और था सदाशिव, जो कि पहले ही पिता के व्यापार की लगाम संभाल कर, उसे आगे बढ़ाने में लग चुका था.

शुरू में केशव की खिलदंरी उम्र को व्यापारव्यवसाय की बंदिशें अखरीं, परंतु मातापिता व बड़ों के प्रति आदर के घरेलू संस्कारों तथा स्वाभाविक बुद्धि ने बेकार की जिद के आधार पर विद्रोह करने नहीं दिया. वैसे भी उस के समझदार पिता ने एकदम ढेरों बंधन नहीं लादे थे. काफी छूट रहती थी. अतः करतेअटकते काम में दिलचस्पी जागने लगी.

स्नातकोत्तर शिक्षा खत्म करते न करते वह अपने पिता के व्यवसाय में खासा निपुण हो चुका था. इस समय उस की आयु 26 वर्ष थी और दो साल से तो सारा कारोबार वह अकेला ही देख रहा था. यही अकेलापन ही तो उस का रोग था.

कोई दो साल पहले घटा था वह हादसा. होली से पूर्व मातापिता, भाईभाभी, बहन, भतीजाभतीजी सभी घर की गाड़ी में विभिन्न स्थानों की सैर को निकले थे. दो उद्देश्य थे, प्रमुख तो था केशव व उस की छोटी बहन के लिए लड़कीलड़का देखना तथा उत्तर में स्थित दर्शनीय स्थलों की सैर करना. विचार था, होली तक यथासंभव लौट आएंगे.

केशव अगर नहीं जा सकता तो महज इस कारण कि पीछे से व्यापार संभालने को किसी को तो रहना पड़ता. भाई रुकते तो भाभी को भी रुकना पड़ता. तब डेढ़ वर्षीय भतीजे को भी मां अकेली नहीं संभाल पाती.

केशव तब रह तो गया, पर अब पछताता था. साथ चला जाता तो बेहतर होता शायद. क्या जाने, भाईभाभी व भतीजा बच ही जाते?

आज भी वह हौलनाक दृश्य ज्यों का त्यों आंखों में फिरता है, जब वह नौ लाशें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आने वाले मेघा को पसंद भी कर लेते थे पर कहीं न कहीं से कंचन अवश्य आ टपकती. बस फिर फरमाइश होती कंचन के लिए.

ले कर बंगले पर लौटा था. मसूरी के रास्ते में मेटाडोर दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी. एक भी प्राणी जीवित नहीं बचा था. केशव के परिवार के सातों सदस्यों के साथ ड्राइवर व साथ गया नौकर, सभी समाप्त हो चुके थे. सूचना ठीक होली के दिन मिली उसे. तब, जब वह स्वयं आतुरता से सब के लौटने की राह देख रहा था.

अंतिम क्रिया की समस्त रस्में केशव ने पूरी की, नितांत शांत भाव से. वह कैसी श्मशान की सी शांति थी, सो केशव ही जानता था. प्रकट में एक आंसू भी बहाए बिना वह हर किसी से बोल रहा था. खोखला स्वर. चलनाफिरना, बोलना, जैसा बताया जाए, सो करना, यंत्राचालित सा वह प्रत्येक क्रिया करता.

केशव के अंतर्मन में घिर आए विकराल शून्य ने तो उस की हर प्रतिक्रिया, प्रत्येक अनुभूति छीन ली थी. क्या बताता किसी को, उस का मस्तिष्क, उस की प्रत्येक अनुभूति, सारे एहसास कितने मृत हो चुके हैं?

वह रोना चाहता था, बहुत खुल कर, फूटफूट कर, किंतु उन स्नेहिल कंधों को कहां से लौटा कर लाए, जिन पर रोते संकोच नहीं होता? जो अपने लगते? स्वयं ही तो उन्हें अपने कंधों पर उठा श्मशान छोड़ आया था. अब तो सूनी नजरें इधरउधर भटकतीं, वैसा ही कोई अपना ढूंढ़ती, निराश लौट आती थीं और निराशा की यह ज्वाला छलकने को आतुर आंसू की हर बूंद को सुखा डालती थी. इस मानसिक सन्नाटे ने कैसी कुंठाएं बना डालीं, खुद केशव नहीं जान सका. बस, अनजाने ही हर सुख, हर खुशी से कट गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सोचना चाहता था, पर मस्तिष्क सुन्न हो चुका था. वह महसूस करना चाहता था, किंतु हर अनुभूति मृत हो चुकी थी. बस, अभ्यस्त हाथपैर... जबान चल रहे थे, व्यस्त थे. प्रकट में हर रस्म अदा हो रही थी. एक केशव ही था जो सब कुछ स्वयं करते भी, हर काम से परे था.

12-15 दिन लोग घेरे रहे किसी न किसी बहाने. दूर के मेहमान घर में ही रहते रहे. फिर भीड़ छंट गई. तब शून्य मस्तिष्क केशव के अंतर्मन में केंद्रित सन्नाटा शनैःशनैः बाहर निकल, मानो सारे बंगले में बिखर कर उस के मनमस्तिष्क को अपने पंजे से मुक्त कर गया. उस के बाद तो कितनी ही रातें, कितनी खामोशियां उस ने बिलखबिलख कर रोते गुजारीं, एक गंगाराम के सिवा और कोई नहीं जान सका. दिन भर वह बाहर काम में व्यस्त रहता और रात को...?

अंत में गंगाराम को ही सुध आई. ऐसे तो बबुआ मर जाएगा? डर कर उस ने सुझाव दिया, कुछ दिन दर्शनीय स्थलों की यात्रा पर ही चलें. मन को शांति मिलेगी. लेकिन इस वक्त तो यात्रा का खयाल भी उन्हीं हौलनाक स्मृतियों को जगाने वाला साबित होता. फिर भी सुझाव जेहन से टकरातेटकराते इस रूप में जंच गया कि यह स्थान छोड़ दिया जाए. कुछ अरसे कहीं और चल कर रहें, इस माहौल व इस से जुड़ी यादों से परे.

इस मध्यमवर्गीय बस्ती में आ कर रहना केशव को अच्छा भी लगा, बुरा भी. यहां किसी को अकेला, अपने हाल पर नहीं छोड़ा जाता. पड़ोसियों को अपने घर से ज्यादा आसपास की फिक्र रहती थी. इस लगातार सुनगुन से अशांत मन केशव को शुरू में अखरा. धीरेधीरे अच्छा लगने लगा तो इस विचार से कि इस तरह उसे अपना अकेलापन सहना नहीं पड़ता. लगता है, हम किन्हीं अपने जैसे जीवों के बीच जीवित प्राणी हैं.

[illegible] गई थी तो कंचन नहीं, कंचन को भी क्या दोष देना? मुसीबत का वास्तविक कारण तो था केशव का अविवाहित वरणीय युवक होना.

गंगाराम व अन्य नौकरों से उस की पारिवारिक त्रासदी की कथा सब को मालूम हो गई थी, साथ ही उस की संपन्न, मजबूत व्यावसायिक स्थिति भी. उस के दुख पर दुख सब को था, फिर भी दबीढंकी सी राहत भी महसूस होती थी कि सासननदों का झंझट नहीं होगा. यहां सभी सामान्य आर्थिक स्थिति वाले परिवार बसते थे. केशव जैसा वर उन की कुमारी कन्याओं के लिए अति दुर्लभ प्राणी था, एकदम सपनों के सुंदर, सजीले राजकुमार जैसा.

सचमुच केशव सुंदर था. गोरा रंग, तीखे सुंदर नाकनक्श और इन सब से बढ़ कर सभ्य, शालीन व्यवहार. स्त्री जाति व बड़ों के प्रति आदरमान प्रदर्शित करतीं, बच्चों के प्रति सहज दुलार का भाव लिए मुसकराती सी आंखें सहज ही स्नेहविश्वास जगा देती थीं. फिर पदप्रतिष्ठा, धन-संपन्नता यों भी आकर्षित करते हैं. लोगों ने उसे सहज ही अपने बीच अपना लिया.

केशव का मानसिक तनाव भी इस बदले माहौल में तनिक छंटने लगा. तब सूझा, क्यों न पूरा बंगला तुड़वा कर दूसरे डिजाइन में नया बंगला बनवा लें? शायद इस बहाने उन यादों से पीछा छूट सके. गंगाराम को भी यह विचार बहुत पसंद आया. अब तो वही एक पास रह गया था सच्चा हमदर्द, अपना सा.

बंगले के नवनिर्माण का कार्य शुरू हो गया. केशव ने इस इमारत का सब से ऊपरी तल पूरा ही किराए पर ले लिया था. कुल मिला कर चारपांच कमरे व छोटी सी बालकनी थी. परिवार के नाम पर केशव अकेला था, पर अन्य नौकर भी थे.

बाकी यहां सब ठीकठाक था. आफत थी तो बाबू शांताप्रसाद की छोटी बेटी कंचन. बाबू शांताप्रसाद इसी इमारत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निचले फ्लैट में रहते थे. फ्लैट पर उन का वैसे मालिकाना हक था. परिवार में पत्नी, पुत्र, पुत्रवधू एवं दो पुत्रियां थीं. कंचन सब से छोटी थी.

इसी क्या, आसपास की इमारतों के भी जितने परिवार उसे जानने लगे थे, सभी के लिए केशव उन की कन्याओं के लिए एक आदर्श वर था, किंतु अब ईर्ष्या से जलनेभुनने के बावजूद जानेअनजाने सब मन ही मन स्वीकार कर चुके थे कि केशव के लिए तो कंचन ही जनमी थी.

कारण था भी सशक्त. कंचन अपूर्व सुंदरी थी. हाथ लगते ही मैला हो, ऐसा उजला रंग, सांचे में ढला सा शरीर, सटीक कदकाठी और नैननक्श पत्थर में तराशे से.

कंचन को भी अपनी अनुपम रूपराशि का पूरापूरा भान था. आईना छोड़ने को खुद उस का दिल नहीं होता था. आत्ममुग्ध कंचन रूप के अभिमान को परे नहीं रख सकी. इस अभिमान ने ईर्ष्याद्वेष, तानाशाही जैसे अन्य दुर्गुण उस में खुदबखुद पैदा कर दिए. धरती पर पांव नहीं पड़ते थे कंचन के. दूसरों को तुच्छ समझना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझती थी.

पीठ पीछे चाहे लाख ही गालियां दें, किंतु हर किसी को कंचन की ओर मुग्ध भाव से निहारते देख, बेचारी अन्य युवतियां, सामने पड़ने पर अपनी खिसियाहट रोक नहीं पाती थीं. विजय सुख का यह गर्व कंचन के अभिमान की अग्नि में आहुति ही बनता था. तब यह कामना तो स्वाभाविक थी कि उसे ब्याहने तो कोई सपनों का राजकुमार आए तभी तो बात बने.

जब 'राजकुमार' सचमुच चल कर स्वयं आ भी गया तो कंचन कैसे न उस पर अपना एकाधिकार समझती? वह किसी को केशव के पास नहीं फटकने देती थी. वैसे ज्यादा आशंकित नहीं थी वह. रूप के अभिमान में डूबी कंचन की कल्पना में भी यह नहीं आ सकता था कि उस के सामने रहते कोई युवक किसी और को नजर भर निहार तक सकेगा. और यह घमंड बढ़ता

तुम्हारे बिन

नदी का तट है, महकता सुमन भी है.
चांदनी है, दूब है, घन विजन भी है.
पर तुम्हारे बिना नहीं रुचता मुझे कुछ
सुरभि भी है, प्राणमादन पवन भी है.

—डा. अनंतराम मिश्र 'अनंत'

गया.

वयस्क होने तक यह घमंड कई गुना बढ़ कर परपीड़क बन चुका था उसे. इस परपीड़क स्वभाव की शिकार यों तो मौका लगने पर या अनजाने ही दूसरी लड़कियां भी हो जाती थीं, पर सब से ज्यादा तकलीफ पहुंची थी तो बड़ी बहन मेधा को.

मेधा देखने में बुरी नहीं थी. अपनी हमउम्र युवतियों में खड़ी हो तो कइयों से ज्यादा सुंदर, ज्यादा प्रभावशाली व्यक्तित्व की स्वामिनी लगती थी. नाकनक्श कंचन की तरह तराशे हुए से न सही, पर अच्छे थे. रंग आम भारतीय लड़कियों जैसा गेहुआं व शरीर के कटाव युवा उम्र के अनुरूप अच्छे थे. पर सब से बढ़ कर था उस का सलज्ज, विनम्र, आत्मसम्मान से दमकता धीरगंभीर, शालीन, गरिमामय व्यक्तित्व. कुछ देर उस से बात कर के कोई भी समझदार व्यक्ति उस की प्रशंसा ही करता. सामान्य स्थितियों में कोई भी युवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे एक नजर देख कर ही पसंद कर लेता, किंतु उस बेचारी के समक्ष तुलना हेतु थी तो कंचन.

आनेवाले जब मेधा को पसंद कर लेते तभी कहीं न कहीं से कंचन अवश्य आ टपकती. बस, फिर फरमाइश होती कंचन के लिए. मजबूरन शांताप्रसाद को कहना पड़ता, पहले बड़ी का ब्याह करना है. इनकार सुनना लड़के वालों को पसंद नहीं आता और कंचन की दमकती रूपराशि पर लार टपकाते लड़कों को फिर मेधा फीकी मालूम देती. नतीजतन, वे मुंह फुला कर मेधा के लिए भी मना कर जाते. कोई 'हां' करता भी तो मेधा को उन लड़कों की कंचन पर टिकी कामलोलुप दृष्टि स्पष्ट संदेश दे जाती कि 'हां' चाहे उस के लिए हो. मगर वास्तव में वह कंचन तक पहुंचने की सीढ़ी की भांति इस्तेमाल की जाएगी. यह मेधा को नहीं सुहाता था.

दो एक बार शांताप्रसाद ने कंचन को रिश्तेदारों के यहां भेज कर भी रिश्ता जमाने की कोशिश की, परंतु परपीड़क कंचन सवेरे से गायब रह कर भी ऐन मौके पर लौट आती थी. एक बार उस की जानकारी के बिना रिश्ता तय किया भी तो सगाई के वक्त लड़का बिदक गया. कारण फिर वही था– कंचन दर्शन.

उस एक ही सदमे के बाद मेधा ने स्पष्ट कह दिया, कंचन को छिपाया न जाए. जिसे मेधा की कदर होगी वह उसे कंचन की नाक तले से भी ब्याह कर ले जाएगा, वरना वह यों ही भली...

थकहार कर शांताप्रसाद तो अब इस पर भी राजी थे कि पहले कंचन को विदा कर दें, पर कंचन? उसे कोई जंचता ही नहीं था. लड़के वालों को पता चलता तो वे चिढ़ जाते कि लड़की ने खुद मना किया. और जो लड़की मांबाप के रहते यों मुंह फाड़े, उस की बहन भी क्या उस से कम होगी? कुल मिला कर स्थिति यह थी कि न कंचन स्वयं अपने लिए 'हां' कहती थी, न बहन के लिए होने देती थी और उस के हर किए का न[...] भुगतना पड़ता था मेधा को.

बहन तो बहन, उसे तो अड़ोसप[...] नातेरिश्ते, परिचितों में भी लड़की [...] आने वालों की खबर लग जाए. बस, [...] भोली बन कर स्वयं लड़का देखने के [...] जरूर सामने पड़ जाती थी. रिश्ता जम[...] ही जाता था आगेपीछे, पर एकबार[...] सारा सिलसिला बदमजा हो ही [...] विजय गर्व का यही परपीड़क सुख तो [...] के लिए आनंददायक था.

आसपास सभी उस से परेशान थे [...] उस की विदाई चाहते थे. इस बला से [...] तो छूटे, लेकिन कंचन सब की तकलीफ[...] उन की ईर्ष्या से उत्पन्न समझती [...] इसलिए बिलकुल परवाह नहीं करती [...]

इसी बीच केशव इस इमारत में रहने [...] गया था. उसे अब कंचन के [...] 'आरक्षित' सो भी निर्विरोध भाव से, [...] लेने का प्रबल कारण यह दबीछिपी का[...] भी थी कि इसी बहाने सही, कंचन ना[...] बला उन के सिर से टले तो! उन की बे[...] के ब्याह तो हुए भी हैं और होंगे भी, पर [...] बाधा तो हटे.

दूसरे क्या, मेधा जैसी समझ[...] युवती भी यह मानती थी कि केशव [...] कंचन का ही है. कंचन ने पसंद जो कर [...] है उसे. बावजूद अपने सारे बुद्धिज्ञान के, [...] उसे भी नहीं सूझा था कि केशव को भी [...] कंचन नापसंद हो सकती है.

अर्थात कंचन से भटक कर [...] अपनी ओर आ जाए ऐसी राह तो कभी [...] को भी नहीं दिखती थी. केशव भी या [...] कंचन को ब्याह ले जाएगा, या मुड़ कर [...] घर की ओर देखेगा भी नहीं. [...] धारणावश मेधा केशव से सहज मित्र[...] व्यवहार रखती थी. कोई उम्मीदें नहीं बां[...] थीं उस ने. इसी कारण केशव से व्यर्थ [...] लाजसंकोच महसूस नहीं होता था.

और उधर कंचन? उस के [...] सोचविचार, समझबूझ की धुरी तो हमे[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही केवल अपनी पसंद के चारों ओर घूमती थी. केशव शुरू से ही जंच गया था उसे. माना, कंचन के मुकाबले रंग तनिक दबा सा लगता था, पर मर्द पर यही खिलता है. तिस पर न धनसंपत्ति की कमी, न सासननद का झंझट, न ही खुद दुर्व्यसनी. अपने गृह साम्राज्य की अकेली मालकिन होगी. कोई रोकटोक नहीं, करनाधरना कुछ नहीं. यहां फ्लैट में उस ने तीन नौकर रखे हुए हैं तो बंगले में तो आठदस से क्या कम होंगे. यही सपना देखा था.

कंचन के खयाल से तो उस का सपना सचमुच पूरा हो गया था. केशव के गृह साम्राज्य पर अब वह अपना एकछत्र अधिकार मानने लगी थी. अन्य लोग केशव के लिए ललचाए थे, पर कंचन की रूप शक्ति के सामने नतमस्तक हो मजबूरन पीछे हट गए.

यह सब कंचन ने खुदबखुद मान लिया था. केशव ने अपनी तरफ से तो उसे कभी नाममात्र को भी बढ़ावा नहीं दिया था. शुरू में जरूर उस के रूपलावण्य के प्रभाववश तथा शिष्टाचार के खयाल ने उसे कंचन के प्रति शालीन, नम्र व्यवहार रखने पर मजबूर किया, परंतु ज्योंज्यों कंचन का जिद्दी स्वभाव समझ में आता गया, उस का व्यवहार सभ्यता की सीमा के भीतर रूखा होता गया.

किंतु कंचन के अति आत्मविश्वास को क्या कहिए कि इस रूखे व्यवहार को उस ने नखरा समझा. उस के विचार में, चूंकि उस ने केशव के सामने अपनी पसंद जल्दी जाहिर कर दी, इसी कारण केशव को मौका मिल गया है नखरे दिखाने का. कभीकभी अपने उतावलेपन पर अफसोस भी होता था. सोचती, तनिक तरसातरसा कर अपनी पसंद जताती तो केशव को कदमों में झुका लेती.

अति आत्मविश्वास व सहज आत्मविश्वास में भारी फर्क है. सहज आत्मविश्वास जहां व्यक्ति को दृढ़ निश्चयी

> **सहायता**
>
> इस दुनिया में किसी असहाय व्यक्ति की थोड़ी सी सहायता कर देना ढेरों उपदेशों से कहीं ज्यादा अच्छा है.
>
> —बुलवर

तथा व्यक्तित्व को गरिमामय बनाता है, वहीं अति आत्मविश्वास कोरा दिखावा होता है, जिस की ऊपरी व रोबदाब के पीछे कहीं भीतर ईर्ष्याद्वेष, कायरता तथा असुरक्षा की भावना छिपी होती है.

कंचन भी इन कमजोरियों से अछूती नहीं थी. इसी लिए उस के मन में मेधा के प्रति द्वेष एवं नफरत की भावना थी. बड़ी बहन को उस ने सदैव अपने से पराजित होते देखा था.

स्वयं उन की जननी अपनी रूपसी बेटी का पक्ष न्यायअन्याय को ताक पर रख कर लिया करती थी. इसी कारण मन से कंचन ने बड़ी बहन को कभी कीड़ेमकोड़े से ज्यादा अहमियत नहीं दी थी.

ज्यादा चिढ़ इस कारण भी थी कि मेधा उस की बनिस्बत ज्यादा लोकप्रिय थी. कंचन समझ नहीं पाती थी कि क्यों? सीधा सा कारण यही था कि बारबार अपनी रूपवती बहन की तुलना में पीछे धकेले जाने के बावजूद मेधा सदा मुसकराती रहती थी. कंचन के दूसरों को जानेअनजाने दिए जख्मों पर अपनी सहानुभूति का मरहम लगाती रहती थी. कंचन के खयाल में ऐसा वह कंचन को मसका लगाने के लिए, अपनी हीनभावनावश करती थी, स्नेहवश नहीं.

ऐसी ही द्वेषपूर्ण शंकालु भावना के कारण उसे मेधा का कभीकभार मिलना-बतियाना बेहद अखरता था. मेधा जानबूझ कर केशव से ही मिलने तो कभी नहीं जाती थी, परंतु अगर कभी मां कोई खाने की वस्तु दे कर उसे केशव के यहां भेज देतीं अथवा पिता, भाई या अपने लिए कोई किताब लानी होती तो कभीकभी चली जाती थी. यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतेजाते भी कभीकभी मुलाकात हो ही जाती थी.

बहरहाल, मुख्य रूप से पुस्तकें ही मुलाकात व बहस की वजह बनती थीं. अपने बंगले का पुराना फर्नीचर आदि केशव ने ज्यादातर बेच दिया था, किंतु बंगले में पिता की इकट्ठी की गई पुस्तकें वह यहां भी साथ लेता आया था.

शुरू में मेधा उस की मौजूदगी में ही जाती थी, ताकि उस से इजाजत ले कर ही किताब ले जाए. वैसे उस की रुचियों को देखते हुए केशव ने इजाजत दे रखी थी कि वह जब चाहे ले जाया करे. पर मेधा का उस से या गंगाराम से पूछे बिना मन मानता नहीं था. इसी वजह से जबतब केशव से मुलाकात हो जाती थी और तब अनायास किताब पर चर्चा चल पड़ती.

ऐसी बहसबाजी के दौरान अगर कंचन मौजूद हो भी तो या तो उस की कुछ समझ में नहीं आता था या बहस के विषय इतने रूखे, बेमजा लगते कि बोलने में दिलचस्पी नहीं होती थी. वैसे भी मुंह फुलाए खामोश रह कर वह जताना चाहती थी कि उसे यह बहस कतई पसंद नहीं, अतः मेधा को शराफत से चल देना चाहिए.

वह बैठी कुढ़ती रहती, क्यों मेधा बातें करने बैठ जाती है? वह आती ही क्यों है? अगर मां या पिताजी ने भी भेजा हो तब भी क्या वह उन्हें मना नहीं कर सकती? लेकिन उसे बहन से प्यार होता तब न! वह तो सब से पहले बहन की खुशियों पर डाका डालेगी.

कंचन ने अपनी अरुचि जाहिर भी की लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से, परंतु या तो मेधा समझी नहीं या उस ने इस मूर्खतापूर्ण हठ पर ध्यान देना जरूरी नहीं समझा. खुल कर कुछ कहना इस कारण नहीं जंचा कि जाहिरा तौर पर मेधा का बरताव सहज मित्रता जैसा था, बस. फिर घर के अन्य बड़ों का तनिक डर तो था ही. सब से बड़ा कारण तो खुद केशव था, जिसे मेधा से बातचीत पर एतराज नहीं था.

जिद्दी कंचन मन ही मन केशव पर भी उबल पड़ती, "दोनों बहनों को फंसा रखना चाहता है! पैसे का घमंड है..." किंतु ऐसा सोचने से कुछ फायदा नहीं था. केशव हाथ से निकल जाता. वैसे केशव स्वयं उस की पसंद था, अतः उस के तो सचमुच किए अपराध भी क्षम्य थे जबकि मेधा के काल्पनिक अपराध भी अक्षम्य.

बहरहाल बहुत दिन सब्र नहीं रख सकी कंचन. मन की असुरक्षाग्रस्त गलतफहमियों को सिर्फ अपने एकतरफा नजरिए से ही देखने देती थी. वे गलतफमियां बढ़तेबढ़ते अब केशव के सामने भी प्रकट होने लगी थीं और कंचन के मुंह से गालियां सुन कर केशव सभ्यता की अपनी आदत के कारण टोके बिना नहीं रह पाता. ऐसी हर रोकटोक कंचन की द्वेषाग्नि में घी का काम करती.

केशव अब सब समझ गया था. मुशकिल यह थी कि कंचन व्यवहार में उस पर बहुत हक जमाती थी, खुल कर स्पष्ट शब्दों में उस के मुंह से कभी ब्याहशादी जैसी बात नहीं निकली थी. कभी चर्चा चली होती तो आसानी रहती, तब वह भी साफ मना कर सकता था, लेकिन अपनी तरफ से ऐसी कोई बात वह खुद नहीं करना चाहता था. कंचन जैसी बदमिजाज का क्या भरोसा? पलट कर तड़ाक से कह दे, "कौन करना चाहता है तुम से शादी? मैं ने तो कभी नहीं कहा..." और ज्यादा चिढ़ गई तो जगत भर को बताती फिरेगी, "जनाब हम से शादी के खवाब देख रहे थे, मानो इन पर मरती हूं मैं. हुंह! शक्ल देखी है..." वह तो शायद यह समझने को तैयार नहीं होगी कि केशव शादी करना ही नहीं चाहता. कंचन ने जब तय कर लिया कि मेधा केशव को फांसने की फिराक में है तो इस के सिवा दूसरी कोई बात कंचन के मन को कुबूल नहीं होगी. बेचारी मेधा.

यह बेचारी शब्द मेधा के प्रति हमदर्दी ने मन में उपजाया था. —क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिया संग होली

बासंती मौसम
धानी चुनरिया
सुरमई सुगंध से
देह हुई बावरिया.

जियरा में फूट रहे
प्रीत भरे गीत,
फागुन की सिहरन सी
मस्ती की रीत.

महक रही सांसें
सरसों की पेंगों संग
चांदनी की रिमझिम में
दहकने लगे हैं अंग.
अकुलाए से सुधियों में

बहक गए पांव,
फागुनी बयार बहे
पुलकित हर गलीगांव.

अंगना में चित्रित,
गुलाल की रंगोली
अब के सखी! खेलूंगी,
पिया संग होली.

—ऋचा त्यागी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंद लिफाफा

कहानी • निर्मला सुरेंद्रन

केशव को दिल्ली गए दो दिन हो गए थे और लौटने में चारपांच दिन और लगने की संभावना थी. ये चंद दिन काटने भी रजनी के लिए बहुत मुशकिल हो रहे थे. केशव के बिना रहने का उस का यह पहला अवसर था. बिस्तर पर पड़ेपड़े आखिर कोई करवटें भी कब तक बदलता रहेगा. खीझ कर उसे उठना पड़ा था.

रजनी ने घड़ी में समय देखा, नौ बज गए थे और सारा घर बिखरा पड़ा था. केशव को इस तरह के बिखराव से बहुत चिढ़ थी. अगर वह होता तो रजनी को डांटने के बजाए खुद ही सामान सलीके से रखना शुरू कर देता और उसे काम में लगे देख कर रजनी सारा आलस्य भूल कर उठती और स्वयं भी काम में लग जाती. केशव की याद आते ही रजनी के गालों पर लालिमा छा गई. उस ने उठ कर घर को संवारना शुरू कर दिया.

बिस्तर की चादर उठाई ही थी कि एक बंद लिफाफे पर रजनी की नजर टिक गई. हाथ में उठा कर उसे कुछ क्षणों तक देखती रही. मां की चिट्ठी थी और पिछले 10 दिनों से इसी तरह तकिए के नीचे दबी पड़ी थी. केशव ने तो कई बार कहा था, "खोल कर पढ़ लो, आखिर मां की ही तो चिट्ठी है."

पर रजनी का मन ही नहीं हुआ. वह जानती थी कि पत्र पढ़ कर उसे मानसिक तनाव ही होगा. फिर से उस लिफाफे को तकिए के नीचे दबाती हुई वह बिस्तर पर लेट गई. मां का नाराज होना स्वाभाविक था, परंतु इस में भी कोई शक नहीं कि वह रजनी को बहुत प्यार करती थीं.

मां कहा करतीं, "मेरी रजनी तो परी है." अपनी खूबसूरत बेटी पर उन्हें बड़ा नाज था. पासपड़ोस और रिश्तेदारों में हर तरफ रजनी की सुंदरता के चर्चे थे. सिर्फ सुंदर नहीं, वह गुणवती भी थी. मां ने सिलाईकढ़ाई, चित्रकला और नृत्य की शिक्षा दिलाई थी. रजनी के लिए तब से रि[illegible] आने लगे थे, जब वह बालिग भी नहीं हुई थी. पिताजी सिर्फ रजनी की पढ़ाई की ही चि[illegible] करते, पर मां का तो सारा ध्यान लड़के की तलाश में लगा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो अच्छा [illegible] रिश्ते आए, उन में से कोई भी लड़का मां को पसंद नहीं आया था.

मां आसपड़ोस और रिश्तेदारों के सामने रजनी की सुंदरता का बखान करते हुए कहतीं, "कुंआरी बेटी छाती पर बोझ होती है और वह अगर सुंदर होने के साथसाथ गुणी भी हो तो बोझ दोगुना हो जाता है. रजनी के लिए योग्य वर ढूंढ़ना बड़ा कठिन काम है. हम अकेले क्या कर लेंगे? आप भी ध्यान रखिएगा."

बारबार मां के यही कहते रहने से उन की मुंहबोली बहन सुलभा अपने रिश्ते के एक लड़के का प्रस्ताव रजनी के लिए लाई. लेकिन लड़के का फोटो देखते ही मां सुलभा पर बरस पड़ी, "अरी सुलभा, तेरी आंखों को क्या हो

जब रजनी को कानपुर के एक कालिज से व्याख्याता के पद के लिए नियुक्तिपत्र आया तो मां और पिताजी के बीच जम कर झगड़ा हुआ. ▼

रजनी उस बंद लिफाफे को खोलने का साहस नहीं कर पा रही थी, क्योंकि उस में मां का निर्णायक उत्तर बंद था. किंतु जब रजनी ने वह लिफाफा खोला तो प्रसन्नता के अतिरेक से वह झूम उठी.

गया है, जो मेरी बेटी के लिए काना दूल्हा ढूंढ़ कर लाई है."

"काना? यह तू क्या कह रही है, कमला. लड़के की एक आंख दूसरी से थोड़ी छोटी है तो क्या वह काना हो गया." सुलभा मौसी भी चिढ़ गई.

"और नहीं तो क्या...एक छोटी, दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी, काना नहीं तो और क्या कहूं?" मां हाथ नचाती हुई बोलीं, "मेरी बेटी में कोई खोट नहीं, फिर मैं क्यों ब्याहने लगी इस से..." मां का क्रोध दोगुना हो गया था.

उस दिन मां ने सुलभा मौसी से हमेशा के लिए रिश्ता तोड़ दिया. इस घटना के बाद मां रिश्तेदारों में इस बात को ले कर मशहूर होती गई कि उन्हें अपनी बेटी की सुंदरता पर बड़ा घमंड है, इसी लिए बेटी के लिए जो भी रिश्ता आता है, बस लड़के के दोष ही ढूंढ़ कर निकालती रहती हैं. मां का तनाव बढ़ रहा था. पर रजनी और पिताजी मां की पीड़ा से अनभिज्ञ थे. रजनी जल्दी से जल्दी एम.ए. कर लेना चाहती थी. उसे स्वयं भी इस बात का डर था कि अगर मां को कोई अच्छा लड़का मिल जाएगा तो उस की पढ़ाई पूरी न हो पाएगी.

आखिर रजनी की एम.ए. भी हो गई, पर मां अपनी तलाश में असफल ही रहीं. रजनी नौकरी करना चाहती थी तो पिताजी ने चुपके से उसे इजाजत भी दे दी. उस ने आवेदनपत्र भेजने शुरू कर दिए. इस बीच उस के लिए रिश्ते भी आते रहे. अब तो उस की सुंदरता के साथसाथ पढ़ाई को भी ध्यान में रखा जाने लगा, जिस से मां की परेशानी और बढ़ गई.

जब रजनी को कानपुर के एक कालिज से व्याख्याता के पद के लिए नियुक्तिपत्र आया तो मां और पिताजी के बीच जम कर झगड़ा हुआ और अंत में मां का निर्णयात्मक स्वर उभरा, "रजनी नहीं जाएगी."

"क्यों नहीं?" मां के निर्णय का खंडन करते हुए पिताजी का प्रश्न सुनाई दिया.

"बेकार सवाल मत कीजिए. मैं अपनी खूबसूरत और जवान बेटी को अकेली दूसरे शहर जा कर नौकरी करने की इजाजत नहीं दे सकती और अगर इसे करनी ही है तो यहीं जयपुर में नौकरी करे."

"कमला, समझने की कोशिश करो. रजनी अब छोटी बच्ची नहीं रही और फिर ऐसी नौकरी बारबार नहीं मिलती. तुम यह न समझना कि मैं उस का पक्ष ले रहा हूं, वह अपना फैसला खुद कर चुकी है और हमें उस के निर्णय में दखलंदाजी का हक नहीं," पिताजी ने मां को समझाते हुए कहा.

"क्यों नहीं है हक? क्या हम उस के कोई..." अब मां का स्वर भीग गया था.

रजनी का दिल भर आया. मां उस की दुश्मन नहीं थीं. पर रजनी भी हाथ आया मौका खोना नहीं चाहती थी. धीरे से उस ने मां के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "मां, मैं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हूं. मुझे मत रोको."

रजनी के हाथों को अपने कंधों से झटकते हुए मां पिताजी पर ही बरस पड़ीं, "देख लीजिएगा, आप की लाड़ली हमारी नाक कटवा कर ही मानेगी. दूसरे शहर में कोई रोकटोक न रहेगी. अपनी मनमानी करती फिरेगी. घर की इज्जत मिट्टी में मिल गई तो सिर पीटने से कोई फायदा न होगा."

मां अनापशनाप कहे जा रही थीं और पिताजी सिर थामे सोफे पर धंस गए थे. रजनी उन्हें अकेला छोड़ कर कमरे से निकल गई थी.

मां की लाख कोशिशों के बावजूद पिताजी ने एक बार भी रजनी को जाने से मना नहीं किया. नए शहर, नए माहौल और एक नई व्यस्तता भरी जिंदगी में वह अपनेआप को ढालने का प्रयास करने लगी. देखने में रजनी स्वयं एक छात्रा सी लगती थी. अपने से ऊंचे कद के लड़कों को पढ़ाते समय प्रायः वह घबरा सी जाती थी. लड़के उस के इसी शांत और डरेडरे से स्वभाव का फायदा उठा कर उसे छेड़ बैठते और तब बेबस रजनी का मन होता कि नौकरी ही छोड़ दे. कभीकभी तो वह अपनेआप को बेहद अकेला महसूस करती. कालिज के अन्य प्राध्यापकों से वह वैसे भी घुलमिल नहीं पा रही थी. बस, अपने काम से ही मतलब रखती थी.

एक दिन कुछ शरारती छात्रों ने कालिज से लौट रही रजनी को रास्ते में रोक लिया. हलकी सी बूंदाबांदी भी हो रही थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन रजनी कालिज से वापस आ रही थी कि कुछ गुंडे किस्म के छात्रों ने उसे रास्ते में रोक लिया और उस से तरहतरह के प्रश्न पूछ कर परेशान करने लगे. ▲

और लग रहा था कि कुछ ही मिनटों में जोरों की बारिश शुरू हो जाएगी. ऐसे में अपनेआप को इन लड़कों से घिरा पा कर उसे कंपकंपी छूटने लगी.

"मैडम, आज आप ने जो कुछ पढ़ाया, वह हमारी समझ में नहीं आया. कृपया जरा समझा दीजिए." एक छात्र ने उस के समीप आ कर कहा.

"क्यों, कक्षा में क्या करते रहते हैं आप लोग?" चेहरे पर क्रोध भरा तनाव लाने का असफल प्रयास करते हुए रजनी ने पूछा.

"दरअसल मैडम, हम कोशिश तो करते हैं कि पढ़ाई में ध्यान दें, पर आप हैं ही इतनी सुंदर कि पढ़ाई भूल कर बस आप को ही देखे चले जाते हैं..." दूसरे छात्र ने कहा और जैसे ही उस ने अपना हाथ रजनी के चेहरे की ओर बढ़ाया, एक मजबूत हाथ ने उसे रोक लिया. प्रोफेसर केशव को पास पा कर रजनी को तसल्ली हुई.

"कल आप सब सवेरे प्रिंसिपल साहब के कक्ष में मुझ से मिलिएगा. अब फूटिए यहां से..." प्रोफेसर केशव के धीमे किंतु आदेशात्मक स्वर से सभी छात्र वहां से खिसक गए. रजनी चुपचाप केशव के साथ चल पड़ी. वैसे रजनी कई बार उन से मिल चुकी थी, पर ज्यादा बातचीत कभी नहीं हुई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहां रहती हैं आप?" केशव ने चलतेचलते पूछा.

"होस्टल में? रजनी ने धीमे से कहा.

"पहले कहां थीं."

"जयपुर में."

फिर दोनों के बीच एक गहरी चुप्पी छा गई. वे चुपचाप चल रहे थे कि केशव ने कहा, "आप में अभी तक आत्मविश्वास नहीं आया है. आप पढ़ाते समय इतना ज्यादा घबराती हैं कि छात्रछात्राओं पर गहरा प्रभाव नहीं छोड़ पातीं."

"जी, मैं जानती हूं, पर यह मेरा पहला अवसर है."

"कोई बात नहीं," प्रोफेसर केशव मुसकरा दिए थे, "पर अब यह कोशिश कीजिएगा कि आत्मविश्वास हमेशा बना रहे. वैसे उन छात्रों से मैं निबट लूंगा. अब वे आप को कभी परेशान नहीं करेंगे."

रजनी ने एक बार सिर उठा कर उन्हें देखा था. आकर्षक व्यक्तित्व वाले केशव के सांवले चेहरे का सब से बड़ा आकर्षण था उन की लंबी नाक. रजनी प्रभावित हुए बिना न रह सकी.

उस रात रजनी ढंग से सो न सकी. लड़कों की शरारत और केशव की शराफत का खयाल दिमाग में ऐसे कुलबुलाता रहा कि वह रात भर करवटें ही बदलती रही. उसे लगा कि वह केशव की मदद को आजीवन भूल न सकेगी.

दूसरे दिन रजनी केशव से मिली तो केशव के चेहरे पर उस घटना की याद का जैसे कोई चिह्न ही नहीं था. रजनी के नमस्कार का जवाब दे कर वह आगे बढ़ गए थे. धीरेधीरे रजनी का केशव के प्रति आकर्षण बढ़ता चला गया. केशव ने कभी भी यह जताने की कोशिश नहीं की थी कि रजनी की मदद कर के उन्होंने कोई एहसान किया हो.

रजनी जब भी केशव को देखती, अपलक उन्हें देखती रह जाती. उसे इस प्रकार अपनी ओर देखते हुए पा कर केशव धीरे से मुसकरा देते और यही मुसकराहट एक तीर सी रजनी के हृदय को भेद जाती. धीरे रजनी का यह आकर्षण प्रेम बन कर फू लगा तो उस ने निर्णय लिया कि वह केशव सामने विवाह का प्रस्ताव रखेगी.

एक दिन रजनी ने प्रोफेसर केशव दोपहर के खाने का आमंत्रण दे दिया. होट रजनी केशव के सामने यही सोच कर झेंपी बैठी रही कि वह इस बात को कहेगी कै सोचतेसोचते वह परेशान सी हो गई.

"क्या बात है, रजनी?" केशव बातचीत में पहल की, "तुम खामोश हो?"

रजनी चुप रही.

"कुछ कहना चाहती हो?"

"हां..."

"क्या बात है? क्या फिर किसी परेशान किया?" केशव ने शरारत आत्मीयता से भरा प्रश्न किया तो रजनी आंखों से आंसू बहने लगे. प्रेम की विवश और शर्म की खाई के बीच सिर्फ आंसुओं ही सहारा था, जो शायद उस के प्रेम गहराई को स्पष्ट कर पाता. वह धीरे बोली, "मैं आप से प्रेम करती हूं और शा भी करना चाहती हूं."

"शादीब्याह में इतनी जल्दबाजी ठी नहीं." केशव ने कहा तो सुन कर रजनी चौं गई. क्या केशव उस के प्यार को ठुकरा है?

"तुम मेरे बारे में कुछ भी नहीं जानती केशव ने आगे कहा, "पहले जान लो, फि निर्णय लेना.

"शादी के बाद शायद मैं तुम पर बो बन जाऊं." कहते हुए केशव ने अपनी पैंट घुटने तक खींच लिया. उस के घुटने के नी नकली पैर लगा था.

देखते ही रजनी की चीख निकल ग वह धीरे से बोली, "यह कैसे हुआ?"

"सड़क दुर्घटना से..."

रजनी की आंखों से अश्रुधारा बह च थी. उस के निर्णय में एकाएक परिव आया. पल भर में ही उस ने सोच लिया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शादी के बाद ही मां और पिताजी को सूचना देगी. वह ज़ानती थी कि मां एक अपाहिज को अपने दामाद के रूप में कभी भी स्वीकार नहीं कर पाएगी. एक सादे से समारोह में रजनी ने केशव से विवाह कर लिया.

मां को पत्र लिखने के कुछ ही दिनों बाद उन का जवाब आ गया. पर रजनी लिफाफा खोल न सकी. वह सोचने लगी कि मां का दिल अवश्यं ही टूटा होगा और पत्र भी उन्होंने उसे कोसते हुए ही लिखा होगा. रजनी को हमेशा पिताजी का खयाल आता था. मां इस घटना के लिए पिताजी को ही जिम्मेदार ठहराती होंगी. पिताजी को भी 'शायद अब पछतावा ही होता होगा कि रजनी को यहां क्यों भेजा.

केशव के इंतजार में दो दिन और गुजर गए. कालिज में भी रजनी को अकेलेपन का एहसास होता और घर तो जैसे काट खाने को दौड़ता. उस दिन भी यही सोच कर उस का मन व्याकुल था कि केशव के बिना आज भी करवटें बदलते हुए रात बितानी होगी. घर में प्रवेश करते ही नौकरानी ने सूचना दी, "मालकिन, आप की माताजी आई हैं."

"मां?" रजनी चौंक गई, "कब आई?"

"अभी कुछ देर पहले. नहा रही हैं."

रजनी के मन में कई तरह के विचार आने लगे. मां के आने से उस का मन 'शंकित हो उठा. न जाने वह क्या सोच कर आई हैं और केशव के साथ कैसा व्यवहार करेंगी? [illegible] खयाल आया. दौड़ते हुए गई और तकिए के नीचे दबे लिफाफे को खोल कर पढ़ने लगी.

बेटी रजनी,

नहीं जानती कि अगर तू ने 'शादी के पहले मुझे यह बताया होता कि केशव अपाहिज है तो मैं क्या निर्णय लेती, पर बाद में पता चला तो थोड़ी सी पीड़ा सिर्फ यह सोच कर हुई कि अपने हाथों से तुझे दुलहन न बना सकी.

धीरेधीरे मैं यह महसूस करने लगी हूं कि तुम ने गलत निर्णय नहीं लिया है, बल्कि अपने इस निर्णय से तुम ने यह साबित कर दिया है कि तू अपनी मां की तरह 'शारीरिक सुंदरता को महत्त्व देने वाली नहीं, वरन हृदय की सुंदरता को पहचानने वाली पारखी है. तेरे निर्णय पर मुझे नाज है. मैं तुझ से मिलने आ रही हूं.

तुम्हारी मां.

रजनी को लगा कि मारे खुशी के वह पागल हो जाएगी. उसी तरह लिफाफे को तकिए के नीचे रख कर वह जोर से स्नानघर का दरवाजा पीटने लगी, "जल्दी आओ न मां, तुम्हें देखने को आंखें तरस गई हैं."

"इतनी बड़ी हो गई है, पर अभी बचपना नहीं गया." मां का बुदबुदाता सा स्वर सुनाई दिया. रजनी को लगा कि मां जल्दीजल्दी से 'शरीर पर पानी डालने लगी हैं. ●

बियर से कैंसर का खतरा

आमतौर पर लोग समझते हैं कि काफी पीने से कैंसर हो जाता है. जबकि वास्तव में बियर पीने वालों में बियर न पीने वालों की अपेक्षा कैंसर का खतरा तीन गुना अधिक होता है. इंगलैंड के इंपीरियल कैंसर रिसर्च फंड के डा. जैक कुजिक और डा. अब्बुल बावीकार ने एक व्यापक अध्ययन के बाद उपर्युक्त तथ्य की पुष्टि की.

'शराब या स्प्रिट के सेवन और गले के कैंसर के बीच कोई रिश्ता अभी तय नहीं हो पाया है. फिर भी अधिक अल्कोहल के सेवन का इस बीमारी से अवश्य संबंध है.

बियर कुछ प्रकार के 'नाइट्रोसेमीन' तत्त्वों का मुख्य स्रोत हैं जो माल्ट व्हिस्की में कुछ मात्रा को छोड़ कर अन्य किसी अल्कोहल वाले द्रव्य में नहीं पाया जाता. यह भी संभव है कि सिगरेट में पाए जाने वाले नाइट्रोसेमीन तत्त्व का गले के कैंसर से संबंध हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

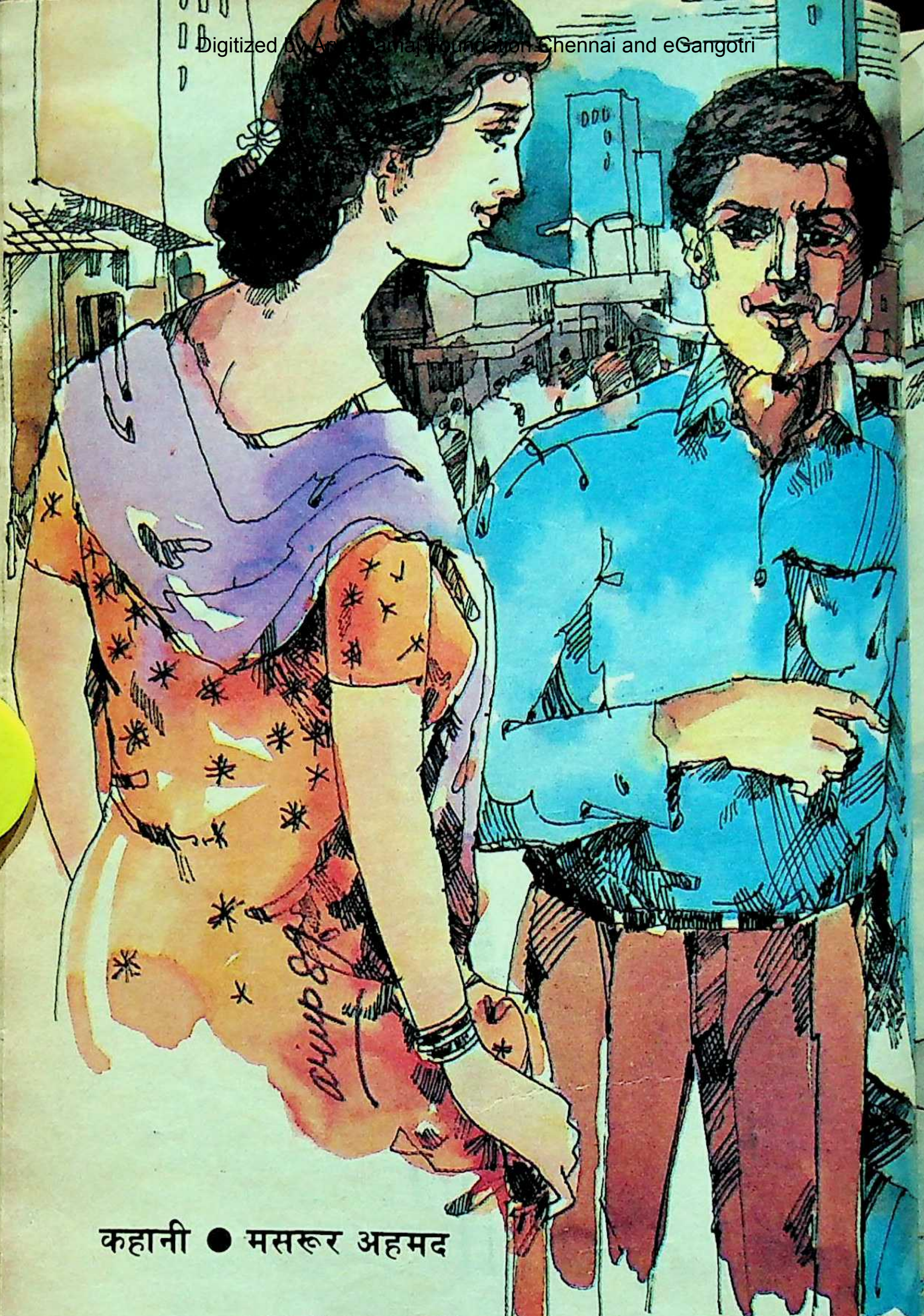

कहानी ● मसरूर अहमद

गफलत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

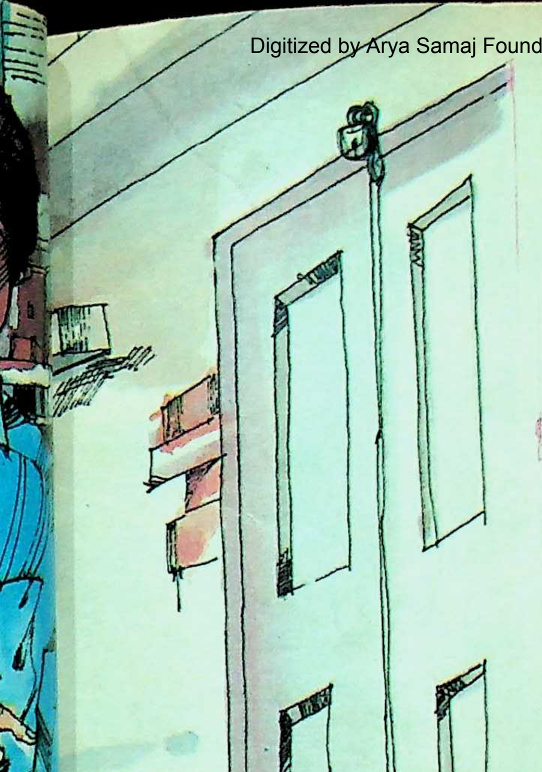

इशरत कस्बे की खुली हवा और मैके के लाड़ के पीछे बंबई की तंग खोली और आमिर के प्यार को खोने को ही थी कि उसे झटका लगा और उस के पैरों तले जमीन खिसक गई.

मानव जीवन का जरूरतों से गहरा संबंध है. मनुष्य के जन्म लेते ही जरूरतें शुरू हो जाती हैं और फिर मरते दम तक पीछा नहीं छोड़तीं. कुछ लोग अपना सारा जीवन आवश्यकताओं को पूरा करने में गुजार देते हैं तो कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो जीवन की आवश्यकताओं को नहीं मानते. उन की दृष्टि में मानसिक शांति से बढ़ कर कुछ नहीं होता. परंतु आवश्यकताओं को न मानने से वे समाप्त नहीं होती, बल्कि उन्हें पूरा किए बिना भी मनुष्य को शांति नहीं मिलती.

इशरत भी ऐसे ही लोगों में से थी, जो जरूरतों को नहीं मानते, अपनी आवश्यकताओं के लिए परिस्थितियों से समझौता नहीं करते. वे मानसिक शांति को ही सब कुछ समझते हैं. लेकिन एक समय ऐसा आता है, जब जरूरत अपनी हकीकत को मनवा कर रहती है.

इशरत की जिंदगी में भी अब वह समय आ गया था. उसे अपने पति आमिर की इतनी जरूरत महसूस हो रही थी कि उस का जी चाह रहा था कि उस के पंख लग जाएं और वह शीघ्र से शीघ्र उड़ कर आमिर के पास पहुंच जाए. परंतु कल्पना और वास्तविकता में बहुत अंतर होता है. मनुष्य उड़ने की मात्र कल्पना तो कर सकता है, किंतु उड़ नहीं सकता. इशरत भी नहीं उड़ सकती थी. इसलिए उसे मजबूर हो कर ट्रेन में बैठना पड़ा था और अब यह यात्रा भी करनी ही थी.

खिड़की से ठंडी हवा के झोंके आ रहे थे. इशरत अपने एक वर्ष के बेटे को गोद में लिए खिड़की के बाहर के दृश्यों को देख रही थी. पेड़, टीले, बिजली के खंभे, खेत आदि तेजी के साथ सामने से गुजर रहे थे. साथ ही इशरत का जेहन पुरानी यादों में भटक रहा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

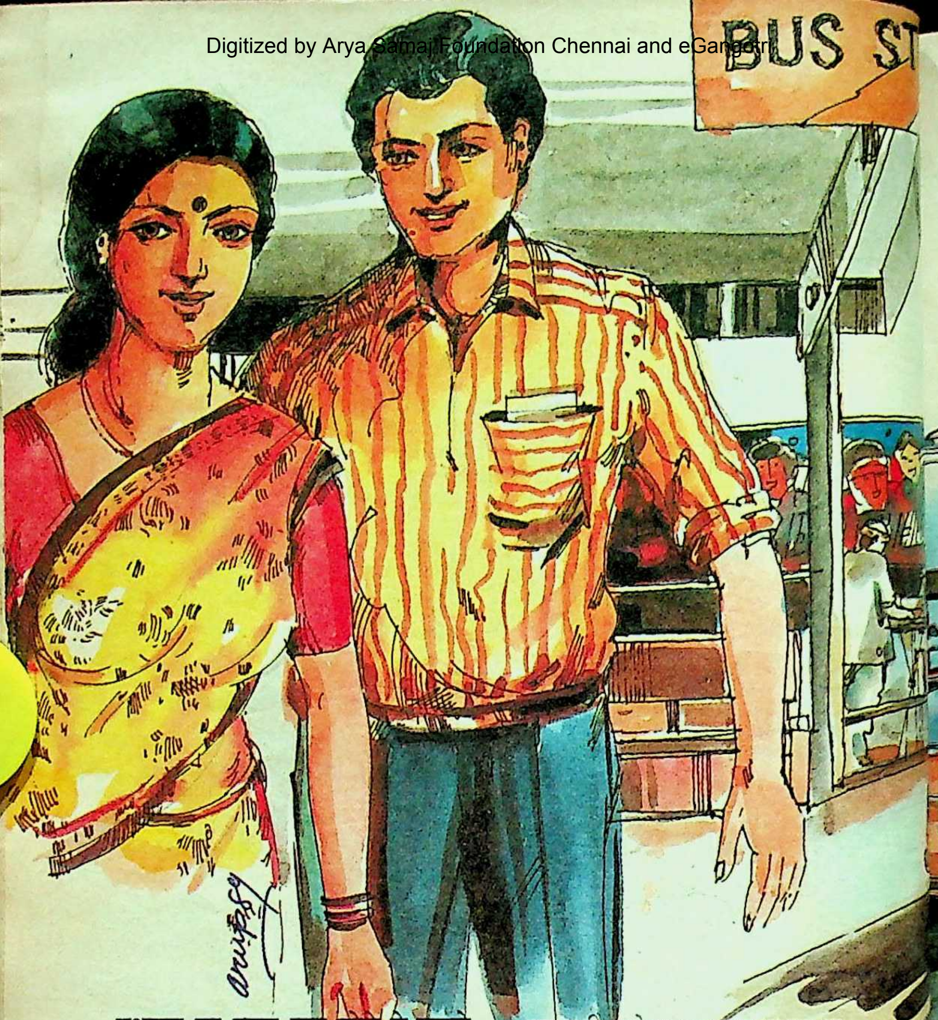

इशरत का जन्म एक छोटे से कसबे 'शांति नगर में हुआ था. नाम के अनुरूप 'शांति नगर 'शांति की ही नगरी था, जहां जगह अधिक थी और लोग कम. बड़ेबड़े मकान थे, जिन के अधिकतर कमरे खाली ही रहते थे. लोगों की संख्या कम थी, इसलिए किराएदार भी बहुत कम मिलते थे.

इशरत ने भी एक ऐसे ही लंबेचौड़े हवेलीनुमा मकान में आंखें खोली थीं. परिवार में कुल पांच सदस्य थे. मांबाप, दो भाई, पांचवी वह स्वयं थी. इन पांच सदस्यों के बावजूद हवेली अत्यंत सूनी दिखाई देती. फिर बड़े भैया का विवाह हुआ तो भाभी के

वह आमिर के साथ बस स्टाप पर आ कर खड़ी हो गई और बस का इंतजार करने लगी. सड़कों पर कारें दौड़ रही थी. इशरत ने उकता कर उन कारों को ही गिनना शुरू कर दिया.

आने से कुछ चहलपहल हुई. मकान का ऊपरी कमरा जो बरसों से खाली पड़ा था, वह भैया और भाभी को दे दिया था. फिर भी मकान में बहुत जगह थी. इसी लिए मां और बाबूजी को छोटे भैया की 'शादी की चिंता हुई, ताकि घर का खालीपन और कम हो जाए.

छोटे भैया की 'शादी के पश्चात मांबाप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को इशरत की शादी की चिंता हुई क्योंकि अब वह भी बड़ी हो गई थी. उस ने बहुत पहले ही कसबे के स्कूल में सातआठ कक्षाएं उत्तीर्ण कर ली थीं. उन के यहां अधिक पढ़ानेलिखाने का रिवाज न था और वैसे भी कसबे में रह कर पढ़ाईलिखाई किस काम आती?

आमिर उस के ताऊ का लड़का था.

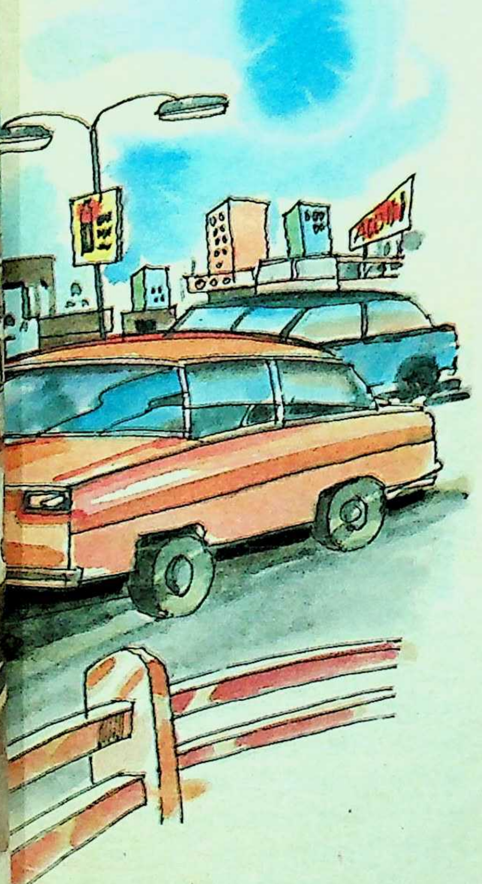

उस की मां बचपन में ही मर गई थी, इसलिए पिता ने दूसरी शादी कर ली थी. सौतेली मां ने उसे शुरू से ही प्यार नहीं दिया था. इसलिए आमिर का बाप उस का बड़ा खयाल रखता था. उसे आमिर के भविष्य की सदा चिंता रहती थी. इस चिंता का परिणाम बस इतना निकला कि आमिर ने ब्रीफकेस बनाने का काम सीख लिया और अब अपने पिता के एक दोस्त की मेहरबानी पर बंबई में एक कारखाने में काम करने लगा था.

बंबई का नाम सुनते ही इशरत को एक अजीब सी खुशी का अहसास होता था. बंबई, जिसे उस ने फिल्मों और चित्रों में देखा था, उस कसबे से बिलकुल भिन्न था, जहां वह रहती थी. बंबई की ऊंचीऊंची इमारतें, चिकनी तेल जैसी सड़कें, उन पर दौड़ती खूबसूरत कारें और बसें... ये सारे दृश्य उस ने उन फिल्मों में देखे थे.

फिल्मों के उन दृश्यों को देख कर उस की भी इच्छा होती कि वह भी बंबई में जा कर किसी सुंदर से मकान में रहे. रोज कारों में घूमे, शाम को समुद्र के किनारे टहले और जी भर कर सैर करें. परंतु उस की इन इच्छाओं को पूरा करने वाला कोई न था. अब्बा रोज सुबह उठ कर अपनी आटा चक्की पर चले जाते. छोटे भैया भी उन्हीं के साथ लग जाते और बड़े भैया अपनी परचून की दुकान पर. अम्मां और भाभी घर के कामों में लग जातीं.

जब इशरत को यह मालूम हुआ कि उस का रिश्ता आमिर से तय हो गया है तो उसे अपनी कल्पनाएं सार्थक होती दिखाई पड़ीं.

आमिर शादी से महीना भर पूर्व ही शांति नगर आ गया था. सौतेली मां और सौतेले भाईबहनों से उस का कोई संबंध नहीं था, इसलिए शादी उस के मामू के घर से हुई थी, जो शांति नगर में ही रहते थे.

शादी के बाद कुछ दिन तो इशरत आमिर के मामू के घर में रही. फिर वह दिन आया, जब उसे आमिर के साथ बंबई जाना था.

उस दिन इशरत बहुत खुश थी. आम तौर पर लड़कियों को मायका छोड़ने का बहुत दुख होता है. परंतु इशरत को जरा भी दुख नहीं था, क्योंकि बंबई के सुंदर दृश्य उस की आंखों में घूम रहे थे.

रास्ते में सारे समय वह भविष्य की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखद कल्पनाओं में खोई रही थी. बंबई जिसे उस ने सिर्फ फिल्मों में या चित्रों में देखा था, उसे वास्तविक रूप में देखने की कल्पना ही उसे अजीब तरह का आनंद प्रदान कर रही थी.

बंबई वाकई उस की कल्पनाओं से बढ़ कर सिद्ध हुई थी. वास्तविक रूप में बंबई की सुंदरता कुछ और अधिक लग रही थी. स्टेशन से निकल कर इशरत आमिर के साथ टैक्सी में आ बैठी और घर की ओर रवाना हो गई.

रास्ते भर इशरत बंबई की खूबसूरत सड़कों और ऊंचीऊंची इमारतों का नजारा करती रही. वास्तव में उसे वह सब ख्वाब सा लग रहा था.

ख्वाब कैसा ही सुंदर क्यों न हो, अंत में टूटता ही है. इशरत का ख्वाब भी उस समय टूटा, जब आमिर ने उस से उतरने को कहा. वह कल्पनाओं से निकल कर सीधे यथार्थ में आ गई. आमिर के पुकारने पर वह चौंकी थी, फिर उस ने इधरउधर निगाहें दौड़ाईं.

यह एक तंग सी गली थी, जहां बेहद गंदगी फैली हुई थी. नालियों के किनारे कूड़े के ढेर थे, जिन से दुर्गंध उठ रही थी. चूंकि उस गली में सूर्य का प्रकाश बहुत कम पहुंच पाता था, इसलिए सारी गली में बारिश की सी चिपचिपाहट थी. गली के नुक्कड़ पर पान की दुकान थी, जहां कुछ आवारा किस्म के छोकरे सिगरेट के धुएं छोड़ रहे थे. साथ ही आतीजाती लड़कियों को देख कर अपने साथियों के कंधों पर हाथ मारमार कर और हंसहंस कर गंदे फिकरे उछालते जा रहे थे.

'क्या यही वह बंबई है, जिस की मैं ने कल्पना की थी?' उस समय इशरत सोच रही थी.

"चलो उतरो भी, क्या सोच रही हो?" आमिर ने कहा था.

टैक्सी से उतर कर आमिर ने किराया अदा किया और सामान उतारने लगा. इस बीच इशरत आश्चर्य से उधरउधर देख रही थी. उस के मस्तिष्क में अभी तक ऊंचीऊंची इमारतें और चिकनी सड़कों पर फिसलती कारें घूम रही थीं.

आमिर ने सामान उठाया. फिर उसे साथ ले कर गली में प्रविष्ट हो गया. गली के नुक्कड़ पर ही सरकारी नल भी लगा था, जिस के किनारे औरतों और बच्चों की भीड़ लगी थी. इशरत ने गली की चिपचिपाहट से बचने के लिए सलवार के पांयचों को उठा लिया और आगे बढ़ने लगी.

एक मकान के सामने आमिर रुक गया. उस मकान को देख कर इशरत को बड़ा आश्चर्य हुआ.

मकान क्या था, बस एक तंग सी अंधकारभरी कोठरी थी, जिस में बिना बिजली जलाए कुछ देखना संभव नहीं था. इसी लिए तो उस में सुबह से शाम तक बिजली जलती थी. गोया वहां रात और दिन बराबर थे.

खोली की दीवारों का प्लास्टर जगहजगह से उखड़ चुका था. इतनी 'शानदार' खोली का किराया भी 'शानदार' ही था... 50 रुपए.

इशरत ने जब सुना था कि आमिर बंबई में 50 रुपए महीना किराए के मकान में रहता है तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ था. कसबे में तो लोगों के अपने निजी मकान थे. यदि कभीकभार कोई किराएदार आ भी जाता तो 10-15 रुपए महीना पर उसे अच्छे से अच्छा मकान मिल जाता. 50 रुपए का नाम सुन कर उसे लगा था कि आमिर अवश्य ही बंबई की सब से खूबसूरत इमारत में रहता होगा.

'लेकिन यह तंग सी अंधेरी कोठरी?' उस से अच्छा तो उस का कसबे वाला मकान था. वह मकान जिस का एक कमरा ही इस गंदी कोठरी से कम से कम दोगुना तो अवश्य रहा होगा. जिस में घर के प्रत्येक सदस्य के लिए अलगअलग कमरे थे. इस के अतिरिक्त बड़ा सा दालान, फिर खुला हुआ लंबाचौड़ा आंगन, जिस में नीम का पेड़ था, जो गरमी के दिनों में छाया प्रदान करता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस पर अकसर झूला भी पड़ा करता था. आंगन के एक कोने में मीठे पानी का कुआं था. ऐसी बात नहीं थी कि घर में नल नहीं था. लेकिन यह कुआं बहुत पुराना था. उस समय का जब कसबों में नल की सुविधा नहीं थी तो घरों में ऐसे ही कुओं से पानी भरा जाता था.

फिर जब कसबे में पाइप लाइन का प्रबंध हो गया और लोगों के घरों में निजी और बाहर सरकारी नल लग गए तो अधिकतर लोगों ने अपने कुएं बंद करा दिए. परंतु वह कुआं चूंकि बुजुर्गों की निशानी था, इसलिए बंद नहीं हुआ. वैसे उस का बंद न होना भी एक प्रकार से ठीक ही रहा था क्योंकि नल कभीकभी बंद हो जाया करते थे. ऐसे समय में यह कुआं पानी की जरूरत पूरी करता था.

लेकिन बंबई की उस कोठरी में कुआं या नल कुछ भी नहीं था. गली के नुक्कड़ पर वही सरकारी नल लगा था, जिस पर औरतों और बच्चों की भीड़ लगी रहती थी. कभीकभी उन में लड़ाई हो जाती थी और वे एकदूसरे को ऐसी गंदीगंदी गालियां देतीं, जो इशरत ने अपने कसबे में कभी नहीं सुनी थी.

पहले ही दिन इशरत वहां घबरा गई थी.

"मुझ से तो यहां नहीं रहा जाएगा. आप कोई दूसरा मकान ढूंढिए." उस ने आमिर से कहा था.

"क्यों? क्या खराबी है यहां?" आमिर ने पूछा था.

"खराबी? आप खराबी पूछ रहे हैं. एक खराबी हो तो बताऊं. कुछ भी तो नहीं है यहां. न आंगन, न दालान. एक कमरा है, वह भी इतना छोटा, जिस में लगता है कि दम घुटा जा रहा हो. नल भी नहीं है, पानी की कितनी परेशानी है."

आमिर बोला, "इशरत, तुम्हें यह मकान इसलिए खराब लग रहा है क्योंकि तुम शांति नगर के लंबेचौड़े खुले घर में रह चुकी हो. यह शांति नगर नहीं, बंबई है. यहां

प्यास

दिल के दहके अंगारों को
मैं किस को दिखलाऊं,
जीवन के सूखे तरुवर की
कैसे प्यास बुझाऊं?

—निर्मला जौहरी

आंगन और दालान वाले मकान नहीं मिलेंगे क्योंकि यहां जगह कम है और आबादी अधिक है. यहां के लोग ऐसे मकानों में रहने के आदी हो चुके हैं. रहतेरहते तुम्हें भी आदत पड़ जाएगी. पानी की समस्या के हल के लिए गली के नुक्कड़ पर नल मौजूद है ही."

"उस नल की तो बात ही मत कीजिए. मैं वहां से पानी कैसे ला सकती हूं?"

"क्यों? तुम इतना भी नहीं कर सकोगी?"

"नहीं, मैं कभी बाहर के नल से पानी नहीं लाई."

"तो क्या हुआ, जरूरत पड़ने पर इनसान को सब काम करना पड़ता है."

"आप दूसरा मकान क्यों नहीं ढूंढ़ते."

"दूसरा मकान भी ऐसा ही मिलेगा."

"क्यों? यहां सारे मकान ऐसे ही तो नहीं है. एक से एक मकान हैं, जिन्हें देख कर लगता है..."

"इशरत," आमिर उस की बात काट कर बोला, "तुम जिन मकानों की बात कर रही हो, वे हमारे जैसे लोगों के रहने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा बुरा

अच्छा क्या है और बुरा क्या है? इस का निर्णय एकांगी दृष्टि से नहीं किया जा सकता. विष चिकित्सक द्वारा अमृत कल्प हो जाता है. —जयशंकरप्रसाद

नहीं हैं. उन मकानों का किराया इतना है, जितना हमारे जैसे लोग एक महीने में कमा भी नहीं पाते. फिर तुम्हीं बताओ, मैं तुम्हें उन मकानों में कैसे रख सकता हूं.

"हम जैसे लोग इसी प्रकार के घरों में रह सकते हैं और फिर सिर्फ हम ही तो नहीं रहते इस प्रकार के मकानों में, न जाने कितने लोग इसी प्रकार की खोलियों में जीवन व्यतीत कर रहे हैं. क्या उन की इच्छा नहीं होती होगी कि वे भी आलीशान मकानों में रहें, परंतु मजबूर हैं.

"इशरत, बेकार के ख्वाबों से कुछ प्राप्त नहीं होता, बल्कि उन से मन और क्षुब्ध हो जाता है. जीवन की आवश्यकताओं को देखते हुए यथार्थ से समझौता करना पड़ता है, मेरी जान."

उस रात इशरत को नींद नहीं आई थी. नई जगह तो वैसे भी जल्दी नींद नहीं आती, फिर ऐसी बंद कोठरी में तो नींद आने का प्रश्न ही नहीं उठता था. इशरत को अपना शांति नगर वाला मकान याद आ रहा था. बंद कोठरी में सख्त उलझन हो रही थी. यद्यपि कमरे में पंखा लगा हुआ था, परंतु पंखे की हवा का उस ताजी और स्वच्छ हवा से क्या मुकाबला, जो उसे कसबे के मकान की खुली छत पर उपलब्ध थी.

गरमी के दिनों में शाम होते ही छत पर कुएं के ठंडे पानी से छिड़काव होता था. फिर सब अपनीअपनी चारपाइयां ले कर पहुंच जाते. छत की कच्ची मिट्टी से उठने वाली सोंधीसोंधी खुशबू ठंडी हवा में सम्मिलित हो कर एक अजीब सा आनंद देती थी.

'कितनी आरामदायक थीं वे रातें और कहां इस तंग कोठरी की यह रात. न जाने कब सुबह होगी.' इशरत ने अपनेआप कहा था.

फिर उस ने पास लेटे हुए आमिर को जगाया था, "यहां मुझे नींद नहीं आ रही. कहीं ऊपर छत पर जगह होगी क्या?"

"किस छत की बात कर रही हो?" आमिर ने पूछा था.

"जिस छत के नीचे हम लेटे हैं, उस पर हमारा अधिकार है."

"नहीं इशरत, हमारा अधिकार केवल इसी बंद कमरे तक सीमित है. छत पर हमारा अधिकार नहीं है क्योंकि उस पर दूसरा मकान बना है, जिस में दूसरे किराएदार रहते हैं. चुपचाप सो जाओ. तुम्हें यहां शांति नगर की सी खुली छत नहीं मिलेगी." आमिर ने समझाया था.

दूसरे दिन सुबह आमिर कारखाने चला गया तो वह अकेली रह गई. आसपास कोई ऐसा न था जो उस का हाल पूछता. पड़ोसी भी ऐसे थे, जिन्हें किसी से कोई मतलब नहीं था.

दोपहर को जब खाना बनाने की जरूरत पड़ी तो पता चला कि घर में पानी नहीं है. पानी के बिना खाना बनाना संभव नहीं था. इसलिए इशरत ने बालटी उठाई और बाहर निकल आई.

गली की चिपचिपाहट में कोई कमी नहीं हुई थी. इशरत बालटी ले कर गली के नुक्कड़ तक पहुंच गई. नल पर सदा की भांति भीड़ लगी थी. कुछ औरतें कपड़े धो रही थीं. कुछ अपने बच्चों को नहला रही थीं. कुछ पानी भरभर कर अपने घरों में ले जा रही थीं.

इशरत की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया था. वह बालटी थामे एक ओर सिमट कर खड़ी हो गई. कपड़े धोने वाली औरतें बेहद छींटे उड़ा रही थीं. उन्हें इस बात की भी चिंता नहीं थी कि किसी का पानी गंदा हो रहा है. स्वयं पानी भरने वालियों को भी अपना पानी गंदा होने की चिंता नहीं थी. आवश्यकता के आगे गंदगी और सफाई का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर भी समाप्त हो गया था.

इशरत को इस गंदगी से घृणा हुई. उस का जी चाहा कि चुपचाप पानी भरे बिना ही लौट जाए, परंतु फिर खयाल आया कि खाना भी बनाना है, साथ ही और भी काम करने हैं. इसलिए उस ने मजबूर हो कर बालटी नल की ओर बढ़ानी चाही कि तभी कपड़े धोती हुई एक महिला ने उसे झिड़क दिया, "ऐ, कहां घुसी जा रही हो? कपड़े नहीं दिखते क्या? मैं इन कपड़ों से साबुन का पानी निकाल लूं, फिर बालटी लगाना. तब तक उधर खड़ी रहो."

इशरत को हट जाना पड़ा. तब एक दूसरी महिला ने अपनी बालटी नल की ओर बढ़ाई. कपड़े धोने वाली महिला ने उसे भी झिड़कना चाहा, लेकिन वह उस से उलझ गई. फिर तो अच्छीखासी लड़ाई शुरू हो गई.

इशरत ने जो यह दृश्य देखा तो चुपचाप पानी भरे बिना ही चली आई. उस का तो वैसे भी उस गंदगी से पानी भरने को जी नहीं चाह रहा था. परंतु आवश्यकता के कारण उस ने उस गंदे पानी को स्वीकार करना चाहा भी तो उसे वह न मिला. फिर ऐसी लड़ाई को देख कर उस का जी और खिन्न हो गया. उस ने उस गंदे पानी के लिए लड़ना उचित न समझा और चुपचाप लौट आई. दोपहर का खाना भी नहीं बनाया.

शाम को आमिर कारखाने से घर लौटा तो इशरत का उतरा हुआ चेहरा देख कर वह भी चिंतित हो गया, "क्या बात है? खैरियत तो है?"

"घर में पानी की एक बूंद भी नहीं है." इशरत ने बताया.

"क्यों? नल में तो बराबर पानी आ रहा है. ले आई होती."

"उस की तो बात ही मत कीजिए," इशरत झुंझला गई, "कितनी भीड़ रहती है वहां और उस पर इतनी गंदगी कि पानी लाने को जी न चाहे."

"लेकिन ऐसे कैसे काम चलेगा? पानी के बिना क्या हम रह सकते हैं?"

"मैं कुछ नहीं जानती." वह मुंह फुला कर बोली. (शेष पृष्ठ 175 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जग लगता एक रंगोली

लाल गुलाल कहीं उड़ते हैं
उड़ती चंदन रोली है,
भीगा है गोरी का तनमन
भीगीभीगी चोली है.

मन के संयम टूट गए सब
सूझी हंसीठिठोली है,
बिखर गए सब नातेरिश्ते
तबीयत फिर से डोली है.

पांव नहीं पड़ते धरती पर
बदलीबदली बोली है,
नयनों में प्रियतम की छवि है
होठों पर बस होली है.

प्रियतम की बांहों में बंध कर
जग लगता एक रंगोली है,
भूली सखियां, बाबुल गलियां
भूली सब हमजोली है.

—पीयूष वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

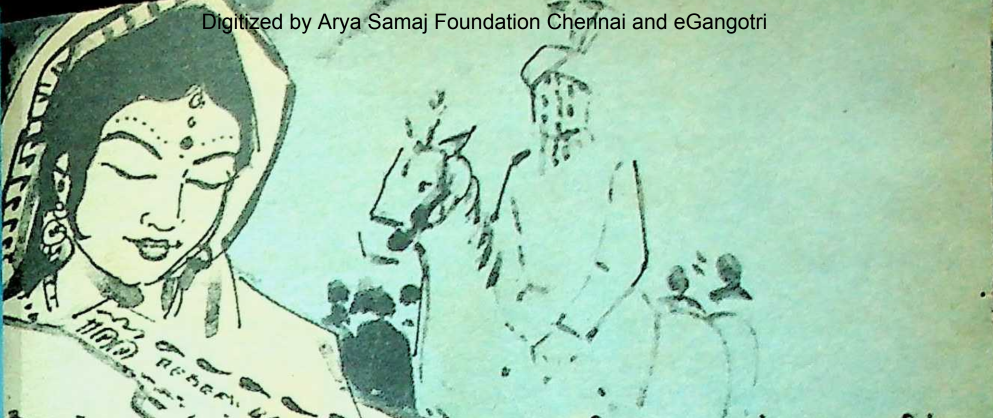

कहानी ● मधुप 'मगधशाही'

सरिता, बीस साल पहले,
मार्च (प्रथम) 1970

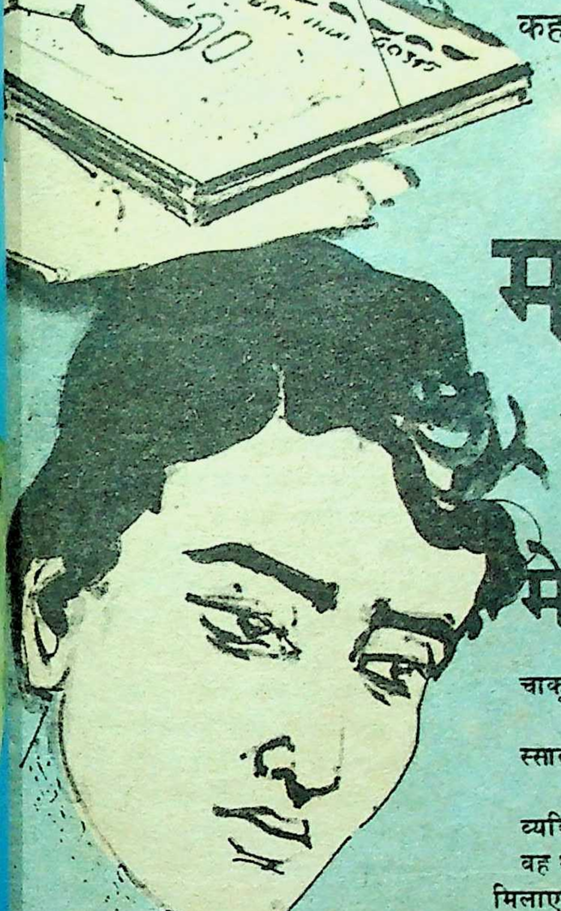

माटी की मूरत

मेज की दराज में नोटों की गड्डी धप्प से गिरी और मन्मथ को लगा कि किसी ने उस के बदन में चौड़े फल वाला चाकू घुसेड़ दिया हो—धप्प!

वह चीखने को हुआ, 'कौन है, स्साला!'

तेजी से निगाह ऊपर उठी. लेकिन जो व्यक्ति खड़ा था उस से निगाह मिलते ही वह थरथरा गया. अधिक देर वह आंखें नहीं मिलाए रह सका. उस ने दृष्टि झुका ली. उस का सारा उत्साह पेंदी फटी नौका की तरह डूबने लगा.

उस व्यक्ति ने कहा, "साहब, पिछली बार आप की दया ने हमारा पेट पाल दिया. आप का वाजिब हिस्सा लेता आया हूं. 1,000 हैं."

मन्मथ के नेत्रों में नोटों की गड्डी की छाया बुरी तरह चमक रही थी. उस में इतनी भी सुध या शक्ति न रही थी कि वह दराज बंद कर दे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श और नैतिकता की बातें सोचने वाले मन्मथ को एक दिन एक ऐसा काम करने को मजबूर होना पड़ा, जिस ने उस का मन आत्मग्लानि और अपराधबोध से भर दिया. लेकिन तभी उस ने एक ऐसा निर्णय ले लिया जिस ने उस के जीवन की दिशा ही बदल डाली.

वह व्यक्ति आगे कहता रहा, "इस बार काम फिर दिला दीजिए, साहब. गरीब आप की दया भूलेगा नहीं."

"संपत!" मन्मथ ने कुछ कहना चाहा. लेकिन कह न सका.

"बोलिए, बोलिए, साहब!" संपत आगे झुक आया.

डरतेडरते, हिम्मत कर के मन्मथ बोला, "मुझ से यह सब नहीं हो सकता."

"क्या हुजूर? कुछ कम हैं क्या?" संपत ने जेब में हाथ डाला. "साहब, 200 और हैं. बस, ज्यादा के लिए मत कहिएगा."

और खुले दराज में 200 रुपए के नोट फिर आ गिरे.

"यह नहीं" मन्मथ को लगा कि उस के बदन से बिजली का तार छुआ कर उस का सारा रक्त सोख लिया गया है. उस ने अटकतेअटकते कहा, "यह नहीं. मैं...मैं... रिश्वत..." लेकिन वह अपनी बात पूरी नहीं कह सका.

संपत ने तुरंत कहा, "ऐसा नहीं कहिए, साहब. उपहार कहिए... प्रेजेंट. और फिर आप तो..." वह दोनों हथेलियों को रगड़ कर आहिस्ते से हंसा.

और मन्मथ अजगर के गले में फंसे मेमने की तरह अंदर ही अंदर बिलख उठा. उसे लगा कि यह संपत ठेकेदार उसे यों नहीं छोड़ेगा. वह उस पर किसी भी तरह यकीन नहीं करेगा. उस ने अपने को दलदल में फंसा हुआ महसूस किया, जहां से निकलने की चेष्टा करने पर व्यक्ति नीचे ही धंसता जाता है.

मन्मथ के सामने अंधेरा छाने लगा. और उस अंधेरे में एक चित्र उभरने लगा. अस्पष्ट और धुंधला, जो धीरेधीरे स्पष्ट होता गया.

आफिस का चपरासी मन्मथ को उस की जगह बता गया. अपनी सीट पर बैठने से पहले उस ने पूरे आफिस पर एक लापरवाह नजर डाली. बास के केबिन की दीवार पर लगी घड़ी ठीक 12 बजा रही थी. आफिस की ज्यादातर सीटों के बाबू आ गए थे. बाकी धीरेधीरे आ रहे थे.

कोई रूमाल से माथे का पसीना पोंछ रहा था, कोई पेंसिल छीलने के ब्लेड से नाखून कुतर रहा था, किसी ने सामने अखबार खोल रखा था. किसी के सामने आफिस का चपरासी पानी का गिलास लिए खड़ा था, कोई होंठों में दबी सिगरेट को माचिस की तीली दिखा रहा था, किसी ने कमीज के सारे बटन खोल कर पूरे आराम के लिए हाथपांव फैला दिए थे.

बगल की सीट वाला अपने पड़ोसी सीट वाले को 'गुड मार्निंग' कह रहा था. वह ठिगना सा बाबू सभी की सीटों के पास यों ही फुदकता फिर रहा था.

मन्मथ अपनी सीट रूमाल से झाड़ कर बैठ गया. उसे उन में कोई रस नहीं आया, लेकिन उपेक्षा भरा व्यंग्य भाव उस के चेहरे पर उभर आया. आफिस के इन बाबुओं के जीवन से उसे घृणा थी. उसे इन का जीवन कीचड़ के समान लगता था जो ऊपर से खूबसूरत काइयों से पटा रह कर अंदर से बड़ा गंदा और दलदल जैसा था.

मन्मथ अपने लिए बाबूगीरी का काम केवल नापसंद ही नहीं करता था, बल्कि इस के बारे में सोचना भी नहीं चाहता था. लेकिन जीवन संघर्ष में हार कर जब उसे इस ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

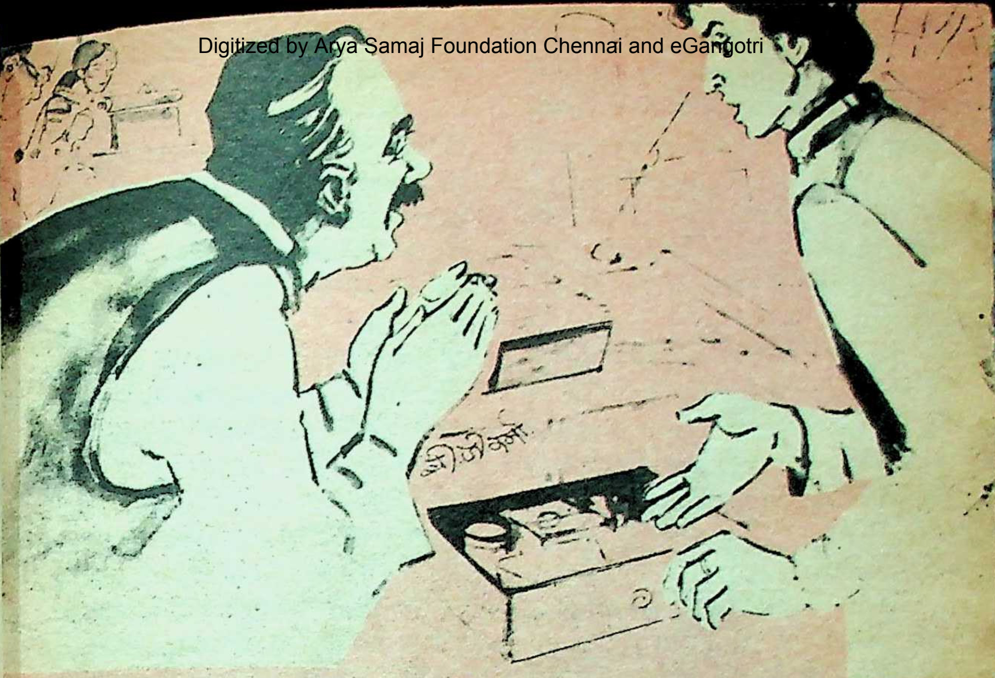

"ऐसा नहीं कहिए साहब. उपहार कहिए... प्रेजेंट. और फिर आप तो..." वह दोनों हथेलियां जोड़ कर आहिस्ता से बोला

आने के लिए विवश होना ही पड़ा तो उस ने कीचड़ में कमल की तरह खिलने का संकल्प कर लिया. निश्चय ही यह निर्णय बड़ा कठिन था, लेकिन उस ने अपने को एक आदर्श बनाना चाहा.

मन्मथ की मेज के सामने भी वह ठिगने कद वाला बाबू उदित हुआ, "तो आप ही नए आए हैं?"

"जी हां!" मन्मथ की धारणा थी कि लोग उसे घूरघूर कर देखेंगे और तरहतरह के प्रश्न पूछ कर परेशान करेंगे, लेकिन उसे उत्तर देने में कोई दिलचस्पी नहीं थी.

"मेरा नाम भूपेश," उस ने कहा. "आप का शुभ नाम?"

"मन्मथराय चौधरी."

"इस के पहले आप कहां थे?"

"कहीं नहीं."

"शिक्षा?"

"ग्रेजुएट."

मन्मथ को लगा कि यह बौना अब घर के बारे में भी पूछेगा– कितने भाई हैं? कितनी बहनें हैं? मातापिता हैं या नहीं? पिता क्या हैं? भाई क्या करते हैं?... बड़ा उकताने वाला लग रहा था उसे यह सब.

ठिगने ने कहा, "आप सिगरेट तो पीते हैं?" और वह जेब में हाथ डाल कर टटोलने लगा.

मन्मथ ने शीघ्रता से अपनी सिगरेट निकाल ली, "मेरे पास है." और उस ने पैकेट थोड़ा सा खोल कर सामने कर दिया, "लीजिए."

भूपेश ने पैकेट से सिगरेट निकाल कर होंठों से लगाते हुए कहा, "आप नए हैं, आप को हमारी मदद की जरूरत पड़ सकती है, आप बेहिचक कहिएगा. हम सभी यहां पर अपने हैं."

"चिंता न करें. जरूरत पड़ने पर मैं आप की मदद अवश्य लूंगा." मन्मथ ने कहा, मगर अंदर से उस ने अपने को इस तरह तैयार करने का संकल्प किया कि उसे कभी इन की मदद की जरूरत न पड़े. उसे विश्वास था कि वे सभी मिल कर भी उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की किसी तरह की मदद नहीं कर सकते, न ही कर सकेंगे. जो खुद बीमार है, वह दूसरों की सेवा कैसे कर सकता है! फिर कीचड़ गंदगी ही देगा, खुशबू नहीं. और यहां सभी उसे एक खास किस्म के बीमार नजर आ रहे थे- रूखे, उदास चेहरे. उधार की मुसकान, ठगों जैसी आंखें. पतन के गर्त में गिरे, ऊपर की ओर लालसा से देखते हुए लोग. देख कर दया उभर आती थी.

मन्मथ खुद भी उन जैसा विवश, घृणित, दयायाचक प्राणी नहीं बनना चाहता था. उन में मिल कर उन जैसा ही हो जाने की उस की बिलकुल आकांक्षा नहीं थी. उन में रह कर भी वह उन सब से कटा हुआ, अलग रहना चाहता था.

और उस के कार्यकाल के थोड़े ही दिनों में अलग रहने की उस की चेष्टा आफिस के दूसरे बाबुओं पर प्रकट होने लगी. सभी समझने लगे कि उन की पांत का हो कर भी वह उन के साथ बैठना, उन से मिलना नापसंद करता है. उन्हें वह अपने से हीन समझता है.

कैंटीन में, काउंटर पर, अलगअलग मेजों पर मन्मथ की चर्चाएं होने लगीं. सभी को यह बात बुरी लग रही थी कि उन की पांत का सदस्य उन के रास्ते से अलग चलने की कोशिश कर रहा है, उन के स्वार्थ को कुचलने का प्रयत्न कर रहा है. सभी जानते थे कि जब बाहर दरवाजे पर खड़े दरबान से ले कर अंदर केबिन में बैठे 'बास' तक एक लकीर के फकीर हैं तो मन्मथ का राजहंस होने का अहं सरासर अन्याय है. इस से सब के स्वार्थ पर चोट पहुंचती है. वर्षों से चली आ रही पुश्तैनी परंपरा के उसूल खराब होते हैं.

पहले लोगों ने यह सोचा कि वह झिझकता होगा. शुरूशुरू में ऐसा होना स्वाभाविक भी है. शीघ्र ही पता लग गया कि मन्मथ की मनोवृत्ति ही ऐसी है. सब को बड़ी ठेस सी लगी. लोगों ने परोक्ष रूप में उसे यहां की परंपरा बताई, बारबार उस का ध्यान इस ओर आकर्षित किया, पर मन्मथ मशीनी की मूरत की तरह सभी कुछ समझ कर भी नहीं समझा.

धीरेधीरे कुछ लोगों के मन में भय पैदा हो गया. वे मन्मथ को देख कर डरने लगे. उस से बहुत पुराने होने पर भी उस के सामने वे निश्चितता का भाव खोने लगे. इस से उन के सुख और आराम में खलल पड़ने लगा. यहां तक कि 'बास' को भी मन्मथ का खयाल रहने लगा.

उस की मेज पर संतुलित आवाज की गई. लेकिन यह आवाज मन्मथ का ध्यान बंटाने में सफल न हो सकी. वह विचारमग्न ही रहा.

आज वह चिंतित था. उस के चेहरे पर विषाद की गहरी छाया थी. वह अपने कार्य में पूरी तरह नहीं लगा पा रहा था. जबजब वह कार्य की ओर उन्मुख होता, पर दो पल में ही सुबह की घटना उस पर हावी हो जाती उसे परेशान करने लगती और वह बिना चाहे भी उस के बारे में सोचने लगता. बहन की शादी पर पिताजी ने 1,500 रुपए उधार लिए थे. धीरेधीरे थोड़ीथोड़ी बचत कर उस ने 800 रुपए चुका दिए थे. 700 के लिए महाजन ने कहा था कि उसे पूरे रुपए कल सुबह तक चाहिए ही.

बात रुपयों की कम, मानअपमान की ज्यादा थी. रुपयों के बिना सम्मान भी इतना लुटा हुआ होता है, उसे पहले ज्ञात न था. यदि आज वह देनदार न होता तो कभी उस महाजन की इतनी बातें सहन नहीं करता. उसे कहने की हिम्मत ही नहीं पड़ती.

मन्मथ ने तय कर लिया था कि उस के रुपए वह आज ही चुका देगा – कहीं से भी, कैसे भी, दूसरे से उधार ले कर और यदि अपने को बेचना पड़े तो बेच कर भी.

मेज पर फिर आवाज की गई, पहले से कुछ तेज. मन्मथ के विचारों को एक झटका लगा. उस ने सिर उठा कर देखा, एक स्थूलकाय व्यक्ति खड़ा था. आंखें मिलते ही उस व्यक्ति ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और कागज का एक पुलिंदा उस की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ा दिया. अपने कार्य के दायित्व का खयाल आते ही मन्मथ ने उस व्यक्ति को सामने कुरसी पर बैठने के लिए कहा.

व्यक्ति अनुनय से दांत निपोरते हुए बोला, "बस, ठीक है, साहब."

मन्मथ पुलिंदे को खोल कर पहला पृष्ठ देखने लगा. उसे इस तरह पढ़ते देख उस व्यक्ति ने कहा, "साहब, देखना क्या है, सब ठीक है!"

"क्या सब ठीक है?" मन्मथ ने उस के चेहरे की ओर देखा.

"हुजूर, हम गरीब आदमी हैं. ठेके का काम कर के बालबच्चों का पेट पालते हैं." उस ने गिड़गिड़ाहट भरे स्वर में कहा. "आप की रिपोर्ट पर बड़े साहब माटी उठाने का यह ठेका हम को दे सकते हैं."

मन्मथ बिना कुछ कहे पत्र की पंक्तियों पर दृष्टि दौड़ाता रहा.

"हुजूर, पहले भी तीन बार आप ने मुझे लौटा दिया है, मेरे बालबच्चे भूखों मर रहे हैं," कहने के साथ ही उस ने झुक कर मन्मथ के पैर पकड़ लिए.

मन्मथ सकपका गया. यह नाटक यहां के लिए नया नहीं था. लेकिन आज न जाने क्यों अंदर से थरथराने लगा. उस ने दूसरी मेजों की ओर देखा कि कोई देख तो नहीं रहा है. किसी का ध्यान इधर नहीं था. इतनी चिंता भी किसी को नहीं थी वहां. यह जानते हुए भी मन्मथ आश्वस्त नहीं हुआ.

उस ने स्टांप के लिए मेज की दराज खोली और तभी खुली दराज में नोटों की एक गड्डी गिरी धप्प! मन्मथ एकाएक कांप गया. लगा किसी ने उसे ऊपर से बेसहारा नीचे की ओर फेंक दिया है. उस के दांत किटकिटाने लगे. ताकत जुटा कर उस ने बड़ी मुश्किल से कहा, "यह...क्या...?"

"उपहार है, हुजूर, गरीब की भेंट... पूरे 1,000 हैं."

मन्मथ की दृष्टि के सामने अनेक दृश्य एक साथ घूम गए. पर उसे अस्पष्ट धुंधलके के सिवा कुछ नजर नहीं आया. धीरेधीरे अंधकार सा छा गया. उसे ठेकेदार का स्वर

तमन्ना

किसी मोड़ पे अकेला
कहीं न छोड़ना,
अरमानों से भरा दिल
कभी न तोड़ना,
दुनिया बेगानी बनती है
तो क्या गम है,
तमन्ना है यही कि आप
कभी न हम से मुंह मोड़ना.

—सुनीता शर्मा

दूर दीवारों से टकराता सुनाई पड़ा. कह रहा था, "हुजूर, दया कर दीजिए इस बार! भूलिएगा नहीं."

मन्मथ अन्यत्र ही खोता गया. उसे तरहतरह के दृश्य अपनीअपनी ओर खींचे लिए जा रहे थे.

थोड़ी देर बाद जब वह सुबह के अपमान के बारे में सोच रहा था, उस ने मेज की खुली दराज में नोटों की गड्डी देखी. ठेकेदार जाने क्याक्या अनुनयविनय कर के जा चुका था.

मन्मथ को रुपए लेने की बड़ी ग्लानि हुई. इतनी कि कुछ दिनों तक बारबार आत्मघात की इच्छा उठती रही. अपने को और अपने मन को संभालने में उसे बहुत दिन लग गए. उसे बारबार यह ग्लानि दबोच लेती कि उस ने कीचड़ में कमल की भांति खिलना चाहा था लेकिन परिस्थितियों के दलदल में फंस कर वह कमल नहीं बन सका.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहंकार

अच्छा गृहस्थ, भला सामाजिक मनुष्य, भला देशभक्त होने के लिए शुरू में ही अहं को त्यागना होगा. अहं को त्यागने से ही अहं का विस्तार होता है.

—विमल मित्र

वह भी औरों की तरह कीचड़ ही बन गया.

उसे हर पल लोगों से डर लगा रहने लगा. पहले वह निडर था और लोग उस से अपनी निगाहें चुराया करते थे. लेकिन अब वही लोगों से अपनी निगाहें चुराने लगा. हालांकि कोई उस से कुछ कहने नहीं आया. उसे भी विश्वास था कि किसी ने उसे रुपए लेते देखा नहीं, लेकिन अपने अंदर का विश्वास वह खो चुका था. लाख कोशिश करने पर भी वह पहले सा विश्वास नहीं जुटा पाता था.

उसे लगता लोगों की निगाहें न्यायालय हैं और उसे दंड देने के लिए ढूंढ़ रही हैं. शतुरमुर्ग की तरह नजरें चुराए रहने में उसे थोड़ी सुरक्षा प्रतीत होती, लेकिन छटपटाहट भी कम न होती. उसे जैसे कोई जोरजोर से पुकार कर कहता फिरता, 'तू चोर है! तू ने रिश्वत ली है! तू ने भ्रष्टाचार किया है!'

यह आवाजें एकांत में मन्मथ को और भी व्याकुल कर देतीं. इन से थोड़ी सी राहत पाने का उपाय था, अपने को अधिक से अधिक व्यस्त रखना. मन्मथ ने वैसा ही किया. काम का बोझ उस ने अपने ऊपर बढ़ा लिया, जैसे यही उस के पाप का प्रायश्चित हो.

उस ने संकल्प किया, भविष्य में मृत्यु भी सामने खड़ी मिले, तो भी वह दोबारा उस नीचता की ओर नहीं जाएगा, कभी नहीं जाएगा.

धीरेधीरे उसे शांति मिलने लगी. वह स्वाभाविक होने लगा. अपना पाप वह भूल तो नहीं सका लेकिन उस का दर्द अवश्य कम होने लगा. तभी उस परिचित चेहरे को देख कर वह कांप गया. उसे लगा कि उस का पाप साक्षात रूप में, सदेह उस के सामने आ [ ] हुआ है. उसे बहुत डर लगा. उस के [ ] अंधेरा छाने लगा और वह अपना धै[ ] सुधि गंवाने लगा.

संपत ने कहा, "हुजूर, तो मैं जाऊं[ ] सब ठीक हो जाएगा न!" और [ ] मुसकराता हुआ बाहर चला गया.

मन्मथ के होंठों से कोई बात निक[ ] सकी. वह एकटक सामने देख रहा था. [ ] ठीक से तय नहीं कर पा रहा था कि क्या [ ] रहा है, क्या हो गया, आगे क्या होगा?

संपत ने हाथ जोड़ कर नमस्[ ] किया, फिर मुड़ कर दरवाजे की ओर [ ] पड़ा.

अचानक मन्मथ की बुझी हुई आंखें [ ] चमक आई. उस ने जाते हुए संपत [ ] पुकारा, "सुनिए!"

संपत पल भर में सामने आ गया.

मन्मथ ने दराज से रुपए निकाले, [ ] का कागज उठाया और उसे थमाते हुए क[ ] "यह लीजिए, संपत बाबू, यह काम मेरे [ ] का नहीं है."

"आप क्या कहते हैं, साहब!" सं[ ] कागजों के बीच नोटों को छिपाते हुए हा[ ] जोड़ कर खड़ा हो गया. "आप नहीं देखेंगे [ ] मैं मर जाऊंगा, मेरे बच्चे भूखे रह जाए[ ] मुझ पर दया कीजिए."

"अब वैसी बात नहीं, संपत बाबू[ ]" मन्मथ ने बेझिझक हो कर अपने दिल [ ] बात कही.

"मेरे सोचने में भूल थी कि चुपके [ ] किया गया पाप कोई देखता नहीं. आखि[ ] अपने अंदर की आंख उसे देखती ही है औ[ ] हमेशा सालती रहती है. जब तक मैं यहां [ ] आप मुझ पर विश्वास नहीं कर सकेंगे औ[ ] आप को देख कर मुझे अपना पाप याद आ[ ] रहेगा, इसलिए मैं यहां की नौकरी छोड़ क[ ] जा रहा हूं."

"साहब!... आप..." संपत मन्मथ [ ] ऊपर से नीचे तक देखने लगा.

मन्मथ 'बास' के केबिन की ओर [ ] गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मिठास को फीका बनाता है मधुमेह

लेख • कमलेशचंद्र माथुर

रसोई में काम करतेकरते अचानक कल्पना का हाथ कट गया. मामूली घाव समझ कर उस ने उसे पानी से धो डाला और फिर उस के बारे में सब कुछ भूल गई. किंतु कुछ दिनों बाद घाव की हालत बहुत खराब हो गई. दवा लगाने पर भी वह भरने का नाम नहीं ले रहा था. कल्पना तुरंत अपने डाक्टर के पास गई. यहां खून व मूत्र की जांच करने पर पता चला कि उसे मधुमेह है. तुरंत मधुमेह का उपचार किया गया, तब कहीं जा कर स्थिति नियंत्रण में आ सकी.

मधुमेह कोई नया रोग नहीं है. इस रोग के रोगी को बारबार अधिक मात्रा में पेशाब आता है, उस के पेशाब में शक्कर की अधिकता होने के कारण उस पर चींटियां जमा हो जाती हैं. पेशाब में शक्कर की अधिकता के कारण चिकित्सा साहित्य में इसे 'मधुमेह' के नाम से पुकारा जाने लगा.

अंगरेजी में इसे 'डायबिटीज' कहते हैं. जो मूलतः यूनानी भाषा का शब्द है, जिस का अर्थ है 'साइफन'. इस रोग की क्रिया साइफन सदृश होती है, यानी रोगी के शरीर का मांस पिघल कर पेशाब के जरिए बहता रहता है.

हमारे शरीर में पैंक्रियाज इंसूलिन का उत्पादन करता है. मधुमेह के रोगी में इंसूलिन कम बनता है जिस से खून में शक्कर की मात्रा बढ़ जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमेह एक ऐसा रोग है जो उम्र का लिहाज नहीं करता और जीवन भर रोगी को अपने पंजों में जकड़े रहता है. लेकिन इस से घबराने की जरूरत नहीं है. नियमित इलाज और परहेज आप को इस के घातक परिणामों से बचा सकता है.

रोग के लक्षण

पेट में जाने के बाद भोजन के 'कार्बोहाइड्रेट घटक' खंडित हो कर 'ग्लूकोस' में परिवर्तित हो जाते हैं, जो बाद में रक्त में मिल कर रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ाते हैं. प्रतिक्रियास्वरूप 'अग्न्याशय' (पैंक्रियाज) नामक अवयव की कुछ विशिष्ट कोशिकाएं 'इंसूलिन' नामक हारमोन का उत्पादन करती हैं, जो इस शक्कर को हमारी विभिन्न कोशिकाओं के भीतर तक पहुंचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है. इस के अतिरिक्त, इस का एक काम यह भी है कि वह कोशिकाओं के भीतर शक्कर को भस्म कर के आवश्यक ऊर्जा उत्पन्न करने में मदद देता है.

मधुमेह के रोगियों में इसी आवश्यक तत्त्व 'इंसूलिन' की कमी होती है, जिस के फलस्वरूप शक्कर ऊतकों के भीतर नहीं पहुंच पाती जबकि रक्त में शक्कर का स्तर निरंतर बढ़ता जाता है. इस का परिणाम यह होता है कि बड़ी मात्रा में शक्कर व पानी खून से छन कर गुरदों में पहुंच जाते हैं. इस से रोगी को अधिक पेशाब आने लगता है, जो मधुमेह का प्रमुख लक्षण है.

शक्कर व पानी के निकलने से रोगी को अधिक भूख लगती है और प्यास निरंतर बनी रहती है. यह भी मधुमेह का प्रमुख लक्षण है.

छूत की बीमारियां (विशेषकर त्वचा व मूत्र संस्थान की बीमारियां) भी ऐसे रोगियों को खूब सताती हैं, क्योंकि शक्कर की अधिकता के कारण जीवाणुओं को पनपने का खूब मौका मिलता है.

प्रमुख कारण

निस्संदेह 'डायबिटीज' एक पुश्तैनी रोग है. अगर मातापिता दोनों ही इस रोग से ग्रसित हों तो औलाद में इस की संभावना 80% तक रहती है और अगर मांबाप में से एक को ही यह रोग हो तो भी इस की 50% तक संभावना रहती है. जिन समुदायों में सगोत्र विवाह का निषेध है, उन में यह रोग कम पाया जाता है. दूसरी ओर, जहां परस्पर रक्त संबंध रखने वालों में आपस में शादीब्याह हो जाता है, वहां रोगियों की संख्या में दिनोंदिन वृद्धि होती है.

मोटापा कारणों की सूची में अगला नाम है. बेडौल थुलथुल शरीर जहां एक ओर लोगों के उपहास का केंद्र बनता है, वहीं यह रोगों के लिए भी निमंत्रणपत्र सदृश है. मानव शरीर में इंसूलिन की आवश्यकता शक्कर का उपयोग करने के अलावा शरीर में चरबी जमाने के लिए भी होती है और मोटे व्यक्तियों में इंसूलिन की कमी हो जाती है. इसलिए मधुमेह के लिए मैदान साफ हो जाता है.

मिठाई का अत्यधिक सेवन भी रोग को बुलावा देता है. अधिक मिठाई को पचाने के लिए इंसूलिन उत्पादन करने वाली विशिष्ट कोशिकाएं उत्तेजित हो कर अधिक से अधिक मात्रा में इस का उत्पादन करती हैं, जिस से अंततोगत्वा ये कोशिकाएं थक कर निष्क्रिय हो जाती हैं और इंसूलिन का उत्पादन बंद या बिलकुल कम हो जाता है और रोग धर दबाता है.

यह रोग उम्र का लिहाज नहीं करता. बच्चे, बड़े, बूढ़े सभी को यह रोग अपने क्रूर पंजों में कस लेने में समर्थ है. इंसूलिन के अभाव में होने वाला डायबिटीज बच्चों की पाचक ग्रंथि में किसी विषाणु की छूत लगने से होता है. इस छूत से इंसूलिन बनाने वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

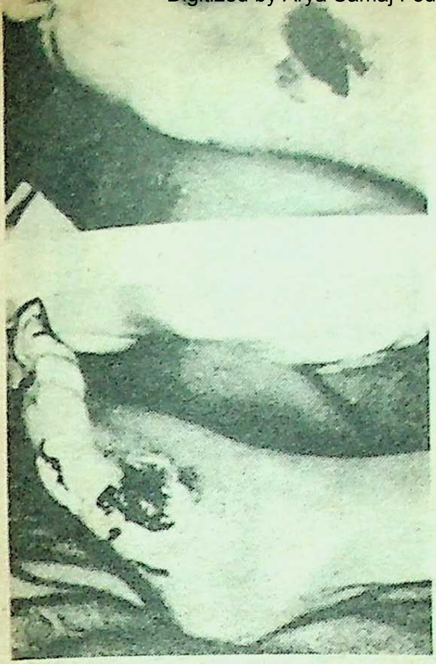

मधुमेह के रोगी की रक्तवाहिनियां सिकुड़ कर अपना काम करना बंद कर देती हैं, परिणामस्वरूप किसी अंग में घाव होने पर वहां सड़न पैदा हो जाती है. इसे गैंग्रीन कहते हैं. ऐसे अंगों को काट कर फेंकने के सिवाय कोई और इलाज नहीं है.

विशिष्ट कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं. परिणामस्वरूप रोग उग्र स्थिति धारण कर लेता है.

जटिलताएं: रोग से अधिक घातक

वे रोगी समझदार होते हैं जो शुरु से ही रोग का नियमित इलाज करवा कर इसे बढ़ने से रोक देते हैं. किंतु अधिकतर रोगी इलाज की ओर तभी ध्यान देते हैं, जब बहुत देर हो चुकी होती है. 70 वर्षीय अनिलकुमार को ही लें. उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि उन्हें मधुमेह हो सकता है. एक रोज सुबह वह जब सो कर उठे तो अपनी दाहिनी टांग व बांह हिला ही नहीं पाए. उन के चेहरे का दायां हिस्सा भी टेढ़ा हो गया था. उन्हें स्पष्ट बोलने में भी कठिनाई हो रही थी. तुरंत हस्पताल की शरण ली गई, जहां तमाम परीक्षणों के बाद पता चला कि उन के रक्त में शक्कर का स्तर अधिक है, जिस का प्रभाव दिमाग पर भी हुआ है.

अधिक समय तक रोग के अनियंत्रित रहने की सूरत में मस्तिष्क की रक्त वाहिनियां कठोर हो कर सिकुड़ जाती हैं तथा इन में कभी भी रुकावट उत्पन्न होने से लकवा भी मार सकता है.

दिल का दौरा पड़ने की घटनाएं सामान्य लोगों की तुलना में डायबिटीज से पीड़ित व्यक्तियों को अधिक होती हैं. इस रोग का प्रभाव हृदय की रक्त वाहिनियों पर भी घातक ही सिद्ध होता है. इस बीमारी से सामान्य रक्त संचार में बाधा उत्पन्न होती है.

इसी प्रकार, रोग का प्रभाव आंखों की रक्त वाहिनियों पर भी पड़ता है, जिस से अंधापन भी आ सकता है. डायबिटीज के रोगियों को 'मोतियाबिंद' भी अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा जल्दी होता है.

इस रोग के कारण गुरदे भी अपना कार्य करना बंद कर सकते हैं, जिस का परिणाम बहुत घातक होता है. ठीक इसी प्रकार, बांहों या टांगों की रक्त वाहिनियां भी सिकुड़ कर अपना कार्य करना बंद कर सकती हैं. परिणामस्वरूप वहां रक्तसंचार न होने से सड़न उत्पन्न होती है, जिसे 'गैंग्रीन' कहा जाता है. ऐसे में अंग को काट कर फेंक देने के अतिरिक्त चिकित्सक के पास कोई अन्य रास्ता नहीं रहता.

मधुमेहजन्य मूर्च्छा

ऐसा प्रायः तब होता है जब शरीर की कोशिकाएं ग्लूकोस से वंचित हो कर ऊर्जा के अन्य स्रोतों का सहारा लेने लगती हैं. इस क्रिया के फलस्वरूप शरीर में चरबी भस्म होने लगती है, जिस का नतीजा यह होता है कि वसा अम्ल (फैटी एसिड) खून में मिलने लगते हैं जो आवश्यकता से अधिक हो जाने पर घातक सिद्ध होते हैं. इस से रोगी मूर्च्छित भी हो सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

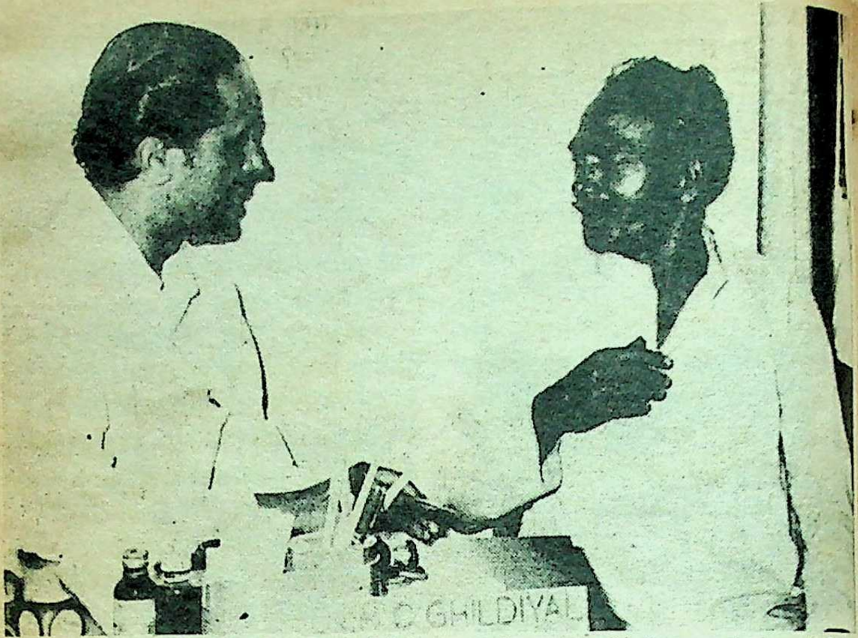

मधुमेह का शक होते ही डाक्टर से सलाह लेनी चाहिए. रोग को छिपाना आप के लिए बेहद घातक सिद्ध हो सकता है.

चिकित्साशास्त्रियों ने कुछ ऐसे नियमों की सूची तैयार की है, जिन से रोग से बचाव भी संभव है एवं रोग हो जाने पर उसे नियंत्रित रखने में भी मदद मिलती है क्योंकि यह उम्रभर साथ चलने वाला रोग है.

● अगर आप की उम्र 35 वर्ष से ऊपर है और आप के परिवार में इस रोग का इतिहास रहा है तो नियमित रूप से मूत्र व रक्त का परीक्षण करवाते रहना चाहिए. अत्यधिक भूखप्यास लगना, फोड़े निकलना तथा आसानी से घाव नहीं भरना, कमजोरी, थकान, बारबार पेशाब आना इत्यादि इस के महत्त्वपूर्ण लक्षण हैं, जिन का पता चलते ही तुरंत डाक्टर की सलाह लेनी चाहिए.

● यदि आप इस रोग से पीड़ित हों तो स्वयं मूत्र परीक्षण करना तथा इंसूलिन के इंजेक्शन लेना सीख लें.

● व्यायाम इस मर्ज में औषधि से बेहतर है. नियमित व्यायाम वही कार्य करता है जो औषधियां या इंसूलिन करते हैं. सवेरे व शाम को सैर, साइकिल चलाना, तैराकी इस दृष्टि से श्रेष्ठ व्यायाम हैं. मगर व्यायाम चिकित्सक की इजाजत से ही करें.

● आहार के नियमों का पालन करना भी अति उपयोगी है. यदि आप रोगी हैं तो मिठाई देख कर लार मत टपकाइए. कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य पदार्थों से दूर रहें. चिकनाई की चीजें भी कम ही लें. ऐसा करने से वजन नियंत्रित रहेगा.

● पांवों को, विशेष रूप से उंगलियों के बीच के स्थानों को साफ रखना श्रेयस्कर है. तंग जूते व सैंडिल का प्रयोग न करें.

● यदि आप को डायबिटीज है तो हमेशा अपनी जेब में एक कार्ड रखिए, जिस में आप का नाम, पता, टेलीफोन नंबर तथा आप के चिकित्सक का नाम, पता व टेलीफोन नंबर दर्ज हो और उस पर यह भी लिखा हो कि आप को मधुमेह है.

एक समय ऐसा था, जब किसी को यह बताना कि उसे मधुमेह है, सजा देने जैसा था, मगर अब चिकित्साविज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है कि आहार व स्वास्थ्य के अन्य नियमों का पालन करते हुए रोगी सामान्य व सक्रिय जीवन बिता सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरचोर

(पृष्ठ 98 का शेषांश)

किया. इस के बाद जब कभी मिले बड़े सम्मान से पेश आए.

बाजार में ये दोनों फिर मिल गए. वादा तो किया था, पर बीचबीच में पकड़ कर प्रीतम को पिला देते थे. आज भी नहींनहीं करने पर भी एक गिलास पिला दी.

"यार होली है, कुछ बंदोबस्त करना पड़ेगा."

"नहीं." प्रीतम ने दृढ़ता से कहा, "नहीं. मैं घर को कुरुक्षेत्र नहीं बनाऊंगा. अपने घर में तो मैं पिला ही नहीं सकता. क्या भूल गए सब?"

"यार," मुरारी ने प्रीतम के गले में हाथ डालते हुए कहा, "होली सो होली, अब की बार यह सब नहीं होगा. हम लोग अकेले आएंगे. किसी ऐरेगैरे नत्थूखैरे को नहीं लाएंगे. यह तो मरदूद मधुकर जाने कहां से आ टपका था."

"नहीं," प्रीतम ने जोर से कहा.

"तो क्या होली फीकी ही जाएगी?"

"भाई की जेब खाली लगती है."

"भाई कंजूस हो गया है."

"नहींनहीं, भाई का सारा रुपया भाभी के पास रहता है. भला कैसे खरीदेगा?"

"दोस्तदोस्त न रहा..."

"अब चुप भी करो," प्रीतम ने झल्ला कर कहा, "मेरे पास रुपए की कमी नहीं है और न ही मैं अपनी पत्नी का गुलाम हूं."

"तो फिर करो न कुछ बंदोबस्त."

"शराब घर में नहीं आएगी. और कहीं पी लेंगे."

"वाहवाह, और कहीं पी लेंगे. डरता क्यों है जोरू से?"

"मैं नहीं डरता हूं. बकबक मत करो."

प्रीतम ने उत्तेजित हो कर कहा.

"सुनो, मैं तरकीब बताता हूं."

"क्या?"

"तुम ले आना महाकोला की बोतलें. पता भी नहीं लगेगा कि कोला पी रहे हैं या रम."

"ठीक है, पर तुम नशे में बहक जो जाते हो."

"नहींनहीं, इस बार ऐसा नहीं होगा. पूरा नियंत्रण रखेंगे. फिर दो गिलास से अधिक नहीं लेंगे."

"तीन भी हो सकते हैं."

"चार भी हो सकते हैं."

"अब कह दिया न. नहीं है रुपए तो बोल, हम ले आएंगे बोतल. पर पिएंगे तेरे घर. यह वादा रहा."

इसी तरकीब पर अमल करते हुए प्रीतम छिपा कर बोतल ले आया था और खाने के समय महाकोला की चर्चा भी कर दी थी कि रास्ता साफ हो जाए.

सुरेखा ने चेतावनी दी, "अगर कोई भी अंदर घुसा तो टांग तोड़ दूंगी."

"नहीं, बाहर बैठक में रहेंगे."

"याद रखना. चिमटा गरम कर के रखूंगी."

प्रीतम ने मुसकरा कर फिल्मी संवाद बोला, "कितनी सुंदर लगती हो जब क्रोध से फड़फड़ाती हो. सच, तुम सदा इसी तरह क्रोधित रहा करो."

दूसरे दिन प्रीतम और सामान के साथ कोला का क्रेट ले आया. मुंह में पानी आ रहा था. जैसे ही सुरेखा स्नानघर में गई उस ने तुरंत बोतल खोली और थोड़ा सी रम गिलास में डाली. सुरेखा के आने से पहले एक कोला की बोतल खोली और थोड़ी सी उड़ेल ली अपने गिलास में. बच्चों को आवाज दी.

"लो बच्चो, कोला पियोगे?"

"हां, पिएंगे."

'इस तरह चोरी छिप जाएगी.' प्रीतम अपनी चतुराई पर मुसकराया.

सुरेखा से पूछा, "तुम लोगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं." सुरेखा ने अविश्वास से देखा पर कुछ बोली नहीं.

होली के दिन अपने समय से गणेश और मुरारी आए. बड़ी शालीनता से सुरेखा को नमस्ते की और थोड़ाथोड़ा रंग डाला.

"आप चिंता मत करिए, भाभी," गणेश ने हंस कर कहा, "बस, अभी चले जाएंगे."

"अभी क्यों? कुछ पी कर जाओ." प्रीतम ने कहा.

गणेश ने [illegible] पर हाथ रख कर कहा, "नहीं भा[illegible] [illegible] ने न पीने का इरादा कर लिया है."

मुरारी ने उठने का झूठा प्रयत्न करते हुए कहा, "सच भाभी, आप के सामने आने में भी शर्म आती है."

सुरेखा ने मुंह बना कर कहा, "आती होगी, पर रंगे स्यार हो न, इसलिए दिखाई नहीं देती."

"वाह क्या मारा है!" गणेश हंसा.

"आज पीने को महाकोला है. पीना है तो बोलो." प्रीतम ने फिर से भूमिका बांधी.

"अब तुम बिना पिए जाने थोड़ी दोगे."

"लाओ फिर हो जाए. महाकोला ही सही."

प्रीतम अंदर से गिलास ले आया. बोतल पहले ही सोफे के नीचे छिपा कर रख दी थी.

"अरे सुरेखा, सुनती हो," प्रीतम ने आवाज लगाई, "महाकोला की बोतल खोलने वाली चाबी कहां है?"

"ढूंढ़ लो अपनेआप. बच्चों से पूछ लो." सुरेखा ने कहा, "मैं रसोई में हूं."

असल में यह एक बहाना था ताकि सुरेखा समझे कि महाकोला चल रही है. चुपके से झटपट चोरों की भांति बोतल खोल कर रम गिलासों में उड़ेली और ऊपर से महाकोला डाल लिया.

जाम से जाम टकराए जीत की प्रसन्नता में [illegible] सफलता पर. [illegible] कस कर पहला घूंट भरा और आश्चर्य[illegible] एकदूसरे को देखा. मुंह बन गया.

"होली का दिन है इसलिए क्या [illegible] बना रहे हो?" गणेश ने पूछा.

मुरारी फुसफुसाया, "असली कहां[illegible] बड़ी तलब लग रही है. बहुत हो [illegible] नाटकबाजी."

प्रीतम ने असमंजस में पड़ कर क[illegible] "थी तो असली ही. मैं ने तो चख भी [illegible] थी."

"छोड़ भी. बहुत हो गया. अस[illegible] निकाल."

"सच कह रहा हूं और कुछ नहीं है[illegible]"

प्रीतम ने बोतल सोफे के नीचे [illegible] निकाली और सीधे एक घूंट मुंह में डा[illegible] महाकोला थी. गणेश और मुरारी को [illegible] पर विश्वास नहीं हुआ. गालिया देते हु[illegible] चले गए. दोस्ती टूट गई.

उस दिन प्रीतम जिस तरह घुसा [illegible] सुरेखा को शक हो गया था कि कुछ गड़ब[illegible] है. प्रीतम के पीछे उस ने अलमारी [illegible] तलाशी ली और तुरंत बोतल पकड़ में आ[illegible] गई. महाकोला ने काम और आसान क[illegible] दिया. रम को नाली में बहा दिया और बोतल को कोला से भर दिया.

शीतयुद्ध कुछ दिन चला. सारा का[illegible] सामान्य रूप से चलता रहा. बच्चों [illegible] माध्यम से बात होती थी. सब कुछ हुआ, परंतु न तो प्रीतम ने पूछा और न ही सुरेखा ने कुछ बताया.

"पिताजी, महाकोला समाप्त हो गई, और लाइए," अलंकार ने कहा.

"नहीं बेटा," प्रीतम ने कहा, "महाकोला कोई अच्छी चीज नहीं है. वैसे उस की चोरी हो जाती है."

"चोरी? वह कैसे?"

रसोई में से सुरेखा का ऊंचा स्वर आया, "दुनिया में सब चोरचोर, कोई छोटा चोर, कोई बड़ा चोर."

और तब सब हंस पड़े. शीतयुद्ध समाप्त हुआ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरत

(पृष्ठ 161 का शेषांश)

"खैर, इस समय तो मैं ही ले आता हूं वरना यदि कहीं सरकारी नल बंद हो गया तो फिर रात भर प्यासे रहना पड़ेगा. खाना भी अब होटल से ही लाना पड़ेगा." इतना कह कर आमिर ने बालटी उठाई और पानी लेने के लिए चला गया.

एक दिन आमिर बोला, "इशरत, तुम सोचती हो ... [illegible] देख कर उस ने मोन्... कर दिया है. लेकिन ऐसी बात नहीं है. क्या बताऊं, छुट्टी ही नहीं मिल रही थी. आज छुट्टी है. जल्दी से तैयार हो जाओ, घूमने चलेंगे."

आमिर की बात सुन कर वह प्रसन्न हो गई. कई दिन से वह उस अंधेरी कोठरी में घुटती रही थी. उस का दिल भी बाहर घूमने को चाहता था, परंतु आमिर तो आते ही काम में लग गया था. रोज सुबह कारखाने जाता तो शाम को ही लौटता. ऐसे में वह उस के लिए कहां से समय निकालता? लेकिन जब आमिर ने स्वयं उस से तैयार होने को कहा तो वह बहुत खुश हुई.

उस ने तुरंत तैयारी करनी शुरू कर दी. अच्छी सी साड़ी पहनी, श्रृंगार किया और बनसंवर कर आमिर के साथ गंदी और चिपचिपी गली से निकल कर साफसुथरी चमचमाती सड़कों पर निकल आई.

उन सड़कों पर चलते हुए उसे ऐसा लग रहा था, जैसे वह किसी और दुनिया में आ गई हो. ऊंचीनीची इमारतें जो उस ने फिल्मों में देखी थी, एक बार फिर निगाहों के सामने थीं, परंतु उन से दूरी अब भी कायम थी और शायद कभी कम नहीं हो सकती थी.

वह आमिर के साथ एक बस स्टाप पर आ कर खड़ी हो गई और बस का इंतजार करने लगी. सड़कों पर कारें दौड़ रही थीं. इशरत ने उकता कर उन कारों को ही गिनना शुरू कर दिया, जिन की संख्या सड़क पर बढ़ती ही जा रही थी.

'एकदो... हाय, कितना सुंदर रंग था उस गाड़ी का. तीन...चार...यह औरत जो अभी सामने से गुजरी है, इस ने कितनी कीमती साड़ी पहन रखी है. देख कर लगता है, जैसे किसी बहुत बड़े घर की महिला है. क्या यह भी मेरी तरह गंदी कोठरी में रहती होगी? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता. इस के कपड़ों से अ... रखरखाव से पता चलता है कि यह अवश्य कि... ...र के बंगले में रहती हो... [illegible] ... से क्या होता है? मैं भी तो सुंदर सी साड़ी पहने हूं. मेरे बाल सलीके से संवरे हुए हैं. मेरे साथसाथ आमिर भी अच्छे कपड़े पहने हैं. हमें देख कर कोई नहीं कह सकता कि हम ऐसी गंदी जगह रहते होंगे. कितना अंतर होता है, अंदर और बाहर की स्थिति में. ऐसा लगता है, सब कुछ एक दिखावा है, मात्र दिखावा...'

ट्रेन का एक हलका सा झटका लगा तो इशरत का ध्यान गाड़ी में वापस आ गया. उस ने अपनी साड़ी पर नजर डाली. फिर सोचा, 'इस समय मैं भी अच्छी सी साड़ी पहने हूं. मैं जानती हूं कि मुझे उसी चिपचिपी गली और तंग सी खोली में जाना है. फिर मैं ने यह साड़ी क्यों पहनी? उस गंदी कोठरी और इस साड़ी की क्या समानता? यह दिखावा नहीं तो और क्या है? परंतु मैं भी क्या करूं. क्या अच्छे कपड़ों के लिए अच्छा मकान होना जरूरी है? और क्या यह जरूरी है कि गंदी खोली में रहने के लिए खराब कपड़े ही पहने जाएं? नहीं, कोई जरूरी नहीं है. अपना भरम रखने के लिए अच्छे कपड़े पहनना जरूरी है.'

इशरत ने बच्चे पर नजर डाली जो उस की गोद में सो रहा था. उस ने उसे जरा सा ठीक किया और फिर खिड़की से बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने ल[illegible] लगा.

पहले दिन इशरत घूमनेफिरने से जल्दी ही उकता गई थी क्योंकि एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए बसों में सवार होना पड़ता था और बसों में इस कदर भीड़ होती थी कि तौबा ही भली. दिन भर में उसे दोतीन बसें बदलनी पड़ी थीं. लंबीलंबी कतारों में खड़े रहना पड़ा था और फिर बसों के धक्कों ने घूमनेफिरने और मनोरंजन की सारी रुचि समाप्त कर दी थी. उन धक्कों को सहन करने के बाद उस ने तय कर लिया था कि वह अब कभी घूमने नहीं जाएगी. यों तो धक्कों से बचने के लिए टैक्सियां भी उपलब्ध थीं, लेकिन उन का किराया इतना होता था जो आमिर की जेब [illegible] कर सकती थी.

दिन भर घूमनेफिरने के बाद जब वह शाम को घर लौटी थी तो पहले की अपेक्षा उसे अपनी गली कुछ और भी गंदी और चिपचिपी नजर आई और अपना मकान कुछ और छोटा नजर आया.

कभीकभी वह आमिर से कहती, "क्या रखा है इस बंबई में? हम यहां जैसी जगह रहते हैं, जिस प्रकार के लोगों से हमारा दिनरात का साथ है, क्या वे हमारे मिजाज के अनुरूप हैं? इस से तो अच्छा अपना शांति नगर है. वहां अपने लोग हैं, रहने की सुविधा है और सब से बढ़ कर वहां मानसिक सुकून है."

आमिर जवाब देता, "वहां रहने की सुविधा है, मानसिक शांति भी है, परंतु मिलें और कारखानें नहीं हैं. ब्रीफकेस बनाने के जिस कारखाने में मैं काम करता हूं, वहां इस प्रकार का कोई कारखाना नहीं है और जब कारखाने ही नहीं होंगे तो मैं काम क्या करूंगा?

"जिंदगी सिर्फ जेहनी सुकून का ही तो नाम नहीं है, जरूरतों से मुंह मोड़ कर जेहनी सुकून भी नहीं मिलता. पैसे के बिना जरूरतें पूरी नहीं होतीं और पैसे के लिए काम भी करना पड़ता है और न चाहते हुए भी तंग खोलियों में गुजर करनी पड़ती है.

"हमारे जैसे न जाने कितने लो[illegible] छोटीछोटी खोलियों में जीवन व्यती[illegible] रहे हैं. आखिर क्यों? पैसे के लिए [illegible] अपनी जरूरतों के लिए ही तो? यदि [illegible] पैसे के बजाय सुकून की इच्छा होती [illegible] कभी यहां न रहते."

आमिर के तर्क इशरत को खामो[illegible] कर देते, परंतु उसे संतुष्ट न कर पाते[illegible] होते ही खोली की दीवारें उस पर तं[illegible] आरंभ हो जातीं. वह अपने उस दम[illegible] वाले कमरे में लेटी घंटों सोचती रह[illegible] जाने कभी मैं इस अंधेरी कोठरी से [illegible] कर अच्छे से मकान में जा सकूंगी या [illegible] कल जब [illegible] बच्चे होंगे, तब इस खोली की दीवारें [illegible] तंग हो जाएंगी. क्या मैं बच्चों के सा[illegible] रह सकूंगी?'

फिर वह समस्या भी जल्दी ही [illegible] आ गई.

उस दिन सुबह से ही इशरत [illegible] तबीअत कुछ ठीक नहीं थी. उसे चक्क[illegible] आ रहे थे. आमिर की साप्ताहिक छुट्टी [illegible] इसलिए वह घर पर ही था.

दोपहर के समय इशरत को [illegible] उलटियां हुईं तो आमिर चिंतित हो [illegible] गली के ही एक मकान में सरकारी अस्[illegible] में काम करने वाली नर्स रहती थी. उस [illegible] वह भी घर पर ही थी. आमिर उसे [illegible] लाया.

नर्स ने कुछ देर तक जांचपड़ताल [illegible] बाद खुशखबरी सुना दी कि घबराने की [illegible] बात नहीं है. इशरत मां बनने वाली है[illegible]

इस खबर को सुन कर आमिर जि[illegible] प्रसन्न हुआ था, उस से कहीं ज्यादा [illegible] इशरत को हुई थी. मां बनने की खुशी तो [illegible] ही, साथ ही इस बात की भी खुशी थी [illegible] अब उसे अपने मायके शांति नगर जाने [illegible] एक बहाना मिल गया. पुराने विचारों [illegible] लोग थे. उन के यहां यह रिवाज था कि [illegible] बच्चे को लड़की अपने मायके में ही [illegible] देती थी. वैसे भी बंबई में कोई संबंधी न [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ऐसे समय में काम आता.

लगभग छः महीने बाद इशरत अपने वतन लौटी थी. परंतु उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह बंबई में वर्षों रह कर आई हो. 'शांति नगर की खुली फिजा में पहुंच कर उस ने इस प्रकार सुख की सांस ली थी, जैसे कोई पंछी अधिक समय तक पिंजरे में बंद रहने के बाद अचानक आजाद हो कर लेता है. उसे अपना मकान पहले की अपेक्षा अधिक बड़ा और खुलाखुला सा लगा. कितना सुकून महसूस कर रही थी वह. उस का बड़ा सा कमरा, जिस में वह पहले रहा करती थी, खाली पड़ा था.

अपने कमरे को देख कर उस ने सोचा, 'मैं व्यर्थ ही उस अंधेरी सी तंग कोठरी में इतने दिन रही, जबकि यहां यह कमरा खाली रहा. इतने बड़े कमरों के होते हुए उस तंग सी खोली में रहने की क्या जरूरत है?'

उसी वक्त उस ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय किया, 'मैं अब कभी बंबई नहीं जाऊंगी.'

फिर वह दिन भी आया, जब उस ने एक खूबसूरत से बेटे को जन्म दिया. आमिर को इस की खबर भेजी गई तो वह तुरंत भागाभागा बेटे को देखने के लिए चला आया. साथ ही इशरत को भी ले जाना था. परंतु इशरत के फैसले ने उसे हैरान कर दिया.

इशरत ने साफसाफ कह दिया था, "मैं उस तंग और अंधेरी सी कोठरी में नहीं रहूंगी. यदि तुम मुझे बंबई में रखना चाहते हो तो कोई दूसरा मकान तलाश करो, वरना मैं यहीं रहूंगी."

"समझने की कोशिश करो इशरत," आमिर बोला, "तुम जानती हो कि मेरी मासिक आमदनी कितनी है. ऐसी स्थिति में दूसरा मकान किस प्रकार ले सकता हूं? बेकार की जिद से तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा. मैं ने तुम से इसलिए शादी की थी कि मुझे तुम्हारी जरूरत थी. तुम्हें साथ रखने के लिए की थी. इतनी दूर मायके में रखने के लिए नहीं. तुम्हें मेरे साथ चलना होगा."

परंतु इशरत की अपनी जिद थी कि वह बंबई नहीं जाएगी. आमिर उस के रंगढंग देख कर सख्त परेशान था. उस ने इशरत के मांबाप से भी कहा कि वे उसे समझाएं, परंतु इशरत तो किसी की भी सुनने को तैयार नहीं थी. वह घर भर की लाड़ली थी, इसलिए मांबाप ने भी ज्यादा सख्ती न की.

इशरत के पिता ने आमिर से कहा, "तुम अभी कुछ दिनों के लिए इशरत को यहीं छोड़ दो. नई जगह होने के कारण बंबई में अभी उस का दिल नहीं लग रहा है. कुछ दिनों बाद मैं पहुंचा दूंगा."

आमिर अकेला ही बंबई चला गया. समय गुजरता रहा.

हम दो हमारे तीन (और ज्यादा...)

पिछले वर्षों में सरकारी प्रचार के कारण 'हम दो, हमारे दो' का नारा इतना प्रचलित हो गया है कि विभिन्न परिवारों में तीन या चार बच्चों वाले दंपती कुछ शर्म महसूस करते हैं. क्या अधिक बच्चे पारिवारिक सुख में वृद्धि नहीं करते? अधिक बच्चों के कारण उन्हें एकदूसरे का सहारा रहता है. वे मिलबांट कर जीवन जीने की आदत डालते हैं.

इस विषय पर हम उन दंपतियों के विचार जानना चाहते हैं जिन के तीन या अधिक बच्चे हैं.

अपने विचार 31 मार्च 1990 तक भेजिए. यदि सभी बच्चों के एक साथ रंगीन फोटोग्राफ हो तो वह भी भेजिए. प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक दिया जाएगा.

पता है : संपादक
सरिता,
3 ई, झंडेवालान एस्टेट,
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इशरत ने सोचा था कि उसे शांति नगर में पूरा सुकून मिलेगा, क्योंकि वहां उस का बचपन बीता था. वह यहां के वातावरण से परिचित थी. परंतु अब उस का खयाल गलत साबित हो रहा था. शांति नगर के उस शांतिपूर्ण मकान में उसे जो सुकून पहले मिलता था, उस का अब दूरदूर तक पता नहीं था. सब लोगों के बावजूद वह स्वयं को बेहद अकेली महसूस करती. आमिर की जरूरत का तीव्रता से अहसास होता.

जो लोग जिंदगी की जरूरतों से मुंह मोड़ लेते हैं, जरूरतों के कारण हालात से समझौता नहीं करते और सुकून की खोज में निकलते हैं उन्हें कभी सुकून नहीं मिलता. इशरत भी अपनी जरूरतों को भुला कर सुकून की तलाश में शांति नगर आ गई थी. लेकिन अब भी उसे सुकून नहीं मिल रहा था.

रात की तनहाइयों में उसे आमिर की जरूरत तीव्रता से महसूस होती. उस का जी चाहता कि वह तुरंत आमिर के पास चली जाए. परंतु उस की याद आते ही वह गंदी चिपचिपी गली और तंग सी कोठरी भी याद आ जाती. पानी भरती, कपड़े धोती, एकदूसरे को गंदीगंदी गालियां देती औरतें और न जाने क्याक्या याद आ जाता. उस खयाल से उस का जी घबरा जाता और उसे उलझन होने लगती.

उसे मायके में रहते हुए एक वर्ष बीत गया. उस के पास आमिर के पत्र आतेरहते थे, जिन में वह उसे बंबई आने के लिए लिखता. साथ ही खर्च के लिए रुपए भी भेजता. लेकिन इशरत हर बार इनकार लिख देती.

ऐसी बात नहीं थी कि उसे शांति नगर के उस घर में पूरी शांति मिल रही थी. सुकून कहीं नहीं था. यहां भी नहीं, वहां भी नहीं. कभीकभी उस का जी चाहता कि वह आमिर के पास चली जाए, लेकिन फिर वह अपना फैसला बदल देती. अजीब सी बेचैनी थी. वह आमिर के पास भी रहना चाहती थी और बंबई भी नहीं जाना चाहती थी. उधर आमिर शांति नगर नहीं आ सकता क्योंकि वहां उस के लिए काम नहीं था. न हो तो पैसा भी नहीं मिलता और इन की आवश्यकताएं पूरी नहीं होतीं. अ सी समस्या थी, जिस का हल इशरत समझ में नहीं आ रहा था.

प्रयत्न करने से हर समस्या समाधान मिल जाता है. जरूरत की वस्तु न मिले तो इनसान चुप नहीं रह बल्कि दूसरी वस्तु से जरूरत पूरी करत है.

आमिर ने इशरत को खत लिखा,

प्रिय इशरत,

लगता है, तुम्हें मेरी कोई आवश्यक नहीं है, तभी इतने दिन गुजर जाने पर तुम एक बार भी यहां आने को राजी न हुईं. लेकिन मैं इतना अवश्य कहूंगा कि तु चाहे मेरी आवश्यकता हो या न हो, तुम्हारी आवश्यकता थी, इसी लिए मैं तुम से शादी की थी. मैं अपने जीवन खालीपन समाप्त करना चाहता था.

परंतु शादी होने के बाद भी मैं अके हूं, मुझे आज भी पत्नी की जरूरत है. ए साथी की आवश्यकता है, इसलिए मैं दूस शादी कर रहा हूं.

इशरत, मुझे दूसरी शादी करने शौक नहीं है, बल्कि यह मेरी मजबूरी मेरी जरूरत बन गई है. आशा है, तुम्हें पर एतराज नहीं होगा क्योंकि मैं तु तुम्हारी जरूरत के लिए रुपए बराब भेजता रहूंगा.

मैं एक बार फिर कहूंगा कि मुझे दूस शादी का कोई शौक नहीं है, मैं सिर्फ पत्नी चाहता हूं. कोई भी हो. यदि तुम अब भी यह आने पर राजी हो जाओ तो मैं दूसरी शा नहीं करूंगा. आगे तुम्हारी इच्छा है.

पत्र पढ़ कर इशरत का दिमाग चक गया. एक अजीब सी बेचैनी पैदा हो ग कोई जैसे उस से कह रहा था, 'हर इनसा की कुछ आवश्यकताएं होती हैं. पति क पत्नी की और पत्नी को पति की जरूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है. यह प्रकृति का नियम है. क्या तुझे आमिर की जरूरत नहीं है? क्या तेरे बेटे को बाप की जरूरत नहीं है.

'तू ने अब तक अपनी इच्छाओं को दबाया है. परंतु कब तक तू उन से मुंह मोड़ सकती है? तू ने आमिर की ओर कभी ध्यान नहीं दिया है. उस की भी कोई जरूरत है या नहीं? तू अपनी इच्छाओं को दबा सकती है, लेकिन आमिर पुरुष है, वह कब तक अपनी इच्छाओं को रोक सकेगा?

'अब भी समय है, तू आमिर के पास चली जा. यहां रह कर तुझे कुछ नहीं मिलेगा. मांबाप सारी आवश्यकताएं पूरी नहीं कर सकते.'

उसी पल इशरत ने फैसला किया कि इस से पहले कि आमिर दूसरी औरत ले आए, वह आमिर के पास पहुंच जाएगी क्योंकि उसे भी आमिर की जरूरत है.

गाड़ी एक झटके से रुक गई. बंबई का स्टेशन आ गया था. शाम हो चुकी थी और बिजली की रोशनी में स्टेशन की आभा देखने योग्य थी.

स्टेशन से निकल कर इशरत टैक्सी में बैठ गई और उसी गंदी और चिपचिपी गली और तंग सी खोली की ओर चल पड़ी, जिस से उसे सदा ही नफरत रही थी. परंतु जरूरत इनसान से सब करवा लेती है. यह जरूरत ही तो थी, जो वह अपना शांति नगर का लंबाचौड़ा पुरसुकून मकान छोड़ कर उस तंग सी खोली में रहने के लिए जा रही थी.

आमिर घर पर ही मिल गया. इशरत को देख कर वह हैरान रह गया. फिर उस ने शिकायतों की बौछार सी कर दी, "इशरत, क्यों आई हो यहां? बोलो क्या जरूरत थी आने की? तुम्हारी सारी जरूरतें तो पूरी हो रही थीं, फिर तुम यहां क्या लेने आई हो? इस तंग सी खोली में तुम कैसे रहोगी? इस छोटे से घर में तुम्हारा दिल कैसे लगेगा?"

इशरत कुछ देर सिर झुकाए सुनती रही, फिर बोली, "मुझे माफ कर दीजिए. मैं भूल गई थी, विवाहित स्त्री का वास्तविक घर तो उस के पति का घर ही होता है. पति से दूर रह कर उसे कभी शांति नहीं मिलती.

"तुम्हारा यह घर छोड़ कर मुझे कभी सुकून नहीं मिला, न जाने इतने दिन मैं किस प्रकार सहन करती रही. शायद इसलिए कि मुझे इस गली, इस तंग सी खोली से घृणा थी. इसी घृणा के कारण मैं ने तुम्हारी जरूरतों का भी खयाल न किया और अपनी आवश्यकताओं से भी मुंह मोड़े रही." उस की आंखों में आंसू आ गए. भरे गले से बोली, "लेकिन तुम्हारे पत्र ने मेरी आंखें खोल दी हैं."

इतना कह कर उस ने अपने छोटे से मकान में चारों ओर निगाह दौड़ाई. उसे ऐसा लगा, जैसे उस अंधेरे से कमरे में रोशनी ही रोशनी फैल गई हो. ●

सुंदरता की कसौटी

यह बात शायद ही किसी ने सोची हो कि विभिन्न प्रकार की बीमारियां देने वाला मोटापा भी कभी नारी के सौंदर्य का मानदंड बन सकेगा. उगांडा के 'वाबिओ' नामक स्थान पर पत्नियों में मोटा करने की प्रथा सदियों से चली आ रही है. इस स्थान पर मोटापा ही सौंदर्य का चिह्न माना जाता है. जो कन्या जितनी अधिक मोटी होगी, समाज में भी उस का उतना ही सम्मान होगा.

यहां प्रति तीन मास में प्रत्येक स्त्री का वजन किया जाता है. जो स्त्री सब से अधिक भारी होती है, उस का सम्मान किए जाने के अतिरिक्त उस की सेवा के लिए सात खूबसूरत दुबलीपतली एवं कुंआरी लड़कियां नियुक्त की जाती हैं.

महिलाओं में यह अंधविश्वास भी है कि अगर काले मुंह के बंदरों के गालों का चुंबन लिया जाए तो मोटापा जल्दी आता है. इस के लिए महिलाएं बंदरों को भी पालती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली होली

(पृष्ठ 82 का शेषांश)

जाता था और शाम को लौटता था. उस दिन वह शाम से गायब थी. सारा घर ढूंढ़ मारा. श्याम ने अलग खिजा दिया था. सब परेशान कि कहां गायब हो गई, रात बारह बजे रोने की आवाज आई तो सब दौड़े. देखा, अनाज के बोरों पर चढ़ी सो रही थी. मच्छरों ने काटा, भूख से आंतें कुलबुलाईं तो रोना आ गया. दादी ने उतारा, खाना खिलाया, अपने साथ सुलाया, तब कहीं शांत हुई. ऐसे दिन बीत रहे थे. इसे घर भर का लाड़दुलार मिल रहा था."

अम्मां ने ठंडी सांस भरी, "तभी आई पहली होली. श्याम तो नन्ही भौजी से जम कर होली खेलने को उतावला फिरता था. होलिका दहन के दूसरे दिन हमारे यहां 10-15 लोगों का न्योता था. हम सब रसोई बनाने में जुटे थे. जैसे ही यह सो कर उठी कि हुड़दंग आरंभ हो गया. चचेरी ननदें पिल पड़ीं पर यह तो सब से जूझ रही थी. तमाशा देखने मर्द भी बैठक के दरवाजे से झांकने लगे.

"छीनाझपटी में इस की साड़ी तारतार हो गई. हम सब कह भी रहे थे कि बस करो, छोड़ दो बेचारी को, पर कौन सुनता. ऊपर खिड़की से राम भी मजा ले रहा था, चुपकेचुपके बेचारी नन्ही सी जान कैसे जीत पाती इतने लोगों से. लोटा भरती तो पकड़ कर उस पर ही उड़ेल देते. गुलाल झपटती तो उसी के हाथों इसी के गालों पर रगड़ देते, मटके का ठंडा पानी डालडाल कर इसे कंपा दिया. यह किसी को न भिगो पाई और न गुलाल लगा पाई, इस से खिसिया कर लड़ने लगी.

"तभी न जाने कहां छिपाए रखा काला गाढ़ा रोगन दोनों हाथों में मल कर श्याम ने इस के पूरे मुंह पर पोत दिया. इस की काली सूरत देख कर सब ननदें ताली पीटपीट कर हंस रही थीं. खिसिया कर इस ने पीतल की बालटी से नीला रंग भरा और श्याम पर डालने दौड़ी तो उस ने पूरी बालटी ही उठा कर इस पर उलट दी. यह अकबका गई, लोटा हाथ ही में भरा रह गया. यह पुनः झपटी तो श्याम बाहर की ओर भागा और हंस कर जैसे ही अपनी जीत पर झूमा, इस का लोटा ठीक उस के माथे पर लगा जा कर. पीतल का धारदार भारी लोटा, श्याम का माथा फोड़ता दूर जा पड़ा. चीखते हुए वह सिर के बल गिरा और खून की धार बहने लगी."

अम्मां ने आंसू पोंछे."सब उधर दौड़े. उठाया तो श्याम बेसुध. घर में कुहराम मच गया. दालान में उसे लिटाया. पानी छिड़का पर होश कहां? तभी क्रोध से सुर्ख चेहरा लिए राम नीचे आया और बिना यहांवहां देखे चटाचट चांटे, थप्पड़ सुनयना पर बरसाने लगा. इस ने चीखचीख कर रोना शुरू कर दिया. जब तक हम दौड़े, राम इस की कमर में लात मार कर बाहर भागते हुए बोला, 'जब तक यह बिल्ली इस घर में रहेगी, मैं घर नहीं आऊंगा. कहां की जंगली गंवार लड़की ले आए घर में. अगर मेरे श्याम को कुछ हो गया तो मैं इस का गला घोंट दूंगा.'

"जैसेतैसे दो घंटे बाद श्याम को होश आया. दादी तो इस से एकदम चिढ़ गई. सारा घर कुपित था. मैं ने जैसेतैसे इसे उठाया और कमरे में पहुंचाया और कपड़े दिए कि बदल ले. परंतु यह थी कि चुप होने का नाम ही न ले. रोरो कर आंखें सुजा लीं. न नहाई, न कपड़े बदले, न मुंह में अन्न और जल डाला. बस रोरो कर बेहाल होती रही. हम इतना परेशान श्याम से नहीं हुए जितना इस से हो गए. मर्दों ने डांटा. हम ने फुसलाया, पर इस का रोना दो दिन तक बंद न हुआ. उधर राम सत्याग्रह किए पड़ा था पड़ोस में कि जब तक यह घर पर रहेगी वह घर में कदम नहीं रखेगा. हार कर तीसरे दिन जैसी थी वैसी ही इसे मायके भेज दिया."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनयना सिर झुकाए चुपचाप सुन रही थी. श्याम हंस रहा था.

"सच में समधिन, वह काला रंग जब मिट्टी का तेल लगा कर हम ने धोया तो इस के पूरे गाल छिल गए थे. आंखों तक नील पड़े थे. दामाद के हाथों ने इस के गाल सुजा दिए थे. भूखप्यास ने इसे अधमरा कर दिया था. पूरा महीना भर बीमार रही. ससुराल का नाम लेते ही कांपकांप जाती." सुनयना की मां बोली.

तभी श्याम ने जैसे रहस्योदघाटन किया, "अम्मां, उस दिन एक गलती मुझ से और हो गई थी. मैं ने अपने दोस्त के यहां से आधा लोटा भांग ला कर चुपके से भाभी को फुसला कर धोखे से पिला दी थी और कह दिया था कि किसी को न बताए."

"अरे, यह तू ने अब तक क्यों नहीं बतलाया?" अम्मां आंख तरेर कर बोलीं.

"सब के डर से चुप्पी साध गया था. तब मुझे क्या मालूम था कि भांग पीने से क्या होता है?"

"बड़ा दुष्ट है तू. तभी तो यह रोए जा रही थी. जिद पकड़े थी. हद कर दी. आज बता रहा है."

"अब मैं क्षमा मांगता हूं भाभी से. क्यों भाभी, क्षमा किया न? अब तो होली पर लोटा फेंक कर ऐसा दूसरा तिलक नहीं लगाओगी न?"

"पर तुम भी एक वचन दो कि मुझे कभी धोखे से भांग नहीं पिलाओगे." सुनयना हंस कर बोली तो सब खिलखिला पड़े.

"अच्छा समधिन, कब विदा की तारीख निकलवा रही हो? अब, तो पता लग गया कि मेरी बेटी निर्दोष है." सुनयना की मां ने कहा.

"यह तो मर्दों से पूछे बिना मैं कैसे कह दूं? फिर राम तो इस के नाम से ही चिढ़ता है, नहीं तो अब तक बहू क्या मायके में पड़ी रहती?"

सुनयना के नेत्र भर आए. तभी गंभीर स्थिति देख कर श्याम बोला, "अम्मां, मैं भाभी को मेला घुमा लाऊं, तब तक तुम भाभी के अम्मां, बाबू को घर के मर्दों से मिला दो."

"हम भी चलें, भैया?" बहनें बोलीं.

"नहीं, तुम सब यहीं रहो." वह हाथ पकड़े सुनयना को घसीटता हुआ मेले से बाहर ले आया.

"मुझे यहां कहां ले आए? मेला तो पीछे छूट गया."

"चलो, अपने डेरे पर बैठें चल कर. वहां इतमीनान से बातें होंगी. वह सामने ही रहा."

वह ऊबड़खाबड़ रास्तों से होता हुआ तंबू के द्वार पर जा पहुंचा.

सुनयना ने देखा, भीतर कोई द्वार की ओर पीठ किए लाल बस्ता फैलाए सरकारी काम निबटा रहा है. श्याम आगे बढ़ा फिर उस का हाथ पकड़ कर घसीटता हुआ बोला, "भीतर आ जाओ न."

सुनयना घबराई सी उधर देख ही रही थी कि श्याम पुनः बोला, "भैया देखो, कौन आया है?"

"कौन है श्याम?"

"अब तुम सिर घुमा कर देख लो कि कौन है?"

जैसे ही युवक ने मुख घुमाया, सुनयना लरज कर रह गई. सहसा मुख डूबते हुए सूर्य सा सिंदूरी हो उठा. भय और लाज ने उस के पांव जड़ कर दिए थे. शायद राम का भी यही हाल था, परंतु लज्जा, कौतूहल से उबरने का एक ही तो रास्ता बचा था, "कौन है यह श्याम? क्या काम है, मुझ से?"

"अब यह तो तुम इन्हीं से पूछ लो नाम और काम. तब तक मैं दौड़ कर मिठाई, नमकीन लेता आऊं. और हां, तब तक मेरी धरोहर की रक्षा करना, जब तक मैं लौट कर न आऊं."

मेले में घंटे भर इधरउधर घूमते हुए वह भाभी के और अपने मांबाप तथा कुछ अन्य संबंधियों के विचार सुनता रहा. सब राम की राय पर बात अटका रहे थे कि उस की हां या न पर ही गौना हो सकता है.

फिर श्याम दोना भर ताजे रसगुल्ले, जलेबी और गरमगरम समोसे ले कर तंबू में पहुंचा. द्वार पर पर्दा डला था. इस से वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर से ही बोला, "भैया."

"अंदर आ जाओ, श्याम."

वह शान से अकड़ता हुआ अंदर दाखिल हुआ, "भैया, यह मिठाई लाया हूं...बढ़िया रसगुल्ले." वह दोने रख कर फर्श पर बैठ गया. भाभी पर दृष्टि पड़ते ही श्याम हंस पड़ा.

फिर भैया राम की आंखों को देख कर सिर हिला कर बोला. "भैया, यह रसगुल्ले खिला दो आप भाभी को. इस में तो कोई हर्ज नहीं है...और भौजी, इन में भांग भी नहीं मिली. भई, मेहमान हो हमारी, मुंह तो मीठा करना ही पड़ेगा. रही भैया की पसंदनापसंद की बात तो कौन तुम्हें उन के गले मढ़ रहा है."

"शैतान," राम ने उस के कान पकड़ कर खींच दिए.

श्याम ने रसगुल्ला उठा कर सुनयना के मुंह में जबरदस्ती ठूंस दिया. तभी सुनयना की झुकीझुकी आंखों से ढेर से अश्रु बरस पड़े. उस ने चौंक कर भैया की ओर देखा उन के भी नेत्र भीगे से लगे.

"अरे, क्या फिर भाभी की पिटाई कर दी, भैया." श्याम बोला, "इन्होंने मुझे वचन दिया है कि इस बार होली में लोटा फेंक कर मुझे नहीं मारेंगी और न मैं इन्हें लोटा भर भांग पिलाऊंगा.

" भाभी, रो मत. चलो, तुम्हें अम्मां के पास पहुंचा आऊं, मेरे भैया नायब तहसीलदार क्या हो गए अपनी शान ही दिखा रहे हैं."

"बंद कर बकबक," राम ने रसगुल्ला उठा कर पहले उस के मुंह में ठूंसा फिर सुनयना के.

अब सुनयना कहां पीछे रहती. छलकती आंखों और हंसते अधरों से सराबोर उस ने लपक कर एकएक रसगुल्ला दोनों भाइयों के मुंह में ठूंस दिया.

"यह हुई न बात. क्यों भैया, बात पक्की?" श्याम बोला.

"हां रे, पक्की."

"हुर्रे..." श्याम दौड़ता हुआ तंबू से बाहर निकल गया. ●

कटूक्तियां

शास्त्रीय संगीत के बारे में हम इंतजार ही करते रह जाते हैं कि वह एक सुर में बंधेगा.

*

किसी ऐसे व्यक्ति के लिए सिफारिशी पत्र लिखना एक समस्या है, जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं.

*

कथा साहित्य में सब से दिलचस्प यह सूचना होती है कि उस के सभी पात्र काल्पनिक हैं.

*

अगर आप को यह विश्वास है कि वह अच्छाई और बुराई में कोई फर्क नहीं मानता तो घर से उस के जाते ही अपनी चम्मचें जरूर गिन लें.

*

निकटता से घृणा और बच्चे पैदा होते हैं.

*

सामान्यतः लेखक सचाई को अपना सब से कीमती धन समझते हैं. इसी लिए वे उस का कंजूसी से प्रयोग करते हैं.

*

अपने पड़ोसी को प्यार करो और अपने दुश्मन को भी प्यार करो क्योंकि आमतौर पर वे दोनों एक ही होते हैं.

*

भारत एक अल्पविकसित देश हो या न हो, उस पर अल्पविकसित दिमागों का शासन जरूर रहा है.

*

एक अनुबंधपत्र की पहली शर्त—नीचे लिखी सारी शर्तों को बिना पढ़े स्वीकार करना पड़ेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ रिहाई

निर्मात्रीनिर्देशिका : अरुणा राजे
संगीत : शारंगदेव
मुख्य कलाकार : विनोद खन्ना, हेमा मालिनी, नसीरुद्दीन शाह, नीना गुप्ता, रीमा लागू और इला अरुण.

यह फिल्म न तो पैसा बनाने के लिए बनाई गई है, न यह कला फिल्म है. इस का उद्देश्य तो मात्र विवाहेतर संबंधों की नई व्याख्या करना है. तभी हेमा मालिनी जिस ने धर्मेंद्र से गैरकानूनी विवाह किया और नीना गुप्ता जिस ने अपने बच्चे के पिता का नाम तक नहीं बताया, ने इस फिल्म में खासी रुचि ले कर काम किया है. विनोद खन्ना भी रजनीश के मुक्त यौन आंदोलन से प्रभावित रहा है, इन लोगों ने साबित करने की कोशिश की है कि शारीरिक भूख नैसर्गिक है और यह पति के प्रति बेवफाई का कोई प्रमाण नहीं है.

यह बात आसानी से गले उतरने वाली नहीं है और निर्मात्रीनिर्देशिका इस बात को जानती थीं. पर फिर भी उस ने इसे अपनी बात कहने का माध्यम रखा है.

इस फिल्म की कहानी गुजरात के एक गांव की है. अमरजी (विनोद खन्ना) अपने पांचछः पुरुष साथियों के साथ बंबई में काम करने जाता है और गांव में सिर्फ औरतें और बूढ़े खेतीबाड़ी करने के लिए रह जाते हैं. एक दिन गांव में एक युवक मनसुख (नसीरुद्दीन शाह) दुबई से वापस लौटता है. वह मनचला युवक गांव की जवान औरतों के दिलदिमाग पर छा जाता है. तीनचार औरतों के साथसाथ अमरजी (विनोद खन्ना) की पत्नी टकूबाई (हेमा मालिनी) भी उस के जाल में फंस जाती है और गर्भवती हो जाती है. कुछ समय बाद गांव के पुरुष वापस गांव लौटते हैं. अपनी पत्नी के पेट में पराए पुरुष का बच्चा! यह जानते ही अमरजी बौखला जाता है. टकूबाई पर बच्चा गिराने का दबाव डाला जाता है परंतु वह बच्चा गिराने को राजी नहीं होती. यह बात जब गांव में फैलती है तो गांव के पुरुष पंचायत बुलाते हैं और टकूबाई को गांव छोड़ने पर मजबूर करते हैं. इस बात पर गांव की सभी औरतें एकजुट हो जाती हैं और अपनेअपने पतियों को लताड़ती हैं कि जब वे शहर में दूसरी औरतों के साथ रंगरेलियां मनाते हैं तो उन्हें क्यों नहीं चरित्र का खयाल आता. अमरजी को अपनी पत्नी की बातों में सचाई नजर आती है और वह उसे माफ कर देता है.

महिलाओं की तरफदारी करने वाली इस फिल्म में नायिका के मुख से यह भाषणबाजी कराई गई है कि उस के गर्भ में पलने वाला बच्चा उस का अपना खून है, भले ही उस का बाप कोई और है. इस के अलावा इस बात पर भी जोर दिया गया है कि औरत अगर गलती से या भावावेश में आ कर किसी परपुरुष से संसर्ग कर लेती है तो उस के पति को उसे माफ कर उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परपुरुष' को जन्मने को स्वीकार कर लेना चाहिए. निर्देशिका ने पूरे गांव की औरतों को एक परपुरुष में रुचि लेते दिखाया है. कोई तो गांव में ऐसी स्त्री दिखाई जाती जिसे 'शरीफ' कहा जा सके.

मध्यांतर से पहले के आधे भाग में निर्देशिका ने गांव की कई औरतों और मनसुख के सेक्स प्रसंग दिखाएं हैं तो मध्यांतर के बाद दूसरे भाग में गांव के पुरुषों द्वारा बंबई शहर में वेश्यागमन करते दिखाया है. और तो और शहर में अमरजी पर उस की एक पड़ोसन किशोरी आसक्त हो जाती है और वह अमरजी से सिर्फ एक बार संसर्ग करने का आग्रह करती है क्योंकि अगले दिन उस की शादी होने वाली होती है. निर्देशक का मंतव्य सेक्स की भूख को सामान्य घोषित करना, जिस से पुरुष और स्त्री दोनों बराबरी से पीड़ित हैं. इस दौरान फिल्म में स्त्रीपुरुष संबंध खुल कर दिखाए गए हैं पर वे अश्लीलता की सीमा के अंदर हैं.

इस फिल्म ने जो कहना चाहा है वह परिवार परंपरा के विरुद्ध है. इस से हानि औरत को ही होगी. पुरुष दूसरे के बच्चे को कभी स्वीकार नहीं करेगा. औरतें भी सौतेले बच्चों को तब ही स्वीकार करती हैं जब पति उन के लिए खर्च दे. जब खर्च भी पुरुष को देना हो, संरक्षण भी, तो कौन दूसरे पुरुष के बच्चे को पालेगा?

इस नीति से अनैतिकता फैले या न फैले, परिवार टूट जाएगा. और परिवार टूटेगा तो समाज टूटेगा. लेकिन निर्मात्री-निर्देशिका या पात्रों को इस से लेनादेना नहीं. उन के अपने पारिवारिक जीवन तो गड्डमड्ड हैं ही, वे दूसरों को भी उसी राह पर चलने के लिए प्रेरित क्यों न करें.

फिल्म का छायांकन साफसुथरा व अच्छा है. अभिनय की दृष्टि से हेमामालिनी, रीमा लागू और नीना गुप्ता का अभिनय खासा अच्छा है. रीमा लागू ने कामपीड़ित युवती की भूमिका अच्छी तरह निभाई है. यह अवश्य है कि फिल्म जल्दी में बनाई गई है और रीटेक कम हुए हैं. कुछ दृश्यों में हेमा, नीना और रीमा तीनों के अभिनय बनावटी लगते हैं. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म में चार गीत हैं. चारों में से कोई चलने वाला नहीं. संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि खासकर औरतों के लिए बनाई गई यह फिल्म, औरतों को ही पसंद नहीं आएगी. हां, पुरुषों को थोड़ीबहुत (सैक्सी दृश्यों की वजह से) जरूर पसंद आए.

★ आवारगी

निर्माता : पी. रघुनाथन
निर्देशक : महेश भट्ट
संगीत : अन्नू मलिक
मुख्य कलाकार : अनिल कपूर, गोविंदा, मीनाक्षी शेषाद्रि, अनुपम खेर, परेश रावल, अवतार गिल तथा सतीश कौशिक.

महेश भट्ट मानवीय संवेदनाओं के बारे में अपने बिलकुल स्वतंत्र एवं क्रांतिकारी दृष्टिकोण के लिए विख्यात हैं. इस फिल्म के दो पहलू हैं. पहला है मानवीय संवेदनाओं पर आधारित प्रेम त्रिकोण तथा दूसरा गैंगवार अर्थात गिरोह युद्ध. प्रेम त्रिकोण वाले हिस्से में महेश भट्ट की निर्देशकीय प्रतिभा के दर्शन आसानी से हो जाते हैं परंतु गिरोह युद्ध वाले हिस्से में वह मात खा जाते हैं. इस का एक कारण यह भी हो सकता है कि महेश भट्ट ने आजकल आवश्यकता से अधिक फिल्में हाथ में ले रखी हैं.

आजाद (अनिल कपूर) एक सरगना लाला (अनुपम खेर) के लिए काम करता है. वह मीना (मीनाक्षी शेषाद्रि) को कोठे से छुड़ाता है तथा उसे बहुत बड़ी गायिका बनाने के प्रयत्न शुरू कर देता है. परंतु मीना को कोठे से छुड़ाने के चक्कर में उस की एक अन्य सरगना भाऊ (परेश रावल) से दुश्मनी हो जाती है. इस बीच मीना को धीरेन (गोविंदा) से प्यार हो जाता है. परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म 'आवारगी' में मीनाक्षी शेषाद्रि : साधारण अभिनय.

आजाद भी उस से प्यार करता है. आजाद के कारण लाला भी भाऊ से भिड़ जाता है. अंत में आजाद मीना को बचाने के लिए भाऊ को मार देता है तथा उस का हाथ धीरेन के हाथ में दे कर स्वयं भी मर जाता है.

प्रेम त्रिकोण पर बनी अधिकतर फिल्में 'कौन अधिक त्याग करेगा' की घटिया प्रतियोगिता बन कर रह जाती हैं परंतु इस फिल्म में तीनों किरदार दिल से नहीं, दिमाग से काम लेते हैं. वे मद्रासी शैली में एकदूसरे के लिए त्याग की होड़ में शामिल न हो कर अपनाअपना प्यार पाने के लिए लड़ते हैं. यही वास्तविकता के अधिक निकट भी है.

आजाद व मीना की सगाई पार्टी से ले कर आजाद द्वारा उस की पिटाई वाले हिस्से पर महेश भट्ट के निर्देशन की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है. यही फिल्म का सब से चमकदार हिस्सा भी है.

परंतु गिरोह युद्ध वाला हिस्सा खासा कमजोर है. अपराधी वर्ग की दुनिया के खौफ व कालेपन को दर्शकों तक संप्रेषित करने में निर्देशक असफल रहा है.

अन्नू मलिक की सभी धुनों का उत्कृष्ट स्तर देख कर आश्चर्य हुआ. विशेषत: शीर्षक गजल व एक अन्य गीत 'बाली उम्र ने मेरा हाल...' कर्णप्रिय हैं.

मीनाक्षी शेषाद्रि के रोल में बहुत संभावनाएं थीं परंतु अफसोस की बात है कि उस का अभिनय बेहद असंतोषजनक है.

अनिल कपूर व गोविंदा की पहचान अब व्यावसायिक सिनेमा के सक्षम कलाकारों के रूप में बन गई है. दोनों ने अपनी पहचान कायम रखी है. अन्य कलाकारों का अभिनय भी अच्छा कहा जा सकता है.

O विद्रोही

निर्माता : विजयसिंह सेंगर व आशीषसिंह
निर्देशक : हरमेश मलहोत्रा
संगीत : रवींद्र जैन
मुख्य कलाकार : शत्रुघ्न सिन्हा, पूनम ढिल्लो, रंजीत, सोनिका गिल और अमरीश पुरी.

'डाकू' विषय पर बनी यह एक तीसरी श्रेणी की फिल्म है, जो कई सालों तक रुकी रहने के बाद प्रदर्शित हो पाई है. ऐसी फिल्मों में सिवा बदले की कहानी के कुछ नहीं होता. 'विद्रोही' में भी नायक और नायिका अपना बदला लेते हुए दिखाई देते हैं.

फिल्म की कहानी इतनी सी है कि डाकू नागसिंह (अमरीश पुरी) का भाई भूपसिंह (रंजीत) किरन (पूनम ढिल्लो) के मातापिता व बहन तथा देवेंद्रप्रताप सिंह (शत्रुघ्न सिन्हा) के पिता को जान से मार डालता है. एक मोड़ पर नायकनायिका आपस में टकराते हैं. दोनों का लक्ष्य होता है, उन डाकुओं को खत्म करना. दोनों मिल कर डाकुओं का सफाया कर देते हैं.

फिल्म की कहानी तो घिसीपिटी है ही, निर्देशन में भी दम नहीं है. 'नगीना' और 'निगाहें' में निर्देशन के झंडे गाड़ने वाले हरमेश मलहोत्रा ने इस फिल्म में घटिया निर्देशन दिया है. तकनीकी दृष्टि से भी फिल्म बेकार है. अभिनय की दृष्टि से भी कोई कलाकार प्रभावित नहीं करता. रवींद्र जैन के गीतसंगीत में भी दम नहीं है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

25, 165, एम.ए., सुंदर, बैस राजपूत कन्या हेतु सजातीय वर. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6442, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 28, 160, एम.ए., बी.एड., प्राइवेट राशि..., [illegible] कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6443, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 150 सें.मी., बी.ए., गृहकार्य में निपुण, बंगाली कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6444, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज वैश्य, 22 वर्षीया, 167 सें.मी., बी.ए., गोरी, स्मार्ट, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवार की कन्या हेतु सजातीय, अग्रवाल या वैश्य उपजाति के सुस्थापित, स्वावलंबी, सुयोग्य वर चाहिए. उच्च व्यवसायी को प्राथमिकता. उत्तम विवाह. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6445, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, यू.पी., सरयूपारीण ब्राह्मण, गोरी, स्मार्ट, उच्च परिवार, डिप्लोमा टेलरिंग, इंटीरियर डेकोरेशन, कोसमोटोलोजी, कुकरी, टेलरिंग, टेलीफोन आपरेटर, रिसेप्शनिस्ट का ज्ञान एवं टाइपिंग और शार्टहैंड, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित एवं कुंडली भेजें. लिखें: वि.नं. 6460, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, 155 सें.मी., सुंदर, सारस्वत ब्राह्मण, स्नातक कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6547, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत ठाकुर, 38 वर्षीया, एम.ए., बिहार के प्रतिष्ठित परिवार कन्यार्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6548, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मंगल गोत्र, बीसा अग्रवाल, 22 वर्षीया, 163 सें.मी., मैट्रिक, सुशील, सुंदर, गोरी, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6549, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 152 सें.मी., बी.ए. अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष, सुशील, राजपूत कन्यार्थ सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 6550, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम.ए., बी.एड., अविवाहित, शिक्षिका हेतु कार्यरत वर चाहिए. सजातीय, अविवाहित को प्राथमिकता, संतानहीन विधुर भी विचारणीय. लिखें: वि.नं. 6551, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 160 सें.मी., उत्तरप्रदेशीय, ब्राह्मण सुंदर, ब्रिटेन की स्थायी नागरिकता प्राप्त कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6552, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 27, 156 सें.मी., एम.ए., बी.एड., संभ्रांत परिवारीय, सुंदर कन्याहेतु सुयोग्य वर चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर, आफिसर को वरीयता. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6553, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24, 155, एम.ए. फाइनल, प्रतिष्ठित परिवार, गृहकार्य, सिलाईकढ़ाई निपुण, मधुर स्वभाव, गेहुआं रंग, सुंदर कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6554, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 155 सें.मी., स्नातक, अग्रवाल जैन, सुंदर, इकहरी, घरेलू, तलाकशुदा (नपुंसकता के कारण) कन्या हेतु सुस्थापित वर. निस्संतान विधुर स्वीकार्य. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6555, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 26, 160, एम.ए., समाजशास्त्र, गृहकार्य, सिलाई,बुनाई में दक्ष, कन्या हेतु स्वजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6556, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौरवर्ण, सरयूपारी शांडिल्य गोत्र, ब्राह्मण, 21, 162, 52, बी.एससी., सुशील, घरेलू कन्या के लिए सिर्फ सजातीय, सरयूपारी, सेवारत वर चाहिए. पिता उच्च पब्लिक सेक्टर अधिकारी. विज्ञापन सयोग्य वर चयन हेतु, कृपया पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6557, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 163 सें.मी., एम.ए., दूरसंचार में कार्यरत, आय 2,000/-, स्मार्ट, एवं 23 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., वैश्य कन्याओं हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6558, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत वैस, 23, 160 सें.मी., एम.फिल., जुलोजी, गौरवर्णीय, अति सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, लड़की हेतु वर चाहिए. दहेजइच्छुक क्षमा करें. लिखें: वि.नं. 6559, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज भरद्वाज, सुंदर, एम.ए., 24, 153 सें.मी., एम.फिल. अध्ययनरत कन्या हेतु ब्राह्मण वर चाहिए. गुजरात, राजस्थान, म.प्र. को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6560, सरिता, नई दिल्ली-110055.

म.प्र. निवासी, माहेश्वरी, 23, 161 सें.मी., 48, एम.एससी. (गणित), बी. म्यूज., आकर्षक व्यक्तित्व, साफ रंग, हेतु योग्य वर चाहिए. समकक्ष जाति भी स्वीकार्य. शीघ्र विवाह. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6561, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 158, 2,700/-, एम.ए., पीएच.डी., व्याख्याता (स्कूल) व 28, 152, 1,600/-, एम.ए., सक्सेना कन्याओं हेतु योग्य वर चाहिए. कायस्थ को प्राथमिकता. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6562,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 155, 1,800/-, एम.एससी. (गणित), बी.एड., अध्यापिका, भटनागर कन्या (राजस्थान) हेतु कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6563, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18, जाटव, 152, मैट्रिक, गोरी, सुंदर, ब्रजभाषी, शाकाहारी कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6564, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण ब्राह्मण, 29, 165, 2,000/-, एम.ए., बी.एड., अध्यापनरत, गृहकार्यदक्ष, गौरवर्ण, सुशील कन्यार्थ सुयोग्य, सुस्थापित, सजातीय वर चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. दहेज रहित, उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6565, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 162 सें.मी., एम.ए., बी.एड., सिख अरोड़ा परिवारीय, स्लिम, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुव्यवस्थित, सेवारत, सिख/मोना, शाकाहारी वर अपेक्षित. उत्तम विवाह. दहेज इच्छुक क्षमा करें. लिखें: वि.नं. 6566, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सारस्वत ब्राह्मण, मांगलिक, 21 वर्षीया, 143 सें.मी., एम.ए. अंतिम वर्ष, गृहकार्य में दक्ष, सुशील, गोरी, आकर्षक कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6567, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 23, 158, गेहुआं रंग, सुंदर, बी.ए.एम.एस., कन्या हेतु वर. पिता राजपत्रित अधिकारी, मूलनिवासी पश्चिमी उत्तर प्रदेश. बंगलौर स्थित डाक्टर, इंजीनियर वरीयता. लिखें: वि.नं. 6568, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजरात में रहते कान्यकुब्ज ब्राह्मण, गौरवर्ण, सुंदर, पोस्ट ग्रेजुएट, गृहकार्यदक्ष, 21, 165, 52 कन्यार्थ सजातीय, योग्य वर चाहिए. सविवरण, जन्मपत्री सहित लिखें: वि.नं. 6569, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 152 सें.मी., गौरवर्ण, अति सुंदर, एम.ए., बी.एड., गृहकार्यदक्ष क्षत्री स्वर्णकार, कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., राजपत्रित अधिकारी, मैंढ, महौर स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6570, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½, 156, सरयूपारी, ब्राह्मण, गर्ग गोत्र, एम.काम., बी.एड., सुंदर, स्लिम हेतु सुयोग्य, अधिकारी, सजातीय वर. लिखें: वि.नं. 6571, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, उत्तरप्रदेशीय परिवार, 23, 155, रंग गेहुआं, एम.ए., सोशियोलाजी टीचिंग, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पिता सरकारी अधिकारी. लिखें: वि.नं. 6572, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, एम.ए., 156 सें.मी., सुंदर, गोरी, बीसा अग्रवाल, गोयल गोत्र, तलाकशुदा (शादी के तुरंत बाद) कन्या हेतु वर चाहिए. तलाकशुदा तथा उपजाति वर भी मान्य. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित [illegible] (प्रथम) 1000

लिखें: वि.नं. 6573, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली ब्राह्मण, 25 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु गढ़वाली ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6574, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवारीय, सुन्नी मुसलिम, 36, 168, गौरवर्ण, बी.ए., बी.एड., एम.एड., राजकीय सेवारत अध्यापिका, गृहकार्यदक्ष, सुशील एवं सुंदर कन्या हेतु डाक्टर, मिलिट्री आफिसर, बैंक आफिसर, इंजीनियर, कालिज व्याख्याता, सफल व्यवसायी वर चाहिए. विधुर स्वीकार्य, [illegible] बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6575, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, गोरी, 165, हायर सेकेंडरी, कूर्मि क्षत्रिय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6576, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीय ब्राह्मण, 29, 152 सें.मी., एम.एससी., एम.एड., गौरांग, पूर्वी उत्तर प्रदेशीय, सरकारी सेवारत, 3,000/-, शिक्षित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 6577, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 20, 165, केंद्रीय विद्यालय शिक्षित, बी.एड. अध्ययनरत, गोरी, आकर्षक, सिलाई, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु सेवारत वर चाहिए. भाई अध्ययनरत पीएच.डी., इंजीनियरिंग जापान. लिखें: वि.नं. 6578, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लोहार) एम.एच.एससी., 32, 155 सें.मी., (होम साइंस), एम.एससी., 27, 156 सें.मी., लेक्चरर, एम.एससी., 25, 152 सें.मी., लेक्चरर, कन्याओं हेतु शिक्षित, नौकरीशुदा, व्यावसायिक वर चाहिए. दहेज नहीं. सविवरण लिखें: वि.नं. 6579, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 157, स्नातकोत्तर शांडिल्य गोत्रीय, सुंदर, गृहकार्यकुशल कन्या हेतु सुयोग्य, ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6580, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ 22, 152, जीव विज्ञान स्नातक, स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष अध्ययनरत, गेहुआं रंग, स्वस्थ, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, दहेजविरोधी वर. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6581, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, माहेश्वरी कन्या, 24, 172, 52, इलेक्ट्रोनिक्स डिप्लोमा, भारत सरकार उद्योग में चार अंकीय आय, के लिए सजातीय, सुशिक्षित, आर्थिक रूप से सुस्थापित वर चाहिए. विवाह उत्तम, दहेजलोभी क्षमा करें. अहमदाबाद निवासी को वरीयता. प्रथम बार में पारिवारीक, व्यावसायिक जानकारी अपेक्षित. विज्ञापन उतम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 6582, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, स्वस्थ, सुंदर, नोएडा में कार्यरत, निस्संतान तलाकशुदा हेतु योग्य माहेश्वरी/अग्रवाल वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6583, सरिता, नई दिल्ली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110055.

मैथिल ब्राह्मण, 27, 154, बी.ए. (दिल्ली), बी.एड. (अध्ययनरत) कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6584, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 30, स्टाफ नर्स 2,000/-, एवं 28, लैक्चरर, 2,000/-, सुंदर कन्याओं हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. दहेज नहीं. जन्मपत्री सहित लिखें: वि.नं. 6585, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ (यू.पी.), 29½, 165, 2,900/-, बी.एससी., बैंक सेवारत, सुशील कन्या हेतु बंबई निवासी, शाकाहारी, सेवारत वर चाहिए. दहेज चाहने वाले क्षमा करें. लिखें: वि.नं. 6586, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत, 24 वर्षीया, सुंदर, गोरी, गृहकार्यदक्ष, एम.ए., उत्तर बिहार के प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. श्रेष्ठ चयन हेतु विज्ञापन पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6587, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 170 सें.मी., सुंदर, जाट कन्या एम.ए. फाइनल अध्ययनरत, हेतु वर. इंजीनियर, डाक्टर, राजपत्रित अधिकारी, मुरादाबाद, बिजनौर निवासी को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6588, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय, 20 वर्षीया, 150 सें.मी., स्नातक, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्य, व्यवहारदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र, उत्तम विवाह, सविवरण लिखें: वि.नं. 6589, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, बी.एससी., बी.एड., सारस्वत ब्राह्मण, पंजाबी, सेंट्रल स्कूल अध्यापिका कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.ए., बी.एड., विधवा, 26, 155, सुंदर (साथ एक पांच वर्षीय पुत्र), प्रतिष्ठित परिवार, वैश्य हेतु वर, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6591, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती ब्राह्मण, 31 वर्षीया, 148 सें.मी., 3,000/-, रुपए, बैंक सेवारत कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6592, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर, 23 वर्षीया, 163 सें.मी., बिहार निवासी, स्नातक, सुशील, गृहकार्यदक्ष, कायस्थ कन्यार्थ सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6593, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 160 सें.मी., प्रतिष्ठित कुर्मि क्षत्रिय, परिवारीय, स्लिम, गौरवर्ण, सुशील, मेधावी, रसायन शास्त्र में पीएच.डी., रिसर्च एसोसिएट पद पर कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित वर चाहिए. जो दहेज के इच्छुक न हों. लिखें: वि.नं. 6661, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप, राजपूत, 25 वर्षीया, 155 सें.मी., रंग साफ, शिक्षित, कमर्शियल आर्टिस्ट, कार्यरत गृहकार्यदक्ष, दिल्ली वासी कन्या हेतु सरकारी सेवारत सुशिक्षित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6662, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 25, 156 सें.मी., एम.ए., एम.फिल., गौरवर्णी, सुंदर, शालीन, इंजीनियर परिवारीय पूर्वी मध्य प्रदेश निवासी कन्या हेतु स्वविवेकी इंजीनियर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6663, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेपाली, राजपूत, 25 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., कार्यरत अध्यापिका, सुंदर, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6664, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (बैस), 22, 152 सें.मी., सुंदर, गोरी, इंटर मीडिएट, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु शिक्षित व्यवसायी या राजकीय सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6665, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 160 सें.मी., नेपाली मेढ़ राजपूत, गोरी, सुंदर, बी.एससी., पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कंप्यूटर, दिल्ली निवासी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. पिता रिटायर्ड आफिसर, भाई बैंक आफिसर, इंजीनियर. लिखें: वि.नं. 6666, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 157 सें.मी., नवोदय विद्यालय में कार्यरत, स्नातकोत्तर (ड्राइंग, पेंटिंग), शिक्षित, स्वर्णकार कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6667, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 157 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, एम.बी.बी.एस. कन्या हेतु डाक्टर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6668, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव कन्या, दसवीं में शिक्षारत, 20 वर्षीया, 160 सें.मी., अति सुंदर हेतु सरकारी सेवारत वर चाहिए. आगरा निवासी को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6669, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, दिगंबर जैन, 154 सें.मी., एम.एससी., एम.फिल. प्राणी शास्त्र, रंग गेहुआं, गृहकार्य में दक्ष, बैंक सर्विस, हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6670, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, नास्तिक विचारधारा, साधारण रंग-रूप, संस्कारशील, बैंक सेवारत कन्या हेतु उपयुक्त नास्तिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6671, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (ठकुर), बिहार निवासी, 23, 160, ग्रेजुएट, कानवेंट शिक्षिता, सुंदर, स्लिम, चरित्रवान, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष. कन्यार्थ दहेजविरोधी, सजातीय सुस्थापित वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ सविवरण लिखें: वि.नं. 6672, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 22 वर्षीया, एम.ए., बी.एड.,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकर्षक, मामूली सफेद दाग, सम्मानित व्यापारी परिवार की कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6673, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 160 सें.मी., एम.एससी., लेक्चरर, सुंदर, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, राजपूत, सरकारी अधिकारी की कन्याहेतु वायुसेना अधिकारी डिफेंस आफिसर, पायलट क्लास वन को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6674, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा ब्राह्मण, 24 वर्षीया, 158 सें.मी., बी.ए., गौरवर्ण, गृहकार्य में कुशल कन्या हेतु सरकारी कर्मचारी, इंजीनियर, डाक्टर अथवा लेक्चरर वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं, मध्यप्रदेश निवासी को प्राथमिकता, जल्दी शादी, संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6675, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25 वर्षीया, 152 सें.मी., गेहुआं रंग, इकहरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवारीय कन्यार्थ सुशिक्षित, सजातीय, सेवारत वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6676, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, मंगली, 20, 150, एम.ए., कन्या हेतु सेवारत, मंगली वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6677, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, सांवली, बी.ए. पास, महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. पारिवारिक जानकारी सहित पत्रव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 6678, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ठाकुर, 25 वर्षीया, ग्रेजुएट कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. पिता उच्च अधिकारी, विवाह शीघ्र एवं अति उत्तम. लिखें: वि.नं. 6679, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवारीय, 21, 153, एम.एससी., इकहरा बदन, गोरा रंग, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में प्रवीण, कन्या हेतु उच्चपदस्थ अथवा उत्तम व्यवसायी वर चाहिए. विवाह उत्तम. लिखें: वि.नं. 6680, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 155, आकर्षक, गौरवर्ण, एम.ए., गृहकार्य में दक्ष, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु सिर्फ उच्च सेवा से संबंधित, डिफेंस आफिसर, बैंक अधिकारी एवं अन्य अच्छे परिवार से संबंधित वर आवेदन करें. शादी शीघ्र, बहुत अच्छी. (जातीय बंधन नहीं). लिखें: वि.नं. 6705, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, खत्री, (यू.पी.) गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, एम.ए. अध्ययनरत कन्या हेतु सरकारी सेवारत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6707, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

28, 175 सें.मी., एम.बी.बी.एस., एम.एस., प्रभावशाली एवं स्मार्ट, संपन्न प्रतिष्ठित दिगंबर जैन परिवार के इकलौते, व्यसनहीन डाक्टर पुत्र हेतु अति सुंदर, लंबी, स्लिम, गौरवर्ण वधू चाहिए. डाक्टर को प्राथमिकता. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6501, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, सरकारी सेवारत, 46, 3,500/-, हेतु सुयोग्य, स्वस्थ जीवनसाथी. लिखें: वि.नं. 6503, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, पंजाबी, 28, एम.ए. (संगीत), अध्यापक, 2,340/-, दो निजी मकान, दिल्ली निवासी युवक हेतु मैट्रिक, ग्रेजुएट वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6504, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 162, 27, 170 एवं 24, 170, कश्यप गोत्रीय (बाथम), संपन्न परिवार, निजी व्यवसाय में [illegible] युवकों हेतु सुंदर, शिक्षित सजातीय कन्याएं चाहिए. लिखें: वि.नं. 6525, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, कुर्मी, व्यापारी, बी.काम., प्रतिष्ठित परिवार, 10,000/- मासिक आय, सांवला रंग, युवक हेतु गोरी, सुंदर, ग्रेजुएट लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 6526, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव 35 वर्षीय, परित्यक्त, तीन वर्षीय पुत्र, एम.बी.ए., सिविल कांट्रेक्टर, आय पांच अंकों में, पटना में स्वयं का मकान, युवक हेतु स्वस्थ, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6527, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दो सगे ब्राह्मण भाई उत्तरप्रदेशीय, आयु 29-25, केवल एक माह के लिए विवाह हेतु भारत आ रहे. दोनों लंबे, स्वस्थ, आकर्षक, नम्र, सुंदर, अच्छे आचारव्यवहारी. अमरीका में उच्च शिक्षा प्राप्त कर अमरीकन सरकार में उच्च पद पर स्थाई रूप से कार्यरत, स्वावलंबी, सक्षम योग, परिश्रमी और अत्यंत आर्थिकता युक्त एवं नागरिकता प्राप्त, युवकों हेतु वधू चाहिए. बायोडाटा सहित पत्राचार करें. कन्या सुंदर, सौम्य, शिक्षित, आकर्षक, मधुर, भारतीय परिवार परंपरायुक्त होनी चाहिए. सजातीय कन्या को शिक्षा, गुण व स्वरूप पर वरीयता दी जाएगी. लिखें: वि.नं. 6528, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, कुलीन क्षत्रिय, कनाडा में उच्च पद पर सेवारत, विधुर हेतु सुंदर, ग्रेजुएट वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6530, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शासकीय सेवारत, चौरसिया, 28, 157 सें.मी., आय चार अंकीय, म.प्र. निवासी, स्नातक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6594, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 29, 168 सें.मी., स्टील अथारिटी आफ इंडिया में कार्यरत, इंजीनियर, युवक हेतु स्वजातीय, सुंदर, गोरी, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु लिखें: वि.नं. 6595, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 168 सें.मी., अग्रवाल, स्नातक, स्वव्यवसायी, साथ दो बच्चे, हेतु सजातीय, मांटेसरी प्रिंसिपल योग्य वधू, बांझ चाहिए. प्रतिष्ठित परिवार. लिखें: वि.नं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6596, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 167, मंगलीक बिंदल गोत्रीय, एडवोकेट हेतु सुंदर, स्वस्थ, शिक्षित वधू चाहिए. मंगलीक वरीयता. लिखें: वि.नं. 6597, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी पंजाबी युवक 33, 160, एम.ए., निजी व्यापार, आय 3,000/-, हेतु वधू चाहिए. पिछले दस साल से आंतरिक भाग पर दो छोटे सफेद दाग. लिखें: वि.नं. 6598, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 24 वर्षीय, 160 सें.मी., ग्रेजुएट, रजिस्टर्ड आयुर्वेदिक चिकित्सक, 75 वर्ष पुरानी फर्म में पिता के साथ प्रैक्टिस करना तथा सारे भारतवर्ष में [illegible] हेतु आकर्षक व्यक्तित्व, अति सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यनिपुण, संभ्रांत परिवारीय वधू चाहिए. नर्सिंग होम बनाने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु एम.बी.बी.एस. को वरीयता. प्रथम बार सविवरण जन्मपत्री सहित लिखें: वि.नं. 6599, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित संपन्न अग्रवाल, गोयल परिवार के 24 वर्षीय, 169 सें.मी., आकर्षक, बी.बी.ए., एलएल.बी., मैरिट होल्डर (दुर्ग-भिलाई में निजी कारखाना, मकान व कृषि संपत्ति) युवक हेतु अति सुंदर, गोरी, घरेलू, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6600, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, अग्रवाल, 175 सें.मी., एम.ए., स्मार्ट, प्रगतिशील एवं महत्त्वाकांक्षी, आकर्षक, पांच अंकीय मासिक आय वाले, व्यवसायी युवक हेतु वास्तविक सुंदर, गोरी एवं शिक्षित वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. प्रथम बार सविवरण लिखें: वि.नं. 6601, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित वार्ष्णेय (वैश्य) परिवार का बी.काम., 24, 161, आय 15,000/- मासिक, इकहरा बदन हेतु स्मार्ट, अति सुंदर कन्या चाहिए. कन्या स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. अग्रवाल भी विचारणीय, दहेज नहीं. सविवरण लिखें: वि.नं. 6602, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, स्वस्थ, सुंदर, व्यवसायरत (भवन, कार, आधुनिक सुविधासंपन्न) गौड़ ब्राह्मण, (शांडिल्य) हेतु सुयोग्य वधू अपेक्षित. न्यूनतम शिक्षा मैट्रिक. लिखें: वि.नं. 6603, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खत्री, 155 सें.मी., प्राइवेट कंप्यूटर फर्म में कार्यरत, आय चार अंकीय, हेतु सुशील, गृहकार्यदक्ष, हंसमुख वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6604, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, अग्रवाल, अविवाहित, शिक्षित, स्वस्थ, राजस्थानी व्यापारी हेतु गरीब, बेसहारा, सुयोग्य वधू. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6605, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, गौरवर्ण, प्रतिष्ठित परिवार, 25, 170, स्नातक, सार्वजनिक निर्माण विभाग तथा अन्य राजकीय विभागों द्वारा उच्च श्रेणीय ठेकेदार एवं सफल व्यवसायी, आयकरदाता हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित, स्नातक, सजातीय वधू चाहिए. शीघ्र विवाहार्थ लिखें: वि.नं. 6606, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 160 सें.मी., विश्वकर्मा, पीएच.डी. (कैमिस्ट्री), अमरीका में स्थायी सेवारत, युवक हेतु सुयोग्य, सुंदर कन्या चाहिए. एम.बी.बी.एस., एम.एससी. (कैमिस्ट्री को वरीयता) शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6607, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय, 28, 172 सें.मी., अग्रवाल, आकर्षक, इंजीनियर, एम.टेक., केंद्र सरकार में प्रथम श्रेणी अधिकारी, 2 वर्ष के लिए मिजोरम पोस्टेड, हेतु सजातीय, वास्तव में सुंदर कन्या चाहिए. पिता उच्च व्यवसायी. लिखें: वि.नं. 6608, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 23, 173, सरकारी ठेकेदार, आय चार अंकीय, दिल्लीवासी, पिता सरकारी नौकरी, हेतु सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6609, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23, 171, ग्रेजुएट, व्यवसायरत, उत्तम आय, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6610, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, आकर्षक, ग्रेजुएट, निजी व्यवसायरत, आय चार अंकों में, हेतु सुंदर, गोरी, सरकारी सेवारत वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6611, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 27, 155, 2,500/-, स्नातक, मैकेनिकल इंजीनियर, अपना मकान, दिल्ली निवासी, युवक हेतु शिक्षित, कार्यरत वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6612, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 24 वर्षीय, 168 सें.मी., स्वस्थ, स्वयं तथा पिता का उच्च व्यवस्थापित व्यवसाय, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 6613, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, सुसंपन्न, प्रतिष्ठित परिवारीय, 2[illegible] वर्षीय, 160 सें.मी., गौरवर्ण, एम.काम., निजी व्यवसायी, आगरा निवासी, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, गौरवर्ण, सुशिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6614, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी शर्मा, 30 वर्षीय, 170 सें.मी., 6[illegible] कि.ग्रा., आय 18,000/- रुपए, स्वस्थ, सुंदर, गोरा रंग, फ्रांस में पूरी सुविधाओं सहित सेटल युवक हेतु सुंदर, सुशील व शिक्षित कन्या चाहिए. सविवरण शीघ्र लिखें: वि.नं. 6615, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (माली), 35, 165, 51, डाक्टर हेतु वधू. लिखें: वि.नं. 6616, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महाराष्ट्रीयन विधुर, दो बच्चे (9-5 वर्ष), गजेटेड आफिसर, 38, 163, 3,500/-, हेतु योग्य वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. विधवा, तलाकशुदा अति[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6617, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, गढ़वाली ब्राह्मण, 171 सें.मी., 4,500/-, उत्तरप्रदेश के सार्वजनिक निगम में असिस्टेंट इंजीनियर हेतु सुंदर, सुशिक्षित, घरेलू 21 से 25 वर्षीया, ब्राह्मण कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. प्रथम बार में ही पूर्ण पारिवारिक एवं शैक्षिक विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6618, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 167 सें.मी., 60 कि.ग्रा., बीसा अग्रवाल (गोयल), प्रतिष्ठित एवं उच्च शिक्षित परिवार के स्वस्थ, सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व के इंदौर निवासी डाक्टर (एम.डी. अध्ययनरत), युवक हेतु डाक्टर या उच्च शिक्षित, गौरवर्ण, सुंदर, आकर्षक, मधुर स्वभाव की वधू चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 6619, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 172 सें.मी., 5,000/-, माहेश्वरी, सिस्टम्स मैनेजमेंट, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा, निजी मकान, निजी कंप्यूटर, सौफ्टवेयर उद्योग, आकर्षक व्यक्तित्व, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. कंप्यूटर शिक्षित को प्राथमिकता. अग्रवाल स्वीकार्य. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6620, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शेखावत राजपूत, दिल्लीवासी, 26, 160, 2,000/-, स्नातकोत्तर, सरकारी सेवारत, युवक हेतु शिक्षित, सजातीय, राजस्थानी कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6621, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 170, 4,000/-, स्थायी अजमेर निवासी, मल्टीनेशनल फार्मा. फर्म में मेडिकल प्रतिनिधि, हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. कुर्मि क्षत्रिय/खत्री को वरीयता. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6622, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई हिंदू, 27 वर्षीय, 175 सें.मी., एम.टेक. इंजीनियर हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6623, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45, 165, अग्रवाल विधुर, आय 6,000/- मासिक, निजी आवास, तीन संतान, हेतु बेसहारा, निस्संतान विधवा या परित्यक्ता उपयुक्त जीवनसंगिनी चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6624, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25 वर्षीय, बी.काम., 173, सर्विस, 2,000/-, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6625, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वेटनरी आफिसर राजपत्रित, 30, 163 सें.मी., उ.प्र., ब्राह्मण हेतु मेडिको लड़की चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 6626, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 175 सें.मी., भूमिहार ब्राह्मण, फरीदाबाद कार्यरत, मासिक आय 1,500/-, युवक हेतु सजातीय, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. विवाह शीघ्र. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 6627, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खूबसूरत, निर्व्यसनी, 35, 173 सें.मी., एम.ए., एल.एल.बी., अरोड़ा, हिसार (हरियाणा) निवासी, आर्यसमाजी, व्यवसायी, 6,000/- मासिक निजी मकान, डीजल जीप, टेलीफोन, हेतु घरेलू, मध्यमवर्गीय, शाकाहारी, शिक्षित, 28 वर्ष से कम आयु वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6628, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 37, मित्तल, आय उच्च चार अंकीय, चार लड़के, एक लड़की, निजी व्यवसाय, हेतु घरेलू वधू चाहिए. संतानोत्पत्ति अनिच्छुक को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6629, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 176, धोबी, अ.जा., एम.बी.बी.एस. डाक्टर युवक हेतु वधू. मेडिको वरीयता. लिखें: वि.नं. 6630, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 176 सें.मी., बीसा अग्रवाल, चार्टर्ड एकाउंटेंट हेतु वास्तविक रूप से सुंदर, गोरी, लंबी कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6631, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 26 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.ए., बी.एड., शिक्षक, सेंट्रल स्कूल, 2,000/-, आगरा, हेतु शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6632, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 23, 175, 4,500, कंप्यूटर इंजीनियर, सुशिक्षित, संपन्न परिवार, इकलौते पुत्र हेतु सुयोग्य, सजातीय, उच्च परिवारीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6633, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण दुबे, भारद्वाज गोत्र, एम.काम., प्रतिष्ठित खानदान, 26, 175, 5,000/- मासिक, म.प्र. में निजी औद्योगिक प्रतिष्ठान वाले युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, चरित्रवान एवं घरेलू लड़की चाहिए. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण भेजने पर ही विचार होगा. लिखें: वि.नं. 6634, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 176 सें.मी., बी.एससी., बी.टेक., निजी उद्योगरत, मैथिल ब्राह्मण, भारद्वाज गोत्रीय युवक हेतु उच्च शिक्षित, सुयोग्य, आकर्षक, लंबी, सजातीय वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6635, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 165, चमार, एम.डी., डाक्टर, दिल्ली में सेवारत युवक हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुशिक्षित वधू चाहिए. मेडिको को वरीयता, दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6636, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, 155, स्मार्ट, तलाकशुदा, शासकीय कर्मचारी, मासिक आय 5,000/-, एम.ए.एलएल.बी., संगीत प्रवीण हेतु शिक्षित, कमर भाग से नीचे घने काले केश वाली वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6637, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, प्रतिष्ठित परिवारीय, 26 वर्षीय, 175 सें.मी., बी.ई. (मैक.) एम.बी.ए., निजी उद्योग में कार्यरत, हेतु सुंदर, कानवेंट शिक्षित, सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6638, सरिता, नई दिल्ली-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110055.

उत्तरप्रदेशीय, (जालौन), सनाढ्य ब्राह्मण, 29½, 168, सें.मी., गोरा, स्वस्थ, सुंदर, आकर्षक, टीटोटालर एम.ए. (इंगलिश), नौसेना में पैट्टी आफिसर, (पोर्ट ब्लेयर एयर पोर्ट पर) मासिक वेतन 2,500/-, वर हेतु सुंदर, स्लिम, ग्रेजुएट/पोस्ट ग्रेजुएट, शाकाहारी, सजातीय/ब्राह्मण वधू चाहिए. बैंक अध्यापन कार्यरत कन्या को प्राथमिकता. दहेजरहित, सादा विवाह. सिर्फ कन्या ही विचारणीय. प्रथम बार में ही विवरण सहित पत्रों के उत्तर निश्चित. लिखें: वि.नं. 6639, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अविवाहित, यू.पी., लड़का 30, 158, 2,100/-, बंगलौर [illegible]हिंदी अनुवादक को स्त्रीयोचित अनुकूल अर्धांगिनी की तलाश है. अनाथालयवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6640, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 162, 3,800/-, सरकारी प्रतिष्ठान में असिस्टेंट इंजीनियर, आवास और वाहन भत्ता अतिरिक्त, निर्व्यसनी, महावर वैश्य युवक हेतु वधू चाहिए. जाति, धर्मबंधन नहीं, कन्या के गुण मुख्यतया विचारणीय. लिखें: वि.नं. 6641, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49, 165, विधुर, आय 5,500/- मासिक, मकान, जायदाद, दिल्लीवासी, एक बेटी 16 वर्ष की, जिम्मेवारी शेष, हेतु सत्यनिष्ठ, शाकाहारी जीवनसाथी. धर्म, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6642, सरिता नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 25½, 164 सें.मी., फ्लाइट लेफ्टिनेंट फाइटर पायलट, स्मार्ट युवक हेतु कानवेंट शिक्षित, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6643, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, ब्राह्मण, 29, 173, 3,100/-, एम.ए., सरकारी अध्यापक, निजी संपत्ति, हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6644, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यवसायी परिवारीय युवक, बी.काम., जैन, उम्र 25, एक पांव पूरा नहीं मुड़ता चाल में फर्क नहीं, ऐसी कन्या को अपनाने का इच्छुक जिस के अभिभावक घरजंवाई के रूप में स्वीकार कर सकें. विकलांग भी स्वीकार्य. केवल व्यवसायी एवं उद्यमी ही लिखें: वि.नं. 6645, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, माहेश्वरी परिवार, 26 वर्षीय, 173, बी.काम. (आनर्स) बंबई, असम में निजी व्यवसायरत, सुविधासंपन्न युवक हेतु सजातीय, सुंदर, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु, लिखें: वि.नं. 6646, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल (वैश्य), 29, 180 एम.एससी., एम.बी.ए., बंबई में विदेशी फर्म में सेल्स मैनेजर (वार्षिक एक लाख), हेतु गोरी, सुंदर, स्लिम, होम लविंग, इंगलिश मीडियम, ग्रेजुएट कन्या के अभिभावक (जातिबंधन नहीं) लिखें: वि.नं. 6647, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रचलित विवाह औपचारिकताओं के ... अनास्थावान, पंजीकरण हेतु तत्पर, ... महाविद्यालय वाणिज्य प्राध्यापक, (29, ... 3,000/-) संग सुशिक्षित, कामकाजी, नास्तिक ... ज्ञाता, मांसाहारी, रूढिमुक्त, उदार, प्रबुद्ध, निस्सं... चित्ताकर्षक, स्वतंत्र विचार संपन्न, अत्या... युवतियां समस्त परंपरागत बंधनविहीन ... अनुकूलता, मूल्यांकनार्थ स्वयं लिखें: वि.नं. ... सरिता, नई दिल्ली-110055.

28½ वर्षीय, 165, एम.ए., रंग गेहुआं ... आकर्षक व्यक्तित्व, मासिक आय 4,000/-, ... संपत्ति व जमीन वाले, ठाकुर (क्षत्रिय) युवक हेतु ... सुशील, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित वधू ... जाति व दहेजबंधन नगण्य. लिखें: वि.नं. ... सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूतपूर्व फौजी अफसर, अब मेडिको, 41 ... 181 सें.मी. लंबाई, स्वस्थ, हंसमुख स्वभाव ... आवश्यकता है, ऐसी युवती की जो सर्वप्रथम ... सुशील, स्वस्थ, स्वभाव से सुंदर, मृदुभाषी, गृहका... दक्ष, सेवाभावना, प्रेम सहानुभूति रखने वाली, ... निस्संकोची, संकीर्ण, धार्मिक रूढिवादी विचार... मुक्त, बाल लंबे, थोड़ा अंगरेजी भाषा का ज्ञान ... अच्छा है. गरीब, बेसहारा अवश्य पत्रव्यवहार ... युवती स्वयं पत्रव्यवहार करे. Mr. Raja Sharma P.O. Box 8175 STN-F EDMONTO... ALTA, CANADA T6H4P1

अग्रवाल (मित्तल), 26, 168, बी.... गौरवर्ण, स्मार्ट, कलकत्ता निवासी (दिल्ली ... निजी संपत्ति, वाहन एवं उद्योग (पंखा), ... परिवार के युवक हेतु गोरी, सुंदर, सुशील ... गृहकार्यदक्ष, संभ्रांत, वैश्य पारिवारिक कन्या ... विज्ञापन चयन हेतु. प्रथम बार में पूर्ण विवरण ... वि.नं. 6660, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी चांडक, 25, 168. एम.ए., एलएल.बी., सुंदर, स्मार्ट, स्वयं के उद्योग में रत ... हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. ... सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, 27½, 173 सें.मी., माहेश्वरी ... स्नातक, शेयर व्यवसायी, मांगलिक युवक हेतु ... सुशिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन श्रेष्ठ चयन ... लिखें: वि.नं. 6682, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी खत्री, 35, 155, निजी ... स्वव्यवसायरत, आय 2,500/-, एक पुत्र (8 ... विधुर हेतु घरेलू, सुंदर, सुशील वधू. विधवा ... तलाकशुदा भी स्वीकार्य. जाति, दहेजबंधन ... लिखें: वि.नं. 6683, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46 वर्षीय, अग्रवाल, अधिशासी अभियंता, ... पुत्र 15 एवं 13, वाले विधुर हेतु जीवनसंगिनी चाहिए ... कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6684, सरिता, ... दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माहेश्वरी, 29, 170 एवं 26, 172, दोनों स्वावलंबी, व्यावसायिक, सी.ए., हेतु सुंदर, उच्च-शिक्षित, सजातीय कन्याएं चाहिए. लिखें: वि.नं. 6685, सरिता, नई दिल्ली-110055.

(मोमिन अंसारी), 26, 167 सें.मी., उ.प्र. सरकार में जूनियर इंजीनियर, युवक हेतु सुंदर, सुशील, इंटर, ग्रेजुएट, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6686, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 150, 4,000/-, एम.ए., स्वव्यवसायी, हरियाणावासी, सुदर्शन, प्रतिष्ठित, अविवाहित, नपुंसक युवक हेतु वधू. गोपनीयता आश्वासित बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6687, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैढ राजपूत (स्वर्णकार) युवक, 28, 165, 2,400/-, कानवेंट शिक्षित, राष्ट्रीयकृत बैंक कार्यरत के लिए सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6688, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीकानेर निवासी, नाई (पेशा नहीं), 31, 156, 2,250/-, स्नातक, स्टेनो टाइपिस्ट, तलाकशुदा हेतु जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं, विधवा, तलाकशुदा विचारणीय. लिखें: वि.नं. 6689, सरिता, नई दिल्ली-110055.

47 वर्षीय, संपन्न, विधुर हेतु सुंदर, उच्च शिक्षित, कार्यरत, शाकाहारी, सुंदर वधू चाहिए. जाति, धर्म का बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6690, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, हिंदू जाट, 40, 171 सें.मी., 6,000/-, 54 कि.ग्रा., इकहरा, संपन्न, स्वस्थ, शाकाहारी, एम.टेक. इंजीनियर, केंद्रीय सेवारत, विधुर, दायित्व मुक्त हेतु वधू. विधवा, परित्यक्ता, अनाथ, विचारणीय, महिला स्वयं पत्रव्यवहार कर सकती, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6691, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी युवक, बी.ई.एम.एस., 25, 170, सुंदर, गोरा, अमरीका में प्रसिद्ध कंपनी में कार्यरत, हेतु सुंदर, माहेश्वरी/अग्रवाल वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6692, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 170 सें.मी., ग्यारहवीं पास, निजी व्यवसाय, आय 4,000/-, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं, साधारण शादी. लिखें: वि.नं. 6693, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28½, 165, मांगलिक, भारद्वाज ब्राह्मण, एम.बी.बी.एस., डाक्टर हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुंदर, गौरवर्ण कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6694, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 25, 170 सें.मी., बी.ई., एम.बी.ए., प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान में कार्यरत, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6695, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 166, बी.ए., शाकाहारी, प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय, हैदराबाद निवासी, व्यवसायी, 5,000/- ... 1000, मासिक, हेतु स्लिम, सुंदर, स्मार्ट, गोरी, स्नातिका वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6696, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 26, बी.ए., पक्की सर्विस, वेतन 2,300/- प्रतिमाह, युवक हेतु सुंदर, गोरी, शिक्षित कन्या चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6697, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 39 वर्षीय, विधुर, 170 सें.मी., निजी मकान, ज्वैलरी शाप, (एक लड़का 11 वर्षीय, एक लड़की 10 वर्षीय) हेतु सुशिक्षित, सुशील कन्या चाहिए. अग्रवाल, महेश्वरी, गुजराती [illegible]. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6698, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46 वर्षीय, 70 कि.ग्रा., 150 सें.मी., अविवाहित युवक हेतु योग्य जीवनसाथी. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6699, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिष्ठित, संपन्न, सुशिक्षित परिवारीय, बी.ई. (सिविल), एम.एस. (इंजीनियरिंग) अमरीका से कर के वहीं सरकारी इंजीनियरिंग पद पर कार्यरत, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित (इंजीनियर/डाक्टर/विज्ञान स्नातक) वधू चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 6700, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 170, 2,000, सरकारी कंपनी में सेवारत, गूंगे युवक हेतु वधू चाहिए. विधवा तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6701, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, सिविल इंजीनियर, 27, 170, शारजाह (यू.ए.ई.) में कार्यरत हेतु सजातीय, सुंदर, आर्किटेक्ट डेंटल डाक्टर/साईंस/अंग्रेजी में पोस्ट ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6702, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा (विश्वकर्मा) परिवारीय, 27 वर्षीय, मैट्रिक, निजी व्यवसाय, राजस्थान, मूल निवासी उत्तर प्रदेश, हेतु वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6703, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 168, इकहरा बदन, सांवला रंग, सुंदर बनावट, होमियोपैथिक डाक्टर, मध्य प्रदेश प्रतिष्ठित परिवार, हेतु शासकीय सेवारत कन्या चाहिए. अच्छे (प्रतिष्ठित) परिवारीय कन्या को प्राथमिकता. शादी शीघ्र, साधारण, जातीयबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6704, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खत्री, एम.एससी., 29 वर्षीय, 170 सें.मी., डेवलपमेंट आफिसर हेतु सजातीय, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6706, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

सिंधी 23, 165, 22, 155, मैट्रिक, सर्वगुण संपन्न कन्याओं हेतु दहेजविरोधी वर चाहिए. एवं 27,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

168, 22, 158, मैट्रिक बिजनेसमैन युवकों हेतु कन्याएं चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 6508, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, एम.ए., एम.बी.ए., वायु सैनिक, 2,250/-, 170 सें.मी., गोरा रंग, चमार जाति, कानपुरवासी, हेतु कम से कम बी.ए., सजातीय वधू चाहिए. एवं 23 वर्षीया, एम.एससी., बी.एड, पी.जी.टी., एअर फोर्स स्कूल, 165 सें.मी., रंग गोरा, चमार हेतु क्लास I, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6650, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी, मुसलिम पठान, 26, 170, बी.एच.एम.एस., (डाक्टर) संभ्रांत परिवारीय, युवक हेतु वधू, मेडिको वरीयता एवं बहन 22, 160, बी.ए. हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½, 152 सें.मी., 3,300/-, गोरी, सुंदर, गृहकार्यकुशल, मिलिट्री नर्सिंग में लेफ्टिनेंट कन्या एवं 25½, 165, सें.मी., 2,200/-, रेलवे सर्विस, डिग्रीधारी, आकर्षक, युवक हेतु योग्य, पंजाबी खत्री, कार्यरत वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (तोमर ठाकुर), म.प्र. निवासी, 29, 160, बी.ए., गौरवर्ण, आकर्षक एवं गृहकार्य में दक्ष बहन हेतु सुयोग्य, शिक्षित, सेवारत, व्यवसायरत वर चाहिए एवं भाई 31, 168, 3,500/-, इंजीनियर बी.ई. (सिविल), सरकारी सेवारत हेतु सुयोग्य, शिक्षित वधू चाहिए. एक ही परिवार से संबंध स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6653, सरिता, नई दिल्ली-110055.

युवक, पंजाबी अरोड़ा, भिवानी हरियाणा, सरकारी नौकरी, 28 वर्षीय, 173, एम.ए., बी.एससी., बी.एड., अध्यापक एवं लड़की 23 वर्षीया, 157, स्टाफ नर्स हेतु वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6654, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

6 वर्षीय, सुंदर, स्वस्थ, अग्रवाल पुत्र को गोद लेने के इच्छुक दंपती लिखें: वि.नं. 6513, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निस्संतान, राजस्थानी युवा दंपती (राष्ट्रीयकृत बैंक अधिकारी, आय, 40,000), को एक वर्ष से छोटा, स्वस्थ-सुंदर, लावारिस बालक गोद चाहिए. आप के क्षेत्र में जब भी ऐसा बालक मिले, तुरंत लिखें, पत्राचार गोपनीय. इच्छुक अनाथालय, स्वयंसेवी संस्थाएं लिखें: वि.नं. 6655, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बुजुर्ग, स्वस्थ, एकाकी, धनी, अग्रवाल (राजस्थानी) महिला को गरीब, बेसहारा, सेवाभावी युवती/महिला चाहिए. आजीवन बेटी जैसा सम्मान साथ एक बच्चा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6656, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, अनाथ, हायर सेकेंड्री, ब्राह्मण, शाकाहारी, युवक निस्संतान या उच्चपदाधिकारी दंपती या एकाकी, व्यवसायी के गोद चाहता है. जातिबंधन ... लिखें: वि.नं. 6657, सरिता, नई दिल्ली-110...

गुप्ता दंपती, दो मास की कन्या को गोद ... चाहते हैं. कृपया लिखें: वि.नं. 6658, सरिता ... दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

एकाकी अधिकारी को गृहकार्य के ... विश्वसनीय, अकेली, बेसहारा महिला की आवश्यक... उचित वेतन, आवास एवं समग्र सुविधाएं. लि... वि.नं. 6659, सरि... दिल्ली-110055.

हर जगह पा... हेतु रोज दो घंटा काम ... सकने वाले, स्त्री, पुरुष चाहिए. वेतन 1,00... 10,000 मासिक. लिखें: पोस्ट बाक्स-6, गद... 263152.

होस्टल के बच्चों के कार्य एवं देखभाल के ... मेहनती, ईमानदार और स्वस्थ आया की आवश्य... है. शीघ्र संपर्क करें. मैनेजर सिल्वर ओक्स प... स्कूल, पोस्ट बाक्स 186, देहरादून.

एक बड़े प्रकाशन संस्थान को अनुभवी शब्द... लेखक/संपादक की आवश्यकता है, जो हिं... इंगलिश में स्वतंत्र रूप से लेखन व संचय कर ... आवेदन करें: दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-110055.

लेखकों के लिए

लेखकोपयोगी साहित्य मंगाइए. साहित्य नि... पांवटा साहिब-173025.

शिक्षा

1990-1991 के लिए नर्सरी से पांचवीं ... रजिस्ट्रेशन प्रारंभ, रिटायर्ड आर्मी अफसरों ... चलाया जा रहा अंगरेजी माध्यम स्कूल, सहशि... अति उत्तम छात्रावास की व्यवस्था, अंगरेजी ... बोलचाल पर विशेष ध्यान, नृत्य, संगीत, सिखाने ... प्रबंध. कुल सीटें 40, संपर्क करें: मैनेजर, सिल्वर ओ... पब्लिक स्कूल, पोस्ट बाक्स 186, देहरादून.

मेडिकल

प्लास्टिक/कासमेटिक शल्य चिकित्सा केंद्र, 1... A/6, पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली. कासमे... शल्य चिकित्सा हेतु कृपया संपर्क करें. दूरभा... 585802.

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर अपना नाम, पता, 1,0... उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं. ... के बाएं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 50/-, वी.पी. ... द्वारा (डाक खर्च अलग)-कुलदीप सिंह, 32, दी ... अमृतसर-143017.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मार्च (द्वितीय) 1996 रु. 6.00
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

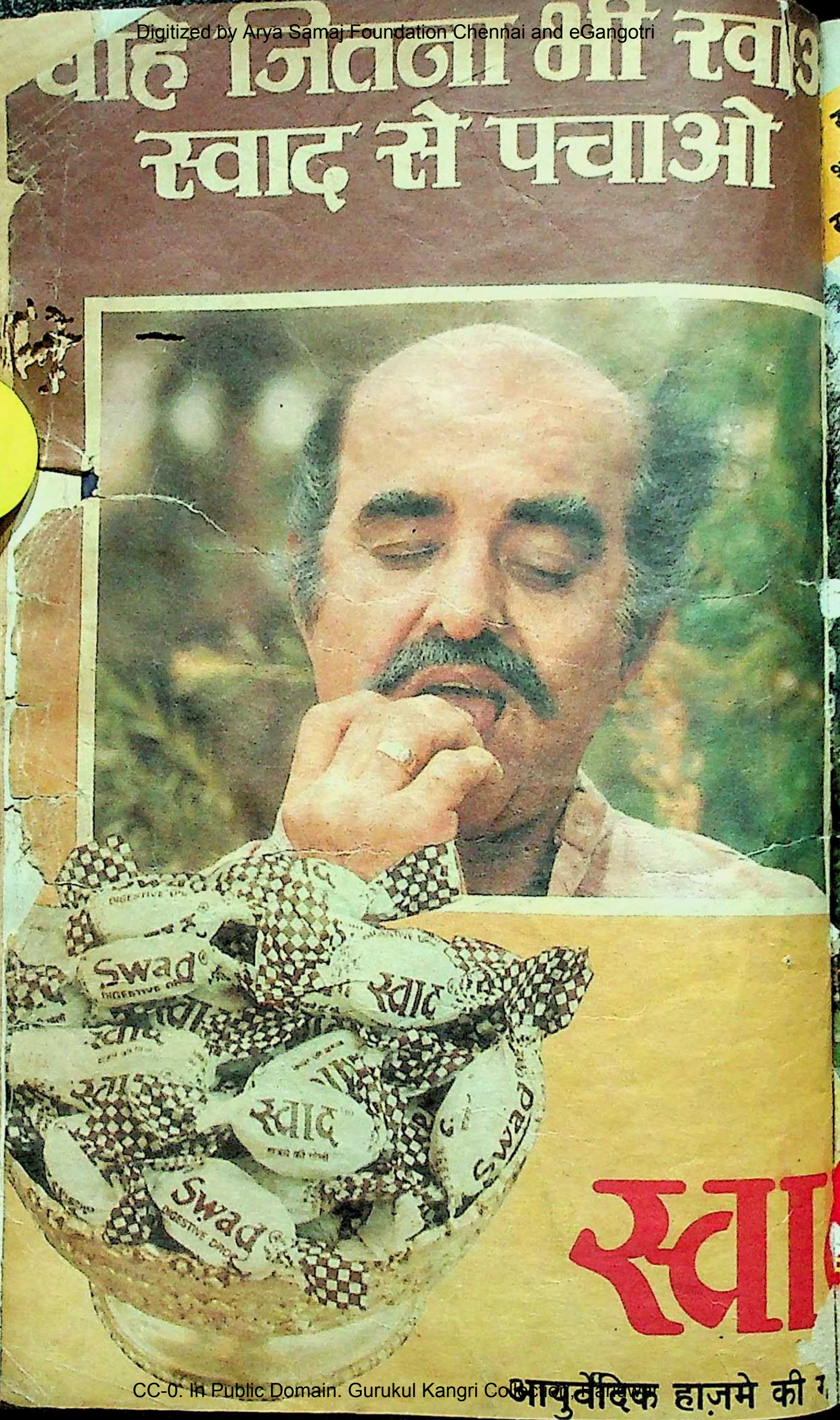

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

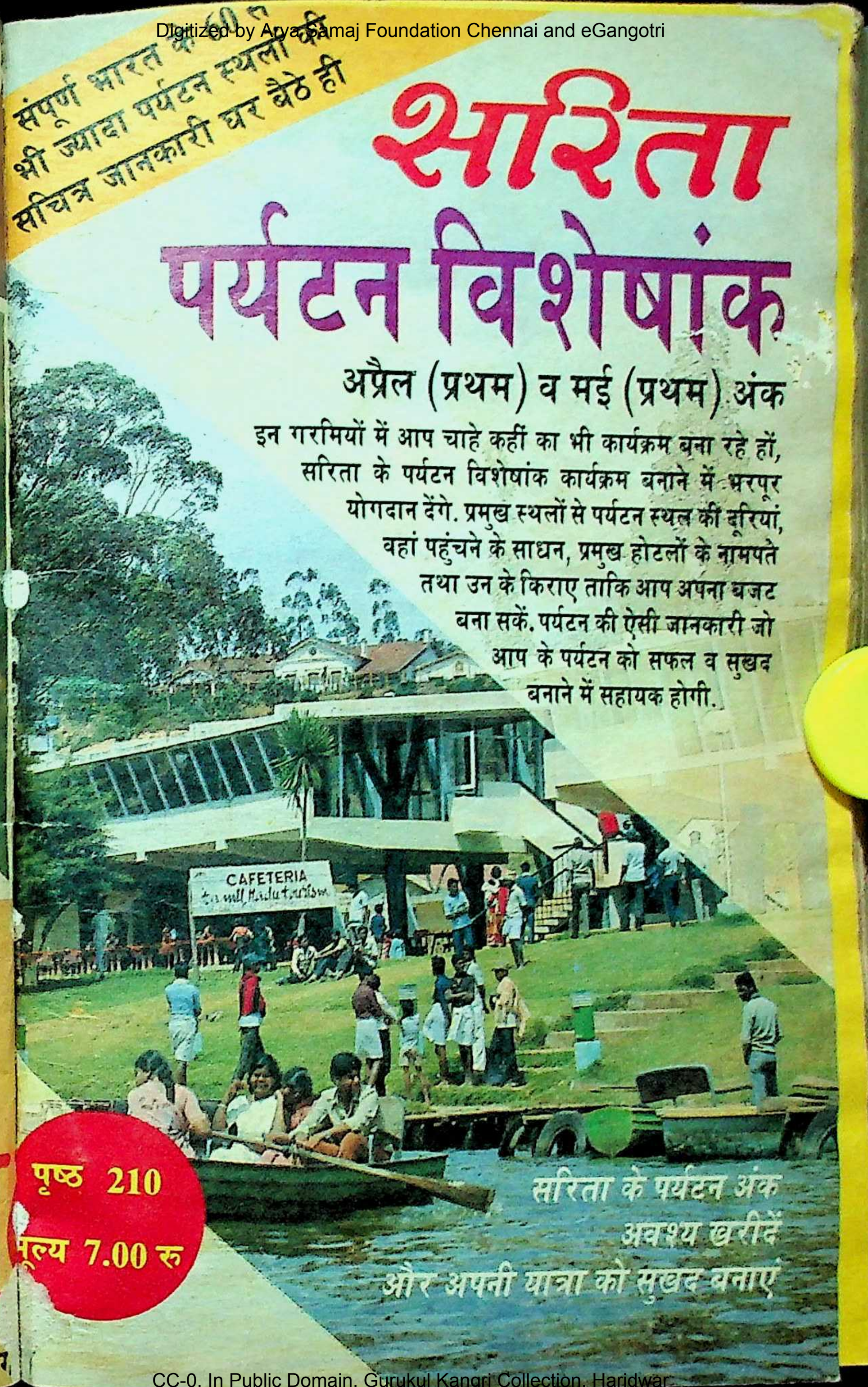

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 838 मार्च (द्वितीय) 1990

कथा साहित्य

42 **हकीकत**
पूर्व प्रेमी को धोखेबाज समझने वाली महिला

54 **महामानव**
पत्नी के अपराध को क्षमा करने वाला पति

68 **दुकान से चोरी**
विदेश में दुकान से टाई चुराने वाला युवक

75 **फ्लौपी**
कुत्ते के प्रति मनुष्य का प्रेम

90 **थकान**
असमंजस में पड़ी परित्यक्ता पत्नी

137 **बाज आई उन के दौरे से**
पति के दौरे पर जाने को तरसती पत्नी

148 **पगली**
बेटों द्वारा प्रताड़ित मां

157 **कनक घट**
सुंदरता के मद में चूर युवती

175 **मनोकामना**
देवी के प्रति लोगों का अंधविश्वास

लेख

23 **कांशीराम**
बहुजन समाज पार्टी के अध्यक्ष से भेंट

35 **आरिफ बेग**
भाजपा का एकमात्र मुसलिम सांसद

99 **बड़े होने का गलत फायदा न उठाएं**
व्यक्तित्व की गरिमा बनाए रखने की सलाह

105 **जन्मपत्री या भ्रमपत्री**
ज्योतिषियों के चंगुल में फंसा आम आदमी

123 **रूखेपन का नकाब उतारिए**
सामान्य व्यवहार के गुर

127 **दुहाजू वर**
क्या सफल पति नहीं होते?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

133 नवजात शिशु मंदबुद्धि न हो
विकास में बाधक एक बीमारी से रक्षा

145 अपना चाम, अपना दाम, अपना काम
स्वार्थ के घेरे में घिरा व्यक्ति

171 आधुनिकता से संघर्षरत मध्यमवर्ग
दिखावे की होड़ से कैसे बचें?

स्तंभ

84 नए फैशन
104 दिनदहाड़े
116 नए पकवान
126 पासा पलट गया
136 बच्चों के मुख से
142 हमारी बेड़ियां
180 चंचल छाया
8 आप के पत्र
19 सरित प्रवाह
67 यह भी खूब रही

कविताएं

13 जादू जगाया है
51 मीत मेरे घर आए हैं
83 चलो कहीं बैठे चुपचाप
115 प्यासे सरगम

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीमंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअय रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.
©दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.
वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. को ही भेजें.
चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 265 रु., (हवाई डाक से)650 रु.

कला · कांति · कर्मण्यता

मूल्य : एक प्रति 6.00 रुपए, वार्षिक 144 रुपए
वायुसेवा अधिभार 50 पैसे प्रति :
सिल्चर, डिब्रूगढ़ अगरतल्ला, तेजपुर इंफाल, पोर्ट ब्लेयर और अकारस म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्मियों के दिन या

लो आ गईं गर्मियाँ. ग ल

रसना.दो रे ई

के बाद. एक खे पह

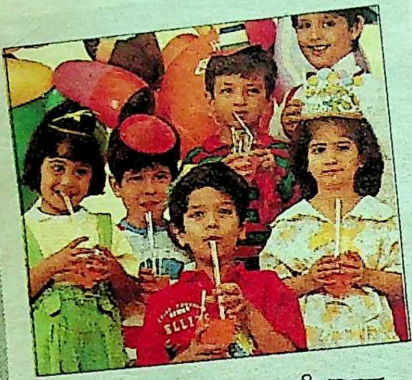

बिट्टू का बर्थ-डे, रसना ही रसना.

बाद. बिट्टू की बर्टी

तो रसना ही पना

हैं रसना के हैं ारह

रविवार को जब दादीमाँ, दा ते

बहुत सारा व

औरेंज □ पाइनेपल □ लाइम □ शाही गुलाब □ काला खट्टा □ कूल खस □ सोडा (जल

ताज़गी

11 प्यारे दाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...या रसना के दिन.

...ग लाईं आइ-लव-यू-
...रे इंग्लिश होमवर्क
... खे पहले.दो खेलने के
ब...टी में
...सना (मम्मी कहती
...ारह स्वाद.)और हाँ,
दा...ते हैं तो भी बहुत
रा ...व यू रसना.

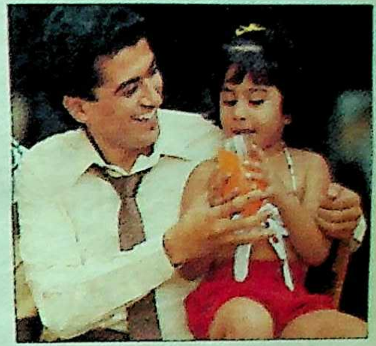

प्यारा रसना हर शाम पापा के साथ.

दादाजी, दादीमाँ का प्यारा रसना.

... कूल खस ... सोडा (जलजीरा) □ टूटी-फ्रूटी □ मैंगो राइप □ ग्रेप ग्लोरी

...रसना

11 प्या...रे दाम में.

Mudra:A:EAMR:5142 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

सरित प्रवाह/फरवरी/प्रथम

पत्रपत्रिकाओं के संदर्भ में आप के विचार सटीक हैं.

एक मध्यमवर्गीय व्यक्ति यदि पत्रिकाएं खरीद कर पढ़ना चाहता है तो पत्रिकाओं की आसमान छूती कीमतें उस की राह में बाधक बन जाती हैं. सरकारी वाचनालयों की कमी और दूरदर्शन की बढ़ती हुई लोकप्रियता पत्रिकाओं का गला घोंटती प्रतीत हो रही है. पाठक यदि बुक स्टाल से किराए पर पुस्तकें ले कर इस कमी को पूरा करना चाहता है तो यहां भी पत्रिकाओं की कमी उस के आड़े आती है. इस प्रकार हर तरफ से निराश होने के बाद उस के पास सरकार को कोसने के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचता.

—राजेश पांडे 'गुड्डू'

*

प्रेस की स्वतंत्रता से संबंधित आप की टिप्पणी ने जनसामान्य की दुखती रग पर हाथ रख दिया है.

सरकार की कथित विकास योजनाएं पूरी तरह असफल एवं खोखली सिद्ध हुई हैं. सरकार को अपने दिमाग से यह भ्रम निकाल देना चाहिए कि देश का विकास सिर्फ सरकार कर सकती है. वास्तव में किसी भी देश का विकास तो वहां के कर्मठ तथा साहसी नागरिक ही संभव बनाते हैं.

भारतीय प्रेस की तरह यहां के नागरिकों की भी सरकार से अपेक्षा है कि उन की सामान्य जिंदगी में वह अनावश्यक हस्तक्षेप बंद करे. वे अपना व देश का विकास स्वयं कर लेंगे.

—घनश्याम पंड्या'

*

समाचारपत्रों व पत्रिकाओं की स्वतंत्रता के विषय में आप के विचार सटीक लगे. सरकार को यह नहीं भूलना चाहिए कि प्रेस—समाचारपत्र एवं पत्रिकाएं उस की लोकप्रियता, स्थायित्व, दूरदृष्टि और देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक दृढ़ स्तंभ है.

सरकार जिस प्रकार हर वर्ष विभिन्न मुद्दों पर खर्च करने के लिए योजना बनाती है, बजट पास करती है, उसी प्रकार उसे विभिन्न पत्रपत्रिकाओं के लिए वार्षिक आवश्यकतानुसार पर्याप्त अखबारी कागज, छपाई की स्याही एवं अन्य संबंधित वस्तुओं को उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए एक योजना बनानी चाहिए ताकि पत्रपत्रिकाओं का मूल्य इतना हो कि सामान्य जन भी उसे खरीद कर पढ़ सके.

पत्रपत्रिकाओं की कीमतों में पिछले कुछ वर्षों इतनी वृद्धि हुई है कि वे सामान्य आय वाले व्यक्ति की पहुंच से बाहर हो गई हैं. आखिर इस के लिए कौन जिम्मेदार है—प्रेस मालिक? नहीं, इस के लिए सरकार जिम्मेदार है. सरकार से आग्रह है कि वह जनता को अन्य सुविधाओं के साथसाथ उचित मूल्य पर समाचारपत्र एवं पत्रिकाएं उपलब्ध कराने के लिए भी आवश्यक कदम उठाए.

—संजय बरनवाल 'मनी

*

सरकारी नौकरियों में अवकाश प्राप्ति की सीमा 58 से 60 वर्ष करने के संबंध में आप के विचार तर्कसंगत लगे.

एक तरफ तो बेरोजगारों की फौज बढ़ती जा रही है, उन को भी रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने होंगे. दूसरे, एक लिपिक अवकाश प्राप्ति के समय 2,000 रुपए मासिक ले रहा होता है जबकि नई भर्ती का लिपिक वही कार्य 1,000 रुपए में कर देता है. अवकाश प्राप्ति के बाद व्यक्ति को पेंशन मिलती है जिस में वह अपना काम चला सकता है.

इसलिए सरकारी सेवा में आयु सीमा बढ़ाने के बारे में तो सोचना ही निरर्थक है. अलबत्ता अवकाश प्राप्ति की आयु सीमा में कुछ कमी जरूर की जानी चाहिए.

—शिवदत्त मिश्र

*

अवकाश प्राप्ति की आयु सीमा 50 वर्ष होनी चाहिए. 50 वर्ष पूरे हो जाने पर वानप्रस्थ का समय शुरू हो जाता है. तब व्यक्ति को भोगविलास की वस्तुओं से स्वयं को दूर रख कर, अपना मन आत्मचिंतन, जीव कल्याण, समाज सेवा आदि सात्विक कार्यों में लगाना चाहिए.

पेंशन आदि के जरिए जो दान मिलता है, उस से मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति बड़े आराम से हो सकती है.

—अनिरुद्ध उपाध्या

*

नौकरी से अवकाश प्राप्ति की आयु 58 से 60 वर्ष करने के विरुद्ध आप की राय एकदम उचित है. मेरा सुझाव है कि प्रत्येक सरकारी कर्मचारी की कार्यकुशलता 52 वर्ष की आयु से 55 वर्ष तक विशेष रूप से देखी जानी चाहिए. यदि कार्यकुशलता सराहनीय हो तो उसे तीन वर्ष की अतिरिक्त वृद्धि दे कर 55 वर्ष पर ही स्वैच्छिक अवकाश प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित किया जाए और जो कर्मचारी निकम्मा हो उसे नोटिस दे कर बिना अग्रिम वृद्धि दिए ही सेवानिवृत्त कर दिया जाए ताकि युवकों को रोजगार के पूरे अवसर मिल सकें. बेरोजगार युवक राष्ट्रीय संपत्ति के लिए खतरनाक हैं. विश्वविद्यालय व कालिजों से निकले बेरोजगार छात्रों की बढ़ती हुई संख्या देश के लिए विस्फोटक हो सकती है. इसलिए इस संबंध में अब देर करना ठीक नहीं.

—एम.आर. अग्रवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या एक नीले गेंडे को देख कभी

आपकी नीयत ख़राब हुई थी?

याद हैं वो दिन जब आप इन नन्हे-मुन्ने जानवरों को पाने के लिये कुछ भी करने को तैयार थे? अब अपने बच्चों में वही जोश जगाइये.

सिबाका के नन्हे-मुन्ने जानवर लौट आये हैं

सिर्फ़ २०० ग्राम फ़ैमिली पैक्स में उपलब्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख, 'भागलपुर में नरकंकालों की बरामदगी' (फरवरी/प्रथम) पढ़ कर दिल दहल उठा.

साफ जाहिर है कि प्रशासन की कमजोरी की वजह से ही दंगा इतना भयानक रूप धारण कर सका. अगर राज्य प्रशासन इस ओर समुचित ध्यान देता तो इतनी दर्दनाक स्थिति नहीं होती. वहां अभी भी तनाव बना हुआ है इसलिए प्रशासन को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिए वरना दंगा फिर भड़क सकता है.

संपादकीय बहुत सटीक लगा. राष्ट्रीय मोरचे की सरकार को प्रेस की स्वतंत्रता पर जल्द ही ध्यान देना चाहिए. क्योंकि लोकतंत्र वास्तव में समाचारपत्रों व पत्रिकाओं के निष्पक्ष विचारों पर ही टिका होता है. अन्य रचनाएं भी पसंद आईं. —अरुणकुमार पाठक

*

'भागलपुर में नरकंकालों की बरामदगी' लेख पढ़ कर रोंगटे खड़े हो गए. न जाने उन लोगों पर क्या बीत रही होगी जिन्होंने उस भयानक सत्य को अपनी आंखों से देखा है. मुद्दा वही एक है— धर्म का, जाति का. न जाने यह नफरत की दीवार कब गिरेगी? —मुकेश तोमर

*

भागलपुर में हुए हिंसात्मक उपद्रवों की जानकारी बड़ी दर्दनाक और भयावह थी. जाति, धर्म, और प्रांत आदि के नाम पर लोग क्यों अपनी मानवता भूल कर अपने ही भाईबहनों का गला काटते हैं? पता नहीं लोगों को कब सद्बुद्धि आएगी?

—देवेंद्र साखरे

*

लेखक ने, भागलपुर के अन्य शहरों में दंगे की प्रतिक्रिया में जो लपट उठी, उसे ठीक ढंग से प्रस्तुत नहीं किया. मैं मुंगेर का रहने वाला हूं. वहां भी काफी कुछ हुआ. वैसे लेख अच्छा व प्रशंसनीय है. —रविकुमार

*

राजीव कांग्रेस की हार के कारण

लेख 'कांग्रेस क्यों हारी' (फरवरी/प्रथम) कांग्रेस (इ) या यों कहें राजीव गांधी की पराजय पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालता है. यद्यपि 1984 की अप्रत्याशित विजय के बाद कांग्रेस (इ) की भीषण पराजय पहेली बनी हुई थी. पर थोड़े से विवेचन के बाद यह पहेली, पहेली नहीं रह जाती.

वास्तविकता यह है कि श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के समय उन की व कांग्रेस (इ) की प्रतिष्ठा निम्नतम स्तर पर थी. परंतु उन की हत्या ने सारा माहौल बदल दिया. आम जनता को डर था कि कहीं देश के फिर टुकड़े न हो जाएं. इस अप्रत्याशित और असामान्य स्थिति का पूरा लाभ राजीव गांधी को मिला. परंतु इस वास्तविकता को समझने के स्थान पर वह उसे अपनी उपलब्धि ही मान बैठे.

राजीव गांधी में शासन करने की योग्यता व कर्मठता होती तो देश के इतिहास में वह एक महान शासक के रूप में स्मरण किए जाते. परंतु 'मिस्टर क्लीन' अर्थात 'नितांत कोरे' होने के कारण उन्होंने ... वर्ष तक एक अकुशल एवं निरंकुश शासक के समान राज्य किया. इन सब के कारण देश में भ्रष्टाचार, बेईमानी आदि का बोलबाला हो गया.

पराजय का दूसरा मुख्य कारण था कांग्रेस ... आंतरिक मामलों में खुले दिमाग से सोचने का अभाव. यद्यपि यह प्रक्रिया नेहरू के समय से ही शुरू हो गई थी ... इस को अमली जामा पहनाने का काम इंदिरा गांधी ... राजीव गांधी ने किया. कांग्रेस के नेता व कार्यकर्ता स्वार्थवश अपने को इतना बौना महसूस करते थे कि सच बात कहने का साहस ही नहीं जुटा पाते थे. सब से अधिक अफसोस तो यह है कि इस भारी पराजय के बाद भी वह पुरानी दुनिया में विचर रहे हैं. —विद्यासाग...

*

कांग्रेस की हार के लिए जिम्मेदार कौन है— बढ़ती कीमतें, भ्रष्टाचार, युवा मतदाता, बोफोर्स कांड या फिर स्वयं पार्टी अध्यक्ष राजीव गांधी? मैं समझता हूं कांग्रेस की हार के लिए ये सभी कारण जिम्मेदार हैं.

बढ़ती कीमतों व भ्रष्टाचार ने जहां लोगों के मन में कांग्रेस के प्रति कड़वाहट व आक्रोश भर दिया वहीं बोफोर्स कांड ने भी काफी हद तक कांग्रेस की छवि धूमिल की. यहां तक कि जनता दल ने चुनावों में बोफोर्स कांड को ही अपना मुद्दा बनाया व इसी के बल पर चुनाव लड़ा.

कांग्रेस की हार का एक महत्त्वपूर्ण कारण बने पार्टी अध्यक्ष राजीव गांधी स्वयं. उन के चारों ओर कुछ विशेष लोग घेरा डाले रहते थे. जिस से आम जनता की आवाज उन तक पहुंच नहीं पाती थी.

रहीसही कसर पूरी कर दी युवा मतदाताओं ने. कांग्रेस को खुशफहमी थी कि युवाओं का समर्थन उन्हें ही मिलेगा इसलिए उन्होंने मतदान की आयु 21 वर्ष से घटा कर 18 वर्ष कर दी. लेकिन यह चाल भी उलटी पड़ी. सदा से ही परिवर्तन के प्रबल समर्थक रहे युवाओं ने भी 40 साल से जमी हुई कांग्रेस का सिंहासन उखाड़ने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया. —विक्रम सिंह नेगी

*

शिशु विशेषांक

शिशु विशेषांक (फरवरी/प्रथम) संग्रहणीय और बहुत उपयोगी अंक है.

बच्चों को होने वाले विभिन्न गंभीर रोगों व उन के उपचार के संबंध में दी गई महत्त्वपूर्ण जानकारी बाकई नवजात शिशुओं के मातापिता के लिए उपयोगी साबित होगी. साथ ही इस में बच्चों की प्रकृति, प्रवृत्ति एवं उन के खानपान, रहनसहन, परिधान, शयननिद्रा तथा शिशुओं की विभिन्न समस्याओं से संबंधित अन्य विशिष्ट क्षेत्रों पर दी गई सामग्री भी कुछ कम नहीं.

आप का प्रयास शुरू से ही पाठकों की रुचि के अनुरूप रहा है. पाठकों की आवश्यकता व रुचि को ध्यान में रखते हुए सरिता द्वारा समयसमय पर विभिन्न विषयों पर विशेषांक निकालने का यह सिलसिला अनुकरणीय है. —नलिनकुमार खोईवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपक पाक्षिक........

चंपक के हर अंक में आकर्षक रंगों में छपी हुई सुंदर मनमोहक सचित्र कहानियां, शिक्षाप्रद लेख, कार्टून और चित्र पहेलियां प्रकाशित होती हैं.

चंपक से हर महीने में दो बार बच्चे "चीकू", "चुंचू", "डिंकू", "पप्पू" और बंदरकुमार के साहसिक कारनामों का आनंद उठाते हैं.

चंपक की सामग्री आप के बच्चों के लिए ज्ञान के नए मार्ग खोलती है, बच्चों का चरित्र बनाती है, उन का स्वस्थ मनोरंजन करती है.

अपने बच्चों को आज ही एक प्रति ले कर दें

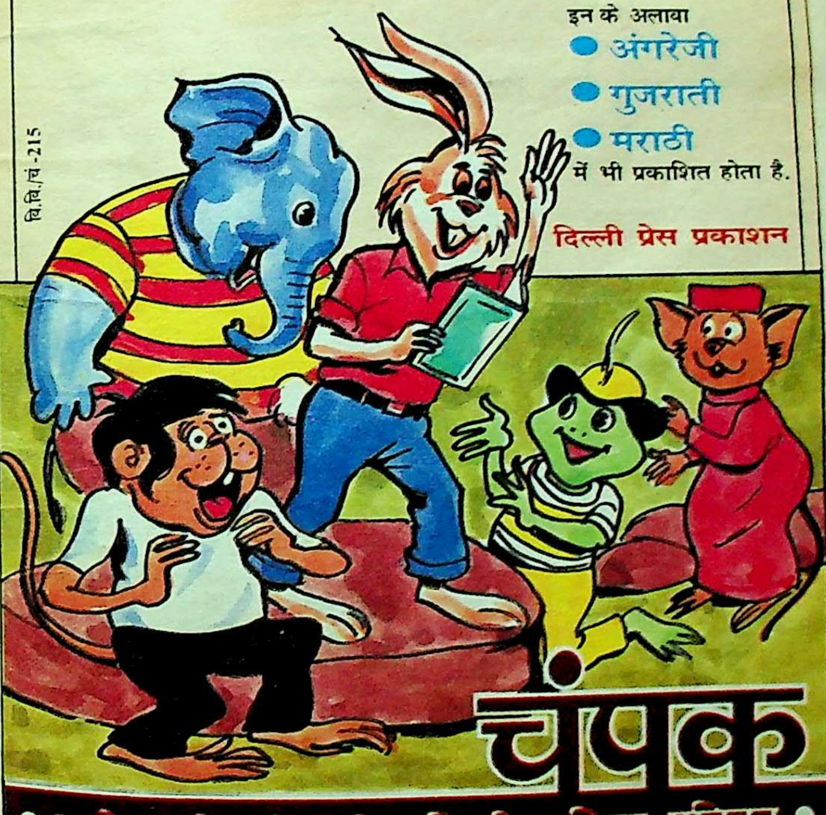

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशु विशेषांक अच्छा लगा पर एक कमी खटकी. बच्चों को लगने वाले पोलियों व डी.पी.टी. जैसे टीकों के बारे में तो बताया गया लेकिन पांच वर्ष से बड़े बच्चों को लगने वाले अन्य टीकों के बारे में भी विस्तृत जानकारी देते तो अच्छा रहता. —मंजु कालरा

*

शिशु विशेषांक निस्संदेह एक मील का पत्थर साबित होगा क्योंकि उस में बच्चे के जन्म से पालनपोषण एवं उन की बीमारियों की रोकथाम आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है. इस महत्त्वपूर्ण विषय पर उपयोगी सामग्री प्रस्तुत कर के पत्रिका ने उल्लेखनीय कार्य किया है.

इसी अंक की कहानी 'कुंआरी मां' आज की अस्तव्यस्त सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत करती है. व्यक्ति को सामाजिक मानमर्यादाओं का ध्यान रखते हुए नैतिक गुणों के प्रति सचेष्ट रहना चाहिए क्योंकि इन के नष्ट होने से सामजिक व्यवस्था छिन्नभिन्न हो सकती है जिसे समाज स्वीकार नहीं करता. लेकिन कच्ची उम्र की नादानियों को नजरअंदाज करते हुए मनुष्यवत व्यवहार करना चाहिए. —प्रमोदकुमार मिश्रा

*

इस विशेषांक की प्रति घर के पुस्तकालय में न रखना सचमुच पछताने वाली बात होगी. नवप्रसूताओं के लिए तो यह सच्ची मार्गदर्शिका है.

छोटे परिवारों के कारण कम ही घरों में वृद्ध (अनुभवी) महिलाएं होती है. संकुचित विचारधारा भी इस का एक कारण है. ऐसी स्थिति में ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें ही श्रेष्ठ मार्गदर्शक होती हैं.

विशेषांक में कहीं भी शिशुओं को समयसमय पर दिए जाने वाले टीकों का जिक्र नहीं था, न ही बच्चों को दी जाने वाली 'घुट्टी' का वर्णन था जिस में बच्चों को केसर, जायफल, खारिक आदि दी जाती है. ये ऐसी देसी दवाएं हैं जिन का असर जीवन भर रहता है. उक्त विशेषांक में इन दोनों बातों का होना आवश्यक था. —उषा साहू

*

शिशु मनोविज्ञान समझने में नई माताओं को इस विशेषांक से बहुत सहायता मिलेगी.

कहानी 'कच्ची माटी' व 'बिट्टू' विचारोत्तेजक एवं शिक्षाप्रद हैं. अलबत्ता भागलपुर कांड के बारे में जानकारी अपूर्ण सी लगती है. —कंचन नाथ माथुर

*

शिशु विशेषांक प्रकाशित कर आप ने साबित कर दिया है कि सरिता जितनी सामाजिक है, उतनी ही पारिवारिक भी. कटूक्तियों का समावेश भी अच्छा रहा.

कहानी 'कच्ची माटी' (फरवरी/प्रथम) उन माताओं के लिए प्रेरक है जो क्षणिक आवेग और लोक निंदा के भय से ममता का गला घोंट कर बच्चों में भेद करने लगती हैं. बच्चे कच्ची माटी के समान हैं, जैसा रूप दिया जाएगा वे वैसा रूप ले लेंगे. असल में मां कुम्हार होती है जो अपने नौनिहाल को अच्छे आदर्श के सांचे में ढालती है. —योगेश गु...

*

कहानी 'कच्ची माटी' में वर्णित घटना इस युग के लिए कोई नई बात नहीं है. परिस्थिति ही उस समय ऐसी बन गई थी कि पतिपत्नी दोनों ही उस निर्जन स्थान पर असहाय थे. फिर एक स्त्री ऐसी हालत में क्या कर सकती थी. वास्तविकता भी यही थी कि वे पतिपत्नी व बच्चा सुबोध निर्दोष थे. उन पापियों के दुष्कर्म की सजा इन को मिलना किसी भी रूप में उचित नहीं था. कहानी का अंत काफी प्रभावशाली रहा. —क. नाग...

*

चोरी की रचना

स्तंभ 'पासा पलट गया' (जनवरी/द्वितीय) का एक अनुभव सरिता में पहले भी प्रकाशित हो चुका है. इस प्रकार की रचनाएं प्रकाशित न करें. —राजीव ...

*

मेरा एक अनुभव सरिता के जनवरी/द्वितीय 1990 अंक में 'पासा पलट गया' स्तंभ में प्रकाशित हुआ है. इस बारे में आप ने ठीक लिखा है कि यह मौलिक नहीं है.

इसलिए मैं माफी चाहता हूं. कृपया मेरे खिलाफ कोई कानूनी काररवाई न करें. —अशोककुमार ...

*

स्वयंवर, सिर्फ दैवी कन्याओं के

स्वयंवर का हमारे प्राचीन भारतीय साहित्य में कहींकहीं कुछ विशेष स्थलों पर उल्लेख हुआ है, किंतु बहुत से भारतीय बुद्धिजीवियों और लेखकों ने प्राचीन भारत में नारी की उच्च स्थिति के प्रदर्शन एवं भारतीय संस्कृति की महानता के गुणगान के लिए अत्यधिक प्रचारित किया है.

किंतु स्वयंवर के जितने भी उपाख्यान वर्णित हैं, वे सभी उन कन्याओं के हैं जिन की उत्पत्ति पूरी तरह दैवी अथवा ऋषियों के आश्रमों में रहने वाली सेविकाओं या उन के आसपास गुजरने वाली अप्सराओं को प्राप्त आशीर्वाद से संबद्ध है. इन में कोई भी पारिवारिक स्त्री संयोगजन्य नहीं है.

शकुंतला, सीता, द्रौपदी आदि की उत्पत्ति दैवी या ऋषियों की चमत्कारिक शक्ति ही बताई गई हैं. सामान्य पारिवारिक संबंधों से उत्पन्न कन्याओं के विवाह या तो पूर्व निर्धारित रिश्तों के आधार पर कन्या का मूल्य चुका कर अथवा निःशुल्क हुआ करते थे या अपहरण द्वारा. फिर स्वयंवर में उस युग के 'एथलीट' ही सफलता प्राप्त करते थे, न कि किसी अन्य मानवीय गुणों से युक्त प्रतिभाशाली लोग. —डा. रामनि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादू जगाया है

निर्वसन इक रूप दरपन में लजाया है,
फिर हवा ने नाम तेरा गुनगुनाया है.

गीत के तावीज पहने हंस रहीं ऋतुएं,
मौसमों की आंख ने जादू जगाया है.

आइने पे दृष्टियों के रात-दिन पहरे,
एक सपना खुशबुओं ने फिर चुराया है.

एक चुटकी धूप वो रेशमी छुअनें,
सोन पंखी याद ने काजल रचाया है.

दस्तकें देता उजाला द्वार तक आया,
रोशनी के नाम कोई संदेश लाया है.

सीपीयां कुछ शंख टूटे कांच के टुकड़े,
आंसुओं ने इन घरोंदों को सजाया है.

—दिनेश शुक्ल

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत है!

प्रेस्टीज

अल्टिमेट

हर परेशानी से मुक्त एक ऐसा प्रेशर कुकर, उन्हीं लोगों का बनाया हुआ जो इसे हर रोज़ इस्तेमाल करेंगे

आपने चाहा, और हम एक ऐसे कुकर की रचना करने में लग गए जो आपके लिए कोई परेशानी न खड़ी करे व उन सभी सुविधाओं के साथ जो आपने चाहीं।

इस कुकर के हैन्डल, हमने नये सिरे से डिज़ाइन किए, ताकि वे न टूटें, न ढीले पड़ें। इनकी सुरक्षा के लिए स्टेनलेस स्टील का एक फ़्लेम गार्ड भी लगाया। साथ ही इन्हें कारखाने में ही फ़िट किया गया ताकि कुकर से इनका तालमेल सही रहे।

हमने इसके वेट वाल्व को भी नया रूप दिया जिससे कुकर की सीटी साफ़ सुनाई दे। इतना ही नहीं, हमने आपकी उंगलियों को सुरक्षित रखने के लिए इस वाल्व के ऊपर एक विशेष ग्लास युक्त नायलॉन काउल लगाया है।

इस कुकर में प्रेस्टीज की सभी खूबियाँ हैं जैसे अत्यधिक सुरक्षा के लिए जी आर एस और डबल लॉकिंग सिस्टम, तथा ज़्यादा मोटा व भारी तला जो इस्तेमाल से अन्य कुकरों की तरह, न फैलता है, और न फूलता है।

और यह है इसका परिणाम

एक ऐसा कुकर जिसकी हर खूबी इतनी बेहतरीन कि हम इसके सिवा कोई दूसरा नाम इसे दे ही नहीं सकते।

प्रेस्टीज

अल्टिमेट

प्रेशर कुकर में आपने जो जो चाहा — उससे कहीं ज़्यादा!

ttk उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया ज़माना नारी-जीवन-बीमा

जब आप अपने मातृत्व के संसार में पहला कदम रखें...

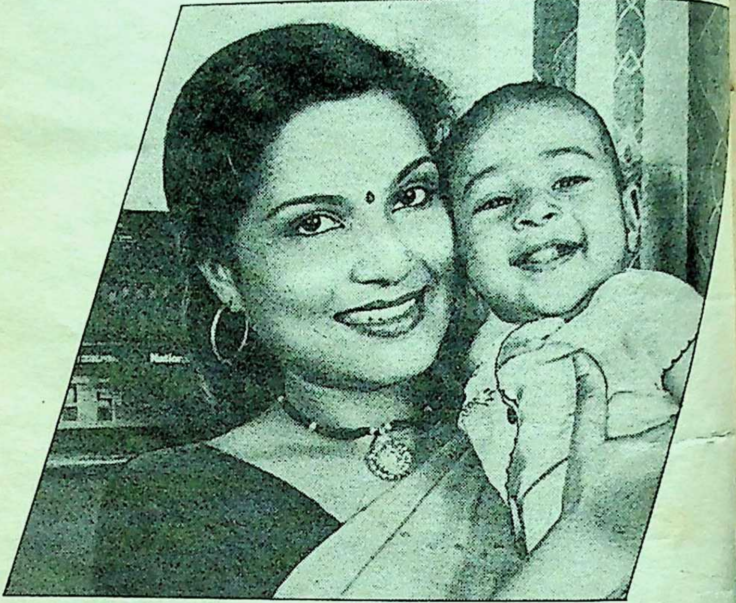

जीवन-बीमा आपको जीवन की पूरी सुरक्षा देता है. साथ ही साथ यह अनिवार्य बचत का एक आसान तरीक़ा भी साबित होता है. इसके अलावा आप पाएंगी ऋण की सुविधा और आयकर में बचत.

आज की स्वावलंबी महिलाओं की आकांक्षा के अनुरूप जीवन-बीमा निगम के पास अनेक पॉलिसियां और योजनाएं हैं, आप जो चाहें चुन सकती हैं.

हमारी विवाह बंदोबस्ती और शिक्षा वृत्ति
विशेष रूपसे आप के बच्चों के विवाह
शिक्षासंबंधी खर्चों की व्यवस्था कर

इसके अलावा और भी अनेक पॉलिसि
जीवन-साथी, एंडोमेंट एश्युरन्स बंदोब
बाल्य, भविष्य जीवन... जो आप ले

जीवन के हर मोड़ पर आप का हितैषी-जीवन-बीमा

आज
जानकारी
, विका
कीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पूरा दिन दफ़्तर की व्यस्तता के बीच भी आप भूल न पाएं कि घर में आपके कलेजे का टुकड़ा आपका इंतज़ार कर रहा है. जब आप को हरदम एहसास रहे उसके भविष्यका, मां के तौर पर आप की ज़िम्मेदारियों का, तब आप एक बुनियादी फ़ैसला करें.

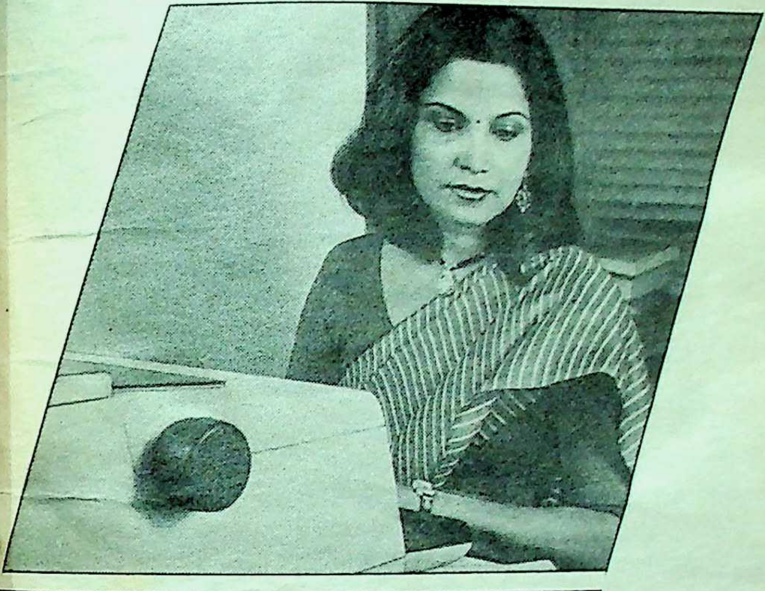

आने वाले कल के लिये आज ही कराइए जीवन-बीमा

जानकारी के लिए भारतीय जीवन-बीमा निगम ा, विकास अधिकारी या जीवन-बीमा एजंट कीजिए – आज ही.

भारतीय जीवन बीमा निगम

Imageads/LIC/90061 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, प्रेरक पुस्तकें

सैट नं. 24

प्रत्येक का मूल्य रु. 2.50

- श्रम का महत्व
- नफरत की दीवार
- चुंचू घोड़े की सवारी
- साहसी लोग
- खूब लड़ी मर्दानी
- सही कदम
- नन्हा घड़ियाल
- अफ्रीका का महान मित्र
- चीकू का जन्म दिन
- छिपा कमरा
- चीकू सूर्य से आग लगी
- पिंटू और मोती
- झूठी शिकायत
- चीकू छतरी नहीं नाव

पूरा सैट केवल 30 रुपए में

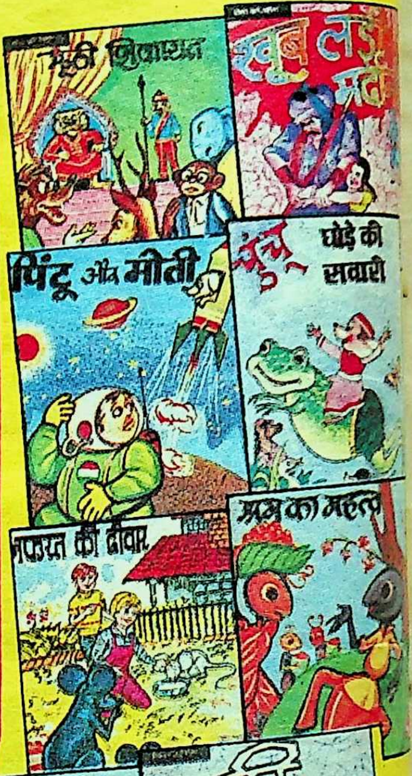

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:

दिल्ली बुक कंपनी, एम- 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001.

पूरे सैट का मूल्य 30/रुपए अग्रिम भेज कर वी.पी.पी. द्वारा मंगवाने पर डाक खर्च केवल दो रुपए • यही सैट वी.पी.पी. द्वारा मंगवाने पर डाक व्यय सहित मूल्य 36 रुपए • सैट के बजाए चुनी हुई पुस्तकें मंगवाने पर 15 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें बकाया वी.पी.पी. से, डाक व्यय अतिरिक्त • कृपया सैट का नंबर अवश्य दें • अग्रिम राशि चैक द्वारा नहीं, केवल ड्राफ्ट/पोस्टल आर्डर/मनी आर्डर से भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह

फरवरी के अंत में आठ राज्यों व एक केंद्र शासित प्रदेश पांडिचेरी की विधान सभाओं के चुनाव हुए. मतदान का रुख लगभग वैसा ही रहा जैसा नवंबर 1989 के अंत में लोकसभा के चुनावों में था.

उत्तर भारत के हिंदी भाषी राज्यों–पश्चिम गुजरात व पूर्व के उड़ीसा में कांग्रेस बुरी तरह पिट गई. अरुणाचल हमेशा से कांग्रेस का गढ़ रहा है और जनता दल या भारतीय जनता पार्टी ने वहां अपने पैर जमाने का कभी प्रयत्न ही नहीं किया, वहां कांग्रेस लगभग सारे स्थान ले गई. महाराष्ट्र में कांग्रेस बराबर की जोड़ में लौटी है–288 स्थानों में से इसे 142 स्थान मिले हैं.

इन पंक्तियों के लिखते समय तक इन राज्यों व प्रदेशों में सरकारें बनने की जानकारी नहीं मिली है पर यह निश्चित है कि भाजपा का पलड़ा यहां काफी भारी रहेगा. मध्य प्रदेश व हिमाचल प्रदेश में तो अकेले इस की सरकारें बनेंगी और उड़ीसा में जनता दल की सरकार बन गई है. अन्य राज्यों में भाजपा व जनता दल की सांझा सरकारें बननी निश्चित हैं. यह सांझा प्रत्यक्ष हो सकता है और परोक्ष में भी–एक दल सरकार बनाए और दूसरा उसे बिना सरकार में शामिल हुए बाहर से समर्थन दे.

राज्यों में गठबंधन से अंततः केंद्र की सरकार पर भी असर पड़ना लाजमी है. भाजपा अब एक गरीब व्यक्ति की तरह उपेक्षित रहना स्वीकार नहीं करेगी. उत्तर प्रदेश को छोड़ सभी हिंदी राज्यों में उस का लगभग बराबर का महत्त्व हो गया है. कांग्रेस को मिला कर इस प्रकार इस क्षेत्र में अब सत्ता के दावेदार तीन हो गए हैं–कांग्रेस, जनता दल, भाजपा.

वामपंथी कम्यूनिस्ट दलों की स्थिति पहले की अपेक्षा अब काफी आधारहीन होती जा रही है. रूस के गोरबाचौफ की मेहरबानी से ये दल तो अब गरीबों का उद्धार करने का भी दावा नहीं कर सकते, क्योंकि कम्यूनिज्म व समाजवाद द्वारा गरीबी नहीं हटाई जा सकती, यह पिछले 70 वर्ष के रूस व 40 वर्ष के पूर्वी यूरोप के परीक्षण से साबित हो गया है. पर इन लोगों को अपना चोला बदलने में थोड़ा समय लगेगा–सांप अपनी केंचुली धीरेधीरे ही उतार कर फेंकता है.

*

कांग्रेस को, सत्ता की दृष्टि से भी बिलकुल बट्टे खाते में नहीं लिखा जा सकता. संगठन, प्रभाव व धन के लिहाज से वह किसी भी अन्य राजनीतिक दल से कम नहीं है. केवल उस का नेतृत्व गलासड़ा है जो किसी भी दिन बदला जा सकता है. ऐसा कोई दूसरा राजनीतिक दल नहीं है जिस की पहुंच देश के हर कोने तक हो–कशमीर से कन्याकुमारी तक, द्वारका से इंफाल तक. सिद्धांतों का इस में कोई आंतरिक झगड़ा नहीं है–यह विशुद्ध सत्ता प्राप्ति की खोज में व्यक्तियों व समुदायों का जमघट है. पूंजीपति से ले कर कट्टर गरीबों का दम भरने वाले भी इस में हैं, हर धर्म, मजहब वाले भी. इसलिए यह हर किसी को पनाह दे सकती है.

यह तो नेहरू खानदान का दबदबा या वोट जमा करने की चमत्कारिता की मान्यता थी जिस ने इस को नष्टप्राय कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया. वह दबदबा या भ्रांति अब समाप्त हो गई है–तीसरी पीढ़ी में आ कर तो सभी परिवार, संस्था और व्यवसाय हमेशा समाप्त हो ही जाते हैं. इसलिए नेहरू खानदान को तिलांजलि दे कर कांग्रेस का कुछ वर्षों में फिर उठ खड़ा होना लगभग निश्चित है.

भाजपा और कांग्रेस के विपरीत जनता दल की स्थिति चिंता का विषय है. इस का कोई संगठन नहीं है. यह चंद्रशेखर के गढ़ पुरानी जनता पार्टी पर निर्भर है. चंद्रशेखर ने जनता पार्टी को कभी सुगठित, कार्यशील या अग्रगामी बनाने की कोशिश ही नहीं की. बस वह तो सांप की तरह अपनी जमापूंजी पर कुंडली बनाए बैठे रहे, और इसी लिए अंत में उन्हें नेतृत्व से हाथ भी धोना पड़ा.

अब यह बहुत कुछ विश्वनाथ प्रताप सिंह पर निर्भर करता है कि वह कैसे जनता दल के मेढकों को एकसाथ बांध कर रखें और इसे सुदृढ़ प्रगतिशील संगठन में बदल दें. पर यह काम प्रधान मंत्री पद से नहीं किया जा सकता और विश्वनाथ प्रताप सिंह की यह पद न छोड़ सकने की भी मजबूरी है.

देवीलाल ने जनता दल को नई दिल्ली के केंद्रीय सचिवालय में स्थापित करने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है. पर वह अपने कुटुंब व जाति से इतने अधिक चिपटे हैं कि यदि उन्होंने शीघ्र ही अपनेआप को इन से अलग नहीं किया तो वह भी जनसाधारण द्वारा अलगथलग कर दिए जाएंगे. पर बुढ़ापे में पुरानी आदतों, स्वार्थों और पूर्वाग्रहों से अपने को छुटकारा दिलाना आसान नहीं होता. रस्सी जल जाती है पर बल नहीं छोड़ पाती.

देवीलाल ने केंद्र में उपप्रधान मंत्री बनने के बाद अपने रिक्त स्थान पर उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र ओमप्रकाश चौटाला को बैठा दिया. पर जिस प्रकार सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को मार कर एक ही दिन में उस के अंडे निकाल लेने के प्रयत्न में न अंडा मिलता है न मुर्गी रहती है, वैसे ही चौटा[ला] ने भी बजाय ठोस काम कर के जनता [की] सेवा करने व अपनी व अपने परिवार [की] छवि बनाने के, उसे धूल में मिला दिया. [इस] तरह से अपने स्वार्थ साधन के लि[ए] प्रशासन में हस्तक्षेप तो वह मुख्य मंत्री ब[नने] से पहले भी करते थे. पर पदासीन होने [के] बाद यह प्रवृत्ति और बढ़ गई. तरहतरह [की] स्कीमें बनाई गईं जिन में जनसाधारण [को] भ्रष्टाचार की दुर्गंध आई और पराकाष्ठा तो तब हुई जब अपने विधान सभा में [चुने] जाने के लिए उन्होंने मेहम में वह सारा [कुछ] किया जो राजीव गांधी ने अपने चुनाव क्षे[त्र] अमेठी में किया था, बल्कि कहना चाहि[ए] उस से भी बढ़चढ़ कर किया. अंततः चुना[व] आयोग को मतगणना दोबारा करानी पड़ी.

इस के बाद जनता दल के नेताओं [के] लिए आवश्यक हो गया कि अपनी छ[वि] बनाए रखने के लिए वे चौटाला को राज्य [के] मुख्य मंत्री पद से हटा दें. इस सब का अस[र] देवीलाल पर तो पड़ना ही है.

*

बंगलूर में उतरते समय इंडिय[न] एअरलाइंस का एक नया खरीदा ग[या] विमान एअर बस ए-320 गिर कर टूट गया और उस के कुल 146 यात्रियों एवं विमा[न] कर्मचारियों में से 90 तत्काल मर गए औ[र] 56 घायल अवस्था में बालबाल बच ग[ए.] यह नया वायुयान ए-320 उड़ने और हवा[ई] पट्टी पर उतरने के आधुनिकतम उपकरणों से सज्जित था जिस में कंप्यूटर पाइलट का सारा काम करते हैं और विमान चालक द्वारा हवाई पट्टी देखे बिना यान ठीक उतर सकता है.

इस बंगलूर दुर्घटना से पहले भी इ[स] प्रकार के हवाई जहाजों में संसार भर में [...] से ऊपर दुर्घटनाएं हो चुकी हैं. इसलिए जब तक यह पूरी तरह से जानकारी नहीं मि[ल] जाए कि यह उतरते हुए दुर्घटना पाइलट की बेवकूफी से हुई या यंत्रों के फेल हो जाने से, भारत सरकार ने इन हवाई जहाजों को उड़ाने से मना कर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्घटना का कारण कुछ भी हो सकता है. पाइलट की गलती या यंत्रों का फेल हो जाना, पर यह तो निर्विवाद है कि सरकारी हवाई सेवा इंडियन एअरलाइंस का प्रबंध हर सरकारी महकमे और विभाग की तरह गैरजिम्मेदार, ग्राहक की सर्वथा उपेक्षा करने वाला और प्रतिस्पर्धा न होने के कारण एकाधिकार संपन्न प्रतिष्ठान के 'हमारा कोई क्या बिगाड़ सकता है' के वातावरण और कार्यविधि से जुड़ा हुआ है.

जान की हानि तो खैर इंडियन एअरलाइंस में वर्ष में एकदो बार ही होती है (बड़ी दुर्घटना तो अहमदाबाद में 1988 के बाद अभी हुई है) पर छोटीमोटी दुर्घटनाएं और बाल बराबर बचाव तो रोज का मामला है. ये दुर्घटनाएं समाचारपत्रों में छपती नहीं, क्योंकि जो रोज ही घटे, वह समाचार छापने लायक नहीं रहता.

इस ए-320 विमान की दुर्घटना की जांच तो होगी ही; लंबीचौड़ी रिपोर्ट भी सरकार को दी जाएगी—और फिर वह रिपोर्ट सचिवालय की अलमारियों में धूल चाटती रहेगी. कोई उसे पढ़ेगा या उस पर कोई सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे, इस में संदेह है—सरकारी कर्मचारियों का अपना बहुत संगठित वर्ग है जो 'तू मेरे लिए, मैं तेरे लिए' की भावना से ओतप्रोत रहता है. किसी को कोई सजा नहीं मिलेगी. नाममात्र के लिए किसी एकदो कर्मचारियों का स्थानांतरण कर दिया जाएगा, या एक वर्ष के लिए वेतन वृद्धि रोक दी जाएगी—बस. लोग भूल जाएंगे. अखबार वाले इस दुर्घटना को बासी समझ कर हाथ नहीं लगाएंगे और रोज की तरह गंगा, जमुना, कृष्णा, कावेरी में पानी बहता रहेगा.

यात्री अपनी अवहेलना और दुर्व्यवहार के विरुद्ध बुड़बुड़ाते रहेंगे, पर इंडियन एअरलाइंस के विमान उड़ते रहेंगे, यात्री सवार होते रहेंगे—जब तक कोई दूसरी दुर्घटना नहीं हो जाए. फिर थोड़ी देर के लिए बबूला उठेगा और बैठ जाएगा. और चक्र चलता रहेगा, जनता का समय और पैसा और जीवन भी सरकारी एकाधिकार की भेंट चढ़ता रहेगा.

आवश्यकता इस बात की है कि इस हवाई सेवा में प्रतिस्पर्धा पैदा की जाए. नागरिक क्षेत्र में एक या कई नई विमान सेवाओं को खुल कर काम करने दिया जाए ताकि मुकाबले में दोनों सतर्क रहें, यात्रियों की अवहेलना न करें.

हवाई जहाज अभी भी विदेशी मुद्रा दे कर खरीदे जाते हैं. नागरिक उद्योग के लिए कोई खास नया खर्च नहीं होगा. पर वहां खरीद में मोटी रिश्वत का स्थान नहीं होगा. (इन एअरबसों की खरीद में राजीव सरकार के पदाधिकारियों द्वारा मोटी रिश्वतें लेने के आरोप लग रहे हैं.) अपनी पूंजी लगाने वाले यह नहीं होने देंगे. मुनाफा कमाना है तो ग्राहक को संतुष्ट करना होगा और सब से बड़ी बात: यदि कहीं कोई खोट या कमी नजर आएगी तो सरकारी अधिकारी सर्वदा ऊपर से डंडा लिए रहेंगे—जो सरकारी सेवा वाली लाइनों में 'भाईचारे' के कारण नहीं होता.

*

कशमीर में राज्यपाल जगमोहन ने विधान सभा भंग कर दी है. कशमीर के संविधान में यह अधिकार केवल राज्यपाल को है; वहां भारतीय राष्ट्रपति का इस में कोई दखल नहीं है, चाहे स्वयं राज्यपाल की नियुक्ति या बरखास्तगी राष्ट्रपति कर सकता है.

राज्यपाल जगमोहन ने कशमीर विधान सभा को भंग करने में केंद्रीय सरकार से कोई सलाहमशवरा नहीं किया पर बाद में जब दिल्ली में बातचीत हुई तो यह साफ हुआ कि सिवाय इस के कोई और चारा भी नहीं था. यद्यपि कम्यूनिस्ट पार्टियां डाक्टर फारूख अब्दुल्ला को वापस लाने की इच्छुक थी, पर जो व्यक्ति तीन साल में स्थिति को इतनी बिगाड़ दे और राज्य करने में इतना अयोग्य हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस का शासन अराजकता व भ्रष्टाचार का जीताजागता नमूना हो, उस से वर्तमान विस्फोटक स्थिति के सिवाय और क्या आशा की जा सकती है.

कशमीरी जनता का दिल तो जीतना ही होगा पर यह दिल बिना कानून और व्यवस्था और जानमाल की सुरक्षा के, जो कि किसी सरकार का प्रथम कर्तव्य और उत्तरदायित्व है, कैसे जीता जा सकता है? और फारूख के शासनकाल में तो पाकिस्तान समर्थक उग्रवादी ही सरकार बने हुए थे और जनसाधारण के लिए सिवाय उन की बात मानने के और चारा भी क्या था?

*

दिल्ली नगर निगम को भंग कर नई केंद्रीय सरकार ने उस का काम एक सरकारी अफसर को प्रशासक नियुक्त कर के सौंप दिया है. कहा गया है कि इस निगम के चुनाव शीघ्र ही राज्य विधान सभाओं के चुनावों के बाद कराए जाएंगे.

इस प्रशासक महोदय ने निगम की आमदनी बढ़ाने के लिए नया प्रस्ताव रखा है—चुंगी, जो दिल्ली में बाहर से आने वाले सामान पर निगम लगाता है, उस का आधार वजन या भार की बजाय मूल्य कर दिया जाए. इस से निगम की आय तो 100 करोड़ रुपए बढ़ जाएगी, पर दिल्ली की जनता पर इस का कोई असर नहीं पड़ेगा, ऐसा प्रशासक महोदय का कहना है. लेकिन सरकारी अफसरों की अकल में यह सीधी सी बात नहीं आती कि जनता की जेब से 100 करोड़ रुपया निकलेगा तो उस से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, यह कैसे हो सकता है? इस नए प्रावधान से हर वस्तु के दाम तेजी से बढ़ेंगे क्योंकि स्वयं दिल्ली में तो कुछ पैदा नहीं होता. सारा सामान बाहर से आता है.

दूसरी बात यह है कि जितना रुपया नगर निगम को मिलेगा, उतना ही या उस से दोगुना निगम कर्मचारियों की जेब में जाएगा. आज तो चुंगी वजन या तोल से ली जाती है. उस के निर्धारण में दो राय नहीं हो सकती. यदि निगम अधिकारी और मा[ल] आयात करने वाले के वजन पर मतभेद [हो] तो तत्काल कांटे पर रख कर संशय [दूर] किया जा सकता है. पर जहां मूल्य [का] सवाल है, निगम अधिकारी तत्काल क[ह] सकता है कि इस का मूल्य अमुक है, आयात करने वाले ने बीजक में जान कर टैक्स बचाने के लिए कम दिखाया है.

अब इस पर लंबी बहस चलेगी. अधिकांश लोगों को अपील करने [व] वादविवाद में पड़ने की बजाय लेदे कर फैसला करने पर मजबूर होना पड़ेगा—मा[ल] जो छुटवाना होगा. नतीजा यह होगा कि कुछ लोग जानबूझ कर बीजक से कम दा[म] लिखवाएंगे और निगम अधिकारी को पै[से] दे कर भी उन्हें लागत सस्ती पड़ेगी. पर जो ईमानदार व्यक्ति है वह घाटे में रहेगा.

आजकल भी, सुना है, चुंगियों की चौकियां गीली और सूखी मानी जाती हैं और गीली चौकियों का बाकायदा नीलाम होता है. यदि चुंगी मूल्य पर लगने लगी तब यो नीलाम की रकमें आसमान छुएंगी और अंततः यह रुपया आएगा जनता की जेब ही से.

यही हाल आजकल तटों पर, हवाई अड्डों पर केंद्रीय आयात शुल्क के मामलों में होता है. वहां कस्टम अधिकारियों को बिना काफी मोटी रकमें दिए माल छूटता ही नहीं चाहे आप कितनी ही सचाई से मूल्य बतलाएं. कस्टम अधिकारी अनापशनाप मूल्य लगा कर अनापशनाप टैक्स का मांग पत्र आप को थमा देगा और आप टक्करें मारते रहिए.

केंद्रीय सरकार को इस मूल्य पर आधारित चुंगी के प्रस्ताव को तत्काल अस्वीकार कर देना चाहिए. अगर टैक्स लगाना ही है तो वजन का आधार बनाए रखते हुए टैक्स की दर बढ़ाएं. वैसे केंद्रीय सरकार राज्य सरकारों से नगरपालिकाओं द्वारा चुंगी लगाए जाने की परिपाटी को समाप्त करने का सुझाव बराबर देती रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

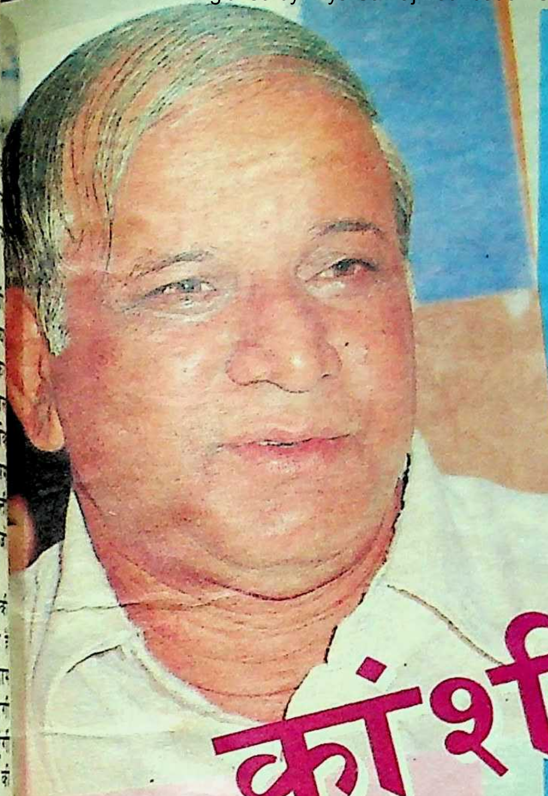

ऊंची जातियों के गढ़ों को चुनौती

कांशीराम

भेंटवार्त्ता •

विशेष प्रतिनिधि

ऊंची जातियों के प्रति नफरत का लाभ उठा कर कांशीराम दलित समाज के एक हिस्से पर खासा कब्जा कर लिया है. इस इकलौते नेता का दल बहुजन समाज पार्टी समर्थन का लाभ उठा कर देश में सामाजिक परिवर्तन कर पाएगा या सत्ता की बंदरबांट में उलझ कर रह जाएगा?

बहुजन समाज पार्टी का दूसरा नाम कांशीराम है. वही इस के प्रणेता हैं, जनक हैं, निर्माता हैं और वही इस के अध्यक्ष और सर्वेसर्वा हैं. इस पार्टी में 10% बहुजन समाज है तो 90% कांशीराम हैं. वह इस की ताकत भी हैं और कमजोरी भी. ताकत इस अर्थ में हैं कि अगर उन्हें पार्टी से अलग कर दिया जाए तो पार्टी बिखरे हुए दलितों का एक भटका हुआ झुंड बन कर रह जाए. और कमजोरी इस अर्थ में कि उन्होंने अपने जैसा दूसरा नेता पार्टी में नहीं उभारा, जो उन की गैरहाजिरी में पार्टी को संगठित व समेटे रख सके.

एक जमाने में डा. भीमराव अंबेडकर का विलक्षण नेतृत्व दलित समाज को मिला था. पर दलित समाज ने उन की प्रतिभा से चकाचौंध हो कर उन्हें 'भगवान' बना दिया और उन की पूजा शुरू हो गई. वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ पूजनीय बन कर रह गए, अनुकरणीय नहीं रहे. आधी शताब्दी के बाद नेतृत्व के इस शून्य को कांशीराम भर सकते हैं. बशर्ते कि उन्हें 'भगवान' बना कर जनता से दूर न कर दिया जाए.

कांशीराम 15 मार्च, 1934 को पंजाब के रोपड़ जिले में एक रामदासिया परिवार में पैदा हुए. सिख धर्म अपना लेने वाले चमार समुदाय को रामदासिया कहा जाता है. अपनी बिरादरी में वह पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने बाल और दाढ़ी कटवाई. उन के दादा और चाचा फौज में थे. रोपड़ के सरकारी कालिज से 1956 में कांशीराम ने बी.एससी. किया. प्रतियोगिता परीक्षा पास करने के बाद वह रक्षा अनुसंधान व विकास प्रयोगशाला किर्की (पूना) में अनुसंधान विशेषज्ञ के पद पर कार्य करने लगे.

कांशीराम जिस संस्थान में काम करते थे, वहां तिलक जयंती की छुट्टी और दीवाली की एक अतिरिक्त छुट्टी देने का फैसला किया गया, पर इस के बदले में बुद्ध जयंती की छुट्टी रद्द कर दी गई. एक राजस्थानी अनुसूचित जाति के कर्मचारी ने इस का विरोध किया, जिस की वजह से उसे निलंबित कर दिया गया. कांशीराम ने उस कर्मचारी का साथ दिया और वह मामला अदालत तक ले गए. अदालत ने न केवल निलंबित कर्मचारी को बहाल करने का फैसला सुनाया, बल्कि बुद्ध जयंती की छुट्टी रखने का आदेश भी दिया.

कांशीराम को एहसास हुआ कि अगर संघर्ष किया जाए तो नतीजा जरूर मिलता है. 1964 में उन्होंने नौकरी छोड़ दी और शेष जीवन दलित समाज के लिए संघर्ष में लगाने का फैसला कर लिया. उन्होंने यह भी निर्णय लिया कि आजीवन शादी नहीं करेंगे और न कोई जायदाद व संपत्ति बनाएंगे.

इस के बाद डा. अंबेडकर द्वारा गठित पीपल्स एजूकेशन सोसाइटी और रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया से जुड़ गए. [illegible] नी झगड़ों से तंग कर उन्होंने यह पार्टी छोड़ दी. 1978 उन्होंने 'बामसेफ' (बैकवर्ड एंड माइनोरि कम्यूनिटिज एंप्लाईज फेडरेशन) बना 1981 में उन्होंने डीएस-4 (दलित शोषि समाज संघर्ष समिति) का गठन कि जिस का मुख्य काम संघर्ष और आंदोल को संचालित करना है.

ये दोनों संगठन सामाजिक स्तर काम कर ही रहे थे, पर तभी उन्हें लगा राजनीति की लगाम थामे बिना मक पूरा नहीं हो सकता. उन्हीं दिनों उन्होंने अंबेडकर का एक लेख पढ़ा, जिस में लि था कि 'राजनीतिक सत्ता एक ऐसी चा है, जिस से आप कोई भी ताला खोल स हैं.' इस लेख से प्रेरणा ले कर कांशीरा 85% बहुजन समाज को राजनीतिक पर संगठित करने के लिए 14 अप्रैल, 19 को बहुजन समाज पार्टी बनाई.

शुरू में कांशीराम और उन की पा को किसी ने भी गंभीरता से नहीं लि उन्हें सनकी, महत्त्वाकांक्षी और सी आई का एजेंट कहा गया. पर पांच साल छोटी अवधि में ही उन्होंने राजनीति अपनी अहमियत मनवा ली.

कांशीराम को ऊंची जाति के लो से खतरनाक हद तक नफरत है. उन किसी भी सूरत उन्हें भरोसा नहीं. दलि के लिए जान कुरबान कर देने वाला ऊंची जाति का आदमी उन के अविश्व का पात्र है. दलित शोषित समाज का हि केवल इसी समाज के आदमी के हाथ सुरक्षित रह सकता है, ऐसा उन विश्वास है. कट्टर दुराग्रहों से भरी उन राजनीति कथित बहुजन समाज को कि रास्ते पर ले जाएगी और देश पर उस क्या असर होगा, यह तो आने वाला व ही बता सकेगा. फिलहाल तो बहु समाज पार्टी की नजर आगामी विधा सभा चुनावों पर है और सभी राजनीति दल उस के बढ़ते प्रभाव से आतंकित हैं.

पिछला लोक सभा चुनाव कांशीरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने अमेठी और पूर्वी दिल्ली से लड़ा. वह दोनों सीटें हार गए, पर मामूली चुनाव अभियान के बावजूद उन्होंने दोनों जगहों पर अच्छेखासे वोट बटोरे. लोक सभा में न पहुंच पाने के बावजूद वह अनेक नेताओं से ज्यादा लोकप्रिय और चर्चित हैं.

साउथ एवेन्यू स्थित उन के कार्यालय में कांशीराम से विस्तृत चर्चा हुई. सख्त सर्दी के बावजूद वह केवल एक बनियान और लुंगी पहने हुए थे. लोक सभा सत्र चल रहा था. उन के तीन लोक सभा सदस्य संसद भवन में थे और उन का रिमोट कंट्रोल जैसे कांशीराम के हाथ में था. उन से हुई बातचीत के कुछ अंश प्रस्तुत हैं.

प्रश्न : बहुजन समाज पार्टी का निर्माण आप को क्यों करना पड़ा?

उत्तर : जितनी भी राजनीतिक पार्टियां हैं, उन से इस देश के दबेकुचले इनसान का भला नहीं हो सकता. उन्हें ये पार्टियां न्याय और सही स्थान नहीं दिला सकतीं. इसी लिए हमें अलग अपनी पार्टी बनानी पड़ी.

डा. भीमराव अंबेडकर तो देवता बन कर मूर्ति बन गए हैं. कांशीराम क्या आशाओं को पूरा कर सकेंगे?

प्रश्न : एक बड़ी राजनीतिक पार्टी बनाने में आप को इतनी जल्दी सफलता कैसे मिल गई?

उत्तर : इस से पहले हम ने 'बामसेफ' और 'डी एस-4' संगठन बनाए, जिन्होंने दलित कर्मचारियों व मजदूरों को संगठित किया. उन में चेतना जगाई. इस तरह बहुजन समाज पार्टी के लिए काफी पहले से हम ने जमीन तैयार कर ली थी.

प्रश्न : पहले तो आप देश की सभी लोक सभा सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े करना चाहते थे, पर आप ने सिर्फ 330 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए. कारण?

उत्तर : चुनाव जल्दी में हुआ. हमें तैयारी का मौका नहीं मिल सका. हम ने उन लोगों को ले कर परिवर्तनशील मोरचा बनाया था, जो बहुजन समाज पार्टी में नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आना चाहते, पर परिवर्तन चाहते हैं. पर यह विचार आगे बढ़ नहीं सका. 27 सितंबर, 1989 को यह मोरचा बना और 18 अक्तूबर को चुनाव घोषित हो गया. इसी लिए जल्दी में सिर्फ 330 सीटों पर लड़ने का फैसला किया गया.

प्रश्न : लेकिन 330 में से सिर्फ तीन सीटों पर आप के उम्मीदवार जीते. इस की वजह?

उत्तर : जीत हमें तीन स्थानों पर ही मिली पर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश औ पंजाब में हम ज्यादातर जगहों पर दू और तीसरे स्थान पर रहे. यह सफ क्या कम है? इस से पहले तो हम उम्मीदवार जमानत भी नहीं बचा पाते अभी तो शुरुआत है, कल हमारा होगा.

प्रश्न : आप की पार्टी देश की सत्ता की तरफ बढ़ने का सपना देख रही है, पर अ तक तो आप का असर उत्तर भारत के कु राज्यों तक ही सीमित है.

बहुजन समाज पार्टी

क्या दलितों का भला कर पाएगी?

गांधीजी ने इस देश को दलित व शोषित लोगों को हरिजन कह कर पुकारा. पर 'हरिजन' शब्द उस नीच और कमतर जाति का परिचायक बन कर रह गया, जो ऊंची जातियों की हमदर्दी का मुहताज है. आज अधिकांश दलित समाज को इस शब्द से चिढ़ है. उस का कहना है कि हमें हमदर्दी नहीं, अधिकार चाहिए.

कांशीराम ने दलित जातियों को 'बहुजन' नाम दिया, जिस का अर्थ है वह समाज, जो इस देश में बहुसंख्यक है और जिसे इस देश का असली बाशिंदा होने का हक और गौरव चाहिए. कांशीराम ने कहा कि जो हमें हरिजन कहते हैं वे 'शैतानजन' हैं.

तो इस तरह कांशीराम ने दलित समाज का नया नामकरण किया और तमाम दलितों को एक राजनीतिक मंच पर लाने के लिए बहुजन समाज पार्टी बनाई.

राजनीति में दलित जातिवाद को इस्तेमाल करने की पहले भी कई छुटपुट कोशिशें हुई हैं. शुरू में बहुजन समाज पार्टी को एक ऐसी ही कोशिश समझा गया. लोग इसे लगातार नजरअंदाज करते रहे. पर पिछले लोक सभा चुनाव के नतीजों ने सभी को चौंका दिया. बहुजन समाज पार्टी ने लोक सभा की तीन और विधान सभा की 13 सीटों पर कब्जा कर लिया तो राजनीति के बड़ेबड़े पंडित भी हैरान रह गए. बहुत से स्थानों पर वह दूसरे व तीसरे नंबर पर रही. यह सब उस स्थिति में हुआ जब इस पार्टी का चुनाव प्रचार बहुत धीमा था.

इन नतीजों ने यह साबित कर दिया कि देश के दबेकुचले लोगों का पारंपरिक राजनीतिक शक्तियों से विश्वास उठ गया है और वे एक असरदार नेतृत्व की तलाश में हैं और अगर कोई उन की समस्याओं को ले कर मैदान में आता है तो वे उस का साथ देने के लिए तैयार हैं. दलित वर्ग की गहरी निराशा का लाभ निश्चित रूप से बहुजन समाज पार्टी को मिला है.

बहुजन समाज पार्टी उत्तर प्रदेश, पंजाब और मध्य प्रदेश में एक नई ताकत बन कर उभरी है. उत्तर प्रदेश से लोक सभा की दो और विधान सभा की 13 सीटों के अलावा पंजाब से लोक सभा की एक सीट बहुजन समाज पार्टी के हिस्से में आई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर : आने वाले छः महीने और 11 राज्यों में होने वाले चुनाव यह प्रकट कर देंगे कि हमारा असर पूरे देश में है या नहीं. थोड़ा इंतजार कीजिए.

प्रश्न : कहा जाता है कि विपक्ष को नुकसान पहुंचाने के लिए कांग्रेस ने आप लोगों को चुनाव में उतारा.

उत्तर : यह बात ठीक नहीं है. बल्कि हम से कांग्रेस को ही नुकसान पहुंचा है. मैं तो अकसर यही कहता हूं कि हम ने कांग्रेस का 'वोट बैंक' लूटा है. यह बात ठीक है कि कांग्रेस को नुकसान पहुंचाने से हमें लाभ नहीं पहुंचा. फायदा जनता दल और भारतीय जनता पार्टी को हुआ. कांग्रेस वाले तो बेचारे खुद कहते हैं कि अगर बहुजन समाज पार्टी न होती तो उन्हें 70 सीटें और मिल सकती थीं. हमारा खयाल तो 50 सीटों का है, पर वे 70 सीटें कहते हैं. उन्होंने शायद कंप्यूटर से हिसाब लगाया होगा.

प्रश्न : आप के बहुत कम उम्मीदवार

मध्य प्रदेश से इस पार्टी को कोई सीट नहीं मिली, पर उस के उम्मीदवारों ने यहां खासे वोट बटोरे. भिंड में उस का उम्मीदवार (राम बिहारी) करीब सवा लाख मत ले गया और भारतीय जनता पार्टी के विजेता उम्मीद्वार से थोड़ा ही पीछे रहा. मुरैना, ग्वालियर, सागर, सतना, रीवां, जांजगीर, बिलासपुर, सारंगगढ़, राजपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, जबलपुर, भोपाल आदि अनेक स्थानों पर उस ने तीसरे नंबर पर रह कर भारतीय जनता पार्टी, कांग्रेस और जनता दल से अच्छी टक्कर ली.

पंजाब से जो एक लोक सभा सीट (फिल्लोर) बहुजन समाज पार्टी को मिली, उस पर इस के हरभजन लाखा पौने दो लाख वोट ले कर सफल हुए. वह पंजाब बहुजन समाज पार्टी के महासचिव भी हैं. चुनाव से महीना भर पहले लुधियाना में पार्टी के सम्मेलन में डेढ़ लाख से ज्यादा लोगों को जुटाने में हरभजन लाखा को सफलता मिली थी. उन के अलावा होशियारपुर से इस पार्टी के सतनाम कैंथ को 1,08,067 वोट मिले और वह कांग्रेस के विजेता उम्मीदवार से थोड़े ही पीछे रहे. जालंधर, रोपड़, लुधियाना और फरीदकोट में बहुजन समाज पार्टी काफी मत ले कर तीसरे स्थान पर रही.

उत्तर प्रदेश से आजमगढ़ (गैर सुरक्षित) और बिजनौर की लोक सभा सीटें बहुजन समाज पार्टी के हिस्से में आईं. आजमगढ़ से रामकिशन यादव जीते, जो भूतपूर्व मुख्य मंत्री रामनरेश यादव के सगे चचेरे भाई हैं. रामकिशन यादव आजमगढ़ में वकालत करते हैं. पहले वह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में थे. इस पार्टी से उन्होंने विधान सभा का चुनाव भी लड़ा, पर असफल रहे. जब 1977 में भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस (इ) से समझौता कर लिया तो उन्होंने पार्टी छोड़ दी. बाद में वह कांशीराम के साथ आ गए.

रामकिशन यादव का कहना है, "भारत में दलित जातियां संपूर्ण शोषण की शिकार हैं. आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक तीनों स्तरों पर उन का शोषण हो रहा है. ऐसे शोषण की मिसाल दुनिया में कहीं नहीं मिलती. बहुजन समाज पार्टी इस संपूर्ण शोषण के खिलाफ बगावत का झंडा बुलंद करती है."

बिजनौर लोक सभा सीट से बहुजन समाज पार्टी की महासचिव मायावती चुनी गई हैं. वह हरिद्वार से भी खड़ी हुई थीं, पर यहां वह कांग्रेसी उम्मीदवार से हार गईं. इस के बावजूद 1,11, 194 वोट ले कर वह तीसरे नंबर पर रहीं.

उत्तर प्रदेश में खलीलाबाद (डा. मसूद अहमद), बांदा (चंद्रभान आजाद) और जालौन (रामाधीन) की लोक सभा सीटों पर बहुजन समाज पार्टी दूसरे स्थान पर रही.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीते हैं, इसलिए आप को नहीं लगता कि किसी अन्य पार्टी के साथ समझौता करते तो आप को ज्यादा सफलता मिलती?

उत्तर : हम समझौतों की राजनीति पसंद नहीं करते. ऐसा करेंगे तो हमारी पार्टी को स्वतंत्र रूप से विकसित होने में दिक्कत होगी. वैसे समझौते के लिए पेशकश बहुत हुई है. कांग्रेस वाले आखिरी वक्त तक कोशिश करते रहे. मुझे उप प्रधान मंत्री तक बनाने का लालच दिया गया. देवीलाल और विश्वनाथ प्रताप सिंह ने भी बहुत कोशिश की. पर हम अन्य लोगों और नीतियों के साथ विश्वासघात नहीं करना चाहते थे.

प्रश्न : मौजूदा सरकार के बारे में आप की राय?

उत्तर : सरकार चाहे जनता दल की हो या कांग्रेस की, दोनों ही हमारे लिए बेफायदा हैं. एक सांपनाथ है तो दूसरा नागनाथ. कांग्रेस को हम घास का हरा सांप

विधान सभा में उस ने कोंच, मांधोगढ़, उरई, सराय मीर, मोहम्मदाबाद, फूलपुर, मऊ, अफजलगढ़, नगीना, नजीबाबाद, जाललपुर, ठाकुरद्वारा और नवाबगंज, इन 13 सीटों पर कब्जा जमाया. यानी उस का असर किसी एक खास इलाके में नहीं, बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश में रहा. जबकि उस के 50 ऐसे उम्मीदवार हैं जो दूसरे नंबर पर रहे, ये उम्मीदवार कहीं जनता दल, कहीं कांग्रेस और कहीं भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार से ऊपर रहे.

इस के अलावा बहुजन समाज पार्टी राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, केरल, जम्मूकशमीर, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, चंडीगढ़ और दादरा व नगर हवेली के लोक सभाई मैदानों में उतरी. कई प्रदेशों में उस के वोटों का प्रतिशत काफी अच्छा रहा, जिस से भविष्य के लिए उस के हौसले बुलंद हुए हैं.

करीब एक करोड़ वोट बटोरने का दावा करने वाली बहुजन समाज पार्टी का आरोप है कि उत्तर प्रदेश में उस के 25-30 उम्मीदवारों को गिनती में धांधली कर के हराया गया है.

पार्टी के अध्यक्ष कांशीराम अपनी इस सफलता से संतुष्ट नहीं हैं. उन का कहना है कि उन्हें वक्त कम मिला और कामयाबी उम्मीद से कम रही. स्वयं कांशीराम ने अमेठी में राजीव गांधी के खिलाफ और पूर्वी दिल्ली में हरिकिशन लाल भगत के विरुद्ध चुनाव लड़ा था, पर वह सफल नहीं हो सके.

कांशीराम को अमेठी और दिल्ली में खुद भी जीतने की उम्मीद नहीं थी. लेकिन उन का कहना था कि यहां वह दो बड़े उद्देश्यों के लिए लड़ रहे हैं. अमेठी में उन की लड़ाई सामंतवादी आकाओं के खिलाफ थी और दिल्ली में वह झुग्गीझोंपड़ियों के आकाओं के विरुद्ध लड़े. अमेठी और दिल्ली में उन्हें बिना विशेष प्रयास के क्रमशः 25,386 और 81,095 वोट मिले.

कांशीराम का यह तर्क समझ में नहीं आया कि पार्टी का अध्यक्ष होने के बावजूद उन्होंने ऐसे चुनाव क्षेत्रों को क्यों चुना, जहां से उन्हें जीतने की उम्मीद नहीं थी. इस का वह संतोषजनक उत्तर भी नहीं दे पाते. अगर वह लोक सभा के बाहर बैठना चाहते हैं तो फिर चुनाव लड़ने की जरूरत ही क्या थी? या फिर क्या उन्हें और उन की पार्टी को चुनाव गणित का पूरा अंदाजा नहीं है?

इस से यह भी अंदाजा होता है कि बहुजन समाज पार्टी के अध्यक्ष होश से कम और जोश से ज्यादा काम लेते हैं. उन के इस अटपटे अंदाज की वजह से ही लोग उन पर यह आरोप लगाते हैं कि उन का कांग्रेस से गुप्त समझौता है और वह विपक्ष के वोट काटने के लिए खड़े हुए थे.

लेकिन पार्टी के संपूर्ण 'कैरियर ग्राफ' और उस के संपूर्ण चुनावी 'स्कोर कार्ड' को देखा जाए तो इस आरोप में दम नजर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानते हैं तो जनता दल व भाजपा को वह जहरीला नाग, जो फन तान कर खड़ा है. यह नाग ज्यादा जहरीला है पर हम इस से कम डरते हैं क्योंकि इसे पहचानने में हमें दिक्कत नहीं होती. कांग्रेस एक कम जहरीला सांप है, पर वह हरा है. घास में मिल जाता है. उसे पहचानना मुशकिल होता है. इसी लिए उस से ज्यादा सावधान रहना पड़ता है.

प्रश्न : चुनाव लड़ना बहुत महंगा काम है. आखिर आप के पास इतना पैसा कहां से आया कि आप 330 उम्मीदवार मैदान में उतार सके?

उत्तर : पैसा हमारे पास था नहीं, तभी तो सिर्फ तीन उम्मीदवार जीत सके. अगर हम अपने हर उम्मीदवार पर 50-50 हजार रुपया खर्च कर पाते तो आज हमारे 36 सदस्य लोक सभा में होते. जब हमारे लोग मैदान में जाते हैं तो लोग उन्हें एकएक, दोदो रुपए के हार पहनाते हैं. यही पैसा

आता. हमें यह कहना ही होगा कि बहुजन समाज पार्टी एक तीसरी ताकत बन कर उभर रही है. दलित व शोषित समाज सब तरफ से नाउम्मीद हो कर बहुजन समाज पार्टी की तरफ आशा भरी नजरों से देख रहा है.

सवर्ण जातियों के खिलाफ दलितों के दबे हुए आक्रोश को यह पार्टी स्वर दे रही है, पर उन्हें मानवता और राष्ट्रवाद के दायरे में सही दिशा दे पाएगी या नहीं, इस संबंध में अभी निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता.

हालांकि कांशीराम का एक करोड़ वोट समेटने का दावा है, पर इस से यह साबित नहीं हो जाता कि दलित शोषित समाज की सभी छः-सात हजार जातियां उन के साथ हैं. उन्हें मुसलमानों के भी काफी वोट मिले हैं. उत्तर प्रदेश विधान सभा में जो 13 सीटें उन्हें मिली हैं, उन में पांच विधायक मुसलमान हैं. इसी प्रकार लोकसभा की सीटों पर उस ने दो दर्जन से ज्यादा मुसलिम उम्मीदवार खड़े किए थे.

वाल्मीकि समाज (सफाई मजदूर समुदाय) का एक बड़ा वर्ग बहुजन समाज पार्टी को पूरे मन से समर्थन नहीं देता. वह इसे महज चर्मकार समाज की पार्टी मानता है. हालांकि वाल्मीकि समाज के काफी उम्मीदवार बहुजन समाज पार्टी ने खड़े किए थे. पर वाल्मीकियों में अभी इस पार्टी को विश्वास जमाने की जरूरत है.

1984 में अपने गठन के बाद बहुजन समाज पार्टी ने लोक सभा और विधान सभाओं का चुनाव कई सीटों पर लड़ा था, पर उसे सिर्फ दस लाख वोट मिले थे और किसी भी स्थान पर उसे विजय नहीं मिली थी. 1989 के चुनाव में पार्टी ने 330 लोकसभा सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए.

लिहाजा बहुजन समाज पार्टी बहुत जल्दी में अपनी रणनीति बनाती और बदलती दिखाई देती है. कहीं उस में जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास नजर आता है और कहीं आत्मविश्वास में कमी. ये दोनों ही स्थितियां उस के लिए नुकसानदेह साबित हो सकती हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनाव में लग जाता है. मैं ने अपने एक उम्मीदवार से पूछा, "आप को एक लाख 37 हजार वोट मिले हैं. आप सिर्फ पांच हजार वोटों से हार गए. आखिर ऐसा क्यों हुआ?" उन्हों ने कहा, "लोग मुझे हार डालते थे. 17 हजार रुपयों के हार मुझे मिले. इन्हीं से मैं ने चुनाव लड़ा. हारों के आधार पर चुनाव लड़ेंगे तो हार तो होगी ही. हारों के अलावा कोई और साधन होता तो मैं एक लाख वोटों से जीतता."

प्रश्न : चुनाव के अलावा पार्टी के दूसरे कामों के लिए आप के पास पैसा कहां से आता है?

उत्तर : हमारे संगठन का खर्च एक करोड़ रुपए महीने का है. हमारे सहयोगी संगठन 'बामसेफ' के कई लाख सदस्य हैं, जो नियमित रूप से थोड़ाथोड़ा चंदा देते हैं. इस चंदे से ही यह खर्च चलता है. अगर चुनाव की तैयारी के लिए हमें थोड़ा समय मिलता तो 'बामसेफ' के माध्यम से हम चुनाव के लिए दो करोड़ रुपया इकट्ठा कर लेते.

प्रश्न : दलित समाज को ऊपर उठाने के लिए संविधान में आरक्षण की जो व्यवस्था की गई है, क्या आप उसे पर्याप्त मानते हैं?

उत्तर : आरक्षण की व्यवस्था तो ठीक है, पर उसे लागू करने का तरीका सही नहीं है. इसीलिए आधी से ज्यादा सीटें खाली पड़ी रहती हैं. अनुसूचित जातियों व जनजातियों के अलावा जो पिछड़ी जातियां हैं, उन के लिए आरक्षण की कोई व्यवस्था अभी तक नहीं हुई है. इस के लिए कांग्रेस ने कालेलकर आयोग बिठाया, पर कुछ नहीं हुआ. जनता पार्टी ने यह वादा कर के कि हम कालेलकर आयोग की सिफारिशें लागू करेंगे, वोट हासिल किए. पर उस ने वादा पूरा नहीं किया. उस ने दूसरा आयोग बिठा दिया. जिस का नाम है, मंडल आयोग. पर मंडल आयोग की रिपोर्ट दस साल से पार्लियामेंट के रिकार्ड में पड़ी है. जनता दल ने अपने घोषणापत्र में कहा कि वह मंडल आयोग के फैसले को पूरी तरह लागू करेगा यानी पिछड़ी जातियों को 27% आरक्षण दिया जाएगा. पर अब सत्ता में आते ही जनता दल और भारतीय जनता पार्टी ने आरक्षण विरोधी अभियान शुरू कर दिया.

प्रश्न : आप कैसे कह सकते हैं कि आरक्षण विरोधी मुहिम में जनता दल और भाजपा का हाथ है?

उत्तर : वह तो स्पष्ट है. इन की जड़ें अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और युवा जनता में हैं. जनता दल के लोग इसे चला रहे हैं. हालांकि वे छिपाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं. 1985 में गुजरात में जो आरक्षण विरोधी मुहिम चली, उस में कांग्रेस का और हमारे तत्कालीन प्रधान मंत्री का स्पष्ट हाथ नजर आया. गुजरात में अपने मुख्य मंत्री के जरिए उन्होंने यह काम किया. इसी तरह जनता पार्टी ने अपने मुख्य मंत्रियों कर्पूरी ठाकुर व रामनरेश यादव को आरक्षण विरोध के लिए इस्तेमाल किया. असल में ये तमाम पार्टियां सवर्णों की पार्टियां हैं. दलितों के हितों से इन को कुछ लेनादेना नहीं है.

प्रश्न : आरक्षण व्यवस्था के कारण अन्य समुदायों के योग्य लोगों के साथ अन्याय होता है और कई बार योग्य व्यक्ति के स्थान पर अयोग्य आदमी के आ जाने से समाज को नुकसान होता है. यह बात अकसर कही जाती है. आप क्या सोचते हैं?

उत्तर : मेरी राय छोड़िए, सवर्णों की तमाम पार्टियां कांग्रेस, भाजपा, जनता दल अपने घोषणा पत्रों में साफ लिखती हैं कि आरक्षण जाति के आधार पर होगा, आर्थिक आधार पर नहीं. तो क्या वे लोगों को धोखा देने के लिए ऐसा लिखती हैं? मैं तो कहूंगा कि वे धोखा देती हैं. अन्यथा जो वे लिखती हैं, उसे उन्हें लागू करना चाहिए.

प्रश्न : जिस तरह अन्य सांप्रदायिक संगठन जाति के आधार पर काम करते हैं, उसी तरह आप भी जाति के आधार पर लोगों को संगठित करना चाहते हैं. इस तरह के प्रयास देश की अखंडता के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

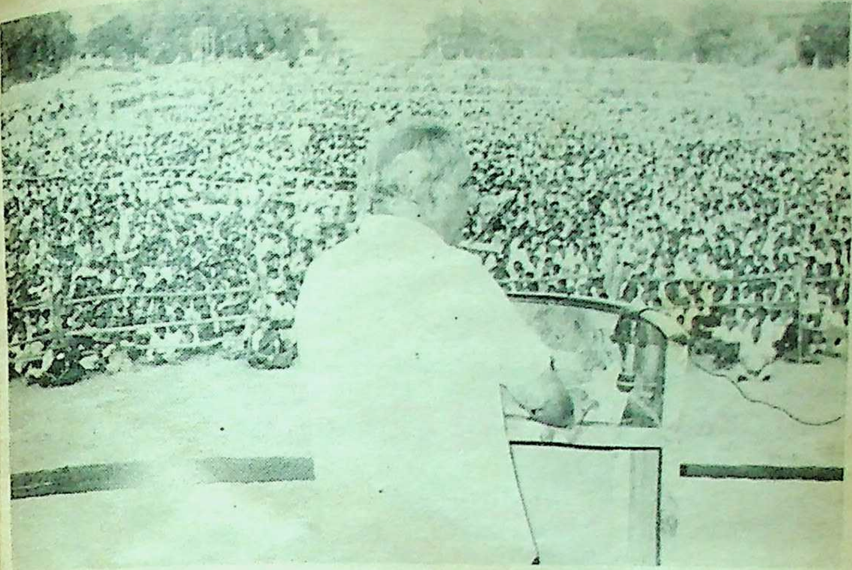

कांशीराम की सभाओं में भीड़ तो होती है पर नितांत अशिक्षितों और अनुभवहीनों की. कांशीराम इन लोगों के सहारे कुरसी तो पा सकते हैं पर उन से निर्माण करा कर उन की सामाजिक व आर्थिक स्थिति नहीं सुधरवा सकते. ▲

एक चुनौती भी बन सकते हैं. आप का क्या कहना है?

उत्तर : हमारा मानना है कि ऊंची जातियां, ब्राह्मण, ठाकुर, बनिया वगैरह, देशद्रोही जातियां हैं. इन्होंने सदियों से देशद्रोह का काम किया है. अखंडता के लिए ये ही चुनौती बनी हैं. जातिवाद का जहर इन्होंने ही फैलाया है. दलित व पिछड़ी जातियां तो इस देश की असली बाशिंदा हैं. उन्होंने अपना तो सत्यानास जरूर कराया है, पर कभी देशद्रोह नहीं किया.

प्रश्न : इन्हें आप देशद्रोही कैसे कह सकते हैं?

उत्तर : इन्होंने देश के साथ बड़ा धोखा किया. इन्होंने जातिवाद की दीवारें मजबूत कर के देश के लोगों को कभी इकट्ठा नहीं होने दिया. महमूद गजनवी आया और इन के मंदिरों को लूट कर ले गया. क्योंकि जो लड़ने वाले लोग थे, उन्हें इन्होंने मंदिरों से दूर रखा. मंदिरों में मौजमस्ती करने वाले लोग थे, वे मुसलमानों को देख कर भाग गए. इस तरह इन्होंने मुसलमानों को बुलाया, फिर इन्हीं ने अंगरेजों को बुलाया. इन्हीं देशद्रोहियों ने वेद, पुराण और स्मृतियां बनाईं, जिन में देश के लोगों को कभी इकट्ठा न होने देने की व्यवस्था की गई. सवर्ण जातियों के सदियों के इस देशद्रोह के खिलाफ ही हम बहुजन समाज बनाना चाहते हैं. हिंदू समाज तो तोड़ता है, जबकि बहुजन समाज जोड़ता है.

प्रश्न : तो क्या आप अपने बहुजन समाज को हिंदू समाज की मुख्य धारा से अलग मानते हैं?

उत्तर : बहुजन समाज ही असली मुख्य धारा है, हिंदू समाज नहीं. क्योंकि बहुजन समाज इस देश का बहुसंख्यक समाज है.

प्रश्न : आप के स्वर से लगता है कि आप सवर्ण जातियों के साथ किसी भी स्तर पर तालमेल नहीं करना चाहते?

उत्तर : अगर ये जातियां देश के साथ गद्दारी करना और राष्ट्रवाद के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलवाड़ करना छोड़ दें तो तालमेल हो सकता है.

प्रश्न : कुछ लोग अछूतों के लिए एक अलग राष्ट्र की बात सोचते हैं. इस संबंध में आप का क्या कहना है?

उत्तर : यह बात देशद्रोही लोग सोचते हैं. हमारा कहना है कि पूरा भारत हमारा है. हमें टुकड़ा नहीं चाहिए, पूरा भारत चाहिए. हम एक विशाल भारत हैं, हम एक टुकड़े में नहीं समा सकते.

प्रश्न : गांधीजी अछूतों को हि समाज की मुख्य धारा से जोड़ना चाह जबकि डा. अंबेडकर मानते थे कि अ धर्म परिवर्तन कर के ही देश व समाज सम्मानित स्थान पा सकते हैं. इन नजरियों में आप किस का समर्थन करते

उत्तर : ब्राह्मणवाद गैरबराबरी रूह है. जब तक ब्राह्मणवाद है, तब हिंदू समाज में पिछड़ी जातियों मानसम्मान नहीं मिल सकता. गांधीजी

मायावती
एक विवादास्पद नेता

'चमारी हूं, कुंआरी हूं, तुम्हारी हूं', अपनेइस नारे की वजह से मायावती पिछले चुनाव में खास चर्चा का विषय बनीं. 'कुंआरी' और 'तुम्हारी' से उन का तात्पर्य यह था कि वह अविवाहित रह कर पूरी तरह अपनी जनता के प्रति समर्पित रहना चाहती हैं.

बहुजन समाज पार्टी के टिकट से बिजनौर की सुरक्षित लोकसभा सीट के लिए चुनी गई मायावती का संबंध एक निहायत गरीब और मजदूर परिवार से है. 15 जनवरी, 1956 को उन का जन्म दिल्ली में हुआ. उन का परिवार मूल रूप से उत्तर प्रदेश (बुलंदशहर) से संबंध रखता है, जो 1965 में दिल्ली में आ कर बसा.

1975 में मायावती ने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. किया. फिर बी.एड. कर के वह अध्यापिका बन गईं. इसी दौरान उन्होंने एलएल.बी. भी किया. नौकरी के दौरान 'बामसेफ' (बैकवर्ड एंड माइनोरिटी कम्यूनिटीज एंप्लाईज फेडरेशन) की सदस्या होने के नाते उन का संपर्क इस के अध्यक्ष कांशीराम से हुआ. हरिजनों के साथ होने वाले भेदभाव से वह बहुत आहत हुईं. अंबेडकर के साहित्य का अध्ययन करने उन्हें एक दिशा और प्रेरणा मिली. नौकरी छोड़ कर कांशीराम के साथ बहुजन समाज पार्टी में आ गईं.

1985 में मायावती ने बिजनौर लोकसभा सीट का उपचुनाव लड़ा. जगजीवनराम की पुत्री कांग्रेस (इ.) उम्मीदवार मीरा कुमार के विरुद्ध सफल नहीं हो सकीं. 1987 में हरिद्वार लोकसभा सीट का उपचुनाव उन्होंने कांग्रेस (इ.) के रामसिंह व जनता पार्टी के रामविलास पासवान के खिलाफ लड़ा. उन्हें 1,36,399 वोट मिले, पर कांग्रेसी उम्मीदवार से वह थोड़े अंतर से पीछे रह गईं जबकि रामविलास पासवान की जमानत जब्त हो गई. (वही रामविलास पासवान जिन्होंने नौवीं लोकसभा का चुनाव पांच लाख वोटों के अंतर से जीत कर कीर्तिमान स्थापित किया है).

1989 के लोकसभा चुनाव में मायावती एक बार फिर बिजनौर से खड़ी हुईं. उन्हें 1,83,189 वोट मिले. अपने निकटतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछड़ी जातियों को हिंदू समाज से जोड़ने की कोशिश की, पर वह नाकाम रहे. ब्राह्मणवाद रहता है तो जातिवाद रहता है और गांधीजी ने वर्ण व्यवस्था कायम रखने की बात की है. गांधीजी ने कोशिश की, उन के चेलों ने भी कोशिश की. पर अनुसूचित जाति का कोई आदमी गांधीजी को अपना मानने के लिए तैयार नहीं. वे गांधी जयंती नहीं मनाते, अंबेडकर जयंती मनाते हैं. वे अंबेडकर जयंती पर करोड़ों रुपए खर्च करते हैं. सरकार गांधी जयंती मनाती है, पर दलित लोग उसे देखने भी नहीं जाते.

प्रश्न : इस का अर्थ है आप डा. अंबेडकर के धर्म परिवर्तन वाले नजरिए से सहमत हैं?

उत्तर : हां, लेकिन धर्म ऐसा हो जो मानवतावादी हो. ऐसा न हो कि धर्म परिवर्तन कर के हम किसी और मुसीबत में फंस जाएं.

प्रतिद्वंद्वी को उन्होंने 8,879 वोटों से हरा दिया.

मायावती अपनी पार्टी की महासचिव भी हैं. कांशीराम और मायावती के अलावा इस पार्टी में कोई और नेता नहीं है, जो अखिल भारतीय पहचान बना पाया हो. मायावती ने बताया कि उन के यहां चमचागिरी को कम और काम व त्याग को ज्यादा अहमियत दी जाती है, इसलिए उन के यहां बड़े कद वाले नेताओं की भीड़ नहीं है और अंदरूनी खींचतान भी कम है.

एक महिला होने की वजह से मायावती को राजनीति में बेहद दिक्कतों का सामना करना पड़ा. उन्हीं के समुदाय के लोगों ने उन पर कई आरोप लगाए. उन के चरित्र पर भी इलजाम लगाया गया. मायावती का कहना है कि इन आरोपों के पीछे ब्राह्मणवादी लोगों की शह रही है, जिन्होंने उन के अपने लोगों को उकसाया.

"लेकिन मैं सिर पर कफन बांध कर आई हूं. मेरा मनोबल गिराने वाली कोई भी कोशिश सफल नहीं हो सकेगी," मायावती ने कहा.

मायावती जोशीले भाषण देने के लिए खासी बदनाम हैं. उन के विरोधियों का कहना है कि वह लोगों को भड़काती हैं, जिस से हिंसा फैलने का खतरा रहता है. मायावती ने इस सिलसिले में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहा, "सचाई कड़वी होती है और हर कड़वी बात बुरी लगती है. सदियों से चली आ रही ब्राह्मणवादी दादागिरी के खिलाफ जब हम कुछ पूछते हैं तो लोगों में थोड़ाबहुत आक्रोश पैदा होना स्वाभाविक है."

बिजनौर के दो अखबारों (बिजनौर टाइम्स, चिनगारी) ने तो मायावती के खिलाफ एक जिहाद छेड़ रखा है. इन दोनों अखबारों का एक ही संपादक (बाबूसिंह चौहान) है. ये अखबार मायावती को एक खतरनाक महिला के रूप में पेश करते हैं. इन अखबारों में पिछले दिनों छपा कि मायावती हिंदुओं के खिलाफ मुसलमानों को भड़का रही हैं और उन्होंने मुसलमानों को आश्वासन दिया है कि वह हरिद्वार में हर की पौड़ी पर मसजिद बनवाएंगी.

मायावती ने बिजनौर के इन अखबारों पर आरोप लगाया, "ये मेरे नाम से ऐसे बयान छाप देते हैं, जो मैं ने नहीं दिए होते. मैं ने पुलिस अधीक्षक और जिलाधीश से इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न : जिस तरह हिंदुओं और मुसलमानों के कई वर्ग हैं, उसी तरह दलित समाज भी कई वर्गों में बंटा हुआ है. क्या आप नहीं समझते कि इन तमाम वर्गों को एक जगह संगठित करना बेहद मुशकिल काम है?

उत्तर : मैं मानता हूं कि अनुसूचित जाति हजार डेढ़ हजार वर्गों में बंटी है. इसी तरह जनजाति के लोग भी करीब डेढ़ हजार वर्गों में बंटे हैं और इसी प्रकार अन्य पिछड़ी जातियों के लोग 3,743 जातियों में विभाजित हैं. तो जब तक यह जातपांत रहेगी बंटवारा तो रहेगा ही. हम सब वर्गों को मिटा कर एक बहुजन समाज बनाना चाहते हैं. इस में हमें कुछ हद तक सफलता भी मिली है.

प्रश्न : जातियों और उपजातियों में बंटे होने के अलावा दलित समाज की एक और बड़ी समस्या अंधविश्वास है. इस जटिल समस्या का आप के पास क्या इलाज है?

उत्तर : हमारा जो चार सूत्री कार्यक्रम है, उस में एक सूत्र यह भी है कि हम लोगों की सड़ीगली संस्कारों और अंधविश्वा निकालने का पूरापूरा प्रयास करेंगे. ह मानना है कि 'भगवान और भाग्य' हिंदुओं के हथियार हैं, जिन से हमें गया है. हमारी बुनियादी शिक्षा है कि से हमें सावधान रहना है.

प्रश्न : तो इस अर्थ में आप मार्क्स के हामी हैं?

उत्तर : मार्क्सवाद से हमारा वि है. वह सिर्फ आर्थिक परिवर्तन की करता है, जबकि हम आर्थिक के साथ सामाजिक परिवर्तन भी चाहते हैं. सामाजिक परिवर्तन हमारी प्राथमिकता

प्रश्न : बिहार में आई.पी. ब्राह्मणवाद के खिलाफ लड़ रहा है. इस संगठन से आप की सहमति है?

उत्तर : कतई नहीं. पहली बात तो कि इस का नेतृत्व ऊंची जाति के लोगों हाथों में है और ऊंची जाति के लोग ह दर्द को कभी नहीं समझ सकते. दूसरी बा यह कि यह संगठन हिंसा के तरीकों चलता है. हम लोग हिंसा और मरनेमार के तरीकों के खिलाफ हैं.

की शिकायत की है. अखबारों की झूठी व उत्तेजक खबरों की वजह से बिजनौर क्षेत्र में कभी भी दंगा हो सकता है, जिस की सारी जिम्मेदारी इन के संपादक पर होगी."

मायावती अभी भी दिल्ली में इंद्रपुरी स्थित पुराने मकान में अपने परिवार के साथ रह रही हैं. उन के पिता प्रभुदास डाकतार विभाग से पिछले साल सेवानिवृत्त हुए हैं. उन की दो विवाहित बहनें और छः भाई हैं— दो सरकारी कर्मचारी हैं, दो निजी काम करते हैं, दो पढ़ रहे हैं. घर में अनपढ़ मां भी हैं, जिन्हें मायावती अपना सब से बड़ा प्रेरणा स्रोत मानती हैं.

अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था अगले 10 साल और बढ़ाने वाला जो विधेयक लोकसभा में पास हुआ है, उस का मायावती स्वागत करती हैं. पर उन का कहना है कि आरक्षण की इस नीति के पीछे सरकार की नीय साफ नहीं है.

केंद्रीय श्रम मंत्री रामविलास पास ने आरक्षण संबंधी विधेयक का प्रस् रखते हुए लोकसभा में कहा था, "आर के मामले में सिर्फ नीति काफी नहीं है, ब नीति के साथसाथ नीयत का साफ होना जरूरी है." मायावती श्रम मंत्री के इ बयान का हवाला देते हुए व्यंग्य करती हैं नीयत तो स्वयं जनता दल की साफ नहीं है अन्यथा उस की सरकार के उपप्रधान मं देवीलाल यह क्यों कहते कि आरक्षण जा के आधार पर नहीं, आर्थिक आधार प होना चाहिए. मायावती की कमजो यह है कि वह शीघ्र उत्तेजित हो जाती हैं राजनीति के नाजुक तकाजों को देखते हु उन्हें विचारों और कार्यप्रणाली में का परिपक्वता लानी होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हमारा हर काम मुसलमानों की भलाई के लिए है' आरिफ बेग

भारतीय जनता पार्टी के एकमात्र मुसलिम सांसद

भेंटवार्त्ता • सगीर किरमानी

आरिफ बेग की शख्सीयत कई विरोधाभासों से मिल कर बनी है. एक सोशलिस्ट के रूप में वह सियासत में आए, पर बाद में उन्होंने 'कामरेड' का लाल चोगा उतार फेंका और जनसंघ के भगवा झंडे के नीचे आ गए. एक मजहबी मुसलमान होने के साथसाथ वह कट्टर राष्ट्रवादी राजनीति के हिमायती हैं. उन्हें आप मुसलमानों के मजमे में इसलाम और मुसलिम मुद्दों पर जोशीली तकरीर करते हुए भी सुन सकते हैं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मंच पर संघ संस्कृति की तारीफ में धुआंधार भाषण देते हुए भी.

सैयद शहाबुद्दीन जैसे कट्टरपंथी मुसलिम नेता कहते हैं कि 'आरिफ बेग आदमी तो अच्छा है पर उस ने हिंदू राष्ट्रवादी जनसंघियों से समझौता कर लिया है. बाबरी मसजिद के सवाल पर उसे मुसलिम विरोधी जनसंघियों का साथ छोड़ देना चाहिए था.'

आरिफ बेग का परिचय खुद उन्हीं के शब्दों में:

"मेरा जन्म 2 फरवरी 1936 को इंदौर में हुआ. बी.एससी., एलएल.बी. तक मेरी शिक्षा हुई. इंदौर में ही 1967 में मेरा राजनीतिक जीवन शुरू हुआ. सब से पहले मैं इंदौर से मध्य प्रदेश विधान सभा के लिए सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर चुना गया और राज्य की संविद सरकार में सहकारिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जनता पार्टी पर हमेशा से हिंदू [illegible] करने का आरोप लगाया जाता रहा है. लेकिन इसी पार्टी में आरिफ बेग जैसे मुसलिम नेता भी शामिल हैं जो पार्टी के राष्ट्रवादी होने का दावा करते हैं. ऐसे में भाजपा को सांप्रदायिक कहना क्या उचित होगा ? प्रस्तुत है इसी विवादास्पद मुद्दे पर भाजपा के एकमात्र मुसलिम सांसद आरिफ बेग से भेंटवार्त्ता.

मंत्री बना. 1973-74 में मैं भारतीय जनसंघ में आ गया."

"आपातकाल के दौरान 19 महीने जेल में ('मीसा' में) बंद रहने के बाद मैं ने जनता पार्टी के टिकट पर 1977 का लोकसभा चुनाव भोपाल से लड़ा. तत्कालीन केंद्रीय संचार मंत्री डा. शंकरदयाल शर्मा (वर्तमान उपराष्ट्रपति) को एक लाख नौ हजार वोटों से हराया और मोरारजी देसाई के मंत्रिमंडल में वाणिज्य राज्य मंत्री बना. वर्तमान लोकसभा में मैं बैतूल चुनाव क्षेत्र से हाकी के विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ी असलम शेर खां को 40 हजार मतों से हरा कर आया हूं.

"भोपाल से मैं ने उर्दू में साप्ताहिक अखबार 'अयाज' शुरू किया, पिछले 18 साल से यह सफलतापूर्वक चल रहा है. मैं एक स्काउट संस्था ब्लू क्रास रोबर्स क्रू का संस्थापक अध्यक्ष हूं. साथ ही, 'अंजुमन अमन दोस्त इंसान दोस्त' तथा 'राष्ट्रशक्ति' नामक संस्थाओं का अध्यक्ष हूं. इन संगठनों में करीब एक लाख लोग राष्ट्रीय एकता के मिशन पर लगे हैं.

"मैं भारतीय जनता पार्टी का अखिल भारतीय सचिव और इस के अल्पसंख्यक सेल का अखिल भारतीय अध्यक्ष हूं. संसद की विदेशी मामलों की परामर्श समिति का सदस्य भी हूं. मैं 16 देशों का भ्रमण कर चुका हूं."

आरिफ बेग से कुछ खास मुद्दों पर हुई बातचीत के कुछ अंश:

प्रश्न: आप ने सोशलिस्ट पार्टी यानी वामपंथी सियासत से अपना कैरियर शुरू किया. फिर आप एक दक्षिणपंथी संगठन जनसंघ में कैसे आ गए?

उत्तर: मैं डा. राममनोहर लोहिया का साथी हूं. लोहियाजी ने ही मेरे दिल में राष्ट्रभक्ति का जज्बा पैदा किया. मैं 12 साल सोशलिस्ट पार्टी में रहा. 1967 में डा. लोहिया का देहांत हो गया. उन का व्यक्तित्व ही मुझे सोशलिस्ट पार्टी से जोड़े हुए था. मैं मानता हूं कि आज के हालात में मुसलमानों में राष्ट्रभक्ति की भावना का होना बेहद जरूरी है. इसी जरूरत को महसूस करते हुए मैं जनसंघ में आया.

प्रश्न: आप का मतलब है कि जनसंघ या भारतीय जनता पार्टी के अलावा और कोई पार्टी देशभक्त नहीं है?

उत्तर: और लोगों में देशभक्ति और मातृभक्ति से प्रेम की वैसी शदीद (तीव्र) भावना नहीं है जैसी जनसंघ वालों में है. वे राष्ट्रप्रेम की बात जिस तरह जोर दे कर करते हैं, उस से मैं बहुत प्रभावित हुआ. मैं इस खयाल का हामी हूं कि भारत के मुसलमान को अपने हिंदू भाई के कंधे से कंधा मिला कर चलना चाहिए. आबादी के लिहाज से हिंदू हमारा बड़ा भाई है. लेकिन हर राज्य में हालत अलग है. जम्मू व कशमीर में मुसलमान बड़ा भाई है, पंजाब में सिख, अरुणाचल, नागालैंड और मिजोरम में ईसाई बड़ा भाई है. शेष भारत में हिंदू बड़ा भाई है.

हर राज्य में बड़ा भाई अपने छोटे भाई को अपने सीने से लगा कर रखे और छोटा बड़े को आदर दे तो देश के मसले आसानी से सुलझ सकते हैं.

प्रश्न: लेकिन जनसंघ के लोग तो शुरू से ही मुसलिम विरोधी रहे हैं?

उत्तर: जनसंघ की यह तसवीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

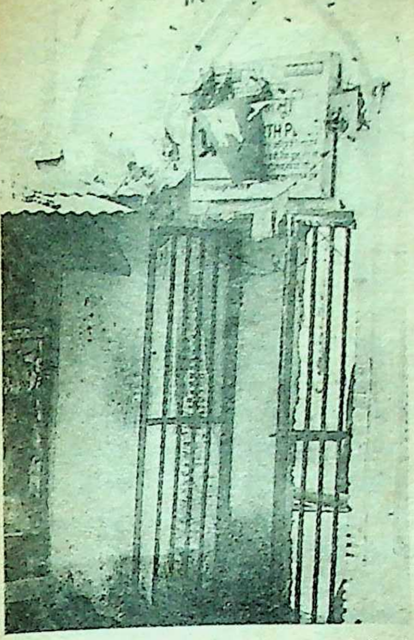

"राम जन्मभूमि बाबरी मसजिद मसला अदालत या सड़कों पर नहीं आपसी सहमति से हल होगा." आरिफ बेग.

जानबूझ कर बनाई गई है. और यह कोई नई बात नहीं है. जवाहरलाल नेहरू के जमाने से कांग्रेस का यह रवैया चला आ रहा था. मेरी पार्टी के हिंदू को अपने हिंदू होने पर गर्व है, तो मुझे इस पर ऐतराज क्यों? मैं भारत का मुसलमान बेटा हूं. इस पर मुझे भी उतना ही गर्व है. मैं चाहता हूं कि हिंदू, मुसलमान, सिख या ईसाई होने का गर्व देश का गर्व बने.

प्रश्न: जब भारतीय जनता पार्टी बनी थी, तब इस के नेता 'गांधीवादी धर्मनिरपेक्ष समाजवाद' की बात करते थे. पर बाद में उन्होंने इस स्वर को हलका किया और विशुद्ध हिंदूवादी छवि बनानी शुरू कर दी. ऐसा क्यों हुआ? क्या हिंदू मतदाता को आकर्षित करने के लिए?

उत्तर: हम ने आज तक अपनी पंचनिष्ठाओं को नहीं बदला है. ये पंचनिष्ठाएं हैं: राष्ट्रीयता, लोकतंत्र, गांधीवादी समाजवाद (या सर्वधर्म समभाव), सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता और मूल्य आधारित राजनीति. हम आज भी इस पर कायम हैं.

हिंदुत्व का आरोप तो हमारे ऊपर हमेशा से लादा गया. मेरी पार्टी का हिंदू, हिंदूसमर्थक जरूर है, पर मुसलिम विरोधी नहीं है. मैं 16 साल से इस पार्टी के साथ हूं. आठ साल से इस का अखिल भारतीय सचिव हूं. मुझे कभी भी अपने देश की सेवा करने में पार्टी के अंदर किसी भी प्रकार की पाबंदी का एहसास नहीं हुआ.

प्रश्न: आप अपनी पार्टी में एकमात्र मुसलिम सांसद हैं. क्या वजह है कि भारतीय जनता पार्टी में मुसलमानों का अनुपात कम है?

उत्तर: बहुत साफ बात है. अगर मुसलमान मेरी पार्टी के खिलाफ होने वाले प्रचार का शिकार होंगे तो यह तादाद कैसे बढ़ेगी?

प्रश्न: एक मुसलमान होने के नाते चुनाव में आप को हिंदू वोट मिलने में दिक्कत महसूस होती होगी?

उत्तर: इस बार मुझे ऐसा लगा था कि शायद दिक्कत होगी. विरोधी दलों ने इसे मुद्दा बनाने की कोशिश भी की. पर मेरे मुकाबले में 12 हिंदू थे और सभी 12 उम्मीदवारों की जमानत जब्त हुई. मेरे क्षेत्र में कुल 8,11,000 मतदाताओं में साढ़े सात लाख से ज्यादा हिंदू हैं. इस के बावजूद मैं भारी अंतर से जीता.

प्रश्न: लेकिन यह तो तय है कि भारतीय जनता पार्टी को मुसलिम समर्थन मुशकिल से मिलता है?

उत्तर: यह बात पूरी तरह सही नहीं है. दक्षिण दिल्ली से मदनलाल खुराना की जीत में मुसलिम वोटों का बड़ा हाथ रहा है. महानगर परिषद और नगर निगम के पिछले चुनावों में दिल्ली के मुसलमानों का 60% वोट भारतीय जनता पार्टी को मिला—खासतौर से पुरानी दिल्ली यानी जामा मसजिद वाले क्षेत्र से. इमदाद साबरी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेगम खुर्शीदा किदवई, मोहम्मद इस्माईल, अकरम कादरी और कयामुद्दीन कुरैशी जैसे भाजपा उम्मीदवारों को मुसलमानों ने खुला समर्थन दिया.

प्रश्न: क्या आप समझते हैं कि भारतीय जनता पार्टी में रह कर कोई मुसलिम नेता मुसलमानों की भलाई के लिए भी काम कर सकता है?

उत्तर: जितने काम हम कर रहे हैं, वे भारत के मुसलमानों की भलाई के ही काम हैं. भारतीय जनता पार्टी ने अपने घोषणापत्र में साफ लिखा है कि भारतीय जनता पार्टी के शासन में हम मुसलिम भाइयों की जान और माल और सांस्कृतिक मूल्यों की सुरक्षा की पूरी गारंटी देते हैं. यह बात हम हवा में नहीं कह रहे हैं. 1977 में जब अटलबिहारी वाजपेयी विदेश मंत्री बने तो मोरारजी देसाई से यह बात कही गई कि वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आदमी हैं, अगर उन्हें विदेश मंत्री बनाया गया तो पड़ोसी देशों से भारत के संबंध बिगड़ जाएंगे, दुनिया भर के मुसलिम देश हम से संबंध तोड़ लेंगे और

आरिफ बेग के अनुसार हिंदू राष्ट्र, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विचार हो सकता है, भारतीय जनता पार्टी का नहीं.

कम्यूनिस्ट देश [illegible]धारी शक्ल तक दे को तैयार नहीं होंगे.

लेकिन साबित हो चुका है कि आ भारत में सब से सफल विदेश मं अटलबिहारी वाजपेयी ही रहे. उन के स में न सिर्फ पड़ोसी देशों से हमारे संबंध अ बन गए, बल्कि मुसलिम देशों से भी हम अच्छे ताल्लुकात बने.

जिन चार राज्यों (हिमाचल प्रदे राजस्थान, दिल्ली, मध्य प्रदेश) में जन के लोग मुख्य मंत्री थे, वहां एक सांप्रदायिक दंगा नहीं हुआ. जिस पार्टी शासनकाल में दंगे न हों उस पर सांप्रदा और मुसलिम विरोधी होने का आरोप बोहतान है. सब से ज्यादा सांप्रदायिक कांग्रेस के शासन में हुए. 40 वर्ष में 20 ह दंगे हुए, उन प्रांतों में ज्यादा हुए जहां कां का मुख्य मंत्री था. कांग्रेस ने हमेशा डालो और राज करो की नीति पर अ किया और बदनामी भारतीय जनता पार्टी मत्थे मढ़ी गई.

प्रश्न: बाबरी मसजिद के मामले भारतीय जनता पार्टी का झुकाव हमे विश्व हिंदू परिषद की तरफ रहा है. क इसे आप उचित समझते हैं?

उत्तर: विश्व हिंदू परिषद में भारती

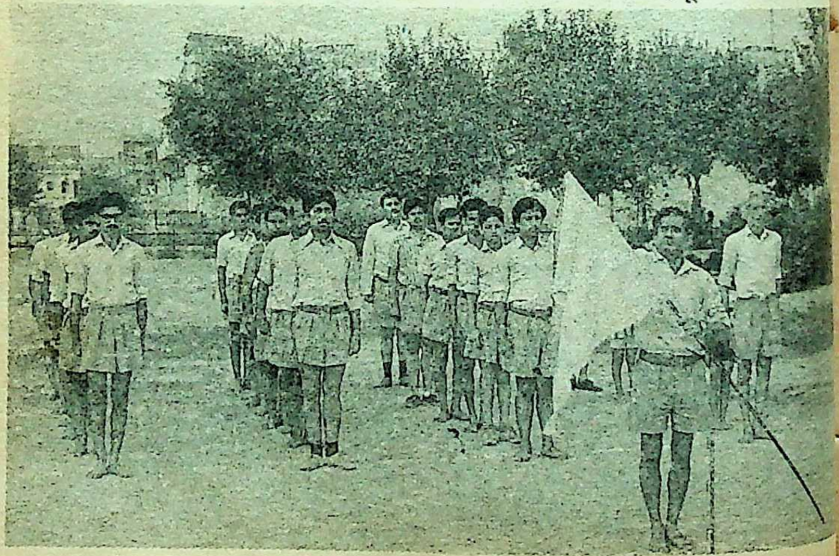

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"छुटभैए नेताओं ने मुसलमानों को जजबाती बना दिया है लेकिन तरक्की के लिए मुसलमानों को शिक्षित और हकीकत पसंद बनना होगा." आरिफ बेग.

जनता पार्टी से ज्यादा कांग्रेस के लोग शामिल हैं. राम जन्मभूमि के मसले को जानबूझ कर कांग्रेस के लोगों ने हवा दी. जो मामला 42 सालों से अदालत में विचाराधीन था उसे जानबूझ कर उत्तर प्रदेश के कांग्रेसी मुख्य मंत्री ने उभारा. यह प्रयास कांग्रेस हाई कमान के इशारे पर हुआ. मेरा आरोप है कि राजीव गांधी बोफोर्स के मामले में बदनाम हो गए थे. उस तरफ ध्यान बांटने के लिए इस भावनाप्रधान मसले को हवा दी गई. भारतीय जनता पार्टी ने राम जन्मभूमि को कभी भी चुनावी मुद्दा नहीं बनाया. हम हमेशा इस मसले को आपसी सहमति से हल करने के पक्षधर रहे हैं.

प्रश्न: वैसे निजी तौर पर आप बाबरी मसजिद राम जन्मभूमि के मसले का क्या हल सोचते हैं?

उत्तर: मेरी दृष्टि में परिवार के दोनों हिस्से–हिंदू और मुसलमान अपने ऐसे पांचपांच विद्वानों का चयन कर लें, जो राजनीति में न हों और विवादास्पद भी न हों. ऐतिहासिक तथ्यों को देखते हुए ये लोग जो हल भी सुझाएं, उसे माना जाए. वैसे मैं सोचता हूं कि यह मामला आज से 500 वर्ष पहले उन परिस्थितियों में हुआ, जब भारत में लोकतंत्र नहीं था, जिस की लाठी उस की भैंस वाला राज था. उस वक्त किसी बादशाह ने क्या किया, यह बात कैसे साबित की जाएगी? मेरी राय में यह मसला न तो अदालत में हल होगा और न सड़कों पर, बल्कि आपसी सहमति से ही हल हो सकता है. इस संबंध में मुनि सुशीलकुमार की पहल की मैं सराहना करता हूं.

प्रश्न: कशमीर में लागू धारा 370 को समाप्त करने की मांग हमेशा भारतीय जनता पार्टी करती रही है. आज के नाजुक हालात में यह क्या मुनासिब होगा?

उत्तर: हम आजादी के समय से निरंतर यह मांग करते आए हैं. हमारे संगठन के संस्थापक श्यामाप्रसाद मुखर्जी का देहांत भी इसी आंदोलन में हुआ है. उस वक्त कशमीर के मुख्य मंत्री को वजीरे आजम (प्रधान मंत्री) कहा जाता था. कशमीर का झंडा भी अलग था, संविधान भी अलग था. हम ने एक देश में दो प्रधान, दो निशान, दो विधान का विरोध किया. आज भी हम उस विचार पर कायम हैं.

शुक्र है कि अब दो निशान, दो प्रधान वाली स्थिति से हम निकल आए हैं. कशमीर में आज तिरंगा झंडा लहराता है. लेकिन अभी दो विधान वाली स्थिति कायम है. मैं जम्मूकशमीर को भारत का अभिन्न अंग मानता हूं, जिस तरह उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश हैं. कशमीर के लोगों की भलाई इसी में है कि उन की निष्ठा और वफादारी इस जननी मातृभूमि के साथ हो. और इसी लिए हम धारा 370 को हटाने की बात करते हैं.

इस धारा के रहते दिमाग में अलगाव की विचारधारा कायम रहेगी. मैं इसे जम्मूकशमीर की तरक्की में बाधा मानता हूं.

प्रश्न: अटलबिहारी वाजपेयी का एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बयान अखबारों में आया था कि 'हम पाकिस्तान को कशमीर देने के लिए तैयार हैं पर इस के साथ ही देश के 15 करोड़ मुसलमानों को भी पाकिस्तान जाना होगा.' इस बयान पर आप की राय.

उत्तर: ऐसा बेवकूफी वाला बयान अटलजी दे ही नहीं सकते. अटलजी कोई मूर्ख आदमी नहीं हैं.

प्रश्न: भारतीय पत्रकार खुशवंत सिंह ने पाकिस्तान के एक अखबार में कालम लिखते हुए लिखा है कि अगर पाकिस्तान कशमीर को हथियाने में कामयाब हो जाता है तो भारत के हिंदू हिंदुस्तान के मुसलमानों का जीना दूभर कर देंगे. आप क्या सोचते हैं कि भारतीय मुसलमानों का वजूद क्या कशमीर के अस्तित्व के साथ जुड़ा हुआ है?

उत्तर: यह एक काल्पनिक सवाल है. मैं साफ कह देना चाहता हूं कि पाकिस्तान में जितने मुसलमान हैं उस से डेढ़ गुना मुसलमान भारत में हैं. और हिंदुस्तान का मुसलमान जानता है कि पाकिस्तान के मुसलमान ने बंगाल के मुसलमान के साथ कैसा सुलूक किया था. अगर पाकिस्तान के इरादे अच्छे होते तो बंगलादेश नहीं बनता.

पाकिस्तान में मुहाजिरों के साथ कैसा सुलूक किया जा रहा है, भारत का मुसलमान इस से भी वाकिफ है. सिंधी, पंजाबी और बलूच मुसलमानों के साथ पाकिस्तान क्या कर रहा है, यह भी राष्ट्रीय मुसलमान जानते हैं. भारत का मुसलमान अपनी जमीन, अपने देश के साथ है. हमारा जीना, हमारा मरना हमारी सरजमीन में ही होगा.

प्रश्न: आप की नजर में मुसलमानों की प्रमुख समस्याएं क्या हैं, जिन्हें हल होना चाहिए?

उत्तर: मुसलमानों की मौजूदा दुर्दशा का कारण शिक्षा की कमी है. मुसलमान अपने मजहब को भी ठीक से नहीं समझता. इस के लिए उसे कुरआन अर्थ के साथ पढ़ना चाहिए. यह तिलावती किताब नहीं, किताबे हिदायत है. (यानी मात्र उच्चारित करने या पाठ करने की चीज नहीं है, बल्कि मार्गदर्शन हासिल करने की चीज है). जब तक हम इसे नहीं समझेंगे, इस का नूर हमारे अमल में कैसे आएगा?

मुसलमानों की दूसरी बड़ी समस्या संगठन और लीडरशिप का अभाव है. मौलाना अबुल कलाम आजाद के बाद मुसलमानों का कोई मुल्कगीर (अखिल भारतीय) लीडर नहीं हुआ. छुटभैया नेताओं ने मुसलमानों को जज्बाती बना दिया. मुसलमानों को जज्बातियत (भावोत्तेजना) से निकाल कर हकीकतपसंद (यथार्थवादी, व्यावहारिक) बनाना होगा. जोश के साथ होश की सख्त जरूरत है.

भारत में हिंदू और मुसलमान को एकसाथ रहते एक हजार साल हो गए हैं. हालत यह हो गई है कि हिंदू मुसलमान की और मुसलमान हिंदू की जरूरत बन गया है. इसे हिंदू भी समझें और मुसलमानों के लीडर मुसलमानों को इस यथार्थ से अवगत कराएं.

प्रश्न: हिंदू राष्ट्र के विचार के बारे में आप की क्या राय है?

उत्तर: भारतीय जनता पार्टी ने कभी भी हिंदू राष्ट्र की बात नहीं कही है. जनसंघ ने भी कभी नहीं कही. हमारी पार्टी के साहित्य में हिंदू राष्ट्र के बारे में एक पंक्ति भी नहीं है. यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विचार हो सकता है, भारतीय जनता पार्टी का नहीं. भारतीय जनता पार्टी एक राजनीतिक दल है और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सांस्कृतिक हिंदू संगठन है. लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बात को हमारे सिर मढ़ देते हैं.

प्रश्न: 'हिंदू राष्ट्र' के बारे में आप की अपनी निजी राय क्या है?

उत्तर: मैं ने कहा न कि यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विचार हो सकता है. वह एक सांस्कृतिक संगठन है और जरूरी नहीं कि भारतीय जनता पार्टी नामक राजनीतिक संगठन का हर आदमी उस के विचारों से सहमत हो. मैं निजी तौर पर हिंदुस्तान के मामले में इस विचार को व्यावहारिक नहीं मानता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगर
आज आपके हाथ में
कुछ पैसे हैं...

तो कल
आपकी परिवार की
खुशी में
उनका हाथ होने दीजिए.

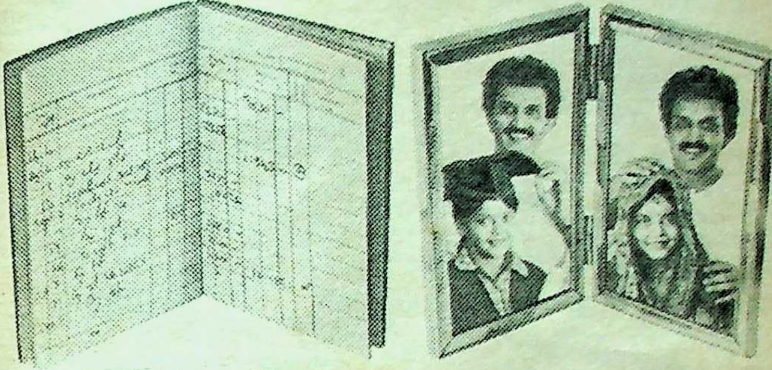

धनवृद्धि

आपकी पूंजी को दुगुने या तिगुने से ज़्यादा बनाए
आपका परिवार अनोखे जीवन बीमे की सुरक्षा पाए.*

आजकल, पैसा बचाना बहुत मुश्किल हो गया है. हां, कहीं से एक साथ बड़ी रकम मिल जाए तो बात अलग है. बोनस, भविष्य निधि, ग्रेच्युइटी या पेंशन के ज़रिए, या फिर सावधि जमा की अवधि पूरी होने पर बड़ी रकम मिल सकती है. तब आप ऐसे निवेश की तलाश करते हैं जो ज़्यादा लाभ दे, पूरी सुरक्षा के साथ.

आप धनवृद्धि पर भरोसा कर सकते हैं धनवृद्धि में आप कितनी भी राशि लगा सकते हैं (न्यूनतम राशि रु. 1000/- होगी). इसमें से कुछ अंश जीवन बीमे का लाभ देने के लिए लगाया जाता है. बकाया राशि को रु. 10/- प्रति यूनिट सममूल्य पर धनवृद्धि यूनिटें दी जाती हैं. यूनिटों पर 12% न्यूनतम लाभांश की गारंटी है. लाभांश अधिक भी हो सकता है. लाभांश का फिर निवेश कर दिया जाता है और सात साल में आपका पैसा दुगुने से ज़्यादा हो जाता है. दस वर्षीय योजना में आपका पैसा तिगुने से ज़्यादा हो जाता है.

आपके परिवार के लिए बढ़ते हुए बीमे की सुरक्षा दुर्भाग्य से यदि आपको कुछ हो जाए तो आपके परिवार को यूनिटों का मूल्य नकद चुकाया जाएगा. साथ ही जीवन बीमे की एक खास एकमुश्त राशि भी मिलेगी. इतना ही नहीं, दूसरे वर्ष के प्रारंभ से छठे वर्ष तक में बीमा हर साल 10% बढ़ता है. इसके अलावा दुर्घटना बीमा भी मुफ्त उपलब्ध होता है.

निवेश की सभी राशियां सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की निर्धारित शाखाओं में ही भरनी होंगी.

अधिक जानकारी के लिए जीवन बीमा निगम की किसी भी शाखा से या जीवन बीमा निगम सहयोग निधि के किसी भी एजेंट से संपर्क करें.

* बीमे पर खर्च होने वाली राशि आयु के अनुसार बदलेगी. जीवन बीमा और दुर्घटना बीमा संबंधी उचित प्रतिबंध लागू होंगे. जीवन बीमे के साथ की अधिकतम सीमा रु. 60,000 होगी. एक से अधिक निवेश भी किए जा सकते हैं. धारा 80 L के अंतर्गत आयकर में तथा धारा 5 के अंतर्गत संपत्ति कर में रियायत मिलेगी. धनवृद्धि यूनिटें बीमे की सुविधा के बिना भी उपलब्ध हैं.

यदि आपकी जीवन बीमा पॉलिसी की अवधि पूरी होनेवाली हो तो आप जीवन बीमा निगम को यह प्राधिकार दे सकते हैं कि आपकी पॉलिसी से मिलनेवाली रकम वह जीवन बीमा निगम सहयोग निधि की किसी योजना में लगा दे.

अभय सर्वदा

जीवन बीमा निगम सहयोग निधि
आपके उद्देश्य की पूर्ति — हमारा ध्येय
17, मेकर चेम्बर्स, III, नरीमन पॉइंट, बंबई 400 021

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हकीकत

कहानी • धनेश्वर प्रसाद

"मेरे पिताजी देश के इनेगिने नेत्र विशेषज्ञों में से एक माने जाते हैं, अम्मांजी."

"क्या नाम है उन का?" अनुपमा के मन में संदेह का बीज अंकुरित हो उठा.

"नरेंद्र नारायण."

"वही तो नहीं जिन्होंने अमरीका से डिगरी ली है?"

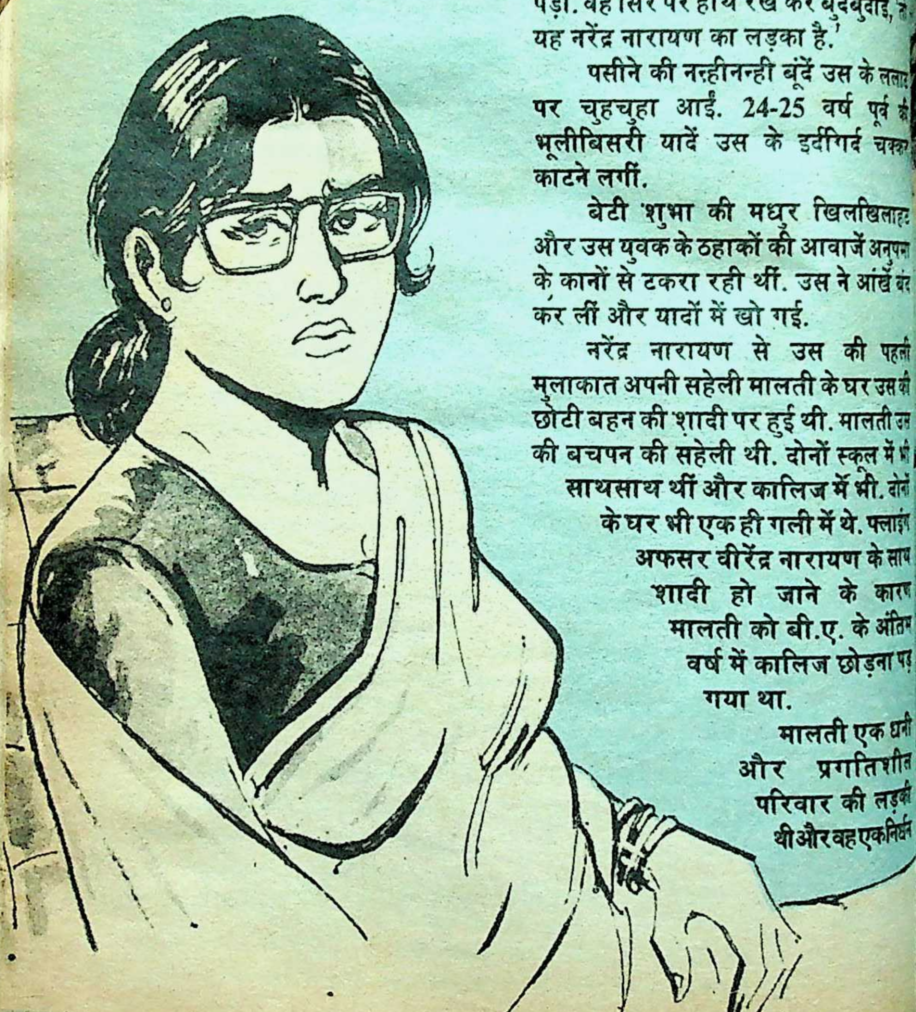

"जी." मुसकराता हुआ वह गरदन हिलाते हुए बोला, "आप उन्हें जानती हैं क्या?"

"कुछ खास नहीं." कहती वह बैठक से उठ कर अंदर के कमरे में चली आई और बिस्तर पर कटे वृक्ष के समान धम से गिर पड़ीं. वह सिर पर हाथ रख कर बुदबुदाईं, 'तो यह नरेंद्र नारायण का लड़का है.'

पसीने की नन्हीनन्ही बूंदें उस के ललाट पर चुहचुहा आईं. 24-25 वर्ष पूर्व की भूलीबिसरी यादें उस के इर्दगिर्द चक्कर काटने लगीं.

बेटी शुभा की मधुर खिलखिलाहट और उस युवक के ठहाकों की आवाजें अनुपमा के कानों से टकरा रही थीं. उस ने आंखें बंद कर लीं और यादों में खो गई.

नरेंद्र नारायण से उस की पहली मुलाकात अपनी सहेली मालती के घर उस की छोटी बहन की शादी पर हुई थी. मालती उस की बचपन की सहेली थी. दोनों स्कूल में भी साथसाथ थीं और कालिज में भी. दोनों के घर भी एक ही गली में थे. फ्लाइंग अफसर वीरेंद्र नारायण के साथ शादी हो जाने के कारण मालती को बी.ए. के अंतिम वर्ष में कालिज छोड़ना पड़ गया था.

मालती एक धनी और प्रगतिशील परिवार की लड़की थी और वह एक निर्धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभा और सुधीर एक दूसरे को चाहते थे इसीलिए अनुपमा सब कुछ भुला कर नरेंद्र नारायण के पास उस के बेटे का रिश्ता मांगने गई थी. पर जब नरेंद्र ने अनुपमा को हकीकत बताई तो उस के मन से अतीत की सारी कड़वाहट धुल गई.

एवं परंपरावादी मध्यमवर्गीय परिवार की. फिर भी दोनों में प्रगाढ़ मित्रता थी.

मेहमानों से मालती का सारा घर भरा हुआ था. वह आगंतुक महिलाओं के स्वागत में व्यस्त थी. तभी मालती ने पुकारा, "ऐ अनुपमा."

"हूं." कह कर उस ने मालती की ओर देखा. उस के पास एक आकर्षक व्यक्तित्व वाला युवक खड़ा था और मालती से हंसहंस कर बतिया रहा था.

वह एक हाथ में ट्रे लिए हुए थी जिस में लौंग, इलायची, सौंफ आदि थे. एक दूसरी लड़की को ट्रे पकड़ा कर वह उत्सुकतावश मालती के पास चली गई, "क्या है?"

"इन से तेरा परिचय कराना है." युवक की ओर इशारा कर के मालती ने मुसकरा कर कहा.

"तो जल्दी करा न, मुझे बहुत काम है." वह शीघ्रता से बोली.

"आप मेरे देवर हैं. इकलौते देवर." कह कर वह खिलखिला कर हंस पड़ी, "नाम है, नरेंद्र नारायण. मेडिकल का कोर्स कर रहे हैं." और फिर उस ने नरेंद्र नारायण की ओर देख कर कहा, "यही है मेरी इकलौती प्यारी सहेली अनुपमा."

युवक ने दोनों हाथ जोड़ कर मुसकराते हुए कहा, "आप से मिल कर बड़ी खुशी हुई."

"तुम मुझे बहुत अच्छी लगने लगी हो, अनु. मुझे बहुत याद आओगी तुम." नरेंद्र ने अनु का हाथ थाम कर कहा.

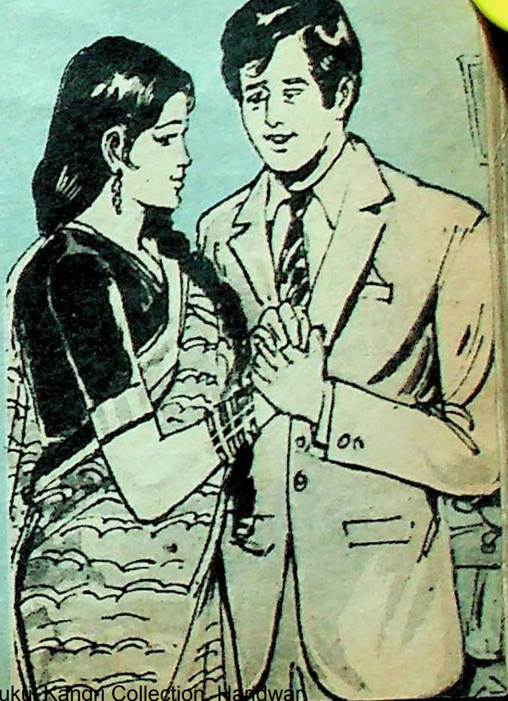

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपमा ने भी अभिवादन किया और दोनों हाथ जोड़ कर कहा, "मुझे भी प्रसन्नता हुई है."

तभी किसी ने मालती को पुकारा. वह 'अभी आई' कह कर चली गई. अनुपमा सिटपिटाई सी खड़ी रह गई.

"भाभी ने आप के बारे में मुझे पूर्ण रूप से परिचय दे दिया है." नरेंद्र ने शरारत भरे लहजे में कहा.

"आप की भाभी को शिष्टाचार का पता नहीं है." वह कृत्रिम गुस्से से बोली, "उस ने मेरी इजाजत के बिना मेरा परिचय आप को दे कैसे दिया."

"यह तो आप उन से ही पूछिएगा." वह मुसकराता हुआ बोला, "वैसे परिचय दे भी दिया तो क्या हुआ. आखिर कभी न कभी तो इस की आवश्यकता पड़ती ही."

"क्यों?"

"यह भी आप अपनी सहेली से ही पूछिएगा."

"तो फिर मैं चलूं?"

"फिर मुलाकात होगी न?"

"आप चाहेंगे तो अवश्य होगी." कह कर वह तेजी से एक ओर चली गई.

दूसरे दिन बरात विदा हो जाने के बाद दोनों सहेलियां संध्या समय इतमीनान से मिलीं.

"एक बात पूछूं, अनु?"

"आज तो तुम बिलकुल नई बन गई हो, मालती."

"क्यों री?"

"आज पहली बार कुछ कहने के लिए मुझ से इजाजत मांग रही हो."

मालती खिलखिला कर हंस पड़ी और बोली, "हां, कुछ बात ही ऐसी है."

"अब पहेली न बुझा. जल्दी बता, क्या बात है?"

"नरेंद्र तुम्हें पसंद है?"

"भई, मैं ने उन्हें इस नजरिए से तो देखा नहीं. वैसे वह तुम्हारे देवर हैं तो तुम उन्हें अच्छी तरह से जानती ही होगी."

"हां सो तो है. मेरी इच्छा है, कि अनु मेरे पास ही चली आओ. नरेंद्र में कोई ... नहीं है. बस, वह कभीकभी भावना में ... बह जाता है."

"क्या यह संभव है, मालती?"

"ऐसा क्यों कह रही हो?"

"मेरे और मेरे परिवार के बारे में ... अच्छी तरह से जानती हो. मेरे परिवार ... सामाजिक और आर्थिक स्तर से ... भली भांति परिचित हो."

"हां." वह गंभीर मुद्रा में बोली, "... कारण है कि मैं ऐसा चाहती हूं. तुम किसी ... घर की बहू बनने के लायक ही हो. मैं ... चाहती कि तुम किसी ऐसेवैसे परिवार में ... जाओ."

"तुम्हारे ससुराल वाले इस रिश्ते ... लिए मान जाएंगे?"

"जब मैं और नरेंद्र तैयार हैं तो ... बाधा उत्पन्न नहीं होनी चाहिए. हालांकि ... श्वशुर के स्वभाव में काफी ऐंठ है और ... सिद्धांतों में भावना का कोई स्थान नहीं है."

"तुम जैसा चाहो वैसा करो. तुम ... बुरा चाहोगी क्या?" मालती आवेश में ... लिपट गई.

"शादी में जीजाजी क्यों नहीं आए, मालती?"

"छुट्टी मंजूर नहीं हुई."

"वह इधर आएंगे क्या?"

"नहीं, मैं ही जाऊंगी."

"कब जा रही हो?"

"10-15 दिन तो अभी रहूंगी ही. ... कल जा रहा है. यही मुझे ले जाने के लिए ... आएगा."

"अच्छा, अब मैं चलती हूं."

"ठीक है. कल सुबह आठ बजे की गाड़ी से नरेंद्र जाएगा. हो सके तो आ जाना." मालती ने कहा था.

शुभा की आवाज पर अनुपमा के सोचने का सिलसिला टूट गया. वह हड़बड़ा कर उठ बैठी, "क्या है, शुभा?"

"तुम अचानक उठ कर क्यों चली आई ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अम्मां? तबीयत तो ठीक है न?"

"हां. बस, ऐसे ही चली आई. तुम लोगों के बीच मैं वहां क्या करती बैठ कर?"

"सुधीर जा रहे हैं."

"चलो." एक निःश्वास छोड़ कर वह उस के पीछेपीछे चल पड़ी.

सुधीर जाने की मुद्रा में खड़ा था. उसे देखते ही बोला, "चल रहा हूं, अम्मांजी."

"नाश्ता करा दिया है, शुभा?"

"खाने की इच्छा नहीं थी, चाय पी ली है." सुधीर ने कहा.

वह खामोश हो गई. सुधीर नमस्ते कर के चला गया. उस के जाने के बाद शुभा भी अपने कमरे में चली गई.

अनुपमा बैठक में ही सोफे पर बैठ गई. उस के दिमाग में अतीत की बातें फिल्म की रील की तरह पुनः चलने लगीं...

नरेंद्र मालती को ले जाने के लिए आया था. जाने के दिन वह नरेंद्र से मिली तो उस ने कहा, "इस बार यहां आने में मुझे बहुत खुशी महसूस हो रही है."

"क्यों?" अनजान बनते हुए उस ने कहा.

"आज जब हम जीवन के एक मोड़ पर मिल ही गए हैं तो तुम्हें हकीकत की जानकारी हो ही जानी चाहिए." नरेंद्र ने अनु से कहा.

"आप से मिलने की बड़ी उत्सुकता थी."

वह भी कुछ ऐसी ही बात कहना चाहती थी, पर लज्जावश बोल नहीं पाई. मुसकराती मौन रही.

"लेकिन अब तो आप की सहेली भी यहां से जा रही हैं. वह यहां होती तो आने का बहाना भी होता. अब न जाने कब मुलाकात होगी."

ऐसा सुन कर अनुपमा भी उदास हो गई.

"लेकिन अनुपमाजी, हमारे बीच एक संबंध कायम हो गया है. भाभी की इच्छा है कि हम दोनों विवाह कर लें. मगर मेरे लिए यह वर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है. मेरे मेडिकल कोर्स का यह अंतिम वर्ष है. मेरा विचार है कि इस के बाद ही घर में शादी की चर्चा चलाई जाए. आप की क्या राय है?"

"मैं क्या कहूं, जैसा मालती और आप चाहें."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरेंद्र ने एकाएक उस का हाथ थाम लिया और हौले से बोला, "अनु."

अनुपमा का सारा शरीर एकबारगी कांप उठा. उस ने शरमा कर नजरें झुका लीं.

"तुम मुझे बहुत अच्छी लगने लगी हो, अनु." नरेंद्र ने औपचारिकता की दीवार तोड़ते हुए कहा, "मुझे बहुत याद आओगी तुम."

वह नजरें झुकाए मौन खड़ी रही.

"पत्र लिखने पर उत्तर दोगी न?" नरेंद्र ने उस का हाथ छोड़ते हुए कहा.

"हूं." उस ने हुंकारी भरी.

शुभा फिर बैठक में चली आई, "अम्मां."

उस ने चौंक कर बेटी की ओर देखा. उस के इस प्रकार चौंकने पर शुभा उसे घूरती हुई खड़ी हो गई, "तुम क्या सोच रही हो?"

"तुम अपनी बात कहो."

"कुछ नहीं." कह कर वह लौट गई.

शुभा के जाते ही अनुपमा पुनः अतीत में लौट गई.

काफी अरसे तक नरेंद्र और उस के बीच पत्राचार चलता रहा. किंतु नरेंद्र की परीक्षा निकट आते ही पत्राचार बंद हो गया.

अनुपमा धैर्यपूर्वक उस की परीक्षा समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगी. परीक्षा समाप्त होते ही नरेंद्र ने पत्र लिखा कि उस की परीक्षा बहुत अच्छी हुई है और वह उस के दूसरे पत्र का इंतजार करे.

इस दौरान अनुपमा की भी बी.ए. की परीक्षा निकट आ गई. वह नरेंद्र को जबरन भुला कर परीक्षा की तैयारी में लग गई.

प्रीक्षा के दौरान ही नरेंद्र का एक लंबाचौड़ा पत्र आया, जिस में ढेर सारी मुहब्बत की बातें थीं. किंतु पत्र का अंतिम अनुच्छेद पढ़ कर वह विक्षुब्ध हो गई. नरेंद्र ने लिखा था कि उस की परीक्षा का परिणाम आ गया है. वह पिताजी की जिद पर आगे पढ़ने के लिए अमरीका जाने की तैयारी कर रहा है. वह उस का इंतजार अवश्य करे.

अनुपमा की परीक्षा भी ठीक हो गई थी. वह नरेंद्र के पत्रों का इंतजार कर रही थी. अमरीका से उस का एक भी पत्र नहीं आ...

समय न किसी के लिए रुका है ... रुकेगा. अनुपमा बी.ए. उत्तीर्ण कर चुकी ... उस की शादी की चर्चा घर में आरंभ हो ... थी. उस ने अब तक अपने घर में मा... प्रस्ताव के बारे में कुछ भी नहीं बताया ... उस की समझ में नहीं आ रहा था कि वह ... करे.

इधर मालती का कोई पत्र नहीं आया ... अनुपमा ने मालती को पत्र लिखने ... लिए सोचा. इसी ध्येय से वह मालती के ... में जानकारी लेने उस के घर गई. उस की ... ने बताया कि वह अपने पति के साथ विदे... भ्रमण कर रही है. इस जानकारी से ... हताश हो गई और उस की मनःस्थि... गड़बड़ा गई. वह रातरात भर इसी सोच ... डूबी रहती और खूब रोती. नरेंद्र के ... निकालती और उन्हें बारबार पढ़ती. ... किस आधार पर घर में कुछ कहती. ... स्थिति से घबरा कर उस ने बी.एड का ... करना शुरू कर दिया.

रविवार का दिन था. अनुपमा पढ़ ... थी. तभी मालती के घर से रोने की आवा... आने लगीं. वह घबराई सी तुरंत उस के ... पहुंची. उसे देखते ही मालती की मां उस... गले से लिपट कर जोरजोर से रोने लगी. ... हक्कीबक्की हो कर खड़ी रही. वह जिसे ... देख रही थी, वही रो रहा था. उसे तथ्य ... पता ही नहीं चल रहा था कि लोग रो क्यों ... हैं.

कुछ देर बाद जब अनुपमा को बात ... पता चला तो वह सन्न रह गई. उसे विश्वा... ही नहीं हुआ कि इतनी बड़ी दुर्घटना हो गई ... हवाई दुर्घटना में मालती और उस का प... दोनों मारे गए थे.

मालती के रूप में अंतिम संपर्क भी ... गया. अनुपमा बिलकुल हताश हो गई. ... अस्तव्यस्त सी घर लौटी और कमरे में बंद ... कर घंटों रोती रही.

बी.एड. के बाद अनुपमा एक लड़कि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के स्कूल में अध्यापिका [illegible] गई. उस की जिंदगी का एक अध्याय समाप्त हो गया और दूसरा अध्याय आरंभ हो गया. उस का विवाह तय हो गया. जीवन साथी भी किसी स्कूल में शिक्षक था.

वैसे तो शादी तय होते ही प्रत्येक लड़की के दिल में एक हलचल सी होती है. नएनए रंगीन सपने सजते हैं, पर अनुपमा के दिल में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ. मनचाही वस्तु न मिलने पर शायद ऐसा ही होता है.

बस शादी भी अनुपमा के जीवन में वैसे ही आई, जैसे कि वह कोई रोजमर्रा का काम हो. वह ससुराल चली गई. एक कुशल गृहिणी और अच्छी साथी बन कर पति के साथ रहने लगी. मजबूर हो कर नौकरी छोड़नी पड़ी. गृहस्थी की गाड़ी चल पड़ी. आय कम थी, पर इस की कमी उसे कभी महसूस नहीं हुई, क्योंकि वह जिस परिवार से आई थी, वहां वह ऐसी दिक्कतों से वाकिफ थी.

एक सीमित दायरे में अनुपमा की गृहस्थी खुशहाल और परिपूर्ण थी. पति प्यार लुटाता था और वह दोनों हाथों से लूटती थी. दो वर्षों तक उस की जिंदगी अबाध गति से बहती रही. गोद में शुभा नाम से एक बच्ची भी खेलने लगी.

लेकिन अनुपमा की जिंदगी एक बार फिर बिखर गई. शुभा अभी एक वर्ष की भी नहीं हुई थी कि उस के जीवन में एक और विस्फोट हुआ. साइकिल ट्रक भिड़ंत में उस के पति की मृत्यु हो गई.

अकस्मात इस मुसीबत के आने से न वह रोई न घबराई. शुभा को ले कर वह मायके पहुंची, पर शादी के बाद लड़की का स्थान मायके में रह ही नहीं जाता. पिता गुजर चुके थे. मां थी, पर वह बेटों पर आश्रित थीं. दोनों भाइयों की शादी हो चुकी थी और अब भाभियों की चलती थी.

अनुपमा की नियुक्ति पुनः उसी स्कूल में हो गई, जिस में वह शादी के पहले काम करती थी. उस ने अपनी गृहस्थी अलग बसा ली. वह

खेल

रुखसारों पे जुल्फों की
घटा खेल रही है,
न जाने ये किसकिस की
कजा खेल रही है.
मैं देख रहा हूं,
तेरा अंदाजे तबस्सुम,
ये आंख तेरी,
खेल नया खेल रही है.

—प्रदीप वर्मा 'सोना'

अब अपना सारा समय शुभा पर खर्च करने लगी.

शुभा पुनः बैठक में आ गई, "अम्मां."

अनुपमा के सोचने का क्रम फिर टूट गया. उस ने शुभा की ओर देखा.

"एक बात कहूं, अम्मां?" वह उस की बगल में बैठती बोली.

"हां, कहो." प्यार से उस के सिर पर हाथ रख कर वह बोलीं.

"तुम ने जब से सुधीर को देखा है, कुछ परेशान लग रही हो. आखिर बात क्या है?"

"तुम्हें गलतफहमी हो गई है." एक फीकी मुसकान बिखेर कर अनुपमा बोली, "उसे देख कर भला मैं क्यों परेशान होऊंगी."

"एक और बात कहूं, अम्मां, गुस्सा तो नहीं करोगी?"

"कहो."

"मैं सुधीर के साथ शादी करना चाहती हूं, तुम्हें कोई एतराज न हो तो." वह दबी जबान में बोली.

शुभा की स्पष्टवादिता अनुपमा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी लगी. वह एक दीर्घ सांस भर कर बोली, "सपने और हकीकत में अंतर होता है, बेटी."

"अम्मां." शुभा चीख सी पड़ी.

"हकीकत से भयभीत न हो, शुभा." अनुपमा शांत स्वर में बोली, "सुधीर एक बड़े डाक्टर और धनाढ्य परिवार का लड़का है. उस का समाज बड़े लोगों का समाज है, बेटी. तुम क्या हो? महज एक शिक्षिका की बेटी. सोचसमझ कर कदम उठाना, शुभा. कहीं ऐसे रास्ते पर न भटक जाना, जहां से घर लौटना मुशकिल हो और जीवन अस्तव्यस्त हो जाए."

"सुधीर ने वादा किया है, अम्मां."

"वादा करना बहुत आसान है, बेटी." अनुपमा उदास स्वर में बोली, "सुधीर भी मेडिकल पढ़ रहा है. एक दिन वह भी अपने पिता की तरह आगे पढ़ने के लिए विदेश जाएगा. हो सकता है, कल तुम्हें भूल भी जाए."

"तुम तो ऐसे कह रही हो जैसे उस के पिताजी ने भी ऐसा ही वादा किया था और विदेश जाने के बाद वह उस वादे को भूल गए."

ऐसा सुनते ही अनुपमा घबरा गई. वह घबराहट को किसी प्रकार छिपाती हुई शीघ्रता से बोली, "नहीं, ऐसा बहुत बार होता है."

"तुम तो पहले से ही भयभीत हो, अम्मां. पहले उस के पिताजी से मिल तो लो. सुधीर ने ऐसा कहा है."

नरेंद्र से मिलने की बात सुन कर अनुपमा परेशान हो उठी. कुछ क्षण मौन सोचती रही. फिर बोली, "ठीक है, तुम्हारी खातिर जाऊंगी."

"ओह अम्मां," कह कर शुभा उस के गले से लिपट गई, फिर शरमा कर वहां से भाग गई.

अनुपमा के दिमाग में विभिन्न विचार कीड़ों की तरह कुलबुलाने लगे. उस ने नरेंद्र की सूरत न देखने की प्रतिज्ञा की थी, पर यह प्रतिज्ञा बेटी की खुशी के लिए अब ... पड़ेगी.

जब अनुपमा नरेंद्र के आलीशान ... के समक्ष पहुंची तो उस का दिल जोर ... धड़कने लगा. उसे पूर्ण: विश्वास था ... वही नरेंद्र नारायण होगा, कोई दूसरा ... वह धड़कते दिल से फाटक के अंदर प्रवे... गई. पोर्टिको में एक लंबी सी कार खड़ी ...

"किस से मिलना है?" चपरासी ने ...

"डाक्टर साहब से."

"वह अभी मरीजों को देखने में ... हैं. आप नंबर बनवा लीजिए."

"मुझे उन से व्यक्तिगत काम से ... है."

"तो अभी आप को इंतजार ... पड़ेगा. आइए मेरे साथ."

चपरासी ने एक कमरे में बैठा कर ... एक कार्ड दिया, जिस पर नाम ... भरना था. अनुपमा ने कार्ड पर अपना नाम ... लिख दिया. उस कार्ड को ले कर चप... चला गया.

लगभग डेढ़ घंटे के बाद वही चप... आया, "जाइए."

वह धीरेधीरे चल कर नरेंद्र के क... प्रवेश कर गई. 'तो मेरा अनुमान सही ... नरेंद्र को देख कर अनुपमा बुदबुदाई. नरेंद्र ... ऊंची सी घूमने वाली कुरसी पर बैठा ... कागज देखने में तल्लीन था.

"नमस्ते." दोनों हाथ जोड़ कर अनु... ने धीरे से कहा.

नरेंद्र ने गरदन घुमा कर उस की ... देखा और आश्चर्य से बोला, "अनु... तुम?"

वह मौन मेज के पास उस के समक्ष ... खड़ी हुई. नरेंद्र ने कार्ड को देखते हुए क... "मुझे पता होता कि तुम ही हो तो पहले ... बुला लेता."

वह खामोश थी.

"बैठो." नरेंद्र ने धीरे से कहा.

वहां कई गद्देदार कुरसियां लगी हुई ... एक पर वह बैठ गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या पिओगी—..."

"कुछ नहीं." अनुपमा धीरे से बोली, "धन्यवाद."

"मुझे तो उम्मीद ही नहीं थी कि हम इस जीवन में फिर मिलेंगे." एक निःश्वास छोड़ कर नरेंद्र ने कहा.

"हां, यही आशा मुझे भी थी." वह भावहीन शब्दों में बोली.

"मैं कुछ ऐसी परिस्थितियों से घिर गया कि उन से निकल ही नहीं पाया. भाभी भी जिंदा होतीं तो शायद ऐसा नहीं हुआ होता, जो हुआ. मुझे क्षमा करना, अनु."

"मैं आप के विरुद्ध कोई शिकायत ले कर नहीं आई हूं. जो बीत गई सो बीत गई. उस विषय पर कोई भी बात करना अब निरर्थक है. न वह उम्र रही न वह समय." वह सख्त आवाज में बोली.

"हां, ठीक ही कह रही हो." उस ने एक दीर्घ सांस भर कर कहा.

"कहो, कैसे आई हो?"

"मैं आप के बेटे सुधीर की शादी का पैगाम ले कर आई हूं."

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा?"

"मेरी बेटी शुभा और सुधीर एकदूसरे को चाहते हैं."

ऐसा सुनते ही नरेंद्र की मुद्रा गंभीर हो गई. वह सोच की मुद्रा में पेपरवेट को एक हाथ से मेज पर उलटतापुलटता रहा.

"बात सीमा से बाहर न चली जाए, इसलिए मैं आप की राय जानने आई हूं." अनुपमा ने नरेंद्र की आंखों में झांका.

"देखो अनु, तुम्हारी बेटी मेरे लिए कोई गैर नहीं है. वह इस घर की बहू बन जाए, इस से बड़ी खुशी मेरे लिए कोई और नहीं होगी, पर..." कहतेकहते वह मौन हो गया.

"सुधीर ने शुभा से कहलवाया था कि मैं आप से मिल लूं, इसी लिए मैं आई हूं, वरना आप के निर्णय का पता मुझे पहले से ही था." अनुपमा की भृकुटि तन गई.

"तुम मुझे गलत समझ रही हो, अनु."

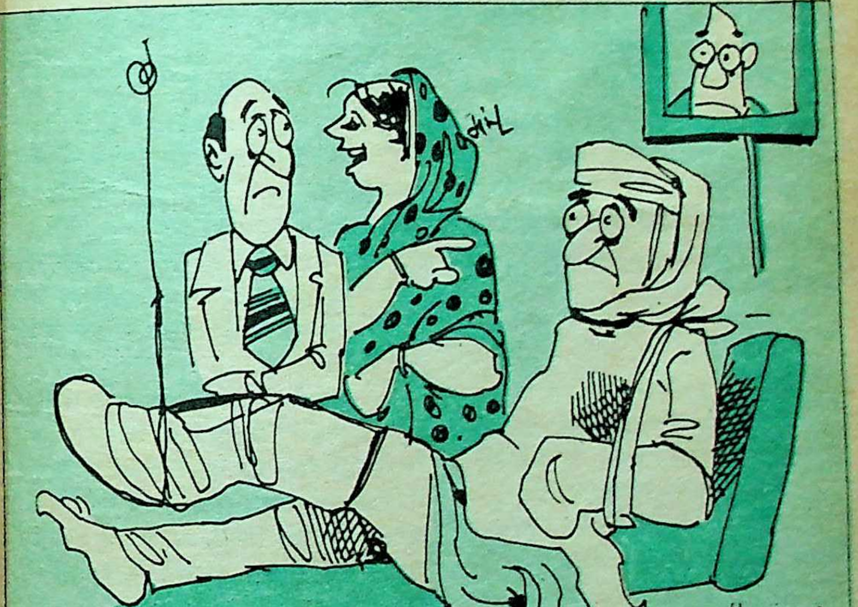

"डाक्टर, मैं ने ही टांग तोड़ी है... और कहा है बारबार गिरते हो, अब चुनाव में खड़े कैसे रहते हो, यह देखती हूं..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह रुकरुक कर शांत स्वर में बोला,

"हां, मैं तो आप को सदा गलत ही समझती रही." वह व्यंग्य से बोली.

"तुम्हें हकीकत का पता नहीं है, इसलिए तुम ऐसा कह रही हो."

"मैं सपने नहीं देखती, डाक्टर साहब. जब मेरी सहेली ने मुझे सपना दिखाया था, तब भी मैं ने नहीं देखा था, क्योंकि मुझे हकीकत का पता था. जब आप ने इंतजार करने के लिए कहा था, तब भी मैं ने हकीकत का दामन नहीं छोड़ा था."

"मैं ने अपना वादा अवश्य तोड़ा, अनु. पर इसलिए नहीं कि मैं कहीं और शादी करना चाहता था. मैं जब पढ़ने के लिए विदेश जा रहा था तो मैं ने पिताजी से शादी की चर्चा की थी. पर वह इतने सिद्धांतवादी और भावहीन व्यक्ति थे कि उन से निबटना बड़ा कठिन था. मैं मानसिक तनाव में ही अमरीका चला गया. तुम्हारी याद मुझे सदा सताती रही. इसी बीच भैया और भाभी की दुर्घटना ने मुझे तोड़ कर रख दिया. इसी हादसे के कारण मां और पिताजी भी अधिक दिनों तक नहीं जी पाए." नरेंद्र ने शून्य में देखते हुए कहा.

"मैं तुम्हें अपना दुखड़ा या मजबूरी नहीं सुनाना चाहता, लेकिन आज जब हम जीवन के एक मोड़ पर मिल ही गए हैं तो तुम्हें हकीकत की जानकारी हो ही जानी चाहिए. तभी तुम अपनी बेटी शुभा के बारे में सही निर्णय ले सकती हो."

अनुपमा मौन हो गई.

"मैं तुम्हें पत्र लिख कर यह कहना चाहता था कि तुम मेरा इंतजार करो, क्योंकि मैं ने निर्णय किया था कि पढ़ाई पूरी कर के जब मैं भारत लौटूंगा तो मैं भाभी की यानी तुम्हारी सहेली की तमन्ना अवश्य पूरी करूंगा. पर उन्हीं दिनों मेरे साथ एक दुर्घटना हो गई," कहतेकहते नरेंद्र बेचैन हो उठा. फिर कुरसी से उठ कर खड़ा हो गया, "उस दुर्घटना में मेरी जान तो बच गई, मगर दोनों पांव कट गए."

"क्या?"

"हां, अब" धीरेधीरे चल कर वह ... के निकट आ खड़ा हुआ, "देखो, ये मेरे नक... पांव हैं."

"उफ" अनुपमा ने आंखें मूंद कर अ... सिर दोनों हाथों से थाम लिया.

"इस भयानक हादसे से मैं अपने ... उबार नहीं सका." नरेंद्र ने डबडबाई आ... में कहा, "मैं ने निर्णय किया कि तुम्हें ... सूचना नहीं दूंगा ताकि तुम मुझे बेवफा स... कर भूल जाओ और अपनी गृहस्थी बसा ... इस के साथ ही यह भी निर्णय किया कि ... आजीवन विवाह नहीं करूंगा."

"काश! मुझे इस सचाई का पता होता" अनुपमा गरदन झटक कर बोली, "... आजीवन तुम्हारा इंतजार करती."

"भावना में न बहो, अनु."

"तो क्या आप ने विवाह नहीं किया?"

"नहीं."

"तो फिर सुधीर कौन है?" उस... अविश्वासपूर्ण नजरों से नरेंद्र की ओर दे... "उस ने तो अपने पिता का नाम नरेंद्र नाराय... ही बताया है."

"ठीक ही बताया है."

"आप तो पहेली बुझा रहे हैं."

"मैं ने सुधीर को गोद लिया है," व... बोला, "वह बहुत छोटा था, जब मैं ... अनाथालय से लाया था. वह किस जाति ... था, उस के मांबाप कौन थे मुझे कुछ न... पता. अब तुम स्वयं निर्णय करो कि तु... अपनी बेटी की शादी सुधीर से करोगी ... नहीं?"

"आप ने तो अपने जीवन के बारे ... गलत निर्णय कर के अपना भी जीवन बरबा... किया और मेरा भी. दूसरे शब्दों में आप ... हकीकत का सामना सही ढंग से नहीं किया ... लेकिन मैं गलत निर्णय ले कर शुभा औ... सुधीर का जीवन बरबाद नहीं करूंगी ... डाक्टर साहब."

"अनु" कह कर नरेंद्र ने भावुकता ... अपना हाथ उस की ओर बढ़ाया, पर स्थिति ... का ध्यान आते ही वह हाथ बीच में ही रु... गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीत मेरे घर आए हैं

ओ रजनीगंधा
महक जरा
मीत मेरे घर आए हैं
री पवन
छेड़ सरगम तू जरा
धड़कन ने साज बजाए हैं
ओ बादल
कर दे छांव जरा
रोशनी में वे शरमाए हैं
ओ तितली
भर दे रंग जरा
मौसम ने फूल बिछाए हैं
ए वक्त
अभी तू ठहर जरा
अभी तो बस
होंठो ने परिचय बरसाए हैं.

—विदेश्वरी गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामानव

कहानी ● कुसुम गुप्ता

क्लिनिक से घर तक पहुंचने में 20 मिनट लगे. इस बीच सुदीप ने किसी जासूसी उपन्यास के अंतिम पृष्ठों में छिपे रहस्य सा वातावरण बना डाला.

मेरा अंतर धुकधुक कर रहा था. मैं कई बार उन से पूछा, "कृपया, बताइए सही, आखिर डाक्टर कैलाश ने कहा?"

सुदीप के चेहरे पर उभरी गंभीर की परत थोड़ी और ज्यादा गाढ़ी हो अपने चश्मे से मुझे घूरते हुए बोले, " सब्र करो. घर चल कर सब बता दूंगा."

मुझे लगा, दाल में कुछ काला है. त

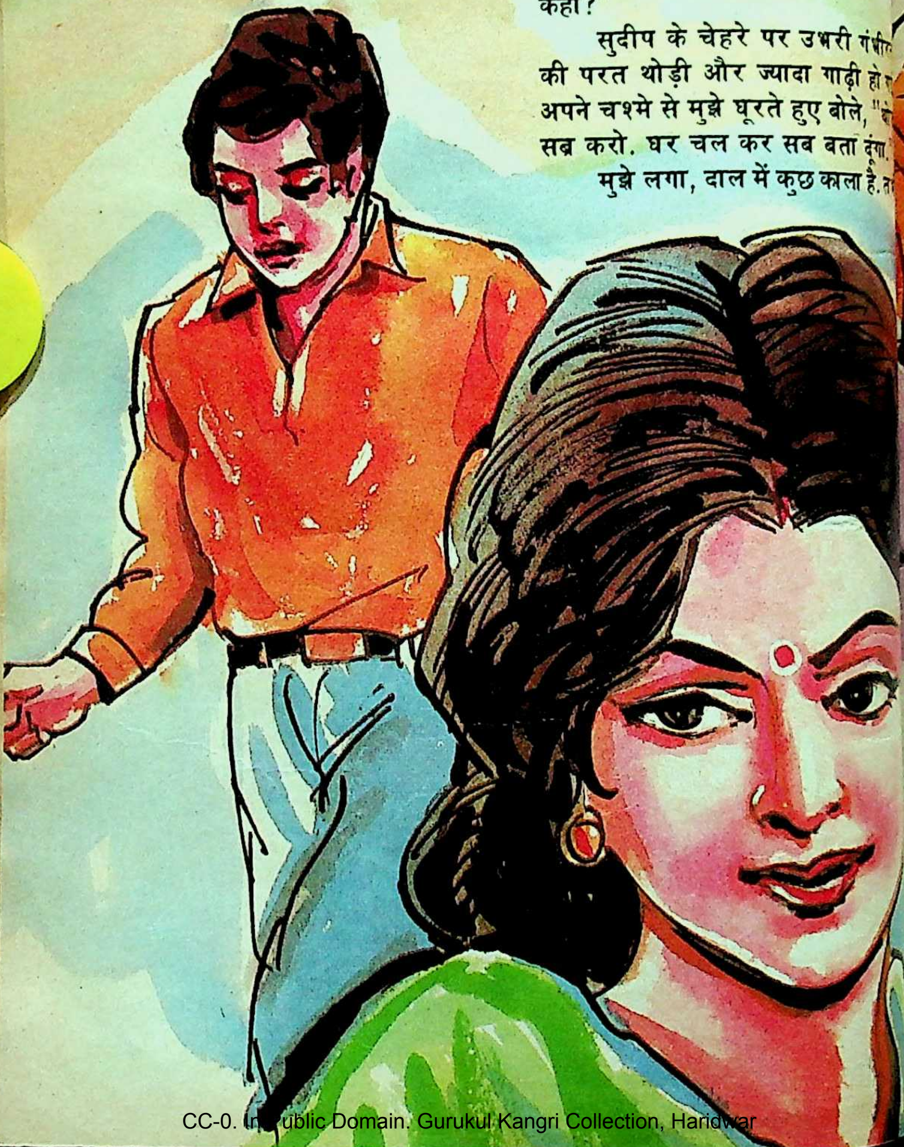

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

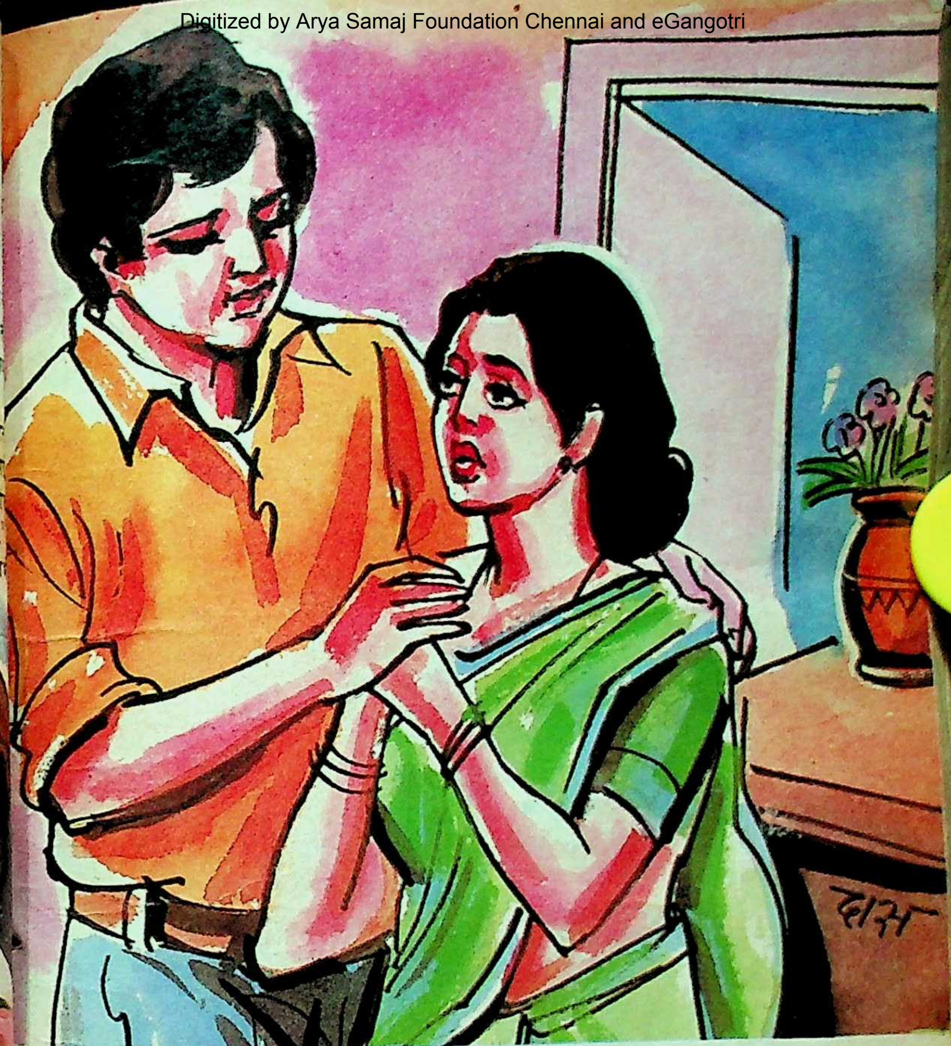

"दीपा, इतनी निराश क्यों होती हो? औरत के लिए मां बनना ही अंतिम लक्ष्य नहीं है. थोड़ा धैर्य रखो." सुदीप ने मेरा हाथ पकड़ आत्मीयता भरे स्वर में कहा. ▲

तो सुदीप इतने परेशान और गंभीर लग रहे हैं. फिर मैं ने सोचा, 'यह नवयुवक डाक्टर स्वभाव से ही गंभीर किस्म के हैं. संभवतः शारीरिक स्तर पर पीड़ित मानवता को देख इन की यह मुद्रा स्थायी हो गई है.'

पर तभी मेरे अंतर का चोर कुलबुलाया. मन के एक अंधेरे कोने में सोया

डाक्टर कैलाश के क्लिनिक से घर लौटते हुए सुदीप का व्यवहार देख मैं एक भय से कांप उठी. और एक दिन जब सुदीप ने उस कलुषित अतीत को कुरेद ही डाला तो मुझे अपनी सुखी गृहस्थी उजड़ती हुई लगने लगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराध बोध [illegible] अतीत करवटें बदलने लगा. क्या उस का अप्रत्याशित साया मेरे वर्तमान को ग्रसने लगेगा?

वंदना पोलीक्लिनिक में बिताया आधा घंटा जैसे आधा युग बन गया था. डाक्टर कैलाश ने सूक्ष्मता से मेरा परीक्षण किया. आखिर मैं उन के उसी क्लिनिक में ई एन टी (नाक कान गला) विशेषज्ञ सहकर्मी डाक्टर सुदीप कुमार की पत्नी जो ठहरी.

परीक्षण पूरा कर मुझे बाहर प्रतीक्षालय में बैठा दिया गया. प्रसूति रोग विशेषज्ञ डाक्टर कैलाश और मेरे पति डाक्टर सुदीप अंदर मंत्रणा करते रहे. मैं उत्सुकतापूर्वक परीक्षण के परिणाम की घोषणा की प्रतीक्षा करती रही.

डाक्टर सुदीप बाहर आए. एकदम गंभीरता की जीवंत प्रतिमूर्ति बने.

"क्या कहा डाक्टर ने?" मैं ने उत्सुकतावश पूछा.

"चलो," मेरा हाथ पकड़ कर सुदीप मुझे कार तक ले गए. फिर उन्होंने पूछा, "मैं चलूं या तुम अकेली कार ले जाओगी?"

"डाक्टर ने क्या कहा?" मैं ने अपना प्रश्न पूछा. उन की बात टाल गई.

"इतनी उतावली क्यों हो रही हो?"

"मुझे अम्मांजी की चिंता है."

"तुम उन की चिंता मत करो." कह कर सुदीप कार में घुस गए.

मैं भी अंदर जा कर उन की बगल की सीट पर जम गई. पूरे रास्ते वह कुछ नहीं बोले. मैं ने उन्हें कुरेदा. पर वह तो जैसे गोपनीयता की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध हो कर बैठे थे. मैं ऊहापोह में पड़ी बैठी रही.

कहीं ऐसा तो नहीं कि सुदीप मुझे चौंकाना चाहते हों? शायद घर पहुंच कर मां के सामने वह इस मीठी खबर को अचानक सुनाने की योजना बना रहे हों?

मैं बारबार चोरीछिपे अपने पेट पर हाथ फेर रही थी. कहीं कोई हलचल या उभार नहीं. सब कुछ सपाट, शांत और जीवनरहित था. फिर मैं ने सोचा, 'इतनी जल्दी सब कुछ जीवंत नहीं होता. फि... तीसरा महीना तो चल रहा है,' इस विचार... मेरी बिखरती भावनाओं को थोड़ा सं... मिला.

हम घर पहुंचे. जैसे ही अंदर ... अम्मांजी लपक कर द्वार तक आईं ... पूछा, "बेटा, क्या कहा डाक्टर ने? ... ठीकठाक तो है?"

सुदीप ने मां की ओर देखा. फिर ... की दृष्टि झुक गई. मुख पर एक अनाम ... उदासी आई. वह कुछ नहीं बोले.

"मुझे तो पता था कि देरसबेर ... जरूर मां बनेगी... विवाह को पांच वर्ष ... गए. लोग चर्चा करने लगे थे... ... कभीकभी देर भी हो जाती है. मुझे तो पू... विश्वास है कि लड़का ही होगा. यह ... हमारे खानदान की लीक है कि हमें ... पहलौठी का बेटा ही होता है."

सुदीप ने अवसादग्रस्त हो कर आह... दृष्टि से मां को घूरा और बोले, "मां... तु... तो..."

"चल..." अम्मांजी ने उस की बा... बीच में ही काट कर कहा, "लड़का हो या ... लड़की. क्या फर्क पड़ता है. मुझे तो बस ए... बात की साध है कि मैं दादी बन जाऊं. ए... खिलौना मिल जाएगा. अकेली दिन भ... ऊबती रहती हूं."

बहुत हो गया. मुझे हलका सा क्रोध ... आया. आखिर चुप्पी की भी एक सीमा होती ... है.

सुदीप ने मुझे देखा, डूबी निगाहों ... फिर वह मां के पास गए. उन के कंधे ... अपना सीधा हाथ रख कर अत्यंत गंभीर ... स्वर में बोले, "मां, सपने मत देखो."

"क्यों, क्या बात है?" मां ने चौंक कर ... पूछा.

"क्या बताऊं... दीपा गर्भवती नहीं ... है." इन्होंने बड़े शांत भाव से घोषणा कर ... दी.

"यह तू क्या कह रहा है रे?" मां ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] जीवन है. पिछले चारपांच वर्षों में तुम ने जो प्यार दिया, निष्ठा दिखाई उसी के संदर्भ में मैं ने तुम्हें क्षमा करने का फैसला कर लिया है." सुदीप के ये शब्द कहते ही मैं ने अपना सिर उस के कंधे पर रख दिया.

घोर अविश्वास से पूछा.

"मैं ठीक कह रहा हूं, मां." कह कर वह उदासी की मूर्ति बने अंदर कमरे में चले गए और कपड़े बदलने लगे.

मां ने बड़ी लाचारगी से मुझे घूरा और सुदीप के पीछेपीछे जा कर बोलीं, "यह कैसे हो सकता है? बहू को तो तीसरा महीना चल रहा है. मैं नहीं मानती. जरूर तेरी महिला डाक्टर अनाड़ी है."

सुदीप एक फीकी सी मुसकान मुसकराए.

मैं भी वहां पहुंच गई. मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था. यह संभव नहीं है.

अम्मांजी की आंखों में उभरी घोर निराशा देख मेरा अंतर कसक गया. सुबह से मैं कितनी उत्तेजित थी. मेरी खुशी का गुलाब गमकने से पूर्व ही मुरझा गया.

सुदीप भी उद्विग्न थे. उन के मुख पर कौन सा भाव उभर रहा था? क्या तटस्थता भरी स्वीकृति या फिर एक तीव्र आक्रोश भरा विद्रोह और पलायन? मैं कोई निर्णय नहीं कर पा रही थी.

यह सच था कि पूरे घर में एक तनाव भरा मौन पसर गया. सब से पहले आश्वस्त हुई अम्मांजी. वह वहां से चली गई. हां, उन्होंने नौकर को आवाज लगाई, "रामू, खाना तैयार हो गया?"

"हां, मांजी."

"खाना लगाओ." मांजी ने आदेश दिया. वह रसोईघर में चली गई. मैं ने देखा, सुदीप भी तनावरहित हो चले थे. उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और बड़े आत्मीयता भरे स्वर में कहा, "दीपा, इतनी निराश क्यों होती हो? औरत के लिए मां बनना ही अंतिम लक्ष्य नहीं है. फिर तुम्हारी उमर तो बीत नहीं गई है. थोड़ा धैर्य रखो. सब ठीक हो जाएगा."

सुदीप मुझे सांत्वना देने का प्रयास कर रहे थे. पर मैं जानती थी, उन का स्वर खोखला है. अंदर से वह खिन्न और उद्विग्न थे. किंतु प्रकट में सज्जनता तथा सौजन्य का प्रदर्शन कर रहे थे.

हां, मुझे एक बात का संतोष था. संभवतः महिला डाक्टर मेरी चोरी नहीं पकड़ पाई थी. इसी लिए मैं ने थोड़ा तर्क का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहारा लिया और बोली, "है बड़ी आश्चर्य की बात..., दो बार तारीख चूक जाने के बाद भी...?"

"दीपा, यह भी एक चिकित्साशास्त्र का अद्भुत पक्ष है. कुछ महिलाएं बड़ी तीव्रता से मातृत्व की कामना करती हैं तो उन के अंदर एक गर्भवती स्त्री के सारे लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं. वे शारीरिक नहीं, मानसिक स्तर पर होते हैं. तुम्हारे साथ भी यही हुआ है."

"ओह नहीं, मैं तो यही सोच रही थी कि इस बार मांजी को निराश न होना पड़े. कितनी आस है उन्हें नाती का मुंह देखने की." मेरे स्वर में घोर पीड़ा थी.

"दीपा, डाक्टर कैलाश कह रही थीं कि नुकसान तो हुआ है, पर 10-12 प्रतिशत उपचार की संभावना है. वैसे तुम परेशान और उदास मत हो.. हां, निराशा की बात है. तुम निराश हो तो मैं और मां भी निराश हैं... वैसे परिस्थितियों के षडयंत्र के समक्ष इनसान कई बार बहुत असहाय हो जाता है."

सुदीप के ये शीतल, सांत्वना देते शब्द जलकण से मेरे तप्त अंतर की दग्धता को शांत कर रहे थे. यदि सुदीप का यह भावनात्मक प्रश्रय नहीं मिलता तो?

पर वह किस नुकसान की बात कर रहे थे? यह सोच कर मैं कांप गई. क्या डाक्टर कैलाश ने मेरे कलुषित अतीत में झांक वास्तविकता का पता कर लिया है?

नहीं, न तो वह संभव है और न ही ऐसा होने पर सुदीप ऐसा शिष्ट, आत्मीयता भरा व्यवहार करते.

"चलो, भोजन करते हैं. फिर मुझे क्लिनिक जाना है," सुदीप खाने की मेज की तरफ चल पड़े.

सिर झुकाए मैं भी उन के पीछेपीछे हो ली.

मौन के आवरण में लिपटी मैं खाना खाती रही. कनखियों से मैं बेटे और मां के बीच होने वाले आंखोंआंखों में मौन संप्रेषण की आशा में होते देखती थी.

मेरे अंतर में हाहाकार मचा हुआ था. मेरे पति निहायत सज्जन और सास मां सरीखी ममतामयी थी. उन की केवल एक आकांक्षा थी और मैं अकालग्रस्त दरार पड़ी भूमि सी बांझ थी, जहां कुछ भी सृजन नहीं हो सकता था. कैसे बनती इन की आकांक्षा पूर्ति का माध्यम?

भोजन कर के सुदीप क्लिनिक चले गए. मां अपने कमरे में जा कर अखबार पढ़ने लगीं और मैं अपने कमरे में आ कर बैठ गई आजीवन कारावास की सजा भुगतने वाले अपराधी सी.

अगले तीनचार दिन में सब कुछ सामान्य सा हो गया. निराशा और उदासी की जिस मिलीजुली अनुभूति ने तीनों को ग्रस्त किया था, वह अब तिरोहित हो चुकी थी.

इस बीच एक दिन आगरा से मां का फोन आया था. वह हालचाल पूछ रहीं थीं. यही नहीं, वह कुछ दिनों के लिए मुझे आगरा भी बुला रहीं थीं. उन्होंने कहा था, "बहुत दिन हो गए.. शादी के बाद तो तू चार दिन के लिए भी पीहर नहीं रही है. आ क्यों नहीं जाती दोचार हफ्ते के लिए. तेरा मन बहल जाएगा."

"कैसे आऊं मां?"

"क्यों, क्या परेशानी है?"

"यह लोग छोड़ने को राजी हों तब न."

"ठीक है. उन के खिलाफ कुछ नहीं करना."

"और सुना.. कोई खुशखबरी?"

"इस बार तो तीन महीने चढ़ गए थे."

"सच?"

"हां मां.. पर.."

"पर क्या?"

"डाक्टरनी ने परीक्षण किया. वह यों ही था.."

"डाक्टरनी ने जांच की थी?" मां के स्वर में चिंता थी.

"हां, मां."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उस ने कुछ कहा?"

"मेरे सामने तो कुछ नहीं कहा."

"उसे कुछ पता तो नहीं चला?"

"लगता तो नहीं है."

"चलो, यह अच्छा ही हुआ." मां के स्वर में निश्चितता थी.

मैं कुछ नहीं बोली. बोलती भी क्या? मेरे किशोर जीवन की वह गलती एक दुःस्वप्न सी मेरे जीवन को आक्रांत किए हुए थी. इसे सिर्फ कोमल, मैं और मां ही जानते थे.

"अच्छा बेटे, फोन बंद करती हूं. सुदीप से बात करना. अगर वह आज्ञा दे तो दोचार दिन के लिए जरूर आगरा आ जाना. हमारा मन भटक रहा है, तुझे देखने के लिए." कह कर मां ने फोन बंद कर दिया.

उसी दिन रात के खाने पर मैं ने यह प्रसंग छेड़ दिया. असल में शाम से ही मैं इस के लिए भूमिका बनाती रही थी.

शाम की चाय के समय से मैं अम्मांजी को मसका लगाती रही थी. चाय पीते हुए वह बोलीं थीं, "बेटी, तू अपने मन से यह खयाल निकाल दे कि हम दोनों दुखी और निराश हैं, पर भगवान की मरजी. कोई क्या कर सकता है?"

"भगवान की मरजी?" मैं ने यंत्रवत दोहराया.

"हां बेटी, हानिलाभ, जीवनमरण, यशअपयश..."

"मां, जीनामरना, जन्म देना या हत्या करना इनसान के हाथ में भी है." मैं बोली.

"हां बेटी.. पर शायद तुझे यह नहीं पता, इनसान भी तो भगवान का माध्यम है."

मैं तर्क नहीं करना चाहती थी, इसलिए चुप लगा गई.

मांजी मुझे सच्चरित्र समझती हैं, सुन कर कलेजे पर हथोड़ा सा पड़ा. हां, सुंदर मैं हूं. संभवतः इसी कारण सुदीप ने मुझे स्वीकार कर लिया, अन्यथा मुझ जैसी लड़की के लिए... और आगे मैं सोच न सकी.

खत

तुम्हारा इत्र में डूबा हुआ खत,
मिल गया था कल.
लगा ऐसे, कि जैसे–
आ गए हो खुद, उसी पल.

–लीला पांडे

इसी वार्त्तालाप की पृष्ठभूमि में मैं ने रात के खाने के समय एक सुझाव दिया. "मांजी, चलिए कहीं घूम आएं. कई बार बदलाव के बहुत अच्छे परिणाम निकलते हैं."

"हां, बदलाव से फर्क तो बहुत पड़ता है." सुदीप ने मेरे विचार की पुष्टि की.

"तो आज्ञा दें. दोचार दिन के लिए आगरा हो आऊं?"

"वाह, मियां की दौड़ मसजिद तक. अरे बेटी, अब तुम उन के लिए पराई हो चुकी हो. विवाहिता बेटी मांबाप के ऊपर बोझ होती है. उन्हें भूल जाओ. तुम दोनों एकाध हफ्ते के लिए किसी पर्वतीय स्थल पर चले जाओ. मसूरी, नैनीताल या कश्मीर." मांजी बोलीं.

"मेरे खयाल से बंबई ठीक रहेगा." सुदीप ने कहा.

"बंबई?" मैं चौंकी. फिर मैं ने मुसकरा कर कहा, "चार महानगरों का तापक्रम देखा था, अभी थोड़ी देर पहले, बंबई में सब से ज्यादा गरमी थी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमें बाहर के तापक्रम से क्या लेनादेना? किसी वातानुकूलित होटल में ठहरेंगे. मैं तो बंबई अपने जीवन के तापक्रम को सामान्य करने के उद्देश्य से जाना चाहता हूं."

"क्या मतलब?" मैं ने उलझ कर पूछा.

"छोड़ो.. बेकार की बात है..."

"यहां दिल्ली में कितना तनाव है. वहां बंबई में जुहू तट की सैर... सामने बिखरी अनंत जलराशि.. सूर्यास्त की लालिमा.."

"आप डाक्टर हैं या कवि?"

"क्लिनिक में डाक्टर और घर पर कवि."

"बहू ठीक कह रही है. बंबई भी कोई आराम करने की जगह है. तू कशमीर क्यों नहीं चला जाता?" मांजी ने मेरा समर्थन किया.

"इस बार तो बंबई ही जाऊंगा. कशमीर फिर कभी."

तीसरे दिन हम बंबई में थे. सुबह की उड़ान से हम बंबई पहुंच गए. हवाई अड्डे पर डाक्टर आशा हमें लेने आई थीं. वह और सुदीप साथसाथ कालिज में थे. डाक्टरी करने के बाद आशा ने विवाह कर लिया और अब वह बंबई के एक प्रख्यात 'नर्सिंग होम' में नौकरी कर रही थी.

आशा ने जुहू क्षेत्र के एक आरामदायक होटल में हमारे ठहरने की व्यवस्था की थी. जिस तरह सुदीप और आशा आपस में बातें कर रहे थे. उस से मुझे आभास हुआ कि सुदीप किसी विशेष प्रयोजन से मुझे बंबई लाए हैं. संभवतः आशा के माध्यम से वह बंबई की किसी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की महिला रोग विशेषज्ञ से मेरी जांच करवाना चाहते हैं. ऐसा मेरा अनुमान था.

रात को खाना खा कर हम जुहू तट पर घूमने आ गए. ठंडी गीली बालू पर नंगे पांव घूमना बड़ा सुखद अनुभव था. यदाकदा सागर की कोई आवारा लहर आ कर हमारे पांवों का चुंबन कर लौट जाती.

एकाएक मैं ने पूछा, "सुदीप, तुम बंबई घूमने आए हो या मेरा इलाज करवाने?"

"दोनों काम करवाने."

"मतलब?"

"घूम तो हम अब रहे हैं. कल सु... दस बजे डाक्टर पारुल तुम्हारी ... करेंगी. संभव हुआ तो शायद तुम्हें नर्सिंग होम में भरती कर के तुम्हारा आपरेशन ... करना पड़े."

"मेरा आपरेशन?" मैं ने घोर आ... से पूछा.

"हां, दीपा.. तुम्हारा आपरेशन हो... तभी संभावना है, तुम्हारे मां बनने ... अन्यथा तुम कभी मां नहीं बन सकती."

"यह आप क्या कह रहे हैं?" ... हतप्रभ सी खड़ी रह गई.

"हां, दीपा.. अस्तव्यस्त मत होना ... सुन कर.. पर यह सच है कि विवाह पूर्व ... गर्भवती हो चुकी हो और उस अनचाहे ... से मुक्ति पाने के लिए तुम ने सिर्फ देरी से ... कदम नहीं उठाया, बल्कि किसी अना... और नीम हकीम दाई की सहायता ... परिणामस्वरूप तुम्हारे प्रजनन अंगों ... काफी क्षति पहुंची."

"ओह," मैं समूल हिल गई, आखि... मेरे कलुषित अतीत का सुदीप को पता ... ही गया. पर मां ने तो कहा था कि ... अतीत के बारे में कभी भूल कर भी सु... को मत बताना. उसे कुछ भी पता नहीं ... सकेगा.

मेरी टांगें कांपने लगीं. आंखों के आ... अंधेरा छाने लगा. तो क्या मेरा विवाहि... जीवन नष्ट हो जाएगा? मैं कहना चाह... थीं, 'सुदीप, अनजाने में हुई मेरी गलती ... क्षमा कर दो.' पर शब्द फड़फड़ाए और ... में फंस कर रह गए.

मां गलत थीं. कहीं डाक्टरों से ... शारीरिक क्षति छिप सकती है? अब ... होगा? क्या सुदीप मुझे रखेंगे या संबंध ... विच्छेद कर लेंगे? ओह, यह क्या हुआ? ... युवावस्था की एक भूल के लिए मुझे इत... बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी. एक अब...

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

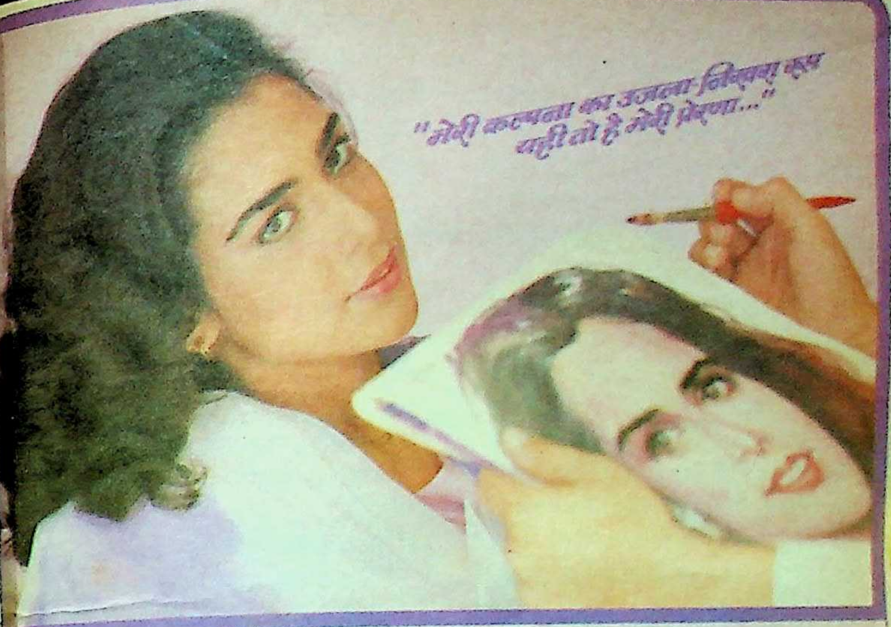

कल्पना का उजला-निखरा रूप किसी कलात्मक रचना से कम नहीं-
यह तो फ़ेयर एंड लवली की कलाकारी है.

दो ही महीनों में फ़ेयर एंड लवली ने कल्पना को प्राकृतिक कोमलता से उजला-निखरा बना दिया. जब अरुण को इतनी आकर्षक प्रेरणा मिल गई है, तो वह प्राकृतिक दृष्य उतारने में क्यों सिर खपाए? अरुण को कल्पना में वह कलात्मक रचना मिल गई है, जिसे वह ख़्वाबो-ख़यालों में ढूंढा करता था,

कल्पना की तरह आप भी फ़ेयर एंड लवली से अपने रंग-रूप में उजला निखार ला सकती हैं... जो नज़र आए!

एक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक खोज

फ़ेयर एंड लवली में ऐसा अनोखा फ़ार्मूला है जो आपको प्राकृतिक रूप से उजला-निखरा बनाने के लिए दो महत्त्वपूर्ण तरीक़ों से काम करता है. एक : यह त्वचा के भीतर ही भीतर सांवलेपन की प्रक्रिया को संभाले

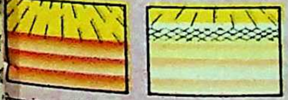
फ़ेयर एंड लवली के पहले — फ़ेयर एंड लवली के बाद

रखता है - जो अन्य कोई क्रीम नहीं कर सकती, दूसरे : इसकी दोहरी सनस्क्रीनवाली क्रिया त्वचा को सांवली बनाने वाली तेज़ धूप से सुरक्षित रखती है. तभी तो ६ से ८ हफ़्ते बाद उभरकर आने वाली नयी त्वचा होती है उजली-उजली, निखरी-निखरी! रोज़ाना दिन में दो बार फ़ेयर एंड लवली लगाइए और फ़र्क साफ़ देखिए... अपने रंग-रूप में!

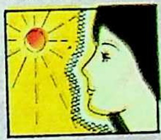

इस्तेमाल का तरीक़ा

हाथ-मुंह धोइए और चेहरे पर, हाथों को ऊपर की ओर घुमाते हुए क्रीम से हलकी मालिश कीजिए, हो सकता है फ़ेयर एंड लवली का असर शुरू होते ही आपको हलकी सी सनसनाहट महसूस हो, लेकिन परेशान न हों, ये जल्द ही दूर हो जाएगी.

त्वचा में आसानी से समाए

फ़ेयर एंड लवली पहले से ज़्यादा मुलायम और ज़्यादा चिकनी है. इसलिए त्वचा पर फैलकर, यह त्वचा द्वारा आसानी से सोख ली जाती है.

अगर आप फ़ेयर एंड लवली के बारे में और भी कुछ जानना चाहती हैं तो इस पते पर लिखिए :-
श्रीमती कविता कुमार, फ़ेयर एंड लवली सलाहकार, पी.ओ. बॉक्स ७५८,
बम्बई ४०० ०२१.

फ़ेयर एंड लवली

फ़ेयरनैस क्रीम

प्राकृतिक कोमलता से रूप निखारे उजला बनाए, ऐसा कि जो सभी को नज़र आए !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS FAL 67 2014 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति, एक संवेदनशील आत्मीयता से परिपूर्ण सास, एक भौतिक समृद्धि से पूर्ण पारिवारिक जीवन मुझे छोड़ना होगा?

मैं लगभग ढह चुकी थी कि सुदीप ने अपनी बलिष्ठ बांहों का सहारा लिया. मैं संतुलित हो गई. फिर बालू में बैठ कर मैं ने जैसे ही सुदीप के पांवों को स्पर्श करने के लिए हाथ बढ़ाए,वह बोला, "दीपा, मैं तुम से प्यार करता था.

"जब मैं ने तुम्हें पहली बार देखा तो मैं तुम्हारे रूप पर रीझ गया, तुम्हारी आंखों में बसी सच्चरित्रता की कठोरता ने मुझे प्रभावित किया परंतु वह..."

"मुझे क्षमा कर दो, सुदीप. बी.ए. के अंतिम वर्ष में मैं भटक गई थी. शशांक ने मुझ से शादी का वादा किया. मैं बहकावे में आ गई और आत्मसमर्पण कर बैठी. आज सोचती हूं, विवाह पूर्व शारीरिक आत्मसमर्पण किसी भी लड़की के लिए आत्मघात से कम नहीं."

"ठीक है, दीपा. प्रायश्चित्त ही नया जीवन है. एक गलती तुम ने की. दूसरी गलती मैं नहीं करूंगा. जिस दिन मुझे पता चला, मैं भी बड़ा परेशान हो गया. तो जैसे दुनिया ही उलटपुलट हो गई. पिछले चारपांच वर्षों में तुम ने हमें जो दिया, निष्ठा दिखाई, उस के संदर्भ में तुम्हें क्षमा करने का फैसला कर लिया."

"ओह सुदीप." मैं ने अपना सिर के कंधे पर रख दिया और सिसकने लगी.

"देखो, कल क्या होता है. यदि हम जीवन में खुशी लिखी है तो तुम्हारे की हुई क्षति डाक्टर पारुल दूर कर सकेंगी."

अगले दिन दस बजे हम दोनों आशा के साथ डाक्टर पारुल के नर्सिंग होम में थे.

प्रारंभिक जांच के बाद मुझे भरती कर लिया. उस के बाद अनेक परीक्षण तथा जांच पड़ताल के बाद मेरा आपरेशन किया गया.

लगभग एक सप्ताह के पूर्ण विश्राम के बाद मुझे छुट्टी दे दी. जिस समय मैं नर्सिंग होम से विदा हुई. डाक्टर पारुल ने मुझे गुलाब के फूलों का गुलदस्ता दिया और बोलीं, "बधाई श्रीमती सुदीप, अब आप निश्चित रूप से मां बन सकेंगी. आपरेशन पूर्ण रूप से सफल हुआ है."

मेरा अंतर गुलाब की तरह गमकने लगा.

तीन दिन होटल में आराम कर के हम बंबई से दिल्ली रवाना हुए. उड़ान के दौरान मैं ने सुदीप से एक प्रश्न पूछा, "सुदीप, दिल्ली जैसे शहर में एक से बढ़ कर एक स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं. फिर दिल्ली छोड़ बंबई आने की क्या जरूरत थी?"

"दीपा, मां को कुछ मत बताना, अन्यथा उन का दिल टूट जाएगा. मां को ही क्या, मैं ने अपने किसी दोस्त, साथी या रिश्तेदार को कुछ नहीं बताया है." सुदीप ने शांत स्वर में कहा.

मेरा जी चाहा, इस महामानव के चरणों में अपना सिर रख दूं.

हिंदू 2000 वर्ष क्यों गुलाम रहे?

हिंदुओं की सैन्य कमजोरियों के धार्मिक, सामाजिक और कूटनीतिक कारणों का विश्लेषण करने वाली पुस्तक

हिंदू इतिहास या हारों की दास्तान?

लेखक : डा. सुरेंद्र अज्ञात

मूल्य : 10.00 रुपए

साधारण डाक से मंगाने के लिए 10.00 रुपए मनीआर्डर द्वारा भेजिए. रजिस्टर्ड डाक से 3.00 रुपए अधिक.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तस्वीर में अच्छे स्वास्थ्य के दो मुख्य अंग पहचानिये.

ताज़ी, हरी सब्ज़ियां तो आपने सही पहचानी हैं. और यदि आप ध्यान दें तो आपको स्टेनलेस स्टील भी नज़र आएगा.

रसोई घर में उपयोग के लिए स्टेनलेस स्टील के बर्तन सबसे अधिक सुरक्षित और स्वास्थ्य कर होते हैं. इसकी समतल सतह पर जीवाणु भी नहीं पनप पाते. क्यूंकि स्टेनलेस स्टील पर एक सुरक्षा परत होती है, जो बर्तन में ज़रा सी ख़रोंच लगने पर हवा के हल्के स्पर्श मात्र से फिर बन जाती है. आपके बर्तनों को हमेशा सुरक्षित बनाए रखने के लिए.

स्टेनलेस स्टील. यह हर आधुनिक रसोई घर की शोभा बढ़ाता है. और हर उस जगह प्रयोग किया जाता है जहां स्वच्छता और ताज़गी को महत्व दिया जाता है – बड़े-बड़े पांच सितारा होटलों के रसोई घरों में, डेयरी, फ़ूड-प्रोसेसिंग और डिस्टिलरी जैसे उद्योगों में.

यदि आप अपने रसोई-घर को फिर से सजाने-संवारने जा रही हैं, या यदि आप किसी को कोई बेहतर उपहार देना चाहती हैं तो निश्चित रूप से स्टेनलेस स्टील के बर्तन ही चुनिए. जिनमें झलकते हैं आपके नए, आधुनिक विचार.

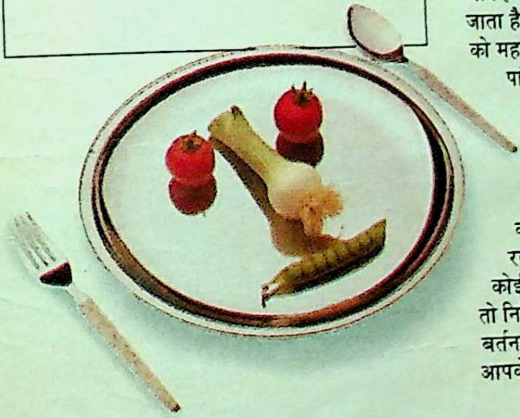

स्टेनलेस स्टील

उचित • उज्जवल • उत्तम

ULKA-D-ISSDA-895-2

Released by Indian Stainless Steel Development Association.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च 1990

सुमन सौरभ

किशोरों की सचेतक पत्रिका

गुदगुदी विशेषांक

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च 1990

सुमन सौरभ गुदगुदी विशेषांक

प्रमुख आकर्षण

एक मुशायरा इंटरनेशनल

अमरूद इलाहाबादी, कुल्हड़ चाटपुरी, नकलची बेहिसाब, टुपिया टोंटपुरी, धांसू तमंचवी और झम्मन मियां की शेरोशायरी से भरपूर हास्य एकांकी

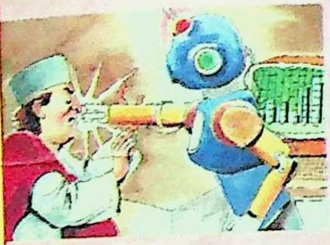

पुलिस स्टेशन 21वीं सदी का

20 वीं सदी और 21 वीं सदी के पुलिस स्टेशनों का अंतर कहकहों के बीच बताती हास्य एकांकी.

होली पर

बचपन में मनाई रंगारंग होली के विषय में लेखक की एक अविस्मरणीय घटना.

खोजाजी की कचौरियां

कचौरियों के चक्कर में फंसे खोजाजी को गांव वालों ने कैसे भूत समझ लिया?

साथ में अन्य रोचक सामग्री व सभी स्थायी स्तंभ.

सरिता के पाठकों को सुमनसौरभ के वार्षिक शुल्क पर

25% की विशेष छूट

60/- रु. के स्थान पर केवल 45/- रु. भेजें.

सुमन सौरभ

ई- 3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली- 110055

नाम..

पता..

....

पिन कोड.................. ☐☐☐☐☐☐

हस्ताक्षर..

पोस्टल आर्डर/बैंक ड्राफ्ट नं..........................

अपनी प्रति आज ही खरीदिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब विम लगभग आधी क़ीमत में...

...फ़ायदेमंद कैरीबैग में

आपका मनपसंद विम अब लगभग आधी क़ीमत मे- यानी बचतवाले कैरीबैग में !

आप खुद ही देख लीजिए

पैक	क़ीमत प्रति १०० ग्राम
५०० ग्राम कनस्तर	१३५ पैसे
२.५ किलो कैरीबैग	७५ पैसे

अब आपके लिए विम और भी किफ़ायती होगा, क्योंकि थोड़े से विम से झाग का समन्दर बन जाता है, जो चिकनाई को धो डालता है, ज़्यादा बर्तनों में लाता है चमचमाती सफ़ाई. तो देर किस बात की? जाइए और ले आइए विम कैरीबैग अपनी सुविधा के साइज़ों में. (आपकी पसंद के लिए ५०० ग्रां, १ किलो, २.५ किलो के पैक में).

थोड़ा सा विम आए... ज़्यादा बर्तन चमचमाए

LINTAS VG 482 1811 HI

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी खूब रही

मेरी भाभी तब पहली बार ससुराल आई थीं. एक दिन भैयाभाभी कमरे में थे. घर की कुछ औरतों ने बाहर से दरवाजा बंद कर दिया और कहने लगीं, "दो किलो मिठाई खिलाओ तब दरवाजा खुलेगा."

काफी आरजूमिन्नत के बाद भी उन्होंने जब द्वार नहीं खोला तो भैयाभाभी खिड़की के रास्ते निकल कर फिल्म देखने चले गए और खिड़की को ज्यों का त्यों बंद कर गए.

जब बहुत देर तक कमरे में शांति छाई रही तो औरतों ने थक कर दरवाजा खोल दिया, मगर वहां भैयाभाभी को न पा कर वे परेशान हो उठीं.

थोड़ी देर बाद भैयाभाभी फिल्म देख कर मुसकराते हुए आ पहुंचे. उन्हें देख कर औरतें झेंप गईं.

—पुनीत जाजू

*

हमारे पड़ोस में शादी थी. जब लड़की दूल्हे को वरमाला पहनाने के लिए आगे बढ़ी तो उस के पिता व भाई ने उसे रोक दिया. सभी चौंक पड़े.

लड़की के भाई ने वर के पिता से कहा, "जिस लड़के को हम पसंद कर के आए थे, यह वह लड़का नहीं है. हमारे साथ धोखा किया गया है. यह शादी नहीं होगी."

वरपक्ष की ओर से काफी समझाने के बाद भी कन्यापक्ष वाले नहीं माने. उन का तर्क था, 'जब हम लड़का पसंद करने गए थे, तब लड़के के सिर पर बाल नहीं थे. इतनी जल्दी बाल कहां से आ गए.'

कन्या पक्ष की जिद देख कर लड़के ने, 'आप को बाल पसंद नहीं तो यही सही' कहते हुए अपनी विग उतार दी, जो उस ने विवाह के अवसर पर गंजेपन को ढकने के लिए पहन रखी थी.

—अतुलकुमार पांडेय

*

हमारे बाजार में दुकानें आमनेसामने हैं. इसलिए दुकानदारों में कुछ ज्यादा ही प्रतिस्पर्धा चलती रहती है.

एक दिन एक सज्जन हमारी दुकान की तरफ बढ़े ही थे कि सामने वाले दुकानदार ने उन्हें आवाज दे कर अपनी तरफ बुला लिया.

किंतु थोड़ी ही देर में मैं ने देखा कि उस दुकानदार का रंग उड़ने लगा था, क्योंकि जिसे उस ने ग्राहक समझ कर बुला लिया था, वह बिक्री कर अधिकारी था.

—दिलीप कोठारी

*

मेरी एक सहेली की सगाई हो चुकी थी. हम लोग बैठे आपस में बातें कर रहे थे. उसी समय उस सहेली के भावी पति वहां आ गए.

मैं ने वहां से उठते हुए कह दिया, "मैं चलती हूं, कबाब में हड्डी अच्छी नहीं लगती."

इस पर उस के भावी पति ने तपाक से कहा, "बुड्ढों को हड्डी हजम नहीं होती, मैं तो वह हूं जो कबाब के साथ हड्डी भी चबा जाता है."

—सरोज कोहली●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुकान में चोरी

कहानी ● सुरेशकुमार गो

प्रोफेसर सुधीर हमारे विश्वविद्यालय के व्यवसाय स्कूल में पिछले 10 वर्षों से प्राध्यापक थे. उन के विद्यार्थी उन की बहुत इज्जत करते थे. विभाग के लोग भी उन के शोधपत्रों की काफी चर्चा किया करते थे. देशविदेश में होने वाली गोष्ठियों में उन को शोधपत्र पढ़ने के निमंत्रण आते ही रहते थे. उन के पढ़ाए सैकड़ों विद्यार्थी कैनेडा और अमरीका में अच्छे पदों पर नामी संस्थानों में काम कर रहे थे.

प्रोफेसर सुधीर अकसर कहते थे, "व्यवसाय स्कूल के विद्यार्थी देश के व्यापार

प्रोफेसर सुधीर के जीवन में केवल पढ़ाना और शोध कार्य करना, बस, दो ही काम थे.

और उद्योगों के भावी कर्णधार होंगे. अ
खुद ही अनुशासन और सही तरीके
नहीं करेंगे तो उन के अधीन काम क
क्यों ऐसा करेंगे."

वह जब भी अपने किसी
विद्यार्थी से मिलने जाते तो उन की
खातिरदारी होती थी. एक बार मैं भी
साथ एक विद्यार्थी से मिलने चला ग
वैसे मैं ने उस विद्यार्थी को खुद भी पढ़ा
वह लगभग सारा समय ही प्रोफेसर
से बातें करता रहा. मैं उस दिन उन से
प्रभावित हुआ. सोचा, मैं अपने
प्रोफेसर सुधीर के पदचिह्नों पर च
प्रयास करूंगा.

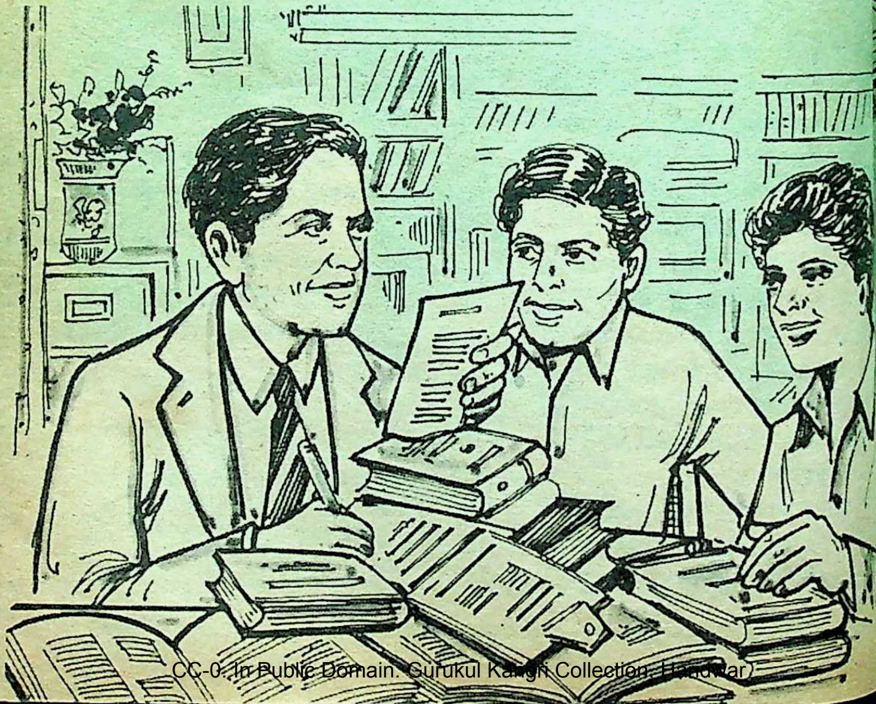

हम
विद्यार्थी
अपने वि
थे. परंत
लिए उन
की हर
करते थे

दुका
जिस
उसी
बचे
मौव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे स्कूल में लगभग 20 देशों के विद्यार्थी पढ़ रहे थे. वैसे तो प्रोफेसर सुधीर अपने विद्यार्थियों को एक जैसा ही समझते थे. परंतु शायद भारतीय विद्यार्थियों के लिए उन के मन में खास जगह थी. वह उन की हर तरह से मदद करने की कोशिश करते थे. कैनेडा में विदेशी विद्यार्थियों को

इतनी भीड़ में कौन उस की तरफ देख रहा है. यह विचार आते ही वह उस कोने की ओर चला जहां केवल तीनचार लोग ही थे. और उस ने टाई अपने ओवरकोट की जेब में डाल ली.

पैसों की तंगी होना तो आम बात है. प्रोफेसर सुधीर अपने शोध अनुदान से भारतीय

दुकान से टाई चुराते समय प्रमोद यह नहीं जानता था कि वह जिस प्रोफेसर सुधीर के बारे में कोई आशंका लिए बैठा है, उसी का नाम ले कर वह न केवल पुलिस के हवाले होने से बचेगा बल्कि उसे इस गलती का प्रायश्चित्त करने का पूरा मौका मिलेगा. वो भी कैसे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों की मदद करते ही रहते थे.

प्रोफेसर सुधीर के जीवन में केवल पढ़ना और शोध कार्य करना, बस दो काम ही थे. वह 40 वर्ष के हो चुके थे, परंतु उन्होंने विवाह नहीं किया था. एक बार मैं ने उन से विवाह न करने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया था कि कभी उचित मौका आने पर बताएंगे. पर वह मौका कभी आ ही नहीं पाया. वैसे किसी ने मुझे बताया था कि उन के बड़े भाई की मृत्यु 10 वर्ष पहले हुई थी. प्रोफेसर अपने भाई के परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियां उठा रहे थे. अगर वह शादी कर लेते तो उन के भाई के परिवार की मदद कौन करता. मैं उन के त्याग की बात सोच कर गदगद हो जाता.

प्रोफेसर सुधीर शहर की भारतीय संस्थाओं के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते रहते थे. इस काम को वह अपनी सामाजिक जिम्मेदारी समझते थे. कभी वह कार्यक्रमों के टिकट बेचते तो कभी किसी संस्था के लिए दान मांगते फिरते. उन को थोड़ाबहुत गाना भी आता था, इसलिए भी कार्यक्रमों में उन की मांग रहती. उन को शहर में लगभग सभी भारतीय जानते थे. अकेले थे, इसलिए परिवार की तरफ से समाज सेवा करने में कोई बाधा भी नहीं थी.

भारतीय लोग उन्हें अपने घरों में खाने के लिए निमंत्रण देते ही रहते थे. वह दावत के बाद फरमाइश पर एकदो गजलें सुना ही देते थे. लगता था, वह हर तरह से सुखी हैं. बस, अपनी इच्छा से नारी सुख से ही उन्होंने अपनेआप को वंचित रखा हुआ था.

हमारे यहां प्रमोद नाम का एक भारतीय विद्यार्थी था. वह प्रोफेसर सुधीर का शिष्य भी रह चुका था. वह व्यवसाय प्रबंध पाठ्यक्रम के दूसरे वर्ष में था. प्रोफेसर सुधीर को वह अपनी भतीजी नंदिनी के लिए बहुत जंचा. नंदिनी का फोटो देखने के बाद प्रमोद ने उन्हें अपने घर का पता दे दिया.

बाद में पता चला कि प्रमोद के घर वाले नंदिनी को देखने भी गए थे, पर शायद वह उन्हें पसंद नहीं आई थी, इसलिए रिश्ता न हो सका. इस के बाद प्रमोद के मन में यही खटका लगा रहता था कि प्रोफेसर सुधीर कहीं बुरा न मान गए हों. वह प्राध्यापक हैं, नौकरी मिलते समय शायद कंपनी वाले उन से प्रमोद के बारे में राय पूछेंगे. उस समय कहीं वह अड़ंगा न लगा दें.

क्रिसमस के बाद कैनेडा की दुकानों में चीजें खूब सस्ते दामों में मिलती हैं. उस समय वहां भीड़ देखने लायक होती है. बहुत से लोग तो अगले साल क्रिसमस पर दिए जाने वाले उपहार भी एक साल पहले ही खरीद कर रख लेते हैं और पैसे बचाते हैं. इस समय दुकानदारों के सब से अधिक ग्राहक होते हैं, दुकानों में चोरी करने वाले भी. दुकान में इतनी भीड़ होती है और इतने ग्राहक होते हैं कि चोरी को रोक पाना बहुत मुशकिल होता है.

वैसे हर दुकान के अपने जासूस होते हैं, पर वे 50 में से एकदो चोरों को ही पकड़ पाते हैं. पर हां, जिस को पकड़ लेते हैं उसे पुलिस के हवाले अवश्य कर देते हैं. उस को फिर कोई नहीं बचा सकता.

कैनेडा में कुछ वर्ष पहले एक दुकान ने एक प्रांत के मंत्री को भी चोरी करते हुए पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया था. वह मंत्री पद से हाथ धो बैठा था. उस का राजनीतिक जीवन भी चौपट हो गया था.

प्रमोद भी क्रिसमस के बाद खरीदारी करने गया था. बहनों को रक्षाबंधन और भैयादूज पर वह कुछ भेज नहीं पाया था, इसलिए सोचा कि उन के लिए स्वेटर खरीद कर भेज दे.

उस ने दोनों बहनों के लिए स्वेटर लिए. अपने लिए एक रेशमी टाई भी ली. तीनों चीजों के दाम 55 डालर थे. टाई 10 डालर की थी, लेकिन प्रमोद के पास उस समय 50 डालर ही थे. उस ने सोचा कि दोनों स्वेटर ही ले लिए जाएं, फिर बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

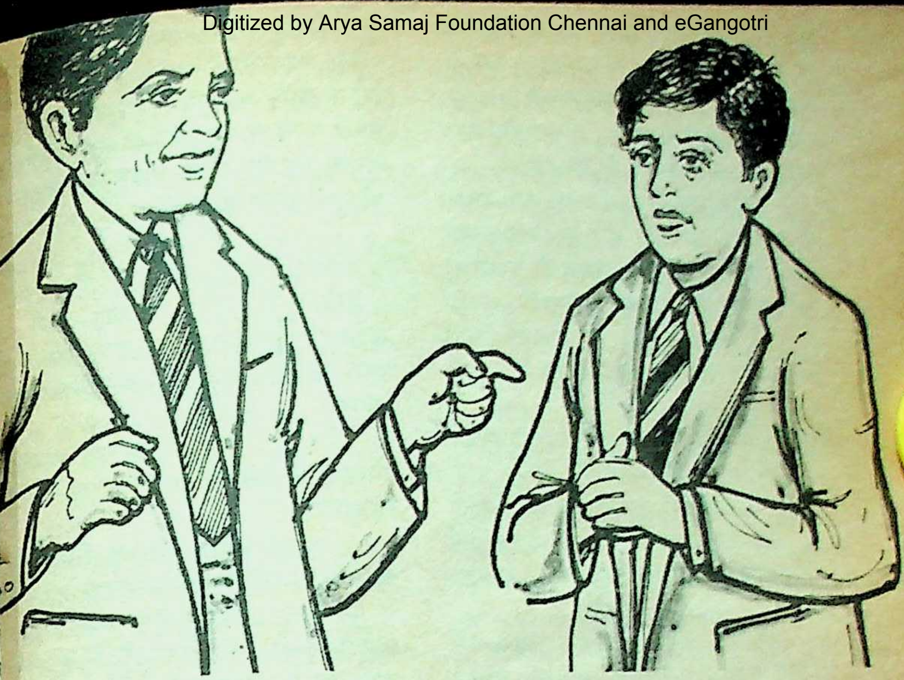

पैसे ला कर टाई खरीदी जाए. पर बाद में कोई जरूरी नहीं था कि टाई मिल ही जाएगी.

30 डालर की टाई 10 डालर में मिल रही थी. लोग फटाफट टाइयां खरीद रहे थे. प्रमोद ने इधरउधर नजरें दौड़ाईं कि कोई जानपहचान का दिख जाए तो उस से पांच डालर उधार ले ले और तीनों चीजें खरीद ले, पर कोई दिखाई नहीं दिया. पास ही फर्नीचर का विभाग था. वह कुछ थक गया था, इसलिए वहीं सोफे पर बैठ गया.

फिर प्रमोद ने सोचा कि टाई के पैसे पूरे दे देगा और एक स्वेटर के भी. दूसरे स्वेटर के लिए कुछ अग्रिम पैसे दे जाएगा ताकि उस का स्वेटर वे बेच न दें. बाद में अपने फ्लैट से पैसे ला कर दूसरे स्वेटर को भी ले जाएगा.

यह खयाल आते ही वह उठ खड़ा हुआ. पहले सोचा, स्वेटर वाले महिलाओं के विभाग में जाए. जब वह वहां जा रहा था, तभी उस के मन में अचानक एक विचार बिजली की तरह कौंधा कि इतनी भीड़ में कौन उसी की तरफ देख रहा है. चुपके से

"मैं एक चोर के साथ अपनी भतीजी की शादी नहीं कर सकता." प्रोफेसर ने गंभीर स्वर में कहा.

अगर वह टाई अपने ओवरकोट की जेब में डाल ले तो कौन उसे पकड़ेगा. अगर पकड़ भी लेगा तो कोई बहाना बना देगा.

वह दुकान के उस कोने में चला गया, जहां तीनचार ग्राहक ही थे. उस ने चुपके से टाई अपने ओवरकोट की जेब में डाल ली. इतनी बड़ी जेब में छोटी सी टाई बड़ी आसानी से समा गई थी.

स्वेटरों के पैसे दे कर प्रमोद के दिमाग में यह सवाल उठा कि अब दुकान से कैसे निकला जाए. उस ने चारों ओर देखा, कोई उस की ओर विशेष निगाह से नहीं देख रहा था. सब अपने काम में मस्त थे. कुछ देर वह सोचता रहा. फिर चारों ओर देखा और दुकान से बाहर जाने वाले घूमने वाले दरवाजे से बाहर निकल गया.

अभी वह 10 कदम ही चला होगा कि किसी के भारी पंजे ने उस के ओवरकोट को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंधे से पकड़ लिया. प्रमोद के तो जैसे प्राण ही निकल गए. पलट कर देखा तो एक छः फुट लंबा हट्टाकट्टा व्यक्ति सामने खड़ा था. वह भारी स्वर में बोला, "बिना कोई शोर किए मेरे साथ दुकान के अंदर चलो."

प्रमोद उस के साथ चल दिया. दुकान के कर्मचारी उस की ओर देख कर इशारे कर रहे थे. कुछ मिनट पहले ही प्रमोद को लगा था कि कोई उस की ओर नहीं देख रहा है, परंतु अब ऐसे लगा, जैसे कि हर किसी की निगाह उस की ओर केंद्रित है.

दुकान का जासूस प्रमोद को ऊपरी मंजिल पर दुकान के दफ्तर की ओर ले गया. दुकान के कर्मचारी उस को देख कर हंस रहे थे. जासूस ने प्रमोद के कोट की जेब से टाई निकाल कर उसे दिखाते हुए कहा, "इस टाई के आप ने पैसे नहीं दिए हैं."

प्रमोद ने बहाना बनाया, "टाई के पैसे पुरुषों के विभाग में देने के लिए उस से कहा गया था. उस ने स्वेटरों के विभाग में किसी महिला से पूछा था. उस ने पुरुषों के विभाग में जाने को कहा. वह जरा जल्दी में था, इसलिए भूल गया."

"स्वेटरों के विभाग में किस महिला कर्मचारी से पूछा था?" जासूस ने पूछा.

"कर्मचारी तो नहीं, किसी महिला ग्राहक से पूछा था." प्रमोद ने सोचा कि उस ने तो किसी से भी नहीं पूछा था, अगर वह कह देगा कि किसी कर्मचारी से पूछा था तो वह उस से उस महिला को पहचानने को कहेगा.

"आप के पास इस समय कितने डालर हैं? अपना बटुआ दीजिए." जासूस ने प्रमोद से बटुआ ले कर खोल कर देखा. उस में केवल पांच ही डालर थे.

"पांच डालर से आप 10 डालर की टाई की कीमत कैसे चुकाते?" जासूस ने घूरते हुए पूछा. तभी स्टोर का मैनेजर आया, "आज किस को पकड़ा है, चार्ली?"

जासूस ने प्रमोद के बटुए से प्रमोद का परिचयपत्र निकाल कर मैनेजर को दे दिया.

मैनेजर ने परिचयपत्र को दे...
गंभीर स्वर में बोला, "चार्ली, तुम...
इस से मैं निबट लूंगा." मैनेजर ने...
प्रमोद के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही...
कुरसी पर बैठ गया. प्रमोद एक...
चोर की तरह खड़ा था.

मैनेजर ने घूरते हुए कहा, "तुम...
स्कूल में पढ़ते हो और...
टाई पहनना चाहते हो. 10 डालर की...
लिए तुम चोर बन गए. तुम भविष्य...
करोगे."

"नहीं साहब, आप मेरा...
कीजिए. मैं पैसे देना भूल गया था,"...
गिड़गिड़ाया.

"हमारी दुकान की यह नीति...
चोरी के मामले हम पुलिस के हवाले...
हैं. एक बात बताओ, तुम व्यवसाय...
प्रोफेसर सुधीर को जानते हो. मैं...
पहले उन से पढ़ चुका हूं." मैनेजर...

"हां,हां, अच्छी तरह जानता हूं...
उन से पढ़ा हूं और शायद उन की...
मेरी शादी भी हो जाए. साहब, मैं...
हूं. आप प्रोफेसर सुधीर को फोन कर...
बारे में पूछ लीजिए." प्रमोद ने दयनीय...
में कहा.

"तुम्हें उन का फोन नंबर मालूम...
मैनेजर ने पूछा. प्रमोद ने इनकार में...
हिला दी. पास में ही टेलीफोन डाय...
पड़ी थी. मैनेजर ने उस में से प्रोफेसर...
का नाम देख कर फोन नंबर ले लिया...
फोन मिलाया था. प्रोफेसर घर पर...

"हैलो प्रोफेसर, क्रिसमस की ब...
बधाई हो, साहब. मैं मार्टिन बोल...
याद है, दो साल पहले मैं ने एम.बी...
शोधपत्र आप की अध्यक्षता में लिखा...

प्रोफेसर सुधीर को याद आया...
अपना शोधपत्र पूरा नहीं कर पा रहा...
क्योंकि उस की पत्नी काफी दिन से...
थी. प्रोफेसर ने लगभग अपनेआप ही...
कर मार्टिन का शोधपत्र पूरा किया और...
डिगरी मिली. अगर वह मदद नहीं कर...

...मार्टिन को...
...तीन वर्ष...
...प्रोफेसर आ...
...सुबहसुबह...
"आप...
...समय हमारे...
...चला गया...
...कह रहा है...
...तो हर चोर...
...की भतीजी...
...सोचा कि...
...कम से क...
...लिए आप...
...स्वर में क...

प्रोफेसर...
थी.
मार्टिन बो...
मेरा शोधप...
किया था.
चुकाने का...
देता हूं, प...
ही करनी...
की कोशि...
उत्तर की...
दिया. फि...
बोला, "...
मैं अपना...
जाओ."
प्रमो...
दिया औ...
मंजिल से...
अब वह...

अमरी...
वे अप...
परीक्ष...
आदि...
पशुओ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्टिन को डिगरी न मिल पाती और उस की तीन वर्ष की मेहनत बेकार हो जाती. प्रोफेसर आश्चर्यचकित थे कि मार्टिन का सुबहसुबह क्यों फोन आया.

"आप का एक विद्यार्थी प्रमोद इस समय हमारे पास है, टाई के पैसे दिए बिना चला गया था. सिर्फ 10 डालर की टाई थी. कह रहा है कि पैसे देना भूल गया. यह बहाना तो हर चोर बनाता है. कह रहा है कि आप की भतीजी से उस की शादी होने वाली है. मैं ने सोचा कि प्रोफेसर का होने वाला रिश्तेदार कम से कम चोर तो नहीं हो सकता. इसी लिए आप को फोन किया." मार्टिन ने ऊंचे स्वर में कहा.

प्रोफेसर को सारी बात समझ में आ गई थी. इस से पहले कि वह कुछ कहते, मार्टिन बोला, "साहब, आप ने दो साल पहले मेरा शोधपत्र लिख कर मुझ पर एक उपकार किया था. आज उसी उपकार का बदला चुकाने का अवसर आ गया है. मैं इस को छोड़ देता हूं, पर आप इसे समझाइए. अगर चोरी ही करनी है तो अच्छे माल पर हाथ मारने की कोशिश करे." मार्टिन ने प्रोफेसर के उत्तर की भी प्रतीक्षा न की और फोन रख दिया. फिर वह प्रमोद की ओर मुड़ कर बोला, "तुम अब आजाद हो. इस से पहले कि मैं अपना इरादा बदल दूं, फौरन भाग जाओ."

प्रमोद ने गिड़गिड़ा कर उसे धन्यवाद दिया और कमरे से भाग निकला. पांचवीं मंजिल से वह सीढ़ियों से फटाफट उतरा. अब वह दुकान के बाहर था. तभी उसे मालूम हुआ कि जिन दो स्वेटरों के उस ने पैसे दिए थे, वे तो वहीं रह गए. लेकिन क्या मुंह ले कर वह दुकान में वापस जाता.

प्रमोद वहां से सीधे प्रोफेसर सुधीर के फ्लैट पर गया. प्रोफेसर ने दरवाजा खोला. फ्लैट में घुसते ही प्रमोद ने प्रोफेसर के पांव पकड़ लिए, "साहब, आप के कारण मेरी जिंदगी आज बरबाद होने से बच गई. अगर दुकान वाले मुझे आज पुलिस के हवाले कर देते तो मैं कहीं का नहीं रहता. पता नहीं, आज मुझे क्या हो गया था."

प्रोफेसर उसे बैठक में ले गए. "तुम झूठ बोल कर बच आए हो, प्रमोद. मार्टिन से तुम ने कहा कि तुम मेरी भतीजी से शादी करने वाले हो. मेरे होने वाले रिश्तेदार समझ कर मार्टिन ने तुम्हें छोड़ दिया, लेकिन अगर तुम नंदिनी से शादी कर रहे होते तो मैं उस शादी को जरूर तुड़वा देता."

"साहब, मैं नंदिनी से शादी करने को तैयार हूं." प्रमोद आंसू भरी आंखों से बोला.

"मैं एक चोर के साथ अपनी भतीजी की शादी नहीं कर सकता." प्रोफेसर ने गंभीर स्वर में कहा.

"मैं आप को साबित कर के दिखा दूंगा कि मैं नंदिनी के लिए हर तरह से योग्य हूं. आज की भूल मेरी जिंदगी की पहली और अंतिम है." प्रमोद उठ खड़ा हुआ. उस ने झुक कर प्रोफेसर के पांव छुए और दरवाजे की ओर बढ़ गया.

प्रोफेसर सुधीर ने प्रमोद को जाते समय कहा, "अगर पैसे की जरूरत हो तो मुझ से मांग लेना. मेरे लिए तुम नंदिनी की तरह ही तो हो." ●

अहिंसक सौंदर्य

अभी तक शृंगार प्रसाधनों की निरापदता की जांच पशुओं पर की जाती थी. अमरीका के शृंगार प्रसाधन निर्माताओं में से एक रेवलोन कंपनी ने यह घोषणा की है कि वे अपने उत्पादों की निरापदता की जांच करने तथा नए फार्मूले बनाने के लिए पशुओं पर परीक्षण नहीं करेंगे. इस की बजाय वे वैज्ञानिकों के निर्णयों और ऐतिहासिक जानकारियों आदि पर विश्वास करेंगे कि अमुक वस्तु मानव उपभोग के लिए सुरक्षित है या नहीं. वे पशुओं पर परीक्षण बिलकुल रोक देंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन दहाड़े

एक बार मैं जयपुर रेलवे स्टेशन पर खड़ा था. गाड़ी आने में कुछ देर थी. वहां एक लड़का आवाज लगा रहा था, "बूट पालिश करा लो, मुफ्त में.."

मैं ने कुछ सोच कर अपने दोनों जूते उतार कर उस के सामने रख दिए. उस ने एक जूते पर पालिश कर के कहा, "लो बाबूजी आप के जूते पालिश कर दिए."

मैं ने टोका, "भई, दूसरे पर भी तो करो."

वह बोला, "बाबूजी, मैं एक ही जूते पर मुफ्त में पालिश करता हूं. दूसरे पर पालिश करने के दो रुपए लूंगा."

मजबूरन मुझे दो रुपए देने पड़े.

—मनोज कुमार

*

बात उन दिनों की है जब मेरे भाई साहब ने स्कूटर का नयानया शोरूम खोला था.

एक दिन एक व्यक्ति ने एक स्कूटर पसंद किया. उस ने मेरे भाई साहब को अपनी अटैची पकड़ाते हुए कहा, "आप जरा मेरी अटैची पकड़िए, मैं स्कूटर चला कर देखना चाहता हूं."

जब काफी समय तक वह व्यक्ति लौट कर नहीं आया तो भाई साहब को चिंता हुई, लेकिन काफी कोशिशों के बाद भी वह व्यक्ति हाथ नहीं आया. अटैची में बेमतलब के कागज भरे हुए थे.

—अंशु गुप्ता

*

लगभग एक वर्ष पूर्व की बात है. हम लोग द्वार पर बैठे थे. एक बढ़ई आया. उस ने हम से पूछा, "आप को लकड़ी का कोई काम करवाना है?"

हम ने मना कर दिया. फिर वह बड़ी ही नम्रता से कहने लगा कि उस से छोटामोटा काम करवा लिया जाए, उसे मजदूरी कम और किस्तों में दे

हम ने उस की बातों में आ क एक तिपाई बनाने के लिए कह दिया और डेकोलाम शीट घर पर ही देर काटछांट और ठोकपीट कर फेवीकोल लाने के लिए 20-25 रु

मेरे पास खुले पैसे नहीं थे. सौ रुपए का नोट थमा दिया फेवीकोल ले कर आता हूं." कह ऐसा गया कि फिर लौट कर नहीं

—के

*

एक बार हम सपरिवार जयपुर थे. हम टैक्सी से उतर कर खाने में खड़े थे. पिताजी हमें वहीं लिए कह कर स्वयं टिकट लेने जा रहे उसी समय पास में खड़े हुए सज्जन, में पैसे पकड़े हुए थे, बोले, "आप हों, मैं टिकट लेने जा रहा हूं, मैं आप टिकट ले आऊंगा. आप कृपया मेरे का खयाल रखें."

पिताजी ने उस पर विश्वास 300 रुपए टिकटों के लिए दे दिए जब वह काफी देर तक लौट कर नहीं हमें उस पर संदेह होने लगा.

बाद में पता चला कि पहले इसी ढंग से लोगों को ठग चुका था

—सरिता अग

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते सपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्लौपी

कहानी ● सरला भाटिया

कलकत्ता के लिए प्रस्थान करने में केवल दो दिन शेष रह गए थे. जाती बार सुदर्शन हिदायत दे गए थे कि सांझ तक अपना पूरा काम निबटा लूं. सारे फर्नीचर को ठिकाने से व्यवस्थित कर दूं. बारबार के तबादलों ने दुखी कर रखा था. कितने परिश्रम और चाव से एक अरसे बाद घर बन कर पूरा हुआ था. अब सब छोड़छाड़ कर कलकत्ता चलो. अचानक घंटी ने ध्यान अपनी ओर खींच लिया. भाग कर किवाड़ खोला तो बबल को सामने खड़ा मुसकराता पाया. उस के हाथ में खूबसूरत सा काले और सफेद धब्बों वाला पिल्ला था.

"कहां से लाए? बड़ा प्यारा है." मैं ने उस के नन्हे मुख को हाथ में ले कर पुचकारा.

"मां, यह बी ब्लाक वाली चाचीजी का है. पूरे साढ़े सात सौ रुपए का है." उस ने उत्साह से भर कर उस के कीमती होने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बबल और विकी के लिए तो फ्लौपी [illegible] था पर उन की मां के लिए वह एक आफत भी था. दुलार और गुस्से के बीच फ्लौपी ने अपना प्यार कब बच्चों की मां तक सरका दिया, यह मां खुद भी न जान सकी.

बखान किया.

"हां, बहुत प्यारा है." मैं ने पिल्ले को हाथ में ले कर कहा.

"गोद में ले लो. देखो, कैसे रेशम जैसे बाल हैं, इस के." उस ने पिल्ले के चमकते हुए बालों को हाथ से सहलाया.

गोद में ले कर मैं ने उसे तीनचार बिस्कुट खिलाए तो वह गपागप चट कर गया और जब उस की आंखें डब्बे में बंद शेष बिस्कुटों की तरफ भी लोलुपता से निहारने लगीं तो मैं ने उसे डांट दिया, "बस, चलो भागो यहां से. बहुत हो गया लाड़प्यार."

फिर मैं ने बबल से कहा, "बबल, देखो अब ज्यादा समय नष्ट मत करो. इस पिल्ले को इस के घर छोड़ आओ और वापस आ कर अपना सामान बांधो. विकी से भी कहना कि जल्दी घर लौटे. अपनेअपने कमरों का जिम्मा तुम्हारा है, मैं कुछ नहीं करूंगी."

"चलो भई, मां तुम्हारे साथ खेलने नहीं देगी." उस ने पिल्ले का मुख चूम लिया और बी ब्लाक की तरफ भाग गया.

आधे घंटे बाद जब वह पुनः लौटा तो विकी उस के साथ था. दोनों अपनेअपने कमरों में जा कर सामान समेटने लगे. परंतु बीचबीच में कुछ खुसुरफुसुर की आवाजों से मैं शंकित हो उठी. मैं ने आवाज दे कर पूछा, "क्या बात है? आज तो दोनों भाइयों में बड़े प्रेम से बातचीत हो रही है."

जब भी मेरे दोनों बेटे आपस में घुलमिल कर एक हो जाते हैं तो मुझे भ्रम होता है कि जरूर मेरे खिलाफ कोई षडयंत्र रचा जा रहा है. जैसे वे घर में देवरानी और जेठानी हों और मैं उन की कठोर सास. एक बार हंस कर मेरे पति ने पूछा भी था, "तुम इन्हें देवरानीजेठानी क्यों कहती हो?"

"इसलिए कि वैसे तो दोनों में पटती नहीं, परंतु जब भी मेरे खिलाफ होते हैं तो आपस में मिल कर एक हो जाते हैं. आप ने देखा होगा, अकसर देवरानीजेठानी के रिश्तों में ऐसा ही होता है." मेरी इस बात पर घर में सब बहुत हंसे थे.

"मेरी प्यारीप्यारी मां." पीठ के पीछे से आ कर बबल ने मुझे आलिंगनबद्ध कर लिया.

"जरूर कोई बात है, तभी मस्का लगा रहे हो?"

"फ्लौपी है न सुंदर."

"कौन फ्लौपी?"

"वही पिल्ला, जिसे मैं घर लाया था."

"उस का नाम फ्लौपी है, बड़ा अजीब सा नाम है." मैं ने व्यंग्य से मुंह बिचकाया.

"वह गिरता बहुत है न, इसलिए चाचीजी ने उस का नाम फ्लौपी रख दिया है."

"हमारे पामेरियन माशा के साथ उस की कोई तुलना नहीं. जैसी शक्ल वैसी ही अक्ल पाई थी, उस ने. कितनी मेहनत की थी, मैं ने उस पर. हमारे दिल्ली आने से पहले ही बेचारा मर गया." मैं ने एक ठंडी आह भरी. "कोई भी घर आता तो कैसे दो पांवों पर खड़ा हो कर हाथ जोड़ कर नमस्ते करता. मैं उसे कभी भूल नहीं सकती."

"वैसे तो मां अपना ब्लिकर भी किसी से कम न था, जिसे आप की एक सहेली ने भेंट किया था." उस ने बात आगे बढ़ाई.

"पर उस के बाल बड़े लंबे थे. बेचारा ठीक से देख भी नहीं सकता था. हर समय अपनी आंखें ही झपकता रहता था. तभी तो पिताजी ने उस का नाम ब्लिकर रख छोड़ा था."

बबल की बातें सुन कर मैं कुछ देर के लिए खो सी गई और एक ठंडी आह भर कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली, "एक साल बाद ब्लिकर चोरी हो गया और माशा को किसी ने मार डाला."

"कई लोग बड़े निर्दयी होते हैं." बबल ने मेरी दुखती रग पकड़ी.

"तुम्हें याद है, जिस दिन मैं एक पत्रिका के लिए साक्षात्कार कर के लौटी तो कितनी देर तक मेरे हाथपांव चाटता रहा. जहां भी जा कर लेटती, वहीं भाग आता. मैं सुबह से गायब रही, शायद इसलिए उदास हो गया था. उस रात हम किसी के घर आमंत्रित थे. चुपके से कमरे से बाहर निकल गया और लगा कार के पीछे भागने. मैं कार से उतर कर पुनः उसे घर छोड़ आई. पर वह था बड़ा बदमाश. हमारे जाते ही गेट से निकल कर फिर कहीं मटरगश्ती करने निकल पड़ा."

"मां, उस रात आप ने बड़ी गलती की. वह आप के साथ कार में जाना चाहता था. आप उसे साथ ले जातीं तो वह बच जाता."

"बच्चे, अगर उसे बचना होता तो उसे एक जगह टिक कर बंधे रहने की समझ अपनेआप आ जाती. उस का सब से बड़ा दोष था कि वह एक जगह बंध कर नहीं रहना चाहता था. जब भी बांधने का नाम लो, आगे से गुर्राना शुरू कर देता. उस रात भी तो उस ने ऐसे ही किया था."

"मां, आप मेरी बात मानो, वह किसी की कार के नीचे आ कर नहीं मरा. उस के शरीर पर एक भी जख्म नहीं था. ऐसे लगता था, जैसे सो रहा हो. जरूर उस निकम्मे नौकर ने ही उसे मार डाला था. माशा उसे पसंद नहीं करता था. उसे देखते ही भौंकने लगता था. उसी ने तो आ कर खबर भी दी थी कि माशा मर गया है." बबल ने क्रोध में अपने दांत पीसे.

"मां, वह प्यार से फ्लौपी को मांग रहा है. मेरी बात मानो उसे दे दो. मुझे घर की शांति ज्यादा प्यारी है." कहते हुए विकी ने फ्लौपी को उठा कर विधान की ओर बढ़ा दिया. ▲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम कुत्ता पालते तो हैं, लेकिन उस का सुख नहीं भोग सकते." मैं ने उदास हो कर कहा.

"मां, अगर आप को फ्लौपी जैसा पिल्ला मिल जाए तो आप ले लेंगी?" विनम्रता से चहक कर उस ने मतलब की बात कही.

"मैं साढ़े सात सौ रुपया खर्च करने वाली नहीं. कोई मजाक है क्या? मुझे नहीं चाहिए फ्लौपी." मैं ने गुस्से में अपने तेवर बदले.

"कौन कहता है, आप को रुपए खर्च करने को. चाचीजी तो उसे मुफ्त में दे रही हैं."

"क्यों? तो फिर जरूर उस में कोई खोट होगी. वरना कौन अपना कुत्ता किसी को देता है?"

"खोटवोट कुछ नहीं. उन का बच्चा छोटा है, इसलिए उसे समय नहीं दे पातीं. आप तो बस हर बात पर शक करती हैं."

हम दोनों की बहस सुन कर मेरा बड़ा बेटा विकी भी उस की तरफदारी करने अपने कमरे से निकल आया, "मां, बबलू बिलकुल ठीक कह रहा है. चाचीजी पिल्ले के लिए कोई अच्छा सा परिवार ढूंढ़ रही हैं. आप को शक हो तो स्वयं उन से मिल लो."

"मुझे नहीं मिलना किसी से. माशा के बाद अब मुझे कोई कुत्ता नहीं पालना. सुना तुम ने." मैं पांव पटकती पुनः सामान समेटने लगी. "कलकत्ता के आठवें तल्ले पर है, हमारा फ्लैट. उसे पालना कोई मजाक नहीं. तुम्हारे पिता भी नहीं मानेंगे." मैं ने कड़ा विरोध किया. परंतु उन दोनों में से मेरी बात मानने वाला वहां था कौन?

"हम तो फ्लौपी को जरूर पालेंगे." दोनों भाई जोरदार शब्दों में घोषणा कर के अपनेअपने कमरों में चले गए.

जब दूसरे दिन इस विषय पर कोई चर्चा न हुई तो मैं ने चैन की सांस ली. परंतु तीसरे दिन सवेरा होते ही पुनः वही रट शुरू हो गई, "मां, कृपया फ्लौपी को ले लो न. हम वादा करते हैं, उस की सारी जिम्मेदारी हमारी होगी. आप को कुछ भी नहीं करना होगा." दोनों भाई एकसाथ बोल पड़े.

इस तरह मेरे कड़े विरोध के बावजूद उस रोज एक घंटे के अंदर ही नन्हा फ्लौपी हमारे परिवार का सदस्य हो गया. शाम को जब यह दफ्तर से घर आए तो फ्लौपी को देख कर बोले, "तो इन दोनों ने अपनी बात मनवा कर ही दम लिया. बड़ा मुशकिल काम है इसे पालना."

इस बार मेरे साहित्य प्रेमी पति को पिल्ले का नाम सोचने के सुख से हम ने वंचित ही रखा, क्योंकि गिरतालुढ़कता फ्लौपी अपना नामकरण तो पहले परिवार से ही करवा कर आया था. दूसरे दिन लाख कोशिशों के बावजूद भी राजधानी एक्सप्रेस से जब फ्लौपी की बुकिंग न हो सकी तो मैं ने पुनः खैर मनाई. सोचा, चलो सिर से बला टली. पर बबल की आंखों से बहती आंसुओं की अविरल धारा ने मेरे कोमल हृदय को छू लिया और बाध्य हो कर इन्होंने वादा किया कि किसी भी हालत में वह फ्लौपी को कलकत्ता जरूर पहुंचा देंगे.

लगभग 20 रोज पश्चात जब यह दिल्ली दौरे पर गए तो फ्लौपी को लिवा लेने के लिए बच्चों ने फिर जिद की. फिर एक रात सचमुच मैं ने फ्लौपी को सुदर्शन के साथ मुख्य द्वार पर खड़ा पाया.

दोनों बच्चों के मुख पर खुशी का वेग उमड़ आया, "अरे, तू तो कितना मोटू हो गया है." दोनों उसे बारीबारी सहलाने लगे और बदले में फ्लौपी उन का मुख चाटचाट कर दुम हिलाता रहा. सवेरा होते ही सारे मिंटो पार्क में हर्षोल्लास की लहर दौड़ गई. बारीबारी सब बच्चे उसे देखने आए, मानो घर में कोई नववधू विराजी हो. पड़ोस की लाहसा ऐप्सो टापिसी तो अपनी मालकिन को हमारे घर ऐसे खींच ले आई, मानो फ्लौपी उस का भावी दूल्हा हो और सब बच्चों में धाक अलग से जमी कि बबल का कुत्ता हवाई जहाज से आया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नादान

हूं नहीं नादान ऐसा
धोखा दे सको जिस को,
बखूबी जानता हूं मैं
तुम्हारे हर इरादे को.
—सुरेशकुमार गोयल

कलकत्ता में मिंटो पार्क का मैदान और बगीचे की कोई सानी नहीं रखता. हरी मखमली घास पर जब हमारा फ्लौपी चिड़ियों के पीछे भागता तो बच्चे भी उस के साथ भागते. अच्छाखासा बच्चों का जमघट कहकहों और किलकारियों से गूंजता रहता.

एक रोज हमें कहीं बाहर जाना पड़ा तो हम फ्लौपी को एक कमरे में बंद कर के खुला छोड़ गए. सोचा, आखिर कुत्ते को घर में रह कर मकान की रखवाली करनी चाहिए. लौट कर आसपड़ोस से पता चला कि पीछे से भौंकभौंक कर उस ने सारा मिंटो पार्क सिर पर उठा लिया था. अपने प्रति अन्याय का ढोल पीटपीट कर सब को खूब परेशान किया. अब एक ही चारा था कि या तो कोई घर में सदा उस के पास रहे या फिर वह कार में हमारे साथ चले.

बहुत सोचविचार करने पर दूसरा उपाय ही सब को ठीक लगा. एक रविवार हम टालीगंज क्लब गए तो उसे भी अपने साथ ले गए. मैं ने तरणताल के साथ रखे एक बेंच से उसे बांध दिया और स्वयं तैरने चली गई. तैरते हुए हंसतेखेलते बच्चों व अन्य लोगों को देख कर फ्लौपी ऐसा अभिभूत हुआ कि वहां पर आतीजाती सभी सुंदरियां उसी की हो गईं. जो भी लड़की वहां से गुजरती हम से हैलो पीछे करती, पहले फ्लौपी का मुख चूमती. क्लब का बैरा उस के लिए मीट की हड्डी ले आया. अब हम जहां भी जाते, उसे साथ ले जाते.

फिर बारी आई डाक्टर और दवाइयों के खर्चों की. परंतु जब विटामिन की ताकत उच्छृंखलता में परिवर्तित होने लगी तो मैं सकते में आ गई. अब उसे बांधा जाने लगा. परंतु जैसे ही उस नटखट पिल्ले को मौका मिलता, वह चीजों को मटियामेट करने से न चूकता. कभी जुराब, तो कभी बनियान तो कभी परदा यानी जो भी उस के हाथ लगता, हम से नजर चुरा कर उस का कचूमर निकाल डालता.

एक रोज एक कीमती ब्लाउज इस्तरी करने लगी. उसे खोल कर मेज पर बिछाया तो उस की हालत देख कर दंग रह गई, "ओ मंगला, यह देख इस की हालत, क्या इसे किसी काकरोच ने काट डाला?" मैं ने हैरानगी जाहिर की.

मंगला बेचारी सारा काम छोड़ कर भागी आई, "मेमसाहब, इसे तो फ्लौपी ने काटा है."

"ऐसा कैसे हो सकता है? देखो, गले के पीछे से और बाजुओं पर से ही तो काटा गया है."

"हां, जहांजहां पसीने के दाग थे, वह हिस्सा चबा गया."

"इस मुसीबत ने तो जीना मुशकिल कर दिया है." मैं ने फ्लौपी को जंजीर समेत घसीट कर अपना ब्लाउज दिखाया.

मेरी कठोर आवाज सुन कर वह सहम गया और उस ने अपना मुख दूसरी तरफ फेर लिया. मेरी गुस्से भरी आवाज सुन कर बबल भी अपने कमरे से भाग आया और गुस्से से बोला, "हमें जीने नहीं देगा. अब तू क्या चाहता है?" उस ने उस रात उसे पलंग के पाए से कस कर बांध दिया. "बच्चू, तेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही सजा है. अपनी हरकतों से बाज आ जा वरना मार डालूंगा." बबल ने उंगली दिखा कर उसे कड़ा आदेश दिया. फ्लौपी दुम दबा कर पलंग के नीचे दुबक गया.

"मां, आप मेरी बात मानो. इस बेवकूफ को मीट की हड्डी ला दो, सारा दिन बैठा चबाता रहेगा. याद है, माशा हड्डी से कितना खुश रहता था." रात को मेरे बड़े बेटे ने खाने की मेज पर हिदायत दी.

"पर माशा ने हमारी एक भी चीज खराब नहीं की थी. बड़ा ही समझदार कुत्ता था."

"हां मां, पर वह बंगले के बाहर के बरामदे में बंधा रहता था और रात को अपना चौकीदार उस की देखभाल करता था. आप उस को घर के अंदर कहां आने देती थीं."

"बेटे, यही तरीका है कुत्ता पालने का और यहां इस आठवें तल्ले पर हम इस बेजबान के साथ सरासर अन्याय कर रहे हैं." मैं ने जवाब दिया.

"मेम साहब. कितनी बार हम इस के साथ नीचे जाएंगे." मंगला ने गुस्से में मेरी बात का समर्थन किया.

अगले दिन खरीदारी करने जब मैं बाजार गई तो चारपांच मोटीमोटी मीट की हड्डियां खरीद लाई. रोज उसे एक पकड़ा देती. हड्डी देख कर वह नाच उठता. दिन के समय वह कुरसी के पाए से बंधा रहता और रात को पलंग के पाए से. हड्डी उस के पास धरी रहती. जब उस का जी करता, चबा लेता. पांचछः रोज तक फिर उस ने कोई चीज न फाड़ी. एक सुबह सो कर उठी तो यह सोच कर बहुत प्रसन्न थी कि फ्लौपी की आदतों में सुधार हो रहा है. मैं ने उसे प्यार से सहलाया और फिर रसोई में नाश्ता बनाने चली गई.

इस बीच बच्चे अपना कमरा बंद कर के पढ़ने का नाटक रचते रहे और फ्लौपी को बड़े मेज की कुरसी के पाए से बांध गए. जब खापी कर नाश्ता खत्म हो गया तो मैं ने [illegible] का एक टुकड़ा दे कर फ्लौपी को पुचकारा, "अब तो मेरा फ्लौपी बड़ा सयाना हो गया है."

मेरी बात सुन कर बबल सहम गया. उस के सहज होने के नाटक से मैं [illegible] गई कि कोई न कोई बात जरूर है जो मुझ [illegible] छिपाई जा रही है. चुपके से जा कर [illegible] विकी के कमरे का दरवाजा सरकाया तो [illegible] रह गई. हाल ही में खरीदे गए गद्दे पर वि[illegible] सफाई से पैबंद लगा रहा था.

"तो यह बात है. 400 रुपए का [illegible] गद्दा है मेरा. इस मुसीबत के कारण तो [illegible] घर की शांति भंग हो गई है." मैं ने दो[illegible] करारे थप्पड़ उस बेजबान के मुख पर [illegible] दिए, "तू है ही नालायक."

रोजरोज घर की शांति भंग हो[illegible] लगी. शेष बची चीजों को मैं संभाल[illegible] ताकि कंबल, साड़ियां आदि पर वह अ[illegible] दांत न आजमाए. अब उस ने हमारे ए[illegible] कीमती गलीचे को अपना शिकार बना[illegible] और हमारे बारबार मना करने पर भी [illegible] नजर चुरा कर उसे पेशाब और मल से गं[illegible] कर देता. दिल चाहा कि फ्लौपी के टुकड़े क[illegible] दिए जाएं और बच्चों की भी जम कर पि[illegible] की जाए, जो उसे घर में लाने के जिम्मेदा[illegible] थे.

एक रात को तो हद हो गई. रात [illegible] तीन बजे थे. वह दौरे पर थे. मेरी तबीय[illegible] खराब थी. फ्लौपी ने मुझे पांव मार क[illegible] जगाया कि उसे नीचे जाना है. मैं ने बबल [illegible] आवाज दी, "रात का समय है, मेरे सा[illegible] नीचे चलो."

बेचारा झट उठ खड़ा हुआ. बाह[illegible] बरामदे में जा कर देखा तो लिफ्ट काम न[illegible] कर रही थी. अब एक ही चारा था कि [illegible] सीढ़ियों से नीचे उतरा जाए. बेचा[illegible] जानवर अपनेआप को कब तक रोकता. उ[illegible] ने सीढ़ियों में ही 'गंदा' कर दिया. मिट्टी प[illegible] कलकत्ता की एक बेहद आधुनिक जगह है [illegible] कागज का एक टुकड़ा भी सारे अहाते [illegible] दिखाई दे जाए तो बहुत बड़ी बात है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवेरा होते मैं डर ही रही थी कि यहां के प्रभारी आ धमके, "सुनिए, या तो आप अपने कुत्ते को पैंट पहनाइए या फिर किसी नीचे रहने वाले निवासी को सौंप दीजिए. यही मेरी राय है."

उस दिन से हम एक ऐसे अदद परिवार की तलाश करने लगे जो फ्लौपी को उस की शैतानियों के साथ स्वीकार कर सके.

हमारे घर विधान नामक एक युवक दूध देने आता था. वह फ्लौपी को बहुत प्यार करता था. हमारी समस्या से वह कुछकुछ वाकिफ हो गया. एक रोज साहस कर के बोला, "मेमसाहब, नीचे वाला दरबान बोल रहा है कि आप फ्लौपी किसी को दे रहे हैं."

"हां, हमारा ऊपर का फ्लैट है न, इसलिए कुछ मुशकिल हो रही है."

"मेमसाहब, हमारा घर तो नीचे का है. हमें दे दीजिए न फ्लौपी को."

"पूरे 800 रुपए का कुत्ता है, भैया." पास खड़ी मंगला ने रोबदार आवाज में कहा.

"नहींनहीं, हमें इसे बेचना नहीं है. देंगे तो वैसे ही. जो भी इसे प्यार से, ठीक से रख सके."

"हम तो इसे बहुत प्यार से रखेंगे." विधान बोला.

"पर तुम तो काम करते हो. घर पर इस की देखभाल कौन करेगा." मैं ने पूछा.

"घर में मां, बहन और एक छोटा भाई है."

"इस का खर्चा बहुत है, कर सकोगे?"

"दूध तो अपने पास बहुत है और मीट भी हम खाते ही हैं."

"इस की दवाइयों और डाक्टर का खर्चा?"

"आप चिंता न करें." विधान ने मुसकराते हुए कहा.

हम दोनों की बातें सुन कर विकी अपने कमरे से भागा आया, "मां, वह प्यार से फ्लौपी को मांग रहा है. मेरी बात मानो, दे दो इसे. मुझे घर की शांति ज्यादा प्यारी है."

सचमुच उस ने फ्लौपी को दोनों हाथों से उठा कर विधान के हाथों में दे दिया.

मैं हतप्रभ सी खड़ी बबल के चेहरे पर उतरतेचढ़ते भावों को पढ़ कर बोली, "विधान, तुम इसे कुछ रोज अपने पास रखो, फिर मैं सोचूंगी."

फ्लौपी चला गया तो ऐसा लगा कि घर में कुछ विशेष काम ही नहीं. 'चलो मुसीबत टली,' मैं ने सोचा. पर दो दिन पश्चात ही महसूस होने लगा कि घर का सारा माहौल ही कसैला हो गया है. बच्चे स्कूल से लौटते तो चुपचाप अपनेअपने कमरों में दुबक जाते. न कोई हंसी न खेल. दो रोज पहले तो फ्लौपी था. बच्चों की आहट पाते ही भौंभौं कर के झूमझूम जाता था और बदले में विकी और बबल के प्रेम रस से सराबोर फिकरे सुनने को मिलते.

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

दीजिए

और बड़े बच्चों को

सुमन सौरभ

चंपक व सुमन सौरभ में भूतप्रेतों, राक्षसों, देवीदेवताओं, चमत्कारों और श्रापों के कारनामे, जादूटोने, अंधविश्वास की कहानियां प्रकाशित नहीं की जातीं.

दोनों पत्रिकाओं में रचनात्मक चरित्र निर्माण करने वाली, ज्ञान बढ़ाने वाली मनोरंजक कहानियां व लेख प्रकाशित किए जाते हैं. जिस से कल व आज के बच्चे जागरूक, स्वाभिमानी, देशप्रेमी नागरिक बन सकें.

नमूने की प्रति के लिए लिखें : दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली - 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लास रहित वातावरण मन को अखरने लगा. जब खाने की मेज पर बच्चे बैठते तो बारबार उस कोने को देख कर ठंडी आहें भरते, जहां वह बंधा रहता था. मन एक तीव्र उदासी से लबालब हो उठा. अगली सुबह जब विधान दूध देने आया तो मैं ने फ्लौपी के बारे में पूछताछ की.

"बहुत खुश है, मेमसाहब. मेरी बहन उसे बहुत प्यार करती है." विधान ने बताया.

"कल शाम को उसे मिलाने के लिए जरूर लाना. बच्चे उसे बहुत याद करते हैं."

"अच्छा मेमसाहब, कल शाम चार बजे उसे जरूर लाऊंगा." वह कुछ सोच कर बोला.

दूसरे दिन तीन बजते ही बच्चे फ्लौपी का बेसब्री से इंतजार करने लगे थे. इतने उत्साहित थे कि अपने मित्रों के साथ नीचे खेलने भी न गए. जरा सी आहट पाते ही मंगला बारबार दरवाजा खोल कर देखती. पहले चार बजे, फिर पांच, पर फ्लौपी न आया और न विधान ही दिखाई दिया. हम सब का धैर्य जवाब देने लगा. बबल उदास स्वर में बोला, "अब वह लड़का फ्लौपी को कभी नहीं लाएगा?"

"क्यों?" मैं हैरान हो कर बोली.

"उस ने उस पर अपना हक जमा लिया है."

"तो क्या, दो रोज में ही फ्लौपी विधान का हो गया. मैं कल ही उस से बात करूंगा." विकी क्रोध में बोला.

"कितना महंगा कुत्ता है. कहीं उस ने बेच न दिया हो, मेमसाहब." मंगला ने अपनी शंका व्यक्त की.

"बेच कर तो देखे. हम उस की पुलिस में रिपोर्ट कर देंगे." विकी ने ऊंचे स्वर में कहा.

"ऐसा करो बबल, जा कर देख आओ कि सब ठीक है न." इन्हीं बातों में शाम बीत गई. पर विधान न आया.

"मां, एक बात कहूं. पर डर लगता है." विकी बोला.

"क्या बात है?"

"कहीं फ्लौपी का एक्सीडेंट तो न हो गया." उस की बात सुन कर मेरा कलेजा धक से रह गया कि कहीं माशा वाले अंत की पुनरावृत्ति न हो जाए. मुझे तो विधान से भी पूछना याद नहीं रहा कि कहीं उस का घर सड़क के किनारे तो नहीं.

अज्ञात आशंका के कारण सारा उत्साह भय में तबदील हो गया. मन एक तीव्र अपराधबोध से भर उठा. एक घुटन सी मेरे भीतर गूंजने लगी. सोचा, जल्दबाजी में सब गड़बड़ हो गया. कुछ दिनों में फ्लौपी अपनेआप ठीक हो जाता.

सवेरा होते ही मैं दरवाजे पर टकटकी लगाए विधान की राह देखने लगी. जैसे ही लिफ्ट की आहट हुई, मैं ने झट से किवाड़ खोला, उसे अकेला आया देख कर एक बार तो संशय तनमन को झकझोरने लगा.

"फ्लौपी को क्यों नहीं लाए? सब ठीक तो है न?" मैं एक साथ कई प्रश्न कर उठी.

"कल कुछ मेहमान आ गए थे मेमसाहब. इसलिए नहीं आ सका. वैसे वह ठीक है."

विधान की बात सुन कर मैं एक सुखद आश्चर्य से अभिभूत हो कर बोली, "देखो, आज शाम को फ्लौपी को जरूर लाना. वरना बच्चे बहुत नाराज होंगे."

शाम को तीन बजे जैसे ही बाहर की घंटी बजी, बच्चों ने लपक कर दरवाजा खोला. फ्लौपी हम सब को देखते ही विधान की बांहों से छूट कर मेरी गोद में आ गया.

मुख चाटचाट कर, दुम हिलाहिला कर और झूमझूम कर वह अपनी खुशी प्रकट करने लगा. बच्चों का उत्साह से नाचना और खिलखिलाना मुझे बड़ा भला लगा. एक बार तो मुझे ऐसा लगा कि दीर्घकाल से बिछुड़ा मेरा तीसरा बच्चा मिल गया हो और हमारी ममता भरी छाया में पहुंच गया हो. आधे घंटे बाद जब विधान पुनः फ्लौपी को लेने के लिए आया तो मेरे मुख से बस इतना ही निकला, "विधान, अब फ्लौपी को यहीं रहने दो. हमारा मन नहीं मानता."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलो कहीं बैठें चुपचाप

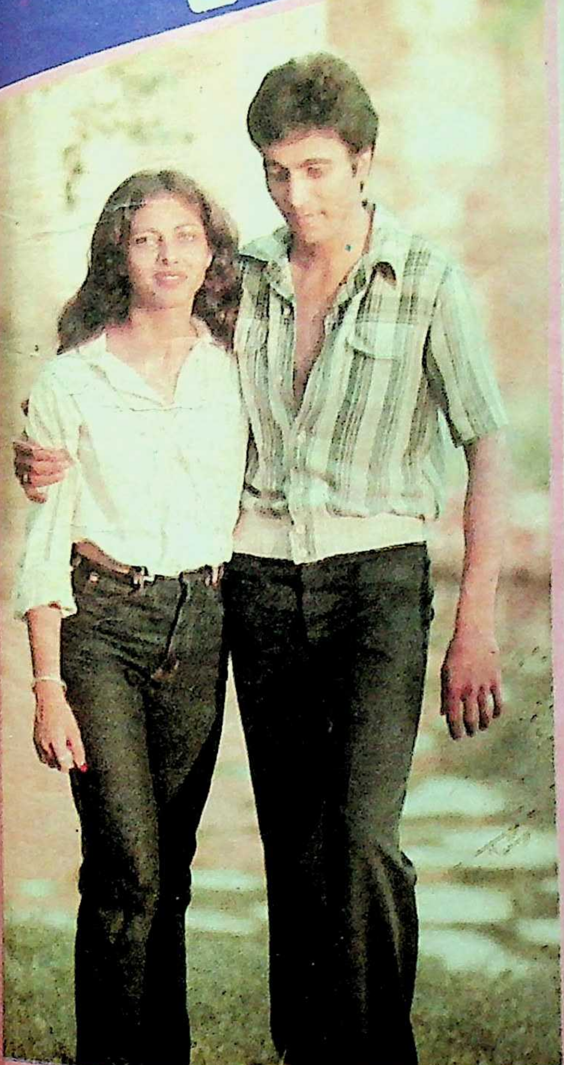

और सहें भीतर का ताप
चलो कहीं बैठें चुपचाप

लहरों के संग गुनगुनाएं
छुअनों में बोलेबतियाएं
नदिया में डूब रहे सूरज से
लहरलहर डूबें उतराएं

बुनाकरें अपने संताप
चलो कहीं बैठें चुपचाप

बिसराएं दिन के सब काम
घुलने दें भीतर यह शाम
बन जाएं उंगलियां कलम,
पानी पर लिखा करें नाम

चमकाएं पिछले अभिशाप
चलो कहीं बैठें चुपचाप

यमुना की गवाही दिलाएं
सपनों पर स्याही फैलाएं
दहक रही पीड़ा के माथे
चंदन का टीका लगाएं

यादों को देने दें थाप
चलो कहीं बैठें चुपचाप.

—नरेंद्र तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

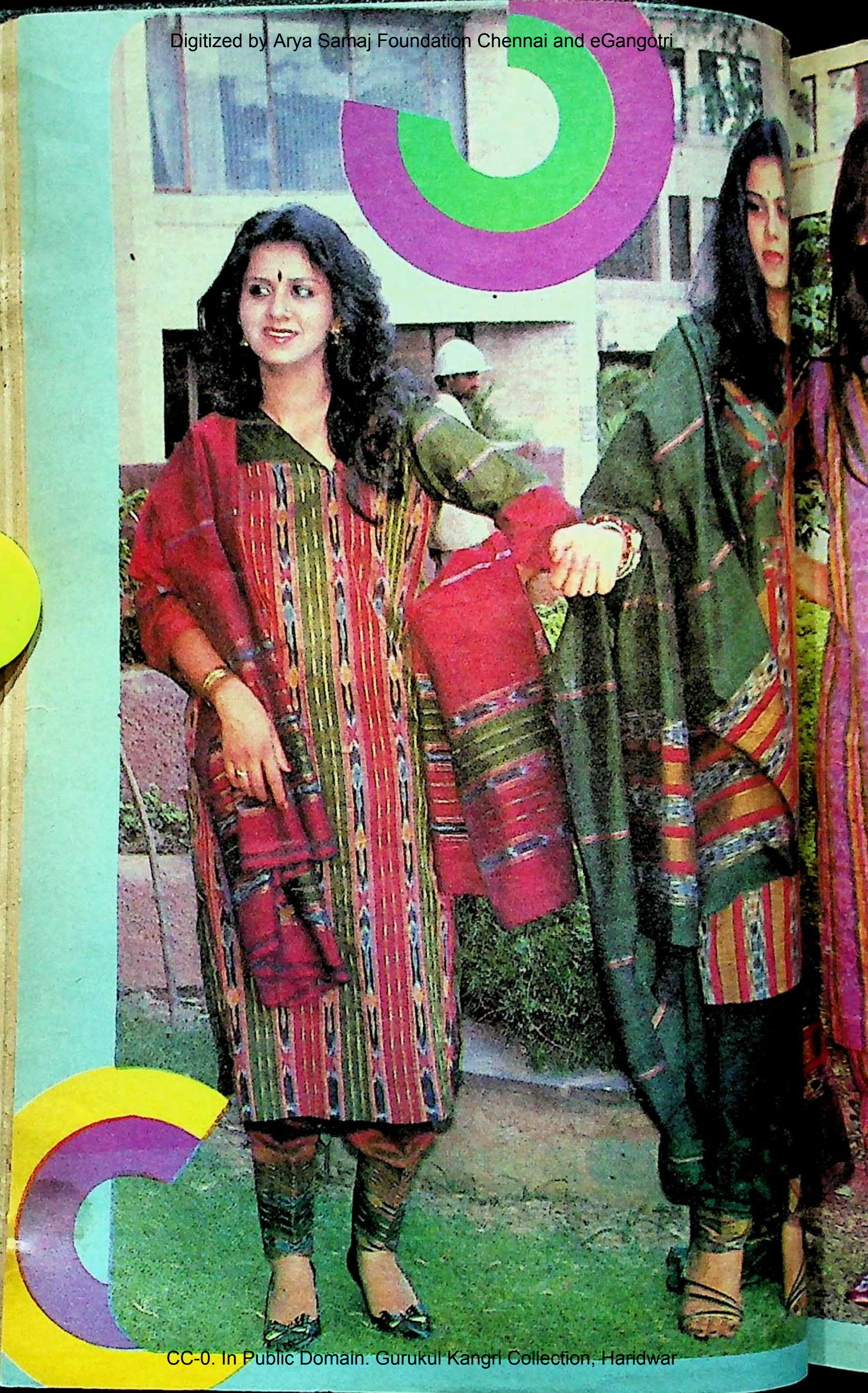

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

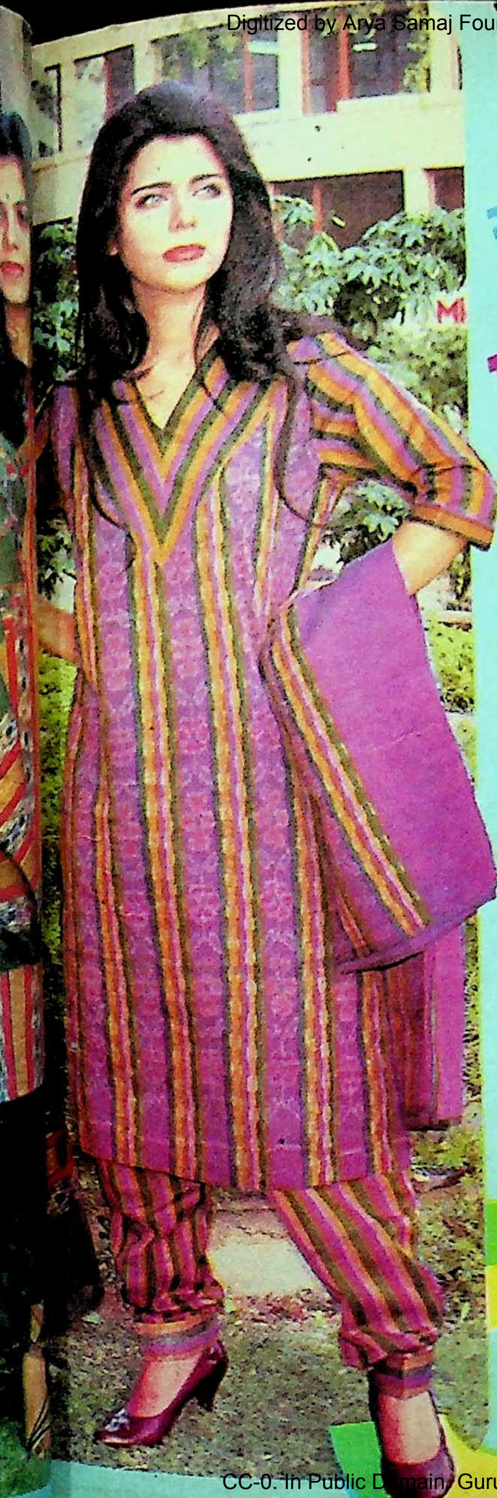

सूट हों या दुपट्टे

पटोला के अंदाज निराले

सूटों के डिजाइन भले ही नित बदलते रहें पटोला प्रिंट के सूटों ने इन सुंदरियों में ही नहीं, फैशन में भी अपनी विशिष्ट जगह बनाई हुई है. ये सूट चटकीले रंग के हों या हलके रंग के, इन्हें पहन कर आप सब से अलग लगेंगी. इस पर सलीके से ओढ़ा गया चौड़ा धारीदार बार्डर वाला दुपट्टा आप को अधिक हसीन जो बना देता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी सी सूझबूझ से डिजाइन और रंगों के सुंदर तालमेल से बनाए गए पटोला प्रिंट के सूटदुपट्टे हर मौसम, हर अवसर पर ऐसी छाप छोड़ते हैं कि हर उठती निगाह अपलक पहनने वाली को निहारती रह जाए. तो इस बार पटोला प्रिंट के ये मनभावन सूट आप पहन कर तो देखें अपनी निखरीनिखरी छवि का एहसास हर पल आप को गुदगुदाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारीदार प्रिंट फैशन में सदाबहार सा रहा है. तभी तो पटोला प्रिंट के आकर्षण को दोगुना करते पतलीचौड़ी धारियों वाले सूटदुपट्टे आज भी तरुणियों की पसंद बने हुए हैं. इन के निराले रंगों का अंदाज हरेक को भा जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

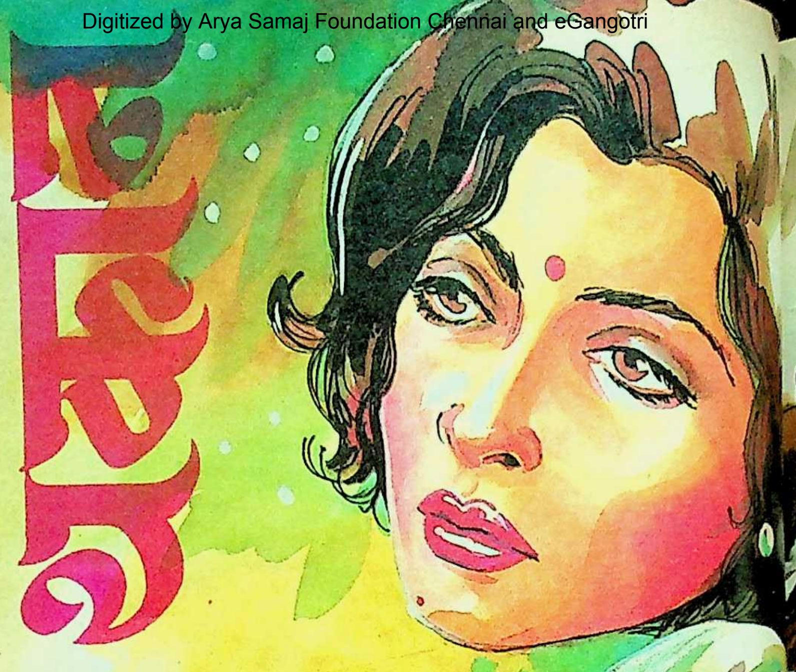

कहानी • रीता अवस्थी

"तुम काफी देर तक अंधेरे बरामदे की सीढ़ियों पर बैठी रही थीं," नीता ने उस के चेहरे की ओर देखा, "लेकिन मैं ने तुम्हें टोकना उचित नहीं समझा. शायद तुम कहीं उलझी हुई थीं."

काफी देर से चुप बैठी सुवीरा को लगा, अब उसे कुछ न कुछ बोलना ही चाहिए. "शाम को काफी गरमी थी," उस ने कहा तो सूई में धागा डालते हुए नीता के हाथ क्षण भर रुके.

कमरा काफी गरम था. नीता ने हलका सा कार्डिगन पहन रखा था. सुवीरा के कंधों पर पतली सी शाल यों ही अस्तव्यस्त सी पड़ी थी. लिहाफ के अंदर सिमटे सुवीरा के पैर पसीज से गए थे.

बाहर तेज हवाओं से उत्पन्न 'हूहू' का भयावह स्वर थोड़ेथोड़े अंतराल पर धीमा होता, लेकिन शीघ्र ही फिर तेज हो जाता. पिछवाड़े, दूर तक फैले जंगल में पेड़ों की शाखाओं के परस्पर टकराने से अजीबअजीब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी डरावनी आवाजें उभर रही थीं.

बगल वाले कमरे से सीतेश के खर्राटों की आवाज सुनाई दे रही थी. मोनू सोते में मुसकरा रहा था 'शायद कोई सुंदर सा सपना देख रहा था,' अंगड़ाई लेते हुए सुवीरा ने सोचा.

"काफी रात हो गई है." मुंह पर हथेली रखते हुए सुवीरा ने जम्हाई ली.

"थक गई? अभी तो सिर्फ 10 बजे हैं." नीता ने साड़ी की किनारी पर फाल रखते हुए कहा.

"नहीं, थकी नहीं हूं. तुम्हें भी मेरी वजह से परेशान होना पड़ रहा है." सुवीरा ने उंगलियां चटकाईं.

मोनू सोयासोया फिर हंस रहा था. 'ऐसे ही बचपन में आलोक भी हंसा

"सेवानिवृत्त हो कर यहीं चली आना, जरा सोचो,आशीष, आलोक अपनीअपनी जगह पर व्यवस्थित हो जाएंगे... तुम अकेली वहां क्या करोगी?" नीता के इस प्रश्न पर सुवीरा एक हुंकार भर कर चुप हो गई. ▲

सुवीरा ने जिद में आ कर राज से संबंध तोड़ लिया था, पर बरसों बाद जब अचानक राज उस से मिला तो उस ने फिर से राज को पाना चाहा. लेकिन कैसे? उस ने तो स्वयं राज से नाता तोड़ा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता था. पता नहीं, अब भी सोते में हंसता है या नहीं?' सोचते हुए सुवीरा को हंसी आ गई.

"क्या हुआ?" नीता ने उसे हंसते देख अपने हाथ रोक लिए.

"कुछ नहीं...मोनू को हंसते देख सोचा, क्या आलोक अब भी इसी तरह सोते में हंसता होगा?"

सुवीरा की बात पर नीता हलके से मुसकरा दी.

अचानक हवा के तेज झोंके से खिड़की के दोनों पल्ले भड़ाक से खुल गए.

"ओह...लगता है, खिड़की ठीक से बंद नहीं थी." नीता रजाई परे फेंक कर उठते हुए बोली.

"रहने दो थोड़ी देर." सुवीरा ने कहा तो नीता पलट कर उसे हैरत से देखने लगी, "तुम्हें गरमी लग रही है?"

"नहीं, गरमी नहीं, घुटन सी होती है." सुवीरा ने धीरे से कहा.

नीता थोड़ी देर खुली खिड़की के पास खड़ी उसे देखती रही. फिर एक पल्ला बंद कर वापस लौट आई.

"तुम्हें याद है. हम मौसी के यहां रहते थे तो तुम भरी गरमी में भी सब दरवाजे और खिड़कियां बंद कर के सोती थीं और उस के बाद भी भय के कारण तुम्हें देर तक नींद नहीं आती थी."

नीता अब ठंड में कांपने लगी थी. "आज शाम तुम अंधेरे में अकेली बाहर बैठी थी. तब डर नहीं लगा?" नीता ने कहा.

सुवीरा ने सोचा, 'अब उसे बता ही देना चाहिए, वरना वह शायद सीधेसीधे ही पूछ लेगी और बिना किसी लागलपेट के वह सीधा सा प्रश्न उसे और भी ज्यादा विचलित कर देगा.'

वह थोड़ी देर तक चुप बैठी रही. बाहर सड़क पर एक ट्रक सन्नाटे को भंग करता हुआ तेजी से गुजर गया. खिड़की से आती हवा से दीवार पर लटका कैलेंडर तेजी से फड़फड़ाने लगा था. अचानक सुवीरा की इच्छा हुई कि वह फिर सारे वातावरण से अलंकृत हो कर बाहर अंधेरे में [illegible] की सीढ़ियों पर चुप जा कर बैठ जाए.

मोनू हलके से कुनमुनाया तो नीता थपथपाने लगी.

"सुनो, आज बाजार में राज मुलाकात हुई थी." काफी देर से होंठों ठहरे इस वाक्य को सुवीरा ने आखिर उगल दिया.

सुन कर नीता जरा भी नहीं चौंकी. ने सहजता से कहा, "मैं तुम से पूछने ही थी."

"मैं जानती थी." सुवीरा ने कहा. नीता गंभीर हो गई.

सुवीरा के दिमाग में बीते दिनों की सारी बातें आ रही थीं, जिन में अधिक छोटीछोटी और महत्त्वहीन बातें भी थीं.

राज के साथ उस की मुलाकात भी अप्रत्याशित और नाटकीय ढंग से हुई. दुकानों के चक्कर लगाती सुवीरा गई थी. साड़ियों का बड़ा सा बंडल बगल दबाए वह काफी हाउस में घुसी और कोने जा कर बैठ गई.

चंद क्षणों के उपरांत ही अचानक व्यक्ति उस के सामने आ कर बेतकल्लुफी बोला, "क्षमा कीजिए, अगर मैं भूल करता तो निश्चय ही आप का नाम सुवीरा है न?"

अचानक इस तरह किसी अपरिचित मुख से और वह भी अजनबी शहर में अपना नाम सुन कर सुवीरा ऐसे चौंकी जैसे पांव तले बिच्छू आ गया हो. सुवीरा को राज को पहचानने में थोड़ा वक्त लगा था और जब पहचान पाई तो हतबुद्धि सी थोड़ी देर तक उसे देखती ही रह गई.

"आप नाराज हो गईं क्या?"

"ओह, नहींनहीं...बैठिए...बैठिए न, मैं यों ही कुछ..."

"आश्चर्य हो रहा है न?"

"हां, स्वाभाविक भी तो है." सुवीरा अब संभल गई थी. उसे अनायास ही वर्षों पहले वाला चपल राजशेखर याद आ गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब और अब के राज में कोई विशेष अंतर नहीं आया था. सिर्फ उम्र का गांभीर्य चेहरे पर फैल गया था. वह अपने स्वास्थ्य के प्रति काफी सजग रहता था. इसी कारण वह अपनी उम्र से 10 वर्ष कम लग रहा था.

"तुम अपने आप को दोष क्यों देती हो. अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा. हम अब भी साथ रह सकते हैं." सुवीरा से यह कहते हुए राज ने उसे बांहों में भर लिया.

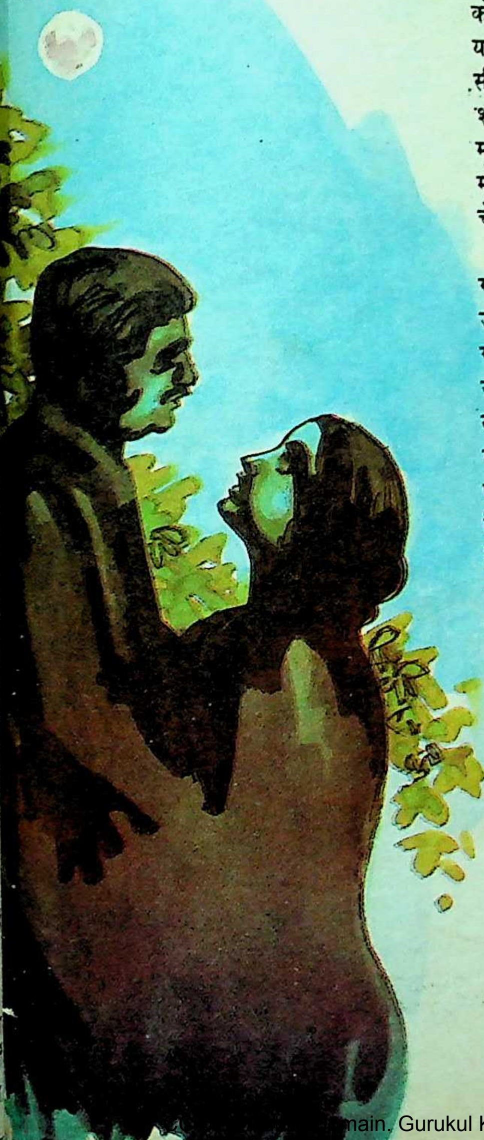

राज के सामने बैठी सुवीरा सोचने लगी, 'कितना अच्छा होता, अगर वह नीता के साथ आई होती.'

बैरा काफी के दो प्याले रख गया था. राज ने एक प्याला सुवीरा की ओर बढ़ा दिया और दूसरा अपने होंठों से लगा कर छोटा सा घूंट भरा.

राज अब काउंटर की ओर देखने लगा था. क्या देख रहा था, सुवीरा ने जानने की कोशिश नहीं की. लेकिन उसे अच्छा लगा. यह सोच कर संतोष सा हुआ कि राज उसे सीधी नजरों से नहीं देख रहा है. वरना तब शायद उस के लिए वहां बैठे रहना काफी मुशकिल होता और इस से भी ज्यादा मुशकिल होता राज की निगाहों को अपने चेहरे पर झेलना.

उस ने राज की ओर देखा. वह एक गंभीर व्यक्तित्व का प्रौढ़ पुरुष लग रहा था. उस ने भूरे रंग का सूट पहन रखा था. 'अगर गहरे हरे रंग का पहनता तो शायद इस से भी ज्यादा जंच सकता था,' सुवीरा अनजाने ही सोच गई. उसे याद आया कि उस के संदूक में राज का पुराना गहरे हरे रंग का सूट अब भी पड़ा होगा, जो उसी की पसंद पर राज ने सिलवाया था. उस की निगाह कोट से फिसलती हुई बालों पर गई. बाल जरूरत से ज्यादा काले और चमकदार थे, जबकि उस के अपने बाल आधे से ज्यादा सफेद हो गए थे और आंखों पर चश्मा भी चढ़ गया था.

प्याला उठा कर सुवीरा ने छोटा सा घूंट भरा और पूछा, "बच्चे कैसे हैं?"

"ठीक हैं. बड़ी लड़की और लड़का मेडिकल में हैं. छोटी वाली बी.एससी. कर रही है."

क्षण भर रुक कर राज ने आगे कहा, "आलोक की चिट्ठी आई थी, इंजीनियर हो गया है?"

"हां, अगले महीने उस की शादी है."

"अच्छा." राज के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई.

प्याला खाली कर सुवीरा ने धीरे से मेज

...main. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर रख दिया. उसे लगा, वे दोनों पतिपत्नी नहीं, बल्कि परिचितों की भीड़ में नामालूम से परिचित हैं. इस के अलावा और कुछ नहीं और वास्तव में यह सच ही तो था.

कैलेंडर तेजी से फड़फड़ाया.

"तुम्हें ठंड नहीं लग रही? कहो तो खिड़की बंद कर दूं?" मोनू को रजाई से ढंकते हुए नीता ने कहा.

सुवीरा को लगा, सचमुच वह ठंड से कांप रही है और इतनी ज्यादा ठंड उसे आज से पहले कभी नहीं लगी. उस ने जम्हाई ली, "सर्दी बढ़ गई है."

काफी देर से टांगें फैलाए रहने के कारण उस का दाहिना पैर सो गया था. रजाई हटा कर उस ने पैर सिकोड़ा और धीरे से उठ खड़ी हुई.

खिड़की से बाहर अंधेरे में झांका. कहीं कोई नहीं था. इक्कादुक्का जलती रोशनियां भी बुझ चुकी थीं. पेड़ों, मकानों, मैदान और बरामदे की सीढ़ियों पर चांदनी छिटक गई थी.

खिड़की बंद कर वह लौटी, "काफी ठंड है? चाय पिओगी?"

"हांहां, क्यों नहीं." नीता हंस दी.

चाय बना कर सुवीरा लौटी तो प्याला थामते हुए नीता ने कहा, "तुम यहीं क्यों नहीं आ जाती? आखिर उस सड़े से शहर में क्या रखा है?"

"नौकरी है."

"सेवानिवृत्त हो कर यहीं चली आना. जरा सोचो, आशीष, आलोक अपनीअपनी जगह पर व्यवस्थित हो जाएंगे...तुम अकेली वहां क्या करोगी?"

"हूं." सुवीरा ने एक हुंकार भरी.

"एक बात कहूं?" नीता उस की ओर झुक आई.

"क्या?"

"तुम ने राज को छोड़ कर अच्छा नहीं किया."

"यह बात तुम कितनी बार कहोगी." सुवीरा ने मुसकराने का असफल प्रयास किया.

"मुझे राज के सुखी परिवार से ईर्ष्या होती है. तुम्हें कैसा लगता है?" नीता ने घूरते हुए कहा.

"मैं ने कभी सोचा ही नहीं."

"सच."

"बिलकुल सच."

"तुम बेवकूफ हो." नीता चिढ़ गई.

"तुम्हें आज पता चला." सुवीरा हंसने लगी.

सचमुच, सुवीरा बेवकूफ ही तो थी. तभी तो उस ने राज को छोड़ दिया था. वह जानती नहीं थी कि अवैध रिश्ते पानी के बुलबुलों के समान होते हैं. कुछ ही दिनों में उन का अस्तित्व स्वतः समाप्त हो जाता है. राज भी अगर किसी के आकर्षण में बंध गए थे तो उसे थोड़ा धैर्य रखना चाहिए था. समस्या को समझने और उसे सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए थी, न कि तुरंत पल्ला झटक कर अलग खड़े हो जाना चाहिए था.

सुवीरा अकसर इस बात को मन ही मन स्वीकार करती कि राज का ज्यादा दोष नहीं था. उस ने सुवीरा से क्षमा भी मांगी थी और बारबार उस से वापस चलने का आग्रह भी किया था.

राज ने आठ वर्षों तक उस का इंतजार किया था. पर अपनी शिक्षा के घमंड में चूर सुवीरा को यह गवारा न था. उस ने उसे साफसाफ कह दिया था कि वह तलाक चाहती है. वह कभी भी उस के पास नहीं लौटेगी.

तब हार कर राज ने दूसरा ब्याह कर लिया. बच्चों को सुवीरा ने अकेले ही पालापोसा, बड़ा किया और पढ़ायालिखाया. वह राज के साथ मुशकिल से चार वर्ष रही थी. तब उसे अपने निर्णय पर गर्व हुआ था. सब ने उसे साहसी कहा था.

पर आज उसे लग रहा था कि उस ने जो कुछ भी किया, अच्छा नहीं किया. तब उसे किसी ने उचित सलाह नहीं दी थी. जवानी के जोश में उस ने जो भी कदम उठा लिया, उसे किसी ने रोका नहीं.

काश, उसे किसी ने रोका होता. किसी ने समझाया होता. लेकिन समझाता भी कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां तो थी नहीं. पिता [illegible] थी. उस का कहा वह अक्षरशः मानते थे. तब उस के पास नीता जैसी सहेली भी नहीं थी, जो उसे ऊंचनीच समझाती. पर अब तो कुछ भी नहीं हो सकता था.

"क्या सोच रही हो, सुवीरा?" नीता ने टोका.

"अं...कुछ नहीं...कुछ भी तो नहीं."

"तुम्हारी चाय एकदम पानी हो गई है." नीता ने कहा.

"ओह." उस ने प्याला उठाया और एक घूंट में पी गई.

"तुम कुछ परेशान सी लग रही हो." नीता ने कुरेदा.

"नहीं, परेशानी क्या...बस. यों ही पिछली बातें याद आ गईं."

"तुम कहो तो राज को खाने पर बुलाऊं?" नीता ने पूछा.

सुवीरा वैसे ही चुप बैठी रही.

नीता ने आगे कहा, "राज पिछलें शुक्रवार को मुझे लाइब्रेरी में मिले थे और मैं ने उन्हें बतलाया था कि तुम आने वाली हो. मैं ने उन्हें घर बुलाना चाहा था, पर सोचा, पता नहीं, तुम्हें अच्छा लगेगा या नहीं. मैं ने उन का पता भी ले लिया था."

सुवीरा फिर भी कुछ न बोली. वह हाथ पर हाथ रखे दीवार को शून्य निगाहों से ताकती रही.

"सुवीरा." नीता ने उस के कंधे पर हाथ रखा.

"हूं."

"तुम चाहो तो अब भी राज के पास लौट सकती हो."

"कैसी बातें करती हो. अब इस उम्र में क्या लौटना अच्छा लगेगा?"

"राज भी अब अकेले रह गए हैं. उन की पत्नी की मृत्यु हो चुकी है. तुम चाहो तो..."

"नहीं नीता, मैं किस मुंह से उन के पास लौटूं. राज को तो मैं ने खुद छोड़ा था."

हालांकि राज की चिट्ठियों में हमेशा यही लिखा रहता था कि तुम जब चाहो,

वापस आ सकती हो. तुम्हारे लिए मेरे घर के दरवाजे हमेशा खुले रहेंगे.

पर सुवीरा किस मुंह से वहां जाती.

आशीष और आलोक के बीच चिट्ठियों का आदानप्रदान हमेशा होता रहता. पर उस ने कभी राज की चिट्ठियों का जवाब नहीं दिया.

"तुम ने जवाब नहीं दिया?" नीता धीरे से बोली.

"किस बात का?"

"राज को खाने पर बुलाऊं?"

"राज को खाने पर न बुलाओ, यह तो मैं नहीं कहती, पर कोई औचित्य भी तो होना चाहिए."

"किसी को घर बुलाने के लिए औचित्य की जरूरत नहीं होती." नीता बोली. "और सुनो, खाने के दौरान अगर मजाक में भी राज लौटने की बात कहे तो पत्थर बन कर न बैठी रहना."

"मैं तो कल वापस जा रही हूं. मुझे इन सब बातों से क्या." सुवीरा ने नाखूनों को दांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असावधानी

कार्यसिद्धि के उपायों में लगे रहने वाले भी असावधानी से अपने कार्यों को नष्ट कर देते हैं. —माघ

से कुतरते हुए कहा.

"बस, तेरी यही आदत तो मुझे अच्छी नहीं लगती." नीता ने गुस्से से कहा.

"तू भी तो बच्चों वाली बातें करती है."

"इस में बच्चों जैसी क्या बात है?"

"और क्या...जरा सोचो तो सही, कितने बड़ेबड़े राज के बच्चे हैं और कितने बड़े मेरे बच्चे. कल को मेरी बहू आने वाली है. क्या कहेंगे लोग?" सुवीरा ने कुछ सोचते हुए कहा.

"कहेंगे क्या...जब तू ने राज को तलाक दिया था, तब नहीं सोचा था कि लोग क्या कहेंगे?"

"तब की बात और थी." सुवीरा ने कहा.

"तो अब क्या हो गया है?"

"तेरा तो दिमाग फिर गया है."

"हां फिर गया है. बस कल तू नहीं जाएगी और कल राज खाने पर जरूर आएंगे." नीता ने अपना फैसला सुना दिया.

दूसरे दिन नीता काफी व्यस्त रही. उस ने राज को फोन कर के मिलने का समय तय कर लिया था और फिर खुद ही जा कर राज़ को रात के खाने का निमंत्रण दे आई थी.

सुवीरा निरपेक्ष भाव से नीता की व्यस्तता देख रही थी. रसोई में नीता उसे जबरदस्ती घसीट ले गई. नीता के साथ हाथ बंटाते हुए सुवीरा मन ही मन ऐसे घबरा रही थी, जैसे उसे कोई पहली बार देखने आ रहा हो. उसे कुछकुछ अच्छा भी लग रहा था और अजीब सा भी लग रहा था.

राज की कार आ कर रुकी तो सुवीरा को लगा, जैसे उस का दिल उछल कर गले में अटक गया हो.

राज़ का व्यक्तित्व बेहद दिलकश लग रहा था. सुवीरा ने देखा तो देखती ही रह गई. सोचने लगी, 'कभी यह व्यक्ति उस का अपना था, नितांत अपना, जिसे उस ने खो दिया.'

खाना खाते वक्त सुवीरा खामोश थी, जबकि नीता बराबर राज से बातें किए जा रही थी. सीतेश भी भरपूर हंसीमजाक में हिस्सा ले रहे थे. राज बीचबीच में सुवीरा की ओर नजर उठा कर देख लेते.

"सुवीराजी, इतना चुपचुप कब से रहने लगीं." आखिर राज से नहीं रहा गया तो उन्होंने कह ही दिया.

"नहीं, ऐसी बात नहीं है. सब लोग बोलेंगे तो फिर सुनेगा कौन." सुवीरा ने मुसकराते हुए कहा. लेकिन वह भीतर ही भीतर असहज हो उठी थी.

खाना समाप्त कर सब लोग लान में आ गए. बाहर चांदनी फैली हुई थी. हवा बेहद ठंडी थी.

"अंदर आ जाइए, बाहर बहुत ठंड है." थोड़ी देर बाद नीता ने कहा. सीतेश पहले ही दफ्तर के काम का बहाना कर अंदर चले आए थे.

"खाने के बाद मुझे टहलने की आदत है." राज ने नीता से कहा.

"अच्छा, मैं काफी बनाती हूं, तब तक अंदर आ जाइएगा." नीता ने अंदर जाते हुए कहा.

"रहने दे, अभी तो खाना खाया है." सुवीरा ने उसे रोकना चाहा, पर तब तक नीता अंदर जा चुकी थी.

सफेद झरती सी चांदनी में अब वे दोनों अकेले थे.

छोटेछोटे कदम रखते हुए राज अचानक रुक गए. पीछे मुड़ कर देखा, अंधेरे में कुछ सोचती सी सुवीरा पेड़ों के पास खड़ी थी. शाल उस ने अच्छी तरह लपेट रखी थी, फिर भी उसे ठंड लग रही थी.

राज उस के एकदम करीब आ कर खड़े हो गए थे, "आइए न, रुक क्यों गईं?"

"जी...बस...यों ही...दरअसल टहलने की मेरी आदत नहीं है." सुवीरा ने कहा.

"पहले तो थी." राज ने कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टचवुड आपके लकड़ी के सुन्दर फ़र्नीचर का इस ख़ूबी से बचाव करे जो पालिश के बस में नहीं.

पेश है टचवुड पॉलीयूरेथेन क्लियर वुड फ़िनिश. इससे लकड़ी के फ़र्नीचर पर एक मज़बूत परत सी जम जाती है–एक ऐसी परत जो पॉलिश के मुक़ाबले कई गुना बेहतर भी है और जिस पर न खरोंचें लगें, न दाग़–धब्बे पड़ें

पॉलिश में ये मज़बूती नहीं

माना, पॉलिश लगाते ही लकड़ी का फ़र्नीचर सुन्दर दिखने लगता है. लेकिन चाय, सब्ज़ी का शोरबा जैसा कुछ गिरते ही उस पर धब्बा सा पड जाता है. जो दुबारा पॉलिश लगाने तक बना रहता है.

क्योंकि पॉलिश सिर्फ़ एक पतली कमज़ोर-सी तह ही जमा सकती है: ऐसी तह जो दाग़-धब्बों और खरोंचों से बचाव नहीं कर पाती.

इसलिए आपका फ़र्नीचर कुछ ही महीनों में धब्बों और खरोंचों की नुमाइश बन जाता है.

और फिर वो भद्दा सा दिखने लगता है.

टचवुड–पॉलीयूरेथेन की मज़बूती

टचवुड में है पॉलीयूरेथेन–बहुत ही मज़बूत प्लास्टिक इसकी एक गाढ़ी पारदर्शी परत बन जाती है. जो लकड़ी पर मज़बूती से जमी रहती है.

ये परत गर्म और ठंडी चीज़ों और खरोंचों का एक लम्बे अर्से तक मुक़ाबला कर सकती है. इतना ही नहीं, इस परत के ज़रिये लकड़ी की स्वाभाविक चमक बरसों एक सी बनी रहती है, जबकि इतने वक़्त में मामूली पॉलिश का नामोनिशान तक नहीं रह पाता.

ब्रश से लगाइए–ये सूखकर एक मज़बूत परत बन जाता है.

टचवुड लिक्विड है, इसलिए ब्रश से इसे लगाया जा सकता है. और ये काम कोई भी पेन्टर आसानी से कर सकता है. याद रखिए, दुबारा जब भी आप अपने घर में रंग कराएँ, फ़र्नीचर पर टचवुड ज़रूर आज़माएँ.

चूँकि ये मज़बूत गाढ़ी परत में बदल जाता है, इसलिए मामूली पॉलिश के मुक़ाबले कुछ देरी से सूखता है. फिर भी इसके सूखने में, खिड़की और दरवाज़ों पर किए पेन्ट से ज़्यादा वक़्त नहीं लगता.

और फिर टचवुड की सुरक्षा बारीक से बारीक नक्काशी में फैल जाती है–हर छुपे कोने तक पहुँच जाती है.

वैसे टचवुड की क़ीमत मामूली पॉलिश से कुछ ज़्यादा जरूर है. लेकिन आपके लकड़ी के सुन्दर फ़र्नीचर को ये जितना सुरक्षित रखता है उससे क़ीमत वसूल हो जाती है. पॉलिश इतने लम्बे अर्से तक बचाव नहीं कर सकती.

ग्लॉसी (चमकीली) या मैट (बिना चमकवाली) फ़िनिश

टचवुड दो तरह के फ़िनिश में मिलता है. ग्लॉसी और मैट. जो मामूली पॉलिश में नहीं मिलता और फिर आप उसमें अपनी पसंद के रंग मिलाकर लकड़ी को तीन तरह के विशेष रूप दे सकते हैं.

जितना चाहें–आसानी से ले आइए

एशियन पेन्ट्स–विक्रेता की किसी भी दूकान से आप टचवुड ले सकते हैं: बस दूकान में आइए और ले जाइए.

टचवुड–बस एक बार के इस्तेमाल से ही आप जान जाएंगे कि ये आपके फ़र्नीचर की सुन्दरता किस ख़ूबी से बचाए रखता है.

TOUCH WOOD

एक बार लगे–फ़र्नीचर बरसों नया रहे.

एशियन पेन्ट्स

OBM 9330 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवीरा ने चौंक कर नजरें उठाईं और राज की ओर ऐसे देखा, जैसे पूछ रही हो कि क्या बीता हुआ सब कुछ तुम्हें याद है. शायद उस अंधेरे में भी राज ने उस की आंखों में उभर आया वह सवाल पढ़ लिया था.

"तुम्हारी छोटी से छोटी आदत भी मुझे अभी तक याद है, सुवीरा. पर लगता है तुम ने सब कुछ भुला दिया है." राज ने मुट्ठियां बगलों में कसते हुए कहा.

"नहीं ऐसा नहीं है...पर बीती बातें याद आने पर दुख ही तो देती हैं." सुवीरा धीरे से बोली.

"कभीकभी सुख भी देती हैं." राज ने चलते हुए कहा.

"हां, देती हैं, जब उन्हें दोबारा पाने की आशा हो." सुवीरा ने धड़कते दिल से कह डाला.

राज ने सुना और पलट कर खड़े हो गए, "सुवीरा."

राज ने कुछ इस अंदाज से उस का नाम लिया कि सुवीरा अंदर तक थरथरा गई. वह सिर्फ इतना ही कह पाई, "हूं."

"कभी लौटने की बात सोचती हो?"

सुवीरा के मन से आवाज उठी, 'हां, सोचती हूं राज, बहुत सोचती हूं. चाहती हूं, दौड़ कर तुम्हारे दरवाजे तक चली आऊं और तुम्हारे सीने से लग कर खूब रोऊं. तुम अपनी मजबूत बांहों का एक बार फिर मुझे सहारा दे दो. मैं अकेले चलतेचलते थक गई हूं, राज मैं थक गई हूं...'

"तुम ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया?" राज ने दोबारा पूछा तो वह चौंक सी गई.

"क्या जवाब दूं?"

"वही, जो तुम्हारे दिल में आया हो." राज ने उस के माथे पर झूल आई लट को हौले से संवारते हुए कहा.

राज के इस क्षणिक स्पर्श ने उसे अंदर तक जैसे पिघला दिया. "मेरे सोचने से क्या होता है? अगर मैं चाहूं भी तो क्या यह संभव है?"

"क्यों संभव नहीं है?" राज ने पूछा.

"वह हक मैं ने खो दिया है, रा..." सुवीरा का गला भर आया.

"नहीं सुवीरा, तुम गलत सोचती... मेरे दिल में तुम्हारा जो स्थान पहले था, ... अब भी है. हां, यह अलग बात है कि तु... मुझे अपने काबिल नहीं समझा."

ऊपर आसमान में पूरी उज्ज्वलता... साथ चांद हंस रहा था. उन दोनों... परछाइयां अपने ही आकारों में समाहित... गई थीं.

"मुझे माफ कर दो राज. मैं अ... गलती पर बहुत शर्मिंदा हूं."

राज ने उसे बांहों में घेर लिया, "... अपनेआप को दोष क्यों देती हो. पर अब... कुछ नहीं बिगड़ा, सुवीरा. हम अब भी... रह सकते हैं."

"अब इस उम्र में लौटना, कैसा लगे... हमारे बच्चे..."

"मैं तुम्हें खुद आ कर ले जाऊंगा. तु... अगर संकोच हो रहा हो तो मैं कल ही..."

"नहीं, अभी हमारी जिम्मेदारियां ख... नहीं हुई हैं." सुवीरा बोली.

"जिम्मेदारियां खत्म करतेकरते क... हमारी उम्र न खत्म हो जाए."

"नहींनहीं, ऐसा मत कहो." सुवीरा... राज के होंठों पर अपना हाथ रख दिया. "... थक गई हूं, राज. मैं थक गई हूं." सुवी... एकाएक फफक उठी.

राज ने अपनी भुजाओं से उसे घेर लि...

तभी नीता ने अंदर से आवाज लगा... "सुवीरा, बाहर काफी ठंड है."

"आओ चलें." राज ने उस के कंधे प... हाथ रखते हुए कहा.

काफी पी कर राज चला गया. ... सुवीरा उस के बाद भी काफी देर तक खिड़... पर खड़ी उस रास्ते को देखती रही, जिधर... वह गया था. वह देखती रही और सोचती रही. फिर सोचसोच कर मुसकराती रही... उस की आंखें छलकती रहीं और फिर व... बिस्तर पर आ कर लेट गई. उस का मन अ... बहुत शांत था. नींद में भी वह राज की बांहों को अपने इर्दगिर्द महसूस कर रही थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत दिनों बाद सुगंधा को अचानक अपने घर आया देख मुझे बहुत खुशी हुई. लेकिन हर समय चहकने वाली मेरी बचपन की सहेली उस दिन काफी उदास दिख रही थी. हम में किसी तरह का दुरावछिपाव नहीं था. पूछने पर बोली, "आजकल मैं बहुत मानसिक तनाव से गुजर रही हूं. बात तो कुछ खास नहीं, पर फिर भी इतनी गंभीर हो गई है कि इस समस्या को सुलझाना ही पड़ेगा. इसी बारे में तुम से कुछ सलाह लेना चाहती हूं."

सुगंधा एक होशियार गृहिणी, समझदार पत्नी और मां है. उसे मैं ने हमेशा घर, पति व बच्चे की चिंता और सुख का ध्यान रखते देखा है.

उस से पता चला कि पिछले दिनों उस के पति के चाचाचाची उन के घर आए हुए थे. शुरू में कुछ दिनों तो ठीक चला. उस ने भी उन की पूरी खातिरदारी की. सब काम

लेख ● डा. सुमन कौल

बड़े होने का गलत फायदा मत उठाइए

बड़े होने के गौरव को अभिमान में नहीं बदलने देना चाहिए. बड़े यदि इस बात को ध्यान में रखें तो वे छोटों से एक आदर्श सामंजस्य स्थापित कर उन का प्यार एवं सम्मान दोनों पा सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्दीजल्दी निबटा कर साथ घूमने भी जाती रही. बच्चा और घरबाहर सब संभालती रही, पर ऐसा ज्यादा दिन न चल सका. मेहमानों के आने से काम ज्यादा बढ़ गया था और बेटा नए लोगों से घुलमिल न पाने के कारण उसे ज्यादा तंग करने लगा था. उन दिनों कोई नौकर भी न मिला.

सारे दिन भागतेदौड़ते काम करते हुए भी कभी खाना बनाने में देर हो जाती तो कभी कपड़े धोने को देर होने पर पति नाराज हो जाते. उधर बच्चा चीखनेचिल्लाने लगता और गुस्से में चीजें तोड़ने लगता. एक समय का खाना खिला कर सब काम संभालती तो नाश्ते का समय हो जाता. नाश्ते का काम खत्म कर के आती तो बच्चा बिना खाना खाए सोने लगता. फिर दौड़ कर जल्दीजल्दी खाना बनाती. चाची तो किसी भी काम में उस की मदद करना अपनी तौहीन समझती थीं.

मेहमानों के साथ जब सुगंधा घूमने जाती तब तो वह सब खर्चा स्वयं करती ही थी, लेकिन अकेले जाने पर भी उन्हें छोड़ने के लिए भेजे गए आदमी को पैसे देने पड़ते. चाची बीमार हो गईं तो उस पर दवाइयों का खर्चा भी हुआ और काम भी बढ़ गया. चाचाचाची को यह शिकायत थी कि वे लोग उन का इलाज अच्छे चिकित्सक से नहीं करा रहे. आखिर ठीक होने में कुछ समय तो लगता ही है.

ऐसा कितने दिन चल सकता था. आखिर सुगंधा ने भी काम से हाथ खींचना शुरू कर दिया. जितना हो पाता, उतना कर लेती, बाकी पड़ा रहता. इस पर मेहमानों ने वापस जा कर बहुत बुराभला कहा. पति भी नाराज हो गए. बात यहां तक बढ़ गई कि पति ने सुगंधा से बोलचाल तक बंद कर दी. हालांकि वह मानते हैं कि अपने रिश्ते और उम्र को बड़ा मान कर रिश्तेदारों को दूसरों के घर में पांच सितारा होटल की सुविधाएं पाने की उम्मीद कर के नहीं जाना चाहिए, लेकिन मेहमानों की नाराजगी से उन्हें अपनी व घर की बेइज्जती महसूस हुई.

सुगंधा बहुत परेशान थी कि
समझाए पति को यह सब? यह ठीक है
बातों में उस ने जानबूझ कर उ
दिखाई. लेकिन वह भी क्या करे? मेहमा
चारछः दिनों की होती है, महीने भर
चल सकती. बड़े होने का अर्थ यह तो न
छोटों को कोल्हू के बैल की तरह जोत

मेरी पड़ोसिन राधा की कुछ अल
की शिकायत है. उस की जेठानी कोई
व घटिया बात उस के नाम से जोड़ कर
कह देती है. राधा किसी से उस झूठ के
शिकायत भी नहीं कर सकती.

सुधा की मां ने सुधा की शादी
इकट्ठा किया सामान छोटी बहन के लि
दिया क्योंकि सुधा की सुंदरता को दे
लड़के वालों ने स्वयं उसे मांगा था.
दिमाग में यह बात गहरे बैठ गई कि
मां छोटी बहन को अधिक प्यार करती
से उस की कोमल भावनाओं को गहरा
लगी.

सास के प्रति कड़वाहट

शोभा के मन में अपनी सास को
बहुत कड़वाहट भरी है. कारण यह
सगाई के बाद उस के पति उस के लि
साड़ियां ला कर मां के पास रखते रहे.
मां ने उन में से एक भी बहू को न दे कर
छोटी बहन को पकड़ा दीं. साथ ही बहू
मायके से लाई गई कुछ साड़ियां भी दे

वंदना के बड़े बेटे को अपना छोटा
फूटी आंख नहीं सुहाता. 15 वर्षीय बड़
मुकुल घर की सभी चीजों पर
एकाधिकार मानता है. छोटे भाई को कु
देना उसे गवारा नहीं. यहां तककि घ
उपस्थिति भी उसे अखरती है. उस दि
मुझे बहुत बुरा लगा, जब छोटे के लिए
बच्चों की पत्रिका मुकुल ने छीन ली और
के रोने पर फाड़ कर उसी के ऊपर फेंक

ऐसे बहुत से कड़वे अनुभव सु
बारबार मन में विचार आता है कि वे कौ
कारण हैं जो बड़ों को अपने बड़प्पन से
देते हैं और रिश्तों में कड़वाहट भर दे

क्या इस
समाप्त
म
काफी
बदले
लेकिन
परंपरा
बड़े हो
है, कि
और स
अवहेल
होता
उन की
परिवा
बात
के अह
परिवा
बुजुर्ग
वह ब
परिव
कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ों को चाहिए कि यथासंभव किसी पर बोझ न बनें तथा बड़े होने की गरिमा बनाए रखें.

क्या इस पारस्परिक तनाव या मूक संघर्ष को समाप्त कर पाना संभव है?

मनोवैज्ञानिक नजरिए से देखें तो स्थिति काफी स्पष्ट हो जाती है. मानव स्वभाव में बदले की भावना बड़ी बलवती होती है. लेकिन समाज की मर्यादा, रिवाज और परंपरा उसे उसी व्यक्ति से (उम्र या रिश्ते में बड़े होने के कारण) बदला लेने में रोक लगाती है, किंतु अवचेतन में वह विद्रोह दबा रहता है और समय पाते ही उभर आता है.

कुछ लोगों को छोटों की प्रताड़ना, अवहेलना करने में ही अपना बड़प्पन सार्थक होता प्रतीत होता है. वे चाहते हैं कि सब कुछ उन की इच्छानुसार ही होना चाहिए क्योंकि वे परिवार के 'बड़े' हैं. बड़े होने के नाते उन्हीं की बात को सही माना जाना चाहिए, इसी में उन के अहं की संतुष्टि होती है.

अब कुछ अरसा पहले तक संयुक्त परिवार का ही प्रचलन था, जहां घर के बुजुर्गों का निर्णय ही सर्वोपरि होता था, चाहे वह बदलते समय के अनुकूल हो या न हो. परिवार के सदस्यों की भिन्नभिन्न रुचि के कारण उन में तनाव की स्थिति बनी रहती थी.

उस मानसिक पीड़ा से क्षुब्ध व्यक्ति दिल की भड़ास अकसर छोटों को डांट कर या मारपीट कर निकालता था.

कभीकभी हम परेशानियों का मुकाबला करने में स्वयं को असमर्थ पा कर निराशा में अपनी मनमानी कर के स्वयं को संतुष्ट करते हैं, यह जाने बिना कि हमारी ऊलजुलूल हरकतों और मनमानी का छोटों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है.

गांव में रह रहे कुमुद के सासससुर गांव भर पर अपना रोब और दबदबा जमाने के लिए और घर को आधुनिक सुविधाओं से संपन्न करने के लिए हर दोतीन महीने बाद बेटेबहू से कई हजार रुपयों की मांग करते रहते हैं.

अकसर इन तनावों और झगड़ों की जड़ में विशेष कारण होता है, संबंधित व्यक्ति से प्यार का अभाव. सुगंधा की चाची को यदि उस से प्यार होता तो वह स्वयं ही उस की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्वपूर्ण रिप्रिंट

सैट नं.—4

- तुलसी के भगवान
- तुलसी के भगवान : आलोचनाओं के उत्तर
- दशरथ पुत्रों का जन्मकाल
- क्या वेदों में इतिहास है
- सतयुग आंदोलन और कल्कि अवतार
- भगवान रजनीचर
- यदायदा ही धर्मस्य
- धर्म
- नास्तिक कौन
- धर्म के नाम पर
- वैष्णों देवी
- कैकेयी
- वेद
- भगवान कहां गए
- क्या हम भगवान हैं?
- करूवंश
- गीता और धर्म
- भागवत के अविश्वसनीय प्रसंग
- मुसलिम नारी
- संभवामि युगेयुगे
- अंतिम संस्कार
- मोक्ष
- स्वर्ग और नरक
- धर्म प्राचीन काल की चीज नहीं
- सिखों में मृत्यु की रस्में
- वेदों में जादू टोना
- कौन ठगा जा रहा है— भगवान या भक्त
- ईश्वर कब, कैसे पैदा हुआ
- हिन्दुस्तान के मुसलमान
- आप जानते हैं ईश्वर क्या है

मूल्य—5 रुपए

- साधारण डाक व्यय एक रुपए.
- वी.पी.पी. द्वारा मंगाने पर डाक व्यय रु. 3 अतिरिक्त
- पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए 50% की विशेष छूट. रुपए अग्रिम भेजें.
- सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

परेशानी समझ कर घर के कामों में हाथ बंटाती. राधा की जेठानी उसे बदनाम न करती. मुकुल को छोटे भाई होता तो क्यों उस की चीजों को तोड़ संतोष अनुभव करता.

पारस्परिक स्पष्ट वार्त्तालाप भी कभीकभी इस तनाव को सहयोगी होती है. हालांकि कुछ इच्छा के विरुद्ध कुछ कहे जाने को अपमान समझते हैं, लेकिन इस मूक यही बेहतर है कि बात कह कर मुक्ति पा ली जाए.

बहुत बार इन्हीं कारणों से संबंध तक टूट जाते हैं. रिश्ते दुश्मनी जाते हैं. संबंधों में कड़वाहट आ जाती है. प्रत्येक व्यक्ति अधिकारों के साथ कर्त भी ध्यान रखे या दूसरे शब्दों में होने के साथसाथ अपने बड़प्पन का भी रखे तो टकराव की स्थिति बहुत जाएगी.

कभीकभी घर में अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए या अस्तित्व को परिवार में नकारा जाता कर, बुजुर्ग किसी बीमारी से पीड़ित प्रदर्शन करने लगते हैं. यह ठीक है कि एक ऐसी जगह है, जहां हर व्यक्ति चा कि अन्य सदस्य उस का महत्त्व समझे, ध्यान रखे. लेकिन जहां छोटों को रखना है कि बुजुर्गों के मानसम्मान लगे, वहां बड़ों को भी छोटों की व्यस्त को समझ कर उन्हें बेवजह परेशान करना चाहिए.

जहां तक संभव हो, स्वयं को कि बोझ न बनने दें. सब से प्रेम और आदर यह सहज ढंग है.

अपनेपराए सब को स्नेह देना और की भावनाओं की कद्र करना बड़प्पन निशानी है.

संबंधों में मधुरता लाना और माधुर्य को बरकरार रखना एक कला है इस कला को सीखने का प्रयत्न हमेशा रखना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

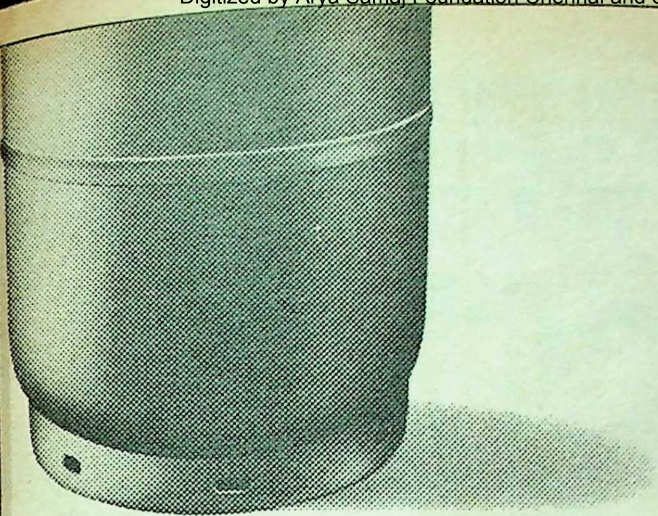

आप इतनी गैस इस्तेमाल करते हैं

खाना पकाने की गैस के लिए आप हर बार जो 60 रुपये खर्च करते हैं उसमें से 15-20 रुपये तो बर्बाद हो जाते हैं। यूं ही। लेकिन जरा सी सावधानी बरतने से आप इस बर्बादी को आसानी से रोक सकते हैं।

जैसे, ईंधन की बचत करने वाले नूतन गैस के चूल्हे के इस्तेमाल से। चूल्हा जलाने से पहले, इस्तेमाल की जाने वाली सभी सामग्री को अपने आस-पास रख लें। जब भी संभव हो प्रेशर कुकर का इस्तेमाल करें। पानी की सही मात्रा का इस्तेमाल करें। ऐसे ही कई अन्य आसान तरीकों से भी गैस की बचत की जा सकती है।

तो इतनी बरबाद भी

माना कि इन तरीकों से हर महीने केवल कुछ ही रुपयों की बचत होगी। लेकिन बचत तो आपके ही धन की होगी न! फिर इसे छोड़ा क्यों जाए। अपने इस धन की बचत शुरू कीजिए। आज से ही!

जी हां! मैं खाना पकाने की गैस की बचत करना चाहती हूं/चाहता हूं।
कृपया मुझे ईंधन बचत करने संबंधी मुफ्त पुस्तिका भेजें

नाम ____________________

पता ____________________

____

नगर/जिला ____________________

LPG M 1 Sa

PCRA

पैट्रोलियम कंजर्वेशन रिसर्च एसोसिएशन
पोस्ट बॉक्स नं. 572
नई दिल्ली-110001,
फोन: 3315868

Mudra:D:PCRA:7432

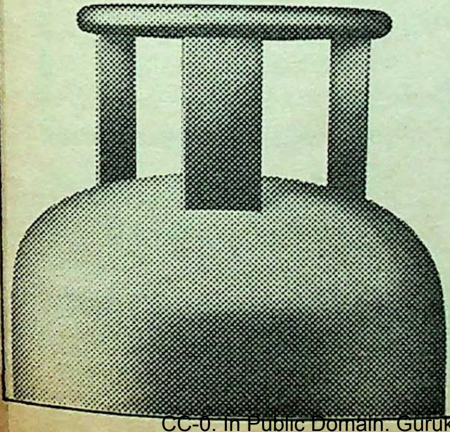

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक दुनिया अग्निकांड, बाढ़, सेंधमारी और दंगों से मुक्त न हो जाए ...

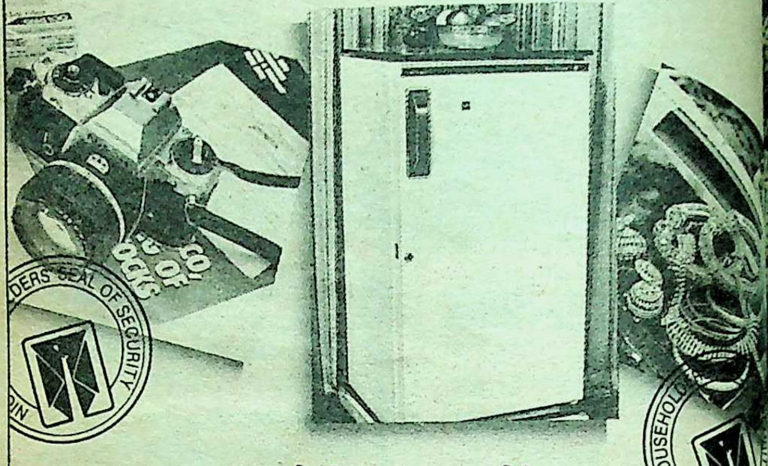

तब तक आपको नेशनल इंश्योरेंस की घरेलू सुरक्षा मुहर की आवश्यकता होगी।

आपका फ्रिज, आपके बहुमूल्य जेवरात और वह कैमरा जो आपकी छुट्टियों का बेहतरीन साथी है......

ये सारी चीजें आपने अपने गाढ़े पसीने की कमाई से खरीदी है। परन्तु क्या आपने इन सामानों तथा अन्य घरेलू सामानों व आपकी बिल्डिंग या परिसर को सेंधमारी, गृहवेधन, चोरी, अग्निकांड, दंगा, हड़ताल, तूफ़ान, बाढ़, दुर्भावनापूर्ण कार्य तथा ऐसे कार्यों से होनेवाली हानि या क्षति से सुरक्षा के लिए बीमा कराने की बात भी सोची है ? क्योंकि ये तो ऐसे खतरे हैं जिन पर आपका कोई नियंत्रण नहीं होता।

नेशनल इन्श्योरेन्स गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी के जरिए आपको प्रत्येक या इन सभी जोखिमों से एक सुनिश्चित वित्तीय सुरक्षा प्राप्त होती है। उपर्युक्त वर्गों के जोखिमों से सुरक्षा के अलावा इस पॉलिसी में आपको अन्य आठ वर्गों के चुनाव की सुविधा मिलती है :

सर्व जोखिम, प्लेट ग्लास, घरेलू सामानों का खराब हो जाना, टी.वी. पेडल साइकिल, सामान, व्यक्तिगत दुर्घटना और जन दायित्व। अपनी व्यक्तिगत जरूरत के अनुसार आप इनमें से कोई एक या इन सभी बीमा सुरक्षाओं का लाभ उठा सकते हैं।

अब भाग्य के भरोसे बैठे मत रहिए। अधिक जानकारी के लिए कूपन भर कर आज ही डाक द्वारा भेजिए।

कृपया मुझे यह जानकारी दीजिए कि मैं आपकी गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी के द्वारा किस प्रकार लाभान्वित हो सकता हूँ।

नाम ____________________

पता ____________________

____

व्यवसाय ____________________

गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी
हर घर के लिए आवश्यक सुरक्षा

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी
(भारतीय साधारण बीमा निगम के अधीन एक कं...)
3, मिडिलटन स्ट्रीट, कलकत्ता-700 071

CLARION C-NIC-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

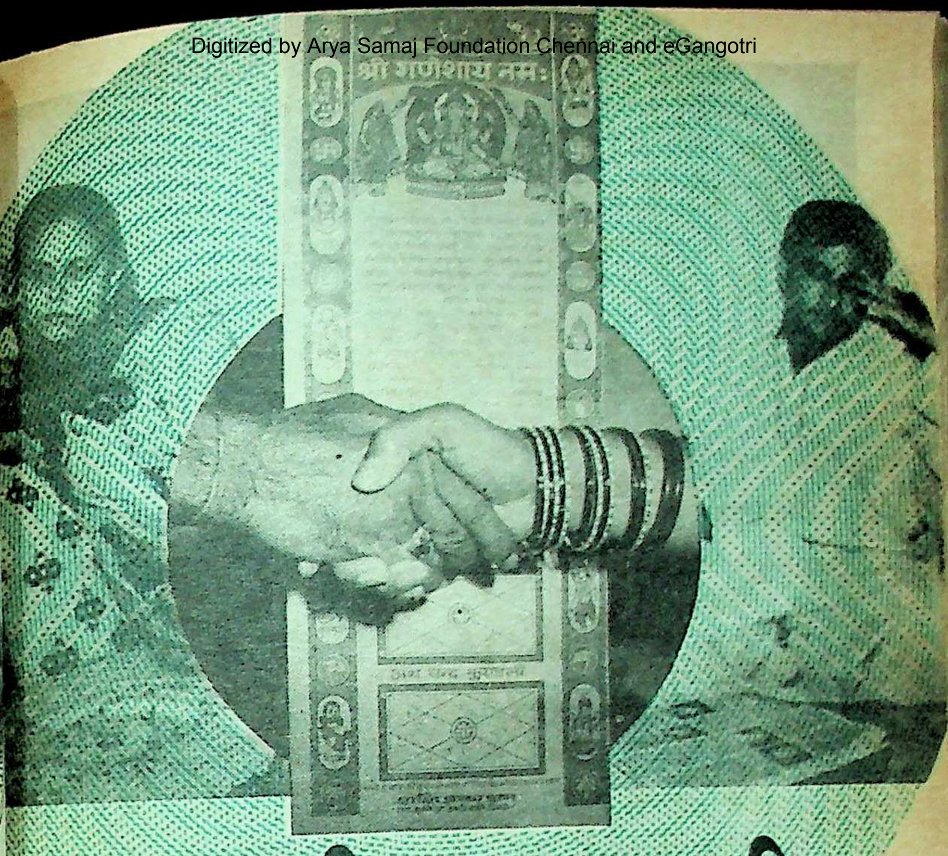

जन्मपत्री या भ्रमपत्री

लेख • डा. अनिलकुमार मिश्र

'अपने घर' में होने वाली 'पराए घर' की बातें सुनने के लिए शांता के कान उधर ही लगे रहते थे. जैसेजैसे बात बढ़ती, मन में फूटने वाले लडडुओं की संख्या भी बढ़ती. पर एक दिन बाहर से लौटे पिता के निराश चेहरे को देख कर सब सपने बिखर गए. निराशा का कारण था जन्मपत्री नहीं मिली. कहा गया कि कन्या के 28वें वर्ष में वैधव्य योग है.

फलस्वरूप मातापिता ने 28 वर्ष तक विवाह नहीं किया. बाद में बेटी ने ही विवाह करने से इनकार कर दिया. शांता मैनपुरी की कलक्टरी के अवकाश प्राप्त वरिष्ठ सहायक की पुत्री थी, जो अध्यापिका जीवनयापन करती असमय में ही वृद्धा हो गई.

शांता ही नहीं, न जाने कितनी कुमारियों के सपने ऐसे ही बिखर जाते हैं. सब बातें मिल जाती हैं, पर जन्मपत्री नहीं मिलती, मानो शादी जन्मपत्री की ही होनी हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैसी विडंबना है, प्रत्यक्ष कर्मपत्री को नजरअंदाज कर हम जन्मपत्री के फेर में पड़ जाते हैं, और अच्छेअच्छे रिश्ते छोड़ बैठते हैं.

रिश्ते ही क्यों, और भी न जाने कितने कार्यों के लिए जन्मपत्री या भाग्य को दोष दे कर कर्म से विमुख हो जाते हैं. आज के वैज्ञानिक युग में यह दुराग्रह आश्चर्यजनक ही प्रतीत होता है.

जन्मपत्री है क्या?

जन्मपत्री मुख्यतः 12 राशियों, 9 ग्रहों एवं 27 नक्षत्रों पर आधारित एक विवरण पत्रिका है. पंडितों के अनुसार, जन्मपत्री बालक के जन्म समय की आकाशीय स्थिति दर्शाती है. अर्थात बालक के जन्म के समय आकाश में ग्रहों की जो स्थिति होती है, वही जन्मपत्री में प्रदर्शित की जाती है.

विज्ञान के अंतर्गत सूर्य, मंगल बृहस्पति, शुक्र और शनि तो प्रत्यक्ष किंतु चंद्रमा की मान्यता एक ग्रह के नहीं है. वह पृथ्वी का उपग्रह मात्र है, नामक अपने ग्रह का चक्कर लगाता ज्योतिष के छायाग्रहों—राहु और केतु विज्ञान में कोई अस्तित्व नहीं. परन्तु हर्षल, प्लूटो और नेपच्यून आधुनिक की खोज हैं, अतः उन के बारे में ज्यो ग्रंथों में कोई स्पष्ट सिद्धांत भी नहीं

अब रही बात नक्षत्रों की. कई का समुदाय नक्षत्र कहलाता है. आका तारागण विभिन्न आकृतियों में देखे हैं. उन के नाम भी इन आकृतियों के ही रखे गए हैं. समग्र आकाश में नक्षत्र यानी तारागण हैं—अश्विनी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा,

ज्योतिषियों का दावा है कि 12 राशियों, 9 ग्रहों और 2 नक्षत्रों पर आधारित आप की जन्मपत्री देख कर वे आप भूत व भविष्य बता देंगे. लोगों को कर्म से विमुख कर भाग्य अंधकूप में धकेल कर अपनी दुकान चलाने वाले ये ज्योति क्या अपना भविष्य भी जानते हैं?

संपूर्ण आकाश मंडल 360 अंशों का है, जिसे 12 भागों में बांटा गया है. इस प्रकार एक भाग 30 अंशों का हुआ. ये 12 भाग ही 12 राशियां कही गई हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन.

राशियों का यह नामकरण वैज्ञानिक नहीं है. यह क्षेत्रानुसार तारागणों की आकृति पर आधारित है.

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु—कुल नौ ग्रह हैं. आधुनिक काल में कुछ ज्योतिष अपनेआप को आधुनिक घोषित करने के चक्कर में तीन ग्रहों—हर्षल, प्लूटो और नेपच्यून का भी अस्तित्व स्वीकारने लगे हैं.

पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उ फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, वि अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उ षाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती.

राशियों की तरह नक्षत्र भी भा नक्षत्रों का सहारा प्रायः समय सूचक में लिया जाता है.

राशि, ग्रह और नक्षत्रों की पृ पर ही जन्मपत्री का महल खड़ा होता है में 12 प्रकोष्ठ या भाव होते हैं, जैसे भाव, द्वितीय भाव, तृतीय भाव, चतुर्थ पंचम भाव आदि.

ये 12 भाव ही मानव जीवन के क्रियाकलापों, समस्त संबंधों, रोगों, आ आदि का प्रतिनिधित्व करते हैं. यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

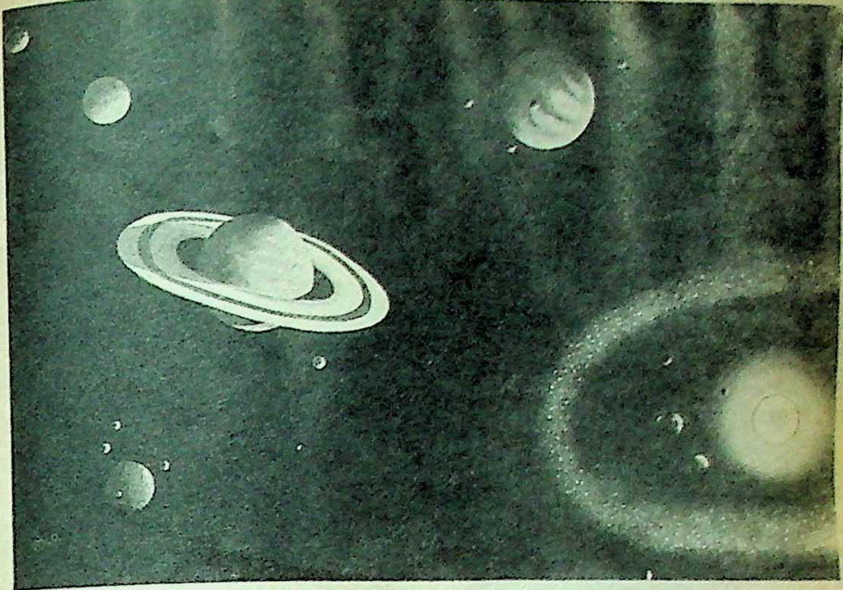

इन्हीं ग्रहों की उलटीसीधी व्याख्या कर लोगों की जेब खाली करवाते हैं ये ज्योतिषी.

नितांत भ्रामक है. जीवन के असीमित कर्मक्षेत्र को जन्मपत्री के छोटे से कैनवस में समा देना केवल ठग विद्या है.

अगर किसी जातक की जन्मपत्री में माता का सुख नहीं है तो क्या उसे नौकर, ससुर, मकान, जमीनजायदाद आदि का भी सुख नहीं मिलेगा? क्या आप ने मातृविहीन किसी ऐसे व्यक्ति को देखा जो फुटपाथ पर सड़ता हो? जन्मपत्री के सिद्धांत के अनुसार तो उसे ऐसा ही होना चाहिए.

इसी तरह, पितृविहीन जातक को राज्य, नौकरी, सास आदि का सुख नहीं मिलना चाहिए क्योंकि जन्मपत्री के दशम भाव से ही इन सब बातों का विचार होता है.

अनुमान पर आधारित भविष्य

जो ज्योतिषी दूसरों की जन्मपत्री देख कर धन ऐंठते हैं, वे अपनी जन्मपत्री देख कर अपना भविष्य क्यों नहीं बताते? भारत के प्रसिद्ध ज्योतिषी डा. नारायण दत्त श्रीमाली के घर छापा पड़ा था, तब क्या उन्होंने इस की भविष्यवाणी की थी? प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य राजाराम जैन, जिन के ज्योतिष संबंधी लेख प्रसिद्ध ज्योतिष पत्रिकाओं में छपते हैं, अपने मरने की तिथियां चार बार घोषित कर चुके हैं, पर उन की घोषणा एक बार भी सही नहीं निकली.

दिल्लीवासी पं. राजाराम, जो प्रायः हवाई जहाज से ही यात्रा करते हैं, अचानक पुत्र शोक से पीड़ित हो गए. उन का पुत्र तालाब में डूब कर मर गया. क्या उन्होंने उस की अकाल मृत्यु की भविष्यवाणी की थी?

वस्तुतः ज्योतिष अनुमान पर आधारित है. अनुमान सही भी हो सकता है और गलत भी. सही होने पर जिस अनुपात में वाहवाही मिलती है, गलत होने पर उसी अनुपात में अपयश नहीं. यही कारण है कि लोगों का विश्वास ज्योतिष पर से पूरी तरह नहीं उठ पाया है और आए दिन ज्योतिष के प्रचारप्रसार हेतु पत्रपत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा है.

अखबारों में जन्मपत्री विशेषज्ञों का विज्ञापन होता है. ज्योतिष की प्रशंसा के पुल बांधे जाते हैं. अनेक भविष्यवाणियां की जाती हैं. यदि संयोगवश कोई भविष्यवाणी सही हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई तो वह भविष्यवक्ता और पत्रपत्रिका उस का अच्छाखासा ढोल पीटते हैं. क्या किसी ने यह हिसाब भी लगाया है कि कितनी भविष्यवाणियां सही नहीं हुई?

इन पत्रपत्रिकाओं की भविष्यवाणी का एक नमूना पेश है. बात उस समय की है जब 1982 में राष्ट्रपति पद का चुनाव होना था. 'ज्योतिष योग' (मार्च, अप्रैल 1982) में भगवतकिशोर मिश्र का एक लेख छपा था—'अगला राष्ट्रपति कौन?' उस में लिखा था, 'सात व्यक्तियों की संभावना है. उन में से कोई एक राष्ट्रपति हो सकता है.'

किसे नहीं पता कि राष्ट्रपति एक ही होगा दो या सात नहीं.

भ्रामक भविष्यवाणी

आगे सातों व्यक्तियों का नामोल्लेख इस प्रकार है—सर्वश्री हिदायतुल्ला, शेख अब्दुल्ला, वाई.वी. चंद्रचूड़, वेंकटरामन, सरदार स्वर्णसिंह, ज्ञानी जैलसिंह व श्रीमती इंदिरा गांधी. भगवतकिशोर मिश्र ने स्वतंत्र भारत की जन्मपत्री बना कर गोचर पद्धति से विचार किया था.

ज्ञानी जैलसिंह के बारे में सिर्फ इतना उल्लेख किया था, 'भारत सरकार के गृहमंत्री श्री ज्ञानी जैलसिंह के लिए भी राष्ट्रपति बनने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है. अल्पकाल के लिए योग तो बनता भी है, परंतु केतु बाधक है.'

जब 'योग' बनता है, तब केतु की बाधा क्यों? इस बाधा के बाद भी वह राष्ट्रपति बन गए. है न आश्चर्य की बात?

इसी तरह की भ्रामक भविष्यवाणी अन्य उम्मीदवारों के लिए भी है, जिन में 'किंतुपरंतु' का सहारा लिया गया है. जब जन्मपत्री और ज्योतिष सच्चे हैं और विशेषज्ञ भी सच्चा है, तब भविष्यवाणी की 'सत्यता' क्यों भ्रामक है? 'सत्य' सदैव सत्य होता है, उसे 'किंतुपरंतु' की बैसाखी की जरूरत नहीं होती.

इन पत्रिकाओं में घटना दुर्घटना होने के बाद, उस की ज्योतिषीय समीक्षा भी की जाती है. जैसे श्रीमती इंदिरा गांधी की मृ... के बाद अनेक लेख पढ़ने को मिले कि अमु... ग्रह के कारण उन की मृत्यु हुई. पर किसी भी ज्योतिषी ने उन की मृत्यु की पूर्व सूचना क... नहीं दी थी.

'भविष्य दर्पण' (नवंबर 1984) में पृ... 6 पर श्रीमती इंदिरा गांधी का भविष्य अंकि... है. 'श्रीमती इंदिरा गांधी की कुंडली के अनुसार इस समय शनि की दशा में राहु का अंतर चल रहा है. शरीर में रोग के कारण कष्ट, चोट और शत्रु पीड़ा, धन व्यय ये फल बताए गए हैं. दिसंबर बीत जाने पर गृह के प्रभाव के कारण अशुभ फल कम होंगे और शुभफल बढ़ेंगे.'

ज़रा सोचने की बात है कि इंदिरा गांधी 31 अक्तूबर 1984 को ही इहलोक छोड़ गई थीं, फिर यह दिसंबर के बाद का भविष्य और शुभफल क्या परलोक के जीवन के संबंध में बताए गए हैं (यदि कोई परलोक होता है)? इसी प्रकार महात्मा गांधी, लालबहादुर शास्त्री की जन्मपत्री देख कर किसी ने भी अकाल या आकस्मिक निधन की भविष्यवाणी नहीं की थी.

'ज्योतिषधाम' (अगस्त 1985) में भोपाल गैस त्रासदी का ज्योतिषीय विश्लेषण सामयिक जन्मपत्री के आधार पर किया गया था कि किन ग्रहों के कारण यह दुर्घटना हुई. यदि ग्रहों के आधार पर ऐसी भयंकर दुर्घटनाओं का विश्लेषण किया जा सकता है तो ज्योतिषी पहले ही भविष्यवाणी क्यों नहीं करते, ताकि पूर्व सुरक्षा की जा सके. सांप निकलने के बाद उस की लकीर पीटने से क्या फायदा?

सही जन्म समय और जन्मपत्री

जन्मपत्री के आधार पर की जाने वाली भविष्यवाणी गलत होने पर ज्योतिषियों का एक कुतर्क होता है कि जन्मपत्री गलत बनी होगी और सही जन्मपत्री बनाने के नाम पर वे अच्छीखासी 'दक्षिणा' झटक लेते हैं. फिर भी अंत तक वही ढाक के तीन पात रहते हैं.

सही जन्मपत्री का आधार और प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

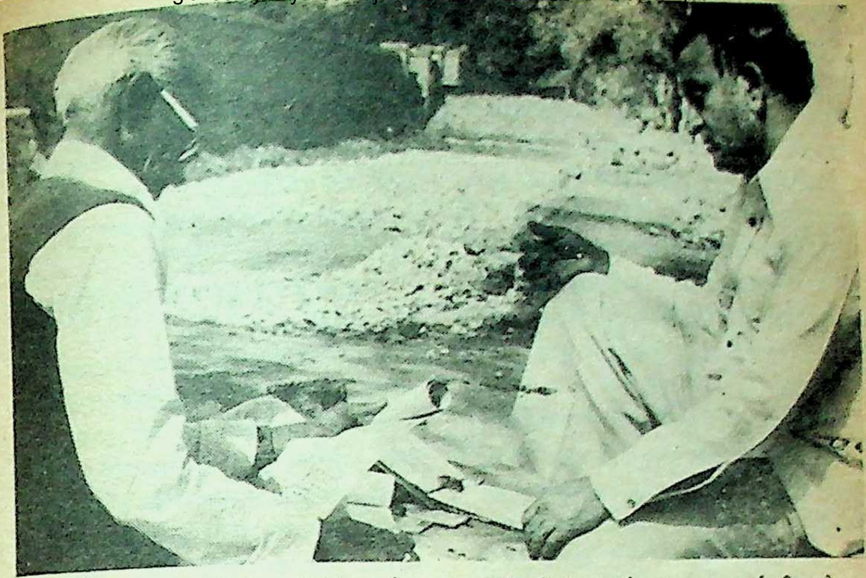

कैसी विडंबना है, प्रत्यक्ष कर्मपत्री को नजरअंदाज कर हम जन्मपत्री के फेर में पड़ जाते हैं. वैज्ञानिक युग में यह दुराग्रह आश्चर्यजनक है.

क्या है? इस संबंध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है.

किसी भी जातक की सही जन्मपत्री बनाने के लिए सही समय, स्थान तथा तिथि की जानकारी आवश्यक है. इन के अभाव में सही जन्मपत्री बनाना असंभव है. स्थान और तिथि की जानकारी तो प्रायः सही रहती है, पर 'समय' पर प्रश्नचिह्न लग जाता है.

ज्योतिष ग्रंथों का अध्ययन करने पर विदित होता है कि इस संबंध में ज्योतिषियों में पर्याप्त मतभेद है. कोई गर्भाधान काल को सही समय मानता है, कोई गर्भ में जीव प्रवेश को और कोई प्रसव को.

प्रसवकाल के संबंध में भी यह मतभेद विद्यमान है. कोई विद्वान सिर का प्रथम भाग ही योनि से बाहर निकलने के समय को सही जन्म समय मानते हैं तो कोई पूर्णतः बाहर आने को. यहां ज्ञातव्य है कि प्रसव की संपूर्ण क्रिया में काफी समय लग जाता है. फिर सही समय किस क्षण को माना जाए.

प्रधान मंत्री राजीव गांधी की जन्मपत्री ऐसे ही समय की छीछालेदर है. उन की जन्मपत्रियां मेष से तुला तक के लग्नों के हिसाब से बनी देखी गई हैं. तीन वर्ष पहले 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' के दीपावली विशेषांक में अनेक ज्योतिषियों ने विचार किया, अनेक भविष्यवाणियां कीं. आश्चर्य की बात यह है कि एक ही अंक में, एक ही लेख (परिचर्चा) में राजीव गांधी के दो जन्म लग्नों को आधार माना गया है—सिंह और कन्या.

राजीव गांधी के विमानचालक जीवन में प्रायः समस्त पंडितों ने भविष्यवाणी की थी कि वह राजनीति में ही नहीं आएंगे (प्रधान मंत्री बनना तो दूर). शायद तब उन की जन्मपत्री कन्या लग्न की स्वीकार की गई थी. किंतु उन के प्रधान मंत्री बनते ही उन का जन्म समय ही बदल गया और वह घंटे दो घंटे पहले पैदा हो गए, अब उन का जन्म लगन सिंह स्वीकृत है, क्योंकि कन्या लग्न की जन्मपत्री उन्हें प्रधान मंत्री नहीं बनने देती.

समग्र विश्व में एक क्षण में कई बच्चे पैदा होते हैं. फिर उन का भविष्य और जीवन समान क्यों नहीं होता? दूसरी ओर, किसी दुर्घटना में एकसाथ कई लोगों का मरना भी यह साबित नहीं करता कि उन का जन्म एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सी ग्रह स्थिति में हुआ होगा.

10-15 या 30 मिनट के अंतर से जन्मे बच्चों की जीवनधारा भी अलगअलग देखी गई है. एक सुखी, दूसरा दुखी, जबकि एक ही लग्न में जन्म लेने के कारण दोनों की जन्मपत्रियां समान होती हैं. कभीकभी एक बच्चा मर भी जाता है.

कानपुर के एक प्रतिष्ठित परिवार में दो जुड़वां बच्चियों का जन्म हुआ. दोनों की प्रकृति भिन्न है. दोनों की शादी भिन्न समयों पर हुई. आज एक संतानवती है और दूसरी निस्संतान.

30 जुलाई, 1986 को मैनपुरी के जिला हस्पताल में वीरेंद्र की पत्नी ने दो जुड़वां बच्चों को जन्म दिया. एक का जन्म हुआ संध्या 5.45 बजे और दूसरे का ठीक 6.00 बजे. पहले जन्म लेने वाला बच्चा तुरंत मर गया, जबकि दूसरा जीवित है. 15 मिनट के इस अंतराल में लग्न भी नहीं बदला. (जातक के जन्म पर जो राशि पूर्वी क्षितिज पर उदित होती है, उसे 'लग्न' कहते हैं.) अन्य समस्त ग्रहों की स्थिति भी समान रही. उन के अंशों में भी कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ. फिर एक का जीवन और दूसरे का मरण क्यों?

मेलापक : कोरा अंधविश्वास

जन्म समय के समान ही जन्मपत्री मिलाने के संबंध में भी मतभेद है, जन्मपत्री जन्म लग्न से मिलाई जाए या चंद्र लग्न से? चंद्रमा का संबंध मन से होता है. अतः चंद्र लग्न से विचार करने वाले ज्योतिषी दांपत्य जीवन के मानसिक पक्ष का ध्यान रखते हैं. और जन्म लग्न से विचार करने वाले ज्योतिषी शारीरिक पक्ष पर बल देते हैं. क्योंकि जन्म लग्न या प्रथम भाव शारीरिक व्यक्तित्व का परिचायक बताया जाता है.

वैसे अधिकतर पंडित पंचांग में दी गई 'मेलापक सारणी' से वर कन्या के गुणों का मिलान करते हैं. यदि नक्षत्र, ग्रह या राशि के द्वारा किसी के गुणावगुण का मूल्यांकन किया जा सकता है तो शादी के बाद एकदूसरे में मीनमेख क्यों निकाले जाते हैं?

यहां एक बात यह भी विचारणीय है लंबे समय तक राजामहाराजाओं में स्वयं की प्रथा रही है; जन्मपत्री मिलाने की महर्षि वसिष्ठ त्रिकालदर्शी थे, उन्होंने तथा उन के भाइयों की जन्मपत्री शादी समय क्यों नहीं मिलाई थी?

'मुनि वसिष्ठ से पंडित ज्ञानी, शोधि लग्न धरी,

सीता हरण मरण दशरथ को, वन विपत्ति परी.'

श्रीराम की जन्मपत्री का अध्ययन से विदित होता है कि उस में कहीं भी वनगमन का योग नहीं है. 'ज्योतिष योग' (मार्च, 1982) में पृष्ठ 27 तथा (फरवरी 1986) पृष्ठ 24 पर एक उल्लेख से यह संकेत मिलता है कि जन्म लग्न में गुरु की उपस्थिति कारण उन्हें वन जाना पड़ा. 'जन्म लग्ने गुरुश्चैव, रामचंद्रो वने गतः.'

यदि यह सिद्धांत सही है तो मोतीलाल नेहरू को 14 वर्ष का वनवास क्यों नहीं हुआ उन की जन्मपत्री में भी तो जन्म लग्न में का गुरु विद्यमान है. यही बात लता मंगेशकर, ईसा मसीह, योगिराज अरविंद, एच.जी. वेल्स, सम्राट औरंगजेब, जगत सेठ हुकुमचंद्र आदि की जन्मपत्रियों पर भी लागू होनी चाहिए थी.

'ज्योतिष योग' (सितंबर 1984) में वनगमन का एक अन्य तर्क दिया गया है. राज्याभिषेक के समय शनि की महादशा में मंगल की अंतर्दशा चल रही थी. दोनों ग्रह राजभंग करने वाले हैं. अतः राम को राज्य से हाथ धोना पड़ा. वनवासी बनना पड़ा. सीता हरण, रावण के युद्ध आदि के लिए भी ये ग्रह दोषी हैं.

यहां विवेचक यह भूल जाता है कि लग्न में स्वगृही चंद्रमा और उच्चगुरु के योग से गजकेसरी योग बनता है, जो कीर्तिदायक है. दशम भावस्थ उच्च सूर्य (प्रबल राज योग कारक) है. दूसरे, कर्क लग्न में अकेला मंगल ही राजयोग कारक है. तीसरे, इस लग्न में मंगल जिस भाव में भी होगा, उसी की वृद्धि करेगा. फिर सप्तमस्थ मंगल ने उन्हें दांपत्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती..."

"इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह स्पेशल है. शुद्ध हरा आँवला, पीपली, वंशसालोचन, कुंडकोल, लौंग, जावंत्री, इलायची और अकलकरा जैसी जड़ी-बूटियाँ. सब को शुद्ध देसी घी में बनाया गया है.
मेरा बाज़ार का आना-जाना तो रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती हूँ कि अच्छी और उम्दा दर्जे की चीज़ें हमेशा कुछ महँगी ही मिलती हैं. फिर, जब क्वालिटी की बात हो तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु स्पेशल च्यवनप्राश बारहों महीने देती हूँ. इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने की शक्ति आ गई है. ख़ास तौर से खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ज़रूर है. इसमें मिले तत्त्व इतने ताज़ा और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद भी कमाल है. बच्चों का बस चले तो वे इसे दिनभर खाते रहें. हर दो-चार दिन बाद मुझे बोतल कहीं दूसरी जगह छिपाकर रखनी पड़ती है. क़ीमती है न!"

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध.

INDIA'S GREATEST CYCLE RACE

क़ीमती ही सही **झंडु स्पेशल च्यवनप्राश.**

असली च्यवनप्राश

CLARION/B/ZP/ 24 /183 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख से वंचित क्यों किया. दोनों प्रबल राजयोगों के होते हुए भी 'राजभंग' समझ से परे है.

इसी क्रम में जन्मपत्री का महत्त्वपूर्ण योग है—मंगली. ज्योतिषियों के अनुसार वरकन्या दोनों का मंगली होना जरूरी है, किसी एक का नहीं, अन्यथा किसी एक की मृत्यु हो सकती है.

'लग्ने व्यये च पाताले, जामिचे चाष्टमें कुजः,
वर पत्नी विनाशाय कन्या पति विनाशिनी.'

अर्थात यदि वर की जन्मपत्री में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में हो तो उस की पत्नी की मृत्यु शीघ्र ही हो जाती है. यही योग वधू की जन्मपत्री में होने पर वर की शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है.

कुछ विद्वान उक्त स्थानों के अतिरिक्त एकादश स्थान में भी मंगल की उपस्थिति को मंगली दोष मानते हैं.

एक अन्य सिद्धांत के अनुसार प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, एकादश, द्वादश भावों में मंगल, शनि, राहु व के... ग्रहों के होने से भी मांगलिक दोष माना ... है. सात भाव तथा चार ग्रहों के योग से योग 28 प्रकार हो सकता है. किंतु ... संबंध में चंद्र, शुक्र लग्न तथा सप्तमेश ... उक्त स्थानों में पाप ग्रहों की उपस्थिति ... योग बनता है. अतः 28×3=84 प्रकार ... योग हुआ. दोनों का योग हुआ 28+84=1...

इन के अलावा अन्य ग्रहों की ... स्थितियां भी यह दोष बनाती हैं, ... योग 250 तक हो सकता है.

सच पूछा जाए तो राजयोगों की ... मंगली योग भी विवादास्पद हैं, जो अधिक... जन्मपत्रियों में मिल जाते हैं. इस आधार ... यदि इन ज्योतिषियों का वश चले तो शा... सहज संभव ही न हों.

और शादियां ही क्यों, ये तो स्वाभा... जीवन भी दूभर कर सकते हैं, कभी शनि ... चक्कर, तो कभी राहुकेतु का भय और ... किसी अन्य ग्रह का खतरा.

स्कूटर/मोटर-साइकल सवार!

अपने सफ़र को इस मुकाम पर न लाएं.

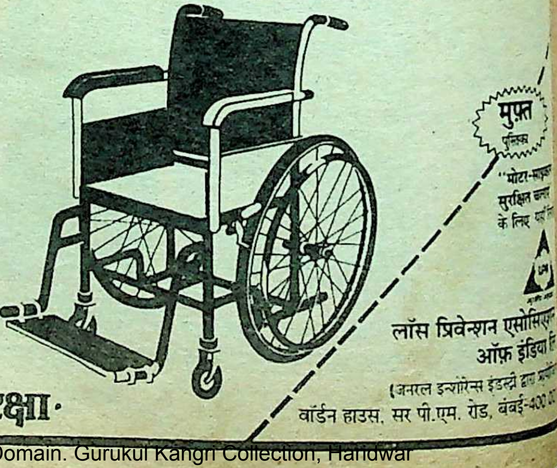

CAS/LP/36/83/H

- सावधानी से वाहन चलाएं
- दो से ज़्यादा सवार न बैठें
- सुरक्षित अंतर रखें
- हेलमेट पहनें

सुरक्षा से जीवन रक्षा·

मुफ़्त पुस्तिका "मोटर-साइकल ... सुरक्षित चलाने के लिए ..."

लॉस प्रिवेन्शन एसोसिए... ऑफ़ इंडिया लि...
(जनरल इन्श्योरेन्स इंडस्ट्री द्वारा प्रायोजित)
वॉर्डन हाउस, सर पी.एम. रोड, बंबई-400 0..

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व सुलभ साहित्य

वैवाहिक जीवन में प्रवेश कर रहे युवकयुवतियों के लिए अनुपम पुस्तकें

युवकों से रु. 15.00
युवकों को योग्य पति, सफल गृहपति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.

युवतियों से रु. 15.00
युवती समझदार बहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाएं?

पति से रु. 15.00
विवाहित जीवन में पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.

पत्नी से रु. 20.00
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन हर पत्नी के लिए अनिवार्य.

कामकला भाग 1 रु. 14.00
(विवाहित युवतियों के लिए)

कामकला भाग 2 रु. 19.00
(विवाहित युवकों के लिए)
यौन जीवन को सुखमय बनाने में सहायक प्रस्तुत पुस्तक में सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेषण. साथ में काम समस्याओं का विस्तृत निवारण भी.

स्त्री और पुरुष रु. 15.00
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान से ले कर आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा तथा आप के प्रश्नों के हल भी.

वात्स्यायन कामसूत्र रु. 25.00
यौन विज्ञान के विषय में प्राचीन भारत का दृष्टिकोण महर्षि वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' से स्पष्ट हो सकता है. शिष्ट शैली एवं सरल भाषा में अनुवाद के साथ साथ विस्तृत टिप्पणियां दी गई है.

यौन मनोविकार रु. 10.00
क्या आप सुखी हैं?
काश ! आप जान पाते, तो आप की जिन्दगी बहारों से, फूलों से और सुगन्धि से भर जाती.
आप की यौन समस्याओं और मानसिक उलझनों का इलाज आपको इस पुस्तक के पन्नों में मिलेगा.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:
दिल्ली बुक कंपनी एम 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली- 110001.

सेट नं. 43

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिथि

अतिथि उस अतिथेय को कभी नहीं भूलता, जिस ने उस से सदय व्यवहार किया है. —होमर

ऐसे ही ग्रहों के फेर में बाबू महेशचंद्र रहे हैं. कहने को तो उन की जन्मपत्री में 'अखंड साम्राज्य योग' है, किंतु उन का 'सारा व्यक्तित्व ढल गया एक साधारण आदमी के सांचे में, जो परिवार की गाड़ी जैसेतैसे खींच रहा है.'

डा. कोवूर की चुनौती

अंधविश्वास की बेड़ियों में जकड़े हम आज इतने भाग्यवादी हो गए हैं कि जरा भी विपत्ति या कष्टमय जीवन का आभास पा कर जन्मपत्री ले कर सीधे पंडितों की शरण में पहुंच जाते हैं और पंडित उलटासीधा बता कर अपनी दुकान चलाते हैं.

यही कारण है कि अब ज्योतिष का व्यापार खूब फलफूल रहा है. नेता से ले कर अभिनेता तक, अहलकार से ले कर पेशकार तक, जी हुजूर से ले कर सरकार तक सभी जन्मपत्री के भ्रमजाल में पड़े है. जन्मपत्री विशेषज्ञ को हर तरह से लाभ ही मिलता है. जन्मपत्री बनवा कर, फलादेश जान कर या प्रश्न पूछ कर अंधविश्वासी लोग उसे कुछ न कुछ दे ही जाते हैं, उस से ले कुछ नहीं जाते.

जन्मपत्री बनवाने अथवा भविष्य जानने का पारिश्रमिक 5 रुपए से ले कर 5,000 रुपए तक है. इस व्यवसाय में नाम का नाम और दाम ही दाम हैं. यही कारण है कि तथाकथित जन्मपत्री विशेषज्ञ अब गलीगली बढ़ते जा रहे हैं.

अंधविश्वासी जनता के ऐसे लुटेरों को सन 1963 में केरल के एक पादरी परिवार में जन्मे तथा हर्स्टन कालिज (श्रीलंका) के विज्ञान के अवकाश प्राप्त अध्यक्ष डा. अब्राहम कोवूर ने विश्व के प्रमुख समाचारपत्रों के माध्यम से एक चुनौती दी थी.

'यदि कोई तथाकथित भगवान, योगी, संत, ज्योतिषी आदि आध्यात्मिक सिद्धियों या ईश्वरीय वरदान संपन्न होने का दावा सिद्ध कर दिखाए उसे श्रीलंका की मुद्रा में एक लाख रुपए पुरस्कार दिया जाएगा. किंतु उसे परीक्षणों से हो कर गुजरना होगा, जि चालाकी की गुंजाइश न रहे. यह चुनौती मृत्यु अथवा प्रथम विजेता के मिलने तक रहेगी.'

आगे ज्योतिषियों के लिए उन की चुनौती भी थी कि यदि कोई ज्योतिषी कि व्यक्ति की जन्मपत्री देख कर केवल यह दे कि वह व्यक्ति स्त्री है या पुरुष तो (पादरी) जीवनभर उस ज्योतिषी का गु रहेगा. इस संबंध में वह 5% गलतियां नजरअंदाज करने को तैयार थे.

आज तक कोई भी जन्मपत्री विशे यह चुनौती स्वीकार नहीं कर सका. जन्मपत्री देख कर वे हर बात बताने का करते हैं.

सोचने की बात है कि यदि जन्म व्यक्ति के भूत, भविष्य और वर्तमान कच्चा चिट्ठा है तो फिर पुलिस विभाग खोजी दस्ता बेकार है. ये ज्योतिषी ही चो बदमाश, हत्यारे अथवा अन्य अपराधियों नामपता क्यों नहीं बता देते.

फिर तो रोजगार के आवेदनपत्रों साथ सत्यापित प्रमाण पत्रों की भी जरू नहीं होनी चाहिए. बस, जन्मपत्री ही सब बता देगी. सरकारी स्थायी नौकरियों में फिर पुलिस सत्यापन की क्या जरूरत, जन्मपत्री विशेषज्ञ ही बता सकते हैं कि व्यक्ति जेल गया या नहीं, या चरित्रवान है नहीं.

कुल मिला कर देखा जाए तो जन्मप भ्रमपत्री है, अंधविश्वास की ओर ले जा वाली जंत्री है. इस के फेर में पड़ना अपना व समय गंवाना है. हानिलाभ, जीवनमर यशअपयश सब कर्मपत्री के फल हैं, जन्मप है. जन्मपत्री तो ठगने का एक जरिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यासे सरगम

बिन देखे अनजाने जिस को जान गए
वही बने अपने जिन को पहचान गए.

झलक दिखा जो मोह
गए थे मेले में
जिन की याद रुलाया
करे अकेले में
कैसे मानें, वह दे कर मुसकान गए.

हर पीला रिश्ता जब
लगता किसलय सा
मन के घुंघरू में
तब कोई अभिनय-सा!
उन्मन हो जाता है [illegible] लिए.

वर्तमान बन वादे पर
जो आते हैं
वह कपास के वन
में फूल उगाते हैं
आए जो मिलने बन कर मेहमान गए.

मृत्यु! सिर्फ पर्दा है
इधर-उधर हैं हम
वे प्यासे मिलते जिन के
प्यासे सरगम!
ऐसा ही सच वह पलकों पर तान गए.

—राजमणि राय 'मणि'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाश्ते के अलबेले व्यंजन

रेनबो केक बरफी वाला

सामग्री: 200 ग्राम बरफी, 1 बड़ा चम्मच अनन्नास का जैम, 2 बड़े चम्मच स्ट्राबेरी जैम, 3 बड़े चम्मच अंगूर जैम, ½ प्याला चीनी पिसी हुई, 1½ प्याला मक्खन, 2 प्याले मैदा, 2 बड़े चम्मच दूध, 3 बड़े चम्मच मलाई (क्रीम) 2 छोटे चम्मच बेकिंग पाउडर, 2 बूंद हरा रंग, 50 ग्राम पिस्ता, 50 ग्राम चिरौंजी, 6 छोटे या 4 बड़े अंडे.

विधि: मैदे को अच्छी तरह छान लीजिए, फिर मक्खन और चीनी को अच्छी तरह धीरेधीरे फेंटते रहिए, एकदम हलका होने पर रख दीजिए.

एक दूसरे बड़े प्याले या कटोरे में अनन्नास के जैम को एक चम्मच (क्रीम) में थोड़े से गरम दूध में दीजिए. अच्छी तरह मिलने पर चीनी वाले घोल में मिला दीजिए और प्याला मैदे के साथ मिलाते जाइए अंडे फेंट कर मिलाइए. इसी तरह को भी क्रीम और दूध में घोल कर मक्खन, चीनी, मैदे वाले घोल में दीजिए और दो अंडे फेंट कर अच्छा प्याला मैदा भी डाल दीजिए. हिलाते जाइए फिर बरफी के छोटे टुकड़े काट कर केक में डाल कर जैम भी दूध अथवा मलाई में घोल कर दीजिए, धीरेधीरे फेंटते हुए बेकिंग डाल कर अच्छी तरह फेंटिए, अंत में की दो बूंदों को बारीक कटे हुए पिस्ते घोल में मिलाइए.

उधर ओवन को 10 मिनट के तेज आंच पर गरम बेकिंग डिश को अथवा एक चुटकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के पश्चात घोल डालिए. ओवन में रखने के बाद आंच मध्यम कर दीजिए. 50 मिनट लगेंगे और केक तीनों रंगों में फैल जाएगा.

सुंदर रेनबो केक बरफी के टुकड़ों के साथ मजेदार लगेगा. सजावट चैरी से करें.

—शक्ति मरवाह

लजीज नाव

सामग्री: 250 ग्राम पनीर, 100 ग्राम मैदा, 200 ग्राम खोया, 50 ग्राम मिलाजुला मेवा, 1 बड़ा टुकड़ा नारियल, 1 चम्मच बेकिंग पाउडर, 600 ग्राम दूध, 200 ग्राम चीनी, तलने के लिए घी, 2 बड़े चम्मच कस्टर्ड पाउडर.

विधि: मैदे को बेकिंग पाउडर मिला कर छनें. पनीर मिला कर हथेली से नर्म होने तक मसलें. 50 ग्राम दूध में एक बड़ा चम्मच चीनी मिलाएं. इस चीनी मिले दूध से मैदा व पनीर को थोड़ा सख्त गूंधे और ढक कर थोड़ी देर के लिए रख दें.

फिर इस मिश्रण का एक छोटा हिस्सा ले कर उसे नाव का आकार दें. गरम घी में मंदी आग पर इस नाव को सावधानी से तल कर निकाल लें. इसी प्रकार सारे मिश्रण की नावें तैयार कर लें.

खोए को थोड़ा भूनें. इस में अंदाज से पिसी चीनी डालें. नारियल को कद्दूकस कर के उस में मिलाएं. कटा हुआ मेवा भी डालें. इस मिश्रण को सभी नावों में भर दें. बाकी के दूध से कस्टर्ड बनाएं और उसे फ्रिज में ठंडा होने रख दें. ठंडे कस्टर्ड को डोंगे में डालें. उस में तैयार नावें तैरा कर भोजन के अंत में पेश करें.

—मृदुल जैन

केले की बरफी

सामग्री: 1 किलो केले का गूदा, 700 ग्राम चीनी, 200 ग्राम घी, 200 ग्राम मावा (खोया), चिरौंजी, पिस्ता, काजू, किशमिश अंदाज से.

विधि: केले को चाकू से गोलगोल काट कर रख लें तथा आग पर 300 ग्राम पानी चढ़ा दें. जब पानी गुनगुना हो जाए तो केले के टुकड़े उस में डाल दें तथा पकने दें. पकाते समय केलों को बड़े चम्मच से चलाती रहें. जब केला घुट जाए तो उसे उतार कर स्टील की छलनी से छान लें और दोबारा आंच पर चढ़ा दें. उस में चीनी डाल दें और चलाती रहें. जब मिश्रण जमने लायक हो जाए तो उस में मावा भुरभुरा कर के डाल दें. एक थाल में घी लगा कर उस में पूरे मिश्रण को फैला दें. ऊपर से मेवा डाल दें. मिश्रण ठंडा होने पर उस के छोटेछोटे एकसार टुकड़े

लजीज नाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाकू की सहायता से ... काट लें. ... बरफी तैयार है.

केले की पकौड़ी

सामग्री: 250 ग्राम कच्चे केले का गूदा, 200 ग्राम बेसन, 250 ग्राम मटर, तलने के लिए घी या तेल, इच्छानुसार हरी धनिया, मिर्च, नमक आदि.

विधि: सर्वप्रथम केले के छोटेछोटे टुकड़े काट लें. मटर को छील कर आंच पर चढ़ा दें. जब उबल जाए तो उतार कर ठंडा होने दें. बेसन का घोल तैयार कर उस में धनिया, मिर्च, नमक आदि डाल कर खूब फेंटें. मटर व केले के गूदे को भी उसी में मिला लें. कड़ाही में तेल डाल कर आग पर रखें. तेल गरम होने पर उस में इस मिश्रण के पकौड़े तल लें. खट्टी चटनी के साथ ये बहुत ही स्वादिष्ट लगते हैं.

—सुनीला शर्मा

उड़दमूंग इडली

सामग्री: 1 प्याला उड़द की धुली दाल, 2 प्याले मूंग की धुली दाल, 1 छोटा चम्मच नमक, 3-4 हरी मिर्च, 1 इंच टुकड़ा अदरक, 1 बड़ा चम्मच ताजा नारियल बु... थोड़ी सी हरी धनिया कटी हुई, 8... पत्ते कटे हुए, 1 छोटा चम्मच सरसों, 1 छोटा चम्मच तेल, नारियल की...

विधि: उड़द की दाल को... अच्छी तरह धो कर रात भर के लि... दें. मूंग की दाल को उड़द की दाल... तीन घंटे पहले भिगो दें. दोनों... अलगअलग महीन पीस कर दोनों... डाल कर आपस में मिला दें और खमी... के लिए रात भर रख दें (गरमी में... घंटे में खमीर उठ जाता है). दाल... उठने पर कटा अदरक, कटी हरी मिर्च... पत्ते और धनिया, नारियल बुरादा... तेल गरम कर के सरसों के दाने... और दाल के घोल में छौंक लगा दें.

प्रेशर कुकर में डेढ़ गिलास पानी... और जाली रख दें, इडली के सांचों को... सा चिकना कर के एक कलछी घोल... सांचे में डालें. सांचा कुकर में रखें. कु... कर दें. (वेट न लगाएं) 8-10 मिनट... भाप दें. कुकर खोल कर सांचा निकालें... हाथों से इडलियां निकालें. गरमगरम... नारियल की चटनी के साथ खाने में... इडली का अपना अलग स्वाद है.

ब्रेड उपमा

सामग्री: 1 ... बड़ा चम्मच उड़... दाल, 1 बड़ा प्या... बड़ा चम्म...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की दाल, 2 हरी मिर्च, 1 बड़ा टमाटर, 1 नीबू, 1 प्याला गोभी, गाजर, 1 शिमला मिर्च, 1½ छोटा चम्मच नमक, 1 चम्मच राई, 2 बड़े चम्मच तेल, रुचिअनुसार कढ़ी पत्ता.

विधि: ब्रेड को छोटेछोटे टुकड़ों में काट लें. प्याज, हरी मिर्च को भी छोटाछोटा काट लें. तेल गरम करें और इस में राई डालें. फटने पर उड़द व चने की दाल को सुनहरा होने तक भूनें. प्याज, हरी मिर्च व कढ़ी पत्ता डालें. सुनहरा होने पर सब्जियां व नमक डाल कर ढक दें. हलकी आंच पर सब्जियां नर्म होने तक पकाएं. टमाटर को बारीक काट लें और ब्रेड के टुकड़ों में धनिए के साथ सब्जियों को मिला दें. तेज आंच पर अच्छी तरह भूनें. फिर नीबू निचोड़ कर परोसें. यदि सब्जियां न डालनी हों तो उबले आलू व शिमला मिर्च को बारीक काट कर प्रयोग करें. अत्यंत स्वादिष्ट व पौष्टिक नाश्ता तैयार.

—मधु गुप्ता

स्वीट पिरामिड

सामग्री: 6 स्लाइस ब्रेड, 50 ग्राम खोया, 100 ग्राम चीनी चाशनी के लिए, 200 मिलीलीटर पानी, 1 बड़ा चम्मच मैदा, 1 छोटा चम्मच चीनी, घी तलने के लिए, 2-3 वर्क सजाने के लिए.

विधि: प्रत्येक ब्रेड स्लाइस के किनारे तेज चाकू की सहायता से साफ कर लें और पिरामिड के आकार में काट लें. एक ब्रेड स्लाइस के चार पिरामिड बनेंगे. खोया, मैदा व एक चम्मच चीनी को अच्छी तरह मिला लें. 100 ग्राम चीनी में थोड़ा पानी मिला कर एक तार की चाशनी तैयार कर के रख दें. खोए व मैदे के मिश्रण के 24 भाग कर लें. प्रत्येक भाग को एकएक पिरामिड पर चाकू की सहायता से चिपका दें. सभी पिरामिड तैयार होने पर कड़ाही में घी गरम कर के गुलाबी होने तक तल लें और चाशनी में डालती जाएं. करीब दो घंटे बाद चाशनी से निकाल कर प्लेट में रखें व वर्क से सजा दें. कुरकुरे रस भरे पिरामिड आप का व मेहमानों का मन मोह लेंगे.

ब्रेड डिलीशस रोल्स

सामग्री: 6 स्लाइस ब्रेड, 100 ग्राम पनीर, 250 ग्राम दूध, 25 ग्राम नारियल का बुरादा, 3 बड़े चम्मच चीनी, 1 छोटा चम्मच चिरौंजी, 6-7 काजू बारीक काटे हुए.

विधि: दूध को भारी तले के बरतन में उबालने रखें. उबाल आने पर इस में दो चम्मच चीनी मिला दें. ब्रेड का किनारे वाला भाग साफ कर के ब्रेड को भी दूध में डाल दें

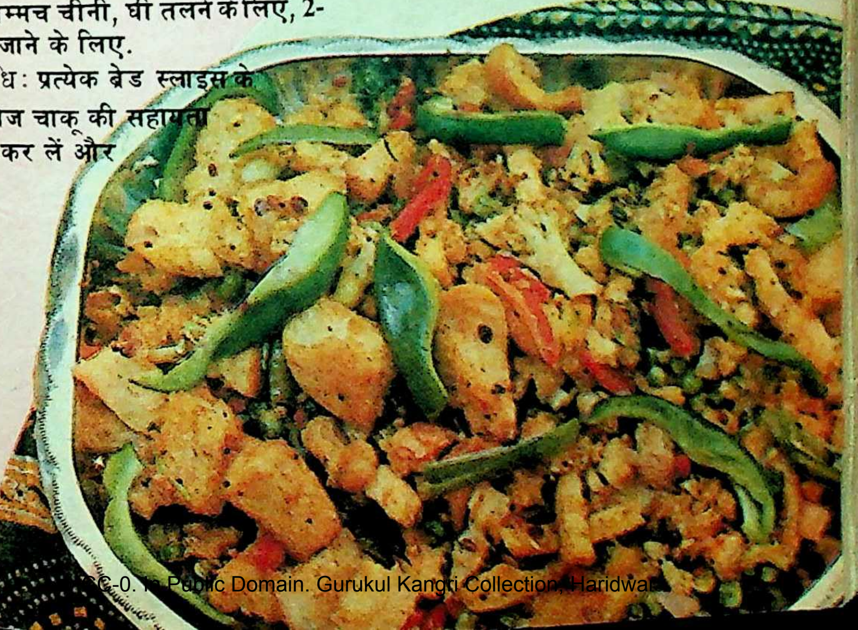

ब्रेड उपमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पकने [illegible] रखें. जब सारा दूध सूख जाए तो नीचे उतार लें. ठंडा होने पर ब्रेड को भलीभांति निचोड़ कर अलग कर लें. अब इस में आधा भाग पनीर मिला कर आटे की तरह खूब अच्छी तरह गूंध लें. शेष आधे पनीर को कद्दूकस कर के, उस में आधा नारियल बुरादा, चिरौंजी, कतरे हुए काजू व चीनी पीस कर मिलाएं. रोल्स में भरने का मिश्रण तैयार है.

अब ब्रेडपनीर के मिश्रण से नीबू के बराबर का भाग ले कर उस में बीच में गड्ढा कर के एक छोटा चम्मच भराव भर कर गोल करें, फिर रोल का आकार दे दें. जब सारे रोल तैयार हो जाएं तो शेष आधे नारियल बुरादे को एक प्लेट में फैलाएं और इस में एकएक रोल को चारों तरफ से लपेट दें. जब सारे रोल तैयार हो जाएं तो उन्हें आधे घंटे के लिए फ्रिज में रखें. फिर प्लेट में सजा कर पेश करें.

चाकलेटी स्वीट हार्ट

सामग्री: 1 ब्रेड, 150 ग्राम मक्खन, 50 ग्राम चीनी बारीक पिसी हुई, 1 चम्मच कोको पाउडर, 8 गिरियां छिली हुई की, हृदय के आकार में काटने वाला (कटर).

विधि: मक्खन को चीनी मिला हलका होने तक फेंटे. फिर इस में पाउडर मिला कर फेंट लें. सारे स्लाइस काट कर हृदय के आकार का बना दें. एक हृदय के आकार वाला टुकड़ा ले कर में चाकू से कोको मक्खन मिश्रण लगा फिर इस के ऊपर दूसरा टुकड़ा रख दें. इस के चारों ओर भलीभांति कोको मक्खन मिश्रण लगा कर ऊपर 4-4 कटी गिरियां चिपका दें. इन्हें आधे घंटे के लिए फ्रिज में रखें. जब मक्खन जम जाए बाहर निकाल कर चाकलेटी स्वीट हार्ट को खिलाएं.

—माधुरी

लैमन स्नो ड्राप्स

सामग्री: 4 प्याले मैदा, 2 प्याले मक्खन (बिना नमक का), 1 प्याला कनफैक्शनर शुगर, 2 छोटे चम्मच नीबू का एसेंस, छोटा चम्मच नमक, 1 प्याला पिसी चीनी, (कुकी रोल करने के लिए).

विधि: मैदे में नमक और बेकिंग पाउडर मिला कर छान लें. चीनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मक्खन मिला कर फेंटें. इस में नीबू का एसेंस और छना हुआ मैदा धीरेधीरे मिला दें और फिर अच्छी तरह गूंधें. एक छोटे चम्मच से बराबर गूंधा मिश्रण ले कर गोली बनाएं और एक चिकनाई लगी बेकिंग ट्रे में रखें. इसी तरह पूरे मैदे से गोलियां बना कर, एकएक इंच की दूरी पर बेकिंग ट्रे में रखें और पहले से गरम किए ओवन में 8-10 मिनट या सुनहरा लाल होने तक बेक करें. ठंडा करें तथा टूथ पिक तीली में फंसा कर लेमन बटर फिलिंग (विधि नीचे दी जा रही है) में डुबोएं और पीसी चीनी में लपेट कर प्लेट में रखती जाएं.

लेमन बटर फिलिंग कैसे बनाएं?

सामग्री: 2 फेंटे हुए अंडे, 1 नीबू का कसा हुआ छिलका, 1¼ प्याला पिसी चीनी, 5-6 छोटे चम्मच नीबू रस, 3 बड़े च... मुलायम मक्खन.

विधि: सभी चीजों को मिला कर फेंटें. फिर गरम पानी में रख कर गाढ़ा... तक गरम करें. बराबर हिलाती रहें... करें और लेमन स्नो ड्राप्स के साथ ... करें.

—पुष्पा ...

सरिता

अप्रैल (प्रथम) अंक में

हरे छोलिए

के कुछ लजीज व्यंजनों की विधि

हरेभरे पिरामिड्स

हरे छोलिए के बीड़े

हरा छोलिया आलू की किश्तियों में

लाजवाब छोलिया लड्डू

नूरानी पुडिंग

हरियाली बर्फी

शहनशाही सासेजिज

खरीदना न भूलें

शाही चमचम ओरिएंट...

सामग्री: 200 ग्राम बेसन, ½ ... दूध, तलने के लिए घी (सोयाबीन का ... भी इस्तेमाल कर सकती हैं), इच्छानु... मेवा-चिरौंजी, नारियल ही कसी हुई ... किशमिश, काजू, बादाम, 4-5 इला... मीठे बताशे अंदर भरने के लिए, 250 ... रबड़ी, 500 ग्राम चीनी, चांदी का वर्क...

विधि: सर्वप्रथम बेसन को छान ... दूध में अच्छी तरह घोल लें. अब कड़ाही ... दो बड़े चम्मच घी डाल कर अच्छी त... जल्दीजल्दी चलाती रहें, जिस से एक ... जैसा गाढ़ा मिश्रण तैयार हो जाए. ध्यान ... कि मिश्रण जब हलवे जैसा हो जाए तब ... आंच से तुरंत नीचे उतार दें.

मिश्रण ठंडा होने के बाद उस ... छोटीछोटी लोइयां बना लें और हर लोई ... अंदर एक छोटा बताशा (जैसे खोए ... रसगुल्ले में भरते हैं) भर कर लोई ... चमचम का आकार दे दें. इस के पश्चा... धीमी आंच पर अच्छी तरह गुलाबी ... तक सेंक लें.

चाशनी बनाने के लिए: 500 ग्रा... चीनी में करीब आधा लीटर पानी डाल ... (रसगुल्लों की सी) चाशनी बना लें और ... में थोड़ी पिसी इलायची मिला दें.

अब इस चाशनी में सिके हुए चमचम ... को भिगो दें. भीगे हुए चमचम को प्लेट ... लगा कर ऊपर से रबड़ी की एक तह लगा... उस के ऊपर कसी हुई नारियल गिरी ... किशमिश, बारीक कटे काजू व बादाम ... दें और थोड़ी सी पिसी इलायची ऊपर ... डाल दें. ऊपर से चांदी का वर्क लगा दें...

—नीता श्रीवास्तव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरवाजे की घंटी और [illegible] की आवाज सुनते ही मेरा मुंह चढ़ गया, 'फिर आ गई फोन करने. रोज इन्हें फोन का ही काम रहता है. जब देखो, तब मुंह उठाए चली आती हैं.' बुड़बुड़ करती मैं दरवाजे पर जा पहुंची और प्रश्नवाचक चेहरा लिए उन के सामने उपस्थित हुई.

बेचारी नम्रता से बोली, "कृपया, मुझे फोन करने दीजिए."

रूखेपन से जवाब देते हुए मैं ने कहा, "आइए." और मैं उन्हें फोन के पास छोड़ अपने कमरे में चली गई. वह न जाने कब फोन कर के वापस चली गई, मुझे पता भी न चला और नौकर ने दरवाजा बंद कर लिया.

कल ललिता आई थीं. उन्हें दवाई की शीशी चाहिए थी. मैं ने दरवाजे पर ही शीशी पकड़ाते हुए अंदर की राह ली. उन्हें बैठने को भी न कहा और न ही पूछा कि कौन बीमार है?

अभी उस दिन वीना मुझ से मिलने

लेख ● शोभना अग्रवाल

रूखेपन का नकाब उतारिए

जीवन की व्यस्तता और धक्कमपेल के कारण व्यक्ति के स्वभाव में रूखापन आ जाना स्वाभाविक है. लेकिन इस से बचना ही श्रेयस्कर है. छोटीछोटी औपचारिकताएं और शब्दों की मिठास आप को इस रूखेपन से बचाए रख सकती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई थी. मैं ने उसे अच्छाखासा भाषण दे डाला. वास्तव में मैं उसे समझा देना चाहती थी कि मैं कितनी व्यस्त रहती हूं. मेरे पास किसी से मिलनेजुलने का समय कहां है? फिर जितना बढ़ाओ, निभाना भी तो पड़ता है. मेरे समझाने और बोलने के सामने बेचारी 'हां, हूं' ही करती रही. बेचारी मायूस सी बैठी रही.

मैं उसे समझाने में काफी सफल रही कि दोस्ती हर किसी से नहीं की जा सकती. मानो वह मुझ से दोस्ती करने पर आमादा हो और मैं छुटकारा पाने पर अपनी जीत पर इतरा रही थी. बिना यह सोचेसमझे कि बेचारी के दिल पर क्या बीत रही होगी. कितने शौक से आई थी, मुझे निमंत्रण देने का साहस भी कहां रह गया था. फिर भी जातेजाते उस ने औपचारिकतावश हलके से कह ही दिया, "आप भी कृपया कभी समय निकालिए. हमारे घर आइए."

मैं ने भी यह जताते हुए कि कठिनाई होगी, "कोशिश करूंगी." कह ही दिया. मैं जानती हूं, कौन जा रहा है उस के घर? कौन सा मेरे पास समय खाली है?

मेरा घर और बच्चे ही मेरी व्यस्तता बनते गए और मुझे किसी से वास्ता न रहा. जब कभी मेरा मन उचाट होता और किसी से मिलती तो प्यार उड़ेलना न भूलती. यों तो औपचारिकता मुझ में कूटकूट कर भरी थी. मेरे हंसमुख चेहरे से आत्मीयता मानो बिखर पड़ती. परंतु विरोधाभास शायद मेरे व्यक्तित्व का अंग बन चुका था.

कभीकभी खाली बैठती तो मैं खुद भी सोचने पर मजबूर हो जाती कि कितनी नाटकीयता आ गई है मेरे जीवन में: परंतु शायद यही समाज के उच्च स्तर का नमूना है. फिर हम ने शुरू से सीखा है कि चाहे किसी को प्यार न करो, लेकिन उसे जताते क्यों हो? क्या जाता है, विनम्र हो कर बोलने में? मैं इस का गूढ़ अर्थ समझते हुए भी उसे ताक पर रख कर केवल अक्षरों के जमाव का पालन करने में लगी थी. कभीकभी उभरता हुआ बनावटीपन मुझे भी झकझोर जाता,

'पर आज का समय ही ऐसा है... विचारधारा से मुझे सही रास्ते पर... बल मिल जाता है.

औपचारिकताएं जरूर निभाएं

मुझे आज अपने कोने वाले पड़ोसी... याद हो आई. नएनए आए हैं. ... औपचारिकता निभाने मुझे ही... चाहिए. मैं कुछ देर के लिए उन के घर... और उन्हें भी जताते हुए लौट आई... तो मेरे पास समय कम है. फिर आ... और उसी समय उन्हें घर आने का नि... देना भी न भूली.

एक दिन सुबह सो कर उठी तो... आया कि फोन खराब है. डाक्टर सा... मुन्ने की दवाई पूछनी थी. इन को भी... कर भेजना ठीक न लगा. पहले ही रा... बारबार जागने के कारण दफ्तर जा... देर हो जाती थी.

मैं ने सोचा, अपने नए पड़ोसी के... को क्यों न खड़खड़ाया जाए. एक ही... में तो काम करते हैं और फिर दफ्त... फोन है. मैं तपाक से जा पहुंची उन के... और फोन करने का आग्रह किया. ... शालीनता मैं दिखाने का प्रयत्न कर रही... उस से दोगुनी शालीनता उन्होंने दिखा... मुझे फोन ला दिया और अपनी बातों से... एहसास जतलाया कि फोन करने में... झिझक? आराम से कीजिए फोन.

मैं फोन कर के लौट आई. ... बारबार मेरे मन में खयाल आया कि... कितनी इज्जत है, इस कालोनी में.

यों ही कुछ दिन बीत गए. अ... मुझे मशीन के तेल की आवश्यकता...

अचानक मेरे मन में अपनी... पड़ोसिन का विचार आया और जा... उन की शरण में. अपनी मजबूरी... करते हुए सारी व्यथा सुनाई. वह त... बोलीं, "अरे, फोन कर देतीं, मैं नौक... हाथ भेज देती. बेकार आप ने तकली... चलिए, आ गई हैं तो इस बहाने मिल... मौका मिल गया. चलिए एक प्याला...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीजिए, फिर काम करिएगा."

मैं ने अपने व्यस्त होने का राग पुनः शुरू किया ही था कि वह बोल उठीं, "अच्छा छोड़िए, चाय बनाने और पीने में समय लग जाएगा और आप का काम बहुत जरूरी है. मैं समझती हूं पर आप को बिना रसगुल्ले खाए नहीं जाने दूंगी. स्वयं बनाए हैं." आत्मीयता से फ्रिज से निकाल उन्होंने मुझे रसगुल्ले परोस दिए. सादा सा कितना शालीन तरीका था, उन का. कहीं दिखावा नहीं, कोई चमकदमक नहीं.

मैं धीरेधीरे देखने लगी कि कई परिवार उन के पास आनेजाने लगे थे. मेरे घर मांगने और फोन करने का सिलसिला लगभग खत्म सा हो गया. शायद बहुत मजबूरी में ही कोई आता था.

एक दिन मुझे पता चला कि उन की तबीयत कुछ खराब है. मैं व्यस्तता का नकाब उतार उन्हें देखने जा पहुंची.

यों तो उन्हें हलका बुखार और सिरदर्द ही था, पर उठने के काबिल न थी. दरवाजे की घंटी बजने पर भी वह लेटी रहीं, नौकर ने दरवाजा खोला. मैं उन के पास ही कुरसी पर जा बैठी. बातें करते चारपांच मिनट ही बीते होंगे कि पुनः घंटी बज उठी.

विनीता को कहीं फोन करना था.

घर आए किसी भी व्यक्ति को यों ही टरका देना ठीक नहीं. उस की थोड़ी सी आवभगत ही उस के मन में आप के अच्छे स्वभाव की धाक जमा देगी.

नौकर ने दरवाजा खोल कर उन्हें बैठक में ही फोन पकड़ा दिया. फिर नौकर को हिदायत दी कि उन्हें ठंडा पानी दे आए.

उन की इस औपचारिकता पर मेरे मुंह से अनायास ही निकल पड़ा, "बेकार ही आप सब को परेशान कर रही हैं. वह फोन कर के चली जाएंगी. उन का ही तो काम है."

परंतु उन के उत्तर से मेरी विचारधारा ही बदल गई. वह मुझे समझा रही थीं, "कोई बेचारा परेशानी में ही आता है, सहायता मांगने, वरना आज के व्यस्त जीवन में किस के पास समय है. मैं गृहिणी हूं. मेरा कर्तव्य है कि मेरे घर कोई आए तो उस का सत्कार मेरे द्वारा हो.

"मैं इस ओर तनिक भी ध्यान दूंगी तो मुझे भी आत्मीयता मिलेगी, नहीं तो जरूरी काम जिसे होगा, वह आएगा तो अवश्य, पर कर के चला जाएगा. साथ ही लेता जाएगा एक विचार 'कितनी रूखी हैं वह?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पासा पलट गया

वैसे मेरी भाभीजी दूसरे की तारीफ कर अपना काम निकलवाने में माहिर हैं. किंतु बगैर सोचेसमझे तारीफ करने की आदत की वजह से कभीकभी उन्हें शर्मिंदा भी होना पड़ता है.

एक बार जब मैं ने उन्हें थाली परोसी तो आदत के अनुसार तारीफ करते हुए बोलीं, "वाह! क्या सब्जी है. ऐसी बढ़िया सब्जी तो मैं ने जिंदगी में पहले कभी नहीं खाई. मन करता है, सब्जी बनाने वाले का हाथ चूम लूं."

शायद वह प्रशंसा अभियान अभी और देर तक जारी रहता, यदि मैं यह न बताती कि यह सब्जी वही है, जो दोपहर में उन्होंने स्वयं बनाई थी. कुछ सब्जी बच गई थी, वह ही गरम कर के मैं ने दोबारा परोस दी थी.

उस समय तो भाभीजी वहां से उठ कर चली गईं. किंतु भविष्य में उन्होंने बिना सोचेसमझे किसी की तारीफ नहीं की.

—संगीता सिंह

*

उन दिनों में भीलवाड़ा से करीब 50 मील दूर एक गांव में कार्यरत थी. मैं राजस्थान रोडवेज की बस से प्रतिदिन आतीजाती थी. मेरे साथ चार अध्यापिकाएं और थीं.

शुरूशुरू में कंडक्टर पांच रुपए जाने के और पांच रुपए आने के यानी 10 रुपए के हिसाब से 50 रुपए प्रतिदिन प्रातः सायं वसूल कर लेता था. टिकट मांगने पर कहता, "टिकट तो छः रुपए का है. आप को प्रतिदिन दो रुपए का फायदा है. इसलिए टिकट ले कर क्या करेंगी."

अगले महीने हम ने पास बनवा लिया. अगले दिन जब हम बस स्टैंड पर पहुंचीं तो रोजाना की तरह उस कंडक्टर ने भी चाय पीली और हमारी चाय के पैसे भी [illegible] चुकाए. जब बस चलने लगी तो उस ने [illegible] के रुपए मांगे. हम ने उसे रुपयों की जग[illegible] दिखाया तो उस का सारा उत्साह [illegible] गया.

—दीप्ति [illegible]

मेरे जीजाजी बहुत सरल स्व[illegible] हैं. किसी को अपशब्द कहना [illegible] आदत नहीं है.

एक बार उन के एक दोस्त बोले, [illegible] वीरेंद्रजी, आप बहुत सीधे हो. आज के [illegible] में टेढ़ेपन के बिना काम नहीं चलता. [illegible] कुछ गालीवाली देना सीखिए."

पहले तो जीजाजी नानुकर कर[illegible] परंतु दोस्त के काफी आग्रह पर वह मान[illegible] अब गाली सिखाने का काम दोस्त का [illegible]

अगले दिन से वही दोस्त जीजा[illegible] शाम के समय एक घंटा गाली सिखाने [illegible] लगा. पांचसात दिन तक वह लगातार [illegible] फिर दो दिन के लिए गायब हो गया.

जब तीसरे दिन वह आया तो उसे [illegible] ही जीजाजी ने गालियों की बौछार शु[illegible] दी. यह देख कर वह बोला, "अरे भ[illegible] कर रहे हो?"

जीजाजी तपाक से बोले, "भई, [illegible] दे रहा हूं, परिणाम सुनाओ."

इतना सुनना था कि वह महाशय [illegible] में आ गए. उन्होंने कहा, "भई ऐसी ग[illegible] से तो आप सीधे ही अच्छे हैं."

—बृजबाला [illegible]

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के [illegible] भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की [illegible] पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते [illegible] संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट [illegible] झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुनो बुला, ऐसा नहीं हो सकता कि तुम गरदन पर ढलका-ढलका जूड़ा बांध लो? जानती हो, स्मिता ऐसा ही जूड़ा बनाती थी. मुझे लगता था कि अब खुला, तब खुला, लेकिन खुलता कभी नहीं था. ऐसे जूड़े के कारण ही कई बार लोग उसे बंगाली समझ लेते थे.

"मैं ने लान में इसी लिए खोजखोज कर सारे रंगों के गुलाब, जूही और मोतिया लगाए थे. स्मिता सिर्फ कली खोंसना पसंद करती थी, जबकि मुझे पूरा खिला फूल उस के जूड़े में भाता था." लान की तरफ देखते, खिड़की से टिके प्रतुल कुछ इस ढंग से लगातार अपनी बात कहे जा रहे थे. मानो बुला से नहीं, खुद से कह रहे हों.

दुहाजू वर क्या सफल पति नहीं बन पाते?

लेख ● सुरभि पांडेय

दुहाजू वर सफल पति साबित होते हैं या नहीं यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे अपनी पिछली जिंदगी से कितना जुड़े हैं? साथ ही निर्भर करता है कि पत्नी ऐसे पति से कैसे सामंजस्य स्थापित करती है.

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार महीने पुराने दांपत्य में बुला के लिए यह कोई नई बात नहीं थी. प्रतुल और स्मिता का दो वर्ष तक सुखमय दांपत्य गुजरा था. उस के बाद अचानक ही एक दुर्घटना में स्मिता की मृत्यु हो गई. किंतु उसे प्रतुल आज तक नहीं भुला सका. 'स्मिता ऐसा करती थी', 'स्मिता वैसा करती थी', 'उसे यह रंग पसंद था', 'उसे जूड़ा फबता था' आदि बातें बुला को प्रतुल अकसर ही सुनाता रहता है.

शुरू में बुला को लगा था कि वह सब कुछ ठीक कर लेगी और यही सोच कर उस ने इस विवाह के लिए हां कर दी थी. प्रतुल स्मिता की मृत्यु के तीन वर्ष बाद घर वालों के बहुत समझाने पर दूसरे विवाह के लिए तैयार हो गया था और इस तरह बुला उस की पत्नी बन कर कलकत्ता से ग्वालियर आ गई.

"सुनिए, मुझे मसूरी बहुत पसंद है. आप कहां चलना पसंद करेंगी?" शादी के दूसरे ही दिन प्रतुल ने बुला से पूछा था तो औपचारिक शब्द सुन कर वह चौंक गई थी. 'क्या प्रतुल उसे सामान्य तरीके से नहीं ले पा रहे हैं?' यह सोचते ही अगले ही पल उस का मन भर आया था. उस ने मुसकरा कर कहा था, "जहां आप चलना चाहें."

मधुमास की स्मृति

किंतु पति की पसंद को प्राथमिकता दे कर अपनी आफत ही बुला ली थी, बुला ने. वह पूरे सप्ताह पछताती रही कि उस ने क्यों नहीं कहीं और चलने को कह दिया. उस के लिए मधुमास की स्मृति आज भी बेहद कटु और पीड़ादायी है.

"रोप वे में से स्मिता ने नीचे देखा था और मुझ से बोली थी कि वह घाटी की गहराइयां देख कर डर जाती है, हालांकि उन 15 दिनों वह रोज एक बार यहां आए बिना नहीं मानी थी." प्रतुल ने कहा था तो बुला खामोश रह गई थी.

किंतु मधुमास के दौरान उसे कितनी ही बार खामोश रह जाना पड़ा. इस यात्रा ने उसे बजाए सुखानुभूति के अकुलाहट और असमंजस से भर दि[...] जहां बुला एकाकी थी और पति का[...] भरा सानिध्य चाहती थी, वहीं प्रतु[...] मृत प्रिया उस के साथ थी. हर बात में[...] मोड़ पर वह स्मिता को याद करता[...] और बुला और अधिक अकेली होती[...]

बुला अपनी ओर से ऐसा कोई[...] नहीं करतीं कि प्रतुल का दिल दुखे.[...] हरसंभव उन से सामंजस्य बिठाने का प्र[...] करती है. उन की पसंद का अनुसरण क[...] है. उस के बाद भी वह उसे दूसरे दर्जे[...] रखे हैं.

प्रतुल के किसी रिश्तेदार ने विवा[...] बाद उन्हें खाने पर बुलाया था. बु[...] हलकी गुलाबी ठंडी शाम का माहौल[...] कर बड़े मन से नीले और लाल रंग[...] चुनरी पहन ली थी. ढीली चोटी की[...] और काली बड़ी बिंदी लगा ली थी. म[...] किसी कोने में अव्यक्त भावना थी, पति[...] मुग्ध कर देने की. बड़े इत्मीनान से सं[...] था बुला ने खुद को. किंतु प्रतुल आए[...] आते ही उन्होंने उस की भावनाओं के[...] ठंडे स्वर से मसल डाले थे. बुला, कृ[...] आज जूड़ा बांध लो."

हालांकि बेहद लंबे और घने[...] होने के कारण बुला ने कभी भी जूड़ा[...] बांधा था क्योंकि जहां वह बहुत भारी[...] बड़ा हो कर उस की गरदन दुखाता[...] वहीं उस के छोटे कद के कारण उस[...] जंचता भी नहीं था. ढीली लंबी चोटी[...] बुला लंबी लगती थी, इसलिए वह चोटी[...] करना पसंद करती थी.

किंतु उस रोज पति के स्वर में[...] याचना थी कि वह चाह कर भी मना[...] कर पाई. उस ने बड़े प्रयास से जूड़ा बां[...] उस के कहने के मुताबिक काली बिंदी[...] कर लाल लगा ली थी. वह खुश थी[...] चलो कोई बात नहीं. थोड़े दिनों में जूड़े[...] आदत पड़ जाएगी. अभी वह सोच ही र[...] थी कि प्रतुल एक खूबसूरत गुलाब ले[...] लाए थे और उस के जूड़े में अपने हाथ[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

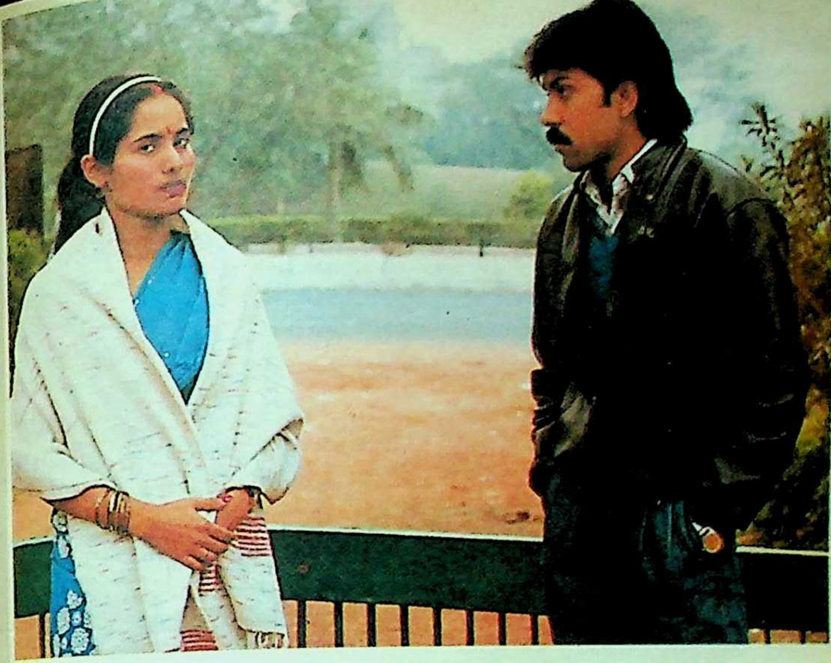

लगा दिया था.

"तुम आज बहुत सुंदर लग रही हो, बुला. सच, इतनी सुंदर मैं ने तुम्हें आज तक नहीं देखा." प्रतुल ने प्यार से बुला को बांहों में बांध चूम लिया था और उस की जूड़ा बांधने की भावना और दृढ़ हो गई थी. तभी नासमझ पति ने अगला धमाका कर दिया था, "तुम्हें देख कर आज लगा कि तुम भी स्मिता सी लगती हो. ऐसा ही फूल लगाता था मैं उस के जूड़े में."

प्रतुल तो कह गया था, किंतु बुला को लगा था कि वह नोंच कर फेंक दे जूड़े में खुंसा गुलाब. फूल भी उसे अंगारा लग रहा था. हर बात में स्मिता, हर चीज में स्मिता, हद है यह आदमी तो. इन्हें जब स्मिता में डूबा रहना था तो विवाह की आवश्यकता ही क्या थी? मैं जब इन की भावनाओं का इतना खयाल रखती हूं तो क्या यह जरा सा भी नहीं रख सकते?

प्रतुल के इस व्यवहार के कारण बुला कभीकभी इतनी आहत हो जाती कि सिवाय पश्चात्ताप के उसे कुछ न सूझता.

पति का बातबात में अपना पूर्व जीवन याद करना नए दांपत्य जीवन में जहर घोल देता है. सुखद दांपत्य की बातें उन के लिए सपना हो जाती हैं.

क्यों वह इतनी उदारवादी बन गई जो अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मार ली? सच है, पुरुष अपनी पहली पत्नी को नहीं भूलता, दूसरी तो आखिर दूसरी ही होती है.

बुला के साथ प्रतुल से विवाह करने की कोई मजबूरी न थी. 32 वर्षीय स्वस्थ, सुंदर इंजीनियर की पहली पत्नी की मृत्यु हो गई है और बच्चा भी कोई नहीं है, यह जान कर ही घर वालों ने उस से पूछा था. उस पर कोई दबाव भी न था. वह चाहती तो मना कर देती, किंतु मना करने का कोई कारण उसे नजर नहीं आया था और उस के पछतावे का कारण भी यही है कि उस ने मना क्यों नहीं कर दिया?

ऐसी स्थिति में बुला के पास करने को पश्चात्ताप ही है, किंतु जिन का विवाह दुहाजू वर के साथ किसी विवशतावश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है, वे और क्या कर सकती हैं? सिवा मन ही मन कुढ़ने के.

डाक्टर मंदिरा घोष मनोविज्ञान की व्याख्याता हैं. वह कहती हैं कि प्रतुल जैसे पति जो अपनी पूर्व पत्नी से अत्यधिक प्यार करते रहे हैं, मनोवैज्ञानिक तौर पर अपनी दूसरी वर्तमान पत्नी में उसे तलाश करते हैं क्योंकि यही तलाश उन्हें मानसिक सुकून देती है. परिणामतः वे लोग अनायास ही सामने मौजूद पत्नी को पूर्व पत्नी के बिंब में गढ़ने का प्रयास करते हैं. कभीकभी यह प्रयास सफल हो जाता है जबकि पत्नी भी उदार होती है और पति को उसे अपने ढंग से ढालने का तरीका भी आता है.

अगर प्रतुल बुला को स्मिता के रंग में ढालना भी चाहता है तो उस का एक और तरीका है. स्मिता का उल्लेख किए बिना अपनी पसंद वह पत्नी को बता देता. जहां तक बुला का सवाल है, वह अवश्य ही पति की पसंद को महत्त्व देती. कोई भी पत्नी अपने रहनसहन का तरीका पति की पसंद के अनुसार बदल सकती है, लेकिन प्रश्न है कि बात उस तक पहुंचाई किस तरह से जा रही है?

सोच समझ कर फैसला करें

दुहाजू पति बातबात में पूर्व पत्नी को याद करते हैं. यह सच है और इस कटु सत्य को जानने के बाद ही ऐसे विवाह के लिए लड़की को तैयार होना चाहिए. जो लड़कियां भावी पति और भावी दांपत्य को ले कर बेहद संकुचित और एकछत्र राज्य वाली मानसिकता रखती हैं, उन्हें किसी भी कीमत पर दूसरी पत्नी बनना स्वीकार नहीं करना चाहिए. क्योंकि पूर्व पत्नी अनुपस्थित हो कर भी कभी न कभी उन के बीच उपस्थित हो सकती है, भले ही वह मर चुकी हो.

मेरी सहेली मंगली है. पारंपरिक मान्यताओं के कारण उस का विवाह 30 वर्ष की उम्र तक नहीं हो सका. मंगली लड़के जहां मिलते या तो प्रमिला के अनुकूल न होते या उन की शर्त होती कि वह ... छोड़ दे. इसी दौरान बैंक में कार्य... वर्षीय आकाश का रिश्ता आया तो ... बातें ठीकठाक जान प्रमिला और उस ... वाले तैयार हो गए. इस तरह ... आकाश से प्रमिला का विवाह हो गया.

आकाश की पत्नी का प्रथम प्र... देहांत हो गया था और बच्चा भी नहीं ... सका था. इस दोहरी पीड़ा के ... आकाश बेहद अकेले थे और उन के ... सोचसमझ कर ही उन की बड़ी ब... प्रमिला का रिश्ता सुझाया था.

जल्दी ही प्रमिला और आ... आपस में घुलमिल गए. प्रमिला ने ... पूछ कर पति की पसंद जानी. उन की ... और इच्छाएं समझीं तो उन्हें उन के ... तालमेल बिठाने में बिलकुल भी परे... नहीं हुई.

प्रमिला के पास लंबी छुट्टियां नहीं ... इसलिए विवाह के छः मास बाद ही वे ... जा सके. आकाश ने स्पष्ट तौर पर प्र... से कहा कि वह कशमीर नहीं जाना चा... क्योंकि इस से प्रमिला के साथ अ... होगा. वह उस के साथ रह कर भी अ... मृत पत्नी को याद करेंगे. प्रमिला ... आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया ... उन्हें याद करना मना थोड़े ही है, आ... किसी के प्रति मन इतनी जल्दी रिक्त ... नहीं हो सकता? हम कशमीर ही च... ताकि आप को अपना अतीत और वर्त... एकाकार लग सके. आप की यादें मेरे ... सच हो सकें.

पत्नी के इस जवाब ने आकाश ... लाजवाब कर दिया. वह कृतज्ञ हो गए ... उन्होंने मन ही मन अपनी बहन को धन्य... दिया, जिस के कारण वह इतनी समझ... संगिनी पा सके.

प्रमिला को ननद से मालूम पड़ा था ... आकाश की मृत पत्नी जब गर्भवती थी ... उस ने घर में बताया था कि भावी सं... अगर लड़की हुई तो वे उस का ... नीहारिका रखेंगे. संयोग से प्रमिला ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी पत्नी का ध्यान रख कर ही दुहाजू पति अपने वर्तमान वैवाहिक जीवन को आनंदमय बना सकता है.

पहली संतान बेटी ही हुई. आकाश किसी काम के सिलसिले में बंबई गए थे. तार पा कर तत्काल भागे आए. समय से काफी पूर्व पैदा हुई बेटी ने उन्हें परेशान कर दिया था. पहले भी ऐसा ही हुआ था और वह खाली हो गए थे, किंतु इस बार जब ऐसा मौका आया तो वह प्रसन्नता से भीतर तक भीग गए.

"लीजिए, अपनी लाड़ली. इन्हें आप का भी सब्र नहीं था. ऐसी जल्दी थी आने की. गोद में तो ले कर देखिए नीहारिका को, बिलकुल आप पर गई है." प्रमिला की छोटी बहन ने जीजाजी को छेड़ा तो वह अवाक रह गए. "इस का नाम भी रख दिया, किस ने रखा है?"

"दीदी ने रखा है, क्यों पसंद नहीं आया? इन का जरा दर्शन तो सुनिए. आकाश की नीहारिका." नीहारिका की मौसी सारे मामले से बेखबर अपनी बात कहे जा रही थी, किंतु वह मुग्धभाव से पत्नी को देख रहे थे.

"जो बीत गया सो बीत गया" वाली बात जिन के साथ नहीं होती है, वे बीते कल को ही याद करते रहते हैं. इस चक्कर में उन से वर्तमान भी छूट जाता है. 'आज' का सुख वे नहीं महसूस कर पाते. अफसोस की बात तो यह है कि उन के साथ उन की नई पत्नी भी जीवन से पूरी तरह नहीं घुलमिल पाती है. परिणामतः सुखद दांपत्य की बातें उन के लिए सपना ही होती हैं.

दुहाजू पति, जो अपने पूर्व दांपत्य में ही भटकते रहते हैं, उन से पूछा जाए कि अगर आप की पत्नी भी आप के सामने पूर्व जीवन को इस व्याकुलता से याद करती तो आप उसे सहन करते? अगर वह विधवा, तलाकशुदा या असफल प्रेमिका होती तो?

शायद ही कोई पति ऐसा हो, जिस का जवाब इस सवाल के तौर पर 'हां' में मिले. जो लोग स्वयं दुहाजू होते हैं, कभीकभी वे अपने अधिक परिपक्व और उम्रदराज होने के कारण अविवाहित युवती से विवाह नहीं करना चाहते हैं. तब ऐसी दशा में दूसरे विवाह के पश्चात वे पत्नी से यही अपेक्षा करते हैं कि वह अपना पूर्व दांपत्य बिलकुल भूल' जाए. किंतु जब स्वयं उन से यह समझदारी की उम्मीद की जाती है तब वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी यादों से एकदम मुक्त हो जाना वास्तव में कठिन होता है, किंतु अगर कहने वाला बात मन में रख ले तब तो फिर भी ठीक है. जो निष्कपट प्रकृति के होते हैं, वे मन की बात सहज ही कह डालते हैं.

कुछ लोगों का मानना है कि अगर नई पत्नी उस के अनुकूल व्यवहार करे तो पति के मन से पुराना सब कुछ धो कर पोंछा जा सकता है.

पुरानी स्मृतियां

अपनी प्रकृति और स्वभाव के अनुसार ही विचार भी बनते बिगड़ते हैं. जहां कुछ पति अपनी नई पत्नी को पहली पत्नी के नक्शे कदम पर चलाना चाहते हैं, उस की पर्याय बनाना चाहते हैं, वहीं कुछ बिलकुल नहीं चाहते कि वह पूर्व पत्नी का अनुसरण करे. ऐसे लोग अत्यधिक लगाव के कारण ही इस तरह की मानसिकता रखते हैं.

जो पति किसी कारणवश तलाक ले कर दूसरा विवाह करते हैं, वे सामान्यतः उन पतियों की अपेक्षा अधिक सहज होते हैं, जिन की पत्नी की आकस्मिक मृत्यु हो गई होती है. तलाकशुदा पति अपनी पूर्व पत्नी से लगाव भी महसूस नहीं करता है और तलाक के कारण अव्यवस्थित हुए जीवन के कारण वह जल्दी ही दांपत्य में रम भी जाता है.

इस के अतिरिक्त उस की पुरानी स्मृतियां अधिकांशतः कटु ही होती हैं, तभी तो वह तलाक लेता है, किंतु जो अपनी पत्नी को मृत्यु के कारण खो देते हैं, उन की पीड़ा का अंत नहीं होता है. उन के दांपत्य जीवन में चाहे इतना प्यार और लगाव न रहा हो, जितना वे मृत्यु की आकस्मिकता के कारण महसूस करते हैं. ऐसी स्थिति से पति को उबारना बहुत कठिन होता है, लेकिन यह बहुत जरूरी भी होता है. पुरानी यादें बंदरिया के मृत बच्चे की तरह से उस से चिपटी रहती हैं और वह सहज नहीं हो पाता है.

विवाह कभी नहीं करना चाहिए. मानसिक तौर पर पूरी तरह से तैयार हो कर ही दूसरे विवाह की बात मन में लानी चाहिए. अगर पति पत्नी की भावनाओं को लगातार अतीत का हवाला दे कर कोंचता रहे तो उस का जीना ही दूभर हो जाता है.

पति तो पहले विवाह में ही अपने अरमान पूरे कर चुका होता है, इसलिए अब दूसरे विवाह के समय ऐसी कोई इच्छा नहीं होती है. किंतु पत्नी तो भावना... नहीं होती है. उस का तो प्रायः पहला विवाह होता है, क्या उस की स्वाभाविक भावनाएं और कामनाएं नहीं होती हैं?

कुछ दुहाजू पति तो इतने भावनाशून्य होते हैं कि अपने पहले विवाह का मधुमास चाहे उन्होंने महीने भर का और अच्छे अच्छे पर्यटन स्थल पर जा कर मनाया हो, किंतु भावनाएं तृप्त हो जाने के बाद दूसरे विवाह के बाद उन से इतना भी नहीं होता कि कम से कम उस युवती का मन रखने के लिए ही घूमने चले जाएं, जो उन की बनने वाली दूसरी पत्नी है, लेकिन वह तो उस के पहले ही पति हैं.

हालांकि उन्हें ऐसी कोई परेशानी नहीं होती है कि वह मधुमास के लिए घूमने न निकल सकें. किंतु उन की भावनाएं तृप्त हो चुकी होती हैं, इसलिए वे इस ओर से मुंह फेर लेते हैं. उन्हें वे सब बातें, वे सारी स्थितियां जो उन्होंने खुद पहले विवाह के समय की थीं, अब बनावटी, बचकानी, फुजूल और न जाने क्याक्या लगने लगती हैं.

इसी लिए विवाह का पूरा मन बना कर, पूरी तैयारी के साथ ही नई पत्नी को घर लाना चाहिए ताकि उस के साथ किसी भी प्रकार का भावनात्मक अन्याय न हो पाए. अगर अपने अतीत को याद रखना पति की भावुकता है तो क्या वर्तमान का गला घोंटना उस का भीषण अपराध नहीं है? अगर अतीत सपना है तो वर्तमान एक सचाई है. वास्तव में यही यथार्थ और अंतिम सच है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवजात शिशु मंदबुद्धि न हो

शादी के बाद प्रत्येक औरत की इच्छा होती है कि वह एक सुंदर, स्वस्थ और एक प्यारे बच्चे की मां बने. मां बनना प्रत्येक औरत के जीवन का एक सलोना सपना होता है. परंतु जब नवजात शिशु को मंगोल बेबी या मंदबुद्धि कह दिया जाता है तो मातापिता पर यह वज्र सा प्रहार होता है. उस से भी ज्यादा कष्टप्रद जीवन उस बच्चे का होता है, जो सामान्य बच्चों में एक अजूबा समझा जाता है. मंदबुद्धि बालक के जन्म के बाद उसे पूर्ण रूप से ठीक किए जाने की संभावना न के बराबर है. यदि शिशु के जन्म से पूर्व ही कुछ सावधानियां बरती जाएं तो समस्या को काफी हद तक टाला जा सकता है. आइए, ऐसी ही कुछ सावधानियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें.

लेख • सविता चड्ढा

• यह प्रयास करें कि बहुत पास के संबंधियों, खून के रिश्तों, जैसे चचेरे, मौसेरे, ममेरे बहनभाई, चाचाभतीजी में शादी जैसे संबंध न जोड़े जाएं. इस प्रकार से की गई शादियों के पश्चात होने वाले काफी बच्चे मानसिक रूप से दुर्बल होते हैं.

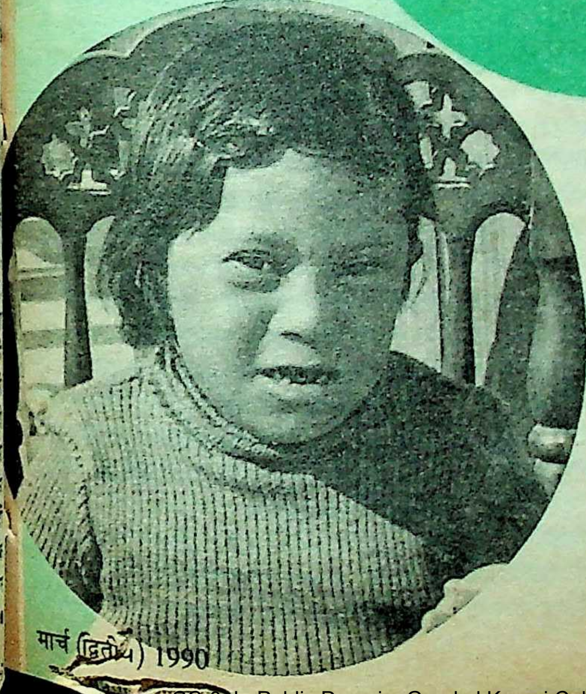

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर मां चाहती है कि वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ शिशु को जन्म दे किंतु कई बार किन्हीं कारणों से शिशु मंदबुद्धि हो जाते हैं. शिशु मंद बुद्धि न हो इस के लिए आवश्यक है कि गर्भकाल के दौरान कुछ विशेष सावधानियां बरती जाएं.

• आप के आसपास यदि किसी को खसरा, जरमन खसरा हुआ हो तो गर्भावस्था के पहले तीन महीनों में वहां जाने से परहेज करें.

• यदि गर्भधारण के कारण आप को अधिक कठिनाई सामने आई हो या बारबार आप का गर्भ गिरता रहा हो तो मां बनने से पूर्व डाक्टरी जांच अवश्य कराएं.

• गर्भावस्था के दौरान अपने पेट पर किसी किस्म की चोट या दबाव न आने दें और ऊंची एड़ी के सैंडल का प्रयोग न करें.

• गर्भावस्था में किसी तरह की नशीली वस्तुओं, जैसे बीयर, व्हिस्की, तंबाकू, सिगरेट या ऐसी ही अन्य वस्तुओं का सेवन कदापि न किया जाए. इन वस्तुओं के निरंतर प्रयोग से होने वाला शिशु मंदबुद्धि या मंगोल शिशु हो सकता है.

• गर्भावस्था के पहले तीन महीनों में स्वयं को किसी भी तरह की दवाई लेने से बचाएं. जो दवाएं कई बार डाक्टरों के द्वारा सामान्य और सुरक्षित समझी जाती हैं, वही दवाएं कुछ अवस्थाओं में शिशु में खराबी पैदा कर सकती हैं या उस का कारण बन सकती हैं.

• गर्भावस्था के दौरान मां को सदैव प्रसन्न रहना चाहिए. किसी भी तरह की मानसिक चिंता या हमेशा बुरे और भयावह विचार रखने से होने वाले शिशु पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है.

• मां बनने की इच्छा होने पर ही गर्भधारण किया जाए.

• अधिक मात्रा में विटामिन या हारमोन लेने से स्वयं को बचाएं, क्योंकि इस से भी बच्चे के जन्म से ही उस में कुछ खराबियां हो सकती हैं.

• इस अवस्था के दौरान पहा[ड़ी] स्थानों पर ज्यादा समय के लिए न रहें. [य]दि पहाड़ी स्थानों पर यदि संभव हो तो [इस] अवस्था में ही न जाएं.

• यदि आप का खून आर.[एच.] फैक्टर नेगेटिव हो तो वहीं प्रसव के लि[ए] जाएं, जहां इस तरह के खून की व्यवस्था [हो] ताकि आवश्यकता पड़ने पर तुरंत [खून] उपलब्ध कराया जा सके.

• डाक्टर से अपनी जांच कराते [रहें] और इस दौरान आप को क्याक्या खाना [है] यह भी डाक्टर से मिल कर सुनिश्चित [कर] लें. संतुलित भोजन, होने वाले शिशु के नि[र्माण में] सब से अहम भूमिका निभाता है. इस [ओर] गर्भ धारण करने वाली महिलाओं [को] विशेष ध्यान देना चाहिए.

• 35 वर्ष की आयु हो जाने पर [यह] कोशिश करें कि आप मां न बनें. मां की [आयु] 30-34 वर्ष के बीच होने पर, 750 में से [एक] बच्चा असामान्य होने की संभावना रहती [है]. 35 से 39 वर्ष की आयु में यह संभावना [...] में से एक तथा 40 से 44 वर्ष की आयु [में] बच्चा होने पर 40 में से एक बच्चा ऐसा [होने] की संभावना रहती है. यद्यपि यह भी दे[खा] गया है कि कई माताओं ने 40 वर्ष की आयु [में] भी स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया. लेकिन ऐ[सी] संभावनाओं को नकारा नहीं जा सक[ता]. मंदबुद्धि बालकों के जन्म में यह कारण [भी] कम महत्त्वपूर्ण नहीं. अतः इसे भी ध्यान [में] रखना चाहिए.

• गर्भकाल के दौरान अपने पेट [का] एक्सरे बिलकुल न कराएं.

ये कुछ ऐसे कारण हैं, जिन की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदबुद्धि बच्चे को ऐसे वातावरण में रखना चाहिए जहां उस की मानसिक कुशाग्रता तथा खेलने के प्रति रुचि बनी रहे.

लापरवाह होने पर शिशु मंदबुद्धि पैदा हो सकता है.

कुछ बच्चे पैदाइशी मंदबुद्धि न हो कर, जन्म के बाद मंदबुद्धि या मानसिक रूप से दुर्बल हो जाते हैं. जन्म के बाद शिशु के मंदबुद्धि होने के कुछ विशेष कारण हैं, जिन की ओर भी माताओं को अत्यधिक ध्यान देना चाहिए.

• बच्चे को 101 डिगरी से ज्यादा बुखार न हो, इस का ध्यान रखा जाए.

ज्यादा बुखार होने पर तुरंत डाक्टर से सलाह लें. यदि डाक्टर दूर हो तो 101 डिगरी से ऊपर बुखार होने की अवस्था में ठंडे पानी से या बर्फ की पट्टी रख कर बच्चे के बुखार को तुरंत कम करने का प्रयास करें.

• बच्चे के सिर में किसी भी तरह की चोट न लगे. इस का ध्यान रखें.

• बच्चे को छूत के रोगों, गैस के धुएं आदि से बचाएं.

• इस बात का पूरा ध्यान रखें कि बच्चा स्वस्थ वातावरण में पले और बढ़े.

• बच्चे को ऐसे वातावरण में रखें, जिस में उस की मानसिक कुशाग्रता तथा खेलने की रुचि बने.

• बच्चे को हरी सब्जियां और अन्य संतुलित तरल पदार्थ दें. दवाओं के स्थान पर उसे अन्य ऐसी चीजें खिलाएं, जिस से उस की शारीरिक एवं मानसिक वृद्धि हो सके.

• बच्चे को मिट्टी, लकड़ी के टुकड़े, रद्दी कागज खाने से रोकें. यदि बच्चा जिद करे या न रुके तो फौरन डाक्टर से मिल कर इलाज कराएं.

• यदि आप को बच्चे के पांच वर्ष की आयु होने तक उस की वृद्धि में कोई असामान्य बात दिखे तो बिलकुल लापरवाही न करें और तुरंत डाक्टर की सलाह लें.

• यदि बच्चे को दस्त या उलटी की शिकायत हो और बच्चा लगातार 15 दिन तक इस रोग से ग्रस्त रहता है तो उस के मानसिक विकास पर उस का असर होने का भय रहता है.

• कई संक्रामक ज्वर जैसे 'एंसेपलाइटिस' या 'मैनिंजाइटिस' भी मस्तिष्क को हानि पहुंचाते हैं.

हालांकि मंदबुद्धि बालकों की पैदाइश के संबंध में पूर्ण रूप से खोज नहीं की जा सकी और एक विशेष कारण भी इस के लिए निर्धारित नहीं किया जा सकता, फिर भी यदि गर्भावस्था के दौरान ऊपर बताई गई बातों को ध्यान में रखा जाए तो इस गंभीर समस्या से बचा जा सकता है. बालक के जन्म के पश्चात कम से कम पांच वर्ष की आयु तक उस की ओर विशेष ध्यान दिया जाए और ऊपर बताई गई बातों को अमल में लाया जाए तो आप की संतान आप के घर की शोभा बढ़ाएगी. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के मुख से

मेरा पौत्र बहुत ही वाचाल और बात को पकड़ने वाला है.

एक दिन मैं उसे जीवजंतुओं के निवास के बारे में पढ़ा रहा था. उसी दौरान हमारा दूध वाला आ गया. मुझे उस दूध वाले को महीने भर के दूध के पैसे देने थे. इसलिए मैं ने अपने पुत्र से पूछा, "दूध वाले का बिल कहां है?"

पुत्र कोई जवाब देता, उस से पहले ही पौत्र बोल पड़ा, "बाबा, क्या दूध वाला भी बिल में रहता है."

—महेश चंद्र मिश्र

*

एक बार मैं अपने पांच वर्षीय भानजे के साथ एक शादी में गई. शाम को द्वाराचार के समय वहां काफी भीड़ जमा हो गई. वहां उपस्थित लोग जब दूल्हे को देखने के लिए आपस में धकमपेल करने लगे तो मेरा भानजा बोला, "मौसी, यहां इतनी भीड़ क्यों है, क्या यहां मिट्टी का तेल बंटेगा?"

उस की बात सुन कर वहां उपस्थित लोग हंसे बिना नहीं रह सके. दरअसल ऐसी भीड़ उस ने पहले मिट्टी के तेल की दुकान पर देखी थी.

—विश्वप्रभा कुलश्रेष्ठ

*

30 अगस्त यानी 'भारत बंद' के दिन हम सभी टेलीविजन पर रात्रि के समाचार सुन रहे थे. समाचार में बारबार बताया जा रहा था कि 'बंद' का देश पर कोई खास असर नहीं पड़ा है."

तभी चार महानगरों का तापमान बताने की बारी आई जिसे सुन कर मेरे चार वर्षीय भानजे ने बड़े भोले स्वर में कहा, "भारत बंद का आज के तापमान पर कोई खास असर नहीं पड़ा है."

—राजीव डागा

मेरी सहेली की सात वर्षीया लड़की [illegible] बार अपने जीजाजी के साथ घूमने [illegible] जब वह घर वापस आई तो रोंआसी हो [illegible] अपनी मां से बोली, "अम्मां, मैं जीजाजी [illegible] साथ घूमने नहीं जाऊंगी." सहेली ने पूछा "क्यों?" तो वह बोली, "जीजाजी मुझे [illegible] रास्ते गाली देते आए हैं."

दरअसल उस के जीजाजी उस का [illegible] न ले कर उसे साली कह कर बुला रहे थे.

—इंद्रजीत [illegible]

*

एक बार मेरे भैया और भाभी में अन[illegible] हो गई. भैया ने चार वर्षीया अपनी [illegible] से कहा, "रेशमा, अपनी मां से कह दो [illegible] एक प्याला चाय बना दे."

जवाब में भाभी बोलीं, "रेशमा, [illegible] पिताजी से कहो कि थोड़ी देर ठहरें."

थोड़ी देर बाद जब भाभी चाय ले [illegible] तो रेशमा बोली, "मैं ने चाय लाने के लि[illegible] आप से कहा ही नहीं था, फिर आप चाय [illegible] ले आईं?"

—आदिल मुहम्मद [illegible]

*

दूरदर्शन पर 'महाभारत' दिखाया [illegible] रहा था. सुभद्रा हरण का दृश्य आने [illegible] मेरे 10 वर्षीय बेटे ने पूछा, "मां, कृष्ण [illegible] अपनी बहन का हरण क्यों करवा दिया."

मेरा सात वर्षीय बेटा बोल पड़ा "ताकि दहेज न देना पड़े."

—कांताराजेंद्र गुप्ता

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधि[illegible] बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. [illegible] प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तक पुरस्कार [illegible] जाएगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें. संपादक[illegible] विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मा[illegible] नई दिल्ली- 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाज आई उन के दौरे से

व्यंग्य • रेखा कौस्तुभ

पड़ोस की रमा थैले में कुछ रख कर लाई थी. जब मैं ने खोल कर देखा तो उस में ढेर सारे संतरे थे. मैं ने आश्चर्य से पूछा, "इतने संतरे? क्या रातोरात संतरों का बगीचा खड़ा कर लिया है?" इस पर उस ने आंखें मटका कर जवाब दिया, "नहीं बहन, मेरे पति भवानीमंडी दौरे पर गए थे. वहां संतरे बहुत होते हैं, अतः लौटते में ढेर सारे संतरे खरीद लाए, जो खत्म होने में ही नहीं आ रहे हैं. पूरे महल्ले में बंटवा दिए, फिर भी अभी ढेर लगा पड़ा है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस की बातें सुन कर मैं मन ही मन अपने पति को कोसने लगी, जो कभी दौरे पर नहीं जाते. प्रायः महल्ले में किसी न किसी के मुंह से सुनने को मिलता ही रहता है कि अमुक के पति आज दौरे पर गए हैं अथवा दौरे से लौटे हैं तथा पत्नी, बच्चों के लिए ढेर सारी सौगातें लाए हैं. कुछ पड़ोसिनें तो चेहरे पर ढाई इंच मुसकान लिए महल्ले, रिश्तेदारों को दौरे का गुणगान करती हुई सौगातें बांटती फिरती हैं.

एक दिन तो मेरे आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही, जब मैं ने देखा कि हमेशा काम में व्यस्त रहने वाली सरिता हाथ पर हाथ धरे सजसंवर कर बैठी हुई थी. मेरे पूछने पर उस ने बताया कि उस के पति दौरे पर गए हुए हैं. इसलिए आज वह अपनी सहेली पूनम के साथ फिल्म देखने जाएगी.

पति जब दौरे से लौटे तो उन्हें देखते ही मेरा मन कल्पना के आकाश में उड़ान भरने लगा. पता नहीं क्याक्या लाए होंगे मेरे लिए. लेकिन यह क्या? दो बोरे. मैं चौंक गई और जब खोल कर देखा तो माथा ठोक लिया... हाय रे दौरा.

काश, मैं भी कभी सरिता की तरह यों फिल्म का आनंद उठा पाती. मेरे पास तो खाली समय ही नहीं बचता. सुबह उठते ही पति की हाजिरी में खड़े हो जाओ, उठते ही चाय, नाश्ता आदि में ही 10 बज जाते हैं.फिर दोपहर का खाना बनाना होता है. इस प्रकार यों ही पूरा दिन गृहस्थी की चक्की में पिसते हुए व्यतीत हो जाता है. सचमुच जिन के पति दौरे पर जाते हैं, उन की पत्नियों को कुछ दिनों के लिए तो आराम मिलता ही होगा, तभी तो सरिता फिल्म देखने जा रही थी.

हमारी एक अन्य पड़ोसिन शीला की तो अदा ही निराली है.जब उन के पति दौरे पर जाने वाले होते हैं तो यह उन के सामने विभिन्न फिल्मी संवाद बोलती हुई, 'न जाइयो परदेस...' आदि फिल्मी गीत गाती है.

बेचारे भावुक पति दौरे पर जाने से पूर्व जरूरत से कहीं ज्यादा उदार हो जाते हैं और खर्चे के लिए ढेर सारे रुपए पत्नी की झोली में डालते हुए कहते हैं, "किसी प्रकार की तकलीफ मत उठाना और रुपयों की आवश्यकता पड़े तो बैंक से निकलवा लेना. 'चैक बुक' पर हस्ताक्षर कर दिए हैं."

परिणामस्वरूप पति के प्रस्थान करते ही शीला अपनी मुंहबोली बहन सीमा के साथ खरीदारी के लिए निकल पड़ती है. जब तक पतिदेव लौटते हैं, बहुत सारे रुपए खर्च हो चुके होते हैं.

पिता के जाते ही बच्चों को भी मनमानी छूट मिल जाती है. घर में पिता के न रहने से घर में ही क्रिकेट खेल कर शीशे तोड़ने की छूट ही नहीं मिल जाती, वरन इधरउधर भटकने की छूट भी मिल जाती है. मां भी बच्चों को नहीं टोकती क्योंकि वह तो स्वयं 'बिना लगाम की घोड़ी' बनी स्वतंत्र रहती है. नौकरचाकर भी साहब के न रहने से स्वछंद हो जाते हैं.

मेरे पति को भी कुछ समय पूर्व दौरे वाली नौकरी मिल गई. यह जान कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि अब मैं भी गर्वपूर्वक अपनी पड़ोसिनों को कह सकूंगी कि, 'रिंकू के पिता दौरे पर गए थे, वहां से अमुक वस्तु लाए हैं.' और फिर लाई हुई सौगातें बंटवाया करूंगी. पति के दौरे पर जाते ही जी भर कर विश्राम करूंगी, पिक्चर देखूंगी.

मन ही मन कई तरह के कार्यक्रमों की रूपरेखा बना डाली. कल्पना में मुझे लगा कि मेरे पति दौरे पर गए हुए हैं और मैं सैरसपाटे करती फिर रही हूं. पति दौरे से वापस आए हैं और ढेर सारी साड़ियां तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चावल और चने की भारी बोरियां देख मैं ने अपना माथा ठोक लिया, पर वे समझाने लगे कि गांवों की तो यही दो प्रसिद्ध वस्तुएं हैं.

अन्य वस्तुएं लाए हैं.

याद आया, एक दिन सरिता भी साड़ियां दिखा रही थी और इतराइतरा कर बता रही थी कि 'ये साड़ियां मेरे पति दक्षिण से लाए हैं.' इतनी सारी साड़ियों में से वह मेरे को कीमत देने के बदले एक साड़ी भी देने को तैयार नहीं हुई जबकि उस ने अपनी कई चहेती सहेलियों को तो यों मुफ्त में ही बांट दी थीं.

आखिर वह दिन भी आ ही गया, जिस दिन मेरे पति दौरे पर जाने वाले थे. मैं ने एक दिन पूर्व ही उन के प्रस्थान की संपूर्ण तैयारियां कर दी थीं. उन के जाने के बाद मैं बेसब्री से उन के लौटने का इंतजार करने लगी. उन के वापस आने से ज्यादा मुझे उन वस्तुओं का इंतजार था, जो वह मेरे लिए लाने वाले थे.

आखिर वह दिन भी आ ही गया, किंतु यह क्या? वह तो यों ही खाली हाथ लौट आए? मुझे उन के लौट आने की खुशी बिलकुल भी नहीं थी. हां, खाली हाथ चले आने का दुख अवश्य था. मैं ने आते ही सर्वप्रथम उन के ब्रीफकेस को खोल कर देखा था, जिस में उन के पहनने के गंदे कपड़ों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिरिक्त कुछ भी नहीं था. मैं अपनेआप को रोक नहीं सकी और आगबबूला हो उठी.

मैं ने उन से कहा, "शर्म नहीं आई आप को, यों खाली हाथ लौटते हुए. भला मैं पड़ोसिनों को क्या मुंह दिखाऊंगी? महेंद्रजी और गोपेशजी जब भी दौरे पर जाते हैं, कुछ न कुछ अवश्य लाते हैं."

इन्होंने कहा, "अरी, मैं कोई बड़े शहर में थोड़े ही गया था, जो वहां की कोई प्रसिद्ध वस्तु ले आता. तुम ही सोचो, छोटे गांव से भला क्या खरीद कर लाता?"

फिर भी मैं ने उन की एक न सुनी, आखिर त्रियाहठ के आगे उन्हें झुकना ही पड़ा और उन्होंने वादा किया कि वह भविष्य में कभी खाली हाथ नहीं लौटेंगे.

अगले दौरे में फिर उन्हें किसी गांव में ही जाना पड़ा. लौटने पर उन्होंने रिकशे में से दो भारी बोरियां उतरवाईं. खोलने पर पता लगा कि उन में चावल और चने हैं. देख कर मैं ने अपना माथा ठोक लिया. चावल तक तो ठीक था, किंतु इतने सारे चनों का मैं क्या करूंगी?

इन्होंने कहा, "पड़ोसिनों को बांट देना और अपने लिए भी दाल बना लेना."

भला मैं दाल बनाऊं? कौन चक्की से मत्था मारेगा? इन्होंने समझाने का प्रयास किया कि गांवों की तो यही प्रसिद्ध वस्तुएं हैं. उसी माह उन्हें फिर दौरे पर जाना पड़ा. अब की बार वह ढेर सारे कच्चे आम ले आए थे, जिन को मैं ने पूरे महल्ले में बंटवा कर अपने मन की भड़ास निकाल ली थी, फिर भी वे समाप्त नहीं हो पा रहे थे. विभिन्न प्रकार के अचार, चटनियां बनाने के बावजूद भी ढेर सारे आम बच रहे थे. रोजाना खाने में भी आम से बने व्यंजन खातेखाते बच्चे तथा पतिदेव सभी तंग आ चुके थे.

एक बार तो इन्होंने गजब ही कर दिया. दिल्ली दौरे पर गए थे. वहां से ढेर सारी एक ही रंग की ऊन उठा लाए. दिन भर का काम और फिर ऊपर से स्वेटर के बनाने का झमेला. मरती क्या न करती, स्वेटर तो बनाने ही थे, सो सब के स्वेटर बु डाले.

स्वेटर बनातेबनाते मन ऊब चुका था, ऊपर से सुबहशाम पति के तकाजे, "अरे, इतनी ऊन पड़ी है, पिताजी का स्वेटर नहीं बनाया? अभी मांजी का स्वेटर भी अधूरा ही पड़ा है."

उधर पड़ोसी भी हमारे वरदीनुमा स्वेटर देख कर हंसा करते थे. एक दिन पिंकी को जुकाम हो रहा था. यह बोले, "इस के लिए स्कार्फ नहीं बनाया, इतनी सारी ऊन लाया था, रख कर क्या उस का अचार डालोगी?" स्वेटरों के फंदों में मैं ऐसी उलझ चुकी थी कि कुछ न पूछिए. कई बार तो हम दोनों में कहासुनी तक हो जाती थी. उन दिनों वह प्रायः विभिन्न पत्रिकाओं के बुनाई विशेषांक उठा लाया करते थे.

यदि कोई डिजाइन समझ नहीं आता तो यह कहते, "न जाने तुम ने कैसे एम.ए. पास कर लिया है. मामूली स्वेटर तक का डिजाइन समझ नहीं आ रहा है?"

रोजाना उन के व्यंग्य सुनसुन कर तंग आ गई थी. गुस्सा आता था पत्रिकाओं के संपादकों पर. उन को तो बुनाई करनी नहीं होती. नित नए उलटेसीधे डिजाइनों के बुनाई विशेषांक निकालते रहते हैं. भले ही पाठकपाठिकाओं के घरों में रोज 'महाभारत' होता रहे.

एक दिन पड़ोस की जया ने पूछा, "क्यों बहन, तुम्हारे पति दौरे पर कब जा रहे हैं? मेरे तो वह गए आज, तुम भी शीघ्र ही भेजो न, ताकि हम भी सैरसपाटे के लिए निकलें."

यह सुन कर मैं ने झुंझला कर उत्तर दिया, "भाड़ में गया दौरा. चार दिन के सैरसपाटे और महीनों की परेशानी. मैं तो चाहती हूं, मेरे पति कभी दौरे पर न जाएं. दौरे पर जाने से पूर्व पूरी तैयारियों के साथ उन को यों विदा करो, जैसे कि बेटी को ससुराल विदा किया जाता है और फिर लौटने के पश्चात फिर वही ढेर सारा काम, पड़ोसिनों की पूछताछ, पति के ताने और न जाने क्याक्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक पुस्तकें

सेट नं. 23

वीरान टापू	रु. 2.00	आदमी की कहानी	रु. 3.00
योगी राज	रु. 2.50	अज्ञात द्वीप	रु. 3.00
चीकू से बलवान हारा	रु. 2.50	हमारी सेना	रु. 3.00
घड़ी की टिकटिक	रु. 2.50	घाट का चोर	रु. 3.50
दो नारे	रु. 2.50	सत्य का बल	रु. 3.50
मां को बता देना	रु. 2.50	राजा की अंतरिक्ष यात्रा	रु. 3.50
मंगल की सैर	रु. 3.00	अनमोल शंख	रु. 4.00
प्रसिद्ध वैज्ञानिक	रु. 3.00	शुक्र की खोज	रु. 4.00
अनोखा मित्र	रु. 3.00	संकट के साथी	रु. 4.00
पहेली	रु. 3.00	दुश्मनों के बीच	रु. 4.00

पूरा सैट केवल 50 रुपए में.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेजें:

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1.

पूरे सैट का मूल्य 50 रुपए अग्रिम भेज कर वी.पी.पी. द्वारा मंगवाने पर डाक खर्च केवल दो रुपए • यही सैट वी.पी.पी. द्वारा मंगवाने पर डाक व्यय सहित मूल्य 57 रुपए • सैट के बजाए चुनी हुई पुस्तकें मंगवाने पर 15 प्रतिशत राशि अग्रिम भेजें, बकाया वी.पी.पी. से, डाक व्यय अतिरिक्त • कृपया सैट का नंबर अवश्य दें • अग्रिम राशि चैक द्वारा नहीं, केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के कुछ गांवों में अभी भी प्रथा है कि विवाह के पश्चात दूल्हा अमावस्या की रात को कुलदेवता के मंदिर में अकेला जाता है.

हाल ही में जब नवविवाहित युवक प्रथा के अधीन मूर्ति के दर्शनार्थ मंदिर जा रहा था तो घुप अंधेरे के कारण वह एक खाई में गिर कर अंधविश्वास की बलि चढ़ गया. —संजीव शर्मा

*

हमारे यहां सूर्यग्रहण के दिन बड़े आकार के बरतन में पानी भर कर घर के बाहर रख दिया जाता है और वही पानी पीने के लिए उपयोग में लाया जाता है.

इस बार मैं ने इस का विरोध किया. किंतु अंधविश्वास में जकड़े लोग भला कहां मानने वाले थे. संयोग से पड़ोसी के यहां से लौटते हुए माताजी ने देखा कि सारा पानी फैला हुआ है और बरतन गायब हैं.

तब भी माताजी ने अपनी गलती मानने के बजाय इसे 'सूर्य देवता' का क्रोध माना. —अर्जुन के.सी.

*

हमारे यहां गर्भस्थ शिशु का लिंग जानने का एक रूढ़िवादी तरीका है. त्योहार के दिन गरम घी में आटे की एक छोटी गोली बना कर डालते हैं. यदि वह एकदम फूट जाती है तो संतान लड़की होगी और गोली थोड़ी फूटी या लकीरें आईं तो लड़का होगा, ऐसा माना जाता है.

इस बार जब हमारे पड़ोसी परिवार में ऐसा किया गया तो आटे की गोली इतने जोर से फूटी की गर्भवती पड़ोसिन के पति का मुंह, हथेली व पैर बुरी तरह जल गए.

यद्यपि उन्हें तुरंत हस्पताल ले जाया गया, फिर भी कई महीने तक उन की दशा गंभीर रही. —कुसुमलता सि[illegible]

*

हमारे पड़ोसी गांव में हर बीमारी का इलाज झाड़फूंक करने वाले के पास ही जा कर ढूंढ़ा जाता है.

पिछले दिनों उस गांव की एक किशोरी बीमार हो गई. उस के मातापिता एक 'महात्मा' के शिकंजे में खुद ही जा फंसे. उस ने कहा, "बच्चा, कन्या को मैं कमरे में ले जा रहा हूं. यदि वह चिल्लाए तो अंदर नहीं आना अन्यथा प्रेतात्मा इसे कभी नहीं छोड़ेगी."

लगभग आधे घंटे बाद वह लड़की सहित कमरे से बाहर आया और लड़की सौंप कर वहां से चलता बना. बाद में मालूम हुआ कि वह आधे घंटे तक उस बच्ची के शरीर से खेलता रहा था. —सीमदेव आ[illegible]

*

सिंधी परिवारों में प्रथा है कि नवविवाहित दंपती विवाह के पश्चात प्रथम पूर्णिमा तक घर से बाहर नहीं निकलते.

हमारे ऐसे ही एक पड़ोसी के यहां शादी के दूसरे दिन ही नववधू सीढ़ियों से फिसल गई, जिस से उस के एक पैर में गहरी चोट आई. किंतु अपशकुन का भय दिखा कर उसे इलाज के लिए घर से बाहर नहीं ले जाया गया. —किरण ललवानी

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना काम, अपना चाम अपना दाम

लेख ● कि.स. भटनागर

एक शाम ब्रजमोहन अपने मित्र श्याम बहादुर के यहां गए तो कुछ अंधेरा-अंधेरा लगा. पहले जाते थे तो बाहर बरामदे में 100 वाट का बल्ब चमकता रहता था. कमरों में कहीं 100 वाट का, कहीं 250 वाट का बल्ब लगा रहता था. पूछने पर कि इतने पावर के बल्ब क्यों? तो उत्तर होता था कि आंखें बल्ब से अधिक प्यारी हैं. पर उस दिन गेट पर 25 वाट का बल्ब था व घर के अंदर 40 व 60 वाट के टिमटिमा रहे थे.

ब्रजमोहन ने मजाक के लहजे में पूछा, "क्या हुआ भाई, आंखों से ज्यादा बल्ब प्यारे हो गए?" श्याम बहादुर ने जवाब दिया, "भाई साहब, सरकार की मदद कर रहा हूं. एक यूनिट बिजली बचाना यानी दो पैदा करना."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ व्यक्तियों के लिए अपना स्वार्थ बहुत महत्त्वपूर्ण होता है चाहे इस स्वार्थपूर्ति के लिए किसी दूसरे का कोई भी नुकसान हो. समाज में ऐसे व्यक्ति अकसर ही मिल जाते हैं. कहीं आप भी इन्हीं में से तो नहीं?

उन की पत्नी तपाक से बोली, "भाई साहब, इन की देशभक्ति की बातों में न आइए. बात यह है कि पहले हम मकान मालिक के मत्थे जलाते थे. कोई संकोच नहीं था. 25 रुपए दिए और छुट्टी. अब उस ने अलग मीटर लगवा दिया है तो हम सावधान हो गए हैं."

शीला एक दिन अपनी सहेली उषा के यहां गई. उषा रसोई में खड़ी सब्जी काट रही थी और गैस बेकार जल रही थी. उस ने पूछा, "गैस व्यर्थ क्यों जला रही हो. सब्जी छौंकना हो तब जला देना?" उत्तर था, "अरे कौन झंझट करे, बारबार माचिस की तीली बरबाद करे. कंपनी को माह के 25 रुपए देने पड़ते हैं. गैस चाहे जितनी जलाओ. जलने दो, कम जलेगी तो भी 25 रुपए तो देने ही होंगे." शीला ने समझाने की कोशिश की तो उषा ने मुंह फुला लिया.

कुछ दिन बाद उषा के पति का तबादला ऐसे शहर में हुआ जहां उसे खरीद कर अपना सिलेंडर लेना पड़ता था. जब शीला वहां मिलने गई तो देखा कि उषा 100 रुपए के लाइटर से गैस जला रही थी. शीला ने कहा, "भाई, 30 रुपए का लाइटर आ जाता है. 100 रुपए खर्चने की क्या जरूरत थी." उषा ने उत्तर दिया, "30 रुपए के लाइटर को दोतीन बार जलाना पड़ता है, तब गैस आग पकड़ती है, इतनी देर तक गैस बरबाद होती है. इस 100 रुपए वाले लाइटर से कई चिनगारियां एक साथ निकलती हैं जिस से गैस जल्दी जल जाती है. इस से गैस की बचत होती है." शीला हतप्रभ रह गई. कंपनी की गैस है तो अपनी माचिस की तीली खर्च करना भी भारी, पर यदि अपनी है तो जलाने के लिए 100 रुपए का लाइटर लेने में भी हिचकिचाहट नहीं.

एक कार्यालय में विनोद और श्रीकांत काम करते थे. विनोद बिल पास करता था, श्रीकांत खजांची था, बिलों का भुगतान करता था. खजांची भुगतान करने में कुछ समय ले लेता था. काम कुछ अधिक जो था. लोग विनोद से बिल के बारे में पूछने आते तो वह हिकारत से कहता, "मैं ने तो दूसरे ही दिन खजांची के पास भेज दिया था, वह न जाने कैसा कामचोर है कि रखे रहता है. काम कुछ है नहीं, फिर भी देरी करता है."

उस के अधिकारी ने यह बात कई बार सुनी तो दोनों की अदलाबदली कर दी. अब भुगतान और देर से होने लगा. लोग श्रीकांत के पास आते. वह कहता कि मैं ने तो बिल उसी दिन खजांची के यहां भेज दिया. खजांची विनोद अपनी सफाई देता, "काम इतना अधिक है कि दम मारने की फुरसत नहीं." जब श्रीकांत खजांची था तो विनोद की नजर में वहां काम नहीं था. विनोद खजांची हुआ तो वहां काम ही काम हो गया.

सुरेश के घर सासबहू का काम बंटा हुआ था. सास खाना पकाती, बहू ऊपर का काम देखती. बहू कहती, "घर में ऊपर के इतने काम रहते हैं कि कुछ तो दिखते ही नहीं. सासजी ने रसोई में चार फुलके क्या सेंक लिए अपने काम का रोना रोने लगीं."

कुछ दिन सुनने के बाद एक दिन सास ने कहा, "बहू, चौके का काम कम होता है, तुम्हारा अधिक है, कल से तुम चौका संभालो मैं ऊपर का निबटाऊंगी."

अब शीला को रसोई भारी पड़ने लगी. सुबह का चायनाश्ता, दोपहर का खाना, शाम की चाय, रात का खाना, काम ही काम हो गया कि दम मारने की फुरसत नहीं. अब कहने लगी, "ऊपर का भी कोई काम है झाड़ू उठाई, एक यहां मारी दूसरी वहां. काम तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

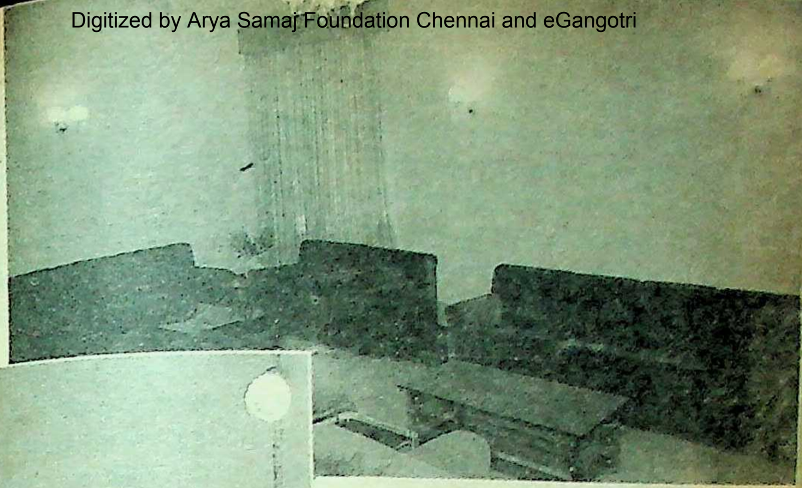

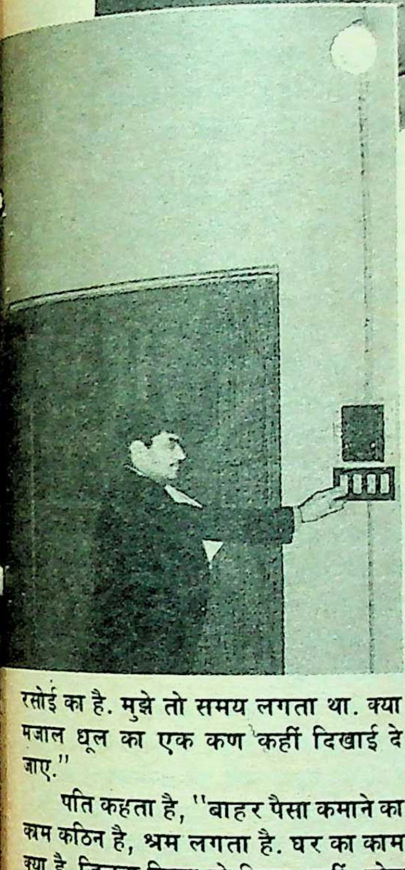

घर में कितने बल्ब जलाएं जाएं यह इस बात पर निर्भर करता है कि बिजली का बिल कौन भरता है मकान मालिक या स्वयं किराएदार.

रसोई का है. मुझे तो समय लगता था. क्या मजाल धूल का एक कण कहीं दिखाई दे जाए."

पति कहता है, "बाहर पैसा कमाने का काम कठिन है, श्रम लगता है. घर का काम क्या है. जितना किया तो किया, नहीं, छोड़ दिया." पत्नी कहती है, "घर से बाहर निकले दफ्तर में जा बैठे. पंखा चलाया, चाय पी, शाम हुई घर आ गए और पसर कर बैठ गए. मानो बड़ी मेहनत कर के आए हों. काम तो मेरा है सुबह उठो, नाश्ता बनाओ, बच्चों को स्कूल भेजो, खाना बनाओ, खिलाओ, कपड़े धोओ, कोई एक काम है? काम ही काम हैं सुबह से रात तक."

पर जब पत्नी बीमार पड़ती है और पति को घर का काम संभालना पड़ता है तो आटेदाल का भाव मालूम हो जाता है. घर की आर्थिक जिम्मेदारी संभालने वाली महिला से पूछो तो कहेगी, "कितना काम होता है बाहर, कितनी थकावट होती है. एक घंटा बस में बैठ कर कचूमर निकल जाता है." पर पति को न काम करने से थकावट होती है और न बस में बैठने से उस का कचूमर निकलता है.

उमेश एक बड़ी कंपनी का निर्देशक था. दिल्ली आया तो उसे पांच सितारा होटल 'इंपीरियल' में ठहराने का प्रबंध हुआ. उसे शिकायत रही कि पद के हिसाब से उसे 'ताज' में ठहराना चाहिए था. कुछ दिन बाद वह अपने निजी काम से दिल्ली आ रहा था. स्थानीय संपर्क अधिकारी के पास फोन आया कि उस के ठहरने का प्रबंध किसी अतिथि गृह या किसी संस्था के होस्टल में करवा दें. कंपनी के खर्च पर 'इंपीरियल' होटल भी हेय था, पर स्वयं के खर्च पर साधारण अतिथि गृह ही यथेष्ट.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमा के घर मेहमान आ रहे थे. पड़ोस में रश्मि के घर से बढ़िया चाय के प्याले और केतली मांग लाई. तीनचार दिन वापस नहीं आए तो रश्मि उस के यहां याद दिलाने को पहुंची. चाय आई तो चौंक पड़ी. उस के अपने प्यालों में ही चाय पेश की गई थी. प्याले गंदे हो रहे थे. मानो चार दिन से केवल धोधो कर काम में लाए जा रहे हों. सीमा के अपने घटिया प्याले सामने शो केस में तरतीब से रखे चमचम चमक रहे थे.

रश्मि को सहन नहीं हुआ कि जिस क्राकरी को वह स्वयं यदाकदा ही काम में लाती थी वह सीमा अपने दैनिक काम में ला रही थी और बेशरमी इतनी कि उस ने रश्मि को ही उन में चाय पेश की. रश्मि ने कह ही दिया, "वाह बहन वाह, मेरी क्राकरी मेहमान के लिए लाई थीं, उसे दैनिक काम में ला रही हो. साफ करने का भी कष्ट नहीं उठा सकी हो. अपनी क्राकरी शो केस में रखी है कमाल है. मैं अभी उसे वापस ले कर जाऊंगी." और साथ ही ले गई. सीमा अब शिकायत करती है कि अपनी क्राकरी का रश्मि को कितना घमंड है.

अपना समय ही कीमती क्यों?

अब देखिए अपने समय की बात. स्वदेश ने अपनी बेटी की वर्षगांठ पर एक पार्टी दी. रात 9 बजे उसे किसी काम से जाना था इसलिए उस ने साढ़े छः बजे का समय दिया था. यह सोच कर कि साढ़े आठ बजे तक दावत निबट जाएगी. साढ़े 6 बजे तक निमंत्रित व्यक्ति आते रहे. स्वदेश कुड़कुड़ाती रही कि किसी को उस के समय का ध्यान नहीं है.

कुछ दिन बाद मीना ने अपने बेटे का जन्मदिन मनाया. शाम को 8 बजे का समय दिया था. साढ़े 8 बजे तक जब कोई नहीं आया तो संतुलन खो बैठी, शिकायत करने लगी, "किसी को समय का ध्यान नहीं है. क्या मैं इस आयोजन को ले कर रात भर बैठी रहूंगी?" स्वदेश जिसे कुछ दिन पहले लोगों के देर से आने के कारण अपना कार्यक्रम रद्द करना पड़ा था साढ़े 9 बजे आई.

संसार में तीन तरह के व्यक्ति होते हैं सामान्य, मध्यम व उत्तम. सामान्य 80% होते हैं. मध्यम 15% व उत्तम 5%. सामान्य व्यक्ति पूरी तरह अपने लिए जीता है. उस में स्वार्थ की मात्रा शत प्रतिशत होती है मध्यम श्रेणी के लोगों में दूसरों के दृष्टिकोण से देखने की क्षमता 25% होती है और उत्तम लोगों में यह अनुपात 50:50 रहता है.

अतः किसी में उपर्युक्त व्यवहार दिखाई दे तो उसे सामान्य व्यक्ति समझ कर ध्यान न दें. एक सामान्य व्यक्ति में मध्यम व उत्तम व्यक्ति के गुणों की अपेक्षा करना और उन्हें न पा कर स्वयं को परेशान करना नादानी ही है.

फिर भी अपना दाम, अपना काम, अपना चाम ही अच्छा समझने की प्रवृत्ति अच्छी नहीं, अच्छी आदत नहीं. होना तो चाहिए कि दूसरों के चाम, दाम, काम को इतना ही महत्त्व दें जितना हम स्वयं के चाम, दाम, काम को देते हैं. होना तो यह चाहिए कि हम दूसरों से जैसे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं वैसा ही उन्हें दें.

यह भी तथ्य है कि हर कोई अपनी समस्याओं में इतना व्यस्त रहता है कि उसे यह देखने का समय ही नहीं रहता कि कौन क्या कर रहा है. हां, जब काम होता नहीं तो अवश्य दिख जाता है. किया तो नजरअंदाज हो जाता है. इस से मन खट्टा होना स्वाभाविक है.

कई लोग काम जरा सा करते हैं और बखान बहुत करते हैं. पर कुछ अपने किए को, अपने किए खर्चे को संकोचवश व्यक्त नहीं करते. पर यह रवैया व्यावहारिक दृष्टि से उचित नहीं है. अपने किए को, अपने किए खर्चे को अतिरंजित रूप में नहीं, पर सही मात्रा में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य बतला दें कि क्या किया है, क्या खर्चा है ताकि कम से कम यह तो न सुनना पड़े कि कुछ नहीं किया. किए की दाद न मिले पर कर के भी न करने का फतवा तो न मिले. ध्यान रहे, कहोगे नहीं तो मालूम कैसे होगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

WE announces:

SPECIAL ISSUE
ON
COMMON AILMENTS
OF WOMEN

APRIL (FIRST) 1990

A SPECIAL ISSUE TO HELP YOU KEEP A
HEALTHY MIND IN A HEALTHY BODY

RESERVE YOUR COPY TODAY

Woman's era
BUILDS YOUR PERSONALITY • BUILDS A HAPPY HOME

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांझ होते ही वातावरण कुछ बोझिल सा हो गया. चौधरी महल्ले में गहमागहमी मच गई. मछली बाजार में शोर अलग बढ़ गया था. सहसा पारो पगली के पीछे बच्चों की टोली पत्थर मारती आ निकली. पारो अपने बचाव के लिए सदा की भांति अन्नपूर्णा की हवेली की ओर दौड़ पड़ी. एक वही तो है उस की रक्षा करने वाली. इन बच्चों से, लोगों की उपेक्षा और व्यंग्यबाणों से बचाने वाली, उस की अन्ना दीदी ही तो है, इस महल्ले में. बचपन से आज तक के पूरे इतिहास की साक्षी अन्ना दीदी, वही तो जानती है कि पारो को पागल करने वाला कौन है? समाज और उस में रहने वाले तथाकथित इज्जतदार लोगों ने आज की उस पारो को यह रूप दिया है.

हवेली के दरवाजे पर ही अन्ना दीदी को खड़ा देख कर बूढ़ी पारो रोती हुई उन के पैरों से लिपट गई. अन्ना दीदी की आंखों में क्रोध की चिनगारी देख कर बच्चे ठिठक कर खड़े हो गए. वे भी जानते थे कि अन्ना दीदी का क्रोध जब फूटता है तो बच्चे क्या बड़े बड़े भी उन का सामना नहीं कर पाते. इस से पहले कि वह कुछ कह पातीं, अन्ना दीदी

पगली

कहानी ● किरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

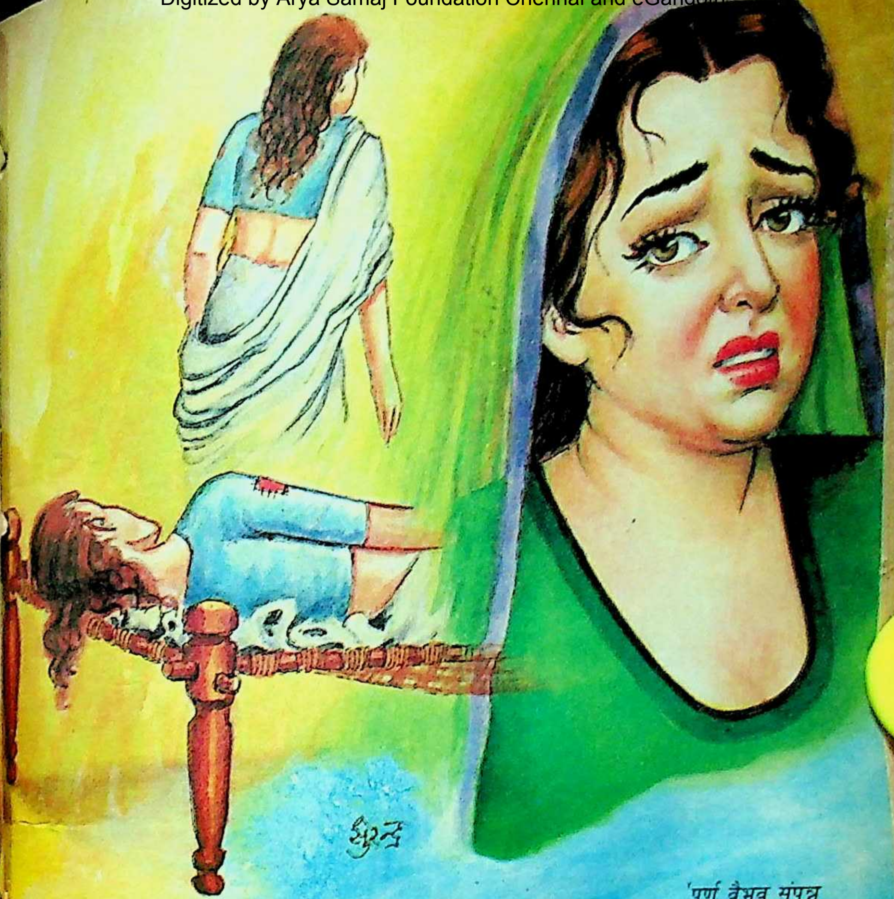

स्वयं जैसे कांप उठीं.

चौंक कर उन्होंने नीचे देखा तो पाया, पारो उन के पैरों में जैसे झुकी थी, वैसे ही एक ओर ढुलक गई थी. हाथ बढ़ा कर जैसे ही पारो को उठाना चाहा, अन्ना दीदी को उस का शरीर बर्फ के समान ठंडा लगा. हां, पारो पगली जीवन से अंतिम विदा ले चुकी थी.

अन्ना दीदी ने जैसे ही उसे एक ओर

'पूर्ण वैभव संपन्न तीन बेटेबहुएं सुपर्णा को बोझ समझ कर भिखारी की तरह रहने के लिए विवश किए हुए हैं,' यह सुन कर अन्ना दीदी भावशून्य सी हो कर रह गई. ▲

लिटाया, उस की फटी धोती में काले धागे में पड़ा वह लाकेट झांक उठा. उस के जीवन की एकमात्र अमूल्य निधि थी, वह. उस के पति की निशानी. कहने को यही सब कुछ था,

तीन बेटों की मां, ऊंचे घर की बहू और अप्रतिम सुंदरी सुपर्णा सब कुछ होते हुए भी पागल हो गई थी. लेकिन कैसे, यह कोई नहीं जानता था. किंतु सुपर्णा के बचपन से बुढ़ापे तक की सखी अन्ना दीदी जानती थी कि उस को पागल करने वाला कौन है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस का मंगलसूत्र, उस का अपना धन, उस का प्रेम, विश्वास, जिसे वह किसी को छूने तो क्या, देखने भी नहीं देती थी. रत्नजड़ित यह लाकेट उस के संबंधियों को केवल धन का ही लालच दे सकता था. पागलपन में भी उसे इस लाकेट को छिपाए रखने का ध्यान रहता था. उस को हाथ में लेते ही अन्ना दीदी को वह दिन याद आ गया, जब इसी लाकेट को ले कर पारो के बेटों ने घर में तूफान उठा दिया था. उन का मन अतीत में भटकने लगा था.

शांतनु की हवेली में सुपर्णा ने नईनवेली दुलहन के रूप में जैसे ही पैर रखा, हवेली की सभी लड़कियां उस के सौंदर्य को देख कर अवाक खड़ी रह गईं. ऐसा रूप शायद उन्होंने पहले कभी न देखा था. अन्नपूर्णा, शांतनु को कह रही थीं, "दादा, तुम्हारे लिए यह कितनी खुशी की बात है जो मेरी सुपर्णा सुंदर सखी तुम्हें पत्नी के रूप में मिली है."

"अरे, कोई अच्छा कार्य किया होगा शानू दादा ने, वरना कहां यह और कहां सुपर्णा." किसी दूसरे ने कहा.

"दादा की तो जिंदगी ही बदल गई." अविनाश ने कहा.

"अच्छा तो आज अविनाश दादा भी मजाक करने लगे. क्यों नहीं, आज आप सब का दिन है, मेरी खिंचाई कर सकते हो." शांतनु झेंपते हुए बोले. वह जानते थे, जो ये कह रहे हैं, वास्तव में सत्य ही है.

"अब यहीं खड़े रहोगे या पत्नी को अंदर भी ले कर चलोगे." मां ने एकाएक एहसास दिलाया कि वे नई बहू को कितनी देर से द्वार पर ही लिए खड़े हैं. इस तरह सुपर्णा अपने सौंदर्य की धाक जमाती हुई हवेली में आई.

सुपर्णा की सुंदरता सिर्फ ऊपरी ही नहीं थी, उस का मन भी उतना ही सुंदर, कोमल और उदार था. धीरेधीरे घर की सारी मानमर्यादा, रीतिरिवाजों का पालन करती हुई सुपर्णा तीन बेटों के मातृत्व से खिल उठी. सास की मृत्यु के बाद सुपर्णा को उस का पद संभालना पड़ा. सुगंधा जब कभी ससुराल से आती, अपनी भाभी के अपार स्नेह की छाया में मां को भी भूल जाती.

सुपर्णा का बड़ा बेटा प्रणव बड़ा ही आज्ञाकारी था. कभीकभी मां का उदास चेहरा देख कर वह अंदर ही अंदर रो उठता. पिता के संन्यास ले लेने के कारण मां कहीं टूट सी गई थीं. लेकिन इस विरह के दर्द की रेखा भी सुपर्णा अपने चेहरे पर नहीं आने देती थी. तीनों बेटों को देख कर वह इस दुख को भूल जाती थी. उधर अन्नपूर्णा दीदी ने उस की सहयोगिनी थीं ही.

परिवार के सभी सुअवसरों पर ही उन का सहयोग उसे प्राप्त नहीं था, दुख की घड़ी में भी अन्ना दीदी उस के साथ रहतीं. उन का दुख अन्ना दीदी का दुख बन जाता. बच्चे अन्ना दीदी को मां का स्थान देते थे. जिस दिन अन्ना दीदी की पालकी उन की ड्योढ़ी पर आती, ऐसा लगता जैसे कोई उत्सव आ गया हो. सुशेन, शिखर और प्रणव तीनों भाई अपनी अन्ना दीदी की सेवा में हाथ बांधे खड़े हो जाते.

अन्ना दीदी गद्गद् हो कहतीं, "अरी पारो, तेरे तीनों बेटे कितने आज्ञाकारी हैं. इन की बहुओं के आते ही तू पटरानी हो जाएगी. देख, इन की बहुएं तुझ से भी सुंदर होनी चाहिए, नहीं तो बेटे कहेंगे, मां ने बहुएं ऐसी चुनी हैं कि अपने सौंदर्य की धाक कम न हो जाए."

"नहीं अन्ना दीदी, मां सी सुंदरता तो कहीं नहीं मिल सकती. इतना ही बहुत है कि उन में मां सी उदारता, सहनशक्ति और प्रेम हो" प्रणव ने कहा.

"सुपर्णा, कहीं कोई लड़की देखी है, तू ने. अब तो बेटों के ब्याह का समय आ गया है." अन्ना दीदी ने पूछा.

"हां, टालीगंज के सुबोध बाबू की बेटी सुनंदा अपने प्रणव के लिए कैसी रहेगी? अविनाश कह रहा था कि प्रणव को वह पसंद भी है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुपर्णा की बात सुनते ही अन्ना दीदी कुछ गंभीर हो गईं. उन की मुखमुद्रा से ही मन की बात जान लेने में सुपर्णा निपुण थी. अतः सदा की भांति जान लिया कि वह कुछ विशेष कहना चाहती हैं. अतः उस ने प्रणव को वहां से हटाने का बहाना ढूंढ़ ही लिया, "प्रणव बेटे, अन्ना दीदी के जलपान का प्रबंध करो. कितनी देर हो गई इन्हें आए."

"भूल हुई मां, मैं अभी प्रबंध करता

हाथ बढ़ा कर जैसे ही पारो को उठाना चाहा, अन्ना दीदी को उस का शरीर बर्फ के समान ठंडा लगा. पारो पगली जीवन से अंतिम विदा ले चुकी थी.

हूं." कह कर जैसे ही प्रणव गया अन्ना दीदी ने कहा, "देख सुपर्णा, सुबोध बाबू की बेटी है तो बहुत सुंदर, किंतु बहुत बड़े घर की बेटी है. इकलौती होने के कारण उस के नखरे भी बहुत हैं."

"किंतु सुनंदा में..."

"सुनंदा में कोई कमी नहीं है, सुपर्णा. मैं यह नहीं कह रही कि लड़की अच्छी नहीं है. अकेले रहने के कारण संभवतः वह मिलबांट कर रहना न चाहे. फिर तू तो जानती ही है, तेरी तीन बहुएं होंगी, वे कितना मिल कर रह सकेंगी, यह मैं नहीं कह सकती. इस दृष्टि से सोचविचार कर लेना चाहिए. वैसे जहां बड़े घर की बेटी भी अच्छे स्वभाव की और मिलनसार होती है, वहीं साधारण घर की बेटियों से भी घर बिखर जाते हैं. फिर बड़ी बात तो यह है कि वह बेटे की पसंद है तो कर दे ब्याह.

सुपर्णा नहीं जानती थी कि जहां प्रणव का संबंध जोड़ने से पहले वह ऊंचे खानदान को देख कर संकोच कर रही थी, वहीं उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की दूसरी बहुएं भी बड़े खानदान से ही आएंगी.

एक दिन ऐसा भी आ गया कि सुपर्णा तीनों बेटों के विवाह से निवृत्त हो गई. शुरू में तो वह बहुओं को आराम पहुंचाने के लिए घर में काम करती रही. बेटेबहुएं देर रात तक घर से बाहर रहते तो वह यही सोच कर अपने को समझा लेती कि यही इन के खेलनेखाने के दिन हैं. लेकिन धीरेधीरे उस की ममता और त्याग को सभी ने उस की विवशता और अपना अधिकार समझ लिया.

कभी बहुओं की सहेलियां आतीं तो मां को चायनाश्ता बनाने का हुक्म हो जाता. उन्हीं के साथ वे बाहर निकल जातीं और सुपर्णा बेचारी उन के बरतन धोमांज कर रखती. उन के घर आने तक भोजन का प्रबंध होना भी आवश्यक था और यह कार्य भी सुपर्णा का था. धीरेधीरे घर की मालकिन सुपर्णा एक साधारण आया के रूप में बदल गई. पहले तो बेटों से किसी बात को वह इसलिए नहीं कहना चाहती थी कि घर में व्यर्थ कलह न हो. लेकिन उस की यह सहनशक्ति उस के बेटों को अपने ही विरुद्ध खड़ा कर देगी, उस ने स्वप्न में भी न सोचा था.

अब तो बेटे बहुओं के अधीन थे. कोई भी तो उस की थकान, दुख, परेशानी को महसूस नहीं करता था. बहुओं के सौंदर्य और धन ने तीनों बेटों की आंखों पर स्वार्थ की पट्टी बांध दी थी. आज उन्हें मां बोझ लगने लगी थी.

अभी इस दुख को झेलने का साहस कर रही थी कि एक दिन सुपर्णा ने अपने बेटों को शराब के नशे में झूमता हुआ देखा तो वह बिलकुल ही टूट गई. पहले भी वे पीते थे, लेकिन मां को इस का एहसास न होने दिया था. अब वे इसे भी न छिपा सके. मां की दुर्दशा तो अब उन्हें दिखती भी क्या. मना करने पर बहुओं ने यही कहा, "आप बड़े घर के तौरतरीकों को क्या जानें, व्यर्थ न बोला कीजिए."

कहते हैं, जब घर की दुर्दशा होने को आती है तो मनुष्य कुसंगति की दलदल की ओर स्वयं चल देता है. शराब और धन का लोभ मनुष्य को एकदूसरे से अलग कर देता है. यही सुपर्णा के बेटों के साथ भी हुआ. नशे में तीनों के बीच मनमुटाव हुआ और वे हवेली का बंटवारा कर अलग हो गए. मां का बंटवारा कैसे हो, यह संभव नहीं था. तीनों ही उसे अपने पास रखना चाहते थे. लेकिन मोह ममतावश नहीं, काम करने के लिए एक नौकरानी के खर्च से बचने के लिए.

ममता की मारी सुपर्णा अब भी पुत्रमोह से बंधी तीनों ही बेटों के बीच बंटी रही. जिस के घर जाती, पहले उस के घर का काम करती फिर भोजन की आशा रखती. यथासंभव अपनी इच्छाओं और आशाओं को दबाती हुई सुपर्णा दिनरात खटती रही. बच्चों के लिए जीने वाली सुपर्णा अब मात्र बहुओं की नौकरानी थी. ऐसे में उसे अपने पति की कमी खलने लगी थी. तीनों बेटों के अपनीअपनी गृहस्थी में रम जाने पर वह एकदम अकेली हो गई थी.

एक दिन सुपर्णा ने सुना कि बहन का बेटा और उस की नववधू उस से मिलने आ रहे हैं तो वह प्रसन्नता से खिल उठी. विवाह के अवसर पर तो वह जा नहीं सकी थी. अतः अपने भानजे की पत्नी को देखने और उसे लाड़प्यार देने की उत्सुकता लिए वह बड़ी बहू के पास गई. सुनंदा अपने कमरे में सो रही थी. सुपर्णा अपनी सीमाएं भूल कर उस के पलंग पर बैठ गई और जैसे ही उस ने उसे 'सुनंदा' कह कर हाथ लगाया तो वह बिफर पड़ी, "मांजी, आप को दिखाई नहीं दिया कि मैं सो रही हूं. ऐसी कौन सी आफत आ गई थी जो आप को इसी समय मुझे उठाना पड़ा."

"वह... बेटी... आज... आज सुधेंदु अपनी बहू को ले कर आ रहा है. बाजार से मछली मंगवा दो तो अच्छा हो. सुधि को मेरे हाथ की बनी मछली बहुत पसंद है." उस ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झिझकते हुए कहा.

"मुझ से पूछ कर उन्हें यहां निमंत्रण दिया था, आप ने. मछली मुफ्त में नहीं मिलती मांजी, पैसा लगता है. किसी को बुलाने से पहले अपनी औकात तो देख ही लेनी चाहिए."

सुनंदा का उत्तर सुपर्णा के दिल में तीर की तरह जा लगा. वह अपने दुख को दबाए मझली के पास पहुंची, "सुवासिनी बेटी, आज मेरा भानजा और उस की बहू घर आ रहे हैं. मैं चाहती थी कि उन के भोजन का प्रबंध तुम अपने यहां कर लो. तुम्हें याद है, तुम्हारे विवाह के अवसर पर उन्होंने तुम्हें कितना बहुमूल्य हार दिया था. वही सुधेंदु आ रहा है."

सास की ओर दृष्टि घुमाए बिना ही बड़े घर की बेटी ने सूचना दी कि वह पीहर जा रही है. साथ ही यह भी कह दिया, "मां, आप भी फालतू लोगों को हमारे गले व्यर्थ ही मढ़ने का जो प्रयास करती हैं, वह मुझे ही नहीं, आप के बेटे को भी नापसंद है."

बेचारी सुपर्णा क्या करती, अपनी तीसरी बहू के पास जाने का साहस अब वह खो बैठी थी. अब डूबते को तिनके का सहारा केवल अन्ना दीदी ही थीं. उन के आने का समय पास आते देख अपनी परिस्थितियों पर परदा डालने के लिए वह घर से दौड़ पड़ी अन्ना दीदी की हवेली की ओर. कानों में बहुओं की बातें गूंज रही थीं. दुखदर्द के कारण वह चकरा सी रही थी. उस की आंखों में आंसू उस के मार्ग को धुंधला बना गए. सामने से आती हुई लारी वह देख न पाई और उस से टकरा गई.

जब होश आया तो वह हस्पताल में थी. सामने थीं, अन्ना दीदी. सुपर्णा की आंखों से आंसुओं की धारा निरंतर बह रही थी. भावशून्य सी वह अन्ना दीदी की ओर निहार रही थी.

अन्ना दीदी उस के माथे पर हाथ रख कर बोलीं, "सुपर्णा कैसी हो? बोलो... बोलो... सुपर्णा..." कहतीकहती वह थक

याद

तनहाई में याद आती हैं वो बातें,
जो कभी आप ने बड़े प्यार से कही थीं.
तनहाई में याद आती हैं वो मुलाकातें,
जो कभी हम ने छुपछुप के जमाने से की थीं.
तनहाई में याद आती हैं वो रातें,
जो कभी मेरी बांहों में आप ने बिताई थीं.

—राजीव रंजन 'राज'

गईं, लेकिन सुपर्णा तो जैसे अपनी वाणी ही खो चुकी थी. बहुत साहस कर "अ... अन्ना दीदी" कह पाई.

पास खड़ी बहुएं इस क्षण भी न जाने क्या चर्चा कर रही थीं. अन्ना दीदी को यह अच्छा न लगा. बड़ी बहू को जब यह कहते सुना कि 'मांजी के गले से यह लाकेट निकाल लेना चाहिए. अकेली हस्पताल में रहेंगी कोई भी ले सकता है' तो सुपर्णा जैसे सचेत हो गई. उस ने इतनी धीमी आवाज को भी न जाने कैसे सुन लिया और न जाने कहां से उस में इतनी शक्ति आ गई कि अपनी ओर प्रणव के बढ़ते हाथ को देख कर वह शेरनी की तरह गरज उठी और कस कर लाकेट को अपने हाथ में बंद कर लिया.

अप्रतिभ सी खड़ी अन्ना दीदी यह सब देख रही थीं. एकाएक सुपर्णा मुट्ठी में लाकेट दबाए बिस्तर से उठी और कमरे से बाहर निकल भागी. अन्ना दीदी भी उस के पीछे लपकीं. बाहर ही सुशेन और शेखर ने मां को पकड़ लिया और गाड़ी में बैठा कर घर ले गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्ना दीदी जब वहां पहुंची तो सुशेन ने बाहर से ही कह दिया, "अन्ना दीदी, मां अब ठीक हैं. आप को यहां आने का कष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं... और फिर यह हमारा निजी मामला है. इस में आप हस्तक्षेप न करें तो अच्छा होगा."

यह सुनते ही अन्ना दीदी बिफर पड़ीं, "क्या कहा, सुशेन. आज तू इतना बड़ा हो गया कि घर और घर के निजी मामले तुझे समझ आने लगे... कब यह सब मुझ से अलग हो गया, रे. अरे, मां को तो पागल कर दिया, तुम ने. कुछ खबर है, तुम भाइयों को... अब होश नहीं आएगा सुपर्णा को. अरे, कुछ तो सोचा होता कि कैसे मरमर के पाला है तुम्हें, उस ने. बाप तो छोड़ कर चला गया था तुम्हें... आज तुम्हें बोलना आ गया."

"अन्ना दीदी, इस से पहले कि मैं आप को कुछ कह बैठूं, आप यहां से चली जाएं तो अच्छा होगा."

"अरे.. सुशेन बेटा, अब कहने को बाकी क्या रहा है. जिस अन्ना दीदी को देखें बिना तुम्हें चैन नहीं आता था, उसे घर से चले जाने को कह रहे हो. इस के बाद भी क्या कुछ शेष है?" अविनाश जो पास ही खड़े थे, अपने क्रोध को दबाते हुए बोले.

"अविनाश दादा, आप कुछ न बोलें... आप को क्या मालूम..."

"घर के बीच एक दीवार ही है, मुझ से कुछ छिपा नहीं है. मैं सब जानता हूं भाभी क्या झेलती रही हैं." अविनाश सुशेन की बात को काटते हुए बोले.

"अविनाश, इन से कह दो कि मैं जा रही हूं. लेकिन जिस दिन भी इन की मां को हलका सा भी होश आया तो वह फिर घर से निकल जाएगी और तब एक ही राह होगी और एक लक्ष्य होगा उस का, उस की अन्ना दीदी. उस समय यह कभी अपनी मां और अन्ना दीदी से मिलने न आएं" यह कह कर अन्ना दीदी लौट गईं.

उस दिन के बाद न तो वह कभी उन की चौखट पर गईं न ही सुपर्णा के तीनों बेटों को उन्होंने देखा. हां, उस परिवार के समाचार पाने के लिए उन के पड़ोसी अविनाश का सहारा अवश्य था. सुपर्णा का मोह उस परिवार से बंधन तोड़ने नहीं देता था. सुपर्णा अविनाश को अपना देवर मानती थी, इसलिए उस परिवार में उस का आनाजाना सदा की भांति बना तो रहा, लेकिन बहुत कम हो गया.

एक दिन अविनाश ने अन्ना दीदी को आ कर बताया, "अन्ना दीदी, भाभी की हालत दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है. उन्हें बहुओं ने घर के बरामदे में टूटीफूटी चारपाई पर पटक रखा है. वह चलफिर भी नहीं सकतीं. तीनों बहुएं दो वक्त की रोटी देने में भी एकदूसरे की ओर ताकती हैं. ऐसे में कभीकभी दोदो दिन वह भूखी पड़ी रहती हैं. उन का शरीर सूख गया है. सिर के बाल झड़ गए हैं. न जाने क्या हो गया है, अन्ना दीदी उन की खाल जगहजगह से गलने लगी है." अन्ना दीदी यह सुन कर भावशून्य सी बैठी रहीं. आंखों में आंसू तैर रहे थे.

अविनाश ने आगे कहा, "जानती हैं, अन्ना दीदी, कल मैं दीवाली की मिठाई ले कर गया तो उस समय घर में कोई नहीं था. अपनी खटिया पर गठरी बनी पड़ी थीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाभी. मैं ने उन्हें मिठाई खाने को कहा तो वह मिठाई पर ऐसे टूट पड़ीं, जैसे उन्होंने जीवन में यह सब कभी देखा ही न हो. एक टुकड़ा उठा कर निगल लेतीं और दूसरा हाथ में होता. आंखों से आंसू बह रहे थे. रोती जा रही थीं और कांपते हाथों से खाती जा रही थीं. आधा मुंह में जाता था और आधा बिखर जाता था. भयभीत सी वह इधरउधर देख रही थीं. जब खा चुकीं तो रोतेरोते बोलीं, 'अविनाश... तू... तू... बहुओं से तो नहीं कहेगा रे कि भाभी ने मिठाई खाई है. सुन... तू उन से कहना... कहना कि तू ऐसे ही मिलने आया था.'

"इतना कह कर भाभी ने मेरे पांवों पर सिर रख दिया और बिलख कर रो पड़ीं. जीवन भी क्या रंग दिखाता है. ऊंचे घर की कुलवधू आज दानेदाने को तरस रही है. एक मां बच्चों को प्यार और परिश्रम से अभाव सह कर भी पाल लेती है और यहां वैभव संपन्न परिवार के तीन बेटेबहुएं अपनी एक मां को बोझ समझ कर भिखारी की तरह रहने पर विवश किए हुए हैं."

"बस... अविनाश..." आंसू पोंछते हुए अन्ना दीदी ने कहा, "मैं और नहीं सुन सकती. आज मेरी सौंदर्य की प्रतिमा किस तरह घुलघुल कर मर रही है और मैं केवल दूर बैठी सुन रही हूं, उसे देख भी नहीं सकती. सुन रे, क्या तू अपनी भाभी को यहां नहीं ला सकता?"

"कैसी बातें करती हैं, अन्ना दीदी, आप के घर लाने को वहां कोई राजी होगा? ऐसा कहने पर तो मेरा भी वहां आनाजाना बंद हो जाएगा. पर हां, एक बात है, भाभी आप से मिलना चाहती हैं. अच्छा, मैं देखता हूं कुछ हो सका तो." इतना कह कर अविनाश तो चला गया, लेकिन अन्ना दीदी के हृदय में एक तीर छोड़ गया, जो उन्हें निरंतर सालता रहा.

अन्ना दीदी सुपर्णा के दुख को मन में लिए दिन बिताती रहीं. कुछ दिनों से अविनाश भी उन से मिलने नहीं आया था, क्योंकि वह शहर से बाहर गया हुआ था. दुर्गापूजा की तैयारियां जोरशोर से होने लगी थीं. अन्ना दीदी सदा की भांति अपनी सुपर्णा के लिए लाल किनारे की साड़ी और सिंदूर ले आई थीं. खिड़की पर खड़ी वह रोज ही अविनाश की राह देखती थीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक एकदिन दूर से अविनाश को आते देख वह दौड़ती हुई द्वार पर आ खड़ी हुईं. अविनाश न तो पहले की तरह मुसकराया और न ही अन्ना दीदी से कुछ बोला, चुपचाप खड़ा हो गया.

"क्या हुआ अविनाश, सुपर्णा... ठीक तो है. बोल न रे... क्या हुआ मेरी सुपर्णा को?" अन्ना दीदी ने अविनाश को झंझोड़ते हुए पूछा.

अविनाश की आंखों से आंसू बहने लगे. वह संभलते हुए बोला, "अन्ना दीदी, बहुओं ने उन पर इतना अत्याचार किया कि सुपर्णा भाभी..." वह आगे बोल नहीं पाया.

"क्या हुआ सुपर्णा को? क्या किया उन्होंने? बोल अविनाश, ऐसा क्या किया उन्होंने...?"

"क्या बताऊं अन्ना दीदी, खानापीना तो एक तरह बंद हो ही गया था, उन का. मझली बहू से उन्होंने कहा कि मुझे उठा कर जरा चारपाई कस दो, मेरी कमर में दर्द हो गया है. इस पर वह वहां से मुंह बना कर निकल गई. कहते हैं, निष्प्राण सी भाभी जमीन पर ही लेटने के लिए किसी तरह से उठ तो गईं पर अपने को संभाल न सकीं और गिर गईं. आवाज सुन कर मझली बहू ने वापस आ कर उन्हें उठा कर इतने जोर से लिटाया कि उन का सिर खाट से टकरा गया और वह अचेत हो गईं, जब होश आया तो उन की सूझबूझ भी जाती रही."

"क्या... तो... क्या सुपर्णा पा..."

"हां, अन्ना दीदी. भाभी पागल हो गईं. ऐसी स्थिति में भी उन्हें घर में नहीं रखा और सड़क पर बैठा दिया. कहते हैं, वह लकड़ी के सहारे अपनेआप को खींचती जैसेतैसे कहीं निकल गईं. आज जब मैं लौटा तो मेरी पत्नी ने मुझे बताया. अब कहां ढूंढूं मैं उन्हें अन्ना दीदी? कहां जाऊं उन्हें देखने?" कह कर अविनाश फूटफूट कर रो पड़ा. अपने बच्चों की तरह उसे भी पालने वाली भाभी ही उस की मां थीं. अपनी मां खो देने का दुख वह सह नहीं पा रहा था.

अन्ना दीदी भी आंचल में मुंह छिपाए रो रही थीं कि सहसा गली में बच्चों का शोर सुन कर वह खिड़की के पास पहुंचीं. फिर हवेली के द्वार की ओर दौड़ पड़ीं. अविनाश भी चौंक कर उन के पीछेपीछे चौखट पर आ गया. दोनों अप्रतिभ से सामने आती हुई वृद्धा को देख कर मूर्तिवत खड़े रह गए. इस से बड़ी विडंबना हो भी क्या सकती थी कि तीन पुत्ररत्नों की तथाकथित मां 'पगली' बनी बच्चों के आगेआगे पत्थरों की मार खाती हुई घिसटती सी चली आ रही थी.

सुपर्णा सुंदरी पगली बनी अन्ना दीदी के चरणों में रक्षा के लिए आ गिरी. अविनाश को दिखाने के लिए लाई लाल किनारे की साड़ी हाथ में लिए अन्ना दीदी चरणों में गिरी अपनी संगिनी को देखती रह गईं. दुर्गापूजा की अंतिम साड़ी थी, यह अन्ना दीदी की ओर से अपनी सुपर्णा के लिए. सिंदूर से अंतिम बार अपनी सुपर्णा की मांग भर बड़ा सा टीका लगाया अन्ना दीदी ने और आंखों में आंसू लिए उस सुहागन को विदा देने के लिए स्वतः ही उन का सर झुक गया. ●

यह अंक
आप को कैसा लगा?

सरिता आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरीपूरी कोशिश करते हैं कि सरिता का प्रत्येक अंक आप की रुचि के अनुसार रहे और उस से आप को अधिक से अधिक संतोष हो और वह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे.

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिए. कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई. आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना चाहेंगे. हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे. अपनी आलोचनाएं व सुझाव निम्न पते पर भेजें:

सरिता,
ई-3, दिल्ली प्रेस, झंडेवालान एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

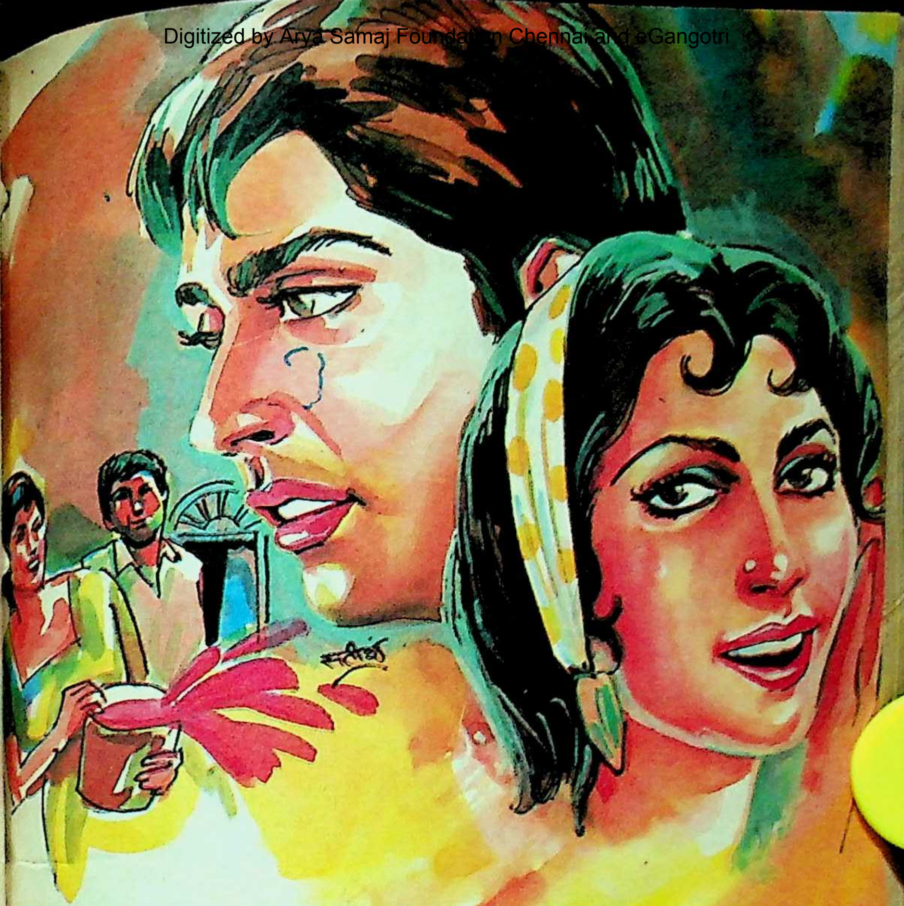

कनक घट

कहानी • चंद्रा र. देवत

पूर्वकथा

केशव होली के दिन घटी एक दुर्घटना में अपने पूरे परिवार को खो चुका था. अतीत की भयावह यादें उस के साथ चिपकी ही रहतीं. उधर शोख कंचन ने उसे लुभाने का पूरा यत्न किया पर केशव जैसे उस सदमे से उबर ही नहीं पा रहा था.

उसे मेधा से सच्ची हमदर्दी थी. इस मामले में मेधा का खयाल ठीक ही था कि राह या तो कंचन तक जाती है या लौट जाती है. बीच में कोई मोड़ ऐसा नहीं होता जो किसी युवक को उस तक पहुंचा दे. केशव भी दोनों बहनों से परे रहने में भला समझता था. मेधा से भी गहरी दोस्ती का मतलब था कंचन के कहर को न्योता देना.

और फिर केशव को तो शादी करनी ही नहीं थी. शादी का तो खयाल भी आते ही मन ग्लानि से भर उठता. उसी के खातिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की देखने गए थे वे अपने जो घर लौटने के बजाय महायात्रा को विवश हो गए. वह खीज उठता जब भी अपने ब्याह का किसी से भी, किसी भी रूप में जिक्र सुनता. लगता किसी ने दुखती रग पर हाथ रख दिया हो. जाने कैसा रिश्ता जोड़ बैठा था वह दोनों घटनाओं का. एक अतीत था, एक भविष्य. केशव ने दोनों के बीच बहते वर्तमान को दीवार बना दिया था.

कंचन के कारण मेधा की जो विचित्र स्थिति बन गई थी, उसे समझने पर उसे मेधा से हमदर्दी हो गई थी. यही हमदर्दी अनायास दोनों बहनों की तुलना करवा बैठती. तब मेधा के गुण कई गुना उभर कर और उजले दिखते. हमदर्दी बढ़ जाती और उसे उन लड़कों की अकल पर तरस आता, जो मेधा जैसी गुणवती की तुलना में कंचन

के पल्लू में बांध देने का खयाल बिलकुल न जंचता था, परंतु वह बखूबी जानता था कि बहुत हैं ऐसे जिन्हें यह सौदा घाटे का नहीं लगेगा.

इस के पीछे आम मर्द का यह अति आत्मविश्वास और अहंकार काम करता है कि वे मर्द हैं और अपनी मर्दानगी के बूते पर अपनी स्त्री को काबू में रख लेंगे. केशव इसे एक मिथ्या अभिमान मानता था. वह इस साधारण से तथ्य को भूल नहीं सकता था कि स्त्री कोई बेजान कठपुतली नहीं, जिसे पौरुष या किसी भी अन्य डोरी से मनचाहा नचवाया जा सके.

स्त्री भी पुरुष की तरह जीवित प्राणी है. एक इनसान. उस में भी हर जीवित प्राणी की तरह 'इच्छा' नामक गुण है. उस की भी अपनी मरजीनामरजी, पसंदनापसंद हो सकती है. और अगर कहीं इच्छाएं साधारण

कंचन केशव पर अपना हर अस्त्र प्रयोग कर के देख चुकी थी पर केशव अपने अतीत में डूबा ही रहना चाहता था. फिर आई होली, जब मेधा ने केशव को उस के दायरे से बाहर खींच लाने की कोशिश की और केशव ने भी एक निर्णय ले लिया.

सी रूपवती पर लट्टू हो उठते थे.

उसे स्पष्ट अनुभव होने लगा था, शारीरिक सौंदर्य का आकर्षण अस्थायी है. अति सुंदरी पत्नी प्रतिष्ठा का प्रतीक हो सकती है, काम की 'वस्तु' हो सकती है, पर वह हमेशा ही स्नेहमयी, गरिमामयी, दुखसुख बांटने वाली, कर्तव्यपरायण आदर्श जीवनसंगिनी भी होगी, संभव नहीं. उस के साथ तन बांटना चाहे अत्यंत सुखद हो, पर मन बांट पाने की नौबत वह सुंदरी शायद ही आने दे. और तन के बूते पर पति को लुभाने वाली पत्नी दरअसल उसे 'पालतू' बनाने की कोशिश नहीं कर रही, इस की क्या गारंटी है? निश्चय ही अपवाद तो सर्वत्र होते हैं, पर कंचन अपवादों में नहीं.

केशव को अपनी अकल, सुंदरता के गुरूर में डूबी किसी बदमिजाज, नखरीली न हो कर किसी प्रबल महत्त्वाकांक्षा के रूप में हो तथा उस महत्त्वाकांक्षा पर ज्ञानवान बुद्धि का कोई अंकुश न हो तो वह पति के प्यार भरे दिल में नहीं समा पाती.

कंचन का अहंकार किसी पुरुष अहं की उसे जरा भी परवाह नहीं करने देता. अधिकार जमाने की अभ्यस्त कंचन कर्तव्य व जिम्मेदारी जैसे खयालात कभी कुबूल नहीं कर पाती. बहरहाल वह कर भी क्या सकता था? सोचता, कभी तो कोई मिलेगा ऐसा जिसे मेधा के गुणों की कदर होगी.

इस पर भी उस ने विवाह के संबंध में कभी कोई बात मेधा के सामने भी नहीं उठाई थी. क्या फायदा था? बेचारी के जख्म कुरेदे जाते. जब वह स्वयं होंठों पर हंसी लिए सह रही है तो वह क्यों उस के जख्म छेड़े? खुद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे तो ब्याह करना नहीं, तब क्यों दूसरों के जीवन में ताकझांक करे?

पहले अपनी समस्या तो सुलझा ले. क्या करे वह? बंगले लौट जाए या नहीं और रुके तो कंचन का क्या करे?

केशव अभी इसी ऊहापोह में था कि कुछ और इसी तरह की घटनाएं घट गईं. केशव तंग आ गया. कंचन को खुल कर झटकने के लिए उसे अपनी शिष्टता उतार फेंकनी होगी, जो वह चाहता नहीं था. इस के अलावा कंचन को रोकने का दूसरा उपाय तो खुद ही पलायन कर जाना था.

पलायन उसे मंजूर नहीं था. आखिर क्यों भागे वह? कंचन के डर से? नहीं, कंचन किसी भी प्रकार उस के जीवन के किसी भी फैसले का कारण नहीं हो सकती. बंगला,

कंचन के कारण मेधा की जो विचित्र स्थिति हो गई थी उसे समझने पर केशव को मेधा से हमदर्दी हो गई थी.

एकदम नए डिजाइन में चाहे लगभग तैयार था, फिर भी अभी केशव का मन नहीं था लौटने का.

यहां रह कर उसे काफी राहत मिली है. उन हौलनाक स्मृतियों से पूरा छुटकारा तो नहीं मिला पर चुभन कम अवश्य हुई है, कम से कम लोक व्यवहार में. खासा मन लग गया है केशव का यहां. ये लोग उसे ले कर जो भी उम्मीदें बांधे हों, जब तक कोई उसे नहीं छेड़ता, केशव को क्या फर्क पड़ता है?

एक सब से बड़ा जो कारण था, अभी बंगले न लौटने का वह था होली का निकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आता त्योहार. वह उस वक्त वहां अकेला रहना नहीं चाहता था. बंगले में क्या, बंगले के उस इलाके के आसपास भी कहीं फटकना नहीं चाहता था. पिछली होली तक तो उसे यहां आए दोचार महीने ही हुए थे. उस के एकाकी स्वभाववश लोग ज्यादा बेतकल्लुफ नहीं हुए थे. फिर भी साथ होली खिलाने सब आए थे. केशव ने नम्रता से टाल दिया था. वे तो लौट कर अपने में मस्त हो गए, पर वह स्वयं बंद कमरे में बैठा शून्य में घूरता रहा था. बाहर झूमतीं मस्ती भरी आवाजें सुन कर हृदय कैसा खून के आंसू रोया था, वही जानता था.

याद आ गई वह प्रतीक्षा जो वह इस से पिछली होली पर करता रहा था. कान टेलीफोन की घंटी पर ही लगे रहे थे. कल ही तो धुलेंडी है. भूल नहीं सकते थे वे सब कि घर पर केशव अकेला है, विकलता से उन की प्रतीक्षा कर रहा होगा. पिताजी का फोन आता ही होगा कि हर साल की तरह इस साल भी वे सब मिल कर साथ ही होली मनाएंगे. कहीं चुपके से यह खयाल भी आ टकराता, कैसी लड़की देखी होगी उस के लिए? क्या नाम होगा? फोटो तो जरूर लाएंगे ही.

खबर आई जरूर थी, किंतु उस की हर प्रतीक्षा को अनंत बनाने के लिए.

हर बात याद थी उसे उन दो दिनों की, हर शब्द, प्रत्येक दृश्य, अब याद कर अंतर में कड़वाहट भर उठती है. उसे चिढ़ हो गई थी होली की मस्ती में झूमते, रंगेपुते खिलखिलाते चेहरों से. ये सब स्वार्थी लोग होते हैं. अपनी हंसीखुशी उन्हें इतनी जरूरी मालूम देती है कि दूसरे के गम पर आंसू बहाना तो दूर, खामोश भी नहीं रह सकते, हृदयहीन लोग.

उसे याद है, खूब याद है. होली वाले दिन सूचना मिली थी. दूसरे दिन धुलेंडी को, जब वह मसूरी में सुन्न मस्तिष्क, निर्निमेष दृष्टि से वे शव ताकता, एक ट्रक में उन्हें ले कर लौट रहा था, तब शहर की सड़कों पर यही रंगभरी मस्ती बिखरी पड़ी थी. उस के पहुंचने तक पुलिस ने शवपरीक्षा आदि का काम करवा लिया था.

राह में किन्हीं अनजान लोगों ने भीड़भाड़ वाली सड़क पर ट्रक रोक कर होली खेलने का निमंत्रण दिया था. साथ ही धमकी दी थी कि अपनेआप उतर जाएं अन्यथा जबरन पास बनाए हौज में धकेल दिए जाएंगे. ट्रक ड्राइवर व केशव के साथ गए कुछ परिचितों ने स्थिति समझानी चाही तो भी वे तब तक नहीं माने, जब तक ट्रक का पिछला हिस्सा खोल कर उन्हें लाशें नहीं दिखा दी गईं.

सिटपिटा कर सभी हुड़दंगी पीछे हट गए. एक नजर हमदर्दी से केशव पर डाली और परे हो गए. ट्रक रवाना हो कर नजरों से ओझल भी नहीं हुआ था कि होली के हुड़दंगी अपनी मौजमस्ती व होहल्ले में मस्त हो चुके थे.

तब तो हक्काबक्का केशव कुछ सोचने समझने के काबिल नहीं था, फिर भी कहीं गहरी एक चुभती टीस रह गई थी अवचेतन में, जो स्मृति पटल पर फिल्मी दृश्य की भांति अंकित हो गई थी.

घर लौटा तो रात हो चुकी थी. होली की मस्ती तो शांत थी, किंतु जितने भी आसपास के लोग आए बैठे, सभी रंगेपुते. निश्चय ही सारी सूचना के बावजूद अपने रंग में भंग किसी ने नहीं होने दिया था. शवयात्रा अगले दिन थी. एक ही परिवार में एक साथ इतनी मौतों और एकसाथ निकलने वाली शवयात्रा के समाचार ने परिचितों क्या, अपरिचितों की भी भीड़ जमा कर दी थी. सोचसमझ न पाने के बावजूद केशव अनजान चेहरों पर हमदर्दी में लिपटी कोरी उत्सुकता को महसूस करता रहा था. इसउस शव को कंधा देतेदेते घूमते केशव ने कहीं ऐसे ही उत्सुक आगंतुक का कहना सुन लिया, "अच्छा हुआ, लाशें आतेआते होली का दिन गुजर चुका था."

श्मशान में असामान्य भीड़ थी. केशव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

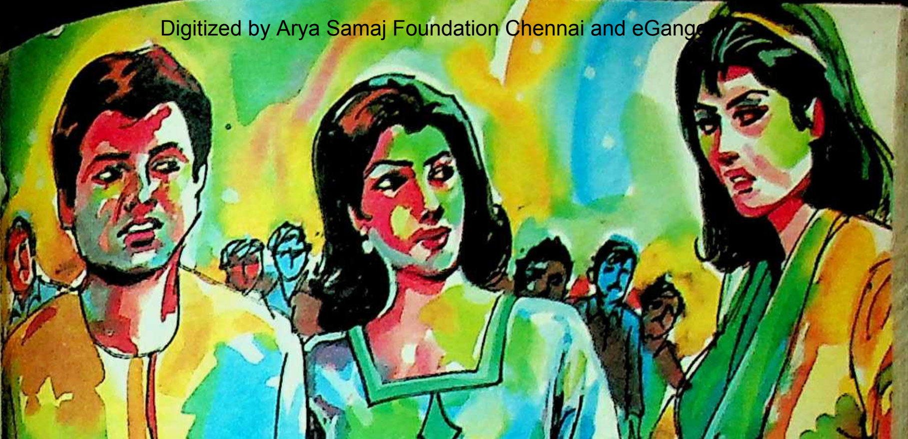

''बहन? हुंह! दुश्मन है मेरी दुश्मन. कहीं मुंह भी काला नहीं करती कि पीछा छूटे.'' कंचन ने मुंह बिचकाया.

की भटकती निगाहें जानेअनजाने जिस ओर भी उठ जातीं, उसी ओर हर चेहरे पर दया और आंखों में उत्सुक दिलचस्पी दिखाई देती.

हर ऐसी घटना जानेअनजाने केशव का मन छलनी करती रही थी. जब अनुभूतियां लौटीं, तब तक अवचेतन मस्तिष्क उस के सोचविचारों में ऐसी गांठें बना चुका था, जिन का कारण तक समझने की कोशिश करना गंवारा नहीं रहा था केशव को. उसे घृणा हो चुकी थी होली व होली की मस्तियों से, ब्याहशादी के खयाल तक से. सोचता, मातमपुरसी का तो नाम है. दरअसल सब लोक दिखावा है, कोरा ढोंग. सो भी शायद रस्में निभाने भर की. रस्म निभा दी और सब खत्म.

किंतु केशव ऐसा नहीं कर सकता. वह उन्हें नहीं भूल पाएगा, जो उस के अपने थे. कैसे स्वार्थी हो जाए वह? उन के प्रति उस की श्रद्धा, स्नेह व संबंध कोई औपचारिक लोकदिखावा नहीं.

यही मानसिक कुंठा थी केशव की. सामान्यतः वह बुद्धिशील था, किंतु आकस्मिक आघात और फिर आ पड़े अकेलेपन ने उसे कुंठित कर दिया था. अब तो उसे किसी के साथ अपना दुख बांटना भी मंजूर नहीं था. उसे विश्वास ही नहीं रहा था कि किसी को सचमुच उस का गम, उस का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुईमुई सा

दुख, कांटों से भरा,
सुनसान, बियाबान, बीहड़
सुख, नन्हा सा, कोमल
छुईमुई सा बिरवा.

—पुष्पा गोस्वामी

अभाव महसूस होता होगा. जो उस ने खो दिया, वह उस की अपनी हानि है. अपूरणीय क्षति. इस पर अब उसे किसी की दया, हमदर्दी नहीं चाहिए.

अगर उन दिनों केशव के साथ कोई अपना होता, किसी को उस की मनःस्थिति का ठीक अंदाजा हो पाता या स्वयं केशव ही किसी के सहानुभूतिपूर्ण साथ में खो कर खुद को संभाल पाता तो वह इस कुंठा से बच जाता. पर उसे तो जो नातेरिश्तेदार साथ देने को आगे आए भी वे भी उस की धनसंपन्नता के लालच में. और दांव न लगने पर केशव पर इलजाम लगा गए कि वह इन मौतों पर दिल ही दिल में तो खुश हो रहा होगा क्योंकि अब सारी संपत्ति का अकेला मालिक है.

बिच्छू के डंक से ये इलजाम कुंठित केशव की कुंठा को बढ़ाने वाले ही सिद्ध हुए. एक गंगाराम ही थां, जिसे निःस्वार्थ सहानुभूति थी उस से, किंतु वह सीधासादा आदमी उन अपनों का स्थानापन्न बन पाना जानता नहीं था.

केशव किसी से कुछ भी कह न सका. कौन समझता? अकेले घुटते रहने से ही वह अपने मनमाने अनुमानों पर आधारित सोच को ही सच मान बैठा. दिली खुशी सपना बन गई. घर बसाना अपराध लगने लगा, हां, लोकदिखावा वह बखूबी करने लगा था.

होली के दिन दफ्तर की छुट्टी थी. जाना भी कहां? केशव बंद कमरे में बैठा रहा. चूंकि प्रकटतः केशव का बरताव सामान्य होता था, अतः गृह समिति के लोग आ धमके धुलेंडी के दिन. उन के खुशी से दमकते चेहरे देख केशव के अवचेतन में छिपी घृणा बाहर तिर आई. फिर भी व्यवहार कुशलता की आदतवश उस ने क्षमा मांगी.

उस के फीके, उदास मुख व गंभीर स्वर में ही कुछ था कि दिली आग्रह करने का किसी को साहस नहीं हुआ. अंततः लोग निराश लौट गए. गंगाराम ने दबी जबान से केशव को उकसाने का प्रयत्न किया था. उस की मंशा तो यही थी कि केशव का जी बहले, परंतु केशव ने तल्खी से झिड़क दिया, ''तुम्हें शौक है तो तुम चले जाओ काका.'' गंगाराम का मुंह उतर गया.

किंतु कंचन? वह जानबूझ कर स्त्रीपुरुषों की इस भीड़ के साथ नहीं आई थी. मन से चाहती थी, केशव इन सब को मना कर दे, फिर उस के कहने पर ही शामिल हो. जब वे निराश लौट आए तो कंचन मन ही मन फूली नहीं समाई. इसी खुशी में सब भूल कर उस ने बालटी भर रंग तैयार कर लिया और ले कर दबे पैरों केशव के अभी भी खुले पड़े फ्लैट में घुस गई.

केशव पस्त सा आंखें बंद किए आरामकुरसी पर पड़ा था. दिल खून के आंसू रो रहा था. अंतर में घृणा सुलग रही थी. दबे पैरों जा कंचन ने पीछे से पूरी बालटी उस पर उड़ेल दी. केशव बुरी तरह हड़बड़ा गया. इस से खुश हो कर कंचन बच्चों की तरह उछलउछल कर तालियां बजाती चिल्लाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होली है, होली है."

आज के माहौल में कंचन का यह कृत्य हालांकि कोई बहुत गलत हरकत नहीं थी, किंतु यह केशव की मानसिकता के अनुकूल नहीं थी. परिणाम वही हुआ जो होना था. केशव भड़क उठा. प्रारंभिक स्तब्धता मिटते ही उस ने आगबबूला हो कर कंचन को झटके से बांह से पकड़ा और कंचन संभलेसंभले कि "यू..." अंगरेजी में गाली बकते हुए, उसे लगभग खींचते हुए फ्लैट से बाहर धकेल दिया.

कंचन हक्कीबक्की रह गई. काफी देर स्तब्ध वह जमीन पर पड़ी बंद हो चुके दरवाजे को देखती रह गई. फिर होश आया. लज्जा व क्रोध से चेहरा लाल हो गया. लपक कर खड़ी हो गई वह. इस मंजिल पर चूंकि केशव का ही अधिकार था. अतः यहां कोई नहीं था. किसी ने देखा नहीं था कुछ भी, परंतु इस से क्या? अपमान तो हुआ ही था कंचन का और वह इस की आदी नहीं थी. गुस्से में कंचन ने केशव का द्वार बुरी तरह पीट डाला. इस से भी मन नहीं भरा तो बंद द्वार पर लातें जमाईं. अंततः थक कर, रोते हुए वह नीचे भाग गई अपने घर.

मेधा भीड़ के साथ केशव के फ्लैट पर गई थी. तब तो सब के साथ लौट भी गई थी, परंतु बाद में विचार उमड़ते रहे. एकाध बार बातचीत के दौरान केशव के मुख से कुछ ऐसी बातें निकल गई थीं, जिन से उसे उस की मानसिकता का तनिक आभास मिला था. वही याद कर मन कहता था, केशव का इनकार अनुचित था. वह बहुत उद्विग्न भी था. क्यों?

कारण समझना कोई बहुत मुशकिल नहीं था. इसी से बारबार मन कचोटता रहा, उसे ही मैत्री निभानी चाहिए. जरूरत पड़े तो अपमान सह कर भी केशव को उस के गम से मुक्ति दिलाने का प्रयास करना चाहिए. कंचन के विषय में उसे पता नहीं चला था. तब कंचन को गए काफी देर भी हो चुकी थी, जब वह पुनः ऊपर आई.

अभी रंग घोल कर तैयारी ही हो रही थी. होली खेलना शुरू नहीं हुआ था. बच्चों ने ही पिचकारी छिड़क दी थी, वरना कपड़े सूखे ही थे. वह सीधे केशव के फ्लैट पर पहुंच गई. द्वार गंगाराम ने खोला. उसे देख तनिक हिचकिचाया, 'बबुआ का मन खराब है. आने दे या नहीं?' वह सोच ही रहा था कि मुसकराती मेधा, "हटो न गंगा काका." कहती भीतर घुस गई.

अब तक केशव को भी महसूस हो गया था, कंचन के प्रति कुछ ज्यादा ही उग्र प्रतिक्रिया व्यक्त कर बैठा वह. पछतावा भी था, पर अब क्या करे? उसे तो होली खेलने वाले हर व्यक्ति से चिढ़ थी. कंचन जरा भी खयाल नहीं करती उस की भावना का. उस ने खुद को तसल्ली देने की कोशिश की परंतु शिष्टताशालीनता की आदत फिर भी बेचैन किए थी.

मेधा को देख मन और खिन्न हो गया. क्या वह डांटने, शिकायत करने आई है? बेमन से स्वागत किया, "आओ."

"होली खेलने नहीं चलेंगे, केशव बाबू?" बैठते हुए मेधा ने पूछा.

"नहीं." केशव फिर चिढ़ गया. स्वर में तलखी छिपाई भी नहीं, "और अगर तुम सिर्फ इसी कारण यहां आई हो तो वक्त जाया करने से कोई फायदा नहीं. बेहतर है, जा कर होली खेलो."

कुछ क्षण मेधा चुप रही. चुपचाप उसे नजरों में तौलती रही. फिर एकदम सहज स्वर में पूछा, "आप क्या समझते हैं, कब तक लौट आएंगे वे?"

"क्या?" केशव अचकचा गया, "कौन?"

"आप के परिवार के लोग?" मेधा पूर्णतया सहजशांत थी. केशव तन गया, 'क्या मेधा उस का मजाक उड़ा रही है? मेधा? जिसे वह समझदार, सहृदय मित्र मानता आया है?'

"जवाब नहीं दिया केशव बाबू?"

केशव के दांत भिंच गए. बमुशकिल बोला, "तुम जाओ मेधा. फुजूल बातें मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसंद नहीं हैं."

"ये फुजूल बातें नहीं हैं, केशव बाबू." मेधा शांत थी, "जिस निरर्थक, अंतहीन प्रतीक्षा पर आप अपने शेष जीवन के बरस पर बरस न्योछावर करना चाहते हैं, उस के बारे में पूछना फुजूल नहीं हो सकता."

"क्या मतलब है इस सारी बकवास का?" केशव गुस्से में था, "तुम ने क्या मुझे मूर्ख समझा है जो सोच लिया कि मैं मृतकों का इंतजार कर रहा हूं."

मेधा के चेहरे पर इस डांट से शिकन भी नहीं आई. पूर्ववत सहज भाव से बोली, "जब आप जानते हैं कि वे आप के लिए दोबारा जीवित नहीं होंगे तो आप ने किस आशा में अपने लिए मौत स्वीकार कर रखी है?"

"मौत?"

"जिंदगी से जानबूझ कर भागना मौत ही है, केशव बाबू."

बहुत देर दोनों के बीच सन्नाटा छाया रहा. केशव अब समझ तो गया, परंतु अवचेतन मन पर अरसे से जमी धूल किसी युक्तियुक्त बात को आसानी से स्वीकार नहीं करने देती थी. मेधा धैर्य से प्रतीक्षा करती रही. केशव के चेहरे पर अनायास उभर आया अंतर्द्वंद्व एवं तनाव खासी आशा जगाता था.

अंततः केशव ही बोला, "क्या जिंदगी होली खेलने में ही सिमट आई है?"

"नहीं, लेकिन होंठों की मुसकराहटों में तो सदा ही जिंदगी बसती है. होली का त्योहार तो एक मौका है, उन मुसकराहटों को गुलाल बन कर बिखेर पाने का."

"मैं ने किसी को हंसनेमुसकराने से मना नहीं किया." केशव खिन्न हो उठा.

"इसी लिए मैं ने यह नहीं कहा था, आप ने किसी की जिंदगी छीनी है. मैं ने कहा था, आप ने अपनी जिंदगी गंवा दी है."

केशव फिर चुप हो गया. मन उद्विग्न था. अजब कशमकश थी. वह कुछ सुनना नहीं चाहता था परंतु सुनना अच्छा भी लग रहा था. आज गुस्सा और नफरत नहीं, अजीब सा मौन रुदन उभर रहा था अंतर्मन में, उसे व्याकुल करता, कराहता सा. खुद को संभालने का प्रयत्न करता हुआ बोला, "कृपया तुम चली जाओ. मैं अकेला रहना चाहता हूं. मेहरबानी करो मेधा मुझ पर, मेहरबानी..."

"मातम मनाना चाहते हैं केशव बाबू?" कोमल, स्निग्ध स्वर में मेधा ने कहा, "मना लीजिए... खुल कर... जरूरत हो तो रो कर... पर... उसे इतना लंबा मत खींचिए..."

केशव ने उस की ओर देखा. आंखें छलक ही न पड़ें, सोच कर सिर झुका लिया. कहीं भीतर गहरे तक छू गया था यह स्नेहिल स्वर. आश्वस्त करता सा, उसे किसी अज्ञात भंवर से उबार कर लाता सा. पहले भी मेधा ने संकेत से समझाने की कोशिश की थी एकाध बार, पर आज तो जैसे उस के लिए कुंठित अवचेतन मन के द्वार अनायास खुलते जान पड़े.

"जीवन गतिशील है." मेधा कह रही थी, "नदी के बहाव की तरह. इसे व्यर्थ ही रोकने का अर्थ है इस के जल को गंदला करने की कोशिश. यह अपने पर अत्याचार है, केशव बाबू. हम मानवों में पूरी तरह सुखी कौन है? फिर भी न अपने जीवन के सुखों को हम गले लगा कर रख पाते हैं, न दुखों को गले लगाए रखना उचित है. चाहे श्रद्धा सुमन चढ़ाए जाएं, चाहें अस्थि सुमन, नदी की पवित्रता उसे बहा कर ले जाने में ही है. इसे रोकिए मत. बहने दीजिए... इनसान की विशेषता ही इसी में है कि वह राह बदल लेता है, किंतु रुक कर हार नहीं मानता."

"मेधा, मेरा कहना मानो, तुम चली जाओ... चली जाओ..." केशव का स्वर एक आर्तनाद था मानो अवचेतन पर हथौड़े सी पड़ रही थी हर बात. वह लड़खड़ाता जा कर एक कुरसी पर गिर गया.

मेधा ने पास आ कर आहिस्ता से उस के कंधे पर हाथ रख दिया. उसी स्नेहमय, कोमल, करुणामय स्वर में बोली, "दो साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम नहीं होते, केशव बाबू, [illegible] ने तो जैसे अंतर के मातम को भी सदा के लिए स्थगित कर दिया है. यह ठीक नहीं है. आप ने नदी के जल को न सिर्फ छोटे से कुंड में कैद कर दिया है, बल्कि बदलना दूर, आप उसे छूने से भी डरने लगे हैं. ऐसा क्यों? क्या आप भूल गए, स्थिर जल सड़ जाता है? क्यों जिंदगी के किन्हीं दुखद पलों से ऐसा मोह? इस तरह तो आप को दूसरे गतिशील जीवन घृणास्पद लगने लगेंगे. क्या यही उम्मीद कर जनमा, पालापोसा था आप को आप के अपनों ने? यही आशाएं थीं आप से?"

एक शब्द नहीं बोला केशव. बोलता तो अशांत, उद्विग्न हृदय का सिसकता रुदन बाहर आ जाता. अस्थिर, कातर नजरों से मेधा को देखता, कभी निगाह चुराता सा हाथों में सिर दे कर बैठ गया. मेधा से जाने के लिए कह रहा था, किंतु जाने क्यों उस की मौजूदगी अजीब सा सुख दे रही थी.

ज्यादा बोलना मेधा को ठीक नहीं लगा. केशव को अपने सामने टूटते देखना उसे भी सुखद नहीं लगता. कुछ देर की खामोशी के बाद कंधे पर अपने हाथ का दबाव तनिक बढ़ाया. धीमे से बोली, "मैं नीचे इंतजार करूंगी. आइए, सब के साथ मिल कर होली के उसी पावन दिन से जिंदगी की शुरुआत करें, जिस से आप ने जिंदगी से किनारा करना शुरू किया था."

वह हौले से पलटी और फ्लैट से बाहर निकल गई. केशव बैठा शून्य में ताकता सा द्वार की ओर देखता रहा. चाहेअनचाहे धुंध छंटती सी लग रही थी. मन दर्पण उजला होता सा जान पड़ रहा था. कौन जाने ऐसे ही किसी तनिक स्नेह, तनिक सी निःस्वार्थ सहानुभूति, करुणा और तनिक स्नेह व अधिकार मिश्रित झिड़की की प्रतीक्षा रही हो अब तक. मेधा के स्वर में स्नेहिल अपनापन था. सुखद, सुकोमल. आज लावा बह जाने को आतुर हो उठा.

कुछ देर बाद केशव शयनकक्ष में जा अरसे बाद फूटफूट कर रोया. गंगाराम आया. देखा, मन ही मन हिल गया वह,

"अब दूरदर्शन स्वायत्तशासी होने वाला है... पैसा टेबल पर रखो."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु सूझा नहीं कैसे सांत्वना दे. पास खड़ा विकल मन खुद भी आंसू बहाता रहा. आश्चर्य अवश्य था, ऐसा क्या कह गई मेधा जो आज बबुआ यों बिखर गया? वह तो बहुत समझदार, हंसमुख, जहीन लड़की है?

आंसू जल्दी थम गए, किंतु मन का सिसकना देर तक चला. सारा गुबार बाहर बह गया. मेधा की हर बात जाने क्यों आज भली लगी थी. आज अपने एकतरफा खयालात से विपरीत भी कुछ सोचने को मस्तिष्क चाहता है.

ठीक कहती थी मेधा. अभी सिर्फ आशंका ही प्रकट की थी उस ने कि इस तरह अपने गम में डूब कर वह औरों की खुशियों से नफरत करने लगेगा. वह बेचारी क्या जाने, लगेगा नहीं, नफरत करने लगा है वह. तभी तो औरों की खुशियों से मुंह फेर लिया आज, वरना मना करने की और वजह क्या थी?

अपनी प्रबल हो चुकी भावना में बुद्धि का यह दखल मन ही मन प्रबल विरोध पैदा कर रहा था. फिर भी, न चाहते हुए भी केशव को आज बारबार एहसास हो रहा था कि इस एक खयाल पर अपनी विवेकबुद्धि की सूई सदा के लिए अटका दी, जबकि होली तो प्रति वर्ष आती है. उस के गम, उस के अभाव पर सच्ची हमदर्दी तक नहीं थी किसी को.

क्यों सोचा उस ने ऐसा? कब, क्यों अवचेतन में लोगों से यह उम्मीद बांध बैठा कि उस की तरह हर व्यक्ति उस का अभाव महसूस करे? चलते रहना ही जीवन की सार्थकता है. अच्छाबुरा, सुखदुख, हानिलाभ कुछ भी स्थिर नहीं. चाहे जितना हम अपनी उपलब्धियों या अपने अभावों के मोह में पड़ें, सब हमें जीवन चलने तक पाना भी है और खोना भी. यही है जिंदगी. निरंतर बहती नदी की भांति इस की शुद्धता की गारंटी भी मनुष्य की सुखदुख, मानअपमान सह कर, भुला कर आगे बढ़ जाने की अद्भुत क्षमता पर निर्भर है.

वह व्यर्थ ही दूसरों पर नाराज हो खुद को मारता रहा. इतना ही नहीं, उस ने तो चाहा, उस के जीवन का वह दुखद क्षण हर किसी के वर्तमान की कालिख बनी रहे. दूसरों से ऐसी विचित्र अपेक्षा क्यों? क्यों उस ने ट्रक रोक होली खेलने की दावत देने वालों का यह कर्तव्य निश्चित कर दिया कि उस की तरह वे भी अपने जीवन को यथास्थान रोक कर बैठ जाए?

वैसे भी, जिन से हमारा सीधा कोई संबंध नहीं होता, उन के दुख शोक मृत्यु का हम स्वयं कितनी देर मातम मनाते हैं? चाय पीते हुए अखबार पढ़ना स्वयं केशव का भी शौक है और अखबार रंगे होते हैं रोज ही दंगेफसाद, हत्या, बलात्कार, दुर्घटना, भूकंप, बाढ़, सूखे और जाने किनकिन प्रकार की मौतों से. क्या पढ़ कर केशव दुखी नहीं होता ऐसी अकाल मौतों पर? किंतु कितनी बार चाय का प्याला हाथ में कांपा है उस के? दुख सह जाने का गुण भुला सकने की अद्भुत क्षमता में ही निहित है. वह भूल पाने में ही असमर्थ हो गया था.

उस से अच्छी तो मेधा है. कंचन जैसा हलाहल जन्म से साथ लगा है, फिर भी इस दुखद स्थिति पर उस ने अपने जीवन को रोक नहीं दिया. कुंठित हो कर चिड़चिड़ी नहीं हो गई. कंचन के अद्वितीय सौंदर्य के आगे घुटने नहीं टेके उस ने. किसी हीनभावना अथवा कुंठा को पास फटकने नहीं दिया.

बल्कि कंचन के अपूर्व सौंदर्य के सामने अपने में अपूर्व सद्गुण पैदा किए. कुछ युवक आए, कंचन के लालच में मेधा के लिए इनकार कर गए, स्वयं देखा, सहा लेकिन हारी नहीं मेधा. अपना धैर्य नहीं खोया. उस के होठों की निश्छल, निर्मल मुसकान नहीं छीन सकीं ये असफलताएं, अवहेलना, ये इनकार. मन ही मन मेधा की प्रशंसा करते भी केशव उस से यह मामूली बातें नहीं सीख सका!

यह तथ्य है कि मनोग्रंथियों को सुलझाने में असली मददगार हमेशा अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही दिमाग हुआ करता है. केशव समझदार तो था ही. एक बार जब विचार करने की दिमागी प्रक्रिया शुरू हो ही गई तो सब जमी गर्द धीरेधीरे साफ होती गई. अब केशव मेधा का शुक्रगुजार था. साथ ही दृढ़ प्रतिज्ञ कि कुंठा को पूरी तरह पराजित करने का अभियान आज से ही आरंभ करेगा, हर झिझक तोड़ कर. मेधा का निमंत्रण अब इतनी देर बाद स्वीकार कर ही लिया उस ने.

गंगाराम चमत्कृत रह गया, जब स्वयं कपड़े बदल नीचे जाते हुए केशव ने गंगाराम तथा नौकरों को होली खेलने नीचे आने को कहा. थोड़ी देर बाद जब गंगाराम वापस लौटा तो अकेले में बहुत रोया, खुशी के आंसू.

अरसे बाद उस ने स्नेहिल हृदय को महसूस हुआ था, बबुआ की आज की मुसकान अच्छी थी, पहले जैसी. वह तो खुद भी भूल चुका था. मुसकराहट वही लुभावनी होती है जिस में दिल शामिल होता है और वैसा खुशियों व उम्मीदों, उत्साह से झूमता दिल कभी उस के बबुआ की मिलकीयत भी होता था.

बिस्तर में मुंह छिपा कर रोती हुई कंचन को उस की मां ने बताया, केशव नीचे होली खेल रहा है. चकित कंचन ने खिड़की से झांका. सचमुच! केशव के आने से दोबारा रंग उल्लास जम गया था माहौल में. जबरदस्त स्वागत हुआ उस का. लौटते पड़ोसी वापस आ जमे थे. होली अपने रंग पर थी. अब तक तो केशव के झिझकसंकोच भी मिट चुके थे.

कंचन रोना भूल गई. मन झूम उठा तो केशव आखिरकार उस की बात टाल नहीं पाया. जरूर अपने किए पर पछताया भी होगा. क्षमा मांगने की हिम्मत नहीं हुई तो सीधेसीधे बात ही मान ली. सोच कर गर्व से फूल उठी वह.

यह उसे नहीं सूझा कि पहले क्यों इतना भड़क गया था केशव? उस के लिए हमेशा ही अपनी सफलता मायने रखती थी. झटपट नीचे लपक गई. मां को जताना नहीं भूली, केशव को मनाने वाली वह है स्वयं. मेधा के आनेजाने का मांबेटी दोनों को पता नहीं था.

बहरहाल नीचे पहुंच फिर कंचन का मुंह फूल गया. केशव उस समय मेधा पर रंग डाल रहा था. वह उधर पहुंच पाती कि अन्य युवकों ने घेर लिया. एक ही तो दिन मिलता था उन्हें कंचन के सांचे में ढले अंगप्रत्यंग छूने का.

परंतु चिढ़ी कंचन ने आज सब को जबरन परे धकेल दिया. वह केशव के पास पहुंची, "केशव."

स्वर खासा तीखा था, अधिकारपूर्ण. केशव व मेधा चौंके. उसे देख कर मेधा उल्लास से भर उठी, "कंचन."

अपना बरताव याद कर केशव क्षण भर झिझका, फिर उस ने भी कंचन को रंग दिया. कुछ देर कंचन होली के रंग में रंग कर सब के द्वेषभाव भूल गई.

जल्दी ही उसे पुनः खटकने लगा. केशव उस की ओर पूरा ध्यान नहीं दे रहा था. केशव सब के साथ होली खेल रहा था. किसी एक पर ध्यान नहीं था उस का. अपने शालीन संकोची स्वभाववश स्त्रियों की बजाय पुरुषों के बीच ज्यादा रहता था. हां, मेधा के प्रति जरूर गहरी इज्जत बन गई थी मन में, अतः उस से समुचित दूरी रखने के बावजूद ज्यादा खुला हुआ था.

कंचन से तो वह घबराता था. कंचन के गुस्से का ठिकाना नहीं होता था, कब कहर बन टूट पड़े. केशव उस से परे रहने में ही अपना कल्याण मानता था. कंचन इस से भी चिढ़ रही थी. साफसाफ अपनी चिढ़ जताने का साहस नहीं हो रहा था, इस कारण गुस्सा उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था. केशव का

शास्त्रों का महत्त्व

अतीत के विषय में केवल एक बात स्मरणीय है कि अतीत कभी वापस नहीं लाया जा सकता. —मार्कट्वेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेधा के प्रति आदरयुक्त व्यवहार जहां औरों को सामान्य व शालीन दिख रहा था, वहीं कंचन को प्रेमयुक्त.

गुस्सा उतारने के लिए आसान शिकार मेधा ही होती थी. होली खेलतेखेलते, कभी गातेनाचते, मुंह से वाद्य यंत्रों की विचित्र आवाजें निकालते यों ही मेधा किसी के हलके धक्के से कंचन से जा टकराई. बात मामूली थी. चोट किसी को नहीं लगी. किंतु उखड़ी कंचन भड़क उठी, "परे हट." वह चिल्लाई, "चैन से होली भी नहीं खेलने देती. सीधे खड़े नहीं रहा जाता..." और उस ने जोर से मेधा को धकेल दिया.

हतप्रभ मेधा स्तब्ध रह गई. धक्के से गिर जाती, पर दूसरों ने संभाल लिया. फिर भी अपमान तो हुआ ही था. मुंह फक हो गया उस का.

"ऐसा नहीं कहते कंचन." किसी स्त्री ने दबे स्वर में समझाया, "वह तेरी बड़ी बहन है."

"बहन? हुंह!" कंचन ने मुंह बिचकाया, "दुश्मन है मेरी, दुश्मन. कहीं मुंह भी काला नहीं करती कि पीछा छूटे."

यह इंतहा थी. उपेक्षापूर्ण अवहेलना तो कंचन सदा ही किया करती थी. पीठ पीछे गाली भी दे लेती थी, पर मुंह पर ऐसी बदतमीजी कभी नहीं की थी. आज तो कोई कारण भी नहीं था. रोकने की कोशिश के बावजूद मेधा की आंखें भर आईं. वहां खड़ा रहना मुशकिल हो गया. वह मुड़ी और घर की ओर भाग गई.

रंग में भंग हो गया था. बड़ा संतोष मिला कंचन को. मेधा को वह जी भर कर बेइज्जत करना चाहती थी. अभी तो घर पर मौका मिलेगा, जब उस से पिताजी जवाब तलब करेंगे, आई बड़ी केशव से दोस्ती करने वाली.

केशव ने सारा कांड देखा, सुना था. वह तनिक दूर पुरुषों की टोली में खड़ा था. सन्नाटा छा गया था, अतः आवाजें दूर तक सुनाई दी थीं.

मेधा को भागते देख एकबारगी ... हुआ, उसे रोक ले, कंचन को डांटे, पर ... ऐसा करना उचित नहीं होता. लोग ... बनाते.

क्या बातें बनाते?

जेहन से सवाल टकराया ही था ... आवाज सुनी, "विष रस भरा कनक ... जैसे."

केशव ने मुड़ कर पास देखा, पुरुषों ... इस टोली में सभी उम्र के पुरुष थे. एक हि... के प्राध्यापक ने कहा था यह वाक्य, जो केश... के एकदम पास खड़े थे. स्वर धीमा ... किसी ने सुना, किसी ने नहीं. कोई समझा ... तो मुसकरा कर रह गया. गौर किसी ने ... किया.

होली का हुड़दंग फिर शुरू हो गया परंतु केशव सोचता ही रहा. फिर ... जाने क्यों, एक चिर विस्मृत खयाल जेहन ... आ टकराया और केशव से कोई निश्च... करा गया. किसी कुंठा से बैरागी हो ... हृदय में गुलाल की लाली बिखर आई.

हतप्रभ रह गए बाबू शांताप्रसाद ... प्रस्ताव सुन कर. प्रस्ताव कंचन के लि... होता तो आश्चर्य नहीं होता. किंतु केशव ... प्रस्ताव किया था मेधा के लिए. वह खुश ... बेहद खुश. विश्वास नहीं होता था, ... प्रसन्न हो उठे थे. मेधा उन्हें तीनों बच्चों ... सब से प्रिय थी. पत्नी के रूप के अभिमान को ... उम्र भर सहा था. वह अभिमान बेटी में क... गुना बढ़ कर पुनः प्रकट होगा, यह उन ... लिए ऐसा अनदेखा दुःस्वप्न था जो सच ... हो गया था. कंचन के लिए दुख नहीं चाह... थे, किंतु उस के अहंकार को सबक मिले, ... कामना जरूर थी.

केशव के साथ गंगाराम आया था ... आज खुशी से बावला हो रहा था वह. ... बंगले लौटने में सुख था. बातचीत ... शुरुआत, घर के बुजुर्ग की भांति उसी ने की ... थी. मेधा सुन कर अवाक रह गई थी. ... की मां को जरूर दुख हुआ था, कंचन का दु... समझ कर. मन कचोट रहा था, कहीं ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की परवरिश में भी थी. क्यों पक्षपात करती रहीं?

बहरहाल शादी खूब धूमधाम से हुई. धूमधाम बाहरी नहीं, लोगों के दिलों में थी. सब खुश थे. सब मेधा का सुख चाहते थे. किसी ने चुटकी भी ली, "सच ही कहा था मेधा ने, जिसे उस की कदर होगी, वह तो उसे कंचन की नाक तले से भी ले जाएगा."

कंचन ने सब को इस तरह सताया था कि आज उस की पराजय एक भी दिल में हमदर्दी नहीं जगा सकी. वह शादी में शामिल नहीं हुई थी. केशव इसी में खुश था. आज तो वह दूर ही रहे. रिश्ता है तो कहर तो भविष्य में भी टूट सकता है, पर आज नहीं.

सुहागरात को विस्मित मेधा पूछे बिना नहीं रह सकी, "एकदम अचानक मेरे बारे में कैसे सोच बैठे?"

"अचानक नहीं, तुम हमेशा ही अच्छी लगती थीं." केशव टाल गया.

कंचन के बारे में कोई टीकाटिप्पणी करना ठीक नहीं लगा था. आखिर तो कंचन मेधा की बहन थी और उदारहृदय मेधा उस की हर भूल को नजरअंदाज करने की खासी आदी भी थी.

"कभी जताया तो नहीं?" मेधा को संतोष नहीं हुआ.

"तब शादी करने का ही मन नहीं था."

मेधा समझ गई. धीमे से पूछा, "क्योंकि वे आप के लिए लड़की देखने ही निकले थे?"

"हां." केशव तनिक झेंप गया. फिर संभला और खुल कर अपनी भूल स्वीकार करते हुए उस ने कहा, "जाने कैसे यह मूर्खतापूर्ण खयाल अवचेतन मन में जम गया था कि अब ब्याह नहीं करूंगा." केशव हंसा, "शायद यह कोई श्रद्धांजलि लगी मरने वालों के प्रति. उन की चिता के साथ अपनी जिंदगी के शेष पल फूंक कर जाने कैसा ऋण चुका रहा था. लगा, इस से संतोष मिलेगा. बस, इस से आगे सोचना ही बंद कर दिया था."

"छोड़ो." मेधा ने चर्चा टाल दी. "अब तो छुटकारा पा ही गए इस कुंठा से."

असली सवाल टल गया. केशव ने फिर कभी नहीं बताया, वह उस कनक घट को पा कर भी क्या करता, जिस में केवल विष ही छलकता? जिस लरजती, डगमगाई कोमल मनःस्थिति में केशव जिया है, उस में उसे उस के सुखदुख को आत्मसात कर, हर हाल में निभाने वाली सहृदय, स्नेहमयी, गरिमामायी नारीत्व के सहज तेज से दमकती जीवनसंगिनी चाहिए, कोई आत्म-मुग्धा, रूपगर्विता नहीं.

बहरहाल, वह कंचन का शुक्रगुजार था. होली के दिन की उस की बदतमीजी ने ही अनायास एहसास दिलाया था, जिस के अपनत्व, मित्रता व गुणों की मन में प्रशंसा करता रहता है, यह कैसी कद्रदानी हुई उस की कि उस से ज्यादा प्रिय अपनी कुंठाएं हैं? एक खोखली श्रद्धांजलि जो न मृतकों के काम आती, न जीवितों के.

जाने कंचन कभी समझेगी या नहीं? वह तो शुभकामना ही कर सकता है उस के लिए. वह सुधर जाए. ●

तनाव और शराब से नर भ्रूण नपुंसक

गर्भावस्था के दौरान महिलाओं के लिए खानपान और कामधाम पर जितना ध्यान देना जरूरी है, प्रायः उतना ही यह भी जरूरी है कि वे मानसिक तनाव और शराब आदि के नशे से भी दूर रहें. ऐसा न करने से गर्भस्थ नर भ्रूण नपुंसक भी हो सकता है.

स्वीडन के एक मनोवैज्ञानिक संस्थान में इसी आशय से चुहियों पर अनेक परीक्षण किए गए, जिन से यह तथ्य उभर कर आया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता का रचनात्मक आंदोलन

हिंदी को परीक्षाओं में अनिवार्य करें

चिंतन की सर्वोत्तम भाषा अपनी खुद की मातृभाषा होती है. यही भाषा हमारे मस्तिष्क में गूंजती है. हिंदी का स्थान तो विशेष है. देश की सारी राजनीति हिंदी में चलती है. अधिकांश विचारक हिंदी में सोचते हैं. मनोरंजन तक हिंदी में होता है.

फिर भी विडंबना है कि काफी पाठ्यक्रमों में हिंदी को बिलकुल नकार कर पूर्ण माध्यम अंगरेजी कर दिया गया है. सिर्फ अंगरेजी के जानकार लोग दुनिया भर का ज्ञान तो आसानी से पा लेते हैं पर अपने ही देश की समस्याओं, विचारों से अनभिज्ञ रहते हैं.

एक तरह से सिर्फ अंगरेजी माध्यम में पढ़े लोगों की अपनी वर्ण व्यवस्था पनपने लगी है, जो हिंदी का नाम सुनते ही घबरा जाते हैं. ये वे लोग हैं जिन का वास्ता हरदम हिंदी वालों से पड़ता है पर इन का हिंदी ज्ञान नगण्य है. नतीजा यह है कि डाक्टर मरीजों को हिंदी में उन का रोग नहीं समझा पाते. इंजीनियर मिस्त्रियों को तकनीकी बातें नहीं समझा पाते. वैज्ञानिक आम जनता की भाषा में अपना ज्ञान देना भूल जाता है. वकील गवाही लेते समय सही शब्दों का इस्तेमाल नहीं कर पाते. प्रशासक सोचते अंगरेजी में हैं, बोलते हिंदी में हैं, अतः गलतियां करते हैं.

माना अंगरेजी में ज्ञान का भंडार विशाल है लेकिन यदि इस का देश उपयोग न कर पाए तो उस के पीछे भागने का लाभ क्या?

इसलिए जरूरी है कि हर शिक्षित व्यक्ति का हिंदी या अपनी राज्य भाषा पर विश्वसनीय अधिकार हो. जो जितनी ऊंची शिक्षा ले, उस की अंगरेजी अच्छी हो तो हिंदी या राज्यभाषा भी अच्छी हो.

इस उद्देश्य के लिए निम्न कार्य किए जाने चाहिएं :

- *राज्य अथवा केंद्र सरकार के अंतर्गत किसी भी सेकेंड्री स्तर की परीक्षा में कम से कम आधे विषयों में माध्यम हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषा हो. अंगरेजी माध्यम के छात्र चाहें तो आधे प्रश्नपत्रों के उत्तर अंगरेजी में दे सकते हैं.*
- *स्नातक व स्नातकोत्तर परीक्षाओं में कम से कम एक चौथाई प्रश्नपत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाएं. भाषा के पाठ्यक्रमों को इस बंदिश से छोड़ा जा सकता है पर उन्हें एक प्रश्नपत्र जो कुल अंकों का कम से कम पांचवें के बराबर हो, हिंदी अथवा राज्य भाषा में देना होगा.*
- *स्नातक स्तर तक तकनीकी पाठ्यक्रमों में कम से कम दो विषयों का माध्यम हिंदी या राज्य भाषा हो. इस में इंजीनियरिंग व चिकित्सा भी शामिल हों. केवल स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी या राज्य भाषा की बाध्यता समाप्त की जा सकती है. सरकारी प्रशासनिक नौकरियों की प्रवेश परीक्षाओं में कम से कम आधे विषयों का माध्यम हिंदी अथवा राज्य भाषा हो.*

आम व्यक्ति की भाषा में देश का काम हो, इस के लिए यह अति आवश्यक है कि हर शिक्षित व्यक्ति को हिंदी अथवा राज्य भाषा का काम चलाऊ नहीं, अधिकारपूर्ण ज्ञान हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

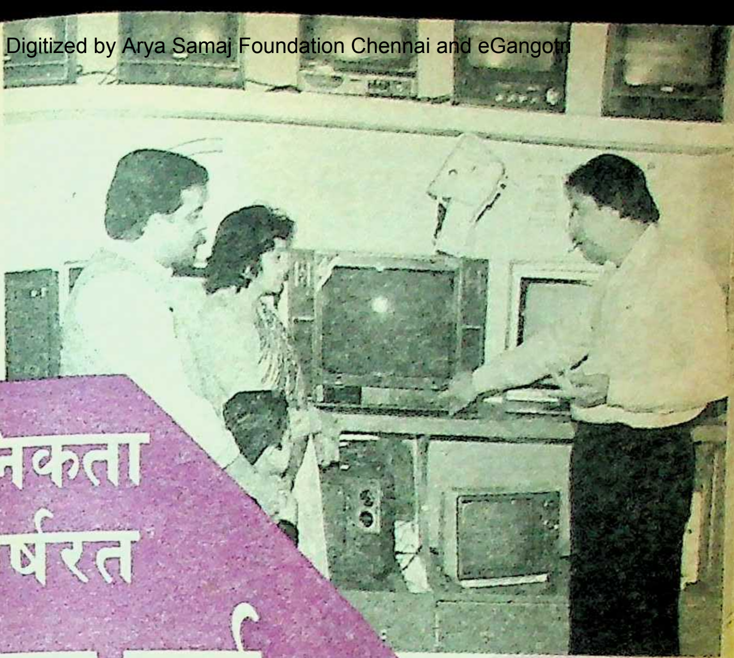

आधुनिकता से संघर्षरत मध्यम वर्ग

लेख • प्रभा शर्मा

नकल, होड़ एवं दिखावे के लिए आधुनिक सुखसुविधाओं की वस्तुओं को प्राप्त करने की मृगतृष्णा ने ही मध्यमवर्ग को मानसिक तनाव से ग्रस्त कर दिया है. कहीं ऐसा न हो कि आप भी इस होड़ में शामिल हो जाएं इसलिए अपनी जरूरत को जानिए.

वैज्ञानिक उन्नति ने जहां मनुष्य को अनेक सुख उपलब्ध कराए हैं, वहीं उन्हें प्राप्त करने की लालसा ने उस के मानसिक सुखों का हरण कर लिया है. मध्यम वर्ग अपनी सीमित आय के सहारे ही भौतिक सुखसुविधाओं को एकत्रित करने में अत्यंत व्यस्त है. अधिक से अधिक चीजें बटोरने की मृगतृष्णा न केवल व्यक्ति से बेगार करवाती है, अपितु उसे उलटेसीधे रास्तों से धन बटोरने पर भी मजबूर करती है. यहीं से मानसिक तनाव अंकुरित होता है.

कृषि प्रधान व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति सीमित साधन व उपलब्धियों में संतुष्ट रहता था. उस के काम, उद्देश्य, उपलब्धियां आदि की सीमा निश्चित थी तथा उन्हीं के मध्य मनुष्य सामाजिक दायित्वों को महत्त्व दे कर निश्चित रहता था. आजकल महंगाई दिनप्रतिदिन बढ़ती जा रही है. वर्तमान पीढ़ी अपनी आय का अधिक भाग खानेपीने व भविष्य के लिए सुरक्षित रखने की अपेक्षा दिखावे पर व्यय करना पसंद करती है. इसी मानसिकता ने 'किस्त प्रथा' को जन्म दिया है.

आज बाजार में प्रेशर कुकर, डिनर सेट से ले कर फ्रिज, वी.सी.आर., कार आदि उपभोग्य सामान किस्तों में उपलब्ध है. जीवन स्तर ऊंचा करने की लालसा मध्यम वर्ग को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस ओर आकृष्ट करती है तथा अकसर लोग सहज सुलभ लगने वाली किस्तों के चक्र में पड़ जाते हैं. इस प्रकार न केवल वे उस वस्तु विशेष का डेढ़ गुना या दोगुना दाम देते हैं, वरन अपने सीधे, सरल जीवन में तनाव को न्योता दे बैठते हैं. इस का यह तात्पर्य नहीं कि आधुनिक सुखसुविधाओं को एकत्रित करना ठीक नहीं. परंतु इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता कि जीवन में शांति व प्रसन्नता सब से मुख्य है. मनुष्य अपने सुख के लिए ही जीवनपर्यंत संघर्ष करता रहता है. पर यदि साधन प्राप्ति की होड़ उस के जीवन का लक्ष्य बन जाए तो वह चाहे कितना भी अर्थ संचय क्यों न कर ले, कभी संतुष्ट व प्रसन्न नहीं हो सकता.

प्रत्येक व्यक्ति को आशावादी हो कर अपने जीवन में अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए. परंतु अपनी प्रसन्नता को धन प्राप्ति की कामना के अधीन नहीं रखना चाहिए. जीवन की सचाइयों व कठिनाइयों को सहज व स्पष्ट तौर पर स्वीकार कर लेना चाहिए.

जिस प्रकार किसी भी व्यक्ति की खानेपीने, काम करने की अलगअलग क्षमता होती है, उसी प्रकार हर व्यक्ति की कमाने व धन जुटाने की क्षमता भी अलगअलग होती है. इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं को पहचाने. उस के अनुपात में अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट व प्रसन्न होना सीखे. प्रत्येक विषय में दूसरों से तुलना कर के हम निराशा के अलावा कुछ हासिल नहीं कर सकते.

साधनों की तुलना पारिवारिक अशांति का कारण बन सकती है. इस से उत्पन्न ईर्ष्या किसी भी मनुष्य को उस के आदर्शों से पदच्युत करने में सहायक सिद्ध हो सकती है तथा किसी भी एक व्यक्ति का कोई एक गलत कदम भी समाज को काफी हानि पहुंचा सकता है. आज समाज में भ्रष्टाचार, मर्यादाहीनता, अनाचार दिन दूने रात चौगुने बढ़ रहे हैं, क्योंकि आधुनिक सुखसुविधाओं को संचित करने की कामना मनुष्य का नैतिक पतन करती जा रही है.

इस दिशा में मध्यम वर्ग को अत्यधिक सतर्कता बरतनी चाहिए. उन्हें अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को सीमित करना चाहिए. उदाहरण के तौर पर रमेश और नरेंद्र की आमदनी लगभग बराबर है. परंतु रमेश के घर भौतिक साधन जैसे कार, फ्रिज, टीवी वगैरा काफी कुछ है, जबकि नरेंद्र स्कूटर पर आतेजाते हैं, उन्हें बर्फ तक के लिए पड़ोसियों का मुंह देखना पड़ता है. यहां दोनों के रहनसहन में अंतर का कारण केवल धन नहीं है. इस अंतर का कारण उन दोनों की व्यक्तिगत पसंद भी हो सकती है. कोई व्यक्ति घूमनेफिरने पर व्यय करना पसंद करता है तो कोई पुस्तकें खरीदने पर. कोई खाने पर अधिक व्यय करता है तो कोई वस्त्रों पर.

स्वयं को हीन न समझें

ऐसी हालत में दूसरों को देख कर स्वयं को हीन समझना ठीक नहीं है. अपनी आवश्यकता, इच्छा तथा व्यय क्षमता में अनुपात बैठा कर ही व्यय करना चाहिए. केवल नकल प्रवृत्ति के अनुयायी बनना किसी के लिए भी दुखदायी हो सकता है. रमेश के घर रंगीन टेलीविजन है, इसलिए नरेंद्र भी किस्तों पर रंगीन टीवी ला कर बैठक में सजा ले, यह ठीक नहीं है.

यदि नरेंद्र के पास पर्याप्त धन है. तभी उन्हें इस प्रकार व्यय करना चाहिए, अन्यथा नहीं. यदि इस सब पर बिना विचारे केवल नकलवश या दिखावे मात्र के लिए उन्होंने उपरोक्त कदम उठाया तो वे किस्तें उन के लिए परेशानी का कारण बन सकती हैं. हो सकता है, उन्हें बच्चों के दूध, फल, वस्त्रों में कोई कटौती करनी पड़े.

ऐसी हालत में किसी भी गृहिणी को चाहिए कि वह पति को किसी भी तरह से अधिक धन जुटाने पर विवश न करे क्योंकि वह विवशता उन्हें केवल आदर्शों से विमुख कर सकती है. इस से उत्पन्न तनाव से उन के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ सकता है, जिस का दुष्परिणाम बच्चों और घर के माहौल पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

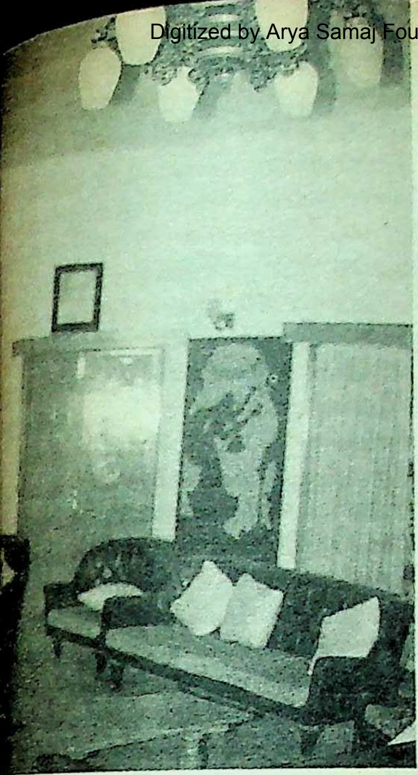

एक दूसरे की देखा देखी या प्रतिस्पर्धा के कारण कोई अपने घर में सामान जमा करता रहे तो क्या यह बुद्धि कहलाएगी?

पड़ता है. मानसिक तनाव अनेक बीमारियों की जड़ है. इस प्रकार समझदार माता व पत्नी होने के नाते संतोष पर ही अपने परिवार की नींव रखिए.

बच्चों में भी होड़ की प्रवृत्ति जन्म न ले, इस के प्रति काफी सतर्क रहना चाहिए. बालकों में संतोष की भावना को प्रोत्साहन दीजिए. इस से परिवार में स्वस्थ माहौल कायम रहेगा. आजकल देखने में आता है कि न केवल बड़े वरन बालक भी यह शिकायत करते हैं कि फलां के घर यह चीज है, हमारे घर नहीं. यही नहीं, कभीकभी तो पढ़ेलिखे लोग भी इस दिशा में सोचने लगते हैं. ऐसी स्थिति में अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों की इन बातों को प्रोत्साहन न दें और उन्हें घर की आर्थिक अवस्था से भी परिचित कराएं.

किसी वस्तु विशेष की उन के जीवन में कितनी उपादेयता है, उस पर विचार करिए तथा बालकों को भी इस से अवगत कराएं.

होड़ से बचने के लिए यह भी आवश्यक है कि ऐसे मित्र बनाएं जिन का आयवर्ग आप के आयवर्ग के नजदीक हो. जिन के आचारविचार आप से मेल खाते हों. न केवल बच्चे वरन बड़े भी अपने मित्र वर्ग के रहनसहन से जानेअनजाने प्रभावित होते हैं. ऐसी अवस्था में यदि आप चाहते हैं कि आप अपने मित्रों से मिलने के पश्चात भी प्रसन्न रहें तो मित्र वर्ग का आप के जैसा ही होना आवश्यक है.

मित्रों के स्तर में आर्थिक अंतर अधिक हो तो निम्न स्तर वाले व्यक्ति के मन में अनेक प्रकार की मानसिक कुंठाएं जन्म ले लेती हैं. परिणामत: अपने से अधिक साधन संपन्न वर्ग में उठनेबैठने के पश्चात कोई भी व्यक्ति जाने अनजाने उतना ही संपन्न दिखने की चेष्टा करने लगता है. साथ ही संपन्न मित्रों के मध्य स्वयं को हीन समझने लगता है. या फिर दिखावे के कारण अपनी हैसियत से अधिक व्यय कर देता है जो परेशानी व तनाव का कारण बनता है.

बच्चों को भी अपने ही जैसे लोगों में उठनेबैठने की सलाह देनी चाहिए. उस से उन के मन में अत्यधिक महत्त्वाकांक्षाएं जन्म नहीं लेंगी. वे अपने मित्रों में प्रसन्न रह सकेंगे और संतुलित व संयमित जीवन जीना सीखेंगे.

प्रसन्न व सुखी जीवन जीने के लिए आवश्यक है कि हम जीवन के लक्ष्य निर्धारित करें. दिखावे से दूर रह कर वास्तविकताओं के मध्य सुखी रहने का प्रयास करें. मित्र वर्ग चयन में न केवल बालक अपितु बड़े भी सतर्क रहें. इस प्रक्रिया में आचारविचार और रहनसहन पर विचार कर के ही मित्रता करें, ताकि मित्र परस्पर प्रगति में सहायक हों. जीवन के छोटे से छोटे काम करने से पूर्व भी भलीभांति विचार कर लें कि उस से आप को क्या लाभ व हानि हो सकती है. केवल दूसरों की नकल में कोई भी काम करना उचित नहीं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

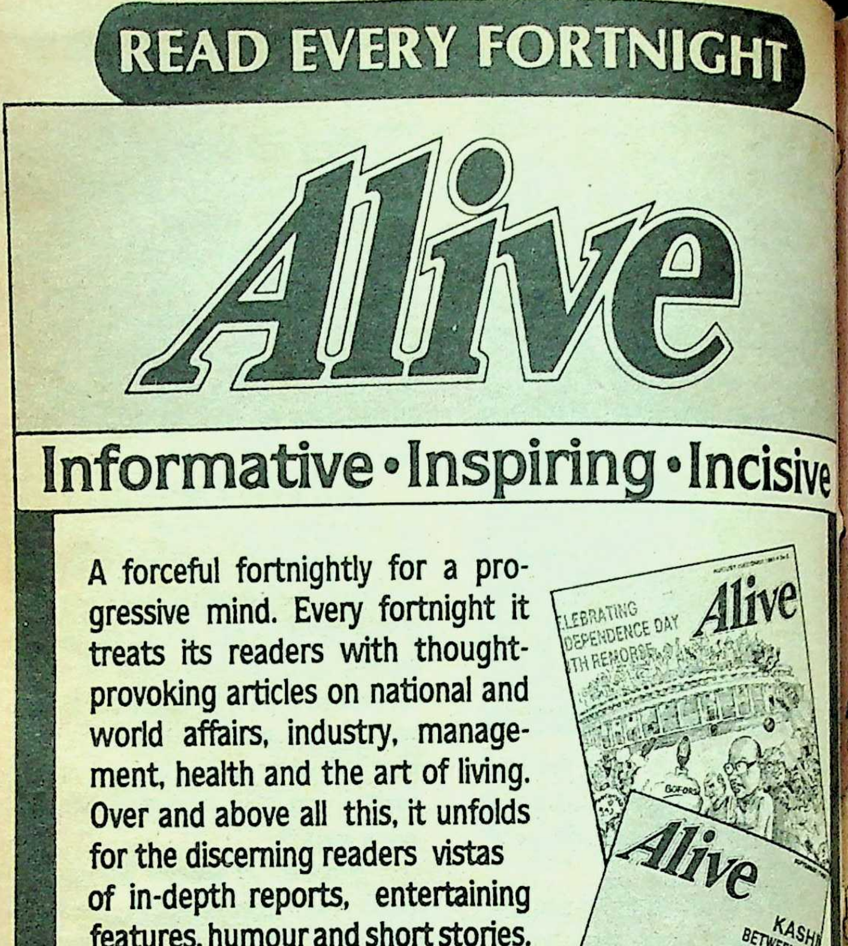

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोकामना

सरिता, बीस साल पहले, मार्च (द्वितीय) 1970

कहानी • फकीरचंद शुक्ला

मां के कई पत्र आ चुके थे. हर एक पत्र में बारबार यही बात दोहराई होती, 'बेटा, छुट्टी ले कर आ जाओ. जब तुम पढ़ते थे तो मैं ने देवी मैया से मन्नतें मांगी थीं कि जिस दिन मेरा बेटा डाक्टर बन कर नौकरी पर लग जाएगा, मैं उस के साथ तुम्हारे दरबार में हाजिर होऊंगी. इसलिए, मेरे लाल, मेरे प्रण की लाज रखो और यथाशीघ्र छुट्टी ले कर आ जाओ.'

मुझे यह मूर्तिपूजा बहुत अखरती है.

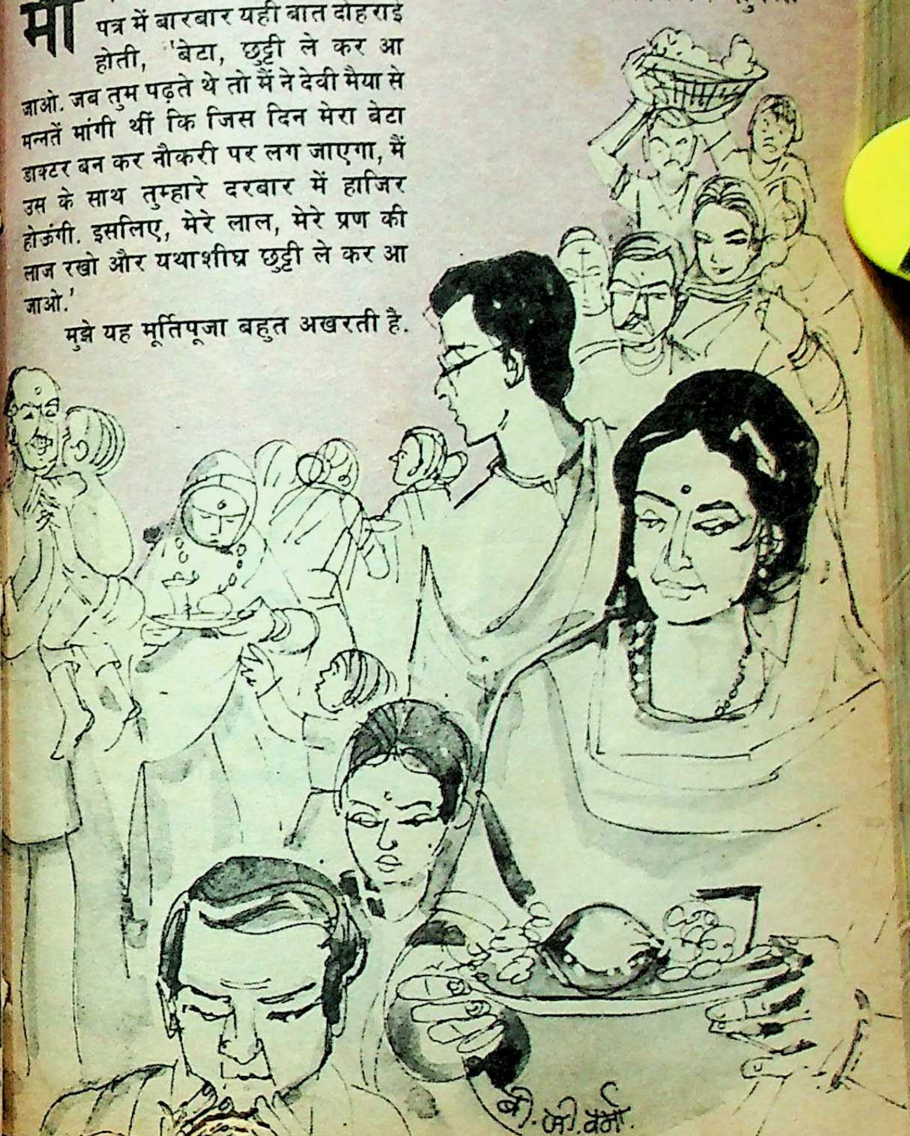

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां को जब कभी मैं इस बारे में टोकता तो यही जवाब मिलता, "तुम डाक्टरी क्या पढ़ने लगे, नास्तिक ही बनते जा रहे हो."

बात वैसे सच भी है. हम डाक्टर मूर्तिपूजा की बजाय इनसान की पूजा को ही महत्त्व देते हैं. इनसान की सेवा ही हमारा धर्म है, पूजा है और कर्तव्य है. जब कोई मरीज स्वस्थ हो कर अस्पताल से जाता है तो हमारा दिल खुशी से झूम उठता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हाय मैं लुट गई! हाय, मैं मारी गई.'' मैं ने
खा एक औरत अपने बाल नोचनोच कर
चिल्ला रही थी.

लगता है, जैसे हमारा परिश्रम सफल हो गया हो.

मां के पत्रों ने मुझे द्विविधा में डाल दिया था. मन जाने को नहीं मानता था, पर मां का दिल तोड़ना भी नहीं चाहता था. खैर बहुत सोचविचार कर यही निर्णय किया कि अपने ही आदर्शों का गला घोंटा जाए और मैं छुट्टी ले कर चल पड़ा. छुट्टी के लिए प्रार्थनापत्र लिखते हुए भी मुझे बहुत अखर रहा था. डाक्टर का एकएक पल बहुत महत्त्व का होता है. जाने कब किस मरीज को उस की आवश्यकता पड़ जाए, लेकिन फिर भी मैं छुट्टी ले कर चल पड़ा.

मेरे आने से घर में जैसे बहार आ गई. मां बारबार मेरा माथा चूम कर, आसपड़ोस के लोगों को सुनासुना कर कह रही थी, "देख लिया न, मेरा बेटा कितना आज्ञाकारी है! तुम लोग यों ही शोर मचा रहे थे कि वह नहीं आएगा." (आसपड़ोस वाले मेरे नास्तिक स्वभाव से भली प्रकार परिचित हैं.)

बस अगले दिन हम देवी मैया के दर्शनों को निकल पड़े.

बाप रे! बसों व गाड़ियों में इतनी भीड़ मैं ने पहले कभी नहीं देखी थी. आश्चर्य से मेरी भौंहें तनी जा रही थीं. मां, मुझे देवी दर्शन की महिमा जताते हुए कह रही थी, "बेटे, तू आने के लिए आनाकानी कर रहा था न! अब स्वयं ही देख ले. कितने लोग मैयाजी के दर्शन करने जा रहे हैं! मैयाजी के दर्शन करना हरेक के भाग्य में कहां? वह जिसे बुलाती है, वही उस के द्वारे जा सकता है."

मां हाथ बांध कर, आंखें बंद कर के कहे जा रही थी, "धन्य है तू देवी मैया! तू धन्य है! तू ने मुझ गरीबनी की विनती बहुत जल्दी सुन ली. जिस तरह तू मुझ पर मेहरबान हुई है, उसी तरह सब पर मेहरबान होना देवी मैया!"

तभी किसी ने जोर से जयकारा बोला, "जयकारा ऊंचे भवनों वाली का!" और सारी बस 'बोल साचे दरबार की जय' की आवाज से गूंज उठी. बस फिर क्या था,

देवी के मंदिर में भक्तजन अपनीअपनी मनोकामना पूर्ण करवाने के लिए खड़े थे कि एक औरत की चीख सुनाई दी. मैं समझ नहीं पाया कि यह चीख मनोकामना पूर्ण होने की खुशी में थी अथवा किसी और कारण से.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्तों ने कीर्तन शुरू कर दिया. भक्त लोग कीर्तन करने में मस्त थे और मैं पर्वतीय क्षेत्र के मनमोहक दृश्यों में खोया हुआ था. फिल्मों में इन पहाड़ों की ऊंचीऊंची चोटियों के दृश्य देखे थे पर अब वास्तविक रूप से देखने पर दिल नहीं भर रहा था.

एक भेंट (भजन) समाप्त होते ही एक भक्त ने जयकारा बोला. अन्य भक्तों की जवाबी आवाज कुछ धीमी थी. पर तभी किसी अन्य भक्त ने ऊंचे स्वर में कहा, "जो न बोले, मैया का चोर." बस फिर तो सारी बस, "बोल साचे दरबार की जय" की आवाज से गूंज उठी. शायद इस डर से कि कहीं न बोलने से मैया के चोर न बन जाएं, भक्तों ने खूब जोर से जयकारा बोला.

एक पहाड़ी बसस्टैंड पर बस रुकी. सब नीचे उतर गए. बेशुमार यात्री वहां पहले ही बैठे थे. इस स्थान से देवी मैया के मंदिर की चढ़ाई शुरू होती थी. एक ऊंची पहाड़ी पर बना मंदिर यों लग रहा था, मानो कुछ ही कदमों की दूरी पर हो. पर वास्तविक दूरी का पता उस समय चला जब कि वहां तक पैदल चलना पड़ा.

सारे रास्ते छोटेछोटे बच्चे पीछे पड़े रहे, "भक्ता, पैसा दे जा."

उन को पैसे बांटने का काम भी मां ने मेरे ही सुपुर्द किया हुआ था. वे तो चीलों की तरह मुझ पर झपटने लगे. अगर कभी क्रुद्ध हो कर मैं किसी को डांटता तो मां नाराज होती, "बेटा, यह तो देवी की लीला है. ये सब बच्चे देवी का रूप हैं. इन के तो पैर चूम."

मां की बात से मुझे और भी गुस्सा चढ़ जाता पर मैं मन ही मन चुप रहता. जिस मां के लिए अपने आदर्शों का गला घोंटा, उसी मां को कोई ऐसी बात नहीं कहना चाहता था जिस से उस के दिल को ठेस पहुंचे.

खैर जैसेतैसे हम मंदिर के करीब पहुंचे. वहां इतनी भीड़ थी कि तिल धरने को जगह न थी. तभी एक आवाज ने मुझे चौंका दिया, "डाक्टर साहब, जय माता की!"

मैं ने पलट कर देखा. एक दुबलापतला आदमी एक छोटे से लड़के को उठाए हुए था.

"पहचाना नहीं मुझे?"

मैं ने उस की तरफ गौर से देखा तो याद आया कि जो बच्चा उस ने उठाया हुआ था उसे एक बार 'एनीमिया' हो गया था, और वह अस्पताल में काफी दिन भरती रहा था.

"अरे हां," मैं झटपट बोल पड़ा, "कैसे हो? बच्चे की तबीयत कैसी है?"

"आप की मेहरबानी से बच्चा ठीक हो गया. मैं ने देवी मैया से मन्नतें मांगी थीं कि मेरा बेटा ठीक हो जाए तो मैं उस के दरबार में सवा पांच रुपए का प्रसाद चढ़ाऊंगा."

मैं मन ही मन मुसकरा पड़ा. 'देवी मैया भी सस्ते में ही काम चला देती है.'

मुझे मजाक सूझा. थोड़ा मुसकराते हुए मैं ने पूछा, "अभी तो तुम कह रहे थे कि बच्चा मेरी वजह से ठीक हुआ है और अब कहते हो कि देवी मैया..."

"आप भी तो देवी मैया की कृपा से ही डाक्टर बने हैं. वरना डाक्टरी की पढ़ाई करना क्या बच्चों का खेल है!"

अभी वह कुछ और कहता, तभी मेरी मां बोल पड़ी, "तुम सच कहते हो, भैया! देवी मैया सब की मुरादें पूरी करती है. उस के लिए तो सब एक जैसे हैं—अमीर हो या गरीब. बस वह जिस पर मेहरबान हो जाए, उस के बिगड़े काम पल भर में संवार देती है."

तभी एक जोर का धक्का लगा और उस धक्के के साथ ही वह आदमी भीड़ में न जाने कहां खो गया.

हम एक छोटे से कमरे में जा ठहरे. हाथमुंह धोया. चाय पीने का मन हुआ. दूध लेने के लिए बाजार को चल दिया. भाव सुन कर एक बार तो रोंगटे खड़े हो गए. साढ़े तीन रुपए किलो और वह भी बिलकुल पानी मिली लस्सी.

"क्यों भाई, यह दूध है या कि लस्सी?" मैं ने दुकानदार से पूछा.

दुकानदार [illegible] घाघ था. झटपट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल उठा, "क्या बात करते हैं, जनाब! आजकल साइंस का जमाना है. अब तो वैज्ञानिक लोग भी यही कहते हैं कि दूध में 80 प्रतिशत पानी होता है."

'और अगर इस में 90 प्रतिशत कर दिया तो कौन सा आसमान टूट पड़ा...' मैं ने मन ही मन सोचा और दूध ले कर चुपचाप घर की ओर चल दिया.

बिलकुल पानी जैसा दूध और उसे भी वह बड़े रोब के साथ बेच रहा था. "खरीदना है तो खरीदो वरना चलते बनो." जहां हजारों की संख्या में भक्त आए हुए थे वहां वह चाहे किसी भाव पर भी बेचे, दूध हो या लस्सी सब बिक जाना था.

चाय पीने के बाद हम मंदिर में पहुंचे. वहां पहले से भी ज्यादा भीड़ थी. हम मंदिर की तरफ बढ़ते जा रहे थे. भक्तों की जयकारें तथा कीर्तन की आवाजों से कानों के परदे फटे जा रहे थे. मां भी पूरे जोर से जयकारा बोल रही थी और बीचबीच में मुझे भी टोक दिया करती थी, "तुम क्यों नहीं बोलते! दूसरे लोगों की तरह जोरजोर से भेटें (भजन) गा!" और फिर मुझे भी थोड़ाबहुत फुसफुसाना पड़ता.

मंदिर में जहां देवी की मूर्ति है, एक छोटा सा जंगला बना है. जंगले के पास ही पुजारी बैठता है. इस जंगले के करीब पहुंचने पर देवी मैया की मूर्ति के दर्शन हो सकते थे. हम जंगले के करीब पहुंचे ही थे कि तभी एक चीख सुनाई पड़ी, "मैं लुट गई रे! हाय, मैं मारी गई. हाय मेरा नेकलेस!"

मैं भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा. देखा, एक औरत अपने बाल नोचनोच कर चिल्ला रही थी, "देवी मैया, तेरे दरबार में किसी ने मेरा नेकलेस उतारा है. मेरा नेकलेस दिलवा दे वरना मैं यहीं जान दे दूंगी. हे देवी मैया! हाय, मैं तो बिलकुल लुट गई!"

पुजारी उसे बांह से पकड़ कर उठाने की कोशिश कर रहा था और अपनी भारी आवाज में चीख भी रहा था, "हम तो पहले से शोर मचा रहे हैं कि अपने गहनेनकदी आदि का खयाल रखो! जेबकतरों से सावधान रहो!"

पर वह औरत अपने बालों और कपड़ों को बुरी तरह से नोच रही थी और खूब चिल्ला रही थी. उस का रुदन देख कर एक बार तो मन भर आया, पर तभी मन में यह विचार आया, 'देवी मैया के लिए सब एक जैसे हैं. वह तो सब की मनोकामनाएं पूरी करती हैं. बेचारा चोर भी तो मन्नतें मांग कर आया होगा और आज उस की मनोकामना पूरी हो गई.'

इस विचार के साथ ही मेरे चेहरे पर हलकी सी मुसकान फैल गई. ●

विश्व नवजागरण ट्रस्ट
की ओर से
हिंदी पुस्तकों के अनुदान के लिए आवेदन आमंत्रित हैं

विश्व नवजागरण ट्रस्ट द्वारा सुरुचिपूर्ण हिंदी साहित्य के प्रचारप्रसार के लिए उन पुस्तकालयों को हिंदी में प्रकाशित नवीनतम पुस्तकें अनुदान के रूप में दी जाती हैं, जिन में हिंदी के पाठक पर्याप्त संख्या में आते हैं. अगर आप भी अपने पुस्तकालय के पाठकों को अच्छा साहित्य उपलब्ध कराने के इच्छुक हैं, तो निम्न विवरण भेजें:

पुस्तकालय का नाम, पता, पुस्तकों की कुल संख्या, आने वाले पाठकों की संख्या (प्रतिमाह), सरकारी/गैर सरकारी अनुदान का ब्यौरा, किन विषयों पर पुस्तकों की आवश्यकता है, पुस्तकालय संचालन समिति के पदाधिकारियों के नाम व पते.

आवेदन की अंतिम तिथि : 31 मार्च 1990

विश्व नवजागरण ट्रस्ट
दिल्ली प्रेस भवन,
झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ बाप नंबरी बेटा दस नंबरी

निर्माता : इकबाल बेग
निर्देशक : अजीज सजावल
संगीत : नदीम श्रवण
मुख्य कलाकार : जैकी श्राफ, फरहा, आदित्य पंचोली, साबिहा, अंजना मुमताज, असरानी, गुलशन ग्रोवर, शक्ति कपूर और कादर खान.

यह पूरी फिल्म कादर खान पर टिकी हुई है जिस ने अपने लटकोंझटकों से दर्शकों को बांधे रखा है. फिल्म में कई प्रसंग तो ऐसे हैं कि दर्शक हंसने को मजबूर हो जाते हैं. वैसे यह हास्य फिल्म नहीं है, फिर भी कोशिश की गई है कि फिल्म में ज्यादा से ज्यादा हास्य स्थितियां पैदा की जा सकें. फिल्म की शब्दावली में भी कार्टूनों का सहारा लिया गया है जो कुछ बदलाव होने की वजह से अच्छा लगता है.

रमण (कादर खान) एक नंबरी धोखेबाज है. वह अपने बेटे प्रसाद (शक्ति कपूर) को बचपन से ही धोखाधड़ी में माहिर बनाता है. रमण अपनी बहन गायत्री (अंजना मुमताज) को पागल करार देते हुए उसे पागलखाने भिजवा देता है और उस के बेटे रवि (बड़ा हो कर जैकी श्राफ) को ट्रेन में बिठा कर उस के हाल पर छोड़ देता है. गायत्री की सारी दौलत बेच कर रमण रातोरात अमीर बन जाता है.

रवि बड़ा हो कर अपनी बस्ती का दादा बन जाता है. उस की मुलाकात रोजी (फरहा) से होती है. दोनों में प्यार हो जाता है. रवि की मुंहबोली बहन अनीता (साबिहा) का प्रेमी अनिल (आदित्य पंचोली) गायत्री को पागलखाने से अपने घर ले आता है. वह रमण से गायत्री का हक वापस मांगता है. रमण अनिल को रास्ते से हटाने के लिए रवि की मदद लेता है. तभी रवि को अनिल के घर अपनी मां मिल जाती है. अब रवि व अनिल दोस्त बन जाते हैं. रवि, रोजी और अनिल तीनों मिलकर रमण और उस के बेटे प्रसाद को कानून के हवाले कर के ही दम लेते हैं. वे तीनों गुल्लू बदमाश (गुलशन ग्रोवर) को भी मार डालते हैं क्योंकि गुल्लू ने ही रोजी के पिता और रवि के पिता की हत्या की थी.

फिल्म की पटकथा कादर खान और शक्ति कपूर को ध्यान में रख कर लिखी गई है. फिल्म के संवाद भी कादर खान ने लिखे हैं जो बिलकुल चालू किस्म के हैं. फिल्म में ऐसे लोगों पर कटाक्ष किया गया है जो पैसे के लालच में अपने बच्चों को चोरी के लिए प्रेरित करते हैं.

इस के अलावा फिल्म में अनेक फार्मूलों का प्रयोग भी किया गया है. युवतियों द्वारा युवकों से मारधाड़ के दृश्य हास्यास्पद लगते हैं.

फिल्म के गीत समीर ने लिखे हैं. दो गीत 'हां पहली बार हुआ है' और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहब्बत हम ने की है' अच्छी बन पड़ी है. संगीतकार नदीम श्रवण ने काफी मेहनत की है, लगता है.

अभिनय की दृष्टि से कादर खान और शक्ति कपूर ने अच्छा काम किया है. जैकी श्राफ के अभिनय में सुधार आया है. साविहा नई अभिनेत्री है, 'लवस्टोरी' जैसी फिल्मों में उसे मौका मिल सकता है. फरहा बेकार रही है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

O अग्निपथ

निर्माता : यश जौहर
निर्देशक : मुकुल आनंद
संगीत : लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार : अमिताभ बच्चन, मिथुन चक्रवर्ती, माधवी, नीलम, आलोकनाथ, रोहिणी हट्टंगड़ी, शक्ति कपूर और डैनी.

फिल्म उद्योग में अभी भी कुछ ऐसे निर्मातानिर्देशक हैं जो अमिताभ के लिए विशेष तौर से कहानी लिखवाते हैं और फिर उस कहानी पर फिल्म बनाते हैं. 'गंगा जमुना सरस्वती', 'तूफान' और 'जादूगर' फ्लाप होने के बाद मनमोहन देसाई और प्रकाश मेहरा जैसे दिग्गज निर्माताओं ने अमिताभ को ले कर फिलहाल फिल्में बनाना बंद कर दिया है. लगता है 'अग्निपथ' के निर्माता यश जौहर को भी जल्दी ही सबक मिल जाएगा और भविष्य में वह भी अमिताभ की फिल्मों से तोबा कर लेगा. दरअसल अभी कुछ महीने पहले ही प्रदर्शित अमिताभ की फिल्म 'मैं आजाद हूं' से निर्माताओं को फिर से कुछ आशाएं बंधी थीं. उन्हें लगा था कि शायद अमिताभ फिर से चल निकलेगा लेकिन उन का यह मात्र भ्रम ही रहा.

'अग्निपथ' अमिताभ के पिता हरिवंश राय बच्चन की एक कविता पर आधारित है, जिस का सार यही है कि जीवन में चाहे कितने ही कांटे आएं, कितनी ही मुशकिलें आएं, हिम्मत मत हारना, आगे बढ़ते

'अग्निपथ' में डैनी और अमिताभ बच्चन : औसत मसाला फिल्म.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहना. कविता का भाव तो अच्छा है परंतु निर्देशक मुकुल आनंद इस भाव को अपनी फिल्म में सशक्त तरीके से व्यक्त नहीं कर पाया है. फिल्म की पटकथा का प्रेरणा स्रोत 'दीवार' फिल्म है. परंतु इस फिल्म की पटकथा 'दीवार' की पटकथा के मुकाबले काफी कमजोर है. 'अग्निपथ' का कमजोर प्रस्तुतीकरण भी फिल्म को नुकसान पहुंचाने में सहायक होगा.

'अग्निपथ' की कहानी एक आदर्शवादी अध्यापक मास्टर दीनानाथ (आलोकनाथ) के बेटे विजय (अमिताभ) पर केंद्रित है. कांचा (डैनी) गांव के जमींदार के साथ मिल कर उस के मांबाप को मार डालता है. अब विजय अकेला ही अपनी बहन दीक्षा (नीलम) को पालता-पोसता है. वक्त बदलता है. विजय एक माफिया गिरोह का सरगना बन जाता है और एकएक कर सभी से अपना प्रतिशोध लेता है. अंत में वह स्वयं भी गोलियों से छलनी हो जाता है. इस कहानी में कृष्णन अय्यर (मिथुन) की भी अच्छीखासी भूमिका है. वह इस जंग में विजय का साथ देता है और अंत में दीक्षा से शादी कर लेता है.

निर्मातानिर्देशक मुकुल आनंद अपनी फिल्मों का कैनवास भव्य रखता है. उस के पुरुष पात्र सुपरमैन होते हैं जैसे अमिताभ. वे दनादन गोलियां खा कर भी जिंदा रहते हैं.

मुकुल आनंद अमिताभ की 'शहंशाह' वाली छवि को दोहराना चाहता था. उस ने अमिताभ की आवाज को बदल कर एक नया प्रयोग करने की कोशिश की है. आवाज बदलने के चक्कर में वह और भी खराब हो गई है.

फिल्म का निर्देशन कहींकहीं पर खराब लगता है. पूरी फिल्म में जहांजहां मारधाड़ के दृश्य आए हैं, चीखपुकार का शोर ही सुनाई पड़ता है. कहींकहीं तो अमिताभ के संवाद ही समझ नहीं आते.

फिल्म सिनेमास्कोप जरूर है परंतु छायांकन धुंधला है. गीत आनंद बक्शी के हैं, जिन में से कोई भी चलने वाला नहीं है.

अभिनय की दृष्टि से सब से अच्छा काम रोहिणी हट्टंगड़ी का कहा जा सकता है. बेटे के आचरण से व्यथित मां की भूमिका को उस ने सजीव बना दिया है. अमिताभ और मिथुन का अभिनय स्तरीय है. माधवी और नीलम के करने लायक फिल्म में कुछ था ही नहीं, तो बेचारी करतीं भी क्या. अर्चना पूर्णसिंह एक खलनायिका के रूप में सफल रही है.

O मजबूर

निर्माता: आर. जोशी
निर्देशक: टी. रामाराव
संगीत: लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार: अशोककुमार, जितेंद्र, जयप्रदा, सनी देओल, फरहा, प्रेम चोपड़ा, असरानी, शक्ति कपूर और कादर खान.

कहने को तो यह फिल्म एक मजबूर लड़की की कहानी पर आधारित है जो समाज के भ्रष्ट लोगों से संघर्ष करती है और अंतत: अपना हक पा लेती है परंतु इस विषय को निर्देशक टी. रामाराव ने फार्मूलों में लपेट कर इस तरह प्रस्तुत किया है कि मुख्य विषय गौण हो कर रह गया है. फार्मूलों के चक्कर में फिल्म लचर हो कर रह गई है. जगहजगह नाटकीय घटनाएं मुंह चिढ़ाती लगती हैं. अगर इसे औसत मसाला फिल्म कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी.

दीनानाथ (अशोककुमार) एक संपन्न और सुखी परिवार का धनी है. उन का बड़ा बेटा रवि (जितेंद्र) एक बेसहारा लड़की शारदा (जयप्रदा) को अपने घर लाता है. रवि का भाई सुनील (सनी देओल) तथा उन की मां उस का स्वागत करते हैं. वक्त बदलता है. रवि और शारदा की शादी तय हो जाती है. ठीक शादी वाले दिन जानकीदास (शक्ति कपूर) दावा करता है कि शारदा उस की पत्नी है, सुबूत के तौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म 'मजबूर' में जयप्रदा : समाज के भ्रष्ट लोगों से टक्कर.

पर वह शादी की तसवीरें भी पेश करता है. इस सदमे को दीनानाथ बरदाश्त नहीं कर पाता और मर जाता है. इस साजिश में किशनचंद (प्रेम चोपड़ा) का हाथ है. वह एक धूर्त व्यक्ति है जो अवैध धंधों में लिप्त है. वह अपने बेटे तेजा (तेज सप्रू) की शादी तेलीराम (कादर खान) की बेटी प्रिया (फरहा) से करना चाहता है. मगर प्रिया सुनील को चाहती है. किशनचंद एक षड्यंत्र कर के रवि पर कत्ल का इलजाम लगवा देता है. मौके का फायदा उठा कर जानकीदास शारदा को हथियाना चाहता है. तभी सुनील को असलियत मालूम पड़ती है. उधर रवि भी जेल से फरार हो जाता है. दोनों मिल कर किशनचंद, जानकीदास तथा उन के आदमियों को जेल पहुंचा देते हैं.

फिल्म की शुरुआत राजनीतिक माहौल में होती है. ऐसा लगा, जैसे यह फिल्म 'आज का एम.एल.ए. रामअवतार' जैसी होगी लेकिन शीघ्र ही फिल्म में मारधाड़ शुरू हो जाती है और आतंक की रणनीति नजर आने लगती है.

निर्देशक टी. रामाराव ने इस फिल्म में लगता है, पहले से ही तय कर लिया था कि कितने फुट मारधाड़ होगी, कितने फुट रोमांस होगा तथा कितने फुट भावनात्मक दृश्य होंगे. फिल्म में इन सभी बातों का पूरापूरा ध्यान रखा गया है.

निर्देशन की दृष्टि से फिल्म सामान्य श्रेणी में आती है. फिल्म के संवाद इकबाल दुर्रानी ने लिखे हैं. संवादकार ने कादर खान के लिए विशेष संवाद (कादर खान स्टाइल) लिखे हैं. असरानी और कादर खान ने कहींकहीं हास्य परिस्थितियां पैदा की हैं. वीरू देवगन के मारधाड़ के दृश्य कमजोर हैं. छायांकन भी सामान्य है.

अभिनय की दृष्टि से कादर खान प्रभावित करता है. जितेंद्र के अभिनय में पुरानापन झलकता है. सनी देओल हमेशा की तरह भावहीन रहा है. नायिकाओं को कुछ करने के लिए फिल्म में गुंजाइश कम थी. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. मोहम्मद अजीज और अनुराधा पोडवाल के गाए गीतों में संगीतकार लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने मेहनत की लगती है. तीन गीत अच्छे बन पड़े हैं.

O जहरीले

निर्मातानिर्देशक : ज्योतिन गोयल
संगीत : आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार : जितेंद्र, संजय दत्त, चंकी पांडे, जूही चावला, भानुप्रिया, विनीता, शफी ईनामदार, शरत सक्सेना और किरनकुमार.

फिल्म 'जहरीले' की आधारशिला है अच्छाईबुराई के बीच खेला गया वह युद्ध जिस में तबाही है, बरबादी है और बुराई पर अच्छाई की विजय है. बरबादी के इस तांडव नृत्य को दिखाने के लिए निर्देशक ने फिल्म को तेजगति देने की कोशिश की है. फिल्म का ढांचा पाश्चात्य फिल्मों की नकल पर आधारित लगता है.

कैप्टन जसवंतकुमार (जितेंद्र) फौज में वीरता दिखाते हुए अपना एक हाथ गंवा बैठता है. वह बंबई के निकट एक गांव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'शांतिनगर में आ कर बस जाता है और अपने रिटायर्ड जीवन के पुनर्निर्माण में लग जाता है. वह एक गैराज खोल लेता है. उस की मदद करता है राजू (चंकी पांडे). तनेजा (किरनकुमार) और उस के साथी 'शांतिनगर के लोगों से हफ्ता वसूलते हैं. जसवंत इन का मुकाबला करता है. तनेजा राका (संजय दत्त) के जरिए जसवंत को मरवाना चाहता है, परंतु राका जसवंत का दोस्त बन जाता है. राजू, जसवंत और राका तीनों मिल कर तनेजा का मुकाबला करते हैं. इस जंग में राका मारा जाता है. जसवंत और राजू, तनेजा और उस के आदमियों को खत्म कर 'शांतिनगर के लोगों की खुशियां वापस ले आते हैं.

फिल्म की कहानी घिसीपिटी व बासी है. इस कहानी में अगर कोई खास बात है तो वह है चंकी पांडे की हास्य भूमिका. चंकी पांडे ने अपने हाथ चलाए हैं तो अपनी भावभंगिमाओं से दर्शकों को हंसाया भी है.

फिल्म का निर्देशन साधारण है. निर्देशक ने ज्यादा से ज्यादा ध्यान मारपीट पर ही केंद्रित रखा है. सभी फार्मूलों का फिल्म में खुल कर प्रयोग किया गया है. फिल्म के संवाद मुश्ताक जलीली ने लिखे हैं, जो बिलकुल चालू किस्म के हैं. फिल्म के गीत मजरूह सुलतान पुरी ने लिखे हैं. दोतीन गीत अच्छे बन पड़े हैं. संगीतकार आनंद मिलिंद ने इन गीतों में मेहनत की है.

अभिनय की दृष्टि से संजय दत्त का काम औसत से अच्छा कहा जा सकता है. जितेंद्र ने एक हाथ से अच्छीखासी मारपिटाई की है और साबित कर दिखाया है कि उस में अभी भी दम है. विनीता नई अभिनेत्री है. उस का चेहरामोहरा भी ठीक है, सुंदर भी है और अभिनय भी अच्छाखासा कर लेती है, फिर भी निर्मातानिर्देशक ने अपनी इस बहन को वेश्या की भूमिका क्यों दी, समझ नहीं आया. वैसे भी फिल्म में इस ने नायिका भानुप्रिया से काफी अच्छा काम किया है.

○ वफा

निर्माता : रमण जैन
लेखकनिर्देशक : एस.एम. अब्बास
संगीत : मंधीर जतीन
मुख्य कलाकार : फारुख 'शेख, करण शाह, विजेयता पंडित, ओम प्रकाश, जगदीप और मुकरी.

यह फिल्म काफी वर्ष पहले बन कर डब्बों में बंद पड़ी थी. किसी भी दृष्टि से फिल्म बिलकुल बेकार है.

'शादी वाले दिन ही राधिका (विजेयता पंडित) विधवा हो जाती है. काफी समय बाद राधिका पर गर्भावस्था के लक्षण प्रकट होते हैं. वह समझती है कि घर में रह रहे एक युवक 'शेखर (फारुख 'शेख) ने बेहोशी की दवा खिला कर उस की यह हालत बनाई है. खानदान की इज्जत बचाने के लिए वह 'शेखर से प्यार का नाटक रचा कर उस से चुपचाप विवाह कर लेती है, परंतु बाद में पता चलता है कि वह गर्भवती थी ही नहीं. वह 'शेखर से सब कुछ नाटक समझ कर भूल जाने को कहती है परंतु 'शेखर नहीं मानता. अंत में राधिका मर जाती है तथा 'शेखर पागल हो जाता है.

इस किस्म की कहानी पर कोई छोटामोटा टीवी नाटक तो लिखा जा सकता है, परंतु पूरी लंबाई की फिल्म बनाना नितांत असंभव है. यह बात हर निर्माता को समझनी चाहिए कि फिल्म कोई उपन्यास नहीं होती, वह तो दृश्य श्रव्य माध्यम है. कहानी के संबंध में इस माध्यम की अपनी मांगें होती हैं तथा वे मांगें यह कहानी पूरी नहीं करती.

फारुख 'शेख उन इनेगिने अभिनेताओं में से एक है जो प्रयास रहित प्राकृतिक अभिनय करना जानते हैं. इस फिल्म में भी वह अलग ही नजर आता है. विजेयता व करन 'शाह समेत अन्य कलाकार अनुल्लेखनीय हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

20 वर्षीया, 170 सें.मी., सुंदर, जाट कन्या, एम.ए. फाइनल अध्ययनरत, हेतु वर. इंजीनियर, डाक्टर, राजपत्रित अधिकारी, मुरादाबाद, बिजनौर निवासी को वरीयता. लिखें : वि.नं. 6588, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती ब्राह्मण, 31 वर्षीया, 148 सें.मी., 3,000/- रुपए, बैंक सेवारत कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 6592, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर, 23 वर्षीया, 163 सें.मी., बिहार निवासी, स्नातक, सुशील, गृहकार्यदक्ष, कायस्थ कन्यार्थ सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6593, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 160 सें.मी., एम.एससी., लेक्चरर, सुंदर, स्लिम, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, राजपूत, सरकारी अधिकारी की कन्या हेतु वायुसेना अधिकारी, डिफेंस आफिसर, पायलट क्लासवन को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6674, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा ब्राह्मण, 24 वर्षीया, 158 सें.मी., बी.ए., गौरवर्ण, गृहकार्य में कुशल कन्या हेतु सरकारी कर्मचारी, इंजीनियर, डाक्टर अथवा लेक्चरार वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं, मध्य प्रदेश निवासी को प्राथमिकता, जल्दी शादी, संपूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 6675, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25 वर्षीया, 152 सें.मी., गेहुआं रंग, इकहरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवारीय कन्यार्थ सुशिक्षित, सजातीय, सेवारत वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 6676, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, मंगली, 20, 150, एम.ए., कन्या हेतु सेवारत, मंगली वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6677, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, सांवली, बी.ए. पास, महाराष्ट्रीयन ब्राह्मण, कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. पारिवारिक जानकारी सहित पत्रव्यवहार करें. लिखें : वि.नं. 6678, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ठाकुर, 25 वर्षीया, ग्रेजुएट, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. पिता उच्च अधिकारी, विवाह शीघ्र एवं अति उत्तम. लिखें : वि.नं. 6679, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 165, एम.ए., सुंदर, बैस राजपूत, कन्या हेतु सजातीय वर. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 6721, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 28, 160, एम.ए., बी.एड., प्राइवेट सर्विस, रंग साफ, कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6722, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 150 सें.मी., बी.ए., गृहकार्य में निपुण, बंगाली, कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6723, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज वैश्य, 22 वर्षीया, 167 सें.मी., बी.ए., गोरी, स्मार्ट, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवार की कन्या हेतु सजातीय, अग्रवाल या वैश्य उपजाति के सुस्थापित, स्वावलंबी, सुयोग्य वर चाहिए. उच्च व्यवसायी को प्राथमिकता. उत्तम विवाह. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 6724, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 152, बीसा अग्रवाल, मंगल गोत्रीय, एम.एससी. (होम सा.) कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6725, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पुंडीर राजपूत, 24 वर्षीया, 158 सें.मी., बी.एड. अध्ययनरत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. अच्छा विवाह. लिखें : वि.नं. 6726, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उ.प्र. निवासी, ब्राह्मण, 24, 157, एम.ए., गोरी, स्लिम, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. पिता केंद्रीय राजपत्रित अधिकारी. लिखें : वि.नं. 6727, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.एससी. फाइनल अध्ययनरत, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवारीय कन्या (आंध्र प्रदेश निवासी) हेतु सुयोग्य, महेश्वरी या अग्रवाल वर चाहिए. उत्तम विवाह. पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 6728, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, 22, 155, स्नातक, सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. सेवारत को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6729, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, कुर्मिय क्षत्रिय, 160 सें.मी., मैट्रिक, रंग गेहुआं, सुंदर, मृदुभाषी, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, गृहकार्य में दक्ष, कन्या हेतु 35-40 के आयु, तलाकशुदा भी मान्य, सच्चा प्यार दे सके एवं संतान सुख भी चाहता हो. दहेज एवं प्रांत मुक्त जीवनसाथी चाहिए. लिखें : वि.नं. 6730, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, 155 सें.मी., सुन्नी मुसलिम, ग्रेजुएट, सुशील, गृहकार्यदक्ष, हेतु आत्मनिर्भर सजातीय वर चाहिए. निस्संतान तलाकशुदा, विधुर भी मान्य. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 6731, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½, 157 सें.मी., अग्रवाल, एम.ए. (रा.शा.) बी.एड., स्लिम, स्मार्ट, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6732, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, शर्मा (बढ़ई), 146 सें.मी., पूर्वस्नातक, मांगलिक, सांडील गोत्र, स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सरकारी कार्यरत या व्यवसायरत, सजातीय वर चाहिए. विश्वकर्मा लोहार भी लिखें : उत्तरप्रदेश-बिहार को प्राथमिकता. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 6733, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लोहार), 22, 155, बी.ए. आनर्स (प्रथम श्रेणी), एम.ए. अध्ययनरत, गोरी, सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, लेक्चरर, प्रशासनिक/बैंक सेवारत या सुयोग्य वर चाहिए. बढ़ई भी विचारणीय. लिखें : वि.नं. 6734, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गोरी, गृहकार्यों में दक्ष, श्रीवास्तव कन्या (एम.ए., 27, 157) के लिए सुशिक्षित, सुस्थापित, सजातीय, सुयोग्य वर अपेक्षित. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6735, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., 160 सें.मी., रंग गोरा, आकर्षक छवि एवं 26 वर्षीया, एम.ए., 155 सें.मी., रंग गेहुआं, छवि आकर्षक, कन्याओं हेतु कार्यरत, कायस्थ वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6736, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, राजपूत परिवारीय, 27, 158, कानवेंट शिक्षित, एम.ए., सुंदर, सुशील, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. डाक्टर, इंजीनियर, मिलिटरी अफसर, बैंक अफसर को प्राथमिकता. शीघ्र व उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 6737, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रहरि वैश्य, 24½, 160 सें.मी., रंग गेहुआं, एम.बी.बी.एस., कन्यार्थ सजातीय, एम.बी.बी.एस., इंजीनियर वर चाहिए. उपजातीय विचारणीय. लिखें: वि.नं. 6738, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, 160 सें.मी., तलाकशुदा, अग्रवाल, ग्रेजुएट, राजस्थानी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6739, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24 वर्षीया, 161 सें.मी., बी.एड., विधवा, एक पुत्र उम्र 3 वर्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय, अति सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य, माहेश्वरी/अग्रवाल वर चाहिए. विधुर भी संपर्क करें. लिखें : वि.नं. 6740, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, 33, 152, बी.ए., टीचर (प्राइवेट), गृहकार्य निपुण कन्या हेतु व्यवसायरत या प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6741, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव कायस्थ, 26, 153 सें.मी., बी.ए., बी.एड. अध्ययनरत, सुंदर, आकर्षक, सांवली कन्या हेतु राजकीय सेवारत वर चाहिए. शादी शीघ्र. लिखें: वि.नं. 6742, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार, 28 एवं 23 वर्षीया, पीएच.डी., और सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु आकर्षक व्यक्तित्व वाले क्लास वन आफिसर, कैप्टन, डाक्टर इंजीनियर वर. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6743, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 155 सें.मी., 65 कि.ग्रा., केंद्रीय दिल्ली सेवारत, 2,100/- रु. मासिक, बी.एससी. (प्रथम श्रेणी), बाईं टांग पोलियो से कमजोर पर चलने में सक्षम, पंजाबी कन्या हेतु सुंदर, गोरा, स्वस्थ वर चाहिए. घरजंवाई इच्छुक भी लिखें. हिमाचल वालों को प्राथमिकता. धर्म, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6744, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 22, 160, एम.ए. अंग्रेजी, गृहकार्यदक्ष, गेहुआं रंग, मांगलिक कन्या हेतु सेवारत, सजातीय वर चाहिए. अति उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 6745, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कन्या राशि, कान्यकुब्ज, भारद्वाज गोत्र द्विवेदी, 19, 168 सें.मी., अति सुंदर, गौरवर्ण, इकहरी, मेधावी, धार्मिक, गृहकार्य कुशल, बी.ए. शिक्षारत, सेवक स्वभाव, शाकाहारी कन्या हेतु सजातीय, सेवारत, स्वरोजगार वर चाहिए. जन्मांक सहित लिखें : वि.नं. 6746, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 एवं 26 वर्षीया, सुंदर, गौरवर्ण, एम.ए., कुर्मी कन्याओं हेतु सजातीय वर चाहिए. शीघ्र, उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 6747, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 155 सें.मी., ब्राह्मण, बी.ए., सुंदर, आकर्षक कन्या हेतु ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6748, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 20 वर्षीया, बी.ए., बी.एड., बी.एससी., गौड़ ब्राह्मण, व्याख्याता की सुंदर, गृहकार्यों में दक्ष कन्याओं के लिए सजातीय, बारोजगार, दहेज विरोधी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6749, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 165 सें.मी., बी.ए., गोरी, सुंदर, छरहरी, पंजाबी ब्राह्मण कन्यार्थ कानपुर के समीप शहरों में सरकारी सेवारत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6750, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 162 सें.मी., डबल एम.ए., इतिहास, साइकोलोजी, एम.एड., डिप्लोमा मार्केटिंग मैनेजमेंट, स्लिम, लंबी, गोरी, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, प्रतिभावान, वैशय विश्नोई कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. विवाह सामान्य. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6751, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, पूर्वीय मध्य प्रदेश निवासी, प्रतिष्ठित, संपन्न एवं सुशिक्षित परिवार की 25 वर्षीया/167 सें.मी., गौरवर्ण, इकहरा शरीर, आकर्षक नाकनक्श, सौम्य व्यक्तित्व, एम.ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अंगरेजी), फोटोग्राफी तथा कंप्यूटर काम में डिप्लोमा, गृहकार्यों में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6752, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्म क्षत्रिय, 27 वर्षीया, 153 सें.मी., एम.एससी., एम.एड., आकर्षक, सुशील, मेधावी कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6753, सरिता, नई दिल्ली-110055.

करौली शाखा यदुवंशी, क्षत्रिय कन्या, 22, 160 सें.मी., लंबी, गोरी, हा. स्कूल से एम.ए. (मनोविज्ञान) सभी प्रथम श्रेणी, एम.फिल. अध्ययनरत हेतु वर चाहिए. सामान्यतः अच्छा विवाह. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6754, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, सांवला रंग, कुर्मी क्षत्रिय, शासकीय सेवारत, कन्या हेतु शासकीय सेवारत/व्यवसायरत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6755, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 153, बिहार प्रदेशीय, कलकत्ता स्थित, स्वर्णकार, कानवेंट शिक्षित, अंगरेजी आनर्स, ग्रेजुएट, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6756, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी (शाक्यवार) 22 व 19 वर्षीया, 155, 157, एम.ए. तथा बी.ए. में अध्ययनरत, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु अधिकारी या व्यवसायी वर चाहिए. जाति या प्रांतबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6757, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार की 40 वर्षीया, 157 सुंदर, गृहकार्यदक्ष, एम.ए., बी.एड., कन्या भोपाल में पब्लिक स्कूल शिक्षिका, हेतु सुयोग्य वर चाहिए. बैंक/इंजीनियर/राजपत्रित अधिकारी को वरीयता, निस्संतान विधुर विचारणीय. लिखें : वि.नं. 6758, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कु. श्रीवास्तव, बी.काम., एलएल.बी. फाइनल अध्ययनरत, गोरी, सुंदर, मेधावी, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, 22, 152 सें.मी., 45 कि.ग्रा., गुजरात राजकोट स्थायी, कन्या हेतु कायस्थ, उपयुक्त सरकारी सेवारत, व्यवसायिक वर. लिखें : वि.नं. 6759, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, जाटव, 150 सें.मी., एम.ए. अंगरेजी अध्ययनरत, सुंदर, गेहुआं रंग, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6760, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, 165 सें.मी., माहेश्वरी मारवाड़ी, बी.काम., स्वस्थ, स्लिम, सुंदर, गौरवर्णीय, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुव्यवस्थित, उच्च वर्णीय, हिंदू, डाक्टर, इंजीनियर या सी.ए. वर चाहिए. मारवाड़ी, गुजराती, जैन वर को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6761, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 22, वर्षीया, 165 सें.मी., एम.बी.बी.एस., इंटर्नशिप कर रही मेधावी कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 22, 148 सें.मी., बी.ए., गृहकार्यदक्ष, सुशील, सुंदर, मंगली कन्या हेतु प. उत्तरप्रदेशीय, बिहार में स्थापित, शाकाहारी, निर्व्यसनीय, आत्मनिर्भर, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6763, सरिता, नई दिल्ली-1100

20 वर्षीया, जैन, 156 सें.मी., स्नातकोत्तर, अत्यंत गोरी, इकहरी, स्मार्ट, प्रतिष्ठित कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 6764, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोत्र गोयल, 22, 163, एम. एससी. (गणित), एम. फिल. (गणित), रंग साफ, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु शिक्षित एवं प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6765, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, यू.पी., सरयूपारीण ब्राह्मण, गोरी, स्मार्ट, उच्च परिवार, डिप्लोमा टेलरिंग, इंटीरियर डेकोरेशन, कोसमोटोलोजी, कुकरी, टेलरिंग, टेलीफोन आपरेटर, रिसेप्शनिस्ट का ज्ञान एवं टाइपिंग और शार्टहैंड, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण सहित एवं कुंडली भेजें. लिखें : वि.नं. 6766, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 24½, 157, 1,800/- एम.ए., निजी संस्थान में कार्यरत, स्मार्ट, सुशील, स्लिम कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुलीन क्षत्रिय, एम.ए., प्रभावी व्यक्तित्व, गृहकार्यकुशल, 26, कन्या हेतु वर. लिखें : वि.नं. 6768, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19, 165 सें.मी., राजपूत कन्या, बी.ए. फाइनल में अध्ययनरत, सुशील, स्मार्ट, साफ रंग, सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व हेतु राजपूत वर चाहिए. दहेज प्रेमी न लिखें: वि.नं. 6769, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 157 सें.मी., (अमरीका) एम.डी. अंतिम वर्ष अभ्यासरत, कुर्मी क्षत्रिय, ग्रीनकार्डधारी, इंजीनियर की सुंदर, सुपुत्री हेतु पोस्ट ग्रेजुएट, मेडिकल डाक्टर, स्मार्ट, सजातीय वर चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6770, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, क्रिश्चियन, गौरवर्ण, साधारण इंटर, संतान अनिच्छुक, कन्या हेतु 30 वर्ष तक आत्मनिर्भर वर लिखें : वि.नं. 6771, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 24, 159 सें.मी., बी.ए., प्रतिष्ठित-पारिवारीय, सुंदर, आकर्षक कन्या हेतु सुयोग्य, आकर्षक वर. डाक्टर, इंजीनियर, आफिसर, व्यवसायी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राथमिकता, जातिबंधन नहीं. दहेज इच्छुक क्षमार्थ. लिखें : वि.नं. 6772. सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 एवं 18 वर्षीया, गौरवर्ण, गृहकार्य निपुण, बारहवीं की छात्राएं, जाति स्वर्णकार, पिता मध्य प्रदेश में केंद्रीय सेवारत, हेतु वर. दहेज विहीन, उत्तम शादी, जाति, प्रांत बंधन नहीं. सेवारत को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6773. सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, बी.ए. (आनर्स), साफ गेहुआं रंग, 157 सें.मी. लंबी, छरहरी, तीखे नाकनक्श, गृहविज्ञान, संगीत और कला में विशेष अभिरुचि वाली, स्वर्णकार कन्या के लिए सजातीय, योग्य वर चाहिए. इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6774. सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सर्वगुणसंपन्न, कानवेंट शिक्षित, एक्जीक्यूटिव, अति उत्तम परिवारीय, माथुर कन्या, 30 (देखने में 22-23), 158. 4,600/-. हेतु हिंदू वर, लगभग 30. उच्च योग्यता पूर्ण, कर्मजीवन में सुस्थापित. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. जो पहले से शादीशुदा या पुरानी बीमारी है, विचारयोग्य नहीं. लिखें : वि.नं. 6775. सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी, प्रतिष्ठित, उच्च व्यवसायी, अग्रवाल परिवारीय, 23 वर्षीया, 155 सें.मी., 42 किलो, स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च नक्षत्री (बृहस्पति केंद्रीय), एम.काम. फर्स्ट डिविजन, चार्टर्ड एकाउंटेंसी (इंटरमीडिएट उत्तीर्ण) अध्ययनरत कन्या हेतु अति सुंदर, सुयोग्य, सजातीय (सिंहल गोत्र छोड़ कर) उच्च अधिकारी/प्रोफेशनल/व्यवसायी वर चाहिए. वर्षांत तक बेहतरीन विवाह. विज्ञापन मात्र उत्तम चयन हेतु. इच्छुक जन्मकुंडली, पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6776. सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोस्वामी (दसनाम), 23. 167. एम.ए., गृहकार्यदक्ष, इकहरा बदन की कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6857. सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 26. 157. एम.ए., सुंदर, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6858. सरिता, नई दिल्ली-110055.

रोमन कैथोलिक कन्या, कानवेंट शिक्षित, इंटर मीडिएट, शिक्षिका, हेतु योग्य वर, 35 से नीचे. लिखें : वि.नं. 6859. सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, मंगल गोत्रोत्पन्न, मंगली, गौरवर्ण, स्लिम, स्वस्थ, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुसंस्कृत, 20 वर्षीया, 165 सें.मी., बी.काम. छात्रा हेतु मंगली, शिक्षित, सजातीय, सेवारत/व्यवसायरत, सुसंपन्न वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 6860. सरिता, नई दिल्ली-110055.

भटनागर, कायस्थ, यू.पी., 21. 159 सें.मी., साफ रंग, स्लिम, गृहकार्यदक्ष, कानवेंट शिक्षित कन्या हेतु सेना, बैंक या अन्य अधिकारी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6861. सरिता, नई दिल्ली-110055.

तोमर राजपूत, इकलौती कन्या, 24. 160. एम.एससी. प्रथम श्रेणी, रंग गेहुआं, आकर्षक व्यक्तित्व, गृहकार्यदक्ष हेतु सुयोग्य, सजातीय सेवारत वर. शीघ्र, अत्युत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 6862. सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 19 वर्षीया, 155 सें.मी. बी.काम (द्वितीय वर्ष) अध्ययनरत, गोरी, सुंदर गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6863. सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, बीसा अग्रवाल जैन, एम.ए. बी.एड., 152 सें.मी., रंग साफ, कन्या हेतु इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, अधिकारी वर चाहिए. पश्चिमी उत्तर प्रदेश वालों को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6864. सरिता, नई दिल्ली-110055.

25. 163. अग्रवाल गर्ग, केंद्रीय सेवारत दिल्ली वासी, वेतन 2,050/-, (चश्मा सहित) स्लिम, गृहकार्यदक्ष, सुंदर कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं, साधारण विवाह, दिल्ली तथा नजदीक वालों को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6865. सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, कानपुर निवासी, 27. 155 सें.मी. एम.एससी., एम.एड., इंटीरियर डेकोरेशन कोर्स बालिका इंटर कालिज में प्रवक्ता, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, आकर्षक, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्यार्थ डाक्टर, इंजीनियर, डिग्री कालिज में प्रवक्ता या राजपत्रित, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6866. सरिता, नई दिल्ली-110055.

पीएच.डी. रसायन शास्त्र, 26 वर्षीया, 160 सें.मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण पुत्री हेतु सिविल सर्विसेज, आफिसर, यूनिवर्सिटी लेक्चरर वर. पिता रिटायर्ड क्लास वन तथा भाई आई.ए.एस. एवं डाक्टर, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6867. सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर क्षत्रिय, सुंदर, एम.ए., बी.एड., 24. 151. गौरवर्ण कन्या हेतु योग्य, सेवारत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 6870. सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

नेत्रहीन ब्राह्मण, 29. 173. 3,100/-. एम.ए. सरकारी अध्यापक, निजी संपत्ति, हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6644. सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यवसायी परिवारीय युवक, बी.काम., जैन, उम्र 25, एक पांव पूरा नहीं मुड़ता, चाल में फर्क नहीं, ऐसी कन्या को अपनाने का इच्छुक जिस के अभिभावक घर-जंवाई के रूप में स्वीकार कर सकें, विकलांग भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकार्य. केवल व्यवसायी एवं उद्यमी ही लिखें : वि.नं 6645, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, माहेश्वरी परिवार, 26 वर्षीय, 173, बी.काम. (आनर्स) बंबई, आसाम में निजी व्यवसायरत, सुविधासंपन्न युवक हेतु सजातीय, सुंदर, ग्रेजुएट, कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 6646, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रचलित विवाह औपचारिकताओं के प्रति अनास्थावान, पंजीकरण हेतु तत्पर, हरियाणा महाविद्यालीय वाणिज्य प्राध्यापक, (29, 170, 3,000/-), संग सुशिक्षित, कामकाजी, नास्तिक, हिंदी ज्ञाता, मांसाहारी, रूढिमुक्त, उदार, प्रबुद्ध, निस्संकोची, चित्ताकर्षक, स्वतंत्र विचार संपन्न, अत्याधुनिक युवतियां समस्त परंपरागत बंधनविहीन मित्रवत, अनुकूलता, मूल्यांकनार्थ स्वयं लिखें : वि.नं. 6648, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28½ वर्षीय, 165, एम.ए., रंग गेहुआं साफ, आकर्षक व्यक्तित्व, मासिक आय 4,000/-, निजी संपत्ति व जमीन वाले ठाकुर (क्षत्रिय) युवक हेतु सुंदर, सुशील, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित वधू चाहिए. जाति व दहेजबंधन नगण्य. लिखें : वि.नं. 6649, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूतपूर्व फौजी अफसर, अब मेडिको, 41 वर्ष, 181 सें.मी. लंबाई, स्वस्थ, हंसमुख स्वभाव को आवश्यकता है ऐसी युवती की जो सर्वप्रथम दोस्त, सुशील, स्वस्थ, स्वभाव से सुंदर, मृदभाषी, गृहकार्य में दक्ष, सेवा भावना, प्रेम सहानुभूति रखने वाली, साहसी, निस्संकोची, संकीर्ण, धार्मिक रूढिवादी विचारों से मुक्त, बाल लंबे, थोड़ी अंगरेजी भाषा का ज्ञान हो तो अच्छा है. गरीब, बेसहारा, अवश्य पत्र व्यवहार करें. युवती स्वयं पत्रव्यवहार करें. Raja Sharma, P.O. BOX 8175 STNF EDMONTON, ALTA, CANADA, T 6 H 4 P I.

25 वर्षीय, 170 सें.मी., ग्यारहवीं पास, निजी व्यवसाय, आय 4,000/-, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं, साधारण शादी. लिखें : वि.नं. 6693, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28½, 165, मांगलिक, भारद्वाज ब्राह्मण, एम.बी.बी.एस. डाक्टर हेतु सजातीय, सुशिक्षित, सुंदर, गौरवर्ण कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6694, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 25, 170 सें.मी., बी.ई., एम.बी.ए., प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान में कार्यरत, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6695, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 166, बी.ए., शाकाहारी, प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय, हैदराबाद निवासी, व्यवसायी, 5,000/- मासिक, हेतु स्लिम, सुंदर, स्मार्ट, गोरी, स्नातिका वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 6696, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 26, बी.ए., पक्की सर्विस, वेतन 2,300/- प्रति माह, युवक हेतु सुंदर, गोरी, शिक्षित कन्या चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6697, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 39 वर्षीय, विधुर, 170 सें.मी., निजी मकान, ज्वैलरी शाप (एक लड़का 11 वर्षीय, एक लड़की 10 वर्षीया). हेतु सुशिक्षित, सुशील कन्या चाहिए. अग्रवाल, महेश्वरी, गुजराती जैन मान्य, शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6698, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46 वर्षीय, 70 कि.ग्रा., 150 सें.मी., अविवाहित युवक हेतु योग्य जीवनसाथी, दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6699, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिष्ठित, संपन्न, सुशिक्षित परिवारीय, बी.ई. (सिविल), एम.एस. (इंजीनियरिंग) अमरीका से कर के वहीं सरकारी इंजीनियरिंग पद पर कार्यरत, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित (इंजीनियर/डाक्टर/विज्ञान स्नातक) वधू चाहिए. सविवरण लिखें : वि.नं. 6700, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 170, 2,000/-, सरकारी कंपनी में सेवारत, गूंगे युवक हेतु वधू चाहिए. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 6701, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, सिविल इंजीनियर, 27, 170, शारजाह (यू.ए.ई.) में कार्यरत हेतु सजातीय, सुंदर, आर्किटेक्ट, डेंटल डाक्टर/साइंस/ अंगरेजी में पोस्ट ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 6702, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा (विश्वकर्मा) परिवारीय, 27 वर्षीय, मैट्रिक, निजी व्यवसाय, राजस्थान, मूल निवासी उत्तर प्रदेश, हेतु वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6703, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 162, 27, 170, एवं 24, 170, कश्यप गोत्रीय (बाथम), संपन्न परिवार, निजी व्यवसाय में संलग्न युवकों हेतु सुंदर, शिक्षित, सजातीय, कन्याएं चाहिए. लिखें : वि.नं. 6777, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 कुर्मी, व्यापारी, बी.काम., प्रतिष्ठित परिवार, 10,000/- मासिक आय, सांवला रंग, युवक हेतु गोरी, सुंदर, ग्रेजुएट लड़की चाहिए. लिखें : वि.नं. 6778, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 35 वर्षीय, परित्यक्त तीन वर्षीय पुत्र, एम.बी.ए., सिविल कांट्रेक्टर, आय पांच अंकों में, पटना में स्वयं का मकान, युवक हेतु स्वस्थ, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6779, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, कुलीन क्षत्रिय, कनाडा में उच्च पद पर सेवारत, विधुर हेतु सुंदर, ग्रेजुएट वधू चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखें : वि.नं. 6780, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, राजस्थान सरकार में चिकित्साधिकारी, 31, 180, 3,500/-, हेतु सुंदर, कायस्थ वधू चाहिए. मेडिको/लेक्चरार/बैंक कार्यरत को प्राथमिकता. जन्मपत्र सहित लिखें : वि.नं. 6781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 170 सें.मी., ला ग्रेजुएट, स्मार्ट, सुंदर, गोयल (वैश्य), सहारनपुर निवासी, निजी व्यवसाय, मासिक आय 5,000/- महीना, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 178, गौरवर्ण के सुंदर, संभ्रांत एवं संपन्न परिवार के दिल्ली में प्रैक्टिसरत चार्टर्ड एकाउंटेंट माहेश्वरी युवक के लिए सुंदर एवं शिक्षित वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 6783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 28, 168, 1,800/-, एम.ए., हेतु वधू चाहिए. मूक विकलांग स्वीकार, जातिबंधन नहीं. संपन्न परिवार ही लिखें : वि.नं. 6784, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गहोई वैश्य (नीखरा) गुप्ता, 26 वर्षीय, एम.ए. पास, गवर्नमेंट कांट्रेक्टर, 173, हेतु बी.एससी., अथवा एम.एससी., सुंदर वधू चाहिए. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 6785, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, 160 सें.मी., आकर्षक, शाकाहारी विधुर, राजस्थानी ओसवाल (जैन), स्नातक, स्वव्यवसायी, साधनसंपन्न, 3 बच्चे, हेतु 25-30 वर्षीया, सजातीय/विजातीय, सुंदर, शिक्षित, घरेलू वधू चाहिए. निस्संतान विधवा अथवा तलाकशुदा भी स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 6786, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 26 वर्षीय, 172 सें.मी., बी.काम., स्टेट बैंक कार्यरत, 1,800/- मासिक, हेतु सुंदर, लंबी कन्या चाहिए. पिता इंजीनियर, भाई का अपना व्यवसाय. लिखें : वि.नं. 6787, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 155, (अ.ज.), एम.ए., क्लर्क टाइपिस्ट, नेत्रहीन, रंग सांवला हेतु साधारण कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6788, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 160 सें.मी., अग्रवाल गोयल, तलाकशुदा, दिल्ली निवासी, निजी मकान, इलेक्ट्रानिक्स व्यवसाय, अच्छी आय, हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में रुचि, कन्या चाहिए, दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 6789, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार, इंजीनियर, 27 वर्षीय, ऊंचाई 158 सें.मी., मासिक आय 4,000/- रु., हेतु सुंदर, गौरवर्ण, डाक्टर कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6790, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौतम ब्राह्मण, 25 वर्षीय, सेवारत एवं निजी व्यवसाय, हेतु सजातीय वधू चाहिए. इंटर, बी.टी. और बी.ए., बी.एड. को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6791, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा, विधुर, 39 वर्षीया, 165, दिखने में 30, ... मासिक आय पांच अंकीय, दो बच्चे 18, 10, प्रतिष्ठित परिवार, सुसंपन्न, भूस्वामी, कपड़ा व्यवसायी हेतु सुशील, सजातीय, लगभग 30 वर्षीया वधू. निस्संतान तलाकशुदा विधवा भी विचारणीय. सादा विवाह. लिखें : वि.नं. 6792, सरिता, नई दिल्ली-110055.

डोगरा, जारड़, ब्राह्मण, सुशिक्षित, सुंदर, गौरवर्ण, 25, 172, आय 2,200/-, जम्मू निवासी, बंबई कार्यरत, निजी फ्लैट, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष वधू. लिखें : वि.नं. 6793, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चटर्जी बंगाली, सुस्थापित, स्वावलंबी, सुंदर, समाज सेवक, सर्व दिशा से अच्छे गुण, बी.एससी., डी.एम.ई. पी.डब्लू.आई., पश्चिम रेलवे, आवास सहित, 34, 164, 4,000/-, कलकत्ता में मकान संपत्ति (6 वर्षीया कन्या सहित), विधुर हेतु शिक्षित, सुशील, उदारचित्त, बालिग वधू. मधुर व्यक्तित्व सहित 30 वर्षीया तक, जाति, धर्म, भाषा, विधवा, निर्दोष तलाकशुदा बंधन नहीं, दहेज नहीं, शीघ्र विवाह हेतु लिखें : वि.नं. 6794, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 26, 168, शासकीय सहायक शिक्षक, सुंदर, स्मार्ट, ग्रेजुएट (...) इकलौता पुत्र हेतु शिक्षित, सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 6795, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 165 सें.मी., पश्चिमी उत्तरप्रदेशीय, गौड़ ब्राह्मण, मैट्रिक, वायरमैन, अरुणाचल प्रदेश में सरकारी सेवारत, चार अंकीय आय, संपन्न परिवार, स्वस्थ, गौरवर्ण, चरित्रवान युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेजरहित विवाह. लिखें : वि.नं. 6796, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 24, 175, लखनऊ निवासी, निजी व्यवसाय, आय पांच अंकों में, सुंदर युवक हेतु आकर्षक, शिक्षित, इकहरी, संभ्रांत, गृहकार्य में दक्ष, अति सुंदर वधू चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 6797, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, विधुर, एक पुत्र, एम.एससी. (फिजिक्स), केंद्र सरकार में द्वितीय श्रेणी अधिकारी हेतु घरेलू, सुशील, विधवा अथवा कोई उपयुक्त लिखें: वि.नं. 6798, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी (गोढाड़े), 28½, 170 सें.मी., बी.एससी., उच्च निजी व्यापाररत, अपनी कार, अपना मकान, कानपुर निवासी युवक हेतु सुयोग्य, सुंदर, पढ़ीलिखी एवं गृहकार्यदक्ष, वधू चाहिए. दहेज समस्या रहित. सिंधी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6799, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 170 सें.मी., गोरे (नाई), केंद्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिसर्च इंजीनियर हेतु ... गृहिणी शीघ्रातिशीघ्र चाहिए. लिखें : वि.नं. 6800, सरिता, नई दिल्ली-110055.

172, 25 वर्षीय, आर्मी में सर्विस, हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, सरकारी सेवारत वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6801, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीय, 165 सें.मी., बी.ए., मध्य प्रदेश बैंक सेवारत, आय चार अंकीय, स्वस्थ, सांवला युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6802, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 154 सें.मी., कोरी, बी.ई. सहायक अभियंता हेतु शिक्षित, सुंदर, सुशील वधू चाहिए. पिता सेवानिवृत्त रेलवे अधिकारी, उपजातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6803, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वार्ष्णेय, 27, 162, 3,700/-, सुंदर, स्मार्ट, इकहरे, इकलौते मैनेजर, निजी संपत्ति, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू. जातिबंधन नहीं. शिक्षित, संपन्न ही लिखें : वि.नं. 6804, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 174, बी.ए., पंजाबी हिंदू, बिहार निवासी, स्वव्यवसायरत, मासिक 7,000/-, युवक हेतु सुंदर, सुयोग्य, गृहकार्यदक्ष, व्यवहारकुशल, सजातीय कन्या चाहिए, दहेजबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6805, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 165 सें.मी., निजी इलेक्ट्रानिक व्यवसायरत, सनाढ्य ब्राह्मण हेतु ग्रेजुएट, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 6806, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चमार, 25, 166, सांवले, राष्ट्रीयकृत बैंक में लिपिक हेतु शिक्षित वधू चाहिए. सेवारत को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6807, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, स्वस्थ, चरित्रवान, शाकाहारी, धार्मिक विचारों वाला, जैन युवक घरजंवाई बनने का इच्छुक है. जातिबंधन नहीं. इच्छुक व्यक्ति लिखें : वि.नं. 6808, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, सिविल इंजीनियर, शासकीय कार्यरत, कुर्मी हेतु सुंदर, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6809, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भट्ट ब्राह्मण, 28, 175 सें.मी., म.प्र. निवासी, एडवोकेट युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. सेवारत को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6810, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलिम (सुन्नी), 28 वर्षीय, 169 सें.मी., महाराष्ट्रीयन निवासी युवक हेतु स्मार्ट, सुंदर, सुशील, जीवनसंगिनी चाहिए. मासिक आय उत्तम, दहेज व जातिबंधन नहीं. लड़की स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. लिखें : M.J. SHEIKH, POST BOX 4327, DAMMAM 31491, SAUDI ARABIA.

मुसलिम (सुन्नी), 27 वर्षीय, 171 सें.मी., युवक हेतु स्मार्ट, सुंदर, सुशील जीवनसंगिनी चाहिए. मासिक आय 8,000 रु., दहेज व जातिबंधन नहीं, लिखें : KHALEED AKHTER POST BOX 4327, DAMMAM 31491, SAUDI ARABIA.

26½, 155 सें.मी., गोयल, ग्रेजुएट, निजी व्यवसाय (केमिस्ट एंड जनरल), युवक हेतु शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6811, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 3,500/-, 168, हेह्य वंशी क्षत्रिय (कांस्यकार ताम्रकार), हैंडसम, प्राध्यापक (अंगरेजी) हेतु अति सुंदर, गोरी, लंबी, सुशिक्षित कन्या चाहिए. सविस्तार लिखें : वि.नं. 6812, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रजापति, 28 वर्षीय, 167 सें.मी., स्मार्ट, आकर्षक, वायु सेना अधिकारी (इंजीनियर), हेतु सजातीय, स्नातक, सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6813, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गोयल, 24, 175, बी.काम., एलएल.बी., सुंदर, स्मार्ट, उच्च प्रतिष्ठित व्यवसायरत, मासिक आय पांच अंकों से अधिक, हिंदी भाषी हेतु सुशिक्षित, अति सुंदर, स्मार्ट, अग्रवाल, महेश्वरी वधू. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 6814, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25 वर्ष, 160, एम.बी.ए. युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, माहेश्वरी, अग्रवाल, जैन कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6815, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैढ़ राजपूत, 21 वर्षीय, निजी व्यवसायरत, हर तरह से सुविधासंपन्न लेकिन चलनेफिरने में असमर्थ, रंग साफ युवक हेतु वधू चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6816, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 29, 170, अंगरेजी माध्यम शिक्षित, आय चार अंकीय, व्यवसायी, सुंदर, संपन्न परिवार, पिता अवकाश प्राप्त केंद्रीय सरकार के एवं भाई बैंक में प्रथम श्रेणी अधिकारी, हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. उत्तम तथा शीघ्र विवाह. दहेज तथा जातिबंधन नहीं, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6817, सरिता, नई दिल्ली 110055.

पुत्रवधू रूप में दो प्यारी सी बेटियों की तलाश है. कन्याएं इज्जतदार (चाहे गरीब) परिवार की, सुंदर, समझदार, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक विचारों वाली होनी चाहिए. उचित कन्याएं मिलते ही साधारण विवाह तीन कपड़ों में शीघ्र. अमरीका में बसे, हिंदी एवं पंजाबी भाषी, देहलवी, पूर्णतया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय विचारधारा वाले, बहुत प्यार देने वाले, संपन्न परिवार में मातापिता एवं हैंडसम, कंप्यूटर प्रोफेशनल, 32, 178 सें.मी., एवं 26, 180 सें.मी., दो पुत्र, कोई बंधन नहीं. कन्या मुख्य, प्रथम बार संपूर्ण पारिवारिक जानकारी, जन्मतिथि, ताजा फोटो आवश्यक, इच्छुक परिवार अथवा कन्याएं निस्संकोच विश्वास के साथ लिखें : DEAR PARENTS, BOX 16363, ATLANTA, GA 30321, U.S.A.

नेत्रहीन युवक, 27, 157 सें.मी., एम.ए., संगीत शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय (पंजाब में), वेतन 1,700,हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. मामूली विकलांग, निस्संतान तलाकशुदा, विधवाएं भी. जाति, दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 6818, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय सेवारत, 27, 168, 1,600/-, एम.ए., शाक्य कुलीन, नेत्रहीन युवक हेतु मृदुभाषी, विचारशील साक्षर वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6819, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, 35, 180, 2,500/-, बी.ए., एलएल.बी., हरियाणा सरकार में सेवारत, स्थायी संपत्ति, हरियाणवी युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6820, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 175 सें.मी., एम.बी.बी.एस., एम.एस., प्रभावशाली एवं स्मार्ट, संपन्न, प्रतिष्ठित, दिगंबर जैन परिवार के इकलौते, व्यसनहीन डाक्टर पुत्र हेतु अतिसुंदर, लंबी, स्लिम, गौरवर्ण वधू चाहिए. डाक्टर को प्राथमिकता. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 6821, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, सरकारी सेवारत, 46, 3,500/-, हेतु सुयोग्य, स्वस्थ जीवनसाथी. लिखें : वि.नं. 6822, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, पंजाबी, 28, एम.ए., (संगीत) अध्यापक, 2,340/-, दो निजी मकान, दिल्ली निवासी, युवक हेतु मैट्रिक, ग्रेजुएट वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6823, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दो सगे ब्राह्मण भाई,उत्तर प्रदेशीय, आयु 29-25, केवल एक माह के लिए विवाह हेतु भारत आ रहे. दोनों लंबे, स्वस्थ, आकर्षक, नम्र, सुंदर, अच्छे आचारणार्थी. अमरीका में उच्च शिक्षा प्राप्त कर अमेरीकन सरकार में उच्च पद पर स्थायी रूप से कार्यरत, स्वावलंबी, सक्षम योग, परिश्रमी और अत्यंत आर्थिकता युक्त एवं नागरिकता प्राप्त, युवकों हेतु वधू चाहिए. बायोडाटा सहित पत्राचार करें. कन्या सुंदर, सौम्य, शिक्षित, आकर्षक, मधुर, भारतीय परिवार परंपरा युक्त होनी चाहिए. सजातीय कन्या को शिक्षा, गुण व स्वरूप पर वरीयता दी जाएगी. लिखें : वि.नं. 6824, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलमान बैचलर हेतु कैरियर+गृहस्थाकांक्षी सवर्ण, आकर्षक, 30 वर्षीया, अध्यापिका (गृह विज्ञान). स्वेच्छिक गैर मुसलिम स्वीकारणीय. लिखें : वि.नं. 6825, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी, दिगंबर जैन परिवार के मात्र पुत्र 27 वर्षीय, 180 सें.मी., गौरवर्ण, ग्रेजुएट, फैंसी गारमेंट व्यवसायरत युवक हेतु कद, श्वेत वर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुशील, सजातीय बहू चाहिए. प्रथम बार में ही संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6826, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वर्णकार (माहोर क्षत्रिय), 25 वर्षीय, सें.मी., अति प्रतिभावान, मास्टर आफ फाइन आर्ट्स (स्कल्पचर), प्रतिष्ठित परिवारीय, अपने व्यवसाय में सुव्यवस्थित, युवक हेतु सुशिक्षित, सुशील चाहिए. लिखें : वि.नं. 6827, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, अ.जा., 26 वर्षीय, 168 सें.मी., 3,500/-, बी.ई.,विद्युत इंजीनियर, तेल प्राकृतिक गैस आयोग (सरकारी सेवारत), हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 6828, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुसंस्कृत, सुव्यवस्थित, बुंदेलखंडीय, अहिरवार (चमार) परिवार के 29, 162, कार्यपालन यंत्री, शीघ्र पदोन्नति निश्चित एवं 26, 172, डाक्टर पुत्र हेतु वधू. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 68[illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 167, 1,400/-, कुमाऊंनी ब्राह्मण, स्नातक, प्राइवेट कार्यरत युवक कतिपय कारणों से सुस्थापित, सजातीय परिवार से संबंध का इच्छुक जो पर्याप्त आर्थिक व सामाजिक संरक्षण दे सके. जंवाई बनना स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 6830, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 165, फूलमाली सैनी, कोपरेट कंपनी में कंसलटेंट इंजीनियर, वेतन पांच अंकों में, अमरीका में सगे चाचा (डाक्टर) के साथ रहने वाले, स्वस्थ युवक हेतु सुशिक्षित एवं अच्छे संस्कार वाली वधू चाहिए. मेडिको, इंजीनियर को उच्च वरीयता. जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित प्रथम बार में लिखें : वि.नं. 6831, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लोहार/बढ़ई), 27, 175, एम.बी.बी.एस. डाक्टर हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6832, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 2, 600/-, 35 वर्षीय, स्नातकोत्तर माध्यमिक शिक्षक हेतु दहेज बंधनादि मुक्त सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 28, 168, गोरा रंग, सिविल इंजीनियर सरकारी सेवारत युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. महाराष्ट्रवासी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, 28, 175, 5,000/-, उत्तर-प्रदेशीय, व्यापारी/मोटर मेकेनिक को दहेज विरोधी, सुशिक्षित कन्या चाहिए. सैनिक परिवारों को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 6835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, गुप्ता, 36 वर्षीय, विधुर, चार बच्चे लड़की 15, 13, 9 लड़का 11 वर्ष, लखनऊ निवासी, निर्व्यसनी, संभ्रांत परिवार, निजी आवास, कार, टेलीफोन, व्यवसायी, आय पांच अंकीय, हेतु घरेलू, गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी चाहिए. कुंआरी, निस्संतान विधवा, तलाकशुदा, संतानोत्पत्ति असमर्थ तथा भविष्य में संतान अनिच्छुक चाहिए. प्राथमिकता संतानोत्पत्ति असमर्थ तथा भविष्य में संतान अनिच्छुक को/दहेज, जातिबंधन नहीं. निस्संकोच लिखें : वि.नं. 6836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय राजपूत (ठाकुर), बिहारवासी, 39 वर्षीय, स्नातक, साइंस एवं ला, आकर्षक, गेहुआं रंग, 167 सें.मी., सरकारी पदाधिकारी, मासिक आय 6,800/-, शहर एवं देहात में मकान, जमीन, वाहन, पूर्व पत्नी की अक्षमता के चलते, निस्संतान विधुर हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, शिक्षित, पारिवारिक गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज रहित. शीघ्र साधारण विवाह माल्यार्पण से मंदिर में. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें, विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. लिखें : वि.नं. 6837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अति उत्तम कार्यरत, माथुर, इंजीनियर, 38 (देखने में 30), 172, विदेश में कार्य किया, अभी भारत में व्यवसायरत. कर्मजीवन, पारिवारिक कारणों हेतु विवाह में देर. प्रथम बार में पूर्ण विवरण मिलने पर, विवाह कार्य तेजी से अग्रसर होगा. लिखें : वि.नं. 6838, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38.167 सें.मी., अनुसूचित जाति, मासिक आय चार अंकों में, विदेश में कार्यरत विधुर हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, स्टाफ नर्स, अध्यापिका, सरकारी नौकरीशुदा, 30-35 वर्ष तक की विधवा, निस्संतान तलाकशुदा, बच्चों में रुचि रखने वाली, सजातीय ही जीवनसंगिनी चाहिए. दिल्ली, राजस्थान, हरियाणावासी को प्राथमिकता. लिखें : THE ADVERTISER, P.O. BOX-35790, JALAN B.B. ALI, SULTANATE OF OMAN.

48 वर्षीय, एकाकी विधुर, निजी व्यवसाय, आय 5,000/- मासिक, सभी जिम्मेवारियों से मुक्त हेतु सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6851, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल अविवाहित, ग्रेजुएट, लखपति आमदनी 1,000/-, आयु 54, प्रचारक हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6852, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, स्मार्ट, डाक्टर, 25, 170, एम.एस. (मनोचिकित्सा) ... प्राथमिकता). लिखें : वि.नं. 68.. दिल्ली-110055.

स्नातक, विदेश मंत्रालय कार्यरत, 26, 168, 2,200/-, पिता अवकाश प्राप्त प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, निजी दिल्ली-फ्लैट, हेतु यादव कन्या चाहिए. उच्चस्तरीय परिवारों, जो अंगरेजी बोलने वाली कन्या को विदेश भेजने के इच्छुक, पत्राचार करें. लिखें : वि.नं. 6854, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 25, 164, 2,500/-, एम.एससी., सरकारी कर्मचारी, पिता सरकारी वरिष्ठ अफसर, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, गोरी वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6855, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 28, स्नातकोत्तर, 168 सें.मी., स्टेट बैंक लिपिक, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 6856, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, एम.एस. सर्जरी, आई.ए.एस., कान्यकुब्ज ब्राह्मण के लिए सिविल सर्विसेस आफिसर, मेडिको, पोस्टग्रेजुएट वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6868, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राठौर क्षत्रिय, 29, 176, एम.ए., एलएल.बी., डी.पी.एड., नवोदय विद्यालय में कार्यरत, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 6869, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

26½, 152 सें.मी., 3,300/-, गोरी, सुंदर, गृहकार्य कुशल, मिलिट्री नर्सिंग में लेफ्टिनेंट कन्या एवं 25½, 165 सें.मी., 2,200/-, रेलवे सर्विस, डिग्रीधारी, आकर्षक युवक हेतु योग्य, पंजाबी खत्री, कार्यरत वर वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 6652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (तोमर ठाकुर), म.प्र. निवासी, 29, 160, बी.ए., गौरवर्ण, आकर्षक एवं गृहकार्य में दक्ष बहन हेतु सुयोग्य, शिक्षित, सेवारत, व्यवसायरत वर चाहिए एवं भाई 31, 168, 3,500/-, इंजीनियर बी.ई. (सिविल), सरकारी सेवारत हेतु सुयोग्य, शिक्षित वधू चाहिए. एक ही परिवार से संबंध स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 6653, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 23, 165, 22, 155, मैट्रिक, सर्वगुण संपन्न कन्याओं हेतु दहेज विरोधी वर चाहिए. एवं 27, 168, 22, 158, मैट्रिक, बिजनेसमैन युवकों हेतु कन्याएं चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 6839, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, मध्य प्रदेश निवासी, प्रतिष्ठित परिवार की 35 वर्षीया, 164 सें.मी., 2,300/-, केंद्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय विज्ञापनों की दरें ... संपन्न परिवार

विज्ञापनों की दरें

प्रोफेशनल : 4.50 रु. प्रति शब्द
वूमंस ईरा : 2.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व वूमंस ईरा : 5.50 रु. प्रति शब्द

पूर्ण विवरण के लिए लिखें:
मुख्य विज्ञापन कार्यालय
दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.
फोन नं.-3321313.

विद्यालय में अध्यापिका, सरल स्वभाव, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु योग्य वर एवं भाई 31, 166, 2,500/-, शासकीय सेवारत हेतु योग्य वधू. एक ही परिवार में रिश्ता स्वीकार्य. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6840, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31, 175 सें.मी. 2,500/-, कान्यकुब्ज ब्राह्मण मांगलिक हेतु वधू एवं 28, 148 सें.मी., आई.टी.आई. हेतु वर. विधवा, तलाकशुदा, भाई, बहन विचारणीय. लिखें : वि.नं. 6841, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भटनागर, 165 सें.मी., 26 वर्षीय, कैप्टन, 4,000/-, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, स्मार्ट गृहकार्यदक्ष वधू तथा 21 वर्षीया, 154 सें.मी., एम.ए., गोरी, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. उपजाति-बंधन नहीं, संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 6842, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुलश्रेष्ठ कायस्थ, 22, 157, हायर सैकंड्री गेहुआं, गृहकार्य कुशल कन्या हेतु वर एवं 21, 165, आय चार अंकीय, पोस्ट आफिस एजेंट हेतु वधू चाहिए. अपना मकान. दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 6843, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

6 वर्षीय, सुंदर, स्वस्थ, अग्रवाल पुत्र को गोद लेने के इच्छुक दंपती लिखें : वि.नं. 6709, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निस्संतान राजस्थानी युवा दंपती (राष्ट्रीयकृत बैंक अधिकारी, आय, 40,000), को एक वर्ष से छोटा स्वस्थ, सुंदर, लावारिस बालक गोद चाहिए. आप के क्षेत्र में जब भी ऐसा बालक मिले. तुरंत लिखें : पत्राचार गोपनीय. इच्छुक अनाथालय, स्वयंसेवी संस्थाएं लिखें : वि.नं. 6655, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीय, विवाहित, खत्री, आयुर्वैदिक डाक्टर, स्वयं अकेला, किसी विदेशी या देशी दंपती, विधुर या विधवा को गोद जाना चाहता है. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6844, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निस्संतान अरोड़ा, प्रतिष्ठित परिवार के पंजाबी दंपती, निजी व्यवसाय एवं मकान, नवजात शिशु (लड़का) गोद लेने के इच्छुक लिखें : वि.नं. 6845, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल परिवार एक बालिका गोद देना चाहता है. संभ्रांत अग्रवाल परिवार संपर्क करें. लिखें : वि.नं. 6846, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुलीन, निस्संतान दंपती को स्वस्थ, सुंदर, शिशु चाहिए. लिखें : वि.नं. 6847, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

प्रतिष्ठित व्यवसायी को आफिस-घरेलू कार्य हेतु 20-30 वर्षीय शाकाहारी, मृदुभाषी, हिंदी/अंग्रेजी शिक्षित, अकेले युवक/युवती चाहिए. आजीवन नौकरी, आवास, भोजन, चिकित्सा, वस्त्र, पारिवारिक सदस्य समान. रिटायरमेंट पश्चात निश्चित पेंशन व्यवस्था. सविवरण लिखें : वि.नं. 6848, सरिता, नई दिल्ली-110055.

महानगर निवासी क्षत्रिय युवक को गृहकार्य एवं व्यक्तिगत सहायक कार्य हेतु सहायिका चाहिए. लिखें : वि.नं. 6849, सरिता, नई दिल्ली-110055.

घरेलू कार्यों हेतु सुशिक्षित, मृदुभाषी, ... कार्यदक्ष विधवा, बेसहारा महिला चाहिए. उचित वेतन एवं आवास. घर जैसा वातावरण. लिखें : वि.नं. 6850, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बापू की कर्म भूमि चंपारण से प्रकाशित एक लोकप्रिय राष्ट्रीय हिंदी पत्रिका को सपारिश्रमिक संवाददाता देशविदेश में चाहिए. समसामयिक लेख (राजनीतिक, सामाजिक, दूरदर्शन, खेल, फिल्म, कविता, कहानी, गजल) योग्यता अनुभव प्रमाणपत्र सहित आवेदन करें. व्यवस्थापक, श्री साहित्य संगम मासिक, पुलिस लाइन, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण बिहार.

ब्राह्मण परिवार के साथ रहने एवं घरेलू कार्य हेतु महिला चाहिए, तीन वर्षीय अनुबंध. सविवरण लिखें : Dr. Arvind Kumar, Ripas Hospital, Bandar Seri Begawan 2680, Brunei Via—Singapore.

हर जगह पत्रिका हेतु रोज दो घंटा काम कर सकने वाले, स्त्री पुरुष चाहिए. वेतन 1,000/-10,000 मासिक. लिखें : पोस्ट बाक्स-6 पदरा 263152.

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर, अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल, छपवा सकते हैं. जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 50/- वी.पी.पी. द्वारा (डाकखर्च अलग) कुलदीप सिंह, 32, ... मार्ग, अमृतसर-143 017.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल (प्रथम) 1990 रु. 7.00

सरिता

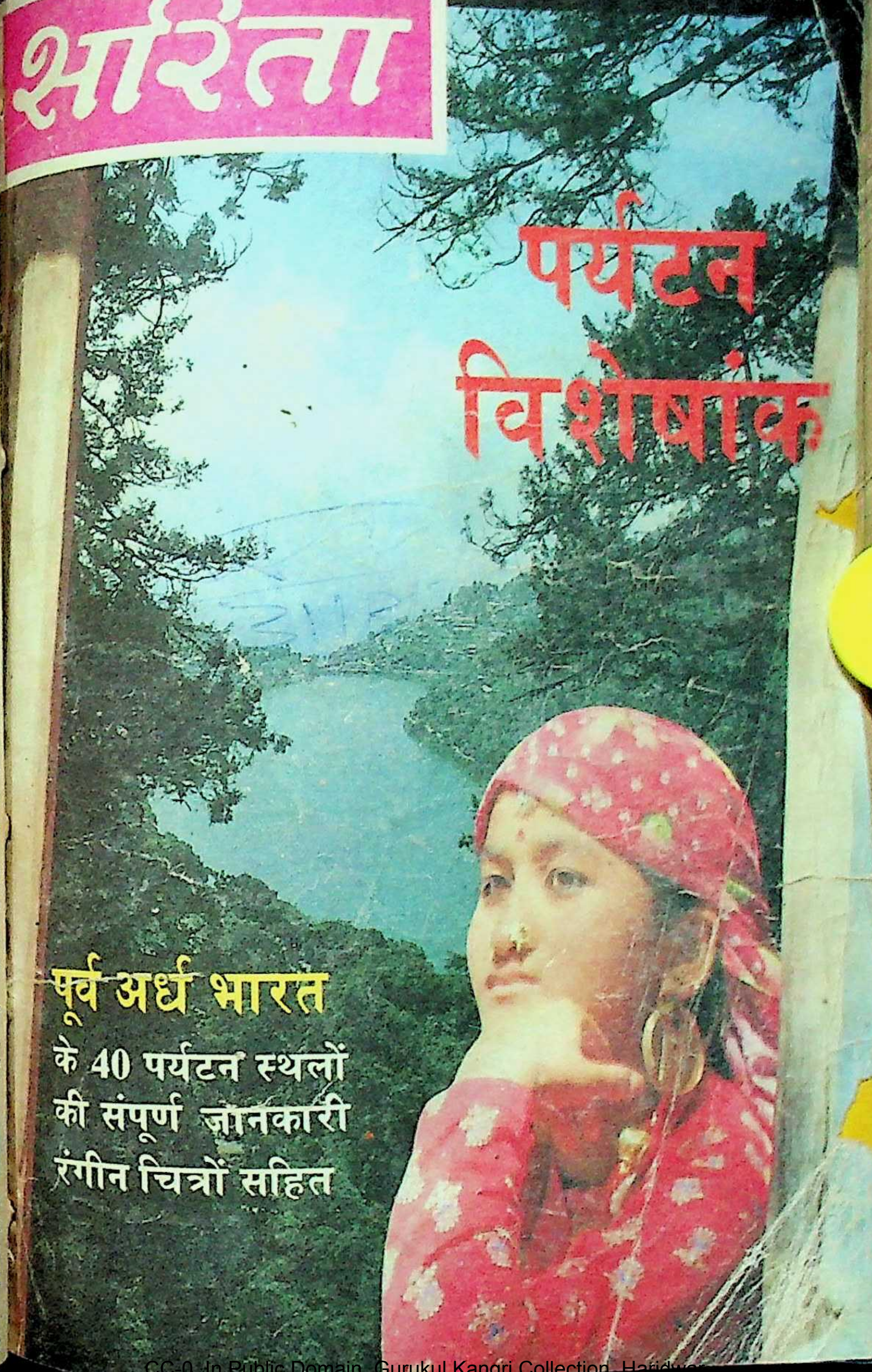

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर की सभी छः ओर स्टील की बॉडी है।"

जी हां ! सभी केल्विनेटर रेफ्रिजरेटरों की सभी छः ओर कोल्ड-रोल्ड स्टील की बॉडी होती है। उत्तम क्वालिटी का स्टील जो आपके रेफ्रिजरेटर को अधिक सुदृढ़ एवं टिकाऊ बनाता है। जिस से वह वर्षों आपको उत्तम सेवा प्रदान करता है।

शानदार केल्विनेटर विशिष्टताएं

★ विश्व विख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर, ठंडा करने की अधिक क्षमता के लिए।
★ अधिक स्टोरेज के लिए ज़्यादा शेल्फ़ें।
★ विस्तृत श्रृंखला, नौ मॉडल, सभी नौ आकर्षक रंगों में उपलब्ध

केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर लाखों सन्तुष्ट परिवारों के संगी साथी.

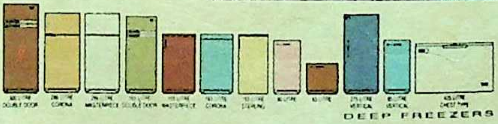

घर में लाइए खुशियां घर में लाइए

केल्विनेटर

बिक्री एवं सर्विस के लिए : एक्सपो मशीनरी लिमिटेड प्रगति टावर, 26, राजेन्द्रा प्लेस नई दिल्ली-110008

Mutual 5099d/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यटन विशेषांक

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 839 अप्रैल (प्रथम) 1990

कथा साहित्य

38 **बैसाखियां**
पत्नी के प्रेम व त्याग की उपेक्षा

45 **समर्पित जीवन**
आदर्शों की धनी गरीब महिला

147 **नापित पुत्र**
स्वभाव से हठी व दुस्साहसी युवक

156 **एक और जूलियट**
प्रेम दीवानी युवती का मोहभंग

163 **हाथ की लकीरें**
अंधविश्वास के चक्कर में मुसलिम युवक

174 **भाभी**
मृत भाभी के बच्चे की देखभाल का जिम्मा

180 **संयोग**
वर्षों बाद पूर्व प्रेमी से मिलन

188 **भूल**
अनजाने में ही भूल करने वाली युवती

198 **गाड़ी खिंच रही है**
अधेड़ प्रतिपत्नी की नोकझोंक

पर्यटन परिशिष्ट

52 मसूरी
54 देहरादून
55 बदरीनाथ
57 केदार नाथ
58 गंगोत्री
59 यमुनोत्री
60 खर्तालिंग
60 पंवाली व कांठा
62 ऋषिकेश
63 हरिद्वार
65 नैनीताल
68 कार्बेट नेशनल पार्क
69 अल्मोड़ा
70 रानीखेत
71 कौसानी
73 आगरा
76 वाराणसी
78 लखनऊ
78 कानपुर
79 झांसी
79 गया
80 बोधगया
80 त्रिकूट व खड़गपुर
81 सिमुलतल्ला
82 भीमबांध
83 खजुराहो
85 जबलपुर
87 कलकत्ता
89 शांतिनिकेतन
90 दार्जिलिंग
92 मिरिक
92 गंगटोक
94 शिलांग
97 इम्फाल
99 भुवनेश्वर
101 पुरी
102 कोणार्क
104 कटक
104 हैदराबाद
107 तिरुपति
107 मद्रास
109 महाबलीपुरम

लेख

22 **देवीलाल की राजनीति**
उपप्रधान मंत्री का पुत्रमोह

31 **डिजनीलैंड**
हरियाणा के मुख्य मंत्री चौटाला का घोटाला

115 **तकिए पर भी ध्यान दीजिए**
स्वास्थ्य व सुविधा की दृष्टि से आवश्यक

119 **विवाह से पहले सोचिए**
शादी के बाद कलह न करने की सलाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

123 रविवार को आराम कीजिए
तरोताजा बने रहने के गुर

127 बच्चों से भी खरीदारी करवाएं
बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने का तरीका

139 चेहरे की त्वचा की देखभाल
विभिन्न प्रकार की त्वचा व उस का इला...

143 सामूहिक विवाह की आड़ में
विवाह समारोह में अव्यवस्था व बदइं...

स्तंभ

126 बच्चों के मुख से
130 ये पति
132 नए पकवान
146 कटूक्तियां
173 हमारी बेड़ियां
196 'शून्यकाल का 'शून्यालाप
210 पाठकों की समस्याएं
213 चंचल छाया

8 आप के पत्र
16 जीवन की मुसकान
18 सरित प्रवाह

कविताएं

14 क्या पता था
35 साजन आए मन देहरी पर
118 झब्बूमल ने मानी हार
131 नाम तुम्हारा
138 मन दर्पण

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

©दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. को ही भेजें.
चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 265 रु., (हवाई डाक से)650 रु.

मूल्य : एक प्रति 6.00 रुपए, वार्षिक 144 रुपए. यह प्रति 7.00 रुपए
वायुसेवा अधिभार 50 पैसे प्रति :
सिल्चर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर और अकारस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद है अपनी सहेली से आपका झगड़ा किस

वजह से हुआ था? ये नन्हे-मुन्ने जानवर थे

ही इतने प्यारे, कि जिगरी दोस्तों को लड़वा दें.

अब अपने बच्चों को भी इनसे मिलवाइये, उन

दिनों का मज़ा फिर ले आइये!

सिबाका के नन्हे-मुन्ने जानवर लौट आये हैं

सिर्फ २०० ग्राम फैमिली पैक्स में उपलब्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कॉफी, चा

शाम को जब पापा घर आ पता

उन्हें क्या देती हैं? नहीं, नहीं,

अहा, फिर आ गईं गर्मियां!

नहीं...पर दो ठंडे भरे ग

के. और

दादीमाँ चाय

कप क्यों छूट

हैं कि गर्मियों के दि रस

ठीक कहते हैं लव

ऑरेंज □ पाइनेपल □ लाइम □ शाही गुलाब □ काला खट्टा □

ताज़गी

11 में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

, चा रसना?

र आ पता है मम्मी
हीं, फी नहीं, चाय भी
ठंडे भरे ग्लास रसना
लूम है दादाजी और
माँ गा चाय या कॉफी
क्यों छूते? (वो कहते
के दि रसना के दिन.)
ते हैं लव यू रसना!

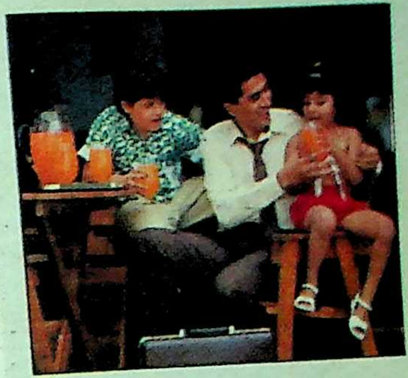

रसना, पापा, भैया और मैं.

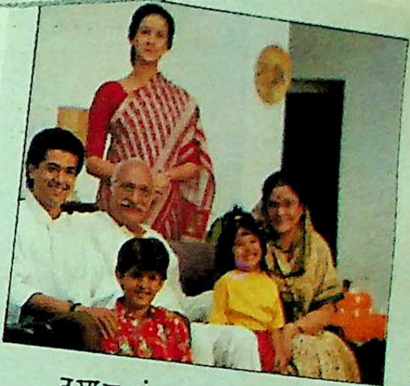

हमारा हंसता रसना परिवार.

(जलजीरा) □ टूटी-फ्रूटी □ मैंगो राइप □ ग्रेप ग्लोरी

गी रसना

11 दाम में.

Mudra:A:EAM:R:5148 Hin.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

देशद्रोह को मौन समर्थन

लेख 'कशमीर क्यों जल रहा है?' (फरवरी/द्वितीय) एकपक्षीय लगा.

कशमीर के देशद्रोहियों के साथ सरकार ने क्या किया, इस का रोना तो आठ पृष्ठों में रोया गया है. पर उन देशद्रोहियों को कांग्रेस ने कितना सिर पर चढ़ा रखा है, उन्हें कितनी सुविधाएं (धारा 370 के अंतर्गत) प्रदान की हुई हैं, इस का कहीं भी जिक्र नहीं किया गया है.

मौलवी फारूख में कितनी देशभक्ति है, यह उन के शब्दों से जाहिर हो गया है. कशमीर का मुसलमान यदि राष्ट्रीय है तो उस ने 1987 से 1989 तक वहां होने वाली देश विरोधी घटनाओं का बहिष्कार क्यों नहीं किया? दरअसल कशमीर के मुसलमान देशद्रोह को मौन समर्थन दे रहे हैं. वहां हिंदू नारकीय जीवन जी रहे हैं. उन्हें आए दिन मुसलमानों के अत्याचार का शिकार होना पड़ता है. लेख में इस का कहीं वर्णन नहीं है.

—डा. वीरेंद्र सिंह बिष्ट

*

कांग्रेस और नेशनल कान्फ्रेंस के बीच जो समझौता हुआ था उस से केवल इन दोनों पार्टियों के ही स्वार्थों की सिद्धि हुई, कशमीरी जनता की समस्याओं पर कोई ध्यान नहीं दिया गया. आज जब कशमीर में विद्रोह की लपटें उठ रही हैं तो सरकार यह कह कर अपनी कमजोरियों पर परदा नहीं डाल सकती कि इस सब के पीछे पाकिस्तान का हाथ है बल्कि इस स्थिति के लिए सरकार स्वयं काफी हद तक जिम्मेदार है.

हमारे देश में कशमीर को 'धरती का स्वर्ग' कहा जाता है परंतु आज कशमीर में ऐसी स्थिति हो गई है कि यदि अब कोई कशमीर जाए तो वह वास्तव में ही स्वर्ग (मृत्यु को) पहुंच जाएगा. वहां आतंकवाद इतना विकराल रूप ले चुका है कि किसी भी व्यक्ति का जीवन सुरक्षित नहीं रह गया है. यह सब पिछली सरकार की कमजोरियों का परिणाम है. यदि उस ने सही समय पर कशमीर की समस्याओं को समझा होता तो आज यह स्थिति न होती. अब भी समय है. यदि नई सरकार इस ओर ईमानदारी से कदम बढ़ाए तो कशमीर की स्थिति में सुधार हो सकता है.

—अंजू मित्तल

सही निर्णय

लेख 'नए मंत्रियों का रहनसहन' (मार्च/द्वितीय) अच्छा लगा.

प्रधान मंत्री तथा अन्य मंत्रियों के व्यवहार व उन की सुरक्षा व्यवस्था में हुआ परिवर्तन सराहनीय कदम है. इस से प्रधान मंत्री को आम जनता की समस्याओं को समझने और सुलझाने के लिए राजनीति के दलालों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा. प्रधान मंत्री द्वारा अपने दौरों पर एंबेसडर कार का प्रयोग और उन के लिए सामान्य यातायात में किसी प्रकार का फेरबदल न करने की बात पढ़ कर भी बहुत अच्छा लगा.

मंत्रिमंडल के अन्य सदस्य भी सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत कर के एक अच्छा उदाहरण पेश कर रहे हैं जिस का प्रभाव आम नागरिक पर भी पड़ेगा.

—संजीव नारद

*

लेख पढ़ कर नई सरकार के प्रति मन आश्वस्त हो गया. ऐसा लगा कि इस बार जनता ने सही निर्णय लिया है. साथ ही यह बात भी स्पष्ट हो गई है कि विश्वनाथ प्रताप सिंह एक कर्मठ एवं ईमानदार व्यक्ति हैं. हमें विश्वास है. कि नए मंत्रिमंडल के सदस्यों की यह सादगी मात्र दिखावा नहीं है.

—रीमा श्रीवास्तव

*

ओछी बातें

'मैं ने राजीव को गुमराह नहीं किया—बूटासिंह' भेंटवार्त्ता (फरवरी/द्वितीय) पढ़ा.

भूतपूर्व गृह मंत्री बूटासिंह द्वारा अपनी गलतियों के लिए औरों को दोषी ठहराना और वर्तमान गृह मंत्री पर यह इलजाम लगाना कि वह आतंकवादियों से मिले हुए हैं और साथ ही प्रधान मंत्री के बारे में यह बयान देना कि 'उतना विश्वनाथ प्रताप सिंह का बाप भी नहीं कर सकता' एकदम बचकाना और घटिया स्तर की बातें हैं जो कि बूटा सिंह की छवि को और ज्यादा खराब करती हैं.

देश की जनता जानती है कि कांग्रेस की छवि खराब करने वाले राजीव गांधी और बूटासिंह ही हैं. बूटासिंह का बयान सिर्फ 'खिसियाई बिल्ली खंभा नोचे' वाली कहावत को चरितार्थ करता है.

—मनोजकुमार

*

बूटासिंह द्वारा प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के अमृतसर में खुली जीप पर घूमने के साहस पर टिप्पणी करते हुए यह कहना कि 'राजीव और कांग्रेस (इ) ने जितना किया है उतना तो विश्वनाथ प्रताप सिंह का बाप भी नहीं कर सकता.' कितना बेजा और घटिया बात है. उन्हें अपनी व अपने पूर्व पद की गरिमा का ध्यान रखते हुए बात करनी चाहिए. भले ही राजनीति में किसी से कितना भी वैर क्यों न हो.

—प्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़रा सी दूरदर्शिता, और ढेर सा प्यार...

थोड़ी सी बचत से भी, 21 वर्ष की उम्र होने तक आपका बच्चा लखपति बन सकता है.

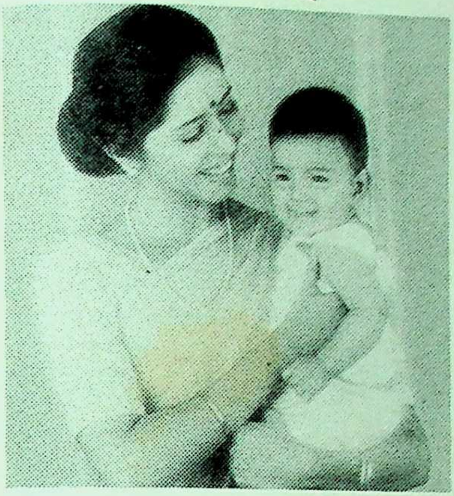

यूनिट ट्रस्ट के बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश कीजिए.

आज आपका लाडला आपकी बाहों में खेल रहा है. सुरक्षित महसूस करने के लिए आपकी गोद ही उसके लिए काफी है. लेकिन पलक झपकते 'कल' आपके द्वार पर दस्तक देने लगेगा. उसे बाहर की दुनिया में कदम रखना पड़ेगा... ज़िंदगी की कठिन सच्चाइयों का सामना करना पड़ेगा.

तो अपने बच्चे का भविष्य संवारने के लिए आज ही कदम क्यों न उठाए जाएं? यूनिट ट्रस्ट के बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश कीजिए. इस योजना के अंतर्गत एक निश्चित अवधि में थोड़ा पैसा लगाने से 21 वर्ष की उम्र होने पर आपका बच्चा लखपति हो जाएगा.

प्र. अपने बच्चे को लखपति बनाने के लिए निवेश कैसे किया जाए?

उ. अगर बच्चे के जन्म होते ही आप बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश करें तो आपके सामने कई विकल्प हैं. (i) आप 15 साल तक प्रतिवर्ष रु. 1,100/- का निवेश करें. (ii) आप 3 सालों तक लगातार रु. 3,200 प्रतिवर्ष निवेश कर सकते हैं या लगातार 6 सालों तक रु 1,900/- प्रतिवर्ष का निवेश कर सकते हैं (iii) या आप एक बार में ही रु. 8,500/- की पूंजी लगा सकते हैं.

प्र. यदि बच्चा बड़ा हो तो?

उ. 15 वर्ष की उम्र तक के लिए अलग-अलग योजना है. बाल उपहार वृद्धि कोष की जानकारी पुस्तिका में दी गई तालिका से इसकी विस्तृत जानकारी हासिल की जा सकती है. जानकारी पुस्तिका के लिए हमें लिखिए.

प्र. बच्चों को ये उपहार कौन कौन दे सकता है?

उ. माता-पिता, संबंधी, मित्र, कंपनी या व्यावसायिक संस्थाएं.

प्र. निवेश की न्यूनतम राशि क्या है?

उ. रु. 500/- तथा उसके बाद रु 100 के गुणकों में

प्र. इस निवेश पर लाभ कितना होता है?

उ. प्रतिवर्ष 12.5% तथा हर पाँचवें वर्ष बोनस डिवीडेंड भी.

प्र. अवधि पूर्ण होने पर भी कोई सुविधा मिलती है?

उ. रकम निकालने की बजाय बच्चा इसे निकटतम मासिक आय यूनिट योजना में (मासिक आमदनी पाने के लिए) या यूनिट ट्रस्ट की अन्य योजनाओं में से किसी में भी निवेशित कर सकता है.

सी जी जी एफ की मुफ्त जानकारी पुस्तिका के लिए यूनिट ट्रस्ट के किसी भी कार्यालय या मुख्य प्रतिनिधि या एजेन्ट, या चुने हुए हिन्दुस्तान पेट्रोलियम पम्पों/इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्पों से संपर्क कीजिए या इस कूपन को भरकर डाक द्वारा यूनिट ट्रस्ट के किसी भी कार्यालय को भेज दीजिए.

कृपया मुझे बाल उपहार वृद्धि कोष की मुफ्त जानकारी भेजिए.

नाम : ____________________

पता : ____________________

____

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

(सार्वजनिक क्षेत्र की वित्तीय संस्था)

- 13 सर विट्ठलदास ठाकरसी मार्ग (न्यू मरीन लाइन्स), बंबई 400 020 फोन 2863767/6201995
- [illegible] बिल्डिंग, 45, [illegible] मद्रास- 600 001 फोन 587433/580938
- गुलाब भवन (पिछला ब्लॉक), 3री मंजिल, 6, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली- 110 002 फोन 3318638/3319786
- 2 एंड 4 फेयरली प्लेस, कलकत्ता- 700 001 फोन 209391, 205322

Sista's-UTI-29/90 HIN E

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख 'खर्राटे : कितने सहज कितने गंभीर' (फरवरी/द्वितीय) अत्यंत ज्ञानवर्धक लगा.

खर्राटों के बारे में जनसाधारण की यही धारणा है कि खर्राटे लेना एक सहज बात है. इस का किसी मोटी बीमारी से या शारीरिक अस्वस्थता से संबंध जोड़ना दूर की बात है. इस लेख में पाठकों को बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी मिली है. देश के विभिन्न मेडिकल कालिजों में इस विशेष विषय की शिक्षा देने व अनुसंधान करने की व्यवस्था की जानी चाहिए.

—चंद्रा श्रीवास्तव

*

अधूरी समीक्षा

स्तंभ 'चंचल छाया' (फरवरी/द्वितीय) में फिल्म 'मैं ने प्यार किया' की समीक्षा कुछ अधूरी सी लगी. (लगा, जैसे किसी अनाड़ी ने समीक्षा की हो.)

फिल्म के गीतों के बोल अच्छे हैं. सूरज बड़जात्या के संवाद भी अच्छे हैं. जिन में 'होता है होता है' का जुमला लोकप्रिय हो चला है. फिल्म का संपादन होने पर वह और बेहतर होती, इन बातों का समीक्षा में उल्लेख नहीं किया गया. जिस अतिप्रभावित अंदाज में फिल्म की समीक्षा की गई है, उस से तो फिल्म तीन स्टार पाने योग्य प्रतीत होती है.

—संजय जैन

*

महाभारत और अंधविश्वास

दूरदर्शन पर 18 फरवरी को प्रस्तुत महाभारत की कड़ी में कृष्ण ने अर्जुन के प्रश्नों का उत्तर और कर्म की शिक्षा दे कर उसे युद्ध के लिए प्रेरित किया. पर मेरे प्रश्नों का उत्तर कौन देगा?

दुनिया को यदि ईश्वर ने बनाया है तब तो पापपुण्य भी ईश्वर द्वारा बनाया गया है. अगर ईश्वर ने पाप बनाया न होता तो प्रकृति में कोई पाप होता ही नहीं. कृष्ण कहते हैं कि प्रकृति के समस्त कार्य मेरे द्वारा होते हैं. कोई व्यक्ति किसी की हत्या कर देता है तब धर्म के धंधेबाज उसे सजा क्यों देते हैं? धर्मात्माओं को चाहिए कि इस पाप की जिम्मेदारी स्वयं लें क्योंकि व्यक्ति स्वयं तो कुछ करता नहीं.

आज के युग में अंधविश्वास से जकड़ी कहानियों का प्रसारण घातक सिद्ध होगा. ऐसी कहानियां दर्शकों को दिग्भ्रमित कर सकती हैं और 21वीं सदी में पहुंचने वाली दुनिया से वे कोसों पिछड़ सकते हैं.

—रमेशकुमार साहू

*

'सरिता' तो किश्ती है

आदर्श पत्रिकाओं की पंक्ति में पहला नंबर रखने वाली मेरी प्रिय पाक्षिक पत्रिका 'सरिता' मुझ से लगभग 15 सालों से बराबर जुड़ी है. 'सरित प्रवाह' में प्रकाशित साहसपूर्ण, बेबाक बातों से स्पष्ट होता है कि पत्रिका दब्बूपन से परे है और वह सचाई को बताने में कोई पक्षपात नहीं करती है. एक पाठक भी तो यही ... व सत्य प्रकाशित ... पत्रकारिता का साथ मिले.

'सरिता' की कहानियां भी बेहद ... सार्थक होती हैं. इस में ऐसी कहानियां ... जिन्हें पढ़ कर एक तरफ रख दिया जाए ... पाठक कुछ न कुछ नया पाता है. प्रत्येक ... समस्याओं का हल इन में होता है. 'वह ...' (फरवरी/द्वितीय), 'सुबह के बाद' (दिसंबर/... 87), 'थप्पड़' (जून/प्रथम/89), 'नया ...' (दिसंबर/द्वितीय/89), 'मनीप्लांट' (जून/प्रथम ...) जैसी कहानियां मुझे बेहद अच्छी लगती हैं.

डूबते को तिनके का सहारा भी काफी ... परंतु सरिता तिनका नहीं, यह तो वह किश्ती ... के सहारे व्यक्ति अंधविश्वासों के समुद्र से ... को उबार सकता है.

—बृजेशकु...

*

जनता दल में कांग्रेसी घुसपैठ

विश्वनाथ प्रताप सिंह के व्यक्तित्व ... से प्रभावित होने का हवाला दे कर कांग्रेस के ... तथा सत्तालोलुप वरिष्ठ नेताओं ने कांग्रेस छोड़ ... दल में शामिल होना शुरू कर दिया है. यदि ... वरिष्ठ कांग्रेसी नेता जनता दल में शामिल ... कांग्रेस की लुटिया डूब जाएगी. विपक्ष कमजोर ... सत्तारूढ दल के कार्यों पर नजर रखने के लिए ... सशक्त विपक्ष का होना बहुत जरूरी है.

हो सकता है कांग्रेस छोड़ कर जनता ... शामिल होने वाले वरिष्ठ कांग्रेसी सचमुच विश्वनाथ प्रताप सिंह से प्रभावित हों क्योंकि उन्होंने ... कार्यों की शुरुआत की है. यदि ऐसा है तो जनता ... शामिल होने वाले नेताओं से अब आशा ... चाहिए कि वह विश्वनाथ प्रताप सिंह के ... देशवासियों की समस्याओं को समझाते हुए ... व देशहित में कार्य करेंगे और 'खाओ पियो ...' तथा 'देश जाए भाड़ में हमें क्या' की संस्कृति ... करेंगे.

नई सरकार को चाहिए कि वह अपने घोषणा... के अनुसार वायदे पूरे करे. जनता में अपनी छवि ... साथ ही भ्रष्ट, अक्षम तथा लापरवाह राजनीति... को जनता दल से दूध में से मक्खी की तरह ... फेंके. ऐसे लोगों के लिए जनता दल के दरवाजे बंद ... जाएं.

—रोहिताश कुमार ...

*

किसी एक भाषा की अनिवार्यता अनुचित

स्तंभ 'सरिता का रचनात्मक ...' (फरवरी/प्रथम) में हिंदी को परीक्षाओं में ... करने के संबंध में पढ़ा.

यह सही है कि भारत की कोई राष्ट्रभाषा ... किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि बिना ... राष्ट्रभाषा के भी भारत ने बहुत प्रगति की है ... किसी भी क्षेत्र में भाषा के कारण अधिक रुकावट ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई हैं. जहां तक ... करने का प्रश्न है, यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है. यहां सभी को अपनी पसंद की भाषा बोलने/लिखने का अधिकार है. अगर किसी भी क्षेत्र में कोई भी भाषा अनिवार्य की गई तो वह उस भाषा को न बोलने वालों के साथ अन्याय होगा.

अन्य पाठ्यक्रमों में भी किसी अन्य भाषा को अनिवार्य करना ठीक नहीं रहेगा. उदाहरणार्थ, अंगरेजी में एम.ए. करने वाले छात्र से कहा जाए कि वह हिंदी भी अनिवार्य रूप से पढ़े, कहां तक उचित होगा.

उच्च/तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में प्रायः सभी विषय एकदूसरे से जुड़े होते हैं. आधे अथवा एकचौथाई विषयों के प्रश्नपत्रों का माध्यम हिंदी/राज्य भाषा करने से शिक्षा का सारा संतुलन चरमरा जाएगा. तकनीकी शिक्षा का ढांचा भविष्य में होने वाली प्रगति व अंतर्राष्ट्रीय स्पर्द्धा को ध्यान में रख कर बनाया जाता है. ऐसे में अंगरेजी के अलावा किसी और भाषा का कोई स्थान नहीं है.

यह सही है कि भाषा लोगों को एकदूसरे से जोड़ती है लेकिन भारत जैसे विभिन्न भाषाओं व संस्कृतियों वाले देश में कोई एक भाषा किसी एक क्षेत्र में अनिवार्य करना व्यावहारिक रूप से असंभव है. ... क्षेत्र में जा कर बस गए हैं. इस तरह भाषा की अनिवार्यता पर जोर देना ठीक नहीं रहेगा. किसी एक भाषा की अनिवार्यता लोगों के परस्पर सौहार्द में दरार डाल सकती है.

—निखिल ...

विश्व बाल साहित्य

विश्व बाल पुस्तकें

आप के बच्चों के लिए अति आवश्यक

- मनोरंजक
- ज्ञानवर्द्धक
- मार्गदर्शक

आकर्षक रंगीन चित्रों में चीकू, चुंचू, पप्पू, पिंटू और मोती भी.

350 से अधिक हिंदी और अंग्रेजी की पुस्तकें

उपहार के लिए सब से उत्तम

दिल्ली बुक कंपनी,

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

फोन: 351313

आप का दावा गलत है. यदि राज्य भाषाओं से कारण संतुलन बिगड़ने की आशंका है तो अंगरेजी से क्यों नहीं? एक ही राज्य में अंगरेजी जानने वाले मुश्किल से दोतीन प्रतिशत लोग होते हैं, फिर भी वे आसानी से अपना काम कर लेते हैं.

अंगरेजी में एम.ए. करने वाले को हिंदी या अपनी राज्य भाषा आना भी जरूरी है. तभी वह अंगरेजी का लाभ दूसरों को दे सकेगा. अतः यदि उसे परीक्षा में हिंदी या राज्य भाषा माध्यम के कुछ विषय दिए जाएं तो क्या हर्ज है.

जो लोग एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जा कर बसते हैं वे अंगरेजी पर नहीं, स्थानीय भाषा पर ही निर्भर रहते हैं. ठेले वाले, मजदूर, ग्राहक आदि से उन्हें स्थानीय भाषा में बात करनी होती है, अंगरेजी में नहीं. उन्हें न हिंदी आती हो, न उस राज्य की भाषा, यह तो बिलकुल ही गलत होगा.

—संपादक

*

आजकल लोगों में अंगरेजियत का बुखार बढ़ता जा रहा है और जिस तेजी से इस बुखार का विस्तार हो रहा है उस को देखते हुए ऐसा लगता है कि कुछ वर्षों पश्चात संस्कृत की तरह हिंदी भी लुप्त हो जाएगी.

देश आजाद होने के बाद भी लोगों की मानसिकता अंगरेजों की गुलाम बनी हुई है. यहां तक कि देश के नेता भी राष्ट्रभाषा में साक्षात्कार अथवा भाषण देने और बच्चों को राष्ट्रभाषा माध्यम से शिक्षा दिलवाने में संकोच का अनुभव करते हैं. दक्षिण भारत से तो हिंदी पूर्ण रूप से लुप्त ही हो चुकी है.

भारतीयता की प्रतीक राष्ट्रभाषा हिंदी को बढ़ावा देने एवं उस की गौरव गरिमा को बनाए रखने हेतु सरकार को हिंदी केवल परीक्षाओं में ही नहीं बल्कि सरकारी कार्यों में भी अनिवार्य कर देनी चाहिए.

—सुनीलकुमार चौधरी

*

आजादी के 43 साल बाद और हिंदी को राजभाषा बनाए 40 साल बीत जाने पर भी हिंदी की स्थिति बद से बदतर ही हुई है. राजभाषा अधिनियम (1963) बन जाने के बाद भी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है और यह तब तक संभव भी नहीं है जब तक कि इस का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित नहीं किया जाए.

राजभाषा नियमों का उल्लंघन या अपमान करने पर दंड का प्रावधान किया जाना चाहिए तभी राजभाषा को पूरा सम्मान मिल सकेगा. आरंभ में यह डर से सही, बाद में आदत में आ जाएगा.

—राजकुमार बंसल ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या पता था

क्या पता था
हम तुम्हें छू कर
खुशबुओं की
एक नदी हो जाएंगे.

गंध कस्तूरी
हुए
पल छिन,
रात केसर
और
कपूरी दिन.

क्या पता था
हम तुम्हें छू कर
घुंघरूओं की
एक सदी हो जाएंगे.

कैदी सपने
इच्छाओं के
पहरे.
आइनों में
फूल से
चेहरे.

क्या पता था
हम तुम्हें छू कर
आंसुओं की
नेकी बदी हो जाएंगे.

—दिनेश शुक्ल..

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SATURDAY 11

AUGUST

आप बीती जो याद रही

मुझे याद है, अनीता के घर में चोरी होना हमारे लिए एक सबक़ बन गया। वे लोग नैनीताल गए हुए थे, और घर लौटने पर उन्होंने पाया — सब गायब। सभी कुछ चोरी चला गया। बड़ा नुकसान हुआ, और कोई भरपाई नहीं।

SUNDAY 12

हम ऐसी गलती नहीं करने वाले। उसी वक्त राकेश के पीछे पड़कर मैंने घर के सामान का बीमा करवाया।

कितना सही कदम था! पिछली रात को हम लोग पार्टी में गए थे और लौट कर पाया कि घर खाली। हमारी सब कीमती चीजें — कैमरा, वी० सी० आर०, मेरी साड़ियाँ, हमारा चाँदी का डाइनिंग सैट, और बर्तन, सभी कुछ तो चोर उठा ले गए, कुछ भी तो नहीं छोड़ा। बड़ा रोना आया, तभी राकेश ने ढ़ाढ़स बंधाया — 'परेशान मत हो, हमने सारे सामान का बीमा तो करा रखा है।' राकेश ने फौरन अपने दोस्त को फोन किया, वही जिसने बीमा पॉलिसी दी थी — ओरिएण्टल इंश्योरेंस वाला। कहता है, हमें जल्दी ही क्लेम मिल जाएगा।

घरेलू सामान की सम्पूर्ण सुरक्षा: चोरी हो या आग जैसी कोई भी दुर्घटना। कीमती इलेक्ट्रॉनिक उपकरण यदि जल-फुंक जायें, सफ़र में व्यक्तिगत सामान चोरी हो जाये — यह सब जोखिम इस पॉलिसी के अन्तर्गत कवर किये जा सकते हैं। आपके सोने-चांदी के जेवर और अन्य कीमती सामान भी।

ओरिएण्टल इंश्योरेंस की हाउसहोल्डर्स पॉलिसी

ओरिएण्टल इंश्योरेंस

(भारतीय साधारण बीमा निगम की सहायक कम्पनी)
'ओरिएण्टल हाउस', ए-25/27, आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली-110 002.

Advtg. Integrated/OIC/2390

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुसकान

मेरी छोटी बहन सुशिक्षित, सुंदर और गुणवती है. जब वह केवल पांच वर्ष की थी तो खेलते समय अचानक ही उस की एक आंख में नुकीला तीर चुभ गया था. डाक्टरों को मजबूरन उस आंख को निकाल कर उस के स्थान पर कृत्रिम आंख लगानी पड़ी, इसलिए जब वह बड़ी हुई तो मेरे मातापिता उस के विवाह के लिए बहुत चिंतित रहने लगे.

मेरे दूर के रिश्ते का एक देवर, जो कि बैंक में अधिकारी हैं, बहन के गुणों से प्रभावित हो कर विवाह करने के लिए तैयार हो गया. विवाह एकदम सादगीपूर्ण बिना दहेज के संपन्न हुआ.

मुझे इस बात पर नाज है कि हमारे देश में ऐसे युवक मौजूद हैं जो कन्या की श्रेष्ठता उस के गुणों से आंकते हैं.

—संध्या राय

*

एक बार मैं बस द्वारा भोपाल से इंदौर जा रही थी. बस में मेरे साथ एक ऐसी ग्रामीण महिला आ कर बैठ गई जिस के शरीर से दुर्गंध आ रही थी. मैं उस से दूर खिसक कर बैठ गई. मुझे उस से नफरत हो रही थी.

कुछ ही दूर जाने पर हमारी बस की एक ट्रक से बुरी तरह टक्कर हो गई. सभी यात्रियों को निकट के चिकित्सालय में ले जाया गया. मैं भी दुर्घटना में बुरी तरह घायल हुई थी. मेरे लिए तुरंत खून की मांग की गई. संयोग से उसी ग्रामीण महिला ने अपना खून दे कर मेरी जान बचाई.

उस महिला के प्रति मैं सदैव आभारी रहूंगी.

—कुमारी यशा निगम

*

जब मैं पांचवी कक्षा में पढ़ती थी तभी मेरे पिताजी का निधन हो गया था. मेरी मां ने मुझे स्कूल से उठा लिया था क्योंकि उन की दृष्टि में लड़कियों के लिए थोड़ाबहुत पढ़नालिखना ही बहुत होता है.

जब यह बात मैं ने अपनी अध्यापिका को बताई तो उन्होंने मेरी मां से बात कर के मेरी पढ़ाई का खर्चा स्वयं वहन करने का वादा किया. चूंकि मैं पढ़ाई में तेज थी इसलिए मेरी फीस भी माफ हो गई.

आज अपनी अध्यापिका की कृपा से ही मैं बी.ए. की छात्रा हूं.

—कुमारी मीना

*

बात उन दिनों की है, जब मैं हायर सेकेंडरी की परीक्षा दे रहा था. उस दिन रसायनशास्त्र की परीक्षा थी. परीक्षा शुरू होने में 10 मिनट शेष थे. मैं तेजी से स्कूटर से जा रहा था कि अचानक एक गाय बीच में आ जाने से संतुलन बिगड़ गया और मैं गिर पड़ा.

एक सज्जन ने मुझे उठाया. वह मुझे रिकशे से हस्पताल ले गए. प्राथमिक उपचार के बाद वही सज्जन मुझे स्कूल तक छोड़ने गए. आधे घंटे की देर हो जाने पर भी प्राचार्य ने परिस्थितियों को देखते हुए मुझे परीक्षा देने की अनुमति दे दी.

यदि उस दिन वह सज्जन सही समय पर मेरी सहायता न करते तो मैं परीक्षा से वंचित रह जाता.

—रवींद्रसिंह परमार

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरुआत

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. उसे सेरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सेरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फ़ैट, विटामिन तथा मिनरल. सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सेरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सेरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सेरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती हैं.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

6 महीने से

4 महीने से

6 महीने से

मुफ़्त! सेरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सेरेलॅक, पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

Nestlé

FSL/5112/HIN

सेरेलॅक का वादा : स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह

केंद्रीय वित्त मंत्री मधु दंडवते ने राष्ट्रीय मोरचे की सरकार का 1990-91 का पहला बजट पेश करते समय कोई विशेष नवीनता या सूझबूझ नहीं दिखाई है. राजीव गांधी सरकार के पिछले 1989-90 के बजट में 7,000 करोड़ रुपए के घाटे यानी नए फर्जी नोट छाप कर जनता से सेवाएं, मालसामान जबरदस्ती छीन लेने का प्रावधान किया था, जो अब तक 12,500 करोड़ रुपए हो गया. मधु दंडवते ने भी 13,000 करोड़ रुपए के घाटे का बजट बनाया है और नए टैक्स लगा कर उसे 7,000 करोड़ रुपए तक रखने की पेशकश की है. पर क्या गारंटी है कि यह घाटा भी अंततः 13,000 करोड़ रुपए नहीं हो जाएगा या उस से भी बढ़ जाएगा क्योंकि उन्होंने सरकारी खर्च कम करने की कोई योजना नहीं बनाई है.

घाटे को पूरा करने के लिए उन्होंने नाममात्र 5,000 करोड़ रुपए के ऋण लेने, और 3,000 करोड़ रुपए के नए टैक्स लगाने की पेशकश की है. पर सरकारी खर्च चक्रवृद्धि ब्याज की तरह बढ़ रहा है—हर तिमाही पर सरकारी कर्मचारियों के वेतन और भत्ते 300 करोड़ रुपए बढ़ जाते हैं और इसी प्रकार विकास के नाम पर खर्च भी.

इस प्रकार कहीं टैक्स बढ़ा कर, कहीं घटा कर मधु दंडवते ने विभिन्न वर्गों को कुछ दमदिलासा देने का प्रयत्न किया है, पर अंत में सामूहिक रूप से किसी को कोई राहत नहीं मिलेगी, मार्च 1991 तक मूल्यवृद्धि 10% निश्चित है.

रेल बजट में रेल मंत्री पहले ही सवारी और माल ढोने के किरायों में वृद्धि कर चुके हैं. टेलीफोन की दरों में भी बजट से पहले ही काफी वृद्धि कर दी गई थी. इस बजट में अब डाक व्यय भी बढ़ा दिया गया है, सिवाय 15 पैसे के पोस्टकार्ड के.

सब से अधिक प्रभावित करने वाली वृद्धि पेट्रोल और डीजल में हुई है. इस का असर हर वस्तु पर पड़ेगा, क्योंकि यातायात व ऊर्जा (बिजली) हर चीज के उत्पादन और लाने ले जाने (परिवहन) में लगती है.

वित्त मंत्री ने लोगों की चीखपुकार के कारण आयकर की छूट सीमा 18,000 रुपए से बढ़ा कर 22,000 रुपए कर दी है और न्यूनतम आयकर की मार 25,000 से बढ़ा कर 30,000 की है पर इस से कोई अंतर नहीं पड़ेगा—क्योंकि उपभोक्ता को तो दैनिक जीवन की हर चीज महंगी मिलेगी.

वित्त मंत्री ने उत्पादन कर (एक्साइज ड्यूटी) व सीमा शुल्क (कस्टम ड्यूटी) में, जो कुल आय का 78% होते हैं, कोई कमी नहीं की है. बल्कि 4,800 करोड़ रुपए बढ़ाए हैं. इन्हीं के कारण चीजों के दाम बढ़ते हैं, महंगाई बढ़ती है. आयकर से तो केवल 10% राजस्व मिलता है. अर्थात केवल 5,676 करोड़ रुपए जबकि उत्पादन व सीमा शुल्क से 45,000 करोड़ रुपए के लगभग मिलेगा.

*

इस बजट में जो सराहनीय और उल्लेखनीय राहत सरकार ने जनता को दी है वह है स्वर्ण नियंत्रण कानून को रद्द करने का प्रस्ताव. सोने के आभूषण हमारे देश में हर वर्ग, हर उम्र और हर जाति की स्त्री के लिए आवश्यकता की चीज हैं. यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस का सौंदर्य प्रसाधन भी है, उस की बचत का बैंक भी, और आपातकाल का बीमा भी.

इस कानून के चलते सिवाय सरकारी अधिकारियों के रिश्वत द्वारा अपनी जेबें भरने के किसी को कोई लाभ नहीं था. भूतपूर्व वित्त मंत्री और प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई ने कहा है कि यह नियंत्रण मैं ने चीनी आक्रमण के समय जबरदस्ती, मजबूरी में लगाया था. यह तो पहले ही हट जाना चाहिए था.

*

मार्च के पहले सप्ताह में प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के आह्वान पर एक सर्वदलीय बैठक बुलाई गई जिस में कशमीर के मामले को सर्वसम्मति से सुलझाने की पेशकश की गई.

राजीव गांधी और फारूख अब्दुल्ला दोनों ने इस बैठक में बड़ी आनाकानी से भाग लिया, वे जानते थे कि यह समस्या उन्हीं की उत्पन्न की हुई है और उन के बस के बाहर हो गई है. इसलिए इन दोनों ने न केवल बातचीत और फैसलों में अड़ंगे लगाने की कोशिश की बल्कि इस प्रयास का मजाक भी उड़ाया. पर उन की मजबूरी यह थी कि वे इस में भाग लेने से इनकार भी नहीं कर सकते थे. जनता को कुछ तो मुंह दिखाने लायक बने रहना है.

इस सर्वदलीय सम्मेलन की एक समिति राजीव गांधी के आग्रह पर श्रीनगर भी गई—वास्तविक स्थिति का जायजा लेने के लिए. पर वहां जो हाल था, उस में गोली मारे जाने के डर के कारण हमारे शेर दिल भूतपूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी अपने होटल से बाहर कदम नहीं रख सके और कोरे के कोरे दिल्ली लौट आए. इस बीच अपनी खीज मिटाने के लिए जिस प्रकार खिसियानी बिल्ली खंभा नोचती है, श्रीमानजी समिति की बैठक में राज्यपाल जगमोहन पर बिफर उठे—"तुम ने 'मेरे' उप प्रधान मंत्री देवीलालजी को अपने बाएं हाथ पर बैठाया जबकि उन का उचित स्थान दाएं हाथ पर था!" भारत जैसे बड़े देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री, और फिर दोबारा गद्दीनशीन होने के मधुर सपने देखने वाले राजीव गांधी की यह बचकाना हरकत क्या शोभनीय कही जा सकती है जब देश के जीनेमरने के प्रश्न हल किए जाने की समस्या सामने हो?

*

कशमीर की समस्या शतप्रतिशत नेहरू खानदान की देश को सब से बड़ी विरासत है. बाप (जवाहरलाल नेहरू) ने पैदा की, बेटी (इंदिरा) ने उसे बिगाड़ा और धेवते (राजीव) ने और चौकट कर दिया. और अब उसे सुलझाने की कोशिश हो रही है तो बजाय सहयोग देने के उस में टांग अड़ाई जा रही है.

सर्वदलीय समिति की सिफारिश के अनुसार विश्वनाथ प्रताप सरकार ने तत्काल रेल मंत्री जार्ज फर्नांडीज को कशमीर मंत्री भी बना दिया है. पर जब सारा उत्तरदायित्व गृह मंत्री और गृह मंत्रालय का हो, तब यह गाड़ी में पांचवां पहिया क्या करेगा—सिवाय अड़चनें पैदा करने के?

हां—इतना तो है कि कोई विपक्षी दल यह नहीं कह सकेगा कि हमारी एकमत सिफारिश को सरकार ने माना नहीं और कशमीर समस्या के शीघ्रतम हल करने में हिचकिचाहट कर रही है.

वैसे राज्यपाल जगमोहन जिस प्रकार काम कर रहे हैं, वह सारी परिस्थिति में ठीक ही लगता है. उन्होंने कानूनव्यवस्था और जनता के जानमाल की सुरक्षा को अपना पहला ध्येय बनाया है और यही सरकार का प्रथम कर्तव्य भी है.

*

संसद के बजट अधिवेशन में अभिभाषण देते हुए राष्ट्रपति वेंकटरमन से वि.प्र. सरकार ने यह कहलवाया है कि जन मोरचे की सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के इस तीन महीने के शासन काल में देश में कोई धार्मिक दंगा नहीं हुआ.

पर यह अपनी पीठ अपनेआप थपथपाने वाली बात किसी भी समय उलटी पड़ सकती है. धर्म और धर्म के धंधेबाजों की जड़ें इतनी मजबूत हैं कि इस छोटी सी अवधि पर गर्व करना मूर्खता होगी. जहां कई धर्म होंगे वहां धार्मिक उन्माद अवश्य उकसेगा और धार्मिक मारकाट होगी ही, क्योंकि धर्म/मजहब का मूल ध्येय तो मनुष्यमनुष्य में घृणा और वैर ही पैदा करना है. अन्यथा किसी भी धर्म की जरूरत ही क्या है? सद्व्यवहार, सदाचरण का संबंध तो मानव समाज की आवश्यकताओं से संबंधित है. उस में भगवान और उस के एजेंटों और उन के फलसफों की कोई ज़रूरत नहीं है.

वैसे भी पंजाब और कशमीर में जो हर रोज हत्याएं हो रही हैं क्या वे गैरधार्मिक हैं, इन का धर्म/मजहब से कोई संबंध नहीं है?

*

राज्य विधान सभाओं के चुनावों के पहले जनता दल के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपनी पार्टी के उम्मीदवारों से कहा था कि वे चुनावी खर्च के लिए व्यापारियों व उद्योगपतियों से कोई पैसा न लें, क्योंकि अंततः उन्हें इस की कीमत इन लोगों को कुछ सुविधाएं, लाइसेंसपरमिट द्वारा चुकानी पड़ेगी.

पर क्या विश्वनाथ प्रताप सिंह महोदय यह बताएंगे कि यदि चुनावों के लिए धन उद्योग व्यापार से नहीं आएगा तो कहां से आएगा?

'एक रुपया एक वोट' का नारा लगता तो बड़ा सुहावना हैं लेकिन नितांत अव्यावहारिक है. जब आप का प्रतिद्वंद्वी चुनाव पर 10 लाख रुपया खर्च करने को तैयार हो तो आप को 5 लाख तो खर्च करने ही होंगे—आज एक पोस्टर की लागत 2 रुपए, बैनर की कीमत 50 रुपए, एक कार्यकर्ता का वेतन व खर्च 200 रुपए और जीप या गाड़ी का प्रतिदिन का 1200 रुपए है.

चुनाव खर्च कम करने, इस से ... प्रभाव कम करने की बात केवल बातें ... एक ओर तो आप मतदाता की आयु ... कर 18 बरस कर के करोड़ों नए मत... पैदा कर रहे हैं, दूसरी ओर चुनावी ... काटने की कोशिश में लगे हैं. दोनों ... विरोधी बातें!

क्या प्रधान मंत्री बताने का ... करेंगे कि इन लोकसभा व राज्य ... सभाओं के लिए जनता दल ने कितना ... खर्च किया और इस के स्रोत क्या ... यह सारा धन केवल हर वोटर से एक ... चंदा ले कर जमा किया गया था?

अच्छा हो हमारे राजनीति... बजाय हवा में उड़ने के, ऊंचीऊंची ... करने के, धरातल पर आएं ... व्यावहारिक रीतिनीति अपनाएं. ... महत्त्व, कालाधन, भ्रष्टाचार, ये ... राजनीतिबाजों और सरकारी अ... देन है, जनसाधारण की नहीं. वह ... सब का मूक शिकार है. लाइसेंस, ... कंट्रोल, अनगिनत कानूनों का जाल, ... कर और जनता की जेब से उस का ... पैसा निकालने की कोशिश के फंदे ...

आवश्यकता इस बात की है ... राजनीतिक दलों को दान/चंदा लेने ... जनसाधारण, (जिस में उद्यमी ... व्यापारी शामिल हो) को चंदा देने ... आयकर मुक्ति सहित खुली छूट हो.

*

भारत सरकार ने अपने कर्मचारियों को महंगाई भत्ते की एक नई ... देना स्वीकार किया है. इस की रकम ... 294 करोड़ और अगले पूरे वर्ष में ... करोड़ रुपए बैठेगी. क्योंकि अब ... राज्यों के सरकारी कर्मचारियों ... कारियों को वेतन व भत्ता केंद्रीय सरकार ... कर्मचारियों के बराबर मिलता है ... रकम पूरे देश के लिए 1000 करोड़ ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक से कम नहीं बैठेगी.

ये 1000 करोड़ कहां से आएंगे? केवल जनता पर सीधेपरोक्ष टैक्स बढ़ा कर या नए फर्जी नोट छाप कर, जिन का असर टैक्सों के बराबर ही होता है?

आज देश की आर्थिक स्थिति जो लड़खड़ा रही है और हर वर्ष 10% कीमतें बढ़ जाती हैं, उस का एकमात्र कारण सरकारी खर्च में वृद्धि है जो हर मिनट, हर घंटे, हर दिन बढ़ता ही जाता है और कुल सरकारी आमदनी का तीनचौथाई भाग कर्मचारियों के वेतन, भत्ते व सुविधाओं पर खर्च होता है.

जब तक सरकारी अमला कम नहीं किया जाएगा, सरकारी खर्च कम नहीं होगा. और जब तक सरकारी खर्च कम नहीं होगा, कीमतें कभी स्थिर नहीं रहेंगी, बढ़ती ही जाएंगी.

*

भारतीय बैडमिंटन संघ (बैडमिंटन एसोसिएशन आफ इंडिया) के अध्यक्ष फाजिल अहमद, ने प्रेस ट्रस्ट समाचार एजेंसी के अनुसार, सरकार से शिकायत की है कि अभी हाल में न्यूजीलैंड के प्रमुख नगर आकलैंड में हुए राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीय खेल अधिकारियों ने महिला बैडमिंटन खिलाड़ियों से अपने जश्नों में शराब परोसने का काम करवाया, उन के कमरों में घुस कर उन्हें तंग किया और पुरुष एवं महिला खिलाड़ियों को अलगअलग ठहराने का कोई प्रबंध नहीं किया.

यह भी शिकायत की गई कि गणतंत्र दिवस पर जब शराब पीनेपिलाने पर पाबंदी है, अधिकारियों ने खूब शराब उड़ाई और वह भी आकलैंड के 'गांधी भवन' में.

यदि यह आरोप सही है तो इस की उचित जांच करा कर दोषी अधिकारियों को कड़ा दंड दिया जाना चाहिए. यदि महिला खिलाड़ियों को अफसर लोग शराबखाने की नौकरानियां और ऐशोआराम का साधन समझें तो प्रतियोगिताओं में ये क्या मुंह और क्या शरीर ले कर सफल हो सकती हैं? अपने देश से इतनी दूर अजनबी जगह कोई महिला खिलाड़ी ऐसी स्थिति में परवश हो कर ऐसी बेजा हरकतों के विरुद्ध कोई चूं न कर सके, यह समझने वाली बात है.

वैसे भी हमारे देश में सिवाय क्रिकेट के खिलाड़ियों के अन्य सभी खेलों में भाग लेने वाले युवकयुवतियों को नीचा समझा जाता है जिन के साथ हर प्रकार का दुर्व्यवहार अनदेखा किया जा सकता है. ये क्रिकेट के ही खिलाड़ी हैं जिन के लिए सर्वोच्च न्यायालय भी अपने अन्य महत्त्वपूर्ण काम रोक कर तत्काल सुनवाई करता है, निर्णय देता है.

ऐसी हालत में क्रिकेट के अलावा अन्य खेलों के हमारे खिलाड़ी हर जगह प्रतियोगिताओं में पिछड़ते रहें तो क्या आश्चर्य है. क्रिकेट के खिलाड़ी ब्राह्मण और क्षत्रिय हैं, बाकी खेलने वाले शूद्र!

अभी हाल में हुई सातवीं विश्व कप हाकी प्रतियोगिता में भारत की टीम बुरी तरह हार गई. इस पर हाकी अधिकारियों ने इस टीम के दो सदस्यों के अलावा सारे खिलाड़ियों को प्रतियोगिताओं से बाहर निकाल दिया. उन का कहना है अब हम हाकी में नया खून ढूंढ़ कर लाएंगे.

पर यदि आप का सारा खर्च, प्रोत्साहन और ध्यान केवल ब्रिटेन के पूर्व गुलाम देशों तक सीमित खेल क्रिकेट पर ही रहे, सारे सरकारी साधन, विशेषतः टीवी और रेडियो क्रिकेट ही के गुणगान करते रहें तो अन्य खेलों में प्रतिभा आएगी कहां से? क्रिकेट की अपेक्षा हाकी व फुटबाल में बहुत दम और शारीरिक शक्ति की जरूरत होती है और यह शारीरिक शक्ति बिना शरीर के बढ़िया पोषण और देखभाल के, और मानसिक सांत्वना के कैसे आ सकती है?

पर हजारों वर्ष की गुलामी से उत्पन्न भावना और प्रवृत्ति का क्या किया जाए? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार फिर ... दशक की ... राजनीति की ... वृत्ति होने से ... उपप्रधान मंत्री ... द्वारा 48 घंटे के ... मंत्रिमंडल से इस्ती... वापसी के निर्णय ... दूसरी गैरकांग्रेसी ... पर आया राजनीति... फिलहाल टल गया है ... इस के स्थायित्व एवं ... निर्णायक क्षमता के ... लोगों के मन में कई प्रश्न ... गए हैं.

केंद्र में गैरकांग्रेसी विपक्षी सर... के साथ यह विडंबना रही है कि ... भी लंबे संघर्ष के बाद आम मतदाता ने ... केंद्र की कुरसी पर बैठाया है, विपक्ष ...

देवीलाल की

लेख • सुरेंद्र द्विवेदी

खासतौर से लोकदल के प्र... तत्वों ने उसे न चलने के ... मजबूर कर दिया.

1977 के चुना... बाद बनी जनता ... सरकार ढाई वर्ष बाद ... उस के उपप्रधान ... चौधरी चरणसिंह ... प्रधान मंत्री बनने ... महत्त्वाकांक्षा की शि...

हो गई ... इंदिरा ... के बाद ... राजनी... रहे.

19... हवा बनी ... में नया ... सामने ... अल्पमत ... भरपूर ... प...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

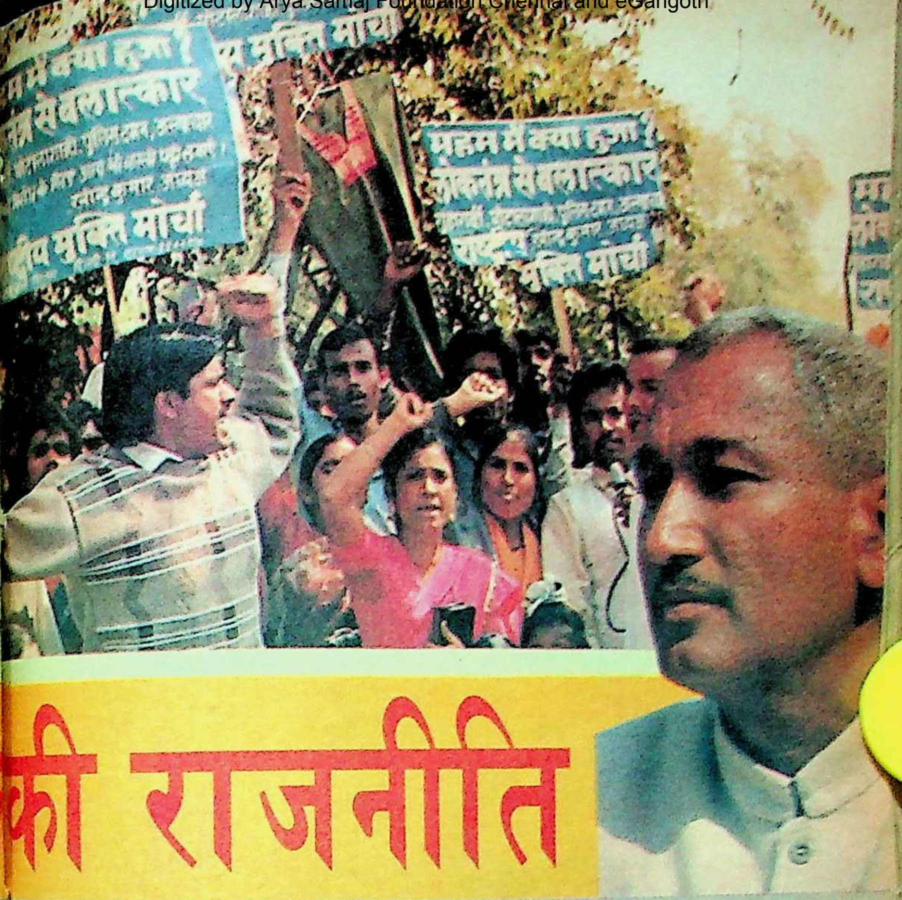

...की राजनीति

हो गई और देश ने गाजेबाजे के साथ इंदिरा गांधी को गद्दीनशीन कर दिया. इस के बाद 12 वर्ष तक विपक्षी दल अंधेरी राजनीतिक गलियों में निराश भटकते रहे.

1989 में चुनाव के पूर्व कांग्रेस विरोधी हवा बनी और विश्वनाथ प्रताप सिंह के रूप में नया वैकल्पिक राजनीतिक नेतृत्व देश के सामने आया. सरकार बनी, लेकिन वह भी अल्पमत सरकार. विपक्षी दलों ने इसे भरपूर समर्थन दे कर सिरमाथे लिया.

पहली गैरकांग्रेसी सरकार इन अर्थों में

जनता दल के गठन व प्रधान मंत्री के चुनाव में देवीलाल ने जो सम्मान प्राप्त किया था उसे उन्होंने उपप्रधान मंत्री पद ले कर तथा अपने बड़े पुत्र को मुख्य मंत्री बना कर गंवा दिया. महम उपचुनाव में धांधली और हिंसा पर देवीलाल के रुख ने केंद्रीय सरकार की छवि और स्थायित्व पर ही प्रश्नचिह्न लगा दिया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेहतर स्थिति में थी कि उस के संकटों की शुरुआत सत्ता में आने के 15 महीने बाद हुई थी, जब चरणसिंह ने हरियाणा के सूरजकुंड में बैठ कर अपना इस्तीफा भिजवा दिया था. लेकिन नई राष्ट्रीय मोरचा सरकार साढ़े तीन महीने के भीतर ही संकटग्रस्त हो गई.

इस बार के राजनीतिक हादसे के मुख्य पात्र के रूप में पूर्व लोक दलीय नेता एवं चरणसिंह के पूर्व राजनीतिक सहयोगी 76 वर्षीय देवीलाल उभरे हैं, जिन्होंने अपने बड़े पुत्र एवं हरियाणा के मुख्य मंत्री ओमप्रकाश चौटाला की कुरसी बचाने के लिए अपनी सरकार के अस्तित्व को दांव पर लगा दिया.

1977 की जनता पार्टी की सरकार के विनाश की दिशा में समाजवादी नेता राजनारायण ने सूत्रधार की भूमिका निभाई थी और इंदिरा गांधी के छोटे पुत्र संजय गांधी उन के संपर्क सूत्र थे. बदली परिस्थितियों में दूसरे समाजवादी नेता चंद्रशेखर राजनीतिक सूत्रधार बन गए हैं, जिन के पूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी के साथ पुराने संपर्क ताजे हो गए हैं.

राष्ट्रीय मोरचा सरकार के चीरहरण का सिलसिला शुरू हो गया है. हाल की घटना किसी बड़ी रणनीति का एक हिस्सा हो सकती है. जनता पार्टी के एक मुखर नेता ने कुछ दिन पूर्व ही बताया था कि हम ने वर्तमान सरकार के स्थान पर वैकल्पिक सरकार बनाने के लिए चंद्रशेखर को भारतीय जनता पार्टी और विश्वनाथ प्रताप सिंह को छोड़ कर एक नया मोरचा बनाने का सुझाव दिया है. कांग्रेस सहित वामपंथी दल इस को समर्थन दे सकते हैं. उन्होंने यह नहीं बताया कि चंद्रशेखर की इस बारे में क्या प्रतिक्रिया थी.

पूर्व सूचना एवं प्रसारण मंत्री एवं कांग्रेसी नेता ने वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए मत व्यक्त किया था कि देश के प्रधान मंत्री बनने तथा इतिहास में 'अमर' रहने की लालसा किसी को भी मोहित कर सकती हैं.

इस संदर्भ में उन का कहना था कि चंद्रशेखर के बजाय देवीलाल आसानी से कांग्रेस की रणनीति के शिकार हो सकते हैं, जैसा कि चौधरी चरणसिंह ने किया था. दोनों ही नेता दबाव और त्यागपत्र की राजनीति में पहले से ही माहिर रहे हैं.

राष्ट्रीय मोरचा सरकार का पहला संकट हरियाणा के महम विधान सभा उपचुनाव की देन था, जहां से देवीलाल के पुत्र ओमप्रकाश चौटाला उम्मीदवार थे. महम चुनाव के मतदान के समय जो कुछ हुआ, उस से जनता दल सरकार के मूल्यों पर आधारित राजनीति की धज्जियां उड़ गईं.

देवीलाल का पुत्रमोह

परंतु देवीलाल ने अपने पुत्रमोह में चौटाला के खिलाफ कुछ भी सुनने और देखने से इनकार कर दिया. प्रधान मंत्री सहित जनता दल के तमाम नेताओं की इच्छा के बावजूद चौटाला को हटाना कठिन हो गया. देवीलाल के इसी 'धृतराष्ट्री पुत्रमोह' के कारण सरकार के समक्ष संकट उत्पन्न हो गया. चौधरी चरणसिंह की मृत्यु के बाद लोक दल के नेतृत्व को ले कर उन के पुत्र एवं उद्योग मंत्री अजीत सिंह और देवीलाल के बीच पुराना बैर रहा है. हरियाणा, उत्तर प्रदेश और बिहार में पिछड़े वर्ग की राजनीति में देवीलाल अजीत सिंह के किसी प्रकार के दखल को सहन करने के लिए तैयार नहीं हैं. महम उपचुनाव ने इस पुरानी प्रतिद्वंद्विता की धार को और भी तेज कर दिया.

देश की राष्ट्रीय मोरचा सरकार के परिदृश्य में देवीलाल भावी राजनीति की महत्त्वपूर्ण धुरी बन कर उभरे हैं और वह अपने में अनेक राजनीतिक संभावनाओं को समेटे हुए हैं. इन्हें समझने के लिए देवीलाल और उन के परिवार के राजनीतिक चरित्र को जानना और समझना जरूरी है.

चौधरी देवीलाल देश में पिछड़े वर्ग की राजनीति के पुरोधा हैं. राजनीतिक सफलता के लिए उन्होंने यह गुर चौधरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

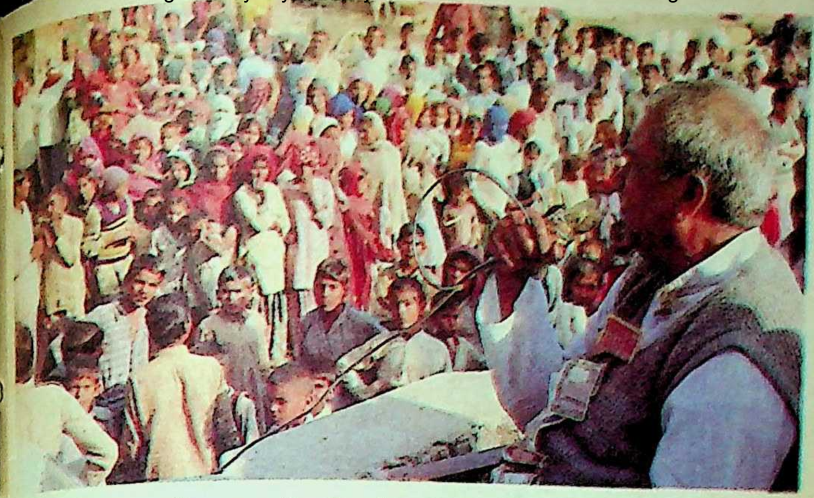

देवीलाल के नाटक से हरियाणा की जनता रुष्ट हुई है तो ओमप्रकाश चौटाला की करतूतों से क्रुद्ध हुई है.

चरणसिंह से प्राप्त किया था. पिछड़े वर्ग की बहुसंख्यक जातियों के समीकरण पर आधारित पुराने लोक दल का जनता दल नया संस्करण है. जातीय समीकरण की ही रणनीति हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और कुछ हद तक राजस्थान में प्रभावी साबित हुई है. इन राज्यों में जनता दल की सफलता और देवीलाल के वर्चस्व का यही रहस्य है.

विधान सभा चुनावों के बाद यदि देवीलाल की इच्छा के मुताबिक उत्तर प्रदेश में मुलायमसिंह यादव, बिहार में लालू-प्रसाद यादव और हरियाणा में उन के ही बड़े पुत्र ओमप्रकाश चौटाला को मुख्य मंत्री पद पर सत्तासीन किया जाता है तो इस में कोई अचंभे की बात नहीं है. पार्टी अध्यक्ष एवं प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह चाहने के बाद भी रामसुंदर दास को बिहार में मुख्य मंत्री नहीं बनवा सके. उत्तर प्रदेश से उद्योग मंत्री अजीतसिंह को पराजित हो कर लौटना पड़ा और राजस्थान के जाट नेता नाथूराम मिर्धा चौधरी के क्रोध का शिकार हो गए.

केंद्र में उपप्रधान मंत्री बनने के लिए जब चौधरी देवीलाल को हरियाणा की गद्दी छोड़ना जरूरी हो गया तो दिल्ली स्थित हरियाणा भवन में ही अपने बड़े पुत्र ओमप्रकाश चौटाला को तुरंत मुख्य मंत्री पद की शपथ दिला दी गई. पार्टी अध्यक्ष और संसदीय बोर्ड एक किनारे हो गए.

लोगों का तो यहां तक कहना है कि विधायकों की औपचारिक बैठक में चुनाव के बिना ही चौटाला के नेता चुने जाने की घोषणा कर दी गई. यह उसी दिन हुआ जब विश्वनाथ प्रताप सिंह ने देवीलाल के साथ प्रधान मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण की थी.

चौधरी देवीलाल का राजनीतिक जीवन कांग्रेस के साथ ही शुरू हुआ था. सातवें दशक में वह पहली बार प्रतापसिंह कैरों की मंत्रिपरिषद में प्रधान संसदीय सचिव बने थे. बाद में उन्होंने कैरों के खिलाफ अभियान चलाया और सत्ता से बाहर करने में उन्हें सफलता मिली. सन 1977 में जनता पार्टी बनने के बाद वह हरियाणा के गैरकांग्रेसी सरकार के मुख्य मंत्री बने. परंतु कुछ समय बाद उन के पुराने प्रतिद्वंद्वी भजनलाल ने बाजी मार ली.

देवीलाल का अभ्युदय

सन 1985 में चंडीगढ़ और हिंदी भाषी इलाकों के बारे में राजीव लोंगोवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझौते के खिलाफ चौधरी देवीलाल ने आवाज उठाई और इस समझौते को हरियाणा के हितों पर कुठाराघात बताया. इस के लिए उन्होंने राज्य में भारतीय जनता पार्टी के साथ लंबा न्याय युद्ध शुरू किया.

सन 1987 के विधान सभा चुनाव में उन की भारी जीत हुई और कांग्रेस को 90 में से मात्र 5 सीटें ही मिलीं. यहीं से चौधरी देवीलाल का नया अभ्युदय प्रारंभ हुआ.

इसी के साथ राजीव गांधी की राजनीतिक पराजय का सिलसिला शुरू हो गया. देवीलाल ने भाजपा के साथ मिल कर सरकार बनाने के बाद जनता दल के गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई.

जनता दल के अनेक नेताओं के विरोध के बावजूद उन्होंने लोकसभा चुनाव में भाजपा के साथ चुनावी तालमेल किया जिस के परिणाम अच्छे निकले और उत्तरी भारत के राज्यों में कांग्रेस के लिए 1977 की पुनरावृत्ति हो गई. दूसरे शब्दों में, यदि विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कांग्रेस के खिलाफ देश में लहर पैदा की तो देवीलाल ने पार्टी का ढांचा खड़ा करने में मदद की.

लेकिन हरियाणा की गद्दी प्राप्त होते ही देवीलाल ने अपने चार बेटों में से दो को मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया और तीसरे को एक निगम का अध्यक्ष बना दिया. तमाम रिश्तेदार सरकार में महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठ गए. विपक्ष का आरोप है कि दो दर्जन से अधिक सरकारी पदों पर उन के नजदीकी और दूर के रिश्तेदार प्रतिष्ठित हैं. इस संबंध में चौधरी देवीलाल ने सार्वजनिक जीवन के मूल्यों की तनिक भी चिंता नहीं की.

देवीलाल के बड़े पुत्र ओमप्रकाश चौटाला और दूसरे पुत्र रणजीतसिंह के बीच राजनीतिक टकराव ने राज्य की स्थिति को और भी विषम बना दिया. राजीव गांधी के वंशवाद के खिलाफ लड़तेलड़ते चौधरी साहब स्वयं वंशवाद के ऐसे शिकार हुए कि उन्होंने चौटाला की कारगुजारियों को सुनने या देखने से इनकार कर दिया.

पुत्रमोह के इसी दौर में हरियाणा मुख्य मंत्री बनने के बाद चौटाला देवीलाल की पुरानी सीट महम से चुनाव लड़ने का फैसला किया. इस क्षेत्र की ... बिरादरी की चौबीसी चुनाव में ... कारगर साबित हुई है. चौधरी साहब स्वयं इस चौबीसी पंचायत को राजनीतिक महत्त्व प्रदान किया और तीन बार ... देवीलाल के भविष्य का फैसला किया.

किंतु इसी चौबीसी ने देवीलाल के ... पुत्र ओमप्रकाश चौटाला को तरजीह देने से इनकार कर दिया. परिणामस्वरूप ... क्षेत्र में मतदान के दौर में हिंसा भड़की ... सरकारी तंत्र का दुरुपयोग कर के मतदान केंद्रों पर कब्जा किया गया. जाली मतदान हुआ. अंततः चुनाव आयोग ने पूरे मतदान को रद्द कर दिया. एक तरह से भूतपूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी के चुनाव क्षेत्र अमेठी की घटनाओं की पुनरावृत्ति महम ... हो गई. जनता दल और संपूर्ण विपक्ष ने अमेठी को राष्ट्रीय मुद्दा बनाया था इसलिए जनता दल अब इसे सीधे निगलने के लिए तैयार नहीं है.

महम की इस अनपेक्षित घटना ... जनता दल की मूल्यों पर आधारित राजनीति और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के प्रति उस की आस्था और छवि को गहरा धक्का लगा. जनता दल के बड़ेबड़े नेता बौखला गए और पार्टी के अंदर दबी जबान से चौटाला को मुख्य मंत्री पद से हटाने की मांग ने जोर पकड़ा.

जनता दल का संकट

चौधरी देवीलाल को यह बात रास नहीं आई. उन्होंने चेतावनी भरे शब्दों में प्रधान मंत्री को सूचित कर दिया कि पद से त्यागपत्र देने का सवाल केवल उन के पुत्र चौटाला का नहीं है. वह स्वयं भी त्यागपत्र दे देंगे. क्योंकि यह जिहाद उन के खिलाफ है. फलतः जनता दल का संकट गहरा गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कांग्रेस के खिलाफ देश में लहर पैदा की तो देवीलाल ने पार्टी का ढांचा खड़ा करने में मदद की.

इसी बीच विश्वनाथ प्रताप सिंह को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि महम के मुद्दे का लाभ उठा कर कांग्रेसी नेता सक्रिय हो गए हैं. पूर्व कृषिमंत्री भजनलाल, चंद्रशेखर और देवीलाल आपसी संपर्क स्थापित कर रहे हैं. पहली मार्च को देर रात में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने उड़ीसा भवन चुपचाप पहुंच कर बीजू पटनायक को संभावित राजनीतिक विस्फोट की जानकारी दी और सचेत किया कि अगर ऐसा होता है तो वह स्वयं त्यागपत्र दे देंगे.

इस के बाद बीजू पटनायक और रेल मंत्री जार्ज फर्नांडीज ने गहराते राजनीतिक संकट की कमान संभाली और कुछ हद तक देवीलाल को समझाने में सफल हो गए. इसी बीच कांग्रेस कार्यसमिति की भी बैठक हुई. परंतु उस ने अपने राजनीतिक लाभ के लिए महम चुनाव कांड के मामले पर कुछ भी टिप्पणी न करना ही बेहतर समझा.

चौटाला और महम चुनाव कांड को ले कर जनता दल संसदीय बोर्ड की चार बैठकें आयोजित की गईं परंतु चौधरी देवीलाल के रुख के कारण चौटाला से त्यागपत्र मांगना संभव नहीं हुआ. अंततः पार्टी और सरकार ने अपनी बला चुनाव आयोग पर डाल दी. महम में दोबारा मतदान कराने की सलाह देते हुए पार्टी ने घोषणा की कि चुनाव आयोग का इस बारे में जो भी फैसला होगा उसे मान्य होगा.

वस्तुस्थिति यह है कि देवीलाल को छोड़ कर जनता दल और पार्टी विधायक सभी चाहते थे कि ओमप्रकाश चौटाला मुख्य मंत्री न बने, परंतु वह बन गए क्योंकि देवीलाल की सूबेदारी को चुनौती कौन देता. जनता दल में कौन चाहता था कि महम में ऐसा चुनावी कांड हो परंतु वह हुआ.

अब पार्टी के सभी बड़े नेता चाहते हैं कि साफसुथरी राजनीति और पार्टी के हित में चौटाला को हटा दिया जाए परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतपूर्व प्रधान मंत्री राजीव गांधी : मौके की तलाश में.

देवीलाल के रहते उन्हें कोई हटा नहीं सकता क्योंकि इस से केंद्रीय सरकार के लिए खतरा पैदा हो सकता है. इस के विपरीत विश्वनाथ प्रताप सिंह ने एक व्यक्ति एक पद के नारे के साथ पार्टी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है और कहा है कि पार्टी का नया अध्यक्ष चुन लिया जाना चाहिए.

आखिर देवीलाल के चार पुत्रों में बड़े पुत्र ओमप्रकाश चौटाला का उन के ऊपर इतना अधिक दबदबा क्यों है, यह लोगों के लिए रहस्य की बात है. वह अपने दूसरे पुत्र रणजीतसिंह की तुलना औरंगजेब से करते हैं और उसे बागी बताते हैं.

यहां यह भी स्मरणीय है कि जनता पार्टी के शासन के दौरान अक्तूबर 1978 में विदेश से लौटते हुए हवाई अड्डे पर चौटाला के पास से 16 हजार रुपए मूल्य की तस्करी की घड़ियां और अन्य सामान बरामद हुआ था. उस समय हरियाणा के मुख्य मंत्री के नाते देवीलाल ने एक संवाददाता सम्मेलन बुला कर घोषणा की थी कि "मैं ओमप्रकाश चौटाला का पूरे तौर पर त्याग करता हूं और मैं उस के साथ किसी प्रकार का संबंध नहीं रखूंगा. भविष्य में वह स्वयं अपनी सभी करतूतों के लिए जिम्मेदार होगा. उन्होंने यह भी कहा था कि मैं राजनीतिक जीवन की शुद्धता के लिए यह कदम उठा रहा हूं तथा पिछले छह महीनों से मैं ने मुख्य मंत्री निवास में चौटाला का प्रवेश बंद कर दिया है क्योंकि वह प्रशासनिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा था. इस सब के बावजूद 12 वर्ष बाद देवीलाल ने हरियाणा के मुख्य मंत्री की गद्दी चौटाला को पिछले दिसंबर में सौंप दी.

महम कांड को ले कर उन के दूसरे पुत्र रणजीतसिंह ने चौटाला के खिलाफ राजनीतिक बगावत कर दी है और अपने समर्थकों सहित राज्य के मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया है.

देवीलाल इस समय अपने ही दो पुत्रों के राजनीतिक दावपेंच में फंस गए हैं. जनता दल चौटाला को हटाना चाहता है जिस से पार्टी और सरकार की नई चादर पर पड़ा काला धब्बा मिटाया जा सके. देवीलाल इस के आड़े खड़े हुए हैं और वह इसे पार्टी के अंदर अपने खिलाफ एक बड़ा षड्यंत्र मानते हैं. वह हरियाणा में पार्टी के किसी नेता का हस्तक्षेप स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं.

इसी बीच कांग्रेस और उस के नेता राजीव गांधी के मन में देवीलाल और उन के परिवार के प्रति विशेष राग उत्पन्न हो गया है. देवीलाल द्वारा उपप्रधान मंत्री के रूप में शपथ लेने को कांग्रेस ने अवैध माना था. सर्वोच्च न्यायालय में इसे चुनौती भी दी गई थी. परंतु हाल के कश्मीर घाटी के दौरे के समय पार्टी नेता राजीव गांधी ने देवीलाल के प्रति विशेष आत्मीयता प्रकट की और जम्मू कशमीर के राज्यपाल जगमोहन के खिलाफ बखेड़ा खड़ा करते हुए कहा कि हमारे और देश के उपप्रधान मंत्री की अगवानी के लिए राज्यपाल हवाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अड्डे तक नहीं आए और बैठक में राज्य पाल ने उपप्रधान मंत्री को दाईं ओर न बैठा कर सरकारी शिष्टाचार का उल्लंघन किया है. यह आत्मीयता आकस्मिक और राजनीतिक है, इसे कोई भी समझ सकता है.

इस प्रकार महम कांड ने जनता दल सरकार और पार्टी के कई नाजुक दरवाजे खोल दिए हैं. चाहे अनचाहे पार्टी और सरकार के अंदर टकराव की नई शुरुआत हो गई है, जिस में एक ओर देवीलाल व उन के पुत्र चौटाला उत्तर प्रदेश और बिहार के समर्थकों के साथ खड़े हैं और दूसरी तरफ पार्टी का समाजवादी खेमा व अन्य नेता लोग जुटे हुए हैं. दरवाजे के बाहर राजीव गांधी अपनी पार्टी को ले कर मौके की तलाश में हैं. वह जनता दल और सरकार के अंदर इस टकराव को बड़ी भूखी निगाहों से देख रहे हैं. भजनलाल अंदरबाहर सक्रिय हैं. चंद्रशेखर की आत्मीयता विश्वनाथ प्रताप सिंह के बजाय चौटाला और देवीलाल के साथ अधिक है.

सन 1987 के विधान सभा चुनाव के बाद पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की स्थिति काफी सुधरी है. विधान सभा चुनाव की तुलना में लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने दुगने से अधिक मत प्राप्त किए हैं. और दस में से चार लोकसभा सीटें कांग्रेस ने जीती है. महम कांड ने हरियाणा में चौटाला के खिलाफ एक राजनीतिक वातावरण बना दिया है.

देवीलाल ने अपने नाटक से शहरी जनता को तो रुष्ट कर ही दिया है, अपने पुत्र ओमप्रकाश चौटाला की कारगुजारियों से कम से कम हरियाणा की ग्रामीण जनता भी अब रुष्ट है. दो साल बाद हरियाणा में होने वाले चुनावों में तो दूर, अब देवीलाल के पुत्र या उन के मनोनीत उम्मीदवार भी हरियाणा विधान सभा के उपचुनावों में जीत जाए तो गनीमत होगी.

देवीलाल ने दो माह में वह सारी उज्ज्वल छवि मलिन कर दी है जो उन्होंने पिछले चार वर्षों में मेहनत से बनाई थी.●

"अब माफ किए गए कर्जों पर ब्याज मिलने के लिए हमें आंदोलन करना चाहिए..."

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरि" गोल्ड कवरिंग गहने अपनी श्रेष्ठता, अनुपम लाजवाब मनमोहक डिसैनों से दुनियाँ की सारी स्त्रियों की दिलों में शाश्वत जगह पायी है। आपको कौन्सी नम्बर चाहिये यह हमें लिखकर बताईये। वि.पि.पि. द्वारा भेजा जायेगा। मुफ्त केटलाग के लिये आज ही हमें लिखिये।

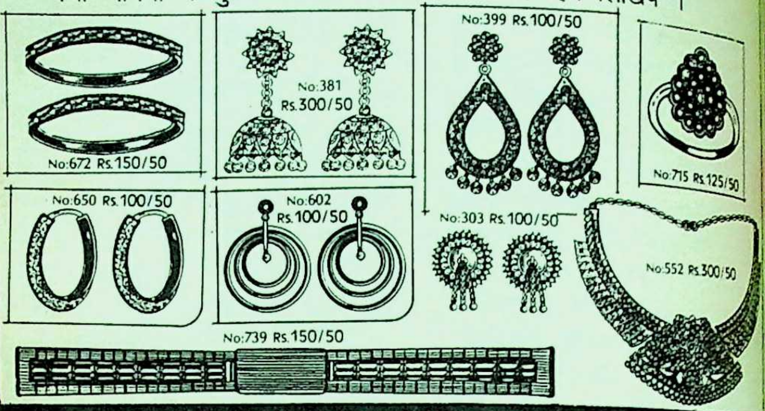

MERI GOLD COVERING WORKS
P.O.BOX 1405, 14, RANGANATHAN STREET
T.NAGAR, MADRAS - 600 017, PHONE: 444671

APRIL (FIRST) 1990

Special On

COMMON AILMENTS OF WOMEN

- URES FOR CHRONIC PAINS.
- VIRGINITY VS MYTHS.
- "GOOD NIGHT" FOR INSOMNIACS.
- FACTS ABOUT FRIGIDITY
- CERVICAL CANCER : CATCH THE KILLER!
- ARE YOU BORED?
- MENSTRUAL MALAISES
- BREAST FEEDING WITHOUT BOTHER
- YOU'RE IN LOVE!
- STRESS : STRAINING THE LIFE OUT OF YOU?

An authoritative guide on various diseases of women—their causes, remedies and preventions.

BUY A COPY TODAY

- **BUILDS YOUR PERSONALITY**
- **BUILDS A HAPPY HOME**

Woman's era

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

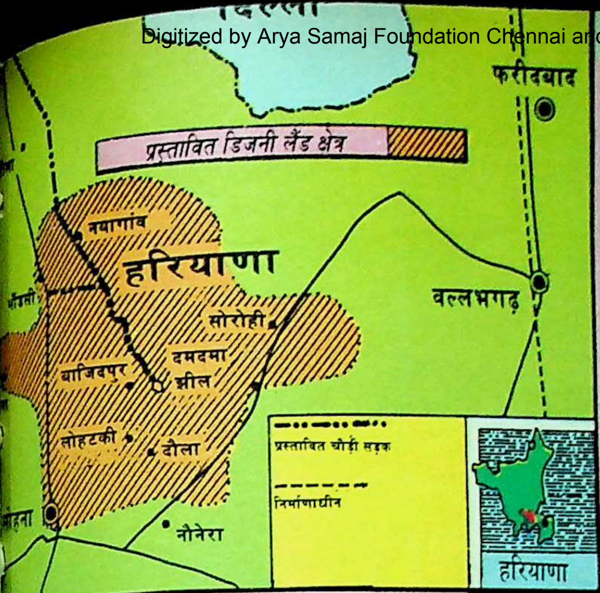

वह क्षेत्र जहां प्रस्तावित डिजनीलैंड बनाने की योजना बन रही है (बाएं). हरियाणा के मुख्य मंत्री ओमप्रकाश चौटाला: डिजनीलैंड योजना की आड़ में लगभग दो सौ करोड़ रुपयों का वारान्यारा करने का इरादा (नीचे).

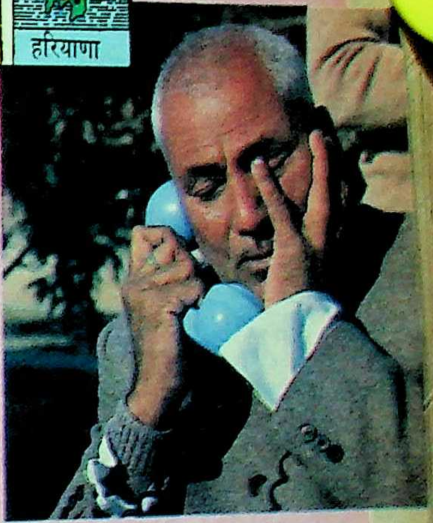

डिजनीलैंड: चौटाला का घोटाला

लेख ● सगीर किरमानी

9 जनवरी 1990 के 'हरियाणा सरकार गजट' में राज्यपाल की तरफ से नोटिस दिया गया कि सरकार ग्राम दमदमा में 'सार्वजनिक मनोविनोद पार्क' बनाना चाहती है और भूमि अर्जन अधिनियम 1894 की धारा 4 के तहत 27 गांवों की 28,341 एकड़ जमीन वह अधिगृहीत करेगी.

इस अधिग्रहण की चपेट में आने वाले गांवों के नाम और उन से तलब की जाने वाली जमीन का क्षेत्रफल (एकड़ों में) इस प्रकार है:

भोंडसी (758), रिठोज (1,145), सहजावास (941), बहलपा (788), रोजका गुजर (5,744), दमदमा (675), गढ़ी बाजीदपुर (839), पूल्हावास (110), खेड़ला (1,328), हरचंदपुर (1,470), महेंदवाड़ा (352), घामड़ोज (2,593),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलीपुर (1,435), बेरका (389), धुनेला (858), अभयपुर (1,836), साईका (591), सिरसका (323), लोहटकी (255), जलालपुर (334), खोखरी (344), टेहला (1,056), मंडावर (1,345), बादशाहपुर टेठर (503), टेठर (628) और सोहना (1,689).

नोटिस की खबर छपते ही इन गांवों में सनसनी और दहशत फैल गई. इस का विरोध करने के लिए राजनीतिक और जातीय आधार पर बटे किसान एकजुट होने लगे. 10 जनवरी को सोहना में, 14 जनवरी को खेड़ला में, 21 जनवरी को दमदमा में और 24 जनवरी को तावडू में होने वाली विरोध सभाओं में किसान उमड़ पड़े. फिर 28 जनवरी को डिजनीलैंड विरोधी मोरचे का गठन हुआ. इस काररवाई में स्वामी अग्निवेश, विधायक राव धर्मपाल, भूतपूर्व मंत्री अवतारसिंह भडाना, गूजर नेता कन्हैयालाल पोसवाल, कर्नल सूरतसिंह, पंडित लच्छी राम और रामचंदर खटाना ने काफी सक्रियता दिखाई.

लेकिन ओमप्रकाश चौटाला पर कोई असर नहीं हुआ. 28 जनवरी की पत्रकार वार्त्ता में उन्होंने डिजनीलैंड योजना पर कायम रहने के अपने इरादे को फिर दोहराया. संघर्ष समिति के प्रतिनिधिमंडल के सामने भी उन्होंने अपने फैसले पर कायम रहने की बात कही और चेतावनी दी कि वह ऐसी धमकियों के आगे झुकेंगे नहीं.

चौटाला की तरफ से निराश हो कर किसान प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के पास गए. शुरू में प्रधान मंत्री उपप्रधान मंत्री देवीलाल का लिहाज करते हुए इस मामले में हाथ डालने से कतराते रहे. प्रधान मंत्री की ढील की वजह से देवीलाल ने भी एक जगह दोहरा दिया कि डिजनीलैंड बनेगा, इस में हर्ज ही क्या है.

सरकार पर असर न होते देख उस योजना से प्रभावित होने वाले 28 गांवों के करीब पांच हजार किसान 7 फरवरी को प्रधान मंत्री निवास के बाहर लोदी रोड पर धरना दे कर बैठ गए. उस दिन प्रधान मंत्री सारे दिन कशमीर में पाकिस्तानी घुसपैठ की समस्या पर हो रही महत्त्वपूर्ण बैठक में व्यस्त रहे. फिर भी अपार जनसमूह का दबाव वह नजरअंदाज नहीं कर सके. उन्होंने बाहर आ कर किसानों से कहा कि वह ओमप्रकाश चौटाला से फोन पर बात कर रहे हैं. डिजनीलैंड के लिए इतनी ज्यादा जमीन अधिगृहीत नहीं करने दी जाएगी.

धरना देने वाले किसान 'किसान एकता जिंदाबाद,' 'चौटाला का घोटाला नहीं चलने देंगे' आदि नारे लगाते हुए वापस लौट गए. लेकिन सचाई यह है कि किसान प्रधान मंत्री के इस आश्वासन से संतुष्ट नहीं हैं कि डिजनीलैंड के लिए ज्यादा जमीन नहीं दी जाएगी. वे इस योजना को पूरी तरह समाप्त करवाना चाहते हैं.

इस भारतीय डिजनीलैंड की पृष्ठभूमि देखी जाए तो पता चलेगा कि यह महज ओमप्रकाश चौटाला के दिमाग की उपज नहीं है. सब से पहले 1973 में इस का सपना धीरेंद्र ब्रह्मचारी ने देखा था. उन्होंने इस की विस्तृत योजना तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी से स्वीकृत कराने की कोशिश की थी. उन्होंने गुड़गांव में सिलोकरा गांव के पास अपना आश्रम बना कर इस योजना की तैयारी भी शुरू कर दी थी, पर आपातकाल

चौटाला हरियाणा में जिस डिजनीलैंड को बनाने की जिद पर अड़े हैं उस में करोड़ों के वारेन्यारे होने की उम्मीद है. आखिर गांवों से जुड़े चौटाला को 'शहरी लोगों के महंगे खेलों में रुचि क्यों है? क्या हरियाणा के किसान चौटाला के इस घोटाले को बरदास्त करेंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिजनीलैंड के विरोध में उमड़ा जनसमूह : चौटाला सरकार का यह विरोध हरियाणा जनता दल को महंगा पड़ सकता है.

की गहमागहमी में वह इस के लिए मंजूरी नहीं ले सके. उस के बाद इंदिरा गांधी सत्ता में नहीं रहीं.

नौवें दशक में मुख्य मंत्री भजनलाल के सामने यह योजना लाई गई. उन्होंने इस में खासी दिलचस्पी भी ली, पर किसानों के विरोध के कारण उन्हें इसे ठंडे बस्ते में डालना पड़ा. बरसों बाद इस मृतप्राय योजना में नई जान फूंकने का दुस्साहस आखिर ओमप्रकाश चौटाला को दिखाना पड़ा.

इस योजना का सब से शर्मनाक पहलू यह है कि इस के योजनाकार किसी 'सार्वजनिक मनोविनोद पार्क' के निर्माण के प्रति ईमानदार नहीं हैं, बल्कि इस योजना की आड़ में करोड़ों रुपए के घोटाले का रास्ता खोल रहे हैं. अन्यथा जो पार्क सिर्फ दोढाई सौ एकड़ जमीन में बन सकता है, उस के लिए 28,341 एकड़ जमीन के अधिग्रहण का नोटिस क्यों जारी किया गया?

सोहना विधान सभा क्षेत्र के विधायक राव धर्मपाल ने बताया, "अधिग्रहण के इस नोटिस से चौटाला कुछ प्रापर्टी डीलरों को लाभ पहुंचा रहे हैं. उन के एक परिचित प्रापर्टी डीलर ने सोहना में काफी जमीन खरीदी है. सोहना बल्लभगढ़ रोड पर करंकी में एक हजार एकड़ जमीन और सोहना गुड़गांव रोड पर 250 एकड़ का फार्म हाउस उस ने खरीदा है. सिरोही और सिगोला गांवों में भी उस ने काफी जमीन खरीदी है."

बंधुआ मुक्ति मोरचे के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश ने बताया, "इस से पहले भी स्वयं चौटाला महरौली दमदमा रोड के दोनों किनारों पर अरावली पर्वत श्रेणियों के साथसाथ सैकड़ों एकड़ जमीन बेनामी तौर पर खरीद चुके हैं. इस के अलावा दक्षिण दिल्ली के ग्वालपारा, बंधवाड़ी और बलियावास आदि गांवों में 1,500 एकड़ जमीन चौटाला के करीबी आदमियों द्वारा खरीदी जा चुकी है. हालांकि मौजूदा नोटिस इन जमीनों के बारे में नहीं है. ये जमीनें विशेष प्रभाव के कारण मात्र दो हजार रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से खरीदी गई थीं, जिन का अब बाजार मूल्य 2 से 5 लाख रुपए प्रति एकड़ से भी ज्यादा है.

"इसी तरह इस क्षेत्र के विशाल फार्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीलाल : डिजनीलैंड जरूर बनेगा, इस में हर्ज ही क्या है.

हाउसों को अधिग्रहण से बचाने के लिए भारीभरकम सौदों की संभावना है. अधिसूचित 28,341 एकड़ जमीन में से सिर्फ दोढाई हजार एकड़ जमीन प्रस्तावित डिजनीलैंड के लिए चाहिए होगी. इस से जाहिर हैं कि बाकी बची जमीन की सौदेबाजी कौड़ियों के भाव होगी और चौटाला एंड कंपनी 200 करोड़ रुपए से ज्यादा का मुनाफा कमा लेगी. इस तरह यह घोटाला बोफोर्स कांड से भी बड़ा साबित होगा."

स्वामी अग्निवेश ने कहा, "मजे की बात यह है कि चौटाला सरकार विश्व बैंक और 'सीडा' संस्थाओं की 150 करोड़ रुपए की परियोजना लागू करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रही है. यह परियोजना अरावली पर्वतमालाओं के हरितकरण के लिए है, जिस के तहत इस इलाके में वृक्षारोपण, पानी के लिए जमीन की खुदाई और जानवरों व पक्षियों के संरक्षण का कार्य होना है. इस परियोजना को दरकिनार रख कर अरावली पहाड़ियों में बजरी और पत्थर की खुदाई हो रही है और पर्यावरण विनाश को बढ़ावा मिल रहा है."

प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का कहना है कि अगर कोई डिजनीलैंड बनना है तो उस के लिए बहुत थोड़ी जमीन की जरूरत होगी. यह बात चौटाला को भी पता है. एक बड़े राज्य की लोकतांत्रिक सरकार का 'काबिल' मुख्य मंत्री इतनी सी बात भी न समझता हो, यह हो ही नहीं सकता.

महज एक हवाई योजना

असल में डिजनीलैंड महज एक हवाई योजना है. अधिग्रहण का नोटिस आते ही प्रस्तावित जमीनों की कीमतें धड़ाधड़ गिरने लगी हैं, और यही पूरे ड्रामे का असली मकसद है. आम ग्राहक अब जमीनें खरीदने के लिए तैयार नहीं है और केवल चौटाला के लोग ही जमीन का सौदा कर रहे हैं. बाद में यही जमीनें बहुत ऊंचे दामों पर बेची जाएंगी.

चुनावों में करोड़ों रुपया चंदा देने वाले प्रापर्टी डीलरों को भी हरी झंडी दे दी गई है कि वे निडर हो कर जमीनें खरीदें. इन में से अंसल प्रापर्टीज का नाम प्रमुखता से लिया जा रहा है.

यह एक सोचीसमझी साजिश है. जब कौड़ियों के दाम जमीनों की खरीदफरोख्त हो चुकी होगी, तब एक दिन अधिसूचना समाप्त कर दी जाएगी. चौटाला अपने को बेदाग साबित करने की कोशिश करेंगे और डिजनीलैंड योजना को समाप्त करने या करवाने का सेहरा अपने सिर बांध कर किसानों में 'हीरो' बनने का प्रयास करेंगे.

पर किसान क्या सचमुच इतना बेवकूफ है?

महम के उपचुनाव में जो गड़बड़ी और हिंसा हुई है और आम लोगों में इस की जो प्रतिक्रिया है और जिस तरह इस ने चौटाला व देवीलाल के राजनीतिक चरित्र पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है, उस से तो यही लगता है कि ग्रामीणों और किसानों की आंख में धूल झोंकने के दिन अब लद चुके हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साजन आए मन देहरी पर

साजन आए मन देहरी पर
महका मन, खिल उठा बदन,
उजले रंग सजे चूनर पर
हो बेकल, बढ़ गई धड़कन
स्वप्न बिखेरे आहट हर
अब क्षितिज पर जा टिकी है चितवन
सिमटा यूं मधुमास पलक पर
छंटा अंधेरा और सूनापन
रह जाएं ना गीत अधूरे
कहता मृदु अधरों का कंपन

—पुष्पा गोस्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैसाखियां

कहानी ● सुरेशकुमार गोयल

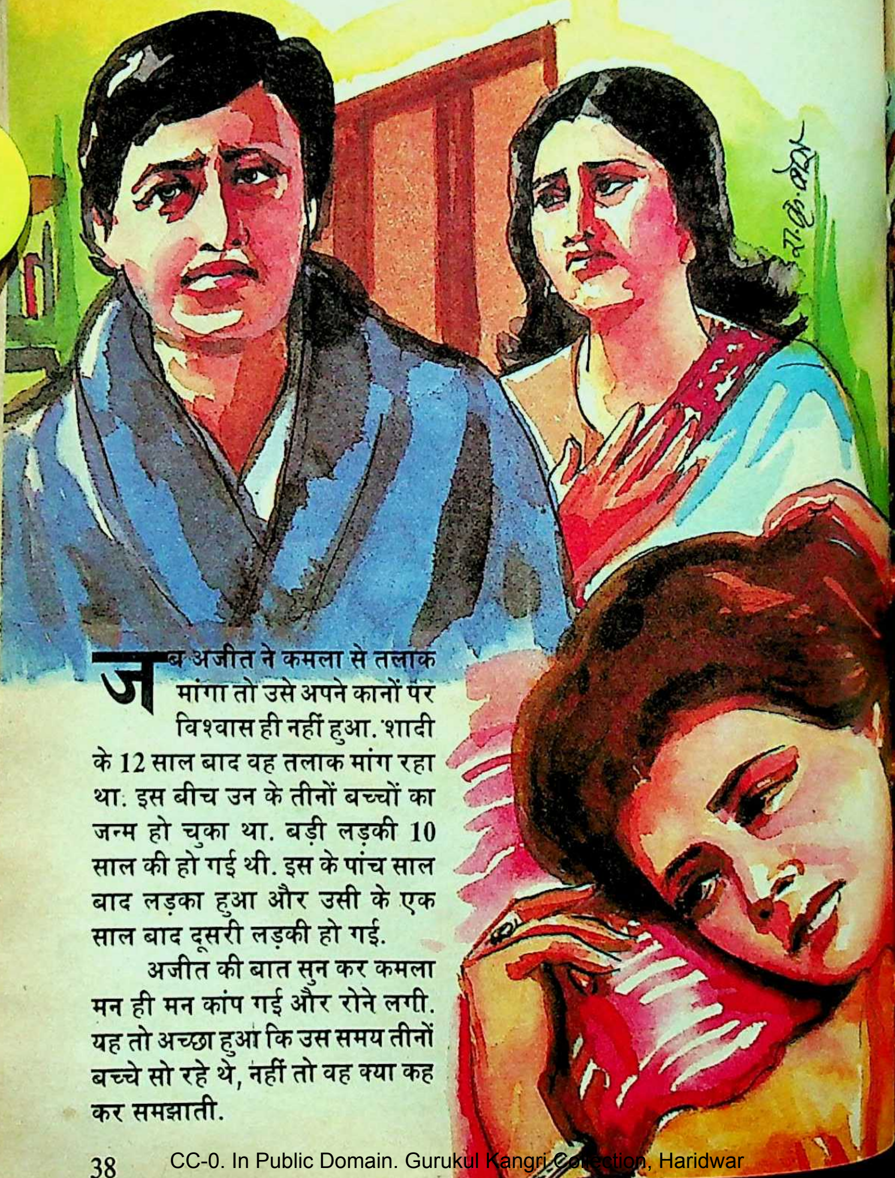

जब अजीत ने कमला से तलाक मांगा तो उसे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ. शादी के 12 साल बाद वह तलाक मांग रहा था. इस बीच उन के तीनों बच्चों का जन्म हो चुका था. बड़ी लड़की 10 साल की हो गई थी. इस के पांच साल बाद लड़का हुआ और उसी के एक साल बाद दूसरी लड़की हो गई.

अजीत की बात सुन कर कमला मन ही मन कांप गई और रोने लगी. यह तो अच्छा हुआ कि उस समय तीनों बच्चे सो रहे थे, नहीं तो वह क्या कह कर समझाती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीत उस रात अतिथिकक्ष में ही सोया. बेचारी कमला तो रात भर करवटें बदलती रही. सोचती रही कि अजीत को अचानक क्या हो गया? उस ने हमेशा ही एक अच्छी पत्नी की तरह उस की शारीरिक आवश्यकताएं पूरी कीं. पर सारा दिन बच्चों में उलझे रह कर रात को थका होना कोई जुर्म थोड़े ही है. उस में अब पहले जैसी स्फूर्ति भी नहीं रही थी. तीन बच्चों को पैदा किया था और साथ ही दुकान भी चलाती रही थी.

जब अजीत ने कमला से तलाक मांगा तो उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. आधी रात को कमला उठ गई. बत्ती जला कर शृंगार मेज में लगे शीशे में वह अपना चेहरा देखने लगी.

आधी रात को ही कमला उठ गई. बत्ती जला कर शृंगार मेज में लगे शीशे में वह अपना चेहरा देखने लगी. 35 वर्ष की औरत के चेहरे पर जैसी रौनक और चमक होनी चाहिए उस से तो कहीं अधिक उस के

अजीत कमला के प्यार और सम्मान को ठुकरा कर जिस राह पर बढ़ गया था, उस से लौटना उस के लिए मुशकिल था. लेकिन तभी हालात ने उस के साथ एक ऐसा क्रूर मजाक किया, जिस ने उसे कमला के सहारे के लिए मोहताज कर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरे पर थी. हां, कुछ बाल उम्र से पहले ही सफेद होने लगे थे. अपने वजन को उस ने काफी काबू में रखा हुआ था. कमला को न जाने क्यों यह विश्वास हो गया था कि अजीत किसी गोरी के चक्कर में ही उस को छोड़ रहा है.

कमला का शक सच ही था. अजीत पिछले एक साल से 25 वर्षीया विकी से मिलता रहता था. दोनों की मुलाकात टोरांटो में हुई थी. कुछ महीनों से लगभग हर हफ्ते ही वह टोरांटो जाता था. इस से उसे व्यापार में भी काफी नुकसान होता था. पिछले महीने उस ने मांट्रियल में ही विकी के लिए फ्लैट किराए पर ले लिया था. दिन में किसी भी समय जब मन करता, वह विकी के पास चला जाता. घर तो वह हमेशा ही देर से जाता था. कमला उस का खाना रसोई में रख कर सो जाती थी.

आखिर विकी ने अजीत को अपना अंतिम निर्णय सुना दिया कि उसे अपनी पत्नी और उस में से एक को चुनना पड़ेगा. अजीत के सामने अब यह प्रश्न था कि वह किस को चुने. 35 वर्षीया पत्नी और 25 वर्ष की गोरी प्रेमिका के बीच उसे चुनाव करना था. जीत प्रेमिका की हुई. विकी से उस ने शादी करने का निश्चय कर लिया.

सवेरे जब बड़ी लड़की स्कूल चली गई, तब अजीत ने कमला को कह दिया कि वह शाम को अपना सामान ले कर चला जाएगा. वकील से उस ने सारी बातचीत कर ली थी. वह पूरा घर कमला के नाम कर देगा और हर महीने खर्च के लिए समुचित पैसे दे दिया करेगा. कमला चुपचाप सुनती रही और आंसू बहाती रही. उस ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उस की बसीबसाई गृहस्थी इस तरह उजड़ जाएगी.

अजीत शाम को बड़ी लड़की के आने से पहले ही सामान ले कर घर से चला गया. बड़ी कार वह खुद ले गया और छोटी कार कमला के लिए छोड़ गया.

बड़ी लड़की जब स्कूल से घर आई तो कमला उसे समझा न सकी कि उस का पि... उस की मां को छोड़ गया है. उस ने बेटी... यही कह दिया कि उस के पिता व्यापार के सिलसिले में बाहर गए हैं.

अगली शाम अजीत घर आया... बच्चे उस से चिपट गए. वह बच्चों को ले कर पार्क में चला गया. बच्चे बड़े खुश थे... पार्क में खेलना चाहते थे. परंतु अजीत ने आइसक्रीम खरीद कर उन को अपने पास बै... जाने को कहा.

फिर उस ने बच्चों से कहा, "मैं तुम्हें कु... समझाना चाहता हूं. पर तुम बहुत छो... हो... मेरी बात समझ नहीं पाओगे... कभीकभी ऐसा होता है कि मातापिता य... तय कर लेते हैं कि वे एकसाथ नहीं रह... सकते. तब वे अलगअलग रहने लग जाते हैं... उस समय बच्चों के लिए मां पहले जैसी म... ही रहती है और पिता भी पहले की तरह ही... रहते हैं. बस, मातापिता एक घर में नहीं... रहते. वैसे ही अब मैं घर में नहीं रहूंगा. प... तुम लोगों से मिलने दूसरेतीसरे दिन आता... रहूंगा." कह कर अजीत चुप हो गया.

"तब मेरी साइकिल कौन ठीक किया करेगा?" बड़ी बेटी मोना ने पूछा.

"मैं ही ठीक करूंगा, मोना. मैं कोई ज्यादा दूर थोड़े ही रहूंगा."

"और जब मुझे रात में डर लगेगा तो मैं किस को पिता कह कर पुकारूंगा?" राहुल बोला.

"बेटा, अब तुम बड़े हो गए हो. मेरे जाने के बाद तुम अपनी बहनों की भी देखभाल करना. तू तो मेरा शेर बेटा है." अजीत ने राहुल की पीठ थपथपाई.

पार्क से उठने से पहले अजीत ने बच्चों को अपने सीने से लगा लिया. वह सोचने लगा, 'बच्चों को कभी कोई कमी नहीं होने देगा. कमला को भी आर्थिक परेशानी नहीं होने देगा. उस के जीवन में हालांकि कमला के लिए अब कोई स्थान नहीं था, परंतु उस की आर्थिक सफलता का श्रेय कमला को ही मिलना चाहिए. बेचारी ने कितनी मेहनत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

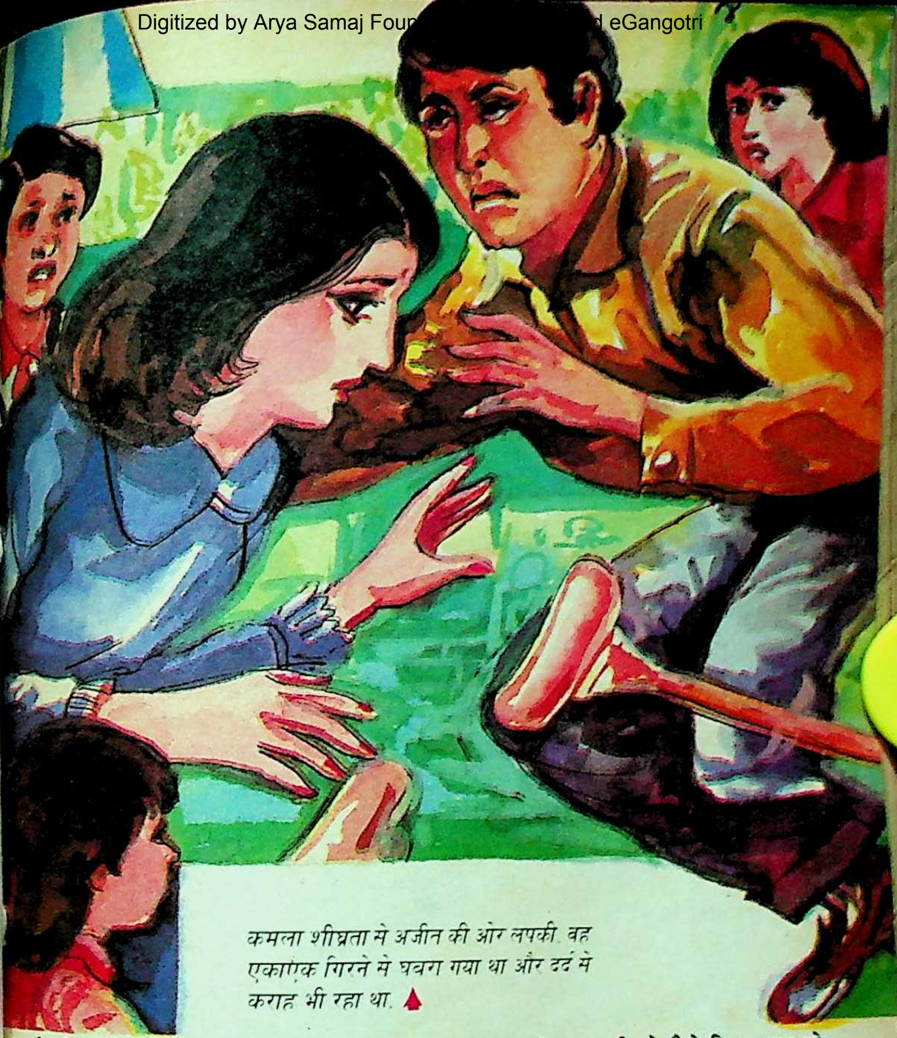

कमला शीघ्रता से अजीत की ओर लपकी. वह एकाएक गिरने से घबरा गया था और दर्द से कराह भी रहा था. ▲

की थी. परंतु अब वह एक याद बन कर रह गई थी. कानूनी तौर पर तलाक होने पर बस भूतपूर्व पत्नी बन कर रह जाएगी. मात्र उस के बच्चों की परवरिश करने वाली एक औरत.'

अजीत जिस राह पर चल चुका था, अब उस के लिए मार्ग बदलना नामुमकिन था. कानूनी तौर पर अपने घर लौटने के दरवाजे अभी बंद नहीं हुए थे. पर भावनात्मक तौर पर कमला और अजीत के बीच जो खाई आ गई थी, उस को पार करना अब असंभव था.

अजीत हर तीसरेचौथे दिन शाम को आता था. कमला से वह गिनीचुनी ही बातें करता था. कमला दरवाजा खोल कर ऊपर चली जाती थी. अजीत बच्चों के साथ इधरउधर की बातें करता रहता. वह जाते समय कमला को पैसे दे जाता. वैसे उस का बैंक खाता अभी तक दोनों के ही नाम था. अजीत उस में समुचित पैसा जमा करता रहता था.

जब भी वह आता, बच्चों के लिए खिलौने ले आता था. कभीकभी वह बच्चों को पार्क में ले जाता और कभी बाहर किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेस्तरां में खाने पर ले जाता. जब वह जाता तो बच्चों का दिल बहुत दुखी होता था. गुड्डी तो उस की गोद से उतरना ही नहीं चाहती थी. बेचारी मोना ही कुछ थोड़ाबहुत समझने लायक थी. उस को धीरेधीरे मालूम होने लगा था कि मां और पिता के बीच क्या हो गया है. वह बेचारी दुखी मां को देख कर बहुत परेशान होती थी. वह सोचती, 'उन के घर में जो हंसी और खिलखिलाहट पहले हुआ करती थी, अब क्यों नहीं होती.'

गरमियों की छुट्टियों के बाद गुड्डी ने भी स्कूल जाना शुरू कर दिया. कमला अब घर में अकेली ही रह गई थी. उस ने काम की तलाश की. थोड़ी दौड़धूप के बाद उसे नौकरी मिल गई थी. गुड्डी और राहुल स्कूल से जल्दी आ जाते थे. उन को एक घंटा कमला की एक सहेली देख लेती थी. मोना स्कूल से आ कर वहां से राहुल और गुड्डी को घर ले आती थी.

कमला के पास केंद्रीय और प्रांतीय सरकार की तरफ से बच्चों के लिए हर महीने चेक आ जाते थे. फैक्टरी में भी उसे अच्छे पैसे मिलते थे. इसलिए अधिक परेशानी नहीं होती थी. अच्छी तरह गुजारा चल रहा था. कभीकभी उसे पुराने दिनों की बहुत याद आती थी. रात में जब नींद उचट जाती तो कोई उस के साथ अंधेरे कमरे की वीरानगी को दूर करने वाला नहीं था. उस की फैली बांहें बस तकिए के दूसरे छोर पर ही टिकी रहतीं.

अचानक एक दिन अजीत की कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई. कमला को कई दिनों बाद पता चला. वह अकेली ही उसे हस्पताल में देखने गई. विकी भी वहीं थी. न जाने क्यों उसे देख कर कमला को क्रोध नहीं आया. इस औरत ने उस का पति उस से छीन लिया था. परंतु कमला को लगा कि दोष विकी का इतना नहीं, जितना अजीत का है. उसे तो अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए था.

अजीत को बहुत चोटें आई थीं. पहली बार जब कमला हस्पताल में गई थी अजीत बेहोश था. जब दूसरी बार [illegible] तो अजीत बातचीत कर रहा था. [illegible] बच्चों से मिलने का आग्रह किया, [illegible] कमला बच्चों को इस अवस्था में अजीत [illegible] नहीं दिखाना चाहती थी. अजीत ने भी [illegible] नहीं की. उस दिन विकी, अजीत [illegible] कमला को अकेला छोड़ कर बाहर चली [illegible] थी.

एक महीने बाद कमला बच्चों को अजीत के पास ले गई. उस के सिर [illegible] चेहरे की पट्टियां खुल गई थीं, लेकिन मुंह [illegible] कई निशान थे. बच्चे पहले तो अजीत [illegible] देख कर घबरा गए, परंतु इतने दिनों [illegible] उस को देख कर खुश भी थे. उस दिन विकी अजीत से मिलने नहीं आई थी.

एक बात अजीत ने कमला को [illegible] बताई थी कि दुर्घटना में उस ने अपना [illegible] पांव खो दिया था. वह जीवन भर के लिए लंगड़ा हो गया था. उस के वकील ने दुर्घटना के बाद तलाक की कानूनी कारवाई उस के हस्पताल से लौटने तक के लिए स्थगित कर दी थी.

दुर्घटना के दो महीने बाद [illegible] हस्पताल से अजीत को छुट्टी मिली तो विकी हस्पताल नहीं आई. एक नर्स ने उस के लिए टैक्सी मंगवा दी.

अजीत ने अटैची अपनी इमारत के स्वागतकक्ष में रख दी, क्योंकि [illegible] बैसाखियों की मदद से चल रहा था. लिफ्ट से अपने फ्लैट पर पहुंच कर उस ने घंटी बजाई पर किसी ने द्वार न खोला. उस [illegible] अपने कोट की जेब टटोली तो चाबी [illegible] मिल गई. दरवाजा खोल कर वह फ्लैट में [illegible] गया. भीतर आ कर वह घर देख कर हैरान रह गया कि विकी अपना सब सामान ले कर चली गई थी.

अजीत के साथ हालात ने कितना [illegible] मजाक किया था. दुर्घटना में उस ने एक पांव खो दिया था और अब विकी भी उसे छोड़ कर चली गई थी. सोफे पर बैठ कर वह [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को धिक्कारने लगा, 'याद कर, तू ने भी तो अपनी ब्याहता पत्नी को विकी के कारण छोड़ दिया था. अब विकी तुझ लंगड़े के साथ क्यों अपना जीवन बरबाद करती? अगर कमला के प्रेम, त्याग और भावनाओं का कोई मोल नहीं था तो तेरी वासना में डूबी भावनाओं का विकी के समक्ष भला क्या मोल होता?'

अजीत हिचकियां लेले कर रोने लगा. शाम को उस ने कमला को फोन किया और उसे बताया कि वह हस्पताल से वापस आ गया है और बच्चों से मिलना चाहता है. उस ने कमला को अपना पता और आने का रास्ता समझा दिया था.

दो दिन तक कमला अजीत से मिलने नहीं जा सकी. तीसरे दिन फैक्टरी से आ कर खाना खा कर वह बच्चों के साथ अजीत के फ्लैट पर चली गई. उस ने दरवाजे की घंटी बजाई. अजीत को दरवाजे तक पहुंचने में कुछ देर लगी. कमला और बच्चों ने अजीत को पहली बार बैसाखियों के साथ देखा. देखते ही कमला की तो चीख ही निकल गई. अजीत बच्चों को सीने से लगा कर आंसू बहा रहा था.

"विकी कहां है?" थोड़ी देर बाद कमला ने पूछा.

"वह मुझे छोड़ कर चली गई. अब मैं बिलकुल अकेला हो गया हूं. बेसहारा... अपंग." अजीत एक टूटे हुए इनसान की तरह शून्य में ताक रहा था.

"अरे...," कमला बस यही कह पाई.

"कमला, मैं तुम्हारे पास वापस आना चाहता हूं. इस मुसीबत के समय मेरा साथ दो. वैसे भी कानून की दृष्टि से हम अभी भी पतिपत्नी हैं." अजीत ने आंसू पोंछते हुए कहा.

"ऐसा अब शायद कभी नहीं हो सकता. मेरे दिल को जो घाव आप ने दिए हैं, उन को मैं कैसे भूल जाऊं. आप ने मुझ बेकसूर के साथ जो व्यवहार किया था, शायद उसी की आप को सजा मिली है."

कमला क्रोध और अपमान से कांप रही थी. महीनों पहले यही अजीत दो टूक शब्द कह कर बरसों का रिश्ता कर चला गया था. अब वही रिश्ते की टूटी डोर को फिर से जोड़ने की प्रार्थना रहा था. "आप क्या समझते हैं कि जब मुझे छोड़ दिया और जब चाहा, मेरे पास गए. मैं आप के बिना जीना सीख गई हूं. आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर हूं. मुझे से एक पैसा भी नहीं चाहिए. मुझे छोड़ बाद भी आप मेरी मदद करते रहे थे. तरह मैं भी आप की मदद करूंगी." कमला ने आंसू पोंछते हुए अजीत की ओर देखा.

अजीत बेचारगी से एकटक कमला को रहा था. उस की आंखें कमला से भीख मांग रही थीं. इस हालत में कमला अजीत की ओर देखा न गया. देर भी हो गई थी. उस ने मोना को आवाज दी और बच्चों को जाने के लिए तैयार करने लगी.

अजीत ने बच्चों को चूमा और फ्लैट के दरवाजे तक विदा करने के लिए उठा. राहुल और गुड्डी ने उस की बैसाखियां उस से दूर सरका दी थीं. उन को हाथ कर उठने की कोशिश में अजीत संतुलन खो बैठा और सोफे से गिर गया.

कमला शीघ्रता से अजीत की ओर लपकी. उस ने उसे संभाल लिया और पर बैठा दिया. वह एकाएक गिरने से घबरा गया था और दर्द से कराह भी रहा था. कमला उस का सिर सहलाने लगी. पानी का एक गिलास ले आया. पानी पी कर अजीत ने चैन की सांस ली.

कमला भीगी आंखों से अजीत को देख रही थी. फिर अचानक वह मोना से बोली, "बेटी, जा कर अपने पिता के जूते ले आ."

मोना तीर की तरह अंदर गई और अजीत के जूते ढूंढ़ कर ले आई.

कुछ देर बाद कमला अजीत को सहारा दे कर फ्लैट से बाहर ले आई. उस के पीछेपीछे अजीत की एक बैसाखी मोना और दूसरी राहुल लिए चले आ रहे थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पित जीवन

रांची वाले हमारे मकान की तुलना में तो यह कुछ भी नहीं था, फिर भी सिर छिपाने को एक छत मिल गई थी.

सामान करीबकरीब बंधा ही पड़ा था. हमें आए हुए दो दिन हो गए थे, पर पासपड़ोस के लोगों ने हम से मिलने की अपनी ओर से कोई पहल नहीं की थी.

एक दिन बाजार से लौटते समय सहसा सरला बेन से भेंट हो गई. तब मैं उन का नाम भी नहीं जानती थी. मुझ पर नजर पड़ते ही वह मुसकरा कर बोलीं, "आप ही आई हैं, उस बाज़ू वाले मकान में."

तबादला होने के बाद अपने को नई जगह पुनःस्थापित करने में बड़ी मुशकिल होती है. धनबाद हमारे लिए बिलकुल नई जगह थी. जयप्रकाश नगर में साधारण सा मकान मिल गया था, लेकिन

कहानी • बिंदु सिन्हा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन के परिवार का परिचय क्षेत्र ज्योंज्यों बड़े लोगों में बढ़ता गया, वह सरलाबेन को भूलती गई. वह कहीं मिल भी जातीं तो कन्नी काट लेती. लेकिन एक दिन एक ऐसी घटना घटी कि शकुन उस असहाय व गरीब सरलाबेन के सामने स्वयं को बहुत छोटी महसूस करने लगी.

मेरे सामने कई समस्याएं थीं. यह तो किसी तरह कुछ खापी कर दफ्तर चले जाते पर सारी परेशानियां तो मुझे हल करनी थीं. किस से पूछूं कि महरी कहां मिलेगी, धोबी का घर कहां है, कौन सा बनिया भरोसेमंद होगा, दूध कहां मिलेगा? इन से कहा कि जरा अपने दफ्तर में किसी से पूछो तो हूंहां कर टाल जाते.

धीरेधीरे कई दिन और निकल गए. घर के काम करतेकरते मैं बुरी तरह थक जाती थी. एक दिन दफ्तर का चपरासी एक महरी ले कर आया था, लेकिन वह बरतन मांजने के सिवा और कुछ करने को तैयार नहीं हुई. नकचढ़ी भी बहुत थी. पहले दिन ही कहने लगी, "बीबीजी, इतने सारे बरतन न डाला करो. कम से कम ये चाय के बरतन तो आप खुद धो लिया करो."

मैं उस की बात सुन कर हैरान रह गई. लेकिन चुप रह जाना पड़ा, मन ही मन सोचा, 'कम से कम जले बरतन तो मांज दिया करती है, यही बहुत है.'

ऐसे ही दिन बीत रहे थे कि एक दिन बाजार से लौटते हुए सहसा सरला बेन से भेंट हो गई. तब मैं उन का नाम नहीं जानती थी. एक दो बार सड़क पर आतेजाते, उन्हें देखा था. मुझ पर नजर पड़ते ही वह मुसकरा कर बोलीं, "आप ही आई हैं, उस बाजू वाले मकान में?"

"हां, तो...आप यहीं रहती हैं क्या?" मैं ने उन के साथसाथ चलते हुए पूछा.

"अरे नहीं, मेरी ऐसी औकात नहीं जो मैं इस नई कालोनी में रहूंगी." वह हंस पड़ीं. "आप को कोई जरूरत हो तो...वैसे इस के पहले आप कहां थीं."

"हम लोग रांची से आए हैं?"

"ओह, रांची तो बड़ी अच्छी जगह है. हां, तो मैं कह रही थी कि आप को कोई जरूरत हो तो निस्संकोच बताइएगा. जानती हूं, नई जगह में कितनी परेशानियां होती हैं."

मेरा घर आ गया था. मैं ने कहा, "आइए न. एक प्याला चाय पी कर जाइए."

"अरे नहीं, अभी तो चलती हूं, फिर कभी आऊंगी. वैसे मैं समझती हूं सब कुछ सिलसिलेवार जम चुका होगा. सातआठ दिन तो हो ही गए होंगे, आप लोगों को आए हुए."

"अभी तो बस यही समझें कि किसी तरह खानेपीने का प्रबंध भर हो पाया है. काम की कोई महरी तक नहीं मिली. बड़ी परेशानी है."

"यह तो सचमुच बड़ी समस्या है. महरी तो है एक मेरी जानपहचान की, मैं उस से बात करूंगी. अगर राजी हो गई तो कल भेज दूंगी."

"अंदर नहीं चलेंगी?"

"अच्छा चलिए. जब आप बारबार इतना आग्रह कर रही हैं तो टालूं कैसे."

उन्होंने दाहिने हाथ में एक भारी

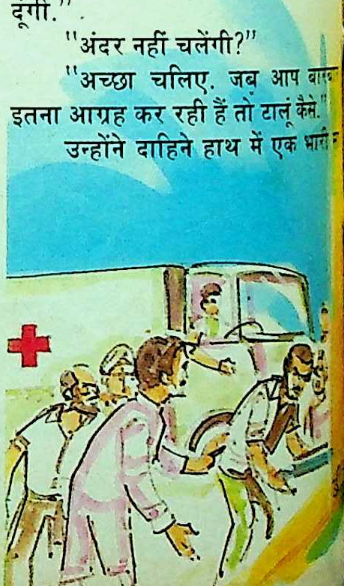

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थैला लटका रखा था. और, हाथ में एक प्लास्टिक की डोलची थी. जिस में पालक और मूली के पत्ते नजर आ रहे थे.

अंदर आ कर उन्होंने थैला दीवार से टिका दिया और भारमुक्त होने के अंदाज से राहत की सांस लेते हुए सोफे पर आ बैठीं, "जरा एक गिलास पानी देंगी. थक जाती हूं, बाजार आतेजाते, इतना बोझ अब ढोया नहीं जाता है."

मैं ने फ्रिज से बोतल निकाली और पानी का गिलास उन की ओर बढ़ा दिया. पानी पी कर उन्होंने गिलास लौटाते हुए कहा, "मकान तो अच्छा है. कितने कमरे हैं?"

"कमरे तो कुल चार हैं और बड़े भी हैं. लेकिन हवा की बिलकुल गुंजाइश नहीं. अभी जाड़ों में तो फिर भी कुछ ठीक है, पर गरमियों में तो हालत खराब हो जाएगी. सुना है, यहां पर बिजली की समस्या भी है. गरमियों में बिजली कुछ अधिक ही गायब रहती है."

"सो तो है ही. और यह जगह महंगी भी बहुत है. सागसब्जियां भी बहुत महंगी हैं."

चाय पी कर वह उठने लगीं तो मैं ने पूछ लिया, "यहां से कितनी दूर होगा आप का घर?"

"अधिक दूर नहीं है...बस, यही समझिए, पैदल आठदस मिनट का रास्ता होगा."

"आप अपना पता देने की मेहरबानी करें तो मुझे बड़ी सुविधा होगी. कोई जरूरत होगी तो खुद ही आ जाऊंगी या चपरासी को भेज दूंगी."

"अरे, भला इस में मेहरबानी की क्या बात है. यहां हस्पताल के पीछे जो क्वार्टर बने हुए हैं, मैं वहीं रहती हूं. वहां किसी से भी पूछ लेने पर कि 'सरलाबेन' कहां रहती हैं? कोई भी बता देगा...अच्छा, तो चलूं अब." उन्होंने फिर से झोला उठा लिया.

"अरे, अब मैं और जीना नहीं चाहती. बहुत जी लिया, बहुत प्रेम पाया लोगों का... अब कुछ नहीं चाहिए मुझे, कोई कामना नहीं..." कहतेकहते एक अनूठी सी चमक कौंध उठी सरलाबेन की आंखों में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''अच्छा... गुजराती हैं?''

अचानक मेरे मुंह से निकल गया. वह मुसकरा पड़ीं. ''हां, बापू के देश की हूं मैं और बापू की तरह ही मैं भी कोई भेदभाव नहीं करती, उन के चरणचिह्नों पर चलना ही मेरे जीवन का उद्देश्य है. वैसे मैं आप को बता दूं कि मेरे पति बापू के खास अनुयायियों में से थे. जेल में ही उन की मृत्यु हुई.''

अब मेरा ध्यान गया, उन के तन के शुभ्र, स्वच्छ वस्त्रों की ओर. खद्दर की शुभ्र साड़ी उन के शरीर पर खूब खिल रही थी. उम्र 70 वर्ष से अधिक ही होगी. कुल मिला कर उन का व्यक्तित्व प्रभावशाली लग रहा था.

''यहां कोयला खान की महिलाओं के लिए एक कल्याणकारी संस्था है. पहले मैं उसी में काम करती थी. अब तो 10 साल से ऊपर हो गए, सेवानिवृत्त हुए.''

''सेवानिवृत्त होने के बाद आप अपने देश नहीं गईं?''

''देश? यह क्या मेरा देश नहीं है. जमाना हो गया बड़ौदा से यहां आए. वहां तो अब मेरा कोई है भी नहीं. फिर वहां क्यों जाती? अब तो यहीं के लोग अपने हैं. नौकरी से अवकाश मिल गया तो क्या, अभी भी मैं मजदूरों की बस्तियों में जाती हूं. करनें को बहुत काम है वहां. किसी का बच्चा बीमार है तो किसी का प्रसव होने वाला है. रोज कुछ न कुछ लगा ही रहता है. गुजारे भर को पेंशन मिल जाती है. बस और क्या चाहिए. मजे में दिन कट रहे हैं. बाकी के भी कट ही जाएंगे.''

सरलाबेन मेरे सामने एक सवाल छोड़ कर चली गईं. बातचीत से अधिक पढ़ीलिखी नहीं लगी थीं, लेकिन इतने कम समय में मेरे ऊपर अपनी जो एक छाप छोड़ गईं वह भी आश्चर्य की बात थी. दूसरों के विषय में सोचने का अब समय ही किस के पास है. गरीबों की मदद करना तो सिर्फ एक नारेबाजी रह गई है. कोरी लफ्फाजी. कभी किसी गरीब बस्ती में जा कर अन्न या वस्त्र बांट आना कोई विशेष अर्थ नहीं रखता.

दूसरे दिन सुबहसुबह ही एक महरी ''...मुझे सरला दीदी ने भेजा है.''

उन्होंने महरी के हाथ एक चिट्ठी भेजी थी. 'औरत भरोसे की है. आप घर में रख लें. काम भी अच्छा करती है.'

फिर तो कोई भी समस्या होती, मैं सरलाबेन के पास खबर भेज देती. उन की मदद से यथासंभव मेरी समस्या हल हो जाती.

धीरेधीरे हमारे परिचय का दायरा बढ़ने लगा. काफी लोगों से हमारी अंतरंगता हो गई. इन के दफ्तर के लोगों में से कुछ के साथ तो अपने परिवार जैसे संबंध बन गए. कहीं सालगिरह तो कहीं शादी की वर्षगांठ, कहीं सगाई समारोह, तो कहीं कुछ और. महीने भर कुछ न कुछ लगा ही रहता.

अकसर शाम को किसी के यहां हमारी डिनर पार्टी जम जाती. सप्ताह में एक बार हमारी महिला समिति की बैठक होती. किटी पार्टी तो महीने में एक बार होती ही थी. मैं अपने ही दायरे में कुछ इस तरह उलझती गई कि सरलाबेन की याद मेरे जेहन से बिलकुल जाती रही. जब कभी सड़क पर आतेजाते मेरी नजर उन पर पड़ जाती, मैं जानबूझ कर उन्हें अनदेखा कर के आगे बढ़ जाती. वह भी शायद इस बात को समझती थीं. इसी लिए खुद कभी हमारे घर आईं भी नहीं.

गुड्डू का जन्मदिन था. तब भी मैं ने उन्हें नहीं बुलाया. जब नीलम ने प्रथम श्रेणी से हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की और मैं ने अपने और इन के दोस्तों के साथ ही नीलम और गुड्डू के दोस्तों को भी दावत दी, तब भी उन्हें बुलाना भूल गई.

पर मेरे अचरज का ठिकाना नहीं रहा जब मुझे पीलिया हुआ तो सरलाबेन ईख की गंडेरियां लिए एकाएक आ पहुंचीं. आते ही कहने लगीं, ''महरी ने बताया कि आप को पीलिया हो गया है. सोचा, चल कर देख लूं. कोई जरूरत हो तो बताना. वैसे किस का इलाज चल रहा है?''

''डाक्टर विनोद का?''

''विनोद अच्छे डाक्टर हैं.''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हां, वह हमारे संबंधी भी लगते हैं. काफी खयाल रखते हैं हमारा."

"ओह, तब तो और भी अच्छी बात है."

लगभग आधे घंटे तक वह बैठी रहीं. जब तक रहीं, कभी सिर सहलातीं, कभी पैर सहलातीं. मेरे मना करने पर हंसने लगीं. "आप अभी बीमार हैं न. ऐसा करने से बीमार को थोड़ी तसल्ली मिलती है. अगर आप की मां यहां होतीं तो क्या वह यही सब न करतीं?"

मैं निरुतर हो गई. उस के बाद मैं जब तक बीमार रही वह अकसर दोपहर में आ जातीं. घर के कुछ छोटेमोटे काम भी निबटा देतीं. एक दिन तो इन के दफ्तर से आने पर उन्होंने नाश्ता भी बना दिया. गुड्डू की फरमाइश पर अपने घर से एक दिन ढोकले भी बना ले आईं.

मेरे स्वस्थ होने के बाद उन्होंने खुद ही आनाजाना कम कर दिया. लेकिन मुझे सबक मिल चुका था. मेरी बीमारी के दिनों में उन्होंने जो कुछ किया, वह तो किसी परिचित या मित्र परिवार से भी नहीं बन पड़ा. गुड्डू का दूसरा जन्मदिन पड़ा तो मैं ने उन्हें बुला लिया, लेकिन उन पर नजर पड़ते ही मेरे पति ने मुंह बना लिया, देखो शकुन. ऐसे लोगों से मेलजोल मुझे पसंद नहीं."

"वह तो मुझे मालूम है, लेकिन मेरी बीमारी के समय इन्होंने मेरी जो सहायता और सेवा की थी, उसे मैं भूल नहीं सकती, इस शहर में हमारे इतने परिचित हैं. उस समय कोई काम नहीं आया."

"इन्होंने तुम्हारी सेवा की थी तो तुम रुपए पैसों से इन की मदद कर दो. अभाव है, तभी तो तुम्हारे यहां आती हैं. सौ, दो सौ रुपए दे दो उन्हें."

"आप सरलाबेन की सेवा और सद्भावना की कीमत रुपए दे कर चुकाना चाहते हैं. यह उन का सरासर अपमान है." मैं ने जरा रोष से कहा तो यह और जोर से झुंझला पड़े, "मुझे जो कहना था, कह दिया. ऐसे लोगों से मेलजोल मुझे बिलकुल पसंद नहीं. एक बात और सुन लो. मुझे यह औरत

याद

राह चलतेचलते जब कोई
सलोना अजनबी मिल जाता है,
हमें उस की याद आती है
जो आज भी हमें भाता है.
—उग्रसेन गोस्वामी

बड़ी चालाक लगती है. इस ने तुम से इसी लिए संबंध बढ़ाया है कि कभी मौका पड़ने पर उसे भुना सके, आगाह किए देता हूं, इस से होशियार रहना."

जाते समय सरलाबेन गुड्डू के हाथ में 51 रुपए थमाती गईं, "बेटे, तुम्हें कुछ उपहार देने लायक तो मैं नहीं. इन रुपयों से अपनी कोई मनपसंद चीज खरीद लेना."

दोतीन माह बाद महरी ने आ कर एक दिन बताया, "सरलाबेन बीमार हैं. इलाज की भी कुछ खास व्यवस्था नहीं है. इलाज को तो पैसे चाहिए न बीबीजी. सरला दीदी के पास भला पैसे कहां से आएंगे, हमेशा खुद आधा पेट खा कर दूसरों को खिलाती रहीं. किसी बड़े डाक्टर को दिखाने के लिए तो फीस भी बड़ी चाहिए न?"

मैं ने इन से कहा, "जरा डाक्टर विनोद को कह दीजिए. सरलाबेन की तबीयत बहुत खराब है, जा कर देख लें."

"तुम भी कभीकभी नासमझों जैसी बातें करने लगती हो, शकुन. डाक्टर विनोद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजादी

किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आजादी खोना है. —महात्मा गांधी

भला वहां जाएंगे, उस मामूली सी औरत को देखने?"

मैं ने इन्हें बताया नहीं था कि महरी के साथ जा कर मैं खुद सरलाबेन को देख आई थी. उन की हालत बहुत ही नाजुक थी. आसपास अपना कोई नहीं फिर भी वह अकेली नहीं थीं. मजदूर बस्ती के लोग उन्हें घेरे रहते थे. पासपड़ोस वालों का भी आनाजाना लगा रहता. कमी थी तो सिर्फ उचित दवा की. डाक्टरी जांच की. उन्हें बीमारी क्या थी, किसी को यह भी ठीक से पता नहीं था. बस यों ही अंदाज पर मामूली सा इलाज चल रहा था. कमजोरी दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी.

मैं जानती थी कि डाक्टर विनोद या कोई और बड़ा डाक्टर भले ही घर में बैठ कर फिल्में देखें, सरलाबेन जैसी मामूली हस्ती के लिए अपना 'अमूल्य' समय नहीं दे सकता. और मैं भी तो उन की कोई मदद नहीं कर सकती थी. सामाजिक मर्यादा के झूठे दंभ की बेड़ियों ने मुझे जकड़ रखा था. मैं सरलाबेन से वादा कर आई थी कि डाक्टर विनोद को ले कर आऊंगी, वह मेरा इंतजार कर रही होंगी.

मैं ने हिम्मत कर के इन से फिर कहा.

"न हो, तो अपनी गाड़ी से ले जा कर सरलाबेन को डाक्टर विनोद को दिखला देते. ऐसा नहीं हो सकता क्या?"

यह बाहर जाने के लिए टाई बांध रहे थे. मेरी बात सुनते ही झुंझला पड़े. "तुम्हारा माथा फिर गया है. जब देखो सरलाबेन... सरलाबेन...लगता है, यह औरत बुरी तरह तुम पर हावी हो गई है. अब कभी उस का नाम लिया तो..."

यह मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट थे. चाहते तो सरलाबेन के लिए क्या नहीं कर सकते थे. दूसरे दिन इन के कचहरी जाने के बाद मैं अकेली ही चल पड़ी सरलाबेन को देखने.

मालूम हुआ कि मजदूरों ने ही चंदा कर के फीस की व्यवस्था की थी और सरलाबेन को डाक्टर विनोद से दिखलाया था. उन की सलाह पर ही उन्हें हस्पताल ले जाने की तैयारी हो रही थी. सारे खर्च की व्यवस्था मजदूरों ने ही की थी.

मैं लज्जित सी जा कर उन के सामने खड़ी हो गई. उन्होंने आंखें खोल कर एक बार मुझे देखा. पीले दुर्बल चेहरे पर थकान के चिह्न स्पष्ट थे. मुसकरा कर धीरे से बोलीं, "बहुतबहुत शुक्रिया. डाक्टर विनोद को भेज कर आप ने बड़ी कृपा की है."

मैं शर्म से पानीपानी हो गई. कैसे कहूं उन से कि डाक्टर विनोद को मैं ने नहीं भेजा, ये मजदूर बुला ले आए थे. मेरा हाथ अपने हाथ में ले कर उन्होंने कहा, "और अधिक जी कर क्या करूंगी."

ग्लानि से मैं मरी जा रही थी. इच्छा हो रही थी कि सब कुछ स्पष्ट कह दूं. साफ कह दूं, 'सरलाबेन मैं धन्यवाद के योग्य कतई नहीं. मैं ने कुछ नहीं किया आप के लिए. धन्यवाद के पात्र तो ये मजदूर हैं.'

बड़ी मुशकिल से सिर्फ इतना ही बोल पाई. "सरलाबेन आप जल्दी स्वस्थ हो जाएंगी."

"अरे, अब मैं और जीना नहीं चाहती." सहसा एक अनूठी सी चमक कौंध उठी उन की आंखों में. "बहुत जी लिया, बहुत प्रेम पाया लोगों का...अब कुछ नहीं चाहिए मुझे...कोई चाह नहीं. कोई कामना नहीं...ये लोग नाहक हस्पताल ले जा रहे हैं. मना कीजिए इन्हें...समझाइए..."

एंबुलेंस आ गई और मना करने पर भी सरलाबेन को लोगों ने जबरदस्ती उस पर चढ़ा दिया. मैं उस सूने कमरे को देखती काष्ठवत खड़ी रह गई. एक बिस्तर, टीन के दोतीन संदूक और कुछ बरतन तथा डब्बे वहां पड़े थे. इस के अलावा और कुछ भी नहीं था. मेरे कानों में सरलाबेन के शब्द गूंज रहे थे, 'मुझे और कुछ नहीं चाहिए...कोई चाह नहीं...'

मन ही मन मैं तुलना करती रही कि मेरे भरेपूरे घर में अभी कितने अभाव हैं. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यटन परिशिष्ट

पूर्व अर्द्ध भारत

इस परिशिष्ट में आप की यात्रा को सफल व सुखद बनाने के लिए पूर्व अर्ध भारत के लगभग सभी प्रमुख पर्यटन स्थलों की सचित्र जानकारी दी जा रही है. आप चाहें तो घर बैठे ही इन पर्यटन स्थलों के बारे में ढेरों जानकारी प्राप्त कर सकते हैं.

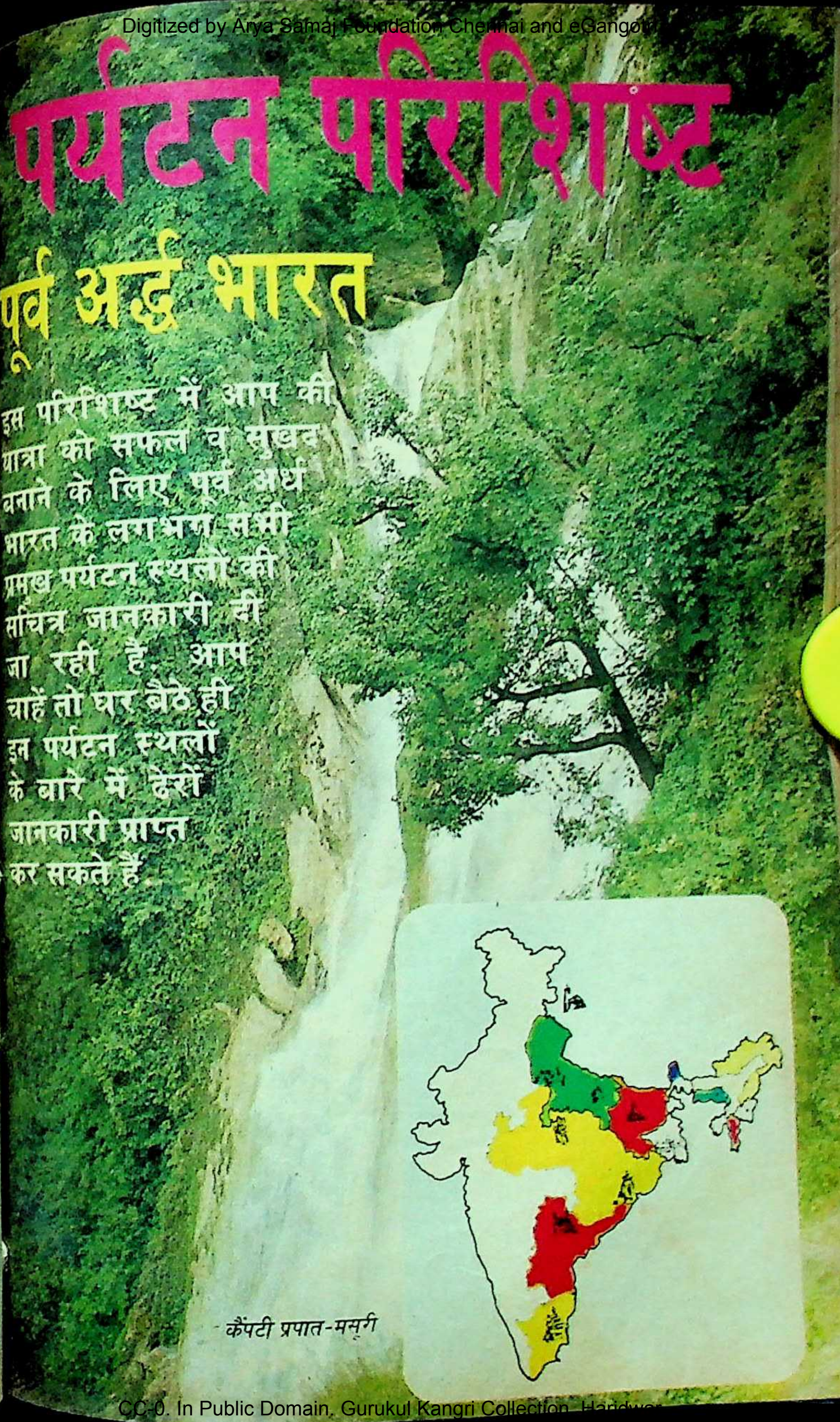

कैंपटी प्रपात-मसूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसूरी

सन 1827 में जिस सौंदर्य ने कैप्टन यंग को आकर्षित किया था वह सौंदर्य आज भी मसूरी में जिंदा है. मसूरी की सब से बड़ी विशेषता यह है कि मानसून के जुलाई व अगस्त दो महीने छोड़ कर पूरे वर्ष आप यहां कभी भी जा सकते हैं. यहां प्रत्येक व्यक्ति के लिए कुछ न कुछ मिलेगा. आप चाहें तो घुड़सवारी कीजिए, चाहें तो स्केटिंग कीजिए या हाथ से चलने वाले रिकशा में बैठ कर माल रोड के एक छोर से दूसरे छोर तक आराम से घूमिए. माल रोड पर अनेक दुकानें हैं जिन्हें आप पैदल भी देखतेदेखते कुलरी बाजार तक आ सकते हैं. शांतिप्रिय लोगों के लिए केमल्स बैक रोड भी है.

मसूरी : ठहरने के कुछ स्थान

होटल: नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया:डबल*
सेवाय, द माल, लाइब्रेरी फोन: 2510	*885 -*
हैकमंस ग्रांड, द माल, फोन: 2559	*पूछने पर*
दून व्यू, द माल. फोन : 2566	*50 -*
अमर, न्यू मार्केट, कुलरी बाजार. फोन : 2242	*200 -*
रोजलीन इस्टेट, द माल, लाइब्रेरी. फोन : 2201	*650/-*
वाई.डब्ल्यू. सी.ए., द माल. फोन : 2513	*200/-*
विकास, द माल. फोन : 2735	*225/-*
सूर्य किरण, माल रोड. फोन : 2223	*400/-*
दर्पण, माल रोड, (निकट पिक्चर पैलेस). फोन : 2483	*75/-*
निशिमा, लंढोर बाजार. फोन : 2227	*150/-*
आदर्श, लाइब्रेरी बाजार. फोन : 2345	*150 -*
विष्णु पैलेस, गांधी चौक. फोन : 2932	*500/-*

कैसे जाएं?

मसूरी पहुंचने के लिए ट्रेन से देहरादून जा कर बस या टैक्सी द्वारा मसूरी पहुंचा जा सकता है. देहरादून से हर आधे घंटे में बस मिलती है. देहरादून से मसूरी तक का ... किलोमीटर लंबा किंतु सुहावना मार्ग आप का मन मोह लेगा. रेल या हवाई मार्ग से जाने वाले पर्यटकों को देहरादून से बस पकड़नी पड़ेगी.

कहां ठहरें?

ठहरने के लिए मसूरी में पाश्चात्य व भारतीय पद्धति के कई होटल हैं. अधिकतर होटल कुलरी बाजार में हैं. लाइब्रेरी बाजार बस स्टैंड से कुछ ही दूरी पर लक्ष्मीनारायण मंदिर है, वहीं धर्मशाला भी है. लंडोर बाजार में आर्यसमाज मंदिर, जैन धर्मशाला, गुरुद्वारा, मुसाफिरखाना, सनातन धर्म मंदिर आदि ठहरने के स्थान हैं. इन के अतिरिक्त लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवन, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग या हरियाणा लोक निर्माण विभाग में भी ठहर सकते हैं.

चूंकि सर्दी यहां हमेशा होती है, अतः सितंबरअक्तूबर में भारी ऊनी कपड़े व गर्मी में ऊनी कपड़े अवश्य साथ रखें.

क्या देखें?

गन हिल: कहते हैं ब्रिटिश शासन में यहां दिन के बारह बजे एक तोप दागी जाती थी और लोग इस से अपनी घड़ियों का मिलान किया करते थे.

माल रोड पर हाकमंस होटल के निकट से रोपवे ट्राली में बैठ कर गनहिल पहुंचा जा सकता है. 400 मीटर की यह दूरी लगभग चार मिनट में पूरी होती है. केबल कार से सर्पीली घाटी बड़ी सुहावनी लगती है. गनहिल से बंदरपूंछ, श्रीकांत, गंगोत्री पर्वतचोटियां दिखाई देती हैं. गनहिल पर अनेक दुकानें हैं, जहां खाने की चीजें व चायकाफी इत्यादि मिलती है. यहां कई फोटोग्राफरों की दुकानें भी हैं. ये लोग ट्राली से उतरते ही पर्यटकों के पीछे लग जाते हैं. अच्छा होगा आप यहां इत्मीनान से घूमने के बाद ही फोटो खिंचवाएं. मसूरी की पारंपरिक वेशभूषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में फोटो खिचवाना भी अपनेआप में एक आकर्षण है.

म्यूनिसिपल गार्डन: यह एक अच्छा पिकनिक स्थल है. यहां भी कई रेस्तोरां व फोटोग्राफरों की दुकानें हैं. यहां एक कृत्रिम झील भी है, जिस में नौका विहार करने की सुविधा है.

कैंप्टी फाल: मसूरी से 15 किलोमीटर दूर पर्वतों से घिरा हुआ यह बहुत ही सुंदर झरना है. अगर आप चारपांच लोग हैं तो टैक्सी से ही जाना उचित होगा अन्यथा टूरिस्ट ब्यूरो में एक दिन पहले आरक्षण करवा लें तथा टूरिस्ट कोच से जाएं तो उपयुक्त होगा.

केमल्सबैक रोड: कुलरी बाजार के रिकहाल से शुरू हो कर लाइब्रेरी बाजार तक का यह एकांत रोड है. यहां से सूर्यास्त का दृश्य देखने योग्य होता है.

चाइल्डर्स लाज: यह मसूरी की सब से ऊंची चोटी है. यहां पर एक दूरबीन रखी है, जिस से आप 'स्नो व्यू' देख सकते हैं.

मसूरी का लाइब्रेरी रोड : दिनभर यहां चहलपहल लगी रहती है.

इस के अलावा यमनाब्रिज (27 कि.मी.) है, जहां मछली पकड़ने की सुविधा है. नागटिब्बा (42 कि.मी.) है, जहां आप शिकार कर सकते हैं. दोनों जगह डिविजनल फारेस्ट आफिसर्स की अनुमति आवश्यक है.

धनोल्टी (24 कि.मी.) से आप हिमालय को देख सकते हैं. सुरखंडा देवी का मंदिर 35 कि.मी. दूर है. यहां भी टूरिस्ट ब्यूरो की बस से जाना ठीक रहता है. वैसे कद्दूखाल तक बस या टैक्सी से जा कर 2 कि.मी. पैदल चल कर मंदिर तक जाया जा सकता है. मनोरंजन के लिए मसूरी में कई थिएटर व क्लब वगैरह भी हैं. यहां पर तिब्बती हैंडीक्राफ्टस तथा तिब्बती आभूषण वगैरह मिलते हैं.

अंत में एक बात ध्यान रखिए. अगर आप कुलरी बाजार या लंडोर में कहीं ठहरें तो आप को मेसोनिक लाज बस स्टैंड नजदीक पड़ेगा और अगर लाइब्रेरी बाजार में ठहरें तो लाइब्रेरी बाजार बस स्टैंड पास रहेगा.

अधिक जानकारी के लिए आप यू.पी. टूरिज्म, 21 विधान सभा मार्ग, लखनऊ से संपर्क कर सकते हैं. —मंजुल खंडेलवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहरादून का मालसी डियर पार्क : यहां मृग, हिरण, बारहसिंगे विचरण करते नजर आते हैं.

देहरादून

पूर्व और पश्चिम में गंगा और यमुना नदियों के बीच स्थित देहरादून के उत्तर में गढ़वाल हिमालय है और दक्षिण में शिवालिक पहाड़ियां. अपनी प्राकृतिक रमणीयता, उच्च एवं श्रेष्ठ शिक्षा संस्थानों, सेना अकादमी आदि के कारण यह पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है.

क्या देखें?

देहरादून दो पर्वतों के बीच होने से दून कहलाता है. दक्षिण में शिवालिकरेंज, उत्तर में हिमालय की उपत्यका है. कालीदास के 'मेघदूत' नाटक में द्रोणगिरि पर्वत का उल्लेख है. इसे छोटा कशमीर भी कहा जाता है. अंगरेज यात्री व टी.जी. लौगस्टाफ ने भी इसे प्राकृतिक सौंदर्य का धनी प्रदेश बताया है. यहां से नंदादेवी, बंदरपूंछ, त्रिशूल, चौखंबा चोटियां स्पष्ट दिखाई देती हैं. ये चोटियां पर्वतारोहियों के आकर्षण का केंद्र रही हैं.

2110 फुट की ऊंचाई पर स्थित इस नगर में आप मसूरी, चकराता, ऋषिकेश, कालसी, देववन, लाखामंडल, गुच्चूपानी, सहस्रधारा, लच्छीवाला आदि देख सकते हैं. साथ ही वन अनुसंधानशाला भी देखी जा सकती है.

सहस्रधारा: देहरादून से 14 कि.मी. दूर इस मनोरम स्थल पर चश्मे देखे जा सकते हैं. गंधक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहरादून: ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
रिलैक्स, 7 कोर्ट रोड. फोन : 26608	235/-
मधुबन, 97, राजपुर रोड. फोन : 24094	700/-
प्रिया, 65/23, राजपुर रोड. फोन : 26511	60-80 -
निधि प्रा. लि., 74 सी, राजपुर रोड. फोन : 25086	460/-
दिनैक्स, 59, गांधी रोड. फोन : 28107	75/-
आकाशदीप, 23/2, त्यागी रोड. फोन : 25484	250/-
प्रिंस, 1, हरिद्वार रोड. फोन : 27070	प्रार्थना पर
पार्क व्यू, 17, राजपुर रोड. फोन : 23231	150/-
विशाल भारत लाज, 68, गांधी रोड.	60/-
निशिमा, 59, गांधी रोड. फोन : 26640	65/-

के पानी के सोते पेट व चर्म रोगों से मुक्ति भी दिलाते हैं. यहां स्नानार्थियों की भीड़ लगी रहती है. पर्यटकों के लिए यहां विश्राम गृह भी है. यहां के लिए शहर से सिटी बस सुविधा उपलब्ध है. यहां पर कैंटीन, रेस्तोरां, बाथरूम भी हैं.

गुच्चू पानी: गुफाओं से बहता हुआ एक झरना, जो गर्मी में और ठंडा रहता है, देहरादून से 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. इस स्थल पर पर्यटकों की रात तक भीड़ लगी रहती है.

रॉबर्स केव: यह एक गुफा है जो लगभग 8 कि.मी. दूर अनरवाला गांव से एक कि.मी. के पैदल मार्ग पर स्थित है. यहां पर सुल्ताना डाकू रहा करता था, ऐसा लोगों का मत है.

लक्ष्मण सिद्ध: देहरादून से 12 कि.मी. दूर देहरादून ऋषिकेश मार्ग पर यह मनोहारी स्थल है. वाहन यहां तक जा सकते हैं. यहां पर अकसर लोग रविवार को छुट्टी मनाने आते हैं. यहां पर काफी पेड़ हैं.

तपोवन: देहरादून से 5 कि.मी. दूर रायपुर मार्ग पर स्थित तपोवन तक लगभग सिटी बस जाती है. थोड़ी दूर पैदल मार्ग है. यहां पर पेड़ काफी हैं तथा अच्छी भीड़ रहती है.

डाक पत्थर: यह स्थान 45 कि.मी. दूर देहरादून चकराता मार्ग पर है. यहां पर बागबगीचे हैं. पास ही यमुना का पानी भी आता है, जो शिवालिक पर्वत से उतरती है. यहां से सिटी बस मिल सकती है. 38 कि.मी. दूर सिंचाई विभाग का निरीक्षण भवन भी है. यहां पर पर्यटन विभाग का एक विश्राम गृह है. यहां फोटो खींचना मना है.

लच्छीवाला: देहरादून डोईवाला रोड पर यह आकर्षक वन है, यहां मृग, हिरन, बारहसिंगे तथा अन्य जंतु आप को विचरण करते मिलेंगे. यहां कई पर्वतीय झरने भी हैं.

चकराता: 7000 फुट की ऊंचाई पर चकराता मनोरम स्थल है, जहां कस्तूरी मृग, भालू, बघेले जानवर टहलते मिल जाते हैं. यहां पर पर्यटकों के लिए सुविधा नहीं है. यहां देववन शिखर टाइगर जलप्रपात देहरादून का सब से बड़ा जलप्रपात है. 30 कि.मी. दूर लाखामंडल स्थापत्य कला के कारण चर्चित है.

बदरीनाथ

अपने विराट स्वरूप एवं अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य के कारण हिमालय पर्वत ने केवल पर्वतारोहियों को ही नहीं अपितु अनेक पर्यटकों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है. बदरीनाथ, केदारनाथ, फूलों की घाटी आदि रमणीय पर्यटन स्थल हिमालय की ही विभिन्न पर्वतश्रेणियों के अंग हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

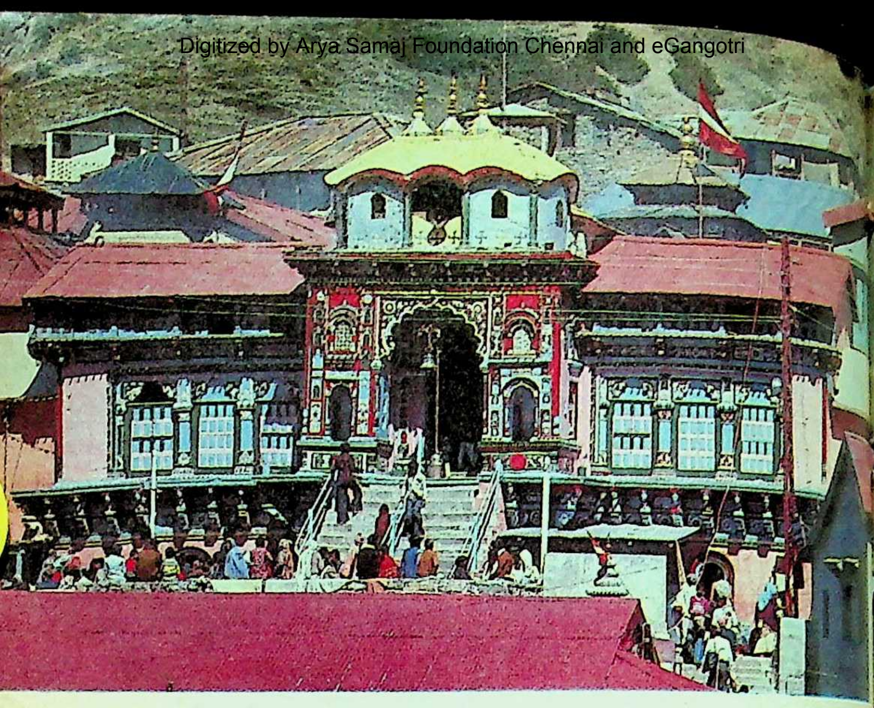

बदरीनाथ का मंदिर : पर्यटन की दृष्टि से प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम. ▲

बदरीनाथ, हिमालय की नर और नारायण पर्वतश्रेणियों के मध्य समुद्रतल से लगभग 10,380 फुट की ऊंचाई पर स्थित रमणीक पर्यटन स्थल है. शंकराचार्य भी अपने हिमालय प्रवास के दौरान यहां की प्राकृतिक सुरम्यता पर मुग्ध हो गए थे.

कब जाएं?

बदरीनाथ पर्यटन के लिए मई, जून और सितंबर, अक्तूबर के महीने ही उपयुक्त हैं क्योंकि यहां जुलाई, अगस्त और नवंबर से मार्च तक हिमपात के कारण मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं. अप्रैल में बर्फ पिघलने लगती है. अतः मध्य अप्रैल से ही यहां पर्यटकों का आनाजाना शुरू हो जाता है.

कैसे जाएं?

यहां से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित जालीग्रांट बदरीनाथ का निकटतम हवाई अड्डा है. दिल्ली से वायुदूत की नियमित उड़ानें जालीग्रांट पहुंचती हैं.

रेलमार्ग से बदरीनाथ जाने वाले पर्यटकों के लिए देहरादून, हरिद्वार और ऋषिकेश निकटतम रेलवे स्टेशन हैं. देहरादून से बदरीनाथ तक की 43 किलोमीटर की दूरी कष्टसाध्य होने के कारण ही पर्यटक हरिद्वार, ऋषिकेश हो कर बदरीनाथ जाना अधिक पसंद करते हैं. वैसे रेल द्वारा कोटद्वार हो कर भी बदरीनाथ पहुंचा जा सकता है.

हरिद्वार, ऋषिकेश और कोटद्वार से बदरीनाथ के लिए नियमित बसें भी चलती हैं. इन बसों के किराए तथा आरक्षण के लिए गढ़वाल मंडल विकास निगम लि. 74/1 राजपुर रोड, देहरादून से पत्र द्वारा भी पूछताछ की जा सकती है.

सड़क मार्ग द्वारा बदरीनाथ की यात्रा पहले की अपेक्षा सुगम तो हो गई है मगर है बहुत ही रोमांचक. जैसेजैसे आगे बढ़ते हैं, मौसम में ठंडक बढ़ती जाती है. दूरदूर तक फैली पर्वत शृंखलाएं, इधरउधर ऊंचाई से गिरते झरने, कहीं संकरा तो कहीं धंसा रास्ता, देख कर रोमांच हो आता है.

कमजोर और वृद्ध पर्यटकों के लिए डांडी और घोड़ों की व्यवस्था भी रामबाड़ा, गौरीकुंड आदि में है. सामान ढोने के लिए यहां कुली भी मिल जाते हैं. यहां लगभग 3000 कुली और 1500 घोड़े पर्यटकों के लिए ही कार्यरत हैं. इन का उपयोग करने से पूर्व इन का भाड़ा अवश्य तय कर लेना चाहिए.

कहां ठहरें?

यों तो बदरीनाथ में ठहरने के लिए मंदिर समिति की धर्मशाला, बिड़ला धर्मशाला, मोदी धर्मशाला, लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण भवन, डी.जी.बी.आर. के विश्राम गृह के अलावा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होटलों की सेवाएं भी उप-लब्ध हैं किंतु यदि पर्यटकों की भीड़भाड़ की वजह से यहां जगह न मिल सके तो बदरीनाथ से पहले जोशी-मठ, गोविंदघाट आदि में भी ठहरने की सुविधाएं उपलब्ध हैं.

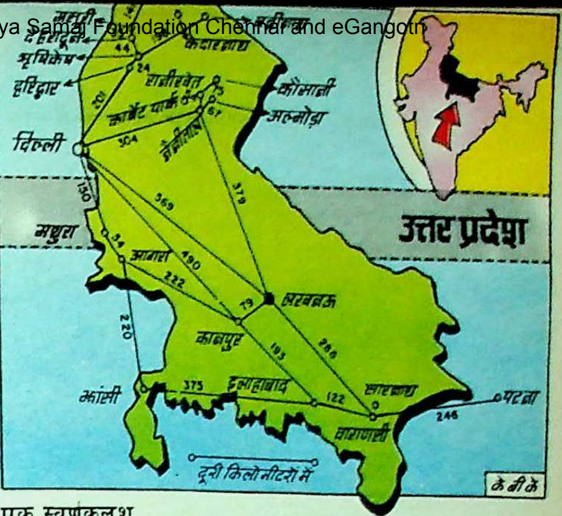

क्या देखें?

बदरीनाथ मंदिर: बदरीनाथ का वर्तमान मंदिर गढ़वाल नरेश द्वारा बनवाया गया था. अलकनंदा के बाएं तट पर स्थित इस मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार 45 फुट ऊंचा है. इस मंदिर पर रानी लक्ष्मीबाई ने एक स्वर्णकलश चढ़ाया था. अब यह मंदिर जीर्णशीर्ण हो गया है.

पंचतीर्थ: तप्तकुंड, प्रह्लाद कुंड, नारदकुंड, कर्मधारा और ऋषिगंगा की संयुक्त संज्ञा पंचतीर्थ है. ये सभी झरने हैं और बदरीनाथ मंदिर से अधिक दूर नहीं हैं. तप्तकुंड का जल गरम रहता है.

गांधीघाट: तप्तकुंड के पास ही गांधीघाट है. यहां महात्मा गांधी की अस्थियां विसर्जित की गई थीं.

अन्य दर्शनीय स्थल:

बदरीनाथ के अन्य दर्शनीय स्थलों में पंचशिला, पंचधारा, शेषनेत्र, उर्वशी मंदिर नीलकंठ, गणेशगुफा, भीमपुल, व्यास गुफा बसुधारा, पांडुकेश्वर आदि उल्लेखनीय हैं.

आवश्यक निर्देश:

बदरीनाथ पर्यटन के पूर्व हैजे का टीका लगवा लेना चाहिए. शीत प्रकोप के कारण विभिन्न बीमारियों की संभावना बनी ही रहती है. अत: प्राथमिक उपचार की सामान्य दवाएं भी रखना जरूरी है.

केदारनाथ

उत्तर प्रदेश के गढ़वाल जिले में मंदाकिनी नदी की एक मनोरम घाटी है. इस घाटी की रमणीयता देखते ही बनती है. गगनचुंबी हिमालय का दृश्य, ऊंचाई से गिरते जलप्रपातों का झरझर स्वर बड़ा ही कर्णप्रिय लगता है.

केदारनाथ के शांत, रमणीय और मनोरम, वातावरण में अपने जीवन के मधुर क्षण बिताने को लालायित अनेक देशीविदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष यहां आते हैं.

कब जाएं?

केदारनाथ पर्यटन के लिए उचित समय मई, जून व सितंबर और अक्तूबर के महीने हैं. इन दिनों यहां मौसम अच्छा रहता है. फिर भी, अधिक ऊंचाई पर स्थित होने के कारण हलके ऊनी वस्त्र साथ ले जाना ठीक रहता है.

कैसे जाएं?

नैनीताल, हरिद्वार, ऋषिकेश, मसूरी, कोटद्वार, काठगोदाम, गंगोत्तरी, बदरीनाथ आदि स्थानों से सोनप्रयाग तक बस सेवा सुलभ है. सोनप्रयाग से केदारनाथ की 19 किलोमीटर की दूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

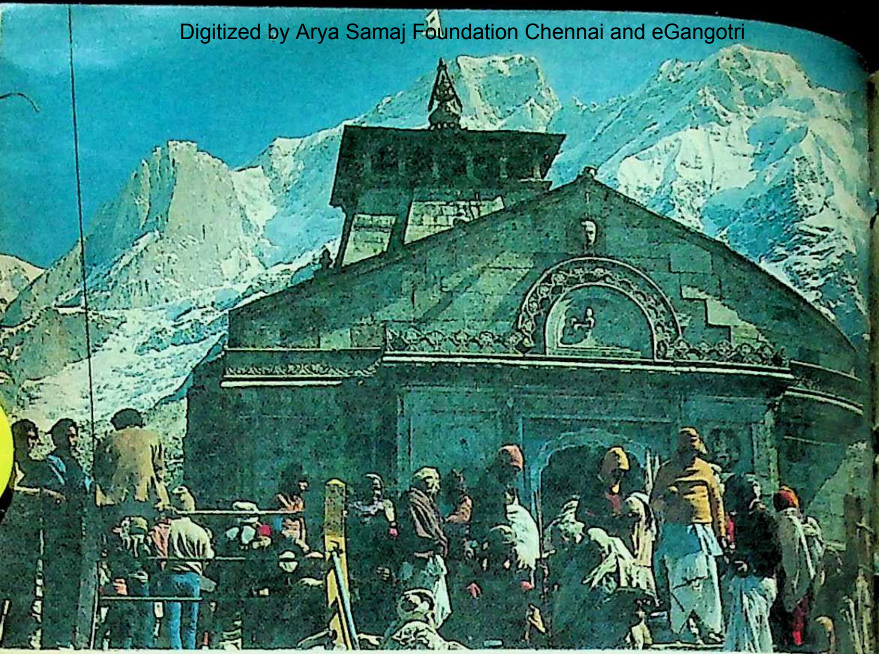

केदारनाथ मंदिर : नैसर्गिक छटा के लिए विख्यात.

पैदल ही तय करनी पड़ती है.

क्या देखें?

केदारनाथ मंदिर: यह मंदिर यहां का प्रमुख व अलौकिक स्थान है जो अपनी नैसर्गिक छटा के लिए विख्यात है.

पंचगंगा: केदारनाथ मंदिर के निकट ही मंदाकिनी नदी से पहाड़ों से उतरती हुई मधुगंगा, सरस्वती, स्वर्गद्वारी और क्षीर गंगा नामक चार जलधाराएं आपस में मिलती हैं. इस संगम स्थल पर जल प्रवाह का भयंकर स्वर दिल दहला देता है. यही संगम स्थल पंचगंगा संगम के नाम से प्रसिद्ध है. यहां एक मंदिर भी है.

गांधी सरोवर: केदारनाथ से 4 किलोमीटर दूर मंदाकिनी का उद्गम स्थल है चोराबारी जलाशय. यहीं महात्मा गांधी की अस्थियों का विसर्जन किया गया था. बाद में इसे गांधी सरोवर कहा जाने लगा.

गंगोत्री यमुनोत्री

संसार की अन्यतम ऊंचाइयों पर जहां उत्तुंग हिमशिखर आकाश को चूमते दिखाई देते हैं, वहीं भारत की नदी गंगा का उद्गम स्थल है. वनाच्छादित पर्वतों से घिरे एवं 3140 मी. की ऊंचाई पर गंगा नदी अपने शैशवकाल में सिर्फ 20 मी. ही चौड़ी है. यहां ऊंचेऊंचे पर्वतों पर विशाल देवदार और चीड़ के वृक्ष बहुत ही सुंदर लगते हैं.

कब जाएं?

यहां नवंबर से अप्रैल तक काफी बर्फ पड़ती है और मई से ले कर नवंबर तक बहुत ठंड पड़ती है. जुलाई से सितंबर के दौरान बारिश शुरू हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है. इस पर्यटन स्थल पर आने का सब से उत्तम समय मई से जून और सितंबर से अक्तूबर तक है. यहां जाते समय ऊनी कपड़े ले जाना न भूलें.

कैसे जाएं?

यहां का निकटस्थ रेलवे स्टेशन ऋषिकेश है. इस के अलावा उत्तर प्रदेश रोडवेज की नियमित बस सेवाएं दिल्ली से हरिद्वार के रास्ते ऋषिकेश तक चालू हैं. ऋषिकेश, मसूरी, काठगोदाम आदि अनेक स्थानों से भी गंगोत्री के लिए बसें चलती हैं. अब यह यात्रा काफी सुगम हो गई है.

क्या देखें?

गंगा देवी का मंदिर: यह हिमाच्छादित पर्वतमालाओं के बीच में बना एक सुंदर मंदिर है. गोरखा कमांडर अमरसिंह थापा ने 18वीं शताब्दी के आरंभ में इसे बनवाया था और बाद में जा कर जयपुर के महाराजा ने इस की मरम्मत करवाई थी.

इस के अतिरिक्त भैरवनाथ का मंदिर, रुद्रशिला, केदारगंगा संगम आदि रमणीक स्थल हैं.

निकटस्थ दर्शनीय स्थल

गोमुख: गंगा का मुख अर्थात गोमुख गौरी कुंड से करीब 19 किमी. की दूरी पर है. दूर से देखने पर गोमुख अत्यंत सुंदर लगता है. यहां पर एक ग्लेशियर सारा साल तैरता रहता है और इस की बर्फ निकल कर गंगा की धारा में बदल जाती है. इस के आसपास लगे वृक्षों से इस का सौंदर्य और भी बढ़ जाता है. गोमुख तक तो ट्रैकिंग का मार्ग सरल है लेकिन यदि इस के पार ट्रैकिंग का साहस करना हो तो अपने साथ आवश्यक सामान एवं अनुभवी गाइड जरूर रखें.

गंगोत्री के नजदीक देखने योग्य गौरीकुंड जलप्रपात. ▼

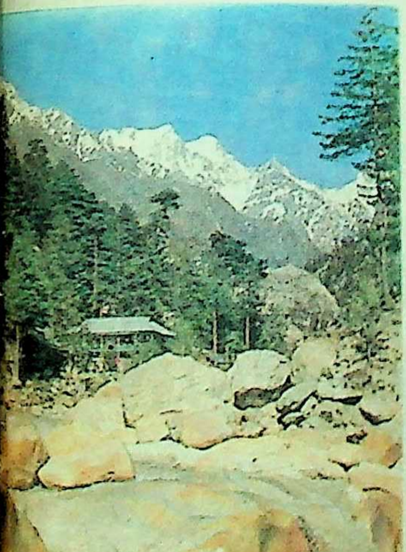

यमुनोत्री

यह स्थान बंदरपूंछ नामक उन्नत शिखर के पश्चिमी किनारे पर अवस्थित है, जो कि समुद्रतल से 4,421 मी. ऊंचा है. यह पर्वत सदैव बर्फ से आच्छादित रहता है. हनुमान गंगा और टोंस नामक नदियों का जल निर्गम क्षेत्र यही है. यमुनोत्री को ही यमुना नदी का उद्गम स्थल माना जाता है.

जुलाईअगस्त में वर्षा के कारण और नवबंर से अप्रैल तक बर्फ पड़ने के कारण यहां जाना सुविधाजनक नहीं है. मईजून में यहां जाना उचित है, लेकिन इन दिनों साथ में कुछ ऊनी वस्त्र भी रखने पड़ेंगे. सितंबर से अक्तूबर के बीच यहां ठंड बढ़ जाती है.

ऋषिकेश, केदारनाथ, गंगोत्री, मसूरी, देहरादून, बदरीनाथ, नैनीताल आदि स्थानों से यमुनोत्री के लिए बसें जाती हैं. ये बसें हनुमान चट्टी पर उतारती हैं. यहां से 13 कि.मी. दूर यमुनोत्री तक पैदल या खच्चर द्वारा जाया जा सकता है.

यमुनाजी का मंदिर यहां का प्रमुख दर्शनीय स्थल है. मंदिर के निकट ही कई गर्म पानी के सोते हैं जहां पर्वत की खोही से तीव्र गति से निकलने वाला उबलता हुआ पानी कुंडों में एकत्र होता है.

यमुनोत्री सूर्य कुंड का पानी बहुत गर्म होता है. चावल, आलू आदि को कपड़े में बांध कर यदि इस जल में डाला जाए तो ये कुछ ही देर में पक कर तैयार हो जाते हैं.

जानकीबाई कुंड का पानी गुनगुना है और यहां आसानी से स्नान किया जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खतलिंग, पंवाली व कांठा

जो लोग आर्थिक दबाव के कारण गरमियों में दोचार दिन से ज्यादा पहाड़ पर नहीं बिता सकते या जिन्हें लंबी यात्रा भाती है, उन के लिए और विश्व के साहसिक अभियान एवं प्रकृति प्रेमियों के लिए उत्तराखंड सदैव आकर्षण का केंद्र रहा है. ऐसे पहाड़ी सौंदर्य स्थलों का पर्यटन की दृष्टि से विकास भी किया जा रहा है.

इन में भिलंगना घाटी भी एक है. भिलंगना गंगा की प्रमुख सहायक नदी है. भिलंगना घाटी को प्रकृति ने सभी रंग दिल खोल कर दिए हैं. यहां हरेभरे सुंदर बुग्याल (घास के मैदान) हैं. सुंदर तालों की विशाल शृंखला है और देश का तीसरा बड़ा ग्लेशियर खतलिंग है.

पंवाली के हरेभरे मैदान पर्यटकों को मौन आमंत्रण देते प्रतीत होते हैं

खतलिंग की विशेषता यह है कि दिल्ली से सब से नजदीकी ग्लेशियर है और हिमालय में स्थित है. अपेक्षाकृत कम समय में सरलता से यहां घूम कर आया जा सकता है.

ऋषिकेश या देहरादून मसूरी से घुत्तू की यात्रा गाड़ी द्वारा तय कर के पहला पड़ाव घुत्तू में किया जा सकता है. घुत्तू गांव ऋषिकेश से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर है और भिलंगना के किनारे बसा हुआ है. यहां ठहरने का एक व खानेपीने के ढाबेनुमा कई होटल हैं. घुत्तू से सीधा रास्ता गंगी होता हुआ और दूसरा होता हुआ खतलिंग जाता है.

घुत्तू से दो किलोमीटर पहले ही पगडंडी घने जंगल के बीच से हो कर गुजरती जबकि गंगी की ओर पांच किलोमीटर तक जीप जा सकती है. गरमियों के चार महीनों में यहां दूध, दही व चाय सस्ती दरों पर मिल जाती है. रास्ते के दोनों ओर रंगबिरंगे

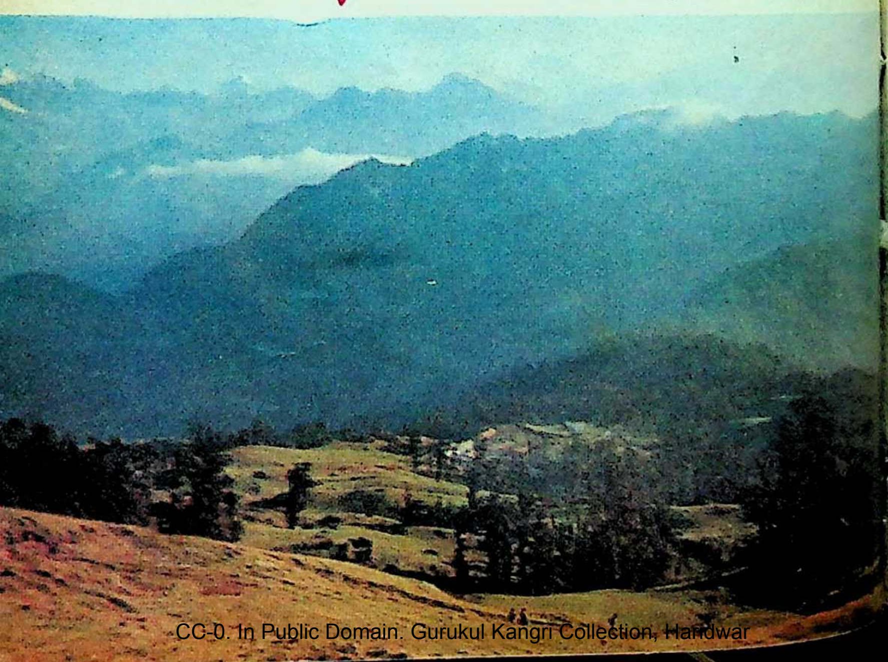

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

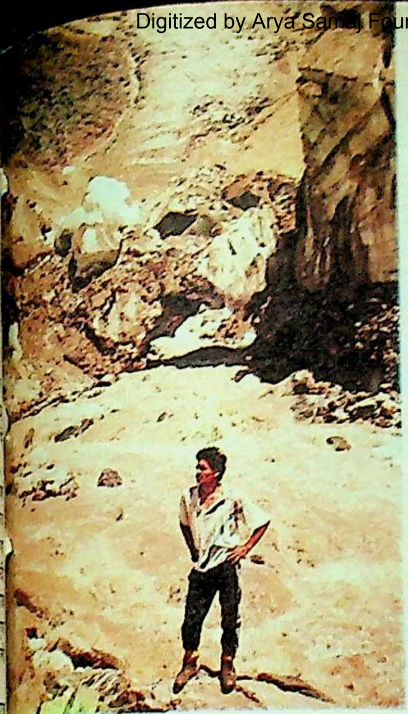

खर्तलिंग ग्लेशियर : यहां चारों ओर बर्फ ही बर्फ दिखाई पड़ती है.

फूलों की सुंदर मनभावन प्राकृतिक क्यारियां हैं.

पहला बुग्याल दोफंद गंदेठू से ही दिख जाता है. दूरदूर तक फैला हुआ, सूर्योदय के समय अलग और दोपहर बाद कोहरे की महीन चादर के पीछे से झांकता बिलकुल अनोखी छटा देता है. दोफंद के बाद एकएक कर कई बुग्याल आते हैं. माट्या बुग्याल सर्वाधिक सुंदर बुग्याल है. ऐसा लगता है जैसे अभीअभी हलकी ढलान पर कोई विशाल हरी मखमली चादर फैला गया है. माट्या के बाद बिजूला और फिर गढ़वाल का सब से बड़ा बुग्याल पंवाली, जहां भैंसपालकों ने गरमियों के लिए पूरा गांव बसा रखा है. यहां एक पुरानी धर्मशाला भी है. लगभग सभी बुग्यालों के कोने या मध्य में गूजरों के डेरे हैं. विशेष आकर्षक शैली से बने इन डेरों को 'कोठी' कहते हैं. दूध की शुद्धता क्या होती है यहां आ कर पता चलता है.

पंवाली से राजखर्क होते हुए रास्ते में दर्जनों बुग्याल आते हैं. बर्फ से ढकी चोखंभा पर्वत की चोटियां सभी जगह से ऐसे दिखती हैं; जैसे कोई हसीन चेहरा खिलखिला रहा हो. उत्तराखंड की एक घुमक्कड़ जाति नायक से जुड़ी नैक नचूण नामक चोटी है यहां से तुंगनाथ (चमोली जिला) का मंदिर तारे की तरह दिखता है. सभी बुग्याल 10 से 13 हजार फुट की ऊंचाई पर हैं. हिमालय की ऊंचीऊंची चोटियों पर दूरदूर तक फैले घास के हरेभरे विशाल मैदान देख कर प्रकृति की विचित्रता का मधुर अनुभव होता है. जहां नजर जाती है घास के मैदान और घने सुंदर वन, ऊंची बर्फीली चोटियां स्वागत करने को तत्पर लगती हैं.

ताली होते हुए भिलंगना पार कर आदिवासी सीमांत गांव गंगी पहुंचते हैं. भिलंगना दोपहर तक ही पार की जा सकती है. गंगी से दो किलोमीटर आगे छोटा सा गांव देवखुरी है. यहां से एक रास्ता सहस्रताल को जाता है. सहस्रताल में हिमालय का दुर्लभ पुष्प ब्रह्मकमल भी उपलब्ध है. इस के सामने छावनियां हैं. खरसौली में विश्राम ले कर दूसरे दिन खर्तलिंग जाया जा सकता है.

भिलंगना के किनारेकिनारे सामने की पहाड़ियों से अनेक मोहक झरने उतरते हैं. सब से बड़ा झरना खरसौली से बाईं ओर जंगल के बीच में है. इस के दोनों ओर गरम पानी के तीन स्रोत हैं. रास्ते में गंधक की चट्टानें, बहुमूल्य औषध जड़ीबूटियां, भोज वृक्ष तथा रंगबिरंगे फल हैं. खर्तलिंग से पहले दो स्थानों पर हिमखंड दिखते हैं. खर्तलिंग भिलंगना का उद्गम है. उस का सब से बड़ा आकर्षण है स्फटिक लिंग. बर्फ से ढकी लिंगाकार यह पहाड़ी दोपहर तक ही दिखती है. उस के बाद कुहरा इसे ढक लेता है और तूफान के साथ हिमखंडों का टूटनागिरना शुरू हो जाता है. खर्तलिंग, महाभारत के अर्जुन से जुड़ा नाम है. गढ़वाल में अर्जुन को 'खाती' नाम से जाना जाता है.

यहां ठहरने के लिए प्राकृतिक उड़यार (गुफाएं) हैं. स्फटिक लिंग के सामने ही मसूरी ताल दिखता है जहां से दूध गंगा आ कर चौकी में भिलंगना से मिलती है. मसूरी ताल के दाईं ओर विख्यात त्रिशूल पर्वत है. खर्तलिंग, भिलंगना और त्रिशूल पर्वत का अवलोकन करने के बाद शिव व गंगावतरण का रहस्य समझ में आने लगता है.

मसूरी ताल से होते हुए केदारनाथ की ओर रास्ता जाता है. खर्तलिंग से गंगोत्री को भी रास्ता है लेकिन इस रास्ते केदारनाथ जाना जोखिम भरा है, क्योंकि इस रास्ते में लगातार तीनचार दिन ग्लेशियर पर चलना पड़ता है.

घुत्तू में गाइड तथा सामान ढोने के लिए कुली उपलब्ध रहते हैं. पर्यटक अपनी सुविधानुसार 15 दिन तक यहां ठहर सकते हैं. प्रायः मई से सितंबर के अंत तक हजारों पर्यटक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां के सुरम्य स्थलों का आनंद लेते देखे जाते हैं.

इस वर्ष दो करोड़ रुपए के खर्च से घुत्तू, रीह, पंवाली व खरसौली में पर्यटक बंगलों का निर्माण हो रहा है. फिलहाल तो भैंसपालकों की छावनियां, डेरे, धर्मशालाएं एवं गुफाएं ही ठहरने के स्थान हैं.

रीह तक मोटर का रास्ता बन रहा है. रीह से खरसौली तक लघु वाहन मार्ग बनाने का भी विचार है. बड़ी सड़क यहां के प्राकृतिक सौंदर्य और वन संरक्षण के लिए घातक होगी. रज्जुमार्ग सर्वाधिक उपयोगी हो सकते हैं.

बीस साल पूर्व यहां की यात्रा कर चुके यात्री बताते हैं कि उस समय ग्लेशियर चौकी ताल तक फैला हुआ था. चौकी के आरपार पहाड़ी की कटाव और हिमनद के अवशेष की पुष्टि करते हैं. इस समय करीब ... किलोमीटर ऊपर जाने के बाद ही ग्लेशियर के दर्शन होते हैं, जो लगातार पिघल कर सिकुड़ता जा रहा है.

पंवाली व कुछ अन्य बुग्याल भी भैंसों के दबाव से कराह रहे हैं. भैंस के खुर से मुलायम घास उखड़ जाती है तथा गड्ढे बन जाते हैं. गड्ढों की बर्फ पिघल कर भूस्खलन या भूमि का हलका कटाव उत्पन्न कर देती है. इसे रोकना जरूरी है.

—विक्रमसिंह ...

ऋषिकेश

गंगा के दाएं किनारे पर 365 मी. की ऊंचाई पर स्थित यह पर्यटन स्थल शांतिपूर्ण वातावरण और धार्मिक महत्ता के कारण अपना विशिष्ट स्थान रखता है. कहा जाता है कि रैवया नामक ऋषि ने पहाड़ों के बीच काफी लंबे समय तक कठोर तपस्या की थी, जिस के उपरांत उसे तथाकथित भगवान के दर्शन हुए थे. यहां पर तीर्थस्थान और आश्रम काफी संख्या में हैं. इन स्थलों पर मिलने वाली शांति और ... प्राकृतिक वातावरण की सुंदरता के कारण ऋषिकेश पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है.

लक्ष्मण झूला : यहां से आसपास की हरियाली की छटा देखी जा सकती है

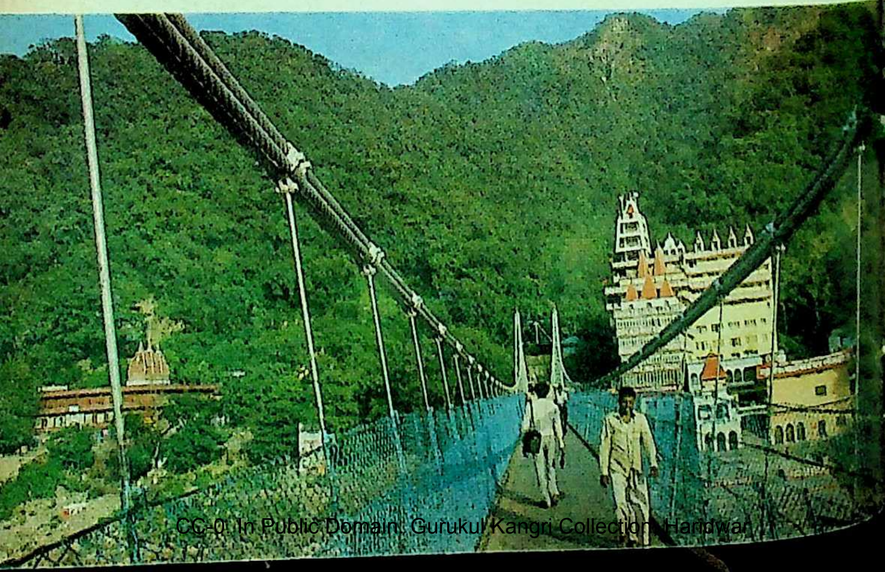

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिकेश : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
इंद्रलोक, रेलवे रोड. फोन : 555	165/-
श्री भगवान आश्रम (धर्मशाला) हरिद्वार रोड.	केवल बिजली चार्ज
टूरिस्ट कांप्लेक्स ऋषिलोक, गढ़वाल मंडल विकास निगम. फोन : 372	55/-
मेनका, बंगाली मंदिर रोड (बस स्टैंड के सामने). फोन : 285	60/-
बसेरा, 1-घाट रोड. फोन : 767	150/-
मंदाकिनी इंटरनेशनल, 63, हरिद्वार रोड. फोन : 781	200/-
नटराज, देहरादून रोड.	450/-

कब जाएं?

वैसे तो पूरे वर्ष भर में किसी भी समय इस पर्यटन स्थल का दौरा किया जा सकता है लेकिन यहां के सुहावने मौसम का आनंद उठाने के लिए मईजून में जाना ही ठीक रहेगा.

कैसे जाएं?

यहां का निकटस्थ हवाई अड्डा देहरादून में है जो केवल 16 कि.मी. की दूरी पर है. दिल्ली से प्रतिदिन वायुदूत की उड़ान यहां आती है.

ऋषिकेश प्रायः सभी बड़े शहरों जैसे हावड़ा, बंबई, दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी आदि से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. इस के अलावा हरिद्वार, श्रीनगर, देहरादून आदि अनेक स्थानों से सड़क मार्ग से भी यहां पहुंचा जा सकता है.

क्या देखें?

लक्ष्मण झूला : इस रमणीय पर्यटन स्थल का प्रमुख आकर्षण है – लक्ष्मण झूला. यह झूला गंगा नदी के ऊपर करीब 150 मी. की ऊंचाई पर है. यह लोहे की तारों का उपयोग कर के बनाया गया है. इस के ऊपर से आसपास की हरियाली की छटा से सुशोभित दृश्य निहारा जा सकता है. जब इस झूले पर अधिक लोग होते हैं और तेज हवा चलती है, तब यह थोड़ाबहुत हिलता भी है. इस पर बहुत से बंदर भी होते हैं जो आनेजाने वालों का खाना छीनने की कोशिश करते हैं.

इस के अतिरिक्त शिवानंद आश्रम, गीता भवन, भारत मंदिर जैसे धार्मिक भवन हैं, जहां पैसे दे कर पापों को धोया जा सकता है. इन सब में पैसा चढ़ता है. यह इन की भव्यता से जाहिर है.

क्या खरीदें?

हस्तशिल्प की यहां अच्छी चीजें मिल जाती हैं. यहां विशेष रूप से गीता प्रेस के कपड़े जैसे चादरें, बेड कवर, साड़ी, कुर्ते इत्यादि अधिक प्रसिद्ध हैं.

अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है.

हरिद्वार

मंदिरों की नगरी हरिद्वार शिवालिक पर्वत की घाटी में गंगा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित हिंदुओं का एक पवित्र प्राचीन तीर्थ स्थान है. जहां देश के कोनेकोने से हिंदू तीर्थयात्री लाखों की संख्या में हर वर्ष आते हैं. पंडों से यदि आप लुटना चाहें तो बात दूसरी है, वैसे हरिद्वार का पर्यटन महत्त्व भी कम नहीं है.

यहां गंगा पहाड़ी भागों से उतर कर मैदान में बहना आरंभ करती है. हरिद्वार का प्राचीन नाम कपिला था. यहीं से आरंभ होती है उत्तराखंड के प्राकृतिक सौंदर्य की छटा. चीनी यात्री ह्वेनसांग यहां की सुंदरता से बहुत प्रभावित हुआ था. अतः उस ने अपने संस्मरणों में हरिद्वार का भी जिक्र किया है.

पौराणिक काल में इस को मायापुरी के नाम से भी जाना जाता था. हरिद्वार को कभी गंगाद्वार और तपोवन भी कहा जाता था.

इस पावन नगरी के महत्त्व के बारे में तरहतरह की धार्मिक कहानियां गढ़ी जाती हैं. सचाई जो कुछ भी रही हो, लेकिन हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

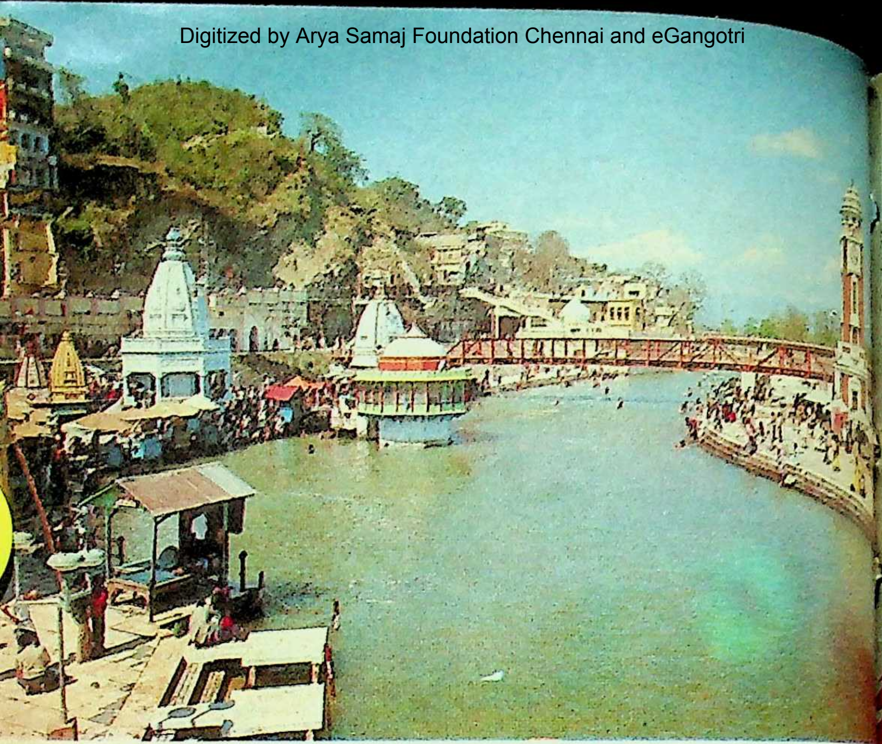

हर की पैड़ी : सुबहशाम नहाने वालों की यहां भीड़ लगी रहती है.

प्राकृतिक दृश्यावली से भरपूर अपनी शीतल आबोहवा के लिए मशहूर एक खूबसूरत स्थान तो है ही.

हरिद्वार में सुबह का दृश्य काफी लुभावना होता है. दूरदूर तक फैले मंदिरों से आती हुई घंटों की कर्णप्रिय ध्वनि और हरेभरे पहाड़ों के ठीक

हरिद्वार : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
सम्राट, चित्रा सिनेमा के पास. फोन : 6433	100/-
कैलाश, शिवमूर्ति. फोन : 7789	150/-
पुरोहित लाज, हर की पैड़ी. फोन : 6850	95/-
पनामा, जसराम रोड, शिवमूर्ति के पास. फोन : 7506	40/-
वासदेव मद्रास, रेलवे रोड के पास. फोन : 6356	44/-

नीचे बहती गंगा नदी के शीतल जल में स्नान का मजा लेते हुए हजारों स्त्रीपुरुष व बच्चे आनंदविभोर हो उठते हैं. गंगा का जल गर्मी के मौसम में भी इतना ठंडा होता है कि दोपहर में भी डुबकी लगाने पर जल बर्फ के समान ठंडा प्रतीत होता है.

रात्रि में भी हरिद्वार काफी सुंदर दिखाई पड़ता है. हर की पैड़ी पर गंगा नदी में तैरते और टिमटिमाते दीपक ऐसे प्रतीत होते हैं मानो नभ के तारे पृथ्वी पर उतर आए हों. पहाड़ों पर स्थित बस्तियों से आने वाला मंदमंद प्रकाश भी अत्यंत प्रिय लगता है.

कब जाएं?

दिसंबर से मार्च तक की अवधि के अलावा साल भर यहां पर्यटकों की चहलपहल बनी रहती है.

कैसे जाएं?

हरिद्वार हावड़ा, बंबई, वाराणसी, लखनऊ, देहरादून, मथुरा, नैनीताल, आगरा तथा देश के अन्य पर्यटन स्थलों से रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है.

बस मार्ग से तो हरिद्वार दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के कई मुख्य नगरों से जुड़ा हुआ है.

दर्शनीय स्थल

हरिद्वार में देखने के लिए अनेक स्थल हैं.

हर की पैड़ी: हरिद्वार का सब से अच्छा नहाने का घाट हर की पैड़ी है. हर 12 साल बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां कुंभ का मशहूर मेला लगता है. 6 साल पर अर्ध कुंभ मेला आयोजित किया जाता है.

भीमगोडा तालाब: ऋषिकेश जाने वाले मार्ग पर पर्यटन कार्यालय से 2.5 किलोमीटर की दूरी पर भीमगोडा तालाब है. ऐसा कहा जाता है कि जब पांडव हरिद्वार से हो कर हिमालय पर्वत को जा रहे थे तब भीम ने इस तालाब का निर्माण किया था. यहीं पर श्री जयराम आश्रम है, यहां यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुखसुविधाओं से युक्त व्यवस्था है.

भीमगोडा कैनाल हैड वर्क्स: भीमगोडा कैनाल हैड वर्क्स नहर की शताब्दी पुल से केवल डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक सुंदर स्थान है. गंगा नदी यहीं से अपना रुख बदलती है. इस स्थान को सुंदर वाटिकाओं का रूप दिया गया है.

आसपास के स्थलों में परमार्थ आश्रम व चंडीदेवी मंदिर हैं.

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय: गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ज्वालापुर मार्ग पर स्थित है. यहां वेद मंदिर संग्रहालय तथा फार्मेसी भी है.

हरिद्वार के नजदीक ही ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला, कण्व ऋषि का आश्रम मशहूर स्थल हैं.

हरिद्वार में ठहरने के लिए कई अच्छे होटल व धर्मशालाएं हैं. होटलों की अपेक्षा धर्मशाला में ठहरना ज्यादा अच्छा रहता है. खानेपीने की कोई समस्या नहीं है. हां, खाना सिर्फ शाकाहारी ही मिलता है.

यदि आप अधिक जानकारी चाहते हैं तो क्षेत्रीय पर्यटन ब्यूरो, हरिद्वार के कार्यालय से संपर्क स्थापित कर सकते हैं.

नैनीताल

नैनीताल का नाम उस के एक किनारे पर स्थित नैना देवी के मंदिर और सरोवर (ताल) से मिल कर बना है. यह ताल ऊंचीऊंची पर्वत श्रेणियों के बीच स्थित है, जो पूर्व से पश्चिम की ओर चली गई हैं. उत्तर में चीना (नैना) श्रेणी 8,568 फुट की ऊंचाई पर जा कर समाप्त होती है. पश्चिम में देवपथ की चोटी 8,000 फुट तक चली गई है और दक्षिण में अयारपाटा लगभग 7,500 फुट की ऊंचाई पर जा कर पूर्व की ओर चला गया है.

सरोवर की लंबाई लगभग 1.5 किलोमीटर तथा चौड़ाई 0.75 किलोमीटर है तथा गहराई लगभग 100 फुट है. आज जिस नैनीताल में यात्रियों को गर्मियों में स्थान मिलना कठिन हो जाता है, वहीं लगभग आज से 145 वर्ष पूर्व यह एक निर्जन तीर्थ स्थान था. इस को एक भव्य नगरी का रूप देने का सारा श्रेय बैरन नामक अंगरेज यात्री को है. वह कठिनाइयों का सामना करता हुआ पहली बार दिसंबर 1843 में नैनीताल पहुंचा था.

मल्लीताल स्थित गोविंद वल्लभ पंत की प्रतिमा. इस चौक पर पर्यटकों की चहलपहल लगी रहती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरोवर के निकट बैरन को अपने रहने के लिए बनाया हुआ, 'पिलग्रिम' नाम का मकान, जो नैनीताल का सब से पहला मकान है, नैनीताल क्लब के ऊपर आज भी विद्यमान है. सन 1857 की क्रांति के समय रोहिला शासक को बंदी बना कर नैनीताल में जिस स्थान पर फांसी पर लटकाया गया था, वह स्थान राजकीय महाविद्यालय और कचहरी के मध्य फांसी गधेरा के नाम से जाना जाता है.

नैनीताल के तटवर्ती वनों में कई प्रकार के सुंदर वृक्ष हैं, जिन में सुरई, देवदार, पांगर, अयार, बुरुश, बांज, तिलोंज प्रमुख हैं.

पर्यटकों को ताल में नौका विहार के लिए छोटीबड़ी अनेक सुंदर गद्दीदार नौकाएं उपलब्ध हो जाती हैं. इन का किराया एक छोर से दूसरे छोर तक 20-25 रुपए तक होता है. पहाड़ी चढ़ाइयों पर चढ़ने के लिए अच्छे घोड़े भी उपलब्ध हो जाते हैं.

नैनीताल में पाल वाली नौकाओं का दृश्य बड़ा ही आकर्षक होता है. अनेक पर्यटक पाल वाली नौकाओं की दौड़ में भाग लेने यहां आते हैं. नैनीताल याट क्लब की स्थापना सन 1890 में हुई थी. विश्व के याट क्लबों में नैनीताल ही मात्र एक ऐसा याट क्लब है जहां की झील समुद्रतट से लगभग 2 हजार मीटर ऊंचाई पर स्थित है.

नैनीताल : ठहरने के कुछ स्था...

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनु... किराया ...
शेरवानी हिलटाप इन, 21, शेरवानी लाज, मल्लीताल. फोन : 2128	50...
ग्रांड होटल, 31, द माल. फोन : 2406	30...
कुमाऊं, 174, द माल,. फोन : 2870	15...
वाई.डब्ल्यू.सी.ए. मल्लीताल. फोन : 2657	5...
एवलिन, माल रोड, झील के किनारे. फोन : 2457	10...
मधुबन, 3 पापुलर बिल्डिंग कंपाउंड (रोपवे के पास). फोन : 2522	27...
कृष्णा, द माल. फोन : 2662	40...
राजमहल, मल्लीताल, रिकशा स्टैंड के पास.	15...
अशोक, तल्लीताल. फोन : 2721	22...
प्रेम सरोवर, मल्लीताल (बड़ौदा बैंक के पास). फोन : 2084	10...
यूथ होस्टल, मल्लीताल. फोन : 2353	2...

चारों ओर पहाड़ों से घिरी नैनीताल की सु... नगरी में रंगबिरंगी पालों से सज्जित नौका... का जल पर थिरकना एक ऐसा अनोखा सौं...

चारों ओर पहाड़ों से घिरी नैनीझील पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है. ▼

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैनीताल के आसपास के दर्शनीय स्थलों में नौकुचियाताल भी एक आकर्षक पर्यटन स्थल है. यहां नौकायान का आनंद लिया जा सकता है. ▲

जो अन्य सरोवरों या समुद्र के नौकायन में सुलभ नहीं.

कैसे जाएं?

उत्तर प्रदेश के सब से सुंदर और सुगम पर्वतीय पर्यटन स्थानों में नैनीताल प्रमुख है. यह उत्तरपूर्व रेलवे के अंतिम स्टेशन काठगोदाम से मोटर सड़क द्वारा केवल 34 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. काठगोदाम रेलवे स्टेशन लखनऊ, बरेली और आगरा आदि स्थानों से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. काठगोदाम से नैनीताल तक सड़क हाटमिक्स प्लांट द्वारा बनी, पर्याप्त चौड़ी है. लगभग डेढ़ घंटे में यात्री काठगोदाम से मोटर द्वारा नैनीताल स्थित तल्लीताल नामक स्थान पर पहुंच जाता है.

नैनीताल जाने का मुख्य साधन बस है. दिल्ली, काठगोदाम, बरेली आदि स्थानों से नैनीताल के लिए नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं.

नैनीताल का निकटस्थ हवाई अड्डा पंतनगर है, जो 71 किलोमीटर दूर है. पंतनगर और दिल्ली के बीच सप्ताह में तीन दिन वायुदूत की सेवा उपलब्ध होती है.

क्या देखें :

नैनीताल शहर के चतुर्दिक पहाड़ी श्रेणियों पर वनविहार के लिए अनेक सुंदर स्थान हैं, जिन में प्रमुख इस प्रकार हैं:

स्नो व्यू : नैनीताल से उत्तर की ओर ढाई किलोमीटर चढ़ाई के उपरांत 7,450 फुट की ऊंचाई पर स्थित इस स्थान से सामने रानीखेत और उस के पार हिमालय का सुंदर दृश्य दिखाई देता है. नीचे की ओर रानीघाट की ओर जाने वाली गहरी घाटी का दृश्य बड़ा ही रमणीय दिखाई देता है. नैनीताल पहुंचने के लिए खैरना की ओर से पूर्व काल में यही एक मार्ग था.

टिफन टाप : नैनीताल के दाएं पार्श्व पर समुद्र तल से 7,520 फुट की ऊंचाई पर स्थित यह चोटी सरोवर से चार किलोमीटर दूर है. इस स्थान से सरोवर तथा राजभवन की ओर का दृश्य बहुत सुंदर दिखाई देता है.

नैना पीक : यह नैनीताल में निकट की तथा सब से ऊंची चोटी है. समुद्र सतह से इस की ऊंचाई 8,568 फुट है. यहां से हिमालय का बड़ा ही सुंदर दृश्य दिखाई देता है. यह चोटी झील से लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है.

वेधशाला : यह हनुमानगढ़ से लगभग एक किलोमीटर आगे स्थित है. यहां विश्व की सब से बड़े प्रतिबिंबक टेलीस्कोपों में से एक टेलीस्कोप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थापित है. यहां भू उपग्रहों के मार्ग के चित्र लेने की व्यवस्था है. दर्शकों को रात्रि में भू उपग्रहों, चंद्रमा तथा अन्य नक्षत्रों को टेलीस्कोप द्वारा दिखाए जाने का प्रबंध है. किंतु यह व्यवस्था सप्ताह के कुछ निर्धारित दिवसों पर ही होती है. इस स्थान पर कारें आसानी से आजा सकती हैं.

लैंड्स एंड : नैनीताल के दाहिने पार्श्व पर खुर्पाताल जाने वाली चुंगी के निकट पहाड़ की चोटी का अंतिम सिरा है. यहां से कालाढूंगी की ओर की घाटी एकदम सीधी गहराई में दिखलाई देती है. यह समुद्रतल से 6,950 फुट की ऊंचाई पर तथा नैनीताल सरोवर से चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यहां पर चारपांच सीधी खड़ी ऊंची चट्टानें हैं, जिन पर पर्वतारोहण क्लब छात्रों और पर्यटकों को पर्वतारोहण का रोमांचक प्रशिक्षण देता है.

किलबरी : नैनीताल से लगभग 8 किलोमीटर दूर है. यहां जंगल विभाग का विश्रामगृह है. रात्रि विश्राम के लिए यह बड़ा ही रमणीक सुंदर स्थान है. यहां से हिमालय पर्वत बड़ा ही भव्य दिखलाई देता है.

राजभवन : यह उत्तर प्रदेश के अंगरेज गवर्नरों के लिए बनाया गया दुमंजिला भवन है. इस में 113 कमरे हैं तथा यह कई एकड़ भूभाग पर फैला हुआ है. इस के आसपास ही गोल्फ के कई मैदान हैं तथा विलायती बांज के वृक्षों का घना जंगल है. विगत दो वर्षों से आतंककारी गतिविधियों के कारण अब इस राजभवन में आम जनता का प्रवेश वर्जित है.

भीमताल : भीमताल नैनीताल से मात्र ... किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यातायात के साधनों में बस, टैक्सी आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं. भीमताल के ताल की लंबाई 5... फुट तथा चौड़ाई 1490 फुट है तथा गहराई ... फुट है. वर्षाकाल में ताल की सतह पर एक धारा उत्तर पूर्व की ओर बहती स्पष्ट दिखाई देती है, तब यह ताल पानी के अत्यधिक निष्कासन के कारण नदी का रूप धारण कर लेता है. ताल का सब से सुंदर स्थान एक छोटा सा टापू है जो किनारे से 200 फुट दूर है. जल के धरातल से टापू की ऊंचाई लगभग 30 फुट और क्षेत्रफल 4000 फुट है. अब इस का सौंदर्यीकरण कर इस में एक रेस्तोरां बना दिया गया है.

सात ताल : भीमताल से लगभग ... किलोमीटर दूर सरोवरों का सुंदर समुदाय है जो समीपवर्ती अन्य सभी तालों से बड़ा न होने पर भी सब से अधिक सुंदर है. एक ताल दूसरे ताल से भूतल के अंदर बहने वाली जल धाराओं से संबंधित है. बांध द्वारा जाड़ों में इस का पानी रोक कर फरवरी के बाद इसी पानी से भाबर के समतल भूभाग से सिंचाई की जाती है.

नौकुचियाताल : यह भीमताल से केवल ... किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. इस के उत्तर पश्चिम के कोने पर सुंदर मंदिर है. ठीक पश्चिम की ओर पानी में रंगबिरंगी काई उगी रहती है.

मालवाताल : भीमताल से कुछ दूर ... की चढ़ाई पार कर के लगभग 14 किलोमीटर की दूरी पर मालवा ताल है. यह समुद्रतल से 3400 फुट की ऊंचाई पर स्थित है. इस की लंबाई 4480 फुट तथा चौड़ाई 1833 फुट है तथा गहराई 127 फुट है. इस झील का आकार इस के तल से उठे हुए ऊंचेऊंचे पर्वतों के कारण बहुत ढेड़ोढ़ा है. इस के पास ही एक बहुत प्राचीन सरकारी विश्राम गृह है, जिस में 19वीं शताब्दी में सैकड़ों मछली के शिकार के प्रेमी अंग्रेज आ कर टिकते थे.

भीमताल और सात ताल के मध्य में नलदमयंती नाम का ताल है. इस ताल की तरह भीमताल और उस में उत्पन्न होने वाली कटी पूंछ की मछलियों की अनेक दंतकथाएं भी नलदमयंती के इस प्रदेश में आगमन का प्रमाण देती हैं.

क्या खरीदें?

यहां प्रकृति की विविधता के अतिरिक्त शिल्प कला का अपना अलग आकर्षण है. यहां बहुत सुंदर काष्ठ कलाकृतियां मिलती हैं. इन वस्तुओं के मुख्य विक्रय केंद्र माल रोड पर ही हैं. आप यहां भ्रमण के दौरान भी खरीदारी कर सकते हैं.

—महेंद्रसिंह बिनवाल

कार्बेट नेशनल पार्क

शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में स्थित 'कार्बेट नेशनल पार्क' नैनीताल से 118 किलोमीटर दूर है. प्रसिद्ध प्रकृति विज्ञानी जिम कार्बेट के नाम पर बनाया गया यह पार्क मध्य जून से मध्य नवंबर तक पर्यटकों के लिए बंद रहता है. यह पार्क 525.8 वर्ग किलोमीटर में फैला है.

यहां चीते, मगरमच्छ, हिरन, हाथी, तेंदुआ, शाखालंबी रीछ, लघुपुच्छ वानर, विशालकाय अजगर तथा अनेक प्रकार के अन्य पशुपक्षी उन के प्राकृतिक वातावरण में देखे जा सकते हैं. यहां महशीर, इंडियन ट्राउट तथा गूंच मछलियों को भी संरक्षित किया गया है.

कार्बेट नेशनल पार्क में पर्यटकों के ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्मोड़ा

अल्मोड़ा लगभग एक हजार वर्ष पुराना कुमाऊं का सब से प्राचीन नगर है. यह काठगोदाम रेलवे स्टेशन से 92 किलोमीटर दूर है. काठगोदाम से अल्मोड़ा जाने के लिए बस या टैक्सी करनी पड़ेगी.

नैनीताल की भांति न तो यहां ठंड अधिक होती है और न वर्षा. नैनीताल में वर्षा का सालाना औसत 145 इंच है किंतु अल्मोड़ा में मात्र 45 इंच है. पर्यटन स्थल के रूप में अल्मोड़ा का विशेष स्थान नहीं है.

स्यालीधार से दृश्य :

रानीखेत से अल्मोड़ा की ओर आने वाले यात्रियों की गाड़ी जब सिटोली के जंगल के उपरांत मोड़ पर चुंगी देने के लिए रुक जाती है

मालरोड से अल्मोड़ा का सुंदर दृश्य पर्यटकों को लुभाता है

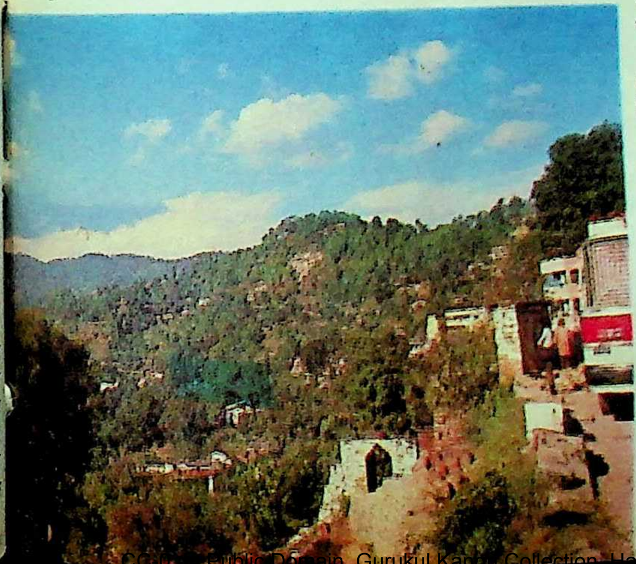

अलमोड़ा : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया: डबल*
पर्यटन आवास गृह, जागेश्वर.	*25 -*
कैलाश, माल रोड.	*30 -*
हरि प्रसाद टमटा धर्मशाला, हरि निवास, थाना बाजार. फोन : 2115	*3 - (एकल)*

तो यात्री के सम्मुख अल्मोड़ा का चमचमाता दृश्य सहसा ही प्रस्फुटित सा हो उठता है. पत्थर के बने श्वेत मकान, स्लेट की ढलुवां छतें, मंदिरों के गुंबज, स्कूलों की चमचमाती छतें चार मील लंबी गोलाकार पहाड़ी पर देखते ही बनती है. यह दृश्य इतना चित्ताकर्षक होता है कि यात्री अपनी लंबी यात्रा की थकान को शीघ्र ही भूल जाता है.

बिनसर चोटी: अल्मोड़ा के निकट बिनसर चोटी से हिम श्रेणियों का दृश्य बड़ा ही चित्ताकर्षक लगता है. यह कल्याण चंद नामक कुमाऊंनी राजा के समय से ही ग्रीष्म-कालीन राजधानी थी.

मल्ला किला: मल्ला किला या मल्ला महल नगर के ठीक मध्य में है. वर्तमान समय में इस महल में कचहरी तथा सरकारी खजाना है.

—महेंद्रसिंह चिलवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानीखेत

प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण एवं हिमालय के मनोरम दृश्यों से परिपूर्ण रानीखेत देशीविदेशी सैलानियों की प्रिय सैरगाह है. संयुक्त राज्य अमरीका के प्रधान न्यायाधीश दिवंगत विलियम ओ. डगलस ने रानीखेत को विश्व के 'सर्वोत्तम पर्वतीय पर्यटन स्थल' की संज्ञा दी थी.

रानीखेत कत्यूरी (12वीं सदी) शासन काल से ही पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता रहा है. तत्कालीन कत्यूरी नरेश सुधारदेव की रूपवती, बहादुर एवं विदुषी रानी का यह अध्ययन एवं विश्राम का क्षेत्र रहा था. तभी से लोग इस क्षेत्र को राणी क्षेत्र कहने लगे थे, जो कालांतर में रानीखेत हो गया.

रानीखेत को आधुनिक पर्यटन स्थल बनाने में अंगरेजी शासन का बहुत हाथ रहा है. वर्षों तक यहां अंगरेजी सेना की छावनी रही है.

कब जाएं?

रानीखेत की यह विशेषता है कि यह वर्ष भर पर्यटकों को आमंत्रित करती है. चीड़ व देवदार के वनों से हो कर आने वाली हिमालय की शीतल पवन, चारों ओर फैली हरियाली, रस भरे फलों की बहार, मार्च से नवंबर तक सैलानियों का मन मोह लेती है. सर्दियों में बर्फ की सफेद चादर से ढकी इस नगरी की भूमि चांदी सी चमकती है.

रानीखेत : ठहरने के कुछ स्थान

होटल: नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया: डबल*
टूरिस्ट बंगला, माल रोड. फोन : 2297	*150/-*
वेस्ट व्यू, महात्मा गांधी रोड. फोन : 196	*प्रार्थना पर*

कैसे जाएं?

रानीखेत का निकटतम हवाई अ[illegible] पंतनगर है. पंतनगर से रानीखेत तक बस [illegible] टैक्सी से पहुंचा जा सकता है.

पंतनगर के अलावा मेरठ, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, दिल्ली आदि स्थानों से [illegible] रानीखेत के लिए नियमित बसें चलती हैं. [illegible] सभी नगर देश के अन्य प्रमुख नगरों से बस, [illegible] या हवाई मार्ग द्वारा जुड़े हैं.

रेल से जाने वाले सैलानी काठगोदाम त[illegible] रेल से जा सकते हैं. काठगोदाम से उन्हें बस [illegible] टैक्सी से रानीखेत तक जाना पड़ेगा.

क्या देखें?

चीड़, देवदार, बुरांस आदि के सुंदर व[illegible] रंगबिरंगे फूलों से हराभरा रानीखेत पर्यटकों [illegible] लिए नाना प्रकार के दर्शनीय स्थलों से परि[illegible] है. कुछ प्रमुख दर्शनीय स्थल इस प्रकार हैं:

रामजी हरवेरियम (वनस्पति संग्रहालय): यों तो रानीखेत के रमणीय वनों में वनस्पतियों एवं जड़ीबूटियों का अतुलनीय भंडार भरा है किंतु रामजी हरबेरियम में विभिन्न वनस्पतियों एवं जड़ीबूटियों का अच्छा संग्रह है. य[illegible] हरबेरियम प्रसिद्ध वनस्पतिशास्त्री राम[illegible] शाह ने स्थापित किया था. दिवंगत शाह द्वारा लिखित अप्रकाशित पुस्तक 'फ्लोरा आ[illegible] रानीखेत येनसिस' भी यहां देखी जा सकती है. यह उत्तराखंड की वनस्पतियों पर एक उपयोगी पुस्तक है. इस के तीन खंड हैं.

कुमाऊंनी लोक कला : रानीखेत कुमाऊं मंडल के अंतर्गत आता है. यह कुमाऊंनी लोक कला का केंद्र है. यहां की लोक कला को अ[illegible] (स्थानीय बोली में ऐंपण) कहते हैं, जिसे दे[illegible] कर पर्यटक मुग्ध हो जाते हैं. इन लोक कलाओं को स्थानीय कलाकार नाथूराम उप्रेति [illegible] परिष्कृत एवं परिमार्जित कर के अंतर्राष्ट्रीय [illegible] गरिमा प्रदान की है. विश्वप्रसिद्ध [illegible] कलाकृतियों को मालरोड रोटरी क्लब में दे[illegible] जा सकता है.

गोल्फ मैदान : रानीखेत से केवल [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

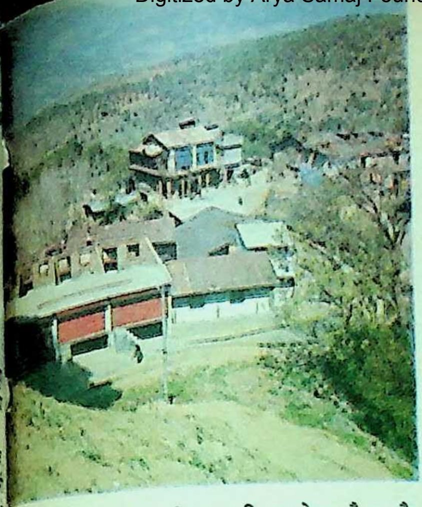

चीड़ देवदार आदि सुंदर वनों से घिरे रानीखेत में अनेक दर्शनीय स्थल हैं.

किलोमीटर दूर एशिया प्रसिद्ध गोल्फ मैदान है. यहां अनेक फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है. इस मैदान पर बिछी हरीहरी घास मखमली कालीन सी प्रतीत होती है.

चौबटिया: चौबटिया में फलों के अनेक बाग हैं. यह कुमाऊं मंडल का प्रमुख फल केंद्र है. यहां फूलों और फलों की बहार देखते ही बनती है. यह रानीखेत से करीब 10 किलोमीटर दूर है. यहां राजकीय फल अनुसंधान शाला भी है.

शीतलाखेत : शीतलाखेत यहां से 26 किलोमीटर दूर है. गरमी के दिनों में यहां स्काउट के शिविर लगते हैं. इस रमणीय स्थल पर पिकनिक का आनंद भी उठाया जा सकता है.

द्वाराहाट : द्वाराहाट में कभी कत्यूरी राजवंश का साम्राज्य था. यहां अनेक प्राचीन मंदिर कुमाऊं की प्राचीन स्थापत्य कला के परिचायक हैं जिन का निर्माण 11वीं से 16वीं सदी तक हुआ है.

अन्य दर्शनीय स्थल

रानीखेत में अन्य दर्शनीय स्थलों में उल्लेखनीय हैं–झूलादेवी का राम मंदिर, काली का मंदिर, चिलियानोला में संगमरमर का विशाल मंदिर आदि.

क्या खरीदें?

रानीखेत पर्यटन के दौरान आप यहां के ताजे फल खरीद सकते हैं. साथ ही कुमाऊंनी कलाकृतियां भी ली जा सकती हैं.

कौसानी

कौसानी कुमाऊं मंडल की ऐतिहासिक घाटी कत्यूर और एशिया की सब से उर्वर और हरी भरी सोमेश्वर घाटी के मध्य गुणा का चिह्न (×) बनाती हुई दो पर्वतमालाओं के मध्य स्थित है. इन में से एक पर्वतमाला द्वाराहाट, दूनागिरि, भटकोट, पिंगनाथ होती हुई कौसानी से ऐराड़ी बागेश्वर तक चली जाती है और दूसरी अलमोड़ा, गणनाथ, डुंगलोट रणचूला, वणतोली, ग्वालदम होती हुई पिंडर घाटी तक जाती है.

कौसानी से पूर्वोत्तर क्षितिज पर हिमालय की श्रेणियां अर्द्धगोलाकार में क्षणक्षण रंग बदलती बहुत लुभावनी लगती हैं.

कब जाएं?

पर्यटन की दृष्टि से कौसानी का मौसम अप्रैल से जून तक सर्वोत्तम रहता है.

कैसे जाएं?

मुरादाबाद, काठगोदाम, बरेली, आदि स्थानों से कौसानी के लिए बसें चलती हैं. नैनीताल की कई ट्रेवल एजेंसियों की बसें पर्यटकों को कौसानी पर्यटन की सुविधाएं प्रदान करती हैं.

कौसानी का निकटतम रेलवे स्टेशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

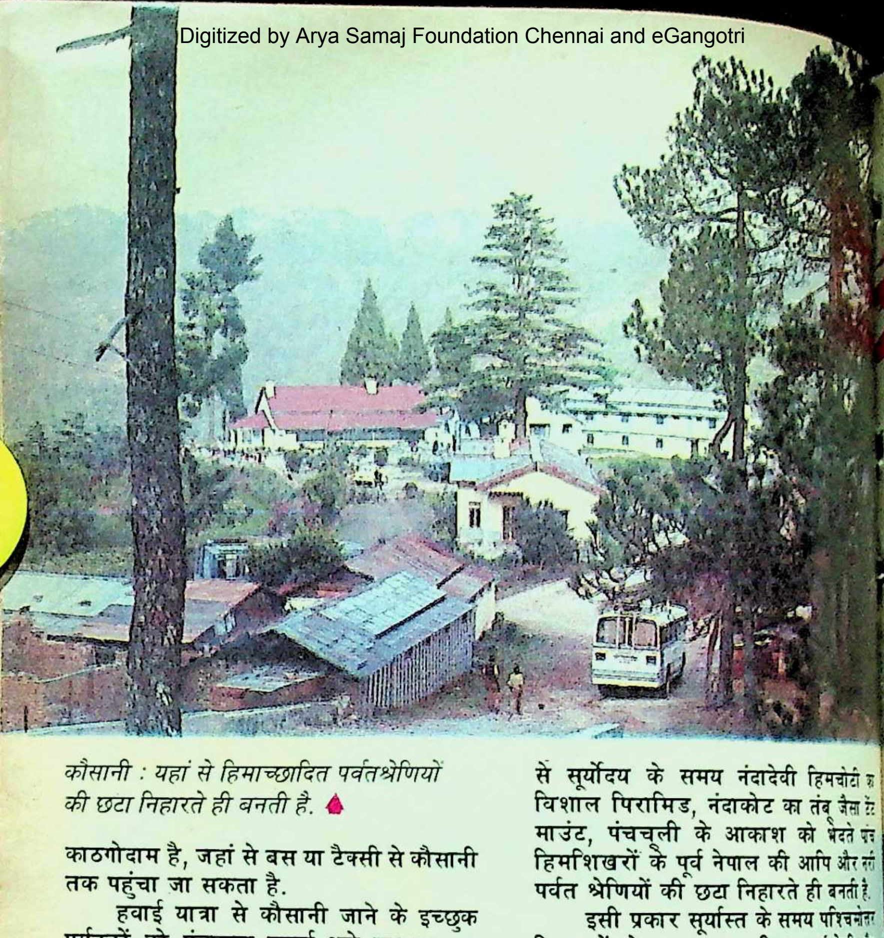

कौसानी : यहां से हिमाच्छादित पर्वतश्रेणियों की छटा निहारते ही बनती है.

काठगोदाम है, जहां से बस या टैक्सी से कौसानी तक पहुंचा जा सकता है.

हवाई यात्रा से कौसानी जाने के इच्छुक पर्यटकों को पंतनगर हवाई अड्डे पर उतरना पड़ेगा. वे पंतनगर से बस, टैक्सी आदि परिवहन साधनों द्वारा कौसानी जा सकते हैं.

कहां ठहरें?

वर्ष 1978 तक कौसानी में पर्यटकों के आवास की समुचित व्यवस्था नहीं थी. उस समय तक यहां केवल तीन डाक बंगले थे, वे भी सरकारी अधिकारियों और सरकारी अतिथियों के लिए आरक्षित रहते थे.

अब कुमाऊं पर्वतीय विकास निगम ने पर्यटकों के ठहरने के लिए आवासगृहों का निर्माण कर दिया है. इस के लिए अग्रिम आरक्षण क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय, नैनीताल में होता है.

वैसे अनासक्ति आश्रम में भी ठहरा जा सकता है. होटल पाइन व्यू भी एक अच्छा आवासगृह है.

क्या देखें?

सूर्योदय और सूर्यास्त: **कौसानी सूर्योदय और सूर्यास्त के मनोरम दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है. यहां से सूर्योदय के समय नंदादेवी हिमचोटी का विशाल पिरामिड, नंदाकोट का तंबू जैसा टेंट माउंट, पंचचूली के आकाश को भेदते पंच हिमशिखरों के पूर्व नेपाल की आपि और नंदी पर्वत श्रेणियों की छटा निहारते ही बनती है.**

इसी प्रकार सूर्यास्त के समय पश्चिमोत्तर दिशा में केदारनाथ, बदरीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के उद्गम का हिमशृंग बंदरपूंछ नए-नए अलौकिक दृश्य उपस्थित करता है.

वागेश्वर मंदिर: **बागेश्वर मंदिर बागेश्वर घाटी में स्थित है. यह घाटी कौसानी से 3? किलोमीटर दूर है. सरयू और गोमती नदियों के संगम पर स्थित यह मंदिर अत्यंत रमणीय है. इस में शिव की प्रतिमा प्रतिष्ठित है. यहीं प्रतिवर्ष 14 जनवरी को कुमाऊं मंडल का प्रसिद्ध उत्तरायणी मेला लगता है.**

पिंडारी ग्लेशियर: **पिंडारी ग्लेशियर का मनोहारी सौंदर्य पर्यटकों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर लेता है. यह कौसानी से करीब 53 किलोमीटर दूर है.**

बैजनाथ मंदिर: **यह एक ऐतिहासिक मंदिर है. यहां अनेक कलात्मक मूर्तियां हैं. एक प्रकार से यह मंदिरों का समूह है. गोमती के तट पर गरुड़ घाटी में स्थित इन मंदिरों का निर्माण अनुमानतः 11वीं सदी में किया गया था.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा

ऐतिहासिक दृष्टिकोण के साथसाथ आगरा पर्यटन के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है. यहां विश्वविख्यात ताजमहल के अतिरिक्त अन्य कई प्रसिद्ध इमारतें हैं, जो मध्यकालीन युग की कलाकृति की अमिट छाप हैं.

कैसे जाएं?

भारत के सभी नगरों से आगरा का संपर्क है. भारत की अनेक महत्त्वपूर्ण रेलें यहां रुकती हैं. दिल्ली, लखनऊ व गोरखपुर से सीधी हवाई सेवा भी है. कई राज्य परिवहन की बसों सहित वातानुकूलित, डीलक्स कोच व साधारण बस सेवा द्वारा भी यात्रा की जा सकती है.

ताजमहल : विशाल सफेद संगमरमरी मकबरा अपनी कमनीय कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है.

कहां ठहरें?

रहनसहन के दृष्टिकोण से यहां कई छोटेबड़े होटल, धर्मशालाएं हैं, जहां आराम से रहा जा सकता है. नगर के दर्शनीय स्थलों तक पहुंचने के लिए उ.प्र. पर्यटन निगम की बसों तथा तांगा, रिकशा, टैंपो व टैक्सी आदि का प्रयोग किया जा सकता है, जो निर्धारित दरों पर सवारियां लाते ले जाते हैं.

क्या देखें?

ताजमहल: यह भव्य मकबरा मुगल बादशाह शाहजहां द्वारा सन 1653 ई. में अपनी पत्नी मुमताज की याद में बनवाया गया था. इस विशाल सफेद संगमरमरी मकबरे को 20 हजार कारीगरों ने 20 वर्ष के कठिन परिश्रम से बनाया था. अपनी कमनीय कला के लिए जगत प्रसिद्ध ताजमहल यमुना नदी के किनारे पर स्थित है. सुंदर हरित मंडित घास, फव्वारों व पुष्पों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य स्थित यह महल शरद पूर्णिमा की सुंदरता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है. भवन की दीवारों पर तराशे गए फूल, पौधे व बेलें आकर्षित करती हैं. यह आगरा कैंट रेलवे स्टेशन से पांच किलोमीटर दूर है. ताजमहल तक पहुंचने के लिए सभी रेलवे व बस स्टेशनों से सिटी बस सेवा, टैक्सी, तांगा रिकशा व टैंपो द्वारा पहुंचा जा सकता है. इस के अतिरिक्त उ.प्र. सड़क परिवहन निगम द्वारा आगरा कैंट रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नं.-1 से पर्यटन बस की व्यवस्था है. यह बस प्रातः साढ़े दस बजे चलती है. ताजमहल के अतिरिक्त यह बस फतेहपुर सीकरी, आगरा किला भी ले जाती है. यह बस गाइड सेवा मुफ्त देती है.

आगरा किला: ताजमहल देखने के बाद आप लाल किला देख सकते हैं. यह ताजमहल से दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यह किला मुगल बादशाह अकबर ने सन 1563 ई. में बनवाया था. इस किले में निर्मित दीवाने आम, दीवाने खास, मोती मसजिद, मच्छी भवन, नगीना मसजिद, शीश महल, खास महल, जहांगीर महल आदि अलगअलग महल हैं, जो वास्तव में पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं. लाल पत्थर का बना यह किला संगमरमरी कलाकृतियों से भी सजासंवरा है. खासमहल को जिस कलात्मकतापूर्ण ढंग से संगमरमर में तराशा गया है, वह दुर्लभ है.

सिकंदरा: मध्य शहर से दस किलोमीटर दूर सिकंदरा तक बस, टैक्सी, टैंपो व सिटी बस द्वारा पहुंचा जा सकता है. इस भवन में मुगल अकबर की कब्र है, जिसे जहांगीर ने 1613 में बनवाया था. इस भवन के चारों ओर तीन मंजिला मीनारें हैं जो मुगल परिवारों द्वारा बनाई गई विभिन्न इमारतों में से एक हैं. भवन के चारों ओर हराभरा बगीचा है. ये इमारतें देखने में पिरामिडों जैसी प्रतीत होती हैं. यह चार मंजिला भवन है. पहली मंजिल सब से बड़ी व चौड़ी है जबकि शेष तीन मंजिल छोटी होती गई हैं. चौथी मंजिल पहली मंजिल की अपेक्षा आधी है. अंतिम मंजिल संगमरमर की है तथा अन्य तीनों लाल पत्थर की कलात्मक ढंग से बनी हुई हैं. सम्राट अकबर की कब्र भूमिगत है, जहां तक पहुंचने के लिए नीचे सीढ़ियों पर हो कर जाना पड़ता है. यह कब्र सफेद संगमरमर की दो फुट वर्ग गज में बनी है.

फतेहपुरी सीकरी: 37 किलोमीटर दूर की ओर स्थित फतेहपुर सीकरी मुगल सम्राट अकबर द्वारा 1569 में बनवाया गया था. इसे बनाने का कारण यहां शेख सलीम चिश्ती की दरगाह थी.

यह विशाल महल 1570 से 1580 के मध्य बना. यह भवन हिंदूमुसलमान दोनों की संस्कृति का प्रतीक है. इस भवन में 'दीवाने आम,' 'दीवाने खास,' 'ख्वाबगाह,' 'पंचमहल,' 'मरियम महल,' 'बीरबल महल,' 'जोधाबाई महल,' 'जामा मसजिद,' 'दरगाह शेख सलीम चिश्ती,' 'बुलंद दरवाजा' आदि दर्शनीय स्थल हैं.

'खास महल' अकबर ने अपने खास मेहमानों के लिए बनाया था. संगमरमर की अद्भुत कलाकृति, मेहराब, पत्थरों का कटाव देखने योग्य है.

'पंचमहल' दीवाने खास के पश्चिम में स्थित है, जो पांच मंजिला है. प्रथम मंजिल बड़ी है. उस के बाद पिरामिडों की तरह लगातार छोटी होती गई हैं. प्रत्येक मंजिल आभूषण की तरह सुशोभित है. ऐसा प्रतीत होता है जैसे पांच अलगअलग भवनों को लंबवत जोड़ा गया हो.

'बुलंद दरवाजा' हमारे भारत का 'विजय द्वार' का प्रतीक माना जाता है. 1601 में निर्मित 176 फुट ऊंचा बुलंद दरवाजा न केवल भारत वरन विश्व के कुछ बड़े दरवाजों में से एक है. लोहे व पत्थरों से बना विशालकाय द्वार शेख

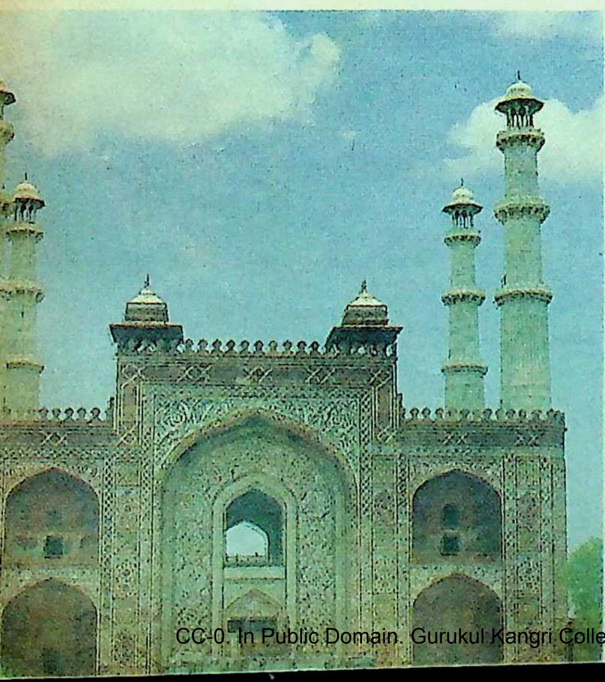

सिकंदरा : मुगल स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगरा : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
मुगल शेराटन, ताजगंज. फोन : 64701	1,200/-
क्लार्क शीराज, 54, ताज रोड. फोन : 72421	720/-
टूरिस्ट बंगला, दिल्ली गेट, राजा की मंडी. फोन : 72123	100/-
शीतल टूरिस्ट होम, ईदगाह बस स्टैंड के पास.	40/-
मयूर टूरिस्ट कांप्लेक्स, फतेहाबाद रोड. फोन : 67310	220/-
हाइवे इन, विभव नगर. फोन : 67458	100/-
गोवर्धन, दिल्ली गेट, राजा की मंडी. फोन : 66520	50/-
शहंशाह इन, फतेहाबाद रोड. फोन : 65000	450/-
सारंग, बालू गंज. फोन : 63894	100/-
इंपीरियल, एम.जी. रोड. फोन : 72500	180/-
जय हिंद, सदर बाजार, आगरा कैंट. फोन : 73502	100/-
मुमताज, फतेहाबाद रोड. फोन : 64771	600/-

सलीम चिश्ती की दरगाह के सामने है. इस द्वार के निकट एक गहरा कुआं है, जिस में तैराक बुलंद दरवाजे की ऊंचाई से कूद कर सैलानियों को मंत्रमुग्ध करते हैं.

सफेद संगमरमर से निर्मित 'शेख सलीम चिश्ती की दरगाह 24 फुट ऊंची है, यह दरगाह छोटी अवश्य है लेकिन आकर्षक है.

यहां पहुंचने के लिए टैक्सी, बस आदि द्वारा सहज पहुंचा जा सकता है. साधारण बसें सभी बस स्टापों से प्रत्येक आधा घंटा के अंतराल पर चलती हैं. टूरिस्ट बसों द्वारा भी सुविधा से आनंद लिया जा सकता है.

एत्माद्दौला : नगर से 6.2 किलोमीटर दूर यमुना नदी के दूसरे किनारे पर बना यह भवन सन 1628 ई. में बेगम नूरजहां ने अपने पिता ग्यासुद्दीन बेग की याद में बनवाया था. हरी घास से मंडित लान के मध्य बना यह भवन सफेद संगमरमर व लाल पत्थर से तराशा गया है. यह भवन बहुत ऊंचा है. दो कब्रें एत्माद्दौला और उस की पत्नी की हैं, जिन पर चित्रकारी की गई है.

चीनी का रोजा की कब्र एत्माद्दौला व रामबाग के मध्य स्थित है. यह कब्र शाहजहां के प्रधान मंत्री श्री अफजल खान की है. इसी के निकट अफजल खान की पत्नी की कब्र है.

इन के अतिरिक्त आगरा में कई अन्य दर्शनीय स्थल हैं जैसे रामबाग, राधास्वामी बाग, जामा मसजिद, दयालबाग, मरियम टोम, कीठम झील, गुरुद्वारा गुरु का ताल, गुरु सिंह सभा माईथान, मनकामेश्वर मंदिर, रावली का मंदिर आदि.

क्या खरीदें?

आगरा चर्म व कालीन उद्योग के लिए जगत प्रसिद्ध है. यहां का दालमोठ व पेठा सौगात समझी जाती है. लोग यह कहते सुने जाते हैं कि यदि आगरा का दालमोंठ, पेठा नहीं खाया तो कुछ नहीं खाया. वास्तव में यह सही प्रतीत होता है. दालमोठ, पेठा के लिए उचित दुकानों में 'पंछी पेठा स्टोर' नूरी दरवाजा, गोपाल पेठा, सदर बाजार व भीमसेन पेठा वाला, सेब का बाजार, चमड़े के जूता आदि खरीदने के लिए बेरी शूज, राना शूज, गगन शूज आदि प्रसिद्ध विक्रेता हैं. फिर भी, किनारी बाजार, सदर बाजार में अनेकों जूता सैंडिल विक्रेताओं की दुकानें हैं.

आगरा में अन्य सामान जैसे संगमरमर का सामान, पीतल का सामान, हस्तकला का सामान, लकड़ी का सामान आदि किनारी बाजार, सदर बाजार, जौहरी बाजार, राजामंडी आदि बाजारों से उचित दामों में खरीदा जा सकता है.

निकटतम पर्यटन स्थल

केवलादेव घाना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान : आगरा से 54 किलोमीटर दूर भरतपुर का केवलादेव घाना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान एशिया का सब से बड़ा पक्षी विहार है और कई मामलों में संभवतया अमरीका के यैलोस्टोन नेशनल पार्क से भी बढ़ कर है. यहां विभिन्न राष्ट्रों के लगभग बीस हजार पक्षी प्रत्येक वर्ष आते हैं, जिन में साइबेरिया सारस भी है. इस दुर्लभ सारस के विश्व में मात्र 200 जोड़े ही बचे हैं, जिन में 40 जोड़े भरतपुर में देखे जाते हैं.

यह पक्षी विहार 29 किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है. यहां एक उथली झील भी है, जिस में बहुत से पक्षी किल्लोल करते हैं. इस के चार फुट गहरे पानी में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां उगी हैं, जिन में छिप कर पक्षी अपना भोजन प्राप्त करने में सफल रहते हैं तथा कुछ पक्षियों ने इन वनस्पतियों पर घोंसले भी बना रखे हैं.

भरतपुर में आने वाले पक्षियों में ब्लैक आइबिस, व्हाइट स्टाक, साइबेरियन क्रेन, गीज,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जकाना, पेंटेड स्टार्क पेटलस, वीजन्स, मैलार्ड, शावल्स, टील्स, लैपविंग, कारमोरेंट ग्रेरन, पौंड, हैरन इंग्रेट, पीपिल्स, ओपिन बिल आदि हैं, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं. आगरा से प्रत्येक घंटे के पश्चात उ.प्र. परिवहन की बसें लगातार आतीजाती हैं. इस के अतिरिक्त 'पर्यटक बसों' से भी यहां पहुंचा जा सकता है. भरतपुर बस स्टैंड से 4 किलोमीटर दूर स्थित पक्षी विहार तक टैक्सी, रिकशा, तांगा आदि का प्रयोग करें. रिकशा व तांगा तीन रुपया प्रति सवारी लेते हैं.

आगरा जहां पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है, वहीं यह अन्य पर्यटन केंद्रों के मध्य होने के कारण निकटतम पर्यटन केंद्रों का अवलोकन कि... सकता है. परंतु इन स्थलों को देखने के लिए आगरा के किसी होटल में अपना सामान ... तथा प्रत्येक शाम आगरा में व्यतीत ... अधिक श्रेष्ठ रहेगा.

अधिक जानकारी के लिए पर्यटन ... 191, माल रोड, आगरा से प्राप्त कर सक... हैं.

वाराणसी

वाराणसी एक प्राचीन नगर ही नहीं, आज का प्रमुख पर्यटन स्थल भी है. यहां के मनोरम घाट, कलात्मक मंदिर, बांस के बने छाते, पत्थर और संगमरमर के बने नएपुराने भवन, जीर्णशीर्ण शाही इमारतें और सुबहशाम गंगा की धारा में नौका विहार ने देशी... पर्यटकों को अपने मोहजाल में ऐसा फंसा ... कि वे हर हालत में एक बार वाराणसी ... पर्यटन अवश्य करना चाहते हैं.

यह बात दूसरी है कि यहां की गंदगी ... अद्वितीय है. जगहजगह कूड़ा, कीचड़, ... और दुर्गंध निर्बाध रूप से अपना डेरा ... रहते हैं. लगता है सैकड़ों वृद्ध, वृद्धाओं ... वे भी यहां भगवान द्वारा स्वयं उठाए ... इंतजार करते हैं.

कैसे जाएं?

वाराणसी देश के सभी प्रमुख नगरों ... तथा सड़क के मार्ग से जुड़ा है, अतः आप ... भी रास्ते से वाराणसी तक जा सकते हैं. ... मार्ग से जाने वाले पर्यटकों के लिए दि... कलकत्ता, बंबई, लखनऊ, काठमांडू आदि ... से वाराणसी के लिए सीधी विमान ... उपलब्ध हैं. यहां का निकटतम हवाई अड्डा ... से करीब 27 किलोमीटर दूर बाब... (वाराणसी जौनपुर मार्ग पर) है.

क्या देखें?

घाट : जैसे मद्रास, गोआ आदि समुद्र... नगर अपने रमणीक तटों के लिए विश्व ... हैं, वैसे ही वाराणसी अपने मनोहारी घाटों ...

वाराणसी के मनोहारी घाट विश्वविख्... गंगा में नहाने वालों का यहां तांता लगा ... है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारनाथ : बौद्ध तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध पर्यटन स्थल.

लिए विश्वविख्यात है. गंगा के किनारेकिनारे अर्धचंद्राकार रूप में फैले वाराणसी के घाटों की न्यारी शोभा है. ये घाट वाराणसी की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर हैं

उदीयमान सूर्य की किरणों से चमकते ये घाट और उन पर बने मंदिरों की प्रतिच्छाया गंगा की धारा में ऐसी प्रतीत होती है मानो बालारुण गंगा में जलक्रीड़ा कर रहा हो. इन घाटों पर भोर होते ही अनेक प्रकृति प्रेमियों की भीड़ इकट्ठी होने लगती है. इस से वहां का दृश्य और भी सजीव हो उठता है, जो 'सुबहे बनारस' के रूप में प्रसिद्ध हो गया है.

वाराणसी के प्रसिद्ध घाटों में उल्लेखनीय हैं-मणिकर्णिका घाट, हरिश्चंद्र घाट, दशाश्वमेध घाट, पंचगंगा घाट, आदिकेशव घाट, मीर घाट, ब्रह्मघाट आदि.

अंधविश्वासियों द्वारा इन घाटों पर शव प्रवाह करने से जल प्रदूषण में वृद्धि हुई है.

यहां का पानी गंदा है. किनारे पर तो सड़े फूल, पत्ते दोनों की भरमार रहती है. घाटों की सफाई के लिए भी कोई प्रबंध नहीं. आसपास के भवनों पर तरहतरह के विज्ञापन उन की छवि और खराब करते हैं.

विश्वनाथ मंदिर : हिंदूधर्म का अतिप्रतिष्ठित यह मंदिर पतली, कीचड़ भरी गलियों में घिरा है. एक तरह तो यह हिंदुओं की हार का प्रतीक है क्योंकि इस के बराबर बनी मसजिद में पुराने भव्य मंदिर के खंडहर स्पष्ट हैं. अब तक अनेक बार इस मंदिर का विखंडन और पुनरुद्धार हुआ है.

लाल छोटे दरवाजे पर मैले पैरों से प्रवेश करते ही चांदी के ठोस हौदे के बीच सोने की सुनहरी पीठिका पर शिवलिंग स्थापित है. मंदिर के किसी भी हिस्से में न कलात्मकता है, न किसी प्रकार की विशेषता. बस, उस की महानता हिंदुओं में रचीबसी है.

सारनाथ : वाराणसी नगर से 6-7 किलोमीटर उत्तर में वाराणसी का प्रख्यात बौद्ध तीर्थ है, सारनाथ. प्राचीन काल में इसे ऋषिपत्तन कहते थे. कहा जाता है कि यहीं गौतम बुद्ध ने सर्वप्रथम अपने पांच शिष्यों को बौद्ध धर्म की शिक्षादीक्षा दी थी. तभी से यह बौद्ध तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है. ईसा पूर्व की तीसरी शती में यहां अशोक ने अनेक स्तूप एवं विहार बनवाए थे. आधुनिक युग में यह रमणीय स्थल पर्याप्त विकसित हो गया है. यहां हिरणों के विचरण के लिए बाग तथा अन्य बाग भी लगाए गए हैं. अजायबघर, चीनी बौद्ध मंदिर आदि भी यहां दर्शनीय हैं.

भारतमाता मंदिर : वाराणसी में सफेद पत्थरों से निर्मित भारतमाता मंदिर अनुपम है. इसे बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने बनवाया था. यह भारत का उठावदार मानचित्र है, जिसे संगमरमर के पत्थरों को तराश कर बनाया गया है. भारत की ऊंचाईनिचाई के हिसाब से ही इन पत्थरों को लगाया गया है. इस मंदिर की सादगी ही इस की भव्यता है. इस में अन्य किसी प्रकार की कोई नक्काशी या सजावट नहीं है.

भारत कला भवन (संग्रहालय) : यह एक संग्रहालय है. इस संग्रहालय की पृष्ठभूमि में यह भावना कार्यरत रही है कि यहां उस सामग्री का संग्रह किया जाए जो काशीवासियों के प्रत्येक युग के जीवन की झांकी प्रस्तुत कर सके. यहां अनेक कलात्मक एवं पुरातात्त्विक वस्तुओं का संग्रह है.

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय : वाराणसी प्राचीन काल से ही शिक्षा का प्रमुख केंद्र रही है. पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित बनारस हिंदू विश्वविद्यालय इसी उद्देश्य का परिपूरक है. यह एशिया का सब से बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय माना जाता है. यह करीब 2000 एकड़ क्षेत्र में फैला है.

काशी विद्यापीठ : वाराणसी कैंट से बनारस हिंदू विश्वविद्यालय तक जाने वाली सड़क पर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाराणसी : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया: डबल*
वाराणसी अशोक, *द माल. फोन : 42551-59*	*650/-*
पल्लवी इंटरनेशनल, *हथवा प्लेस, चेतगंज. फोन : 54894*	*175/-*
गौतम, *रामकटोरा. फोन : 44017*	*175/-*
डायमंड, *भेलूपुर. फोन : 56561*	*230/-*
ग्रीन लाज, *नई सड़क. फोन : 56840*	*30/-*
द वाराणसी रेस्ट हाउस, *लक्सा रोड, सरस्वती सिनेमा के सामने. फोन : 65187*	*35/-*
प्रदीप, *जगत गंज. फोन : 44963*	*130/-*
कलकत्ता विश्राम भवन, *डी 47/174 ए. लक्सा रोड*	*50/-*
दशाश्वमेध बोर्डिंग हाउस, *दशाश्वमेध रोड. फोन : 57286*	*30/-*
पैलेस, *गोदौलिया. फोन : 54950*	*80/-*
जयगंगे, *डा. जयसिंह बिल्डिंग. फोन : 45951*	*80/-*
अमर, *रेलवे स्टेशन के सामने. फोन : 43509*	*80/-*
पर्यटक आवास गृह (उ.प्र.प.वि.नि.), *परेड कोठी. फोन : 42368*	*100/-*
अजय, *लहुरावीर. फोन : 43686*	*35/-*
बनारस लाज, *रमन कटरा दशाश्वमेध. फोन : 54820*	*45/-*
गार्डन व्यू, *डी 64/129, सिगरा. फोन : 63026*	*75/-*
टूरिस्ट डाक बंगला, *59, कैंटोनमेंट. फोन : 42182*	*75/-*

काशी विद्यापीठ, जिस की स्थापना 10 फरवरी, 1921 को महात्मा गांधी, डा. भगवानदास और बाबू शिवप्रसाद गुप्त के सहयोग से हुई थी. यह भी शिक्षा का विशिष्ट केंद्र है.

क्या खरीदें?

वाराणसी अपने साड़ी उत्पादन के लिए विश्वप्रसिद्ध है. यहां से आप बनारसी साड़ियां खरीद सकते हैं. ये साड़ियां या तो गवर्नमेंट एंपोरियमों से खरीदें अन्यथा उचित मोलभाव कर के, क्योंकि अकसर यहां के दुकानदार पर्यटकों से दूने दाम मांग बैठते हैं.

लखनऊ

उत्तर प्रदेश की राजधानी तथा ... अलीशाह, आसफउद्दौला आदि ... की प्रिय नगरी लखनऊ विभिन्न बागों ... सुंदर ऐतिहासिक इमारतों के कारण पर्यटकों ... आकर्षित करती है. यहां 'शामेअवध' ... 'लखनवी अंदाज' के चर्चे आज भी आम हैं ... बात दूसरी है कि अब दोनों ही नई औद्योगिक ... संस्कृति में खो गए हैं.

लखनऊ की सर्वाधिक प्रसिद्ध ऐतिहासिक ... इमारत है आसफी इमामबाड़ा. लगभग ... मीटर लंबे 16 मीटर चौड़े और 16 मीटर ... इस के हाल की छत बिना किसी लोहे ... सहारे टिकी है. तत्कालीन वास्तुशिल्पियों ... यह एक अद्भुत चमत्कार है. इमामबाड़े ... ऊपरी मंजिल पर नवाबों के मनोरंजन के ... भूलभुलैयां बनाई गई थीं, जिन की गलियों ... अनजान व्यक्तियों का निकल पाना सहज ... नहीं. एक छोटा और सुंदर इमामबाड़ा ... हुसेनाबाद में भी है, जिसे लोग ताजमहल की ... प्रतिकृति मानते हैं. इस के निकटस्थ कलादीर्घा ... में प्रसिद्ध नवाबों के तैलचित्र प्रदर्शित हैं.

लखनऊ के अन्य दर्शनीय स्थलों ... 'शाहनजफ इमामबाड़ा, केसरबाग स्थित ... के महलों की लुभावनी इमारतें, रूमी दरवाजा, 'शहीद स्मारक, लक्ष्मण टीला, नादान महल ... चिड़ियाघर आदि उल्लेखनीय हैं. यहां ... हजरतगंज सांध्यकालीन मनोरंजन, फैशन ... सैरसपाटे के लिए प्रसिद्ध है.

कानपुर

एक समय में 'मानचेस्टर आफ इंडिया' के नाम से प्रसिद्ध यह नगर आज भारत ... प्रमुख औद्योगिक नगर है. गंगा तट पर बसा ... नगर लखनऊ से 42 किलोमीटर दूर है. पर्यटन की दृष्टि से यह अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं ... 'शायद इसी कारण यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या भी अधिक नहीं है.

कानपुर नगर दो रूपों में विकसित है. नया कानपुर और पुराना कानपुर. पुराने कानपुर में संकरी गलियां, सघन आबादी और अव्यवस्था का साम्राज्य है. 1875 में बना कानपुर ... मेमोरियल चर्च तथा चिड़ियाघर और ... मंदिर आदि दर्शनीय स्थान हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झांसी

इतिहास प्रसिद्ध रानी लक्ष्मीबाई की नगरी झांसी एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है. यह लखनऊ से 340, खजुराहो से 178 और दिल्ली से 416 किलोमीटर दूर दिल्ली भोपाल रेलवे लाइन पर स्थित है.

एक पहाड़ी पर बना झांसी का किला सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा है. इसे 1613 में राजा वीरसिंह देव ने बनवाया था. नगर में वैष्णव, शैव एवं जैन वास्तुकला के परिचायक अनेक मंदिर हैं. इन में से दुर्गा, लक्ष्मी, कुंजबिहारी, मुरली मनोहर और सिद्धेश्वर महादेव के मंदिर प्रमुख रूप से दर्शनीय हैं. यहां के कई मंदिर प्राचीन वास्तुकला के अच्छे नमूने हैं. यहां का रानी महल भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है.

गया

फल्गू नदी के तट पर बसा गया एक प्राचीन नगर है. यों तो उस की मान्यता एक तीर्थ स्थल के रूप में अधिक है, किंतु पर्यटन की दृष्टि से भी गया में बहुत कुछ है.

पर्यटन की दृष्टि से गया को दो भागों में बांटा जा सकता है—मुख्य या प्राचीन नगर तथा साहबगंज या अर्वाचीन नगर. यदि प्राचीन गया में बने कलात्मक मंदिर देख कर पर्यटक मंत्रमुग्ध से हो जाते हैं तो नए गया में आधुनिक भव्य इमारतों तथा सरकारी कार्यालयों का आकर्षण उन्हें आकृष्ट करता है.

साथ ही मुख्य नगर के आसपास का प्राकृतिक वातावरण भी कम आकर्षक नहीं है.

कैसे जाएं?

गया का निकटतम हवाई अड्डा पटना है, जहां से आप रेल या बस मार्ग द्वारा गया तक पहुंच सकते हैं. रेलमार्ग से गया हावड़ा और दिल्ली को जोड़ने वाली रेलवे लाइन पर पड़ता है. अतः अनेक महत्त्वपूर्ण गाड़ियां गया हो कर दिल्ली और कलकत्ता आतीजाती हैं. रेल मार्ग की अपेक्षा पटना से गया के लिए बस मार्ग अधिक लंबा है. इस में समय भी अपेक्षाकृत अधिक लगता है.

क्या देखें?

विष्णुपद मंदिर: रानी अहल्याबाई द्वारा बनवाया गया विष्णुपद मंदिर फल्गू नदी के तट पर स्थित है. शिल्प कला की दृष्टि से यह मंदिर गया की अमूल्य धरोहर है.

ब्रह्मयोनि पर्वत: इस पहाड़ी में एक पतली दरार है. इस दरार से हो कर गुजरना अपनेआप में बड़ा ही रोमांचक है.

मगध विश्वविद्यालय: यह एक आवासीय विश्वविद्यालय है, जहां विदेशी विद्यार्थियों की अच्छी संख्या है.

संग्रहालय: गया में तीन संग्रहालय हैं—एक मगध विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व विभाग का, दूसरा इसी विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय

गया का एक सुंदर बौद्ध मंदिर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
महाबोधि रेस्ट हाउस, महाबोधि सोसाइटी. फोन : 42	दान
अशोक ट्रेवलर, फोन : 25	160/-
टूरिस्ट बंगला.	30/-
कल्याण, महाबोधि मंदिर के पीछे.	—

एवं एशियाई अध्ययन विभाग का और तीसरा स्वतंत्र संग्रहालय, जहां प्राचीन अवशेषों के साथसाथ मध्यकालीन कलाकृतियों का अच्छा संग्रह है.

बोधगया

गया से मात्र 12 किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित बोधगया प्रख्यात बौद्धतीर्थ है. कहा जाता है कि यहीं गौतम बुद्ध को बोधिसत्त्व की प्राप्ति हुई थी. उस समय यह उरूवेला नामक एक छोटा सा गांव था. बुद्ध के बोधिसत्त्व के बाद से उरूवेला को संबोधि कहा जाने लगा, जैसा कि सम्राट अशोक के एक अभिलेख से विदित होता है. कालांतर में हिंदू तीर्थ गया की निकटता ने इसे बोधगया बना दिया.

बोधगया में महाबोधि मंदिर की शिल्पकला देखते ही बनती है. इसी मंदिर के प्रां... बोधिवृक्ष है, जिस की छाया में बुद्ध को ... मिला था. यह विशाल पीपल का वृक्ष ... प्राचीन है. महाभारत (वनपर्व, 84/83) में ... अक्षयवट कहा गया है.

बोधगया पर्यटन के लिए आने वाले ... पर्यटकों में सर्वाधिक संख्या दक्षिण पूर्व एशि... देशों से आने वाले पर्यटकों की होती है.

जापान, थाईलैंड, बर्मा, चीन, तिब्बत ... के बौद्ध मंदिर भी बोधगया के आकर्षण ... जिन की शिल्पकला उन के देशों का प्रतिनि... करती है.

देव सूर्य मंदिर: गया से 20 किलोमीटर ... एक रमणीक स्थान है देव. यह अपने सूर्य मं... के कारण प्रसिद्ध है.

बराबर गुफाएं: गया से करीब ... किलोमीटर की दूरी पर बड़ीबड़ी चट्टानें ... काटकाट कर बराबर की गुफाएं बनाई ... वास्तव में ये तीसरी शताब्दी की बौद्ध गुफाएं ... बोधगया हो कर इन की दूरी करीब ... किलोमीटर ही है.

डंगेश्वरी गुफाएं: डंगेश्वरी गुफाएं ... गया से 12 किलोमीटर दूर हैं. इन प्राकृ... गुफाओं में कुछ समय तक गौतम बुद्ध ने नि... किया था. यहीं उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ ... तपस्या आदि के द्वारा शरीर को कष्ट दे कर ... ज्ञान नहीं पाया जा सकता.

त्रिकूट, खड़गपुर व भीमबांध

दक्षिणी बिहार के पर्वतांचल में स्थित ये मनोरम स्थल मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए छुट्टियां बिताने के अच्छे साधन हैं. अपने शिवमंदिर के लिए विख्यात देवघर जिला तथा उस के पड़ोसी अंचलों में स्थित इन दर्शनीय स्थानों तक अच्छा ट्रेन व बस संपर्क है. पटनाहावड़ा ट्रेन मार्ग पर जसीडीह उतर कर आटोरिकशा, बस या जीपों से देवघर पहुंचा ... सकता है.

कहां ठहरें?

देवघर में घंटाघर के निकट बिहार सरकार ... का पर्यटन आवास है जिस में ठहरने व खाने ... व्यवस्था उचित दामों पर है. इस के अलावा ... में सरिता, मात्रिक आदि कई होटल हैं, जो ... रुपए में दो बिस्तर वाला अच्छा कमरा देते हैं. ... पर्यटन आवास से ही बिहार सरकार इन स्थानों ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिकूट पर्वत की विष्णु चोटी पर चढ़ते हुए पर्यटक. ▲

लिए दैनिक पैकेज टूर की व्यवस्था करती है.

क्या देखें?

त्रिकूट पर्वत: देवघर से करीब 10 मिनट की बस यात्रा के बाद 6 हजार फुट ऊंचे इस तीन चोटियों वाले पहाड़ तक पहुंचा जाता है जो रामकथा से जुड़े अपने स्थानों के कारण पूर्वी भारत में प्रसिद्ध है. दिन भर में पर्वत की चोटी तक जा कर वापस आया जा सकता है लेकिन साथ में गाइड ले जाना अच्छा रहता है, नहीं तो रास्ता भूल जाने पर भटकने व जंगली पहाड़ी पशुओं का डर रहता है. मयूराक्षी नदी का उद्गम भी इसी पर्वत से है और देखने लायक है.

खड़गपुर झील: मुंगेर जिले में स्थित यह स्थान उन लोगों को विशेष पसंद आएगा जो प्रकृति और पहाड़ों की गोद में 10-15 दिन शांति से, भीड़भाड़ से दूर बिताना चाहते हैं.

कहां ठहरें?

राज्य के सिंचाई विभाग द्वारा यहां टूरिस्ट बंगला बनाया गया है जिसे पर्यटन विभाग, बिहार सरकार, पटना से आरक्षित कराया जा सकता है. पहाड़ी से नीचे थोड़ी दूर पर बस्ती है, जहां से सामान ला कर खानेपीने की व्यवस्था चौकीदार कर देता है.

कैसे जाएं:

देवघर से खड़गपुर तक नियमित बस सेवा भी उपलब्ध है या आप चाहें तो भाड़े पर जीप भी ले सकते हैं. पर्यटन विभाग के देवघर पैकेज टूर में भी यह जगह शामिल है, जहां आप लोगों से दूर अपनी मंडली में खुल कर विचरण कर सकते हैं.

सिमुलतल्ला

मुंगेर जिले का यह विचित्र पर्यटन केंद पटना-आसनसोल रेलमार्ग पर स्थित है जहां भीड़भाड़ से अलग जगह ढूंढ़ने वाले पर्यटक महीनों डेरा डाले रहते हैं. चारों ओर बसे पहाड़ों से छन कर आए कुदरती पानी के कुओं के कारण यह जगह स्वास्थ्य केंद्र के रूप में भी प्रसिद्ध हो गई है और लोग हवापानी बदलने भी यहां आते हैं.

लट्टू पहाड़, मननियां पहाड़, बंस पहाड़, पिनरवा ढोल, देहरा पहाड़, कासा, पैछरना, भुरवैया, लीलाबरन आदि यहां के दर्शनीय स्थल हैं. यहां के प्राकृतिक सौंदर्य से आकर्षित हो कलकत्ता के कई बंगला फिल्मकारों ने यहां शूटिंग की है. हल्दी झरने से ऊपर जंगली जीवों को देखने और घोर जंगल में 4000 फुट की ऊंचाई पर बसी संथाल आदिवासियों की बस्ती में जाने का अलग रोमांच और अनुभव है. लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

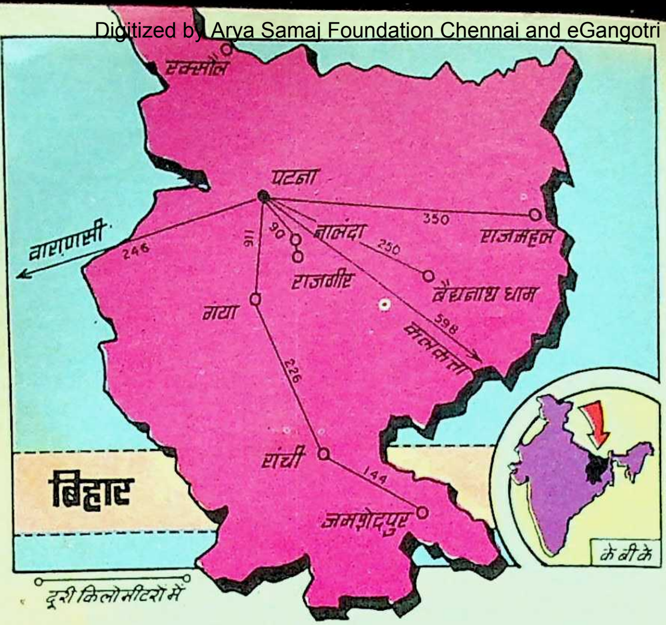

नीचे बिथनाबरन गांव से किसी युवक को गाइड के रूप में जरूर ले लें. हरियाली की गोद में बसा हल्दी झरना पिकनिक का अच्छा केंद्र है.

सिमुलतल्ला में रहने के लिए 20 रुपए से 50 रुपए रोज पर कोठियां उपलब्ध हैं और खाना बनाने, रहने का सामान भाड़े पर मिलता है. यहां दुर्गापूजा पर लगने वाला विशाल आदिवासी मेला (टेलवा बाजार) भी दर्शनीय होता है.

भीमबांध

भागलपुर जि... यह ... अभ्यारण्य है ... जीवजंतुओं की ... के बीच पहा... निकलता गर्म पा... झरना चर्म रो... ठीक करने का ... लपेटे हुए है.

पर्यटन विभा... यहां सुंदर बाग, ... गृह एवं पर्यट... नहाने के लिए ... पानी का कुंड ... करवाया है.

यहां ... व देवघर से आसा... पहुंचा जा सकता है. देवघर से पर्यटन ... द्वारा 40 रुपए का पैकेज टूर भीमबांध ... है. यदि आप खड़गपुर झील पर अपना ... डालते हैं तो जीप ले कर जा सकते हैं. ... यदि झाझा की तरफ मुड़ें तो सिमुलतल्ला ... अपना अलग आकर्षण है. —महिमा ...

प्रकृति और पहाड़ों की गोद में स्थित खड़गपुर ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खजुराहो

'सत्यं शिवं सुंदरं' की भावनात्मक पृष्ठभूमि पर निर्मित खजुराहो के कलात्मक मंदिर भारतीय मूर्ति शिल्प के अद्भुत नमूने हैं, जिन्हें देखने के लिए प्रतिवर्ष देशविदेश के हजारों पर्यटक आते हैं. मंदिरों की पाषाण प्रतिमाओं में युद्ध और सौंदर्य का, शैव और जैन मतों का अनूठा संगम है, जिसे देख कर पर्यटक आश्चर्यचकित हो कर रह जाता है.

लगभग एक हजार वर्ष पूर्व चंदेल नरेशों द्वारा मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में बनवाए गए इन मंदिरों में तत्कालीन शिल्पकारों की छैनीहथौड़ी का समवेत संगीत स्वर आज भी ज्यों का त्यों रचाबसा है.

वर्तमान खजुराहो ग्राम की लघुता से उस की प्राचीन विशालता की कल्पना नहीं की जा सकती. प्राचीन काल में यह एक विशाल और भव्य नगर था, जिस के गौरव की झलक आज भी वहां विकीर्ण भग्नावशेषों में लक्षित की जा सकती है. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बताया जाता है कि चंदेलों के आदि पुरुष चंद्रब्रह्म ने यहां मांडव यज्ञ करते समय 85 वेदियों का निर्माण कराया था. कालांतर में इन 85 वेदियों पर ही भव्य मंदिरों की नींव पड़ी. इन में से 60 मंदिर विखंडित हो कर धूल में मिल गए हैं. अब केवल 25 मंदिर ही सुरक्षित हैं.

खजुराहो के मंदिरों की ऐतिहासिक महत्ता को देख कर ही संयुक्त राष्ट्र के शैक्षणिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक संगठन यूनेस्को ने इसे भी गत वर्ष विश्व के महत्त्वपूर्ण स्मारकों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

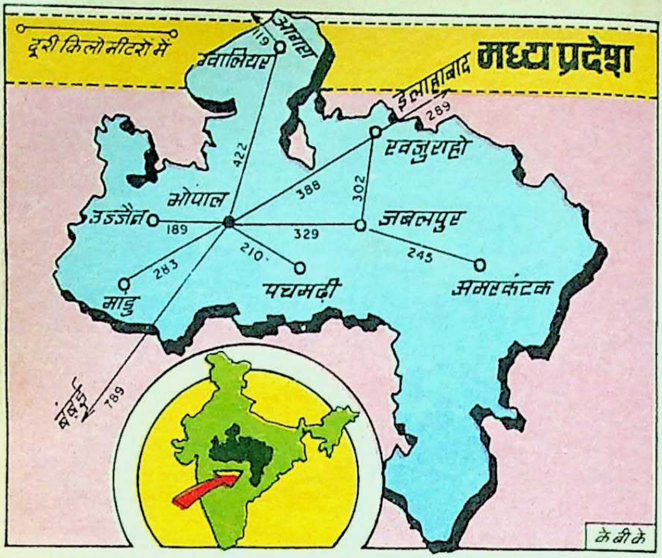

सम्मिलित कर लिया है. अब खजुराहो भी विश्व के महत्त्वपूर्ण 54 ऐतिहासिक स्मारकों में से एक हो गया है. अब यूनेस्को खजुराहो की देखरेख पर प्रति वर्ष हजारों डालर व्यय करेगा.

कब जाएं?

पर्यटन की दृष्टि से खजुराहो का मौसम वर्ष भर अनुकूल रहता है. शीतकाल में यहां का भ्रमण करने के लिए जाते समय हलके ऊनी वस्त्र साथ ले लेना उचित रहेगा. हां, वर्षा ऋतु, यानी मध्य जून से मध्य सितंबर तक खजुराहो पर्यटन पर न जाना ठीक है, क्योंकि इन दिनों वर्षा के कारण पर्यटन का सारा मजा किरकिरा हो जाता है.

कैसे जाएं?

यों तो खजुराहो पहुंचने के लिए यातायात की प्रायः सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं यानी सड़क, रेल या हवाई किसी भी मार्ग से खजुराहो पहुंचा जा सकता है. किंतु यहां के लिए हवाई सेवाओं का भरोसा कम ही करना चाहिए.

संभवतः खजुराहो संपूर्ण एशिया महाद्वीप में अकेला गांव है, जहां बोइंग 737 की विमान सेवा है. दिल्ली और बनारस से यहां के लिए एयर इंडिया तथा वायुदूत की दैनिक उड़ानें भी हैं. किंतु ऐन वक्त पर उन उड़ानों को रद्द होते देर नहीं लगती. विगत दो वर्षों में यहां इंडियन एयरलाइंस की प्रायः 50% उड़ानें रद्द हो गई थीं.

खजुराहो का निकटतम रेलवे स्टेशन महोबा (60 किलोमीटर) है. महोबा में पर्यटकों के लिए रेलगाड़ियों के आरक्षण की समुचित व्यवस्था है. महोबा से खजुराहो तक की यात्रा बस या टैक्सी द्वारा की जा सकती है. महोबा के अलावा पन्ना, ... झांसी, कानपुर, ... अयोध्या, आगरा, ... इलाहाबाद, चित्रकूट ... नगरों से खजुराहो ... बस सुविधाएं भी ... हैं.

क्या देखें?

खजुराहो पर्यटन ... मुख्य आकर्षण यहां ... कलात्मक मंदिर हैं ... मंदिरों की वर्तमान संख्या 25 है. पर्यटन सुविधा की दृष्टि से इन मंदिरों ... मुख्यतः तीन श्रेणियों ... रखा जा सकता है.

पश्चिमी मंदिर समूह:

इस मंदिर समूह के अंतर्गत चौंसठ योगिनी, कंदारिया महादेव, ... जगदंबा, चित्रगुप्त, विश्वनाथ, पार्वती, ... मांतगेश्वर आदि मंदिर आते हैं. ये ... वास्तुकला एवं कलात्मकता की दृष्टि से ... हैं.

इन मंदिरों में ग्रेनाइट तथा बलुआ पत्थरों का प्रयोग हुआ है. प्रत्येक मंदिर के गर्भगृहों में ... प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई है. मंदिरों की बाहरी दीवारों पर मूर्तियों की एकाधिक कतारें बनाई गई हैं.

इन मूर्तियों में देवीदेवताओं, शार्दूल, ... मंजिकाओं तथा आलिंगनबद्ध युगलों की मूर्तियां प्रमुख हैं. इन मूर्तियों में मानवीय दु...

खजुराहो : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया: डबल*
जस ओबेराय, बाईपास रोड. फोन : 66	900/-
चंदेला, जि. चातीपुर. फोन : 54	700/-
खजुराहो अशोक फोन : 24	395/-
पायल, फोन: 76 म.प्र. पर्यटन	150/-
राहिल, फोन: 62 विकास निगम	100/-
पर्यटक बंगला, फोन: 64 लि. टूरिस्ट	150/-
पर्यटक ग्राम, बंगला काम्प्लैक्स से संपर्क करें	50/-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंदोल्लास, गायननर्तन आदि भोगों का सजीव चित्रांकन किया गया है, जिसे देखते हुए पर्यटक खो कर रह जाता है.

पूर्वी मंदिर समूह: वामन, ब्रह्म, जावरी, घंटाई, आदिनाथ और पारसनाथ के मंदिर इस समूह के अंतर्गत उल्लेखनीय हैं. ये मंदिर हिंदू तथा जैन धर्मों का अद्भुत संगम हैं. शिल्पकला की दृष्टि से ये मंदिर देखते ही बनते हैं. इन में से पारसनाथ का मंदिर खजुराहो का सब से बड़ा जैन मंदिर है. इस मंदिर के पूजागृह में तराशी गई सिंहासनारूढ वृषभ प्रतिमा कला का बेजोड़ नमूना है.

दक्षिणी मंदिर समूह: इस मंदिर समूह के अंतर्गत मुख्यत: दो मंदिरों दूल्हादेव तथा चतुर्भुजनाथ के मंदिरों की गिनती की जा सकती है.

इन मंदिरों की मुख्य दीवारों पर क्रीडारत नारियों का जीताजागता चित्रांकन किया गया है.

मिथुन मूर्तियां: खजुराहो के इन सभी मंदिरों की दीवारों पर अनेक मिथुन मूर्तियां उत्कीर्ण हैं, जिन में नरनारी के मांसल सौंदर्य को रूपायित किया गया है. ये मिथुन मूर्तियां लौकिक वासना, संभोग आदि के मानवीय व सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करती हैं. ये कलाकारों के सौंदर्यबोध की परिचायक हैं.

आसपास के दर्शनीय स्थल

स्नेह जलप्रपात: खजुराहो से 15 किलोमीटर दूर है स्नेह जलप्रपात. यों तो यह एक सामान्य झरना है, किंतु इस झरने की एक विशेषता यह है कि ऊंचाई से गिरने वाले जल ने यहां के बहुरंगी पत्थरों को एक विशेष रूप में काट दिया है, जो समग्र एशिया में अपनी तरह का इकलौता कटाव है. देशविदेश के कई भूवैज्ञानिकों ने इस का अध्ययन किया है. यहां पिकनिक का भी आनंद उठाया जा सकता है.

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान: पन्ना में एक राष्ट्रीय उद्यान है, जहां विभिन्न प्रकार के जानवर पाले जाते हैं. यहां कई दुर्लभ प्रजातियों के जानवर देखे जा सकते हैं. पन्ना और खजुराहो के बीच अधिक दूरी नहीं है.

जबलपुर

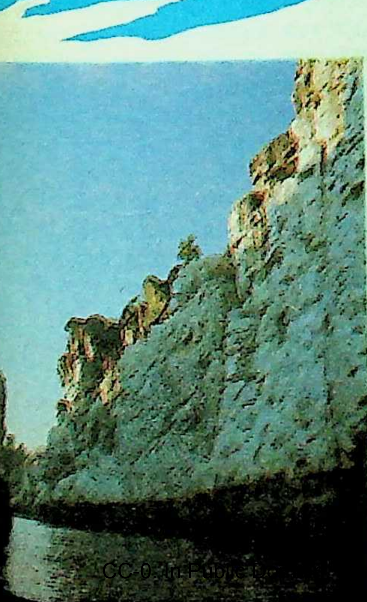

भूगर्भशास्त्री व पुरातत्त्वेत्ताओं के अनुसार जिस स्थल पर यह नगर विकसित हुआ है, वह अति प्राचीन है. इस के साक्ष्य में वे आग्नेय चट्टानों की उपस्थिति बताते हैं. सन 1933 में हुए उत्खनन में यहां पर एक विशालकाय डायनासार का कंकाल मिला था, जिस की उम्र करीब साठ लाख वर्ष पूर्व की आंकी गई थी. संगमरमर की आकर्षक शैल-शृंखलाओं, कलचुरिवंशीय मूर्ति शिल्प, ऐतिहासिक नगर के भग्नावशेष व गोंडवाना राज्य के अनेक भव्य स्मारकों के कारण जबलपुर नगर पर्यटन की दृष्टि से एक उपयुक्त शहर है.

कैसे जाएं?

जबलपुर भोपाल, नागपुर, रायपुर आदि नगरों से हवाई मार्ग द्वारा जुड़ा है. भोपाल से जबलपुर के लिए प्रतिदिन नियमित उड़ानें हैं.

◄ भेड़ाघाट स्थित संगमरमर की चट्टानें: पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

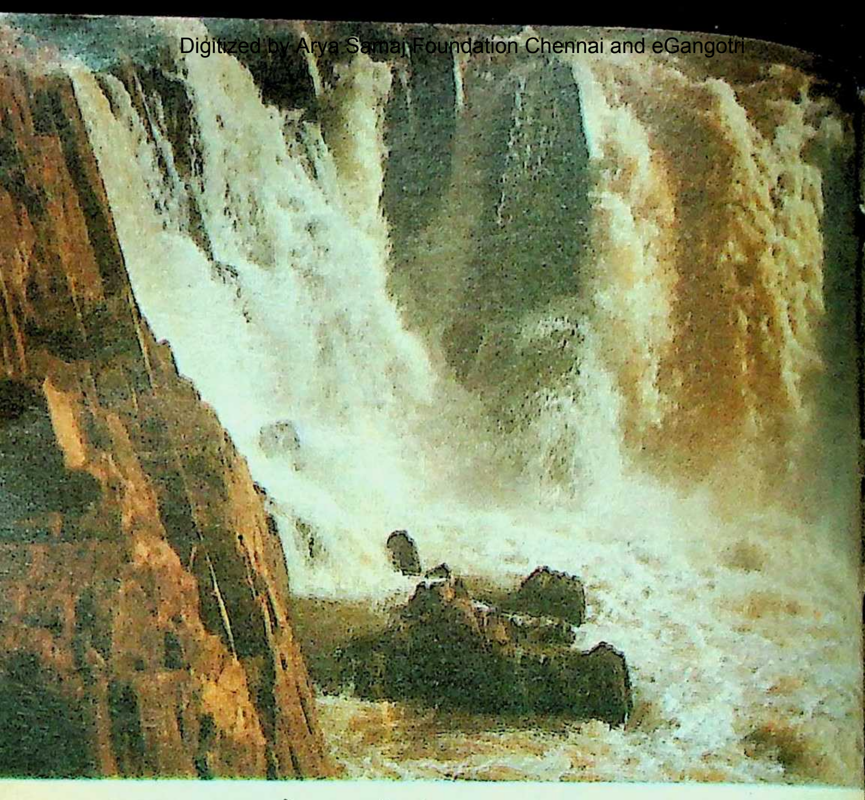

इलाहाबाद, खजुराहो, वाराणसी, भोपाल तथा अन्य मुख्य नगरों से जबलपुर के लिए नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं.

जबलपुर बंबई-इलाहाबाद-कलकत्ता मुख्य रेलवे लाइन का प्रमुख रेलवे स्टेशन है. अतः इस मार्ग द्वारा भी पर्यटक जबलपुर पहुंच सकते हैं.

दर्शनीय स्थल

शहर केअंदर पर्यटक रानी दुर्गावती संग्रहालय, त्रिपुरी स्मारक या कमानिया गेट, शहीद स्मारक भवन, हाईकोर्ट की भव्य इमारत, भंवरताल पार्क, मदनमहल, देवताल, पंचमठ के मंदिर, पुष्प नक्षत्र का मंदिर आदि देख सकते हैं.

कमानिया गेट: कमानिया गेट व्यस्ततम बाजार फव्वारे के पास स्थित है. गेट के ऊपर त्रिपुरी कांग्रेस 1939 लिखा है. इस गेट का जीर्णोद्धार सन 1939 में शहर में हुए कांग्रेस अधिवेशन की स्मृति में किया गया था. गेट के स्तंभ के आधार विशाल पत्थरों से निर्मित हैं. गेट को देख कर पर्यटक को एकदम से कोई प्रसन्नता नहीं होगी. लेकिन जब वह इस गेट के इतिहास को जानने का प्रयास करेगा, तो उसे ज्ञात होगा कि मराठों ने इस गेट का निर्माण क्षेत्र में यदाकदा घुस आने वाले पिंडारी ठगों से बचने के लिए किया था.

मदन महल: मदनसिंह द्वारा सन 1160 में

धुआंधार जलप्रपात : झरने से गिरता पानी अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है.

निर्मित मदन महल अपनी भव्यता को आज भी प्रदर्शित करता है. दो विशालकाय चट्टानों पर निर्मित यह भवन किसी समय गोंड राजाओं का आरामगाह था. पूरी इमारत दो मंजिला है. इमारत में प्रदेश के लिए भव्य द्वार बना है. दूसरी मंजिल पर बने टैरेस से शहर का नयनाभिराम दृश्य देखा जा सकता है. अब स्मारक शासकीय संरक्षण में है. मदन महल परिसर में ही गोंड राजाओं का अस्तबल है, जो अब चमगादड़ों के आवास के कारण दुर्गंधमय हो गया है. अस्तबल के पास ही दो मंजिला बावली है, जिस में अब न... और गंदगी के सिवा कुछ भी नहीं नजर आता है. ये सारे परिसर अब जर्जरावस्था में हैं.

भेड़ाघाट: पिसनहारी की मढ़िया से 14 कि.मी. व शहर से 23 कि.मी. की दूरी पर प्रसिद्ध संगमरमर की चट्टानें हैं, जो विश्व में अपने आप में सब से अनोखी हैं. नदी के तटों पर संगमरमर की शैल–श्रृंखलाएं कहीं भी नहीं मिलती हैं–सिवा भेड़ाघाट को छोड़ कर. धुआंधार नामक जलप्रपात, पंचवटी के घाट, चौंसठयोगिनी का गोलकी मठ व पंचमठ के मंदिर देखने योग्य हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होटलों के बारे में पाठकों के अनुभव

पर्यटन विशेषांक होटलों के नाम, पते तथा टेलीफोन नंबर प्रकाशित करने का उद्देश्य यही है कि हमारे पाठक पर्यटन की योजना बनाते समय होटल का बजट भी बना लें. अपनी यात्रा के दौरान आप को जिन होटलों में ठहरने का अवसर प्राप्त हुआ है उन के बारे में हमें सूचना दें ताकि अगले वर्षों में वह जानकारी अन्य पाठकों की सुविधा के लिए प्रकाशित की जा सके.

निम्न जानकारी हमें भविष्य में पाठकों को होटलों के बारे में और अधिक जानकारी उपलब्ध कराने से सहायक होगी.

होटलों के नाम, पते, टेलीफोन नंबर, होटल के कमरे कैसे थे? होटल के खानेपीने की व्यवस्था कैसी थी? प्रति कमरा दर इत्यादि.

अनुभव भेजते समय कृपया अपना नाम, पता अवश्य लिखें.

पंचवटी से ही पर्यटक को नर्मदा की अथाह जलराशि पर नौकायन करने का साधन मिलता है. नौकायन के दौरान नीले, गुलाबी, पीले रंगादि की संगमरमर की चट्टानें दोनों तटों पर मिलती हैं. बंदरकूदनी व भलभलैया नामक स्थान भी मिलता है. पूरे नौकायन में करीब 45 मिनट लगते हैं. चांदनी रात में तो इस नौकायन का आनंद कई गुना बढ़ जाता है.

ग्वारीघाट: ग्वारीघाट भी नर्मदा के तट पर बना तिलवाराघाट से कहीं ज्यादा अच्छा एक अन्य घाट है. इस के लिए अलग रास्ता है. शहर से करीब 10 कि.मी. दूर है. रास्ते में बादशाह हलवाई का मंदिर व परफेक्ट पाटरीज देखे जा सकते हैं. तैरने के शौकीनों के लिए ग्वारीघाट के पास जिलहरीघाट है. नेरो गेज का स्टेशन भी है. पर्यटक जबलपुर व हाऊबाग स्टेशन से ग्वारीघाट की रेलगाड़ी पकड़ सकता है. वैसे मोटर स्टैंड से बसें भी चलती हैं.

तिलवाराघाट: यह शहर से करीब 15 किलोमीटर दूर राष्ट्रीय मार्ग सात पर स्थित है. यहां 1939 में बना गांधी स्मारक पर्यटन की दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण है.

अन्य दर्शनीय व पिकनिक स्थल: इस के अलावा शहर में आयुध निर्माण की कई फैक्टरियां हैं जो कभीकभी सामान्य जनता के अवलोकनार्थ खुलती हैं. कई जलाशय हैं जहां पर पिकनिक प्रेमी जा कर मनोरंजन कर सकते हैं, उदाहरणार्थ परियट जलाशय, खंदारी जलाशय, भदभदा जलप्रपात, कटाव आदि.

शहर के अंदर के अन्य दर्शनीय स्थलों में भंवरताल पार्क, रानी दुर्गावती संग्रहालय, घंटाघर, हाईकोर्ट इमारत व शहीद चौक, सदर देखने योग्य हैं.

कलकत्ता

पश्चिम बंगाल की राजधानी और देश का सब से बड़ा नगर कलकत्ता पूर्वी भारत के 'प्रवेश द्वार' के रूप में जाना जाता है. यह अनेक वर्षों से समुद्री व्यापार के लिए प्रमुख बंदरगाह रहा है. शिक्षा, कला तथा संस्कृति के साथसाथ यह भारत का प्रमुख औद्योगिक केंद्र भी है.

अब से लगभग 300 वर्ष पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रथम गवर्नर जान चारनाक ने जमींदारों से कलिकाता, गोविंदपुर और सूतानारी गांवों की जमींदारी खरीद कर इस महानगर की नींव डाली थी. तभी से यह कलकत्ता के नाम से प्रसिद्ध हुआ.

संभवत: कलकत्ता ही पहला ऐसा महानगर है, जिस की 300वीं जयंती 24 अगस्त, 1989 को मनाई गई. इस जयंती से संबंधित रंगारंग कार्यक्रम वर्ष भर चलेंगे. इन कार्यक्रमों पर राज्य सरकार द्वारा 2200 करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं.

आप भी इस वर्ष कलकत्ता पर्यटन का कार्यक्रम बना कर कलकत्ता महानगर की 300वीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

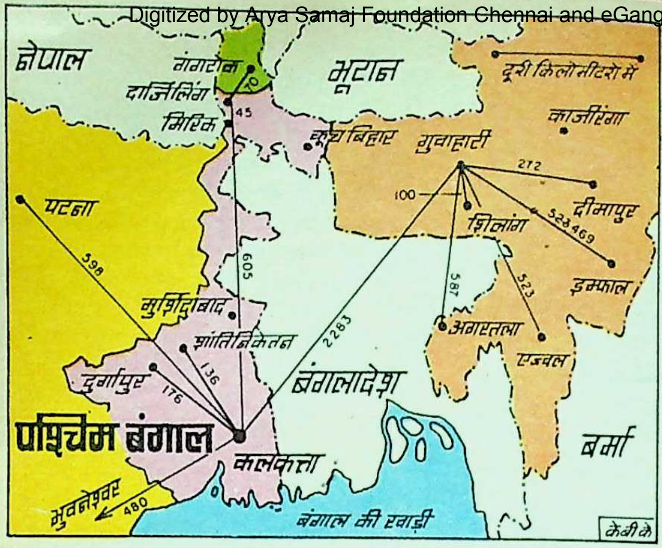

जयंती के धूमधड़ाके और आमोदप्रमोद भरे विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं.

क्या देखें?

बिनय बादल दिनेश बाग: स्थानीय ऐतिहासिक इमारतों से घिरा यह स्थान कलकत्ता पर्यटन का प्रमुख केंद्र है. पहले यह स्थल 'डलहौजी स्क्वायर' कहलाता था. किंतु बाद में बंगाल के तीन शहीदों के नाम पर इसे बिनय बादल दिनेश बाग कहा जाने लगा. इस के ... में पश्चिम बंगाल सरकार का सचिवालय है. ईस्ट इंडिया कंपनी के जमाने में यह भवन 'राइटर्स बिल्डिंग' के नाम से प्रसिद्ध था. उस समय इस में लिपिक (क्लर्क) ही रहते थे. फिरंगी लिपिकों को 'राइटर' कहते थे.

चौरंगी: चौरंगी कलकत्ता का एक विशिष्ट एवं शानदार बाजार है.

यहां इटली के ... की अनेक इमारतें देखी जा सकती हैं. यह कलकत्ता का सर्वाधिक चहलपहल वाला क्षेत्र है. चौरंगी में, 1841 में निर्मित एक 'शहीद मीनार' भी है.

विक्टोरिया मेमोरियल: चौरंगी के दक्षिणी सिरे पर ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया का स्मारक है, जिसे विक्टोरिया मेमोरियल के नाम से जाना जाता है. यह सफेद संगमरमर से बना एक भव्य भवन है. सन 1921 में इस स्मारक का उद्घाटन वेल्स के राजकुमार ने किया था. इस

रात के समय जगमगाता कलकत्ता का विक्टोरिया मेमोरियल. ▼

CC-0. In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राइटर्स बिल्डिंग : ईस्ट इंडिया के जमाने का यह भवन आज भी पुरानी यादें संजोए हुए है.

स्मारक में 25 कला दीर्घाएं हैं, जिन में 3,500 कलाकृतियों का संग्रह है.

बिड़ला तारावर : विक्टोरिया मेमोरियल के निकट ही बिड़ला ताराघर है. यह कृत्रिम नक्षत्रवाला 23 मीटर आंतरिक व्यास वाले एक गुंबदनुमा गुलाबी भवन में स्थित है

यहां से नक्षत्रों के संबंध में जानकारी हासिल की जा सकती है. यहां एक साथ 500 दर्शकों के बैठने की समुचित व्यवस्था है.

कलकत्ता : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया: डबल*
***एयरपोर्ट अशोक,** कलकत्ता एयरपोर्ट. फोन : 575111*	*1050/-*
***हिंदुस्तान इंटरनेशनल,** 235/1 ए, जे.सी. बोस रोड. फोन : 442394*	*930/-*
***लिंडसे गेस्ट हाउस,** 8 बी, लिंडसे स्ट्रीट. फोन : 8639*	*170/-*
***लिटन,** 14, सदर स्ट्रीट. फोन : 29-1875*	*600/-*
***द सेल्वेशन आर्मी रेड शील्ड गेस्ट हाउस,** 2, सदर स्ट्रीट. फोन : 242895*	*50/-*
***पार्क,** 17, पार्क स्ट्रीट. फोन:297336*	*1100/-*
***फेयरलान,** 13 ए, सदर स्ट्रीट. फोन : 24-1835*	*550/-*
***बिलिस,** 5, जतीनदास रोड. फोन : 42-3253*	*190/-*
***मिनर्वा,** 11, गणेशचंद्र एवेन्यू. फोन : 26-4505*	*360/-*
***सेवाय,** 27, शशि भूषण डे स्ट्रीट. फोन : 27-3216*	*प्रार्थना पर*
***अशोक,** डावसन लेन, हावड़ा. फोन : 605222*	*130/-*
***वाई.एम.सी.ए.,** 25,जवाहर लाल नेहरू रोड. फोन : 29-2192*	*250/-*

जाब चारनाक का मकबरा: यों तो यह मक़बरा विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं रहा है, किंतु कलकत्ता की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में यहां होने वाले विविध कार्यक्रमों ने इस का महत्त्व बढ़ा दिया है. इस अवसर पर 'सिटी आफ जाय' के संस्थापक जाब चारनाक के इस मकबरे पर केक काटा गया था. आगे भी यहां सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलक देखी जा सकती है.

भूमिगत रेल: कलकत्ता पर्यटन का एक विशेष आकर्षण भूमिगत रेल भी है. पूरे भारत में कलकत्ता में ही भूमिगत रेलें चलती हैं. अत: यहां आने वाला हर नया पर्यटक यहां की भूमिगत रेल में बैठ कर आनंदित होना चाहेगा.

नेशनल लाइब्रेरी: यह भारत के प्राचीनतम ग्रंथालयों में से एक है. यहां 10 लाख से भी अधिक पुस्तकों का अच्छा संग्रह है. यहां अनेक दुर्लभ पांडुलिपियां हैं. साप्ताहिक तथा राष्ट्रीय अवकाशों को छोड़ कर अन्य दिनों में यह पुस्तकालय खुला रहता है.

इंडियन म्यूजियम: यह म्यूजियम 'जादूघर' के नाम से भी प्रसिद्ध है. यहां भौगोलिक, वनस्पतिक, जैविक, पुरातात्विक तथा मानव वैज्ञानिक विभिन्न वस्तुओं का बृहद संग्रह है. यहां सांची, गांधार, अमरावती, सारनाथ, कंबोडिया आदि स्थानों से लाई गई प्राचीन मूर्तियां पर्यटकों के दर्शनार्थ रखी हैं.

क्या खरीदें?

कलकत्ता पर्यटन की स्मृतियों को संजोने के लिए आप यहां से खिलौने, रेशमी वस्त्र, हाथी दांत की बनी चीजें, मधुबनी चित्र, सजावटी सामान आदि खरीद सकते हैं.

शांतिनिकेतन

कलकत्ता से 136 किलोमीटर दूर स्थित शांति निकेतन, नोबल पुरस्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विजेता रवींद्रनाथ टैगोर ...
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है. 1901 में उन्होंने एक स्कूल की स्थापना की थी जो कालांतर में 'विश्व भारती विश्वविद्यालय' के रूप में विकसित हुआ. यह अपनी तरह का अकेला विश्वविद्यालय है जहां खुले आकाश में कक्षाएं लगती हैं. देशीविदेशी पर्यटकों के लिए यह स्थान एक गंभीर अनुभूति प्रदायक माना जाता है. यहां के शांत, सुरम्य और ... वातावरण में पर्यटकों को अतीव शांति की अनुभूति होती है.

शांति निकेतन से मात्र 3 किलोमीटर ... 'श्रीनिकेतन ग्रामीण पुनर्निर्माण केंद्र' है. ... निर्मित चमड़े के बैग बहुत प्रसिद्ध हैं.

दार्जिलिंग

लगभग 2,134 मीटर की ऊंचाई पर बांस के झुरमुटों व चाय बागानों की मखमली हरियाली, ऊंचेऊंचे बर्फीले पहाड़, टेढ़ीमेढ़ी बल खाती सड़कें, ४ का अंक बना कर घूमती 'टॉय ट्रेन' वाले दार्जिलिंग में सैर करने का अपना अनोखा ही आनंद है. 20-25 परिवारों वाले एक छोटे से गांव को रमणीक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने का सारा श्रेय अंगरेजों को है.

दार्जिलिंग : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया: डबल*
विंडमेयर, *ओब्जर्वेटरी हिल. फोन : 2397*	*745/-*
बेलव्यू, *द माल. फोन : 2129*	*110/-*
टिंबर लाज, *6, लाडेन ला रोड. फोन : 2515*	*100/-*
दार्जिलिंग गेस्ट हाउस, *16, डी.बी. गिरि रोड. फोन : 3327*	*200/-*
निर्वाण, *8, एस.के. पोल रोड. फोन : 2909*	*240/-*
प्रधान, *57, गांधी रोड. फोन : 2103*	*200/-*
पाइनरिज, *19, नेहरू रोड. फोन : 2094*	*275/-*
ग्रांड व्यू, *राकवुड.*	*300/-*
प्रेस्टिज, *लाडेन ला रोड. फोन : 2699*	*200/-*

मसूरी या शिमला की अपेक्षा दार्जिलिंग ... पर्यटन संस्कृति की गहरी छाप है किंतु पिछले कुछ वर्षों के गोरखा आंदोलन ने इसे छिन्नभिन्न कर दिया था. एक लंबी अवधि तक वहां पर्यटकों का आनाजाना नगण्य सा रहा था, किंतु पिछले वर्ष से कुछ बढ़ोतरी हुई है. विदेशी पर्यटकों के लिए अब भी यह प्रतिबंधित क्षेत्र है. उन्हें दार्जिलिंग पर्यटन के लिए 'निषिद्ध क्षेत्र अनुमति' (आर.ए.पी.) ले लेनी चाहिए. यह अनुमति केवल 15 दिनों तक मान्य होती है, जो निम्नलिखित स्थानों/कार्यालयों से ली जा सकती है.

1. इंडियन मिशंस एब्रोड.
2. फारेनर्स रजिस्ट्रेशन आफिस, बंबई, दिल्ली, मद्रास.
3. होम डिपार्टमेंट (पालिटिकल) पश्चिम बंगाल सरकार, राइटर्स बिल्डिंग, कलकत्ता.
4. डिप्टी कमिश्नर आफ पुलिस एंड एक्स आफिस फारेनर्स रजिस्ट्रेशन आफिसर, 237, आचार्य जे.सी. बोस रोड, कलकत्ता.
5. फारेनर्स डिवीजन, मिनिस्ट्री आफ होम अफेयर्स, भारत सरकार, लोकनायक भवन, खान मार्केट, नई दिल्ली-3.

कैसे जाएं?

दार्जिलिंग से 90 किलोमीटर दूर बागडोगरा यहां का निकटतम हवाई अड्डा है. अतः हवाई मार्ग से जाने वाले पर्यटक दिल्ली, कलकत्ता, पटना, गुवाहाटी, इम्फाल आदि नगरों से इंडियन एयरलाइंस की नियमित उड़ानों द्वारा बागडोगरा तक पहुंच सकते हैं. बागडोगरा से टैक्सी द्वारा तीन घंटों में दार्जिलिंग तक पहुंचा जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेल तथा बस मार्ग द्वारा भी दार्जिलिंग देश के प्रायः सभी प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है. देश के किसी भी भाग से रेल मार्ग द्वारा दार्जिलिंग पहुंचने के इच्छुक पर्यटकों को पहले सिलीगुड़ी/न्यूजलपाईगुड़ी उतरना पड़ेगा. ये दोनों स्थान कलकत्ता, गुवाहाटी, बैरानी, डिब्रूगढ़, वाराणसी आदि से सीधे रेल मार्ग से जुड़े हैं. सिलीगुड़ी/न्यू जलपाईगुड़ी से दार्जिलिंग के लिए 'खिलौना रेलगाड़ी' चलती है, जो लगभग 8 घंटों में पहुंचाती है.

सिलीगुड़ी, कलकत्ता, दुर्गापुर, पटना आदि स्थानों से दार्जिलिंग के लिए नियमित बसें भी चलती हैं.

कब जाएं?

दार्जिलिंग पर्यटन के लिए सर्वोत्तम समय मार्च से मध्य जून और मध्य सितंबर से नवंबर तक है. गरमियों में पर्यटकों को हलके ऊनी और जाड़ों में भारी ऊनी वस्त्र ले जाने की आवश्यकता है. साथ ही छाता और बरसाती कोट तो हर मौसम में होना जरूरी है.

क्या देखें?

टाइगर हिल: सागर तल से 2555 मीटर की ऊंचाई पर स्थित टाइगर हिल नगर से 11 किलोमीटर दूर है. यह स्थान सूर्योदय के मनभावन दृश्य को देखने के लिए प्रसिद्ध है. सूर्योदय होने से पहले ही यहां प्रतिदिन सैकड़ों लोग इकट्ठे हो जाते हैं. टाइगर हिल के 'वाच टावर' से कंचनजंगा और दूसरी ऊंचीऊंची बर्फीली पहाड़ियों की छटा देखते ही बनती है.

रोप वे: दार्जिलिंग से लगभग 8 किलोमीटर दूर बना 'रंगीत वैली रोप वे' दार्जिलिंग को सिंगला बाजार से जोड़ता है. यह एक सुंदर पिकनिक स्थल है. यहां मत्स्य शिकार की सुविधा भी उपलब्ध है. इस रोप वे पर एकसाथ छः व्यक्तियों की क्षमता वाली केबल कार और ट्राली बनी है, जिस की सहायता से रंगीत नदी को पार किया जाता है. इस ट्राली में बैठ कर नीचे झांकने पर रोमांचकारी दृश्यावलोकन होता है.

तिब्बती हस्तशिल्प केंद्र: नगर से 10 किलोमीटर दूर स्थित तिब्बती हस्तशिल्प केंद्र दार्जिलिंग के हस्तशिल्प केंद्रों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है. इस की स्थापना 1959 में की गई थी. यहां तिब्बती स्त्रीपुरुष हस्तशिल्प की अनेक वस्तुएं बनाते हैं जैसे—ऊनी कालीन, शाल, जैकेट, लैदर कोट, लकड़ी का फर्नीचर आदि. इन वस्तुओं पर कलात्मक सौंदर्य देखते ही बनता है.

लेबांग रेसकोर्स: यह रेसकोर्स अपेक्षाकृत छोटा होते हुए भी विश्व का सर्वोच्च रेसकोर्स है. यहां जिमखाना क्लब द्वारा घुड़दौड़ों का आयोजन

कलिमपोंग स्थित एक बौद्ध मंदिर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाता है. यह दार्जिलिंग से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है.

घम बौद्ध मठ: इस बौद्ध मठ में तथाकथित भगवान बुद्ध की एक प्रतिमा तथा अनेक पुरातन पांडुलिपियों का संग्रह है. बुद्ध प्रतिमा के समक्ष एक दीपक निरंतर प्रज्ज्वलित रहता है. यहां विदेशी पर्यटकों का प्रवेश वर्जित नहीं है. यह बौद्धों का एक तीर्थ माना जाता है.

हैपी वैली टी एस्टेट: यदि आप आधुनिक जीवन की अनिवार्य अंग चाय की निर्माण प्रक्रिया देखना चाहते हैं तो दार्जिलिंग से 3 किलोमीटर दूर स्थित हैपी वैली टी एस्टेट अवश्य जाएं. वहां मशीनों द्वारा चाय बनाने की सारी प्रक्रिया देखी जा सकती है.

धीरधाम मंदिर: रेलवे स्टेशन के निकट बना धीरधाम मंदिर अपनी कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध है. यह काठमांडू के पशुपतिनाथ मंदिर के सादृश्य पर बना है.

नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम: सन 1915 में स्थापित यह म्यूजियम क्षेत्रीय मछली, पक्षी, तितली, रेंगने वाले और अन्य स्तनधारी जीवों के संग्रह संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है. यह चौरास्ते से कुछ ही दूरी पर है. यहां तक टहलते हुए भी पहुंचा जा सकता है.

हिमालय पर्वतारोहण प्रशिक्षण संस्थान: यह संस्थान 1954 में स्थापित किया गया था. यह जिस भवन में स्थित है उसे जवाहर पर्वत के नाम से जाना जाता है. यहां से विश्व की तृतीय सर्वोच्च चोटी कंचनजंगा का मनोरम दृश्यावलोकन किया जा सकता है. यहां पर्वतारोहियों को पर्वतारोहण के लिए प्रशिक्षित किया जाता है. इस में पर्वतारोहण से संबंधित अनेक उपकरणों का भी अच्छा संग्रह है.

पद्मजा नायडू वानस्पतिक उद्यान: पर्वतारोहण संस्थान के रास्ते में ही स्थित यह अभयारण्य वन्य प्राणियों का संरक्षण स्थल बनाया गया है. यहां साइबेरियन ... हिमालयन हिरनों, हाथियों, गेंडों आदि को ... प्राकृतिक वातावरण में विचरण करते ... जा सकता है.

क्या खरीदें?

दार्जिलिंग पर्वतीय एवं तिब्बती ... का विशिष्ट केंद्र है. यहां हस्तशिल्प की ... का अच्छा उत्पादन होता है. अत: यहां ... सज्जा की कलाकृतियां, चूड़ियां, मूर्तियां ... हस्तशिल्प की वस्तुएं खरीदना उपयोगी ... सकता है.

मिरिक

समुद्र तल से 1767 मीटर की ... पर स्थित मिरिक एक सुरम्य पर्वतीय ... है. यहां से कंचनजंगा का रमणीक दृश्य ... देखा जा सकता है. यहां की जलवायु भी ... सुहावनी है.

मिरिक का प्रमुख आकर्षण है ... 1.25 किलोमीटर लंबी सुंदर झील. इस ... मत्स्य शिकार तथा नौका विहार की ... उपलब्ध हैं. मैदानी भागों का विहंगावलोकन करने के लिए 'कावले दारा' विशिष्ट स्थान ... मिरिक में आठ चाय बगान हैं जिन्हें ... प्रबंधकों की अनुमति ले कर देखा जा सकता ... इसी प्रकार 'कारपेट वीविंग ट्रेनिंग सेंटर' ... कालीनों की बुनाई का काम प्रबंधक की अनुमति से देखा जा सकता है.

आरेंज आर्कड्र्स, देवी स्नान, देवनी ... राम धाम आदि भी मिरिक के रमणीक ... स्थान हैं.

गंगटोक

प्रकृति की सुरम्य गोद में बसे गंगटोक की न्यारी ही रमणीयता है. स्वच्छ वायु, हरेभरे वृक्षों, बल खाती लताओं, घुमावदार घाटियों के बीच राडो डेंड्रन, पाइनसेट्टिया सदृश खिले ... जंगली फूलों की रंगत देख कर ऐसा लगता ... मानो राजस्थानी कशीदाकारी में शीशे ...

गंगटोक का शाब्दिक अर्थ है ऊंचे ... सचमुच यह गगनचुंबी हिमालय के पूर्वी ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya

रूमटेक मठ : गंगटोक का यह प्रसिद्ध मठ है.

स्थित सिक्किम राज्य की राजधानी है. यह विश्व की तीसरी सर्वोच्च चोटी कंचनजंगा की तलहटी में बसा है. स्वच्छ नीले आकाश तले कुहरे में लिपटे बादलों के बीच गंगटोक की धवलिमा दूर से ही पर्यटकों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है.

कब जाएं?

गंगटोक पर्यटन की दृष्टि से यहां मार्च से मई और अक्तूबर से मध्य दिसंबर तक ही मौसम अनुकूल रहता है.

कैसे जाएं?

गंगटोक का निकटतम हवाई अड्डा बागडोगरा है, जो दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास, पटना आदि से हवाई मार्ग द्वारा जुड़ा है. कलकत्ता से बागडोगरा के लिए इंडियन एयरलाइंस की नियमित उड़ानें हैं. यहां वायुदूत की सेवाएं भी उपलब्ध हैं. बागडोगरा से गंगटोक तक साप्ताहिक हेलीकाप्टर सेवा भी है.

रेलमार्ग से गंगटोक जाने वाले पर्यटकों को दिल्ली, बंबई, लखनऊ, गुवाहाटी आदि नगरों से चल कर सिलीगुड़ी या न्यूजलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशनों पर अपनी सुविधानुसार उतरना पड़ेगा. गंगटोक से सिलीगुड़ी 114 तथा न्यूजलपाईगुड़ी 125 किलोमीटर दूर है. इन स्थानों से गंगटोक तक की यात्रा बस या टैक्सी द्वारा तय करनी होगी. वैसे दार्जिलिंग, कलिमपोंग आदि नगरों से भी गंगटोक के लिए बस सुविधाएं उपलब्ध हैं.

सिक्किम प्रदेश के पर्यटन विभाग ने भी पर्यटकों के यातायात की समुचित व्यवस्था की है. इस विभाग से जीपें, कारें, वेगोनेट्स लैंडरोज, लक्जरी कोच आदि किराए पर लिए जा सकते हैं.

क्या देखें?

बागडोगरा, सिलीगुड़ी और न्यूजलपाईगुड़ी से सड़क मार्ग से गंगटोक जाने वाले पर्यटकों को इस रोमांचक यात्रा से छः घंटे लगते हैं. इस बीच पर्यटक मार्ग में पड़ने वाली प्राकृतिक सुषमा में डूबा कब गंगटोक पहुंच जाता है, पता ही नहीं चलता. गंगटोक के दर्शनीय स्थल इस प्रकार हैं:

गंगटोक: ठहरने के कुछ स्थान

होटल: नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
नारखिल, फोन : 3186	*550/-*
ताशी डेलेक, महात्मा गांधी मार्ग. फोन : 2991	*200/-*
स्वागत, लाल बाजार रोड. फोन : 2991	*40/-*
तिब्बत, पालजोर स्टेडियम रोड. फोन : 2568	*220/-*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोंगू से कंचनजंगा का भव्य दृश्य दिखाई पड़ता है.

तिब्बती शोध संस्थान: इस संस्थान की स्थापना वर्तमान शताब्दी के छठवें दशक में की गई थी. एक अक्तूबर 1958 को जवाहरलाल नेहरू ने इस का उद्घाटन किया था. इस संस्थान में बौद्ध साहित्य का अच्छा संग्रह है. यहां अनेक दुर्लभ पांडुलिपियां भी सुरक्षित हैं. देशविदेश के अनेक शोधार्थी यहां अध्ययन करने आते हैं. पुस्तकों, पांडुलिपियों के अलावा यहां अनेक प्राचीन चित्र, तंखे, मूर्तियां आदि भी देखी जा सकती हैं.

काटेज इंडस्ट्रीज संस्थान: यह संस्थान सिक्किम सरकार द्वारा संचालित होता है. यहां हस्तशिल्प की वस्तुएं देखी व खरीदी जा सकती हैं, जैसे—ऊनी कालीन, कंबल, शाल, नक्काशीदार मेज आदि. यह संस्थान सरकारी अवकाशों तथा रविवार को बंद रहता है.

रसुक ला खांग: यह चोग्याल राजाओं के जमाने का आकर्षक बौद्ध मठ है. इस में बुद्ध की एक सुंदर मूर्ति की भी प्रतिष्ठा की गई है. मठ के स्तंभों पर पच्चीकारी, दीवारों पर की गई चित्रकारी और स्थानस्थान पर की गई सजावट देख कर मन मुग्ध हो जाता है.

पेमायांगत्से मठ: यह सिक्किम का प्राचीन मठ है. यह मठ दो कारणों से दर्शनीय है, एक तो वास्तुशिल्प के लिए, दूसरे, कंचनजंगा के भव्य दृश्यों के लिए. शैल्पिक दृष्टि से मठ की विशेषता है दीवारों तथा छतों पर धार्मिक कथाओं से संबंधित आकृतियों का चित्रांकन.

इस मठ से सूर्योदय के समय कंचनजंगा का दृश्य देखना बहुत ही भला लगता है. सूर्य की पहली किरण कंचनजंगा की बर्फीली चोटी पर पहले एक तारे सी लगती है. फिर धीरेधीरे उस तारे का आकार बढ़ता जाता है.

रूमटेक मठ: इस मठ का प्रवेश द्वार बालकनी से लटकने वाले याक के बालों से बने परदे से ढका रहता है. इस के द्वार पर अनेक भयावह आकृतियों का अंकन है. छतों का रंग चमकीला है. दीवारों पर भी पौराणिक कथाओं के चित्र अंकित हैं. मठ में कई जगह कमल के चित्र भी बने हैं.

शिलांग

शिलांग सुंदर पहाड़ियों और हरीभरी वादियों का नगर है. कशमीर को छोड़ कर शिलांग की पहाड़ियों जैसी प्राकृतिक छटा भारत में शायद ही कहीं देखने को मिले. शिलांग से माफलांग जाने वाले मोटर मार्ग के दोनों ओर हरियाली से भरे हुए पहाड़ हैं जिन पर बलूत और देवदार के घने जंगल दिखाई देते हैं.

कर्नल गुर्डन ने लिखा है, "यहां से गुजरते समय कोई आसानी से सोच सकता है कि वह स्विटजरलैंड में है. यहां सिर्फ बर्फ से लदी पर्वतों की श्रृंखला की ही कमी रह जाती है." पहाड़ों की एक के बाद एक कितनी ही श्रृंखलाएं दूर क्षितिज तक फैली हुई हैं. इन पर्वत श्रेणियों पर सूर्यास्त के समय बदलते रंग पर्यटक का मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिलांग : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
पाइनवुड अशोक, फोन : 23116	400/-
टूरिस्ट बंगला, पोलो ग्राउंड के पास	20/-

असीम आनंद से भर देते हैं.

यहां के प्राकृतिक दृश्य, यहां के लोगों के मन मोह लेने वाले सीधेसादे व्यवहार, ईमानदारी, मनमौजी स्वभाव तथा अतिथि सत्कार से कोई भी आगंतुक मुग्ध हो जाता है. यहां की जलवायु स्वास्थ्य के लिए अनुकूल है, इसी लिए शिलांग को पूर्व का स्काटलैंड कहा गया है.

समुद्र की सतह से 1,500 मीटर की ऊंचाई पर सुंदरतम प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण शिलांग एक रमणीय पर्वतीय नगर है. शिलांग मेघालय राज्य की राजधानी है. अधिक वर्षा के कारण यहां अनेक सुंदर झरने और छोटीछोटी सरिताएं पहाड़ों के बीच से निकलती हुई बड़ा मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती हैं. अधिक वर्षा के कारण छोटीबड़ी पहाड़ियों पर चारों ओर विस्तृत घनी हरियाली बिखरी पड़ी है.

आदिवासियों का जनजीवन

गारो और खासी पहाड़ियों पर रहने वाली जनजातियों के लोग यहां के आदिम निवासी हैं. खासी स्त्रियां अपने सौंदर्य में अद्वितीय हैं. इन का रंग सुनहरा पीला तथा उन के रूप में एक विलक्षण कोमलता है. गारो और खासी समाजों की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इन के परिवार मातृ सत्तात्मक हैं. इन लोगों के यहां पति को पत्नी के घर जा कर रहना होता है. ससुर की मृत्यु के बाद दामाद अपनी सास से भी विवाह कर सकता है. यह असाधारण प्रथा अन्य किसी जाति में नहीं पाई जाती.

शिलांग की पहाड़ियों का प्राकृतिक सौंदर्य और अद्भुत वैभव यहां के जनजीवन को भी प्रभावित करता है. इन पहाड़ी प्रदेशों के रहने वालों को जीवनयापन के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है. पहाड़ की ढलानों पर खेती करना अत्यंत कठिन कार्य है. ये लोग पहाड़ों को काट कर खेती के योग्य बनाते हैं.

दिन निकलने से पहले ही शिलांग की ग्रामीण नारियां एक समूह बना कर पीने का पानी लाने के लिए घर से निकल पड़ती हैं. वे सैकड़ों फुट नीचे किसी झरने या नदी से पोले बांस की नलियों में दिन भर के उपयोग के लिए पानी भर कर लाती हैं. पानी ले कर आते ही इन्हें घर की रसोई में जुटना पड़ता है. 'झुम' यानी खेत में पुरुषों के साथ ये भी बराबर काम करती हैं. दोपहर का भोजन खेत पर ही किया जाता है. सूर्य डूबने तक खेत में कार्य चलता है. खेतों से लौट कर पुरुष अपने आमोदप्रमोद में मस्त हो जाते हैं. पुरुष 'जू' यानी शराब पीने और गानेबजाने के शौकीन होते हैं. पशुओं की देखभाल तथा घर का सारा कामकाज स्त्रियां ही करती हैं.

पहाड़ों पर इतना कठिन जीवन व्यतीत करने वाले ये लोग संगीत और नृत्य के प्रेमी हैं. जू पान, नृत्य, गान और भोज के सामूहिक कार्यक्रम होते हैं. विशेष अवसरों पर स्त्रियां भी पुरुषों के साथ जू पीती हैं और संगीत एवं नृत्य में समान रूप से भाग लेती हैं. अविवाहित लड़केलड़कियों के प्रणय संबंधों को ये लोग बुरी दृष्टि से नहीं देखते.

शिलांग गार्डन : यहां के हरेभरे प्राकृतिक दृश्य पर्यटकों को आकर्षित करते हैं. ▼

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

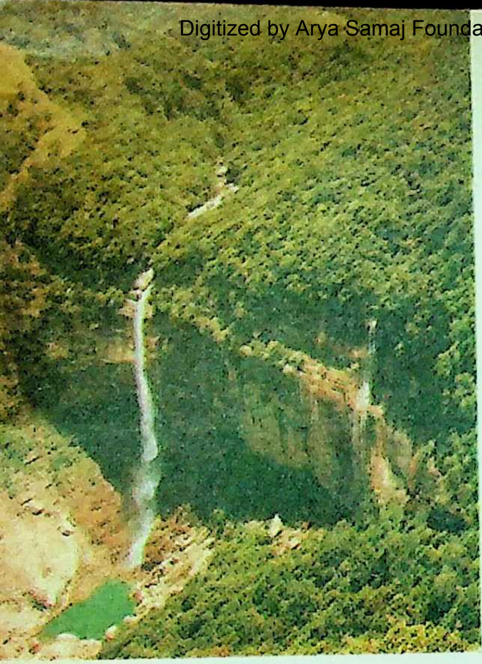

चेरापूंजी के निकट एक मनमोहक जलप्रपात

फसल काटने के समय पहाड़ों की घाटियों और जंगलों के बीच प्रकृति के सान्निध्य में 'वडल' उत्सव बड़े उत्साह से मनाया जाता है, जिस का आयोजन कईकई दिनों तक चलता है. नवयुवकों और नवयुवतियों के नृत्य और गायन का कार्यक्रम सारीसारी रात चलता है. प्रणय और उल्लास के गीत वाद्ययंत्रों के साथ प्रमुख रूप से गाए जाते हैं. यह उत्सव यहां का राष्ट्रीय पर्व है. ये मूल निवासी अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं को अब तक संजोए हुए हैं. गिटार इन का प्रिय वाद्य यंत्र है.

जलवायु

यहां की जलवायु अत्यधिक नम है. मार्च और मई के बीच यहां बहुत अधिक वर्षा होती है. जलवायु की दृष्टि से इस स्थान पर दो ही प्रमुख ऋतुएं होती हैं सर्दी और वर्षा.अक्तूबर से फरवरी तक सर्दी रहती है और बाकी सारे साल वर्षा होती है.

वनस्पति

यहां पर वही पेड़पौधे, वृक्ष, झाड़ियां और लताएं होती हैं, जो अत्यधिक नमी और भारी वर्षा को सह सकती हैं. वनस्पति के विकास के लिए यहां की जलवायु आदर्श है. यहां की वनस्पति की प्रमुख विशेषता यह है कि वह बहुतायत से फलतीफूलती है और वह भांतिभांति की होती है.

यहां की मिट्टी बहुत उपजाऊ है. भारत के सब से अधिक घने जंगल इसी प्रदेश में हैं. यहां के सदाबहार जंगल वर्ष भर हरेभरे रहते हैं.

बेंत और बांस के जंगल भी इस प्रदेश में बहुत होते हैं. ऊंची घनी लताएं जंगलों में जगहजगह देखने को मिलती हैं.

नाहोर के वृक्षों के साथसाथ साल और अगरू के वृक्ष भी पाए जाते हैं. चीड़ के वृक्ष भी यहां की पहाड़ियों में बाहर से ला कर लगाए गए हैं.

पशुपक्षी

सुनहरे बालों वाली बिल्ली यहां की विशेषता है, जो केवल यहीं पाई जाती है. यहां पाए जाने वाले पक्षियों की विशेषता यह है कि यहां अधिक वर्षा और अधिक घने वनों के कारण पक्षियों का रंग कुछ अधिक काला हो जाता है.

उद्योग

यहां पर बांस अधिक होने के कारण यहां की बांस की बनी हुई वस्तुएं बहुत सुंदर और कलात्मक होती हैं. यहां की हर स्त्री कपड़ा बुनने का काम जानती है. कपड़े पर सुंदर कलात्मक काम होता है.

कैसे पहुंचें?

गुवाहाटी तक रेल मार्ग है. गुवाहाटी रेल का बहुत बड़ा केंद्र है. गुवाहाटी से शिलांग के लिए दिन भर बस तथा टैक्सी सेवा उपलब्ध है. गुवाहाटी से शिलांग जाने के लिए कई डीलक्स तथा वातानुकूलित बसें भी मिलती हैं. गुवाहाटी से शिलांग पहुंचने में बस को करीब साढ़े 3 घंटे लगते हैं. पर्यटकों के लिए नगर में घूमने के लिए बस सुविधा उपलब्ध है.

गुवाहाटी और शिलांग के बीचोंबीच नांगपो नामक स्थान पड़ता है, जहां स्थानीय फल तथा सब्जियां खूब मिलती हैं. इस स्थान के आसपास पहाड़ के ढलानों में वर्षा की ऋतु में अनन्नास की खेती बहुतायत से होती है. केला भी यहां बहुत पैदा होता है.

ठहरने का स्थान

शिलांग में बहुत से होटल, टूरिस्ट लाज, सरकारी गेस्ट हाउस तथा सर्किट हाउस हैं. सस्ते तथा महंगे दोनों तरह के होटलों की सुविधा उपलब्ध है. प्रति व्यक्ति 5 रुपए से ले कर महंगे से महंगा खाना बाजार में मिल जाता है. टूरिस्ट बंगलों का किराया भी अधिक नहीं है. शिलांग में हर तरह की आर्थिक स्थिति वाले लोग रह सकते हैं और प्रकृति के सौंदर्य में जीवन की भागदौड़ से दूर कुछ दिन ठहर कर सुस्ताने का सुख प्राप्त कर सकते हैं.

दर्शनीय स्थल

प्रकृति एवं जनजीवन की विविधता के साथ ही शिलांग में आधुनिक जीवन की ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसुविधाएं उपलब्ध हैं. यहां का गोल्फ मैदान बहुत बड़ा है, जिस में अक्तूबर में खेल का आयोजन किया जाता है. बड़ा बाजार सभी आधुनिक वस्तुओं से भरा रहता है, जिस में काफी रात तक चहलपहल रहती है. वार्ड झील एक रमणीय सरोवर है जिस में नाव चलाने की सुविधा उपलब्ध है. लेडी हैदरी पार्क भारत के सुंदर उद्यानों में से एक है. हजारों किस्म के पेड़पौधों और फूलों से यह उद्यान सुसज्जित है. हरी मुलायम घास के मैदान दूरदूर तक फैले हुए हैं.

मार्गरेट और हाथी नामक जलप्रपात शिलांग से कुछ ही किलोमीटर दूर हैं. बहुत बड़ा झरना बड़ी ऊंचाई से नीचे घाटी में गिरता है. झरने के नीचे तक सीढ़ियां बनी हुई हैं. घने जंगलों और फूलदार वनस्पतियों के बीच गिरता हुआ यह झरना बहुत ही सुंदर लगता है.

शिलांग पीक एक दर्शनीय चोटी है जो शिलांग शहर से 12 किलोमीटर दूर है. समुद्रतल से इस की ऊंचाई 1,960 मीटर है. इस चोटी से दूरदूर तक की पहाड़ियां और घाटियां दिखाई देती हैं. यहां पर खड़े हो कर देखने से नीचे घाटी में बसे शिलांग नगर का दृश्य बड़ा भव्य दिखाई देता है.

चेरापूंजी

चेरापूंजी शिलांग से पहाड़ के ऊंचेनीचे रास्ते से 55 किलोमीटर दूरी पर स्थित है. यहां पर संसार में सब से अधिक वर्षा होती है. यहां कई छोटेछोटे झरने हैं.

जकरम

यह गरम पानी का झरना शिलांग से 64 किलोमीटर दूर है. इस पानी में रोगों को दूर करने की क्षमता है, ऐसा कहा जाता है.

मांफलांग

यहां के बागबगीचे बहुत ही सुंदर हैं. यहां अनेक प्रकार की वनस्पतियां होती हैं

—शारदा त्रिवेदी

इम्फाल

मणिपुर की छोटीबड़ी पहाड़ियों पर उगे हरेभरे पेड़ पौधे, उन के ऊपर उमड़ते-घुमड़ते श्वेत श्याम व मूंगिया रंगों के आवारा सैलानी बादल, पर्वतों का वक्षस्थल विदीर्ण कर झरने वाले झागदार झरने, ढालों पर बने खूबसूरत खिलौने से छोटेछोटे मकान, रीतिकालीन नायिकाओं सी इठलाती बलखाती नदियां, टेढ़ीमेढ़ी राहों के किनारों पर खिले रंगबिरंगे फूल और उन्हीं की तरह कोमल, उछलतीकूदती व नाचतीगाती सुकुमारियां, तितलियों के पंखों से बहुरंग ऊन के वस्त्र, कमर के नीचे तक लहराती केशराशि देख कर यदि ब्रिटिश वायसराय और भारत के गवर्नर जनरल लार्ड इरविन ने मणिपुर को 'भारत का स्विटजरलैंड' कहा हो, तो क्या आश्चर्य.

कैसे पहुंचे?

मणिपुर की राजधानी तथा मणिपुर पर्यटन का केंद्र है इम्फाल. अतः पर्यटकों को इम्फाल तक हवाई सुविधा उपलब्ध रहती है. हवाई जहाज से मणिपुर जाने के इच्छुक पर्यटक कलकत्ता से सिल्चर और अगरतला हो कर इम्फाल तक जा सकते हैं. कलकत्ता से इम्फाल के लिए प्रतिदिन हवाई जहाज आतेजाते हैं.

इम्फाल से दीमापुर का निकटतम रेलवे स्टेशन 125 किलोमीटर दूर है. मणिपुर जाने वाले पर्यटक कलकत्ता, गुवाहाटी, तिनसुकिया आदि स्थलों से रेलगाड़ी द्वारा दीमापुर तक जा सकते हैं. दीमापुर से कोहिमा तक 'नागालैंड स्टेट ट्रांसपोर्ट' की बसें चलती हैं. वैसे 'मणिपुर स्टेट ट्रांसपोर्ट' की भी कुछ बसें दीमापुर से इम्फाल तक आतीजाती हैं. इस के अतिरिक्त दीमापुर से इम्फाल तक टैक्सियां भी चलती हैं, किंतु इन में पैसा ज्यादा खर्च होता है.

मणिपुर भ्रमण के लिए 'मणिपुर स्टेट ट्रांसपोर्ट' में 'टूरिस्ट कार' की व्यवस्था है. इस के लिए पर्यटक असिस्टेंट मैनेजर, ट्रैफिक, मणिपुर स्टेट ट्रांसपोर्ट, इम्फाल से संपर्क कर सकते हैं.

आवासीय व्यवस्था

इम्फाल में ठहरने के लिए अनेक होटल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी परंपरागत वेश... मणिपुरी युवती कपड़ा ... हुई.

आधुनिक सुखसुविधाओं से संपन्न हैं. जैसे मणिपुर होटल, एंबेसेडर, डिपलोमेट, एवेन्यू, नटराज आदि.

होटलों के अलावा धर्मशालाओं तथा डाक बंगलों में भी ठहरा जा सकता है.

भाषाएं

भारत जैसे विशाल देश में पर्यटन के लिए निकले पर्यटकों को पर्यटन स्थल पर प्रायः भाषा संबंधी कठिनाई का सामना करना पड़ता है. दूरदराज से आए पर्यटक स्थानीय बोली के कुछ प्रचलित और कामचलाऊ शब्द समझ लें, ताकि धोखाधड़ी, उपहास आदि से बच सकें.

साथ ही पर्यटकों को पहले से यह भी पता रहना चाहिए कि जहां के भ्रमण के लिए वे जा रहे हैं, वहां कौनकौन सी बोलियां और भाषाएं बोली और समझी जाती हैं. इस दृष्टि से पर्यटकों की जानकारी के लिए निवेदन है कि मणिपुर की स्थानीय बोली है मणिपुरी. किंतु वहां बंगाली, असमिया, हिंदी, अंगरेजी बोलियों व भाषाओं को भी अच्छी तरह बोला व समझा जाता है.

दर्शनीय स्थल

भारत के उत्तरपूर्वी सीमांत पर चमकती हुई उज्ज्वल मणि के समान मणिपुर प्रदेश और उस की पहाड़ियों के मध्य घाटी में बसा इम्फाल नगर ऐसा लगता है जैसे सोने की अंगूठी में किसी ने नगीना जड़ दिया हो. इस छोटे से नगर में आप जिधर भी निकल जाएंगे, आप की आंखों को ठंडक ही मिलेगी. फिर भी कुछ प्रमुख स्थल ऐसे हैं, जहां आप को अवश्य जाना चाहिए.

इमा बाजार : इम्फाल ... के मध्य में स्थित इमा ... हस्तकला एवं शिल्प की ... का विश्वविख्यात बाजार ... इस बाजार की सब से ... विशेषता यह है कि यहां ... पुरुष दुकानदार नहीं हैं ... बिरंगे फनिक (मेखला) ... चादर ओढ़े, होंठों पर पान ... लाली, ललाट पर ... वैष्णवी चंदन लगाए ... महिलाएं हस्तशिल्प के ... कलात्मक वस्त्रों की ... सजाए बैठी दिखाई देंगी.

गोविंदजी का मंदिर :

यह मंदिर मणिपुर ... परिष्कृत कलात्मक चेतना का प्रतीक ही ... सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र भी है ... प्रतिदिन नृत्य, संगीत, रासलीला आदि ... आयोजन होता है. 'लाई हराऔबा नृत्य ... की परंपरागत नृत्य शैली है, जिस में ... समग्र कलात्मक चेतना, आध्यात्मिक ... धार्मिक और नैतिक मूल्यों की स्वाभा... अभिव्यंजना होती है.

मणिपुर स्टेट म्यूजियम : यह म्यूजियम ... पोलोग्राउंड में स्थित है. इस में निशुल्क ... की सुविधा है. यह म्यूजियम रविवार तथा ... सरकारी अवकाशों को छोड़ कर प्रतिदिन ... रहता है.

विष्णुपुर : इम्फाल के दक्षिणपश्चिम ... स्थित विष्णुपुर, विसेनपुर के नाम से भी ... जाता है. यहां विष्णु का एक भव्य मंदिर है ... की स्थापना 1467 ई. में राजा कियंबा ने ... यह नगर स्टोनवेयर उद्योग के लिए भी ... है.

लोकताक झील : इम्फाल से करीब ... किलोमीटर दूर पूर्वी भारत की सब से बड़ी ... लोकताक का अपना निजी वैशिष्ट्य है ... किलोमीटर के क्षेत्र में फैली यह झील ... की सुषमा और सैलानियों को आकर्षित ही ... करती, बल्कि वहां के आर्थिक जीवन का ... भी है.

झील के मध्य में एक छोटी सी पहाड़ी ... निर्मित 'टूरिस्ट होम', झील के प्रशांत ... में तैरती नौकाएं, आसपास फैली हरियाली ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंफाल : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
अशोक, दीमापुर रोड. फोन : 20459	200 -

यहां एक ऐसा नैसर्गिक व मनोरम दृश्य उपस्थित होता है, जो आप को बारबार आमंत्रित करेगा.

मोयरांग : लोकताक झील के निकट ही मोयरांग नामक एक कसबा है. यही मणिपुर के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य का पीठ स्थान माना जाता है. यहीं खबा और थोइबो की प्रेमकथा ने जन्म लिया था, जिस पर मणिपुरी साहित्य में अनेक काव्य, नाटक, उपन्यास, लोकगीत आदि की सर्जना हुई है. यहां वनदेव का एक प्राचीन मंदिर भी है. एक प्रकार से यह स्थल मणिपुर संस्कृति की अनेक लोककथाओं, किंवदंतियों, मिथकों, लोकगीतों की जन्मभूमि रही है.

संस्कृति

यों तो मणिपुर की अपनी निजी संस्कृति रही है. किंतु पिछले कुछ वर्षों से भारत के अन्य राज्यों से आ कर बसे व्यापारियों ने उसे प्रदूषित करना शुरू कर दिया है. फिर भी मणिपुर की संस्कृति की अपनी विशिष्टताएं हैं, अपनी पहचान है.

मणिपुरी नारियां पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर जीवन के हर क्षेत्र में आगे हैं. वे स्वावलंबन और परिश्रम की जीतीजागती मिसाल हैं. उन का सामाजिक जीवन कुंठितलुंठित नहीं, स्वच्छंद है. उन्हें अपना जीवनसाथी चुनने की पूरी स्वतंत्रता है.

मणिपुर में अधिकतर नारियां अपने व्यावहारिक जीवन के सभी वस्त्र तैयार करती हैं. ये साड़ी नहीं, फनिक (मेखला) पहनती हैं. फनिक भी ऐसे, जिस के समक्ष आधुनिक फैशन के वस्त्र भी शरमा जाएं. उन की सुंदरता और टिकाऊपन अद्वितीय है. एकएक फनिक की कीमत 20-25 रुपयों से ले कर 1,000 रुपए तक होती है. अधिक मूल्यवान फनिकों की कलात्मकता देखते ही बनती है.

नृत्य और संगीत तो यहां की जीवनधारा में इस प्रकार रचबस गया है कि कोई भी सामाजिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम इन के बिना अधूरा सा ही लगता है. इसी प्रकार रामलीला और संकीर्तन यहां की जीवन पद्धति का अविच्छिन्न अंग बन गया है.

चैत्रमास की पूर्णिमा को बसंतरास और कार्तिक पूर्णिमा को महारास के साथसाथ कुंजरास, उलखरास गोष्ठरास आदि बहुत प्रसिद्ध है.

मणिपुर की संस्कृति में एक बात जो सर्वाधिक खटकती है, वह है राधाकृष्ण की युगलोपासना के प्रति अंधविश्वास. हर आंगन में तुलसी का चौरा और राधाकृष्ण का छोटा सा मंदिर मिल जाएगा. हर महल्ले और हर गांव में एकदो बड़े मंदिर भी मिल जाएंगे, जहां सुबहशाम भजनकीर्तन में तथाकथित भक्तजन अपना बहुमूल्य समय बरबाद करते हैं.

खरीदारी

मणिपुर से हस्तशिल्प की रंगबिरंगी चादरें, बिछावन, मेजपोश, स्कार्फ, शाल, साड़ियां आदि खरीदी जा सकती हैं.

—अनिल कुमार सलिल

भुवनेश्वर, कोणार्क व पुरी

भुवनेश्वर, कोणार्क एवं पुरी उड़ीसा के प्रमुख पर्यटन स्थल ही नहीं, भारतीय स्थापत्य एवं वास्तुकला के ऐतिहासिक केंद्र भी हैं. देशविदेश से आने वाले हजारों पर्यटक यहां नागर शैली के मंदिरों के अद्भुत शिल्प को देख कर दांतों तले उंगली दबा लेते हैं.

उड़ीसा पर्यटन के दौरान भुवनेश्वर को केंद्र बनाया जा सकता है. भुवनेश्वर में ठहर कर एक दिन में कोणार्क और दूसरे दिन में पुरी का पर्यावलोकन किया जा सकता है. उसी प्रकार एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन में भुवनेश्वर का भ्रमण करना उचित रहेगा.

कब जाएं?

यों तो उड़ीसा भ्रमण के लिए वर्ष भर मौसम अनुकूल रहता है. किंतु अगस्त से मार्च पर्यंत सर्वोत्तम समय माना गया है.

कैसे जाएं?

भुवनेश्वर उड़ीसा की राजधानी है, अतः यह रेल, वायु और सड़क मार्गों द्वारा देश के प्रायः सभी प्रमुख नगरों से जुड़ा है. हवाई जहाज से जाने वाले पर्यटक हैदराबाद, कलकत्ता, बंबई, दिल्ली, मद्रास आदि नगरों से इंडियन एयरलाइंस की उड़ानों द्वारा भुवनेश्वर पहुंच सकते हैं.

भुवनेश्वर के साथसाथ पुरी के लिए भी सीधी रेल सेवाएं हैं. रेलमार्ग से पुरी पहुंच कर भी बस द्वारा भुवनेश्वर पहुंचा जा सकता है. यह दूरी मात्र दो घंटों में तय हो जाती है. निकटवर्ती प्रमुख नगरों से भुवनेश्वर के लिए सीधी बस सेवाएं भी हैं.

भुवनेश्वर से पुरी और कोणार्क के लिए नियमित बसें और टैक्सियां चलती हैं. इस के अलावा पर्यटन बसों की भी अच्छी व्यवस्था है, सुबह पुरी या कोणार्क जा कर शाम तक भुवनेश्वर वापस लौटा जा सकता है.

भुवनेश्वर

उड़ीसी शिल्पकला के लिए भुवनेश्वर विश्व प्रसिद्ध है. यह कला यहां के मंदिरों में सर्वत्र विकीर्ण है. यहां मंदिरों की बहुतायत को देख कर

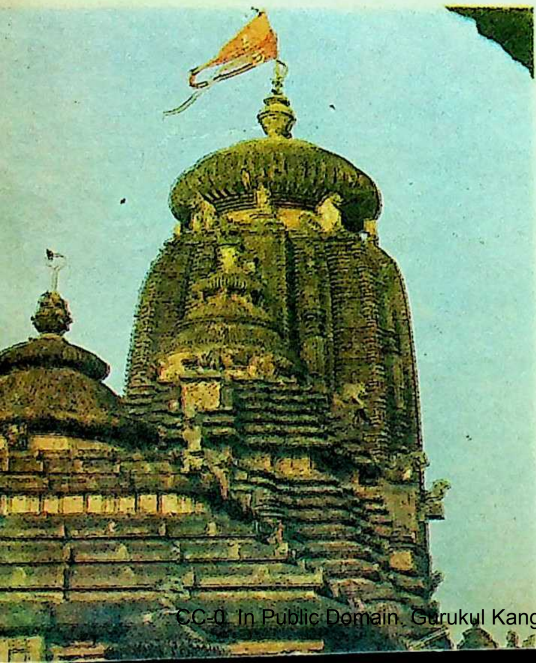

भुवनेश्वर : ठहरने के कुछ स्

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनु... किराया...
स्वस्ति प्रा. लि., 103, जनपथ. फोन : 56617	
कलिंग अशोक, गौतम नगर. फोन : 53318	
उपेंद्र, रूपाली स्क्वेयर, साहिद नगर. फोन : 53637	
जौली लाज, एल/3, कल्पना स्क्वेयर. फोन : 55041	
सेंट्रल लाज, 147, अशोक नगर,	
जनपथ, 29, जनपथ, बापूजी नगर. फोन : 51147	
सफारी इंटरनेशनल, 721, रसूलगढ़ फोन : 53443	

ही इसे मंदिरों का शहर कहा गया है. ... के इन मंदिरों में यहां की विगत नौ ... इतिहास सिमटा हुआ है.

मंदिरों के अलावा भुवनेश्वर में ... अनुपम सौंदर्य भी बिखरा पड़ा है, जहां ... अपनी सारी थकान मिटा कर नेत्रों और ... शांति प्रदान कर सकते हैं. कतिपय ... दर्शनीय स्थल इस प्रकार हैं:

लिंगराज मंदिर: यह मंदिर ... शिल्पकला का बेहतरीन नगीना है ... भुवनेश्वर मंदिर भी कहते हैं. मंदिर की ... को तराश कर अनेक मूर्तियों में नक्काशी ... है. भीतर एक विशाल शिवलिंग ... किया गया है. देवल, मोहन, भोग और ... के चार भाग हैं.

नंदन कानन पार्क: भुवनेश्वर का ... कानन पार्क 400 हेक्टेयर में फैला है ... भुवनेश्वर से 12 किलोमीटर दूर है. यह ... वृक्षों से घिरा वनीय क्षेत्र है, जहां ... चिड़ियाघर वन्य पशु अभयारण्य भी है ... मध्य में एक छोटी सी झील भी है. यहां ... स्वच्छंद विचरण करते देखा जा सकता है.

राज्य संग्रहालय: यह संग्रहालय ... पुराने भुवनेश्वर के बीच स्थित है. इस ... मूर्तियां, सिक्के, शिलालेख, ताम्रपत्र, ... प्राचीन अस्त्रशस्त्रों का अच्छा संग्रह है.

उड़ीसी शिल्पकला का बेहतरीन ... लिंगराज मंदिर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

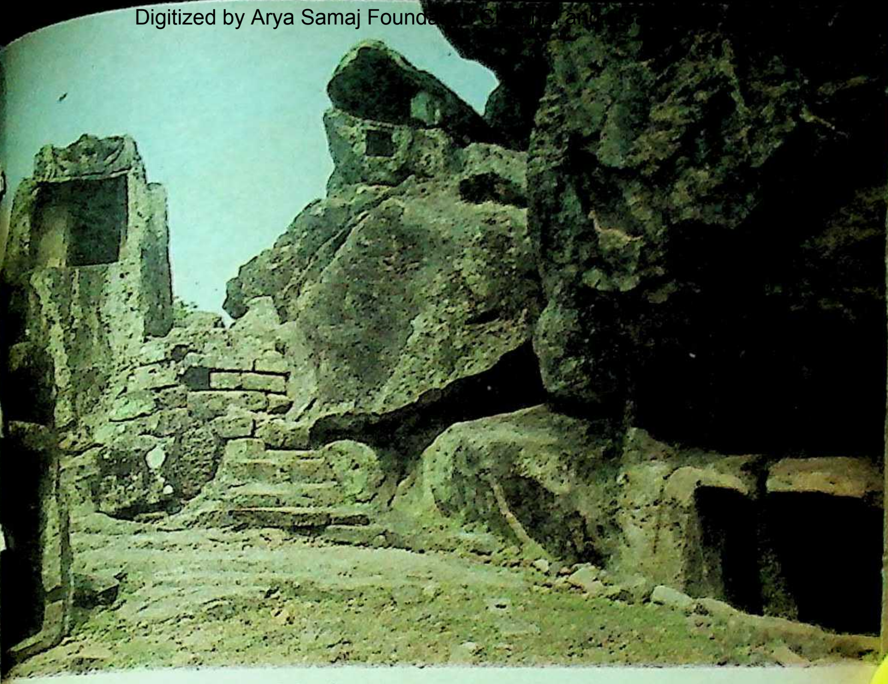

पहाड़ियों को काट कर बनाई गई उदयगिरि की गुफाएं दर्शनीय हैं.

बिंदुसागर झील: यों तो भुवनेश्वर में अनेक तालाब और झीलें हैं, मगर उन सब में बिंदुसागर झील सर्वाधिक बड़ी है तथा भुवनेश्वर के प्राकृतिक सौंदर्य में चार चांद लगाती है. बताया जाता है कि प्राचीन काल में इस झील के चारों ओर 7000 मंदिर थे.

धौली: इस रमणीय पहाड़ी पर एक बौद्ध स्तूप बना है, जिस के चारों ओर गौतम बुद्ध की चार प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं. इसी पहाड़ी के पास कलिंग का इतिहास प्रसिद्ध युद्ध हुआ था और यहीं सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ था.

उदयगिरि की गुफाएं: भुवनेश्वर से करीब 5 किलोमीटर पश्चिमोत्तर में स्थित उदयगिरि की पहाड़ियों में बौद्ध गुफाएं भी दर्शनीय हैं. ये गुफाएं पहाड़ियों को काटकाट कर निर्मित की गई हैं. इन गुफाओं में बौद्ध भिक्षु रहते थे.

खंडगिरि की गुफाएं: उदयगिरि की पहाड़ियों के निकट ही खंडगिरि की गुफाएं हैं. यह स्थान जैन तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है. इन गुफाओं में जैन साधु रहते थे. ये गुफाएं भी पहाड़ी को काट कर बनाई गई हैं. यहां पारसनाथ का मंदिर तथा एक ही पत्थर को तराश कर गढ़ी गई 24 तीर्थंकरों की मूर्तियां दर्शनीय हैं.

पुरी

दूसरे दिन पुरी का भ्रमण किया जा सकता है. भुवनेश्वर से पुरी केवल 35 किलोमीटर दूर है. यह दूरी रेल या सड़क किसी भी मार्ग से तय की जा सकती है.

भारत के पूर्वी समुद्र तट पर बसा पुरी भारत के चार धामों में से एक है. पुरी की प्रसिद्धि का एक मात्र आधार है जगन्नाथ का मंदिर. अपनी स्थापत्य कला एवं धार्मिक महत्ता के कारण यह मंदिर विश्व प्रसिद्ध है. यहां तक कि जगन्नाथ और पुरी एकदूसरे के पर्याय बन गए हैं और लोग पुरी को 'जगन्नाथपुरी' ही कहने लगे हैं.

क्या देखें?

जगन्नाथ मंदिर: इस मंदिर के रास्ते पर सड़क के दोनों ओर कंठी मालाएं, फूल मालाएं, प्रसाद, नारियल, चंदन, दिया बत्ती आदि पूजा सामग्री की दुकानें सजी हैं. करीब पांच सात मिनट चलने पर सड़क के आखिरी पश्चिम भाग में भव्य कलात्मक एवं ऐतिहासिक जगन्नाथ मंदिर है.

जगन्नाथ का मंदिर 214 फुट ऊंचा है. मंदिर को समुद्री हवाओं के प्रकोप से बचाने के लिए तत्कालीन सम्राटों ने मंदिर की दीवारों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

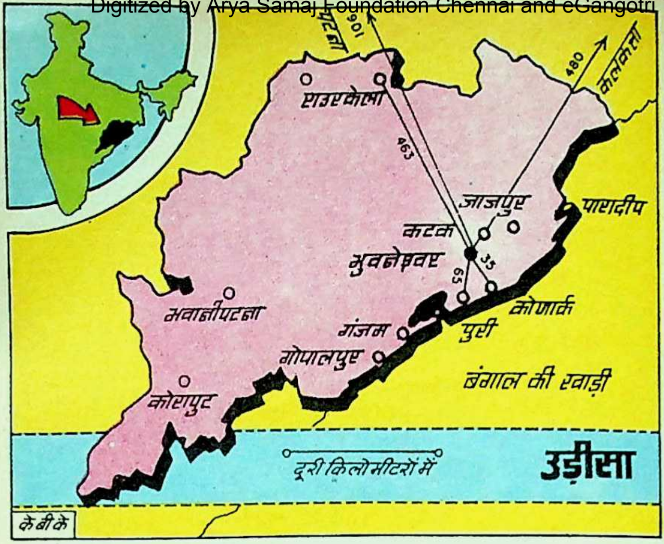

रासायनिक पलस्तर कराया था. मंदिर के चार प्रवेश द्वार हैं. पूर्वी द्वार के बाहर दोनों तरफ दो सिंह मूर्तियां हैं. इसी से इसे सिंह द्वार कहा जाता है. सिंह द्वार के आगे काले रंग के एक ही पत्थर का 35 फुट ऊंचा, 16 फलक वाला सुंदर, गरुड़ स्तंभ खड़ा है. इस के सिर पर सूर्य के सारथी अरुण की मूर्ति है.

जगन्नाथजी का मुख्य मंदिर आगे की ओर है. मुख्य मंदिर के आगे पूरब की ओर नृत्य मंदिर, भोग मंदिर तथा जगमोहन परस्पर मिले हुए हैं. जगन्नाथ का मंदिर भंगवंशीय शासक अनंग-भीम ने बनवाया था. मंदिर की स्थापत्य कला दर्शनीय है. आराधना मंदिर में प्रतिमाओं के साथसाथ चित्र भी बने हैं. मंदिर के ऊपर कटि स्थान पर दक्षिण की कोठारी में कलयुग की प्रतिमा और शिखर पर नील चक्र एवं पताका लगी है.

मंदिर के भीतर पश्चिम की ओर 4 फुट ऊंची और 16 फुट लंबी रत्नवेदी है. ऊपर की तरफ लंबा सुदर्शन चक्र है. इसी के दक्षिण में जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की प्रतिमाएं हैं. मंदिर के अहाते में लगभग 51 स्थान और मंदिर है.

कोणार्क

पुरी की तरह कोणार्क पर्यटन का कार्यक्रम भी भुवनेश्वर में ठहर कर बनाया जा सकता है. भुवनेश्वर से कोणार्क के लिए केवल हवाई मार्गों तथा सड़क मार्गों द्वारा ही पहुंचा जा सकता है.

कोणार्क भुवनेश्वर
65 किलोमीटर
है. कोणार्क
तीय तथा विदेशी
नियों के आकर्षण
एकमात्र केंद्र
मंदिर. यह मंदिर
पत्य कला का
दस्तावेज है.
शिल्पकला की
विशेषता है
सूक्ष्मता. दीवारों
सर्वत्र कला की
बारीकी लक्षित
सकती है. पशु
देवीदेवताओं,
अप्सराओं,
अद्वितीय पच्चीकारी
कर पर्यटकों का

उसी में रम जाता है. प्रत्येक मूर्ति की विशेषताएं हैं. मानव जीवन की विभिन्न ...नाओं को यहां केवल चित्रित ही नहीं ... है बल्कि उन में मानवीय भावों की ... झलक भी दर्शनीय है.

पुरुषों के साथसाथ यहां नारी ... विभिन्न रूप अवलोकनीय हैं. नरनारी की ... काम मुद्राएं देख कर लगता है, मानो ... के 'काम सूत्र' को ही साकार रूप दिया ...

जगन्नाथ मंदिर : स्थापत्य कला दर्शनीय है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

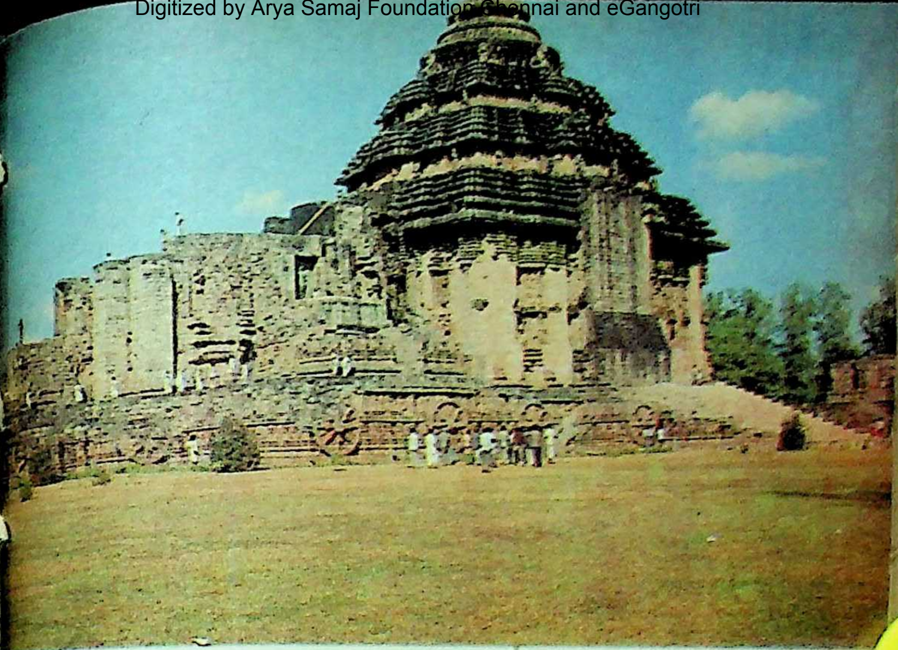

कोणार्क का सूर्य मंदिर : सूर्य के रथ की कल्पना का साकार रूप.

अथवा अजंताएलोरा और खजुराहो का ही यह दूसरा रूप हो. इस शिल्प को कामभावना की दृष्टि से नहीं, बल्कि कला के लालित्य से देखना चाहिए तभी शैल्पिक सौंदर्य की सच्ची अनुभूति हो सकती है.

पुरी : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया: डबल
शर्मा लाजिंग, ग्रांड रोड, कृष्ण सिनेमा के पास. फोन : 3212	35/-
रोहित, स्वर्गद्वार रोड, समुद्र तट, अरविंद स्कूल के पास. फोन : 3267	50-80/-
शंकर इंटरनेशनल, चक्रतीर्थ रोड. फोन : 2917	60-120/-
पंथ भवन, स्वर्गद्वार समुद्र तट. फोन : 2507	150/-
जेड होटल, चक्रतीर्थ रोड. फोन : 2554	150/-

कोणार्क के विशाल सूर्य मंदिर के तीन प्रवेशद्वार हैं और संपूर्ण मंदिर के भी तीन ही भाग हैं. मंदिर का सामने वाला भाग नृत्य मंदिर के नाम से जाना जाता है. बीच में जगमोहन मंदिर है, जिसे आराधना मंदिर भी कहते हैं. तत्पश्चात गर्भगृह है.

नृत्य मंदिर और गर्भगृह समय के थपेड़े खाखा कर अब जीर्णशीर्ण हो गए हैं. हां, जगमोहन मंदिर अभी भी ठीक स्थिति में है.

यह समग्र मंदिर सूर्य के रथ की कल्पना का साकार रूप है, जिसे सात घोड़े खींचते हुए प्रतीत होते हैं. इस रथ में 2.94 मीटर व्यास के 12 विशाल और आकर्षक पहिए बने हैं.

मंदिर का मुख्य मार्ग 'विमान' के नाम से जाना जाता है. मुख्य द्वार पर दो घोड़ों और दो हाथियों की आकृतियां हैं.

इस मंदिर में मुख्य कठिनाई तब आती है जब बच्चे साथ हों, गाइड बेचारा भी कान में फुसफुसा कर रह जाता है.

कोणार्क म्यूजियम: कोणार्क के सूर्य मंदिर के निकट ही भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा स्थापित कोणार्क म्यूजियम भी दर्शनीय है. इस में अनेक दुर्लभ कलाकृतियों का संग्रह किया गया है.

सागर तट: कोणार्क के सूर्य मंदिर से तीन किलोमीटर दूर है यहां के सुरम्य एवं रेतीले सागर तट. यहां पिकनिक का आनंद लिया जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ीसा पर्यटन की स्मृतियों को दीर्घजीवी बनाने के लिए यदि आप कुछ खरीदारी करना चाहते हैं तो स्थानीय हस्तशिल्प की चीजें खरीद कर आप अपनी मनोकामना पूर्ण कर सकते हैं.

पुरी में तारकशी के आभूषण, सोपस्टोन को तराश कर बनाई गई मूर्तियां, लकड़ी के रंगबिरंगे खिलौने, टोकरियां, चटाइयां आदि मुख्य बाजार तथा हस्तशिल्प एंपोरियमों से खरीदी जा सकती हैं.

इसी प्रकार कोणार्क के मुख्य बाजार से हाथ की बनी छतरियां, दीवार सज्जा की वस्तुएं आदि खरीद सकते हैं.

यदि आप के पास इन स्थानों से मनपसंद चीजें खरीदने का समय नहीं बचता तो आप भुवनेश्वर के हस्तशिल्प केंद्रों से भी खरीदारी कर सकते हैं.

कटक

भुवनेश्वर से लगभग 35 किलोमीटर उत्तर में कटक महानदी के त्रिकोण पर स्थित उड़ीसा का सब से प्राचीन नगर है. यह काफी समय तक उड़ीसा प्रांत की राजधानी रहा है. महानदी के तट पर यहां के प्राचीन बाराबती किले के अवशेष अब भी देखे जा सकते हैं. हिंदूकाल में यह किला काफी महत्त्वपूर्ण था लेकिन बाद में लालबाग महल बन जाने से बाराबती किले का महत्त्व घट गया.

ऐतिहासिक ही नहीं, सांस्कृतिक दृष्टि से भी कटक उड़ीसा का विशिष्ट पर्यटन स्थल है. यहां पगपग पर उडीसी संस्कृति के दर्शन होते हैं. कटक का चांदी की फिलगरी का काम काफी प्रसिद्ध है.

हैदराबाद

हैदराबाद एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है. यहां प्राकृतिक सौंदर्य के साथसाथ मध्यकालीन हिंदुस्तानी, अरबी, मुगल और ब्रिटिश शासन काल की स्थापत्य कला के संगम का अद्भुत सौंदर्य देखते ही बनता है. वर्तमान हैदराबाद दो नगरों—पुराने हैदराबाद और सिकंदराबाद का संगम है, जिन्हें लगभग डेढ़ किलोमीटर लंबी हुसैन सागर झील अलग करती है.

प्राचीन काल में हैदराबाद को भाग्यनगर के नाम से भी पुकारा जाता था. भाग्यनगर की स्थापना 1590 में कुतुबशाही साम्राज्य के पांचवें बादशाह मुहम्मदअली कुतुबशाह ने की. वह भाग्यमती नामक एक नर्तकी के प्रेम में दीवाना था. उसी के 'प्रेम स्मारक' रूप में उस ने यह नगर बसाया था. कालांतर में भाग्यमती के रानी बन कर महलों में आने पर उसे 'हैदर महल' की उपाधि से विभूषित किया गया. तब से भाग्यनगर का नाम भी हैदराबाद हो गया.

आज हैदराबाद देश का पांचवां बड़ा नगर, शिक्षा प्रशिक्षण का महत्त्वपूर्ण केंद्र और विशिष्ट पर्यटन स्थल है.

कब जाएं?

हैदराबाद पर्यटन के लिए नवंबर से मार्च तक का समय उपयुक्त रहता है.

कैसे जाएं?

हैदराबाद देश के सभी प्रमुख नगरों से वायु एवं सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा है. मद्रास, बंबई, बंगलौर, दिल्ली, कलकत्ता, नागपुर, भुवनेश्वर, विजयवाड़ा आदि नगरों से हैदराबाद के लिए नियमित हवाई उड़ानें उपलब्ध हैं.

देश के प्रायः सभी प्रमुख नगरों से हैदराबाद के लिए सीधी रेलगाड़ियां चलती हैं. दिल्ली, बंबई, बंगलौर, कलकत्ता, मद्रास आदि दूसरे केंद्रों से हैदराबाद जाने वाले पर्यटक रेलमार्ग से भी जा सकते हैं. लेकिन इस यात्रा के लिए उन्हें पहले से आरक्षण करा लेना चाहिए. आसपास के नगरों से हैदराबाद के लिए राज्य सरकार की बसों की अच्छी सुविधा है.

क्या देखें?

चारमीनार: हैदराबाद के व्यस्ततम बाजार में स्थित विश्वप्रसिद्ध चारमीनार ताजिया पद्धति पर निर्मित है. यह 1591 में सुलतान मुहम्मद कुली द्वारा बनवाई गई थी. इस में चार कमानीदार दरवाजे हैं. इस इमारत की दूसरी मंजिल पर एक छोटी सी मसजिद है, जिसे ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

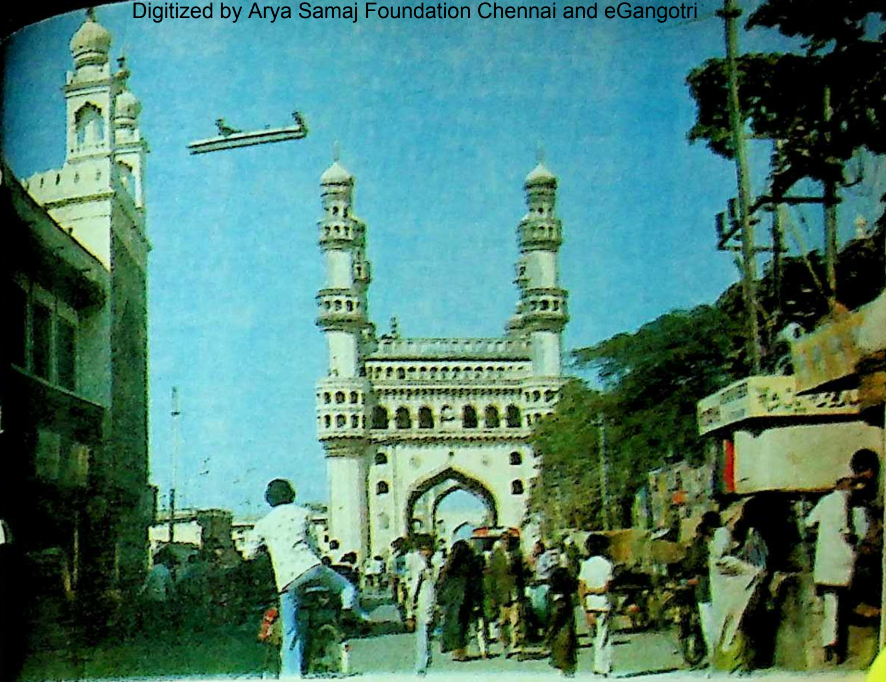

विश्व प्रसिद्ध चारमीनार : ताजिया पद्धति पर निर्मित.

तरफ से चार मीनारों ने घेर रखा है. मीनारों के भीतर सीढ़ियां है, जिस की सहायता से मीनारों के ऊपर तक पहुंचा जा सकता है. इन मीनारों से नगर का विहंगावलोकन किया जा सकता है.

हैदराबाद : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया:डबल*
बनजारा, रोड नं. 13, बनजारा हिल. फोन : 222222	*950/-*
रिट्ज, हिलफोर्ट पैलेस. फोन:233571	*520/-*
सरोवर, 5-9-22 सचिवालय रोड. फोन : 237638	*150/-*
द्वारका, राजभवन रोड. फोन:237921	*90 -*
जय इंटरनेशनल, फोन : 232929	*130/-*
नागार्जुन, 3-6-356 358, बशीर बाग. फोन : 237201	*400 -*
राजधानी, सिद्धि अंबर बाजार. फोन : 557571	*125 -*

मक्का मसजिद: चारमीनार के निकट पूर्वी स्थापत्य एवं इसलामी कला को अभिव्यक्त करती मक्का मसजिद स्थित है. इस मसजिद का निर्माण 1614 में किया गया था. इस में लगभग 10,000 लोग एकसाथ नमाज अदा कर सकते हैं. मसजिद के स्तंभ तथा मेहराब ग्रेनाइट के एक ही पत्थर को तराश कर बनाए गए हैं.

जामा मसजिद: चारमीनार के पूर्वोत्तर में स्थित है जामा मसजिद, जिसे 1594 में सुलतान मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने बनवाया था. यह नगर की प्राचीनतम मसजिद है. इस की दीवारों पर कुरान की आयतें उत्कीर्ण की गई हैं.

सालारजंग संग्रहालय: चार मीनार से कुछ ही दूरी पर मूसी नदी के तट पर विश्व प्रसिद्ध सालारजंग संग्रहालय है. इस संग्रहालय में संग्रहीत वस्तुओं का संग्रह केवल एक ही व्यक्ति द्वारा किया गया है. और वह व्यक्ति था निजाम का प्रधान मंत्री मीर यूसुफ अली खान उर्फ सालारजंग तृतीय. सालारजंग कला का प्रेमी ही नहीं, पारखी भी था. उस ने देशविदेश की यात्राओं के दौरान विश्व के कोनेकोने से वस्तुएं ला कर इकट्ठी की थीं.

इस संग्रहालय की वस्तुओं को विभिन्न भागों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे कांच का सामान, पेंटिंग, मूर्तिकला, घड़ियां आदि. घड़ियों में सर्वाधिक आकर्षक है म्यूजिकल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

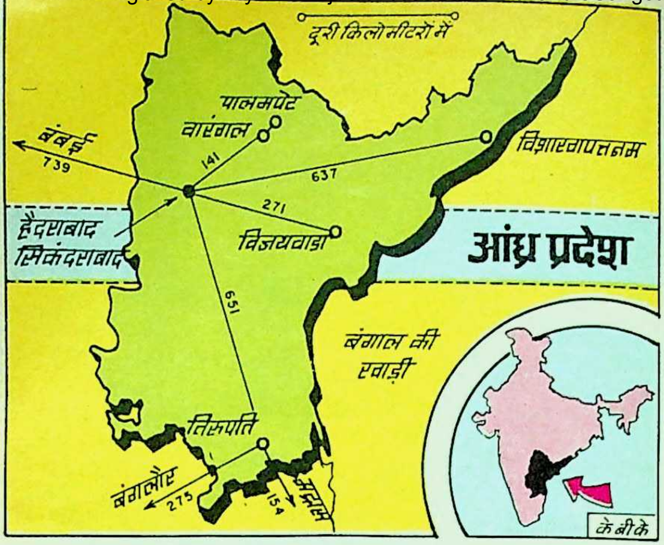

क्लाक, जो खुले कारिडोर में रखी गई है. घंटा पूरा होने पर एक जोकर घड़ी का दरवाजा खोल कर बाहर आता है और समयानुसार घंटे बजा कर चला जाता है.

संग्रहालय की 35 हजार वस्तुएं 35 कमरों में प्रदर्शित की गई हैं.

नेहरू वानस्पतिक उद्यान : इस उद्यान में विभिन्न पशुपक्षी देखने योग्य हैं. इसी उद्यान के भीतर लायन सफारी पार्क है.

यह पार्क प्रातः 8.30 से सायं 5 बजे तक खुलता है. 300 एकड़ में फैले इस उद्यान में 1100 से भी अधिक पशुपक्षी संरक्षित हैं.

वेंकटेश्वर मंदिर : यह हैदराबाद का प्रमुख पर्यटन स्थल है.

काले पहाड़ पर निर्मित यह मंदिर संगमरमर के पत्थरों से बना है.

इस की स्थापत्य कला बहुत कुछ खजुराहो मंदिर के शिल्प से मिलती है. रात के समय यहां का दृश्य बेहद मनोरम लगता है.

गोलकुंडा का किला : हैदराबाद से लगभग 11.5 किलोमीटर दूर स्थित गोलकुंडा का किला

हैदराबाद पर्यटन का ... महत्त्वपूर्ण आकर्षण ... किसी जमाने में ... कोहनूर हीरा जगमगाता था. पुरातन ... पर्यटकों को अनेक ... हारी भवन, ... सरोवर आदि देखने को मिलेंगे. इस ... किले को चारों ओर से घेरने वाली दीवार ... दरवाजे हैं.

इस किले की ... विशेषता यह है कि ... के प्रवेश द्वार पर ... हो कर यदि ... बजाई जाए तो उस ... आवाज को किले के ... से ऊपरी भाग में ... 61 मीटर की ऊंचाई पर भी सुना जा सकता है.

क्या खरीदें?

हैदराबाद में हस्तशिल्प की चीजें ... लाख की चूड़ियां अच्छी मिलती हैं. यहां से ... हाथी दांत व लकड़ी पर की गई नक्काशी ... चीजें खरीद सकते हैं. नग व मोती जड़ी लाख ... चूड़ियां भी आप के हैदराबाद पर्यटन की ... अच्छी स्मृति साबित हो सकती हैं.

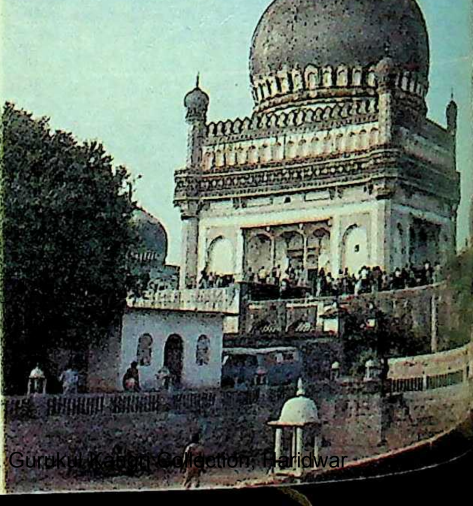

कुतुबशाह का मकबरा : मुसलिम स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना. ▶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिरुपति

आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुमल पहाड़ी पर बसा यह नगर तिरुपति वेंकटेश्वर मंदिर के कारण प्रसिद्ध है. यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है. 2,500 फुट लंबे शिखर पर बना यह मंदिर आम और चंदन के पेड़ों से घिरा हुआ है. सामने की तरफ स्तंभों वाला हालनुमा कक्ष है. मंदिर के अंदर वेंकटेश्वर की कलात्मक मूर्ति स्थापित है. इसे बालाजी के नाम से भी जाना जाता है. पर्यटक द्वारा मंदिर के पंडों से सावधान रहने में ही बुद्धिमानी होगी.

स्वच्छ झरनों तथा सरोवरों से घिरी रमणीक पहाड़ियों ने तिरुपति को और भी खूबसूरती प्रदान की है. अब यह शैक्षिक, व्यापारिक व औद्योगिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण नगर बनता जा रहा है.

मद्रास

तमिलनाडु प्रदेश की राजधानी मद्रास अपने सुंदर समुद्र तटों, रमणीक पार्कों एवं ऐतिहासिक इमारतों के कारण रमणीक पर्यटन स्थल है. इतना ही नहीं, यह दक्षिण भारत का प्रवेश द्वार भी है. यहां तमिलनाडु की लोक सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित है. व्यापारिक दृष्टि से भी यह भारत का महत्त्वपूर्ण नगर है.

कब जाएं?

मद्रास पर्यटन के लिए उपयुक्त समय अक्तूबर से मार्च तक है, वैसे अप्रैल से जून तक भी यहां पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है. हां, मध्य जून के बाद जुलाई व अगस्त में वर्षा होने के कारण पर्यटन पर नहीं जाना चाहिए.

कैसे जाएं?

मद्रास भारत का चौथा महानगर है. अतः यहां पहुंचने के लिए यातायात के साधनों की समुचित व्यवस्था है. यहां एक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है, जहां देशविदेश के विभिन्न स्थानों से उड़ानें पहुंचती रहती हैं.

रेल मार्ग द्वारा भी मद्रास भारत के सभी प्रमुख नगरों से जुड़ा है. यहां दो रेलवे स्टेशन हैं—मद्रास सेंट्रल और एग्मोर. मद्रास सेंट्रल से दिल्ली, कलकत्ता, बंबई आदि दूरस्थ स्थानों के लिए रेलगाड़ियां आतीजाती हैं. जबकि एग्मोर से दक्षिण भारत के निकटवर्ती स्थानों के लिए.

सड़क मार्ग से जाने वाले पर्यटकों को मद्रास तक पहुंचाने के लिए तमिलनाडु स्टेट ट्रांसपोर्ट तथा तिरुवल्लुवर ट्रांसपोर्ट कारपोरेशनों ने बसों की पर्याप्त व्यवस्था की है. मदुरै, तंजौर, पांडिचेरी, नागपट्टम आदि नगरों से मद्रास के लिए नियमित बसें चलती हैं.

क्या देखें?

सेंट जार्ज किला: यह भव्य किला भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रभुत्व की याद दिलाता है. इसे 1640 में फ्रांसिस डे ने बनवाया था. किले के भीतर 1680 में अंगरेजों ने सेंट मेरी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरजाघर बनवाया था. आजकल इस किले का एक भाग राज्य विधान मंडल तथा सचिवालय के कार्यालयों के रूप में प्रयोग किया जा रहा है. इसे देखने से पूर्व संबंधित अधिकारियों से पूर्वानुमति ले लेनी चाहिए. किले में एक संग्रहालय भी है, जिस में ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश शासन से संबंधित पुरानी वस्तुओं का संग्रह है.

यह किला कई वर्षों तक राजनीतिक षडयंत्रों का केंद्र रहा है. यह मद्रास का ऐतिहासिक दृष्टि से जितना महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है, उतना ही राजनीतिक दृष्टि से भी.

युद्ध स्मारक: सेंट जार्ज किले के दक्षिण में युद्ध स्मारक है, जो अपने अंगरेजी नाम 'वार मेमोरियल' के रूप में अधिक प्रसिद्ध है. यह एक सुंदर और विशाल गोलाकार भवन है. यह प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए लोगों की स्मृति में 1936 में बनवाया गया था.

मरीना बीच: मद्रास का मरीना बीच विश्व का द्वितीय दीर्घतम समुद्र तट है. यह मद्रास का गौरव है. यहां सैलानियों की भीड़ लगी रहती है. विशेषत: सायंकाल यहां का नजारा देखते ही बनता है.

अन्ना स्क्वायर: मरीना सागर तट के उत्तर में स्थित है. विशाल एवं खूबसूरत अन्ना स्क्वायर पार्क के बीच में तमिलनाडु के भूतपूर्व मुख्य मंत्री अन्नादुराई की समाधि बनी है. अन्नादुराई को लोग 'अन्ना' भी कहते थे, जिस का अर्थ है बड़ा भाई. उन्हीं के नाम पर यह क्षेत्र अन्ना स्क्वायर कहलाया. तमिलनाडु के निवासियों के लिए यह एक पवित्र स्थान है. इस का प्रवेश द्वार हाथी के दांत के आकार का है. अन्नादुराई की समाधि के निकट ही एक स्मारक स्तंभ में अमर ज्योति है.

मद्रास: ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	अनुमानित किराया
ताज कोरोमंडल, 17, नंगमबक्कम हाई रोड. फोन : 474849	105
वैलकम ग्रुप चोला शेराटन, 10, कैथेड्रल रोड. फोन : 473347	90
प्रेसीडेंट, एडवर्ड इलियट रोड, मायलापुर. फोन : 842211	40
सवेरा, 69, डा. राधाकृष्णन रोड. फोन : 474700	70
पिकनिक, 1132, पी.एच. रोड. फोन : 39021	165
सिंदूरी, 24, ग्रीम्स लेन. फोन : 471164	42
स्वागत, 243-244 राय पीटरहाई. फोन : 868422	110

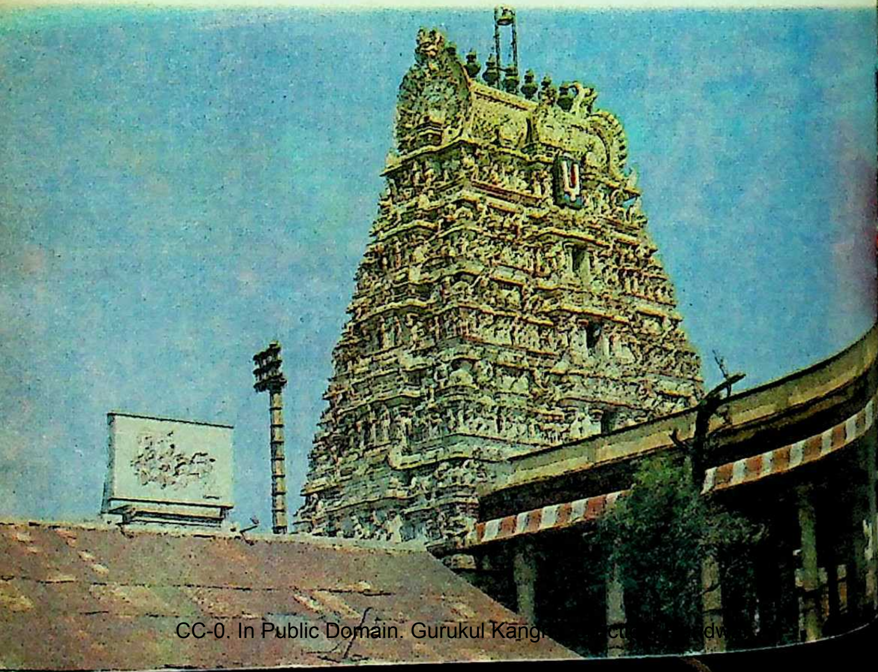

8वीं सदी में निर्मित तिरुवल्लिकेनी स्थित पार्थसारथी मंदिर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

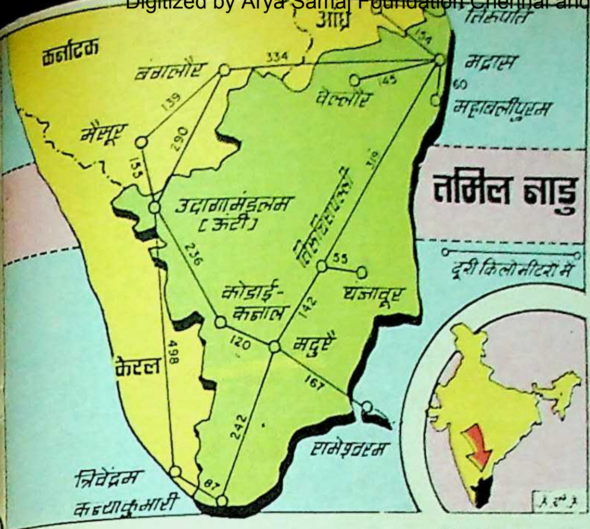

संथोम गिरजाघर : मरीना बीच के दक्षिणी किनारे पर स्थित संथोम गिरजाघर गोथिक ढंग की भवन निर्माण कला का प्रतीक है. यहां धर्मप्रचारक संत थामस को दफनाया गया था.

सर्पोद्यान : रोमल-ह्वाटेकर द्वारा स्थापित इस सर्पोद्यान में 500 से अधिक जातियों के सर्पों को स्वच्छंद रेंगते देखा जा सकता है. यह उद्यान गुइंडी डीयर पार्क में बना है.

थियोसोफिकल सोसाइटी : मद्रास के दर्शनीय स्थलों में थियोसोफिकल सोसाइटी का मुख्यालय भी महत्त्वपूर्ण स्थल है. डा. एनी बेसेंट ने इस की स्थापना अड्यार में की थी.

कपलेश्वर मंदिर: यह द्रविड़ शिल्पकला का सुंदर नमूना है. यह पुराना, दर्शनीय मंदिर मिलापोर में है. यहां शिव की भव्य प्रतिमा प्रतिष्ठित है.

पार्थसारथी मंदिर: पार्थसारथी मंदिर तिरुवल्लिकेनी में स्थित है. यह एक वैष्णव मंदिर है, जिसे 8वीं सदी में एक पल्लव राजा ने बनवाया था. बाद में पांड्य, चोल व विजयनगर के राजाओं ने समयसमय पर इस का पुनरुद्धार कराया है.

मंदिर की भीतरी दीवारों पर मनोरंजक शिल्पकारी की गई है.

अन्य दर्शनीय स्थल

मद्रास के अन्य दर्शनीय स्थल हैं वल्लुवरकोट्टम, चिन्नामलाई, रिपन बिल्डिंग, काल क्षेत्र, मायलापुर, चिड़ियाघर आदि.

क्या खरीदें?

मद्रास पर्यटन के दौरान आप कांसे की मूर्तियां, गलीचे, शंख, घोंघे, सीपियां, लैंप शेड, वाद्य यंत्र आदि खरीद सकते हैं.

महाबलीपुरम

प्राचीन शिल्प कला की दृष्टि से महाबलीपुरम दक्षिण भारत का एक वैभवशाली पर्यटन स्थल है. यह मद्रास से मात्र 60 किलोमीटर दूर है. समुद्र के किनारे बसा महाबलीपुरम एक प्राचीन नगर है. सातवीं शताब्दी में यहां पल्लवों का शासन था. उसी दौरान यहां शिल्प कला अपने चरमोत्कर्ष पर थी.

कब जाएं:

महाबलीपुरम में घूमने के उद्देश्य से वर्ष में कभी भी जाया जा सकता है. किंतु जुलाई अगस्त के वर्षा काल में न जाएं तो ठीक है. इन दिनों वर्षा के कारण आनेजाने में कष्ट तो होता ही है, पर्यटन का भी सारा मजा किरकिरा हो जाता है.

कैसे जाएं?

महाबलीपुरम का निकटतम हवाई अड्डा मीनाबक्कम (मद्रास) मात्र 58 किलोमीटर दूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

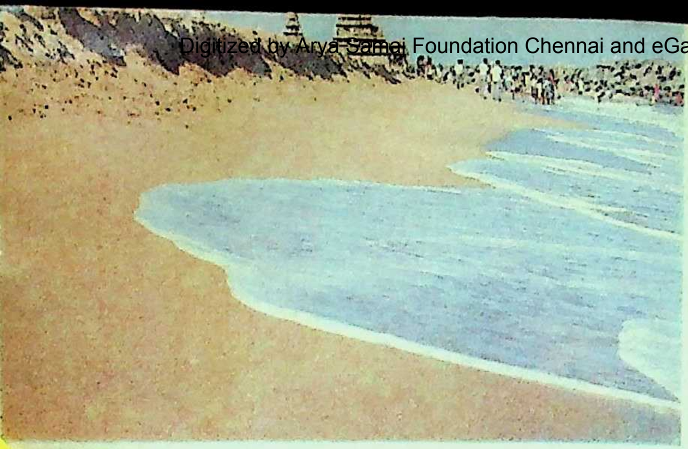

समुद्र किनारे बना शोर दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिरों में से है.

जिस के दोनों ओर देवीदेवताओं, मनुष्यों और जानवरों, पक्षियों की प्रतिमाएं बनाई गई हैं.

है. मीनाबक्कम से बस मार्ग द्वारा सहज ही महाबलीपुरम तक पहुंचा जा सकता है.

रेल मार्ग से जाने वाले पर्यटकों के लिए चेंगलपट्टू रेलवे स्टेशन पर उतरना ठीक रहेगा. यह दक्षिण रेलवे की मद्रास तिरुचि लाइन पर महाबलीपुरम से 30 किलोमीटर दूर है. कांचीपुरम और आटकोनम से भी यहां के लिए रेल सुविधाएं हैं.

महाबलीपुरम के लिए बस मार्ग सर्वोत्तम है. मद्रास तथा दक्षिण भारत के अन्य प्रमुख निकटवर्ती स्थानों से यहां के लिए नियमित बसें चलती हैं.

क्या देखें?

गुफा मंदिर: महाबलीपुरम में चट्टानों को काटकाट कर नौ गुफा मंदिरों का निर्माण किया गया. इन मंदिरों के भीतर पत्थरों को तराश कर कृष्ण, बराह, त्रिमूर्ति, दुर्गा, विष्णु आदि देवीदेवताओं की मूर्तियां बनाई गई हैं. इन गुफा मंदिरों को देख कर शिल्पकारों की शिल्प कला को दाद देनी ही पड़ती है.

बास रिलीफ: 27 मीटर लंबी और 9 मीटर चौड़ी पाषाण शिला पर तराशी गई भव्य मूर्तियां बास रिलीफ हैं. इस का आकार ह्वेल मछली की पीठ की तरह है. इस के बीच में एक दरार है,

महाबलीपुरम : ठहरने के कुछ स्थान

होटल : नाम, पता व टेलीफोन नंबर	*अनुमानित किराया: डबल*
सिल्वरसैंड, फोन : 228	*550/-*
गोल्डन सन, 59, कोवलम रोड, फोन : 245	*210/-*
शोर टेंपल यूथ कैंप, फोन : 287	*90/-*

शोर मंदिर: महाबलीपुरम का शोर मंदिर दक्षिण भारत के प्राचीन मंदिरों में से एक है. द्रविड़ शैली में बना है. साथसाथ प्राकृतिक प्रकोप के थपेड़े खा कर भी यह अपने वैभव के साथ आज भी खड़ा है. इस मंदिर में दो पूजागृह हैं, जिन के मुख पूर्व और पश्चिम की ओर हैं.

पंचरथ मंदिर: सामान्यतः एक ही चट्टान को तराश कर पांच मंदिरों का निर्माण किया गया था. संख्या में पांच और आकार में रथ के समान होने के कारण इन्हें पंचरथ मंदिर कहा जाता है. पांचों मंदिर पांडवों और उन की पत्नी द्रौपदी के नाम पर बनाए गए हैं. उत्तर में स्थित अंतिम एक मंदिर द्रौपदी को समर्पित है. तत्पश्चात अर्जुन का रथ है. इस मंदिर की छत दक्षिण भारतीय पिरामिड नुमा है. भीम के मंदिर का ऊपरी भाग नीलगिरि अंचल में बसे टोडा आदिवासियों के मकानों की छत की समता रखता है.

भीम के बाद युधिष्ठिर का रथ है, जिस का शिखर सर्वोच्च है. अंत में नकुल और सहदेव का संयुक्त रथ है, जिस का आकार बौद्धों के चैत्य से मिलताजुलता है.

कृष्णमंडपम: इस मंडपम में गोवर्धनधारी कृष्ण को चित्रित किया गया है. इस में गोवर्धन पर्वत महज एक कुकुरमुत्ता परिलक्षित होता है. इस मंडपम के अन्य भवनों में गणेश, रथ, वराह गुफा मंदिर, ओल्ड लाइट हाउस आदि भी उल्लेखनीय हैं.

टाइगर गुफा: यह महाबलीपुरम से कुछ किलोमीटर दूर एक रम्य पिकनिक स्थल है. पहले यहां राजाओं, महाराजाओं के मनोरंजन की व्यवस्था की जाती थी. यह एक खुले थिएटर के रूप में होने के कारण महाबलीपुरम में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विशिष्ट केंद्र रहा है.

मूर्तिकला प्रशिक्षण विद्यालय: महाबलीपुरम में एक ऐसा विद्यालय भी है, जहां मूर्तियां बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है. यहां दूरदूर से लोग यह प्रशिक्षण पाने के लिए आते हैं. यहां विभिन्न मूर्तियों का संग्रह भी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक दुनिया अग्निकांड, बाढ़, सेंधमारी और दंगों से मुक्त न हो जाए ...

तब तक आपको नेशनल इंश्योरेंस की घरेलू सुरक्षा मुहर की आवश्यकता होगी।

आपका फ्रिज, आपके बहुमूल्य जेवरात और वह कैमरा जो आपकी छुट्टियों का बेहतरीन साथी है......

ये सारी चीजें आपने अपने गाढ़े पसीने की कमाई से खरीदी है। परन्तु क्या आपने इन सामानों तथा अन्य घरेलू सामानों व आपकी बिल्डिंग या परिसर को सेंधमारी, गृहवेधन, चोरी, अग्निकांड, दंगा, हड़ताल, तूफान, बाढ़, दुर्भावनापूर्ण कार्य तथा ऐसे कार्यों से होनेवाली हानि या क्षति से सुरक्षा के लिए बीमा कराने की बात भी सोची है ? क्योंकि ये तो ऐसे खतरे हैं जिन पर आपका कोई नियंत्रण नहीं होता।

नेशनल इन्श्योरेन्स गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी के जरिए आपको प्रत्येक या इन सभी जोखिमों से एक सुनिश्चित वित्तीय सुरक्षा प्राप्त होती है। उपर्युक्त वर्गों के जोखिमों से सुरक्षा के अलावा इस पॉलिसी में आपको अन्य आठ वर्गों के चुनाव की सुविधा मिलती है :

सर्व जोखिम, प्लेट ग्लास, घरेलू सामानों का खराब हो जाना, टी.वी. पेडल साइकिल, सामान, व्यक्तिगत दुर्घटना और जन दायित्व। अपनी व्यक्तिगत जरूरत के अनुसार आप इनमें से कोई एक या इन सभी बीमा सुरक्षाओं का लाभ उठा सकते हैं।

अब भाग्य के भरोसे बैठे मत रहिए। अधिक जानकारी के लिए कूपन भर कर आज ही डाक द्वारा भेजिए।

कृपया मुझे यह जानकारी दीजिए कि मैं आपकी गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी के द्वारा किस प्रकार लाभान्वित हो सकता हूँ।

नाम ____________

पता ____________

____

व्यवसाय ____________

गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी
हर घर के लिए आवश्यक सुरक्षा

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी
(भारतीय साधारण बीमा निगम के अधीन एक संस्था)

3, मिडिलटन स्ट्रीट, कलकत्ता-700 071

CLARION C-NIC-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने अपनी बेटी के लि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तकिए पर भी ध्यान दीजिए

लेख ● पूनम सिंह

दिन भर कार्य करने के पश्चात शरीर थक जाता है और उसे आराम की आवश्यकता होती है. उसे पूरा आराम, आरामदेह बिछावन पर सोने से ही मिलता है और तकिया इसी बिछावन का एक अभिन्न अंग होता है. इसे लगा कर सोने से सिर की स्थिति, शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा थोड़ी ऊंची हो जाती है, जिस से कंधों और गरदन को आराम मिलता है और सांस लेने व छोड़ने में किसी भी प्रकार की रुकावट उत्पन्न नहीं होती. इस से गहरी नींद आती है और सारी थकान दूर हो जाती है.

तकिए के महत्त्व से अपरिचित होने के कारण प्रायः लोग उस के आकार पर ध्यान ही नहीं देते हैं और वे गलत आकार के चाहे जैसे तकिए इस्तेमाल करने लगते हैं. लेकिन ऐसे तकिए किसी भी व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए नुकसानदेह साबित हो सकते हैं क्योंकि इन्हें लगाने से मस्तिष्क और हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है. रक्त के मुक्त

बिस्तर का सरताज तकिया कभीकभी बहुत कष्ट देता है. हैरानी की बात है कि सिर को आराम देने वाला तकिया ही सिरदर्द बन जाता है. इसलिए तकिए पर ध्यान दीजिए और चैन की नींद सोइए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवाह में अप्राकृतिक अवरोध उत्पन्न हो जाता है.

मोटा तकिया लगाने वाले व्यक्तियों को कंधों और बांहों में दर्द की शिकायत होने लगती है. अनेक बार तो सरवाइकल स्पोंडिलाइटिस जैसी बीमारी भी हो जाती है जिस में गरदन व कंधे अकड़ जाते हैं और भयंकर दर्द होता है. ऐसी बीमारियों में तकिया नहीं लगाना चाहिए और इन से बचने के लिए सदैव पतला तकिया ही लगाना चाहिए.

तकिए की ऊंचाई कितनी हो

तकिए की ऊंचाई के संबंध में चिकित्सकों का मत है कि एक बड़े तौलिए को दो बार मोड़ने पर वह जितना ऊंचा हो जाता है, तकिया भी उतना ही ऊंचा होना चाहिए. अर्थात इस की ऊंचाई दो से ले कर तीन इंच तक होनी चाहिए.

अन्य अंगों की भांति सिर को भी आराम की जरूरत होती है. लेकिन कड़ा तकिया लगाने से उसे अपेक्षित आराम नहीं मिलता है. अतः तकिया थोड़ा नरम ही होना चाहिए.

तकिए में भरने के लिए कपास की रुई, सेमल की रुई, स्पंज के छोटेछोटे टुकड़ों आदि का उपयोग किया जाता है. आजकल तो हवादार, फोम और नरम पत्तों तक के तकियों का प्रचलन हो गया है. लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से रुई के तकिए ही सब से अधिक उपयुक्त होते हैं. अन्य प्रकार के तकिए लगाने से अनेक प्रकार के चर्म रोग हो जाते हैं. कई बार एलर्जी भी हो जाती है.

वैसे तो तकिया बनाने के सूती, रेशमी, साटन आदि किसी भी प्रकार के कपड़े का इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन इस के लिए सूती कपड़ा सब से अच्छा होता है क्योंकि सूती कपड़े से बना तकिया लगाने पर किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होती है. भराई करने के लिए पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश आदि किसी भी प्रदेश की रुई का प्रयोग किया जा सकता है. परंतु इस हेतु पंजाब की ... समझी जाती है क्योंकि वह ... अधिक गरम होती है. रुई भरने के ... सिलाई करने के लिए सदैव 'सूत' ... मोटे मजबूत धागे का प्रयोग ... चाहिए.

ताजा रुई भरने पर तकिए ... जाते हैं और इन्हें लगाने में असुविधा ... है. इसलिए इन्हें भरवाने के बाद ... भारी वस्तु से दबा दीजिए तथा ... दिनों के बाद ही इस्तेमाल में लाइए.

तकिए पर अकसर सिर की ... गंदगी चिपक जाती है. लेकिन उन्हें ... पर उन की रुई खराब हो जाती है ... तकियों को हमेशा खोल पहना ... उपयोग में लाइए, जिन्हें आसानी से ... जा सके.

तकियों पर सदैव चादरों के ... मेल खाते खोल ही लगाइए. सफेद ... छापे वाले खोल पर हलकीफुलकी कढ़ाई ... फैब्रिक पेंट किया जा सकता है. किनारे ... लेस भी लगाई जा सकती है.

तकिए का गलत प्रयोग हानिकार...

गलत ढंग से तकियों के इस्तेमाल ... स्वास्थ्य पर भी खराब प्रभाव पड़ता है ... उन का आकार भी बिगड़ जाता है, जिस ... वे देखने में भद्दे लगते हैं. इसलिए उन्हें ... ही ढंग से इस्तेमाल करना चाहिए. ... व्यक्ति तकियों को मोड़ कर उपयोग ... लाते हैं, जिस से उन की रुई की परत ... में ही मुड़ जाती है. खेलखेल में एकदूसरे ... मारने के लिए भी बच्चे तकियों का ... प्रयोग करते हैं. इस से उन की सिलाई ... जाती है और सारी रुई बाहर निकल ... है.

लंबे इस्तेमाल से तकिए का आ... बदल जाता है. ऐसी स्थिति में उस की ... पुनः धुनवा देनी चाहिए. वर्षा ऋतु में ... नमी घुस जाने के कारण तकिए में से ... निकलने लगती है. इसलिए कभीकभी ... तेज धूप में रख देना चाहिए. इस से ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साफ सुथरा तकिया लगा कर सोने से बिछावन तो व्यवस्थित दिखाई देता ही है साथ ही साथ नींद भी अच्छी आती है.

नमी भाप बन कर उड़ जाएगी.

साफसुथरा तकिया लगा कर सोने से बिछावन तो व्यवस्थित दिखाई देता ही है, साथ ही साथ नींद भी अच्छी आती है. इसलिए उस पर हमेशा साफ धुला और इस्तिरी किया खोल ही लगाइए. खोल को प्रत्येक सप्ताह बदल दें. जिस दिन सिर में तेल लगाएं, उस दिन तकिए के ऊपर कोई पुराना तौलिया या मोटा कपड़ा बिछा दें, ताकि तकिया गंदा न हो.

घर में हर सदस्य का अपना तकिया होना चाहिए और मेहमानों के लिए अलग. मेहमानों को तकिए देते समय उन पर साफसुथरा खोल लगाना न भूलें.

यात्रा पर जाते समय भी अपने साथ तकिया अवश्य रखना चाहिए. इस के लिए छोटे, पतले और हलके तकिए ही ठीक रहते हैं क्योंकि इन से बिस्तर का वजन भी नहीं बढ़ता है और इन्हें अटैची में भी आसानी से रखा जा सकता है. इस के लिए भी चादर से मेल खाते हुए दो खोल रखिए. एक यात्रा के दौरान लगाने के लिए और दूसरा वहां के लिए, जहां पर ठहरेंगे. यात्रा से लौटने के पश्चात तकिए को थोड़ी देर के लिए धूप में रख देना चाहिए और खोल को तुरंत धो देना चाहिए.

बहुत से व्यक्ति रात को सोते समय तकिए के नीचे या उस के खोल में चाबी, पर्स, रुपए, कान के बूंदे, अंगूठी, चूड़ियां जैसी वस्तुएं रख देते हैं. लेकिन इन वस्तुओं के कारण नींद में बाधा उत्पन्न होती है. करवट लेते समय या सुबह बिस्तर ठीक करते समय ये चीजें नीचे गिर कर टूट या खो भी जाती हैं. अतः सोने से पहले उन सभी वस्तुओं को तकिए के नीचे रखने के बजाए, उन के लिए निर्धारित जगहों पर ही रखें.

इस प्रकार अपने तथा घर के अन्य सदस्यों के लिए सही आकार के तकियों का चुनाव कीजिए, उन्हें सही तरीके से इस्तेमाल कीजिए और गहरी नींद सो कर अपनी थकान मिटाइए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झब्बूमल ने मानी हार

झब्बूमल बेहद चालाक
लगा रहे थे फिर से ताक
मूर्ख दिवस है आया पास
युक्ति सोचते कोई खास.
ताकि मूर्ख कोई बन जाए
उस से फिर हम लाभ उठाएं.
लेकिन अब की उल्टा जाल
पड़ा, मुखौटा उन का लाल!
कुछ लाए लड्डू भरथाल
देखा, झब्बूमल खुशहाल!
खा कर लड्डू रह गए दंग
पड़ी हुई थी उस में भंग!

अब दिमाग चक्कर काटे,
उन्हें घेरते सन्नाटे
तभी पुलिस वाला आया
आ कर उन को हड़काया
'पी शराब, चक्कर काटे,
मारूंगा कस कर चांटे!'
झब्बूमल पैरों पर गिर,
बोले- 'मिलूं न ऐसे फिर,
क्या बतलाऊं, भांग चढ़ी,
गलती मुझ से हुई बड़ी,
आज फर्स्ट अप्रैल है यार,
मुझे न मारो, गया हूं हार.'

—कुमार गुलशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह के बाद नहीं पहले सोचिए

लेख ● कि.स. भटनागर

यह विवाह से पहले सोचने की बात है कि आप का विवाह किस व्यवसाय वाले युवक अथवा युवती से हो रहा है. उस समय इस ओर ध्यान न देने से जीवन में कई जटिलताओं और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है.

रमा विवेक की प्रतीक्षा कर रही थी. ज्योंज्यों समय बीत रहा था, उस की झुंझलाहट बढ़ रही थी. विवेक करीब 10 बजे अपने मुवक्किलों से निबट कर वापस आया तो द्वार की घंटी बजाई. रमा गुस्से में थी. एक बार तो सोचा कि दरवाजा न खोले, पर आखिर पत्नी जो थी. उस ने दरवाजा खोला, पर मन के कटु भाव चेहरे पर उभर आए. आवाज में तल्खी थी, "इतनी देर तक मुझे इंतजार करना पड़ता है, मैं ऊब जाती हूं. तुम्हें अपने काम से इतना ही लगाव था तो मुझ से विवाह ही क्यों किया था?"

सीमा दोपहर का खाना बना कर विनोद की प्रतीक्षा कर रही थी. विनोद पांच बजे आया. सीमा उसे देखते ही बरस पड़ी.

विनोद ने समझाया, "आपरेशन कर रहा था, बीच में छोड़ कर कैसे आ जाता." पर सीमा का एक ही घिसापिटा जवाब था, "यह तो रोज ही होता है. मैं अकेली ऊबती रहती हूं. यदि दिनरात मरीजों से ही जूझना था तो मुझे क्यों लाए थे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़का और लड़की यदि विवाह से पहले ही अपने भावी जीवनसाथी के व्यवसाय के संबंध में भली प्रकार सोचसमझ लें तो वैवाहिक जीवन में आने वाली बहुत सी परेशानियों से न सिर्फ बच सकते हैं बल्कि परिस्थितियों से सामंजस्य कर के अपने जीवन को सुखमय भी बना सकते हैं.

हर किसी को मालूम है कि डाक्टरों का कोई समय नहीं होता. फिर सीमा ने डाक्टर से विवाह क्यों किया. पहले ही ना कर देती.

रीता रात 12 बजे बिस्तर पर करवटें बदल रही थी, क्योंकि रमेश नहीं आया था. करीब दो बजे वह आया. रमेश ने बहुतेरा समझाया कि होटल का समय ही रात का रहता है, पर रीता के चेहरे पर खिचाव दूर नहीं हुआ. आवाज में कटुता थी, "यदि ऐसा था तो मुझे क्यों बांधा था." होटल का जीवन ही रात का होता है, यह जानते हुए भी रीता क्यों बंधी उस से. ना ही कर देती. अब शिकायत क्यों?

ऐसे ही रूपा एक दिन अपने पुलिस इंस्पेक्टर पति की प्रतीक्षा कर रही थी. रात आठ बजे वह आया तो रूपा फूली बैठी थी. श्रीपत ने बताया कि घर आते समय हत्या का एक मामला आ गया तो फौरन जाना पड़ा. प्रारंभिक जांच किए बगैर कैसे आता. रूपा का जवाब था, "मैं तो यह सुनसुन कर तंग आ गई हूं. मेरी जिंदगी में तो उसी दिन से कड़वाहट घुल गई थी, जिस दिन तुम से फेरे पड़े थे."

पुलिस की नौकरी में दंगाफसाद और हत्या जैसी वारदातें तो लगी ही रहती हैं. यदि रूपा को यह नहीं मालूम था तो फिर किस की गलती है?

राम अध्यापक हैं. शाम को ट्यूशन करते हैं. लौटने में देर होती है. घर में कहासुनी होती है, पर ट्यूशन न करें तो घर का गुजरबसर कैसे हो.

सोहन मजिस्ट्रेट था. उस ने एक डाक्टर युवती से विवाह किया. जब वह घर में होता तो पत्नी क्लिनिक में काम कर रही होती जब पत्नी घर में होती तो उसे दफ्तर जाना पड़... दोनों में हर समय कहासुनी होती रहती.

मोहन शीला की प्रतीक्षा कर रहे थे... के कुछ दोस्त आए हुए थे. लेकिन शीला का कहीं पता नहीं था. वह डिप्टी कलक्टर ... कहीं दंगा हो गया था, इसलिए स्थिति का अवलोकन करने गई थी. रात हो गई, ... लौटी तो मोहन का मुंह सूजा था. अरे, किस... कहा था कि डिप्टी कलक्टर लड़की से विवाह करो.

ये तो चंद उदाहरण हैं. संसार में ... प्रकार के व्यवसाय हैं. कोई डाक्टर है तो कोई वकील, कोई व्यापारी है तो कोई इंजीनियर, कोई मास्टर है तो कोई वैज्ञानिक. ... व्यवसाय की अपनीअपनी अपेक्षाएं, सीमा... और जिम्मेदारियां होती हैं. यदि सरकारी ... कंपनी के दफ्तरों की नौकरी है तो समय बंधा रहता है. पर यदि अपना काम है, यानी अपना व्यवसाय है तो उस की जिम्मेदारियां बहुत समय मांगती हैं. डाक्टर को व्यवसाय में चमकने के लिए मरीजों के अलावा अध्ययन के लिए भी समय चाहिए. वकील को मामले की तह में जाने के लिए अतिरिक्त समय चाहिए. जज को मामला सुन कर, उस से संबंधित उच्च न्यायालय के फैसलों का अध्ययन कर के फैसला लिखने का समय चाहिए. विक्रेता है तो उसे सुबहशाम खरीदारों के चक्कर काटने को समय चाहिए.

कुछ समय पहले 'सरिता' की एक परिचर्चा में पत्नियों से उन के पतियों के व्यवसाय के बारे में विचार आमंत्रित किए गए थे. हर पत्नी को अपने पति के काम और कार्य करने के ढंग से शिकायत थी. यह ठीक है कि गिलाशिकवा भी अपनों से ही किया जा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक व्यवसाय की अपनी अपनी अपेक्षाएं, सीमाएं एवं जिम्मेदारियां हैं अतः पति के देर से लौटने पर झुंझलाइए मत.

सकता है, पर किस सीमा तक. यदि रोजरोज झिकझिक हो, रोज ही गलत जगह विवाह होने की दुहाई दी जाए तो फिर पति को भी सोचना पड़ता है, क्या इसी लिए विवाह किया था कि वह अपना कैरियर ही समाप्त कर ले?

हर काम सूई की नोक के अनुसार तो नहीं हो सकता. जो ऐसा कहते हैं, वे स्वयं ऐसा नहीं कर सकते. किसी एक काम के सही समय पर संपन्न होने के लिए अनेक दूसरे कामों का भी समय पर संपन्न होना आवश्यक होता है. दफ्तर से समय पर निकलें, पर बस नहीं मिली तो देर तो होगी ही. कोई प्रयोग किया जा रहा है तो बीच में नहीं छोड़ा जा सकता. यदि तहकीकात को गए हैं तो घर चलने की जल्दी में वह अधूरी नहीं छोड़ी जा सकती. यदि आपरेशन हो रहा है तो सिर्फ इसलिए कि पत्नी इंतजार कर रही होगी, उसे सी कर कल के लिए नहीं छोड़ा जा सकता. यदि पतियों से उन की कामकाजी पत्नियों के बारे में पूछें तो उन की भी यही शिकायतें होती हैं. पर क्योंकि कामकाजी महिलाएं कम हैं, अतः बहुत कम पतियों को इस समस्या का समाधान तलाशना पड़ता है.

पहले संयुक्त परिवार रहता था, इस से पति के देरसवेर आने से इतनी उकताहट और परेशानी नहीं होती थी. बच्चे भी अधिक होते थे. समय निकल जाता था. पर आजकल जब संयुक्त परिवार आखिरी सांसें ले रहा है और बच्चे भी एक या दो ही होते हैं तो यह समस्या और मुंह फाड़ कर खड़ी हो गई है. जब करने को कुछ न हो तो अकेलापन अधिक काटता है. रहनसहन का स्तर बढ़ने के साथ अधिक धन की आवश्यकता होती है. अतः पति अधिक से अधिक काम कर के अधिक पैसा पैदा करने में समय लगाता है, ताकि घर का स्तर सुधरे. यदि पति को पत्नी का सहयोग न मिले, समयअसमय उस का कोपभाजन बनना पड़े तो वह किस तरह अपने काम को परिश्रम और जिम्मेदारी से कर सकता है.

काम के प्रति उदासीन होने से यदि काम बिगड़ेगा तो पैसा कम मिलेगा. ऐसी हालत में कभीकभी नौकरी भी जा सकती है. इन परिस्थितियों में जीवन दूभर हो सकता है. यह बात पति को अच्छी तरह मालूम रहती है. उसे यह भी पता होता है कि पैसे के अभाव में अपने भी पराए हो जाते हैं, अतः वह अपने काम को पूरी जिम्मेदारी से करता है. यदि पत्नी इसे अपनी उपेक्षा समझती है तो यह उस की बहुत बड़ी गलती है.

आप का विवाह जिस से भी होगा, उस की समस्याओं से तो जूझना ही होगा. विवाह से पहले हर युवती की आकांक्षा रहती है कि उस का विवाह एक सुंदर 'राजकुमार' से हो. पैसा, मकान एवं नौकरचाकर हों. आराम का सारा सामान उपलब्ध हो. सुबहशाम घूमने के लिए सवारी हो. युवक सिने अभिनेत्रियों सी सुंदर पत्नी चाहते हैं. आजकल कमाऊ लड़की की चाह बढ़ रही है, ताकि आर्थिक समस्या कम रहे. पर जिंदगी कुछ और ही गुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाती है. नई जिंदगी की समस्याएं पतिपत्नी की आदतें, उन की व्यावसायिक अपेक्षाएं आदि सब मिल कर उन के सुंदर स्वप्नों को भंग कर देती हैं. जब सपने पूरे नहीं होते तो जीवन में शनैःशनैः विष घुलने लगता है.

जब निश्चित है कि किसी से भी विवाह कर के सभी सपने पूरे नहीं हो सकते तो समझदारी इसी में है कि जिस से भी विवाह हुआ, उस के व्यवसाय की मांग से समझौता करें. आवश्यकता से अधिक अपेक्षाएं ले कर विवाहित जीवन में प्रवेश न करें.

मान लीजिए, आप का विवाह एक डाक्टर से होना निश्चित हुआ है. हर लड़की इस चुनाव पर बधाई की पात्र होती है. विवाह तय होने और संपन्न होने में कुछ माह का अंतर होता है. ये ही कुछ माह तैयारी के हैं. मधुमास का समय तो शीघ्र ही गुजर जाता है, पर फिर वास्तविकता से वास्ता पड़ता है.

अतः अपने परिवार, मित्रमंडली और परिचितों पर एक नजर डालिए. कोई न कोई डाक्टर पत्नी मिल जाएगी. उस से परिचय बढ़ा कर उस की दिनचर्या, समस्याओं और शिकायतों पर गौर करें. इतना जान कर मालूम हो जाएगा कि विवाह के बाद किस स्थिति से समझौता करना होगा. समस्याएं आएंगी तो किस तरह निबटना होगा. पति के पैर की बेड़ी न बन कर किस तरह सहयोगी बना जा सकता है.

एक बात गांठ में बांध लेना आवश्यक है कि अपने व्यवसाय के दौरान पति को अनेकानेक संघर्षों से गुजरना पड़ता है और वह घर को ऐसी जगह समझता है, जहां वह संसार की तमाम चिंताएं भूल कर पत्नी के सामीप्य में निश्चितता अनुभव कर सके. वह तो घर जल्दी वापस आने के लिए स्वयं उत्सुक व चिंतित रहता है. घर पहुंचते ही वह ताने और उलाहने नहीं सुनना चाहता.

कई लोग सलाह देते हैं कि व्यवसाय की चिंता घर के बाहर छोड़ आओ, पर यह संभव नहीं है. यदि दफ्तर से चलते समय अधिकारी ने डांट लगा कर बेदखल कर देने की धमकी दी हो तो व्यक्ति घर में सीटी बजाते हुए घुस सकता.

यह सही है कि घर पर पत्नी भी परे... रहती है. उसे भी अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है, पर उसे डांटने और धमकी देने... कोई नहीं होता.

एक एम.ए. पास लड़की की शादी... अध्यापक से हुई जो शोध कर रहा था... दिन रात पुस्तकों में खोया रहता था. लड़की शीघ्र ही ऊबने लगी.

राई का पहाड़ बनते देर नहीं लगती... लड़की तलाक तक की बात सोचने लगी... किसी हितैषी ने समझाया कि, "इस तरह... काम नहीं चलेगा. एक तो दूसरी शादी जल्दी नहीं होगी, दूसरे क्या आश्वासन है कि दूसरे पति के साथ भी ऐसी ही मिलती-जुलती समस्या खड़ी नहीं होगी. अतः बेहतर होगा... तुम अपनी शिक्षा व योग्यता का उपयोग... अपने सुख के लिए करो. तुम अपने पति की मदद करो. इस से तुम दोनों को निकटता मिलेगी और ऊब भी खत्म होगी. न खाली समय होगा, न शिकायत का अवसर मिलेगा."

विवाह के बाद हर समय शिकायत करते रहने से कोई लाभ नहीं होता. इस से दोनों को नुकसान होता है. जिस तरह के व्यवसाय वाले से निभ नहीं सकती, उस से तो विवाह न करो या फिर पहले ही आने वाली समस्याओं का अंदाजा कर लो ताकि वे आकस्मिक न हों. व्यवसाय के बारे में ताने मार कर या मुंह फुला कर कोई पत्नी समझती है कि वह पति का मन फेर लेगी, उस का सामीप्य पा लेगी तो यह उस की गलतफहमी है. ऐसा कभी नहीं होता. हो सकता है कि अपने इस प्रयास में वह पति को ही खो बैठे.

आजकल जब कामकाजी महिलाओं की मांग बढ़ रही है तो पुरुषों को भी स्वयं को तैयार रखना चाहिए. विवाह के बाद पत्नी के व्यवसाय से समझौता कर उसे कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता देनी चाहिए और पत्नियों को भी हर कदम पर पतियों से पूरा सहयोग करना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यस्ततम जीवन [illegible] रफ्तार और अफरातफरी भरी दिनचर्या हर कामकाजी व्यक्ति को न केवल उबा देती है बल्कि उस की सारी स्फूर्ति भी सोख लेती है. तब बहुत आवश्यक हो जाता है कि सप्ताहांत में वह जी भर कर आराम करे और खोई हुई ऊर्जा पुनः प्राप्त करे.

सप्ताह में पूरे छः दिन तो व्यस्तता भरे होते ही हैं. अतः रविवार को पूरी तरह सुस्ताना या उन कामों में खर्च करना बेहतर होगा जिन से आप को थकान के बदले नई चेतना मिले. घड़ी, घडी के अलार्म और अन्य [illegible] आराम भाग में सहायक होती हैं, उन से तो रविवार को दूर ही रहना चाहिए वरना फिर सारा रविवारीय आनंद हवा हो जाता है और वातावरण अन्य छः दिनों की तरह ही दिनचर्या के बंधन में बंधाबंधाया रहता है.

मेरी सहेली निष्ठा यों तो बेहद समझदार है लेकिन इस मुद्दे पर उस की अक्ल भी काम नहीं करती है. रविवार को भी सुबहसवेरे ही वह बिस्तर छोड़ कर निष्ठापूर्वक चाय बनाने और चाय बना कर सब को झिंझोड़ कर जगाने चल देती है.

निष्ठा के पति और बच्चों को उस से बस यही शिकायत है कि वह रविवार के दिन भी उन्हें चैन से नहीं बैठने देती, रोज की तरह ही रविवार को भी वह जल्दी ही उठ जाती है और न केवल स्वयं दिनचर्या में जुट जाती है बल्कि चाहती है कि घर के अन्य लोग भी उसी तरह जुट जाएं. जबकि वह अच्छी तरह से जानती है कि उस के पति अरविंद को देर तक सोना पसंद है. सिर्फ नौकरी के कारण ही उन्हें सुबह जल्दी उठ कर

रविवार को आराम कीजिए

लेख • सुरभि पांडेय

रविवार को मनचाहे तरीके से मौजमस्ती के साथ गुजारिए. तभी सप्ताह भर की थकान मिटेगी और एकरसता भी टूटेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर नए दिन के साथ शुरू होती है व्यस्तता, भागदौड़ और जीवन की ढेरों चिंताएं. लेकिन रविवार के दिन भी ये चिंताएं बनाए रखना क्या जरूरी है? रविवार को इन की छुट्टी कीजिए और आराम कीजिए.

तैयार होना पड़ता है.

इसी तरह बच्चे भी रविवार को देर तक सोना चाहते हैं, किंतु निष्ठा है कि उसे कुछ समझ में ही नहीं आता है. उसे तो सुबह से सब कुछ व्यवस्थित कर देने की जैसे सनक ही है. स्वयं दैनिक कार्यक्रमों से निबट जाए और अन्य घरेलू कामकाज निबटा ले तब भी ठीक है, किंतु उस का आग्रह रहता है कि सभी लोग नियमपूर्वक समय से उठ कर नहाधो लें और इसी तरह नाश्ताखाना भी ले लें. निष्ठा दिनचर्या में रत्तीभर फर्क भी नहीं चाहती है इसी लिए कभीकभी अरविंद चिढ़ भी जाते हैं.

"उठिएउठिए, जल्दी मुंहहाथ धो कर नाश्ता करने बैठिए."

"अरे, आप अब तक बैठे हैं, चलिए दाढ़ी बनाइए."

"अरे, हद कर दी आप ने और कितनी बार आप से नहाने के लिए कहूं."

ये कुछ निश्चित संवाद हैं, जिन्हें निष्ठा नियम से हर रविवार को दोहराती है और अरविंद के कान पर जूं तक नहीं रेंगती और यदि कभी रेंग जाती है तो बजाय बात बनने के बिगड़ जाती है. पतिपत्नी में बहस छिड़ जाती है. चीखचिल्लाहट मच जाती है. परिणामतः अच्छाभला छुट्टी का दिन व्यर्थ ही बरबाद हो जाता है. अगले दिन जब अरविंद फिर दफ्तर और अन्य व्यस्तताओं में उलझते हैं, तब महसूस करते हैं कि वह काफी शिथिल हैं.

वास्तव में अरविंद की शिथिलता का सीधासादा कारण रविवार के दिन उन का मन खराब होना और बंधेबंधाए अनचाहे ढंग से दिन बिताना ही है. जब वह यह जान पाते हैं तब उन्हें बहुत झल्लाहट होती है. किंतु सवाल तो वही है कि उन की समस्या निष्ठा समझे तो कैसे. उस पर तो समय से सारे काम निबटाने की खब्त सवार रहती है.

एकरसता मन को उदास करती है और जीवन के सहज प्रवाह को धीमा. अतः आवश्यक है कि रविवार के दिन सुस्ता कर इस एकरसता को भंग कर नई ऊर्जा ग्रहण कर ली जाए ताकि नया सप्ताह शुरू होने पर उस का स्वागत नई स्फूर्ति से किया जा सके.

आवश्यक नहीं है कि आप रोज जिस तरह की दिनचर्या जीते हैं वैसी ही रविवार को भी रखें. रविवार को तो अति सहजता से, बिना किसी तनाव के, मनमाने तरीके से बिताएं और बिताने दें, तभी सप्ताह भर की थकान मिटेगी और एकरसता भी टूटेगी.

जौहरीमल का परिवार रविवार का जो महत्त्व समझता है, वह सराहनीय है. पतिपत्नी दोनों ही नौकरी करते हैं. अतः उस रोज वे परिवार के साथ बिताना पसंद करते हैं. जौहरीमल 10 बजे तक अखबारों में सिर गड़ाए बैठे रहते हैं तो उस की पत्नी शाक वाटिका की देखरेख में ही दोपहर कर डालती हैं.

बच्चे अलग अपने तरीके से रविवार मानते हैं. उन में विधु को घुमक्कड़ी भाती है, इंदु को संगीत का अभ्यास और राकेश पूरे दिन पड़ा सोता रहता है. शाम को सब लोग अपनेअपने तरीके से दिन गुजार कर प्रसन्नचित्त चाय पीते हैं और फिर आपसी समझौते के आधार पर कोई न कोई कार्यक्रम बन ही जाता है. या तो सब कहीं घूमने चल देते हैं या फिर बैठ कर आपस में ही गपशप करते हैं या टीवी देखते हैं.

जौहरीमल का परिवार रविवार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक नहीं कि आप रोज जिस तरह की दिनचर्या जीते हैं वैसी ही रविवार को भी रखें. रविवार को अति सहज रूप से मनाएं और मनाने दें.

समय और समय की रफ्तार का बिलकुल ध्यान नहीं रखना चाहता और इसी लिए वे लोग सपरिवार नए सप्ताह के लिए पूरे मन से तैयार रहते हैं. नौकरी वाले और स्कूलकालिज वाले सभी सदस्य एकदम ताजातरीन हो कर सोमवार को अपनेअपने गंतव्य की ओर चल देते हैं.

एक दिलचस्प बात तो यह है कि नौकरीपेशा महिलाएं भी, जो स्वयं भी सप्ताह भर व्यस्त रहती हैं, रविवार के दिन आराम नहीं करना चाहतीं, समय की भागमभाग से मुक्त नहीं होना चाहतीं. अगर घरेलू महिलाएं ऐसा करें तो मान भी लिया जाए क्योंकि उन्हें सप्ताहभर की न तो दोहरी थकान होती है और न ऊब ही.अतः वे रविवार को भी आराम न करना चाहें तो बात समझ में आती है.

बहरहाल महिलाएं घरेलू हों या कामकाजी, यह जिम्मेदारी उन्हीं की है कि वे रविवार के दिन घर का माहौल अन्य सदस्यों की इच्छानुरूप ही बनाए रखें. जब तक बेहद आवश्यक न हो सफाई और खानेनाश्ते का बखेड़ा फैला कर सब पर अपनी मरजी न थोपें. 'अभी ही उठना है, अभी ही नहानाखाना है,' जैसा दबाव किसी भी व्यक्ति पर थोपना गलत है.

और छः दिन तो व्यस्ततम होते ही हैं, एक ही दिन तो व्यक्ति का अपनी मरजी का होता है, जिसे वह बेरोकटोक जीना चाहता है. सप्ताह भर की थकान मिटाना चाहता है. अतः इस में बाधा न डाल कर सहयोगात्मक रुख अपनाएं. पतिपत्नी हों या बच्चे या परिवार के अन्य सदस्य, वे रविवार अगर अपनी इच्छानुसार बिताएं तो बेहतर है, इस से उन्हें आराम भी मिलेगा और मन में नया उत्साह भी जन्म लेगा.

संध्या के यहां हर रविवार को दोपहर का खाना विशेष आयोजन के साथ बनाया जाता है क्योंकि सभी लोग खानेखिलाने के बेहद शौकीन हैं. सब लोग मिल कर तरहतरह की चीजें बनाते हैं और अन्य कामों में भी एकदूसरे की मदद करते हैं. इस तरह से विशेष पसंदीदा व्यंजनों की इच्छा भी वे लोग पूरी कर लेते हैं और संध्या पर अनावश्यक बोझ भी नहीं पड़ता.

रविवार को मनचाहे तरीके से मौज-मस्ती के साथ गुजारिए. जब तक आवश्यक न हो न किसी के घर जाइए और न ही किसी को बुलाइए, वरना सारा समय नष्ट हो जाएगा और आप थक जाएंगे सो अलग. जिन से मिल कर आप को अच्छा लगे उन्हीं से रविवारीय भेंट कीजिए. अब यह बात और है कि कभीकभी संयोगवश अनेक आकस्मिक कार्यक्रम बन जाते हैं.

पतिपत्नी न केवल एकदूसरे को बल्कि परिवार के प्रत्येक सदस्य को रविवार अपनी मरजी से बिताने दें, उन पर अपनी इच्छाएं लादें, थोपें नहीं. तभी सही रूप में रविवार मनाया जा सकेगा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के मुख से

एक बार मैं अपनी सहेली के लड़के के जन्मदिन पर उसे सपरिवार मुबारकबाद देने गई. सब मेहमानों के आ जाने पर मेरी सहेली ने अपने बेटे से केक पर लगी मोमबत्तियां बुझाने के लिए कहा तो उस ने सावधानी से तीन मोमबत्तियां बुझा दीं, लेकिन एक को नहीं बुझाया.

मेरी सहेली ने पूछा, "क्यों बेटा, चारों मोमबत्तियां एकसाथ क्यों नहीं बुझाईं."

उस ने बड़ी मासूमियत से जवाब दिया, "मां, चारों बुझा दूंगा तो केक कैसे पकेगा."

—जया राव

*

हमारे किराएदार का पांच वर्षीय लड़का बिट्टू अकसर मेरे पास पढ़ने आता है. एक दिन मैं ने उसे पढ़ाते समय पूछा, "बताओ 'जन गण मन' गीत किस ने लिखा था."

इतना सुनते ही वह तपाक से बोला, "यह तो हमारी मैडम ने ब्लैक बोर्ड पर लिखा था." यह सुनते ही सब हंस पड़े.

—मनोजकुमार

*

मेरा सात वर्षीय भानजा बहुत ही बातूनी है. उस के पिता यानी मेरे बहनोई एक चीनी मिल में काम करते हैं. उन्हें मिल के पास ही रहने के लिए एक मकान मिला है.

एक दिन घर पर अधिक कार्य होने की वजह से वह मिल में काम करने नहीं जा सके. तो मेरे भानजे ने उन से पूछा, "पिताजी, आज आप काम पर नहीं गए, फिर भी चिमनी में से धुआं निकल रहा है."

भानजे के भोलेपन ने हम सब का मन मोह लिया था.

—राकेश शर्मा

मैं अपने भतीजे का दाखिला करवाने एक स्कूल में गया. प्रधानाचार्या ने मुझ से पूछा, "क्या पहले इसे घर पर पढ़ाया गया है?"

मैं ने कहा, "पढ़ाने के साथसाथ लिखना भी सिखाया गया है."

मेरे भतीजे के हाथ में कागज व पेंसिल देते हुए प्रधानाचार्या बोलीं, "लिखो ए.बी.डी."

'डी' सुनते ही मेरा भतीजा बीच में ही बोल पड़ा. "मैडम, आप को ए,बी,सी,डी भी नहीं आती, बी के बाद 'सी' आता है."

उस के इतना कहते ही प्रधानाचार्या अपनी हंसी न रोक सकीं.

—नरेंद्र प्रेमी

*

मेरा चार वर्षीय भतीजा बहुत बातूनी है. एक दिन मेरे एक दोस्त ने उस से पूछा, "अगर एक जगह बुद्धि रख दी जाए और दूसरी जगह धन रख दिया जाए, तो तुम किसे उठाओगे?"

मेरे भतीजे ने कहा, "धन को उठाऊंगा."

इस पर मेरे दोस्त ने कहा, "मैं अगर तुम्हारी जगह होता तो बुद्धि को उठाता."

यह सुन कर मेरा भतीजा बोल उठा, "जिस के पास जो नहीं है, वही तो उठाएगा." उस की बात पर हम हंसे बिना न रह सके.

—विवेककुमार पांडे

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तक पुरस्कार में दी जाएगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली- 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीता परेशान थी, क्योंकि चार वर्ष का अंकुर प्रतिदिन कोई न कोई मांग ले कर आ खड़ा होता. कभी उसे पेंसिलरबड़ चाहिए, कभी कापीकिताब तो कभी और कुछ.

'आखिर चली कहां जाती हैं, अंकुर की सब वस्तुएं, कहां खो जाती हैं, इतनी छोटीछोटी चीजों की कोई चोरी तो कर नहीं सकता?' रीता सोच में पड़ जाती थी.

'ऐसा तो नहीं अंकुर लापरवाही से कहीं फेंक देता हो,' रीता ने अंकुर पर नजर रखनी शुरू कर दी तो उस का संदेह सच निकला. उस ने देखा कि पेंसिल की नोक टूट जाने पर

बच्चों में उन की वस्तुओं के प्रति लगाव बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि वे उन का महत्त्व समझें और यह तभी संभव है जब वे ये वस्तुएं स्वयं खरीदेंगे. अतः बच्चों से भी खरीदारी करवाएं.

अंकुर ने उसे दोबारा बनाने की कोशिश न कर के पेंसिल कूड़े के ढेर पर फेंक दी और रीता के पास आ कर नई पेंसिल दिलवाने की जिद करने लगा.

रीता ने कूड़े के ढेर पर पड़ी पेंसिल उठा कर, पानी से धोपोंछ कर और फिर नोक बना कर अंकुर को दे दी. साथ ही उसे समझाया,

लेख ● सर्वेश वार्ष्णेय

बच्चों से भी खरीदारी करवाएं

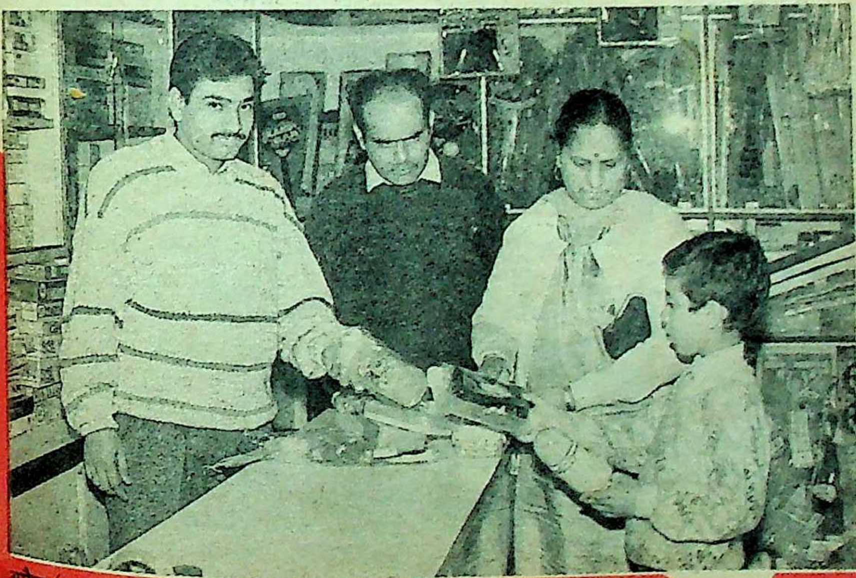

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि बच्चे को मांबाप साथ ले जा कर छोटीमोटी वस्तुओं की खरीदारी कराएंगे तो इस से बच्चे की पसंद उत्कृष्ट बनती जाएगी.

"पेंसिल की नोक बारबार बनाई जा सकती है."

लेकिन अंकुर को जैसे पुरानी वस्तुओं से चिढ़ थी. एक माह पूर्व खरीदी गई किताब का एक पृष्ठ फट गया तो उस ने पूरी किताब ही फाड़ कर फेंक दी और नई किताब के लिए ठुनकने लगा.

रीता समझ नहीं पा रही थी कि अंकुर को वह वस्तुओं से लगाव करना कैसे सिखलाए. अंकुर को केवल सिक्कों से लगाव था. 10 पैसे के सिक्के को भी वह बड़ी हिफाजत से रखता था, बहुत मांगने पर भी नहीं देता था. लेकिन अन्य वस्तुओं की सुरक्षा वह नहीं कर पाता था.

रीता ने एक दिन पेंसिल खरीदने के लिए एक रुपए का सिक्का दे कर पड़ोस के एक लड़के के साथ अंकुर को नजदीक की दुकान पर भेज दिया.

अपने हाथों से पैसे खर्च कर के खरीदी पेंसिल से अंकुर को बड़ा मोह उत्पन्न हो गया. उस ने उस पेंसिल को पहले की भांति तोड़ कर नहीं फेंका.

रीता यह देख कर उत्साहित हो उठी कि अनजाने ही उसे अपनी समस्या का हल मिल गया था. उस ने अंकुर के हाथों से अन्य खरीदारी भी शुरू कर दी.

वह दुकानों से खरीदारी करने के बाद अंकुर के हाथों से दुकानदार को रुपए दिलवाने लगी. 10 और पांच पैसों के सिक्कों से मोह करने वाला अंकुर जब यह देखता कि छोटीछोटी वस्तुओं का मूल्य चुकाने के लिए मां को कितने अधिक सिक्के, रुपए देने पड़ते हैं तो वह हैरान रह जाता था.

धीरेधीरे उस के अंदर वस्तुओं का महत्त्व समझने की बुद्धि पैदा हो गई. वह सभी वस्तुओं को व्यवस्थित कर के रखने लगा. रीता को भी अनावश्यक खर्चे और परेशानियों से छुटकारा मिला.

नन्ही पिंकी दूध पीना पसंद नहीं करती थी. जब भी उसे दूध दिया जाता, वह मां की आंख बचा कर पालतू बिल्ली को पिला देती. उस की इस आदत पर कांता ने कई बार उसे डांटा, पर पिंकी की नन्ही सी बुद्धि को दूध के गुणों व कीमत का एहसास कहां हो पाता था.

अंकुर व पिंकी की भांति अनेक बच्चे ऐसे हैं जो 10 पैसे के सिक्के से तो मोह करते हैं पर 10 रुपए मूल्य की वस्तु का महत्त्व नहीं समझ पाते. कीमती खिलौने, जूते, मोजे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकें, नाश्ते का सामान व अन्य वस्तुएं लापरवाही से इधरउधर फेंक कर, खराब करते रहते हैं.

मांबाप को समझदारी से काम ले कर लापरवाह बच्चों को, डांटनेफटकारने, भाषण देने के बजाय वस्तुओं पर खर्च होने वाले रुपयों के महत्त्व को बताना चाहिए. बच्चों के हाथों से वस्तुओं का मूल्य चुकाया जाए, तभी उन्हें पता लग सकेगा कि वस्तुएं कितनी कीमती होती हैं.

कई बार ऐसा भी होता है कि मांबाप द्वारा खरीद कर लाई वस्तु बच्चे को पसंद नहीं आती. इसलिए वह उस की ओर से उदासीन रहता है और उसे संभाल कर नहीं रखता.

मातापिता को ध्यान देना चाहिए कि बच्चा छोटा है तो क्या हुआ, उस की अपनी इच्छाएं हैं, मौलिक पसंद है. बच्चे को उस की पसंद के अनुरूप ही वस्तुएं दिलानी चाहिए, तभी बच्चा खुश रह सकता है और उस के मन में वस्तुओं से लगाव उत्पन्न हो सकता है.

बच्चों को तरहतरह के रंगबिरंगे चित्रों वाली पुस्तकें और पक्षियों, जानवरों की शक्ल वाली विभिन्न आकार की वस्तुएं अधिक आकर्षित करती हैं.

...का डब्बा, पेंसिलों का डब्बा, पानी की बोतल आदि भी बच्चे अपनी पसंद की लेना चाहते हैं इसलिए मांबाप को चाहिए कि बच्चों को अपने साथ बाजार ले जा कर उन की छोटीछोटी वस्तुओं की खरीदारी कराएं. इस से बच्चे का मन प्रसन्न रहेगा व धीरेधीरे उस की पसंद भी उत्कृष्ट बनती जाएगी. बड़े होने पर उस के अंदर तुरंत निर्णय लेने की बुद्धि व गहरी सूझबूझ उत्पन्न हो जाएगी और वह एक जिम्मेदार पुरुष और अच्छा नागरिक बन सकेगा.

बच्चे के सुदृढ़ विकास के लिए आवश्यक है कि बचपन से ही उस की नींव मजबूत रखी जाए.

कभी ऐसा भी हो सकता है कि बच्चे की पसंद आप की पसंद के अनुरूप न हो, तो भी बजाय बाधा डालने के खामोश रहना बेहतर है.

बच्चे के भोजन के डब्बे में नाश्ता भी उसी की पसंद का रखना चाहिए, तभी वह पेट भर कर खा सकेगा, नहीं तो नाश्ता कूड़े के ढेर पर फेंक कर स्कूल में भूखा ही रहेगा और आप उस के दिन प्रति दिन कमजोर होते जाने के रहस्य को सोचती ही रह जाएंगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पति

मेरे पति कुछ तुनकमिजाज हैं. देर रात गए घर लौटना उन की आदत है.

एक शाम को उन के जल्दी घर आ जाने पर मेरे मुंह से निकल गया, "आज तो आप जल्दी आ गए."

यह सुनते ही वह ब्रीफकेस मुझे पकड़ा कर लौट पड़े. जब रात में वह वापस आए तो 10 बज रहे थे.

पूछने पर बोले, "फिल्म देखने गया था. वैसे तो मैं दो टिकट लाया था. मगर मेरे आते ही तुम ने टोक दिया. सो मैं तुम्हें साथ न ले जा कर एक मित्र को ले गया." —ललिता भाटिया

*

मेरे बड़े भाई बड़े ही भुलक्कड़ स्वभाव के हैं. काम की व्यस्तता में जरूरी बातें भूल जाना उन की आदत में शुमार है.

एक दिन उन्होंने सारा घर सिर पर उठा लिया, कहने लगे, "अभीअभी मैं ने यहीं अपना जांघिया रखा था. अब नहीं मिल रहा है. तुम्हीं लोगों ने कहीं रख दिया होगा."

सभी लोग उन का जांघिया खोजने लगे. वह स्वयं भी इस अभियान में जुटे थे. वह अपने कमरे में भी जांघिया खोजने गए. थोड़ी देर बाद उन्होंने वहीं से चिल्ला कर कहा, "रहने दो, अब मत ढूंढ़ो जांघिया. वह तो मैं ने पहले ही पहन लिया था." —कुंदन पटना

*

एक दिन मेरे पति को सुबह सात बजे कहीं जाना था. हम लोग प्रायः साढ़े सात बजे तक सो कर उठते हैं. अतः उस दिन उठने के लिए उन्होंने सुबह छः बजे का अलार्म लगा दिया.

रात में बिस्तर पर जातेजाते 12 बज गए थे. अभी ढंग से आंख लगी भी न थी कि अलार्म बजने लगा. हमारी घड़ी स्वचालित है व अलार्म का समय भी बोलती है. उनींदी अवस्था में मैं ने सुना. घड़ी कह रही थी, 'इट्स वन ओ क्लाक.' (एक बजा है)

सुबह होने तक घड़ी हर घंटे अलार्म बजा कर समय बताती रही. सुबह मैं ने पति से कहा, "आप ने हर घंटे का अलार्म क्यों लगा दिया था. सारी रात सो भी नहीं पाई."

वह हंस कर कहने लगे, "वह तो आधे घंटे के अलार्म की व्यवस्था घड़ी में नहीं थी. वरना वही लगाता. हर अलार्म पर कम से कम यह संतोष तो होता है कि अभी और सो सकते हैं." —मंजु चंद्र मोहन नागोरी

*

मेरे पति गंभीर माहौल को हलका करने में माहिर हैं. एक दिन मामाजी ने मेरी ननददेवर व साससुसुर के सामने ही किसी बात पर नाराजगी जाहिर करते हुए मेरे पति की अच्छी खबर ली. इसी बीच उन्होंने पति को 'उल्लू का पट्ठा' और 'बेवकूफों का दादा' तक कह दिया.

जब मामाजी का गुस्सा कुछ शांत हुआ तो मेरे पति मुसकराते हुए बोले, "मामाजी, आप ने मुझ से तो कुछ कहा ही नहीं, 'उल्लू का पट्ठा' कहने के लिए पिताजी को आप से निबटना है, और 'बेवकूफों का दादा' कहने पर मैं भला अपने पोतों के लिए क्यों उलझूं."

यह सुन कर मामाजी का रहासहा गुस्सा भी जाता रहा. —अनिता सिंह

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम तुम्हारा

नाम तुम्हारा
बन जाता है
पूरा मौसम!

अक्षर-अक्षर
झरनों सा
मन के मरुथल में
लिख जाता
खुशबू के किस्से
सूखे पल में,

यादों के
सूने आंगन में
होती छमछम

जलते वन में
सावन सा
बरसे है अक्सर
और उमंगों
को देता है
नएनए पर,

सन्नाटों के
होंठ अचानक
आती सरगम!

—डा. हरीश निगम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोलिए के हरभरे व्यंजन

हरेभरे पिरामिड्स

हरे छोलिए के बीड़े

हरे छोलिए के बीड़े

सामग्री : 250 ग्राम हरे छोलिया दाने, 1 बड़ा चम्मच लहसुन, अदरक पिसा हुआ, ¼ नारियल गिरी, 15 लौंग, 1 बड़ा फूल पत्तागोभी, 1-1 छोटा चम्मच नमक, मिर्च, गरम मसाला, 1 छोटा चम्मच चिली सास, 1 छोटा चम्मच पुदीना सास, 1 बड़ा चम्मच तेल.

विधि : पहले हरे छोलिया दानों को नमक, अदरक, लहसुन पेस्ट तथा कसे हुए नारियल सहित थोड़ा पानी डाल कर आंच पर गला कर सुखा लें.

अब पत्तागोभी के बड़ेबड़े 10 पत्ते लें. उन को जरा तेल का हाथ लगा कर तवे पर दोनों तरफ से हलका सा सुनहरी भून लें.

बारीबारी से एकएक पत्ता लें. हर पत्ते पर पहले पुदीना सास फैला कर लगाएं. उस पर एक छोटा चम्मच छोलिया डालें. फिर चिली सास फैला कर लगाएं. अंत में उसे पान के बीड़े की तरह मोड़ कर लौंग के साथ बंद कर दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरभरे पिरामिड

सामग्री : 6 अंडे उबले हुए, 250 ग्राम हरे छोलिए दाने, 1 बड़ा चम्मच लहसुन, अदरक पिसा हुआ, 1 बड़ा टमाटर, 10 ग्राम काजू (चाहें तो), 2 मध्यम आकार के प्याज, 2 बड़े चम्मच घी (दो टेबल स्पून), ½ छोटा चम्मच नमक, ¼ छोटा चम्मच मिर्च, ¼ छोटा चम्मच हलदी, 1 छोटा चम्मच गरम मसाला, ½ प्याला दही.

विधि : उबले अंडों को लंबाई की तरफ से काट कर दो टुकड़े कर लें. पीली गोलियां (जरदी) निकाल लें. उन्हीं गोलियों को मसल कर थोड़ा गरममसाला, नमक और आधा चम्मच घी के साथ पका लें. एक चम्मच पानी डाल कर पका सकते हैं, किंतु पानी सूख जाना चाहिए. इस तरह अंडे में भरने की सब्जी तैयार हो गई.

अब प्याज, टमाटर पीस कर लहसुनअदरक की पेस्ट के साथ 1½ चम्मच घी में खूब भूनें. लाल होने पर दही, नमक, गरममसाला, हलदी और लाल मिर्च डाल दें. गाढ़ी ग्रेवी (रसा) को अंडों में लपेट दें. अच्छी तरह लिपट जाने पर एक समतल डिश में हर आधे अंडे को अलगअलग रख दें. अब चने की सब्जी हर आधे अंडे में भर दें. खाने के समय वह डिश एक या दो मिनट के लिए ओवन में केवल गरम करने के लिए रखें. इच्छा हो तो काजू डाल सकते हैं. वैसे जरूरी नहीं है.

लाजवाब छोलिया लड्डू

सामग्री : 250 ग्राम हरे छोलिया दाने, 2 बड़े चम्मच देसी घी, 50 ग्राम सूजी, 20 ग्राम बेसन, 100 ग्राम खोया, 1 छोटा चम्मच इलायची पिसी हुई, 5 ग्राम काजू, 5 ग्राम बादाम, 5 ग्राम सूखा नारियल बूरा, 5 ग्राम चार मगज (गिरी), 200 ग्राम चीनी, 1 प्याला दूध.

विधि : कड़ाही में देसी घी गरम करें और उस में हरा छोलिया हलका भून लें. निकाल कर पीस लें. उसी घी में खोया भून कर निकाल लें और अंत में सूजी और बेसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीमी आंच पर इकट्ठा भून लें. मेवे बारीकबारीक काट कर रख लें. दूध में चीनी उबाल कर गाढ़ी चाशनी में मेवे पका लें. अब चाशनी में छोलिया मिलाएं. फिर सूजी और बेसन मिला कर हिलाएं. जरा ठंडा होने पर हाथों पर पानी लगा कर छोटेछोटे गोल लड्डू बना लें. और बाद में हर लड्डू को नारियल बूरे में चला कर सजा लें.

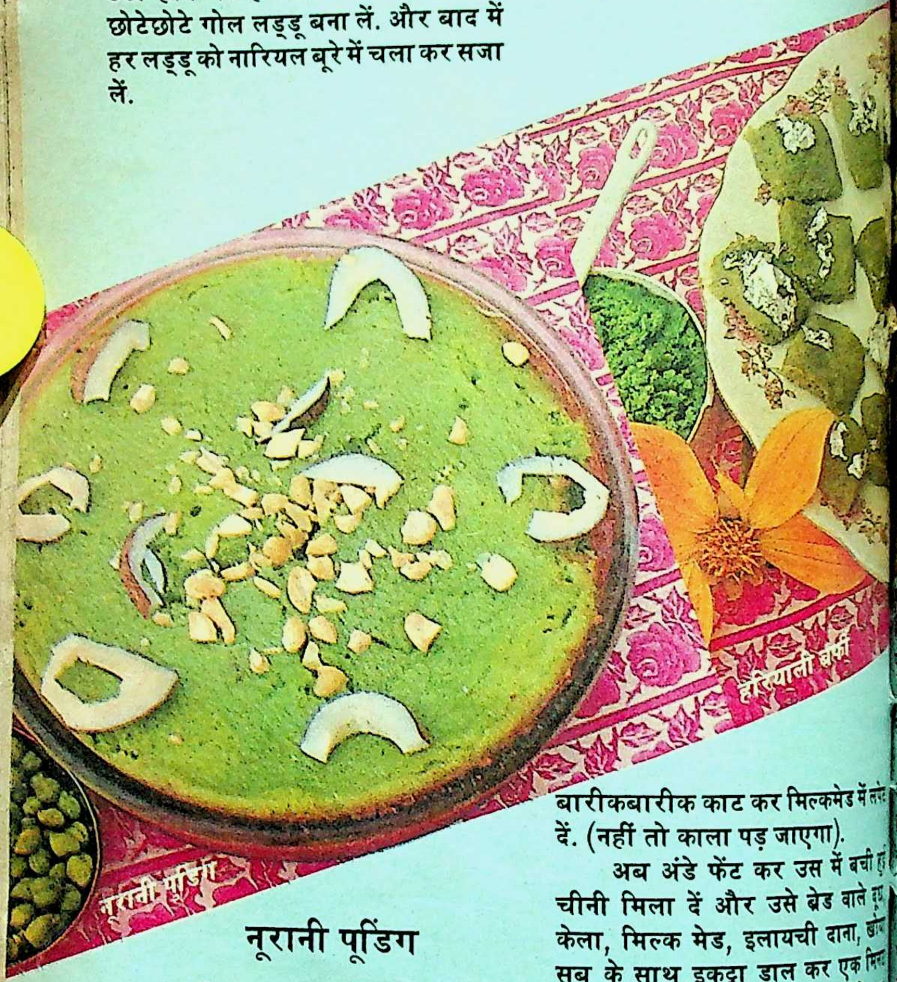

नूरानी पुडिंग

सामग्री : 250 ग्राम हरे छोलिया दाने, 2 अंडे, 4 बड़े चम्मच मिल्क मेड (गाढ़ा दूध), ¼ छोटा चम्मच इलायची दाना पिसा हुआ, 1 बूंद केवड़ा एसेंस, 4 बड़े चम्मच चीनी, 1 छोटा चम्मच अनन्नास जैम, 1 केला, 1 बड़ा चम्मच मक्खन, ½ किलो ताजा दूध, 50 ग्राम टूटीफ्रूटी, 4 बड़े चम्मच ..., 1 बड़ा चम्मच खोया.

विधि : ब्रेड के छोटेछोटे टुकड़े कर के आधा किलो दूध में भिगो दें. आधा चम्मच मक्खन में थोड़ी सी चीनी डाल कर छोलिया दाने दो मिनट के लिए पका लें. केला

बारीकबारीक काट कर मिल्कमेड में लपेट दें. (नहीं तो काला पड़ जाएगा).

अब अंडे फेंट कर उस में बची हुई चीनी मिला दें और उसे ब्रेड वाले दूध, केला, मिल्क मेड, इलायची दाना, खोया सब के साथ इकट्ठा डाल कर एक मिनट मिक्सी चला दें. एकदम चने का हलकाहलका हरा रंग आ जाएगा.

कुकर में दो गिलास पानी डाल कर उलटी कटोरी रख दें. फिर एल्यूमिनियम के बरतन में सब जगह मक्खन लगा दें और उस पर घोल डाल कर एसेंस मिला दें. जब पानी उबलने लगे तो बरतन रख दें. उलटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटोरी के ऊपर कुकर का ढक्कन लगा दें. किन्तु वेट न लगाएं. 40 मिनट के बाद पूरी पुडिंग भाप से पक जाएगी.

अंत में सलाई से जांच कर लें. यदि सलाई अंदर चली गई तो पुडिंग पक गई.

ठंडी होने पर पुडिंग पर थोड़ा सा अनन्नास जैम फैला कर लगा दें और फिर हरे रंग की टूटीफ्रूटी से सजा दें.

हरियाली बरफी

सामग्री : 1 प्याला हरे छोलिए की पीठी, 2 प्याले खोया. 2 प्याले चीनी, ½ छोटा चम्मच इलायची दाना, 3 बूंद केवड़ा एसेंस, 1 चांदी का वरक, 1 छोटा चम्मच पिस्ता पीठी, 1 छोटा चम्मच नारियल बूरा, 1 प्याला दूध सास के लिए.

विधि : हरे छोलिए की पीठी बनाने के लिए छोलिए को दूध में पांच मिनट पका कर बारीक पीस लें और अलग रख दें.

दो प्याले पानी आंच पर रखें. उबलने पर चीनी डालें. एक तार की चाशनी बनने पर छोलिए की पीठी डाल कर हिलाएं और फिर खोया तोड़ कर उस में अच्छी तरह मिला दें और एक मिनट पका कर मक्खन का हाथ लगी थाली में उलट दें. ऊपर नारियल का बूरा, इलायची दाना एसेंस में मिला कर चिपका दें. थोड़ी ठंडी होने पर वरक लगा कर जमने पर काट लें.

यदि बरफी पूरी तरह न जमे यानी थोड़ी ढीली भी रह जाए तो कोई बात नहीं, खाने में स्वादिष्ट होगी.

छोलिए की किश्तियां

सामग्री : ½ किलो हरा छोलिया, 1 बड़ा चम्मच सूजी भुनी हुई, 1 बड़ा चम्मच ब्रेड का चूरा, 2 बड़े चम्मच टमाटर सास, 1 छोटा चम्मच चिली सास, 1-1 छोटा चम्मच नमक, मिर्च, गरममसाला, 3 बड़े चम्मच मक्खन, 100 ग्राम आलू के कतले (चिप्स), 100 ग्राम बादाम गिरी, 1 किलो बड़ेबड़े आलू, ½ प्याला संतरे का रस, 100 ग्राम पनीर ताजा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिरक्षित

विधि :
आलू उबाल कर ठंडे कर लें. बीच में इसे इस तरह से खोखला कर लें कि आलू एक किश्ती की तरह दिखे. आलू अधिक नहीं उबलने चाहिए. बस इतना उबले कि टूटे नहीं. अब संतरे के रस में पनीर को मिला कर अच्छी तरह हथेलियों पर मसलें. नमक, मिर्च, गरम-मसाला, सूजी, ब्रेड का चूरा, टमाटर सास में मिला कर उसी पनीर मिश्रण में मिला दें. उधर

बादाम गिरी पानी में भिगो कर रख... हरा छोलिया 'चिली सास' एक... चम्मच मक्खन तथा थोड़े नमक... साथ पका कर सुखा लें. इसे अलग रख लें.

अब पनीर, सूजी... ब्रेड चूरे वाले मिश्रण... आलुओं को लपेट कर... मिनट तक रख दें. फि... बोरोसिला की... प्लेट में दो बड़े चम्मच... मक्खन फैला कर एकएक

किश्ती को सजा दें. पांच मिनट ग्रिल... कर के रख दें. 8-10 मिनट में सारा मिश्रण... जम जाएगा और आलू थोड़े सख्त...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएंगे. बाहर तब निकालिए, जब परोसना समय हो. खाने की मेज पर रख कर उन में हरा छोलिया भर दीजिए. अंत में एकएक आधीआधी बादाम गिरी और आलू के कतलों से सजा दीजिए.

शहंशाही सासेज

सामग्री : 1 छोटा चम्मच मेथी सास, 3 छोटे चम्मच छोलिया सास, 1 बड़ा चम्मच पनीर, 2 बड़े चम्मच ब्रेड का चूरा, ½ छोटा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच टोमैटो सास, 1 छोटा चम्मच चिली सास, 1 चुटकी गरममसाला, 250 ग्राम आलू, 1 बड़ा चम्मच संतरे का रस, प्याज के लच्छे, हरी धनिया सजावट के लिए.

विधि : आलू उबाल कर चूरा कर लें. उस में एक बड़ा चम्मच पनीर, नमक तथा गरममसाला डाल कर खूब मसलें. फिर उस में ब्रेड का चूरा व तीनों चटनियां (सास) मिलाएं, हिलाएं और मसलें. अंत में छोलिया सास मिला कर एक बड़ा सा पेड़ा बना कर रख लें. फिर पतीले में पानी उबाल कर उस पर एक कटोरी उलट दें और उस कटोरी के ऊपर यह पेड़ा मलमल के कपड़े में बांध कर 15 मिनट के लिए भाप में पका लें.

उस के बाद उसे सासेज की शक्ल में काट कर रख लें. जब भी चाहिए गरमगरम तल सकते हैं. तल कर रखने से बिगड़ जाते हैं.

छोलिया सास बनाने के लिए तीन चम्मच छोलिया दाने, थोड़ा नमक और एक छोटा चम्मच सिरके के साथ पीस लें. सिरके के स्थान पर नीबू का रस का प्रयोग भी हो सकता है.

ध्यान दें आलू का चूरा बनाते समय उस में संतरे का रस डालें, पानी नहीं.

—शक्ति मरवाहा

परिरक्षित टमाटर

सामग्री : 2 किलो लाल सख्त टमाटर, 2½ लीटर पानी, 2 ग्राम सोडियम बेंजोएट, 300 ग्राम नमक, 10 ग्राम सिट्रिक एसिड.

विधि : टमाटरों को धो कर पोंछ लें. पानी में सिट्रिक एसिड डाल कर दोतीन उबाल आने पर नमक मिला कर ठंडा होने रख दें. कस कर बंद होने वाले ढक्कन के बड़े भांड या मरतबान में टमाटर डाल दें. एक छोटा चम्मच पानी में सोडियम बेंजोएट घोल कर ठंडे किए हुए पानी में मिला कर पानी को टमाटरों के ऊपर तक भर दें. ढक्कन को कस कर बंद कर दें. जब टमाटर महंगे हों या बाजार से न ला सकें तो परिरक्षित टमाटर निकाल कर प्रयोग कीजिए. इस प्रकार आप मटर, गोभी, कमलककड़ी आदि अन्य सब्जियां भी परिरक्षित कर सकती हैं. —मधु गुप्ता ●

सरिता
अप्रैल (द्वितीय) अंक में
गुणकारी
आंवले
के अचार व जैम
आंवले का खट्टा अचार
आंवले का मीठा लच्छा
आंवले का जैम
आंवले की कलियां
आंवले की बरफी
खरीदना न भूलें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन के दर्पण में, रूप तेरा समाया है,
चाहत में तेरी, कुछ खोया कुछ पाया है.

हिरणी सी हैं चंचल आंखें,
कपोलों पर खिले गुलाब,
अधर तुम्हारे कमल की पांखें,
है हुस्न तुम्हारा लाजवाब.

नुपुरों की ध्वनि से, मन का द्वार खटकाया है,
चाहत में तेरी, कुछ खोया कुछ पाया है.

घनेरे केशों के बादल में,
मुख मयंक यूं हो गया,
प्रथम दर्शन पर ही तेरे,
मैं तुझ में ही खो गया.

झील सी आंखों में, प्रेमसागर लहराया है
चाहत में तेरी कुछ खोया कुछ पाया है

दशकों का ये प्रेम बंधन,
बंध जाएं हम दोनों,
कमी न रह जाए कहीं,
भावों को मेरे पहचानो.

सपनों की दुनिया में, नंदनवन सजाया है
चाहत में तेरी कुछ खोया कुछ पाया है

— शकुंतला राहां

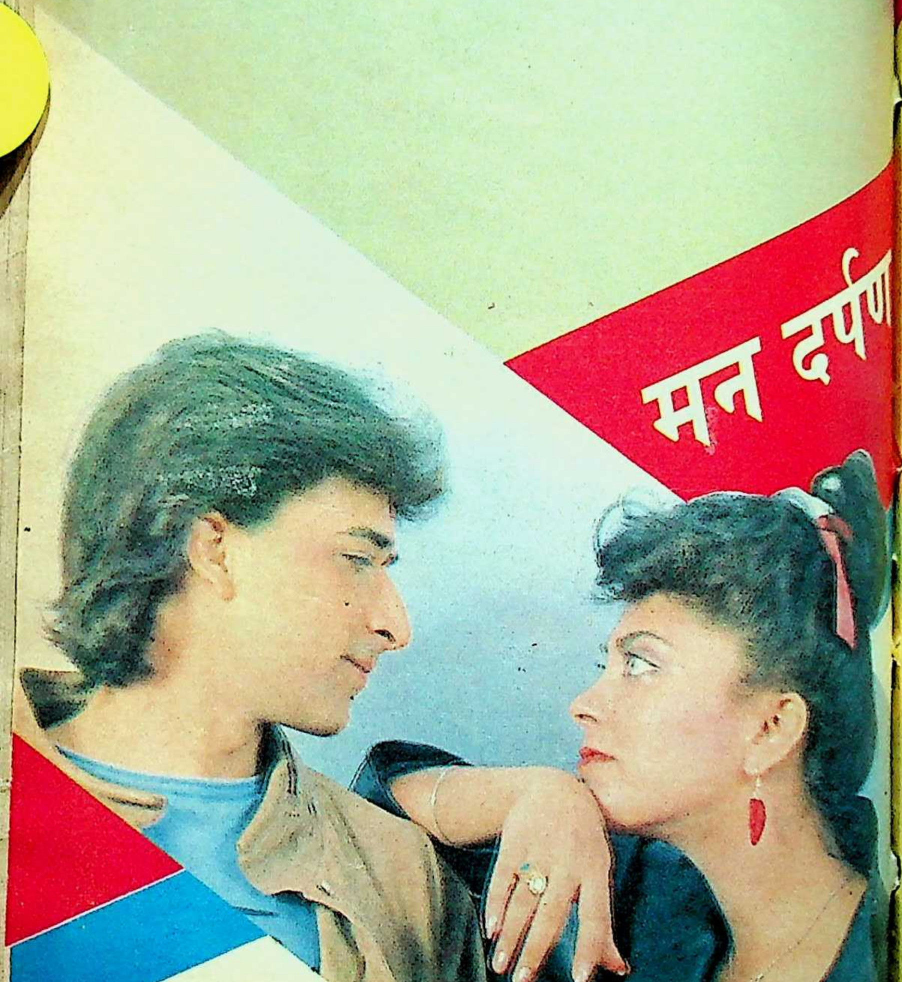

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने चेहरे की त्वचा पहचान कर देखभाल कीजिए

लेख ● हरजीत कौर

सुंदर, साफ व लावण्यमय त्वचा तो प्रत्येक स्त्री चाहती है परंतु इस की देखभाल में प्रायः लापरवाही बरती जाती है. फिर अधिकांश स्त्रियां यह भी नहीं जानतीं कि उन की त्वचा कैसी है? रूखी, तैलीय या संवेदनशील. इसलिए वे गलत प्रसाधनों तथा नुसखों का इस्तेमाल कर लेती हैं. परिणामतः त्वचा खराब हो जाती है. अतः उपचार करने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि आप की त्वचा किस किस्म की है.

सर्वप्रथम सादे पानी से चेहरा धोएं. फिर चेहरे के हर भाग यानी माथे, गाल, नाक, ठेड़ी पर एकएक टुकड़ा टिशू पेपर का रखें.बीचबीच में पेपर को हलकेहलके त्वचा पर दबाती रहें, यदि टिशू पेपर पर तेल के धब्बे दिखाई दे तो इस का अर्थ है कि त्वचा तैलीय है.यदि पेपर का कुछ भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरे को सिर्फ साबुन पानी से धो कर ही साफ, स्वच्छ हुआ नहीं समझ लेना चाहिए. यदि आप चाहती हैं कि आप का चेहरा दमकता रहे तथा आप के चेहरे की त्वचा स्वस्थ रहे तो इस के लिए आप को कुछ विशेष बातें अमल में लानी होंगी.

तैलीय व कुछ भाग सूखा रहे तो यह मिलीजुली त्वचा है और यदि टिशू पेपर पर तेल के हलके से बिंदू हों तो यह सामान्य त्वचा कहलाएगी. यदि रूखी त्वचा होगी तो टिशू पेपर पर चिकनाई का कोई धब्बा नहीं आएगा और कागज प्रभावहीन रहेगा.

त्वचा किस प्रकार की दिखाई देती है:

तैलीय त्वचा

ऐसी त्वचा पर हमेशा तेल दिखाई देता है विशेषतया माथे, ठोड़ी व नाक के आसपास ध्यान से देखने पर त्वचा में छोटेछोटे छिद्र दिखाई देते हैं. ऐसी त्वचा पर किए गए मेकअप में बहुत चमक आती है परंतु दोतीन घंटे बाद त्वचा पर अधिक तेल आने से मेकअप खराब भी हो जाता है. तैलीय त्वचा पर मुंहासे भी अधिक निकलते हैं किंतु ऐसी त्वचा पर झुर्रियां देर से पड़ती हैं.

शुष्क त्वचा

यह त्वचा रूखी व कमजोर होती है व सर्दियों में त्वचा खुरदरी हो जाती है. इस त्वचा पर किए गए मेकअप में कोई चमक नहीं आती व धूप में आने पर रूखी त्वचा लाल भी हो जाती है.

मिलीजुली त्वचा

यह त्वचा कहीं से तैलीय व कहीं से रूखी दिखाई देती है व त्वचा में तनाव तथा कहींकहीं लकीरें रहती हैं. लगभग 35-40 वर्ष की उम्र की स्त्रियों की त्वचा ऐसी हो जाती है.

सामान्य त्वचा

यह त्वचा आदर्श मानी जाती है. इस में चेहरे पर ताजगी, आकर्षण व गुलाबीपन झलकता है और स्त्रियां हलका सा मेकअप कर के भी सुंदर दिखाई देती हैं. यह छूने में नर्म होती है. गरमियों में ऐसी त्वचा पर थोड़ा सा तेल आ सकता है व सर्दियों में तनिक शुष्क हो सकती है.

संवेदनशील त्वचा

यह त्वचा बहुत नाजुक होती है. इसे खुरदरे कपड़े से रगड़ने या अधिक साबुन लगाने से त्वचा पर चकत्ते से पड़ जाते हैं, त्वचा लाल हो जाती है. ऐसी त्वचा पर प्रसाधन भी कम माफिक आते हैं.

अपनी त्वचा की पहचान कर के ही उस की देखभाल कीजिए.

तैलीय त्वचा की देखभाल

इस त्वचा की उचित देखभाल करना

तैलीय त्वचा पर नियमित रूप से उबटन लगाने से चेहरे की त्वचा का तेल संतुलन बना रहता है. ▼

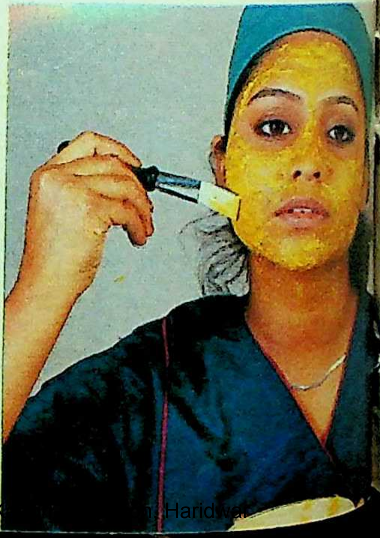

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलीजुली त्वचा की देखभाल करना थोड़ा कठिन होता है क्योंकि यह कहीं से रूखी व कहीं से तैलीय होती है. ♦

अत्यंत आवश्यक है. तैलीय त्वचा को दिन में तीनचार बार सैट्रीलैक, नीको, चंद्रिका या किसी भी औषधियुक्त साबुन से धोएं व तौलिए से थपथपा कर पोंछें. गरमियों में दिन में चेहरे पर एस्ट्रिजेंट लोशन, जो चेहरे पर तेल आने से रोकता है, लगाए रखें. तैलीय त्वचा के रोमछिद्रों को सिकोड़ने के लिए 'विचहेजल' उपयुक्त एस्ट्रिजेंट है. एस्ट्रिजेंट के स्थान पर टोनिंग लोशन भी इस्तेमाल किया जा सकता है.

चिकनी त्वचा की सफाई कच्चे दूध से करें. रुई में कच्चा दूध ले कर पूरा चेहरा, गरदन व कान साफ करें और फिर साबुन से धोएं. यह उपाय प्रतिदिन रात को करें. यदि मेकअप किया हो तो यह उपाय सोते समय अवश्य ही करें.

तैलीय त्वचा पर यह उबटन लगाएं. दो बड़े चम्मच बेसन में एक नीबू का रस, थोड़ा सा चंदन पाउडर व चुटकी भर हलदी मिला कर पानी से पेस्ट बनाएं. पेस्ट न गाढ़ी हो न पतली. इसे चेहरे व गरदन पर लगाएं. 10 मिनट बाद रगड़ कर उतारें व फिर सादे पानी से धो लें. यह उबटन हर दूसरेतीसरे दिन करें.

इस उबटन द्वारा बेसन त्वचा के तेल को सोख लेता है व त्वचा कांतिमय हो उठती है. सर्दियों में इस उबटन में तीनचार बूंदें सरसों का तेल मिला लें, क्योंकि तब त्वचा थोड़ी सी खुश्क हो जाती है.

10-15 दिन में एक बार यदि त्वचा को भाप दी जाए तो इस से रोमछिद्रों में छिपा मैल बाहर निकलता है, जिस से त्वचा साफ हो जाती है. भाप देने के बाद चेहरा पोंछ कर बर्फ लगाएं.

शुष्क त्वचा की देखभाल

जिन स्त्रियों की त्वचा शुष्क है, वे यदि इस की सही देखभाल न करें तो चेहरे की त्वचा लटक जाती है व जल्द ही झुर्रियां पड़ जाती हैं. शुष्क त्वचा पर मौसम का प्रभाव भी जल्दी पड़ता है. तेज हवा व तेज धूप से इसे बचाएं. शुष्क चेहरे को बारबार साबुन से न धोएं, केवल सादे पानी से धोएं. साबुन प्रयोग करना हो तो ग्लिसरीनयुक्त साबुन ही लगाएं. और यदि पानी खारा (नमकीन) हो तो उबाल कर ठंडा कर लें अन्यथा खारे पानी से त्वचा अधिक शुष्क हो जाती है. धोने के बाद चेहरा अधिक रगड़ कर न पोंछें.

सर्दियों में सारे दिन चेहरे पर मास्चराइजिंग लोशन लगाए रखें जो त्वचा को मुलायम बनाता है चेहरे पर कुछ चिकनाहट लाने के लिए गंधरहित रेंडी का तेल, बादाम रोगन या जैतून के तेल से रात्रि के समय मालिश करें. सुबह उठ कर अतिरिक्त तेल रुई से पोंछ कर ठंडे पानी के छींटें मारें.

शुष्क त्वचा के लिए मेकअप करते समय सारे प्रसाधन तेलयुक्त लें. जैसे, कोल्ड क्रीम, ग्लोगैटर, मास्चराइजरयुक्त फाउंडेशन, तरल रूज, क्रीमयुक्त आइशैडो इत्यादि. इन से त्वचा को चमक व कांति मिलती है, जिस से त्वचा आकर्षक दिखाई देती है.

भोजन में ऐसी चीजों का समावेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें, जिन में विटामिनों व प्रोटीन की भरपूर मात्रा विद्यमान हो.

सामान्य त्वचा की देखभाल

सामान्य त्वचा के लिए हमेशा सादे पानी से मुंह धोएं. सर्दियों में गुनगुने पानी से चेहरा धोया जा सकता है. चेहरा धोने के लिए हमेशा एक ही कंपनी का साबुन रखें. बारबार साबुन बदलने से त्वचा अधिक रूखी या तैलीय हो सकती है. प्रतिदिन सुबह या रात को सोते समय क्लीनजिंग मिल्क से चेहरा साफ करें व फिर साफ पानी से भलीभांति धो कर रोएंदार तौलिए से पोंछें.

सामान्य त्वचा पर हर तीसरेचौथे दिन यह उबटन लगाएं. एक चम्मच जौ का आटा, एक चम्मच बेसन, आधा चम्मच दूध, दो बूंद सरसों का तेल व थोड़ा सा पानी मिला कर चेहरे पर लगाएं. कड़ा होने पर मल कर छुड़ाएं. फिर गुनगुने पानी से धो लें. त्वचा निखर उठेगी.

यदि मेकअप करना हो तो हलका सा करें व रात को सोते समय वह मेकअप क्लीनजिंग मिल्क से जरूर उतारें. यदि सप्ताह में एक बार मेकअप न करें तो बेहतर है. इस से त्वचा स्वस्थ रूप से 'श्वास ले सकेगी.

मिलीजुली त्वचा

ऐसी त्वचा की देखभाल करना कठिन हो जाता है जो कहीं से रूखी हो व कहीं से तैलीय. अतः चेहरे पर ऐसे उबटन व लोशन लगाएं जिन में कुछ तैलीय तत्त्व हों जो त्वचा का रूखापन हटाएं व कुछ एल्कोहल की मात्रा हो जो अतिरिक्त चिकनाई वाले भाग की चिकनाई हटा सके, जिस से त्वचा संतुलित बने.

प्रतिदिन चेहरे पर नीबू, ग्लिसरीन व गुलाब जल की बराबर मात्रा मिला कर बनाया गया लोशन आधे घंटे तक लगाएं व फिर धो दें. चेहरे पर आलपरपज क्रीम का उपयोग भी अच्छा रहेगा.

चेहरा धोने के लिए अधिक गरम पानी प्रयोग में न लाएं. चेहरे पर साबुन लगाने की बजाय यदि यह उबटन प्रतिदिन लगाएं तो लाभप्रद रहेगा. मसूर की दाल को पोटेशियम परमैंगनेट में भिगो कर छाया में सुखा लें व इस का आटा पीस लें. प्रातः स्नान से पूर्व थोड़े से आटे में दही मिला कर चेहरे पर लगाएं व 10 मिनट बाद धो दें.

दिन में एकाध बार साबुन से चेहरा धोया जा सकता है व रात को सोने से पूर्व क्लीनजिंग मिल्क से साफ कर चेहरा सादे पानी से धोएं व हलका पोंछ लें.

अपने भोजन में विटामिन सी युक्त खाद्य पदार्थ अधिक लें.

संवेदनशील त्वचा

इस त्वचा पर पूरा ध्यान दें. जिन पदार्थों के खाने व चेहरे पर लगाने से एलर्जी हो, वे प्रयोग में न लाएं. बेबी सोप या कोल्ड क्रीम वाली साबुन से चेहरा धोएं व चेहरा रगड़ कर कदापि न पोंछें. कई बार खुरदरे तौलिए से ही त्वचा पर लाल चकत्ते पड़ जाते हैं.

क्लीनजिंग क्रीम से त्वचा की प्रतिदिन सफाई करें.

सर्दियों में चेहरे पर लैनोलिन युक्त मास्चराइजर लगाएं. गरमियों में खरबूजे का रस चेहरे पर 15 मिनट लगा कर धो दें. यह चेहरे पर प्राकृतिक चमक लाता है. ध्यान रखें, चेहरे पर कोई भी ऐसा प्रसाधन प्रयोग न करें जिस में अधिक खुशबू व एल्कोहल तत्त्व हों. यदि 'ब्लीच' करना हो तो सावधानी से करें.

दूध व दूध से बनी चीजें, हरी सब्जियां व दालें भरभूर मात्रा में लें.

त्वचा किसी भी किस्म की हो, उस की दैनिक देखभाल आवश्यक है. साथ ही त्वचा की रक्षा के लिए नियमित व्यायाम, पूरी नींद, पौष्टिक आहार व कम से कम मानसिक तनाव की जरूरत होती है. इस के अतिरिक्त कब्ज न हो व रक्त शुद्ध रहे, फिर देखिए, अपने चेहरे का रूपरंग, आप स्वयं चकित रह जाएंगी. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • भारत भूषण श्रीवास्तव

सामूहिक विवाह की आड़ में

बैंक में कार्यरत एक युवक का कहना है, "जब मैं मुशकिल से 19 साल का था तब मेरी शादी एक भीड़भाड़ वाले समारोह में कर दी गई." अपना नाम गुप्त रखने के आग्रह के साथ उक्त युवक अपनी व्यथा बतलाता है, "मेरा वैवाहिक जीवन कभी सुखी नहीं रहा. एक बार मैं पत्नी की बदसूरती और निरक्षरता से समझौता कर सकता हूं लेकिन उस की फूहड़ता और बेहूदेपन से कतई नहीं."

थोड़े आक्रोश के साथ वह फिर कहता है, "तगड़े दहेज के लालच में, जो शायद शादी के पहले ही ले लिया गया था, मेरे घर वालों ने मेरी जिंदगी को नरक बना दिया. हालत यह है कि उस समय उम्र और पारिवारिक दबाव के कारण विरोध नहीं कर सका और अब अपनी सामाजिक स्थिति और व्यवस्थाओं के कारण नहीं कर सकता."

सामूहिक विवाह बेशक कई दृष्टियों से अच्छे हैं. लेकिन आज उन की आड़ में जो विसंगतियां पनप रही हैं और हर धर्म, समाज के अग्रिम पंक्ति के लोगों ने अपना धंधा चला रखा है, उस का खुलासा समाज के सामने होना नितांत आवश्यक है. अन्यथा न जाने कितने युवक, युवतियां उक्त बैंक कर्मचारी की तरह समाज के इन दलालों की खोखली दलीलों के सामने घुटने टेक कर, घुट कर जीने को विवश होते

सामूहिक विवाह आदर्श विवाह माने जाते हैं, परंतु इन आदर्श बनाम सामूहिक विवाहों की आड़ में जो विसंगतियां पनप रही हैं, वे इन विवाहों का नकारात्मक पहलू भी सामने लाती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेंगे और ऐसे सामूहिक विवाहों पर आदर्श विवाह का ठप्पा लगा रहेगा. इसलिए सामूहिक विवाहों की आड़ में हो रहे अपराधों को जानना और ऐसे विवाहों का बहिष्कार होना जरूरी है. नहीं तो आगे चल कर इस के परिणाम व्यक्ति व समाज दोनों के लिए घातक होंगे.

सामूहिक विवाहों से पीड़ित अनेक युवकयुवतियां आप को हर जगह मिल जाएंगे. वैवाहिक जीवन में क्लेश के अतिरिक्त उन्हें यह बात भी सालती रहती है कि उन का विवाह भी धूमधाम से हो सकता था. लेकिन महज स्वार्थ और तथाकथित मितव्ययता के आदर्शों के कारण ऐसा नहीं हो सका.

जिस किसी ने भी सामूहिक विवाहों की शुरुआत की होगी, उस ने इस के दूरगामी दुष्परिणामों पर विचार नहीं किया होगा.

अधिकतर सामूहिक विवाहों में वरवधू निर्धन तबके के होते हैं. समाज का कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी संतान को इस 'तमाशे' में ब्याह रचाने की अनुमति नहीं देता.

सामूहिक विवाहों की आड़ में ... खूबी से बाल विवाह हो रहे हैं, जि... सामने दूरदर्शन के सरकारी विज्ञापन ... नजर आते हैं. किसी भी समाज के सामू... विवाहों में चले जाइए, बरबस ही ... वरवधू को देख कर आप सोचने पर ... हो जाएंगे कि अभी क्या जल्दी थी.

इस कुरीति से मेरा पहला साक्षात्... एक मित्र के घर की महरी के माध्यम ... हुआ. वह परित्यक्ता थी. उसी के शब्दों ... "हम तो बहुत छोटे थे ... भाईभौजाई ने पालापोसा था. समाज ... सामूहिक विवाहों में नाम लिखवा ... पति बहुत बड़ा था. शराबी भी था ... मारतापीटता भी खूब था. फिर एक ... घर से भगा दिया. अब इसी तरह ... घरों के काम कर अपना पेट पाल रही ...

उक्त समस्या की, एक जिंदगी ... बरबाद हो जाने की जिम्मेदारी लेने ... उस समाज में कोई नहीं. उक्त महिला ... कानूनन गुहार भी नहीं कर सकती. ... करे भी तो उसे कहीं से न्याय नहीं मि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

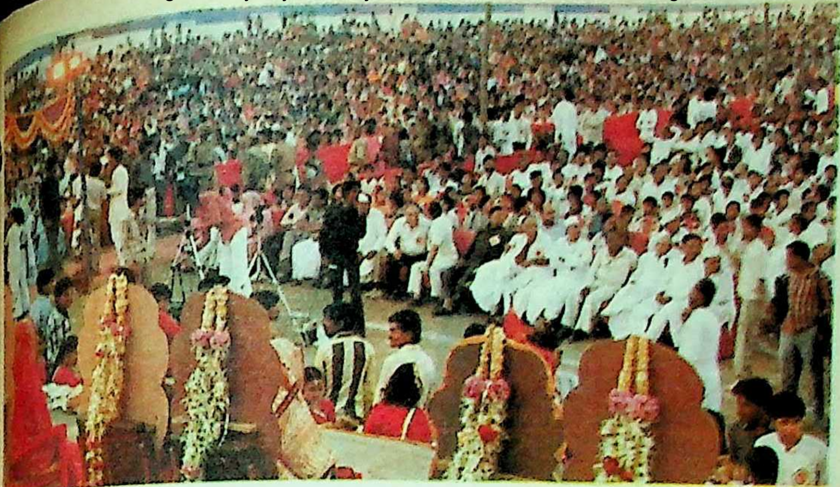

वाला क्योंकि वह गरीब है.

अधिकतर सामूहिक विवाहों में वरवधू निर्धन तबके के होते हैं. समाज का कोई संपन्न या प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी संतान को इस 'तमाशे' में ब्याह रचाने की अनुमति नहीं देता. हां, हजार, दो हजार का चंदा दे कर नाम हासिल जरूर कर सकता है और आशीर्वाद दे सकता है.

अलबत्ता दहेज किसी सीमा तक सामूहिक विवाहों में पनप नहीं पाया. वजह यही है कि लेने वाला भी गरीब और देने वाला भी गरीब. लेकिन कुछ मध्यमवर्गीय लोग अपनी संतानों का ब्याह सामूहिक रूप से रचा कर झूठी वाहवाही लूट लेते हैं. लेनदेन पहले ही हो चुका होता है.

मधुर की शादी में मैं पहली बार सामूहिक विवाहों से परिचित हुआ था. डाक्टरी पढ़ रहे मेरे मित्र ने वास्तव में एक आदर्श कदम उठाया था. लेकिन कई अव्यवस्थाएं मुझे वहां देखने को मिलीं. पानी, शौच, स्नान, तंबुओं में निवास आदि की अव्यवस्थाएं. यह तो सामूहिक विवाहों की मामूली समस्याएं हैं.

कई बार तो ऐसा देखने में आया है कि दूल्हा दुलहन बदल जाते हैं. भीड़ में बच्चे परेशान हो जाते हैं. भोजन पर लोग गिद्ध से टूट कर सारी व्यवस्था बिगाड़ देते हैं.

सामूहिक विवाहों में कई बार दूल्हा दुलहन बदल जाते हैं. भीड़ में बच्चे परेशान हो जाते हैं. किसी का सामान चोरी हो जाता है, तो किसी का बच्चा गायब हो जाता है.

किसी का सामान चोरी हो गया तो किसी का बच्चा गायब हो गया. इन समस्याओं और अव्यवस्थाओं का कोई हल नहीं. क्योंकि कार्यकर्ता लोग अकसर अपनी जिम्मेदारी पूरी करने की बजाए अपने शौक पूरे करते नजर आते हैं.

सामूहिक विवाह की प्रक्रिया :

सामूहिक विवाहों की प्रक्रिया बड़ी सरल है. आयोजकों के समक्ष अभिभावक एक निश्चित रकम दे कर अपने लड़के या लड़की का पंजीयन करवा लेते हैं. निश्चित तिथि पर उन्हें तंबू की क्रम संख्या बता दी जाती है. विभिन्न समाजों में पंजीयन की रकम अलगअलग होती है. यह 101 रुपए से ले कर 5001 रुपए तक है. इस से अनावश्यक खर्चों की बचत तो अवश्य हो जाती है लेकिन इस लेख का उद्देश्य सामूहिक विवाहों की खूबियां न बता कर उन के कमजोर पहलुओं को उजागर करना है, ताकि उन समस्याओं का समाधान हो सके.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटूक्तियां

एक वरिष्ठ पत्रकार का कथन है कि 'सभी गांधी, 'महात्मा' नहीं होते.' सोचने की बात यह भी है कि अगर सभी बिल्लियां हज करने चली जाएंगी तो...

*

लेखन के धंधे में तीन दिक्कतें हैं—ऐसा लिखना जो प्रकाशन योग्य हो, ऐसा प्रकाशक खोजना जो उसे प्रकाशित करे और ऐसे अक्लमंद लोगों को पाना जो उसे पढ़ें.

*

असली पड़ोसी वह है जो आप के विषय में आप से अधिक जानता हो.

*

विश्व में कोई भी स्त्री ऐसी नहीं होगी जैसी कि मेरी पत्नी—सिर्फ मेरी ही नहीं, मेरी पत्नी की भी यही राय है.

*

अपनी आय के अनुसार ही खर्च कीजिए, भले ही इस के लिए आप को कर्ज लेना पड़े.

*

पुराने पत्र पढ़ने का एक मजा यह है कि उन का जवाब देने की जरूरत महसूस नहीं होती.

*

आप का ऋणदाता आप के भले की सोचेगा और आप का ऋणी आप के बुरे की.

*

बुद्धिमान से दुश्मनी भी मूर्ख की दोस्ती से लाख गुना अच्छी है.

*

यह जरूरी नहीं कि रोजाना एक अच्छा काम किया जाए. किंतु यह जरूरी है कि बुरे काम से हमेशा बचा जाए.

विवाह के दोतीन दिन पहले वर व... पक्ष के लोग अपने तंबुओं में आ जा... विवाह की रस्में आरंभ हो जाती हैं... निश्चित तिथि पर विवाह संपन्न होता... राजनीति से भी अछूते नहीं हैं, सामूहिक... विवाह. अंत में विदाई के समय समारोह... ही कोई 'बड़ा आदमी' अथवा सांसद... विधायक, मंत्री कार में आ कर नवदंपतियों... को आशीर्वाद देता है, उन के सुखी... वैवाहिक जीवन की कामना करता है... औपचारिक रूप से जलपान ग्रहण कर... फर्राटे से चला जाता है.

निश्चित ही सामूहिक विवाहों में... ऐसी नेतागिरी की न तो आवश्यकता है न... कोई सार्थकता. मगर न जाने क्यों आयोजक... यह ठप्पा लगवाना पसंद करते हैं. हो सकता... है, इस में उन के निजी स्वार्थ जुड़े हों या अन्य... समाजों के सामूहिक विवाहों के आयोजकों... से प्रतिद्वंद्विता.

अंधविश्वासों से मुक्त नहीं :

प्राय: सामूहिक विवाहों के बारे में... बड़े वर्ग की यह धारणा है कि वे रूढ़ि... कुरीतियों और अंधविश्वासों से मुक्त हैं... यह सोचना सरासर गलत है. इन विवाहों... बाकायदा वे सभी रस्में पूरी की जाती हैं जो... साधारण एकल विवाह में होती हैं. मसलन... पैर पखराई, टीका लगा कर पैसे देना... दक्षिणा आदि. पंडित को प्रत्येक जोड़े... औसतन 100 रुपए तक की कमाई और इस... से लगभग आधी नाई व अन्य घटकों को... जाती है.

इस प्रकार यदि 21 जोड़ों का... सामूहिक विवाह हुआ तो पंडित को 2100... रुपए के अतिरिक्त आयोजकों से तय की... गई रकम अलग मिलती है, इसलिए पंडितों... में भी एक प्रतियोगिता सी हो जाती है कि... कौन कितने अधिक सामूहिक विवाह संपन्न... करा कर जेब भर सकता है. बैंडबाजे... आतिशबाजी, लाउडस्पीकर, फिल्मी गाने... सामूहिक विवाह की सार्थकता को भुला... देते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

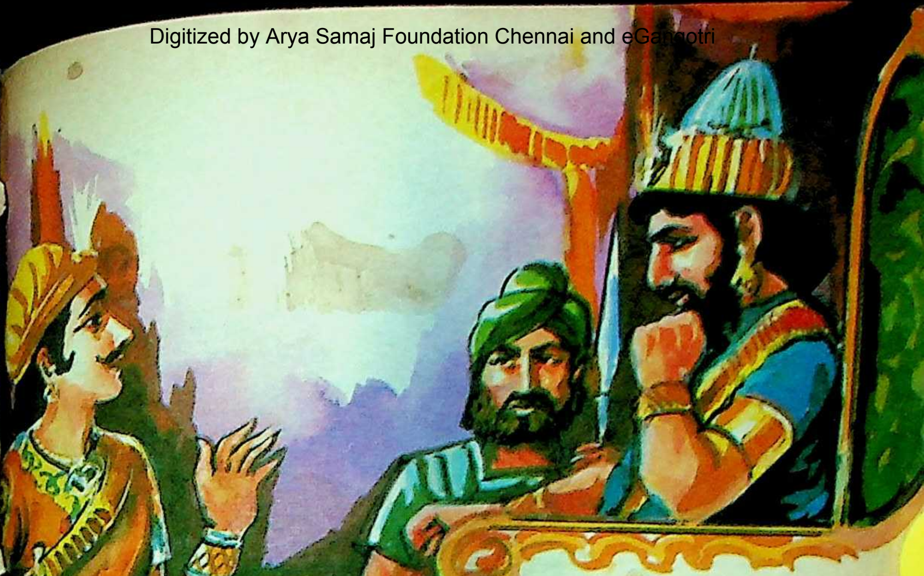

कहानी • वेद त्रिपाठी

नापित पुत्र

गजनी का सुलतान मसूद अपने महल के एक खास कमरे में बड़ी ही गमगीन मुद्रा में बैठा हुआ था. उस की चिंता का कारण था—पंजाब के सूबेदार अहमद नियालतगन द्वारा खुले तौर पर बगावत का झंडा उठा देना. वैसे तो गंजनी के सुलतान के लिए बगावत कोई नई बात नहीं थी. किंतु इस बार खास कठिनाई यह थी कि गजनी का कोई भी सेनापति पंजाब की ओर कूच करने को तैयार नहीं था. उस ने अपने सभी बड़े सेनापतियों बेगतागदी सुबासी, हारून, अजीज अरियारूक आदि से पूछा किंतु उन में से कोई भी हिंदुस्तान की तरफ कूच करने को तैयार न हुआ.

फिर उस ने अपने शहजादों मजदूद, मदूद, इजादयार, अब्दुर्रशीद, फर्रुखजाद को टटोला, पर वे भी साफ मुकर गए. गरमी और बरसात के कारण वे सभी हिंदुस्तान जाने से घबरा रहे थे. उन का कहना था कि सुलतान को गरमी और बरसात खत्म होने तक इंतजार करना चाहिए और सर्दी प्रारंभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलतान मसूद ने हिंदुस्तान में हुई बगावत को दबाने के लिए तिलक को चुना था, और तिलक प्रसन्न था क्योंकि उसे हिंदुस्तान से बदला लेना था. उसे लगा कि उस का चिर प्रतीक्षित स्वप्न अब पूरा होने वाला है.

होने पर ही हिंदुस्तान की तरफ कूच करने का हुक्म फरमाना चाहिए.

किंतु सुलतान मसूद सर्दी आने तक का इंतजार नहीं कर सकता था. उस के युद्ध मंत्री बू सहल जौजनी का कहना था कि यदि अहमद की बगावत को जल्दी ही नहीं दबाया गया तो हो सकता है कि सल्तनत के कुछ और भी सूबेदार बगावत कर बैठें.

स्थिति की नजाकत को समझते हुए सुलतान मसूद ने खुद ही हिंदुस्तान की तरफ कूच करने का फैसला किया किंतु उस के तजरबाकार वजीर ख्वाजा अहमद बिन हसन मैमंदी ने उस से नाइंसाफी करते हुए सलाह दी, "हुजूर, सल्जूक लड़ाके गजनी पर चीते की तरह घात लगाए बैठे हैं, इसलिए आप तो गजनी छोड़ने का खयाल भी दिल में न लाइए."

सब तरफ से मायूस होने पर सुलतान मसूद की निगाह अपने हिंदुस्तानी सेनापति तिलक पर जा टिकी. तिलक उस फौज का सेनापति था जो सुलतान के वालिद महमूद गजनवी द्वारा हिंदुस्तान पर लगातार 17 हमले करने के दौरान गठित की गई थी. हिंदुस्तान पर हमले के समय इस फौज ने जो वफादारी व बहादुरी दिखाई थी, सुलतान महमूद उस का कायल हो गया था. एक बार तो उस ने बड़े साफ शब्दों में कहा था, "मैं ने हिंदुस्तान पर हिंदुस्तानी फौजों के सहारे ही फतह हासिल की है. हिंदुस्तानी सिपाही मेरी कुल ताकत का ज्यादा नहीं तो कम से कम एकचौथाई हिस्सा तो हैं ही."

हिंदुस्तानी फौजों की बहादुरी और वफादारी का ध्यान आते ही सुलतान मसूद ने सेनानायक तिलक को ही पंजाब अभियान पर भेजने का निश्चय कर लिया, उस ने तुरंत एक हरकारे को तिलक को बुला लाने के लिए भेजा.

इधर हरकारा तिलक को बुला... लिए रवाना हुआ, उधर सुलतान मसूद... चिंता और दुख के सागर में गोते... लगा. पंजाब के सूबेदार अहमद नियाल... की गद्दारी को याद कर के उस का... बारबार रो उठता था.

सुलतान को सर्वाधिक पश्चाता... बात का था कि जब पंजाब के सम... वाहक बुल कासिम बुल हकम ने... पहलेपहल खबर भेजी कि अहमद के... नेक नहीं हैं तो उस ने उस खबर पर... ध्यान नहीं दिया. यही नहीं पंजाब में... द्वारा नियुक्त प्रशासनिक अधिकारी... शिराजी ने भी जब अहमद के खि... शिकायत भेजी तो उस ने उसे भी अन... कर दिया. उलटे उस ने काजी को... फटकार कर खत लिख दिया. यही नहीं... ने अहमद को हिंदुस्तान के भीतरी हिस्... हमले करने और लूटने की भी इजाज... दी.

सुलतान मसूद को अहमद पर... बार तब शक हुआ, जब हिंदुओं के... पवित्र नगर काशी को लूटने के बाद... अहमद ने बहुत थोड़ा ही माल गजनी भे... जबकि काजी शिराजी के द्वारा भेजे... पैगाम में बताया गया था कि काशी के... से तीन हजार सोने तथा 18 हजार चांदी... मूर्तियां बरामद की थीं. इन में से कुछ... तो इतनी विशाल थीं कि वे कांटे पर... तुल भी नहीं सकती थीं, अतः उन को... में तोड़तोड़ कर तौला गया था. मूर्तियों... अलावा उन मंदिरों में पुश्तों से इकट्ठी... असीम संपत्ति थी. किंतु अहमद द्वारा... सुलतान को भेजी गई संपत्ति उस की तुल... में बहुत कम थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलतान मसूद को ध्यान आया कि जब उस के वालिद सुलतान महमूद ने सोमनाथ को जीता था तो इतनी मात्रा में सोनाचांदी और संपत्ति मिली थी कि उस को ढोने के लिए सवारियां तो कम पड़ ही गई थीं, बल्कि जो लाखों गुलाम पकड़े गए थे, वे भी कम पड़ रहे थे, ... फिर काशी में, जो सोमनाथ से कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी, इतनी कम संपत्ति कैसे हो सकती थी?

सुलतान को अहमद की हरकतें एकएक कर याद आ रही थीं. उसे यह भी ध्यान आया कि पिछले काफी समय से अहमद ने हिंदुस्तानी गुलामों को भेजना भी बहुत कम कर दिया था. जिस से गुलामों की मंडी में गुलामों के भाव काफी बढ़ गए थे, जबकि उस के वालिद सुलतान महमूद जब भी हिंदुस्तान से फतह कर के लौटते थे तो इतने गुलाम पकड़ कर लाते थे कि गजनी के बाजारों में गुलाम मिट्टी के मोल बिकते थे. हिंदुस्तान के गुलामों की तो गजनी में इतनी इफरात हो गई थी कि हसीन से हसीन हिंदू गुलाम लड़की, भेड़बकरी से भी चौथाई दामों में मिल जाती थी.

हिंदुस्तान से सोनाचांदी और गुलामों की आमद अचानक कम हो जाने के परिणामस्वरूप उन के भाव काफी बढ़ जाने से गजनी के सैनिकों और नागरिकों में असंतोष फैलने लगा था.

सुलतान का शक तब यकीन में बदल गया, जब उसे उस के शाही समाचार वाहक यानी आरिज-ए-नौमालिक, बुल-कालिम-बुल-हकम ने खबर भेजी कि अहमद ने अचानक काजी शिराजी को मंदार-कर के किले में कैद कर लिया है और वह स्वयं को सुलतान महमूद गजनवी का लड़का बताने लगा है.

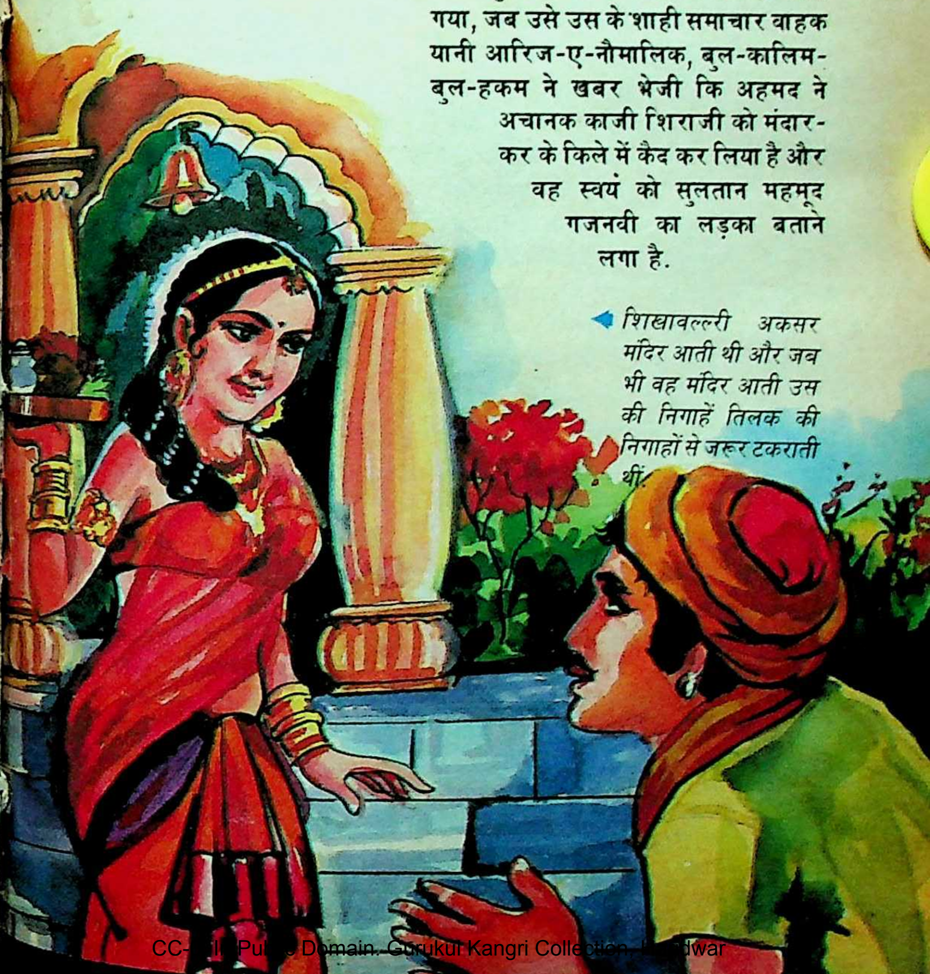

◀ शिखावल्लरी अकसर मंदिर आती थी और जब भी वह मंदिर आती उस की निगाहें तिलक की निगाहों से जरूर टकराती थीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलतान विचारों के इसी भंवर में फंसा अपने को बुरी तरह कोस रहा था. उस के विचारों की श्रृंखला उस समय भंग हुई जब उस के दरबान ने खबर दी कि तिलक महल में आ चुका है और उस से रूबरू होने की इजाजत चाहता है.

सुलतान मसूद तो तिलक की प्रतीक्षा ही कर रहा था. अतः उस ने दरबान से तिलक को तुरंत अंदर लाने के लिए कहा. सेनानायक तिलक ने सुलतान के कक्ष में प्रवेश कर के उसे तीन बार झुक कर सलाम नजर किया तथा पुनः सुलतान के सामने लेट कर उस की कदम बोसी की और सिर झुका कर खड़ा हो गया.

सुलतान ने तिलक को निकट बैठने को कहा तथा उसे अपने पास बुलाने का कारण समझाया.

तिलक ने जैसे ही यह सुना कि सुलतान ने उसे पंजाब अभियान पर भेजने का निश्चय किया है तो वह प्रसन्नता से फूला न समाया. गजनी के सुलतान का अपने ऊपर इतना भरोसा देख कर वह इतना गद्गद् हो गया कि उसे कुछ बोलना भी मुशकिल लगने लगा. बड़ी कठिनाई से उस ने सुलतान से कहना प्रारंभ किया.

"जहांपनाह, आप का मेरे ऊपर इतना भरोसा यकीनन मेरी जिंदगी की सब से बड़ी चीज है. मेरे लिए इस से ज्यादा फख्र की और क्या बात होगी कि आप मुझे ऐसी फौज का सेनापति बना कर भेज रहे हैं जिस में बहुत से तुर्की सिपाही तथा सिपहसालार भी होंगे. उन की सदारत का मौका मुझे मिलेगा, ऐसा तो मैं ने कभी ख्वाब में भी नहीं सोचा.

"हुजूर, आप मुझ पर यकीन करें, जब भी आप मुझे हुक्म देंगे, मैं पंजाब की ओर कूच कर दूंगा. मैं हुजूर को यह भी भरोसा दिलाता हूं कि अगर मैं अहमद नियालतगन की खोपड़ी कलम कर के आप को भेंट न कर सका तो फिर मैं गजनी में कदम भी न रखूंगा. हुजूर यकीन रखें कि आप ने मुझे जो इज्जत बख्शी है, मैं आप को उस के काबिल बन कर दिखाऊंगा."

तिलक की ये बातें सुन कर सुलतान की खुशी का ठिकाना न रहा. जब सभी ... सेनापति अपने फर्ज से पीछे हट रहे थे, तिलक का इस प्रकार से भरोसा दिला... सुलतान को ऐसा लगा जैसे उस के सामने कोई फरिश्ता आ गया हो. यद्यपि तिलक के प्रति उस का मन अहसान से भर गया, फि... भी पहले तिलक उस का एक निचले दर्जे का हिंदुस्तानी सिपहसालार ही था. अतः उस ने अपनी प्रसन्नता तथा कृतज्ञता के भावों को बड़ी चालाकी से मन में छिपा लिया.

सुलतान ने तिलक को समझाया कि वह अपने नेतृत्व वाली हिंदुस्तानी सैनिकों की फौज के अतिरिक्त एक टुकड़ी हरा... और एक टुकड़ी तुर्की सैनिकों की भी साथ ले कर जुम्मे से पहले ही पंजाब की तरफ कूच कर दे. उस ने यह भी हुकम दिया कि अहमद को जिंदा या मुरदा जैसा भी संभव हो, उस के सामने पेश करे.

अब तिलक सुलतान मसूद की हिंदुस्तानी फौज का सर्वोच्च सिपहसालार था. उस ने अपनी जिंदगी में बहुत से उतारचढ़ाव देखे थे. उस का जन्म हिंदुस्तान के श्रीरंगपुर नामक गांव में एक नाई के घर पर हुआ था. यही वजह थी कि लोग उसे नापित पुत्र कहते थे. उस का पिता श्रीरंगपुर के ही शिव मंदिर में मुंडन का काम करता था. बचपन में जब उस का पिता मंदिर में मुंडन का काम करने जाता था तो तिलक भी उस के साथ हो लेता था. मंदिर पर दूरदूर से बड़ेबड़े लोग अपने बच्चों का मुंडन कराने आते थे. इन लोगों के ठटबाट को देख कर तिलक हक्काबक्का रह जाता था.

जब धनी लोगों के बच्चों का मुंडन होता था तो वे घोड़े पर बैठ कर लाए जाते थे. मुंडन के पश्चात उन्हें स्नान करा के ... कीमती पोशाकें पहनाई जाती थीं तो तिलक उन्हें ललचाई नजर से देखा करता था. ... सोचता था, आखिर इन बच्चों में ऐसी क्या खास बात है कि ये इतने ठटबाट का ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं जबकि उस के पास पहनने के लिए एक लंगोटी के सिवा कुछ भी नहीं है.

मंदिर में एक पाठशाला भी थी. वहां ब्राह्मण तथा क्षत्रिय बच्चों को पढ़ते देख कर उसे भी पढ़ने की इच्छा हुई. किंतु जब उस ने अपने पिता से पढ़ने की इच्छा जाहिर की तो उस ने उसे बुरी तरह झिड़कते हुए कहा, "पढ़नेलिखने का काम तो ब्राह्मण-क्षत्रियों का होता है, हम लोगों का नहीं. हम लोग तो नाई हैं. हमें तो सारी जिंदगी यही मुंडन करना है."

"सारी जिंदगी यही नाई का काम! किंतु क्यों? क्या ब्राह्मणक्षत्रियों की तरह हमारे भी दो हाथ, दो पैर, दो आंखें, एक नाक नहीं है? आखिर हम में कमी क्या है?"

"कमी! कमी यही है कि तू मेरे घर में पैदा हुआ है. एक नाई के घर, किसी ब्राह्मण या क्षत्रिय के घर नहीं."

"किंतु आप नाई क्यों हैं?"

"इसलिए कि मेरा पिता भी नाई था."

"किंतु आप के पिता भी नाई क्यों थे? वह कुछ और क्यों नहीं हुए?"

"इसलिए कि उन के पिता भी नाई थे."

"आखिर ऐसा कब से चला आ रहा है, बापू."

"तिलक, तू कब तक ऐसे ही सवाल जवाब करता रहेगा. तू चुप क्यों नहीं रहता? कह दिया न कि यह हमारा पुश्तों का पेशा है." पिता ने अब की बार तिलक को कुछ ऊंची आवाज में झिड़कते हुए कहा.

किंतु तिलक स्वभाव से कुछ हठी और दुस्साहसी था. वह पिता की डांट से जरा भी विचलित न हुआ बल्कि दृढ़ आवाज में बोला, "पर मैं नाई नहीं बनूंगा, मैं तो क्षत्रिय बनूंगा और तीरतलवार चलाऊंगा."

यह कह कर तिलक अपने पिता के पास से हट कर खेलने लगा. उस के खेलने का ढंग भी अपनी जाति के बच्चों से भिन्न था. उस ने बांस और सरकंडे के धनुषबाण बना लिए थे. जिन से वह बाण चलाने का निरंतर अभ्यास करता था. उस का निशाना गजब का था.

शक

भीगी पलकों से
टपकते आंसू देखे
दुलहन की हंसी
चीख में बदलती देखी,
देखता हूं शक की
निगाह से सब को मैं
मैं ने अपनों की
नीयत बदलती देखी.
—सुरेशकुमार गोयल

यही नहीं उस ने नकली तलवारों, ढालों तथा गदा का प्रयोग कर के युद्ध की तमाम कलाओं को सीख लिया था. यह सब वह तब चुपचाप ब्राह्मणों व क्षत्रियों के बच्चों को देख कर सीखता, जब वे बच्चे मंदिर में युद्ध कला सीखते थे. तिलक की बुद्धि विलक्षण थी तथा उस में सीखने की अदम्य इच्छा थी. अतः उसे इन सब विधाओं को दूर से देख कर सीखने में भी कोई कठिनाई न हुई.

नकली हथियारों से अभ्यास करते-करते तिलक सभी हथियारों को चलाने में माहिर हो गया. उस में गजब का साहस भी था. वह अकसर जंगल में शिकार खेलने जाता था तथा शेर, चीते, बघेरों को मिनटों में मार गिराता था. उस ने अपनी महारत को कभी जंगल के बाहर प्रकट न होने दिया क्योंकि वह जानता था कि ऐसा करना ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों से बैर मोल लेना है.

फिर भी एक दिन ऐसी घटना हो गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुजदिली

हर दफे दिखावे और नाम की खातिर छाती ठोक कर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना परले दरजे की बुजदिली है. —पूर्णसिंह

जिस से उस के साहस तथा वीरता का डंका केवल उस के ताल्लुके श्रीरंगपुर में ही नहीं बल्कि आसपास के तमाम गांवों और ताल्लुकों में भी गूंज उठा.

हुआ यह कि संध्या के समय श्रीरंगपुर ताल्लुके के ताल्लुकेदार गगनपाल की षोडशी कन्या शिखावल्लरी, अपनी मां के साथ श्रीरंगपुर के मंदिर में पूजा करने जा रही थी कि तभी एक खूंखार बघेरे ने उस पर हमला कर दिया. कन्या के साथ यद्यपि दो लठैत चल रहे थे, किंतु वे इस अप्रत्याशित आक्रमण से सहम कर दूर खड़े हो गए. तिलक ने जैसे ही यह दृश्य देखा उस ने अपने पिता के हाथ से उस्तरा छीन कर बघेरे पर आक्रमण कर दिया.

तिलक ने बड़ी होशियारी से पहले ही वार में बघेरे की आंखें फोड़ दीं और उछल कर उस की पीठ पर सवार हो गया. अंधा हो जाने के कारण बघेरा इधरउधर दौड़ता और पेड़ों तथा दीवारों से टकराता. तिलक उस की पीठ पर सवार मस्त हो कर उसे इधरउधर दौड़ता और लोगों को तमाशा दिखाता.

उस का वह साहस देख कर ताल्लुके के सभी लोग हैरत में पड़ गए. शिखावल्लरी जो दहशत के कारण लगभग बेहोश हो चुकी थी, इस दृश्य को देख कर अत्यंत आनंदित हो उठी.

थोड़ी ही देर में शिखावल्लरी का पिता गगनपाल तथा उस के परिवार के लोग भी आ गए. आश्चर्य की बात थी कि उन्होंने तिलक को धन्यवाद देने की बजाय उसे घृणा की दृष्टि से देखा. उन्हें लड़की के बचने की खुशी से ज्यादा दुख इस बात का था कि उन की लड़की को नाई के लड़के ने स्पर्श कर लिया.

तिलक ने शिखावल्लरी को तो [illegible] का शिकार होने से बचा लिया किंतु [illegible] शिखावल्लरी की हसीन निगाहों से [illegible] हो गया. बघेरे से बचने के बाद अपने पिता के साथ घर लौटने के बीच वह बारबार तिलक की ओर कृतज्ञता तथा प्रेम की मधुर निगाहों से निहारती रही. शीघ्र ही तिलक को अनुभव हुआ कि वे भाव भरी आंखें [illegible] उस का पीछा करने लगी हैं. सोतेजागते, उठतेबैठते, चलतेफिरते हिरनी सी [illegible] आंखें उसे अपने साथसाथ ही चलती नजर आती थीं.

शिखावल्लरी अकसर मंदिर आती थी और जब भी वह मंदिर आती उस की निगाहें तिलक की निगाहों से [illegible] टकराती थीं. उस से निगाहें मिलते ही तिलक होशोहवास खो बैठता था. [illegible] अच्छी तरह जानता था कि शिखावल्लरी एक क्षत्रिय ताल्लुकेदार की लड़की है और वह साधारण नाई का बेटा. उसे मालूम था कि यदि किसी दिन वह शिखावल्लरी को देखते हुए भी पकड़ा गया तो उस का परिणाम साधारण मृत्यु से भी भयानक होगा. फिर भी उस का किशोर मन किसी भी तरह शिखावल्लरी की तरफ से न हट [illegible] था. जबतब वह गगनपाल की हवेली की तरफ भी जाने लगा. हवेली की खिड़की में जब भी उसे शिखावल्लरी के दर्शन हो जाते, वह अपना जीवन धन्य मान लेता था. धीरेधीरे दोनों ने एक निश्चित समय [illegible] लिया. उषाकाल में जब अधिकांश लोग सोए होते या अपने प्रातःकालीन कार्यों में व्यस्त होते, तिलक शिखा की हवेली के सामने से गुजरता, शिखा भी उसी समय अपनी खिड़की पर आ जाती और दोनों एकदूसरे को देख कर अपने नेत्रों की प्यास बुझा लेते थे. अभी तक दोनों ने एकदूसरे से आधा शब्द भी न बोला था, किंतु आंखों की भाषा से दोनों ने एकदूसरे को संपूर्ण प्रेम शास्त्र सुना दिया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंतु जैसा कि अक्सर होता है, तिलक का प्रेम भी छिप न सका. एक दिन जब वह हवेली के सामने ताकझांक कर रहा था, पकड़ में आ गया. शिखावल्लरी के पिता गगनपाल ने उसे तथा उस के पिता को घर से पकड़वा लिया. उन्हें रस्सियों से बांध कर गगनपाल के सामने पेश किया गया.

तिलक अदम्य साहसी तथा इरादे का पक्का था. जब उस से हवेली में ताकझांक करने के विषय में पूछा गया तो उस ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया कि वह शिखावल्लरी से प्रेम करता था तथा उस से विवाह का भी इच्छुक था. उस ने दावा किया कि वह शिखावल्लरी के लिए सर्वथा योग्य वर था. उस ने खुलेआम चुनौती दी कि यदि कोई युवक उस से किसी भी प्रकार की लड़ाई में जीत जाएगा तो वह शिखावल्लरी से विवाह का प्रस्ताव हमेशा के लिए वापस ले लेगा तथा कोई भी सजा भुगतने के लिए तैयार हो जाएगा. उस ने हाथ उठा कर उच्च स्वर में पूछा, "आखिर मुझ में कमी हीं क्या है सिवाय इस के कि मैं एक नाई का बेटा हूं."

पुरुषोचित साहस का परिचय देते हुए उस ने शिखावल्लरी को बिलकुल बेदाग रखा. उस ने यह भी नहीं बताया कि शिखा को उस के प्रेम की जानकारी भी थी.

एक नाई के पुत्र से अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव सुन कर गगनपाल क्रोध एवं घृणा से धधकने लगा. उस ने तिलक तथा उस के पिता को गरम सलाखों से गुदवाया. उस का इरादा तिलक को तड़फातड़फा कर मारना था, किंतु साहसी तिलक चालाकी से गगनपाल की कैद से छूट कर भाग निकला.

तिलक भागतेभागते कशमीर पहुंचा. वहां आ कर उस ने अपनेआप को ब्राह्मण घोषित कर दिया तथा शस्त्र एवं शास्त्रों का गहन अध्ययन किया. उस ने तमाम भाषाओं में भी पारंगतता प्राप्त कर ली. उस की प्रखर बुद्धि, साहस, वीरता, कर्मठता एवं सुंदरता देख कर सब दंग रह जाते. उस के व्यक्तित्व को देख कर किसी को कभी संदेह

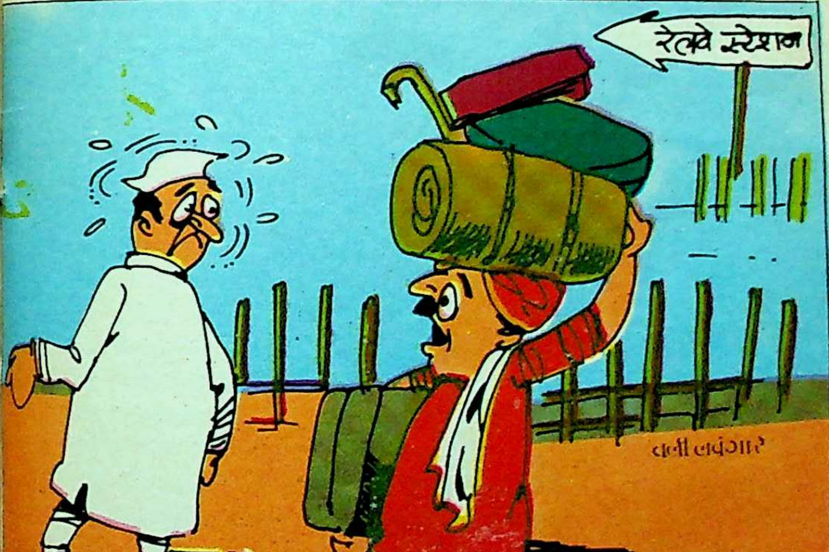

"अरे साब, चुनाव में आप की जमानत भी जप्त हो गई... मुझे बख्शीश मिलेगी या नहीं..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भी न हो सका कि वह ब्राह्मण का नहीं बल्कि एक नाई का बेटा था.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर में अपनी शिक्षादीक्षा पूरी करने के बाद वह गुप्त रूप से अपने गांव श्रीरंगपुर आया. श्रीरंगपुर देखने में तो बहुत कुछ वैसा ही था, जैसा वह कई वर्षों पूर्व छोड़ कर गया था. मंदिर वहीं ज्यों का त्यों खड़ा था. किंतु तिलक को जब यह पता चला कि गगनपाल ने उस के पिता को तड़फातड़फा कर मार दिया और शिखावल्लरी का विवाह उस ने पास के ताल्लुके रामला में शक्तिपाल नामक क्षत्रिय से कर दिया, तो वह बुरी तरह से टूट गया. अपने पिता और शिखावल्लरी के बिना उसे ऐसा लगा जैसे श्रीरंगपुर के शरीर से जान निकल गई है और वह जीवन शून्य हो गया है.

तिलक ने श्रीरंगपुर तुरंत छोड़ दिया. वह वहां से कहीं बहुत दूर निकल जाना चाहता था.

अंततः उस ने पश्चिम की ओर जाने का निश्चय कर लिया. लाहौर पहुंच कर उस ने सर्वप्रथम वहां के काजी शिराजी के यहां नौकरी की. यहीं उसे अपनी प्रतिभा दिखाने का पहला अवसर मिला. उस की अपूर्व सुंदरता, सूझबूझ और वीरता देख कर गजनी के वजीर ख्वाजा अहमद बिन हसन मैमंदी ने उसे अपना दुभाषिया बना लिया. वजीर ख्वाजा शीघ्र ही उस से अत्यंत प्रभावित हो गया. तिलक उस का इतना विश्वासपात्र बन गया कि वह उसे अपने पुत्र की तरह मानने लगा. उस ने तमाम नाजुक मामले सुलझाने में ख्वाजा की काफी मदद की.

किंतु कुछ दिनों बाद वजीर ख्वाजा मैमंदी का पतन हो गया. ख्वाजा के पतन से तिलक को कुछ समय के लिए झटका अवश्य लगा लेकिन अब तक सारा गजनी उस की प्रतिभाओं से परिचित हो चुका था. खुद सुलतान महमूद गजनवी की निगाह भी उस पर थी. सुलतान महमूद की सब से बड़ी विशेषता भी यही थी कि वह प्रतिभा... व्यक्तियों की तुरंत पहचान कर... और उन्हें उन के योग्य पद पर प्रतिष्ठि... के उन का भरपूर प्रयोग करता था.

तिलक को भी महमूद ने अपनी हिं... स्तानी सेना में पद पर आसीन कर... वह सुलतान महमूद के साथ उस के... सैन्य अभियानों पर जाने लगा. इन अभि... पर उस ने जिस प्रचंड वीरता तथा साह... प्रदर्शन किया, उस से प्रभावित हो... सुलतान महमूद ने उसे हिंदुस्तानी सेना... उप सेनानायक बना दिया. हिंदुस्तानी सेना... अब उस का स्थान सर्वोच्च सेनानायक... राय के बाद दूसरा हो गया. इन्हीं अभि... के दौरान वह सुलतान महमूद के... बहादुर बेटे मसूद के अति निकट आ...

सुलतान महमूद की मृत्यु के बाद... के दो जुड़वां बेटे मुहम्मद तथा मसूद... उत्तराधिकार के लिए संघर्ष छिड़... सुलतान महमूद को अपने कविहृदय... नेक बेटे मुहम्मद से अधिक प्यार था... उस ने वसीयत मुहम्मद के पक्ष में लिखी... अपने अमीरों और सिपहसालारों के... एक फरमान भी छोड़ गया, जिस... खलीफा की भी स्वीकृति थी. इस फरमान... सुलतान महमूद ने स्पष्ट रूप से मुहम्मद... अपना उत्तराधिकारी घोषित किया... अतः गजनी के अमीरों और सरदारों... मुहम्मद को ही गजनी का सुलतान घोषित कर दिया.

सुलतान महमूद की मृत्यु के समय शहजादा मसूद खुरासान में था. मुहम्मद... सुलतानी मिलने की खबर सुन कर वह... दुखी हुआ. उसे यह सोच कर भारी पीड़ा... कि सारे सैनिक अभियानों पर सुलतान... महमूद के साथ रहने तथा वीरता प्रदर्शित... करने के बावजूद उस के वालिद ने मुहम्मद... को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया... वह अपने खेमे में दुखी और मायूस... अपनी हालत पर पछता रहा था कि तिलक... ने उसे सलाह दी, "परवरदिगार, ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़िए, राजगद्दी के फैसले फरमान से नहीं तलवारों से होते हैं."

यह सुनते ही मसूद की आंखों में चमक आ गई. उस ने गजनी की ओर कूच करने का ऐलान कर दिया.

गजनी के सरदार, शहजादे मसूद की बहादुरी और ताकत के कायल थे. सारी गजनी में उस की वीरता के चरचे हुआ करते थे. उस के बारे में प्रसिद्ध था कि उस की गदा कोई एक हाथ से नहीं उठा सकता. भाले चलाने में भी उस का कोई सानी नहीं था. किंतु वह अपने पिता सुलतान महमूद की तरह चालाक, कुटनीतिज्ञ और व्यवहारकुशल नहीं था. यही वजह थी कि उत्तराधिकार के मसले पर अपने पिता को अपने पक्ष में नहीं कर पाया था.

शहजादे मसूद के गजनी की तरफ बढ़ने की खबर फैलते ही गजनी में हलचल मच गई. कई चालाक सरदार यह ताड़ गए कि देरअबेर गजनी को मसूद की ही गोद में जाना है. अतः बेहतर है कि वे पहले ही मसूद के प्रति अपनी वफादारी घोषित कर दें. ये सरदार अंदर ही अंदर सुलतान मुहम्मद को गद्दी से उतार कर मसूद को सुलतान बनाने की साजिश में जुट गए.

अंततः एक दिन बगावत की यह सुगबुगाहट उस समय उफान में बदल गई जब सुलतान मुहम्मद के दो खास सिपहसालार अबुन नज्म अहमद अयाज और अजी दयाह ने गुलामों के गुट को साथ ले कर बगावत कर दी. उन्होंने दिनदहाड़े अस्तबल से घोड़े खोल लिए और सुलतान मुहम्मद के महल की ओर झपटे. किंतु हिंदुस्तानी फौज के नायक सौयंद राय ने उन्हें महल की सीढ़ियों पर ही रोक लिया. इस भयानक मारकाट में सौयंद राय मारा गया किंतु वह बगावती सैनिकों को महल से खदेड़ने में कामयाब हो गया.

महल में प्रवेश करने में असफल होने से विद्रोही सिपहसालार अहमद अयाज और अली दयाह घबरा गए. वे गुलामों की इस विद्रोही फौज को ले कर नेशापोर की तरफ भागे.

शहजादा मसूद भी खुरासान से बढ़ता हुआ अब तक नेशापोर तक आ चुका था. अहमद अयाज और अली दयाह जब वहां पहुंचे तो मसूद ने उस का भव्य स्वागत किया.

दो नए सिपहसालार तथा गुलामों की फौज के आ जाने से मसूद का उत्साह काफी बढ़ गया. वह तेजी से आगे बढ़ा और उस ने हैरात में अपना खेमा जमा लिया.

इधर शहजादे मसूद के निरंतर आगे बढ़ने की खबर से सुलतान मुहम्मद घबरा गया. वह एक विशाल सेना ले कर अपने भाई शहजादे मसूद का सामना करने के लिए आगे बढ़ा.

सुलतान मुहम्मद ने गजनी से प्रस्थान करने के बाद टकीनाबाद में पड़ाव डाल दिया. यहां उस ने रमजान का एक पूरा महीना बिताया. उस के सरदार उसे आगे बढ़ कर जल्द से जल्द मसूद पर हमला करने को उकसाते रहे. किंतु कविहृदय तथा दार्शनिक प्रवृत्ति का सुलतान मुहम्मद इस से लगातार कतराता रहा.

सुलतान मुहम्मद के इस प्रकार कतराने से उस के सिपहसालारों में असंतोष बढ़ने लगा. उन सब ने आपस में सलाह की तथा सुलतान मुहम्मद से छुटकारा पाने का निश्चय कर लिया.

इन सभी सरदारों ने ईद के ठीक दो दिन बाद विद्रोह की योजना बनाई.

—क्रमशः

विदेश नीति

अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से विदेश नीति शासित नहीं होनी चाहिए, अपितु विदेश नीति को अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं को शासित करना चाहिए.

—नेपोलियन बोनापार्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

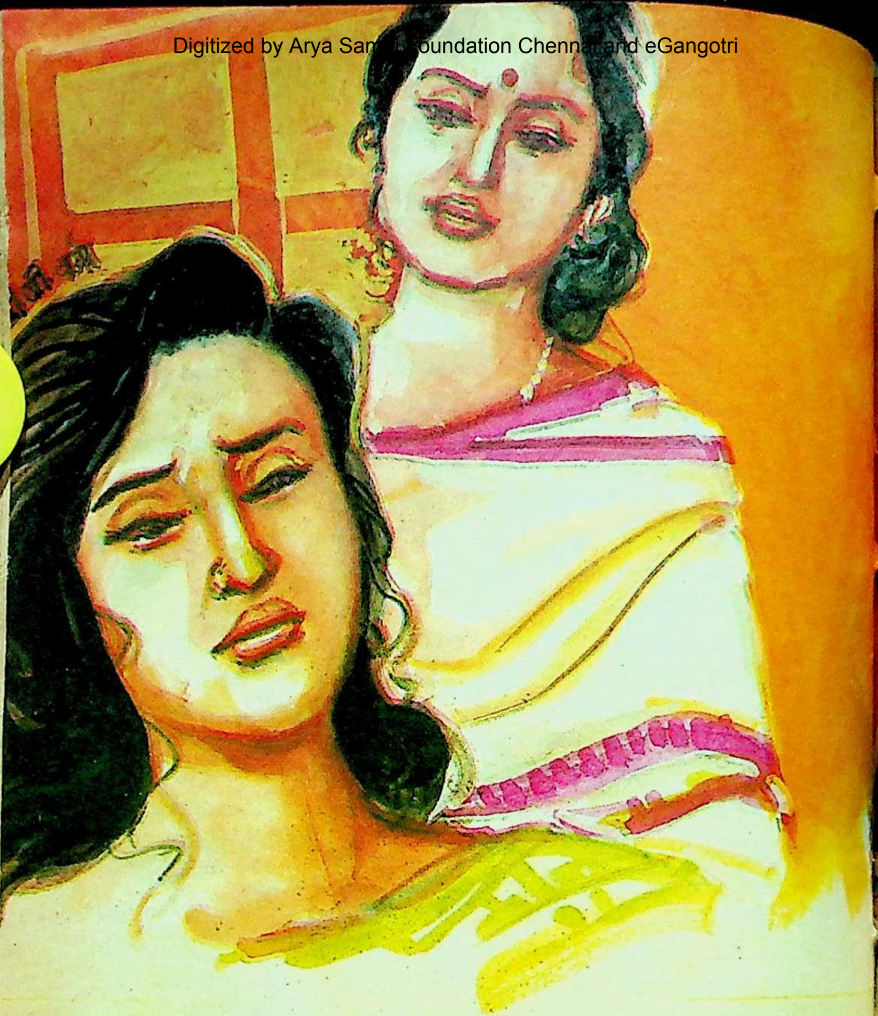

कहानी ● आशा वर्मा

एक और जूलियट

"मेरी मां बहुत खराब हैं." दरवाजा खोलते ही मेरी सहेली नीलम ने कहा और धम से सोफे पर बैठ कर रोने लगी. टोस्ट का टुकड़ा मुंह में डालते हुए मेरी मां और मैं उस की तरफ अवाक ताकती रह गईं.

मां उठ कर नीलम के पास सोफे पर जा बैठीं और चुपचाप उस का सिर सहलाने लगीं. लेकिन नीलम और जोर से रोने लगी. मां का इशारा पा कर मैं ने पानी का गिलास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरी मां बहुत खराब है." नीलम यह कह कर फिर रोने लगी. टोस्ट का टुकड़ा हाथ में लिए मैं मेरी मम्मी उस की तरफ अवाक ताकते रह गए.

नीलम खुद को 'जूलियट' और राजेश को 'रोमियो' मान कर ही प्रेम दीवानी हो रही थी. किंतु जब रोमियो की असलियत सामने आई तो जूलियट का सारा प्रेम काफूर हो गया.

उस के होंठों से लगाना चाहा तो उस ने इस अंदाज से हटाया, मानो कह रही हो कि अब जीने की इच्छा ही नहीं तो भला पानी क्या पीना.

मां ने मेरे हाथ से गिलास ले कर उस के होंठों से लगाते हुए कहा, "पी लो, बेटे, तुम अच्छा महसूस करोगी."

"ओह, चाचीजी, आप बहुत अच्छी हैं, बहुत समझदार हैं." दो घूंट पानी पी कर वह और जोर से रोने लगी मानो मेरी मां का अच्छा और समझदार होना ही उस के रोने का कारण हो. यह मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा. नीलम मेरी प्यारी सहेली जरूर थी, पर मेरी मां के ऊपर कोई बात आए, यह भी मुझे बरदाश्त नहीं था.

"क्या बात है बेटी." मां ने नीलम की पीठ सहलाते हुए शांत स्वर में पूछा.

"मेरी मां बहुत खराब औरत है. एक मां की जगह मेरे दो बाप होते तो अच्छा था." नीलम गुस्से से चीखी.

"पगली." मां ने हंस कर उस के आंसू पोंछे.

"चाची, मैं वास्तव में बहुत गंभीर हूं." वह सुबकते हुए बोली.

"इस उम्र में हर बात गंभीर ही होती है. पर बात क्या हुई है, यह तो बताओ." मां ने पूछा.

"मां मुझे राजेश से शादी नहीं करने देंगी."

"यह तो सचमुच गंभीर बात है." मां गंभीर स्वर में बोलीं.

"यह राजेश है कौन?" मैं ने पूछा.

"मेरा प्रथम और अंतिम प्यार." उस ने यों आंखें मूंद लीं, मानो इस के बाद उसे दुनिया देखने की ख्वाहिश ही न बची हो.

प्रेम का चक्कर चाहे, अपना हो या पराया, एक खास उम्र में हर लड़की के मन में गुदगुदी पैदा करता है. उस समय मैं ने भी इस गुदगुदी का अनुभव किया और पूछा, "क्या मैं उस से मिली हूं?"

"कहां से मिलोगी? मैं खुद उस से पिछले सप्ताह ही मिली थी."

"लड़का कैसा है?" मां ने पूछा.

"ओह चाचीजी, वह बहुत सुंदर है. महान है, राजाओं का राजा है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा," मां ने उसी गंभीरता से कहा. नीलम के आदर्श पुरुष के वर्णन पर उन्होंने न आश्चर्य व्यक्त किया न अविश्वास.

"मेरी मां कहती हैं कि मैं कृष्णा चाची के बेटे से शादी कर लूं." उस ने ऐसे मुंह बनाया, जैसे रसगुल्ले की जगह उसे मिट्टी का लड्डू खाने को मजबूर किया जा रहा हो.

"कृष्णाजी बहुत अच्छी महिला हैं. मैं उन्हें जानती हूं." मां ने धीरे से कहा.

"उन का बेटा भी बहुत अच्छा होगा." नीलम ने मुंह बिचका कर कहा, मानो बेटे का अच्छा होना उस की अच्छाई नहीं बुराई हो.

"तो तुझे एतराज क्या है?" मां ने पूछा.

"वह जो अच्छा लड़का है न, सिर्फ अपनी मां की पसंद से ही शादी करेगा." नीलम ने तिरस्कारपूर्वक कहा.

"इस में बुरा क्या है?" मां ने सवालिया निगाहों से उस की ओर देखा.

"ऐसे मां के पिट्ठू से कौन शादी करेगा जो सारा जीवन 'मांमां' करता मिनमिनाता रहेगा. मैं असली मर्द से शादी करना चाहती हूं."

"तेरी समझ में असली मर्द के क्या लक्षण हैं, नीलम?"

"ओह चाचीजी, उस को ऐसा होना चाहिए कि वह राजाओं का राजा दिखे, उस की पसंद सब की पसंद हो. वह हंसे तो सारी दुनिया उस के साथ हंसे. उस का खुला दिल और खुला हाथ हो. रुपया उस के हाथों की मैल हो. दोस्तों पर दिल और दौलत दोनों लुटा सकता हो."

"तेरे विचार में राजेश में ये सब गुण हैं?"

"ओह हां." उस ने दोनों हाथ अपने दिल के पास बांध लिए.

"तब तो तुझे राजेश से ही ब्याह करना चाहिए." मां बोलीं.

"यह क्या कह रही हो मां? इस की मां इस का खून कर देंगी. वह बहुत सख्त हैं." मैं ने घबरा कर कहा.

"ओह, वह तो बहुत ही खराब हैं." इस के पहले कि नीलम को फिर रोने का दौरा पड़े मां झट से बोल पड़ीं. "मैं तुम्हारी मदद करूंगी."

"सच चाचीजी?" अविश्वास और कृतज्ञता से नीलम की चमकती आंखें मां पर टिक गईं.

"हां."

"ओह चाचीजी, आप वास्तव में महान हैं." कहते हुए उस ने मां का हाथ चूमा तो चूमती ही चली गई. मां ने उस का गाल थपथपाया.

मैं मन ही मन सशंकित हो उठी कि मेरी मां को क्या हुआ है जो इस चक्कर में फंस रही हैं. माना कि नीलम की मां मेरी मां की सहेली हैं, पर वह बहुत झगड़ालू भी हैं. जानबूझ कर इस पचड़े में पड़ने की क्या जरूरत है?

"पर मेरी एक शर्त है." मां बोलीं.

"मुझे आप की हर शर्त मंजूर है." नीलम ने चहकते हुए उत्तर दिया.

"सब से पहले तो यह बताओ कि तुम्हारी मां को राजेश क्यों पसंद नहीं है?"

"पसंद कैसे होगा, उन्होंने तो उसे देखा तक नहीं है."

"यह तो तुम ने बड़ी भूल की. तुम्हें पहले राजेश को उन से मिलाना था."

"क्यों? शादी मेरी है या उन की?"

"तो फिर उन से पूछने की भी क्या जरूरत थी?"

"यह तो राजेश की जिद है कि मेरे मातापिता पहले उस की मां के पास आएं."

"बड़े दकियानूसी खयालों का लड़का है."

"दकियानूसी नहीं, वह अपनी मां की इज्जत करता है." नीलम ने सगर्व कहा.

"और तुम अपने मांबाप की जरा भी इज्जत नहीं करतीं?" मां ने उसे घूरा.

"कैसे करूं? मेरी मां बेकार की बातें करती हैं. कहती हैं कि राजेश हमारी जाति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

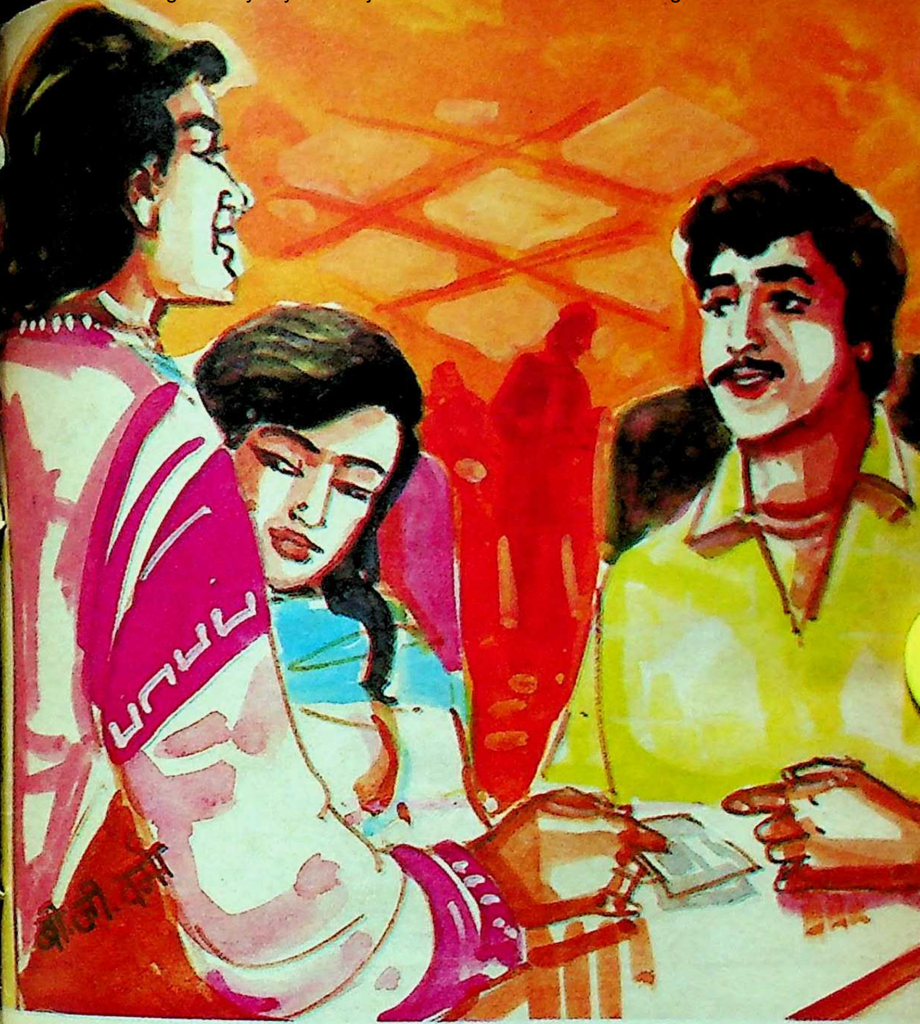

का नहीं है. आप ही कहिए, आजकल जाति को कौन पूछता है? खुद क्लब में जा कर बिना जाति पूछे चाहे जिस के साथ हंसती खिलखिलाती रहती हैं. अब मेरी शादी के मामले में एकाएक जाति का खयाल हो आया है." उस ने तिरस्कार से कहा.

"तुम ठीक कहती हो, बेटी. मैं तुम्हारी मां से बात करूंगी."

"मुझे मालूम था आप मेरी बात को जरूर समझेंगी."

"पर केवल जाति ही उन के मना करने का कारण नहीं हो सकती."

दोस्त के मांगने पर राजेश ने सौ की जगह दो सौ रुपए दे दिए लेकिन उस के पर्स में बिल चुकाने लायक पैसे भी न बचे थे.▲.

"कहती हैं, वह राजेश के बारे में कुछ नहीं जानतीं. कैसी मूर्खता है. वह तो राजेश से मिलने को भी तैयार नहीं हैं और न ही उस के बारे में कुछ सुनना चाहती हैं."

"तुम राजेश के बारे में क्या जानती हो?" मां ने पूछा.

"सब कुछ."

• "इतने कम समय में?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आदमी को पहचानने में समय ही कितना लगता है."

"पता नहीं, मुझे तो कईकई बार किसी के विषय में अपने विचार बदलने पड़ते हैं. खैर छोड़ो उसे. यही बताओ, तुम राजेश के बारे में क्याक्या जानती हो?"

"वह बहुत खूबसूरत है." कहते हुए नीलम की आंखों में विशेष चमक आ गई.

"यह तो मैं सुन चुकी हूं."

"उस का दिल और हाथ दोनों बादशाहों की तरह खुले हैं. दोस्त बनाता है तो उस पर दिल और जान के साथसाथ पर्स भी खाली कर सकता है."

"यह तुम ने कैसे जाना?"

"कल की ही बात लीजिए." नीलम बोली, "वह मुझे काफी पिलाने ले गया. हम ने चिप्स और पेस्ट्री भी खाईं. तभी राजेश का एक दोस्त आया और उस से सौ रुपए उधार मांगने लगा. मेरे सामने राजेश ने पर्स निकाल कर सौ की जगह दो सौ दे दिए. जब बैरा बिल ले कर आया तो राजेश के पास पर्स में बिल चुकाने के पैसे भी नहीं बचे थे. यह तो कहिए कि मां ने दर्जी को देने के लिए मुझे सौ रुपए दिए थे तो वहां इज्जत बच गई. वरना जनाब को अपना खूबसूरत कोट वहीं काउंटर पर छोड़ना पड़ता. ओह चाचीजी, मेरा तो हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया."

"मां ने थोड़ा मुसकरा कर कहा, "फिर दर्जी का बिल कैसे चुकाया?"

"नहीं चुकाया."

"तेरी मां ने पूछा नहीं?"

"बिना पूछे क्या वह छोड़ सकती है?"

"तो फिर?"

"कह दिया, 'शायद आटोरिकशा वाले को पैसे देते समय पर्स से रुपए गिर गए."

"और वह मान गईं?" मैं ने अविश्वास से पूछा, क्योंकि मैं जानती थी कि नीलम की मां सच को भी 'शक की निगाह से देखती थीं.

"न मानें, यहां कौन परवाह करता है?"

इस के बाद हम सब अपनेअपने खयालों में खोए कुछ देर खामोश रहे. जाहिर है कि नीलम के खयालों में सिर्फ राजेश ही आया हुआ था.

अचानक मां हंस कर बोलीं, "चलो, हम एक नाटक खेलते हैं."

हम दोनों ने ताली पीट कर इस प्रस्ताव का स्वागत किया. प्रस्ताव में अप्रत्याशित सा कुछ भी न था. बचपन से देखती आई थी, मां महल्ले भर के बच्चों को इकट्ठा कर शौकिया नाटक किया करती थीं.

"ऐसा करते हैं," मां उठ कर निर्देशक के अंदाज में दृश्य समझाने लगीं, "हम इसी दृश्य का नाटक खेलते हैं. फर्क सिर्फ इतना होगा कि इस में राजेश और नीलम की शादी हो चुकी होती है..."

"ओह चाचीजी." नीलम रोमांस की साकार प्रतिमूर्ति बन गई.

"सुमन राजेश की भूमिका करेगी."

"ओह मेरी परमप्रिय." कह कर हंसते हुए मैं ने नीलम को अपनी बांहों में जकड़ लिया तो वह अपने को छुड़ाते हुए बोली, "सुमन ही क्यों, मैं राजेश को ही फोन कर के बुलाए लेती हूं. आप से मिल भी लेगा."

"अभी हम सिर्फ नाटक खेल रहे हैं नीलम." मां हंस कर बोलीं, "इतना उतावलापन भी क्या. पहले हम कल्पना में राजेश से मिल लें, फिर हकीकत में भी भेंट कर लेंगे. हां, तो दृश्य यह है कि राजेश अपनी पत्नी नीलम को ले कर रेस्तरां में काफी पीने लगता है. वैसे राजेश करता क्या है?"

"वह हवाईजहाज उड़ाता है." उस ने कुछ इस तरह से कहा मानो पायलट आम आदमी से भिन्न स्वयं दो पंखों वाला 'परीदेश' का राजकुमार होता हो.

"ठीक है." यह जानकारी प्राप्त करने पर मां की कुछ खास प्रतिक्रिया न देख नीलम को निराशा हुई.

"नीलम, तुम अपने पति के साथ रेस्तरां में काफी पीने जाती हो. मैं राजेश के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोस्त की भूमिका अदा करेगा. दृश्य यह है कि मैं वहां आऊंगा और उस से रुपए उधार मांगूंगा. राजेश के पर्स में सिर्फ वे रुपए ही हैं, जिन्हें नीलम ने आज सुबह ही गृहस्थी का सामान लाने के लिए उसे दिए हैं. राजेश वे सब रुपए अपने दोस्त को दे देता है. अब रेस्तरां का बिल चुकाने का सवाल उठता है. तुम दोनों को दृश्य समझ में आ गया है?"

हम ने सिर हिला कर हामी भरी.

"ठीक है. अब सब अपनेअपने संवाद बनाओ और घटनाओं की रचना करो. याद रखना नीलम, तुम एक शादीशुदा औरत हो और पति की मासिक आय से तुम्हें अपनी गृहस्थी सुचारु रूप से चलानी है. राजेश की भूमिका से तुम शुरू करो, सुमन."

हम दोनों कमरे के बीच में खड़ी हो गईं. नीलम ने कंधे से अपना पर्स झुला दिया. मैं ने गला साफ किया और उस की कमर में हाथ डाल कर आवाज में पुरुषोचित भारीपन लाने की कोशिश करते हुए कहा, "आओ प्रिय, काफी पीने चलते हैं."

"चलो." नीलम बोली.

"बैरा, दो प्याले काफी और साथ में कुछ चिप्सपेस्ट्री भी."

"अब पेस्ट्री की क्या जरूरत है? अभी तो घर से नाश्ता कर के चले हैं." उस की आवाज में ठीक पत्नियों वाली तलखी थी जो एक अदद पति को यह महसूस कराने से कभी नहीं चूकती कि वह निहायत फुजूलखर्च इनसान है.

"अरे वाह, क्या मैं अपने दिल की मलिका को खाली काफी पेश कर सकता हूं?"

"हुजूर, पेश आप नहीं, बैरा करेगा."

"एक ही बात है." मैं ने हंस कर कहा.

"एक बात नहीं है. अपने हाथ से काफी बनानी पड़े तो यह बातबात पर चायकाफी का हुक्म देने की आदत छूट जाए." नीलम ने गुस्से से कहा.

"हैलो राजेश." तभी मां ने प्रवेश

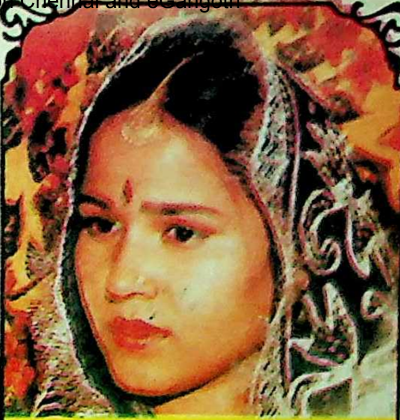

भंवर

दिए हैं यादों के खंडहर
तेरी मासूमियत ने,
फंसा हूं भंवर में ऐसा
किनारे ही नहीं मिलते.

—मनोज 'नीरज'

करते हुए कहा, "हैलो भाभी." मां ने जिस गंभीरता से नीलम को भाभी कहा, उस से हम दोनों ने हसंतेहंसते पेट पकड़ लिया.

"गंभीर बनो, वरना हम नाटक नहीं खेलेंगे." मां की यह धमकी हमेशा कारगर सिद्ध होती थी. "हां, फिर प्रवेश करती हूं... हैलो राजेश. हैलो भाभी." फिर मेरी ओर मुड़ कर मेरी पीठ पर जोर का धौल जमाते हुए बोलीं, "क्या यार, जब से शादी हुई है, नजर ही नहीं आता. जोरू का गुलाम. माफ करना भाभी. यह मेरा पुराना मित्र है."

"मैं नजर नहीं आता या तू नजर नहीं आता बदमाश." मैं ने भी वही अंदाज अपनाया.

"क्या कहूं यार, क्षमा करना. तेरी शादी के स्वागत समारोह में भी नहीं आ सका."

"हां, क्यों नहीं आया?" मैं ने घुड़क कर पूछा.

"क्या कहूं. अपनी तो वही स्थायी समस्या है. सारी तनख्वाह क्लब में फुंक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है. अब शादी के मौके पर तो खाली हाथ नहीं आ सकता था.

"मूर्खों की तरह बातें न करो. यारों के बीच खाली हाथ की बात कैसी? बैरा, एक कप काफी और."

"नहींनहीं, काफी नहीं. मैं जरा जल्दी में हूं. एक मिनट, जरा सुन." उस ने ऐसा भाव बनाया मानो अकेले में कुछ कहना चाहता हो.

"बोल न, तेरी भाभी से क्या छिपाना? वह बहुत प्यारी है, तुम उस का विश्वास कर सकते हो." मैं ने नीलम के गले में बांह डालते हुए कहा.

"कैसे कहूं." मां ने आंखें झुका लीं.

"बोल न. दोस्त मानता है तो शर्माता क्यों है?"

"यार कुछ उधार चाहिए."

"कितना? सौ दो सौ?"

"सौ से काम चला लूंगा."

मैं ने पर्स निकाला और शाही अंदाज में दो सौ रुपए निकाले. "ले. दो सौ ले जा. वरना कम पड़ने पर फिर उधार की खोज में मारामारा फिरेगा."

"ओह, धन्यवाद राजेश. दोस्त हो तो तेरे जैसा. तू ने आज मुझे बचा लिया."

मां के जाने पर नीलम झिड़क कर बोली, "उसे दो सौ रुपए क्यों दिए? वह कभी लौटाएगा भी नहीं."

"ओह प्रिय, दोस्तों में सौ, दो सौ भला क्या चीज है?"

"कुछ नहीं, अच्छा, दर्जी के यहां जा रही हूं. तुम रेस्तरां का बिल चुका कर राशन ले कर यहीं मिलना."

"बिल...राशन?"

"क्यों? क्या बात है? बिल और राशन नहीं समझते?"

"प्रिय, मुझे कुछ रुपए दो."

"रुपए? किसलिए?"

"बिल और राशन के लिए."

"तुम्हारे कहने का मतलब क्या है? राशन के लिए आज सुबह ही दो सौ रुपए दिए हैं और जेब खर्च के लिए कल रुपए चुकी हूं."

"कल के रुपए तो कल ही 'रमी' में हार चुका हूं और आज के रुपए तुम्हारे सामने ही दे चुका हूं." मैं ने बेचारगी से मुंह बनाया.

"बहुत दरियादिल बनते हो, अब बिल का भुगतान कहां से करोगे?" नीलम को पत्नी रूप में मेरी खिंचाई करने में मजा आने लगा था.

"मेरा पर्स खाली है तो क्या हुआ मेरी पत्नी का पर्स तो भरा है."

"अच्छा, सिर्फ इस बार. पर पहले तुम वादा करो कि आज से किसी को उधार नहीं दोगे."

"किया, भई किया." मैं ने उस के सामने याचक मुद्रा में हाथ फैलाया.

नीलम ने अपना पर्स खोल कर एक सौ रुपए का नोट मेरे हाथ पर धरा ही था कि मां फिर राजेश के दोस्त के रूप में आ खड़ी हुई, "ओह राजेश, तुम अभी यहीं हो. मैं बड़ी मुशकिल में फंस गया हूं."

"अब क्या हुआ?"

"हमारा बिल दो सौ से ऊपर हो गया है. एक सौ रुपए और दे दो, मैं कल ही वापस कर दूंगा."

"बस, इतनी सी बात? ले, जा और मौज कर." कहते हुए नीलम का दिया हुआ नोट मैं ने मां को थमा दिया और मां मेरे हाथ से नोट लगभग झपटती हुई धन्यवाद कहते हुए चली गई.

"तु... तु... तुम ने उधार न देने का वादा किया था." कहते हुए अचानक नीलम सचमुच फूटफूट कर रो पड़ी. मैं ने समझा, वह नाटक कर रही है. मैं उस की अभिनय कुशलता पर ताली पीटने ही वाली थी कि मां को उस के मुंह से पानी का गिलास लगाते देख थम गई.

मां ने स्नेह से उस की पीठ थपथपाई तो हिचकियों के बीच नीलम बोली, "चाचीजी, राजेश बिलकुल ऐसा ही है, शायद मुझे उस से शादी नहीं करनी चाहिए." ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • नैयर सद्र

हाथ की लकीरें

"जानती हो सादिया, इस छात्रावास का प्रबंधक ही शहर का सब से बड़ा बदमाश है."

"हां, तुम ने गलती की जो यहां पढ़ने आ गई."

"अरे, हम ने तो कई बार कहा कि किसी होटल में रहना इस छात्रावास से कहीं अच्छा है, लेकिन लड़कियां तैयार ही नहीं होतीं."

"सुना है, एक लड़की ने तो उस के चंगुल से निकलने के लिए कार से छलांग ही लगा दी थी."

सादिया का छात्रावास में पहला दिन था और रात के खाने के बाद लड़कियों से इस तरह की बातें सुन कर वह कांप कर रह गई. उसे ये सारी बातें बड़ी अजीब सी लग रही थीं.

दो सालों के अंदर ही सादिया की अम्मी और अब्बू चल बसे थे. रह गए थे, वे दोनों भाईबहन. कितनी मुशकिलों से ट्यूशन कर के अपनी पढ़ाई पूरी की थी, भाईजान ने. उसे छोटी सी उम्र से दुख झेलने की आदत सी हो गई थी. छोटेछोटे हाथों से वह खाना पकाती

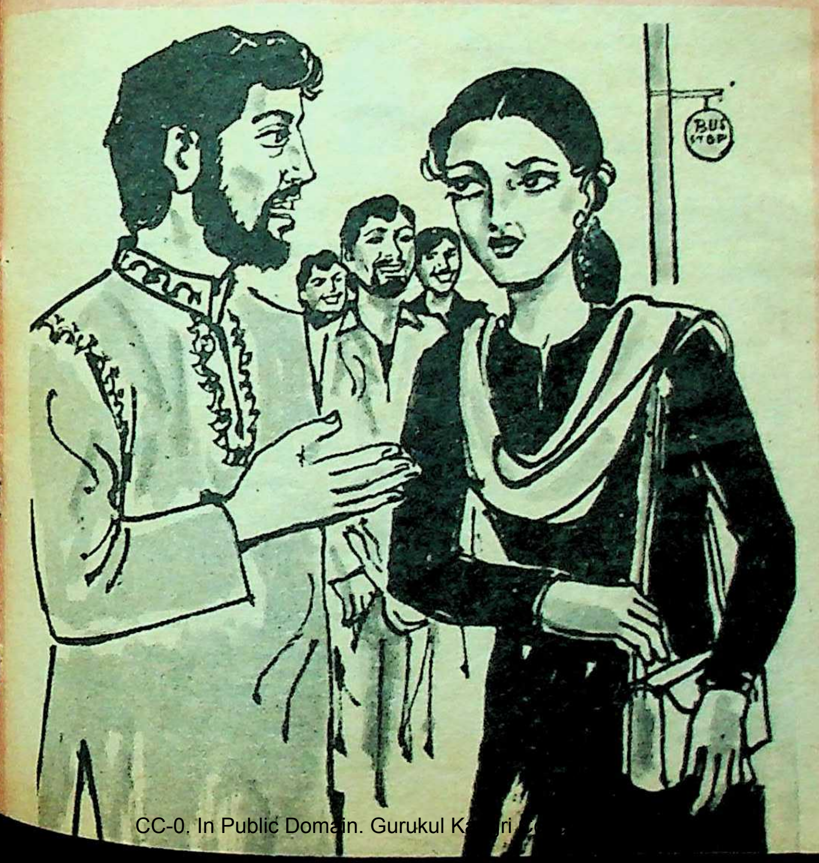

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सादिया फजल के आकर्षण में बंधी थी और फजल हाथ की लकीरों के जाल में उलझा था. फजल को सच्चाई से रूबरू करवाने के लिए सादिया ने ऐसा चक्कर चलाया कि फजल की आंखें खुल गईं.

थी. बीच में तीनचार साल पढ़ाई भी छूट गई थी.

वक्त अच्छा हो या बुरा, कभी रुकता नहीं. अब्बू का बीमा वगैरह का रुपया मिला तो भाईजान ने उस की पढ़ाई फिर शुरू करवा दी. अब्बू के दोस्त नईम चाचा की देखरेख में दोनों बच्चे पढ़तेलिखते आगे बढ़ते रहे.

भाईजान क्लर्क हो गए थे. नईम चाचा ने उन की शादी करवा दी. वह तो सादिया के भी हाथ पीले कर देना चाहते थे, लेकिन भाईजान चाहते थे कि सादिया कुछ पढ़लिख जाए. जिंदगी के अच्छेबुरे वक्त में लड़की को अपना पेट पालने के काबिल तो होना ही चाहिए. वह खुद भी पढ़ना चाहती थी, इसी लिए उसे इंदौर के महिला कालिज में दाखिला दिलवा दिया गया.

सादिया का दाखिला करवाने तो भाईजान आए थे, लेकिन अब उसे छोड़ने न आ सके थे. इंदौर में रहने वाले अपने एक दोस्त को उन्होंने फोन कर दिया था कि सादिया फलां गाड़ी से पहुंच रही है. अपने दोस्त को उन्होंने सादिया का संरक्षक भी बनाया था.

वह दोस्त तो स्टेशन पर नहीं आए थे, लेकिन उस की गाड़ी आई थी. ड्राइवर और करीम दादा के साथ.

सादिया को छात्रावास पहुंचा कर करीम दादा चले गए थे. वह पहले ही दिन लड़कियों में घिरी उन की अजीब सी बातें सुन कर घबरा रही थी.

धीरेधीरे सादिया नए माहौल की आदी होती गई. एक शाम वह छात्रावास के उद्यान में बैठी थी कि उस के कक्ष की साथी नीलम ने घबरा कर कहा, "भाग सादिया, वह..."

"वह कौन?" सादिया ने हड़बड़ाहट में पूछा.

"वही, छात्रावास का प्रबंधक."

"कहां, किधर?" सादिया घबरा कर नीलम के पीछे छिपने की कोशिश भी कर रही थी और शहर के मशहूर बदमाश को देखना भी चाहती थी.

"वह देख नीले सफारी सूट में. वार्डन के कमरे की तरफ जा रहा है."

सादिया नीलम के साथ एक बेंच के पीछे छिप कर उसे देखती रही. उस का कद छः फुट था, रंग सांवला और उम्र कोई 35 वर्ष के लगभग थी. गर्व से सिर उठाए वह बड़ेबड़े डग भरता वार्डन के दफ्तर में चला गया. सादिया और नीलम भाग कर अपने कमरे में पहुंच गईं.

हर तरफ खबर फैल गई कि वह आया था और उस ने सादिया की ओर मुसकरा कर देखा था. कई लड़कियों ने सादिया से भी पूछा. वह हैरान थी कि बगैर किसी बात के उस के नाम के साथ कितनी बातें जुड़ गईं. साथ ही उसे यह भी लगा कि शायद छात्रावास के प्रबंधक के बारे में नईनई बातें बना कर लड़कियां यों ही मजा लेती हैं और कहीं उस बात की तरह बाकी बातें भी अफवाहें भर ही न हों.

एक दिन अचानक सादिया के भाईजान आ गए. आते ही बोले, "चलो सादिया, तुम्हें अपने दोस्त से मिलवा दूं."

एक बहुत बड़े बंगले पर पहुंच कर उन्होंने बरामदे में लगी घंटी बजाई.

एक नौकर ने दरवाजा खोला और उन्हें बैठक में पहुंचा दिया. इतनी लंबीचौड़ी और भव्य बैठक में पहुंच कर सादिया की आंखें फटी रह गईं. चंद मिनटों में भाईजान के दोस्त भी आ गए. सादिया उन्हें देखते ही एकबारगी कांप ही गई, क्योंकि सामने वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

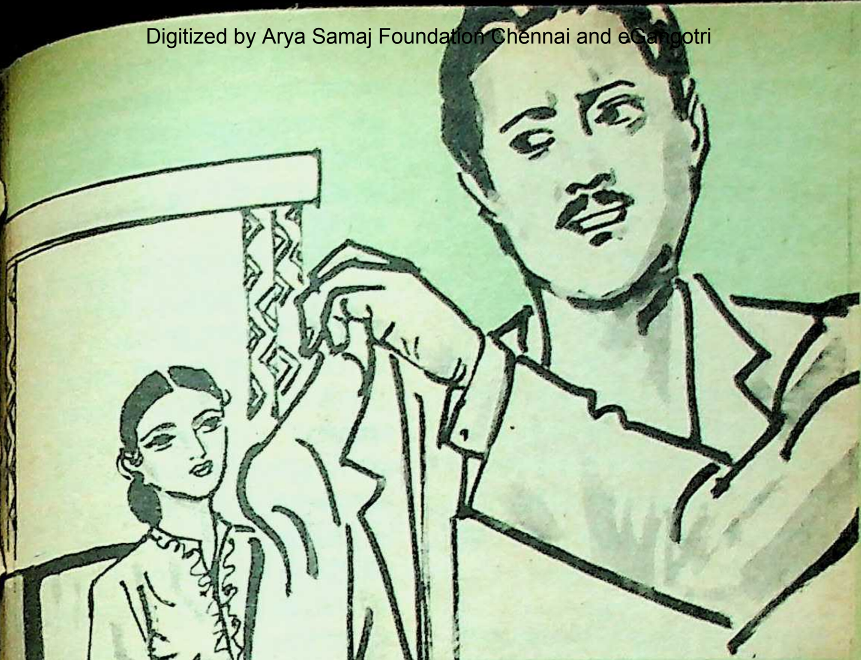

"यह कीमती कोट तो बरबाद कर दिया तुम ने. इस का हरजाना कौन देगा... तुम या तुम्हारा भाई." फजल ने गीले कोट को देख सादिया को कड़वे स्वर में कहा.

छात्रावास का आवारा प्रबंधक खड़ा था.

"सादिया, यह हैं फजल साहब और फजल यह मेरी बहन सादिया है."

लगभग आधे घंटे तक वे वहां रुके. फजल साहब की जिद थी कि भाईजान कुछ रोज उन के यहां मेहमान रहें, लेकिन भाईजान को उसी शाम लौटना था.

वापसी में भाईजान से सादिया ने कहा, "ऐसा खराब आदमी ही मिला था, आप को मेरा संरक्षक बनाने के लिए? आवारा, बदमाश."

भाईजान एक झटके के साथ रुक गए और सादिया को घूरतें हुए बोले, "फजल जैसा शरीफ कोई हो ही नहीं सकता."

"यह आप की राय होगी, छात्रावास की लड़कियां तो..."

"लड़कियां तो फालतू बातें करती हैं. सारे शहर में इस से बेहतर आदमी नहीं मिलेगा."

भाईजान चले गए थे. सादिया ने किसी को नहीं बताया था कि उस का संरक्षक कौन है.

एक शाम मौसम बहुत सुहावना था. वार्डन कमरे में नहीं थीं. नीलम और सादिया वार्डन से पूछे बिना ही बाहर निकल गईं. गेट का बूढ़ा नशेबाज चपरासी तो नाममात्र के लिए ही था. नीलम को घूमनेफिरने का शौक कुछ ज्यादा ही था. जब वे वापसी के बारे में सोच रही थीं तो उसी वक्त जोरों की बारिश होने लगी. देखते ही देखते सड़कें सूनी हो गईं. सादिया और नीलम बस स्टाप पर खड़ी परेशान हो रही थीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने में एक युवक स्कूटर पर गुजरा. उसे देखते ही नीलम चीखी, "राहुल."

आवाज सुनते ही वह रुक गया.

"मुझे चाची के घर छोड़ दो. अब देर हो गई है. छात्रावास का दरवाजा तो सात बजे बंद हो जाता है." नीलम ने युवक से कहा.

"और मैं?" सादिया ने हैरत से पूछा.

"तुम को भी कोई मिल जाएगा." कहती हुई नीलम स्कूटर के पीछे बैठ गई.

कहीं कोई सवारी नजर नहीं आ रही थी. इतने में चारपांच लड़के मस्ती में झूमते हुए उधर से निकले. सादिया को अकेले खड़ा देखा तो सामने दीवार से टिक कर खड़े हो गए. पहले फिकरेबाजी शुरू की फिर एक ने करीब आ कर कहा, "चलिए, हमारे साथ आप को छोड़ देंगे."

सादिया की आवाज नहीं निकल रही थी. हर तरह के बुरे खयाल उसे घेरे हुए थे. इतने में एक कार की रोशनी नजर आई. सादिया भागती हुई दोनों हाथ उठा कर सड़क पर खड़ी हो गई. वह फैसला नहीं कर पा रही थी कि कार को रोक कर वह मुसीबत टाल रही है या ज्यादा बड़ी मुसीबत को बुलावा दे रही है.

कार के रुकते ही सब लड़के अंधेरे में भाग गए.

कार की तेज रोशनी से बचते हुए सादिया ने सोचा, 'न जाने अब मेरा क्या होगा. कार में न जाने कैसे आदमी होंगे? मौका अच्छा है, मुझे भी अंधेरे में भाग जाना चाहिए. जैसेतैसे छात्रावास पहुंच ही जाऊंगी.'

तभी उस ने अपना नाम सुना, "सादिया."

वह हैरान सी खड़ी थी.

"अंदर आ जाओ." दोबारा आवाज सुनते ही उस ने देखा कि कार के भीतर उस का संरक्षक फजल बैठा था.

"बैठो." आगे वाला दरवाजा खुला. वह आहिस्ता से सीट पर बैठ गई.

सादिया का दिमाग काम नहीं कर रहा था. पानी में भीगी सर्दी से कांपती वह सिकुड़ी सी बैठी थी. फजल ने अपना कोट उतार कर उस के कंधों पर डाल दिया. सादिया का दिल धौंकनी की तरह धड़क रहा था. कार सड़क पर बहते हुए पानी को चीरती हुई बढ़ रही थी.

रास्ते में फजल ने सिर्फ इतना ही कहा, "तुम्हारी जगह अगर और कोई लड़की होती तो मैं उसे छात्रावास से निकलवा देता."

सादिया कुछ न बोली. उस की आवाज निकल ही नहीं रही थी. कोट के अंदर वह पत्ते की तरह कांप रही थी. कार के अंदर का गरम माहौल और फजल के कपड़ों से उठती इत्र की महक के साथ सिगरेट की मिलीजुली गंध उस के दिलोदिमाग पर अनोखा असर कर रही थी. उस ने बड़ी कोशिश से, कनखियों से फजल की तरफ देखा. उस के चेहरे पर अजीब सा तनाव था.

कार कितनी देर चली, सादिया को कुछ पता न चला. उसे तो तब होश आया, जब कार फजल के बंगले के अंदर दाखिल होने लगी.

"आइए." उतरते हुए फजल ने कहा.

"लेकिन छात्रावास?" वह फुसफुसाई.

फजल की आंखों में फिर गुस्सा झलकने लगा.

"छात्रावास जाना था तो सात बजे से पहले क्यों नहीं वहां पहुंची. तुम्हारे लिए मैं अपने ही बनाए उसूल तो नहीं तोड़ सकता. चलो अंदर."

फजल की बात का जवाब सादिया के पास नहीं था. फिर उसे खयाल आया कि अगर इतनी रात गए वह फजल के साथ छात्रावास पहुंची भी तो कितनी बदनामी हो जाएगी. खुद को तसल्ली देती हुई वह कार से उतरी. अपने भीगे जिस्म को कोट में छिपाए हुए वह फजल के पीछेपीछे अंदर दाखिल हुई. बरामदे की बाईं तरफ एक कमरे का दरवाजा खोल कर फजल ने कहा, "अंदर जाओ, कपड़े भिजवाता हूं."

वह उस सुसज्जित कक्ष की हर चीज को हसरत से देख रही थी. ऐसे आलीशान मकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उस ने फिल्मों में देखे थे अथवा कहानियों में उन के वर्णन पढ़े थे.

दरवाजा खुलते ही सादिया के खयालों का सिलसिला टूटा. एक बूढ़ा नौकर करीम दादा कुछ सामान लिए हुए दाखिल हुआ, "बेटी, ये लो कपड़े."

कमीज, लुंगी, तौलिया और शाल थे. करीम दादा आगे बढ़े और एक दरवाजा खोल कर बोले, "यह गुसलखाना है. यह गरम पानी का नल है, दूसरा ठंडे का. कपड़े बदल लो, नहीं तो ठंड लग जाएगी. मैं अभी खाना लाता हूं."

सादिया ने कपड़ों पर नजर डाली और सोचा, 'क्या घर में औरतें नहीं है जो ऐसे कपड़े भेजे हैं?' उस ने गरम पानी से मुंहहाथ धो कर अजीब से कपड़े पहन कर बालों पर तौलिया लपेट लिया और शाल ओढ़ ली. गुसलखाने से निकली तो देखा कि कमरे में हीटर जल रहा था.

दरवाजा फिर खुला. करीम दादा खाने की ट्रे लिए अंदर दाखिल हुए और बोले, "खाने के बाद यह गोली भी ले लेना. छोटे सरकार ने कहा है, भीगने से कहीं सर्दी न हो जाए."

सादिया का भूख के मारे बुरा हाल था. लेकिन उसे अचानक लगा कि फजल ने उसे इस काबिल भी न समझा कि खाना अपने साथ खिलाते. फिर वह खुद ही मुसकरा दी, 'क्या उन के सामने तू खाना खा पाती? और हो सकता है, अब तक वह खा भी चुके हों. फिर उन के सामने तेरी हस्ती भी क्या है. अपने घर वालों के सामने इस हुलिए में वह तुझे क्यों बुलाते, क्यों उन से मिलवाते?' खाने से उड़ती हुई खुशबू ने उस के खयालों को भंग किया.

वह चुपचाप खाना खाने लगी. बेहद मजेदार खाना खत्म कर के उस ने गोली उठाई, घुमाफिरा कर देखी और धीरे से गिलास के बचे हुए पानी में डाल दी. गोली पानी में घुलने लगी और वह धीरे से मुसकरा दी.

नौकर फिर कमरे में आया और बोला, "कुछ और चाहिए बेटी?"

सब कुछ

जाने क्यों तुम से
संभाला न गया,
सब कुछ तो तुम्हें
हम ने था सौंप दिया.

—संजय जिंदल

"अगर तकलीफ न हो तो एक कप चाय पीना चाहती हूं."

"सरकार खुद काफी ला रहे हैं." कहते हुए वह बाहर चला गया.

सादिया का दिल डूबने लगा. सिर से तौलिया खोल कर उस ने शाल ढंग से लपेट ली और पलंग के एक कोने पर सिमट कर बैठ गई.

दरवाजा खुला और फजल अंदर आए. ट्रे उन के हाथ में थी. उन्होंने ट्रे मेज पर रख दी. एक कप काफी का उसे दिया. फिर कुरसी के पीछे टंगे अपने गीले कोट को देख कर कड़वाहट से कहा, "यह कीमती कोट तो बरबाद कर दिया तुम ने, इस का हरजाना कौन देगा...तुम या तुम्हारे भाई?"

सादिया के मुंह से एक शब्द भी न निकला. मुशकिल से उस ने काफी खत्म की. शीघ्र ही फजल उठा और बोला, "दरवाजा अंदर से बंद कर लो."

सादिया ने जल्दी से दरवाजा बंद किया. आरामदेह बिस्तर पर लेटते ही उसे नींद आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई. सुबह दरवाजे पर जोरदार दस्तक से उस की नींद टूटी. वह अलसाई सी बोली, "कौन?"

"बेटी, चाय ले लो." करीम दादा की आवाज थी. उस ने दरवाजा खोला. चाय रखते हुए वह बोले, "छोटे सरकार ने कहा है कि जल्दी तैयार हो जाओ."

मुंह धो कर उस ने चाय पी. कपड़े सूख चुके थे. जल्दी से नहा कर कपड़े बदले और तैयार हो कर बाहर आ गई. एक नजर बाजू में खिले रंगबिरंगे फूलों पर डाली और फिर अचानक कार की आवाज पर उस की नजरें उधर उठ गईं. कार ड्राइवर लाया था.

"जाओ." उस ने पलट कर देखा. फजल पीछे खड़े थे.

"ड्राइवर तुम्हें छात्रावास छोड़ आएगा. आइंदा देर तक बाहर न रहना. वार्डन कुछ कहे तो कह देना कि मुझ से बात कर ले."

सादिया कार में बैठ गई और चंद मिनटों में छात्रावास पहुंच गई. सात बजे मुख्य द्वार खुल जाता था. कार देख कर चौकीदार ने फौरन दरवाजा खोल दिया. उस की तरफ ध्यान देना उस ने जरूरी न समझा.

कमरे में जा कर सादिया ने दरवाजा बंद कर दिया. नीलम अभी नहीं लौटी थी. फजल के साथ गुजरा एकएक क्षण उस की आंखों के समक्ष घूमता रहा.

सादिया सोचने लगी, 'फजल के साथ हुए इस हादसे को वह किसी से कहे या नहीं?' जी तो चाह रहा था कि नीलम को एकएक पल का हाल सुना दे. लेकिन नहीं, कह कर कौन मुसीबत बुलाए.

उस ने सोचा, 'फजल साहब इतने बुरे आदमी तो नहीं. जितना लड़कियों ने उसे मशहूर कर रखा है. हो सकता है, भाईजान के दोस्त होने की वजह से लिहाज कर गए हों. वरना 'शायद?' उस ने शरमा कर तकिए में मुंह छिपा लिया.

कभी कालिज या छात्रावास में फजल नजर आ जाते तो सादिया उन्हें देखते ही शरमा जाती. लेकिन फजल जैसे उसे पहचानते ही न थे. उन के इस व्यव... सादिया को चुभन होती.

एक दिन चपरासी ने आ कर सादि... कहा, "वार्डन के दफ्तर में आप का फोन ... है."

"सादिया, मैं फजल बोल रहा ..." उधर से आवाज आई.

"जी, आदाब." उस ने घबराई आ... में कहा.

"मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा ... कोई गलत हरकत नहीं करना. अगर ... खास काम हो तो करीम दादा से कह देना ... फोन कर देना, कहीं जाना हो तो वार्डन से ... कर जाना. जरूरत हो तो घर से गाड़ी ... लेना." इतना कह कर फजल ने फोन बंद कर दिया था.

न जाने क्यों, फजल के बारे में जानने को ... सादिया बेचैन थी. एक शाम हिम्मत ... के वह फजल के बंगले पर पहुंच गई. बा... माली काम कर रहा था. करीम दादा माली ... बातें कर रहे थे. उसे देखते ही बोले.

"आओ बेटी, कोई काम है क्या?"

"नहीं दादा, सोचा कि आप से मि... आऊं." उस ने इधरउधर देख कर पूछा, "कोई है नहीं घर में क्या?"

"अरे, यहां होता ही कौन है." दादा अंदर जाते हुए बोले, "छोटे सरकार और ... नौकरों के अलावा...आज वह भी नहीं हैं."

"तो और कोई तो होगा?" उस ने कुरेदा.

"बड़े सरकार और बेगम साहिबा को गुजरे अरसा हो चुका है. अब उन की इकलौती औलाद उन की अमानत है. उस की देखभाल कर रहे हैं, हम सब मिल कर."

सादिया ने बड़ी कोशिश से पूछा, "उन की बीवी तो होगी?"

"अरे बेटा, छोटे सरकार के ... दोस्त खान ने कह दिया है कि तुम 50 साल से एक दिन ज्यादा न जिओगे. बस, यह बात ऐसी दिल को लगी है कि हम लाख कहें, वह मानते ही नहीं. 35 पार कर चुके हैं, एक ही रट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. मैं किसी को बेवा करने का क्या लूंगी? हम सब तो थक कर चुप हो गए हैं. कौन वारिस होगा, इतनी दौलत का?" करीम दादा ने मायूस स्वर में कहा.

"लेकिन ज्योतिषी की बात पर इतना यकीन?"

"अरे बेटा, खान की एकदो बातें सच निकल गईं और इन के दिल में बैठ गई है कि यह बात भी सच होगी."

"लेकिन वह इत्तिफाक भी हो सकता है. मौत का वक्त तो कोई नहीं बता सकता."

"बहुत समझा चुके, बेटा हम सब तो हार चुके हैं."

सादिया इस अजीब सी दास्तान पर हैरत करती हुई लौट आई. जो फजल उसे बदमाश, आवारा और बुरा लगता था, अब एक ऐसा भोलाभाला आदमी लग रहा था जिस पर सिर्फ तरस खाया जा सकता था. जिस फजल को वह इनसानों से अलग एक अजूबा समझती थी, वह उसे तन्हा, बेसहारा सा लगने लगा. फजल का खयाल उस के जेहन से चिपक कर रह गया.

चंद महीने और बीत गए. एक दिन फिर फजल का फोन आया, "सादिया, एक जरूरी काम है...गाड़ी भेज रहा हूं, तुम कायदे से तैयार हो कर आ जाओ."

"लेकिन क्या काम है?" उस की आवाज में घबराहट थी.

"तुम्हारे भाईजान ने कहा था कि मैं तुम्हारे लिए अच्छा सा रिश्ता तलाश करूं. इत्तिफाक से एक बहुत अच्छा रिश्ता मिला है. मेरे एक दोस्त का छोटा भाई इंगलैंड से आया है. पांच बजे मैं ने उसे घर पर बुलाया है.तुम आ जाओ, दोनों एकदूसरे को देख लो, बाकी बातें हम तय कर लेंगे."

सादिया इस अजीब खबर के लिए बिलकुल तैयार न थी. उस का दिल बेहद परेशान सा हो गया था. लड़कियां शादी की बात पर खुश होती हैं, लेकिन वह बेचैन हो गई थी.

वह अपने कमरे में न जा कर बाग के एक सूने कोने में चली गई और एक पेड़ के नीचे बैठ गई. उस के दिलोदिमाग में सवालजवाब शुरू हो गए थे, 'सादिया, जिस खयाल को तू मन ही मन पनपने दे रही है, वह सिर्फ सपना ही हो सकता है, कहां तू, कहां वह.'

'कोशिश करने में हर्ज भी क्या है?' दिल ने जिद की.

'और अगर वह वाकई 50 वर्ष तक ही जिंदा रहा तो?' दिमाग ने दलील पेश की.

'अरे, तुझे तो बहम होने लगा, चल मान लिया 50 तक ही रहेंगे, लेकिन अगर तू आगे न बढ़ी तो इतने दिन उन्हें कौन खुशियां देगा? उन्हें खुशियां दे कर क्या तेरी जिंदगी का हक अदा न हो जाएगा?'

'मगर कैसे करूं...क्या करूं?'

अपने खयालों के साथ उलझते हुए वह बहुत देर तक वहां बैठेबैठे सोचती रही. अचानक वह उठ खड़ी हुई. अब उस के लबों पर मुसकराहट थी.

इंगलैंड वाला डाक्टर युवक खूबसूरत, गोराचिट्टा, तंदुरुस्त नौजवान था. वह हिंदी

अब करंट नहीं लगेगा

आए दिन घरों में बिजली का करंट लगने की घटनाएं होती रहती हैं. कभीकभी तो बिजली का झटका इतनी जोर का लगता है कि जान से भी हाथ धोना पड़ जाता है. किंतु अब एक भारतीय कंपनी 'इंगलिश इलेक्ट्रिक' ने एक ऐसा उपकरण तैयार किया है, जिस से घरों तथा औद्योगिक इकाइयों में बिजली का नंगा तार छू जाने पर भी करंट नहीं लगेगा.

'सेफ और सुपर ट्रिप' नामक यह उपकरण मुख्य स्विच बोर्ड पर लगाया जा सकता है. किसी भी रूप में बिजली का नंगा तार छू जाने पर यह अपनेआप करंट को काट देता है. पाश्चात्य देशों में यह उपकरण काफी समय से उपयोग में आ रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उर्दू साफ बोलता था. उस ने सादिया को पसंद भी कर लिया था.

जब वह चला गया तो फजल की आवाज आई, "सादिया."

वह सामने जा कर खड़ी हो गई तो फजल ने कहा, "उम्मीद है, शकील तुम को पसंद आया होगा. वह तैयार है. अभी फोन कर के तुम्हारे भैयाभाभी को बुलवा लेता हूं. यह शादी जल्दी हो जाए तो अच्छा है. इतना अच्छा लड़का फिर नहीं मिलेगा.

"फजल साहब," सादिया ने पहली बार फजल के सामने जबान खोली थी. "मैं कुछ कहना चाहती हूं."

"कहो, क्या बात है?" फजल ने लापरवाही से कहा.

"मैं शायद..." बात अधूरी छोड़ कर वह चुप हो गई.

फिर हिम्मत कर के बोली, "मैं ज्यादा दिन की मेहमान नहीं. बस, चंद बरस और...इसलिए किसी की जिंदगी खराब नहीं करना चाहती."

"क्या बकवास कर रही हो?" फजल गरजा.

"भाईजान के एक दोस्त हैं, खान साहब. उन्होंने मुझे बताया था. वह बहुत अच्छे नजूमी हैं."

"क्या बताया था?"

"मैं 30 साल तक भी मुशकिल से जी सकूंगी."

"अभी तुम्हारी कितनी उम्र है?"

"जी, 23 बरस." वह रुक कर बोली, "भाईजान को यह बात पता नहीं है."

फजल स्तब्ध सा सादिया की ओर देखते हुए सोचने लगा, '23 बरस की सादिया सिर्फ सात बरस की और मेहमान है. वह तो अभी 35 का है. 15 बरस और जी सकेगा.'

फिर अचानक उस ने पूछा, "लेकिन नजूमी की बात सच निकले, यह जरूरी तो नहीं?"

"आप से कोई कहता तो क्या आप गलत मानते?"

"लेकिन फिर करोगी क्या? इसी तरह बैठी रही और नजूमी की बात गलत निकल गई तो सारी उम्र अपने भाई पर बोझ बन रहोगी?"

"आप ठीक कहते हैं, लेकिन एक और मजबूरी है." उस ने रुक कर कहा.

"कैसी मजबूरी, जल्दी बोलो."

वह धीरेधीरे कमरे के दूसरे कोने तक जा कर खिड़की के पास खड़ी हो गई. फजल की तरफ उस की पीठ थी. वह तेज कदमों से उस के पास आया और झिड़क कर बोला, "क्या है? कुछ बोलो न."

"जी, मैं किसी को...किसी और को..."

"पसंद करती हो?" फजल ने उस की बात पूरी की.

"जी."

"कौन है? फिर उसी से शादी कर लो."

"जी वह कभी नहीं मानेंगे."

"अरे, मैं उसे राजी कर लूंगा. तुम बताओ तो कौन है, कहां रहता है?"

"आप नाराज तो नहीं होंगे?"

"मुझे क्या मतलब. मैं भला क्यों नाराज होने लगा. अब तो बताओ."

"जी...वह...मेरे पीछे खड़े हैं."

"क्या?" फजल को समझने में देर नहीं लगी. वह गुस्से से बोला, "पागल हो गई हो? होश में हो या नहीं?"

"मुझ से गलती हुई. मैं अपने शब्द वापस लेती हूं. मैं अपनी औकात भूल गई थी." सादिया की आंखों से आंसू बहने लगे थे.

फजल पैर पटकता हुआ कमरे से जा चुका था. कुछ देर बाद करीम दादा आए और बोले, "बेटी, गाड़ी तैयार है, चलो."

वह भारी कदमों से बंगले से निकली और कार में बैठ कर छात्रावास पहुंच गई. रात भर सादिया बिस्तर पर करवटें बदलती रही. सुबह उस ने फजल को फोन किया.

"मैं फजल बोल रहा हूं." उधर से आवाज आई.

"मैं सादिया...कुछ लम्हे लूंगी आप के. कल जो गुस्ताखी हुई, उस के लिए माफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती हूं. मैं भूल गई थी कि कहां आप और कहां मैं. अगर यह बात भाईजान तक न पहुंचे तो मेहरबानी होगी. मेरी जिंदगी के बारे में आप फिक्र न करें. जो कुछ आप ने किया, उस के लिए बेहद शुक्रगुजार हूं. हो सके तो माफ कर दीजिएगा."

सादिया का फोन बंद हो चुका था. मगर फजल देर तक रिसीवर हाथ में लिए बैठा रहा. पिछली शाम उस ने सादिया को डांट कर भगा तो दिया था, लेकिन रात भर वह कहां सो पाया था. सादिया का आकर्षक व्यक्तित्व और उस की बातें फजल के दिल में तब हलचल मचा रही थीं.

उस ने रिसीवर को धीरे से रखा और उठा. उसे याद आया 11 बजे उसे एक मीटिंग में जाना है.

'शाम पांच बजे फजल ने सादिया को फोन किया, "सादिया, तुम्हें कल जोर से डांट दिया था, इस के लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूं. तुम तो बहुत ही प्यारी लड़की हो. जानती हो, मैं 35 वर्ष का हूं."

"आप 45 के होते तो भी क्या था..." सादिया ने सांसों से बोझिल आवाज में कहा.

"ठीक है, तुम्हारी यही इच्छा है तो मुझे भी सब कुछ मंजूर है. तुम्हारे भाईजान को बुला कर मैं बात कर लूंगा."

शहनाइयों की गूंज के बीच सादिया फजल की दुलहन बनी उस के घर आ गई.

एक दिन शरारत से सादिया ने कहा, "जानते हो, नजूमी ने तो यह कहा था कि मैं 20 बरस की उम्र तक ही जिंदा रहूंगी."

"क्या? तो तुम ने मुझ से झूठ बोला था?" फजल बोला.

"नहीं तो आप कैसे मिलते?"

"पगली कहीं की. कितना अच्छा रिश्ता था वह..."

"इस से अच्छा तो नहीं था. रही नजूमी की बात तो उस का यकीन तो मुझे था ही नहीं. तभी तो 20 बरस से गुजर कर 23 को आ पहुंची हूं."

सादिया की बातें सुन कर फजल कुछ

> ## इनकार का अर्थ
>
> प्रशंसा से इनकार करने का अर्थ है दोबारा प्रशंसा सुनने के लिए लालायित.
>
> —ला रोशफूकी

हैरान सा हो गया था. वह सोचने लगा, 'अगर सादिया 20 बरस से ज्यादा जी सकती है तो मैं 50 बरस की उम्र में क्यों मरूंगा?'

फजल और सादिया जिंदगी के रंगों में ऐसे खोए कि नजूमी की बात उन के दिमाग से ही निकल गई. दो बेटों के बाद उन के यहां एक बेटी हुई.

साल दर साल बीतते रहे. बच्चे अब युवा हो चुके थे. एक दिन घर में बहुत गहमागहमी थी. सादिया सब से ज्यादा व्यस्त थी.

"क्या मेहमान आने वाले हैं? क्या बात है इतनी तैयारी और मुझे कुछ पता ही नहीं." फजल ने पूछा.

"आज आप की सालगिरह है."

"मेरी सालगिरह? मैं तो भूल ही गया था, इस तारीख को."

"60वीं सालगिरह मुबारक हो." सादिया ने धीरे से कहा.

"जब से तुम जिंदगी में आई हो, लगता है, वक्त की रफ्तार तेज हो गई है." फजल ने मुसकरा कर कहा.

शाम को घर मेहमानों से भरा हुआ था. अचानक फजल की नजर खान पर पड़ी. वह उन की ओर बढ़े, "अरे खान साहब, आप?"

"भई, मुबारक हो. आप ने तो याद न किया, लेकिन हमें खबर हो गई थी."

"लेकिन याद आया...आप तो मुझे 50 बरस की उम्र पर ही मार रहे थे."

"अजी फजल साहब, लकीरों का क्या है. बदल भी जाती हैं. मैं तो खुद नजूमी हो कर भी इन बातों का यकीन नहीं करता."

"वाह, किसी की जान गई और आप की अदा ठहरी. और हां, जरा इधर आइए, एक और शिकार से भी आप को मिलवाऊं, जिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप 20 बरस की उम्र में ही पार करना चाहते थे," फजल खान को लिए सादिया के पास पहुंचे, "सादिया देखो, कौन आया है?"

"आप की तारीफ?" सादिया ने पूछा.

"लो, तुम इन्हें नहीं जानतीं? अरे वही खान साहब, तुम्हारे नजूमी."

"लेकिन मैं तो इन से पहले कभी नहीं मिला." खान ने हैरत से कहा.

"अब पहचानने से ही मुकरने लगे," फजल ने हंस कर कहा.

"यह ठीक कह रहे हैं." सादिया ने कहा, "इन से मैं कभी नहीं मिली."

"तो फिर वह नजूमी वाली बात...किस ने देखा था तुम्हारा हाथ?"

"मेरा हाथ किसी ने नहीं देखा."

"क्या? फिर तुम ने इतना बड़ा नाटक क्यों किया था?"

"अपनी पसंद की चीज पाने के लिए लोग जान पर खेल जाते हैं, मैं ने तो सिर्फ नाटक ही खेला था." सादिया इस उम्र में भी यह कहते हुए शरमा गई थी. फिर बोली, "आप का वहम भी तो तोड़ना था."

"तो तुम्हें सब पता था?"

"जी हां."

"और जो नजूमी का कहा सच निकल जाता तो?"

"कैसे निकलता. मैं जो लड़ रही थी आप की लकीरों से."

"फिर भी...तुम ने कुछ भी न सोचा?"

"सोचा जरूर था, लेकिन यही कि अगर यों ही है तो कम से कम 50 बरस तक तो आप को वास्तविक जिंदगी दे सकूं."

"तो तुम...ओह, सादिया." फजल सादिया को अजीब नजरों से देख रहा था, जिन में हैरत के साथसाथ मुहब्बत भी भरी थी.

सरिता

सरिता में विज्ञापन दीजिए
अपनी बिक्री बढ़ाइए

उच्च व मध्य वर्ग के 3,00,000 से भी अधिक धनी व समृद्ध परिवारों द्वारा खरीदी जाती है और इस के 80 लाख से भी अधिक पाठक हैं. यद्यपि 'सरिता' महिलाओं में विशेष रूप से लोकप्रिय है, पर परिवार का कोई भी सदस्य इसे पढ़े बिना नहीं छोड़ता.

यदि आप की निर्मित वस्तुएं एवं उत्पादन संपन्न परिवारों द्वारा खरीदे जाते हैं तो 'सरिता' में विज्ञापन दीजिए और बिक्री बढ़ाइए.

विज्ञापन दर अपेक्षाकृत कम व अन्य पत्रपत्रिकाओं से कहीं अधिक आकर्षक लिखें :

विज्ञापन व्यवस्थापक
सरिता रानी झांसी रोड. नई दिल्ली-55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

शादी के समय जब अधिकतर मुसलिम दूल्हा दरवाजे के अंदर जाता है तो मेहंदी की टहनी से उस की पिटाई किए जाने की प्रथा है.

मेरी मौसेरी बहन की शादी में जब जीजाजी की पिटाई की गई तो मेहंदी का एक कांटा उन की आंखों में इस तरह चुभ गया कि हमेशा के लिए उन की आंख ही ले बैठा.
—नसरीन बेगम

*

हमारे गांव में रिवाज है कि जब किसी के घर बच्चा जन्म लेता है तो छठी के दिन कुत्ते और बिल्ली के बालों को जला कर उस के धुएं से बच्चे की नाभी को सेंका जाता है.

पिछले दिनों मेरे पड़ोस में एक बच्चे का जन्म हुआ. प्रथा के अनुसार बच्चे का बड़ा भाई जब कुत्ते के बाल नोच रहा था तो कुत्ते ने गुस्से में आ कर उसे काट लिया. बहुत इलाज होने के बाद भी वह बच नहीं सका.
—सोनी सिंह

*

हमारे यहां प्रथा है कि जब किसी व्यक्ति की असामयिक मृत्यु एकादशी के दिन हो जाती है तो नारायण बलि नामक कर्म के अंतर्गत अंतिम संस्कार करने वाले व्यक्ति को नौ बार स्नान करना पड़ता है.

हाल ही में मेरे एक मित्र की सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई. मित्र के छोटे भाई को नारायण बलि का कर्म करना पड़ा.

उसे पहले से ही बुखार था, उस पर नौ बार नहाने के कारण उसे निमोनिया हो गया. हालत यहां तक खराब हो गई कि काफी प्रयासों के बावजूद उसे बचाया नहीं जा सका.
—प्रदीप जोशी

रामपुर में प्रथा है कि शादी के पश्चात बेटी की विदाई पर मामा लड़की को गोद में ले कर पालकी या वाहन तक ले जाता है.

हमारे संबंधी की बेटी के मामा काफी वृद्ध हैं. जब वह लड़की को गोद में ले कर चले तो भार सहन न कर सके और गिर गए. उन्हें इतनी गहरी चोट आई कि तुरंत हस्पताल जाना पड़ा.
—कु. रेनू रुहेला

*

मुसलिम शिशु के जन्म पर मौलवी साहब द्वारा शिशु को कानों में अजान देने की प्रथा है ताकि वह सच्चा मुसलमान हो सके.

उस दिन मेरी सहेली के बच्चे के जन्म पर मौलवी साहब ने जरा कुछ ज्यादा तेज आवाज में अजान दे दी. बच्चा एकाएक चीख उठा. उस का परिणाम यह हुआ कि काफी इलाज कराने के बावजूद भी आज तक उस के कान खराब हैं.
—नसरीन

*

हमारे यहां जिस व्यक्ति को कुत्ता काट लेता है, उसे सात घरों से रोटी मांग कर प्रत्येक का टुकड़ा खिलाया जाता है और कोई डाक्टरी इलाज जरूरी नहीं समझा जाता.

पिछले दिनों एक लड़का इस अंधविश्वास के कारण चिकित्सा न पा सका और उस के मातापिता को अपने इकलौते पुत्र से हाथ धोने पड़े.
—सदफ अंसारी ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

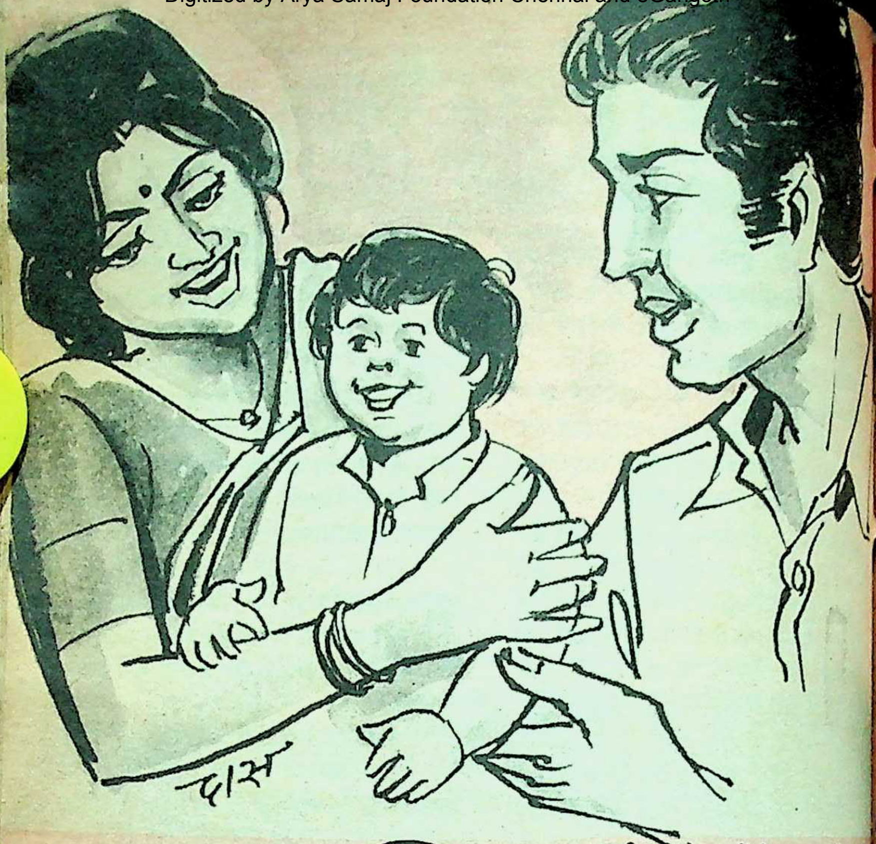

भाभी

कहानी ● नरेंद्रकौर छाबड़ा

आंगन के जिस कोने से धूप दिन के दूसरे पहर में ही गुजर जाती थी, वहीं दीवार से कुछ हट कर बड़ी सी दरी बिछी थी. उदास मुद्रा में शीला महल्ले की औरतों से घिरी भीगी आंखों से शून्य में ताक रही थी. उस की भाभी की मृत्यु का अफसोस जाहिर करने आई औरतें उस की चुप्पी से अलगअलग अर्थ लगा रही थीं.

भाभी की तेरहवीं के पश्चात पिछली रात ही वह लौटी थी और सवेरे से ही शोक प्रकट करने वालों का आनाजाना जारी था. जब ससुराल पक्ष के रिश्तेदार आए थे, तब उस की रुलाई फूट पड़ी थी. जेठानी ने समझाया था, "वहां भी इतने दिन रोती रही हो, क्या इस से भाभी वापस आ गई? सब्र करो, जो कुछ इनसान के वश में नहीं उस पर जोर जबरदस्ती तो नहीं की जा सकती न. अपनी तबीयत का भी कुछ खयाल करो. कहीं रोरो कर बीमार पड़ गई तो घर को कौन देखेगा?"

शीला का पति रीतेश भी बोल पड़ा, "भाभी, आप ही इसे समझाइए. वहां भी रोरोकर इस ने अपनी हालत बिगाड़ ली थी."

फिर जेठानी ने ही उसे चाय व थोड़ा सा नाश्ता खिलाया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृविहीन बच्चे की चिंता रोजदारोज तो लोग करते हैं पर भाभी के नन्हे को शीला आखिर कैसे छोड़ सकती थी. जो प्यार, स्नेह व सेवा भाभी ने उसे दी, उस का बदला तो नन्हे के प्रति कुछ कर के ही उतारा जा सकता था.

वहां आई औरतों को भाभी की मृत्यु का विवरण जेठानी ही सुना रही थी. दो वाक्य बोलते ही शीला की आंखें छलक जाती थीं. अतः जेठानी ने उसे चुप रहने की सलाह दी थी. जब महिलाएं पूछ उठतीं, "अब उस बच्चे का क्या होगा?" तो शीला की आंखों से फिर आंसू बहने लगते.

शाम के समय जेठानी भी अपने घर चली गई. शीला भी कुछ देर आराम करना चाहती थी. सारा दिन लगातार बैठे रहने से पीठ अकड़ सी गई थी. घुटनों में हलका सा दर्द महसूस होने लगा था. लंबे सफर की थकावट ने मानसिक द्वंद्व, अशांति और तनाव को और बढ़ा दिया था. गुड़िया को दूध दे कर वहीं पलंग पर वह निढाल सी लेट गई. रोरो कर थकी, अनिद्रा से बोझिल आंखों को बंद किया तो सामने नन्हे का रोता, सुबकता चेहरा घूम गया. आंखों की थकान व जलन के बावजूद भी उसे नींद कहां आ रही थी. बारबार नन्हे का चेहरा सामने आ जाता और वह तड़प उठती.

सुबकते हुए नन्हे की मां को तलाशती आंखें, दूध पीतेपीते बोतल को धक्का दे कर रोना. हर चेहरे को एकटक देख कर मां की अनुपस्थिति का भान लेते ही उस का रोतेरोते हिचकियां लेना आदि सभी कुछ

"भाभी क्या नाम रखने का विचार है नन्हे का?" उस ने पूछा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर तक शीला को दहला जाती. मृत्यु ने छः माह के अबोध नन्हे की मां को उस से जुदा कर दिया था.

शीला की मां ने ही बताया था कि सवेरे नहा कर गुसलखाने से बाहर निकलते वक्त भाभी का पैर फिसल गया था. कमर में दर्द होने लगा तो डाक्टर के पास ले गए. परीक्षण के लिए उन्हें हस्पताल में भरती कर लिया गया. भाभी ठीक तरह से बोलती, हंसती, खाती रही थीं. नन्हे को दिन में दो बार उन से मिलाने लाया जाता. बारबार पूछतीं, "इसे दूध दिया न? पानी बिना उबाले तो नहीं पिलाया? दाल का सूप, फलों का रस भी दिया न?" मां की हामी भरने पर भाभी के चेहरे पर संतोष व तृप्ति के भाव उभर आते.

दूसरे दिन शाम के समय भाभी को चक्कर आने लगे. डाक्टर ने ताकत का इंजेक्शन तथा ग्लूकोज लगा दिया. आधे घंटे में उन का गला सूखने लगा और आवाज बंद हो गई. डाक्टर के कहने पर फलों का रस उन के मुंह में डाला तो सांस उखड़ने लगी. देखते ही देखते वह बेहोश हो गईं, तुरंत आक्सीजन लगा कर उन्हें बड़े हस्पताल में ले जाया गया. लेकिन वहां पहुंच कर पता लगा कि वह तो इस संसार से विदा ले चुकी हैं.

घर के सदस्य जड़ हो गए थे. यह वज्र एकाएक उन के ऊपर कैसे आ गिरा? घंटे भर में ही इंजेक्शन की प्रतिक्रिया स्वरूप सब को छोड़ भाभी मौत के मुंह में समा गई थीं. डाक्टर ने बड़ी चतुरता से दिल के दौरे के परिणामस्वरूप हुई मौत जाहिर कर दी थी. घर के सदस्य इस अन्याय को सहन करने के लिए विवश थे. हालांकि उन के मतानुसार, डाक्टर की लापरवाही ही भाभी की मृत्यु का कारण बनी थी. लेकिन उन की कौन सुनता?

रोतेपीटते, दो घंटे पूर्व हंसतीबोलती भाभी के शव के साथ सब लौटे थे. शीला तो पति के साथ उसी वक्त बस से चल पड़ी थी. आठ घंटे की यात्रा के बाद जब वे वहां पहुंचे थे तो भाभी की अंतिम यात्रा की तै[यारियां]
हो चुकी थीं.

लाल साड़ी में लिपटी पूरे शृं[गार से]
सजी भाभी दो वर्ष पूर्व के अपने दु[ल्हन]
रूप को साकार कर रही थीं. शीला [रोती]
हुई उन से जा लिपटी थी, "नहीं भाभी[...]
इतनी जल्दी नहीं जा सकती. नन्हे को [कौन]
संभालेगा.... भैया, मां और बाबूजी को [कौन]
देखेगा?"

अरथी उठी तो जबरदस्त मा[नसिक]
आघात के परिणामस्वरूप शीला बेहो[श हो]
गई थी. होश में आने पर बारबार उसे भा[भी]
का लाल साड़ी में लिपटा शव याद आ[ता...]
प्रकृति प्रदत्त सुंदरता तो उन्हें प्राप्त थी[...]
स्वभाव भी इतना अच्छा था कि हर कोई [उन]
की ओर आकर्षित हो जाए.

भाभी सिर्फ मैट्रिक तक ही पढ़ पाई [...]
दो भाइयों की इकलौती बहन हो[ने के]
कारण घर भर में सब की लाड़ली तो थ[ीं]
ही लेकिन बीमार मां की देखभाल व [...]
भाइयों की देखरेख में स्वयं को व्यस्त [...]
पढ़ाई अधूरी छोड़ जो त्याग उन्होंने कि[या]
उसी के कारण वह सभी की अधिकां[...]
प्रिय होती चली गईं.

ढाई वर्ष पूर्व शीला के पिताजी व्या[पार]
के सिलसिले में खंडवा गए थे. वहां [...]
परिचित व्यापारी के घर वह रात को [...]
थे. इस दौरान व्यापारी की सुशील बे[टी]
पिताजी को भा गई थी. दौड़दौड़ कर [...]
किसी शिकन, झुंझलाहट के अतिथि सत्का[र]
में लीन, उस का सेवाभाव देख कर पिता[जी]
उसे अपनी बहू के रूप में पसंद कर आए [...]
फिर भैया ने भी अपनी स्वीकृति दे दी [...]
छः महीने के भीतर ही विवाह हो गया [...]

भैया की शादी के बाद शीला सप्ता[ह]
भर के लिए वहां रुक गई थी. कुछ भाभी [...]
साथ मिल कर रहने का चाव था. कुछ [...]
के वक्त हंगामे का रूप धरे घर [...]
व्यवस्थित करने में मां की मदद करने [...]
विचार था. उस की दो वर्ष की बेटी [...]
अचानक तेज बुखार की चपेट में आ गई [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

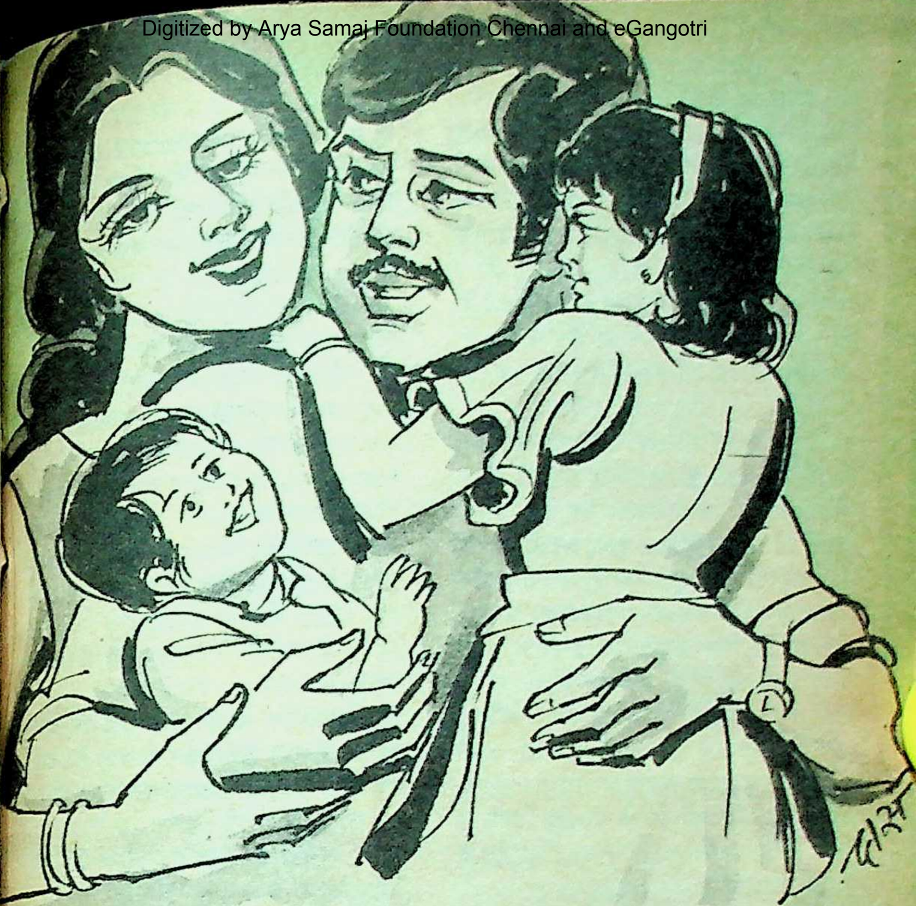

"कैसे हैं, हमारे नन्हे साहबजादे?" अंदर आते ही रीतेश ने एक तरफ गुडिया और दूसरी तरफ नन्हे को बांहों में भर लिया.

उस कठिनाई के वक्त भाभी ने अपने मधुमास के कार्यक्रम को रद्द कर के गुड़िया को संभालने में जो सहारा दिया था, उसे शीला कभी नहीं भूल सकती.

रात को शीला को आराम करने की ताकीद दे कर भाभी स्वयं गुड़िया को अपने पास सुलातीं. ठीक समय पर दवा, पानी, दूध आदि देने की पूर्ण जिम्मेदारी उन्होंने निभाई थी. भैया नईनवेली दुलहन के इस रूप को देख कर मुग्ध हो गए थे. भाभी के प्रति घर के हर सदस्य के मन में अपार स्नेह और सम्मान पैदा हो गया था. शीला तो अपनी बेटी के जीवनदान में भाभी का बहुत बड़ा योगदान मानती थी.

अगले महीने भैयाभाभी घूमने निकले थे. वापसी में भाभी मां के लिए बादामी रंग की सिल्क की साड़ी, बाबूजी के लिए कुरतापाजामा, शीला के लिए शिफान की प्यारी सी साड़ी तथा दोनों देवरों के लिए टीशर्ट लाई थी. गुड़िया के लिए भी लाल रंग की आकर्षक फ्राक लाना वह नहीं भूली थीं. सभी संतुष्ट व प्रसन्न थे. सभी की आंखों में प्रशंसा के भाव थे.

छः महीने पश्चात मां को हलका सा दिल का दौरा पड़ा था. एक सप्ताह तक उन्हें हस्पताल में रखा गया. इस दौरान भाभी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस सूझबूझ, लगन व हिम्मत से इस कठिन घड़ी का मुकाबला किया था, वह अतुलनीय था. भागदौड़ में सवेरे से शाम कैसे हो जाती, पता ही न चलता. लेकिन भाभी के माथे पर कोई शिकन तक नजर न आती. पता नहीं वह कहां से इतनी सहनशीलता और त्याग बटोर लाई थीं. इतना सब करने के पश्चात कहतीं, "दीदी, समय ही कुछ ऐसा है कि न आप को कहीं घुमानेफिराने ले जा सकते हैं, न आप की खातिर ही कर पा रहे हैं. आप को भी यहां आ कर काम करना पड़ रहा है."

शीला सोचती, 'भाभी पता नहीं किस मिट्टी की बनी हैं, न कभी थकती हैं, न झल्लाती हैं. इन के स्थान पर कोई दूसरी होती तो पता नहीं क्या हाल करती. अपनी परेशानियों को भूल दूसरों की तकलीफें समझना, उन्हें हर संभव मदद करना कोई बिरला ही कर सकता है. इन्हीं गुणों के कारण ही तो भाभी सब की चहेती थी.'

एक दिन की घटना तो भुलाई नहीं जा सकती. पड़ोस में रहने वाली नीरू की शादी थी. बारात ठीक समय पर धूम मचाती, उत्साहित सी पहुंची ही थी कि किसी ने दूल्हे को उकसाते हुए कह दिया, "दुलहन के पैर में खराबी है."

बस, दूल्हा अड़ गया कि दुलहन को उस के सामने चलते हुए दिखाया जाए और डाक्टर से प्रमाणित कराया जाए, तभी वह शादी करेगा. कन्यापक्ष ने इस बेतुकी बात को प्रतिष्ठा का मुद्दा बना लिया और आपस में बहस शुरू हो गई. तभी न जाने कहां से भाभी वहां पहुंच गईं. सारा माजरा जान कर उन्होंने दूल्हे को बुला कर न जाने उसे क्या कहा कि वह खुशीखुशी अपनी भूल की क्षमा मांगते हुए विवाह की बेदी पर जा बैठा. सभी उपस्थित लोग इस समस्या को चुटकी में हल कर देने वाली भाभी की जी भर कर प्रशंसा कर रहे थे.

फिर तो भाभी सारे महल्ले की भाभी बन गईं. किसी को पापड़, बड़ी, अचार बनाना हो तो वह भाभी की राय व मदद लेने आ पहुंचतीं. किसी की लड़की का रिश्ता तय होना होता तो भाभी को बुला भेजते. किसी के घर शादी हो तो खरीदारी के लिए भाभी को साथ ले जाया जाता. साल भर में ही भाभी अत्यधिक लोकप्रिय तथा महल्ले भर की चहेती बन गई थीं. मांपिताजी भी अपनी बहू की प्रतिष्ठ पर गर्व महसूस करते थे.

जब मां को पता लगा कि भाभी, मां बनने वाली है तो उन की खुशी का ठिकाना न रहा. भाभी की सेवा का प्रतिदान देते हुए वे उन का अत्यधिक खयाल रखतीं, "बहू, फल, दूध रोजाना लिया करो. बच्चा स्वस्थ रहेगा, दिमाग पर कोई तनाव न आने देना, इस से बच्चे के स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है. जिस चीज को खाने का मन करे कह देना... मैं बना दूंगी."

मां की बातें सुन कर भाभी मुसकरा देतीं.

हालांकि भाभी कमजोर थीं. लेकिन मां के उचित मार्गदर्शन व सही देखरेख में वह ठीकठाक रहीं तथा समय पर उन्होंने पुत्र को जन्म दिया.

भतीजे के जन्म पर शीला भी मायके गई थी.

"भाभी, क्या नाम रखने का विचार है नन्हे का?" उस ने पूछा तो भाभी मुसकराते हुए बोलीं, "दीदी, नाम तो आपने रख ही दिया है."

"क्या...?" शीला हैरान थी.

"हां, अभी आप ने 'नन्हे' के नाम से नहीं पुकारा? कितना प्यारा नाम है." और बेटे का लाड़ का नाम 'नन्हे' ही पड़ गया था. गोरा सा तीखे नक्श, घने बाल, बिलकुल भाभी पर गया था, नन्हे.

भाभी की नसनस में सेवाभाव समाया था. तभी तो नन्हे की देखभाल में उन्हें स्वयं का भी खयाल न रहता. बिना उबला पानी भी उसे कभी न देतीं. फलों का रस, दाल का पानी भी नियमित रूप से देतीं. उस की मालिश भी स्वयं करतीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभीकभी भैया मजाक में कह उठते, "तुम तो बेटे में इतनी व्यस्त हो गई हो कि अब हमारी ओर देखने की फुरसत ही नहीं है. भई दुनिया में अकेले तुम्हें ही तो बेटा नहीं हुआ."

"अच्छा, तो आप को जलन होने लगी." भाभी हंसती, "लेकिन अपने बेटे की देखभाल तो मैं इसी तरह करूंगी. हम ने चैन से सातआठ बच्चे करने हैं. एक नन्हा और एक... बस."

उस के बाद 'शीला भाभी से नहीं मिल पाई. उन की मौत का समाचार पा कर गई तो उन के मृत 'शरीर को नजर भर ही देखा था.

भाभी का निश्छल स्नेह, उन का मुसकराता चेहरा, अनुराग भरी बातें, हंसीमजाक याद आते तो 'शीला एक छटपटाहट सी महसूस करती. एक रीतापन सा कचोटने लगता.

सवेरे 'शीला उठी तो रीतेश ने उस के कुम्हलाए, उदास चेहरे को देख कर पूछा, "क्या बात है, 'शीला. आज बड़ी थकी हुई और परेशान नजर आ रही हो?"

"रात मैं ने एक सपना देखा है."

"सपने से परेशान हो गई? सपने तो सपने ही होते हैं." पति ने समझाया.

"रात सपने में भाभी आईं और मुझ से प्रार्थना करने लगीं कि नन्हे की देखभाल मैं करूं... अपना बेटा बना कर. उन का चेहरा बहुत उदास था." 'शीला के कहने पर रीतेश भी चौंक कर सोच में पड़ गया.

'शीला भी मानसिक द्वंद्व में फंस गई. 'क्या यह संभव है? क्या मांपिताजी, भैया अथवा स्वयं उस के पति इस प्रस्ताव को स्वीकार कर पाएंगे? किसी की औलाद को अपनी मान कर पालना बड़ा कठिन कार्य है. क्या वह स्वयं उतनी ही ईमानदारी से नन्हे का पालनपोषण कर पाएगी, जिस तरह से गुड़िया का कर रही है?'

'शाम को 'शीला, पति रीतेश और गुड़िया को साथ ले कर 'शहर के प्रसिद्ध उद्यान में चले गए. प्रकृति अपनी अनुपम छटा बिखेर रही थी. रंगबिरंगे फूलों, आकर्षक

दास्तां

सुनाता रहता हूं मैं
गमे दास्तां अपनी
हर किसी को, हर घड़ी,
हर महफिल में,
पर बंद हो जाते हैं लब,
नहीं सुनती जुबां मेरी,
जब कभी अनजाने से
'वो' सामने आ जाते हैं.

—धर्मपाल सभरवाल

पौधों तथा सघन वृक्षों को देख कर मन को कुछ 'शांति सी महसूस हुई. डूबते सूर्य के मद्धिम प्रकाश पर रात की कालिमा धीरेधीरे अपना आवरण डाल रही थी. बगीचे के बीचोबीच लगे पानी के फव्वारे रंगीन रोशनियों में बहुत आकर्षित लग रहे थे. कुछ देर घूमफिर कर जब वे लौटे तो 'शीला काफी हद तक स्वयं को तनावमुक्त महसूस कर रही थी.

अगले दिन भैया का फोन आया कि पिताजी को पक्षाघात का दौरा पड़ गया है तथा उन की हालत गंभीर है. 'शीला तो परेशान सी रोने ही लगी. रीतेश ने तसल्ली दी और दोनों उन्हें देखने बस से रवाना हो गए.

पिताजी को एक सप्ताह बाद हस्पताल से घर भेज दिया गया था. अब वह खतरे से बाहर थे, लेकिन उन के पास एक सदस्य का उपस्थित रहना आवश्यक था. अपनेआप वे कुछ कर नहीं पाते थे. दवा,

(शेष पृष्ठ 207 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए पिताजी, वह युवक अब भी मुझे घूर रहा है." वर्षा धीरे से बोली.

"कोई तुम्हें देख रहा है, इस बात को ले कर झगड़ा तो नहीं किया जा सकता. फ़िर तुम्हें कैसे पता चला कि वह तुम्हें ही देख रहा है. इस का मतलब तो साफ है कि तुम भी उस की तरफ देख रही थी." नरेंद्रनाथ झुंझलाए स्वर में बोले.

"कोई मुझे घूरेगा तो क्या मुझे पता नहीं चलेगा? पर आप तो दोषी मुझे ही समझेंगे. ठीक है, अब मैं किसी से कुछ कहूंगी ही नहीं." वर्षा नाराजगी से बोली.

नरेंद्रनाथ की पत्नी निर्मला ने बेटी का पक्ष लेते हुए कहा, "घर पर यह परेशान थी. इसलिए कुछ दिनों के लिए घूमनेफिरने निकले थे, परंतु यहां भी बेचारी के पीछे पड़े हो."

"हांहां, तुम्हारी बेटी का सब से बड़ा शत्रु तो मैं ही हूं." नरेंद्रनाथ क्रोधित स्वर में बोले.

"देखो, मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, छोटीछोटी बातों को इतना तूल मत दिया करो. घर से यह सोच कर निकले थे कि सारी कड़वाहट भुला कर कुछ दिन चैन की सांस ले सकेंगे, पर तुम दोनों तो अपने तर्कों को भूलना ही नहीं चाहते. जिस बात के लिए इतना क्रोधित हो रहे हो, वह हंसी में भी टाली जा सकती थी." निर्मला ने पति को घूरते हुए कहा.

कहानी ● शकुंतला शर्मा

संयोग

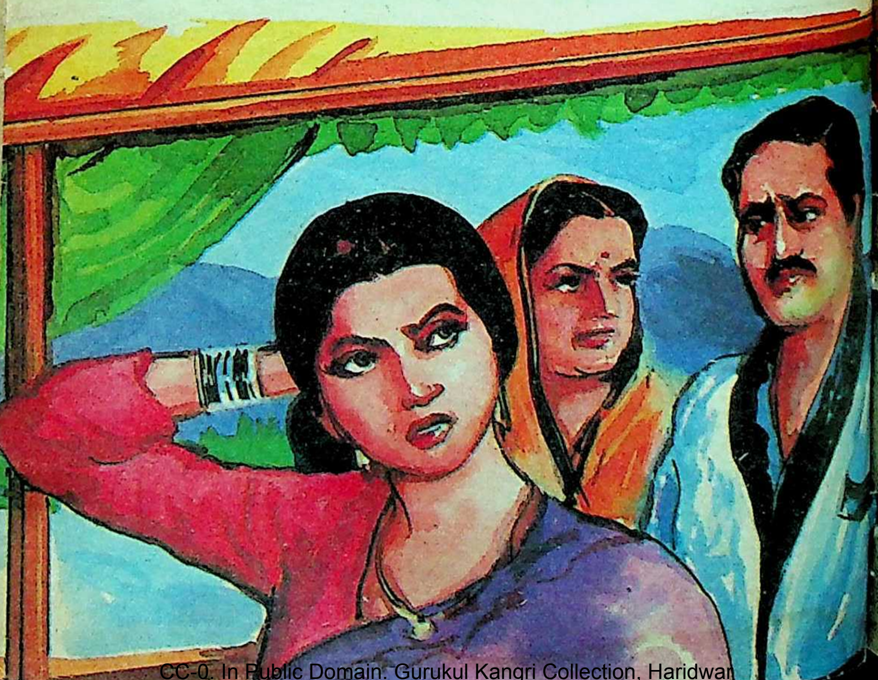

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षा अपने ... वहां उस की मुलाकात राहुल से हुई और उसे दस वर्ष पहले की घटना याद आई. दस वर्ष के बाद राहुल का यूं मिलना संयोग था या पूर्वनिश्चित योजना, यह वर्षा आखिर तक नहीं समझ पाई.

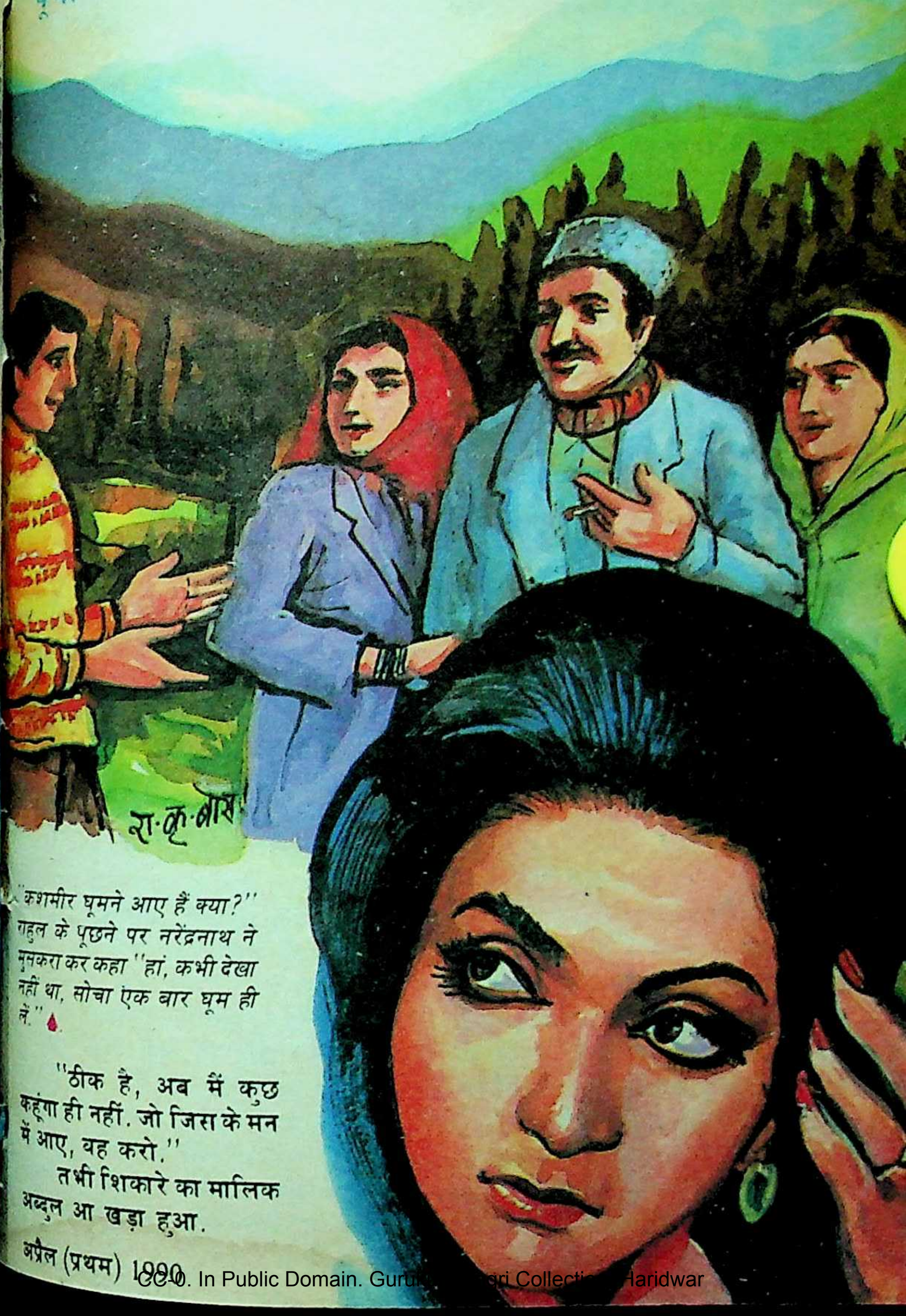

"कश्मीर घूमने आए हैं क्या?" राहुल के पूछने पर नरेंद्रनाथ ने मुसकरा कर कहा "हां, कभी देखा नहीं था, सोचा एक बार घूम ही लें."

"ठीक है, अब मैं कुछ कहूंगा ही नहीं. जो जिस के मन में आए, वह करो."

तभी शिकारे का मालिक अब्दुल आ खड़ा हुआ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज कहां जाना है, साहब? खाना सांथ ले जाएंगे या यहीं खाएंगे?" उस ने पूछा तो तीनों में से किसी को कोई उत्तर नहीं सूझा.

"हम अपने कार्यक्रम के संबंध में तुम्हें सूचित कर देंगे, अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया है."

निर्मला ने अब्दुल की ओर देखते हुए कहा. फिर पति और बेटी को संबोधित करते हुए बोली, "दोनों यों ही मुंह फुलाए बैठे रहोगे या कहीं घूमने भी चलोगे? श्रीनगर क्या केवल शिकारे में बैठने के लिए आए थे?"

"तुम दोनों घूम आओ. मैं कुछ आराम करना चाहता हूं." नरेंद्रनाथ ने निर्णय सुनाया.

"इतनी छोटीछोटी बातों पर मुंह फुलाना क्या अच्छा लगता है? चलो आज शालीमार और निशात बाग देख आते हैं. कल पहलगाम चलेंगे." निर्मला ने पति की ओर देखा.

"ठीक है, तुम दोनों तैयार हो जाओ. इतनी देर में मैं एक प्याला चाय पी लेता हूं." कहते हुए नरेंद्रनाथ आंखें मूंद कर कुरसी की पीठ से सिर टिका कर बैठ गए. घरपरिवार के बारे में सोचतेसोचते उन का मन अतीत की गलियों में भटकने लगा था.

उस की इकलौती संतान वर्षा रूप और गुण में किसी भी तरह कम नहीं थी. एक कालिज में व्याख्याता के पद पर वह नौकरी कर रही थी.

पर पतिपत्नी दोनों उस की बढ़ती आयु से चिंतित हो उठे. बेटी के अपेक्षित वर के लिए प्रारंभ में उन्होंने बड़े ऊंचे मापदंड रखे थे. पर एकएक करके वे कई रिश्तों को ठुकराते चले गए थे. उन की कसौटी पर कोई खरा उतरता ही नहीं था. कोई न कोई कमी रह ही जाती थी.

पर जब उन की आंखें खुलीं तो काफी देर हो चुकी थी. एक तो वर्षा की आयु 25 वर्ष पार कर चुकी थी. ऊपर से उन के बारे में ... हो चुका था कि वह ... नकचढ़े हैं कि रिश्ता जोड़ने से अधिक ... में विश्वास करते हैं. अतः वह जहां ... चलाते, वर पक्ष वाले कोई न कोई ... बना कर कन्नी काटने का प्रयत्न करते.

फिर तो उन के उच्च ... अपनेआप नीचे खिसकने लगे थे और ... उन्होंने भारी दहेज का वादा कर के जहां ... का संबंध पक्का किया था, वह नरेंद्र ... द्वारा ठुकराए गए संबंधों की तुलना में ... भी नहीं ठहरता था.

उन की पत्नी निर्मला ने खामोशी ... सब कुछ स्वीकार कर लिया था और ... पिता के सामने मुंह खोल सके, इतना ... ही कहां था, उस में. वैसे भी संबंध पक्का होने पर उस ने राहत की सांस ली थी. ... कम रोज के देखनेदिखाने से तो पीछा छूटा था.

पर हर तरफ से आंखें मूंद लेना ... रास न आया. वर पक्ष ने विवाह से ... दिन पहले इतनी बड़ी मांग उन के सामने ... दी, जिसे पूरा करना उन के वश में नहीं ... फिर भी उन्होंने निश्चय किया कि ... अपनी जीवन भर की कमाई यानी मकान ... बेच कर अपनी बेटी के हाथ पीले ... देंगे.

नरेंद्रनाथ के इस निर्णय को सुन कर वर्षा अपना संतुलन खो बैठी थी, "... दहेज देने की बात पर जब आप ने ... पक्का किया था तो मैं कुछ नहीं बोली ... क्योंकि उतना व्यय करने में आप समर्थ थे ... पर मैं अपने जीतेजी आप को घर ... तमाशा नहीं देखने दूंगी."

"घर मेरा है, मेरे नाम है. मेरा मन होगा तो रखूंगा. नहीं मन होगा तो बेच दूंगा ... तुम होती कौन हो मुझे रोकने वाली?" नरेंद्रनाथ बिफर उठे थे.

"ठीक ही तो कह रही है, वर्षा? ... लोगों का क्या भरोसा? विवाह के चार दिन पहले जो चार लाख नकद मांगने लगे, विवाह के बाद वह ऊलजलूल मांगें नहीं करेंगे, ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात का ही क्या आश्वासन है." पत्नी ने भी बेटी का ही साथ दिया था.

विवाह में केवल दो दिन शेष रह गए थे. घर मित्रों और संबंधियों से भरा था. विवाह टूटने की खबर फैलते ही कहकहे, फुसफुसाहटों में बदल गए थे. वे लोग सांत्वना देते तो नरेंद्रनाथ को लगता, जैसे उन्हें थप्पड़ मार रहे हों. धीरेधीरे घर खाली होने लगा था. पर खाली घर तो उन्हें और भी आतंकित करने लगा था. वह लक्ष्यहीन एक कक्ष से दूसरे कक्ष में घूमते रहते.

परंतु वर्षा के लिए उन्होंने स्वयं को संभाला था, जो प्रस्तर प्रतिमा सी केवल

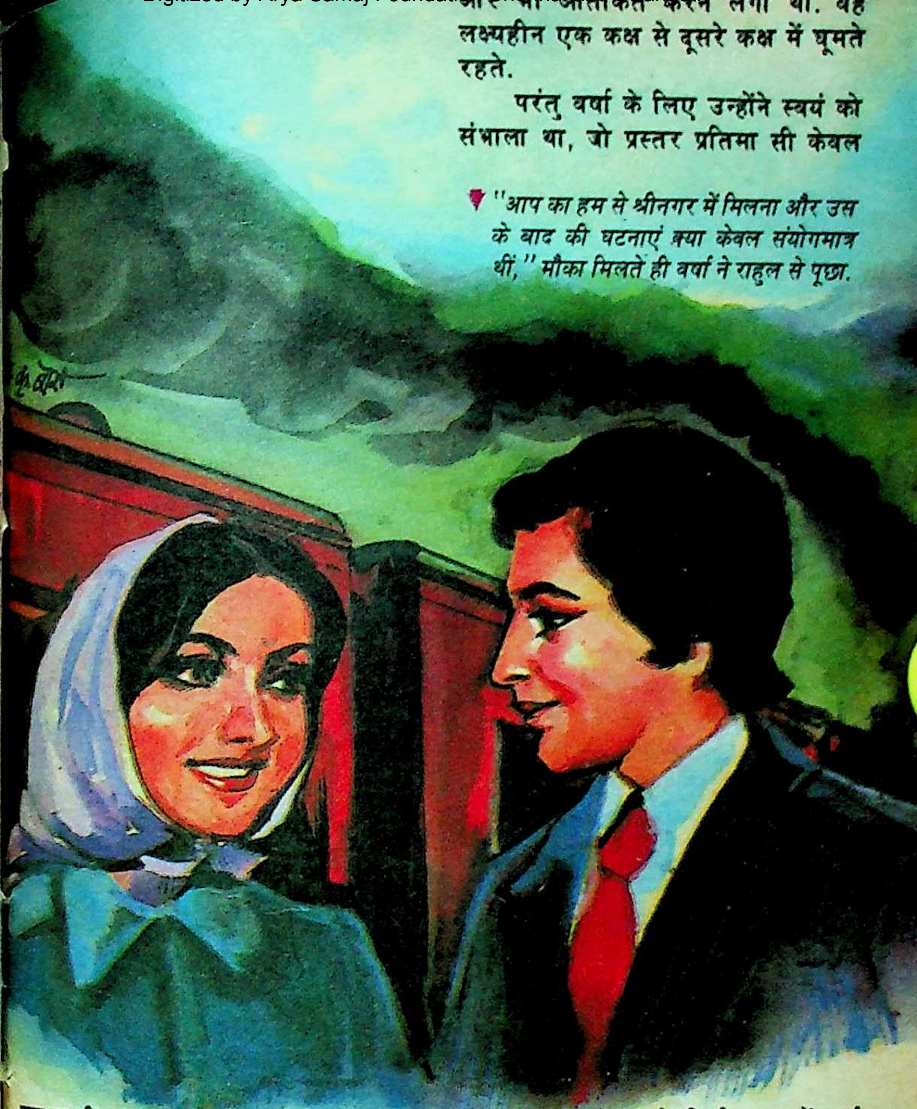

"आप का हम से श्रीनगर में मिलना और उस के बाद की घटनाएं क्या केवल संयोगमात्र थीं," मौका मिलते ही वर्षा ने राहुल से पूछा.

शून्य में ताकती रहती. निर्मला घर में छाई उस असह्य चुप्पी को तोड़ने का सतत प्रयास कर रही थीं और यह उन्हीं का सुझाव था, जिसे मान कर नरेंद्रनाथ पत्नी और बेटी के साथ एक माह का कार्यक्रम बना कर घूमने निकल पड़े थे.

दोचार दिनों में ही वर्षा के चेहरे की रंगत बदल गई थी. बीते दिनों की सारी कड़वाहट भुला कर घूमनेफिरने में दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसीखुशी से बीत रहे थे. पर पितापुत्री के बीच हुए वार्तालाप से वातावरण पुनः तनावपूर्ण हो उठा था.

उन की नजर वर्षा पर पड़ी तो मन में एक हूक सी उठी. छोटीछोटी बातों को सम्मान का प्रश्न बना कर वह यात्रा का आनंद समाप्त नहीं करना चाहते थे. वह उदासी को झटक कर बोले, "चलो, आज शालीमार और निशात घूम कर आते हैं."

तीनों तैयार हो कर रोज की तरह निकल पड़े. शालीमार बाग में पहुंच कर प्रफुल्लित मन से उस का सौंदर्य निहारते रहे. वर्षा और निर्मला नरेंद्रनाथ से कुछ ही दूरी पर खड़ीं फोटो खींचने की तैयारी कर रही थीं कि निर्मला पति के चेहरे को अचानक ही तनावग्रस्त होते देख चौंकी, वह भी उसी दिशा में देखने लगीं, जिधर नरेंद्रनाथ की निगहें जमी थीं. 15-20 कदम के फासले पर चारपांच युवकों के समूह में वह युवक भी खड़ा था जो सुबह शिकारे के पास वर्षा को घूर रहा था और अब भी उस की निगाहें वर्षा पर जमी थीं.

निर्मला तेजी से पति के पास पहुंची. "आओ, यहां से चलें, रात को ध्वनि व प्रकाश कार्यक्रम होगा, उस के टिकट खरीदते हैं."

"तुम चुप करो, मैं इस युवक से साफसाफ बात करना चाहता हूं. कुछ दिनों के लिए हम घूमने निकले हैं और यह हमारे पीछे पड़ा है."

निर्मला कोई नया बखेड़ा खड़ा नहीं करना चाहती थी. पर जब तक वह पति को खींच कर दूसरी ओर ले जाती, वह उस युवक को अपनी ओर आने का इशारा कर चुके थे.

पर जब वह युवक आते ही नरेंद्रनाथ के चरणों में झुक गया तो पतिपत्नी किंकर्तव्यविमूढ़ से खड़े रह गए.

"आप प्रोफेसर नरेंद्रनाथ हैं न? पहले आप को झेलम में शिकारे के पास देखा था. आप तो बिलकुल ही बदल गए हैं. पर वर्षा का चेहरा जानापहचाना सा लगा. ... अभी आप ने बुलाया तो मैं समझ गया कि आप प्रोफेसर नरेंद्रनाथ ही हैं." युवक ने मुसकराते हुए कहा.

"हां, मैं तो नरेंद्रनाथ ही हूं, पर तुम कौन हो? मैं ने पहचाना नहीं तुम्हें?"

"कैसे पहचानेंगे साहब, समय भी कितना बीत गया है. मैं राहुल हूं. आप के पड़ोस में रहता था. आप का ही विद्यार्थी था." युवक ने परिचय देते हुए कहा.

वर्षा ने तो युवक का स्वर सुनते ही उसे पहचान लिया था. वह दूर खड़ी सब कुछ देखसुन रही थी. नरेंद्रनाथ युवक का परिचय सुन कर चौंक उठे. कहां तो वह उसे फटकारने की तैयारी कर रहे थे और कहां अब मुख से शब्द ही नहीं निकल रहे थे.

"कशमीर घूमने आए हैं क्या?" बात राहुल ने ही आगे बढ़ाई.

"हां, कभी देखा नहीं था, सोचा एक बार घूम ही लें. तुम आजकल कहां हो? क्या कर रहे हो?" नरेंद्रनाथ ने मुसकराते हुए पूछा.

"हम लोग तो जम्मू में रहते हैं. पिताजी ने वहीं घर बनवा लिया है. सेवा निवृत्त हो कर उन्होंने एक छोटी सी ... बनाने की फैक्टरी खोल ली है. मैं एक ... कंपनी में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्य कर रहा हूं." राहुल ने अपने साथ आए अन्य युवकों का परिचय कराया. सब उस के चचेरेममेरे भाई थे.

नरेंद्रनाथ तो राहुल से एकदम घुलमिल गए. निर्मला भी कभीकभी वार्त्तालाप में भाग ले लेती. पर वर्षा बिलकुल अलगथलग पड़ गई थी.

वे शिकारे में लौटे तो रात घिर आई थी.

"राहुल को देखते ही मैं तो हैरान रह गया, कितना बदल गया है." नरेंद्रनाथ पत्नी से बोले.

"मैं भी तो पहचान नहीं पाई." निर्मला ने पति की ओर देखा.

"क्या कहूं निर्मला, आज अपने ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कितना पश्चाताप हो रहा है. वर्षा राहुल के मातापिता ने अपनी वर्षा को मांगा था, पर तब न जाने मुझ पर क्या झक सवार थी," नरेंद्रनाथ एकाएक दुखी हो उठे.

"अब गड़े मुर्दे उखाड़ कर अपने मन को दुखी करने से क्या लाभ?" निर्मला उदास स्वर में बोली.

पर वर्षा के जीवन में तो इस तरह राहुल के प्रकट होने से सब कुछ उलटपुलट ही हो गया था. अतीत कई रूपों में आंखों के सामने आ कर उसे चिढ़ा रहा था. घर में कोई भी नहीं जानता था कि उस समय वह भी राहुल की दीवानी थी. कितने सपने देखे थे दोनों ने और न जाने कितनी 'शामें एकसाथ बिताई थीं. परंतु पिता ने किसी भी मूल्य पर वर्षा का हाथ राहुल के हाथ में न देने का अटल निर्णय सुना दिया था.

जब राहुल ने वर्षा से पिता का विरोध कर चुपचाप विवाह कर लेने को कहा था तो वर्षा घबरा कर पीछे हट गई थी. अपने स्वार्थ के लिए मातापिता को इतना बड़ा दुख पहुंचाने की बात वह सोच भी नहीं सकती थी.

वर्षा सुबह उठी तो उस का सिर भारी था. राहुल के संबंध में सोचतेसोचते उसे बहुत देर से नींद आई थी. वह स्नानघर में जा रही थी कि अचानक उसे पास के कमरे से पिता का स्वर सुनाई दिया, "तुम कहो तो राहुल से बात चलाऊं."

"कैसी बातें करते हो, लगभग 10 वर्ष बीत गए हैं. क्या वह अभी तक कुंआरा ही बैठा होगा?" निर्मला ने पति को जवाब दिया.

तभी तमतमाती हुई वर्षा मातापिता के कमरे में आ पहुंची और ऊंचे स्वर में बोली, "मैं ने आप से कहा था न कि मेरे विवाह के संबंध में न आप बात करेंगे और न सोचेंगे. लेकिन पता नहीं, आप लोग मुझे शांति से क्यों नहीं रहने देते." कहते हुए उस के नेत्र डबडबा आए थे.

"ठीक ही तो कहती है," निर्मला गुस्से से बोलीं, "थोड़े दिनों के लिए स्वयं भी चैन

जिंदगी

हर ख्वाब लुटालुटा
हर तमन्ना बुझीबुझी,
जिंदगी मेरी लगती है
एक दरिया रुकीरुकी.

—सवि सिंह 'सविता'

से रहो और उसे भी रहने दो. राहुल या तो विवाह कर चुका होगा और अगर नहीं भी किया होगा तो आप के प्रस्ताव को वह कभी नहीं मानेगा. तब आप ने उसे ठुकराया था, अब वह आप को ठुकरा देगा."

"ठीक है वर्षा, तैयार हो जाओ, आज पहलगाम चलेंगे. छोड़ो ये सब बातें." नरेंद्रनाथ उठ खड़े हुए.

"मां, मैं आज बाल धो लेती हूं. अच्छी धूप निकली है और ठंड भी कम है." वर्षा ने मां की ओर देखते हुए कहा.

"धो ले, गरम पानी ले लेना." निर्मला मुसकराते हुए बेटी से बोली.

तैयार हो कर मातापिता की प्रतीक्षा में धूप में खड़ी वर्षा परिचित स्वर सुन कर चौंक उठी, "कहिए, कैसे कट रही है, जिंदगी." राहुल मंदमंद मुसकराते हुए उस की ओर देख रहा था.

"मैं आप का आशय समझ गई हूं. अभी अकेली ही हूं और मातापिता के साथ घूमने आई हूं. आप को कोई ऐतराज?" वर्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने मुसकराते हुए उत्तर दिया.

"मुझे भला क्यों ऐतराज होने लगा? आप अपनी मरजी की मालिक स्वयं हैं. वैसे आप अभी तक अकेली हैं. यह जान कर मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ. आप के पिताजी आप के लिए जिस सर्वगुण संपन्न वर की खोज कर रहे हैं, उसे ढूंढ़ने के लिए 10 वर्ष तो क्या पूरा जीवन भी बीत जाए तो मुझे हैरानी नहीं होगी." राहुल ने वर्षा की आंखों में झांकते हुए कहा.

"मेरे पिताजी के संबंध में इस तरह व्यंग्यपूर्ण लहजे में बात करने का अधिकार किस ने दिया है, आप को?"

"ओह... तो आप की पितृभक्ति अभी तक उसी तरह कायम है. तब तो स्थिति और भी चिंताजनक है."

"मुझे आप की सहानुभूति की आवश्यकता नहीं है." वर्षा ने लापरवाही से उत्तर दिया.

"मेरे पास आप जैसे लोगों के लिए सहानुभूति है भी नहीं..." राहुल शायद और कुछ कहता, पर तभी नरेंद्रनाथ आते दिखे.

"आज कहां का कार्यक्रम है राहुल?"

"हम तो पहलगाम जा रहे हैं. आप कहां जा रहे हैं?" राहुल ने उत्तर दिया.

"वाह! क्या संयोग है. हम भी पहलगाम ही जा रहे हैं."

"चलिए, अच्छा है, साथ अच्छा हो तो घूमनेफिरने का आनंद दोगुना हो जाता है." राहुल ने एक नजर वर्षा की ओर देखा.

वर्षा की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह कैसा संयोग है कि जहां जाने का वे कार्यक्रम बनाते हैं, वहीं राहुल और उस के साथी भी चल पड़ते हैं.

शाम को पहलगाम से लौटते ही वर्षा ने ऐलान कर दिया कि वह मेरठ लौटना चाहती है.

"लेकिन बेटी, हमारा तो श्रीनगर में ही 15 दिन रहने का कार्यक्रम था और अभी तो एक सप्ताह ही हुआ है." नरेंद्रनाथ बेटी से बोले.

"स्वयं से भाग कर कहां जा... पिताजी, हम सब कुछ भूल जाने के लिए ... से निकले थे, पर कुछ भी नहीं भूल पाए. ... आ कर एक बात अवश्य समझ में आ गई ... इन ऊंचेऊंचे पहाड़ों, झरनों और झीलों ... बीच हमारा अस्तित्व कितना तुच्छ है और उस से भी तुच्छ हैं हमारी आशाएं और आकांक्षाएं. पर हम उन्हें ही पहाड़ सा ... समझ लेते हैं. इन दिनों में मैं ने बहुत कुछ सोचा है. आप ही बताइए क्या केवल विवाह ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है? मेरे सामने ... अभी बहुत कुछ करने को शेष है." वर्षा ने गंभीर स्वर में कहा.

दूसरे दिन सुबहसुबह उन्होंने सामान बांध लिया. जम्मू जाने के लिए जब वे बस अड्डे पहुंचे तो राहुल भी वहां उपस्थित था. वह आश्चर्य से बोला, "अरे, आप लोग ... आज ही जा रहे हैं? आप तो कुछ दिन और रुकने वाले थे?"

"यों ही वर्षा का मन उचट गया ... परंतु तुम ने तो बताया ही नहीं था कि आज ही जा रहे हो." नरेंद्रनाथ ने राहुल से पूछा.

"मेरा तो आज ही जाने का कार्यक्रम था, लेकिन मेरे साथी अभी और कुछ दिन रुकेंगे." राहुल ने वर्षा की ओर देखा.

वर्षा की समझ में नहीं आ रहा था कि उन के हर कार्यक्रम का पता राहुल को पहले से कैसे लग जाता था.

जम्मू बस अड्डे पर उतरे तो राहुल पीछे ही पड़ गया, "यहां तक आ कर मेरे मातापिता से मिले बिना आप चले जाएंगे ... उन्हें कितना बुरा लगेगा."

"पर हमें जाना है. दो घंटे बाद ही ... दिल्ली के लिए गाड़ी है, फिर कल तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी," वर्षा ने उपेक्षा से कहा.

"तो कल चले जाना, चाचाजी," राहुल ने वर्षा की उपेक्षा को नजरअंदाज करते हुए कहा, "आप कौन सा रोजरोज जम्मू आते हैं. आखिर इतने दिनों तक आप और हम पड़ोसी रहे हैं. मां और पिताजी आप से मिल...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर कितने प्रसन्न होते."

नरेंद्रनाथ और न टाल सके. मजबूरी में वर्षा को भी मातापिता के साथ जाना पड़ा.

राहुल के पिता पुरानी कटुता भुला कर नरेंद्रनाथ से गले मिले.

"अब आए हो तो एक दिन रुक कर ही जाओ." राहुल की मां ने निर्मला से कहा.

पुराने पड़ोसी मिले तो बातों का पिटारा ही खोल बैठे.ऐसे में जब दुनिया भर की बातें हो रही थीं, तब वर्षा के विवाह का प्रसंग न आता, भला यह कैसे संभव था.

"उन दिनों वर्षा को आप लोग स्वयं मांग रहे थे. उस संबंध को ठुकरा कर हम कितना पछता रहे हैं, आप को क्या बताएं." हाल ही में टूटे वर्षा के विवाह की बात करते हुए नरेंद्रनाथ बोले.

"हम तो अब भी वर्षा के स्वागत को तैयार हैं." राहुल की मां बोली.

"क्या कह रही हैं बहनजी, 10 वर्ष हो गए उस बात को. क्या अभी तक राहुल ने विवाह नहीं किया?" निर्मला देवी आश्चर्य से बोलीं.

"नहीं, उसे तो एक ही धुन थी कि विवाह करेगा तो वर्षा से, नहीं तो आजीवन कुंआरा रहेगा."

"फिर वह? जो अभी आई?"

"वह जो चायनाश्ता करवा रही थी?"

"हां."

"वह नीरजा है, छोटे बेटे ऋत्विक की पत्नी. जब राहुल किसी भी तरह विवाह के लिए सहमत नहीं हुआ तो हम ने ऋत्विक का विवाह कर दिया." राहुल की मां बोलीं.

फिर तो आननफानन में सब बातें तय हुई और विवाह की तिथि भी निश्चित हो गई.

वर्षा और उस के मातापिता को पूरा परिवार स्टेशन पर छोड़ने आया था.

"एक बात पूछूं?" मौका मिलते ही वर्षा ने राहुल से कहा.

"हां पूछो."

"आप का इस से श्रीनगर में मिलना और उस के बाद की घटनाएं क्या केवल संयोग मात्र थीं?"

"इस रहस्य को अभी रहस्य ही रहने दो, वर्षा." राहुल ने जोर का ठहाका लगाया.

तभी रेलगाड़ी ने सीटी दी. एक सप्ताह पूर्व इसी रेलगाड़ी से वर्षा उतरी थी. परंतु इस बीच कितना कुछ बदल गया था. राहुल से विदा ले कर लपक कर रेलगाड़ी में चढ़ गई. प्लेटफार्म पीछे छूटता गया, पर वहां खड़ा राहुल उस के मनमस्तिष्क में बसा उस के साथ ही जा रहा था. ●

लेखकों से निवेदन

प्रकाशनार्थ रचनाओं पर निर्णय लेने में चारछः सप्ताह लग जाते हैं. इस दौरान रचना के बारे में पत्रव्यवहार करने से कोई लाभ नहीं होता क्योंकि हम कुछ भी बताने में असमर्थ होते हैं. हम केवल स्वीकृत रचनाओं का हिसाब रखते हैं, अस्वीकृत का नहीं. स्वीकृत रचनाओं के बारे में सूचना चार से छः सप्ताह में दे दी जाती है.

टिकट लगे लिफाफे के साथ आई अस्वीकृत रचनाएं निर्णय के बाद तुरंत लौटा दी जाती हैं. अन्य अस्वीकृत रचनाएं नष्ट कर दी जाती हैं.

कविताओं और स्तंभों के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा न भेजें. छः सप्ताह तक यदि कोई सूचना प्राप्त नहीं होती तो कविताओं और स्तंभों को अस्वीकृत समझ लें. अस्वीकृत की गई कविताएं और स्तंभ लौटाए नहीं जाएंगे. अतः उन की एकएक प्रति अपने पास अवश्य रखें. इस संबंध में कोई पत्र-व्यवहार न करें.

यदि आप किसी ऐसे विषय पर लिखना चाहते हैं जिस में अधिक समय अथवा परिश्रम के लगने की संभावना है तो उस बारे में पूर्व सलाह लेना काफी लाभदायक होता है. —संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल

कहानी ● कुसुम गुप्ता

माया हतप्रभ रह गई. उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि वह यह क्या पढ़ रही है. उस का सीधा हाथ कांप रहा था. उस में पकड़ा हुआ, अधपढ़ा पत्र कांपती उंगलियों से फिसल कर नीचे जा गिरा.

उस ने नजरें ऊपर उठाईं. शून्य में ताका, अनायास उस के मुख से चंद शब्द निकल गए, "हाय यह क्या हुआ?"

श्याम पास ही बैठे कोई पत्रिका पढ़ रहे थे. उन्होंने माया की उद्विग्नता को देखा और बोले, "क्या हुआ?"

माया ने कोई उत्तर न दिया. चुपचाप फर्श से पत्र उठाया और पति की ओर बढ़ा दिया.

"किस का है?" श्याम ने पत्र थामते हुए पूछा.

"स्वयं देख लीजिए," कह कर माया कुछ क्षण रुकी. फिर भर्राए स्वर में बोली, "समझ में नहीं आता, उस ने ऐसा क्यों किया? क्या उसे हम पर विश्वास नहीं था? मुझ से कहां गलती हुई? अवश्य हम से कहीं भयंकर चूक हुई है, वरना..."

माया की दृष्टि श्याम के मुख पर गड़ी हुई थी. उन्होंने पत्र पढ़ा, फिर चश्मा उतार कर मेज पर रख दिया और शायद स्वयं से ही बोले, "उसे भय था कि हम उस के मार्ग में बाधा बन जाएंगे. आखिर उस के मन में हमारे प्रति यह अविश्वास क्यों जनमा?"

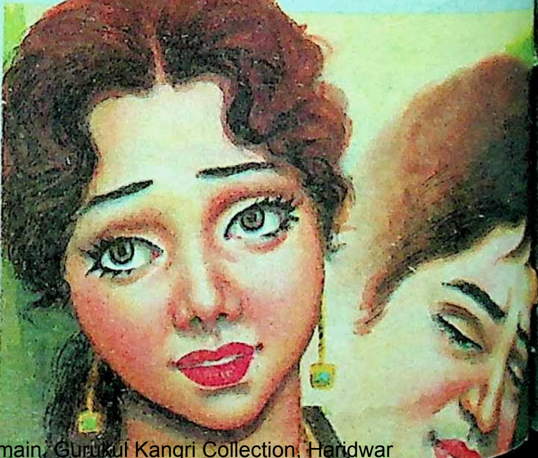

श्याम बेहद गंभीर और विचार... हो गए. एक दीर्घ निःश्वास छोड़ वह ... दृष्टि से माया को देखने लगे.

"मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ ... है. यह ठीक है कि मैं अपने तरीके से ... का संचालन करती रही हूं, पर क्या मैं ने ... को ठीक ढंग से नहीं चलाया? क्या मैं ... भी तानाशाह बनी? मैं ने किसी पर ... राय अथवा मरजी कभी भी थोपी? ... भारती ने यह कदम क्यों उठाया?"

श्याम सिर्फ श्रोता बने बैठे रहे. ... कुछ कहना चाहते थे, पर उन्होंने स्वयं ... संयत कर लिया. इस समय माया ... तथा व्यथित थी. अतः वह मुसकराए, ... निश्चित स्वर में बोले, "माया, इति... स्वयं को दोहरा रहा है."

पलांश में माया वर्तमान से अतीत ... यात्रा पर निकल गई. श्याम ने ठीक ही ... था. इतिहास एक कड़वी सचाई होता है ... अकसर स्वयं को दोहराता है.

"आज से 25 वर्ष पूर्व जो कुछ हु...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

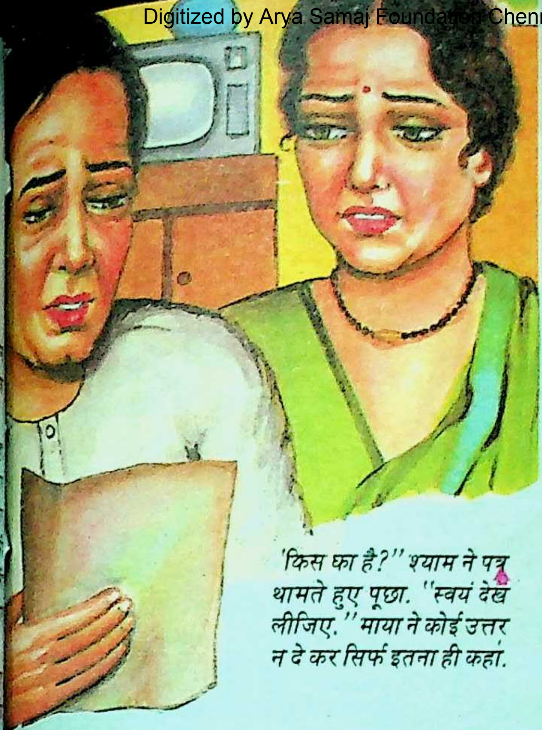

'किस का है?'' श्याम ने पत्र थामते हुए पूछा. ''स्वयं देख लीजिए.'' माया ने कोई उत्तर न दे कर सिर्फ इतना ही कहा.

माया के हाथ में भारती का पत्र था और आंखों में अतीत की परछाइयां. उस का जीवन भी उन्हीं राहों से गुजरा था जिन से आज भारती गुजर रही थी. फर्क था तो केवल इतना कि जो कुछ माया के मातापिता ने जानबूझ कर किया था वही वह अनजाने में ही कर बैठी थी.

वह याद है?'' श्याम का स्वर वह उंगली थी, जिसे पकड़ कर वह अतीत की यात्रा पर निकल गई थी.

तब माया 18 वर्ष की थी. उस ने प्रथम श्रेणी में इंटर पास कर लिया था. वह आगे पढ़ कर डाक्टर या इंजीनियर बनना चाहती थी.

परंतु उस के पुरातनपंथी, अनुदार विचारधारा वाले परिवार में उस की इस महत्त्वाकांक्षा की प्राप्ति में सहयोग देने वाला कोई भी नहीं था.

जब उस ने मां से आगे पढ़ने के विषय में कहा तो उन की आंखें विस्मय से फैल गईं.

''तू आगे पढ़ेगी? तेरी बुद्धि खराब हो गई है? अरी, जब मैं 18 साल की थी तो दो बच्चों की मां बन चुकी थी.''

''मां, क्या यह जरूरी है कि जो कुछ तुम ने किया वह सब तुम्हारे बच्चे भी करें?'' उस ने घोर वितृष्णा से कहा.

''ज्यादा जबान मत चला. तेरे पिता तो पिछले साल ही तेरी शादी करने वाले थे. वह तो मैं ने मना कर दिया कि उसे इंटर तो कर लेने दो.''

''पर मां...''

''तेरे पीछे दो और भी बैठी हैं. उन के भी तो हाथ पीले करने हैं.'' मां ने घूरते हुए कहा.

वह समझ गई कि ये वे तिल नहीं, जिन से तेल निकल सके.

एक दिन उस ने पिता को बहुत खुश देख कर अपनी आकांक्षा उजागर कर दी.

सुनते ही पिता के चेहरे की खुशी की धूप अचानक ढल गई. वह बोले, ''अरी पगली, पढ़लिख कर कौन सा तीर मार लेगी. शादी कर के घरगृहस्थी जमा. यही लड़की का कर्तव्य है.''

''पिताजी, क्या लड़की का जन्म इसी लिए होता है?''

''बिलकुल, पढ़लिख लेगी तो शादी होनी मुशकिल हो जाएगी. लड़का कहां से मिलेगा?''

''पिताजी, मैं पढ़ूंगी. चाहे कुछ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो." वह जिद पर उतर आई थी.

"देख माया, मेरे पास न तो तुझे आगे पढ़ाने की आर्थिक सामर्थ्य है और न ही इस खानदान की लड़कियां आठवीं कक्षा से आगे पढ़ी हैं. तू ने इंटर पास कर लिया, यही बहुत है." पिता के निर्णायक उत्तर के समक्ष वह मौन हो गई.

माया के मन में 'श्याम के रूप में आभा की एक क्षीण किरण चमक रही थी.

उस शाम वह खूब रोई. रात को न खाना खाया, न ही सो पाई. भविष्य की दुश्चिंताओं ने उसे मथ रखा था. वह बेहद उदास थी. क्या लड़कियों को अपनी रुचि, इच्छाओं के अनुरूप जीने का कोई अधिकार नहीं?

"है क्यों नहीं है." एक बार 'श्याम ने कहा था.

'श्याम पड़ोस में रहता था. वह उस से तीन वर्ष बड़ा था. बी.काम कर के वह चार्टर्ड अकाउंटेंसी की तैयारी कर रहा था. पहला सत्र उत्तीर्ण करते ही उसे एक संस्थान में नौकरी मिल गई थी.

'श्याम के घर वालों के साथ उस के अच्छे संबंध थे. निःसंकोच माया उन के घर चली जाती थी. 'श्याम भी कभीकभार उन के घर चला जाता था.

अगले दिन माया 'श्याम के घर गई. वह घर में अकेला ही था. उसे देखते ही बोला, "क्या बात है, माया? तुम बड़ी परेशान नजर आ रही हो."

"आप को कैसे पता चला?" उस ने चौंक कर पूछा.

"ये आंखें बड़ी चुगलखोर होती हैं. लगता है, तुम रात भर रोती रही हो." 'श्याम ने अनुमान लगाया.

माया भरी बदली थी. 'श्याम की सहानुभूति का तनिक सा स्पर्श पाते ही बरसने लगी.

'श्याम ने उस के तपते मन पर अपनी सहानुभूति की 'शीतल वर्षा सी की. "यह तो तुम्हारी प्रतिभा के साथ अत्याचार है. तुम्हारे अभिभावक यह क्यों नहीं समझते कि एक सुशिक्षित, सुसंस्कृत प्रतिभावान मां के बच्चे भी इन्हीं गुणों से विभूषित होते हैं."

"यह उन की समझ से परे की बात है. वे शिक्षा को न कोई महत्त्व देते हैं और न ही आगे देंगे."

"फिर क्या किया जाए?" 'श्याम ने पूछा, "चाचाजी को समझाने की कोशिश करूं?"

"व्यर्थ है. पत्थर की चौखट पर सिर पटकने से चोट खुद को ही लगेगी."

'श्याम को समस्या का समाधान असंभव सा लगा. पर उस दिन एक नई 'शुरुआत हुई थी. समझ या आत्मीयता का एक छोटा सा बीज बोया गया उन दोनों के बीच, जो बाद में एक खुशबूदार फूल के पौधे के रूप में प्रस्फुटित हो गया.

वे दोनों घर के बाहर चोरीछिपे मिलने लगे. 'शीघ्र ही उन्हें महसूस हुआ कि वे एकदूसरे से प्रेम करने लगे हैं. परंतु उन्हें पता था कि इस का अंत भी दुखदायी होगा. वे दोनों कदापि विवाह बंधन में नहीं बंध सकते थे, क्योंकि माया ब्राह्मण परिवार की कन्या थी और 'श्याम कायस्थ थे. माया को पता था कि उस के मातापिता इस अंतर्जातीय विवाह के लिए कभी भी राजी नहीं होंगे.

कुछ दिन पश्चात माया को पता चला कि पिता ने उस के लिए मेरठ जनपद के एक गांव में लड़का देखा है. वह केवल छठी कक्षा तक पढ़ा था और वहीं गांव में कोई छोटामोटा व्यापार करता है.

स्वयं से कम पढ़ालिखा लड़का और दिल्ली जैसे महानगर के जीवन की आदी लड़की का गांव में जा कर रहना, इन तथ्यों ने माया को छटपटा दिया. वह 'श्याम से मिली. अश्रुप्रवाह और हिचकियों के बीच उस ने अपनी संपूर्ण व्यथा कथा उसे सुना दी.

"यह नहीं हो सकता. तुम्हारे जैसी प्रतिभावान लड़की का जीवन इस तरह नष्ट नहीं हो सकता. मैं करूंगा तुम से शादी." 'श्याम ने अंतिम फैसला कर लिया तो माया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

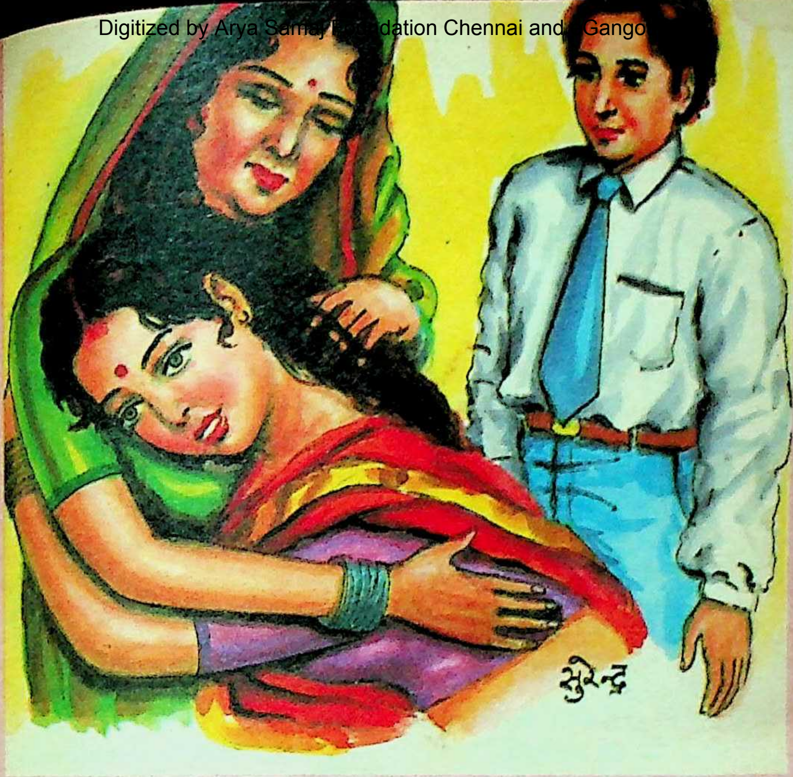

श्याम के कंधे से लग कर सिसकने लगी.

'श्याम ने साहस जुटाया. वह पत्र लिख कर माया के पिता को दे आया.

पत्र पढ़ते ही माया के पिता ज्वालामुखी की तरह फट पड़े, "इसे कहते हैं, आस्तीन का सांप. पड़ोसी है, घर आनाजाना है तो इस का यह मतलब तो नहीं कि पड़ोसियों की जवान लड़कियों को फुसलाया जाए."

"क्या हुआ?" माया की मां भी आ गई युद्धक्षेत्र में.

"ये कायस्थ हम ब्राह्मणों की लड़की से शादी करना चाहते हैं. इन की इतनी हिम्मत. हमारे लिए क्या ब्राह्मण लड़कों का अकाल पड़ गया है."

"अजी, मुझे तो पहले ही इस छोकरे का घर में आनाजाना नहीं सुहाता था. मैं जानती थी, वह माया के चक्कर में ही इस घर के आसपास मंडराया करता था."

"मां, क्षमा करना अपनी बेटी की धृष्टता के लिए." कहती हुई भारती माया के वक्ष से चिपक गई.

पहले तो घर में कलह हुआ. उस के बाद दोनों परिवारों में खूब झगड़ा हुआ. दोनों घरों के संबंध खराब हो गए. आनाजाना, बोलचाल तक बंद हो गई. माया पर विशेष अनुशासन के बंधन कस दिए गए. उस का घर से निकलना बंद कर दिया गया.

पर एक दिन पंछी उड़ गया. जहां चाह, वहां राह. दोनों घरों के बीच महरी के रूप में एक संपर्क सूत्र बचा था. वह दोनों घरों के बरतन मांजती थी. वही पैसों के लोभ में पत्र संवाहक बन गई.

पत्रों के आदानप्रदान ने ही माया को मुक्ति दिलवाई.

'श्याम ने माया को सूचित किया था कि उस की कंपनी की एक शाखा बंगलोर में है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि वह वहां आ कर स्वेच्छा से उस के साथ 'शादी कर के जीवनयापन करना चाहती है तो वह सारी व्यवस्था कर लेगा.

घर के कारावास में माया का दम घुट रहा था. उस ने 'श्याम का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया. 25 वर्ष पूर्व वह अपना घर छोड़ कर 'श्याम के साथ बंगलोर आ गई. दोनों ने कचहरी में 'शादी कर ली थी.

अगले दो वर्षों में 'श्याम चार्टर्ड अकाउंटेंट बन गया और उस ने स्वतंत्र व्यवसाय 'शुरू कर दिया.

माया ने भी बी.ए. कर लिया और घर जमा कर बैठ गई. इधर 'श्याम का व्यवसाय चमक रहा था, उधर माया भारती और गौतम को पालपोस कर बड़ा कर रही थी.

माया जब एक बार घर छोड़ कर आई तो फिर उस ने मुड़ कर उस घर की तरफ नहीं देखा और न ही घर वालों ने उस की कोई सुध ली. अकसर उस के मन में मातापिता, दोनों छोटी बहनों को देखने की हूक सी उठती, पर वह अवश थी.

माया को अपने निर्णय पर कोई खेद नहीं था. 'श्याम के साथ उस का विवाह हर दृष्टि से सफल रहा था.

'श्याम आर्थिक सफलताओं की सीढ़ियां चढ़ता जा रहा था. उस ने बनाबनाया बंगला खरीद लिया था. कार पहले से ही थी. घर में समस्त आधुनिक सुखसुविधाएं उपलब्ध थीं.

'श्याम में एक और गुण भी था. वह सहृदय, सरल, संतोषी तथा समझदार पति था और माया के गृह संचालन में कभी भी हस्तक्षेप नहीं करता था.

इसी कारण माया ने यह सिद्ध कर दिया था कि वह एक परिपक्व तथा सफल मां और गृहिणी है.

माया के मन का अभाव कभी खेद भावना बन उजागर हो जाता. उस के मांबाप ने उसे वह नहीं बनने दिया था जो वह बनना चाहती थी. वह डाक्टर या इंजीनियर बन घर के बाहर काम करना चाहती थी, किंतु मांबाप के दुराग्रह ने उसे मात्र गृहिणी बना कर रख दिया था.

माया चाहती थी कि उस के बच्चे अपनी इच्छा और प्रतिभा के अनुरूप जीवन में जो कुछ चाहें, वही बनें. इसी कारण कभीकभार वह उन से कहती, "बच्चो, तुम प्रतिभाशाली हो. तुम्हें जो सुविधा या अवसर चाहिए, वह मैं दूंगी. पर तुम दोनों जीवन में कुछ बन कर दिखाना."

गौतम ने मां की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति की. वह डाक्टर बन गया. माया ने तो हमेशा यही सोचा कि जो गलती उस के मांबाप ने की, वह उसे कभी नहीं दोहराएगी. इसी कारण उस ने अपने दोनों बच्चों को एक स्वतंत्र परिवेश में पाला. उन की समस्याएं सुनीं और पीढ़ियों के बीच का अंतर कभी नहीं उभरने दिया.

वह तो यही महसूस करती रही कि वह एक आदर्श मां है. उस के बच्चे बुद्धिमान तथा अनुशासनबद्ध थे. वह सदैव उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करती रहती थी और उन की हर समस्या को सहानुभूतिपूर्वक सुलझाने के प्रयास में जुट जाती.

फिर भारती ने यह कदम क्यों उठाया? वह सुरेश के साथ क्यों भागी? यदि वह उस से विवाह करना चाहती थी तो उसे यह सब बताने में क्या परेशानी थी? वह सुरेश के साथ भाग कर बंबई गई और वहां 'शादी कर ली.

माया की आंखों में नमी उभर आई. यह उस की एक बड़ी पराजय थी.

"माया." 'श्याम की आवाज ने उसे चौंकाया. उस ने डूबी निगाहों से उन्हें देखा और बोली, "श्याम, मेरी समझ में नहीं आता कि मुझ से कहां चूक हुई? वह सुरेश के साथ क्यों भागी?"

"माया, अवश्यंभावी से समझौता करना ही विवेक है." 'श्याम ने 'शांत स्वर में कहा.

"वह तो ठीक है, पर मैं यह जानना चाहती हूं कि हमारी और उस की परिस्थितियों में जमीनआसमान का अंतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था. हमारे अभिभावकों ने हमारी भावनाओं को कभी नहीं समझा और हमें वह सब करने पर मजबूर कर दिया जो हम करना नहीं चाहते थे. पर मैं ने तो हमेशा समझबूझ से काम लिया. उन की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति में हमेशा उन्हें सहयोग दिया."

"ऐसा तुम सोचती हो."

माया श्याम की बात सुन कर स्तंभित रह गई.

"माया, तुम अपने बच्चों के माध्यम से अपनी अतृप्त, अधूरी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा कर रही थी. संयोग से बेटे ने डाक्टर बन कर तुम्हें कृतज्ञ कर दिया, पर भारती...?"

"मैं ने उस पर अपना निर्णय कभी नहीं लादा..."

"ध्यान से सोचो."

माया सोचने लगी. उसे याद आए वे दिन जब भारती ने इंटर पास किया था और वह गृह विज्ञान में बी.एससी. करना चाहती थी. पर उस ने भारती को बी.काम. करने के लिए मजबूर कर दिया था. वह चाहती थी कि भारती चार्टर्ड अकाउंटेंट बन कर पिता की सहायता करे.

भारती ने हलका सा विरोध किया था. किंतु बाद में उस ने बी.काम. में प्रवेश ले लिया था और अपने इस पत्र में उस ने लिखा है कि वह चार्टर्ड अकाउंटेंट नहीं बनेगी वह सुरेश के साथ विवाह कर के 'शांतिपूर्ण गृहस्थ जीवन बिताएगी.

"माया, अपनी भारती कोमल स्वभाव की गृहस्थी बसाने वाली लड़की थी. वह नौकरी या व्यवसाय करने वाली लड़कियों में से नहीं थी. एक बार उस ने मुझ से कहा भी था कि उस का मन इस पढ़ाई में नहीं लग रहा है और वह 'शादी करना पसंद करेगी." श्याम ने कहा.

"पर उस मूर्ख लड़की ने मुझ से यह क्यों नहीं कहा?" माया बिगड़ कर बोली.

"कैसे कहती? तुम ने उच्चशिक्षा के

सजा

छुपा के इश्क दुनिया से
तुम एक गुनाह कर रहे हो,
इस तरहा तो प्यार नहीं हमें,
तुम एक सजा दे रहे हो.

—बीना 'वृत्तिका'

विषय में उस पर अपना निर्णय लादा था. जानती हो, वह गृह विज्ञान में बी.एससी. क्यों करना चाहती थी? उसे कैरियर से ज्यादा घर में रुचि थी और वह एक आदर्श, सफल गृहिणी बनना चाहती थी.

माया के मन में पश्चात्ताप हुआ और वह कुछ सोचने लगी.

"माया, तुम्हारे मातापिता ने तुम्हारे साथ जो ज्यादती की, वह जानबूझ कर की थी. तुम ने भी अपनी बेटी के साथ वही सब किया, किंतु अनजाने में. तुम्हारे मांबाप ने तुम्हारे आगे पढ़ने की महत्त्वाकांक्षा का विरोध किया. तुम ने अपनी बेटी की आगे न पढ़ने की आकांक्षा की हत्या की..."

"मेरी समझ में नहीं आता, भारती जैसी कुशल, दक्ष, प्रतिभाशाली लड़की विवाह के लिए अपना स्वर्णिम भविष्य क्यों और कैसे दांव पर लगा सकती है?"

"माया, हर व्यक्ति अपनी तरह जीना पसंद करता है. उस की स्वयं की इच्छाएं, आकांक्षाएं, पसंद और नापसंद होती है. तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने इस तथ्य को नकारा और [illegible] बेटी के जीवन को अपनी तरह संचालित करने का प्रयास किया. नतीजा तुम्हारे सामने है." श्याम ने गंभीर स्वर में कहा.

"बेवकूफ लड़की. उस ने एक बार भी इशारा तो किया होता." माया ने कहा. खेदभावना उस के मन को मथ रही थी.

"उस ने सिर्फ इशारा ही नहीं किया, बल्कि बड़े स्पष्ट शब्दों में सांकेतिक रूप से कहा भी था." श्याम बोले.

"कब?"

"पिछले दशहरे की छुट्टियों में. उस ने कहा था कि उसे पढ़ाई के बाद अपना घर जमाना है. यों लड़की के लिए उपयुक्त वर और लड़के के लिए अच्छी लड़की खोज पाना बहुत मुशकिल काम है. आजकल के पढ़ेलिखे मातापिता भी अपने बेटेबेटी की पसंद को परखने की कोशिश नहीं करते."

"हां, मुझे याद है. पर मैं ने सोचा, वह यों ही साधारण बातें कर रही है."

"उस ने सुरेश को घर लाने के लिए इशारा किया था और तुम ने उसे डांट दिया था, 'भारती, रोमांस के लिए पूरी उम्र पड़ी है. फिलहाल तुम अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाओ.'

"तो मैं ने इस में कौन सा अपराध कर दिया था?"

"माया तुम ने अपनी बेटी के प्रेम के फूल को कली की अवस्था में ही मसल दिया. तुम उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाई. अपनी अतृप्त कामना को तुम ने अपनी बेटी पर थोप दिया. पर वह उच्च शिक्षा नहीं, घर की चारदीवारी पसंद करती थी."

माया विचारमग्न हो गई.

"तुम ने उसे वह सब करने के लिए मजबूर किया है जो वह करना नहीं चाहती थी."

"पर भारती को खुल कर कहना चाहिए था कि वह किसी लड़के से प्यार करती है और उस से विवाह करना चाहती है." माया बोली.

"माया, तुम ने अपने [illegible] अनुशासन और आत्मीयता द्वारा उस की स्वतंत्रता और निर्भीकता की हत्या कर दी थी."

"वह कैसे?"

"याद है, दीवाली पर उस ने तुम से 200 रुपए मांगे थे. उस ने कहा था कि वह इन रुपयों से एक उपहार खरीदेगी और उसे देगी, जिसे वह प्राणों से अधिक प्यार करती है."

"मैं ने समझा, वह कोरी भावुकता में बह रही है. इसी लिए मैं ने उसे रुपए नहीं दिए."

"माया, मैं तुम्हें यही एहसास कराना चाहता हूं कि तुम अपनी बेटी को [illegible] नहीं समझ पाई. वह संकेतों में तुम्हें सब कुछ समझाती रही, पर तुम अपनी अतृप्त दमित कामनाओं की पूर्ति के लिए सब कुछ अनदेखा करती रहीं. तुम में और तुम्हारे अभिभावकों में कहां अंतर रहा? जो उन्होंने जान कर किया, वही तुम अनजाने में करती रहीं."

माया को महसूस हुआ कि श्याम ठीक कह रहे हैं. उस का दर्प चूरचूर हो कर बिखर गया था. वह सोचती थी कि अपने बच्चों से उस के संबंध हर प्रकार से पूर्ण और मधुर हैं.

पर भारती ने यह सिद्ध कर दिया था कि वह गलती पर थी.

"अब?" अनायास उस के मुख से निकल गया.

"एक ही विकल्प है. 'शांतिपूर्वक इस वैयाहिक संबंध को स्वीकार करो या सदैव के लिए बेटी और दामाद को खो दो और समाज में उपहास की पात्र बन जाओ."

"नहीं, मैं अपनी बेटी, दामाद को खोना नहीं चाहती." माया तड़प कर बोली.

"ठीक है... तो करो फोन... बंबई का फोन नंबर लिखा है, इस पत्र में." श्याम बोले.

माया ने पत्र पकड़ कर डूबी निगाहों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंबई का पता और उन का फोन नंबर देखा. फिर वह डगमगाती चाल से फोन की तरफ बढ़ गई.

अगले दिन शाम को चार बजे उस के समक्ष एक सुखद आश्चर्य उपस्थित हो गया. श्याम और गौतम उस समय घर पर नहीं थे.

दरवाजे की घंटी बजी. माया ने उठ कर द्वार खोला. सामने भारती खड़ी थी. उस की बगल में एक सुदर्शन, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व वाला नवयुवक खड़ा था.

माया एकटक भारती और सुरेश को देखती रह गई. उस की आंखों में खुशी के आंसू आ गए.

उस ने देखा, भारती के गले में मंगलसूत्र था और तरल सी आंखों में क्षमायाचना का भाव था.

"मां, क्षमा करना, अपनी बेटी की धृष्टता के लिए." कहती हुई भारती माया के वक्ष से चिपक गई.

"आओ बेटी." माया भर्राए स्वर में बोली. उसे अपनी भूल का एहसास हो रहा था. मां बेटी के संबंधों में जो समझ और सुलझापन होता है, वह नहीं था उस के और भारती के बीच.

"मां, यह सुरेश हैं."

"बेटी, काश तुम ने हमें पहले बताया होता. खैर, अब भी कौन सी देर हुई है. हम तुम्हारी शादी पूरी औपचारिकता और खूब ठाटबाट से करेंगे." माया बोली.

"मां, शादी तो हो गई. हां, आप चाहें तो एक पार्टी दे दें. वही काफी रहेगा." सुरेश ने कहा.

माया का मन भीग गया. अब उस के एक नहीं, दो बेटे थे. वह लपक कर फोन के पास पहुंची. उस ने श्याम और गौतम को भारती के आगमन का समाचार दिया. शीघ्र ही वे दोनों भी घर पहुंच गए.

घर में उत्सव का वातावरण हो गया था. ●

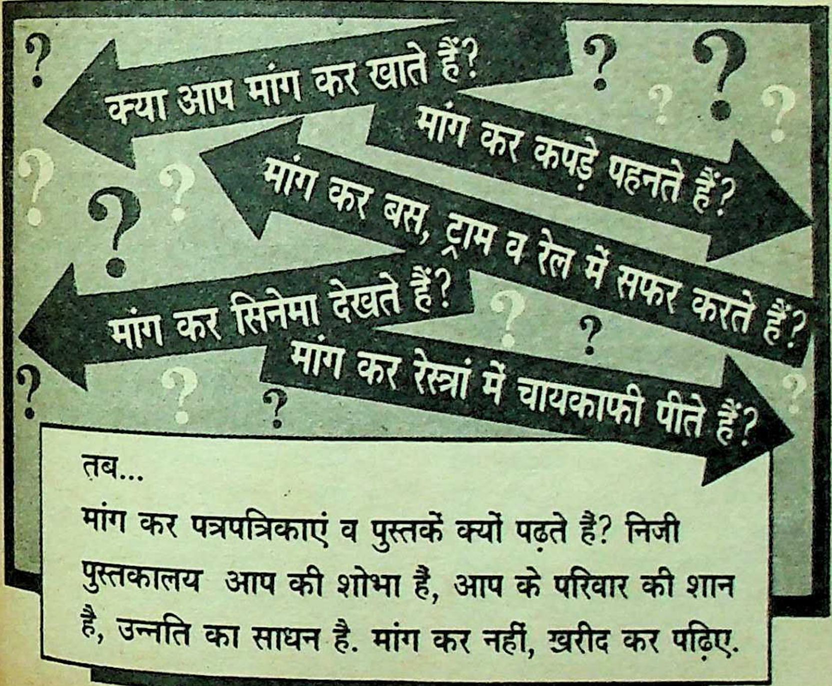

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शून्यकाल का शून्यालाप

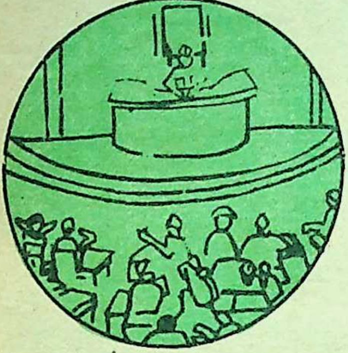

> इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जो सामान्यतः पूछे नहीं जाते, पर पूछे जाने चाहिए. यहां प्रस्तुत है इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न और उन के मंत्री के उत्तर.

शिमला समझौता क्या है? पंजाब में दिनोदिन स्थिति बिगड़ती जा रही है, क्यों? तथा अन्य प्रश्न...

सदस्य: **आप की सरकार और पाकिस्तान की सरकार में अंतर या समानता क्या है?**

मंत्री: **हमारी सरकार भी बैसाखियों के सहारे खड़ी है और उन की भी. यहां भी विपक्ष सशक्त है और वहां भी. दोनों ही जगह पक्ष और विपक्ष में सहयोग के आदर्श की घोषणा होती है, मगर सत्ता से वंचित सत्ताधारी के मार्ग में कांटे बोना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानता है. वहां यदाकदा कराची और सिंध में आग भड़कती रहती है और उस का दोष भारत पर मढ़ दिया जाता है. यहां पंजाब और कशमीर की आग के लिए दोषी पाकिस्तान को माना जाता है.**

सदस्य: **यह शिमला समझौता क्या है?**

मंत्री: **यह जानने की कोशिश बेकार है. हमारी पिछली सरकारों ने समझौतों की घोषणा के मुकाबले में उन के क्रियान्वयन में एक प्रतिशत भी दिलचस्पी नहीं ली. यहां समझौते का मतलब है कि समस्या को जीवित रहने दो मगर उस की बात मत करो, उसे दबे रहने दो. इसलिए शिमला समझौता बस एक समझौता है. समस्या की बात न कर के केवल इस के नाम की माला जपी जाए.**

सदस्य: **चीन और अमरीका का रवैया कशमीर समस्या के प्रति कैसा है?**

मंत्री: **पिछली सरकार का हर मंत्री सामान उठाए विदेश भागता नजर आता था. प्रधान मंत्री भी कभीकभी दिल्ली के दौरे पर आते थे. तथापि उन के मुकाबले हम ने घर बैठे कशमीर के मामले में पाकिस्तान को अकेला कर दिया है, ऐसा हमारा मानना है. वैसे चीन और अमरीका शिमला समझौता के बारे में ऐसे बयान दे देते हैं कि हम समझते हैं कि वे हमारा समर्थन कर रहे हैं और पाकिस्तान समझता है कि उस का.**

सदस्य: **आप अपनी पार्टी में एकता की बड़ी डींगें मार रहे थे, लेकिन टिकटों के बंटवारे के समय हुई जूतमपैजार तथा अन्य के सहयोगी दलों से समझौता न होने को आप क्या कहेंगे?**

मंत्री: **पहले अपनी कुरसी की फिक्र करो. देश, प्रदेश और पार्टी की उस के बाद में सोचो, यह है भारत की पारंपरिक राजनीति का मूलमंत्र. आप हमारी पार्टी की एकता और महानता इसी में देखें कि**

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ कर कितने लोग हमारी तरफ आ रहे हैं. दलबदल की इस रफ्तार ने सिद्ध कर दिया है कि जब तक दलबदलू जिंदा हैं, जनता दल के अस्तित्व को कोई खतरा नहीं. उन के बिखराव में ही हमारी एकता है.

सदस्य: पंजाब में दिनोदिन स्थिति बिगड़ती जा रही है. आप चुप क्यों हैं?

मंत्री: अब चुप तो वे हैं, जो कहते थे कि अगर प्रधान मंत्री स्वर्णमंदिर में जा आए तो समस्या हल हो जाएगी. वैसे स्थिति में या सरकारी नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है. पहले जो बात हम कहते थे, वही अब राजीव गांधी कहते हैं. वैसे यह विचार बुरा नहीं है कि लोगों को भ्रष्टाचार की तरह उग्रवाद को भी सहने की आदत बना लेनी चाहिए.

सदस्य: आंध्र प्रदेश में नक्सली जनप्रतिनिधियों और सरकारी कर्मचारियों का अपहरण कर अपने गिरफ्तार साथियों को छुड़वा रहे हैं. इस का कोई हल?

मंत्री: एक तो यह कि वह प्रदेश दिल्ली से काफी दूर है, फिर वहां हमारे दलों की सरकार भी नहीं है. वहां की सरकार संकट में है तो हमें कोई ज्यादा फिक्र नहीं है. वैसे चेन्ना रेड्डी ने इस समस्या का जो हल निकालने की सोची है, वह बात हमें पसंद आ रही है कि गिरफ्तार सभी नक्सलियों को छोड़ दिया जाए. फिर भला उन के साथी किसे छुड़वाने के लिए अपहरण करेंगे? न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी.

सदस्य: कशमीर में भी रूबिया की रिहाई के बदले उग्रवादियों को छोड़ा गया. पिछली सरकार के समय पंजाब में भी अपहरणकर्ताओं को छुड़वाने के लिए गिरफ्तार लोगों को छोड़ा गया था. क्या यह उचित है?

मंत्री: हम लोगों को उग्रवादी कह कर पकड़ तो लेते हैं, पर अव्वल तो उन पर कभी मुकदमा नहीं चला पाते, मुकदमा चल जाए तो उन्हें बरी करना पड़ता है. कई बार वे भाग भी जाते हैं. ऐसे में अगर हम उन्हें किसी के बदले छोड़ देते हैं तो क्या यह 'पुण्य' कार्य नहीं है?

सदस्य: क्या रूस बिखरने से बच जाएगा?

मंत्री: अभी तो वहां कम्यूनिस्ट पार्टी और नेताओं को ज्यादा खतरा है. इसलिए गोरबाचौफ विदेश यात्रा पर नहीं जा पा रहे हैं. रूस तो शायद सेना की वजह से जुड़ा रहेगा, पर सरकार जरूर बदलती नजर आएगी.

सदस्य: कहते हैं, रोमानिया में चाउशेस्कू को हटाते समय हुए संघर्ष में हजारों लोगों की जान गई है?

मंत्री: साम्यवाद की विडंबना यही है. जब यह किसी देश में आता है तो हजारों लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ता है. फिर भूख और बंदिशों को ढोना पड़ता है. जब यह किसी देश से जाता है तो हजारों की जान साथ ले कर जाता है.

सदस्य: कम्यूनिस्ट देशों में लोगों ने लोकतंत्र को लाने के लिए संघर्ष किया है. भारत जैसे देश में साम्यवादियों का संघर्ष किस लिए?

मंत्री: वह भी लोकतंत्र के लिए ही है शायद. भारतीयों को आजाद होते ही लोकतंत्र मिल गया. इसलिए यहां इस की कद्र कम है. पहले ये लोग साम्यवादी शासन का स्वाद चख लें, फिर पता चलेगा कि लोकतंत्र की अहमियत क्या है.

सदस्य: हरियाणा में क्या झगड़ा है?

मंत्री: बंगाल में 'गोरखालैंड', असम में 'बोड़ोलैंड' और पंजाब में 'सिखहोमलैंड' की मांगें काफी समय से हैं. पर सरकार देने से इनकार करती है. इधर हरियाणा में बिना मांगे 'डिजनीलैंड' मिल रहा है, फिर भी लोग नाराज हैं और लेने से न करते हैं.

सदस्य: प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने यह आदेश क्यों दिया है कि सरकारी कार्यालयों में उन का चित्र न लगाया जाए?

मंत्री: शायद इसलिए कि वह अपनी आंखों के सामने भ्रष्टाचार और कामचोरी को हंसतेखेलते नहीं देखना चाहते.

—गोविंद शर्मा ●

 . In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाड़ी खिंच रही है

व्यंग्य • अश्विनीकुमार भटनागर

"अरे राधेलालजी, यहां बाहर खड़े हुए क्या कर रहे हैं?"

"दिख नहीं रहा है कि अपनी बुढ़िया का इंतजार कर रहा हूं. दो मिनट कहा था, आधा घंटा हो गया." राधेलाल ने खीजते हुए कहा.

"जो कुछ भी कहो, भाईसाहब, आप सुखी बहुत हैं. इतना सुखी इनसान कहीं मिलता है? अब भाभी को लो. उम्र चाहे कुछ भी हो, पर जब निकलती हैं तो ढंग से. बंगलोरी साड़ी होगी, माथे पर बड़ी बिंदी होगी, कानों में टाप्स होंगे, गले में बड़े लाकेट वाला मंगलसूत्र होगा, गालों पर होगा पाउडर और होंठें पर हलकी लिपस्टिक. सच कहूं, आप को हमेशा जवान बना... हैं." करमचंद ने हंसते हुए कहा.

राधेलाल ने थोड़ा झेंपते हुए कहा, "अरे बुढ़िया को अब सजनेसंवरने का ... चर्रा गया है तो क्या करूं. मैं भी कहता ... उम्र ही कितनी शेष है. जो शौक हों सब ... कर लो."

"सोलह आना सच है, भाईसाहब, ... शौक जवानी में नहीं किए, अब पूरे कर ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए."

राधेलाल वर्षों पहले अवकाश प्राप्त कर चुके हैं. इस समय आयु 70 वर्ष से ऊपर है, पर स्वास्थ्य लगभग ठीक है. पतलेदुबले अवश्य हैं, चश्मा भी लगाते हैं, पर चेहरे से लगता है कि कभी बड़े अफसर रहे होंगे. हमेशा धुली और साफसुथरी पेंटकमीज पहन कर घर से बाहर निकलते हैं. सर्दियों में कोट व टाई ही पहन कर बाहर आते हैं. इसी तरह उन की पत्नी राधा भी बनठन कर साथ चलती है. लोग चाहे पीछे से हंसते हों या टीकाटिप्पणी भी करते हों, पर सामने सदा सम्मान से पेश आते हैं. अच्छी तरह रहते हैं और अच्छी तरह खातेपीते हैं.

"भाईसाहब, आप का बड़ा लड़का क्या कर रहा है? वही जो पिछले महीने आया था, आप के पास? वह बड़ा ही है न?"

"हां, मेरा बड़ा बेटा है. बीमा निगम में बड़ा अधिकारी है. बंगला है, मोटर है, बालबच्चे हैं. सब मजे से है." राधेलाल के स्वर में गर्व था.

"अच्छा," करमचंद ने आश्चर्य से

"दो रुपए पाव टिंडे? क्या लूट मचा रखी है? हमारे यहां तो घर पर आ कर डेढ़ रुपए पाव दे जाता है." राधा ने चिढ़े से भाव से कहा.

राधेलालजी और उन की राधा दोनों ही एकदूसरे के बिना रह नहीं पाते थे. राधा का बनसंवर कर बाहर निकलना भले ही औरों के लिए हंसने का मसाला होता था पर राधेलालजी अपनी 65 साल की नवोढा पर वारे जाते थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "उम्र तो उस की अधिक लगती नहीं. लगता है, काफी तरक्की कर ली है. इधर कई सालों से आप को यहां ही देख रहे हैं, क्या आप उन के पास नहीं रहते?"

"भई, अब क्या रहना. जितना रहना था, रह लिए. उन की अपनी जिंदगी है, अपना रहने का तरीका है. बहू का भी घर चलाने का व बच्चे पालने का ढंग अलग है. हम बिलकुल अलग से लगते हैं. साथ रहते हैं तो न वे लोग आजादी महसूस करते हैं और न हम. सो भैया यहां ही भले."

"और भी तो बच्चे होंगे?"

"हां, दूसरी लड़की है, दामाद वायुसेना का बड़ा अधिकारी है. पिछले गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति पदक भी उसे मिला था. लड़की भी नौकरी करती है. दो बच्चे हैं, सब मजे में हैं."

"तो लड़की के पास तो कभीकभी जाते होंगे?"

"वहां भी जाना छोड़ दिया," राधेलाल ने गहरी सांस ले कर कहा, "अब वहां भी हम लोगों का कोई हिसाब जमता नहीं. कुछ ही दिनों में वे लोग भी ऊब जाते हैं और हम भी. उन्हें भी हमारी आवश्यकता नहीं."

"बस दो ही बच्चे हैं?"

"नहीं. एक और लड़का है. वह राष्ट्रीय बैंक में अधिकारी है. बहू भी उसी बैंक में अधिकारी है. बच्चों को हमारी जरूरत नहीं."

"यह क्या कहते हैं, राधेलालजी? बच्चों को तो मांबाप की हमेशा आवश्यकता रहती है. बड़ों का साया ही तो बच्चों के लिए सब से बड़ा आशीर्वाद है."

"हां भैया, किताबों में यह सब पढ़ते आए हैं. हिंदी फिल्मों में भी ऐसा ही कुछ देखने को मिलता है. वास्तविकता यह है कि अब हम सही अर्थों में मुक्त हो गए हैं."

"क्या मतलब भाईसाहब? आप तो काफी गूढ़ बात कर रहे हैं."

"अरे गूढ़ क्या, यह तो जिंदगी का अनुभव है. देखो, बच्चे पैदा होते हैं, ... स्वार्थ के कारण. जब पैदा हो जाते हैं ... की परवरिश करना, पढ़नालिखाना ... कर्तव्य हो जाता है. अब जब नौकरी ... और शादी कर के वे आत्मनिर्भर हो ... तो उन्हें मांबाप की आवश्यकता नहीं ... बल्कि उन की जिंदगी में वे एक रुकावट ... पैदा करते हैं. अब जब बच्चों से हम मुक्त ... गए तो फिर बच्चों की तरह आजाद ... समझो."

करमचंद ने हीही कर के हंसते ... कहा, "यानी बच्चे आप से मुक्त हो गए ... आप बच्चों से मुक्त हो गए और अब ... फिर से स्वतंत्र हो गए हैं."

"क्यों, ठीक नहीं है क्या?" राधेलाल ... मुसकरा कर पूछा.

"भाईसाहब, बात तो आप की ... लगती है. पर अभी हम उस स्तर तक ... नहीं हैं. लीजिए, आप की इंतजार ... घड़ियां समाप्त हो गईं. भाभीजी तशरीफ ... ला रही हैं. कहता था न मैं कि इन की ... देख कर तो एक बार दुलहन भी फीकी ... जाए."

राधेलाल झेंप कर मुसकरा दिए.

"नमस्ते भाभीजी, देखिए कितनी ... प्रतीक्षा करा दी आप ने भाईसाहब को," करमचंद ने कहा.

राधा ने रुखाई से कहा, "मैं ... कब कहा था इस से प्रतीक्षा करने ... को? अरे चले जाते तो क्या होता? बाजार ... का रास्ता तो मुझे भी मालूम है."

करमचंद फिर से हंस पड़ा, "भाभीजी ... आप का जोड़ नहीं. अच्छा चलता हूं. आप ... को भी देर हो रही होगी. नमस्ते."

राधेलाल को एक शिकायत है. ... जब भी बाजार जाने को तैयार होते हैं, ... चिल्ला देती कि उसे भी जाना है. अरे ... जाना ही है तो पहले से तैयार हो जाओ. ... क्या कि पहले तो तैयार होता देखो और ... जाने से पहले टोक दो. साथसाथ भी ... तैयार हुआ जा सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब यह इज्जत रह गई है मेरी?" राधा ने चिल्ला कर कहा. "बहुएं सब कुछ हो गईं और मैं कुछ नहीं?"

राधा की शिकायत है कि वह उस से पहले से नहीं कहते. अरे अगर पहले से कह दें तो क्या वह तैयार नहीं हो जाती?

राधेलाल का कहना है कि जब वह रोज घूमने जाते ही हैं और राधा भी साथ जाती ही है तो रोजरोज पूछने की क्या आवश्यकता है?

राधा का उत्तर है कि अगर रोज पूछ ही लिया तो क्या उन की जबान घिस जाएगी?

इस तरह से यह कभी न समाप्त होने वाली बहस जारी रहती है, पर एक सचाई है जो दोनों जानते हैं परंतु मुंह पर नहीं लाते. अकेले जाने का राधेलाल का मन नहीं करता और बिना उन के राधा का जी नहीं लगता.

"अरे, टिंडे क्या भाव दिए हैं?"

"दो रुपए पाव."

"दो रुपए? क्या लूट मचा रखी है? हमारे यहां तो घर पर आ कर डेढ़ रुपए पाव दे जाता है."

"तो उसी से ले लेना." ठेले वाले ने व्यंग्य से कहा.

"वह तो लेंगे ही. तेरी सलाह की जरूरत नहीं है."

"क्यों बेकार झगड़ा मोल ले रही हो... आगे चलो." राधेलाल ने बांह पकड़ते हुए कहा.

"बांह छोड़ो," राधा ने झिड़क कर कहा, "पके हुए तो टिंडे हैं, उस पर दो रुपए पाव."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब पके टिंडे हैं और लेने नहीं हैं तो क्यों मुंह लग रही हो?"

"कितनी बार कह दिया, मेरे बीच में मत बोला करो." राधा ने क्रोध से कहा.

ठेले वाला हंस रहा था, "क्या भाव लोगी, कुछ बोलो भी मांजी."

राधेलाल ने कहा, "भई नहीं चाहिए. वैसे ही भाव पूछ लिया था. गलती हो गई."

"अजी गलती आप से क्यों, गलती तो मेरे से हुई है. टिंडे ले कर बैठा हूं. अगर सोनाचांदी होता तो यों चुटकियों में लोग खरीद ले जाते."

राधा कस कर उत्तर देने ही वाली थी कि राधेलाल तेजी से कदम उठा कर आगे जा कर खड़े हो गए. उन्हें मालूम था कि अब राधा बिना तूतूमैंमैं किए आगे नहीं बढ़ेगी. राधा ने देखा कि पति दूर चले गए तो चुपचाप पास आ गई और क्रोध से बोली, "यह क्या बात हुई? अकेली औरत को देख कर लोग तेज बोलने लगते हैं. मेरे पास तो खड़े रहना था?"

"मुझे झगड़ा अच्छा नहीं लगता और वह भी सरे बाजार. अरे उस ने 50 पैसे ज्यादा भी लिए तो क्या हम कंगाल हो जाएंगे?"

"कहा न, मुझे घर चलाना मत सिखाओ."

राधेलाल ने बड़बड़ा कर कहा, "जाहिल, गंवार."

"क्या कहा?"

"कुछ नहीं, तुम्हारी प्रशंसा कर रहा था."

"कुछ तो कहा होगा."

"अब चुप भी रहो, दिमाग मत खराब करो."

"हाय, बुढ़ापा किसी को न आए. पता नहीं, इस काया को और कितने कष्ट सहने हैं."

राधेलाल ने कहा, "अब मायाजाल में पड़ी हो तो काया तो कष्ट उठाएगी ही."

राधा ने घूर कर देखा और चुप हो गई.

"परवल क्या भाव हैं?"

"तीन रुपए पाव."

"अरे, कल तो दो रुपए थे... एक ही दिन में तीन रुपए कैसे हो गए?"

"कल की बात कल गई. आज तो यही भाव है."

"दो रुपए देने हैं?"

"कितने किलो लोगी?"

"किलो क्या, यही दो सौ ग्राम."

ठेले वाले ने व्यंग्य से हंस कर कहा, "दो सौ ग्राम... तो फिर चार रुपए के हिसाब से दूंगा."

"क्या?" राधा ने आंखें निकाल कर पूछा.

"कुछ नहीं मांजी, मुझे परवल नहीं बेचने हैं. आप आगे जाइए."

राधेलाल फिर राधा को खींच कर आगे ले गए. "सुनो, सब्जी तो मैं सुबह ही लाया था. बहुत रखी होगी. मेहरबानी करो के जब लेना नही है तो भावतोल मत करो."

"अरे, बाजार आए हैं तो क्या सब्जी का भाव नहीं पता करेंगे? घर पर आने वाले मनमाना मांगते हैं."

कुछ दूर आगे चले थे कि राधा ने नीचे जमीन पर बैठी एक लड़की से पूछा, "यह माला कितने की है?"

"दो रुपए की?"

"एक रुपए में देगी?"

"नहीं, मोती देख लो पहले."

"क्यों क्या असली मोती हैं?"

"असली होते तो क्या दो रुपए में बेचती?"

"अगर बेचना नहीं है तो यहां क्यों आई है?"

"बेचने आई हूं. कोई मुफ्त में देने थोड़े आई हूं."

"तो फिर भाव कम कर."

"कितने में लोगी?"

"कहा न, एक रुपया."

"नहीं."

चल, डेढ़ में दे दे."

"ले लो."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दूसरी दिखा. इस के मोती बराबर नहीं हैं."

लड़की ने दूसरी माला दिखाई.

"छिः, इस में तो धागा लाल है और निकल."

लड़की ने तीसरी दिखाई.

"इस से तो पहली ही अच्छी थी."

"तो पहले वाली ले लो."

"उस के मोती बराबर नहीं हैं. कोई छोटा है तो कोई बड़ा."

"अब दाम भी तो देखो."

"अच्छा, कल बढ़िया सी ले कर आना. दो लूंगी." राधा आगे चल दी. राधेलाल जलभुन रहे थे. उन्हें मालूम है कि राधा को न तो माला चाहिए और न वह खरीदेगी, परंतु यह उस का रोज का काम है. आखिर समय कैसे कटे? न बच्चे, न बच्चों के बच्चे. पति यों ही मुंह लिए बैठा रहता है. अकेले बैठे जैसे सदा एकदूसरे को काटने दौड़ते हैं. राधा के मोलभाव से राधेलाल को इतनी खुजली होती है कि हमेशा 10 गज दूर खड़े हो जाते हैं.

"देखो, आगे अंगूठी बेच रहा है. अब अंगूठी का मोलभाव मत करना." राधेलाल ने ताना दिया.

"क्यों नहीं लूं? पीतल की है, कोई सोने की नहीं."

"अरे, 10-12 तो ले चुकी हो."

"और ले लूंगी तो क्या दिवाला निकल जाएगा."

"ले लो बाबा, एक नहीं सारी ले लो." राधेलाल ने झल्ला कर कहा.

राधा ने डब्बे में रखी सारी अंगूठियां पहन कर देखीं. किसी का नग पसंद नहीं था तो कोई छोटी थी, कोई बड़ी थी तो कोई चुभती थी और किसी का डिजाइन अच्छा नहीं था.

"कल और ले कर आना. यहीं बैठते हो न? अच्छी लगी तो तीनचार ले लूंगी."

राधेलाल ने सोचा कि अंगूठी वाला मन ही मन कह रहा होगा, कल भूल कर भी यहां

जालिम

मसल दो तुम मुझे
ऐसी नहीं हूं मैं कली,
देखे हैं तुम से बहुत
जालिम इस जमाने में.

—सुरेशकुमार गोयल

नहीं बैठेगा. उन्हें हंसी आ गई.

राधा ने क्रोध से पूछा, "अब क्या हुआ?"

"कुछ नहीं. यही सोच रहा था कि वह अंगूठी वाला अब इधर आने का नाम ही नहीं लेगा. तुम्हारे जैसे दोतीन ग्राहक मिल गए तो पागलखाने पहुंच जाएगा."

"मुझे यह बकवास अच्छी नहीं लगती. मेरा खरीदना अच्छा नहीं लगता तो दूर चले जाया करो."

"अरे, जाऊं तो कितनी दूर जाऊं? तुम्हें तो दूर जाने से भी शिकायत होती है."

दोनों आगे चल पड़े.

आगे आइसक्रीम वाला खड़ा था. बहुत दिन हो गए थे आइसक्रीम खाए हुए. राधेलाल का मन कर आया. उन्होंने राधा से पूछा, "आइसक्रीम खाओगी?"

"नहीं. गला खराब हो जाएगा."

"अरे, खा भी लो."

"महंगी बहुत होगी."

"अब सस्तेमहंगे से क्या लेनादेना?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारी तबियत कर रही है तो ले लो. मैं उसी में से खा लूंगी."

राधेलाल को क्रोध आ गया. पैर पटक कर आगे चल दिए. उन्हें राधा की यही आदत गंदी लगती है. हमेशा दूसरे के हिस्से में से खाने को तैयार रहती है. कितनी बार कहा कि अरे ले लो. नहीं खाना हो तो छोड़ देना. पर दूसरे को टोका क्यों लगाती हो? बात राधेलाल के मन में ही रह गई.

"ऐ अमरूद वाले, क्या भाव हैं, अमरूद?" राधा ने पूछा. इलाहाबादी थे. उसे अमरूद बहुत पसंद थे.

"चार रुपए किलो."

"बारह आने पाव देगा?" राधा अभी तक नए पैसों का हिसाब नहीं करती थी.

"नहीं मांजी."

"अरे, कोई सोना है क्या?"

"सोना तो नहीं, पर सोना जैसा अमरूद तो है, जरा हाथ में ले कर देखो."

"अच्छा, सौ ग्राम का एक तोल दे." राधा को मालूम था कि राधेलाल को अमरूद अच्छे नहीं लगते.

"छुट्टे पैसे होंगे?"

"अरे, तोल तो सही."

अमरूद वाले ने एक छोटा सा अमरूद तोला, "लीजिए, यह हुआ 45 पैसे का."

"मैं तो 40 पैसे दूंगी."

"अरे मांजी, पांच पैसे ही तो कमाने हैं."

"देना है तो दे."

"लेना हो तो लो."

राधेलाल ने पैसे निकालते हुए कहा, "ला भई दे दे."

राधा ने हठ पकड़ कर कहा, "नहीं, मुझे नहीं चाहिए."

"अरे, ले भी लो, क्या होता है पांच पैसे में." राधेलाल ने झिड़क कर कहा.

"कहा न, नहीं चाहिए. रख ले अपना अमरूद."

"तो ले जाओ. बिना पैसे के ले जाओ." अमरूद वाला जोर से बोला.

"नहीं चाहिए...कहा न."

"लेनादेना कुछ नहीं, समय बरबाद करने चले आते हैं. बोहनी खराब कर दी."

"क्या कहा?" राधा गुर्राई.

अमरूद वाला चिल्लाया, "अमरूद चार रुपए किलो. मिठाई का गोला चार रुपए. न देखा न सुना, चार रुपए लूट के ले जाओ, चार रुपए. इलाहाबाद का पेड़ चार रुपए."

राधा ने घूर कर उसे देखा, मानो उसे ही खा जाएगी.

फिर राधा चल पड़ी राधेलाल के पीछे. राधेलाल का खून खौल रहा था. क्रोध से दांत भींच लिए. मरखनी एकएक पैसे के लिए झगड़ा करती है.

कुछ आगे बढ़े और वापस लौटने लगे.

राधा बड़बड़ा रही थी, "एक केला तक नहीं लिया."

राधेलाल का धीरज टूट गया. चिल्ला कर कहा, "क्यों नहीं लिया केला? बात तो कर रही थी केले वाले से."

"तीन रुपए दर्जन दे रहा था क्या पैसे थे मेरे हाथ में?"

"कितनी बार कहा कि पैसे हाथ में ले कर चला करो."

"क्यों लूं? तुम तो साथ में हो."

तभी सामने केले वाला आ गया.

"क्या भाव हैं केले?" राधेलाल ने ताव से पूछा.

"चार रुपए दर्जन."

"एक रुपए के दो."

"तीन का क्या होगा? और फिर पीछे तो तीन रुपए दे रहा है." राधा ने कहा.

"तुम चुप रहो." राधेलाल ने क्रोध से कहा.

तीनों केले हाथ में ले कर राधा को पकड़ा दिए, "लो खाओ."

"किस ने कहा था इतने महंगे केले लेने को?"

राधेलाल चुप रहे और जल्दीजल्दी आगे चल दिए. कुछ मुड़ कर देखा, राधा एक केला खा रही थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर पहुंच कर राधेलाल ने कपड़े बदले और अपनी आराम कुरसी पर लुढ़क गए. अब करना ही क्या था?

"खाना लगाऊं?" राधा ने पूछा.

"अभी आठ बजे हैं. यह कोई खाने का समय है?"

"मैं तो खाती हूं."

"खा लो. मैं अपने आप खा लूंगा." राधेलाल के स्वर में क्रोध था.

प्लेटों की उठापटक की आवाजें आ रही थीं. राधेलाल जानते थे कि राधा अभी नहीं खाएगी आंखें बंद किए पड़े रहे.

"अब लगा दूं खाना? नौ बजने वाले हैं."

"अभी नहीं खाऊंगा. तुम खा लो." राधेलाल ने नखरा किया, वैसे भूख तो लग रही थी.

"मरजी तुम्हारी, मैं तो खा रही हूं." राधा ने खाना लगाया और खाने लगी.

साढ़े नौ बजे राधा ने पूछा, "खाना गरम कर दूं."

राधेलाल चिढ़ गए थे, "कहा न, अभी नहीं खाऊंगा."

"मैं तो सोने जा रही हूं. खाना मेज पर रखा है."

राधा सोने चली गई. वैसे राधेलाल को मालूम है, वह सोएगी नहीं. रातभर करवटें बदलती रहती है. प्रतिक्षण, हाय, आह इत्यादि कई तरह की आवाजें निकाल कर उस का ध्यान आकर्षित करती रहती है. राधेलाल चुपचाप सुनते रहते हैं.

कुछ देर बाद राधेलाल ने उठ कर वैसे ही पड़ा ठंडा खाना ठूंस लिया. खाते समय थाली पटकना, चम्मच मारना, कटोरी घुमाना न भूले. जितना हो सकता था, शोर मचाया. मालूम था, राधा सब सुन रही है. आंखें मींचे पड़ी होगी. क्या औरत है? राधेलाल ने अपने से प्रश्न किया, इस के लिए पति नाम की कोई चीज नहीं. दो कौड़ी का हूं, दो कौड़ी का. बेवकूफ. यह शब्द जरा जोर से निकल गया.

राधा ने कमरे में से पूछा, "क्या कहा? कुछ कहा क्या?"

"कुछ नहीं. अपने को कोस रहा था."

"अपने को क्यों कोस रहे हो. मैं जो हूं निठल्ली."

राधेलाल ने बात नहीं बढ़ाई. चुपचाप आ कर अपने बिस्तर पर लेट गए. उन का बिस्तर हमेशा से अलग है. बच्चों ने कई बार हठ की कि 'डबल बेड' बनवा लें परंतु उन्होंने कभी नहीं बनवाया. राधा का बिस्तर हमेशा उलटासीधा रहता है. उस में से दवाइयों की सी बदबू आती रहती है. राधेलाल अपना बिस्तर सदा साफसुथरा रखते हैं. सुबह उठते ही झाड़ कर ठीक तरह से सजा लेते हैं. राधा को बिस्तर ठीक किए दोदोतीनतीन दिन निकल जाते हैं.

आधी रात को राधा ने जोर से आह भरी. राधेलाल चुप पड़े रहे. उस ने फिर आह भरी. वह फिर भी चुप रहे.

"सुनते हो? घुटनों में बड़ा दर्द हो रहा है. जरा मरहम लगा दो."

राधेलाल चुपचाप उठते हैं. बोलते कुछ नहीं. मरहम की ट्यूब ढूंढ़ कर लाते हैं.

हिंदू 2000 वर्ष क्यों गुलाम रहे?

हिंदुओं की सैन्य कमजोरियों के धार्मिक, सामाजिक और कूटनीतिक कारणों का विश्लेषण करने वाली पुस्तक

हिंदू इतिहास या हारों की दास्तान?

लेखक : डा. सुरेंद्र अज्ञात

मूल्य : 10.00 रुपए

साधारण डाक से मंगाने के लिए 10.00 मनीआर्डर द्वारा भेजिए तथा रजिस्टर्ड डाक से 3.00 रु. अतिरिक्त.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस की अलमारी एक दवाखाना है. राधा को दुनिया भर की सारी बीमारियां हैं, इसलिए सारी दवाइयां रखती है. बात सिर्फ इतनी है कि कुछ दिनों बाद ही वह भूल जाती है कि कौन सी दवाई किस बीमारी की है. राधेलाल को हंसी आती है तो उस का मुंह क्रोध से लाल हो जाता है.

धीरेधीरे राधेलाल चुपचाप राधा के घुटनों में मालिश करते हैं. कभी भूल से हाथ घुटनों के ऊपर पहुंच जाता है तो राधा चिल्लाती है, "ऐ, यह क्या हो रहा है? मुझे गुदगुदी होती है."

राधेलाल की मुसकान अंधेरे में गालों की झुर्रियों में गुम हो जाती है. जब दोबारा हाथ घुटने के ऊपर पहुंचता है तो राधा कहती है, "बस अब बंद करो... सो जाओ."

राधेलाल चुपचाप बिस्तर पर आ कर लेट जाते हैं. नींद तो नहीं आती, विचारों में खो जाते हैं. जैसे ही झपकी आती है खांसी का दौरा पड़ता है और लगता है, सुबह हो गई. जब खांसी नहीं रुकती तो राधा उठती है और छाती पर मलने के लिए मरहम ले आती है. कुछ देर तक मलती है फिर राधेलाल संकेत से मना कर देते हैं. उस के हाथ पर अपना हाथ रख कर आंखें मींच लेते हैं. अच्छा लगता है, पर राधा रुकती नहीं. दूसरे ही क्षण उठ कर हाथ साबुन से धोती है और उन्हें अपने पेटीकोट से पोंछती है क्योंकि तौलिया दिखाई नहीं देता और फिर लेट कर सो जाने का नाटक करती है.

सुबह नाश्ते पर, दिन में खाने पर, और शाम को चाय पर किसी न किसी बात पर खिचखिच चालू रहती है. हां, चिट्ठी की प्रतीक्षा अवश्य करते हैं.

राधा सदा बहुओं को दोष देती है. इधर राधेलाल कहते हैं कि अगर अपने बेटों में दम हो तो बहुएं क्या कर लेंगी?

चिट्ठी से बहू, बहू से दहेज, दहेज से और बातें और बातों से और बातें, जो सिलसिला चालू होता है तो खत्म नहीं होता.

"तुम एकदम मूर्ख हो, जो बहुओं से बना नहीं सकी, जो पति को कुछ नहीं समझ सकी वह क्या उम्मीद करे अच्छे व्यवहार की?" राधेलाल ने क्रोध से कहा.

"तो अब यह इज्जत रह गई है मेरी?" राधा ने चिल्ला कर कहा, "बहुएं सब कुछ हो गईं और मैं कुछ नहीं?"

राधेलाल ने संभल कर कहा, "मेरा मतलब यह नहीं था. तुम तो मूर्ख हो. सब उलटा समझती हो."

"मूर्ख तुम हो, मैं क्यों?"

इस के बाद जो लड़ाई हुई, वह शब्दों में वर्णन नहीं की जा सकती. लगता था एकदूसरे को साबुत निगल जाएंगे. राधेलाल ने तुरंत कपड़े बदले और बाहर निकल गए. कुछ बुदबुदाए. राधा मुंह ढक कर पड़ी थी. वह जोर से बोले, "जा रहा हूं बाजार. बाहर खड़ा हूं. चलना हो तो आ जाना."

"मैं नहीं जाऊंगी. अपनेआप झक मार आओ." राधा ने कटुता से कहा.

राधेलाल बाहर हर रोज की तरह खड़े थे. मालूम था कि राधा आएगी. उसी तरह श्रृंगार कर के, बनठन कर.

करमचंद ने सामने आ कर कहा, "भाईसाहब, आप को देख कर तो सच में बड़ी ईर्ष्या होती है, कितना सुखी और संतुष्ट जीवन है आप का."

राधेलाल मुसकरा कर चुप रहे. उत्तर नहीं दिया. दिल जल रहा था.

उत्तर न पा कर करमचंद ने फिर कहा, "तबियत तो ठीक है न? भाभीजी कैसी हैं? सब ठीक है न?"

गहरी सांस भर कर राधेलाल ने कहा, "बस भई, गाड़ी खिंच रही है."

कैसे कहते, अपने परस्पर झगड़े की बात? यही तो उन का शगल है. अगर झगड़ा भी न करें तो जिएं कैसे?

तभी राधा सज कर बाहर आई. छनछन से ध्यान आकर्षित हुआ. दोनों ने ध्यान से देखा. आज राधा ने चांदी की घुंघरू वाली पायल भी पहन रखी थी. राधेलाल मुसकराए. राधा ने मुसकरा कर मुंह फेर लिया. 65 साल की दुलहन शरमा गई थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाभी

(पृष्ठ 179 का शेषांश)

पानी, दूध सभी कुछ तकिए के सहारे बैठा कर देना पड़ता था. डाक्टर का कहना था कि दवा व मालिश से धीरेधीरे वह ठीक हो जाएंगे, लेकिन समय काफी लग सकता है.

उस वक्त घर में सब से दयनीय स्थिति नन्हे की थी. मां पिताजी की सेवाशुश्रूषा में लगी रहतीं. भैया जितनी देर घर रहते नन्हे को संभालते, लेकिन उन के काम पर जाते ही वह रोने, बिलखने लगता. कभी नौकरानी उठा लेती तो कभी मां ही गोद में ले कर पिताजी के तथा घर के छोटेमोटे कार्य करती रहतीं. नन्हे के दूध, पानी, खिचड़ी, रस वगैरह का कोई नियमित समय रहा ही न था. शायद इसी कारण वह कमजोर व चिड़चिड़ा हो गया था.

शीला को भाभी की याद आ जाती कि किस तरह वह सारे कार्य छोड़ कर पहले नन्हे की देखभाल करती थीं. अचानक उस के मुंह से निकल गया, "देखा बेचारे बिन मां के बच्चे का क्या हाल हो रहा है? अभी तो केवल डेढ़ महीना ही बीता है भाभी को गुजरे. पता नहीं आगे क्या...."

रीतेश ने चौंक कर पत्नी को देखा फिर धीरे से बोला, "मैं भी दो दिनों से इस की हालत देख कर बेचैन हो रहा हूं. इस बेचारे का क्या भविष्य है?"

शीला विचारमग्न हो गई, 'अभी तो पिताजी को ठीक होने में काफी समय लग जाएगा. नन्हे की देखभाल ठीक से न हुई तो बीमार भी पड़ सकता है. भैया कितना संभालेंगे? छोटे भाई भी अपनी पढ़ाई और खेलकूद में व्यस्त रहते हैं. कोई विश्वासपात्र आया या नौकरानी भी आजकल मिलना कठिन है. क्या मैं इसे नहीं पाल सकती? लेकिन... रीतेश, भैया, मांपिताजी मानेंगे?'

रात को शीला नन्हे को अपने साथ सुलाने ले आई. बोतल से दूध पिला कर उसे थपथपा कर सुलाया तो उस के गालों पर सूख चुके आंसुओं के निशान देख कर रीतेश अचानक बोल उठा, "शीला, अगर तुम चाहो तो नन्हे को अपने साथ रख सकती हो. मैं कल जा रहा हूं, तुम एक सप्ताह रुक कर आ जाना?"

शीला को जैसे रीतेश की बातों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था. वह एकाएक बोल उठी, "सच? तुम सच कह रहे हो न?"

"हां शीला, मैं पिछले तीन दिनों से यही सोच रहा हूं, यहां नन्हे का भविष्य अंधकारमय नजर आ रहा है. भैया भी कब तक अकेलेपन का बोझ उठाते फिरेंगे? साल दोसाल में ब्याह कर ही लेंगे. मांपिताजी तो स्वयं ही विवश, टूटे हुए और आश्रित से हैं. अगर नई बहू नन्हे के साथ न्याय न कर पाई तो? शायद उस की देखभाल की जिम्मेदारी हमें ही करनी है." रीतेश ने कहा.

शीला के मनमस्तिष्क पर पड़ा अतिरिक्त बोझ अचानक हलका हो गया. रीतेश दूसरे दिन लौट गया था.

अगले तीनचार दिनों तक शीला ही नन्हे की देखभाल करती रही. एक दिन शीला ने कह ही डाला, "मां अगर आप लोगों को एतराज न हो तो नन्हे को साथ ले जाने के लिए मैं तैयार हूं."

मां व भैया हैरानी से एकदूसरे का मुंह देखने लगे. आखिर मां ही बोलीं, "लेकिन रीतेश तैयार होंगे? तुम ने उन से इस बारे में पूछा है?"

"हां, वह तैयार हैं." शीला ने कहा.

"परंतु लोग क्या कहेंगे कि इन से एक बच्चा भी नहीं संभाला गया और वह भी अपना ही खून." मां दुविधा में पड़ी परेशानी से कह उठीं.

"मां, लोगों की बातें छोड़ो. हमें नन्हे के भविष्य के बारे में सोचना है या लोगों की बातों की परवाह करनी है?"

"पर...." मां झिझकती हुई रुक गईं.

"क्या बात है मां, कहो न?" शीला के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व बाल साहित्य

विश्व बाल पुस्तकें जो आप के बच्चों के लिए निहायत जरूरी है.

जीवन के हर पहलू को बड़ी सादगी के साथ सामने लाने वाली इन पुस्तकों में न केवल मनोरंजक सामग्री है बल्कि यह सामग्री ज्ञानवर्द्धक और सही दिशा देने वाली भी है.

आकर्षक व लुभावने रंगीन चित्रों में चुंचू, चीकू, पिंटु और मोती के कारनामों का रोचक वर्णन जो देर तक गुदगुदाता है.

200 से अधिक हिंदी और अंगरेजी की पुस्तकें जिन्हें आप पढ़ना पसंद करेंगे.

Vv/DBC 136

दिल्ली बुक कम्पनी,
एम–12, कनाट सर्कस,
नई दिल्ली.

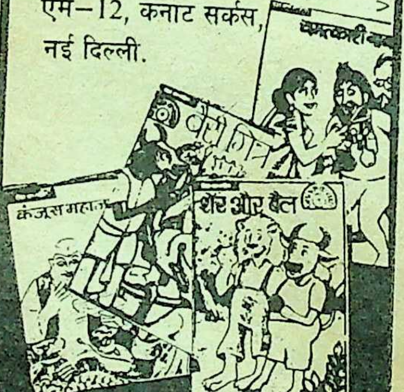

...वह धीरे से बोली, "जब ... अपना बेटा हो जाएगा तो नन्हे का ... होगा?"

"कमाल करती हो मां, तुम भी ... किस ने कह दिया कि मैं और बच्चे ... करूंगी? एक गुड़िया और एक नन्हे ... हमारा परिवार यहीं तक सीमित रहे ...

"सच शीला?" मां तथा ... साथसाथ कह उठे.

दूर पलंग पर लेटे पिताजी की ... में भी कृतज्ञता के भाव उभर आए ... मां तथा पिताजी को संतोष और ... था कि शीला नन्हे को मां की ममता ... कर सही देखभाल करेगी, वहीं भैया को ... संदेह सा परेशान कर रहा था कि ... सचमुच शीला नन्हे के साथ ... व्यवहार कर न्याय कर पाएगी?

रात भर भैया विचारों के समुद्र में ... खाते रहे. कभी सोचते, बेशक नन्हे ... देखभाल ठीक से नहीं हो रही परंतु ... आंखों के सामने तो है न. वहां पता ... शीला और रीतेश उस से कैसा व्यवहार ... करें...? फिर तुरंत ही मन कह उठता ... यह प्रस्ताव तो स्वयं शीला का है. इस ... अर्थ तो यह हुआ कि वे स्वयं ही खुशी ... नन्हे को रखना चाहते हैं. शीला का यह ... भी वजनदार है कि लोगों की परवाह ... कर उन्हें नन्हे के भविष्य को देखना है.

वह फिर सोचने लगा, दुखों, चिंता ... ने मां को भी कमजोर बना दिया है. अब ... से भी ठीक से घर संभाला नहीं जाता ... घर और मांपिताजी की देखरेख के लिए ... दोबारा विवाह भी करना पड़ेगा. दूसरी ... पत्नी अगर नन्हे से दुर्व्यवहार करने लगी ... अपनी आंखों के सामने क्या वह यह ... सहन कर पाएंगे? शीला तो आरंभ से ही ... अपनी भाभी के प्रति अत्यधिक ... सम्मान तथा प्रगाढ़ प्रेम रखती थी. इसी ... कारण नन्हे से भी उसे बहुत लगाव ... शायद भविष्य में उस के साथ अन्याय ... आशंका के कारण ही उस ने नन्हे को ... संभालने का प्रस्ताव रखा हो. रीतेश ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहमत हो गए हैं. इस [illegible] इस प्रस्ताव से नन्हे के अच्छे भविष्य की आशा की जा सकती है. मन में उठ रहे काफी तर्कों के पश्चात उन्होंने शीला के प्रस्ताव को मानने का निर्णय कर लिया.

अगले सप्ताह शीला लौटने की तैयारी में थी. पिताजी, मां तथा भैया की आंखों में कृतज्ञता के भाव थे. बस में बैठते हुए शीला बोली, "नन्हे आज से हमारा बेटा है. आप लोग इस के बारे में बिलकुल चिंता न करें."

दफ्तर से लौट कर रीतेश ने दरवाजे की घंटी बजाई तो शीला नन्हे को गोद में ले कर तथा गुड़िया का हाथ पकड़ कर दरवाजा खोलने गई. अंदर आते ही रीतेश ने एक तरफ गुड़िया और दूसरी ओर नन्हे को बांहों में भर लिया, "कैसे हैं, हमारे नन्हे साहबजादे?"

प्रसन्नता से शीला की आंखें नम हो गईं, "रीतेश, भाभी ने हमारे घर, हमारी गुड़िया और महल्ले वालों के लिए जितनी सेवा व त्याग केवल दो वर्षों में किया है, उस की मिसाल नहीं है. उन के त्याग, सेवाभाव और निश्छल स्नेह के बदले अगर उन के बेटे की हम सही ढंग से देखभाल कर पाएंगे तो समझेंगे कि हम ने भी अपने कर्तव्यपालन द्वारा भाभी के आदर्शों का अनुसरण किया है."

रीतेश ने मुसकरा कर पत्नी का समर्थन किया. "एक बात कहूं, बुरा तो नहीं मानोगे?" शीला ने पति की आंखों में झांका.

[illegible] विश्वास नहीं क्या?" रीतेश ने प्रतिप्रश्न करते हुए कहा.

"दरअसल, भाभी मेरे सपने में कभी आई ही नहीं. उस दिन मैं ने झूठ कहा था. वास्तव में तो नन्हे के भविष्य को ले कर मैं चिंतित थी, इसलिए अपने मन की बात कहने के लिए उस काल्पनिक घटना का सहारा लिया था." शीला ने कहतेकहते सिर नीचा कर लिया.

"अच्छा, इतनी बड़ी चालाकी की हम से?" रीतेश ने हैरानी से कहा तो शीला कांप गई.

इस पर रीतेश ठहाका लगाते हुए बोला, "बस, इतना ही विश्वास है मुझ पर. अरी पगली, अगर तुम बहाना बना कर यह प्रस्ताव न रखतीं तो शायद मेरी ओर से यही प्रस्ताव रखा जाता."

"क्या...?" शीला आश्चर्यचकित थी.

"हां शीला. मैं ने जब भैया की दोतीन चिट्ठियों में पढ़ा कि मां नन्हे के लिए बहुत चिंतित रहती हैं, उसे ठीक से संभाल नहीं पातीं, तभी से मन में यह विचार आने लगे कि क्यों न नन्हे को हम ही बेटा मान कर पालें. लेकिन मैं उचित अवसर की तलाश में था और अवसर आने पर मैं ने तुम्हें कह ही दिया था. सच मानो तो यह सब तुम्हारी आदर्श भाभी की ही प्रेरणा का फल है."

पति के हृदय की विशालता के सम्मुख शीला नतमस्तक हो गई थी. ●

केवल 2% जंगल भारत में

संपूर्ण विश्व की जनसंख्या के 15% आबादी वाले भारत की कुल वन संपत्ति विश्व के जंगलों का मात्र 2% है. देश में प्रतिवर्ष 15 लाख हेक्टेयर जंगल काटे जाते हैं और केवल 5 लाख हेक्टेयर जंगल लगाए जाते हैं. पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार इतने बड़े पैमाने पर जंगलों का काटा जाना भूमि के कटाव, सूखे तथा बाढ़ के खतरे को बढ़ा रहा है.

भारत में अभी केवल 20% भाग में ही जंगल है, जबकि कम से कम 33% भाग में जंगल होने चाहिए. सरकार तथा कुछ अंतर्राष्ट्रीय विकास एजेंसियां भी इस लक्ष्य को प्राप्त करने में लगी हुई हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं 18 वर्षीया छात्रा हूं, कृपया मुझे नजदीकी स्थान बताएं जहां से प्लास्टिक सर्जरी करा सकूं. इस से कोई दोष तो नहीं आ जाता?

आप को किसी कुशल प्लास्टिक सर्जन से ही सर्जरी करानी चाहिए. आप दिल्ली के सफदरजंग हस्पताल से संपर्क कर सकती हैं. वैसे प्लास्टिक सर्जरी को आप खेल न समझें. यह प्रक्रिया कष्टदायक भी है और इस में थोड़ा जोखिम भी है.

मैं 27 वर्षीया विवाहिता हूं. छाती, मुंह व ठेढ़ी के नीचे के बालों से परेशान हूं, इन्हें स्थायी रूप से हटाने का कोई इलाज बताएं?

स्थायी इलाज के लिए आप को इलेक्ट्रोलिसिस विधि को ही अपनाना होगा. इस से भी एक बार में ही बाल जड़ से नहीं समाप्त होते. पर यह उपचार कई बार दोहराने से पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं. यह लंबी व महंगी प्रक्रिया है, पर स्थायी इलाज भी यही है.

मैं जीवन की संध्या बेला में हूं. अपने एक मात्र दोनों पैरों से विकलांग पुत्र को किसी अच्छी संस्था के संरक्षण में देना चाहता हूं, क्या देश में कोई ऐसी शासकीय अथवा समाजसेवी संस्था है, जो विकलांगों को संरक्षण दे सके.

आप निदेशक, समाज कल्याण विभाग, 18, केनिंग लेन, नई दिल्ली एवं स्वैच्छिक समाज सेवी संस्था 'अमरज्योति चैरिटेबल ट्रस्ट, कड़कड़डूमा, नई दिल्ली से पत्र व्यवहार कर सकते हैं.

मैं 18 वर्षीया छात्रा हूं, मेरी सगाई हो चुकी है और शादी की तिथि तय हो चुकी है जो कि मेरी मासिक धर्म की तारीख भी है. क्या किसी दवा के द्वारा इस में परिवर्तन लाया जा सकता है. दूसरे, सुना है कि सुहागरात को लड़के बुरी तरह पेश आते हैं. मैं अपने मासिक धर्म के दौरान तेज दर्द से पीड़ित रहती हूं, कई बार बेहोश तक हो जाती हूं. क्या करूं?

प्रथम तो यह मान कर चलिए कि सुहागरात को पति के बुरी तरह पेश आने वाली बात सही नहीं है, यह तो दो दिलों के परस्पर मेल व सौहार्द की रात होती है. रहा मासिक धर्म का प्रश्न तो यदि शादी की तिथि एकदम पक्की नहीं है तो आप अपनी भाभी या अन्य किसी हमराज से कह कर तिथि बदलवा लीजिए. मासिक चक्र में बदलाव के लिए आप को किसी लेडी डाक्टर से परामर्श करना होगा.

कृपया उन संस्थानों का पता बताएं जहां बच्चा गोद लिया जा सकता है?

'उदयन,' डाक्टर्स लेन, गोल मार्किट, नई दिल्ली.

समाज कल्याण निदेशालय, ओल्ड आई. आई. बिल्डिंग, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001.

दिल्ली कौंसिल फार चाइल्ड वेलफेयर 'पालना', कुदसिया बाग, दिल्ली.

आप उपर्युक्त संस्थानों से संपर्क कर सकते हैं.

मैं एक सरकारी सेवारत 23 वर्षीय विवाहित युवक हूं. समस्या यह है कि मैं अत्यंत दुबलापतला हूं. खूब खाने के बाद भी सेहत नहीं बनती. कुछ दोस्तों का कहना है कि मैं शराब पीना शुरू कर दूं. कृपया राय दीजिए कि क्या शराब के सेवन से सेहत बन जाएगी?

शराब के सेवन से रहीसही सेहत भी नहीं रहेगी. आप ऐसे दोस्तों की राय कभी न मानें. खूब खाने से ही सेहत नहीं बनती. आप किसी चिकित्सक की राय से पौष्टिक भोजन व विटामिन की गोलियां लेना शुरू कर सकते हैं.

मैं एक अविवाहित युवती हूं. समस्या यह है कि दो वर्ष से एक लड़का हमारे घर आ कर पारिवारिक सदस्य समान बन गया है. पर दरअसल वह मुझ से शारीरिक संबंध स्थापित करना चाहता है, घर वालों के सामने भी मुझ से प्रेम भरी व अशिष्टतापूर्ण बातें करता है. इस से मेरा तनाव बढ़ रहा है. बताइए, क्या करूं?

शायद आप के घर वालों को उस के कुत्सित इरादों का पता न लग पाया हो, आप घर के किसी सदस्य से स्पष्ट रूप से कह दीजिए. उस की किसी भी कुचेष्टा को आप दृढ़ शब्दों से कुचल सकती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने का अवसर भी न आने दें, आप की बेरुखी और घर वालों के मना करने पर वह आप से दूर हो जाएगा.

मैं 23 वर्षीय स्वस्थ विवाहित युवक हूं. अपनी पसंद की लड़की से ही शादी की है, लेकिन समस्या यह है कि सुहागरात वाले दिन उसे और मुझे कोई परेशानी नहीं हुई, क्या उस का कौमार्य भंग हो चुका है? सहवास के अगले दिन वह मायके चली गई, अभी गौना होना है. मैं ने यह बात उस से नहीं की, पर चाहता हूं वह अपनी गलती मान ले. इस तनाव के कारण मेरी पढ़ाई भी नहीं हो पा रही. जब उस ने खेलकूद में भाग नहीं लिया, न कोई दुर्घटना ही घटी तो ऐसा क्यों हुआ? उसे मैं छोड़ भी नहीं सकता, क्या करूं?

केवल खेलकूद या कोई दुर्घटना ही कौमार्य भंग होने का कारण नहीं है और भी कई कारण हैं, जैसे कभी ऊंचीनीची जगह पर पांव पड़ने या कई बार अन्य किसी कारण से झिल्ली फट सकती है, इस में कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है. याद रखिए, ऐसे बेसिरपैर के संदेह द्वारा आप स्वयं तो तनाव में रहेंगे ही, साथ ही आप का भविष्य भी चौपट हो जाएगा.

मैं 20 वर्षीया युवती हूं. मेरा कद काफी छोटा है. क्या व्यायाम के अतिरिक्त कद बढ़ाने का कोई उपाय बता सकती हैं?

जी नहीं. कद कुछ खा कर तो बढ़ाया नहीं जा सकता. आप एक तो ऊंची एड़ी के सैंडिल पहनना शुरू कर दें और लंबी धारी के प्रिंट को खड़े बल में सिलवा कर पहनें, साथ ही वजन न बढ़ने दें, तब आप ठीक लगेंगी.

मैं एम.ए.बी.एड. पास अविवाहित युवती हूं. दिल्ली या रोहतक में आकाशवाणी आदि में नौकरी करना चाहती हूं. क्या दूसरे शहर में रह कर नौकरी करना सुरक्षित है? किसकिस पद पर मेरा चुनाव हो सकता है और कहां आवेदनपत्र भेजूं?

आप को नौकरी मिल सकती है, किंतु इस के लिए उस नौकरी के किसी पद हेतु अखबार आदि में विज्ञापन हो, तब आप आवेदन कर सकती हैं. आप की शिक्षा के अनुसार शिक्षिका की नौकरी सर्वोत्तम है. अखबार में दिए विज्ञापन देखते रहना चाहिए. रहा सवाल दूसरे शहर में नौकरी करने का तो रहने की जगह ठीक होना जरूरी है, तभी आप सुरक्षित अनुभव करेंगी.

मेरे चेहरे पर अनावश्यक बाल हैं. मुझे लगता है कि ब्लीच करने से बाल बढ़ते हैं, क्या इलेक्ट्रोलिसिस से बाल ठीक से हट जाते हैं? मेरे होंठों के ऊपर वाली जगह पर भी मर्दों की तरह बहुत बाल हैं, इस से हीन भावना बढ़ गई है, क्या करूं?

ब्लीच करने से बाल थोड़ेबहुत बढ़ते हैं, आप घरेलू ब्लीच जैसे, खीरे का रस और नीबू का रस बराबर मात्रा में मिला कर लगाएं तो नियमित प्रयोग से बाल ब्लीच हो जाएंगे और बढ़ेंगे नहीं. इलेक्ट्रोलिसिस भी कई बार करवाने से बाल हट जाते हैं. पर यह थोड़ी महंगी प्रक्रिया है.

मैं 18 वर्षीया छात्रा हूं, मेरी नाक का आकार बहुत भद्दा है. जब कोई टोकता है तो मर जाने का मन करता है. मैं ने टीवी में देखा था कि नाक का आकार ठीक हो सकता है. मैं मध्यमवर्ग से संबंधित हूं. क्या ऐसा आपरेशन कहीं भी हो सकता है और कितना पैसा लगेगा?

आपरेशन से कोई अंग ठीक कराने की विधा को प्लास्टिक सर्जरी कहते हैं. निश्चित रूप से आप की नाक ठीक हो सकती है. इस में खर्च भी बहुत नहीं आता, पर योग्य शल्यचिकित्सक का होना जरूरी है. आप सफदरजंग हस्पताल, नई दिल्ली के प्लास्टिक सर्जरी विभाग को पत्र लिख कर संपूर्ण जानकारी ले सकती हैं.

मैं 21 वर्षीय अविवाहित युवक हूं. दो साल पहले मौसी की लड़की आई और दो साल यहां रही. इस बीच हम एकदूसरे को चाहने लगे. शारीरिक संबंध तो नहीं हो पाया, पर और सब कुछ था, हम दोनों के बीच. अब उस की शादी हो गई और वह भी मेरे ही शहर में लगता है, मुझे वह अब कम चाहती है. क्या करूं?

यह सब केवल आकर्षण है. मौसी की लड़की आप की बहन है. उस से यह रिश्ता ही गलत था और अब वह विवाहित है, इसलिए आप उस के घर कम से कम जाने का प्रयत्न करें. किसी भी सुंदर लड़की को देख कर आकर्षित होने से लगता है कि आप खाली ज्यादा रहते हैं और इन्हीं विचारों से घिरे रहते हैं.

—कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जासकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने नन्हे मुन्नों को
केवल टीवी और वीडियो का
बंधक न बने रहने दें.

उन्हें ज्ञान व मनोरंजन से भरपूर

चंपक

पढ़ने के लिए दें.

चंपक की रचनाएं बच्चों का शब्द ज्ञान बढ़ाती हैं, उन्हें सरल भाषा में नई नई बातें बताती हैं तथा रंगीन चित्र उन्हें पढ़ने की प्रेरणा देते हैं.

हर अंक बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार की गई सामग्री से लदाफदा

मजेदार कहानियां

कई उलझाने वाली पहेलियां

गुदगुदाने वाली चित्रकथाएं

लोटपोट करने वाले चुटकुले

ज्ञानवर्धक जानकारी

मनमोहक कविताएं

आज ही से नियमित खरीदिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ जीने दो

निर्माता : राकेश सेठी
निर्देशक : राजेश सेठी
संगीत : राहुलदेव बर्मन
मुख्य कलाकार : जैकी श्रोफ, संजय दत्त, फरहा, सोनम, अमरीश पुरी, शक्ति कपूर और अनुपम खेर.

कर्ज लेना किसान की मजबूरी है और कर्ज देना साहूकार की रोटी है. जो कर्ज किसान अपने परिवार के लिए साहूकार से लेता है उसी कर्ज के सूद से साहूकार किसान की जिंदगी को किस तरह बदतर बना देता है, यही फिल्म 'जीने दो' का मुख्य विषय है.

हालांकि किसान अब जागरूक हो गया है. उसें भी अक्ल आ गई है कि अपना अनाज वह खुद मंडी में ला कर बेच सकता है. फिर भी देश के कई ऐसे पिछड़े इलाके आज भी मौजूद हैं जहां किसान जमींदारों को ही अपना माईबाप समझते हैं और ताउम्र उन की गुलामी करते रहते हैं.

फिल्म 'जीने दो' ऐसे ही किसानों की कारुणिक कथा पर लिखी गई है. फिल्म में अगर कुछ कमियों को नजरअंदाज कर दिया जाए तो फिल्म अपने उद्देश्य में सफल होती नजर आती है.

हरदयाल (अनुपम खेर) एक किसान है जिस के दो बेटे हैं. सूरज (जैकी श्रोफ) और कर्मा (संजय दत्त). सूरज पढ़ने में जितना होशियार है कर्मा उतना ही नालायक. सूरज को पढ़ाने की खातिर हरदयाल साहूकार शेर बहादुर (अमरीश पुरी) से कर्ज लेता है. कर्ज उतर नहीं पाता और सूद बढ़ता ही जाता है. सूरज को जब इस कर्ज के बारे में पता चलता है तो वह साहूकार के पास जा कर अपने बाप के अंगूठे वाले खाली कागज पर कर्ज की रकम

'जीने दो' में संजय दत्त : अच्छा अभिनय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखवा देता है. उधर साहूकार सूरज को एक षड्यंत्र में फंसवा देता है. कहानी उस समय मोड़ लेती है जब हरदयाल का नालायक बेटा कर्मा बाप का बोझ स्वयं उठाता है और साहूकार के अत्याचारों को सहन करता है. तभी एक दिन सूरज वापस गांव लौटता है. दोनों भाई मिल कर साहूकार से अपने दुखों का बदला लेते हैं. इसी कहानी के साथसाथ सूरज और सुजाता (सोनम) व कर्मा और कमली (फरहा) की प्रेम कहानी भी चलती है.

फिल्म की कहानी किस काल की है, स्पष्ट नहीं है. लगता है जैसे सन 1947 से पहले की कहानी देख रहे हैं. मगर फिल्म की पटकथा काफी सशक्त है. फिल्म में अगर कोई कमी है तो वह है उस का संपादन. जगहजगह ऐसा लगता है जैसे फिल्म जंप कर रही हो. लगता है ज्यादा काटछांट करने के चक्कर में संपादन गड़बड़ा गया है.

फिल्म का निर्देशन राजेश सेठी ने दिया है. बतौर निर्देशक यह उस की पहली फिल्म है. इस फिल्म में उस ने अच्छा निर्देशन दिया है. निर्देशक ने फिल्म का संतुलन बनाए रखा हैं. मारधाड़, भावनात्मक दृश्य, रोमांस, गीत, संगीत सभी का समन्वय खूबसूरती से किया गया है. फिल्म के संवाद भी अच्छे लिखे गए हैं.

अभिनय की दृष्टि से अनुपम खेर का काम काफी अच्छा कहा जा सकता है. संजय दत्त ने एक उग्र युवक की भूमिका में अच्छा काम किया है. जैकी श्रोफ साधारण रहा है. शक्ति कपूर ने दर्शकों को थोड़ाबहुत हंसाया है. नायिकाओं के करने के लिए फिल्म में गुंजाइश कम थी. अन्य कलाकार साधारण रहे हैं.

फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. जिन्हें राहुलदेव बर्मन ने अच्छी धुनें दी हैं. दरअसल इस फिल्म का संगीत ही अच्छा है. फिल्म का छायांकन मनमोहन सिंह ने किया है. आउटडोर शूटिंग के कुछ दृश्य अच्छे बन पड़े हैं.

★ बहूरानी

निर्माता : प्रेम लालवानी
निर्देशक : मानिक चटर्जी
संगीत : राहुल देव बर्मन
मुख्य कलाकार : रेखा, राकेश रोशन, उत्पल दत्त, उषा किरण, राकेश बेदी, ... वर्मा और अरुणा ईरानी.

कई वर्ष पहले गुरुदत्त और ... सिन्हा को ले कर 'बहूरानी' फिल्म ... निर्माण किया गया था. उस फिल्म ... नायकनायिका दोनों ने अपने अच्छे अभिनय से दर्शकों को प्रभावित किया था. ... 'बहूरानी' उस 'बहूरानी' के मुकाबले ज्यादा अच्छी तो नहीं कही जा सकती, ... विषय प्रस्तुतीकरण, अच्छे संवादों ... कारण कुछ हद तक अच्छी कही जा सकती है. फिल्म की बस एक ही कमजोरी है ... वह है इस की धीमी गति. अगर निर्देशक फिल्म में थोड़ी तेजी ला पाता तो फिल्म चल निकलती.

माधुरी (रेखा) एक पढ़ी... लड़की है जो अपनी विधवा मां और भा... साथ गांव में रहती है. शहर के एक ... आदमी के बेटे अमित (राकेश रोशन) ... साथ उस की शादी तय हो जाती है. अमित को यह रिश्ता मंजूर नहीं होता क्योंकि ... शहर की आधुनिक लड़की से शादी करना चाहता है, परंतु उस में अपने पिता से ... कहने की हिम्मत नहीं है. वह ... माधुरी से शादी कर लेता है, परंतु ... बाद ही वह उसे त्याग देता है. माधुरी शहर आती है और मालती बन कर अमित के दफ्तर में ही उस की सचिव बन जाती है. वह धीरेधीरे अमित को अपने प्रेमजाल में फंसा लेती है. अंत में जब अमित उस के सामने शादी का प्रस्ताव रखता है, तभी ... भेद खोलती है. अमित उसे स्वीकार ... लेता है.

फिल्म पारिवारिक है, मगर ... लचर है. मध्यांतर तक फिल्म की ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

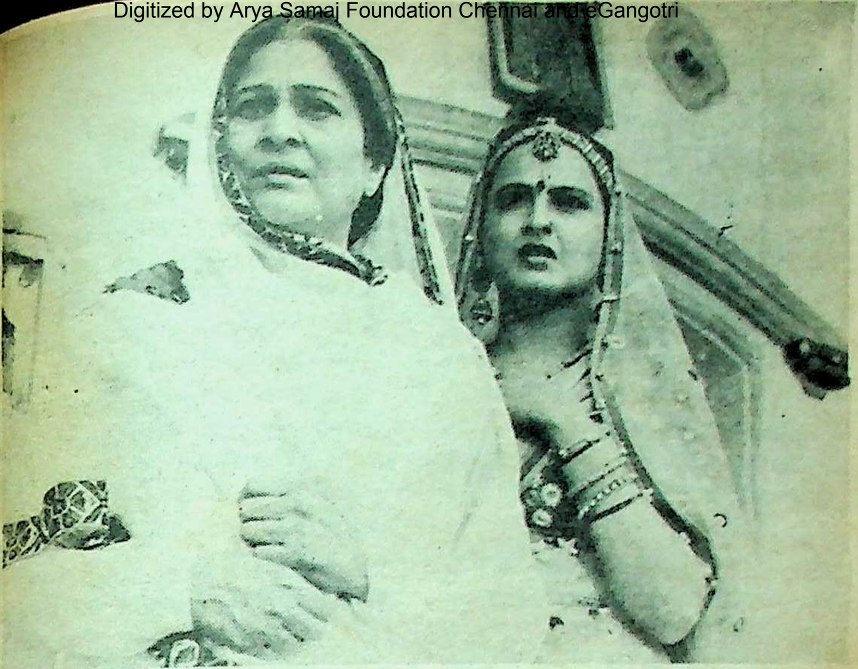

'बहूरानी' के एक दृश्य में रेखा और उर्मिला भट्ट.

काफी धीमी रहती है. निर्देशक मानिक चटर्जी ने बासु चटर्जी की तरह निर्देशन देने की कोशिश की है. बासु चटर्जी का अपना एक अलग ढंग है. फिल्म में जहांतहां हंसी की फुलझड़ियां छूट पड़ती हैं, खासकर उत्पल दत्त के संवाद सुन कर दर्शक खिलखिला पड़ते हैं.

बहुओं वाली भूमिकाएं रेखा अच्छी तरह कर लेती है. इस के अलावा बीवियों वाली भूमिकाएं भी यह ठीक ढंग से निभा लेती है. दो वर्ष पहले प्रदर्शित 'बीवी हो तो ऐसी' में रेखा ने जो स्वाभाविक अभिनय किया था, वह इस फिल्म में नदारद है. 'खून भरी मांग' में रेखा ने राकेश रोशन के साथ ही जो प्रणय दृश्य दिए थे, जो चुलबुलापन दिखाया था, दर्शक उस का इस फिल्म में इंतजार ही करते रह गए. वैसे इस फिल्म में वह आकर्षक दिखाई दी है, वैसी ही छरहरी, पतलीदुबली, जैसी आज से पांच वर्ष पहले दिखाई देती थी.

उत्पल दत्त के अभिनय की अपनी एक अलग शैली है. उस ने अपने अभिनय की छाप दर्शकों पर एक बार फिर से छोड़ी है. देवेन वर्मा का हास्य अभिनय दर्शकों को पसंद आएगा. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म के गीत अनजान ने लिखे हैं. एक गीत 'दुनिया की नजरों से छिप के मिले' अच्छा बन पड़ा है. फिल्म का छायांकन साफसुथरा है.

○ खूनी मुरदा

निर्मातानिर्देशक: मोहन भाखड़ी
संगीत: भप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार: दीपक पराशर, मीठी, जावेद खान, मयूर, पुनीत इस्सर, कामना, हुमा खान, राजेश विवेक, जगदीप तथा किरणकुमार (मेहमान कलाकार).

भारत में 'हारर' फिल्मों के निर्माता एफ. यू. रामसे की फिल्में देख कर डर नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता बल्कि हंसी आती है. इन फिल्मों का स्तर इतना घटिया होने के बावजूद आज भी दर्शकों का एक वर्ग इन्हें बड़े चाव से देखता है. यही कारण है कि सभी 'हारर' फिल्में आर्थिक रूप से फायदे का सौदा मानी जाती हैं. क्योंकि इन पर खर्च भी बहुत कम होता है.

इन फिल्मों में कहानी लगभग होती ही नहीं है. इस फिल्म की कहानी भी केवल इतनी सी है कि परिस्थितिवश कालिज के छात्रों के एक ग्रुप के हाथों एक बदमाश की हत्या हो जाती है. इस बदमाश की 'आत्मा' एकएक कर के इन छात्रों को खत्म करती है. अंत में जब कुछ छात्र बच जाते हैं तो एक तांत्रिक की मदद से इस आत्मा को खत्म किया जाता है.

फिल्म में विशेष प्रभाव दर्शाने के लिए जिस तकनीक का प्रयोग किया गया है, वह बहुत ही पुरानी है.

अगर जगदीप की अत्यंत अश्लील हरकतों एवं संवादों में आप की (कु) रुचि है तो यह फिल्म अवश्य देख सकते हैं. वैसे हालत यह है कि रामसे की फिल्में देख कर कम से कम हंसी तो आती है मगर इस फिल्म को देख कर तो वह भी नहीं आती, सिर्फ रोना आता है.

○ शानदार

निर्माता: टी.सी. दीवान
निर्देशक: विनोद दीवान
संगीत: बप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार: मिथुन चक्रवर्ती, सुमित सहगल, मीनाक्षी शेषाद्रि, जूही चावला, कादर खान, डैनी, मंदाकिनी तथा तनूजा.

आज नंबर एक के सिंहासन की तरफ बढ़ते अनिल कपूर के कदमों को कोई व्यक्ति यदि लगाम दे सकता है तो वह है मिथुन चक्रवर्ती. परंतु मिथुन यदि ऐसा नहीं कर पा रहा है तो उस का कारण यह है कि जहां एक ओर अनिल के कर्णधारों की सूची में सुभाष घई, एन. चंद्रा व सतीश कौशिक जैसे ... लोग शामिल हैं, वहीं ... ओर मिथुन के चहेते बी.सुभाष, के. ... व टी.सी. दीवान जैसे दूसरे दर्जे के निर्दे... हैं. नतीजा यह है कि मिथुन की ... घिसीपिटी फिल्मों का अंतहीन सिल... कहीं थमता दिखाई नहीं देता. यह फिल्म ... उसी सिलसिले की एक कड़ी है.

शंकर (मिथुन चक्रवर्ती) का ... अशोक (सुमित सहगल) 'बिजनेस मैने...' की डिगरी प्राप्त कर के घर लौटता है, ... उसे नौकरी नहीं मिलती. एक बदमाश ... (डैनी) अपने भाई की मौत का बदला ... से लेना चाहता है, अतः वह अशोक ... तस्करी के रास्ते पर डाल देता है. ... अशोक को वापस 'शराफत की दुनिया' ... लाने में सफल तो हो जाता है, परंतु ... एक विधायक एकनाथ चौरसिया (का... खान) के साथ जंग में अशोक मारा जाता है.

इस फिल्म में कहानी नाम की ... चीज लगभग है ही नहीं. बेतर... घटनाओं का सिलसिला मात्र है यह फिल्म...

फिल्म में गरीबों द्वारा अमीरों को ... भर कर कोसा गया है. एक स्थान ... नायिका यहां तक कह देती है, "अगर आ... लोगों को अपनी अमीरी का खुमार है तो ... भी अपनी गरीबी का नशा है."

घटिया निर्देशन के बावजूद मिथुन निराश नहीं करता. मीनाक्षी शेषाद्रि ने एक बार फिर अकड़ी हुई संवाद अदायगी के साथ अभिनय किया है.

○ प्यार का कर्ज

निर्मात्री : सुषमा शिरोमणि
निर्देशक : के. बपाय्या
संगीत: लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार: मिथुन चक्रवर्ती, मीनाक्षी शेषाद्रि, नीलम, सोनम, कादर खान, विनोद मेहरा, शक्ति कपूर और धर्में... (विशेष भूमिका में).

प्यार का कर्ज एक औसत भावुक... मसाला फिल्म है, जिस में दो बड़े नायक...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

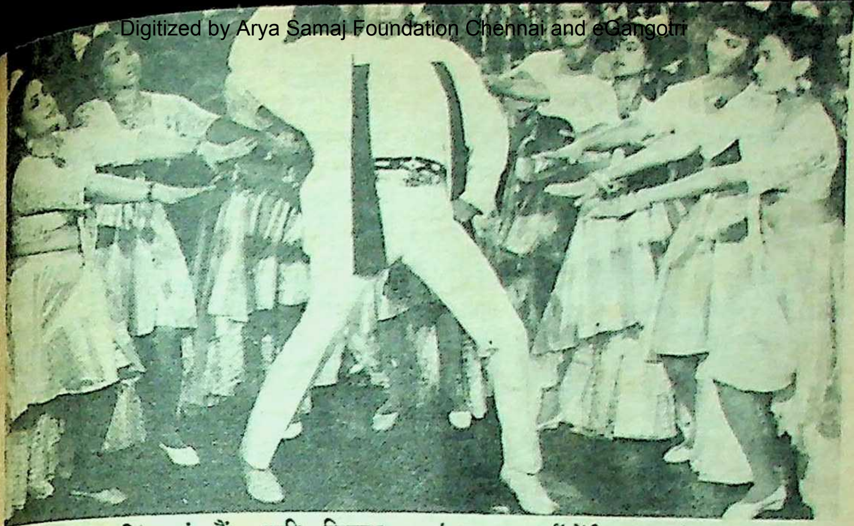

'प्यार का कर्ज' में मिथुन : परंपरागत नृत्य.

और तीन नायिकाएं हैं. पूरी फिल्म फ्लैशबैक में चलती है.

रविशंकर (मिथुन) एक गिटार वादक है जो डाक्टर नैना (मीनाक्षी शेषाद्रि) से प्यार करता है. राजपाल (रजा मुराद) एक आतंकवादी गिरोह का सदस्य है और एक राजदूत की हत्या करना चाहता है. नैना उस का यह प्रयास विफल कर देती है तो वह उस का अपहरण कर लेता है. वह उस पर किसी भी युवक से शादी करने का दबाव डालता है ताकि ठीक शादी वाले दिन वह उस राजदूत को खत्म कर सके. नैना को मजबूरी में रवि के दोस्त शाका (धर्मेंद्र) से शादी का नाटक करना पड़ता है. राजदूत की हत्या के प्रयास को शाका विफल कर देता है. रवि जब नैना और शाका को शादी के लिबास में देखता है तो उस का दिल टूट जाता है और वह दूर चला जाता है. उस की मुलाकात सीमा (नीलम) से होती है. दोनों में प्यार हो जाता है, फिर शादी हो जाती है. सीमा एक ब्लैकमेलर (शक्ति कपूर) से आतंकित है. वह ब्लैकमेलर सीमा तथा उस की बच्ची को मार डालता है. अब रवि को असलियत पता चलती है. वह ब्लैकमेलर को तो खत्म करता है, साथ ही राजपाल को भी मार डालता है. इस जंग में शाका भी मारा जाता है और रवि नैना का हाथ थाम लेता है.

फिल्म में दो गीत, एकदो सेट, थोड़ीबहुत कामेडी और आउटडोर शूटिंग में अच्छी फोटोग्राफी के अलावा ऐसा कुछ नहीं है जो दर्शकों को प्रभावित कर सके. निर्देशन सामान्य है तथा संवाद चालू. फिल्म में घटनाएं अधिक हैं. कहींकहीं एक घटना का दूसरी घटना से तालमेल नहीं बैठता.

अभिनय की दृष्टि से सभी कलाकार पुराने अंदाज में दिखाई देते हैं. मिथुन चक्रवर्ती ने इस फिल्म में एक बार फिर से दो नृत्य किए हैं. कादरखान और असरानी की कामेडी, कामेडी कम फूहड़पन अधिक लगती है. ऐसी कामेडी 'सी' क्लास दर्शकों को अवश्य पसंद आएगी. सोनम को सिर्फ अंग प्रदर्शन के लिए ही फिल्म में रखा गया है. मीनाक्षी और नीलम ने साधारण अभिनय किया है. धर्मेंद्र विशेष भूमिका में है. लगता है, उस के नाम को भुनाने के लिए ही उसे इस फिल्म में रखा गया है. फिल्म के गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं. एक गीत 'नैना तेरे नैनों की गलियों में' अच्छा बन पड़ा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

26, 162 सें.मी., डबल एम.ए. इतिहास, साईकोलोजी, एम.एड., डिप्लोमा मार्केटिंग मैनेजमेंट, स्लिम, लंबी, गोरी, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, प्रतिभावान, वैश्य विशनोई कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. विवाह सामान्य. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6751, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 22 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.बी.बी.एस., इंटर्नशिप कर रही, मेधावी कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 22, 148 सें.मी., बी.ए., गृहकार्यदक्ष, सुशील, सुंदर, मंगली कन्या हेतु प. उत्तरप्रदेशीय, बिहार में स्थापित, शाकाहारी, निर्व्यसनी, आत्मनिर्भर, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, जैन, 156 सें.मी., स्नातकोत्तर, अत्यंत गोरी, इकहरी, स्मार्ट, प्रतिष्ठित कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6764, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोत्र गोयल, 22, 163, एम.एससी. (गणित), एम.फिल. (गणित), रंग साफ, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु शिक्षित एवं प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6765, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 एवं 18 वर्षीया, गौरवर्ण, गृहकार्य निपुण, बारहवीं की छात्राएं, जाति स्वर्णकार, पिता मध्य प्रदेश में केंद्रीय सेवारत हेतु वर दहेज विहीन, उत्तम शादी, जाति, प्रांतबंधन नहीं. सेवारत को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6773, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, बी.ए. (आनर्स), साफ गेहुआं रंग, 157 सें.मी. लंबी, छरहरी, तीखे नाकनक्श, गृहविज्ञान, संगीत और कला में विशेष अभिरुचि वाली, स्वर्णकार कन्या के लिए सजातीय, योग्य वर चाहिए. इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6774, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी, प्रतिष्ठित, उच्च व्यवसायी, अग्रवाल पारिवारीय, 23 वर्षीया, 155 सें.मी., 42 किलो, स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक व्यक्तित्त्व, उच्च नक्षत्री (बृहस्पति केंद्रीय), एम.काम. फर्स्ट डिविजन, चार्टर्ड एकाउंटेंसी (इंटरमिडीयेट उत्तीर्ण) अध्ययनरत कन्या हेतु अति सुंदर, सुयोग्य, सजातीय (सिंहल गोत्र छोड़ कर) उच्च अधिकारी/प्रोफशनल/व्यवयासी वर चाहिए. पर्यंत तक बेहतरीन विवाह. विवाह उत्तम चयन हेतु. इच्छुक जन्मकुंडली पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6776, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, 19 वर्षीया, 155 सें.मी., बी.काम. (द्वितीय वर्ष) अध्ययनरत, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6863, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 160 सें.मी., एम.एससी., लेक्चरर, गोरी, स्लिम, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष, राजपूत, सरकारी अधिकारी की कन्या हेतु वायुसेना अधिकारी, सिविल आफीसर, पायलट क्लास वन को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6889, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा ब्राह्मण, 24 वर्षीया, 158 सें.मी., बी.ए., गौरवर्ण, गृहकार्य में कुशल कन्या हेतु सरकारी कर्मचारी, इंजीनियर, डाक्टर अथवा लेक्चरर वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. मध्य प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. जल्दी शादी. संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 6890, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25 वर्षीया, 152 सें.मी., गोरा रंग, इकहरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, शिक्षित एवं प्रतिष्ठित परिवारीय कन्यार्थ सुशिक्षित, सजातीय सेवारत वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6891, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, मंगली, 20, 150, एम.ए., कन्या हेतु सेवारत, मंगली वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 689[illegible], सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, सांवली, बी.ए. पास, महाराष्ट्रीय ब्राह्मण कन्या हेतु कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. पारिवारिक जानकारी सहित पत्रव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 6893, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राधास्वामी परिवारीय ऋषिकेश (जि.) देहरादून निवासी, 23 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए. प्रथम वर्ष, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, साधारण, सुशील, ब्राह्मण (भारद्वाज) कन्या हेतु सेवारत, व्यवसायरत, ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6894, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 24 वर्षीया, 160 सें.मी., एम.ए. इतिहास, गेहुआं (साफ) रंग हेतु राजकीय सेवारत उपयुक्त वर. लिखें: वि.नं. 6895, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, राजपूत कन्या, एम.फिल (नर्स), सांवली, आकर्षक, गृहकार्य में अत्यंत दक्ष, हेतु वर. जातिबंधन नहीं, प्रगतिशील परिवार. लिखें: वि.नं. 6896, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा (बढ़ई), 21 वर्षीया, 160 सें.मी., बी.ए., बी.एड., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय सुयोग्य, सुशिक्षित, ग्रेजुएट/पोस्ट ग्रेजुएट, डाक्टर, इंजीनियर, सेवारत वर चाहिए. पिता सीनियर आर्मी आफीसर/आर्मी आफीसर को वरीयता. विवाह उत्तम चयन हेतु. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 68[illegible] सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित सारस्वत ब्राह्मण परिवारीय, 24, 163 सें.मी., एम.काम., गृहकार्यदक्ष एवं सुशील कन्या हेतु प्रतिष्ठित व्यवसायरत, शासकीय सेवारत, सुंदर एवं स्वस्थ वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6898, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 155 सें.मी., (अ.ज.) मध्यमवर्गीय परिवार, डा. (एम.डी.), कन्या हेतु डा. एम.डी./एम.एस. या केंद्रीय सिविल सेवा अधिकारी वर चाहिए. दहेज इच्छुक कृपया क्षमा करें. लिखें: वि.नं. 6899, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्री, 26 वर्षीया, 158., डिप्लोमा (मैकेनिकल), ए.एम.आई.ई., सरकारी सेवा, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. राजस्थान में कार्यरत को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6900, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25 वर्षीय, 157 सें.मी., एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, स्लिम, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ व्यवसायी, सी.ए. इंजीनियर, माहेश्वरी, संपन्न परिवारीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6901, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जादौन राजपूत, 24, 170, एम.ए., बी.एड., एम.फिल (अध्ययनरत), रंग साफ, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु व्यवसायरत या प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त, दहेजविरोधी वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6902, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 160 सें.मी., जायसवाल, गोरी, सुंदर, दसवीं तक पढ़ी, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6903, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 162, सनाढ्य ब्राह्मण, एम.एससी., एम.फिल., गौरवर्ण, अति सुंदर, मेधावी, पूना स्थित कन्या हेतु ब्राह्मण, इंजीनियर वर चाहिए. उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 6904, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साहू (तैलिक वैश्य) राजस्थानी, शिक्षित परिवार, 23, 157, पोस्टग्रेजुएट, बी.एड., सुंदर, गौरवर्ण कन्या हेतु अच्छी सर्विसशुदा, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. पिता, भाई राजपत्रित अधिकारी. लिखें: वि.नं. 6905, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 20, 150 सें.मी., सभी परीक्षाएं उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण, पीएच.डी. अध्ययनरत, उत्तरप्रदेशीय, सुंदर, गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, पिता यूनिवर्सिटी प्रोफेसर कन्यार्थ सजातीय अधिकारी, इंजीनियर, डाक्टर, वैज्ञानिक या लेक्चरर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6906, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 159, स्मार्ट, सुंदर, एम.ए., बी.एड., एलएल.बी., अग्रवाल, दहेज कट्टर विरोधी, उच्चाकांक्षी, प्रगतिशील कन्यार्थ, स्मार्ट, उच्च शिक्षित अग्रवाल वर. लिखें: वि.नं. 6907, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 160, स्मार्ट, सुंदर, एम.ए., एलएल.बी., माथुर वैश्य, दहेजविरोधी, उच्चाकांक्षी, प्रगतिशील कन्यार्थ उच्च शिक्षित, वैश्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6908, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 153 सें.मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण, विधवा, निस्संतान, एम.ए., एम.एड., फर्स्ट डिविजन, डिग्री कालिज में अध्यापनरत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, कन्यार्थ सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. प्राथमिकता सजातीय को. लिखें: वि.नं. 6909, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल (ऐरन), 18 वर्षीया, 152 सें.मी., स्लिम, गृहकार्यदक्ष, मैट्रिक (प्रथम श्रेणी), सुंदर, सुशील, गौरवर्ण कन्या हेतु सजातीय वर (साधारण विवाह दहेज बिना) चाहिए. लिखें: वि.नं. 6910, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीया, ब्राह्मण, इंटरमीडिएट, कन्या हेतु आत्मनिर्भर वर चाहिए. धर्म, जातिबंधन नहीं, दहेज चाहने वाले क्षमा करें. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6911, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्यमवर्गीय सक्सेना कायस्थ, 157, 25, एम.ए., बी.एड., कन्या हेतु सजातीय सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6912, सरिता, नई दिल्ली-110055.

एम.एससी., बी.एड., 24, 161, स्लिम, साफ रंग, आकर्षक नयननक्श, लेक्चरर, 2,750/- मासिक, माहेश्वरी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6913, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 25, 150, स्नातक, गोरी कन्या हेतु अधिकारी, बैंक, प्रशासनिक, शाकाहारी, दहेजविरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6914, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 155 सें.मी., एम.ए., बी.एड., केंद्रीय विद्यालय अध्यापनरत, वेतन 2,020/- मासिक, सुंदर, सुशील, निरामिष, राजपूत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. दहेज अनिच्छुक, राजपत्रित अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6915, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव कायस्थ, 24, 163, बी.एससी., सुंदर, सांवली, सुशील, बिहार निवासी (पिता एस.डी.ओ.) कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य, आत्मनिर्भर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6916, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, कुर्मी, पब्लिक सेक्टर में जूनियर स्टेनोग्राफर, एम.ए., मासिक आय दो हजार, कन्या हेतु सजातीय (उत्तरप्रदेशीय), सरकारी सेवारत (कम से कम स्नातक), दहेजविरोधी, आदर्शवादी वर चाहिए. अतिशीघ्र एवं सादा विवाह. लिखें: वि.नं. 6917, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, क्षत्रिय (ठाकुर), अशिक्षित परंतु गौरवर्ण व समझदार कन्या हेतु दहेजविरोधी, सजातीय, स्वावलंबी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6918.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 एवं 28 वर्षीया, कनौजिया (धोबी), सरकारी सेवारत हेतु सजातीय, सरकारी सेवारत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6919, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अत्यधिक सुंदर, 22 वर्षीया, 160, ग्रेजुएट, नेशनल मेरिट स्कालरशिप होल्डर, पी.जी. डिप्लोमा (निर्यात) कोर्स अध्ययनरत, माहेश्वरी कन्यार्थ चार्टर्ड एकाउंटेंट, इंजीनियर, अधिकारी या व्यवसायी, मांगलिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6920, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पश्चिमी उत्तर प्रदेश निवासी, गहलौत राजपूत कन्या 23, 157, एम.ए., एम.फिल., अति सुंदर, गौरवर्ण हेतु सजातीय वर चाहिए. लेक्चरार या अच्छे पद पर सरकारी कार्यरत को प्राथमिकता. दहेज के इच्छुक पत्रव्यवहार न करें. लिखें: वि.नं. 6921, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ताम्रकार, हैहयवंशी क्षत्रिय, मंगली कन्या, एम.ए. (इंगलिश), 155, 25, हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6922, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 157, 55, एम.ए., बी.एड., सुंदर, गोरी, कन्यार्थ मंगली वैश्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6923, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20½ वर्षीया, मैट्रिक, 152, गृहकार्यदक्ष, पंजाबी अरोड़ा कन्या हेतु वर चाहिए. बदलते मौसम में हलकी सांस की तकलीफ, छोटे परिवार वालों को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6924, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शालीन, सुसंस्कृत, मैढ, क्षत्रिय, 25, 150, एम.ए. (अंगरेजी), बी.एड., तलाकशुदा कन्या हेतु सुयोग्य वर. लिखें: वि.नं. 6925, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव कन्या, 24 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.एससी. गणित, बी. म्यूजिक, डिप्लोमा बिजनेस मैनेजमेंट, स्लिम, सुंदर, गौरवर्ण परिवार, राजपत्रित अधिकारी हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6926, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 26, 160, सांवला रंग, मैकेनिकल में 66.6% डिप्लोमा, तथा डिगरी कर ली, आई.टी.आई. में कार्यरत कन्या हेतु स्वजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 6927, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 155 सें.मी., एम.ए., अति सुंदर, गृहकार्यदक्ष, स्लिम, सुशील, गोरी, गौड़ ब्राह्मण कन्या हेतु सरकारी सेवारत ब्राह्मण वर चाहिए. इंजी. व अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6928, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरी, सुंदर, स्लिम, एम.ए., 22, 155 सें.मी., कायस्थ कन्यार्थ वर. लिखें: वि.नं. 6929, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, जायसवाल, 150 सें.मी., ग्रेजुएट, गृहकार्य में दक्ष, सुशील कन्या हेतु मध्यमवर्गीय, जायसवाल या सजातीय योग्य वर चाहिए. विवरण शीघ्र लिखें: वि.नं. 6930, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 155 सें.मी., सुंदर, ... एम.ए. फाइनल अध्ययनरत, हेतु वर. इंजी... डाक्टर, राजपत्रित अधिकारी, मुरादाबाद, ... निवासी को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6931, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती ब्राह्मण, 31 वर्षीया, 148 सें.मी., 3,000/- रुपए, बैंक सेवारत, कन्या हेतु सुयोग्य ... चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. प्रथम बार में ... विवरण लिखें: वि.नं. 6932, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माथुर, 23 वर्षीया, 163 सें.मी., बिहार ... स्नातक, सुशील, गृहकार्यदक्ष कायस्थ कन्या ... सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 69... सरिता, नई दिल्ली-110055.

ठकुर, 25 वर्षीया, ग्रेजुएट, कन्या हेतु ... वर चाहिए. पिता उच्च अधिकारी, विवाह ... अति उत्तम. लिखें: वि.नं. 6934, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी, 23, 152, एम.ए. (फाइनल), बी... अति सुंदर, प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूल ... दिल्लीवासी हेतु वर. लिखें: वि.नं. 6935, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, सुंदर, एम.ए., बी.एड., ... वर्षीया, 150 सें.मी., गौरवर्ण कन्या हेतु ... चाहिए. लिखें: वि.नं. 6936, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैथिल ब्राह्मण, कन्या 32, 155 सें.मी., एम.ए. (डबल), बी.एड., लेक्चरार, कार्यरत, उत्तर ... इंटरमीडिएट महाविद्यालय, पिता उद्योगपति ... सुशिक्षित, प्रतिष्ठित वर चाहिए. शीघ्र विवाह लिखें: वि.नं. 6937, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, कुमरे गोत्रीय, गोंड अ./ज./... म.प्र. निवासी, तृतीय वर्ष बी.ए. अध्ययनरत ... सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6938, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्री स्वर्णकार, 23, 160, एम.ए., बी.एड., गौरवर्णीय, सुंदर, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु ... सुयोग्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. शीघ्र लिखें: वि.नं. 6939, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, 158 सें.मी., कुर्मि ... उत्तरप्रदेशीय, एम.ए. (अर्थशास्त्र), सरकारी ... गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु सजातीय ... उत्तरप्रदेशीय, दहेजविरोधी वर चाहिए. ... नवयुवक स्वयं लिखें: वि.नं. 6940, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जयसवाल, एम.ए., पीएच.डी., लेक्चरार, ... 157, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु ... चाहिए. लिखें: वि.नं. 6941, सरिता, नई दिल्ली-...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110055.

23 वर्षीया, 152 सें.मी., तलाकशुदा, प्रतिष्ठित सिंधी, सुशील, सुंदर, गृहकार्य में अति निपुण कन्या हेतु प्रतिष्ठित सिंधी परिवारीय, कुंआरा, निस्संतान, तलाकशुदा वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6942, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, सक्सेना, सुंदर, स्मार्ट, स्लिम, गोरी, एम.एससी., कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 6943, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 156 सें.मी., गेहुआं रंग, श्रीवास्तव, एम.ए. कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, कार्यरत, बिहार निवासी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 7000, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 156 सें.मी., कायस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, स्नातक, निस्संतान, विधवा हेतु सुयोग्य, रूढिमुक्त वर. लिखें: वि.नं. 7001, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 22 वर्षीया, 157 सें.मी., एम.ए. (राजनीति शास्त्र), यू.पी. निवासी, गौरवर्ण, बिंदल गोत्र, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 7002, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूमिहार ब्राह्मण, 21, 165, बी.ए. पास, गौरवर्ण, सुंदर, स्मार्ट कन्या हेतु उपयुक्त पात्र लिखें: वि.नं. 7003, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, मुसलिम सुन्नी, बी.ए., बी.एड., केंद्रीय सरकार सेवारत एवं 24 वर्षीया, बी.ए., केंद्रीय सरकार, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्याओं हेतु सुयोग्य, सेवारत सुव्यवस्थित वर चाहिए. उत्तर प्रदेश निवासी प्रथम विचारणीय. शादी बहुत जल्द. लिखें: वि.नं. 7004, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरी, स्लिम, घरेलू, गुप्ता (गोयल), 26, 167, एम.ए. कन्या हेतु लंबा, स्नातक, वैश्य वर चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. पिता तथा भाई बैंक अधिकारी. लिखें: वि.नं. 7005, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिकरवार क्षत्रिय, 21 और 23, 155 सें.मी., ग्रेजुएट, अति सुंदर, गौरवर्ण, मृदुभाषी एवं सुशील कन्याओं हेतु उच्च सेवारत/व्यवसायरत, सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 7006, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीय ब्राह्मण, 29, 152 सें.मी., एम.एससी., एम.एड., गौरांग, पूर्वी उत्तरप्रदेशीय, सरकारी सेवारत, 3,000/-, शिक्षित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर लिखें: वि.नं. 7007, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप, कहार धीवर, 25, 150, एम.काम., पब्लिक स्कूल अध्यापिका, दिल्लीवासी, गेहुआं, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 7008, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 22, 155 सें.मी., एम.एससी., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु स्वजातीय, इंजीनियर, डाक्टर या समकक्ष अधिकारी, सुयोग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 7009, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सारस्वत वसिष्ठ गोत्र, स्वस्थ, सुघड़, गृहकार्य में कुशल, एम.ए., बी.ए., आयु 24, 22, लंबाई, 160, 158, दो सगी बहनों के लिए योग्य वर. जातिबंधन, दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 7010, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, एम.ए., 25, 160, कार्यरत कन्या हेतु सनाढ्य या गौड़ ब्राह्मण वर चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 7011, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए., गर्ग गोत्र अग्रवाल, सुंदर कन्या, गृहविज्ञान, पाककला, सिलाई, कढ़ाई आदि गृहकार्यों में दक्ष, पी.सी.एस. परीक्षा दी जा चुकी, परीक्षाफल अभी नहीं. आई.ए.एस. परीक्षा आवेदित, कुशाग्र बुद्धि, सामाजिक रीतिरिवाज के अनुसार विवाह हेतु योग्य वर चाहिए. जन्मपत्रिका सहित पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 7012, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 21, 157, एम.ए., बी.एड., रंग साफ, स्लिम, सुंदर कन्या हेतु सरकारी सेवारत या इंजीनियर, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 7013, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश निवासी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 23, 163, बी.ए. अध्ययनरत, गोरी, दुबलीपतली, मृदुभाषी, अल्प भाषी, सुंदर, पूर्णरूपेण घरेलू कन्या वास्ते किसी प्रांत के, कोई ब्राह्मण, ब्राह्मणोचित संस्कारमय परिवार का, पुलिस, सेना के किसी अंग, सिविल, फारेस्ट, बैंक, कालिज, ख्यातिप्राप्त लिमिटेड कंसर्न में अधिकारी या समकक्ष वेतनवालों, दहेज विरोधी लड़का चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी, शीघ्र शादी. लिखें: वि.नं. 7014, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 155, मैट्रिक, अति सुंदर, गृहकार्य निपुण, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 7015, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 163 सें.मी., 2,200/-, बैंक कार्यरत, निर्दोष तलाकशुदा, आत्मनिर्भर, स्वतंत्र, ब्राह्मण कन्यार्थ कार्यरत, कोर्ट मैरिज को सहमत, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. सविवरण लिखें: वि.नं. 7016, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 24½, 160, एम.ए., गेहुआं रंग, सुशील, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, उत्तम परिवारीय कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य, इंजीनियर, डाक्टर, सरकारी आफीसर वर चाहिए. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 7017, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्नोई, 20 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.ए., सुंदर, गोरा रंग, परिवारीय, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुंदर वर चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7018, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

मैढ राजपूत, 21 वर्षीय, निजी व्यवसायरत, हर तरह से सुविधासंपन्न लेकिन चलनेफिरने में असमर्थ, रंग साफ, युवक हेतु वधू चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6816, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 29, 170, अंगरेजी माध्यम शिक्षित, आय चार अंकीय, व्यवसायी, सुंदर, संपन्न परिवार, पिता अवकाश प्राप्त केंद्रीय सरकार के एवं भाई बैंक में प्रथम श्रेणी अधिकारी, हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. उत्तम तथा शीघ्र विवाह. दहेज तथा जातिबंधन नहीं, प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6817, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पुत्रवधू रूप में दो प्यारी सी बेटियों की तलाश है. कन्याएं इज्जतदार (चाहे गरीब) परिवार की, सुंदर, समझदार, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक विचारों वाली होनी चाहिए. उचित कन्याएं मिलते ही साधारण विवाह तीन कपड़ों में शीघ्र. अमरीका में बसे, हिंदी एवं पंजाबी भाषी, देहलवी, पूर्णतया भारतीय विचारधारा वाले, बहुत प्यार देने वाले, संपन्न परिवार में मातापिता एवं हैंडसम, कम्प्यूटर प्रोफेशनल, 32, 178 सें.मी., एवं 26, 180 सें.मी., दो पुत्र, कोई बंधन नहीं. कन्या मुख्य, प्रथम बार संपूर्ण पारिवारिक जानकारी, जन्मतिथि, ताजा फोटो आवश्यक. इच्छुक परिवार अथवा कन्याएं निस्संकोच, विश्वास के साथ लिखें: DEAR PARENTS, BOX 16363, ATLANTA, GA 30321, USA.

नेत्रहीन युवक, 27, 157 सें.मी., एम.ए., संगीत शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय (पंजाब में), वेतन, 1,700/- हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. मामूली विकलांग, निस्संतान तलाकशुदा, विधवाएं भी. जाति, दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 6818, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय सेवारत, 27, 168, 1, 600/-, एम.ए., शाक्य कुलीन, नेत्रहीन युवक हेतु मृदुभाषी, विचारशील, साक्षर वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6819, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, 35, 180, 2,500/-, बी.ए., एलएल.बी., हरियाणा सरकार में सेवारत, स्थाई संपत्ति, हरियाणवी युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6820, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मुसलमान बैचलर हेतु कैरियर+ गृहस्थाकांक्षी सवर्ण, आकर्षक, 30 वर्षीया, अध्यापिका (गणित/विज्ञान). स्वैच्छिक गैरमुसलिम स्वीकारणीय. लिखें: वि.नं. 6825, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 2, 600/-, 35 वर्षीय, स्नातकोत्तर, माध्यमिक शिक्षक हेतु दहेज, बंधनादि मुक्त, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 28, 168, गोरा रंग, सिविल इंजी... सरकारी सेवारत युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित ... चाहिए. महाराष्ट्रवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, 28, 175, 5,000/-, ... व्यापारी/मोटर मैकेनिक को दहेज विरोधी, ... कन्या चाहिए. सैनिक परिवारों को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, गुप्ता, 36 वर्षीय, विधुर, ... बच्चे, लड़की 15, 13, 9, लड़का 11 वर्ष, ... निवासी, निर्व्यसनी, संभ्रांत परिवार, निजी ... कार, टेलीफोन, व्यवसायी, आय पांच अंकीय, ... घरेलू, गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी चाहिए. ... निस्संतान विधवा, तलाकशुदा, संतानोत्पत्ति ... तथा भविष्य में संतान अनिच्छुक चाहिए. ... संतानोत्पत्ति असमर्थ तथा भविष्य में संतान ... को/दहेज, जातिबंधन नहीं, निस्संकोच लिखें: वि.नं. 6836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय राजपूत (ठाकुर), बिहारवासी, ... वर्षीय, स्नातक, साईंस एवं ला, आकर्षक, ... 167 सेंमी., सरकारी पदाधिकारी, मासिक ... 6,800/-, शहर एवं देहात में मकान, जमीन, ... पत्नी की अक्षमता के चलते निस्संतान विधुर ... सजातीय, सुंदर, सुशील, शिक्षित, पारिवारिक ... गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज रहित, शीघ्र, ... विवाह माल्यार्पण से मंदिर में, प्रथम बार ही ... विवरण सहित लिखें, विज्ञापन उत्तम चयनार्थ ... वि.नं. 6837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 167 सें.मी., अनुसूचित जाति, मासिक ... चार अंकों में, विदेश में कार्यरत, विधुर हेतु ... सुशील, गृहकार्य में दक्ष, स्टाफ नर्स, ... सरकारी नौकरीशुदा, 30-35 वर्ष तक की ... निस्संतान तलाकशुदा, बच्चों में रुचि रखने ... सजातीय ही जीवनसंगिनी चाहिए. दिल्ली, ... हरियाणावासी को प्राथमिकता. लिखें: ... ADVERTISER, P.O. BOX–3579..., ... LAN, B.B. ALI, SULTANATE ... OMAN.

25 वर्षीय, 170 सें.मी., ग्यारहवीं पास, ... व्यवसाय, आय 4, 000/-, युवक हेतु सुंदर, ... वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं, साधारण ... लिखें: वि.नं. 6944, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28½', 165, मांगलिक, भारद्वाज ... एम.बी.बी.एस. डाक्टर हेतु सजातीय, ... सुंदर, गौरवर्ण कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण ... सहित लिखें: वि.नं. 6945, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 25, 170 सें.मी., ... एम.बी.ए., प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान में कार्यरत, ... युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखें: वि.नं. 6946, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 166, बी.ए., शाकाहारी, प्रतिष्ठित, संपन्न परिवारीय, हैदराबाद निवासी, व्यवसायी, 5, 000/- मासिक, हेतु स्लिम, सुंदर, स्मार्ट, गोरी, स्नातिका वधू चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6947, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 26, बी.ए., पक्की सर्विस, वेतन 2,300/-, प्रतिमाह, युवक हेतु सुंदर, गोरी, शिक्षित कन्या चाहिए. जाति, दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6948, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 39 वर्षीय, विधुर, 170 सें.मी., निजी मकान, ज्वैलरी शाप (एक लड़का 11 वर्षीय, एक लड़की 10 वर्षीया), हेतु सुशिक्षित, सुशील कन्या चाहिए. अग्रवाल, माहेश्वरी, गुजराती जैन मान्य, शीघ्र विवाह, पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6949, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46 वर्षीय, 70 कि.ग्रा., 150 सें.मी., अविवाहित युवक हेतु योग्य जीवनसाथी, दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6950, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., आकर्षक व्यक्तित्व, प्रतिष्ठित, संपन्न, सुशिक्षित परिवारीय, बी.ई. (सिविल), एम.एस. (इंजीनियरिंग) अमरीका से कर के वहीं सरकारी इंजीनियरिंग पद पर कार्यरत, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित (इंजीनियर/डाक्टर/विज्ञान स्नातक) वधू चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 6951, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 170, 2,000/-, सरकारी कंपनी में सेवारत, गूंगे, युवक हेतु वधू चाहिए. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6952, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, सिविल इंजीनियर, 27, 170, शारजाह (यू.ए.ई.) में कार्यरत हेतु सजातीय, सुंदर, आर्किटेक्ट, डेंटल डाक्टर/साइंस/अंगरेजी में पोस्ट-ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6953, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोली (अ.जा), 25, 158, एकसाइज इंस्पेक्टर, हेतु स्नातक, गोरी, सुंदर वधू चाहिए. टीचर को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6954, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई हिंदू, 29 वर्षीय, 160 सें.मी., एलएल.बी., क्लर्क हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6955, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुर्जर, 25, 172 सें.मी., ग्रेजुएट, वेतन 2, 000/-, केंद्रीय कार्यरत युवक हेतु सुंदर, योग्य, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6956, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 47, माहेश्वरी, चार बच्चे, निजी व्यवसाय, हेतु घरेलू, धार्मिक, विचारवान, संभ्रांत परिवारीय, संतानोत्पत्ति अनिच्छुक वधू चाहिए. निस्संतान विधवा मान्य. लिखें: वि.नं. 6957, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 159, 3,500/-, राजपत्रित अधिकारी हेतु आकर्षक, सुशिक्षित, सुशील कन्या चाहिए. पिता राज्य सेवा में उच्च पद पर, पारिवारिक उद्योग व्यवसाय भी है. लिखें: वि.नं. 6958, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 26, 160 सें.मी., एम.बी.बी.एस., एम.डी. (अध्ययनरत), हेतु अति सुंदर कन्या चाहिए. मेडिको को वरीयता. लिखें: वि.नं. 6959, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25, 170 सें.मी., सुंदर, बी.ए., एलएल.बी., अत्यंत सुखी, संपन्न परिवार, निजी उद्योग, मासिक औय पांच अंकीय. बिहार निवासी हेतु अति सुंदर, सुशिथित कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6960, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 162, 1,800/-, डबल पोस्ट ग्रेजुएट (कानवेंट) जबलपुर, केंद्र सरकार लिपिक, मोना पंजाबी ब्राह्मण युवक हेतु वधू. कार्यरत को प्राथमिकता. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6961, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 28, 155, इंटरमीडिएट, पियरलेस एजेंट, हेतु गोरी, सुंदर, मैट्रिक कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 6962, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 32, 183, 4,000/-, एम.एससी., बैंक आफिसर हेतु गृहकार्यदक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6963, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 180, 1,700/-, बैंक कार्यरत, स्नातक, निर्व्यसनी, साफ रंग, स्वस्थ, सुंदर, पटना निवासी, अग्रवाल युवक हेतु सुंदर, गुणवती वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6964, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदी भाषी, गुजरात निवासी, एकमात्र संतान, फाइनल सी.ए., 27, 175, 3,000/- मासिक आय, मातापिता उच्च शिक्षा प्राप्त, उच्च पदों पर, खानदानी व उच्च मध्य वर्ग, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण युवक हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित, व्यापक दृष्टिकोण वाली, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6965, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी सुखरैन, 27, 175, इंटर, आई.टी.आई., सरकारी सेवा में नियोजित युवक हेतु सुंदर, सुशील, घरेलू कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6966, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, बंगाली, कायस्थ, 171, ड्राइवर, आय 3,000/-, हेतु सुंदर वधू चाहिए. जातिबंधन और दहेज रहित. लिखें: वि.नं. 6967, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 172 सें.मी., 65 कि.ग्रा., रु. 2,000/-, मैकेनिकल डिप्लोमा धारक, सेवारत, व्यसनहीन हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, पंजाबी कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6968, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौरसिया, इंटर साइंस, 25 वर्षीय, 170 सें.मी., औषधी निर्माण वाराणसी तथा व्यापार बिहार, युवकार्थ वधू. लिखें: वि.नं. 6969, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 158, निस्संतान विधुर, सेवारत, इंजीनियर, चमार हेत संुदर, इकहरी, आकर्षक, उच्च शिक्षित, सेवारत वधू चाहिए विधवा, तलाकशुदा विचारणीय. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6970, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, सुंदर, बी.ए., ब्राह्मण नवयुवक, प्रतिष्ठित परिवार, अपना कारोबार, आय चार अंकों में, हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6971, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जयपुर निवासी, ब्राह्मण, 40, 166 सें.मी., शिक्षित, स्वस्थ, अविवाहित, स्वतंत्र, व्यवसायी, अच्छा परिवार (एक पैर थोड़ा पोलियो ग्रस्त परंतु चलने में बाधा नहीं), हेतु सुशील, शिक्षित युवती चाहिए. निस्संतान परित्यक्ता भी विचारणीय, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6972, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, उद्योगरत, माहेश्वरी विधुर के लिए माहेश्वरी/अग्रवाल/ओसवाल, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष जीवसंगिनी चाहिए. युवक के पूर्व विवाह से एक चार वर्षीय संतान भी है. योग्य वर के इच्छुक शीघ्रातिशीघ्र पत्रव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 6973, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौरवर्णीय, सुंदर, सुयोग्य, स्मार्ट, राजपूत, लंबाई 171, निजी व्यवसाय, मासिक आय 5 अंकों में, 24 वर्षीय वर हेतु सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6974, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, मल्होत्रा (खत्री) लड़का, एम.ए., 170, अपना कोचिंग कालिज, 5,000/- मासिक, हेतु पढ़ीलिखी, सुंदर कन्या. लिखें: वि.नं. 6975, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन ब्राह्मण, 29, 173, 3,100/-, एम.ए., सरकारी अध्यापक, निजी संपत्ति, हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6976, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यवसायी परिवारीय युवक, बी.काम. जैन, उम्र 25, एक पांव पूरा नहीं मुड़ता चाल में फर्क नहीं, ऐसी कन्या को अपनाने का इच्छुक जिस के अभिभावक घरजंवाई के रूप में स्वीकार कर सकें, विकलांग भी स्वीकार्य, केवल व्यवसायी एवं उद्यमी ही लिखें: वि.नं. 6977, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित, माहेश्वरी परिवार, 26 वर्षीय, 173, बी.काम (आनर्स), बंबई, आसाम में निजी व्यवसायरत, सुविधासंपन्न युवक हेतु सजातीय, सुंदर, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 6978, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रचलित विवाह औपचारिकताओं के प्रति अनास्थावान, पंजीकरण हेतु तत्पर, ... महाविद्यालीय वाणिज्य प्राध्यापक, (29, 17... 3,000/-,) संग सुशिक्षित, कामकाजी, नास्तिक, ... ज्ञाता, मांसाहारी, रूढ़िमुक्त, उदार, प्रबुद्ध, निस्संकोची, चित्ताकर्षक, स्वतंत्र विचार संपन्न, अन्यथा ... युवतियां समस्त परंपरागत बंधनविहीन ... अनुकूलता, मूल्यांकनार्थ स्वयं लिखें: वि.नं. 69... सरिता, नई दिल्ली-110055.

28½ वर्षीय, 165, एम.ए., रंग गेहुआं ... आकर्षक व्यक्तित्व, मासिक आय 4,000/-, ... संपत्ति व जमीन वाले ठाकुर (क्षत्रिय) युवक हेतु ... सुशील, आकर्षक गृहकार्यदक्ष, शिक्षित वधू चाहिए. जाति व दहेजबंधन नगण्य. लिखें: वि.नं. 69... सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा (विश्वकर्मा) परिवारीय, 27 वर्षीय, मैट्रिक, निजी व्यवसाय राजस्थान, मूल निवासी उत्तर प्रदेश, हेतु वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 6981, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूतपूर्व फौजी अफसर, अब मेडिको, 41 ... 181 सें.मी. लंबाई, स्वस्थ, हंसमुख स्वभाव, ... आवश्यकता है ऐसी युवती की जो सर्वप्रथम ... सुशील, स्वस्थ, स्वभाव से सुंदर, मृदुभाषी, गृहकार्य-दक्ष, सेवा भावना, प्रेमसहानुभूति रखने वाली, ... निस्संकोची, संकीर्ण, धार्मिक रूढ़िवादी विचारों से मुक्त, बाल लंबे, थोड़ी अंगरेजी भाषा का ज्ञान हो ... अच्छा है. गरीब, बेसहारा अवश्य पत्रव्यवहार ... युवती स्वयं पत्रव्यवहार करे. RAJA SHARMA, P.O. BOX 8175, STN F, EDMONTON, ALTA CANADA, T6H4PI.

27, 163, खटीक, राष्ट्रीयकृत बैंक ... युवक हेतु सरकारी कार्यरत, दिल्ली निवासी ... चाहिए. लिखें: वि.नं. 6982, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, अविवाहित युवक, 38, 160, 2,7... एम.ए., एलएल.बी., केंद्रीय सरकार में सहायक ... सुयोग्य वधू. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 69... सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 27 वर्षीय, 158 सें.मी., 62 कि.ग्रा., मथुरा निवासी, मर्चेंट नेवी अधिकारी, 25,000/-, ... 22-24 वर्षीया, सुशिक्षित परिवार की स्नातक ... चाहिए. कानवेंट शिक्षित को वरीयता. दहेज ... लिखें: वि.नं. 6984, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 25, 170, बैंक में प्रोबेशनरी अधिकारी, ... सुंदर, स्वस्थ युवक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित ... चाहिए. जाति कोई बंधन नहीं. प्रथम बार ... लिखें: वि.नं. 6985, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, रोमन कैथोलिक, 170, ... निजी व्यवसाय, मासिक आय 5,000/- से अधिक, ... गौरवर्ण युवक हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष ... चाहिए. लिखें: वि.नं. 6986, सरिता, नई दिल्ली-...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110055.

13 वर्ष से मिडूलईस्ट में सेवारत, सुन्नी मुसलिम, 42 वर्षीय, 185 सें.मी., स्मार्ट, इलेक्ट्रोनिकलटेक्नीशियन, आय मासिक पांच अंकों में, शादीशुदा, पहली पत्नी से संतान लाभ विहीन, धार्मिक नियमों मुताबिक, इंशाअल्लाह हर तरह से दो पत्नियों के साथ संपूर्ण न्याय करने में समर्थ, संतान प्राप्ति की उम्मीद में 30 वर्ष से कम आयु वाली मेच्युअर्ड, परेजगार, पाकदामन कन्या संपूर्ण विवरण सहित लिखें; हाफीजाए-कुरान विधवा या नव मुस्लमा को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6987, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश निवासी, श्रीवास्तव, 26, 180 सें.मी., साइंस स्नातक, डी.पी.एड., निजी दुकान, मकान, फोन, कार, आयकर दाता, व्यवसायी, हेतु अति सुंदर, गौरवर्ण, सुशिक्षित कन्या चाहिए. मेडिकल अध्ययनरत को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 6988, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 170, सरयूपारीय ब्राह्मण, कश्यप गोत्र, बी.काम., केंद्रीय वेतनमान में अध्यापक पद पर कार्यरत, मासिक वर्तमान आय 2,200/-, स्वस्थ, गौरवर्ण युवक हेतु सजातीय, ट्रेंड ग्रेजुएट, एम.ए., एम. ए.सी., अति सुंदर, सुशील, कुलीन, अविवाहित कन्या चाहिए. सविवरण लिखें: वि.नं. 6989, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 161, 2,200/-, राजस्थानी नामदेववंशी (जोशी), अंगरेजी शिक्षक (केंद्रीय विद्यालय) हेतु सुशिक्षित, आकर्षक कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 6990, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.ए., स्मार्ट, प्रतिष्ठित, गौड़ ब्राह्मण, उच्च व्यवसायी युवक हेतु अति सुंदर, सजातीय, सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 6991, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू युवक, 22, 183, 5,000/-, धनी परिवार, अपना मकान, अनुशासित, स्वस्थ, संगीत में पारदर्शी, लेकिन जन्म से एक आंख, हेतु अच्छी स्वभाव की आकर्षक कन्या, मामूली विकलांग भी स्वीकार्य. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 6992, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्नोई, 29 वर्षीय, 175 सें.मी., एम.ऐससी., स्टेट बैंक सेवारत, इकलौता पुत्र, स्वयं का बंगला, हेतु सुंदर वधू चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 7019, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, केंद्रीय कर्मचारी, 52, मासिक आय 2,500/-, एवं निजीघर, हेतु 40-45 वर्षीया, विधवा या परित्यकता जो बेसहारा, निस्संतान एवं शाकाहारी हो, जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7020, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तरप्रदेशीय, 35 वर्षीय, गौतम ब्राह्मण, विधुर, बैंक एकाउंटेंट हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. पूर्व पत्नी से 3 बच्चे, बड़ी बेटी 10 वर्ष की. गौतम कन्या को वरीयता, अन्य ब्राह्मण विचारणीय. लिखें: वि.नं. 7021, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 180, सुदर्शन, कार्यरत, डिप्लोमा इंजीनियर हेतु सजातीय, ऊंची, गोरी, अधिकतम बाइस वर्षीया, सुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 7022, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 24, 173, बी.ई., एम.बी.ए., स्वस्थ, सुंदर युवक हेतु इंजीनियर, डिग्रीधारी कन्या पक्षवाले जन्मकुंडली सविवरण लिखें: वि.नं. 7023, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन भाइयों 27, 176 व 24, 168, ग्रेजुएट, सुंदर, स्वस्थ, सुसंपन्न, उच्चस्तरीय व्यापार, मासिक पांच अंकीय आय, समस्त आधुनिक सुविधाएं, अन्य जायदाद, हेतु असामान्य सुंदर, जैन/अग्रवाल, मंगली/नानमंगली कन्याएं. लिखें: वि.नं. 7024, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, मांगलिक, 27 वर्षीय, 180 सें.मी., ग्रेजुएट, कलकत्ता में व्यवसायरत, मध्यमवर्गीय, आमिष, निरामिष, छोटा परिवार, स्मार्ट, सुंदर, श्याम वर्ण, व्यवसायी के एकमात्र पुत्र के लिए वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. गोरी, सुंदर, पढ़ीलिखी, गृहकार्यदक्ष, मांगलिक हो या न हो, जन्मपत्री के साथ प्रथम बार में पूर्ण विवरण साथ लिखें. विज्ञापन उत्तम चयन वास्ते, जायसवाल को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 7025, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (महरा-कहार-धीवर), इंजीनियर (मैकेनिकल डिप्लोमा), 26, 165, 3,000/- एवं बी.काम., 24, 170, 6,000/-, दिल्ली निवासी, सम्माननीय परिवार, हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधुएं चाहिए. लिखें: वि.नं. 7026, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, अति संपन्न परिवारीय, 27,166, शिक्षित, रंग साफ, श्रेष्ठ खानदान, सुव्यवस्थित व्यवसाय, अच्छी मासिक आय चार अंकीय एवं प्रापर्टी वाले स्मार्ट नवयुवक हेतु गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7027, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 170, 1,200/-, बी.काम., प्राइवेट नौकरी, सदाचारी ब्राह्मण युवक हेतु वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7028, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42, 3,000/-, केंद्रीय कार्यरत, विधि स्नातक, तलाकशुदा (एक 16 वर्षीय पुत्र साथ), शाकाहारी हेतु वधू चाहिए. सीधीसादी, मृदुभाषी, शाकाहारी, आत्मविश्वासी, विधवा, तलाकशुदा, शिक्षित, बेसहारा, स्वयं निर्णायिका को प्राथमिकता. जाति, प्रांत, दहेजबंधन नहीं. बिना खर्चे की शादी. लिखें: वि.नं. 7029, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 168, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, बी.टेक., असिस्टेंट इंजीनियर (राजपत्रित), उत्तर प्रदेश (पिता राजपत्रित, प्रतिष्ठित परिवार) युवकार्थ, अति सुंदर वधू. लिखें: वि.नं. 7030, सरिता, नई दिल्ली-

अप्रैल (प्रथम) 1990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110055.

निगम कायस्थ, झांसी मंडल निवासी, एम.ए., 26 वर्षीय, सेवारत, आय 1,500/-, हेतु शिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 7031, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25, 168, 3,000/-, बी.काम., स्मार्ट युवक के लिए सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 7032, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सौम्य, शालीन, संस्कारित, न्यायाधीश युवक, आंशिक विकलांग, दाहिना पांव पोलियो ग्रस्त, 25, 161, 3,200/-, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7033, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

26½, 152 सें.मी., 3,300/-, गोरी, सुंदर, गृहकार्य कुशल, मिलिट्री नर्सिंग में लेफ्टीनेंट कन्या एवं 25½, 165 सें.मी., 2,200/-, रेलवे सर्विस, डिग्रीधारी, आकर्षक, युवक हेतु योग्य, पंजाबी खत्री, कार्यरत वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6993, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत (तोमर ठाकुर), म.प्र. निवासी, 29, 160, बी.ए., गौरवर्ण, आकर्षक एवं गृहकार्य में दक्ष [illegible] हेतु सुयोग्य, शिक्षित, सेवारत, व्यवसायरत वर चाहिए एवं भाई 31, 168, 3,500/-, इंजीनियर [illegible] (सिविल), सरकारी सेवारत हेतु सुयोग्य, शिक्षित [illegible] चाहिए. एक ही परिवार से संबंध स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 6994, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 25 वर्षीया, 164 सें.मी., बी.[illegible] (आनर्स), कन्या एवं भाई 27 वर्षीय, 175 सें.मी., बी.काम., केंद्रीय सेवा कार्यरत (2,600/-), [illegible] कानवेंट शिक्षित हेतु सुयोग्य वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 6995, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता : 4.50 रु. प्रति शब्द
वूमंस ईरा : 2.50 रु. प्रति शब्द
सरिता व वूमंस ईरा : 5.50 रु. प्रति शब्द.

अन्य व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर सरिता में 7.00 रु. प्रति शब्द है, तथा वमूंस ईरा में 4.00 रु. प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 1.50 रु. अतिरिक्त यानी 8.50 रु. प्रति शब्द होगा.

धनराशि अग्रिम आने पर ही आप का विज्ञापन प्रकाशित किया जा सकेगा.

विज्ञापन की कटिंग/कटिंग्स विज्ञापन प्रकाशित होने के पश्चात भेजी जाएंगी.

पूर्ण विवरण के लिए लिखें :

मुख्य विज्ञापन कार्यालय
दिल्ली प्रेस पत्रिका विभाग
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001.
फोन नं.-3321313.

गोद विज्ञापन

निस्संतान राजस्थानी युवा दंपती (राष्ट्रीयकृत बैंक अधिकारी, आय 40,000) को एक वर्ष से छोटा स्वस्थ, सुंदर, लावारिस बालक गोद चाहिए. [illegible] क्षेत्र में जब भी ऐसा बालक मिले, तुरंत लिखें: पत्र [illegible] गोपनीय. इच्छुक अनाथालय, स्वयंसेवी संस्थाएं लिखें: वि.नं. 6996, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य दंपती 2 साल तक का स्वस्थ, सुंदर, गोरा लड़का गोद चाहते है. अनाथालय भी लिखें: वि.नं. 6997, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण युवक, 23, 164, बी.एससी. अध्ययनरत उद्योगपति, उच्चाधिकारी को गोद का इच्छुक. लिखें: वि.नं. 6998, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

दिल्ली में एक्ससर्विसमैन पंजाबी अरोड़ा [illegible] को गृहकार्य हेतु महिला चाहिए. लिखें: वि.नं. 6999, सरिता, नई दिल्ली-110055.

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर, अपना नाम, पता, 1,000 उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं, [illegible] के बाईं और सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 50/- वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग) कुलदीप सिंह, 32, [illegible] अमृतसर-143017.

मेडिकल

प्लास्टिक/कासमेटिक शल्य चिकित्सा केंद्र, [illegible] ए/6, पुराना राजेंद्र नगर, नई दिल्ली, [illegible] शल्य चिकित्सा हेतु कृपया संपर्क करें. दूरभाष 585802.

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब विम लगभग आधी क़ीमत में...

...फ़ायदेमंद कैरीबैग में

आपका मनपसंद विम अब लगभग आधी क़ीमत में- यानी बचतवाले कैरीबैग मे।

आप खुद ही देख लीजिए

पैक	क़ीमत प्रति १०० ग्राम
५०० ग्राम कनस्तर	१३५ पैसे
२५ किलो कैरीबैग	७५ पैसे

अब आपके लिए विम और भी किफ़ायती होगा, क्योंकि थोड़े से विम से झाग का समन्दर बन जाता है, जो चिकनाई को धो डालता है, ज़्यादा बर्तनों में लाता है चमचमाती सफ़ाई. तो देर किस बात की? जाइए और ले आइए विम कैरीबैग अपनी सुविधा के साइज़ों में. (आपकी पसंद के लिए ५०० ग्रा, १ किलो, २.५ किलो के पैक में).

थोड़ा सा विम आए... ज़्यादा बर्तन चमचमाए

LINTAS VG 482 1811 HI

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेहत से जुड़ी कुछ दिल की बातें.

ब्रिटैनिया व्हाइटल रिफ़ाइन्ड ऑइल.
स्वाद और सेहत का एकदम सही मेल.

जरा सोचिए आपके पति, हर समय अपने काम में जी जान से लगे हुए, रोज की उलझनों से कैसे निपटते रहते हैं. उनकी ये सारी मेहनत है आपके और आपके परिवार के लिए.

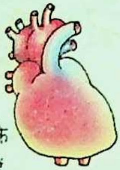

आप जानती हैं, इतनी मेहनत का दिल पर क्या असर होता है ? पर अब गौर करने की बात ये है कि आप क्या करें जिससे आपके पति हमेशा खुश और तन्दुरुस्त रहें.

अच्छी सेहत के लिए अच्छा क्या है ?

वैज्ञानिक खोजबीन से ये पता चला है कि अन्सैचुरेटिड फ़ैटी ऐसिड्ज़ - दोनों, मोनो और पॉली - कॉलस्ट्रॉल पर रोकथाम रखने में मदद करते हैं. ये, पकाने के बहुत से तेलों में होते हैं. पर, सभी तेलों में से सिर्फ़ सोया ऑइल में ही सही तालमेल है.

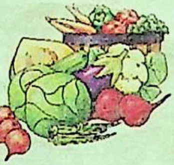

ब्रिटैनिया व्हाइटल रिफ़ाइन्ड सोया ऑइल में सैचुरेटिड फ़ैट्स कम और अन्सैचुरेटिड फ़ैट्स ज़्यादा हैं. उसे बनाने वाले हैं ब्रिटैनिया, यानि ये १००% शुद्ध है. तभी तो इसमें पका खाना, दिल की खूबी को बनाए रखता है.... और आपके परिवार की सेहत को.

व्हाइटल सोया रिफ़ाइन्ड ऑइल

अन्सैचुरेटिड फ़ैट्स	मोनोअन्सैचुरेटिड फ़ैट्स	पॉलीअन्सैचुरेटिड फ़ैट्स
८५%	२२.८%	५३.८%

वो स्वाद जो पूरे परिवार को भाए.

ज़्यादातर लोगों के मन में ये बात बैठ गई है कि खाने को अगर पौष्टिक बनाया जाए तो वो स्वादिष्ट नहीं रह पाएगा. ब्रिटैनिया को इस बात पर बहुत आश्चर्य होता है : व्हाइटल ऑइल इतना हल्का और शुध्द है कि इसका, खाने के स्वाभाविक स्वाद पर कोई असर नहीं पड़ता. व्हाइटल रिफ़ाइन्ड सोया ऑइल इस्तेमाल में भी किफ़ायती है.

ब्रिटैनिया
व्हाइटल
शुद्ध रिफाइन्ड कुकिंग ऑइल
"दिल की बात"

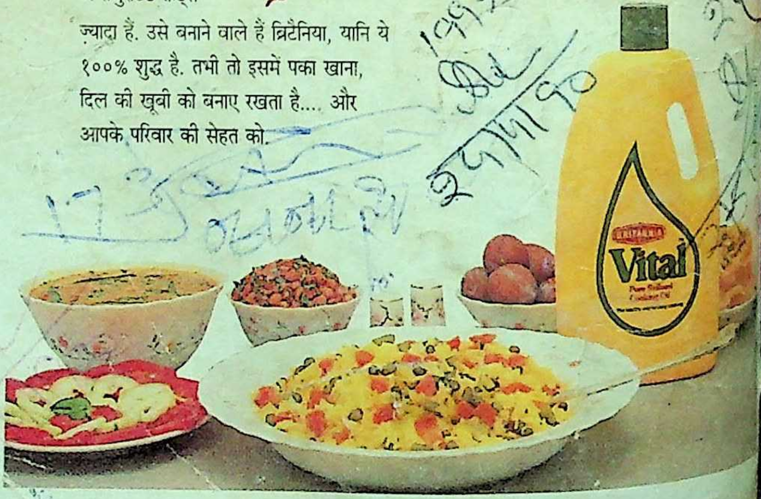

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 840 अप्रैल (द्वितीय) 1990

कथा साहित्य

132 **अविभाजित प्यार**
पति के प्यार की थाह न पाने वाली पत्नी

140 **दु:स्वप्न के बाद**
बेटी के बहक जाने से चिंतित मां

154 **सुहाग की रात**
शादी से पूर्व की निकटता

172 **दाग**
अपना दोष दूसरों पर थोपने वाला व्यक्ति

59 **नापित पुत्र**
स्वभाव से हठी व दुस्साहसी युवक

71 **विषम चक्र**
शादी तय होते समय गफलत

88 **सूत्रधार**
बहू के साथ दोरंगा व्यवहार

116 **कीमत**
असमंजस में पड़ी मुसलिम युवती

125 **टूटा रिश्ता**
टूटे रिश्ते की अकुलाहट

लेख

24 **अल्पसंख्यक समस्या और समाधान**
पिछड़े लोगों के जीवन स्तर में सुधार

35 **हिंदी भाषा में अदालती फैसला**
मध्य प्रदेश के न्यायाधीश द्वारा

45 **प्रचार-प्रसार के माध्यम और अंधविश्वास**
अंधविश्वास को बढ़ावा

98 **बुलियन स्टिच के तीन नमूने**
सजावट के लिए आकर्षक नमूना

99 **पति को कैसे सवारें?**
पति की आदतों में सुधार के उपाय

103 **बच्चों के साथ व्यवहार**
मातापिता के लिए महत्त्वपूर्ण सलाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

107 **आप की सफाई**
दूसरों की नाराजगी तो नहीं

111 **पैर छूने की परंपरा**
परंपराओं का खोखलापन

148 **चिल्ड्रेन टाय फाउंडेशन**
बच्चों के मनोरंजन व विकास में सहायक

161 **सदाशिव अमरापुरकर**
एक फिल्म अभिनेता से भेंटवार्ता

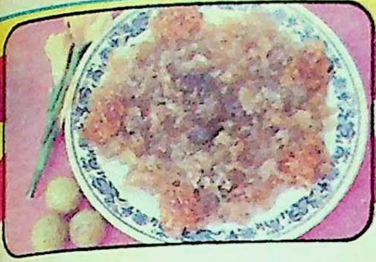

स्तंभ

6 आप के पत्र
14 बात ऐसे बनी
20 सरित प्रवाह
50 कटूक्तियां
54 नए फैशन
82 यह भी खूब रही
84 नए पकवान
110 बच्चों के मुख से
115 दिनदहाड़े
139 हमारी बेड़ियां
167 बंबई महानगर में
178 पाठकों की समस्याएं
183 चंचल छाया

कविताएं

12 अधर भी भूल गए
51 अनुराग रचा देह में
83 सूरज की बेटियां
114 नेह निमंत्रण
131 मुसकाना सीख लो
147 सिमटती आ रही है जिंदगी

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी, ए' ब्रीम कारनर एपार्टमेंट्स, 3, ब्रीम रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीमंस कांप्लेक्स, 150/82, माटीअथ रोड मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व समस्याएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. को ही भेजें.
चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 265 रु., (हवाई डाक से)650 रु.

मूल्य : एक प्रति 6.00 रुपए, वार्षिक 144 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 50 पैसे प्रति :
सिलचर, डिब्रुगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर और अकारत्स में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप के पत्र

सरित प्रवाह/मार्च/प्रथम

कशमीर और पाकिस्तान पर आप के विचार काफी सटीक लगे.

पाकिस्तान की कशमीर में जनमत संग्रह कराने की मांग बेमानी है. पाक को पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए. शीशे के मकान में रहने वालों को दूसरे के मकान पर पत्थर नहीं फेंकने चाहिए. अगर पाकिस्तान कशमीर में आत्मनिर्णय की मांग करता है तो उसे भी सिंध, बलूचिस्तान आदि प्रांतों में आत्मनिर्णय का मौका देना चाहिए.

यह विडंबना ही है कि भारत में रहने वाले पाकिस्तान के शुभचिंतक वास्तविकता को समझ नहीं पा रहे हैं. भारत विभाजन के समय जो लोग पाकिस्तान चले गए थे, उन की स्थिति वहां दोयम दर्जे की है. उन्हें वहां मुहाजिर कह कर बुलाया जाता है और मूल पाकिस्तानी इन के साथ झगड़ा करते रहते हैं. वे मुहाजिरों को अपने यहां से भगाना चाहते हैं. मुहाजिरों की स्थिति वहां बहुत दयनीय है.

इस के विपरीत पाकिस्तान से भारत आए लोगों की स्थिति भारत में काफी अच्छी है. भारत में इन को पूर्ण सम्मान और संपूर्ण अधिकार प्राप्त हैं. भारत स्थित पाक हितैषियों को इन तथ्यों को समझना चाहिए. पाकिस्तान को भी अपनी दोमुंही नीति को त्यागना चाहिए और भारत के साथ दोस्ताना व्यवहार रखना चाहिए.

आत्मनिर्णय की मांग का कोई भी देश समर्थन नहीं करेगा. अमरीका व रूस पाकिस्तान का समर्थन इसलिए नहीं करेंगे क्योंकि कल वहां भी इस प्रकार की मांग उठ सकती है. अजरबैजान की ताजा घटना हमारे सामने है. अमरीका में सरकार के दबदबे के कारण कोई राज्य अलग होने की मांग नहीं करता. अगर आत्मनिर्णय के मापदंड को उचित माना जाए तो विश्व में सैकड़ों नए देशों का उदय हो जाएगा.

—गिरीश भावसार

*

आप के ये विचार कि 'जब पाकिस्तान सरकार कशमीरियों की स्वाधीनता का प्रश्न उठाती है तब भारत को भी सिंध, बलूचिस्तान, पठान क्षेत्र की आजादी के लिए मांग करनी चाहिए' तर्कसंगत नहीं हैं क्योंकि मांग तो एक तरफ, [illegible] तो भारत वास्तव में (तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान [illegible]) कर के दिखा भी चुका है. अब तो पाकिस्तान की बारी है. वह कशमीर में जो करने की कोशिश कर रहा है वह भारत की तुलना में कहीं कम (या [illegible] नाकाम) है. असल में ये कांटे पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के बोए हुए थे जो अब शूलों का पेड़ बन [illegible] हैं. देखें इस पेड़ को नए प्रधान मंत्री किस तरह धराशायी करते हैं.

इसी अंक में 'आप के पत्र' स्तंभ के अंतर्गत अनिलकुमार श्रीवास्तव के विचार कि 'रेडियो, दूरदर्शन की स्वायत्तता बीबीसी. की तरह होनी चाहिए,' शायद संभव न हो. राजेश झांब के विचार इस संदर्भ में तर्कपूर्ण हैं क्योंकि आकाशवाणी और दूरदर्शन के मामले में खुलापन शनैःशनैः ही आना चाहिए, न कि एकदम. सरकार की आलोचना के नाम पर गालीगलौज वाली भाषा की नौबत तक [illegible] जाने वाली स्वायत्तता.

—जसवंत सिंह [illegible]

*

दस हजार रुपए तक के कर्ज को सरकार द्वारा माफ करने के संबंध में आप के विचार पढ़े. दरअसल जब भी व्यक्ति किसी संस्था से कर्ज लेता है तो पहली शर्त उस कर्ज की अदायगी के प्रति वफादारी होती है. इस प्रकार कर्ज माफ करने से भविष्य में ऐसे कर्ज मिलते समय ही यह समझा जाएगा कि [illegible] कर्ज को अदा करना जरूरी नहीं है. कई ऐसे व्यक्ति भी होंगे जिन्होंने गरीब होते हुए भी कर्ज को पूर्ण या आंशिक रूप से अदा किया होगा. इस प्रकार [illegible] उन्होंने कर्ज अदा कर के, आज के समय की परिभाषा के अनुसार बुद्धिमानी का कार्य नहीं किया.

—रविकिशोर [illegible]

*

सुरक्षा पर इतना खर्च क्यों?

लेख 'प्रधान मंत्री की सुरक्षा कितनी और कैसी?' (मार्च/प्रथम) विचारोत्तेजक लगा.

राजीव गांधी जब देश के प्रधान मंत्री थे, तब उन्होंने जनता की जिंदगी से अधिक अपनी जिंदगी की परवाह कर के करोड़ों रुपए प्रतिवर्ष अपनी सुरक्षा पर खर्च किए थे. सरकारी आय का एक बड़ा भाग राजीव गांधी की सुरक्षा पर खर्च होने के कारण देश के विकास के लिए विदेशों से भारी कर्जा लिया गया और देश के प्रत्येक व्यक्ति को कर्जदार बना कर उस से उस की दो वक्त की रोटी भी छीन ली गई.

अब राजीव गांधी देश के प्रधान मंत्री नहीं हैं, इसलिए उन को अब वैसी सुरक्षा देनी चाहिए जैसी पूर्व प्रधान मंत्री को अब तक मिलती आई है. उन की सुरक्षा पर एक करोड़ रुपया प्रतिवर्ष खर्च करना [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सध, बनुधित
मांग करनी चाहि
तो एक तरफ,
पूर्वी पाकिस्तान
तो पाकिस्तान
रने की कोशिश
कहीं कम (
प्रधान मंत्री
लों का पेड़
न मंत्री किस

' स्तंभ के अंतर्ग
यार कि 'रीडिंग
सी. की तरह
नेश प्रांत के
आकाशवाणी और
शनैःशनैः ही
की आलोचना
या की नौबत
-जसवंत सिंह

र्ज को सरकार
चार पड़े. दरअसल
से कर्ज लेता है
ी के प्रति
करने से भविष्य
झा जाएगा कि
है. कई ऐसे
ए भी कर्ज को
गा. इस प्रकार
ाज के समय
ी का कार्य
रविकिशोर

रक्षा कितनी
जक लगा.
धान मंत्री थे,
ख्रक अपनी
ए प्रतिवर्ष
ारी आय का
ा पर खर्च होने
विदेशों से
प्रत्येक व्यक्ति
दो वक्त की रोटी

धान मंत्री नहीं हैं
देनी चाहिए
ती आई है.
तिवर्ष खर्च

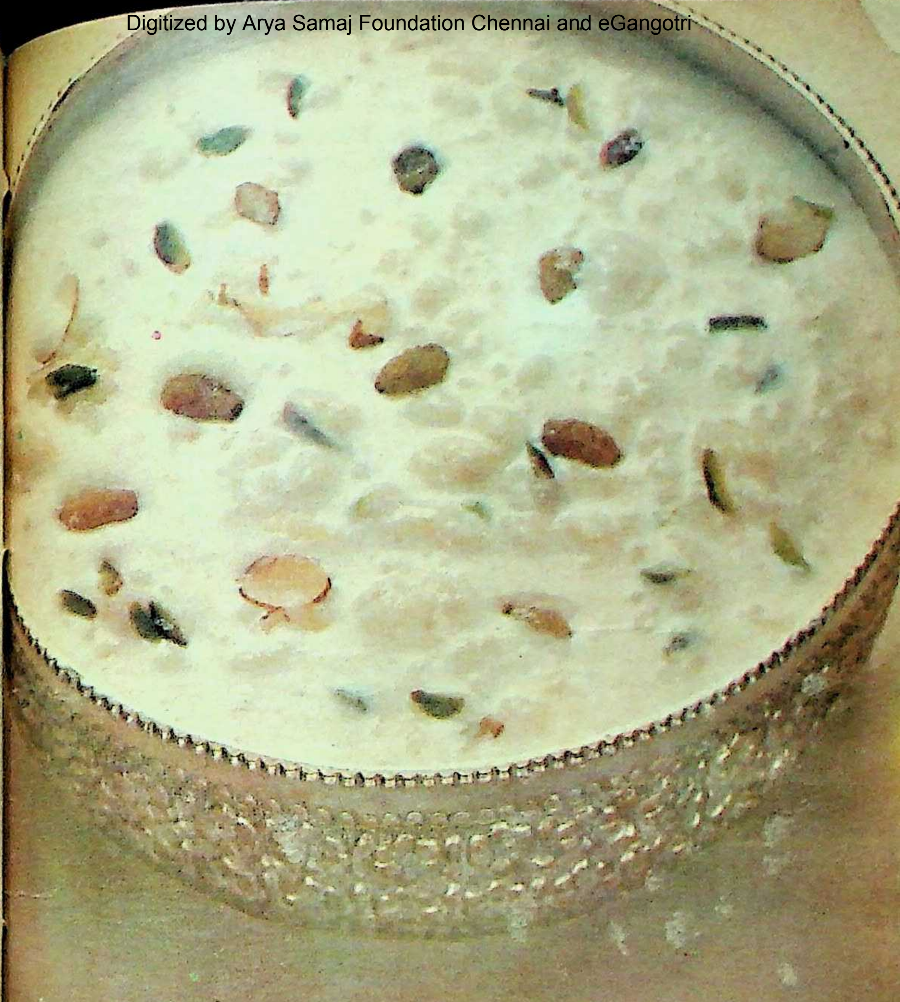

ी मलाईदार खीर
नटों में तैयार !

आप अपने परिवार के मनपसंद मीठे
बना सकते हैं। स्वादिष्ट मिल्कमेड खीर
आसान और स्वाद भी लाजवाब।

परोसने के लिये
समय: 20-25 मिनट

— 100 ग्राम
— 1 लीटर
— 1 टिन

(इच्छानुसार)

कर दूध में डालिए और उसे प्रेशर कुकर में 10 मिनट तक पकाइये (अथवा धीमी आँच पर तब तक पकाइये जब तक चावल पक जाएं)।

2. मिल्कमेड डाल कर 5-7 मिनट तक और पकाएं। जब तक खीर में आपका मनपसंद गाढ़ापन न आ जाये चलाते रहें।

3. आँच से उतार लें।

4. कतरी हुई गिरी/पिसी हुई इलायची डाल कर परोसें।

मुफ़्त
मिल्कमेड व्यंजन पुस्तिका
के लिए पोस्टबैग 22, नई दिल्ली-110019 को लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत अधिक है. यदि उन को अपने जीवन से इतना मोह है तो वह नेता क्यों बने? देश को अब उन जैसे डरपोक और महंगे नेता की जरूरत नहीं है. इसलिए उन को अब नेतागीरी छोड़ कर एक आम आदमी की तरह सामाजिक कार्यों में हिस्सा ले कर देश की सेवा करनी चाहिए. —मुकेश अग्रवाल 'मुकेश'

*

कितने अफसोस की बात है कि जहां भारत जैसे देश में 80% से भी अधिक जनता गरीबी की रेखा के नीचे अपनी जिंदगी गुजरबसर करने को विवश है वहीं पर उसी देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री की सुरक्षा पर लाखोंकरोड़ों रुपए बहाने के लिए वर्तमान सरकार पर दबाव डाला जा रहा है. यह सोच कर ताज्जुब होता है कि जिस देश की जनता के बीच रह कर उन्होंने अपनी छवि प्रधान मंत्री के रूप में उजागर की थी, आज उसी जनता से अपनी रक्षा के लिए इतनी बड़ी रकम मांग रहे हैं. आखिर क्यों? —संजयकुमार नायर

*

लुंजपुंज आयकर ढांचा

लेख 'आयकर हटाओ' (मार्च/प्रथम) में आयकर के विरोध में जो बातें उठाई हैं वे शतप्रतिशत सही हैं.

हमारे देश में आयकर संबंधी कानून इतना जटिल है कि आम करदाता उसे आसानी से समझ नहीं सकता. वह उस के नियमों के चक्रव्यूह में इस कदर फंस जाता है कि उस में से निकलने के लिए कोई भी अनैतिक कदम उठाने में नहीं झिझकता है. हमारा आयकर कानून भ्रष्टाचार को जबरदस्त बढ़ावा दे रहा है क्योंकि करदाता कर से बचने के विभिन्न हथकंडे अपनाता है. वह अधिकारी की भेंटपूजा करता है, जिस के कारण घूसखोरी बढ़ती है.

सरकार आयकर अधिकारियों को काले धन का पता लगाने पर 20% कमीशन देती है. अतः अधिकारी कमीशन के प्रलोभन में तरहतरह के नियमों के जाल में उलझाने की कोशिश करता है. फलस्वरूप अधिकारी एवं करदाता के आपसी संबंधों में कड़वाहट पैदा होती है. यदि देखा जाए तो एक प्रकार से सरकार ने इन अधिकारियों को डाका (छापा) डालने के लिए अधिकृत कर रखा है. ये लाइसेंसधारी डाकू नाममात्र का पैसा अपने सरदार (सरकार) के पास जमा करते हैं, बाकी बीच में ही हजम कर जाते हैं. ये डाकू केवल व्यापारियों को ही परेशान करते हैं. ये उन बड़ेबड़े नेताओं, मंत्रियों एवं फिल्म स्टारों के यहां डाके क्यों नहीं डालते, जिन के पास करोड़ों रुपयों की अवैध संपत्ति जमा है?

सरकार यदि वास्तव में देश को उन्नति के शिखर पर पहुंचाना चाहती है तो उसे आयकर को पूरी तरह से समाप्त कर देना चाहिए. इस से अरबों रुपयों का कालाधन सफेद धन के रूप में बाहर आएगा. इस धन से देश में बेकार पड़े प्राकृतिक साधनों का पूर्ण रूप से उपयोग हो सकेगा, जिस से उत्पादन में वृद्धि होगी, विदेशी ऋण का भार कम होगा और सब से बड़ी बात है भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा. साथ ही हमारी कुल राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय का भी सहीसही पता लग सकेगा.

—पवन अग्रवाल

*

आयकर को हटाना नहीं चाहिए बल्कि उस में ऐसे सुधार लाने चाहिए जिस से आयकरदाताओं को आर्थिक मुसीबतों का सामना न करना पड़े.

बढ़े हुए महंगाई भत्तों के कारण आजकल प्रायः सभी मध्य तथा उच्च श्रेणी के अधिकारियों का वेतन छः से सात हजार मासिक हो गया है परंतु भौतिक सुविधाओं की विशाल मांग की पूर्ति के कारण उन्हें वेतन में से काफी कटौती (ऋण अदायगी) करनी पड़ती है. इस प्रकार उसे कटकटा कर तीन से चार हजार रुपए मासिक ही प्राप्त होते हैं, जिस में से उसे मकान का किराया, बच्चों के लिए ट्यूशन, कीमती दवाइयां, राशन आदि की व्यवस्था करनी पड़ती है तथा साथ ही उसे करीब दो महीने का वेतन हर साल आयकर के रूप में देना पड़ जाता है. फलस्वरूप फरवरी तथा मार्च के महीने में पारिवारिक बजट छिन्नभिन्न हो जाता है जिस से परिवार में अशांति व्याप्त हो जाती है.

इसलिए आयकर गणना में सिर्फ मूल वेतन को शामिल करना चाहिए, महंगाई भत्ते को नहीं क्योंकि महंगाई भत्ता कोई आय नहीं है बल्कि सरकार मुद्रा स्फीति को रोकने में असमर्थ होने के कारण बाध्य हो कर अपने कर्मचारियों को देती है तथा यह रकम प्रायः वस्तुओं की ऊंची कीमतों के कारण खर्च हो जाती है. दूसरी ओर केंद्रीय सरकार और राज्य सरकारें उत्पादन शुल्क तथा बिक्री कर के माध्यम से यह बढ़ा हुआ महंगाई भत्ता वापस ले लेती हैं. —अजितकुमार चटर्जी

*

वेतनभोगी कर्मचारी मार्च का महीना आते ही अपनी आय का हिसाब लगाने लगते हैं और आयकर बचाने के लिए अपनी आय का अधिकतर भाग सरकार की लंबे समय की बचत योजनाओं में निवेश करते हैं, परंतु बढ़ती मुद्रास्फीति के कारण यह राशि जब बढ़ कर प्राप्त होती है तो उस की वास्तविक क्रय क्षमता उस से भी कम होती है, जिस वर्ष में यह बचत की जाती है. वास्तव में वेतनभोगी कर्मचारियों को महंगाई भत्ते के नाम पर जो दिया जाता है उसे थप्पड़ मार कर आयकर के रूप में वसूल कर लिया जाता है. —जितेंद्रकुमार

*

विवाहिता पुत्री और मायका

लेख 'विवाहिता पुत्री का मायके में हस्तक्षेप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मार्च/प्रथम) पढ़ा. मैं लेखक के विचारों से पूरी तरह सहमत हूं.

मेरे एक परिचित परिवार की तीनों बेटियां धनवान घरों में ब्याही हैं. बीच वाली को छोड़ कर दोनों का मायके में दखल है और वे वहां से कुछ न कुछ ऐंठती रहती हैं. कपड़ों की सिलाई, फल, मेवा, आनेजाने का खर्च भी वे मायके से लेती हैं. जब मां और भाई इन बहनों के घर जाते हैं, तब भी वे मांगने से नहीं चूकतीं. एक बहन ने पति के आपरेशन का खर्च भी भाई से ऐंठा और जो सरकार से खर्च मिला उसे बैंक में जमा कर दिया.

हम चार बहनें हैं, हमारी मां व भाई ने भी हम में भेदभाव बरता. जिस का ससुराल अधिक संपन्न था उसे अधिक दिया. यहां तक कि मेरी चचेरी बहनों को भी जो डाइरेक्टर, डाक्टर की बीवियां हैं, मेरा भाई खूब देता है. मगर मुझे घटिया सूती साड़ी, सूट दे कर ही टरका देता है. पिछले 15 वर्षों से मैं ने कुछ नहीं लिया, यहां तक कि राखी का पैसा भी वापस कर देती हूं.

—एक पाठिका

*

दृढ़ संकल्प जरूरी है

कहानी 'माटी की मूरत' (मार्च/प्रथम) समाज को प्रेरणा देने वाली है.

रिश्वत जैसी भयंकर बुराई, जिस की जड़ें समाज के हर कोने में फैली हुई हैं, का अंत खुद व्यक्ति के हाथों ही संभव है. भ्रष्टाचार उन्मूलन की दिशा में उठाए गए सरकारी कदम भी तभी सफल हो सकते हैं जब मनुष्य खुद ही रिश्वत न लेने का प्रण करे. कहानी के नायक का यही संकल्प ... नौकरी छोड़ देने के लिए प्रेरित करता है.

कहानी में ईमानदारी की राह पर ... डगमगा देने वाली मानव की विवशताएं और नायक का अंतर्द्वंद्व मन को झकझोर जाता है. अंत में नायक का अपनेआप को इस अंतर्द्वंद्व से उभार कर नौकरी छोड़ देने का निर्णय वास्तव में उस के रिश्वत न लेने के संकल्प को और भी दृढ़ करता है. नायक का ... एक साहसिक कदम है. हमारे समाज को आज ... ही दृढ़संकल्प युवकों की आवश्यकता है.

—सुमन ...

*

धर्म की आड़ में धंधा

लेख 'आस्था के संकट' (फरवरी/द्वितीय) में जिस मेहंदीपुर वाले बाबाजी का जिक्र किया गया है, इत्तिफाक से उन के दर्शन दो महीने पहले मैं ने भी किए थे. मुझे तो वहां के लोगों की हरकतें देख कर आश्चर्य हुआ. आखिर कब तक हम हिंदू धर्म के नाम पर बेवकूफ बनते रहेंगे? इतना ही नहीं मैं ने करीबकरीब हर धार्मिक आदमी को धर्म की आड़ में गलत काम करते देखा है. मुझे खुशी है कि 'सरिता' समयसमय पर इस तरह के लेख छाप कर लोगों को हकीकत से अवगत कराती रहती है.

—...

*

महंगा रेलबजट

रेलमंत्री जार्ज फर्नांडीज ने रेलबजट में यात्री किराया, मालभाड़ा, पार्सल, प्लेटफार्म टिकट और मासिक सीजन टिकट की दरें बढ़ा कर आम जनता को निराशा के गर्त में ढकेल दिया है. मालभाड़े में की गई बढ़ोतरी का सीधा असर चीजों की कीमत पर पड़ेगा और इस से महंगाई बढ़ेगी.

सामाजिक समानता के लिए प्रथम श्रेणी वातानुकूलित एवं सामान्य प्रथम श्रेणी के डब्बों का उत्पादन बंद करने की जो घोषणा की गई है उसे उचित ही कहा जाएगा. शायद रेल मंत्री ने द्वितीय श्रेणी के रेलयात्रियों को अधिक सुविधाएं प्रदान करने तथा प्रथम श्रेणी को समाप्त किए जाने के बारे में सोचा होगा.

अब रेल दुर्घटना में मरने वाले यात्रियों को दी जाने वाली मुआवजा राशि एक लाख रुपए से बढ़ कर दो लाख रुपए हो जाएगी. इसी प्रकार घायलों को दिए जाने वाला मुआवजा दोगुना कर दिया जाएगा. रेल दुर्घटनाओं के विभिन्न कारणों में मानवीय भूल सब से बड़ा कारण रही है. रेल कर्मचारियों में उपयुक्त प्रशिक्षण तथा परामर्श और दिशानिर्देश के माध्यम से यात्रियों की सुरक्षा के प्रति अधिक जागरूकता पैदा करने के रेलमंत्री के प्रयास सराहनीय हैं.

—रोहिताशकुमार ...

आगे बढ़ने वाले युवाओं के लिए अकेली पत्रिका

मुक्ता

इस के हर अंक में पढ़िए व्यक्तित्व विकास, व्यवहार, नए उद्योगों, व्यापार, प्रेम संबंधों, राजनीति व सामयिक घटनाओं पर ढेरों सामग्री.

नमूने की प्रति एक रुपए के डाक टिकट भेज कर मंगाएं.

नाम ____________

पता ____________

________ पिन कोड ☐☐☐☐☐☐

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन, नई दिल्ली-55

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ANNOUNCING...

AN EXCITING SPECIAL ISSUE ON **HEALTH, SEX & STRESS**

MAY (FIRST) 1990

Have you ever had nagging doubts about certain aspects of sex or health and wished you knew a way to set them at rest, without feeling embarrassed?

Well! Here's your chance. Just get hold of this *ALIVE* "HEALTH SEX & STRESS " SPECIAL ISSUE.

It brings to you answers to all those health and sex problems that you have been itching to know about but never dared to ask.

If you have the queries, this Special will provide the solutions...

SOME OF THE TOPICS COVERED

• HOW TO KEEP FIT • DISEASES AND AILMENTS COMMON TO MEN • GOOD SEX LIFE • PRECAUTIONS • STD & AIDS • FOOD • EXERCISE • DAILY ROUTINE • HOW TO KEEP OFF AND MANAGE STRESS • SLEEP • PLAY • RECREATION • MENTAL EQUILIBRIUM • RIGHT THINKING • INTERVIEWS WITH PROMINENT SPECIALISTS IN MEDICINE AND SURGERY

• *INFORMATIVE*
• *INSPIRING*
• *INCISIVE*

Alive

HELPS YOU LIVE A BETTER LIFE

RESERVE YOUR COPY TODAY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर भी भूल गए

ये किस ने सांकल खटकाई
नयन भूल गए नींद
हृदय ने छोड़ा स्पंदन
बंधन ढीले पड़े
अधर भी भूल गए चुंबन
कौन जाने पीर पराई
ये किस ने....

कंगन की आवाज कैद है
नूपुर भी खामोश
शरमीली बिंदिया गुमसुम है
मेहंदी है बेहोश
शीतल पवन ने झुलसाई
ये किस ने...

सांसें उखड़ी हुई
पीर पर खो बैठी अधिकार
आंख खुली तो,
बिखर गया है सपनों का संसार
अलग क्यूं तन से परछाई
ये किस ने...

—डा. विष्णु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

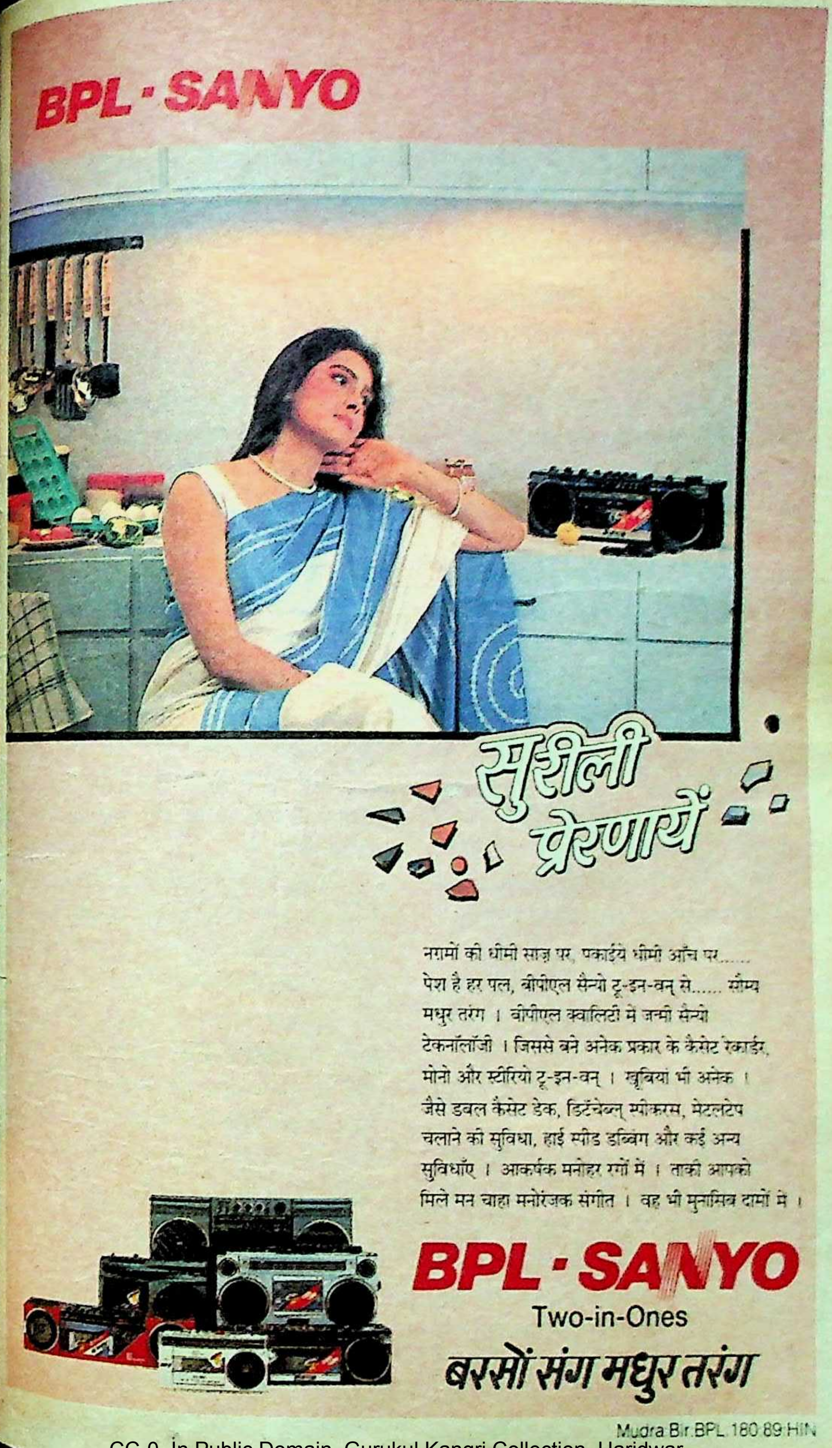

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात ऐसे बनी

पिताजी के एक मित्र हमारे घर आ कर अपने बेसुरे गले से राग अलापने लगते थे.

एक दिन मैं ने उन के तबले के रूप में काम आने वाली मोटी सी पुस्तक में ऊपर की ओर पिन लगा दी, आदतन उन्होंने जब घर आ कर पुस्तक पर हाथ मारा तो दर्द से चीख उठे. फिर कभी उन्होंने हमारे क्या, किसी के घर में भी अपना बेसुरा राग अलापना बंद कर दिया. —राकेशकुमार मिश्रा

*

एक बार मैं सिलेसिलाए कपड़ों की खरीदारी के लिए घर के पास की दुकान पर गई. वहां मैं ने देखा कि ग्राहकों की भीड़ में एक संभ्रांत सी महिला ने एक छोटा, किंतु कीमती फ्राक दुकानदार की नजरें बचा कर अपने थैले में रख लिया.

कुछ दिन पूर्व इंदिरा गांधी हत्याकांड के बाद वह दुकान लुट चुकी थी. दुकानदार ने लोगों से कर्ज ले कर जैसेतैसे फिर से दुकान शुरू की थी. मुझे उन से सहानुभूति थी. मैं उस महिला की यह हरकत देख कर उस दुकानदार का नुकसान नहीं होने देना चाहती थी.

मैं ने दुकानदार से कहा, "सरदारजी, आप ने जैसा फ्राक इन बहनजी को दिया है, वैसा ही फ्राक मुझे भी दे दो."

दुकानदार चौंका, "मैं ने तो इन्हें कोई फ्राक नहीं दिया."

मैं ने उस महिला से कहा, "बहनजी, आप जरा इन्हें वह फ्राक दिखा दें जो अभी आप ने थैले में रखा है."

अब महिला का चेहरा देखने लायक था. फिर भी वह बोली, "मैं तो उस का पैसा देना ही भूल गई थी." और वह जल्दी से फ्राक का भुगतान कर के चलती बनी. —इंदिरा झा

हमारे पड़ोस में एक शराबी रहता है. वह हर रात को शराब पी कर अपनी पत्नी को मारता था और भद्दीभद्दी गालियां देता था. जो लोग उसे समझाने की कोशिश करते उन से भी वह झगड़ पड़ता था.

एक रात जब वह अपनी पत्नी को मारपीट कर गालियां दे रहा था तो मैं ने उस की आवाज को टेप पर रिकार्ड कर लिया. दूसरे दिन जब वह सामान्य था, मैं ने उस के गालियों वाला कैसेट जोरजोर से बजाना शुरू कर दिया.

जब उस ने उसे सुना तो उस का सिर शर्म से झुक गया. फिर कभी उस ने शराब पी कर पत्नी को नहीं पीटा.

—विजयकुमार [illegible]

*

मेरे भैया के एक दोस्त जब भी किसी के यहां कोई चीज खाते तो यह कह कर उस का मजाक उड़ाने लगते कि इस का स्वाद तो गोबर जैसा है.

एक दिन भैया के वह दोस्त हमारे घर आए तो हम ने उन्हें हलवा खिलाया. वह आदतन कहने लगे, "अरे, इस का स्वाद तो गोबर जैसा है."

"भैया, आप ने गोबर खाया होगा तभी आप को उस का स्वाद पता है. हमें तो नहीं मालूम." मेरा इतना कहना था कि सब जोर से हंस पड़े और भैया के उस दोस्त का चेहरा देखने लायक हो गया. आगे से उन्होंने कभी यह बात नहीं कही. —नीरू गुप्ता

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राबी रहता है,
ी कर अपनी
भद्दी गालियां
की कोशिश
ता था.
अपनी पत्नी
हा था तो मैं ने
रिकार्ड कर लि
य था, मैं ने उस
रजोर से बजा

ा तो उस का
कभी उस ने
टा.
विजयकुमार

जब भी किसी
ह कह कर उस
इस का स्वाद

ः दोस्त हमारे
वा खिलाया.
, इस का स्वाद

बर खाया हो
द पता है. हमें
कहना था कि
 के उस दोस्त
ा. आगे से उन्हों
. —नीरू गुप्ता

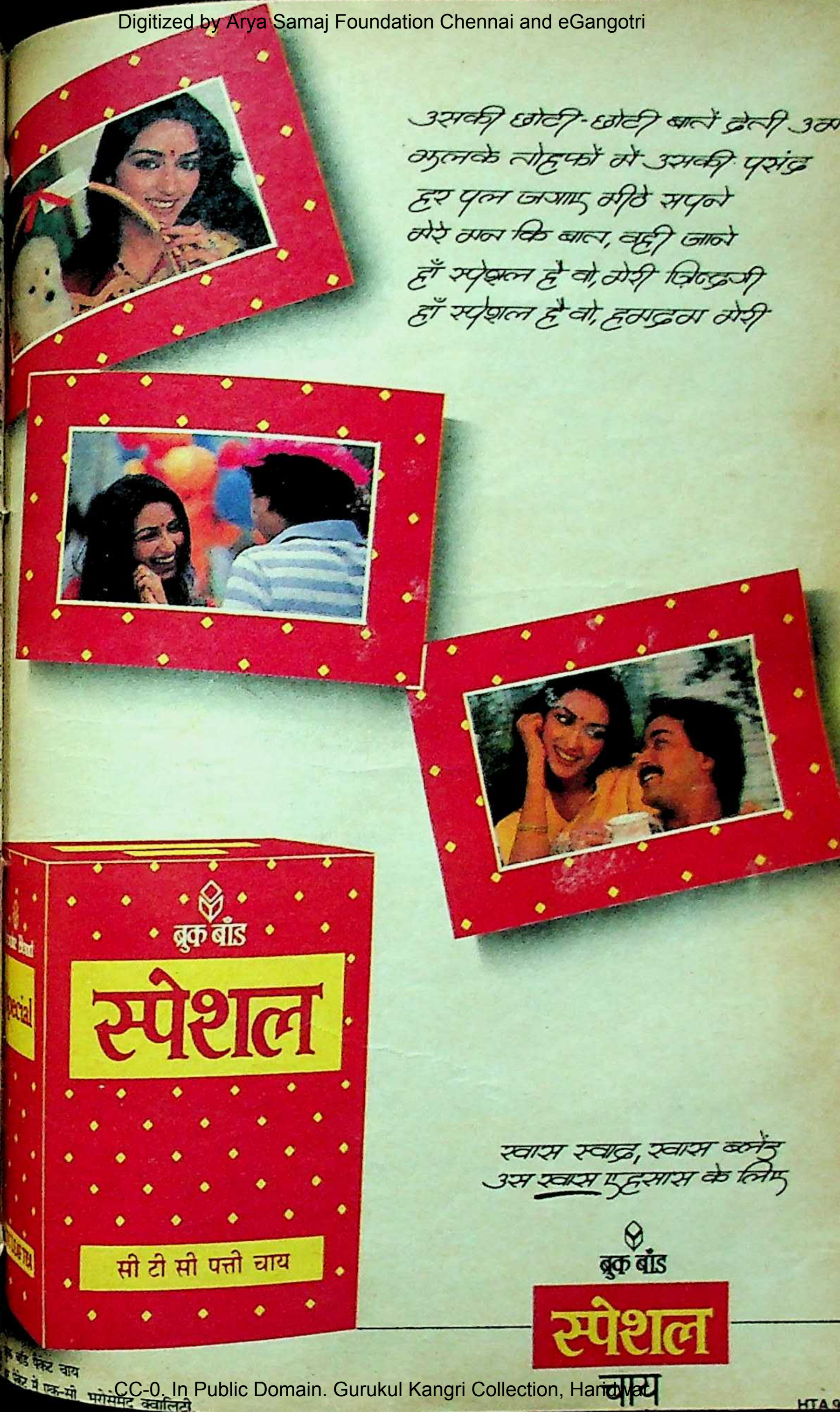

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन सौरभ

अप्रैल 1990

हाबी विशेषांक

प्रमुख आकर्षण

एरो माडलिंग

रोमांचकारी हवाई खेल 'एरो माडलिंग' के बारे में अनूठी जानकारी.

क्ले माडलिंग

मिट्टी से कलाकृतियां बनाने की अद्भुत तकनीकें.

वुड क्राफ्टिंग

लकड़ी की दस्तकारी से घर में सजावटी वस्तुएं कैसे बनाएं?

हैंडी क्राफ्ट

हस्तकलाओं द्वारा वस्तुएं बनाने की रोचक जानकारी.

फिश ऐक्वेरियम

ऐक्वेरियम में वैज्ञानिक ढंग से मछलियां पालने की जानकारी.

इस के अलावा मजेदार कहानियां ज्ञानवर्धक लेख, चुटीली कविताएं, मजेदार चित्रकथाएं व सभी स्थायी स्तंभ.

25% की विशेष छूट

60/- रु. के स्थान पर केवल 45/- रु. भेजें.

सुमन सौरभ ई- 3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055	नाम......... पता......... .... पिन कोड......... हस्ताक्षर......... पोस्टल आर्डर/बैंक ड्राफ्ट नं.........

अपनी प्रति आज ही खरीदें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

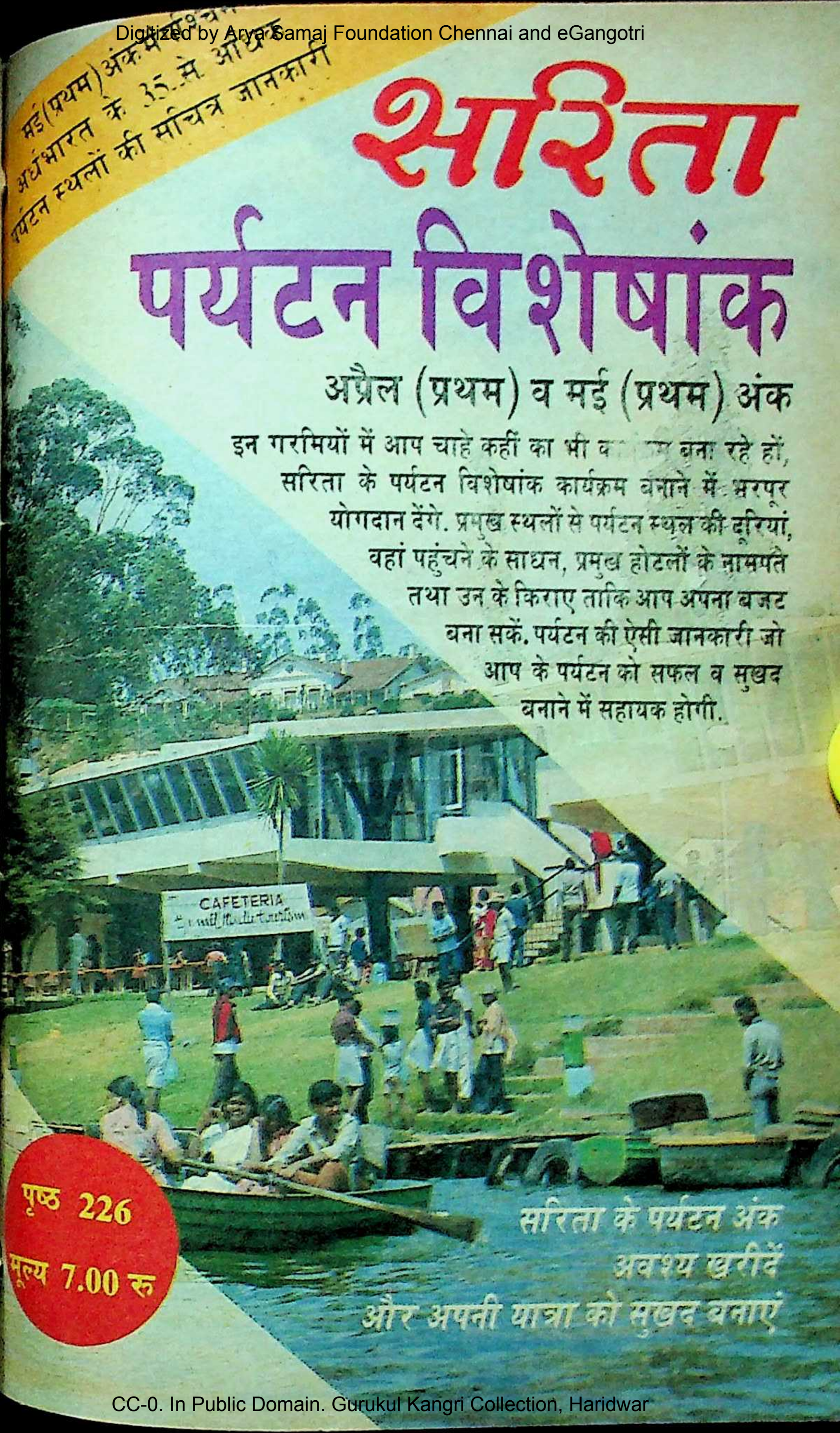

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

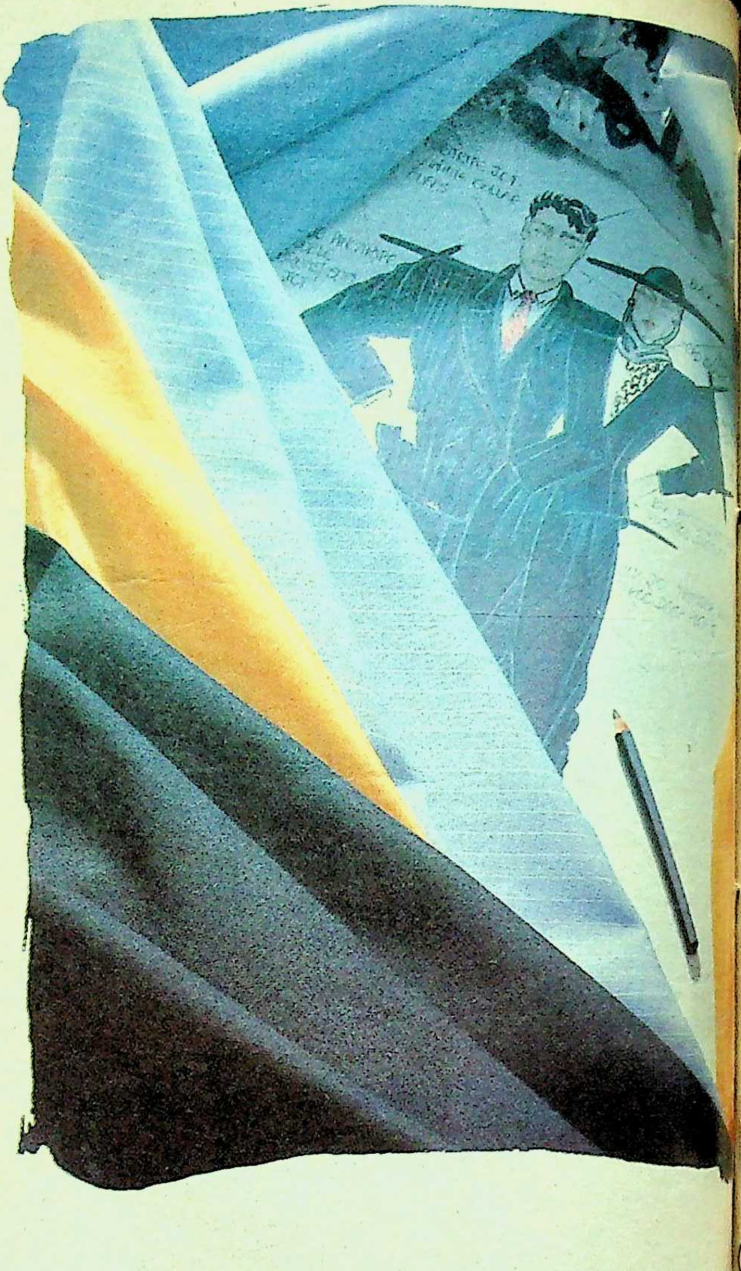

Contract JCT 21783 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Thapar Group

की प्रेरणा

JCT FABRICS

सूटिंग्स • शर्टिंग्स • ड्रैस मैटीरियल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नि प्रवाह

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री मुलायमसिंह यादव ने उत्तर प्रदेश सरकार के एक पुराने आदेश को पुनर्जीवित करते हुए प्रदेश के सरकारी कामकाज में केवल हिंदी के उपयोग के लिए कहा है. अब तक उत्तर प्रदेश हिंदी का गढ़ होते हुए भी, वहां अधिकांश सरकारी कामकाज अंगरेजी में हो रहा था, इस पिछले आदेश को केवल फाइलों में बंद कर दिया गया था.

मुलायमसिंह यादव के इस आदेश पर अंगरेजी के भक्त/गुलाम, जिन्हें या तो हिंदी आती नहीं, जो उसे सीखना नहीं चाहते और जिन के लिए हिंदी गुलामों और जाहिलों की भाषा है, अवश्य कड़ा विद्रोह खड़ा करेंगे. वे तरहतरह के एतराज, कठिनाइयां पेश करेंगे. कहेंगे इस से अहिंदी राज्यों को बड़ी चिंता और असुविधा होगी, हिंदी में तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली का अभाव है. सारा विज्ञान और टेक्नोलाजी का प्रशिक्षण, उपयोग, अनुसंधान अंगरेजी में होता है, इत्यादि.

पर इन सब बाधाओं पर तो पिछले 42 वर्षों में अनगिनत मंचों, पत्रपत्रिकाओं में बहस हो चुकी है और अब समय आ गया है कि इन की अवहेलना कर के हिंदी को पूरी तरह अपनाया जाए.

भाषा तो विचारों के आदानप्रदान का माध्यम है और वही भाषा सरकारी कामकाज में प्रयोग आनी चाहिए जो अधिक से अधिक नागरिकों को सुविधा से एकदूसरे से संपर्क स्थापित कराने में सफल हो. जो भाषा केवल 1 या 2% लोगों की संपत्ति हो, उसे राजभाषा कैसे स्वीकार किया जा सकता है? अलबत्ता यह भी सही है कि पिछले 200 वर्षों से अंगरेजों की गुलामी के कारण हमारा सारा बौद्धिक, शैक्षणिक व प्रशासनिक कामकाज अंगरेजी में होता आया है, पर एक दिन तो इसे हटाना ही होगा क्योंकि इस के कारण जनमानस प्रशासन से कट जाता है.

जैसे मुगलों के जमाने से फारसी राजभाषा होने के कारण ऊपर के कुछ वर्गों से चुने हुए शक्तिधारक व्यक्तियों की भाषा थी, वही हाल आज अंगरेजी का है. जो अंगरेजी लिखपढ़ सकता है उस का मानसम्मान होता है बाकी सब गंवार और जाहिल करार दे दिए जाते हैं चाहे वे अंगरेजी पढ़ेलिखे लोगों से बुद्धि में, कौशल में कहीं आगे हों.

मुलायमसिंह यादव को अंगरेजी वाले काफी गालियां चटकाएंगे, अंगरेजी पत्र-पत्रिकाएं और पत्रकार, लेखक आसमान सिर पर उठाएंगे, देश की एकता, अखंडता की ऊंचीऊंची बातें करेंगे, पर वास्तव में उन का यह रुदन केवल अपनी रोजीरोटी को बरकरार रखने की एक छटपटाहट है.

वैसे भी जब अन्य अहिंदी राज्य अपनी स्थानीय भाषाओं को राजभाषा बना कर सरकारी कामकाज उस से करा सकते हैं तो हिंदी भाषा वाले राज्यों को ही क्यों दंडित किया जाए? और जब हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा या संपर्क भाषा संविधान में मान ही ली गई है तो उसे कार्यान्वित तो एक दिन करना ही होगा और यह काम अगर उत्तर प्रदेश नहीं करेगा तो कौन करेगा? इस आवश्यकता एक बार निर्णय कर के उस पर डटे रहने की है.

आज भी जनता के लिए तो यदि कोई भाषा सर्वभारतीय भाषा है तो हिंदी ही है जो कशमीर से ले कर कन्याकुमारी तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा जा सकता है जिस प्रकार तैरने के लिए पानी में कूदना आवश्यक है, उसी तरह भाषा को परिमार्जित, समृद्ध केवल उस के प्रयोग ही से किया जा सकता है.

*

अमरीका सरकार ने कहा है कि वह अब कशमीर में जनमत संग्रह के पक्ष में नहीं है. यह झगड़ा भारत पाकिस्तान को आपस ही में बातचीत से सुलझाना है.

अमरीका के इस रुखपलट से किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए. हम भारतवासी नेहरुओं के सरकारी प्रचार व समाजवादी बुद्धिवादियों की रोज अमरीका को शैतान और रूस को मानवता का स्वर्ग करार देने के कारण पिछले 43 वर्ष से यही मानते आ रहे हैं कि अमरीका कशमीर को भारत से छिनवा कर पाकिस्तान के हवाले करने पर कटिबद्ध है. केवल रूस ही हमारा उद्धार करने वाला, सच्चा मित्र है.

वास्तविकता यह है कि संसार में सब देश स्वयं अपना हित देख कर अपनी विदेश नीतियां निर्धारित करते हैं—सिवाय भारत के जिसे दक्षिण अफ्रीका के काले लोगों को वोट दिलवाने में और इजराइल को भूमध्य सागर में धकेले जाने में ज्यादा दिलचस्पी है बनिस्वत अपने नागरिकों को दो रोटियां मुहैया करने के.

अमरीका ने कशमीर के मामले में अब तक राष्ट्र संघ के उस प्रस्ताव का समर्थन किया था जिस में कहा गया था कि कशमीर के भविष्य का फैसला जनमत संग्रह से होगा—जो हल स्वयं जवाहरलाल नेहरू ने लार्ड माउंटबेटन की सलाह पर राष्ट्र संघ में मामले को ले जा कर रखा था.

आगे चल कर जब जवाहरलाल की इस भयंकर बेवकूफी का असली नतीजा सामने आया तो भारत सरकार ने तरहतरह के बहाने बना कर इस हल के फंदे से निकलने की कोशिश की. पर पाकिस्तान को तो एक गांठ मिल गई थी जिसे वह बराबर घुमाता रहा है और आज भी घुमा रहा है.

अमरीका ने पाकिस्तान की इस मांग का विरोध इसलिए नहीं किया कि इस के द्वारा भारत को वह एक सबक सिखाना चाहता था—दुश्मन के दोस्त भी दुश्मन होते हैं. भारत हर मुद्दे पर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमरीका की भर्त्सना करता और रूस का खुले रूप से समर्थन—चाहे रूस ने मानवता के विरुद्ध जबरदस्त अनाचार किए हों, जैसे बाल्टिक राज्यों को हथियाना, पूर्वी यूरोप में अन्य देशों पर कब्जा, अफगानिस्तान पर धावा इत्यादि. पर जब भी भारत को मुसीबत का सामना करना पड़ा तो अमरीका सब से आगे था—भुखमरी के दिनों में पी एल 480 द्वारा 2000 करोड़ रुपए (उस समय के) का गेहूं दान में देना. 1962 में चीन द्वारा भारतीय भूमि हड़पने और आक्रमण के समय रूस का सहायता देने से साफ इनकार और अमरीका द्वारा हर प्रकार की मदद देने की पेशकश इत्यादि. इस के अलावा अमरीका ने अरबों रुपयों की आर्थिक मदद भी दी है और विश्व बैंक द्वारा अरबों रुपए के कर्ज भी. इस के विपरीत रूस हमेशा भारत से अपने सामान के दोगुनेतिगुने दाम वसूल करता रहा है, कोई वित्तीय सहायता भी नहीं दी. उलटे भारत के माल को सस्ते दामों में खरीद कर दुनिया में महंगे दामों पर बेच कर विदेशी मुद्रा कमाता रहा है.

अब जब रूस अपने सिद्धांतों के आधार पर अपनी आर्थिक नीतियों के कारण बिलकुल दिवालिया हो कर अपनेआप को हर तरह से कमजोर पा रहा है और अमरीका से मित्रता कर रहा है तो अमरीका की भारत से सब से बड़ी शिकायत का कोई कारण नहीं रहा है और उस ने भी पाकिस्तान भारत द्वंद्व में भारत का विरोध बंद कर दिया है.

पिछले 43 वर्षों में अमरीका के लिए पाकिस्तान एक मूल्यवान दोस्त और एशिया में पांव टेकने के लिए एक पैड़ी थी. पाकिस्तान ने अमरीका चीन की दोस्ती बनने में बड़ी सहायता की. अफगानिस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री मुलायमसिंह यादव ने उत्तर प्रदेश सरकार के एक पुराने आदेश को पुनर्जीवित करते हुए प्रदेश के सरकारी कामकाज में केवल हिंदी के उपयोग के लिए कहा है. अब तक उत्तर प्रदेश हिंदी का गढ़ होते हुए भी, वहां अधिकांश सरकारी कामकाज अंगरेजी में हो रहा था, इस पिछले आदेश को केवल फाइलों में बंद कर दिया गया था.

मुलायमसिंह यादव के इस आदेश पर अंगरेजी के भक्त/गुलाम, जिन्हें या तो हिंदी आती नहीं, जो उसे सीखना नहीं चाहते और जिन के लिए हिंदी गुलामों और जाहिलों की भाषा है, अवश्य कड़ा विद्रोह खड़ा करेंगे. वे तरहतरह के एतराज, कठिनाइयां पेश करेंगे. कहेंगे इस से अहिंदी राज्यों को बड़ी चिंता और असुविधा होगी, हिंदी में तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली का अभाव है. सारा विज्ञान और टेक्नोलाजी का प्रशिक्षण, उपयोग, अनुसंधान अंगरेजी में होता है, इत्यादि.

पर इन सब बाधाओं पर तो पिछले 42 वर्षों में अनगिनत मंचों, पत्रपत्रिकाओं में बहस हो चुकी है और अब समय आ गया है कि इन की अवहेलना कर के हिंदी को पूरी तरह अपनाया जाए.

भाषा तो विचारों के आदानप्रदान का माध्यम है और वही भाषा सरकारी कामकाज में प्रयोग आनी चाहिए जो अधिक से अधिक नागरिकों को सुविधा से एकदूसरे से संपर्क स्थापित कराने में सफल हो. जो भाषा केवल 1 या 2% लोगों की संपत्ति हो, उसे राजभाषा कैसे स्वीकार किया जा सकता है? अलबत्ता यह भी सही है कि पिछले 200 वर्षों से अंगरेजों की गुलामी के कारण हमारा सारा बौद्धिक, शैक्षणिक व प्रशासनिक कामकाज अंगरेजी में होता आया है, पर एक दिन तो इसे हटाना ही होगा क्योंकि इस के कारण जनमानस प्रशासन से कट जाता है.

जैसे मुगलों के जमाने से फारसी राजभाषा होने के कारण ऊपर के कुछ लोगों से चुने हुए शक्तिधारक व्यक्तियों की भाषा थी, वही हाल आज अंगरेजी का है. जो अंगरेजी लिखपढ़ सकता है उस का मानसम्मान होता है बाकी सब गंवार और जाहिल करार दे दिए जाते हैं चाहे वे अंगरेजी पढ़ेलिखे लोगों से बुद्धि में, कौशल में कहीं आगे हों.

मुलायमसिंह यादव को अंगरेजी के काफी गालियां चटकाएंगे, अंगरेजी पत्र पत्रिकाएं और पत्रकार, लेखक आसमान सिर पर उठाएंगे, देश की एकता, अखंडता की ऊंचीऊंची बातें करेंगे, पर वास्तव में उन का यह रुदन केवल अपनी रोजीरोटी को बरकरार रखने की एक छटपटाहट है.

वैसे भी जब अन्य अहिंदी राज्य अपनी स्थानीय भाषाओं को राजभाषा बना कर सरकारी कामकाज उस से करा सकते हैं तो हिंदी भाषा वाले राज्यों को ही क्यों दंडित किया जाए? और जब हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा या संपर्क भाषा संविधान में मान ही ली गई है तो उसे कार्यान्वित तो एक दिन करना ही होगा और यह काम अगर उत्तर प्रदेश नहीं करेगा तो कौन करेगा? इस की आवश्यकता एक बार निर्णय कर के उस पर डटे रहने की है.

आज भी जनता के लिए तो यदि कोई भाषा सर्वभारतीय भाषा है तो हिंदी ही है जो कशमीर से ले कर कन्याकुमारी तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा जा सकता है. जिस प्रकार तैरने के लिए पानी में कूदना आवश्यक है, उसी तरह भाषा को परिमार्जित, समृद्ध केवल उस के प्रयोग ही से किया जा सकता है.

*

अमरीका सरकार ने कहा है कि वह अब कशमीर में जनमत संग्रह के पक्ष में नहीं है. यह झगड़ा भारत पाकिस्तान को आपस ही में बातचीत से सुलझाना है.

अमरीका के इस रुखपलट से किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए. हम भारतवासी नेहरुओं के सरकारी प्रचार व समाजवादी बुद्धिवादियों की रोज अमरीका को शैतान और रूस को मानवता का स्वर्ग करार देने के कारण पिछले 43 वर्ष से यही मानते आ रहे हैं कि अमरीका कशमीर को भारत से छिनवा कर पाकिस्तान के हवाले करने पर कटिबद्ध है. केवल रूस ही हमारा उद्धार करने वाला, सच्चा मित्र है.

वास्तविकता यह है कि संसार में सब देश स्वयं अपना हित देख कर अपनी विदेश नीतियां निर्धारित करते हैं—सिवाय भारत के जिसे दक्षिण अफ्रीका के काले लोगों को वोट दिलवाने में और इजराइल को भूमध्य सागर में धकेले जाने में ज्यादा दिलचस्पी है बनिस्वत अपने नागरिकों को दो रोटियां मुहैया करने के.

अमरीका ने कशमीर के मामले में अब तक राष्ट्र संघ के उस प्रस्ताव का समर्थन किया था जिस में कहा गया था कि कशमीर के भविष्य का फैसला जनमत संग्रह से होगा—जो हल स्वयं जवाहरलाल नेहरू ने लार्ड माउंटबेटन की सलाह पर राष्ट्र संघ में मामले को ले जा कर रखा था.

आगे चल कर जब जवाहरलाल की इस भयंकर बेवकूफी का असली नतीजा सामने आया तो भारत सरकार ने तरहतरह के बहाने बना कर इस हल के फंदे से निकलने की कोशिश की. पर पाकिस्तान को तो एक गांठ मिल गई थी जिसे वह बराबर घुमाता रहा है और आज भी घुमा रहा है.

अमरीका ने पाकिस्तान की इस मांग का विरोध इसलिए नहीं किया कि इस के द्वारा भारत को वह एक सबक सिखाना चाहता था—दुश्मन के दोस्त भी दुश्मन होते हैं. भारत हर मुद्दे पर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अमरीका की भर्त्सना करता और रूस का खुले रूप से समर्थन—चाहे रूस ने मानवता के विरुद्ध जबरदस्त अनाचार किए हों, जैसे बाल्टिक राज्यों को हथियाना, पूर्वी यूरोप में अन्य देशों पर कब्जा, अफगानिस्तान पर धावा इत्यादि. पर जब भी भारत को मुसीबत का सामना करना पड़ा तो अमरीका सब से आगे था—भुखमरी के दिनों में पी एल 480 द्वारा 2000 करोड़ रुपए (उस समय के) का गेहूं दान में देना. 1962 में चीन द्वारा भारतीय भूमि हड़पने और आक्रमण के समय रूस का सहायता देने से साफ इनकार और अमरीका द्वारा हर प्रकार की मदद देने की पेशकश इत्यादि. इस के अलावा अमरीका ने अरबों रुपयों की आर्थिक मदद भी दी है और विश्व बैंक द्वारा अरबों रुपए के कर्ज भी. इस के विपरीत रूस हमेशा भारत से अपने सामान के दोगुनेतिगुने दाम वसूल करता रहा है, कोई वित्तीय सहायता भी नहीं दी. उलटे भारत के माल को सस्ते दामों में खरीद कर दुनिया में महंगे दामों पर बेच कर विदेशी मुद्रा कमाता रहा है.

अब जब रूस अपने सिद्धांतों के आधार पर अपनी आर्थिक नीतियों के कारण बिलकुल दिवालिया हो कर अपनेआप को हर तरह से कमजोर पा रहा है और अमरीका से मित्रता कर रहा है तो अमरीका की भारत से सब से बड़ी शिकायत का कोई कारण नहीं रहा है और उस ने भी पाकिस्तान भारत द्वंद्व में भारत का विरोध बंद कर दिया है.

पिछले 43 वर्षों में अमरीका के लिए पाकिस्तान एक मूल्यवान दोस्त और एशिया में पांव टेकने के लिए एक पैड़ी थी. पाकिस्तान ने अमरीका चीन की दोस्ती बनने में बड़ी सहायता की. अफगानिस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

से रूस को [illegible] में भी अमरीका को बड़ी मदद दी. उसे दुश्मन के दोस्त भारत को भी अपने राजनीतिक विस्तार में रोके रखना था इसलिए अमरीका ने पाकिस्तान को आर्थिक व फौजी सांजसामान दिया जिस के कारण भारत को शस्त्रों पर अरबों रुपए खर्च कर के विकास कार्य रोकने पड़े.

पर अब इस सब की कोई आवश्यकता नहीं रह गई है इसलिए कशमीर पर अमरीका ने पाकिस्तान को साफ कह दिया है कि इस क्षेत्र में कोई युद्ध नहीं होना चाहिए और इस प्रकार चौथे भारत पाकिस्तान युद्ध के बादल छंट गए हैं.

*

इस सब का तत्त्व यह है कि एक गलत किस्म का दोस्त एक खुले शत्रु से ज्यादा हानिकारक होता है. भारत को किताबी उसूलों की रौ में न बह कर यथार्थवादी धरातल पर पांव रखने का प्रयत्न करना चाहिए–विश्व राजनीति में अपना भला आप स्वयं नहीं सोचेंगे तो दूसरा क्यों सोचेगा? किसी देश के किसी भाग को जनमत संग्रह के आधार पर देश से अलग होने का सिद्धांत बिलकुल एड्स के रोग के विषाणुओं की तरह है. एक बार यह किसी देश में मान लिया जाए तो वह देश बचेगा ही नहीं. देश का हर छोटे से छोटा हिस्सा जनमत संग्रह के आधार पर अलगाव मांगेगा और देश छिन्नभिन्न हो जाएगा.

जब तक पृथ्वी पर अलगअलग देशों का अस्तित्व है और कोई विश्व सरकार नहीं बन जाती, तब तक देशों की सीमाएं स्थायी एवं सुदृढ़ रखनी ही होगी. वैसे संसार बड़ी तेजी से देशों की सीमाओं को बेकार बनाता जा रहा है. रेडियो, टेलीविजन, उपग्रह, हवाई यात्रा, संचार सब हर देश व समाज को निकट और निकटतम ला रहे हैं और बाधाएं व सीमाएं टूट रही हैं. पर जब तक कोई विश्व संस्थाओं का विकल्प सामने नहीं आता तब तक देशों को छिन्नभिन्न नहीं किया जा सकता, चाहे [illegible] मांग धर्म/मजहब के आधार पर हो चाहे रंग और नस्ल के आधार पर.

*

भारत सरकार के आयकर विभाग ने विश्व हिंदू परिषद को नोटिस दिया कि वह अपना बहीखाता अधिकारियों के आगे पेश करे, आयव्यय का ब्योरा दे और बताए कि जो धन उस ने राम जन्मभूमि के लिए संगृहीत किया उस का क्या किया. बाद में, कहा जाता है राजनीतिक दबाव के कारण यह नोटिस वापस ले लिया गया.

अधिकारियों से जब पूछा गया कि यह नोटिस क्यों दिया गया तो उन का जवाब था कि आयकर कानून में धर्म प्रचारक संस्थाओं को आयकर से छूट का प्रावधान नहीं है, इसलिए.

परंतु क्या अधिकारियों की निगाह में मंदिर, मसजिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे धर्म प्रचारक संस्थाएं नहीं हैं? क्या सारे देश के इन 'भगवान के स्थलों' से आयव्यय का विवरण मांग कर इन के बहीखाते जांच कर इन पर टैक्स लगाया जाता है? यदि नहीं, तो विश्व हिंदू परिषद ही क्यों इस टैक्स के लिए अलग से, अकेले चुना गया?

और अगर धर्म प्रचार आयकर की दृष्टि से व्यवसाय है तो राजनीतिक प्रचार ही टैक्स से क्यों बचे? कांग्रेस, जनता दल, कम्यूनिस्ट पार्टियों, भारतीय जनता पार्टी इत्यादि पर भी टैक्स क्यों न लगे? ये संस्थाएं तो अपने सदस्यों को मोटा पैसा और अधिकार मुहैया करती हैं.

सारांश यह कि आयकर अधिकारियों के अधिकार व इन की 'मार' का दायरा जितना सीमित हो, उतना ही अच्छा है.

*

फौजी साजसामान और सैनिकों पर खर्च भारत व पाकिस्तान दोनों के गले में बहुत बड़ा फंदा है. एकदूसरे के डर से, एकदूसरे की होड़ में यह खर्च हर वर्ष बढ़ता जाता है. क्योंकि पाकिस्तान के पास दूर मार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...वाली नई तोपें आ गई हैं, भारत को बोफोर्स तोपें खरीदनी जरूरी हो गयी. बोफोर्स तोपें पाकिस्तानी तोपों से अच्छी, अधिक दूर मार करने वाली हैं तो पाकिस्तान को बोफोर्स से अच्छी तोपें लेनी पड़ेंगी. पाकिस्तान के पास एफ16 अमरीकी लड़ाकू हवाई जहाज हैं, भारत को रूस मिग27 लेने पड़ेंगे. इसी प्रकार यह दुश्चक्र चलता रहता है. और दोनों की जनता गरीब बनती जाती है.

अब जब संसार की महाशक्तियां अपने अस्त्रशस्त्र कम करने, जो हैं भी उन्हें योजनानुसार नष्ट करने का प्रयत्न कर रही हैं. हम दोनों एकदूसरे की होड़ में फौजी सामान का ढेर लगाते जाएं, बुद्धिमानी नहीं है. अन्य मदों में खर्च काफी हद तक स्थायी उपयोग का होता है, पर फौजी सामान तो बड़ी तेजी से पुराना, बेकार हो जाता है. अरबों रुपए का सामान हर वर्ष बिना इस्तेमाल किए रद्दी कर के कबाड़ी को बेचा जाता है. और यह पैसा सारा गरीब जनता की जेब से (अधिकांश के तो जेब ही नहीं है, आज रोटी है, कल का पता नहीं) जबरदस्ती टैक्सों के माध्यम से निकाला जाता है.

इस होड़ को समाप्त करने के लिए भारत को पहल करनी होगी क्योंकि वह बड़ा देश है और उसे दूसरों से खतरा कम है. यह ठीक है, पाकिस्तान ने तीन बार भारत पर हमला किया पर समय और माहौल हमेशा एक जैसा नहीं रहता. समय को पहचान कर उसे दोनों हाथों से पकड़ कर अपना उद्देश्य पूरा करना बुद्धिमानी और राजनीतिक कुशलता है.

इस का सब से ताजा और क्रांतिकारी उदाहरण हैं रूस के मिखाइल गौरबाचौफ. उन्होंने शस्त्रों की कटौती करने में पहल की. यद्यपि उन्हें अमरीका से सच्चा डर था.

आज मानव शांति का इतना इच्छुक है कि अमरीका के कट्टरपंथी राजनीतिबाजों व सेनाध्यक्षों को गौरबाचौफ के पीछे चलना पड़ा. और नतीजा हम सब देख रहे हैं—सारा संसार आज बहुत राहत महसूस कर रहा है.

फौजी खर्च में गरीब जनता के धन की छीजन भी बहुत है. यह खर्च बहुत गुप्त रखा जाता है-अपनी ही जनता से. बाहर वाले, विशेषतः शत्रु, जिन से जूझने के लिए हम साजसामान खरीदते हैं, इस सब की पूरी जानकारी रखते हैं क्योंकि विदेशी सामान बेचने वाली कंपनियां अपना माल बेचने की होड़ में एकदूसरे को बताती हैं कि देखिए हम ने आप के संभावित शत्रु को यह सामान बेचा है, आप भी लीजिए अन्यथा आप पिछड़ जाएंगे.

वैसे भी पश्चिमी देशों में शस्त्रों, फौजी सामान व फौजों पर अनेक पत्रपत्रिकाएं, पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, जिन में हर देश की फौजों का पूरा, और लगभग सही विवरण होता है.

अपनी जनता से इस खोजखबर को छिपा कर रखने में एक उद्देश्य और भी है—राजनीतिबाज और सैनिक अधिकारियों को जो मोटी रिश्वतें मिलती हैं, उस पर परदा डाले रहना.

आज सरकार की छोटे से पिन से ले कर कई अरब रुपए के लड़ाकू हवाई जहाजों तक की खरीद में ऊपर से नीचे तक सत्तारूढ राजनीतिबाजों और सरकारी अमले की पत्ती होती है. बिना उस के आप को पहले तो खरीद का आदेश ही नहीं मिलेगा. यदि किसी कारण मिल भी जाए तो आप का माल पास नहीं होगा, और यदि पास भी हो जाए तो बिल का भुगतान नहीं होगा. हर कदम पर पुरोहितों, पंडितों की नवग्रह की पूजा की तरह आप को चढ़ावा चढ़ाना पड़ता है. और जैसा ऊपर कहा जा चुका है, सामान के मूल्य के साथ इस चढ़ावे की रकम (और उस चढ़ावे पर भी बेचने वाले के मुनाफे की रकम) आप की, हमारी, सब की जेब से जबरदस्ती निकाली जाती है. इस प्रकार फौजी खर्च बढ़ाने में सत्तारूढ राजनीतिबाज और सरकारी अमले की पूरी दिलचस्पी, सहयोग और उत्कंठा होती है. इस पर रोक लगाने की मांग करना हर प्रबुद्ध नागरिक का कर्तव्य है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पसंख्यक समस्या राष्ट्र राज्यों के निर्माण के साथ जुड़ी हुई है. किसी भी राष्ट्र राज्य में एक राष्ट्रीय समाज अथवा गिरोह होता है जिस के घटक भावात्मक लगावों और सांझी आस्थाओं के आधार पर उस राष्ट्र की धरती और संस्कृति के प्रति आत्मीयता रखते हैं और उन की रक्षा के लिए सब कुछ करने को उद्यत रहते हैं. राष्ट्र राज्य में यह राष्ट्र समूह सत्तासंपन्न होता है और राष्ट्र और देश उस के नाम से जाना जाता है. ऐसे राज्यों में जो कुछ कम संख्या वाले तत्त्व या समूह होते हैं जो भाषा नस्ल अथवा पंथ के मामले में राष्ट्र समूह से भिन्न होते हैं, उन्हें उस राष्ट्र राज्य के अल्पसंख्यक माना जाता है. इस प्रकार अल्पसंख्यकों का प्रश्न वहीं उठता है, जहां कोई बहुसंख्यक समूह को वहां का राष्ट्र माना ज़ाता है. जहां कोई विशिष्ट समूह राष्ट्र के रूप में मान्यता नहीं पाता, वहां किसी अन्य

अल्पसंख्यक समस्या और स

लेख • बलराज मधोक

समूह को अल्पसंख्यक के रूप में मान्यता देने का प्रश्न भी नहीं उठता.

संयुक्त राष्ट्र संघ के मानव अधिकार आयोग ने 1950 में अल्पसंख्यकों की निम्न परिभाषा की थी:

"राष्ट्रीय सत्तासंपन्न समाज से भिन्न वही समुदाय अल्पसंख्यक कहे जा सकते हैं जिन की भाषा, मजहब अथवा नस्ल मुख्य राष्ट्रीय समुदाय की भाषा, मजहब और नस्ल से भिन्न हो और जो उस भिन्नता को बनाए रखना चाहते हों. अल्पसंख्यक माने जाने के लिए यह आवश्यक है कि उन की संख्या पर्याप्त हो और उन के सदस्य उस राष्ट्र राज्य जिस में वे रहते हैं, के प्रति वफादार हों."

ऐसे अल्पसंख्यकों को समान कानूनी और मानवीय अधिकार देना और उन के साथ किसी प्रकार का भेदभाव न बरतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

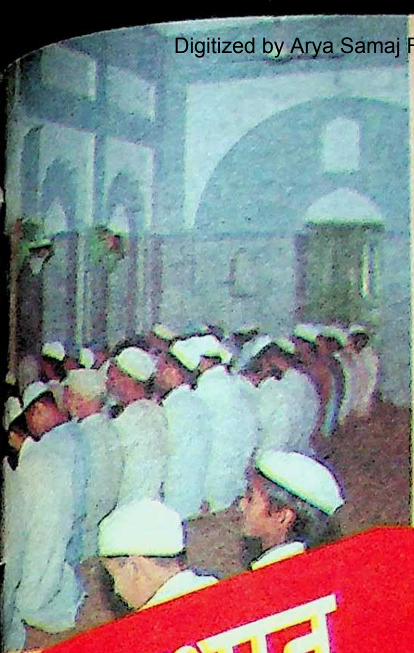

दुनिया भर के देश अल्पसंख्यकों की समस्याओं से जूझ रहे हैं पर भारत में जाति, धर्म और भाषाई अल्पसंख्यकों की समस्याएं विशेष रूप में उग्र हैं. हाल के वर्षों में सिख और मुसलिम अल्पसंख्यकों के उन्माद ने स्थिति को विस्फोटक बना दिया और बिना कठिन व अप्रिय फैसलों के इस समस्या का हल दिखाई नहीं देता. जनसंघ के नेता बलराज मधोक का इस विश्वव्यापी समस्या का विश्लेषण प्रस्तुत है.

समाधान

मुसलिम अल्पसंख्यकों की आस्था का प्रथम केंद्र उन का मजहब होने के कारण गैरमुसलिमों के साथ बराबरी के आधार पर उन का सहअस्तित्व कहीं भी संभव नहीं है.

सभी राष्ट्र राज्यों से अपेक्षित है व संयुक्त राष्ट्र संघ इस पर बल देता है. परंतु व्यवहार में अल्पसंख्यकों के प्रति विभिन्न राज्यों का दृष्टिकोण और बरताव एक जैसा नहीं है.

भाषाई अल्पसंख्यक

इन तीन प्रकार के अल्पसंख्यकों में भाषायी अल्पसंख्यकों की समस्या बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

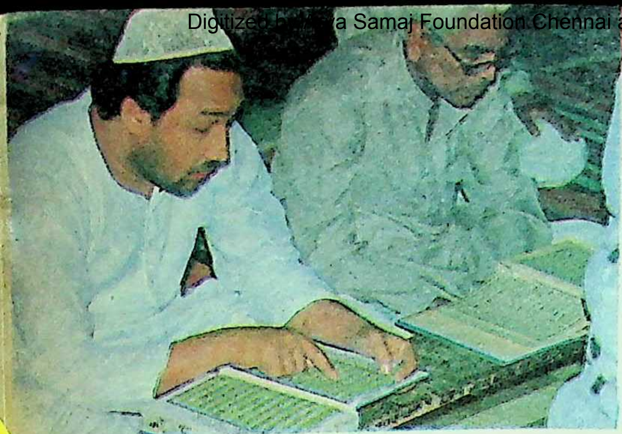

धर्मावलंबी अल्पसंख्यकों की समस्या सब से अधिक है

जटिल नहीं है. विभिन्न राज्यों में उन्हें राष्ट्रभाषा को अपनाना पड़ता है परंतु उन की अलग भाषा के पठनपाठन की व्यवस्था भी की जाती है. जहां लिपि समान हो वहां अल्पसंख्यकों के लिए अपनी भाषा और राष्ट्रभाषा को एक साथ पढ़ना आसान हो जाता है क्योंकि यूरोप की सभी भाषाओं ने रोमनलिपि अपना ली है इसलिए वहां भाषाई अल्पसंख्यकों की कोई विशेष समस्या नहीं है. सरकारी कामकाज के लिए राष्ट्रभाषा का ही प्रयोग होता है परंतु जहां विभिन्न भाषा वाले लोगों का विशिष्ट और बड़ा क्षेत्र हो वहां उन की भाषा का स्थानीय शासन में प्रयोग किया जाता है.

नस्ली अल्पसंख्यक

नस्ली अल्पसंख्यकों की समस्या भाषाई अल्पसंख्यकों की समस्या की अपेक्षा अधिक जटिल होती है. नस्ली विशिष्टताएं शक्लसूरत और रंग में प्रतिबिंबित होती हैं. उन्हें मिटाना आसान नहीं होता. परंतु अंतर्जातीय और अंतर्नस्ली विवाह तथा समान भाषा और मजहब के बल पर नस्ली अल्पसंख्यकों को राष्ट्रीय समूह के निकट लाया जा सकता है. अमरीका इस का अच्छा उदाहरण है.

मजहबी अल्पसंख्यक

मजहबी अल्पसंख्यकों की समस्या, विशेष रूप से मुस्लिम धर्मावलंबी अल्पसंख्यकों की समस्या सब से अधिक जटिल है. उन की आस्था का प्रथम केंद्र उन का मजहब होने के कारण और इसलाम की 'मिल्लत और कुफ्र', 'दार-उल-इसलाम' और 'दार-उल-हरब' की परिकल्पनाओं के कारण उन का गैरमुसलिमों के साथ बराबरी के आधार पर शांतिपूर्ण सहअस्तित्व कभी भी संभव नहीं हो पाता. जहां मुसलिम बहुमत में होते हैं या जहां राजसत्ता उन के हाथ में होती है, वहां उन का गैर मुसलमानों के प्रति रवैया दमनकारी होता है और जहां वे अल्पसंख्या में होते हैं, वहां उन का व्यवहार विघटनकारी होता है.

यही बात कुछ अंशों में अन्य सेमेटिक मजहबों—ईसाइयत और यहूदी धर्म—के मानने वालों पर भी लागू होती है. परंतु यहूदी अब इजराइल में सीमित हो चुके हैं और ईसाइयों के बड़े भाग ने अपने मजहब का कुछ हद तक आधुनिकीकरण और मानवीकरण कर लिया है.

संसार में अल्पसंख्यकों के प्रति लोकतांत्रिक देशों और कम्यूनिस्ट देशों के रवैए में थोड़ा अंतर रहा है. अमरीका और ब्रिटेन जैसे लोकतांत्रिक ईसाई देशों ने व्यवहार में सर्वपंथसमभाव के सिद्धांत को अपना लिया है. वे सभी पूजाविधियों को अपनाने की समान छूट देते हैं और सभी नागरिकों के लिए समान कानून और कानून के सामने सब की बराबरी की व्यवस्था करते हैं. इस कारण वे घोषित या अघोषित ईसाई राज्य होते हुए भी व्यवहार में सेक्युलर अथवा पंथनिरपेक्ष राज्य माने जाते हैं. परंतु ऐसे देश भी मुसलमान अल्पसंख्यकों के प्रति विशेष रूप में सतर्क रहते हैं क्योंकि वहां की ईसाई जनता और शासक इसलाम के नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

... है, इस के ऐतिहासिक कारण भी है.

शताब्दियों तक ईसाइयत और इसलाम के बीच विश्वव्यापी संघर्ष चलता रहा. पहले महायुद्ध के बाद जब इसलाम एक राजनीतिक शक्ति के रूप में बहुत दुर्बल हो गया और साम्यवाद के रूप में ईसाइयत और लोकतंत्र के लिए एक नई चुनौती सामने आई तब ईसाइयत और इसलाम के बीच का संघर्ष कुछ थम गया. इसलाम का स्थान साम्यवाद ने ले लिया और साम्यवाद तथा साम्यवादी देश ईसाइयत और ईसाई राज्यों का पहला निशाना बन गए.

यह स्थिति अब बदल रही है. कम्यूनिज्म और कम्यूनिस्ट देशों के वैचारिक आधार और व्यवहार में बदलाव आ रहा है. वहां लोकतंत्र और मानववाद फिर उभर रहा है और ईसाइयत का पुनःउदय हो रहा है. इसलिए उन के साथ संघर्ष के स्थान पर सहयोग का वातावरण बन रहा है.

दूसरी ओर पेट्रो डालरों के कारण इसलामवादियों और इसलामी देशों की बढ़ती हुई शक्ति तथा पाकिस्तान और ईरान जैसे देशों में इसलामी सिद्धांतवाद और जुनून के फिर उग्र रूप लेने के कारण इसलामी देशों और इसलामवादियों तथा ईसाई देशों और ईसाइयत के बीच पुराना संघर्ष फिर चालू हो गया है.

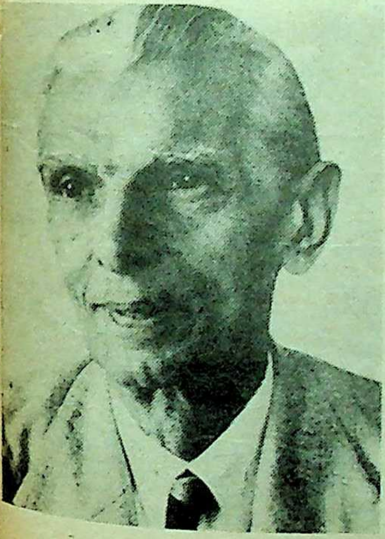

रुशदी कांड ने भी इस संघर्ष को पुनः चालू करने में अहम भूमिका अदा की है.

यूरोप के ईसाई बहुल राष्ट्र राज्यों में यह एहसास फिर पैदा होने लगा है कि इसलामवादियों की आस्था का पहला केंद्र इसलाम और इसलामी देश ही हैं. इसलिए उन की वफादारी पर फिर से शक किया जाने लगा है.

इस एहसास की स्पष्ट झलक अमरीका में देखने को मिली. शिकागो में मैं वहां के काले मुसलिम नेता को मिलने गया. मेरे साथ मेरे मार्गदर्शक रूजवेल्ट जूनियर थे. इस काले मुसलिम नेता ने लगभग उसी प्रकार की बातें कीं जैसी कि हिंदुस्तान में मौलाना बुखारी और शाहबुद्दीन करते हैं. उस ने काले मुसलमानों को अलग राष्ट्र बताया और दावा किया कि अमरीका को काट कर एक अलग मुसलिम राज्य बनाया जाएगा. उस से मिल कर वापस लौटते हुए मैं ने रूजवेल्ट से कहा कि जब अमरीका में भी मुसलमानों की जनसंख्या 10% के लगभग हो जाएगी तब आप लोग हमारी मुसलिम समस्या को समझ सकोगे.

उस की प्रतिक्रिया बहुत स्पष्ट और चौंका देने वाली थी. उस ने कहा, "हम आप हिंदुओं की तरह मूर्ख नहीं हैं. हम अमरीका में इन मुसलमानों को उस स्तर तक पहुंचने से पहले ही कुचल देंगे." कोई भी राष्ट्रराज्य विघटनकारियों को पनपने देना नहीं चाहता.

कम्यूनिस्ट अपने अल्पसंख्यकों के प्रति लोकतांत्रिक ईसाई देशों की अपेक्षा अधिक सतर्क और जागरूक हैं. उन का प्रयत्न रहता है कि मुसलिम तथा अन्य भाषाई नस्ली और मजहबी अल्पसंख्यकों को या तो पूरी तरह आत्मसात कर लिया जाए, उन्हें राष्ट्र की

मोहम्मद अली जिन्नाह, पाकिस्तान के संस्थापक : वास्तव में अलगाववादी कड़ी यहीं से शुरू होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

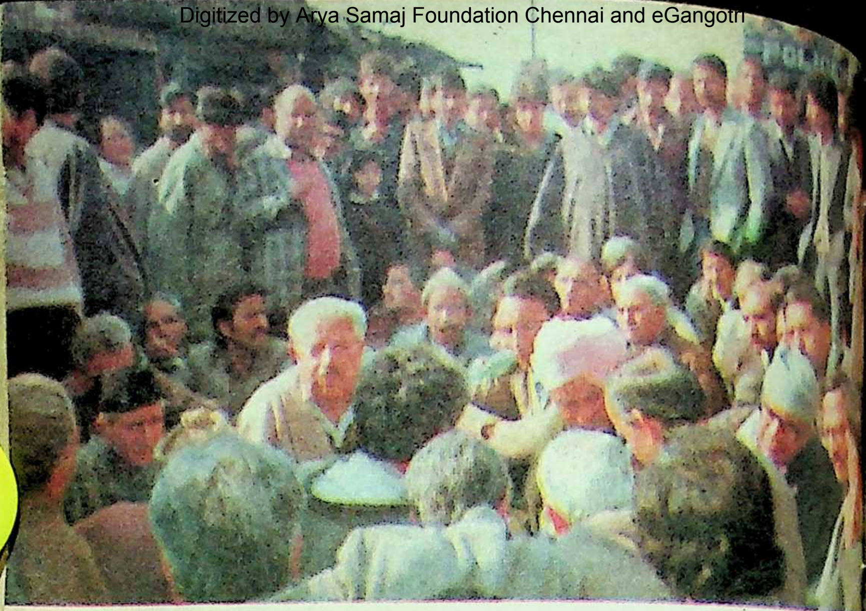

कशमीर में बीच सड़क पर होनी एक ... उग्रवादी अल्पसंख्यकों का पूरा प्रयास है ... कशमीर को भारत से अलग कर पाकिस्तान ... मिला दिया जाए.

मुख्य धारा में मिला लिया जाए या फिर ऐसी स्थिति पैदा कर दी जाए कि वे अल्पसंख्यक किसी प्रकार का विघटनकारी रोल न अदा कर सकें.

इस दृष्टि से सोवियत रूस ने एक ओर अपने अल्पसंख्यकों का योजनाबद्ध ढंग से रूसीकरण किया और दूसरी ओर अपने मुसलिम बहुल क्षेत्रों और राज्यों में सफेद रूसियों को बड़ी संख्या में योजनाबद्ध ढंग से बसाया ताकि वे इसलाम की अलगाववादी और विघटनकारी प्रवृत्तियों पर प्रभावी अंकुश का काम कर सकें. रूस में मुसलिम अल्पसंख्यक लगभग 20% है.

यूगोस्लाविया, बुलगारिया और चीन ने भी अपने क्रमशः 18%, 12% और 5% मुसलिम अल्पसंख्यकों के प्रति ऐसी ही नीति अपना रखी है. इस नीति का एक प्रमुख अंग यह रहा है कि अल्पसंख्यकों की जनसंख्या न बढ़े. इस के लिए इन सभी देशों ने विशेष पेशबंदियां कर रखी हैं.

परंतु इन पेशबंदियों के बावजूद इन कम्यूनिस्ट देशों में भी अब यह एहसास पैदा हो रहा है कि इसलामवादियों का राष्ट्रीयकरण करना और उन्हें राष्ट्रधारा में लाना आसान नहीं और उन की वफादारी ... भरोसा नहीं किया जा सकता. अफगानिस्तान ... में सोवियत रूस के मुसलिम सैनिकों ... व्यवहार ने रूस को चौंका दिया. उसे ... अपने मुसलिम सैनिकों को वापस बुला... पड़ा. अजरबेजान आदि मुसलिम राज्यों ... मुसलमानों में अलगाववाद के पुनरुदय ने ... कम्यूनिस्टों को झकझोरा है. अब वे भी मानने लगे हैं कि इसलामवादी अल्पसंख्यक ... सोवियत रूस, यूगोस्लाविया इत्यादि कम्यू... निस्ट देशों की एकता के लिए भी ... खतरा हैं.

भारत मूल के पंथ, जिन में वैदिक ... मानववाद और सभी पूजाविधियों ... मजहबों के प्रति सहिष्णुता का भाव ... है, सेमेटिक मजहबों, विशेष रूप में इसलाम ... से मेल नहीं खाते. परंतु अपनी वैदिक ... परंपरा के कारण उन्होंने सेमेटिक मजहबों ... को भी उसी भाव से देखा जिस से वे ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...न के अन्य पंथों और उन के अनुयायियों को समझते थे. इस कारण उन्होंने धोखा खाया और खा रहे हैं.

परंतु 1947 के भारत विभाजन के बाद साइप्रस के विभाजन और लेबनान, पाकिस्तान, बंगलादेश, थाईलैंड और फिलिपीन में मुसलमानों के गैरमुसलिमों के प्रति व्यवहार तथा खंडित भारत में मुसलिम समस्या के फिर खड़े हो जाने के कारण बहुत से राष्ट्रवादी और जागरूक भारतीयों को भी इसलाम और इसलाम-वादियों के प्रति अपने दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करना पड़ रहा है.

ऊपर दिए गए तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में ही भारत की अल्पसंख्यक समस्या का सही मूल्यांकन किया जा सकता है और उस के समाधान का मार्ग ढूंढ़ा जा सकता है.

भारत की अल्पसंख्यक समस्या

भारत अथवा हिंदुस्तान एक विशाल और प्राचीन देश है. इस में भाषा, जाति और पंथ की अनेक विविधताओं के बावजूद इस की मूल भौगोलिक और सांस्कृतिक एकता निर्विवाद है. राजनीतिक दृष्टि से विभिन्न कालों में अनेक राज्यों में बंटे रहने और लंबे काल तक विदेशी राज से पीड़ित रहने के बावजूद इस ने अपनी मौलिक एकता को अक्षुण्ण रखा है.

मुसलमानों व अन्य अल्पसंख्यकों का राष्ट्रीयकरण कर के राष्ट्र की धरती और संस्कृति के प्रति प्रथम आस्था रखने के लिए प्रेरित किया जाए

भारत के मुसलमान नस्ल, भाषा और संस्कृति की दृष्टि से यहां के राष्ट्रीय हिंदू समाज के अभिन्न अंग हैं. विदेशी अरब और तुर्क मुसलमानों के वंशज दोतीन प्रतिशत से अधिक नहीं हैं. परंतु इसलामवाद और कुरान ने उन में जो अलगाववाद पैदा किया और जिसे ब्रिटिश शासकों ने अपने साम्राज्यवादी हितों के लिए बढ़ावा दिया, उस के कारण उन्होंने देश का विभाजन कर के अपने लिए एक अलग 'होमलैंड' की मांग उठाई.

सन 1941 की जनसंख्या के अनुसार ब्रिटिश भारत में मुसलमान लगभग 23% थे और देशी रियासतों की जनसंख्या में, जो कुल देश की जनसंख्या का एक तिहाई थी, उन का अनुपात 10% से कम था. इस प्रकार 1947 में सारे देश की जनसंख्या में उन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपात लगभग 20% था. परंतु विभाजन के कारण उन्हें भारत की 30% धरती मिल गई.

इस अलगाववादी और विघटनकारी मांग का समर्थन लगभग सभी मुसलमानों ने किया था. 1946 के आम चुनाव में जिस का मुख्य मुद्दा अखंड भारत बनाम विभाजन था, 93% मुसलमान मतदाताओं ने विभाजन और पाकिस्तान के पक्ष में मत दिया था. जिन 4% ने इस के विरोध में मत दिया था वे सिंध, सीमा प्रांत और पश्चिमी पंजाब के रहने वाले थे.

कांग्रेस के नेताओं द्वारा विभाजन के पक्ष में तब केवल एक बात कही जाती थी–इस से अल्पसंख्यक अथवा मुसलिम समस्या का स्थायी समाधान हो जाएगा. गांधीजी ने तब कहा था कि क्योंकि मुसलमान हिंदुओं के साथ मिल कर एक घर में रहने को तैयार नहीं थे इसलिए हम ने देश की धरती को बांट दिया है ताकि मुसलमान पाकिस्तान में खुश रहें और हिंदू हिंदुस्तान में. परंतु यह अपेक्षा पूरी नहीं हुई.

यदि विभाजन के साथ ही इस के तर्कसंगत फलितार्थों को भी मान कर कार्यरूप दिया गया होता तो संभवत: खंडित भारत और पाकिस्तान दोनों की अल्पसंख्यक समस्या समाप्त हो जाती. उन तर्कसंगत फलितार्थों में प्रमुख था भारत में बच गए मुसलमानों और पाकिस्तान में बच गए हिंदुओं की अदलाबदली. उस समय खंडित भारत में लगभग ढाई करोड़ मुसलमान बच गए थे और पाकिस्तान में लगभग इतने ही हिंदू.

डा. अंबेडकर ने तुर्की और यूनान के बीच मुसलिम और ईसाई जनसंख्या की अदलाबदली की तरह भारत और पाकिस्तान की हिंदू मुसलिम जनसंख्या की अदलाबदली की विस्तृत योजना भी अपनी विख्यात पुस्तक 'थाट्स ऑन पाकिस्तान' में पेश की थी. देश का विभाजन स्वीकार करना और इस के तर्कसंगत फलितार्थों को स्वीकार न करना उस समय के भारत के नेताओं की सब

ही नहीं आपत मुस
थी. अब बहुत से कांग्रेसी नेता भी इस को दबी जबान से मानने लगे हैं.

दूसरा रास्ता यह था कि दोनों राष्ट्रराज्य मिल कर तय करते कि दोनों रह गए हिंदू और मुसलमान अल्पसंख्यकों प्रति समान व्यवहार किया जाएगा. तर्कसंगत और व्यावहारिक बात होती. पाकिस्तान के शासकों को यह स्पष्ट बता दिया जाता कि भारत में मुस अल्पसंख्यकों के प्रति वही व्यवहार होगा पाकिस्तान अपने हिंदू अल्पसंख्यकों के प्र करेगा तो शायद उन का व्यवहार कुछ होता और दोनों देशों में अल्पसंख्यकों समान राहत मिलती. परंतु ऐसा भी न हुआ.

गत 42 वर्षों में पाकिस्तान ने हिंदू अल्पसंख्यक समस्या का समाधान सब को मार कर या जबरदस्ती मुसलमान बना कर या खदेड़ कर कर लिया है. 1947 पाकिस्तान में हिंदू लगभग 23% थे. अब 23% से कम हो कर 19% भी नहीं रहे पाकिस्तान जो बंगलादेश कहलाता है, यही स्थिति है. वहां हिंदू बौद्ध लगभग थे, अब वे 10% भी नहीं रहे और वे भी अपने दिन गिन रहे हैं.

दूसरी ओर खंडित भारत में मुसलमानों अल्पसंख्यक समस्या ने फिर वही रूप धारण कर लिया है जो 1947 से पहले था. उन जनसंख्या चारगुना बढ़ चुकी है. 1981 जनगणना में वे लगभग 8 करोड़ हो चुके वास्तव में स्थिति 1947 से भी अधिक भयानक हो चुकी है क्योंकि अब अल्पसंख्यक समूह की पीठ पर भारत कुछ राजनीतिक दलों का भी वरदहस्त और पाकिस्तान, बंगलादेश तथा अ इसलामी देशों का भी.

कशमीर घाटी की तरह जहां भी बहुसंख्या में हैं, उसे वे भारत से काट पाकिस्तान में मिलाने के लिए सक्रिय हैं. देश में वे योजनाबद्ध ढंग से अपनी जनसं बढ़ा रहे हैं और इसे भी पाकिस्तान की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

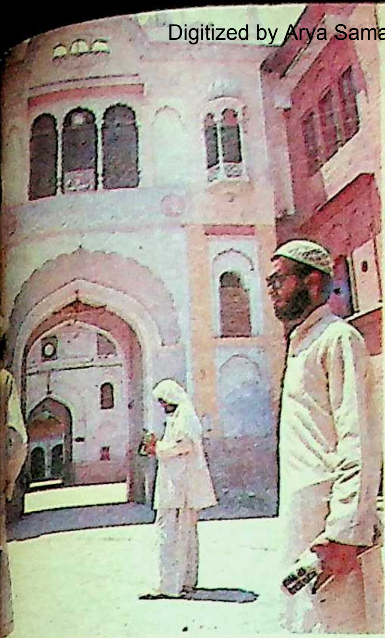

दारुल उलूम देवबंद, मुस्लिम शिक्षण संस्थाओं को बढ़ावा न दे कर ही भाषाई अल्पसंख्यकों का भारतीयकरण किया जा सकता है.

इस्लामी राज्य बनाने का षड्यंत्र चला रहे हैं. 1947 के पूर्व की तरह वे फिर जगहजगह दंगे करने लगे हैं और अपनी अलगाववादी मांगों को दिनोदिन बढ़ाते जा रहे हैं.

मुसलमान अल्पसंख्यकों के रुख का प्रभाव कुछ ईसाई और केशधारी सिक्खों पर भी पड़ने लगा है. इस प्रकार सारे देश में अल्पसंख्यक समस्या ने फिर भयानक रूप धारण कर लिया है और देश के नए विघटन का खतरा पैदा हो गया है.

खंडित भारत इस बात पर गर्व कर सकता है कि उस ने हिंदू परंपरा और संस्कृति के अनुरूप अपने अल्पसंख्यकों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया.

खंडित भारत में मुसलमानों की जनसंख्या का चारगुना बढ़ जाना इस बात का अकाट्य और ज्वलंत प्रमाण है. परंतु इस के बावजूद मुसलिम नेता सारे संसार में यह कुप्रचार कर रहे हैं कि भारत में उन के साथ बुरा और अमानवीय बरताव होता है. इस प्रकार भारत दोनों ओर से पिट रहा है और यहां का राष्ट्रीय समाज अपने ही देश में अपने अस्तित्व को असुरक्षित महसूस करने लगा है.

इस स्थिति को सुधारना और अल्पसंख्यक समस्या का संसार के अन्य देशों के अनुभव के आधार पर तर्कसंगत और राष्ट्रहित के अनुरूप समाधान निकालना अब अपरिहार्य हो चुका है. इस उद्देश्य से निम्न सुझावों पर विचार करने की आवश्यकता है.

● भारत के विरुद्ध संसार भर में होने वाले कुप्रचार को रोकने के लिए यह आवश्यक है कि संसार के सामने ठीक जानकारी प्रस्तुत की जाए. इसलिए यह उचित होगा कि भारत सरकार यथाशीघ्र भारत के अल्पसंख्यकों के संबंध में एक श्वेतपत्र जारी करे, जिस में 1947 से पूर्व सारे देश में अल्पसंख्यकों की स्थिति के संबंध में आंकड़े और अन्य जानकारी दी जाए. 1947 के बाद खंडित भारत और पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की जनसंख्या और अन्य प्रासंगिक जानकारी भी दी जाए और इस समय पाकिस्तान और बंगला देश में हिंदू अल्पसंख्यकों की संख्या और स्थिति क्या है और भारत में मुसलमानों की संख्या और स्थिति क्या है यह विस्तार से बताया जाए. इस प्रकार का श्वेतपत्र न केवल गलत प्रचार पर प्रभावी रोक लगाएगा अपितु भारत की अल्पसंख्यक समस्या को वस्तुपरक ढंग से समझने और उस का यथार्थवादी हल निकालने के लिए भी सहायक सिद्ध होगा.

● यह भी स्पष्ट करना होगा कि भारत में राष्ट्र कौन से समाज या समूह हैं. मुसलमान अपने अलग राष्ट्र होने के आधार पर अलग देश ले चुके हैं. खंडित भारत में वे अल्पसंख्यक तभी माने जा सकते हैं जब यह स्पष्ट रूप में मान लिया जाए कि खंडित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत हिंदू राष्ट्र है और हिंदू इस का राष्ट्रीय समाज है क्योंकि मूल समस्या मुस्लिम अल्पसंख्यकों की है इसलिए यदि उस का ठीक समाधान निकाल लिया जाए तो अन्य अल्पसंख्यकों की समस्या का समाधान कठिन नहीं होगा.

अखंड भारत के मुसलमान अल्पसंख्यकों को 1947 में अलग देश मिल गया था. इसलिए उन में से जो आज भारत में अपने प्रति व्यवहार से असंतुष्ट हैं या यहां की रीति नीति अपने अनुकूल नहीं समझते वे पाकिस्तान अथवा बंगलादेश जा सकते हैं. यह रास्ता उन के लिए 1947 से खुला है. उन्हें कोई भारत में रहने के लिए बाध्य नहीं कर रहा है, न करना चाहेगा.

जो पाकिस्तान नहीं जाना चाहते उन के लिए दूसरा विकल्प यह है कि वे भारत के प्रति वफादार रहें और अपनी अलगाववादी मांगें छोड़ कर देश के समान नागरिक बन कर रहें.

इस मामले में भारत सरकार, राजनेताओं और राजनीतिक दलों पर भी जिम्मेदारी आती है कि वे अपने दलगत स्वार्थ के लिए मुस्लिम अलगाववाद को बढ़ावा देना बंद करें और मुसलमानों तथा अन्य अल्पसंख्यकों को विशेष अधिकार की बात और उन का तुष्टीकरण बंद करें. इस दृष्टि से निम्नोक्त बातें करनी होंगी:

● भारत के संविधान में से धारा 29 व 30 और 370 जो अल्पसंख्यकों के पक्ष में भेदभाव करती है, निकाल दी जाए और ऐसी व्यवस्था की जाए कि सरकार नागरिकों के बीच पूजाविधि के आधार पर कोई भेदभाव न करे.

● सभी नागरिकों के लिए समान कानून हो. इस हेतु संविधान की धारा 44 पर अविलंब अमल हो और शरीयत की ऐसी बातों को जो भारत के संविधान और मानववाद के विपरीत हैं, अमान्य घोषित किया जाए.

● कानून के सामने सभी नागरिक बराबर हों. मुस्लिम महिलाओं को भी वही अधिकार दिए जाएं जो हिंदू महिलाओं को प्राप्त हैं.

● पूजाविधि की पूरी छूट देते हुए मुसलमानों और अन्य अल्पसंख्यकों को भारत की धरती और संस्कृति के प्रति आस्था रखने के लिए प्रेरित किया जाए. इस दृष्टि से सभी का भारतीयकरण अर्थात राष्ट्रीयकरण किया जाए.

● जो मुसलमान न पाकिस्तान जाना चाहते हैं और न अपना भारतीयकरण करा के राष्ट्र की महाधारा में शामिल होना चाहते हैं, उन के लिए तीसरा विकल्प यह है कि वे भारत में विदेशी के रूप में रहें और उन्हें वोट के अधिकार से वंचित होना पड़े.

भारत के मुसलमानों के सामने ये तीन विकल्प हैं. इन में से उन्हें एक चुनना पड़ेगा. जितनी जल्दी वे इन तीन में से एक को चुन लें, उतना ही उन के लिए भी अच्छा होगा और देश के लिए भी.

देश के शासकों का कर्तव्य है कि मुसलमानों के सामने ये तीन विकल्प स्पष्टता से रखें और उन्हें स्पष्ट रूप में बताएं कि भारत ने अल्पसंख्यकों के प्रति वह नीति जो पाकिस्तान और बंगलादेश ने अपने अल्पसंख्यकों के प्रति अपनाई है और जिसे भारत द्वारा भी अपनाना तर्कसंगत होता, नहीं अपनाई है और न अपनाएगा ही. पर मुसलमानों से यह अपेक्षा अवश्य की जाएगी कि वे दो नावों की सवारी बंद करें और मनसा, वाचा, कर्मणा भारत में भारतीय, इंडिया में इंडियन और हिंदुस्तान में हिंदुस्तानी बन कर रहें, पाकिस्तानी या बंगलादेशी या अरब बन कर न रहें.

मुसलमानों और अन्य मजहबी अल्पसंख्यकों को अपने पंथ को स्वतंत्रता से मानने और चलाने की छूट देते हुए यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि मजहब या पंथ उन के व्यक्तिगत जीवन तक सीमित रहे. इस संदर्भ में अल्पसंख्यक आयोग और शिक्षा क्षेत्र में अल्पसंख्यक संस्थानों की कोई प्रासंगिकता नहीं है. अल्पसंख्यक आयोग खत्म होना चाहिए या उस के स्थान पर मानव अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद हैं वो दिन, जब एक गुलाबी हिप्पो

पर सारी दुनिया न्यौछावर थी?

उन दिनों सिबाका टूथपेस्ट का पैक खोलना जादू की पिटरिया खोलने से कम न था. अब अपने बच्चों के लिये वही जादू जगाइये!

सिबाका के नन्हे-मुन्ने जानवर लौट आये हैं

सिर्फ [illegible] ग्राम फैमिली पैक में उपलब्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आयोग बनाना चाहिए और सभी विश्व-
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
विद्यालयों के लिए समान कानून बनाना चाहिए.

जहां तक भाषाई अल्पसंख्यकों का प्रश्न है, भारत में यह कोई विशेष समस्या नहीं है. यहां की अधिकांश भाषाएं संस्कृत में से उपजी हैं और शेष में संस्कृतमूलक शब्दों की बहुलता है. यदि इन सब के लिए देवनागरी लिपि को शुरू में वैकल्पिक लिपि के रूप में मान लिया जाए, संस्कृत के पठनपाठन पर विशेष बल दिया जाए और हिंदी को भाषाभारती के रूप में सभी प्रादेशिक भाषाओं के शब्दों से समृद्ध किया जाए तो भाषाई अल्पसंख्यकों की कोई समस्या भारत में नहीं होगी.

भारत में नस्ली अल्पसंख्यकों की समस्या भी कोई खास नहीं है. पूर्वी राज्यों के लोगों पर मंगोल नस्ल का प्रभाव है, परंतु

अपने छोटे बच्चों को

चंपक

दीजिए
और बड़े बच्चों को

सुमन सौरभ

चंपक व सुमन सौरभ में भूतप्रेतों, राक्षसों, देवीदेवताओं, चमत्कारों और श्रापों के कारनामे, जादूटोने, अंधविश्वास की कहानियां प्रकाशित नहीं की जातीं.

दोनों पत्रिकाओं में रचनात्मक चरित्र निर्माण करने वाली, ज्ञान बढ़ाने वाली मनोरंजक कहानियां व लेख प्रकाशित किए जाते हैं. जिस से कल व आज के बच्चे जागरूक, स्वाभिमानी, देशप्रेमी नागरिक बन सकें.

नमूने की प्रति के लिए लिखें : दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली - 110055.

हिंदू ... न उन्हें शेष ... समाज के साथ बहुत कुछ एकरूप कर... है. ईसाई मिशनरियां जरूर इस ... को समाप्त करने का प्रयत्न कर रही है ... की गतिविधियों पर प्रभावी रोक ... आवश्यकता है.

ऊपर दिया गया विवेचन तथा ... और सुझाव व्यावहारिक और तर्कसंगत ... वे तथाकथित सेक्यूलरवाद के अनु... सेक्यूलरवाद के तीन बुनियादी तत्व ...

● राज्य अपने नागरिकों में पंथ ... पूजाविधि के आधार पर भेदभाव न ...

● सभी नागरिकों के लिए ... कानून हो.

● कानून के सामने सब बराबर ...

आज का भारत राज्य इन तत्वों ... पूरा नहीं करता. व्यवहार में यह ... सांप्रदायिक राज्य बन गया है जो ... समाज की कीमत पर अल्पसंख्यकों, ... रूप में मुसलमानों को विशेष अधिकार ... है.

यदि भारत को सही अर्थ... 'सेक्यूलर' राज्य बनाना है तो भारत को ... राज्य घोषित करना होगा. हिंदू ही ... पूजाविधियों की प्रासंगिकता को स्वी... करते हैं. यही कारण है कि सारे इतिहास ... हिंदू राज्य कभी सांप्रदायिक राज्य नहीं ... हिंदू राज्य में मजहबी अल्पसंख्यकों के ... बराबरी का व्यवहार होता रहा है ... होगा. हमारा पुराना इतिहास इस का ... है.

इसलिए आवश्यकता है कि हिंदु... के मनीषी, बुद्धिजीवी, चिंतक ... राजनेता भारत की अल्पसंख्यक समस्या ... विश्व इतिहास और अन्य देशों के अनु... की पृष्ठभूमि में देखें और आंकें. पहले ... भारत को राष्ट्र राज्य मानें, हिंदू समाज ... यहां का राष्ट्रीय समाज मानें और हिंदु... हिंदू राष्ट्र है, इसे खुले मन से स्वीकार ... तभी वे यहां पर अल्पसंख्यकों के अ... को स्वीकार कर सकेंगे और उनके प्रति ... नीति अपना सकेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

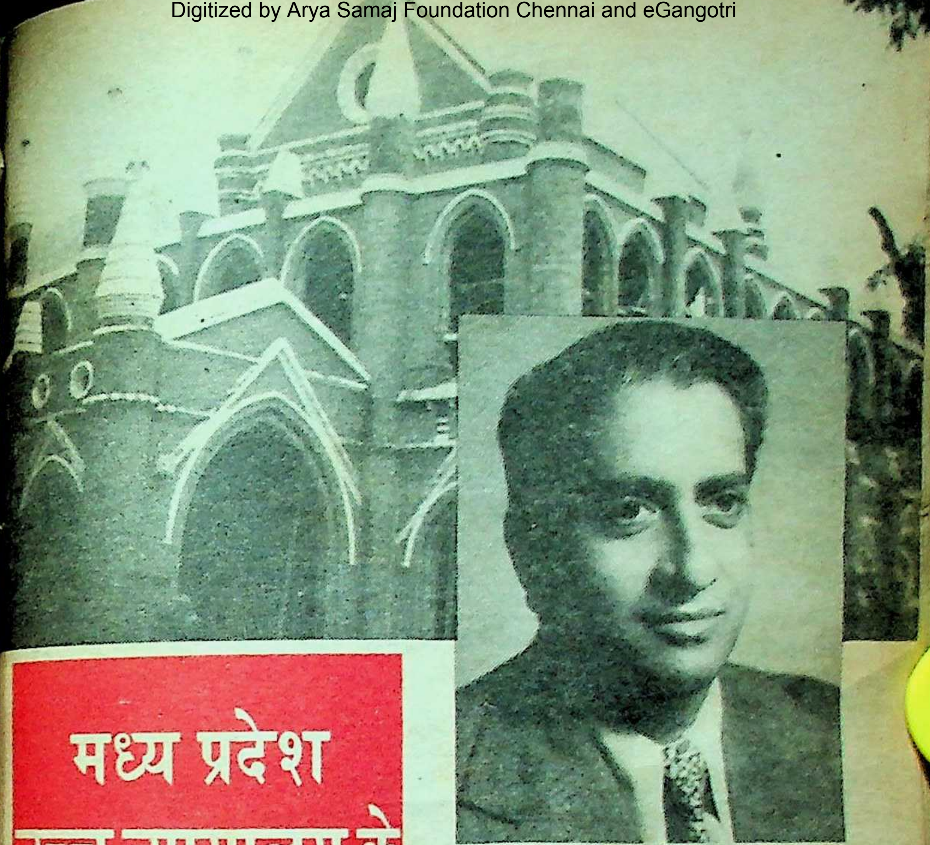

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति द्वारा हिंदी में फैसले का कीर्तिमान

भेंटवार्त्ता ● चैतन्य भट्ट

धायं धायं अंगरेजी में बहस करते हुए वकील, भारी भरकम अंगरेजी की कानूनी किताबें, सौसौ पृष्ठों में लिखे गए अंगरेजी के फैसले, यह उस भारतीय न्यायपालिका का चेहरा है, जहां भारत का हर आम मजबूर, बेबस, गरीब और लाचार आदमी न्याय की तलाश में आता है. अंगरेजों से विरासत में मिली न्याय प्रक्रिया और उस के कानूनों में भारत की जनभाषा हिंदी का कहीं कोई स्थान नहीं है.

जो लोग बरसों अदालतों में मुकदमें लड़ते हैं उन्हें इस बात की भी जानकारी नहीं होती कि उन का वकील न्यायमूर्तियों के सामने उन के मामले को किस तरह प्रस्तुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितनी विचित्र बात है कि न्यायालयों की संपूर्ण प्रक्रिया आम व्यक्ति की बोलचाल भाषा में न हो कर अंगरेजी भाषा में होती है. इस अंगरेजियत के वातावरण में हिंदी में निर्णय लिख कर एक नई आशा जगाई है न्यायमूर्ति गुलाबचंद्र गुप्ता ने. इस संदर्भ में उन के समक्ष क्याक्या कठिनाइयां आईं, पढ़ें उन्हीं की जुबानी.

कर रहा है. वह किन मुद्दों पर बहस कर रहा है, उसे मात्र इतना पता लग पाता है कि वह या हार गया है या उस के हिस्से जीत आई है. न्यायाधीश ने उसे किन तर्कों के आधार पर दोषी या निर्दोष पाया है इस बात की जानकारी से वह निर्णय की प्रति मिल जाने के बाद भी अनभिज्ञ रहता है. इस अंगरेजीमय वातावरण में यदि हिंदी का प्रयोग एकाएक होने लगे तो वह एक सुखद एहसास ही होगा.

अंगरेजी के इस रेगिस्तान में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति गुलाब चंद्र गुप्ता ने हिंदी की एक नई हरियाली को जन्म दिया है. पिछले डेढ़ साल के अंतराल में न्यायमूर्ति गुप्ता ने 500 से भी अधिक मामलों का निर्णय हिंदी में लिख कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है. हिंदी के प्रति श्री गुप्ता की सोच एकदम स्पष्ट और बेबाक है.

न्यायालयों में हिंदी के प्रयोग में आने वाली रुकावटों, उन्हें दूर करने के उपायों व न्यायिक व्यवस्था के अन्य ज्वलंत मुद्दों पर श्री गुलाब चंद्र गुप्ता से 'सरिता' के लिए लंबी बातचीत की गई. हिंदी के प्रयोग में आने वाली कठिनाईयों और परेशानियों के बावजूद प्रतिदिन एक निर्णय हिंदी में लिखने का श्री गुप्ता का प्रयास काबिले गौर है. प्रस्तुत है उन से की गई बातचीत के अंश:

प्रश्न: आप को हिंदी में फैसले लिखने का खयाल कैसे आया? क्या इस के पीछे किसी विशेष मामले की भूमिका है?

उत्तर: हिंदी में फैसले लिखने की सोच के पीछे दो कारण थे. सन 1985 में झाबुआ के एक आदिवासी ने मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय को अपने साथ हो रहे अन्याय के बारे में पत्र लिख कर न्याय की मांग की. इस शिकायती पत्र में उस ने लिखा था कि उस का सामान एक साहूकार के पास गिरवी रखा हुआ है जो उसे वापस नहीं मिल पा रहा है. उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति ने इस पत्र को याचिका मान कर मामला मेरे पास भेज दिया.

मैं ने कागजात मंगवाए व उसे भी बुलवाया. उसे सरकार की ओर से बिना फीस अधिवक्ता देने की बात भी कही. परंतु उस ने वकील लेने से इनकार करते हुए कहा कि उसे मुझ पर पूरा विश्वास है और जो भी फैसला मैं दूंगा, वह उसे स्वीकार होगा.

न्यायपालिका पर उस गरीब आदिवासी की आस्था ने मुझे यह सोचने के लिए बाध्य कर दिया कि क्यों न मैं उस के मामले का निर्णय उस की ही भाषा में दूं. जब मामला मेरे सामने आया, तब मैं ने देखा कि वास्तव में उस के साथ अन्याय हुआ था. मैं ने निर्णय लिया और व्यवस्था की कि निर्णय की प्रति उसे भी मिल सके. निर्णय के बाद वह फिर आया और मैं ने देखा कि उस के चेहरे पर खुशी की चमक दोगुनी हो गई थी.

एक दूसरा कारण यह भी था कि इन दिनों जो नए वकील इस पेशे में आ रहे हैं उन का अंगरेजी का ज्ञान न के बराबर है. वह न तो अदालत में अपना पक्ष प्रभावी ढंग से पेश कर सकते हैं और न ही अंगरेजी में लिखे गए फैसलों का ही अध्ययन कर सकते हैं. जबकि कानूनों का विकास फैसलों के आधार पर ही होता है. इन नए वकीलों की परेशानी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

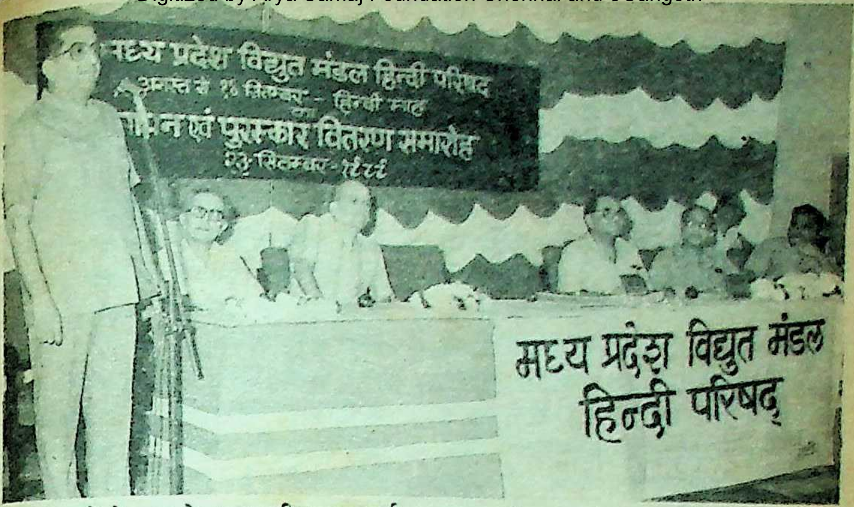

न्यायमूर्ति गुलाबचंद्र गुप्ता : "हिंदी में मामलों की सुनवाई व निर्णय से आम जनता न्यायपालिका से अपने आप को ज्यादा जुड़ी हुई महसूस करेगी."

भांप कर मैं ने उन से अदालती काररवाई हिंदी में करवाने का निर्णय लिया और 28 जुलाई 1988 से यह निश्चय कर लिया कि मैं प्रतिदिन एक निर्णय हिंदी में ही लिखूंगा. अभी तक मैं 500 से भी अधिक निर्णय हिंदी में लिख चुका हूं जिन में दीवानी, फौजदारी, तलाक जैसे सभी विषयों के मामले हैं.

प्रश्न: क्या हिंदी में निर्णय लिखते वक्त आप को कभी भाषा संबंधी कठिनाई का अनुभव हुआ है?

उत्तर: एक बार नहीं अनेक बार. दरअसल हिंदी न्यायिक भाषा के रूप में विकसित नहीं हो पाई है. विचार और चिंतन तो हम अंगरेजी में करते हैं और निर्णय हिंदी में लिखते हैं, ऐसी स्थिति में उस में मौलिक चिंतन का अभाव परिलक्षित होता है. वास्तव में अंगरेजी में न्याय की भाषा बेहद सुस्पष्ट और सुगठित है. एक बात के लिए एक ही शब्द है. जबकि हिंदी में एक ही शब्द के लिए अनेक दूसरे शब्द प्रचलित हैं.

न्यायिक भाषा आम भाषा से अलग हट कर होती है और इस भाषा में तीन गुण होने चाहिए. पहला संक्षिप्तता, दूसरा सुस्पष्टता और तीसरा न्याय की गरिमा. इन तीनों ही गुणों का अनुवाद में अभाव होता है.

यद्यपि भारत सरकार के विधि मंत्रालय के हिंदी विभाग ने एक शब्दकोश बनाया है परंतु उस में एक शब्द के अनेक अर्थ दिए गए हैं जिस के फलस्वरूप भाषा में एकरूपता नहीं आ पाती. यही कारण है कि निचली अदालतों में प्रतिवर्ष छः लाख मुकदमों का फैसला होता है परंतु किसी भी निर्णय में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में एकरूपता नहीं है और जब तक एकरूपता नहीं आएगी तब तक उस में न्याय की गरिमा का अभाव दिखेगा.

दूसरे, जो अनुवाद हुआ है वह पूरी तरह शाब्दिक है जो बेकार है क्योंकि उस में भाव नहीं झलकता, शाब्दिक अनुवाद में बेवजह परेशानियों का सामना करना पड़ता है. अनुवाद ऐसा हो, जिस में मौलिकता हो और कहने वाले का भाव झलके.

प्रश्न: हिंदी में निर्णय लिखने में क्या परेशानियां हैं? क्यों उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में अंगरेजी का ही वर्चस्व है?

उत्तर: न्यायालयों के लिए राजभाषा अधिनियम में भी कामकाज की भाषा अंगरेजी ही है, यही कारण है कि इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायालयों में अंगरेजी का वर्चस्व है. हम हिंदी में निर्णय लिख सकते हैं परंतु इस के साथसाथ हमारे लिए उस का अंगरेजी अनुवाद भी उस फाइल में लगाना आवश्यक है. यही कारण है कि न्यायाधीश लोग इस झंझट में नहीं पड़ना चाहते क्योंकि इस में दोगुनी मेहनत पड़ती है.

सवाल इस बात का नहीं है कि अंगरेजी का वर्चस्व क्यों है? वास्तव में हम अंगरेजी को अपना दुश्मन समझ बैठे हैं. भाषा तो कोई भी बुरी नहीं होती. अच्छा होता यदि अंगरेजी का विरोध करने वाले अंगरेजी में भी पारंगत होते. हिंदी जब से झगड़े में पड़ी है तब से उस का विकास और कम हो गया है. भाषाएं तो जितनी ज्यादा आएं उतना ही अच्छा है.

वैसे मैं ने सुझाव दिया था कि जो मामले उच्चतम न्यायालय में जाने वाले हों उन का अनुवाद अंगरेजी में किया जाना तो ठीक है परंतु जो मामले उच्चतम न्यायालय में नहीं जाने हैं, उन के फैसले रिकार्ड रूप में हिंदी में लिखे हुए रखे हों या अंगरेजी में, इस से क्या फर्क पड़ता है. मैं ने यह भी कहा कि न्यायालय स्वयं अनुवाद करवाने की व्यवस्था करे क्योंकि जब तक मैं उस का अंगरेजी अनुवाद करूंगा, उतने में एक नया फैसला लिख लूंगा.

प्रश्न: आप के पहले क्या कहीं और भी हिंदी में निर्णय लिखे गए थे?

उत्तर: उच्च न्यायालय में पहले ऐसे तीनचार न्यायमूर्ति थे—न्यायमूर्ति शिवदयाल, के.एल. पांडेय जैसे न्यायमूर्तियों ने हिंदी में निर्णय लिखे हैं. परंतु उन की संख्या बहुत ही सीमित रही. इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्ता भी हिंदी में निर्णय लिखते हैं.

प्रश्न: आप जब से हिंदी में निर्णय लिख रहे हैं तब से क्या आप अपने आप को आम आदमी से ज्यादा जुड़ा हुआ महसूस करते हैं?

उत्तर: जुड़ने की बात जहां तक है तो आम आदमी और न्यायपालिका के जुड़ने की बात होती है. हिंदी में मामलों की सुनवाई हिंदी में निर्णय से आम जनता न्यायपालिका से ज्यादा जुड़ी महसूस होती है. न्यायालयों में जो कुछ होता है उस में उसे किसी विचित्रता का अनुभव नहीं होता. लोगों की गलतफहमियां दूर होती हैं, अधिवक्ताओं द्वारा सचझूठ की टोपी आवेदक के सामने उतर जाती है और यह एक भारी उपलब्धि ही कही जा सकती है कि आम आदमी को न्यायालय की गरिमा, उस के कार्य का अनुभव हो जाता है.

प्रश्न: विधि की पुस्तकें जो हिंदी में अनुवाद हो कर आई हैं क्या आप को ऐसा नहीं लगता कि यह अनुवाद अंगरेजी से भी ज्यादा कठिन है?

उत्तर: अनुवाद की जो भाषा है वह अत्यंत ही क्लिष्ट है. यह समझ में ही नहीं आता कि वह हिंदी है, ग्रीक है या रोमन. उस को पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि उस का अनुवाद ही असंभव है. भारत सरकार की ओर से हिंदी में तीन मासिक न्यायिक पत्रिकाएं प्रकाशित की जाती हैं परंतु उन में से एक भी पढ़ने लायक नहीं है.

मैं और मेरे साथी न्यायमूर्ति एस. अवस्थी इस बात का प्रयास कर रहे हैं कि हिंदी को न्यायिक भाषा के रूप में विकसित किया जाए. हम दोनों मिल कर हिंदी 'न्यायिक 'शब्दकोश' बना रहे हैं. जिस में अंगरेजी के किसी 'शब्द का एक ही हिंदी अनुवाद होगा. इस 'शब्दकोश के तैयार होते ही मध्य प्रदेश के 1,200 न्यायाधीशों को इस की प्रतियां भेज देंगे और मुझे पूर्ण विश्वास है कि अगले तीनचार सालों में हिंदी न्यायिक भाषा के रूप में विकसित हो जाएगी. वैसे भी यदि न्यायिक भाषा के रूप में हिंदी विकसित होगी तो उस का जन्मदाता मध्य प्रदेश ही होगा.

प्रश्न: क्या यह मुमकिन है कि अखिल भारतीय परीक्षाओं में जहां सारे प्रश्नपत्र अंगरेजी में देने की छूट होती है, वहां ऐसा कानून बनाया जाए कि कम से कम आधे प्रश्नपत्रों के उत्तर हिंदी या अन्य क्षेत्रीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा में देना जरूरी है?

उत्तर: बन क्यों नहीं सकता, जरूर बन सकता है. परंतु यह राजनीतिक लोगों का काम है. यदि वे यह नीति निर्धारण कर लें तो यह हो सकता है, परंतु मेरी मान्यता यह है कि यह उचित कदम नहीं होगा क्योंकि हिंदी को लादने जैसी घोषणाओं ने उस के विरुद्ध दूसरी भाषाओं के लोगों के मन में दुराग्रह भर दिया है. किसी भी भाषा को जबरिया लादना उचित नहीं है. यदि कोई अंगरेजी में प्रश्नों के उत्तर लिखना चाहता है तो उसे पूरी स्वतंत्रता है कि वह अंगरेजी में उत्तर दे. उस पर जबरन हिंदी यदि लादी गई तो वह आगे चल कर हिंदी का सब से बड़ा विरोधी बन जाएगा. भारत में हिंदी भाषी लोगों की संख्या सर्वाधिक है और हिंदी के बिना किसी का भी काम नहीं चल सकता. ऐसी स्थिति में हिंदी अपनेआप अपने स्थान पर आ जाएगी.

प्रश्न: क्या मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में आप के अलावा और भी कोई ऐसा न्यायमूर्ति है जो हिंदी में निर्णय लिखता हो?

उत्तर: जैसा मैं ने पहले ही कहा है कि हिंदी में निर्णय लिखने के बाद उस का अंगरेजी अनुवाद जरूरी है. आप ही बताइए भला दोगुनी मेहनत कौन करना चाहेगा? वैसे भी न्यायमूर्तियों के पास काम की अधिकता है. हजारों मुकदमें लंबित हैं जिन्हें निबटाना मुशकिल होता है. ऐसी स्थिति में वे हिंदी में निर्णय दे कर फिर उस का अनुवाद करने की परेशानी क्यों मोल लेंगे. यही कारण है कि मेरे सहयोगी साथी हिंदी में निर्णय लिखने की जहमत नहीं उठाते.

प्रश्न: क्या कारण है कि आजादी के 43 बरसों बाद भी राष्ट्रभाषा होने के बावजूद हिंदी को वह सम्मान नहीं मिला जिस की वह अधिकारिणी है. इस के पीछे आप कौन से कारण मानते हैं, क्या सरकार इस के लिए दोषी है?

उत्तर: यह तो सच है कि जो स्थान हिंदी को मिलना था वह उसे नहीं मिला पर

विश्वास

यदि तुम अपने आप पर विश्वास कर सको तो दूसरे प्राणी भी तुम पर विश्वास करने लगेंगे. —गेटे

इस के लिए मात्र सरकार दोषी नहीं ठहराई जा सकती. हम दोषी हैं, आप दोषी हैं, सारे हिंदी भाषी दोषी हैं. दरअसल हिंदी को राजनीतिक प्रश्न बना दिया गया है और इस राजनीतिक झंझावात में हिंदी उलझ कर रह गई है. उसे जनमानस के साथ जोड़ने का प्रयास किसी ने भी नहीं किया. मेरी मान्यता के हिसाब से तो यही कारण है कि हिंदी आज भी महत्त्वहीन है.

प्रश्न: लोक अदालतों के बारे में आप की सोच क्या है?

उत्तर: मध्य प्रदेश में जो लोक अदालतें लगाई गई हैं वे सब की सब मात्र राजनीतिक स्टंटबाजी के अलावा और कुछ नहीं थीं. किसी प्रकार की निष्ठा, किसी प्रकार का सोच इन के पीछे नहीं था. जिन न्यायिक अधिकारियों ने इन में भाग लिया उन की निष्ठा भी इस में नहीं थी. इसलिए ये लोक अदालतें अपने उद्देश्य में पूरी तरह असफल रहीं. ऐसा नहीं है कि लोक अदालतें प्रभावी नहीं होतीं. गुजरात में लोक अदालतें बेहद सफल रही हैं. वास्तव में लोक अदालतों का आयोजन न्यायपालिका की ओर से होना चाहिए न कि सरकार की तरफ से. लोक अदालतें समझौते की प्रक्रिया के तहत कार्य करती हैं क्यों न इसे न्यायिक प्रक्रिया का अंग बना दिया जाए? व्यवहार प्रक्रिया संहिता में इसे शामिल किया जा सकता है, इस के लिए थोड़े से संशोधन की जरूरत है.

प्रश्न: न्यायालयों में मुकदमों की संख्या लगातार बढ़ रही है, आप इस के पीछे कौनकौन से कारण मानते हैं?

उत्तर: समाज में अत्याचार, अनाचार बढ़ा है. न्याय मांगने वालों की संख्या भी उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिसाब से बढ़ी है. जो कानून बनाते हैं और उन के पालन करवाने का जिन पर संवैधानिक दायित्व है उन्हें वास्तव में कानूनों के बारे में जानकारी नहीं है. स्थिति यह है कि कानून के मुताबिक काम करवाना अब असंभव हो गया है. इसलिए कानूनी काम को कानूनन करवाने के लिए लोगों को कानून का सहारा लेना पड़ता है. यह एक बहुत बड़ी विडंबना ही है, मुकदमें बढ़ते जाते हैं और उन के निबटारे की क्षमता न्यायालयों में नहीं है.

मध्य प्रदेश में 1,200 न्यायाधीश हैं, छोटेबड़े सब मिला कर और हर साल इन 1,200 न्यायाधीशों के सामने दस लाख मुकदमें पेश होते हैं. जिन में से आठ साढ़े आठ लाख मुकदमें निबट पाते हैं और डेढ़ दो लाख मामले लंबित हो जाते हैं. इस समय मध्य प्रदेश के न्यायालयों में 11 लाख मुकदमें लंबित हैं. जरूरत है कि न्यायाधीशों की संख्या दोगुनी की जाए. परंतु सरकार ने न्यायपालिका को आर्थिक रूप से अपंग कर रखा है, सारा आर्थिक नियंत्रण सरकार के हाथों में है. उच्च न्यायालय में ही लंबित मामलों की संख्या पचास हजार के ऊपर जा चुकी है. 1983 में 18 हजार मुकदमे लंबित थे जो आज बढ़ कर पचास हजार यानी तीनगुने हो गए हैं. सरकार चाहती है कि एक न्यायाधीश प्रतिवर्ष 600 मामलों का निबटारा करे. हम साढ़े आठ सौ से ले कर नौ सो मुकदमों का निबटारा करते हैं उस के बाद भी मामले लंबित हैं.

म.प्र. उच्च न्यायालय में 31 जज होने चाहिए पर हैं मात्र 22. 31 न्यायमूर्तियों की यह संख्या 1984 में निर्धारित हुई थी परंतु छः साल के बाद भी आज तक यह संख्या पूरी नहीं हो सकी. ज्यादा से ज्यादा यहां 27 न्यायमूर्ति रहे हैं. उच्च न्यायालय की हालत तो यह है कि स्टेनोग्राफर नहीं हैं, अनुवादक नहीं हैं, न्यायमूर्तियों के पेट्रोल का बिल तीनतीन महीनों में मिलता है. यदि हमारी अपनी लायब्रेरी न हो तो हमें एकएक किताब के लिए मुंह देखना पड़े. हम किताबें नहीं खरीद सकते, कलम, कागज नहीं खरीद सकते.

प्रश्न: अंगरेजों के जमाने में न्यायालयों में शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन अवकाश होते थे, वह परिपाटी आज भी जारी है. जब मुकदमों की संख्या लगातार बढ़ रही है तब ये अवकाश क्या औचित्यपूर्ण हैं?

उत्तर: अवकाश का संबंध मुकदमों की संख्या से नहीं होता. अवकाश इनसान की शारीरिक क्षमता के हिसाब से जरूरी है. यदि किसी पर उस की क्षमता से ज्यादा बोझ लादा जाए तो कुछ दिनों में वह टूट जाएगा. उच्च न्यायालय में साल में 205 काम के दिन होते हैं. जिन में हम ईमानदारी से अपना काम करते हैं. एक न्यायमूर्ति को प्रतिदिन 14 घंटे काम करना पड़ता है. यदि मानवीय आधार पर सोचा जाए तो हमें इस से भी ज्यादा अवकाश की जरूरत है क्योंकि न्यायालय और न्यायमूर्ति का काम सरकारी दफ्तरों जैसा नहीं होता, जितनी भी देर हम वहां होते हैं, हर पल किसी न किसी मामले की सुनवाई हमें करनी ही पड़ती है. फिर कानूनों का अध्ययन और फिर फैसला लिखना. अमरीका जैसे देश में एक अपील न्यायालय साल भर में दो सौ फैसले करता है.

प्रश्न: अदालतों में मुकदमों के निबटारे के लिए समय सीमा निर्धारण के बारे में आप का क्या खयाल है?

उत्तर: जहां तक उच्च न्यायालय का प्रश्न है यहां समय सीमा निर्धारण है हां निचली अदालतों में अवश्य मुकदमें लंबे खिंचते हैं. एक हत्या का मामला जैसे ही सामने आता है, हम उसे सब से पहले प्राथमिकता पर रखते हैं परंतु हमेशा सरकार की ओर से देर होती है. कभी शव परीक्षा की रिपोर्ट नहीं आती, तो कभी डाक्टर पेशी पर नहीं आता तो कभी रासायनिक रिपोर्ट नहीं मिल पाती. ऐसी स्थिति में मुकदमों का लंबा खिंचना स्वाभाविक है.

प्रश्न: मृत्युदंड के बारे में विवाद चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती कुमुद : "हिंदी में बहस करने वाले अधिवक्ताओं को नीची निगाह से देखने की मानसिकता का त्याग करने से ही इस का वर्धन होगा."

रहा है. कुछ लोग इसे अमानवीय मानते हैं तो कुछ इस के पक्ष में दलील देते हैं, आप का इस बारे में क्या विचार है?

उत्तर: मृत्युदंड कितने लोगों को मिलता है? हजार मामलों में से किसी एक को. व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो मृत्युदंड समाप्त सा हो चुका है. यदि इसे समाप्त भी कर दिया जाए तो कोई बुराई नहीं है और यदि जारी रखा जाए तो भी बुरा नहीं है.

प्रश्न: पिछले दिनों मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में अदालत की अवमानना के अनेक मामले आए. सरकारी अधिकारी न्यायालय के आदेशों को नहीं मानते. क्या हम ऐसा मान लें कि न्यायपालिका पर नौकरशाही हावी हो गई है?

उत्तर: यह तो सत्य है कि वह आदेशों का पालन नहीं करते. यह सरकार और उस की नौकरशाही की संस्कृति बन गई है. वे अपने से बड़ा किसी को नहीं मानते. कानूनों का पालन न करना उन का शौक बन गया है पर न्यायपालिका उन्हें बाध्य तो करती है. उस में इतनी शक्ति तो है कि वह अपने आदेशों का पालन करवा ले और जब तक न्यायपालिका के पास यह शक्ति होगी तब तक नौकरशाही न्यायपालिका के नीचे ही रहेगी.

"हिंदी के प्रयोग से आत्मविश्वास बढ़ा"

—श्रीमती कुमुद

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालयों में पिछले पांच सालों से वकालत कर रही महिला अधिवक्ता श्रीमती कुमुद का कहना है कि न्यायालयों में हिंदी के प्रयोग से अधिवक्ताओं में आत्मविश्वास बढ़ा है. आप ने कहा कि उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में अंगरेजी का वर्चस्व है और इस का कारण यह है कि कानून की किताबें, मुकदमों में दिए गए फैसले, वकीलों की बहस अंगरेजी में ही होती है. इस सिलसिले को तोड़ने का कभी कोई प्रयास ही नहीं किया गया जबकि निचली अदालतों में सारा कामकाज हिंदी में ही होता है. जब निचली अदालतों में हिंदी में काम हो सकता है तो क्या कारण है कि उच्च न्यायालयों में हिंदी उपेक्षित है.

श्रीमती कुमुद का मानना है कि यदि हिंदी में काम करने का मौका मिले तो अधिवक्ताओं को ज्यादा आसानी होगी क्योंकि मध्य प्रदेश जैसे राज्य में अधिकतर हिंदी ही बोली जाती है और यदि प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा में ही न्यायालयों का काम हो तो इस से अच्छी बात और क्या हो सकती है. यह ठीक है कि हिंदी में विधि पुस्तकों की कमी है और जो है उन की हिंदी अंगरेजी से भी ज्यादा दुरुह है. यही कारण है कि इन न्यायालयों में अधिवक्ता अंगरेजी में काम करना ज्यादा आसान समझते हैं. इन पुस्तकों में जिन हिंदी शब्दों का प्रयोग किया जाता है वह अच्छी हिंदी लिखने वाले के लिए समझना भी कठिन होता है.

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति द्वारा हिंदी में फैसले लिखे जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हिंदी में मामलों की सुनवाई करने को श्रीमती कुमुद एक अच्छा और नया कदम मानती हैं. उन का सोचना है कि यदि सभी न्यायमूर्ति हिंदी के प्रयोग में इस गंभीरता से जुट जाएं तो न्यायालयों में हिंदी को प्रतिष्ठित होते देर न लगे.

न्यायालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए श्रीमती कुमुद का विचार है कि पहले हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी. हिंदी में बहस करने वाले अधिवक्ता को नीची निगाह से देखा जाता है. यह समझा जाता है कि उसे अंगरेजी नहीं आती. तब तक इस मानसिकता का त्याग नहीं होगा और उस का उत्साहवर्धन नहीं किया जाएगा जब तक मजबूरी में अधिवक्ता अंगरेजी में कामकाज करते रहेंगे. न्यायाधीश ही हिंदी के उपयोग को बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं.

"हिंदी की स्थिति खादी जैसी"

—हीरासिंह चौहान

मध्य प्रदेश हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री हीरासिंह चौहान की सोच हिंदी के बारे में कुछ अलग हट कर है. उन का कहना है कि उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में अंगरेजी संविधान के आधार पर निर्धारित है. यदि उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में हिंदी का उपयोग बढ़ाया जाए तो उस के लिए पहले राजभाषा अधिनियम को बदलना होगा. संविधान में संशोधन की आवश्यकता होगी.

उन का यह मानना है कि हिंदी में विधि पुस्तकों का अभाव है और वैसे भी 19वीं सदी के बनाए कानूनों व उन के उद्धरणों का हिंदी में अनुवाद कोई आसान काम नहीं है. कुछेक न्यायाधीशों द्वारा हिंदी में काम किए जाने को वह सराहनीय मानते हैं परंतु वह यह भी कहते हैं कि यह वैसा ही है जैसा देश में खादी वस्त्र पहनना देश भक्ति के प्रदर्शन के लिए आवश्यक हो गया है.

न्यायालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए जो भी प्रयास हो रहे हैं, वे श्री हीरासिंह के मुताबिक अधूरे मन के प्रयास हैं या फिर कभी औपचारिक होते हैं. उन का मानना है कि यथार्थवादी दृष्टिकोण अपना कर हिंदी को लगातार हर स्तर पर प्रयोग में लाने का दृढ़ निश्चय करना जरूरी है. उस के बाद ही हिंदी का उचित प्रचारप्रसार हो सकेगा और वह कागजी घोषणाओं के भंवरजाल से बाहर निकल पाएगी.

हीरासिंह चौहान : "न्यायालयों में हिंदी का प्रयोग वैसा ही है जैसे देशभक्ति के प्रदर्शन के लिए खादी के वस्त्र पहनना."

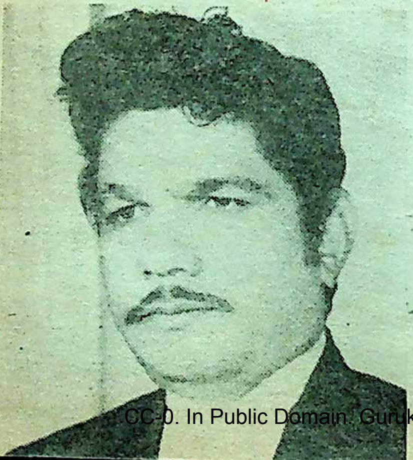

"हिंदी के वकीलों को प्रोत्साहन नहीं"

-राधेलाल गुप्ता

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री राधेलाल गुप्ता का विचार है कि हिंदी में काम करने वाले अधिवक्ताओं को पर्याप्त सम्मान और प्रोत्साहन की आवश्यकता है. यह प्रोत्साहन और सम्मान न्यायमूर्तियों की ओर से मिले तो ज्यादा प्रभावी होगा.

उन के अनुसार वर्तमान में उच्च न्यायालयों और उच्चतम न्यायालय में हिंदी में नाममात्र ही काम हो रहा है. यदि हिंदी का प्रयोग भी उसी गति से किया जाए जिस तरह से अंगरेजी का होता है तो हिंदी भी उसी तरह अंगीकार कर ली जाएगी जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

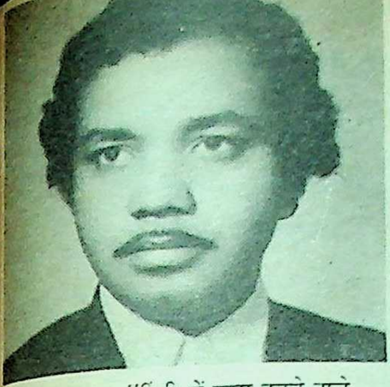

धेलाल गुप्ता : "हिंदी में काम करने वाले अधिवक्ताओं को यदि प्रोत्साहित किया जाए तो यह अधिक प्रभावी होगा."

अलका पंड्या : "हिंदी में उपयुक्त और सशक्त निर्णय लिखे जा सकते हैं, यदि उन पर अंगरेजी अनुवाद की बंदिश न हो."

तरह अंगरेजी हमारी रगरग में बस गई है विशेषकर न्यायालय के कार्यों में.

श्री गुप्ता ने हिंदी में फैसले देने को एक अच्छा और नया प्रयोग बतलाया. आप ने कहा कि यह पहला मौका है, जब किसी न्यायमूर्ति ने हिंदी को सम्मान देने का बीड़ा उठाया है. आप के मुताबिक हिंदी में दिए गए फैसलों के कारण आने वाले वकीलों को कानूनी ज्ञान हासिल करने में काफी सहायता मिल रही है.

"कानून बने कि न्यायालयों की भाषा हिंदी हो"

—अलका पंड्या

मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की पैनल लायर कु. अलका पंड्या का स्पष्ट मत है कि ऐसा कानून बनाया जाए कि न्यायालयों की भाषा हिंदी हो. उन का कहना है कि उच्च न्यायालय में हिंदी का प्रयोग न के बराबर है और उच्चतम न्यायालय में तो हिंदी का अस्तित्व ही नहीं है जबकि अंगरेजी में काम होने से कनिष्ठ अधिवक्ता बेहद कठिनाई महसूस करते हैं. जो अधिकतर अधिवक्ता हाल ही में इस पेशे में आए हैं उन्होंने अपनी शिक्षादीक्षा हिंदी माध्यम से ली है. ऐसी स्थिति में वे अपनेआप को बेहद असहाय और लाचार समझते हैं. यदि हिंदी में काम करने की छूट हो तो ये अधिवक्ता अपने तर्कों को सुदृढ़, स्पष्ट और सुलझे रूप में न्यायालय के सामने रख सकते हैं.

कु. अलका के अनुसार सरकार ने न्यायालयों की भाषा अंगरेजी रखी है और यही कारण है कि यदि कोई न्यायमूर्ति हिंदी में निर्णय लिखता भी है तो उसे उस का अनुवाद करना पड़ता है जो काम की अधिकता के कारण संभव नहीं होता.

हिंदी में फैसले लिखने के निर्णय को कु. अलका एक ठोस कदम मानती हैं. उन का कहना है कि न्यायमूर्ति श्री गुलाब चंद्र गुप्ता ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिंदी में भी उपयुक्त और सशक्त निर्णय लिखे जा सकते हैं.

कु. अलका का विचार है कि एक ऐसी विधि शब्दावली का निर्माण हो जो पूरे भारत के न्यायालयों में उपलब्ध करवाई जाए.

इस के साथ ही मूलभूत अधिनियमों को हिंदी भाषा में उलपब्ध कराया जाए, जिस से कानून समझने में आसानी रहे. आप ने कहा कि अंगरेजी को विकल्प के रूप में रखना चाहिए न कि हिंदी को. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अपने बच्चे को पढ़ने के लिए क्या देना चाहेंगे?

रहस्य, रोमांच, मारधाड़, परीलोक व भूतप्रेतों के झूठे किस्से सुना कर बच्चों को कायर, अज्ञानी, उजड्ड और अंधविश्वासी बनाने वाली बेजान पत्रिकाएं.

या

बच्चों को जागरूक, उत्साही, अनुशासित व सही नागरिक बनाने वाली पत्रिका चंपक.

चंपक

नन्हे नागरिकों का मनोरंजक

पाक्षिक

पिछले 19 वर्षों से चंपक लगातार अपनी कहानियों के पशु एवं मानव पात्रों द्वारा भारत के लाखों बच्चों का न केवल मनोरंजन करती आ रही है, बल्कि उन्हें बताती आ रही है ज्ञान की ढेरों बातें.

अपने नन्हेमुन्नों को पढ़ने के लिए आज ही दें, चंपक का मनमोहक उपहार.

एक प्रति का मूल्य रुपए 3.50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

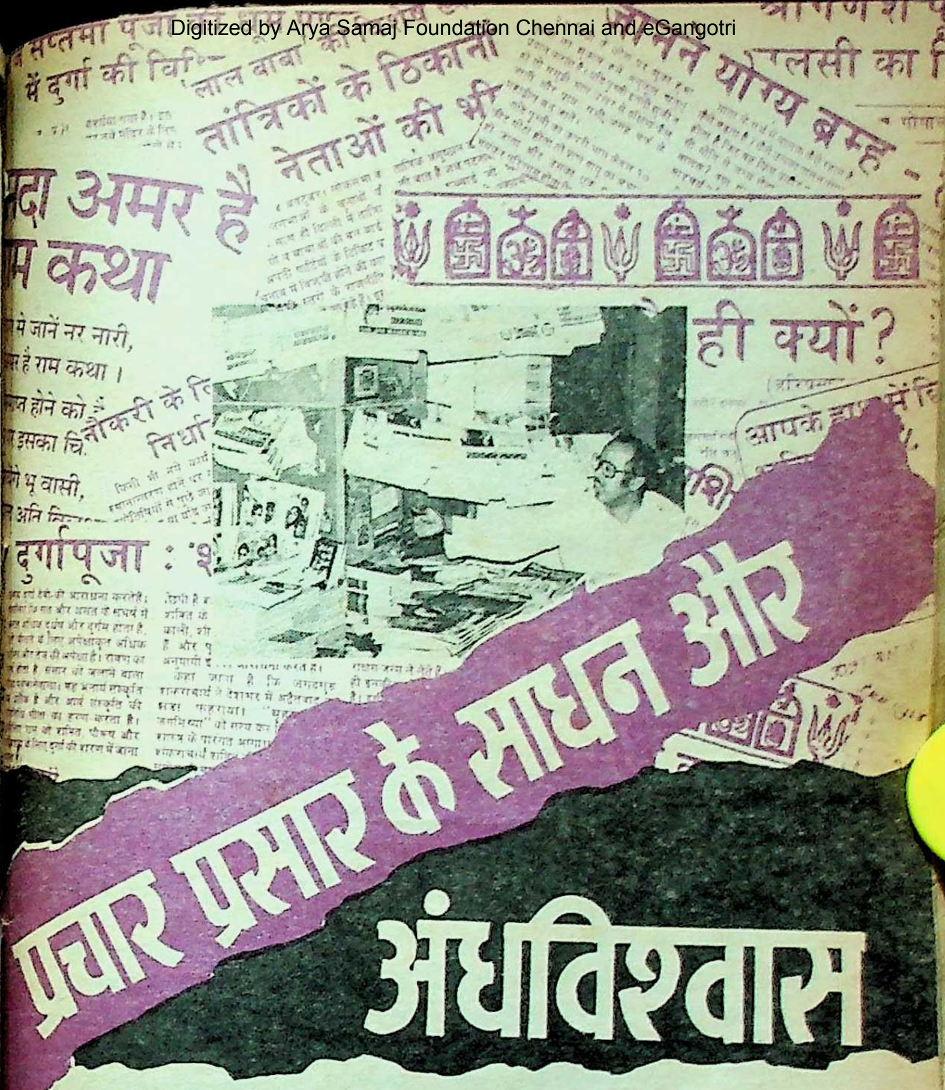

प्रचार प्रसार के साधन और अंधविश्वास

लेख • रामकिशोर शर्मा

भारतीय समाज अंधविश्वासों और कुप्रथाओं का एक बड़ा पिटारा है, जिस में अनगिनत अंधविश्वास समाए हुए हैं. एक कदम चलते हैं तो दो अंधविश्वास मिलते हैं. इसी लिए भारतीय समाज ज्ञानविज्ञान में पिछड़ता रहा है और कुप्रथाओं, कुरीतियों और अंधविश्वासों का गुलाम बना रहा है.

स्वतंत्रता मिलने के बाद यदि प्रचारप्रसार के विभिन्न साधन इन अंधविश्वासों और कुप्रथाओं को मिटाने में सहयोग करते तो आज हम बहुत कुछ सुधर जाते. परंतु इस विज्ञान के युग में उन का विस्तार ही अधिक हुआ है. इस का कारण यह है कि प्रचारप्रसार के विभिन्न साधनों, जैसे समाचारपत्र, पत्रिकाएं, फिल्में, आकाशवाणी व दूरदर्शन पर अधिकतर धनी वर्ग का कब्जा है जो आम तौर पर अंधविश्वासी होते हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधविश्वास का कोई आधार नहीं होता और अंधविश्वासी व्यक्ति किसी घटना या तथ्य का विश्लेषण करने की सामर्थ्य नहीं रखते. ऐसे में यदि प्रचारप्रसार के माध्यम भी इन अंधविश्वासों को फैलाने में मदद करने लगेंगे तो देश कहां, किस गर्त में जाएगा?

अंधविश्वासों को समर्थन तथा संरक्षण प्रदान करते हैं.

किसी धर्म या समाज से बुराइयों को हटाना उस के सदस्यों का परम कर्तव्य है. यदि कोई इन बुराइयों और अंधविश्वासों को हटाने या उन की आलोचना करने को धर्म में हस्तक्षेप करने की संज्ञा देता है तो यह उन बुराइयों व अंधविश्वासों को बरकरार रखने की चाल है. समाज और तथाकथित धर्म की बुराइयों की आलोचना करने का प्रत्येक नागरिक को अधिकार है.

हम प्रचारप्रसार के उक्त साधनों में सब से पहले समाचारपत्र तथा पत्रिकाओं को लेते हैं. इन पत्रिकाओं में समाज में व्याप्त अंधविश्वासों तथा कुप्रथाओं का खूब प्रचार किया जाता है. उन के विरोध में यदि लेख भेजे जाते हैं तो प्रकाशित नहीं किए जाते.

इस का ताजा उदाहरण दिया जा रहा है. वर्षा न होने पर अंधविश्वासी लोग ऐसेऐसे कार्य करते हैं जो हमारी बुद्धिहीनता और निर्लज्जता को प्रकट करते हैं, जैसे कि वर्षा कराने के लिए गधेगधी का विवाह. यह अंधविश्वास कई समाचारपत्रों में छापा गया. परंतु किसी भी समाचारपत्र में इस के विरोध में एक पंक्ति भी नहीं लिखी गई. क्या समाचारपत्रों का कर्तव्य ऐसे अंधविश्वासों का प्रचार करना है या उन्हें मिटाना? समाचारपत्र सच्ची बात कहने में क्यों डरते हैं? उन्होंने यह क्यों नहीं लिखा कि इस प्रकार के कार्य नितांत अंधविश्वासपूर्ण हैं?

वर्षा के लिए कई स्थानों पर नग्न स्त्रियों द्वारा हल चलवाए गए. कई जगह यज्ञ किए गए. इस प्रकार के कई समाचार छापे गए. क्या किसी समाचारपत्र में यह छापा गया कि ये सभी अंधविश्वास हैं? यदि नहीं तो फिर समाचारपत्रों की क्या उपयोगिता है? नग्न स्त्रियों द्वारा हल चलवाना और वर्षा की कामना करना हमारी बुद्धि के दिवालियेपन और निर्लज्जता का खुला प्रमाण नहीं है? इन कार्यों से विश्व के समझदार लोग हमारे बारे में क्या धारणा बनाएंगे. क्या वर्षा के तथाकथित देव इंद्र नग्न स्त्रियों को देख कर खुश होते हैं? क्या यज्ञ करने से वर्षा हो जाती है? अगर होती है तो हुई क्यों नहीं? ढोंगियों और अंधविश्वासियों ने बेमतलब कीमती मालव पदार्थों को आग लगाई और वायुमंडल में प्रदूषण बढ़ाया.

प्रचारप्रसार के इन माध्यमों ने इस प्रकार के अंधविश्वासों को क्यों नहीं नकारा और वर्षा होने का सही वैज्ञानिक कारण क्यों नहीं बताया? इन सभी साधनों का मुख्य कार्य समाज को सही रास्ता दिखाना है, न कि कुएं के स्थान पर खाई खोदना.

इसी प्रकार, ये समाचारपत्र समाज में व्याप्त अनगिनत अंधविश्वासों तथा कुप्रथाओं के प्रति सही दृष्टिकोण अपना कर नहीं चलते. जैसे, सूर्यग्रहण या चंद्रग्रहण के अवसर पर अंधविश्वासों तथा कुप्रथाओं को तो खूब उजागर करेंगे. परंतु उस के सही वैज्ञानिक पक्ष पर लिखने में शरमाएंगे. क्या इस वैज्ञानिक युग में भी समाचारपत्र जनता को यह नहीं समझा पाते कि राहुकेतु आदि की कहानी नितांत असत्य है और ग्रहण पर इधरउधर तीर्थों में स्नान करना एक अंधविश्वास और नासमझी है.

नवरात्र के समय लगभग सभी पत्रपत्रिकाएं और आकाशवाणी दुर्गा पूजा और उस के प्रभाव के बारे में बहुत से लेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

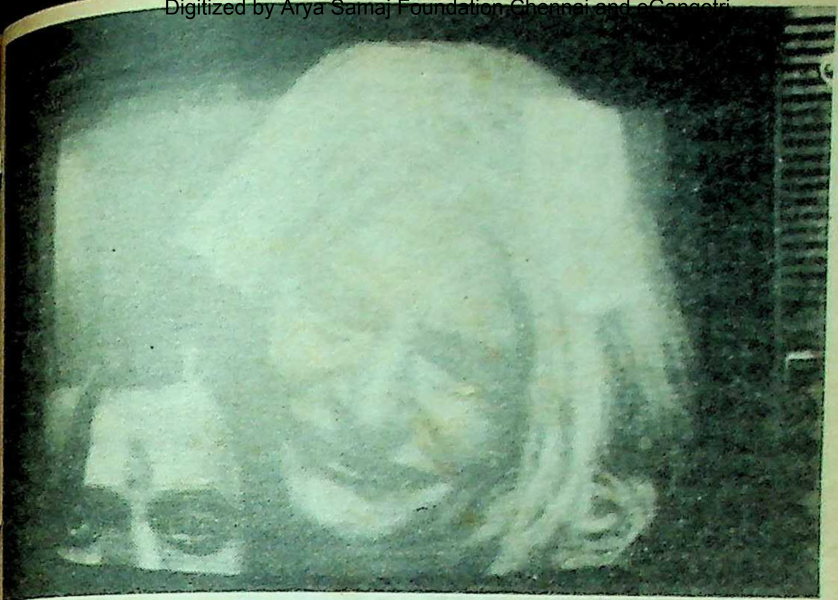

और गीत आदि प्रसारित करते हैं. क्या यह सब एक समाज को धोखे में रखने और उसे शब्दजाल में उलझा कर अंधविश्वास बनाए रखने का षडयंत्र नहीं है? एक तरफ तो हम चाहते हैं कि लोग दुर्गा पर पशु बलि न चढ़ाएं, शराब न पिएं और दूसरी ओर रातदिन दुर्गा के प्रभाव और चमत्कारों के प्रदर्शन में आकाशपाताल एक कर देते हैं. तो फिर उस के भक्त देवी को खुश करने के लिए उस का प्रिय व्यंजन मांस और शराब क्यों नहीं चढ़ाएंगे?

इसी प्रकार के गीतों और चमत्कारी लेखों को पढ़ कर कितने ही व्यक्तियों ने अबोध बच्चों को काट डाला तथा देवी पर उन की बलि चढ़ा दी. क्या भक्त को देवी का आशीर्वाद मिला? उलटे उसे जेल की हवा खानी पड़ी. क्या यह संभव है कि हम जहर भी पीते रहें और जिंदा भी बने रहें. यदि हम ऐसी कुप्रथाओं को बंद करना चाहते हैं तो हमें इस प्रकार के प्रचारप्रसार को भी बंद करना होगा.

पुनर्जन्म एक थोथी धारणा और मूर्खतापूर्ण अंधविश्वास है. परंतु ऐसी झूठी और कपोलकल्पित घटनाओं को भी पत्रपत्रिकाएं आसानी से प्रकाशित कर देती

काल्पनिक कहानी पर आधारित धारावाहिक 'विक्रम और बेताल'. दूरदर्शन जैसा सशक्त माध्यम भी इन अंधविश्वासों को हवा दे रहा है. ▲

हैं. इन सभी घटनाओं के पीछे कोई मनगढ़ंत कहानी होती है.

पुनर्जन्म होने का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है. पुनर्जन्म का सिद्धांत सही होता तो आज जनसंख्या दिन दूनी रात चौगुनी नहीं बढ़ती. आत्मा के लिए कोई सीमा नहीं है तो फिर विदेशी की आत्मा भारत में जन्म क्यों नहीं लेती और पैदा होते ही अंगरेजी, चीनी या रूसी भाषा क्यों नहीं बोलने लगती?

यह पुनर्जन्म का सिद्धांत नितांत असत्य है. परंतु कितने ही समाचारपत्र और पत्रिकाएं इस प्रकार की असत्य धारणाओं को जनता में फैलाने का षडयंत्र रच रहे हैं. कभी वे आत्मा को सिद्ध करते हैं तो कभी भूतप्रेत की अनहोनी बातें छपती हैं. कभी जादूटोनों की बातें करते हैं तो कभी ढोंगी लोगों के झूठे चमत्कारों का प्रचार करते हैं. इस प्रकार के संपादक अपने देश के सब से बड़े शत्रु हैं, क्योंकि वे अपने देश को अंधविश्वासों, ढोंगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गलत रूढियों से बाहर नहीं निकलने देना चाहते. भोलीभाली जनता को गुमराह करते हैं.

1969 में जब अमरीका का अपोलो 11 चंद्रमा पर उतरा था तब नवभारत टाइम्स में छज्जूराम शास्त्री का लेख छपा था. उन्होंने अपने लेख में लिखा था कि अमरीका का अपोलो 11 चंद्रमा पर नहीं उतरा, वह तो कहीं इधरउधर घूमफिर कर लौट आया है. इस मूर्खतापूर्ण कथन में जितना दोष छज्जूराम शास्त्री का था, उस से कहीं अधिक दोष समाचारपत्र का था जिस ने ऐसे हास्यास्पद विचारों को छापा था.

इसी प्रकार, हम विज्ञान की किसी भी खोज के लिए यह कहने में नहीं चूकते कि यह तो हमारे वेद आदि धार्मिक ग्रंथों में है. हमारे पूर्वजों ने तो इसे पहले ही खोज लिया था. यह कह कर हम अपनी कौन सी आदत तथा गुण का बखान करते हैं. यह पूछा जा सकता है कि जब विदेशी वैज्ञानिकों ने हमारे वेदों और अन्य ग्रंथों में से खोजा है तो हमें खोजने से कौन रोकता था? फिर उन सभी वैज्ञानिक खोजों और उपलब्धियों के लिए हम क्यों विदेशियों की जीहजूरी करते हैं. इस प्रकार के बकवास भरे लेख कई पत्रपत्रिकाओं में छपते रहते हैं.

जनसंचार के इन माध्यमों में बारबार यह प्रसारित किया जाता है कि राम आज के वायुयान से भी अच्छे पुष्पक विमान में बैठ कर लंका से अयोध्या आए थे. ऐसा प्रचार करने वालों से पूछा जाए कि जब पेन, कागज, घड़ी, साइकिल, बंदूक और छोटीमोटी मशीन भी नहीं थी तब वायुयान कहां से आ गए. सब से बड़ी आश्चर्य की बात तो यह है कि ऐसे लेख वे लोग लिखते और छापते हैं जो कि काव्य और इतिहास में कोई अंतर नहीं समझते और विज्ञान का तो क ख ग भी नहीं जानते.

एकमात्र उद्देश्य बिक्री बढ़ाना

सभी समाचारपत्रों में भविष्यफल लिखा मिलता है. क्या ऐसा कर के ये समाचारपत्र भारतीय जनता में … अकर्मण्यता और अवैज्ञानिक दृष्टि… नहीं पनपा रहे हैं? परंतु कोई क्या कर… देश के नायक ही भाग्यवादी… अंधविश्वासी हों और वर्षा के लि… करते हों. जब वे अच्छेखासे पढ़ेलिखे… ही चुनावों में अपनी जीतहार के… भविष्यवक्ता की पगचंप करते हों, … लिए अंधविश्वासों का समर्थन करते… बेचारे अशिक्षितों का क्या दोष?

कोई धार्मिक मेला या उत्सव … उस के लिए ये समाचारपत्र थोथा… करते हैं और उन के पीछे जुड़ी… दंतकथाओं के बारे में लेख छाप… उदाहरण के लिए, पाबूजू, गोगा… तेजाजी (मारवाड़ के मध्ययुगीन वीर… अब स्थानीय देवता के रूप में महिमा… हैं) के मेले को ही लें. उस के बारे में… किंवदंतियां हैं जिन का मेले के अवसर… खूब प्रचार किया जाता है. जैसे गोगा… बारे में किंवदंती है कि चाहे कैसा … डस ले, सांप का काटा व्यक्ति गोगा… मंदिर ले जाने से ठीक हो जाता है… इस अंधविश्वास के कारण सही इला… अभाव में न जाने कितने ही लोगों की… हो चुकी है. इसलिए समाचारपत्रों को… अंधविश्वासों का प्रचार नहीं … चाहिए.

करवा चौथ का व्रत स्त्रियों में … प्रचलित है. इसी लिए उस के पीछे… दंतकथाएं है उन्हें ये पत्रपत्रिकाएं … छापते हैं और स्त्री जाति को … कूपमंडूक बनाने में प्रयत्नशील … स्त्रियां यह व्रत अपने पति के अच्छे … व दीर्घ आयु के लिए करती हैं. अगर… सच या संभव है तो पुरुष अपनी पत्नी… अच्छे भविष्य और दीर्घ आयु के लिए … पंचमी क्यों नहीं करता?

कुछ वर्गों और जातियों में सती … का भी प्रचलन है. इसे भी … समाचारपत्र बहुत बढ़ावा देते हैं … तत्संबंधी समाचारों को मोटे अक्ष…

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

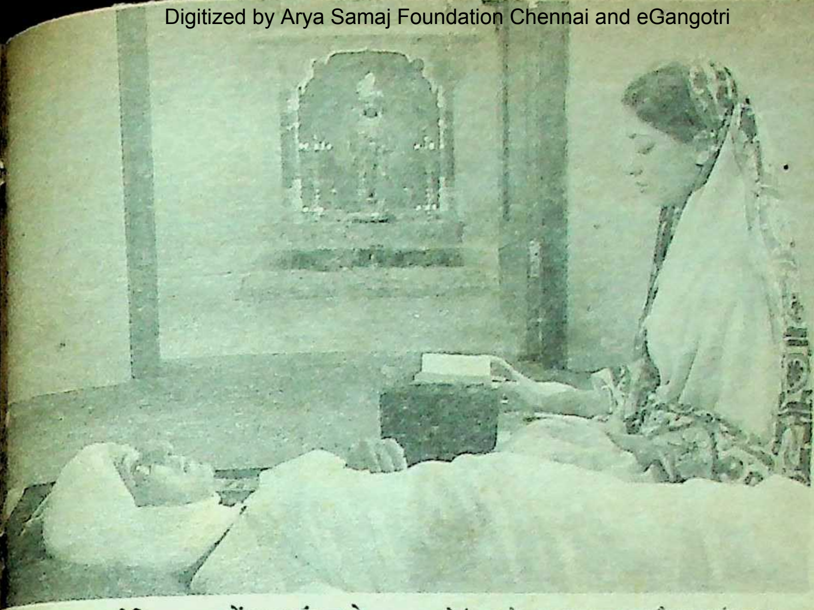

पते हैं. गत वर्ष दिवराला में रूप कंवर के अग्निदाह की घटना जगजाहिर है. अनेक समाचारपत्रों ने इस तथाकथित सतीकांड को खूब उछाला और रूप कंवर को देवी के रूप में महिमामंडित किया.

समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं की बात एक बार छोड़ भी दें तो आकाशवाणी तथा दूरदर्शन जैसे सरकारी माध्यमों के पास भी कोई निश्चित प्रगतिशील नीति या जीवनदर्शन का अभाव दिखाई देता है. आज ये माध्यम एक पंसारी की दुकान की तरह काम कर रहे हैं, जिस में सभी प्रकार के ग्राहकों को खुश करने का सौदा मौजूद है.

एक तरफ विज्ञान को बढ़ावा देने और अंधविश्वासों को मिटाने की बातें हैं तो दूसरी ओर कूपमंडूकता और अंधविश्वासों को जगाने व पुष्ट करने वाले गीत हैं. उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि उन्हें अपने भारत को किस रास्ते पर ले जाना है. चार इधर की और चार उधर की गाने से लोगों का सही दृष्टिकोण नहीं बनेगा और उन की सोचनेसमझने की प्रक्रिया व क्षमता भी नष्ट हो जाएगी.

मनोरंजन के नाम पर अज्ञान और कूपमंडूकता को बढ़ावा देने वाली फिल्में समाज को आगे ले जाने के बजाय पीछे धकेल रही हैं. ▲

इस तरह ये माध्यम भारतीय समाज के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं. हम चाहते हैं कि हमारा समाज सुधरे और अंधविश्वासों को तिलांजलि दे. परंतु ये माध्यम श्रोताओं व दर्शकों को अंधविश्वास ही परोस रहे हैं.

अब फिल्म जगत को लीजिए. इस क्षेत्र में विज्ञान का उपयोग अज्ञान, अंधविश्वास, कूपमंडूकता आदि के प्रचारप्रसार के लिए किया जा रहा है. सैकड़ों धार्मिक फिल्में बनी हैं, जिन में से 'संतोषी माता' फिल्म से सभी परिचित हैं. इस प्रकार की फिल्में हमारे समाज को इस के सिवा और क्या प्रदान करती है कि लोग कूपमंडूक बने रहें और अंधविश्वासों में फंसे रहें. लगभग सभी फिल्मों में अपने देवता को पुकारते समय उस की मूर्ति से फूल आदि का गिरना और फिर कार्य का पूरा होना दिखाया जाता है.

क्या वास्तविक जीवन में कभी ऐसा होता है? जबकि वास्तविक जीवन में वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटूक्तियां

बच्चों का बातबात पर झूठ बोलना कोई समस्या नहीं है, समस्या है उन का गलत मौकों पर सच बोलना.

*

अगर दो मित्रों को कभी अलग होना ही पड़े तो उन्हें चाहिए कि वे एकदूसरे के रहस्यों पर ताला लगा कर आपस में चाबी बदल लें.

*

आविष्कारक और प्रतिभाशाली लोगों को उन के जीवन के प्रारंभ में बहुधा और अंत में सदैव मूर्ख माना गया है.

*

अनेक लोगों का बड़प्पन स्थानगत होता है, वे इसलिए बड़े होते हैं, क्योंकि उन के सहयोगी छोटे होते हैं.

*

यदि आप आलसी हैं तो अकेले मत रहिए. और अगर आप अकेले हैं तो आलसी मत बनिए.

*

जिस जहाज में हम यात्रा करते हैं, उस के अलावा प्रत्येक जहाज रोमानी होता है.

*

आलोचना को छोड़ कर हर व्यवसाय सीखने में समय लगाना चाहिए, क्योंकि आलोचक तो सब बने बनाए हैं.

*

लोग उपदेश देते हैं कि महान व्यक्तियों के पद्चिह्नों पर चलो, मगर कैसे? महान व्यक्ति तो हवाई जहाज से यात्रा करने लगे हैं.

मूर्ति को भगवान मंदिर में स्त्री के
बलात्कार होते देखता रहता है, उस
उस को स्त्री की चीत्कार क्यों नहीं
देती? कितने ही ऐसे भगवानों को
विदेशियों के हाथों बेच देते हैं. फिर
अपने को बुद्धिमान कहने वाला मानव
पत्थर की मूर्ति के आगे सिर झुकाता है
लोग सच्चे माने में निष्ठा नहीं रखते

जब कभी किसी व्यक्ति द्वारा
समाज में अंधविश्वासों, कुरीतियों
दकियानूसी विचारों पर प्रहार किया
है तो ऐसी कुरीतियों के सहारे जीने
लोग सच्ची बातों को मानने के स्थान
उन का विरोध करते हैं. इन
अंधविश्वासों को नया जामा पहनाने
कोशिश करते हैं ताकि उन का
चलता रहे.

सच तो यह है कि इन अंधविश्वासों
पर चलनेपलने वाले लोग मानसिक स्तर
गिरे हुए होते हैं. वे किसी घटना या
का विश्लेषण करने की सामर्थ्य नहीं रखते
पर अपनी कुप्रथाओं और अंधविश्वासों
नया रूप दे कर विज्ञानसम्मत सिद्ध करने
व्यर्थ कोशिश करते हैं.

कोई पूछे कि जब आप विज्ञान
से इतनी दुर्भावना रखते हैं तो उस की
हुई चीजें का क्यों उपयोग करते हैं?
बिजली के पंखे से ठंडी हवा लेते हैं?
टीवी देखते हैं? क्यों वायुयान, रेल आदि
यात्रा करते हैं? क्यों डाक्टर के पास जा
दवाइयां लेते हैं? क्यों ऐसे आदमी विज्ञान
बिना अपने जीवन को असंभव समझते हैं
आज विज्ञान न होता तो मानव जीवन
कठिन हो जाता. क्या इन अंधविश्वासों
मानव को, समाज को तथा राष्ट्र को
दिया है, बल्कि पथभ्रष्ट किया है.

विज्ञान ने तो पूरे विश्व का
सफल बनाया है. परंतु कुछ मूर्ख और
अंधविश्वासी समझते हैं कि विज्ञान भी
की कथाओं की तरह कपोलकल्पित है
उन के समझने से क्या होता है. सच
सच ही है और झूठ झूठ ही.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुराग रचा देह में

मधुवन को
आ गई हंसी
बासंती फूल खिले
शाखों पर.
लहरों के
खुले केश घुंघराले
हो गए ज्यादा ही बावले
नदिया और
सागर की बस्ती के
बहुत पास हो गए फासले.
मौसम ने
बो दी खुशी
सपनों के बौर झुके
आंखों पर.
फूलों की
गंध ओढ़ कर हुई
हवा कुछ और संदली
नभ का
अनुराग रचा देह में
सांझ हुई मदिरमदिर अंगूरी.
वन प्रांतर
वंशी बजी
उड़ा मन सतरंगी
पांखों पर.

—सावित्री परमार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहनों से सजी सुराहीदार गरदन

यों तो सम्मोहक होता ही है गहनों का सौंदर्य लेकिन उस से भी गहरा है, नारी का गहनों के प्रति प्रेम. जूही की कलियों का आभास देते इस हार ने भी तो इस कमसिन हसीना के व्यक्तित्व में सोने सी दमक भर दी है जिस की कांति की झलक इस हसीं में छिपी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंदन की नकल से बना यह कुंदन हार व टाप्स का सेट आप ही कह रहा है अपनी ख़ूबसूरती की कहानी, जिसे पहन कंचन सी आभा बिखेर रहा है इस नारी का सौंदर्य. गोल्ड पालिश मोतियों की लड़ियों से बना यह लड़ी हार किसी भी अवसर, पोशाक पर पहन कर आप भी सब की निगाहों का केंद्र बन सकती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धातु से बने गहने वजन में हलके व सस्ते तो हैं ही, इन की छटा भी निराली है. रुपहले धातु का त्रिकोण आकार में जाल वाला टुक- ड़ियों से सजा हार तथा टुकड़ियों से मेल खाते लटकन (ऊपर से बाएं) तथा धातु की टुकड़ियों व मोतियों से बना यह हार अपनी मौलिक साजसज्जा से आज की आधुनिकाओं का मन मोह रहा है. (बाएं).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

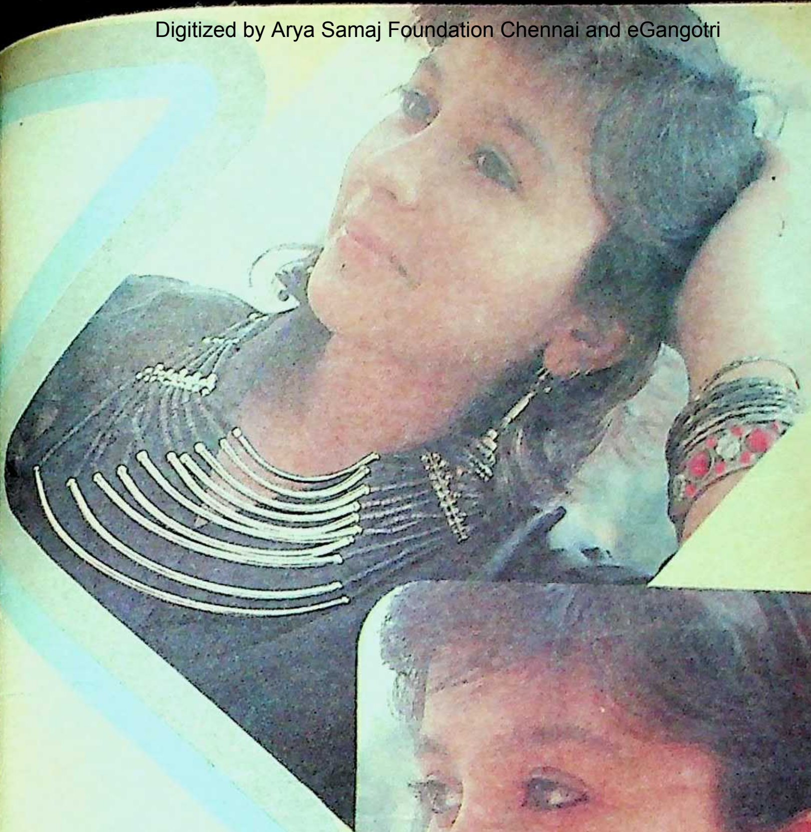

मोती गुंथ जाते हैं तो ले लेते हैं नया रूप, नया आकार. और जब धातु व मोती के मेल से बनता है कोई गहना तो वह बेजोड़ संगम देखते ही बनता है. कुछ ऐसे ही जैसे गहरे आसमान में चंदा की लड़ियां चांदनी बिखेर रही हैं (दाएं ऊपर). नीले मोतियों की लड़ियों व मैटल के छल्ले के जोड़ से बने इस हार से हर सुंदरी अपनी सुराहीदार गरदन को सजाना चाहेगी. (दाएं).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत है -

इन्दु फेरो डाइनैमिक एस

एक बेहतरीन, हाई-फ़ाई ऑडियों कैसेट.

इन्दु कॉम्पैक्ट कैसेट्स. फ़ेरिक ऑक्साइड की महीन परत के साथ, ताकि आपको मिले अतुलनीय स्पष्टता, असाधारण गत्यात्मकता तथा संतुलन.

इन्दु टेप्स. एक सही निर्णय जो आप आंखे मूंद कर ले सकें.

इन्दु ही जाने आवाज़ का राज़.

INDU

हिन्दुस्तान फ़ोटो फ़िल्म्स मैन्युफ़ैक्चरिंग कं. लि.

(एक भारत सरकार उद्यम)

पंजीकृत कार्यालय : इन्दुनगर, उदकमंडलम ६४३ ००५,

विपणन कार्यालय : बाली टावर्स, १ अब्दुल रज़ाक स्ट्रीट, सैदापेट, मद्रास ६०० ०१५.

Pratibha: BLR: HPF

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नापित पुत्र

गतांक से आगे

कहानी • वेद त्रिपाठी

पूर्व कथा

नाई का बेटा तिलक अपनी जाति भूल कर शिखावल्लरी से प्रेम कर बैठा. किंतु जब उसे बदले में प्रताड़ना व अपमान मिला तो वह गजनी चला आया. उस के दिल में यही भावना थी कि एक दिन वह हिंदुस्तान लौटेगा लेकिन सिर उठा कर... जातिद्वेष के कहर की एक कथा.

सुलतान मुहम्मद के खेमे में ईद जोर-शोर से मनी. सुलतान सब लोगों से बड़े प्रेम से गले मिला. उस समय वह स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि जिन सिपहसालारों से वह इतनी मुहब्बत के साथ गले मिल रहा है, वे दो ही दिन बाद उस के खिलाफ बगावत करने वाले हैं.

अंततः वही हुआ जिस की योजना सुलतान मुहम्मद के सिपहसालारों ने इतनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिलक के दिल में बदला लेने का जो अरमान सुलग रहा था वह अब पूरा होता नजर आ रहा था. अपनी सेनाएं ले कर हिंदुस्तान की ओर बढ़ते तिलक के सामने दो ही लक्ष्य थे हिंदुस्तान पर विजय और शिखा वल्लरी.

सावधानीपूर्वक बनाई थी. ईद के दो दिन बीतने के बाद जो रात आई, उस ने सुलतान मुहम्मद की जिंदगी में जितने दिन बाकी थे, उन सब को रात में बदल दिया.

रात का अंधेरा गहराते ही विद्रोही सरदारों ने मिल कर सुलतान मुहम्मद के डेरे पर धावा बोल दिया और तलवार के बल पर उसे घसीटते हुए बाहर ले गए. उन्होंने मुहम्मद की आंखें फोड़ दीं और उसे कैद कर लिया.

मुहम्मद के खिलाफ विश्वासघात की इस साजिश में उस के सब से ज्यादा विश्वासपात्र सरदार यूसुफ बिन सुबुक्तगीन, अमीर अली खेशबंद और वजीर हसनाक भी सम्मिलित थे. मुहम्मद को कैद करने के बाद इन सरदारों ने हैरात पहुंच कर मसूद की आगवानी की ओर उसे सम्मानपूर्वक ला कर सुलतान की गद्दी पर बैठा दिया.

मसूद के सुलतान बनने के बाद तिलक का महत्त्व बहुत बढ़ गया और वह हिंदुस्तानी सेना का मुख्य सेनानायक बना दिया गया. मसूद तो उसे अपनी सेना में और भी ऊंचा पद देना चाहता था, किंतु तुर्की सिपाही अपने को रक्त की दृष्टि से श्रेष्ठ समझते थे, अतः वे किसी भी प्रकार उस के नीचे काम करने को तैयार नहीं हुए. अंततः मसूद को उसे हिंदुस्तानी सेना का मुख्य सेनानायक बना कर ही संतोष करना पड़ा. वह हिंदुस्तानी खून होने के कारण तुर्की की राजसभा में तो नहीं बैठ सकता था. फिर भी सुलतान मसूद उस से तमाम खास मुद्दों पर सलाह लेता था.

सुलतान मसूद को उस पर अटूट विश्वास था. उसे यकीन था कि चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थिति क्यों न हो, तिलक अपने प्राणों की आहुति दे कर भी उस के हितों की रक्षा करेगा.

तिलक विपरीत से विपरीत स्थिति में सुलतान मसूद का साथ देने के लिए कटिबद्ध था. यह उस की सुलतान के प्रति अगाध वफादारी का ही प्रमाण था कि जब कोई भी तुर्की सेनापति हिंदुस्तान कूच करने को तैयार न हुआ तो तिलक ने इस जिम्मेदारी को खुशीखुशी अपने सिर ओढ़ लिया और बिना कोई सवाल किए हिंदुस्तान की ओर चल पड़ा.

तिलक अपनी सेनाओं को ले कर हिंदुस्तान की ओर बढ़ता जा रहा था. वह हिंदुस्तान की धरती देखने को व्याकुल हो रहा था. उस के मन का पंछी बारबार उड़ कर हिंदुस्तान की धरती पर उतर जाता था—वही पेड़पौधे, खेतखलिहान, ग्वाले, गांव, पगडंडियां और उस के निवासी. निवासियों का ध्यान आते ही उस का मन ठिठक जाता था. कैसे निवासी, जिन्होंने सदा उस पर अत्याचार किए? सब तरह से योग्य होने पर भी जो उसे नारकीय जीवन जीने पर मजबूर करते रहे. जिन्होंने उसे अपनी प्रेमिका से कभी दो बात करने का भी मौका नहीं दिया, बल्कि पता लगते ही भारी जुल्म ढाए. जिन्होंने उसे तथा उस के पिता को गरम सलाखों से गोदा. जिन के जख्मों से उस के पिता की असमय मृत्यु हो गई.

तिलक को जैसे ही इन बातों का ध्यान आता, उस का मन घृणा से भर जाता था. कैसी विडंबना थी यह, उस के अपने लोगों ने उसे प्रताड़ित किया किंतु एक दूसरे मुल्क के अलग भाषा, संस्कृति, बोलचाल और मजहब के लोगों ने उसे गले लगाया. उसे नौकरी दी. ऊंचा ओहदा दिया. आदर और सम्मान दिया.. उसे आदमी की तरह जीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मौका दिया.... [illegible] अवसर दिया..... धन्य थे वे लोग.

तिलक विचारों के इस भंवर में लगातार डूबता उतराता हिंदुस्तान की ओर बढ़ रहा था. उस का मन एक अजीब सी उलझन में था. एक ओर तो उस का मन अपनी धरती देखने को मचल रहा था तो दूसरी ओर उस का मन उस समाज के प्रति रोष तथा प्रतिशोध की भावना से भी भरा था, जिस ने उस पर अमानुषिक अत्याचार किए.

उसे बारबार अपनी प्रेमिका शिखा-वल्लरी का भी ध्यान आ जाता था, जिस की हर नजर में एक ओर तो हजारों आमंत्रण होते थे किंतु दूसरी ओर विवशता के शुष्क आंसू. किसी ज्वारभाटे के सैलाब की तरह उस की आंखें तिलक की तरफ उठतीं, किंतु चंद्रमा जैसी अनंत दूरी देख कर तुरंत झुक जाती थीं. तिलक ने निश्चय किया कि लाहौर जीतने के बाद वह अवश्य ही श्रीरंगपुर जाएगा तथा शिखावल्लरी का पता लगाने का प्रयत्न करेगा और यदि उस

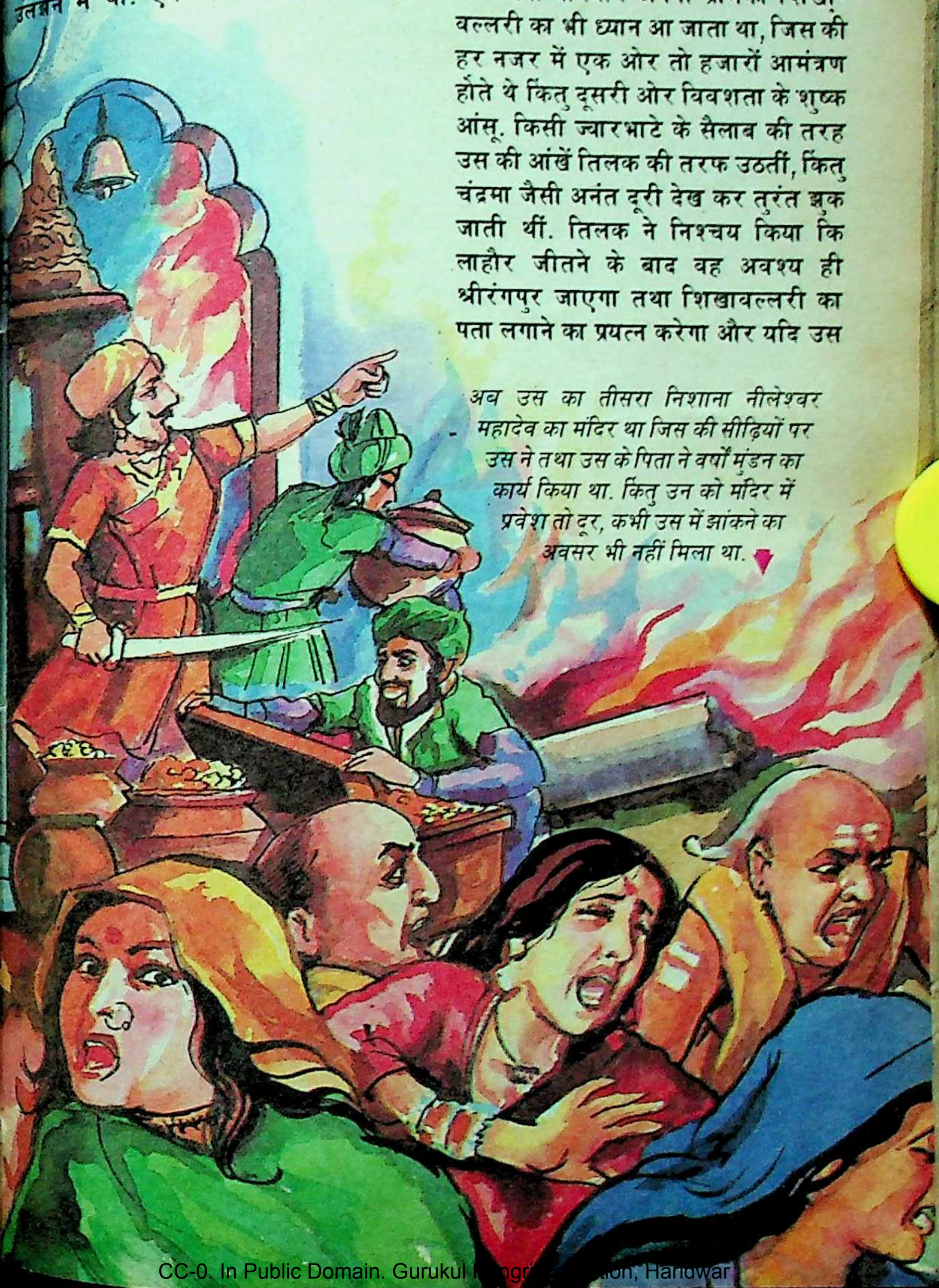

अब उस का तीसरा निशाना नीलेश्वर महादेव का मंदिर था जिस की सीढ़ियों पर उस ने तथा उस के पिता ने वर्षों मुंडन का कार्य किया था. किंतु उन को मंदिर में प्रवेश तो दूर, कभी उस में झांकने का अवसर भी नहीं मिला था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पता चल गया तो वह उस को प्राप्त कर के ही रहेगा, चाहे उसे सारे हिंदुस्तान को ही धूल में क्यों न मिलाना पड़े.

इस प्रकार के विचारों के भंवर में उस का दो महीने से अधिक का समय बीत गया. अब उस की यात्रा भी पूरी हो चुकी थी और वह लाहौर राज्य की सीमा पर खड़ा था. सीमा पर आ कर उस ने अपनी सेना को पूरी तरह सुसज्जित किया तथा आगे आक्रमण की भूमिका बनाई. उस ने आसपास के स्थानों से नए सैनिकों की भारी संख्या में भरती भी शुरू कर दी. यहां के लोग अभी महमूद की विजय यात्रा तथा लूटमार को भूले नहीं थे, अतः वे लूट के माल और इनाम की आशा में बड़े उत्साह से तिलक की सेना में शामिल हो गए.

इन नवागत सैनिकों में बौद्धों तथा शूद्रों की संख्या बहुत अधिक थी. शूद्रों के उत्साह का तो ठिकाना ही न था. तिलक उन के लिए प्रेरणा का जीताजागता स्रोत था. तिलक की उन्नति देख कर शुद्र युवकों में पहली बार महत्त्वाकांक्षा के अंकुर फूटे थे. वे सोचने लगे, 'यदि नाई का बेटा तिलक महान विजेता महमूद का सान्निध्य पा कर उस का सेनानायक बन सकता है तो वे भी कम से कम हथियारबंद अश्वारोही सैनिक तो बन ही सकते हैं. यही नहीं वे गजनी की सेना में शामिल हो कर अपने पर सदियों से अत्याचार करने वाले ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों का खून बहा कर बदला भी ले सकते हैं. इस धारणा को ले कर दसियों हजार शुद्र युवक दूरदूर से आ कर तिलक की सेना में शामिल होने लगे.

रोज नए युवकों के शामिल होने से तिलक की फौज शीघ्र ही विशालकाय सेना बन गई. इस सेना में तमाम युवक अप्रशिक्षित थे. अतः उस ने अपनी सेना का संगठन इस प्रकार किया कि लड़ाई के समय उस की सेना पूर्ण रूप से अनुशासित तथा संगठित बनी रहे तथा इन नए सैनिकों के कारण कहीं रक्षा पंक्ति भंग न हो.

जेठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तक उस ने अपनी सेना को पूरी तरह संगठित तथा प्रशिक्षित कर लिया. एकादशी की रात को उस ने अपने प्रमुख सेनानायकों से मंत्रणा कर के दूसरे दिन आक्रमण करने का निश्चय कर लिया.

दूसरे दिन पौ फटते ही उस की सेना ने अहमद नियालतगन के राज्य में प्रवेश किया. राज्य में प्रवेश करते ही उस की सब से पहली मुठभेड़ अहमद के भतीजे आदिल से हुई जो कीरतगढ़ किले का मुख्य किलेदार था. तिलक के रणकौशल और बुद्धिचातुर्य से एक दिन में ही किले का पतन हो गया. किले के अधिकांश तुर्की सैनिकों ने अपनी वफादारी पुनः गजनी के सुलतान मसूद के प्रति व्यक्त कर दी. तिलक ने आदिल की हत्या कर के उस के सिर में भूसा भरवा कर उसे अपने सुलतान मसूद को भेंट स्वरूप भेज दिया.

कीरतगढ़ के शीघ्र पतन से तिलक की सेना उत्साहित हो गई और तेजी से लाहौर की ओर बढ़ी. मार्ग में पड़ने वाले हिंदू मंदिरों को उस ने बेतरह लूटा तथा ब्राह्मणों और क्षत्रियों का भारी संख्या में कत्ल किया. अहमद के वफादार मुसलमानों का उस ने कत्ल तो नहीं किया किंतु उन सब के दाहिने हाथ कटवा दिए. मंदिरों की लूट तथा गुलामों की पकड़ से उस के सैनिक मालामाल हो गए और वे जल्दी से जल्दी लाहौर पर आक्रमण करने के लिए मचलने लगे.

अपनी सेना को तीन दिन का विश्राम दे कर तिलक ने लाहौर का घेरा डाल दिया. केवल तीन घंटे की लड़ाई में अहमद नियालतगन की सेना के पैर उखड़ गए. यहां भी तिलक ने अद्भुत सूझबूझ और रणकौशल का परिचय दिया. यही नहीं उस ने सुलतान महमूद, सुलतान मसूद आदि को इसलाम का रक्षक, खलीफा का चहेता आदि सिद्ध कर के अहमद के मुख्य तुर्की सैनिकों को फोड़ दिया तथा अहमद की सेना में ही विद्रोह करा दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai

स्थिति नाजुक होती देख कर अहमद दक्षिणपूर्व के रेगिस्तानी प्रदेशों की ओर भागा, किंतु वह जहां भी जाता, तिलक उस का पीछा करता. भागते अहमद ने अंत में करौरी के हिंदू सूबेदार के यहां शरण ली. किंतु तिलक यहां भी उस का पीछा करता आ गया. हिंदू सूबेदार के यहां शरण लेने पर तिलक को तुर्की सरदारों को और भड़काने का मौका मिल गया. उस ने अहमद पर हिंदुओं का गुलाम तथा इसलाम का विरोधी होने का आरोप लगाया. उस की यह चाल काफी सफल रही. तुर्की सरदार जो अपने को हिंदुओं से श्रेष्ठ रक्त वाला मानते थे, अहमद के सख्त खिलाफ हो गए. उन्होंने न केवल उस का साथ छोड़ दिया, बल्कि वे उलटे उस के खून के प्यासे हो गए.

अपने खिलाफ गुबार को देख कर अहमद बेहद घबरा गया और करौरी छोड़ कर सिंध की तरफ भागा. किंतु स्वामिभक्त तिलक अपने सुलतान मसूद से वादा कर चुका था कि वह अहमद नियालतगन का सिर ला कर उसे भेंट करेगा अतः अब उस ने सिंध पर धावा बोल दिया. उस ने घोषणा की कि अहमद को जिंदा या मुरदा पकड़वाने वाले को वह पांच लाख दिरहम बतौर इनाम देगा. अंततः इनाम के लालच में एक जाट ने सोते समय उस का कत्ल कर दिया.

तिलक ने अहमद के सिर को कटवा कर तथा उस में भूसा भरवा कर सुलतान मसूद के पास भेज दिया.

अहमद नियालतगन के सिर को कलम करने के साथ ही तिलक का वह वादा पूरा हो गया जो उस ने सुलतान मसूद से हिंदुस्तान कूच करते समय किया था. अब वह मानसिक रूप से काफी आश्वस्त तथा संतुष्ट था. अतः अब उस ने अपने उन हिसाबों को बराबर करने का निश्चय किया जो उस के हिंदुस्तान छोड़ते वक्त बकाया रह गए थे.

तिलक को अपनी किशोरावस्था की प्रेमिका शिखावल्लरी की याद बेतरह सता रही थी. अतः उस ने श्रीरंगपुर कूच करने

खत

तुम्हारे अनगिनत खत
खोल कर, बक्सा लिए बैठी
कि गंगा आंसुओं की बह उठी,
धुंधला गए अक्षर.

—लीला पांडे

का निश्चय किया. श्रीरंगपुर का ताल्लुकेदार गगनपाल, जिस ने एक समय तिलक तथा उस के पिता को गरम सलाखों से गोदने की सजा सुनाई थी, तिलक को अपनी ओर आता देख कर घबरा गया और ताल्लुका छोड़ कर भाग खड़ा हुआ.

किंतु तिलक ने श्रीरंगपुर से लगभग 25 कोस पहले ही रास्ता बदल दिया और वह श्रीरंगपुर के दक्षिणपूर्व में दोयन की तरफ बढ़ने लगा. तिलक को रास्ता बदलते देख गगनपाल ने चैन की सांस ली. उस ने समझा कि तिलक अपने प्रति किए गए अत्याचार को भूल गया है. अतः वह निश्चिंत हो कर श्रीरंगपुर लौट आया.

वास्तव में तिलक तो इसी की ताक में था. उस ने तो सिर्फ गगनपाल को धोखा देने के लिए ही दोयन की तरफ रास्ता बदला था. अतः जैसे ही उसे अपने गुप्तचरों से गगनपाल के श्रीरंगपुर लौटने की खबर मिली, उस ने उसी रात केवल 25 तेज घुड़सवारों को गगनपाल को पकड़ने के लिए भेज दिया. वह जानता था कि गगनपाल उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम प्रेम

समस्त प्राणियों पर सम प्रेम रखना ही आदर्श नियम, आदर्श जीवन और आदर्श स्थिति है. —जेम्स एलेन

के लिए एक मक्खी की तरह है, जिसे मसलना उस के लिए चुटकियों का काम है.

घुड़सवारों के इस दल ने पौ फटते ही श्रीरंगपुर में गगनपाल की हवेली को घेर लिया. हवेली को हथियारबंद घुड़सवारों के दल द्वारा घेरे जाने की हलचल सुन कर गगनपाल की नींद खुल गई. वह हड़बड़ा कर जब बाहर आया तो उस ने अपने चारों ओर साक्षात मृत्यु को खड़े पाया.

गगनपाल जानता था कि प्रतिरोध करना व्यर्थ है. अतः उस ने आत्मसमर्पण कर दिया. उसे परिवार सहित कैद कर लिया गया. तिलक ने निर्देश दिया था कि गगनपाल को परिवार सहित हवेली में ही कैद कर लिया जाए तथा उस के साथ ही गांव के अन्य सभी निवासियों को घेर कर बंद रखा जाए. जिस से वह स्वयं गांव आ कर अपना पुराना हिसाबकिताब चुकता कर सके. घुड़सवारों को यह सब करने में कोई कठिनाई नहीं हुई. उन्होंने गगनपाल सहित सारे गांव को बंधक बना लिया.

श्रीरंगपुर के निवासियों को निरूद्ध करने की सूचना जैसे ही तिलक को मिली, वह तुरंत श्रीरंगपुर आ गया. श्रीरंगपुर में पहुंच कर उस ने गगनपाल की हवेली में ही डेरा डाला. गगनपाल को रस्सियों में बांध कर तिलक के सामने पेश किया गया.

तिलक और गगनपाल एक बार पुनः आमनेसामने थे, किंतु इस बार स्थिति बिलकुल उलटी थी. जहां पहले तिलक रस्सियों से बांध कर गगनपाल के सामने लाया गया था. वहीं आज गगनपाल को रस्सियों से बांध कर तिलक के सामने प्रस्तुत किया गया था.

तिलक के सामने आते ही गगनपाल उस के पैरों पर गिर कर अपने जीवन की भीख मांगने लगा, किंतु तिलक ने उस के सिर पर लात मारते हुए कहा, "कभी तुम मुझे स्पर्श तक नहीं करते थे, आज मैं भी तुम जैसे नाली के गंदे कीड़े को छूना अपनी बेइज्जती समझता हूं."

तिलक के मन में प्रतिशोध की ज्वाला धधक कर उठ रही थी. उस ने गगनपाल के सामने ही उस के परिवार के एकएक सदस्य को नृशंसतापूर्वक मरवा दिया. गगनपाल के दुधमुंहे बच्चे को भी गगनपाल के सामने ही गरम सूइयों से गोदगोद कर मारा गया. गगनपाल के परिवार की स्त्रियों को उस ने गजनी में बेचने के लिए गुलाम बना लिया.

तत्पश्चात उस ने गगनपाल के हाथपैर कटवा कर उसे गधों के तबेले में फिंकवा दिया. जहां वह चार दिन तक लगातार रोरो कर सिर्फ मौत मांगता रहा, किंतु किसी ने उस की फरियाद न सुनी. अंत में पांचवें दिन उस ने जमीन में सिर मार कर आत्महत्या कर ली.

गगनपाल से निबटने के बाद उसे शिखावल्लरी का ध्यान आया. श्रीरंगपुर के लोगों ने इस बात की पुष्टि की कि उस का विवाह पास के एक ताल्लुके रामला के ताल्लुकेदार के लड़के से हुआ था तथा अभी भी वह वहीं रह रही है.

यह सूचना पाते ही तिलक ने घुड़सवारों का एक दल तुरंत रामला की ओर रवाना किया. शिखावल्लरी के पति तथा परिवार को जैसे ही घुड़सवारों के आने की सूचना मिली, उन्होंने गांव छोड़ कर भागने का प्रयास किया. किंतु तिलक के संभावित कोप से बचने के लिए, उस के ताल्लुके के लोगों ने ही उन्हें पकड़ कर तिलक के घुड़सवार दल को सौंप दिया.

तिलक को जैसे ही सूचना मिली कि शिखावल्लरी घुड़सवार दल के साथ आ रही है तो वह तंबू के बाहर आया और उस ने शिखावल्लरी की आगवानी की. एक लंबे अरसे के बाद उस ने एक बार फिर शिखावल्लरी की आंखों में झांका. उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

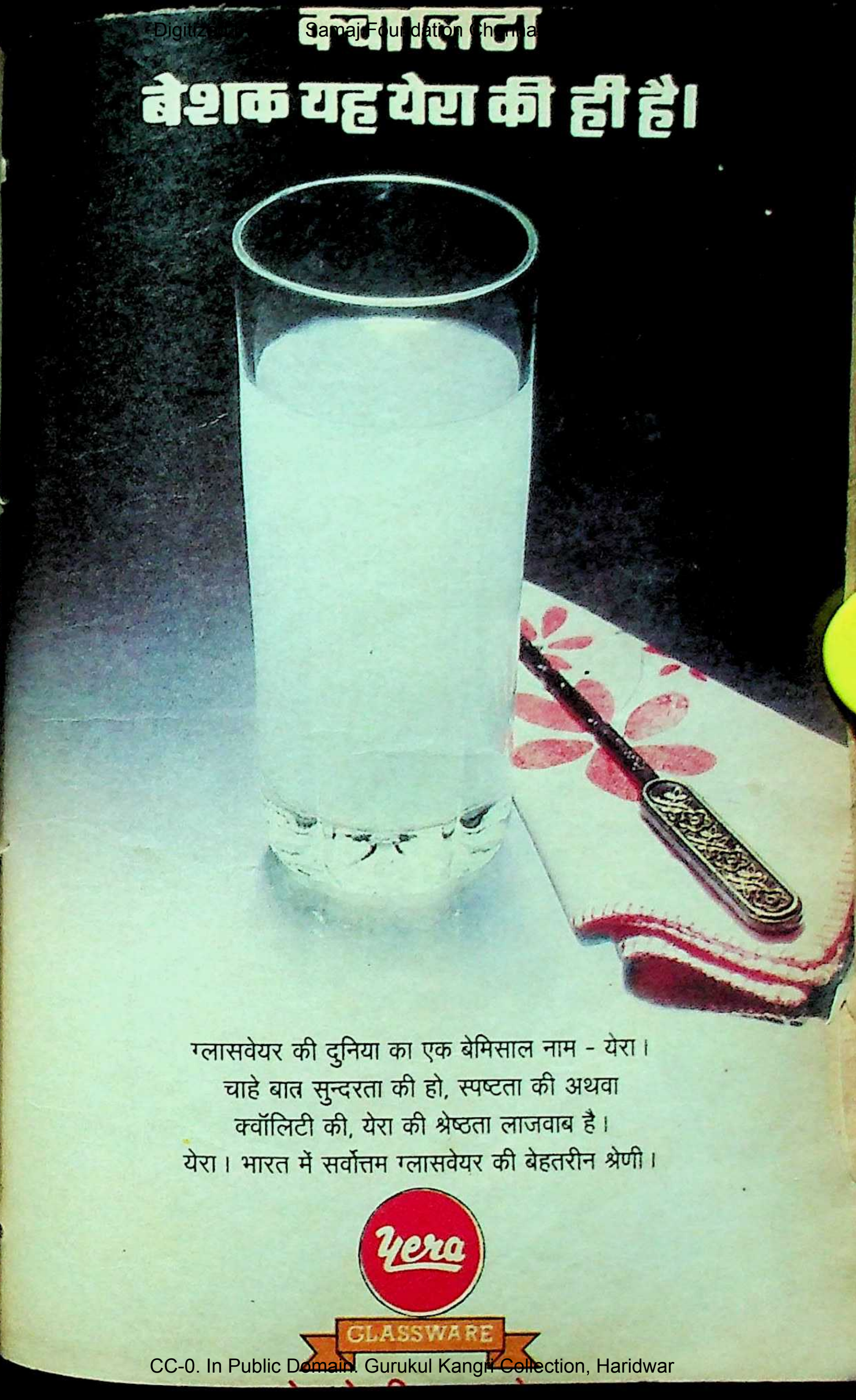

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महसूस हुआ कि शिखा के नेत्रों में उस के प्रति प्यार की नमी अभी सूखी नहीं है. शिखा को सामने देख कर उस की आंखें खुशी से छलछला आईं.

गगनपाल से बदला ले कर तथा शिखावल्लरी को प्राप्त कर के भी तिलक को पूर्ण संतोष नहीं मिला. अब उस का तीसरा निशाना नीलेश्वर महादेव का मंदिर था, जिस की सीढ़ियों पर उस ने तथा उस के पिता ने वर्षों मुंडन का कार्य किया था. किंतु उन को मंदिर में प्रवेश तो दूर कभी उस में झांकने का अवसर भी नहीं मिला था.

तिलक अपने अंगरक्षकों के साथ मंदिर पहुंचा तो वह यह देख कर हैरान रह गया कि दहशत के मारे मंदिर का पुजारी आरती की थाली लिए उस का ही स्वागत करने खड़ा हुआ है. वह मन ही मन हंसा, उस ने पुजारी का स्वागत स्वीकार करने के बजाय उसे कैद करवा दिया.

उस ने जूते पहने तथा घोड़े पर सवार हो मंदिर में प्रवेश किया. उस ने देखा दहशत के मारे गांव के सभी ब्राह्मण, क्षत्रिय मंदिर के प्रांगण में इकट्ठे थे. उस के प्रवेश करते ही वे उस के सामने लेट कर दया की भीख मांगने लगे. वह गांव जहां उस की तमाम पुश्तें कभी सिर न उठा सकीं, बल्कि अपमान तथा प्रताड़ना में जीती रहीं, आज उस के कदमों पर गिरा था.

ऐसे अवसर पर गर्वोन्नत तिलक ने चिल्ला कर कहा, "अच्छा हुआ कि उस समय तुम लोगों ने मुझे इस मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया. नहीं तो मैं ने इस मंदिर में एक विजेता के रूप में नहीं बल्कि एक सेवक के रूप में प्रवेश किया होता. अब मैं इस मंदिर को धूल में मिला दूंगा. क्या किसी ब्राह्मण या क्षत्रिय में हिम्मत है जो मुझे ऐसा करने से रोक सके."

तिलक के इस प्रकार प्रताड़ना भरे शब्दों के बावजूद किसी ब्राह्मण या क्षत्रिय की हिम्मत नहीं पड़ी कि वह तिलक को सिर उठा कर देख भी सके. उस ने कई बार वहां उपस्थित लोगों को ललकारा किंतु वे सभी मौन और नतमस्तक खड़े रहे.

उन्हें मौन देख कर तिलक फिर

क्या आप मांग कर खाते हैं?

मांग कर कपड़े पहनते हैं?

मांग कर बस, ट्राम व रेल में सफर करते हैं?

मांग कर सिनेमा देखते हैं?

मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?

तब...

मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं? निजी पुस्तकालय आप की शोभा हैं, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है. मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SATURDAY 25

चोट तो थी गहरी लेकिन बचाव भी था पूरा

दर्द तो अब नहीं। लेकिन हाथ और घुटने का प्लास्टर कटने में अभी भी एक हफ़्ता और लगेगा। अभी तो पेन भी ठीक से नहीं पकड़ा जा रहा। डॉक्टर तो कहते हैं कि सब कुछ ठीक है और परेशानी की कोई बात नहीं।

डॉक्टर का बिल तो लम्बा-चौड़ा निकला। हाँ, याद आया, दुर्घटना बीमा पॉलिसी जो ले रखी है। फ़ौरन फ़ोन मिलाया-ओरिएण्टल वालों को। चलो, क्लेम तो मिल जायगा। सिर्फ़ प्लास्टर कटने की देर है और इलाज के बिल तथा फिटनेस सार्टिफ़िकेट उनके पास जमा करने की।

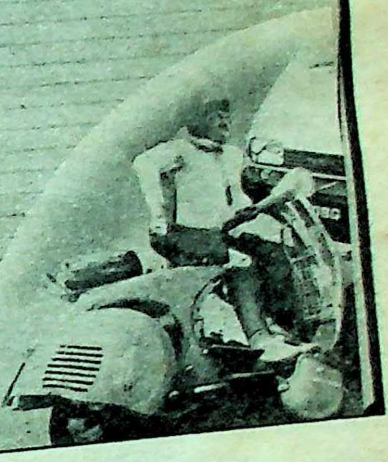

सम्पूर्ण परिवार के लिये:

दुर्घटना से अपंग होने पर या अंग-भंग होने की स्थिति में, घायल होने या दुर्भाग्यवश मृत्यु हो जाने पर, मुआवजा दिये जाने का प्रावधान।

प्रीमियम बहुत मामूली। एक लाख की पॉलिसी के लिये केवल 200 रु०/- से 300 रु०/- तक (पेशे पर निर्भर)।

ओरिएण्टल इंश्योरेंस की व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा पॉलिसी

ओरिएण्टल इंश्योरेंस

(भारतीय साधारण बीमा निगम की सहायक कम्पनी)
'ओरिएण्टल हाउस', ए-25/27, आसफ़ अली रोड,
नई दिल्ली-110 002.

Advtg. Integrated/OIC/2490

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिल्लाया, "तुम ने मेरे साथ जो कुछ किया था उसे देखते हुए मुझे सब को मौत की सजा देनी चाहिए थी किंतु मैं तुम्हारे साथ रियायत कर रहा हूं और वह रियायत है कि तुम सब के हाथों को काट कर तुम्हें स्वतंत्र छोड़ दिया जाएगा. तुम्हें शूद्रों को स्पर्श करने में बड़ा गुरेज था. अब तुम किसी को कभी स्पर्श नहीं कर सकोगे. तुम ने मेरे साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया, अब तुम्हें भी जानवरों की तरह सीधे मुंह से खाना पड़ेगा." यह कह तिलक ने एक जोर का ठहाका लगाया.

अपने आदेश का पालन होने के पश्चात तिलक ने श्रीरंगपुर से तुरंत प्रस्थान कर दिया. उस का मन जल्दी से जल्दी गजनी पहुंचने को मचल रहा था. जिस से वह सुलतान मसूद से अपनी सफलता की शाबाशी तथा स्नेह स्वीकार कर सके.

गजनी पहुंचने पर उस ने सुलतान

जवाकुसुम से परिवार नियोजन

विगत कई वर्षों से भारत में असाधारण जनसंख्या वृद्धि के कारण परिवार नियोजन की चर्चा जोरों पर है. इस के लिए अनेक सुझाव दिए गए हैं, अनेक उपाय बताए गए हैं.

इन्हीं उपायों की श्रृंखला में अब जवाकुसुम भी जुड़ गया है. हाल ही में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से संबद्ध सर सुंदरलाल चिकित्सालय के डा.के.एन. उड़प्पा ने तमाम प्रयोगों और अध्ययनों के आधार पर यह सुझाव दिया है कि यदि जवाकुसुम के फलों का अर्क निकाल कर उस के चूर्ण के कैप्सूलों को नियमित रूप से दिन में तीन बार किसी महिला को खिलाया जाए तो उस के गर्भ धारण की संभावना कई महीनों तक टल जाती है. सामान्यतः ये कैप्सूल मासिक धर्म के पांचवें दिन से ले कर 20 दिन तक इस्तेमाल करना लाभदायक रहता है.

मसूद की कामयाबी का. सुलतान ने खुद अपने हाथों से उठाया और शाबाशी दी तथा इनाम मांगने को कहा.

सुलतान मसूद की बात सुन कर तिलक गदगद हो गया. उस ने रुंधे कंठ से कहा, "जहांपनाह, आप ने मुझ जैसे नाचीज नाई के बेटे को अपनी फौज में न केवल पनाह दी बल्कि ऊंचे ओहदे भी दिए. आप की बदौलत ही मैं उस हिंदुस्तान में, जहां मेरी तमाम पुश्तें सिर झुकाए ही जीवन गुजार गई, अपना सिर ऊंचा कर के गया और आया. इस से बड़ा इनाम मेरे लिए और क्या हो सकता है. किंतु यदि आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो मैं हिंदुस्तान से एक लड़की शिखावल्लरी को लाया हूं क्योंकि मैं उस लड़की को जीत कर अपने साथ लाया हूं इसलिए जंग के कानूनों के मुताबिक वह लड़की गुलाम है. किंतु आप इजाजत दें तो इस लड़की से अपना निकाह करना चाहूंगा."

सुलतान यह सुन कर अत्यंत प्रसन्न हुआ. उस ने तिलक तथा शिखावल्लरी को इसलाम मजहब में दाखिल करा के उन का निकाह करा दिया और उन के निकाह के तोहफे के रूप में तिलक का ओहदा ऊंचा कर के उसे तुर्की सिपहसालारों के समकक्ष कर दिया.

जब तक तिलक जीवित रहा वह गजनी में हिंदुस्तानी फौज का नेतृत्व करता रहा. वह इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्व बन गया. हिंदुस्तान में तो उसे नाई का बेटा होने के कारण सदा अपमान और तिरस्कार ही मिला. किंतु गजनी में उसे सदैव सम्मान मिला. उस के बारे में तत्कालीन इतिहासकार बैहाकी का कहना है, "तिलक की उन्नति से समझदार आदमी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए. वास्तव में जन्म से कोई भी अच्छा, बुरा नहीं होता. तिलक में वे तमाम गुण थे जो किसी उच्च सेनानायक में होने चाहिए. यही वजह है कि वह जब तक जिंदा रहा उसे नाई का बेटा होने का अपमान कभी नहीं सहना पड़ा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीपेट
'क्लियोपेट्रा'

हर चीज़ रखने के लिए किचन जार

अब गृहिणियाँ चैन क सांस ले सकती हैं. पकड़ने और उठाने-धरने में आसान क्लियोपेट्रा जार गृहिणियों का चैन और घर की शोभा बढ़ाते हैं. शक्कर, नमक, काजू, धनिया, सूखी मिर्च, लहसुन, हल्दी और दूसरे मसाले पाउडर रखने के लिए सर्वथा उपयुक्त. चाय और कॉफी पाउडर रखने के लिए भी सुविधाजनक. माल्ट बेवरेजों के १/२ कि.ग्रा. वाले रिफ़िल पैक तथा खाद्य तेल और वनस्पति सैशे के लिए भी अत्युत्तम. फ़ूडग्रेड, गंधहीन, न टूटने-फूटने वाली, पारदर्शक, हल्की श्रीपेट बोतलें और जार को इस्तेमाल करने में कितनी सुख सुविधा है खुद अनुभव कीजिए.

भरने के लिए अधिकतम तापमान ६०° सें.

SHRIRAM GROUP COMPANIES MADRAS

पेट इंडस्ट्रियल कंज़्यूमर पैकेज प्रा. लि.
मूकाम्बिका कॉम्पलैक्स, ३री मंज़िल,
४, लेडी देसिकाचारी रोड,
(प्रवेशः सी पी रामास्वामी रोड),
मैलापुर, मद्रास ६०० ००४.
फ़ोन ७३७६८/७४९६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" बच्चों की पढ़ाई या सेहत का मामला हो तो मैं समझौता कभी नहीं करती... "

"इसीलिए मैं उन्हें नियमित रूप से झंडु स्पेशल च्यवनप्राश देती हूँ. सचमुच यह ... शुद्ध हरा आँवला, ... वंशसालोचन, कुडकोल ... जावंत्री, इलायची और ... जैसी जड़ी-बूटियाँ, ... देसी घी में बनाया गया है. मेरा बाज़ार का आना-जाना ... रोज़ ही लगा रहता है, मैं जानती ... कि अच्छी और उम्दा ... हमेशा कुछ महँगी ही मिलें ... फिर, जब क्वालिटी की बात ... तो हर कोई झंडु को जानता है और उस पर भरोसा करता है.

मैं, अपने बच्चों को झंडु ... च्यवनप्राश बारहों महीने देती ... इसीलिए उनमें छोटी-मोटी बीमारियों का मुक़ाबला करने ... शक्ति आ गई है. ख़ास ... खाँसी और ज़ुकाम.

हाँ, थोड़ी सी परेशानी मुझे ... है. इसमें मिले तत्त्व ... और शुद्ध हैं कि इसका स्वाद ... कमाल है. बच्चों का ... वे इसे दिनभर खाते रहें. ... दो-चार दिन बाद मुझे बोतल ... दूसरी जगह छिपाकर रखनी ... है. क़ीमती है न!"

अब १ किलो के आकर्षक पॉलीजार में भी उपलब्ध

क़ीमती ही सही **झंडु स्पेशल च्यवनप्राश**

INDIA'S GREATEST CYCLE RACE

ZANDU BALM

CLARION/BZF 24

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषम चक्र

कहानी ● कुसुम गुप्ता

चार दिन तक वह घर से बाहर रही. लगभग 30 सहेलियों के साथ जयपुर, अजमेर तथा उदयपुर के दर्शनीय स्थलों की सैर में उस का मन रमा नहीं. चौबीसों घंटे उस का मन पीयूष के रहस्यमय व्यवहार की भूलभुलैया में खोया रहा.

उस की सहेलियां हंसीमजाक करतीं, पर उसे आनंद न आता. वह तो परेशान हो चली थी. एक प्रश्न था जो उस के कोमल मन में नुकीले कांटे सा चुभा हुआ था कि आखिर पीयूष उस की बात मानने से कतरा क्यों रहा है?"

उस ने पीयूष से बारबार एक ही अनुरोध किया है कि अब प्रेम को विवाह में बदल जाना चाहिए. इस के लिए उस ने पीयूष से कहा कि वह अपने मातापिता को उस के घर भेज दे, ताकि उन के विवाह के बारे में उन के अभिभावक अंतिम निर्णय कर डालें.

"इतनी जल्दी भी क्या है, सुमी?" पीयूष ने पूछा.

"पिताजी जल्दी में हैं." उस ने उत्तर दिया.

"क्यों?"

"उन की सेवानिवृत्ति में कुल छः महीने रह गए हैं. सेवाकाल में ही वह शादी करना चाहते हैं."

"समझा, पद का सदुपयोग हो जाएगा." पीयूष ने हंस कर कहा.

"व्यंग्य मत कसो. फर्क तो पड़ता है कुरसी का. थोड़ी सुविधाएं मिल जाती हैं. फिर यही एक कारण तो नहीं है. जून में बड़े भैया आस्ट्रेलिया से आ रहे हैं और अप्रैल में मेरी परीक्षा भी समाप्त हो जाएगी." वह पीयूष से बोली.

पीयूष विचारमग्न सा बैठा रहा.

"क्या सोचने लगे?" उस ने पीयूष को कुरेदा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां से रिश्ते की खबर सुन कर सुमन खुशी से झूम उठी थी. पीयूष से विवाह की कल्पना से ही उस के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे. लेकिन जब असलियत खुली तो वह सन्न रह गई. उसे लगा वह एक ऐसे विषम चक्र में फंस गई है जिस का कोई ओरछोर नहीं है.

"कुछ नहीं. मैं तीन दिन के लिए बंबई जा रहा हूं."

"वाह, क्या संयोग है. मैं कल राजस्थान भ्रमण पर जा रही हूं. क्यों न इस बीच तुम्हारे मातापिता मेरे मातापिता से मिल कर सारी बातें तय कर लें." उस ने सुझाव दिया.

"ठीक है, कोशिश कर के देखता हूं."

"कोई संदेह है क्या?"

"नहीं, मेरे मातापिता को मेरे निर्णय पर कोई आपत्ति नहीं होगी."

"वही मेरे साथ है. मेरे मातापिता बड़े उदार तथा प्रगतिशील हैं. मैं जिस नवयुवक पर उंगली रख दूंगी, वे उस के साथ मेरा विवाह कर देंगे." उस ने आत्मविश्वास से कहा.

पीयूष हंस दिया था. यों उस बात पर हंसने की कोई आवश्यकता नहीं थी. उस के बाद भी पीयूष ने उसे आश्वासन नहीं दिया. बस, टालमटोल वाला उत्तर दिया, "ठीक है, देखूंगा."

पूरे चार दिन सुमन सोचती रही. क्या पीयूष इसलिए कतरा रहा था कि भारतीय परिवेश में लड़के वाले नहीं, लड़की वाले विवाह का प्रस्ताव ले कर जाते हैं. यदि ऐसा है, तो वह स्वयं अपने मातापिता से प्रार्थना करेगी कि वे पीयूष के घर जाएं.

सुमन लौट कर घर आई तो एक सुखद समाचार उस की प्रतीक्षा कर रहा था. टैक्सी से उतर कर वह घर में घुसी तो उस की मां ने उसे अपने सीने से चिपका लिया. उन्होंने भ्रमण के बारे में कुछ नहीं पूछा. भावावेश में वह केवल इतना बोलीं, "सुमी, तेरे लिए एक खुशखबरी है."

"क्यों, क्या हुआ मां?" सुमन ने उत्सुकतावश पूछा.

"वे लोग आए थे, तेरा रिश्ता मांगने. सच कहती हूं, बड़े भले और सज्जन लोग हैं. इतने सुसंस्कृत और उदारमना कि बस कुछ पूछो मत."

सुमन यह समाचार सुन कर अभिभूत हो गई. सोचने लगी, 'इस बार पीयूष ने गच्चा नहीं दिया. उस का अनुरोध स्वीकार कर लिया.'

"वे कह रहे थे कि उन्हें दहेज नहीं केवल लड़की चाहिए. बोल क्या कहती है तू?"

"मां, मैं क्या कहूं? जैसा आप लोग ठीक समझें." सुमन ने नाटक किया. उस के मन में तो मिसरी सी घुल रही थी. पहले प्रेम तथा बाद में अभिभावकों द्वारा तय किया विवाह, क्या मिश्रण था.

"लड़का नहीं आया... वह कहीं बाहर गया है. वैसे उस की जरूरत भी क्या है? वे कह रहे थे कि लड़के ने लड़की को देखा है और लड़की ने..."

सुमन को मां की पूरी बात सुनाई नहीं पड़ी. उस के मन से एक अदृश्य स्वर उठा और मां की अधूरी बात पूरी हो गई, 'लड़के को सच्चा प्यार किया है और वह उस के लिए सर्वस्व न्योछावर कर सकती है.'

"अगर तुझे यह रिश्ता मंजूर है तो मैं तेरे पिताजी से कहूंगी कि वह लड़के वालों के यहां जा कर सगाई तथा शादी की तारीख के बारे में फैसला कर लें."

"ठीक है, मां," कह कर लजाती हुई वह अपने कमरे में गई और पलंग पर लेट गई. शीघ्र ही उसे महसूस हुआ, जैसे वह

पलंग
के रंगी
चारों
समान
खुशख
हो जा
पूरी क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक हफ्ते से कहां हैं, देवीजी ? मैं तो फोन कर के हार गया." पीयूस ने सुमन की ओर आते हुए उलहाना दिया.

पलंग पर नहीं लेटी है, बल्कि कल्पनालोक के रंगीन आकाश में उड़ रही है. उस के चारों ओर उस की आकांक्षाएं इंद्रधनुष के समान दमक रही हैं.

अगले दिन दोपहर को मां ने उसे खुशखबरी सुनाई, "सुमन, जल्दी से तैयार हो जाओ. वे लोग तीन बजे सगाई की रस्म पूरी करने आ रहे हैं."

"तो क्या...?" वह क्लांत सी थी. अतः अपना प्रश्न नहीं पूछ सकी.

"हां, तेरे पिताजी कल वहां गए थे. वह तो सोने की गिन्नी से लड़के का टीका करना चाहते थे. परंतु उन लोगों की शराफत देखो, गिन्नी नहीं ली. सगुन का केवल एक रुपया स्वीकार किया." मां चहकती हुई बोलीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां दोपहर भर रसोईघर में व्यस्त रहीं. मेहमानों के स्वागत के लिए उन्होंने बड़े जोरशोर से तैयारी की थी.

पौने तीन बजे फोन की घंटी बजी. सुमन ने रिसीवर उठाया और बोली, "हैलो."

"सुमी?" उधर से पीयूष का स्वर गूंजा.

"अभी घर पर ही हो? चले नहीं...?" सुमन ने बिगड़ कर कहा.

"क्या मतलब?"

"मतलब भी समझाना पड़ेगा जनाब को? मैं कहती हूं, तुम नहीं आ रहे?"

"नहीं... फिलहाल तो नहीं, दफ्तर में बहुत व्यस्त हूं. मैं ने तुम्हें फोन इसलिए किया था कि..." और पीं..पीं...पीं... फोन कट गया था. पीयूष की बात पूरी नहीं हो पाई. उस ने पीयूष को फोन मिलाना चाहा पर सफल नहीं हो पाई.

सुमन मायूस हो गई क्योंकि पीयूष नहीं आ रहा था. फिर उस ने अपने मन को समझा लिया कि सगाई में उस का क्या काम? सास उसे साड़ी देंगी और कोई स्वर्ण आभूषण पहना देंगी? बस हो गई सगाई की रस्म.

पर पीयूष कहना क्या चाहता था? सुमन उलझ गई. वह फोन वालों को कोसती रही. पर उस से क्या बननेबिगड़ने वाला था.

ठीक तीन बजे उस के भावी साससमुर आए. वे बड़ी तन्मयता तथा आत्मीयता से अपनी भावी पुत्रवधू को निहार रहे थे. यंत्रवत सुमन ने उन के पांव छुए तो अभिभूत हो उन दोनों ने उस के सिर पर हाथ रख दिया.

एक घंटे तक वे रुके. संक्षिप्त सी काररवाई कर के तथा शाम की चाय पी कर वे चले गए. सगाई की रस्म के दौरान उस की होने वाली सास ने उस की मांग में सिंदूर का हलका सा स्पर्श कर दिया था.

अब उस की मांग सूनी नहीं थी, सिंदूरी रंग से दपदप कर रही थी. उन लोगों के जाने के बाद सुमन शृंगार मेज के दर्पण के सामने जा खड़ी हुई और अपने इस रूप को देख मुग्ध हो गई.

अगले दिन रविवार था. अतः सुमन घर से बाहर नहीं निकली. पर वह बराबर पीयूष के फोन की प्रतीक्षा करती रही और सोचती रही, 'आखिर कल वह कहना क्या चाहता था? जो भी हो, अब उसे पीयूष को फोन नहीं करना चाहिए.'

उस के मन में तो बस एक ही प्रश्न था. वह पीयूष से पूछना चाहती थी, 'तुम्हारे मातापिता को मैं कैसी लगी? वह कितनी खुश होगी जब पीयूष उस की प्रशंसा करेगा.' दोपहर बाद पीयूष का फोन आया. उमंग में भर कर वह बोली, "कल से आज फुरसत मिली है. मैं तो तुम्हारे फोन की बाट देखतेदेखते... खैर छोड़ो, यह बताओ मातापिता को कैसा लगा सब?

"उन्हें तो पसंद है सब कुछ... वे तो भी कर रहे हैं, पर मैं ही कोई फैसला नहीं कर पा रहा हूं." उधर से पीयूष का उदास हुआ स्वर आया.

"अब फैसला करने की गुंजाइश ही कहां है?"

"मैं भी यही सोचता हूं. मैं ने मातापिता से कहा था कि वे एक बार तुम्हें भी देख लें, पर वे टालमटोल कर गए. मुझे खेद है, तुम्हारे जयपुर जाने से पहले मैं ने जो वादा किया था, वह मैं पूरा नहीं कर पाया..."

"मूर्ख मत बनो... तुम्हारे मातापिता यहां आए और सगाई की रस्म पूरी कर गए. अब तुम बेकार में नाटक क्यों कर रहे हो?"

"तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया है? मेरे मातापिता तो तुम्हारे यहां गए ही नहीं. इसी के लिए मैं माफी मांगना चाहता था. कल इसी कारण फोन किया था..."

"तो फिर...?" सुमन स्तब्ध खड़ी रह गई. उस की चेतना जैसे सुन्न हो गई. आंखों के आगे एक धुंधला परदा सा खिंच गया. "मां," वह चीख पड़ी. उस के हाथ से फोन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का रिसीवर छूट...

मां दौड़ी आईं. उन्होंने सुमन की दशा देखी तो घबरा कर बोलीं, "क्या हुआ मेरी बच्ची?"

"मां, कल जो मेरी सगाई की रस्म पूरी कर के गए हैं, वे पीयूष के मातापिता नहीं थे?"

"कौन पीयूष? नहीं... वे तो सौरभ के मातापिता हैं." मां ने बड़ी सहजता से उत्तर दिया.

"यह सौरभ कौन है?" सुमन ने घोर निराशा से पूछा.

'सौरभ महेंद्रजी का बेटा है, इंजीनियर है, 4,000 रुपए महीना ले रहा है."

"यह महेंद्रजी पिताजी के सहकर्मी तो नहीं?"

"हां, वही हैं. बड़े भले लोग हैं. उन लोगों ने तुझे मांग कर लिया है."

"इस सौरभ ने मुझे कहां देखा?" सुमन ने उतावली से पूछा.

"कहता था, एक बार दफ्तर के किसी समारोह में तुम दोनों मिले थे."

"मुझे तो कुछ याद नहीं. पर यह सब हुआ कैसे?"

"बात क्या हुई बेटी?" सुमन ने देखा, पिताजी भी आ गए थे. वह कुछ नहीं बोल पाई. निराशा और इस विचित्र सी उलझन से जन्मे अवसाद के कारण उस की आंखों में आंसू आ गए. मातापिता के बारबार अनुरोध करने पर सुमन ने उन लोगों को सारी बात बता दी.

"हद हो गई तुम्हारी लापरवाही और मूर्खता की." पिता हतप्रभ रह गए.

"मैं ने तो कई बार लड़के का नाम तक लिया था." मां ने तनिक गुस्से से कहा.

"कल्पनालोक में उड़ने वाले ऐसी ही जटिल उलझनें पैदा कर देते हैं क्योंकि वास्तविक संसार की न तो उन्हें कोई चीज दिखाई देती है और न ही सुनाई देती है." पिता ने उसे लताड़ा.

सहर में

गम सिरहाने बैठ कर
रात भर जागे रहे,
सहर में बर्फ बन
दिल और जां पे जम गए.
—निर्मला जौहरी

"मैं यह विवाह..." और सुमन के शेष शब्द हिचकियों में खो गए.

घर का माहौल बेहद उदास और तनावपूर्ण हो गया था.

"यह सगाई अब कैसे टूट सकती है? सब को पता चल गया है. अब सगाई तोड़ने से दोनों पक्षों की बदनामी होगी. कौन विश्वास करेगा कि तुम ने गलतफहमी में यह रिश्ता मंजूर कर लिया."

"पर पिताजी."

"सुमन, महेंद्रजी मेरे पुराने दोस्त हैं. वह भले और शरीफ लोग हैं. लड़के में कोई कमी नहीं है. फिर हम ने सगाई से पहले तुम्हारी स्वीकृति ले ली थी. इस सब के बावजूद सगाई तोड़ना कहां की शराफत होगी?" पिता अपने निर्णय पर अडिग थे.

आगे प्रतिवाद करना व्यर्थ था. वह अपने कमरे में जा कर फफकफफक कर रोने लगी. वह सोचने लगी कि 'पीयूष को वह क्या मुंह दिखाएगी? वह सौरभ के साथ विवाह रचा कर कैसे सुखी रह पाएगी?'

लगभग एक सप्ताह तक वह घर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही बंद रही. न कालिज गई, न किसी से मिली. तीनचार बार पीयूष का और एक बार सौरभ का फोन आया, परंतु वह टाल गई. अब किस मुंह से बात कर सकती थी वह पीयूष से? सौरभ से बात करने में उसे रुचि नहीं थी. जिस रास्ते जाना नहीं, उस के मील पत्थरों को गिनने से क्या लाभ?

एक दिन सौरभ उन के घर आया. सुमन के मातापिता ने उस का इतना गरमजोशी से स्वागत नहीं किया, जितना करना चाहिए था.

सुमन ने कनखियों से सौरभ को देखा. प्रथम भेंट में वह उसे बुरा नहीं लगा. पहले हुई मुलाकात के बारे में उसे कुछ याद नहीं था. कत्थई रंग के सफारी सूट में वह अच्छाखासा लग रहा था. पर उस में वह बात नहीं थी जो पीयूष में थी.

सुमन ने देखा, सौरभ बड़ी खोजी दृष्टि से उसे निहार रहा था. साथ ही उस दृष्टि में प्रशंसा और संतोष झलक रहा था. सुमन ने महसूस किया कि सौरभ पीयूष की तरह चंचल या चपल नहीं, वह कम बोलता है.

"मैं ने सोचा, शनिवार है. सुमनजी खाली होंगी. यदि उन की इच्छा होगी तो हम लोग कहीं बाहर घूम आएंगे." शांत स्वर में सौरभ ने निमंत्रण दे डाला.

निमंत्रण सुमन को देना था, पर वह संबोधित मां को कर रहा था. मां ने सुमन की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा. उस ने डूबे स्वर में कह दिया, "मां, आज तो मेरे सिर में दर्द हो रहा है."

"फिर परेशान होने की जरूरत नहीं. आप आराम करें." सौरभ के स्वर में वास्तविक चिंता थी.

कोई एक घंटे बैठ कर और फिर आने का आश्वासन दे कर सौरभ चला गया. मां ने उसे रात के खाने का निमंत्रण दिया, पर उस ने शालीनतापूर्वक अस्वीकार कर दिया.

सोमवार को सुमन कालिज गई तो उसे एक और अप्रत्याशित धक्का लगा. कालिज के मुख्य द्वार पर पीयूष अपनी कार में बैठा उस की प्रतीक्षा कर रहा था. उसे देखते ही वह गाड़ी से उतर कर उस के पास आया और उलाहना देते हुए बोला, "एक हफ्ते से कहां हैं आप? मैं तो फोन करकर के हार गया."

"मैं तुम्हें कहकह कर हार गई. सचमुच पीयूष, तुम ने सारा गुड़गोबर कर दिया. मुझे तुम से ऐसी उम्मीद नहीं थी." सुमन उदास स्वर में बोली.

"मैं क्या करूं, सुमन, मातापिता की जिद के आगे मैं लाचार हो गया. मेरी मरजी के बिना वह रिश्ता पक्का कर आए हैं. मेरी समझ में नहीं आ रहा कि क्या करूं?"

"किस का रिश्ता?" सुमन बुरी तरह चौंक गई.

"लड़की भी देखने में बड़ी मामूली सी है, पर हैं, पैसे वाले. मेरे मातापिता तो शायद पैसों के लालच में आ गए हैं. चार लाख रुपए लगाएंगे, ऐसा वे कह रहे थे."

"तो क्या तुम्हारा रिश्ता कहीं और पक्का हो गया है?" सुमन ने ऊंचे स्वर में पूछा. वह सुन्न पड़ती जा रही थी.

"हां, सुमी. वही तो बता रहा हूं. इसी लिए तो मेरे मातापिता तुम्हारे यहां आने से कतरा रहे थे. वे कह भी रहे थे कि नौकरीपेशा आदमी शादी में क्या लगा सकता है."

"ओह, यह क्या हुआ. इधर मैं, उधर तुम..."

"तुम चिंता मत करो, सुमी. मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता."

"पीयूष, मैं भी तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकती. पर यह सब क्या हो रहा है. इधर तुम्हारा विवाह पक्का हो गया है, उधर मेरे मातापिता गलतफहमी के शिकार हो गए और..." एक ही सांस में सुमन ने अपनी करुणगाथा सुना दी.

"यह नहीं हो सकता."

फिर वे दोनों कार में आ कर बैठ गए और देर तक संज्ञाशून्य से बैठे रहे. बाद में पीयूष उसे घर छोड़ गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतनी जल्दी कैसे लौट आई, बेटी?" मां ने पूछा.

सुमन ने मां के कंधे का सहारा लिया और रोरो कर सारी कहानी सुना दी.

"एक बात कहूं, सुमन. बुरा मत मानना. मुझे तो यह लड़का कुछ जंचा नहीं. लगता है, यह परिवार दहेज का लोभी है. फिर जो नवयुवक इस विषय में अपने मातापिता का विरोध न करे, उस पर कोई लड़की कैसे निर्भर कर सकती है?"

सुमन सोचने लगी, 'शायद मां ठीक कह रही हैं? पीयूष पर निर्भर नहीं रहा जा सकता. पर क्या इसी कारण वह सौरभ से विवाह कर के सुखी रह सकेगी?'

उस की कुछ समझ में नहीं आ रहा था. मां ठीक कह रही थीं. पर प्रथम प्रेम को हृदय से निकालना क्या इतना सरल कार्य था? क्या उसे भूलना संभव था? मकड़ीजाल में फंसी मक्खी सी लाचार, असहाय और मुक्ति के लिए छटपटाती वह अपने कमरे में जा कर बंद हो गई.

गंगा सफाई का दायित्व कछुओं के कंधों पर

निरंतर बढ़ते औद्योगीकरण एवं अन्य अनेक कारणों से वातावरण प्रदूषित होता जा रहा है और गंगा भी इस का अपवाद नहीं है. गंगा को प्रदूषण से बचाने के लिए गंगा सफाई योजना के अंतर्गत वाराणसी में रामनगर से राजघाट रेलवे पुल के बीच पानी में बहाए गए शवों को खाने के लिए तीन हजार कछुए गंगा में छोड़े जाएंगे. सब से अधिक शव इसी क्षेत्र में प्रवाहित किए जाते हैं.

सफाई योजना को क्रियान्वित करते समय यहां मछली पकड़ने पर पाबंदी लगा दी जाएगी ताकि मछलियों के साथ कछुए भी जाल में न फंस जाएं.

अगले दिन शाम को सौरभ आया. इस बार उस ने थोड़ा दबाव डाला तो सुमन राजी हो गई. वे दोनों लोदी बाग के रेस्तरां में आ कर बैठ गए.

काफी पीते हुए, एकदूसरे को घूरते, जांचतेपरखते, वे मौन बैठे रहे.

"हम लोग अभी तक मिले नहीं थे. मैं ने सोचा, एक निजी खुली मुलाकात हो जाती तो अच्छा था." सौरभ ने गंभीर स्वर में कहा.

"मैं भी ऐसा ही सोच रही थी."

"क्षमा करना मेरी स्पष्टवादिता को, पिछली बार आया था तो, मुझे लगा था, जैसे आप इस संबंध से प्रसन्न नहीं हैं."

सुमन सौरभ की बात से प्रभावित हुई. उस ने भी सोच लिया था कि वह सौरभ को स्पष्ट बता देगी कि यह सगाई गलतफहमी का परिणाम है और वह अपने प्रथम प्रेम को कभी नहीं भूल सकती.

यही किया सुमन ने. बड़ी शांति और शालीनता से उस ने अपनी कहानी सुना दी. सुन कर सौरभ गंभीर हो गया. जबरन उस ने निराशा को दूर कर सहज होना चाहा. एक फीकी मुसकान उस के होंठें पर उभरी. वह गंभीर स्वर में बोला, "सुमनजी, मैं स्वयं को एक ऐसी नवयुवती पर नहीं थोपना चाहता जो किसी और से प्रेम करती हो."

"फिर क्या किया जाए? सगाई तो हो चुकी है." सुमन ने बड़ी लाचारगी से पूछा.

"तत्काल सगाई तोड़ने से दोनों परिवारों की बड़ी बदनामी होगी. लोग तरहतरह की बातें करेंगे. फिर तुम्हारी कहानी पर कौन विश्वास करेगा? यही नहीं, मेरे पिताजी दिल के मरीज हैं. कहीं यह धक्का उन्हें... नहीं, अभी कुछ दिनों तक हमें सगाई को चलाने का नाटक करना होगा. फिर कुछ अंतराल के बाद ठीक मौका देख कर हम उसे तोड़ देंगे." कह कर सौरभ खड़ा हो गया. उस ने काफी के पैसे चुकाए. बिना आगे कुछ बोले वह सुमन को घर छोड़ कर चला गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन को पता था कि सौरभ बुरी तरह आहत हो गया था. वह अपराध भावना से ग्रस्त थी. वह एक विषम चक्र में फंस गई थी. बेचारे सौरभ जैसे सज्जन व्यक्ति को भी उस ने इस चक्र में फंसा दिया था.

तीनचार दिन बाद सौरभ का फोन आया. उस ने एक संक्षिप्त सी प्रार्थना की. उस की बहन तथा जीजाजी अमरीका से आ रहे थे. वह चाहता था कि जब तक वे लोग रहें, वह उस के साथ ऐसा व्यवहार करे जैसे यह सगाई टूटने वाली नहीं. सुमन ने सौरभ की बात स्वीकार कर ली. सौरभ के जीजा तथा बहन दोनों डाक्टर थे. कितना स्नेह दिया दोनों ने. खूब प्रशंसा की उस की. ढेरों विदेशी उपहार दिए. वह सचमुच मुग्ध हो गई. यही नहीं, इन्हीं दिनों में वह सौरभ के काफी समीप भी आ गई थी.

एक दिन सुमन ने सौरभ से क्षमा मांगी तो वह बेहद अवसादग्रस्त सा पीड़ामिश्रित स्वर में बोला, "सुमनजी, क्षमा क्यों मांगती हैं. यह क्या जरूरी है कि मैं जिस से प्रेम करूं, वह भी मेरे प्रेम का प्रतिदान दे. ऐसे संयोग तथा संबंध दुर्लभ होते हैं."

सौरभ की पीड़ा उस के अंतर में कांच की किरच जैसी चुभी. वह इस नामालूम सी व्यथा को आत्मसात कर गई. यों वह बराबर एक अपराधबोध से ग्रस्त रहने लगी थी.

फिर अचानक एक दिन पीयूष आ टपका. संयोगवश उस समय घर में वह अकेली थी. मातापिता अपने किसी मित्र के यहां चाय पर गए थे.

आते ही पीयूष ने उसे आलिंगनबद्ध किया और खुशखबरी का विस्फोट कर दिया, "मेरी सगाई टूट गई है."

"पर क्यों?" सुमन ने घोर आश्चर्य से पूछा. लेकिन मन ही मन वह बहुत खुश थी.

"वह लड़की तुम जैसी सुंदर नहीं थी. साथ ही उस के मातापिता ने दहेज का झांसा दिया था. सगाई पर कार देने की बात की थी, लेकिन कुल 21 हजार ही दिए." पीयूष ने निराशा से कहा.

सुमन एकदम बुझ गई. एक झटके में उस के मन में प्रकाशित होता आशादीप बुझ गया. वह समझ गई कि पीयूष की सगाई टूटने का रहस्य मनचाहा दहेज न मिलना है, न कि पीयूष का उस के प्रति अटूट प्रेम. नहीं, उस का प्रथम प्रेम खोखला, सारहीन, आधारहीन और क्षणभंगुर है. सौरभ के समक्ष पीयूष कुछ भी तो नहीं है.

"क्या सोच रही हो, सुमी?"

"कुछ नहीं... मेरी सगाई हो चुकी है और..."

"तोड़ दो उसे. ऐसी सगाइयां तो रोज होती रहती हैं, टूटती रहती हैं."

सुमन सोचने लगी, 'इस व्यक्ति को परिवार की प्रतिष्ठा का तनिक भी खयाल नहीं. एक सौरभ है, जो मानव मूल्यों तथा पारिवारिक सुखशांति की खातिर सगाई को न तोड़ने के लिए नाटक तक कर रहा है.'

वह शांत स्वर में बोली, "पीयूष, मेरे पिता नौकरीपेशा हैं. शादी में ज्यादा खर्च नहीं कर पाएंगे."

"अरे, अपनी इज्जत के लिए कुछ तो देंगे. फिर तुम्हारा भाई विदेश में स्थापित हो चुका है. तुम अकेली हो. उन के बाद सब कुछ तुम्हारा ही तो है. आज नहीं देंगे तो कल हमें स्वयं ही मिल जाएगा."

सुमन को लगा, जैसे ये शब्द नहीं, जलते अंगारे हैं जो उस के तनमन को जला रहे हैं. पीयूष की वास्तविकता उजागर हो चुकी थी. उस ने बड़े ठंडेपन से अपना निर्णय सुना दिया, "पीयूष, मैं नहीं सोचती कि मेरे लिए यह सगाई तोड़ना संभव होगा."

"बहुत पछताओगी." कह कर क्रोध से उबलता हुआ पीयूष चला गया.

सुमन के मन में उठता झंझावात शांत हो गया था. वह सोचने लगी, 'क्या सौरभ अब उस से विवाह करेगा? इतना अपमानित होने के पश्चात भी उसे स्वीकार कर लेगा?'

एक दिन शाम को सौरभ आया. वह सुमन को यह बताने आया था कि यदि वह चाहे तो अगले दिन सगाई तोड़ने की घोषणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक दुनिया अग्निकांड, बाढ़, सेंधमारी और दंगों से मुक्त न हो जाए ...

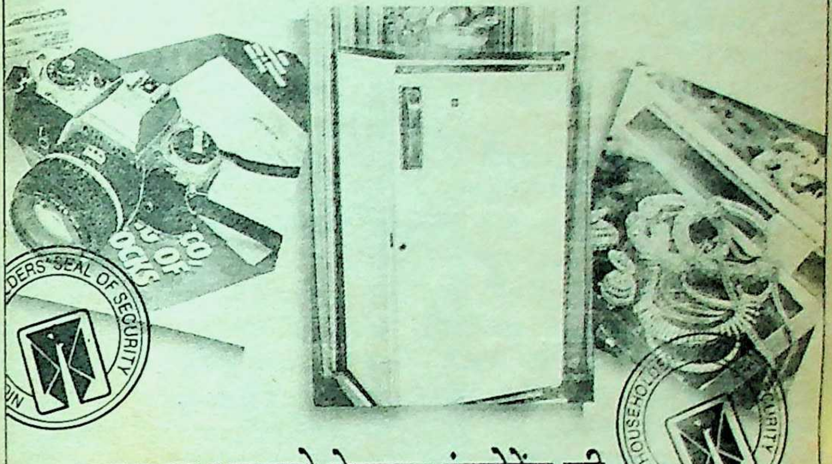

तब तक आपको नेशनल इंश्योरेंस की घरेलू सुरक्षा मुहर की आवश्यकता होगी।

आपका फ्रिज, आपके बहुमूल्य जेवरात और वह कैमरा जो आपकी छुट्टियों का बेहतरीन साथी है......

ये सारी चीजें आपने अपने गाढ़े पसीने की कमाई से खरीदी है। परन्तु क्या आपने इन सामानों तथा अन्य घरेलू सामानों व आपकी बिल्डिंग या परिसर को सेंधमारी, गृहवेधन, चोरी, अग्निकांड, दंगा, हड़ताल, तूफान, बाढ़, दुर्भावनापूर्ण कार्य तथा ऐसे कार्यों से होनेवाली हानि या क्षति से सुरक्षा के लिए बीमा कराने की बात भी सोची है? क्योंकि ये तो ऐसे खतरे हैं जिन पर आपका कोई नियंत्रण नहीं होता।

नेशनल इन्श्योरेन्स गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी के जरिए आपको प्रत्येक या इन सभी जोखिमों से एक सुनिश्चित वित्तीय सुरक्षा प्राप्त होती है। उपर्युक्त वर्गों के जोखिमों से सुरक्षा के अलावा इस पॉलिसी में आपको अन्य आठ वर्गों के चुनाव की सुविधा मिलती है:

सर्व जोखिम, प्लेट ग्लास, घरेलू सामानों का खराब हो जाना, टी.वी. पेडल साइकिल, सामान, व्यक्तिगत दुर्घटना और जन दायित्व। अपनी व्यक्तिगत जरूरत के अनुसार आप इनमें से कोई एक या इन सभी बीमा सुरक्षाओं का लाभ उठा सकते हैं।

अब भाग्य के भरोसे बैठे मत रहिए। अधिक जानकारी के लिए कूपन भर कर आज ही डाक द्वारा भेजिए।

कृपया मुझे यह जानकारी दीजिए कि मैं आपकी गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी के द्वारा किस प्रकार लाभान्वित हो सकता हूँ।

नाम ______________________

पता ______________________

____

व्यवसाय ______________________

गृहस्वामी (हाउसहोल्डर्स) पॉलिसी

हर घर के लिए आवश्यक सुरक्षा

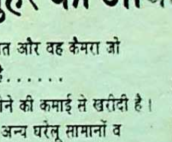

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी

(भारतीय साधारण बीमा निगम के अधीन एक संस्था)

3, मिडिलटन स्ट्रीट, कलकत्ता-700 071

CLARION C-NIC-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जा सकती है.

सुमन को उदास, चिंतित और बेहद उखड़ा हुआ देख उस ने पूछा, "क्या हुआ? पीयूष से झगड़ा तो नहीं कर लिया?"

"ओंह सौरभ, मैं बहुत दुखी और परेशान हूं. समझ में नहीं आता कि क्या करूं?" कह कर सुमन फूट पड़ी.

सौरभ ने सहानुभूति भरे स्वर में कारण पूछा तो सुमन ने उसे घटनाचक्र से अवगत करा दिया. फिर वह अस्फुट स्वर में बोली, "मैं जानती हूं, तुम मुझ से घृणा करने लगे हो."

"मूर्ख मत बनो, सुमन." सौरभ ने उस के बालों को सहलाते हुए कहा, "मैं तुम से क्यों घृणा करने लगा. हां, एक बात है. मैं तुम्हारे व्यवहार से आहत अवश्य हुआ था और इस के लिए पर्याप्त कारण थे."

"मैं स्वीकार करती हूं. जिस प्रकार का मैं ने तुम्हारे साथ व्यवहार किया, उस से आहत होना स्वाभाविक था. पर सौरभ, मुझे लगता है, हमारे और पीयूष के बीच प्रेम नहीं एक अधकचरा, अपरिपक्व सा आकर्षण मात्र था."

"तुम ठीक कहती हो, सुमन. जिस तरह का व्यवहार पीयूष ने किया, उस से स्पष्ट है कि वह तुम से प्रेम नहीं करता था. मेरे खयाल से तो तुम उसे भूल ही जाओ तो अच्छा होगा."

सुमन ने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ कर कहा, "मैं ने उसे पहले ही भुला दिया है."

"अब क्या इरादा है?"

सुमन सोच रही थी. 'अब सौरभ को वह अवसर मिला है, जब वह उसे अस्वीकृत कर अपने आहत होने का बदला ले सकता है. यदि ऐसा हुआ तो?' फिर भी उस ने साहस जुटा कर कह दिया, "सौरभ, मुझे अपने व्यवहार पर खेद है. मैं ने तुम्हें चोट पहुंचाई, इस के लिए क्षमा चाहती हूं."

"तो यह तुम्हारा अंतिम निर्णय है? भविष्य में तुम्हें अपने इस निर्णय पर खेद तो नहीं होगा?" सौरभ ने शांत स्वर में पूछा.

अनायास वह उठी. सौरभ के वक्ष पर अपना सिर टिका कर बोली, "आओ, हम लोग अतीत को भूल कर नई शुरुआत करें. हमारी सगाई कभी नहीं टूटेगी और हमारे प्रणयबंधन सदैव अटूट बने रहेंगे."

सौरभ संतुष्ट हो गया था. उस ने सुमन को आलिंगनबद्ध कर लिया. एक विषम चक्र से निकल कर सुमन किसी पक्षी की भांति मुक्त गगन में उड़ान भरने लगी थी. ●

नई दिल्ली में

- अंगरेजी की नवीनतम पुस्तकें
- हिंदी प्रकाशकों की विविध विषयों पर पुस्तकें
- सरिता, मुक्ता, गृहशोभा, चंपक, सुमन सौरभ, अलाइव व वूमंस ईरा का वितरण केंद्र
- दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन समूह के लिए विज्ञापन स्वीकार करने का केंद्र

दिल्ली बुक कंपनी

एम/ 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीको वह कर दिखाता है जिसके बारे में बाकी साबुन बोलने से भी कतराते हैं

नीको में है टी सी सी, जो नहाने के बाद आपके शरीर पर एक अनोखी सुरक्षित परत बन कर छा जाती है.

नीको अधिक तेलों को धो डालता है ताकि मुँहासें पैदा ही न हों.

नीको शरीर की दुर्गंध को दूर करता है, ताकि आप सबके बीच पूरे आत्मविश्वास से उठें-बैठें.

नीको उन कीटाणुओं को हटाता है, जो त्वचा में इन्फेक्शन पैदा करते हैं.

नीको धूल और अन्य पदार्थ हटाता है, ताकि त्वचा पर झाइयाँ न हों.

नीको से नहाइये, लोग आपकी त्वचा के बारे में बोलते नहीं थकेंगे.

नीको®

आपकी त्वचा का रखवाला साबुन.

PARKE-DAVIS

पार्क-डेविस (इंडिया) लिमिटेड, मार्की नाका,
बम्बई-४०० ०७२.
® पार्क-डेविस एंड कंपनी, यू.एस.ए. का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क
लाइसेंस उपयोगकर्ता
पार्क-डेविस (इंडिया) लिमिटेड

Contract PD.85.89. Hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी खूब रही

मेरे चाचाजी बहुत विनोदी स्वभाव के हैं. अकसर लोगों से मजाक करते रहते हैं.

एक दिन उन्होंने दफ्तर जाने की तैयारी करते हुए अपने नौकर से कहा, "कमर में बांधने वाली पेटी और कोट ला दो."

नौकर उन की बात न समझ सका और चाचीजी का पेटीकोट ले आया. यह देख कर हम सब हंस पड़े, क्योंकि चाचाजी को सवा सेर मिल गया था. —सुरेंद्र अग्रवाल

*

कुछ दिन पहले हम अपनी यूनिट से स्थानांतरित हो कर अंडमान जा रहे थे. रास्ते में पता लगा कि जहाज ने पानी में लंगर डाल दिया है.

हम में से एक व्यक्ति जहाज के कर्मचारियों के पास जा कर झगड़ने लगा, "हमारे खाने का समय हुआ तो आप ने 'लंगर' पानी में डाल दिया..."

हमारी फौज में रसोई को लंगर कहते हैं.

बाद में कर्मचारियों ने बताया कि यहां लंगर डालने का मतलब रसोई नहीं, जहाज रोकना है. —विजयकुमार पांडेय

*

मेरी बड़ी बहन की मंगनी के दोतीन दिन बाद उस के ससुराल वालों ने उस के लिए बड़ा प्यारा सा सूट का कपड़ा भेजा, वह मुझे बहुत पसंद आया.

मैं ने मां से पूछा, "मां, यदि दीदी की जगह, मैं यह सूट सिलवा लूं तो?"

मां कुछ कहतीं, उस से पहले ही दीदी बोल पड़ी, "अच्छा फिर शादी वाले दिन भी कह देना कि दीदी की जगह मैं चली जाऊं." —राजविंद्र विर्क

मैं जहां काम करता हूं, वहां दो बूढ़े व्यक्ति भी काम करते हैं. एक दिन मेरा एक फोन आने वाला था लेकिन मुझे अचानक कहीं जाना पड़ गया. इसलिए मैं अपने साथियों से यह कह कर चला गया कि मेरा फोन आए तो संदेश नोट कर लें.

शाम को लौटने पर जब मैं ने उन से फोन के बारे में पूछा तो एक बूढ़े ने कहा, "फोन तो आया था, काफी देर तक घंटी बजती रही."

"तो तुम ने फोन क्यों नहीं उठाया?"

"मैं फोन कैसे उठा सकता था. उस में तो ताला लगा है." —सतीश कुमार

*

मेरे एक मौसाजी बड़े ही कंजूस हैं. वह मेहमानों का स्वागत शक्कर खिला कर करते हैं.

एक बार मेरे चाचाजी अपने पांचछः दोस्तों के साथ उन के घर गए. मौसाजी ने अपनी आदत के अनुसार उन के सामने शक्कर और पानी रख दिया. मित्रों ने शक्कर के चंद दाने मुंह में डाल कर पानी पी लिया. बाद में चाचाजी ने शक्कर को पानी में मिलाया और यह कहते हुए पी गए, "कौन शक्कर मुंह में रख कर पटरपटर करें."

अब मौसाजी का चेहरा देखने लायक था. इस घटना के बाद से उन्होंने शक्कर और पानी से स्वागत सत्कार करना बंद कर दिया. —विजयकुमार मौर्य

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरज की बेटियां

सूरज की बेटियां
गर्दन भर पानी में नहा रही है!

जंगल की ओट छिपीं
टुकड़ियां गगन की
धूप लगी भदवारी
खुशबू चंदन की
आवर्तित लहरों में बहा रही हैं
सूरज की बेटियां!

डाल रहा है कोई
बादल का पर्दा
झमझम वर्षा!
उड़ा बर्फों का गर्दा!
लंगर में बंधी नाव दहा रही हैं.
सूरज की बेटियां!

कली रखे कैसे
मुसकान पर नियंत्रण
हवा आंज रही
तेज आंधी का अंजन!
फुनगू पर चिड़ियां चहचहा रही हैं!
सूरज की बेटियां!

—राजमणि राय 'मणि'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराले स्वाद गुणकारी आंवले के

आंवले की टाफी

सामग्री: 200 ग्राम आंवले, 300 ग्राम चीनी, 1 बड़ा चम्मच मक्खन, 250 ग्राम खोया, 20 ग्राम पनीर, 20 ग्राम कतरा हुआ काजू, 1 बड़ा चम्मच सूखा दूध, 1 छोटा चम्मच ब्रेड का चूरा, ½ छोटा चम्मच चाकलेट पाऊडर, 150 ग्राम चीनी का बूरा.

विधि: आंवलों को बारीकबारीक काट कर थोड़े से पानी में डाल दें. जब गल जाएं तो उसी पानी में चीनी डाल कर आंवलों को रसने और पकने दें. जब आंवले और चीनी एकरस हो जाएं और थोड़ा सा पानी रह जाए तो उन्हें ठंडे कर के पीस लें.

उधर आंच पर मोटे पैंदे की कड़ाही रखें. आंच धीमी रखें और मक्खन गरम करें. फिर खोया डालें, पनीर डालें और बूरा चीनी डालें. धीरेधीरे हिलाते जाएं. जब सब अच्छी तरह मिल जाए तो पिसा हुआ आंवला मिश्रण डाल दें. उसे अच्छी तरह मिला कर नीचे उतार लें. उतार कर चाकलेट पाऊडर और काजू मिला कर हिलाते रहें. अब मिश्रण से टाफियां बना लें. कुछ कागज में लपेट कर रखें और कुछ ऐसे ही पेश करें.

आंवले का खट्टा अचार

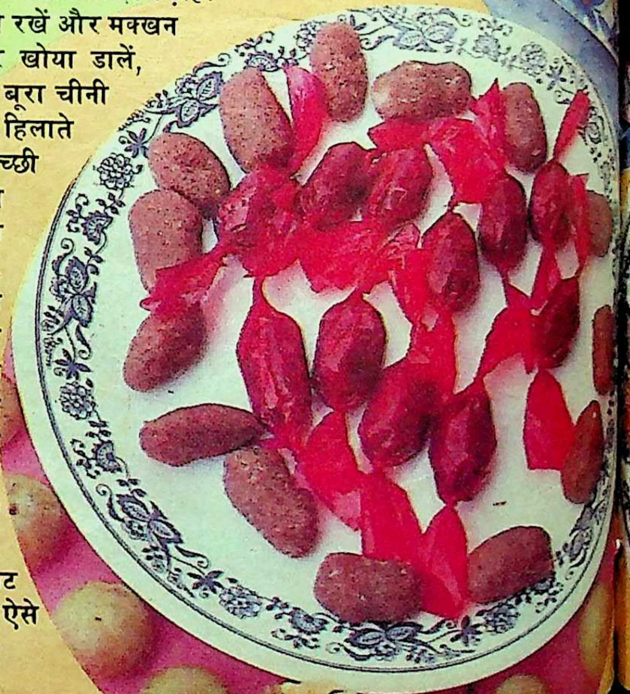
आंवले की टाफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंवले का खट्टा अचार

सामग्री : ½ किलो आंवला, 50 ग्राम लहसुन, 50 ग्राम अदरक, 50 ग्राम राई, 250 ग्राम तेल सरसों, 1 बड़ा चम्मच नमक, 1 छोटा चम्मच मिर्च, 1 छोटा चम्मच गरम मसाला, ½ छोटा चम्मच हलदी, ½ प्याला सिरका, 5 ग्राम गुड़, चुटकी भर हींग.

विधि : आंवलों धो कर कांटे से अच्छी तरह गोद लें. फिर नमक, मिर्च हलदी के साथ तेल में 10 मिनट के लिए पका लें. थोड़ा सा तेल रख लें.

अदरक, लहसुन छील कर, पीस कर बचे हुए तेल में भून लें. उस में पिसी हुई राई, हींग, गरम मसाला मिला कर रख दें. अब सिरके को पांच ग्राम गुड़ सहित उबाल कर ठंडा कर लें.

ठंडा होने पर सब को मिला कर मरतबान में भर लें. दो दिन धूप में रख कर मरतबान बंद कर के रख दें, यह अचार सेहत के लिए बहुत उपयोगी है.

आंवले के मीठे लच्छे

सामग्री: 1 किलो बनारसी आंवले, 10 ग्राम काला नमक, चुटकी भर सादा नमक, चुटकी भर हींग, 1 किलो चीनी, 1 बड़ा चम्मच नीबू रस, 250 ग्राम तेल.

विधि: आंवलों को धो कर गुठलियां निकाल लें. फिर उन को कद्दूकस कर लें. उधर कड़ाही में तेल डाल कर सारा कद्दूकस किया आंवला डाल कर बादामी होने तक सेकें. तेल निचोड़ कर रख लें. जब लच्छे तेल रहित अलगअलग हो जाएं तो उन में थोड़ा काला नमक डाल कर रख दें. आधे घंटे बाद उन में नीबू रस मिला कर अलग रख लें.

आंवले के मीठे लच्छे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब आग पर एक गिलास पानी चढ़ा कर उस में चीनी डाल कर चाशनी बना लें. चाशनी में लच्छे डाल दें. उस चाशनी में थोड़ी देर पकाने के बाद लच्छे अलग कर लें. और बनी हुई चाशनी किसी और काम में ले लें. लच्छे मरतबान में भर लें. प्रतिदिन दोतीन लच्छे खाने से स्वास्थ्य बिलकुल ठीक रहेगा.

आंवले का जैम

सामग्री: ½ किलो आंवले, 1 किलो चीनी, 250 ग्राम गुड़, 2 चम्मच शहद, ½ किलो सेब, 100 ग्राम अदरक, 1 नीबू का रस.

विधि: आंवलों को धो कर बारीक-बारीक काट कर आधा किलो चीनी में लपेट कर तीन दिन धूप में रखें. चौथे दिन धीमी आंच पर पकाएं. आधा घंटा पका कर छोड़ दें. अदरक छील कर काट कर नीबू रस में दो घंटे के लिए रख दें. फिर सेब छील कर बारीक कर आधा किलो चीनी में लपेट कर एक घंटा रख दें. एक घंटे बाद सेब और नीबू में डूबा हुआ अदरक पका लें. उसी चीनी में आधे घंटे के लिए सेब को थोड़ी देर रखने के पश्चात नर्म होने पर पत्थर पर थोड़ा रगड़ लें. या कैसे भी अच्छी तरह मथ लें. फिर शहद और गुड़ के साथ उसे अपने छोड़े हुए पानी में पकाते रहें. जब गाढ़ा हो जाए तो समझ लो तैयार हो गया.

आंवले का जैम

आंवले की कलियां

सामग्री : ½ किलो बनारसी आंवले, 1 किलो चीनी, 1 प्याला गुलाब जल, 5 ग्राम इलायची दाना, 1 छोटा चम्मच चूना खाने वाला, 3 चांदी के वरक.

विधि :आंवलों को दो दिन पानी में रख कर तीसरे दिन पानी बदल लें. फिर उस में चूना डाल दें. पूरे 24 घंटे चूने के

आंवले की कलियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

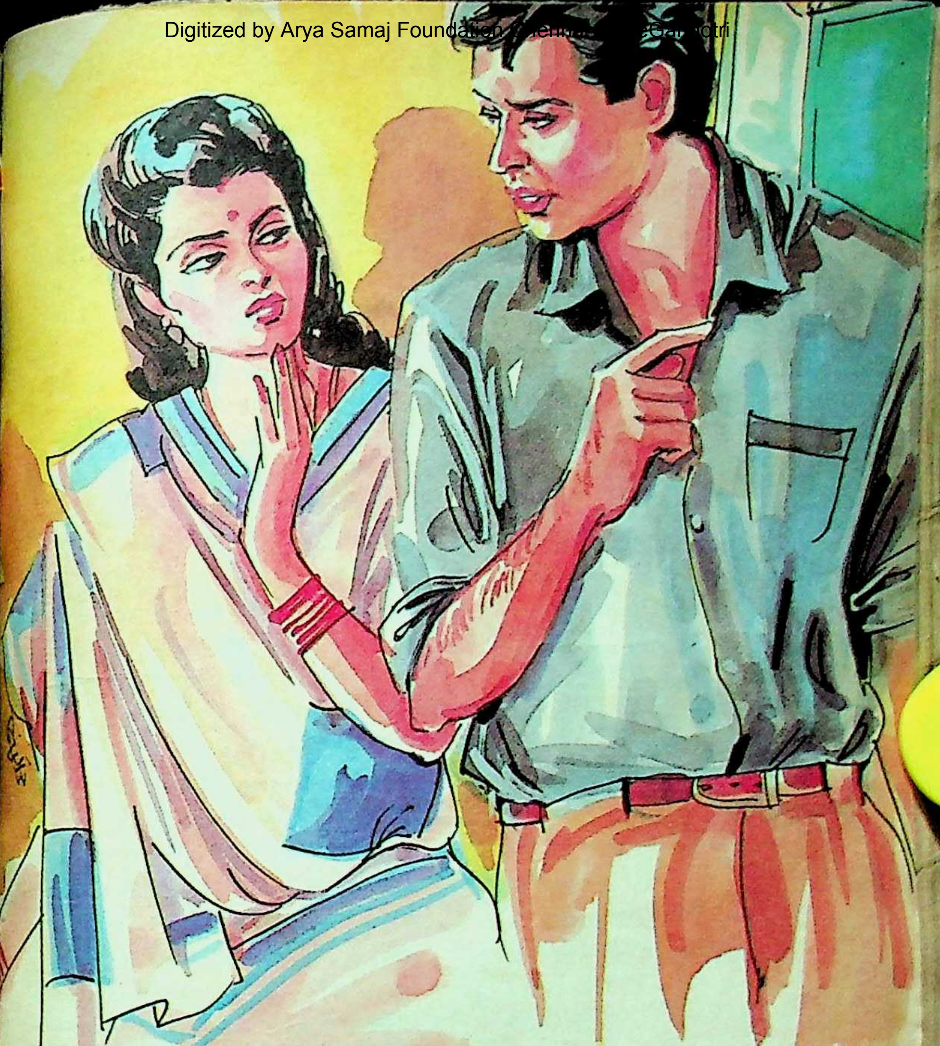

"लेने का ही ध्यान रहता है, ले कर क्या आई हो? एक कमीज और पेंट का सड़ियल सा कपड़ा..." राकेश ने चिढ़ कर कहा. ▲

"सोए नहीं अभी... आज देर हो गई..."

"रोज का ही काम है... प्रतीक्षा करते रहो... तुम जल्दी क्यों नहीं काम खत्म करती?"

".क्या करूं. रात को खाना देर से होता

जानेअनजाने ही मां ने सौम्य, सुंदर, सुशील, सेवाभावी अनिता के जीवन में कलह का सूत्रपात कर दिया लेकिन इरा के स्वार्थ ने जल्द ही उन की आंखें खोल दीं और वह पश्चात्ताप की अग्नि में जलने लगीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, फिर कभी कोई आ जाता है, कभी बाबूजी घूमने चले जाते हैं...''

''ठीक है, मुझे तुम्हारी व्यथाकथा नहीं सुननी, जो इच्छा हो करो. शाम को भी रसोई में घुसी रहोगी... जाने इतना कौन सा काम है.''

''नहीं, काम तो ज्यादा नहीं... पर सब अपने समय से करना चाहते हैं.''

''तो क्या तुम्हारे समय से करें?''

अनिता चुप हो गई. राकेश घर वालों के विषय में कुछ सुन भी नहीं सकता और उलाहना भी पत्नी को देता है.

राकेश की आंखों में नींद भरी थी. अनिता के उठने से नींद में विघ्न पड़ा. वह गुस्से से बोला, ''अभी से कहां जा रही हो? अभी तो इतनी रात है.''

''रात नहीं, चार बज रहे हैं. दिनेश भैया ने कहा था कि चार बजे जगा देना.'' मुसकराते हुए अनिता ने कहा.

''अलार्म घड़ी तो है, तुम क्यों अलार्म बनती हो? सो जाओ.''

''उन्हें चाय दे कर आऊंगी... आप भी लेंगे?''

''मेरा खयाल कैसे आ गया. तुम्हें तो हर समय दिनेश का ही खयाल रहता है,'' राकेश के स्वर में आक्रोश का पुट था.

''इतने परिश्रम से वह पढ़ाई कर रहे हैं. कहते हैं, रात को चाय मिल जाती है तो पढ़ाई में बड़ी मदद मिलती है. जानते हैं, और क्या कह रहे थे? कह रहे थे कि भाभी, मेरी पढ़ाई तो तुम्हारे ही कारण हो रही है. मैं ने तो कह दिया कि पढ़ने वाला स्वयं न पढ़े, परिश्रम न करे तो केवल चाय पीने से तो परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की जाती. मेरे विवेक भैया को ही देख लो, हम दोनों बहनें चाय बनाबना कर देती ही रहीं और वह मुशकिल से बी.ए. पास कर पाए. दिनेश भैया तो इतनी ऊंची इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं.''

कहते हुए अनिता उठ कर बाहर आ गई.

राकेश को बैंक में क्लर्क के पद पर नौकरी मिल गई थी. नौकरी पर लगे वर्ष भर हुआ था कि राकेश की मां विमला बहुत बीमार पड़ गई थी. बहन मधु तब हाई स्कूल की परीक्षा दे रही थी, छोटी मीनू आठवीं में थी. समस्या थी कि घर कौन संभाले? बेटी वालों को सुराग मिला. लंबी, गोरी, छरहरी, सुंदर नाकनक्श की अनिता से राकेश का शीघ्र ही ब्याह हो गया. आते ही बहू के हाथ में गृहस्थी सौंप कर विमला सुख से कराहने लगी. धीरेधीरे स्वस्थ भी हो गई. दो वर्ष बाद अनिता बेटी की मां बनी तो विमला का काम पोती को खिलाना हो गया.

दिनेश मेधावी छात्र था. राकेश की नौकरी से घर में तंगी न रही थी, इसलिए उस की पढ़ाई निर्विघ्न होती रही. अनिता को चौथे वर्ष पुत्र हुआ. घर का कुछ काम, कुछ खर्च और बढ़ा पर अब सब के मन में पुलक थी, आशा थी कि दिनेश इंजीनियर बन जाएगा तो उन सब का जीवन स्तर और सुधर जाएगा.

तीनचार वर्ष बाद दिनेश का विवाह भी हो गया. इरा के गृहप्रवेश के साथ घर में हर्षउल्लास का झोंका पूर्ण वेग से आया. नववधू अपने साथ बहुत सा दहेज लाई थी. घर में सामान रखने के लिए भी स्थान कम पड़ रहा था. इन सब तामझाम में सब से प्रसन्न थी अनिता. यद्यपि तुलनात्मक विवेचना से यह स्पष्ट हो गया था कि राकेश की ससुराल मामूली थी. दहेज में उसे कुछ खास नहीं मिला था. लेकिन सरलसीधी अनिता के मन में देवरानी के प्रति किसी तरह का ईर्ष्या भाव न था.

रिश्ता तय होते समय अनिता ने जोर दे कर कहा था, ''अम्मांजी, इरा में सब गुण तो हैं... जरा छोटी है तो क्या हुआ?''

''भाभी, वह सांवली भी तो है.'' ननद बोली थी.

''पढ़तीलिखती रही न, आराम से बैठेगी तो रंग निखर आएगा. वैसे तो हर किसी में कोई न कोई कमी तो होती ही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तुम्हारे ससुर दाल के मसालेदार वड़े खाने को कह रहे थे, सो दाल भिगो देना.'' विमला ने अनिता ने कहा.

घर कितना अच्छा है, उस के पिताजी कितने ऊंचे पद पर हैं.''

सास से धीरेधीरे अनिता का किया गया अनुरोध ससुर सुन रहे थे. कुछ दिनों से ऊहापोह में पड़े थे कि रिश्ता स्वीकार करें या नहीं. दिनेश ने लड़की देख ली थी, पर पिता पर निर्णय छोड़ दिया. पिता को यही भय था कि दिनेश उन्हें दोष न दे कि दहेज के प्रलोभन में लड़की पर ध्यान नहीं दिया गया.

विमला ने हंस कर कहा, ''अनिता को तो इरा बहुत पसंद है.''

''तो हां कर देते हैं... अनिता को ही तो साथ निभाना है.'' ससुर बोले.

''जी हां, मुझे तो पसंद है. दिनेश भैया से भी पूछ लिया जाए.'' अनिता ने कहा.

''उस ने तो हम लोगों पर ही अंतिम निर्णय छोड़ दिया है, अब तुम्हारी पसंद हम सब की पसंद मानी जाएगी.'' सास ने मुसकराते हुए कहा.

सास और जेठानी गोद भराई करने गईं, तब ही अनिता मुग्ध हो उठी थी. उसे लगा, जैसे घर भर उसी की खातिर में जुटा हो. इरा की मां ने तो चलतेचलते उसे अंक में भर लिया था, ''तुम इरा जैसी ही हो मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए. साथसाथ आती रहना तब ही हमें खुशी होगी. हम ने तो इरा के लिए बहन जैसी जेठानी पसंद की है."

धूमधाम से दिनेश का विवाह हुआ था. अनिता दिनरात खटती रहती थी. घर मेहमानों से भरने लगा था. सुयोग्य बेटे का बड़े घर में ब्याह जो हो रहा था.

दिनेश की शादी के कुछ दिन बाद ही अनिता के दोनों बच्चे बीमार पड़ गए. महरी भी सातआठ दिनों से नहीं आ रही थी. बच्चों की देखभाल करने के साथसाथ अनिता को घर का सारा काम भी करना पड़ता था, क्योंकि इरा हमेशा अपने कमरे का द्वार बंद किए लेटी रहती थी.

सुबह पांच बजे पति से हाथ छुड़ा कर चली आई थी अनिता, तब से काम में ही व्यस्त रही.

"कुछ काम इरा के लिए भी छोड़ दो." पति ने गुस्से से कहा.

"अभी नईनवेली है, क्या कहेगी?" अनिता ने हंस कर कहा.

"तुम भी तो कभी नईनवेली थी. कभी ऐसे पड़ी रही थी... चार महीने हो रहे हैं उस के विवाह को हुए."

"तब अम्मांजी कितना काम करती थीं, फिर वह रहती ही कहां है हमारे यहां."

चार महीने में इरा 15-20 दिन से अधिक ससुराल में नहीं रही थी. किसी न किसी बहाने मायके से बुलावा आ ही जाता.

"तुम को तो मायके जाने पर भी पाबंदी लगी रहती थी." पति ने आक्रोश भरे स्वर में अनिता से कहा.

अनिता का मायका तो शहर में ही था. फिर भी कभी महीने दो महीने पर त्योहार इत्यादि पर ही जाती. कितना मन होता कि कभी निर्श्चितता से चौबीस घंटे रह ले. चाचीताई कहतीं भी कि "लड़की की नींद तो मायके में ही पूरी होती है, तू तो बिटिया ससुराल की हो कर रह गई."

इरा की आवभगत होती रही, आदरमान बढ़ता रहा. विमला ने यह न सोचा कि अनिता भी उन की बहू है, अतः वे दोनों को एक सी नजर से देखें. लेकिन इरा का ऊंचा घराना उन पर हावी था.

इरा की चचेरी बहन का विवाह था. विमला ने उस के लिए कीमती साड़ी नग उपहार दे कर दिनेश को भेजा. इरा तो पहले ही चली गई थी. इसी समय अनिता के भतीजा हुआ. उसे भी भतीजे को बधाई का सामान ले जाना था, पर वह बहुत मामूली स्तर पर हुआ. विमला और घर भर के लोगों को नामकरण पर बुलाया गया. विमला को साड़ी दी गई. घर लौट कर वह अपनी साड़ी उलटपलट कर देख ही रही थी कि बेटी ने पूछ लिया, "क्या देख रही हो, अम्मां, साड़ी तो अच्छी है."

"हां, ठीक ही है. अब इरा के घर जैसी तो नहीं हो सकती न."

अनिता ने सास की बात सुनी, पर कुछ कहा नहीं.

छोटा देवर मुकेश कालिज जाने को तैयार था. अनिता अपनी बेटी को स्कूल भेजने के लिए नहला रही थी. विमला ने आवाज दी, "अनिता, मुकेश के नाश्ते का ध्यान नहीं, क्या कर रही हो?"

"जी, बिटिया को नहला रही हूं."

"कौन सा काम पहले जरूरी है, क्या यह भी मैं ही बताऊंगी. देख रही हूं कि इधर काम में मन नहीं लगता तुम्हारा. इरा की बराबरी करने लगी हो. वह बड़े बाप की बेटी है, बड़े आदमी की पत्नी."

अनिता के मन को झटका लगा, किंतु स्वभाव के अनुसार वह चुप ही रही. किंतु राकेश को मां की बात लग गई. कलह का सूत्रपात तो स्वयं मां ही कर रही थीं. राकेश को भाई से ईर्ष्या होने लगी. उसे स्वयं से, अनिता से, परिवारजनों से घृणा होने लगी. अब वह न घर में सब के बीच हंसताबोलता, न सब का ध्यान रखता.

पहलेपहल अनिता की भाभी अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टे को ले कर आई थी. अनिता ने उसे कट ने के लिए राकेश से रुपयों की मांग की.

राकेश ने चिढ़ कर कहा, "देने का ही ध्यान रहता है, ले कर क्या आई हो? एक कमीज और पैंट का सड़ियल सा कपड़ा. दिनेश की अलमारियां भर गई हैं... पूरा खर्च ही ससुराल वालों ने उठा लिया है."

अनिता पति के मुख से ऐसे शब्द सुन कर सन्न रह गई.

"पहले ही सोचना था न. ससुराल देख कर शादी करते." अनिता को अपने घर वालों के आगे राकेश के बोल असह्य हो उठे थे. फिर भी उस ने दिखावा किया कि उस की भाभी ने कुछ सुना ही नहीं है, किंतु उन के जाने पर उस ने चुप रह कर अपना आक्रोश प्रकट करना चाहा.

राकेश को कुछ पूछने पर उत्तर न मिला तो उस ने क्रोध के वशीभूत अनिता पर हाथ उठा दिया. राकेश अपने को हीन समझ कर अनिता पर आक्रोश उतारने लगा. मारपीट रोज का नियम बनता गया.

इरा 15-20 दिनों से आई हुई थी. जब अनिता पर राकेश का हाथ उठता तो वह अपने पति दिनेश के पास सिमट जाती, "हाय, मुझे तो डर लग रहा है कहीं तुम भी..."

"धत पगली... भैया की संगति ही ऐसी है, मामूली लोगों की... और भाभी रहती भी तो कैसे फूहड़पने से है."

सास भी इरा को तिनका हिलाने को न कहती. उन्हें शायद स्वयं संकोच होता कि कहीं इरा को कोई काम कहें और वह उलट कर कह दे कि मैं नहीं कर सकती, तो उन की क्या इज्जत रह जाएगी.

"तुम यहां से बदली करवा लो. पिताजी की ऊंची पहुंच है, वह करवा देंगे," एक दिन इरा ने पति से कहा.

"मैं भी इस गंदी जगह से निकलना चाहता हूं. किसी बहाने से कह दो तो अच्छा ही होगा."

"सच, बहाना तो अभी गढ़ लेंगे."

पति से मार खाती, सास से तानें सुनती

कामिनी

मेघ-वन में दामिनी अच्छी नहीं लगती.
नदी, सागर-कामिनी अच्छी नहीं लगती.
चांदनी ने दूध से धोयानिखारा, पर
आप के बिन यामिनी अच्छी नहीं लगती.
—डा. अनंतराम मिश्र 'अनंत'

अनिता की फूहड़ गृहस्थी से अलग जाती इरा बहुत प्रसन्न थी.

अनिता, जिस ने अनेकानेक कल्पित गुणों का बखान कर इरा को देवरानी के पद पर बैठाया था, सूनीसूनी आंखों से इरा और उस के सामान को जाते देखती रही. जिस समय ट्रक आया था, इरा सास व ननद को सिनेमाहाल में बैठा आई थी और खुद बहाना बना कर लौट आई थी.

"बारबार सामान ले जाने में मुशकिल होगी," इरा ने दिनेश को परामर्श दिया, "एक साथ ही भेज दो न... अभी तो पिताजी ने अपना विश्वस्त चपरासी भेज रखा है."

विमला के आने पर इरा ने कहा, "अम्मांजी ट्रक आ गया था तो फ्रिज, सोफा, पलंग वगैरह भेज दिए हैं."

"बहुत अच्छा किया है, बहू." विमला गद्गद् हो उठी थीं.

एक दिन विमला ने सवेरे ही अनिता से कहा था, "तुम्हारे ससुर दाल के मसालेदार बड़े खाने को कह रहे थे, सो दाल भिगो देना."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शाम को जैसे ही अनिता दाल पीसने को निकली तो पड़ोसिन चाची आ गई. उन को चाय इत्यादि पिलाने में देर हो गई. उधर बाबूजी के आने का समय हो रहा था.

अनिता दाल पीसने बैठी तो एकाएक कह उठी, "अम्मांजी, एक मिक्सी होती तो चटपट दाल पिस जाती."

"वह क्या चीज है?" विमला ने ठीक से सुना नहीं था.

"मिक्सी... अम्मांजी, बिजली से पीसने वाली... जैसी इरा के पास है, उस में तो मिनट भर में सब पिस जाता है."

"इरा की चीजों का क्या कहना, चुनचुन कर मांबाप ने सामान दिया है. तुम पीस कर देख लो, अगर चलानी आती हो... कभी चलाई है?"

"हां, भाभी ने ली है न, वहीं चला कर देखी थी."

"तो यहां भी उतार लो. मैं ने निकाली, जैसे तुम ने निकाली... उस में क्या पूछना."

"जी, लेकिन वह यहां तो नहीं है." अनिता ने मिक्सी ढूंढ़ते हुए कहा.

"है कैसे नहीं? ऊपर भंडार में दो तल्ले पर उस का सब सामान रखा है."

लेकिन शीघ्र ही विमला को पता चल गया कि दहेज में आई चीजों का अंबार उड़ चुका था. उन के पास कुछ नहीं रह गया था. वह सोचने लगीं, "नाम इतना हुआ, लेकिन उन्हें मिला क्या?"

विमला को ज्यादा दुख तो यह था कि दिनेश और इरा ने उन से कुछ पूछा भी नहीं. उन्होंने तो स्वयं कहा था कि जो सामान ले जाना चाहो ले जाओ, तब इरा ने ही कहा था कि बस, जरूरत की चीजें ले लेंगे.

विमला का दुख अनिता से छिपा न रहा, पर वह चुपचाप दाल पीसती रही.

थोड़ी देर बाद ही अचानक दिनेश और इरा आ गए. विमला रसोई से उठ आई. उन का हालचाल पूछा. फिर रसोई में आ कर अनिता से कहा, "जाओ, पूछ आओ, चाय अभी पिएगा या नहाधो कर?"

अनिता ने वड़े कड़ाही में डाले ही थे, उस की सहमीसहमी चीख विमला के ... को भेद गई.

"दिन भर क्या करती रहती हो? ... कमरा भी तुम साफ नहीं रख सकतीं. ... भर का कूड़ा बिस्तर पर पड़ा है. यह ... कमरा है?" राकेश झल्लाया था.

चीख सुन कर विमला अनिता के कमरे में पहुंची, "क्या हुआ, राकेश? ... चिल्ला क्यों रहे हो? अनिता को मारा है तुमने?

"तो और क्या करूं? यह घर है? ... को तो इस नालायक को मेरे गले से बांधने की जल्दी पड़ी थी. मेरी पसंद थोड़े ही देखी थी." राकेश गुस्से से चीखा.

"नालायक तुम हो.. तुम्हारे भाई ... हैं. उन्हें क्यों नहीं कुछ कहते, ... उस की सारे दिन की मेहनत पर पानी फेरते रहते हैं और तुम अपनेआप क्या करते हो? अपने उतारे कपड़े तक फेंक देते हो. नाश्ता करेंगे पलंग पर बैठ कर. जूठे बरतन तक उठा कर नहीं रखते, न कभी सफाई ... झाड़पोंछ... वह अकेले कितना करेगी?"

"क्या? अब मैं यह सब करूंगा?"

"हां, करना ही होगा. देखते नहीं दिनेश किस तरह इरा के साथ लगा रहता है. मुफ्त में नौकरानी मिली हुई है. तुम्हें उस पर हाथ उठाते शर्म नहीं आती. भले घरों में कभी मारपीट होते देखी है?"

सहसा राकेश को दिनेश के शयनकक्ष की याद आई. सलीके से बिछा हुआ बिस्तर और सजी हुई शृंगारमेज, करीने से रखी पत्रिकाएं, दीवारों पर लगे चित्र और दोनों की हंसती हुई तसवीरें...

राकेश ने चिल्ला कर कहा, "मारपीट के लायक हो तो मार पड़ेगी ही. एक इरा है."

"इरा की क्या बराबरी, सब कुछ सहेज कर रखती है." पहले का समय होता तो विमला ने यही कहा होता, पर इस समय तो मन को बहुत कुछ कोंच रहा था.

विमला भी तो पति के साथ कितने ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्तन को नुकसान पहुँचे और खुद ठीक भी हो जाए, क्या यह मुमकिन है?

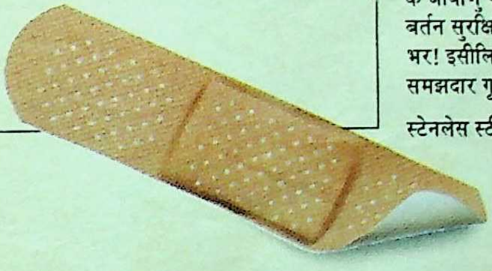

जी हाँ! ऐसा हमेशा होता रहा है. आपके रसोई घर में... आपके स्टेनलेस स्टील के बर्तनों के साथ.

स्टेनलेस स्टील पर एक सुरक्षा परत होती है, जो न केवल टिकाऊ है बल्कि अपने आप बनती भी रहती है. यानि जब आपके बर्तन में कोई खरोंच लगने से इस परत को नुकसान पहुँचता है तो हवा के हल्के स्पर्श भर से यह परत फिर अपने आप बन जाती है. और आपके बर्तन हमेशा सुरक्षित रहते हैं, चमकदार बने रहते हैं. न ज़ंग लगने का डर, न इसमें कोई दाग या धब्बा लगे. और न ही इसमें किसी किस्म के जीवाणु पनप सकते हैं. आपके बर्तन सुरक्षित और सुन्दर, जीवन भर! इसीलिए तो स्टेनलेस स्टील हर समझदार गृहिणी की पहली पसन्द है.

स्टेनलेस स्टील. यह हर आधुनिक रसोई घर की शोभा बढ़ाता है. और हर उस जगह प्रयोग किया जाता है जहाँ स्वच्छता और ताज़गी को महत्व दिया जाता है—बड़े-बड़े पांच सितारा होटलों के रसोईघरों में, डेयरी, फूड प्रोसेसिंग और डिस्टिलरी जैसे उद्योगों में.

स्टेनलेस स्टील. यह स्वच्छ है... यह सुन्दर है... यह मज़बूत है. आपके रसोई घर की शान बढ़ाता है.

ULKA-D-ISSDA-895-3-HIN

स्टेनलेस स्टील

उचित • उज्जवल • उत्तम

Released by Indian Stainless Steel Development Association
No. 7 Shopping Centre, Block B-6, Safdarjung Enclave, New Delhi-110 029.
Founder members : Bihar Alloy, Calcutta ★ FACOR, Nagpur ★ G.M. Mittal Stainless, Indore ★ Jindal Strips, Delhi ★ Mukand Ltd., Bombay ★ Panchmahal Steel, Baroda ★ Rathi Alloys, Delhi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झूठ

झूठ अपनी मौत मारा जाता है. उस की अपनी कोई शक्ति नहीं होती. विरोध पर वह फलताफूलता है. —महात्मा गांधी

अरमानों से इरा के घर गई थी. लेकिन वहां जा कर स्वयं को कितना हीन अनुभव किया था उन्होंने.

एक दिन इरा के कमरे में उन्होंने कपड़े बदल लिए थे. जल्दी में धोती पलंग पर ही छोड़ दी थी, क्योंकि तह कर के रखने की आदत ही नहीं रह गई थी.

उसी समय इरा ने टोक दिया था, "अम्मांजी, धोती उठा लीजिए यह आते ही लेटते हैं."

बैठक की मेज पर विमला ने गिलास छोड़ दिया था तो इरा ने बिगड़ कर कहा था, "इन के मित्र आते रहते हैं, आप ने गिलास यहां रख दिया."

दो दिन तो इरा ने उन के साथ घर पर रहने की कोशिश की थी पर तीसरे दिन से वह शाम होते ही निकल जाती, "अम्मांजी, आप जरा रसोई में देख लीजिएगा, बाबूजी को जल्दी खाना चाहिए न. हमें तो जरा पार्टी में जाना है."

'दूसरी तरफ बेचारी अनिता दिन भर काम में लगी रहती है. देवर, ननद इस की मेहनत पर पानी फेरते रहते हैं और मैं मूक दर्शक की तरह देखती रहती हूं. नहीं, मैं तो इस नाटक की सूत्रधार हूं.' विमला सोचती रही.

राकेश एक भद्दी सी गाली दे कर अनीता पर भरपूर तमाचे का वार करने जा ही रहा था कि विमला ने बेटे को धक्का दे कर अनिता को अपनी ओर खींच लिया और राकेश को घूरती हुई बोली, "बेशर्म, नीच."

राकेश एकाएक सकते में आ गया. अम्मां ने तो पहले कभी उसे ऐसे नहीं कहा था. वह गुस्से से बोला, "आप को इस से क्या! मैं मारूं चाहे..."

"क्या मतलब? मैं अपनी निर्दोष बहू को पिटते देखूं? हाय, क्या मैं इसी लिए इसे ब्याह कर लाई थी. इतनी सुशील बहू मिली, उसे मैं पिटते देखूंगी?"

"इस फूहड़ गंवार की आप इतनी वकालत क्यों कर रही हैं जिस के कारण घर कूड़ाघर बना रहता है."

"पहले अपने को और अपने घर वालों को देखो. वह बेचारी तो सारा दिन घर संभालने में ही लगी रहती है. अगर अब तू ने उसे फूल की छड़ी से भी छुआ तो मुझ से बुरा कोई न होगा."

रात भर विमला करवटें बदलती रही. अनिता का सौम्य, गंभीर स्वभाव, निश्छलता उन पर हावी हो उठी थी. वह बारबार इरा से अनिता की तुलना करतीं, उसे कहीं ऊंचा पातीं. सोतेसोते उन्हें अनिता द्वारा अनजाने प्रकट की गई छोटी सी चाह याद आई.

उन्हें ध्यान आया कि डाकखाने में उन के कुछ रुपए जमा हैं.

दूसरे दिन विमला ने किसी से कुछ न कह कर अपने दो हजार रुपए निकाले और बाजार में पहुंची, जहां बिजली का सामान मिलता था.

"क्या चाहिए, मांजी?"

"बात यह है कि... मुझे एक मिक्सी चाहिए.. अच्छी सी..."

"जी हां, देखिए." दुकानदार ने कई तरह की मिक्सियां उन के गुणगान के साथ खोलखोल कर दिखाईं.

विमला ने कभी बिजली का सामान खरीदा न था, जानती भी नहीं थीं, इसलिए कुछ सोचने लगीं.

"जी, कौन सी पसंद आई?"

"कोई सी. भी... अच्छी वाली चाहिए... जो इन में सब से अच्छी हो."

"जी, बहुत अच्छा, क्या लड़की को दहेज में देनी है?"

"नहीं, लड़की को नहीं, बहू को." विमला ने स्नेह और मान से कहा. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

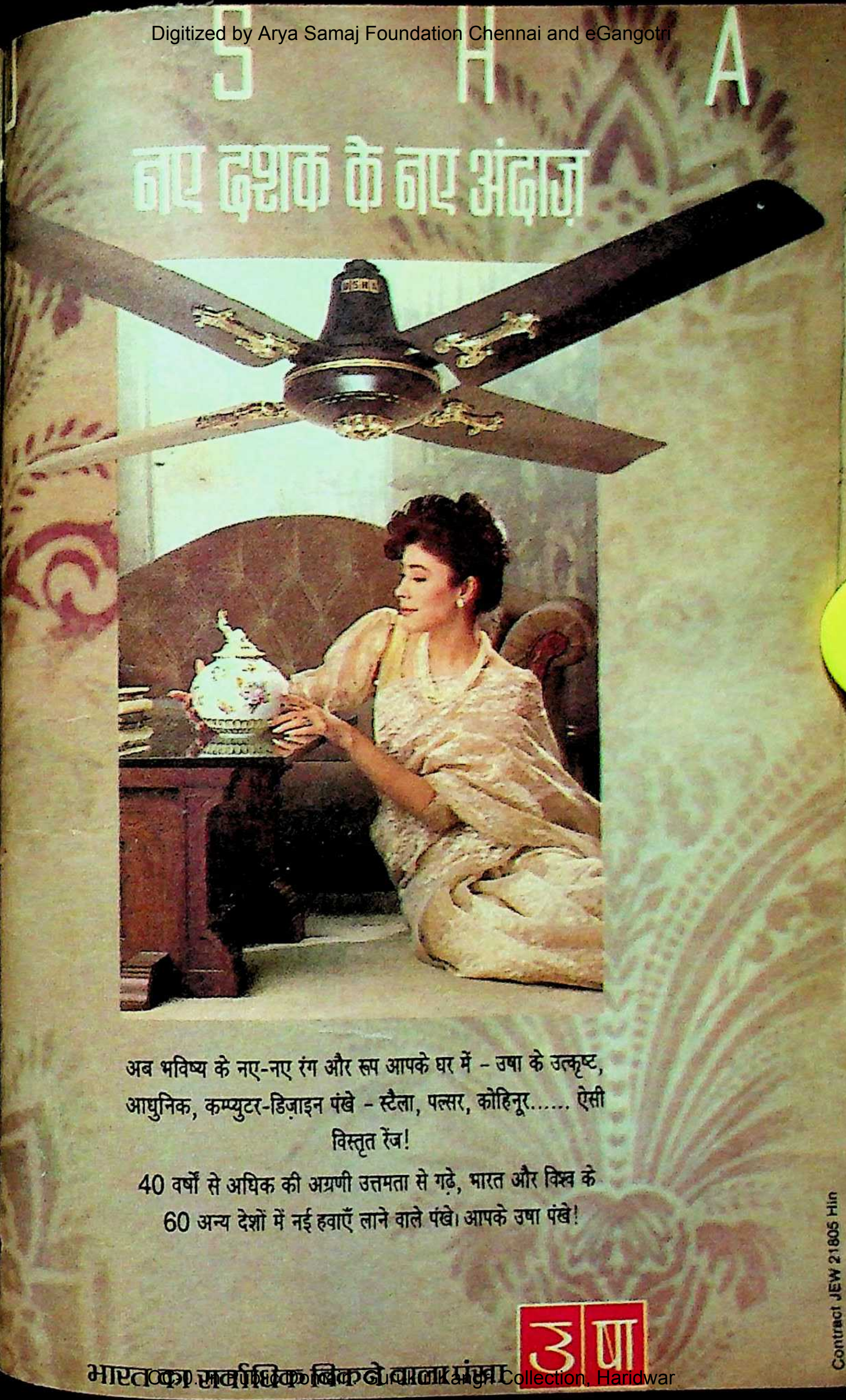

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

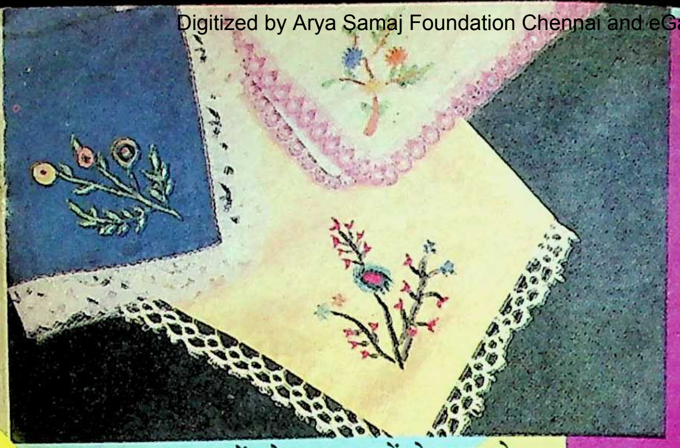

बुलियन स्टिच के तीन नमूने

इन नमूनों को आप बच्चों के फ्राक के ऊपर के भाग में, कालर में अथवा घेर में कहीं भी काढ़ सकती हैं. ये सभी नमूने बुलियन स्टिच से काढ़े गए हैं.

बुलियन स्टिच :

कपड़े में से सूई निकाल कर उल्टी घुमाएं और कपड़े की चारपांच तार छोड़ कर सूई वहीं से निकालें जहां से पहले निकाली थी. सूई को पूरी न निकाल कर आधी निकालें. धागे को सूई के ऊपर लगभग 12 बार लपेटें. उल्टे हाथ के अंगूठे से लिपटे हुए धागे को दबा कर सूई को बाहर खींच लें. टांके को अंगूठे से दबाए रहें और सूई को घुमा कर उसी जगह से निकालें जहां से पहले निकाली थी. धागे को थोड़ा खींच लें, जिस से टांका अपने स्थान पर टिका रहे.

नीले रूमाल में बने डिजाइन में फू[illegible] बनाने के लिए अलगअलग रंग का प्र[illegible] करते हुए बुलियन स्टिच का घेरा एक के [illegible] एक बनाया गया है. सफेद रूमाल के फूलों [illegible] बुलियन स्टिच की छोटीछोटी लाइन बना[illegible] तैयार किया गया है. पीले कपड़े के फू[illegible] काले रंग के बुलियन स्टिच की छोटी[illegible] लाइन से बीच में घेरा बनाया गया है. फि[illegible] रंगों से लंबी लाइनें पासपास बनाते हुए [illegible] का आकार दिया गया है. बुलियन स्टि[illegible] बनाने में देर तो लगती है, लेकिन इस से [illegible] नमूने बहुत सुंदर लगते हैं.

डंडी, पत्ती व फूल की कलियां [illegible] व साटन स्टिच से बनाई गई हैं.–चित्रा [illegible]

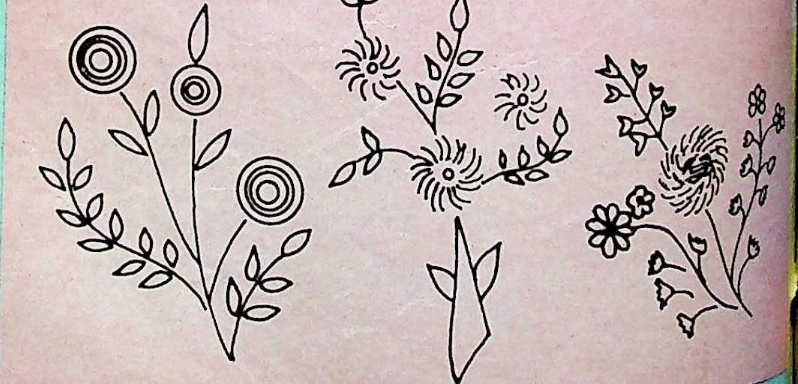

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति की बुरी आदतें एकबारगी कह सुन कर नहीं बदली जा सकती जबकि प्यार का आधार ले कर कही हर बात सुनने वाले पर प्रभाव भी डालती है. अतः पति को तकरार से नहीं, प्यार से सही रास्ते पर लाएं.

अपने पति को कैसे संवारें?

लेख ● सुरभि पाण्डेय

मधुमास मनाने खजुराहो आई स्मिता पति के व्यवहार से पांचवें दिन ही घबरा गई. जिस रोज आदित्य बंबई से चले थे, उस रोज भी स्मिता के एकदो बार कहने के बाद भी वह नहाए नहीं थे और खजुराहो आ कर भी नहीं नहाए.

स्मिता हतप्रभ थी, सितंबर के महीने में आदित्य बिना नहाए लगभग सप्ताह भर कैसे रह लिए. उस ने झिझकते हुए दोचार बार आग्रह भी किया, लेकिन आदित्य ने स्नान नहीं किया. वह जितने दिन खजुराहो रहे, बराबर 'ड्राईक्लीन' करते रहे यानी खुशबूदार शैंपू से सिर्फ सिर धो कर 'तरोताजा' होते रहे और उधर नईनवेली स्मिता भीतर ही भीतर कुढ़ती रही.

मधुमास के समय तो नहीं, किंतु बंबई लौटते ही स्मिता ने कमर कस ली. आदित्य आखिर नहाने के प्रति इतने उदासीन क्यों हैं? उस ने जानने की चेष्टा की.

"बंबई के नमकीन मौसम में आप को क्या नहाने की सचमुच जरूरत महसूस नहीं होती?" उस ने आदित्य से पूछा तो वह ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसकरा दिए, जैसे किसी दूसरे व्यक्ति के विषय में बात चल रही हो.

किंतु समझदार स्मिता ने हार नहीं मानी. उस ने नहाने का आलाप आदित्य के सामने गाना नहीं छोड़ा. यही नहीं, स्नान और उस कीं आवश्यकता पर वह तब तक लगातार बोलती रही जब तक कि आदित्य को नियमित स्नान की आदत नहीं पड़ गई.

विवाह के दो साल बाद भी स्मिता को अपना वह वाक्य याद है जो वह कभीकभी आदित्य के स्नानघर से निकलते समय दोहराती है, "सच, नहा कर आप कितने तरोताजा लगते हैं."

पत्नी द्वारा मुग्धभाव से की गई प्रशंसा आदित्य को अब भाने लगी है. वह चाहते हैं कि पत्नी के मुंह से ये शब्द निकलें. इस के अलावा नियमित स्नान अब उन की आदत भी बन गया है. स्नान के कारण शरीर और मन में पैदा होने वाली ताजगी ने आदित्य को नियमित स्नान की आदत डलवा दी है. लेकिन यह सही है कि नहाने के लिए टोकाटाकी स्मिता ने ही की है. मीठे ढंग से उस ने हर सुबह उन से इसरार किया है और अब भी करती है, "चलिए, जब तक आप नहाइए, मैं नाश्ता बनाती हूं."

आदित्य की तरह से बहुत से लोग होते हैं, जिन्हें और तो सब करना अच्छा लगता है, लेकिन नहाना नहीं, जबकि सजनेसंवरने से भी ज्यादा जरूरी नहाना है.

कटु शब्दों का प्रयोग न करें.

"आप कितने गंदे हैं. आप को शर्म नहीं आती, बिना नहाए सूटटाई लाद कर चल देते हैं? आप को अपनेआप से घिन नहीं आती? मुझे तो आप के शरीर में से पसीने की बदबू आती है." जैसे चुभते हुए वाक्य किसी भी पत्नी को अपने नहाने के आलसी पति से नहीं कहने चाहिए.

समझदारी इसी में है कि स्मिता की तरह से प्यार और मनुहार से यह आदत पति में डाली जाए. अब स्मिता के पति आदित्य का हाल यह है कि स्मिता कभी मौसम, अस्वस्थतावश या अन्य किसी कारण से नहाने से भले चूक जाए, किंतु वह नहीं चूक सकते हैं. अगर सुबहसवेरे भी कहीं जाना होगा तो बाकायदा स्नान कर के ही निकलेंगे. मतलब यह कि उन की एक बुरी आदत छूट गई है. दैनिक स्नान कब उन की नियमित दिनचर्या में शामिल हो गया है, वह खुद नहीं जानते.

वास्तव में पत्नी अगर समझदारी से काम ले तो पति की ऐसी अनेक आदतों को बदला जा सकता है. सीधेसीधे तो नहीं, किंतु संवार कर बात कहने से न केवल दूसरा व्यक्ति समझ लेता है, बल्कि उस के अनुकूल व्यवहार भी करना चाहता है. आदत भी एक मनोविकार है, जो स्थिति विशेष में पैदा हो जाता है और बाद में एक दृढ़ता के साथ मन में पैठ जाता है.

एकबारगी ही किसी आदत को बदलना संभव नहीं है. अतः धीरेधीरे ही इस दिशा में प्रयास किया जाना चाहिए. एकदम उठ कर बात पटक देने से संबंधों में तो कटुता आती ही है, उन आदतों में भी बदलाव नहीं आता जो गलत होती हैं. पति की बुरी आदतें एकबारगी कहसुन कर नहीं बदली जा सकतीं, पत्नी को यह ध्यान रखना चाहिए. प्यार का आधार ले कर कही हर बात का मूल्य होता है और वह सुनने वाले पर प्रभाव भी डालती है, जबकि तकरार से कोई नतीजा नहीं निकलता है.

राकेश को एक जमाने में 'शेव' न करने की जैसे सनक ही थी. विवाह के बाद भी जब उस का यही हाल बना रहा तो रंजना ने पहले प्यार से और फिर मीठी फटकार से डांटना शुरू किया और जब इस से भी कोई बात न बनी तो उस ने दूसरा ही रास्ता खोज लिया. जो राकेश दो महीने में दो बार 'शेव' बना कर पूरे दिनों आड़ीतिरछी दाढ़ी और सुस्त चेहरा लिए घूमता रहता था, वही अब हर दूसरेतीसरे दिन 'शेव' करना सीख गया है.

नौकरीपेशा रंजना ने अपनी व्यस्तता में से थोड़ा समय निकाल कर एक सुबह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो, आज मैं ने सुबहसुबह तुम्हारी शेविंग की तैयारी कर दी. चलो, जल्दी शेव कर लो. नाश्ता ठंडा हो रहा है". रंजना ने राकेश से कहा तो उसे उठना ही पड़ा.

गरम पानी, तौलिया व 'शेविंग बाक्स' स्नानघर में रख कर राकेश को आवाज दी, आकस्मिक पुकार पर राकेश अखबार लिए पहुंचा तो वह हंस कर बोली, "देखो, आज मैं ने सुबहसुबह तुम्हारी शेविंग की तैयारी कर दी है. चलो, जल्दी से शेव कर लो. फिर मैं तुम्हारी पसंद की कचौरियां उतारती हूं. अरे, साढ़े आठ बज गए? जल्दी करो न."

रंजना की 'जल्दी करो न' में इतना दबाव था कि राकेश इनकार न कर सका. फिर भाप उड़ाता पानी, शेविंग का सामान और तौलिया भी सामने ही था, बहाने की कतई गुंजाइश न थी.

थोड़ी देर बाद जब राकेश दाढ़ी बना कर, स्वच्छ ताजा चेहरा लिए रंजना के पास पहुंचा तो वह सचमुच निहाल हो गई. वह पति का ऐसा ही ताजा निखरा व्यक्तित्व चाहती थी. इधर रंजना निहाल हो उठी तो उधर राकेश, क्योंकि मेज पर उस की पसंद की कचौरियां और काफी सजी थी.

धीरेधीरे रंजना हर रोज ऐसा करने लगी. वह स्नानघर में शेविंग का सारा सामान रख कर ही राकेश को आवाज देती और "जल्दी करो न, फिर नाश्ता ठंडा हो जाएगा," कह कर हड़बड़ाई सी रसोई में चल देती. रंजना का मीठा आदेश, "जल्दी करो न," राकेश टाल न पाता. लिहाजा लगभग रोज ही अब वह शेव करने लगा.

शेव करने में एक नंबर के आलसी ललित की पत्नी जूही तो शेविंग का सारा सामान ही उठा कर उस के निकट ले आती है, "चलिए, आप शेव बनाइए और मैं आप को अखबार पढ़ कर सुनाती हूं." कह कर अब भी जूही पति के हाथ से अखबार छीन, बिना उस की प्रतिक्रिया जाने खबरें पढ़ कर सुनाना शुरू कर देती है. दोएक पल तो इस बदली हुई परिस्थिति का ललित जायजा लेता रहता है फिर धीरेधीरे शेव करना शुरू कर देता है. ऊपर से तटस्थ, किंतु मन ही मन प्रसन्न हो रही जूही अपनी चाल पर आप ही मुग्ध होती रहती है. बात ही बात में उस की महत्त्वपूर्ण समस्या हल हो गई है. प्यार से बीच का रास्ता खोज लिया है जूही ने. बिना चीखपुकार के अपनी बात मनवाने और पति की एक लापरवाह आदत बदलने का इस से बेहतर इलाज दूसरा नहीं है.

"भाभी, क्या बात है, भैया आजकल शेव बनाने के बड़े पाबंद हो गए हैं?" जूही के हमउम्र देवर और ननद उसे छेड़ते हैं तो वह भी मुसकरा कर जवाब दे देती है कि आखिर उन्हें मेरा कुछ तो खयाल रखना ही चाहिए. कभीकभार ललित भी इस चुहल को सुन आनंदित हो लेता है.

वास्तव में कुछ लोग स्वभावतः अपने प्रति लापरवाह होते हैं. उन्हें अपने को संवार कर रखने का ध्यान ही नहीं होता है और न ही वे इस विषय में सोचते हैं. अपनी साजसंवार की बात तो दूर, ऐसे लोगों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक स्वच्छता का भी ध्यान नहीं होता है. तब ऐसी दशा में पत्नी का उन के साथ रहना दूभर हो जाता है.

हर समय साफसुथरी और सजीधजी रहने वाली गर्विता का सारा गर्व तब चूरचूर हो गया, जब उस ने पाया कि प्रदीप 15 दिन पुरानी पत्नी की उपस्थिति का भी कोई ध्यान न रख कर अपनी बेतरतीब दाढ़ी बढ़ाए घूम रहे हैं. तब तो वह कुछ न कह सकी, लेकिन जब दो सप्ताह और गुजर गए और प्रदीप के बाल भी अजीब तरह से बढ़ गए तो गर्विता से रहा न गया. उस ने हिम्मत कर के कह ही डाला कि "आप आखिर ये दाढ़ीमूंछें और बाल किस खुशी में बढ़ा रहे हैं?"

"अरे यों ही मन नहीं हुआ," प्रदीप ने उदासीनता से जवाब दिया तो गर्विता से रहा नहीं गया. वह लाड़ से पति से बोली कि "आप के साथ मैं अब तभी बाहर निकलूंगी, जब आप बाल कटा आएंगे." तब तो हंस कर प्रदीप ने स्वीकृति दे दी. लेकिन इस के बाद भी अगले कई दिनों तक वह न तो सैलून ही गए और न ही उन्होंने शेव ही की.

एक शाम दफ्तर से लौटने पर गर्विता प्रदीप के पीछे ही पड़ गई तो वह बात टाल कर टीवी देखने बैठ गए.

"अब किसे दिखाना है, तुम तो देख ही चुकी हो. अब कोई दूसरी शादी तो मुझे करनी नहीं है. तुम से तो शादी हो ही चुकी है, अब क्या प्रभाव डालना है. तुम पर?" प्रदीप के मुंह से यह जवाब सुन कर गर्विता को और गुस्सा आ गया, किंतु वह गुस्सा पी कर लाड़ से ही बोली, "देखना क्यों नहीं है, मुझे तो देखना है. मैं तो आप को देखना चाहती हूं, एकदम चुस्तदुरुस्त. शादी के बाद क्या पति को पत्नी देखती नहीं है? लगना तो चाहिए कि हां, यह इंजीनियर प्रदीपकुमार हैं, गर्विता के पति."

गर्विता यह सब कह कर ही शांत नहीं हुई, बल्कि अगले ही दिन, शाम को खरीदारी के बहाने प्रदीप को बाजार खींच ले गई, साड़ियों के फाल खरीदते, ब्लाउज तलाशते जैसे ही गर्विता को हेयर सैलून दिखाई दिया, उस ने तत्काल बहाना खोज लिया, "अरे वाह, यह भी अच्छा रहा. चलिए, जब तक आप बाल कटाइए, मूंछें सेट कराइए, मैं अम्मांजी के फलाहार का सामान खरीद कर आती हूं. बस मुशकिल से 15-20 मिनट लगेंगे और दोनों ही काम निबट जाएंगे."

मरता क्या न करता वाली दशा हुई प्रदीप की. नाई की दुकान सामने थी और बहाना बनाना संभव नहीं था.

15-20 मिनट के बजाय पूरा आधा घंटा गुजार कर गर्विता आई तो देखा कि पति आदमी की शक्ल में सैलून से बाहर खड़े हैं. साफसुथरा रहनसहन पसंद करने वाली पत्नी निस्संदेह ऐसे व्यक्ति के साथ ऊब सकती है, जिसे अपना रत्ती भर भी खयाल न रहता हो और जो अपने व्यक्तित्व के प्रति लगभग उदासीन ही हो. इस स्थिति में बजाय ऊबने और चीखनेचिल्लाने के अपनी बात पति तक अवश्य पहुंचाइए. लेकिन. हां, बात पहुंचाने का माध्यम प्यार भरा रखिए, वरना संबंधों में न केवल कटुता आ सकती है.

पति की भावनाओं का भी ध्यान रखें

अपने पति को एक आकर्षक व्यक्तित्व के रूप में देखना लगभग हर पत्नी का सपना होता है, किंतु इस सपने के साथ पत्नी को भी मेहनत करनी पड़ती है. जिन्हें स्वयं सजसंवर कर रहने में रुचि नहीं होती है, वे सिर्फ पत्नी के कहने भर से नहीं सुनते हैं, बल्कि पत्नी को उन के पीछे लगना पड़ता है.

पति के कपड़ों और उन के रखरखाव पर पूरा ध्यान दीजिए. वह क्या पहन कर आकर्षक लगते हैं, यह जानिए. लेकिन इस सब में ऐसा न हो कि उन की भावनाओं का कोई मूल्य ही न रहे. वह आप के पति हैं, लेकिन इस के अलावा भी उन की निजता है. इसलिए बीच का रास्ता निकाल कर उन की पसंद को प्रमुखता देते हुए उन्हें सजाइए, संवारिए. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के साथ व्यवहार

लेख • दामोदर अग्रवाल

अगर आप चाहते हैं कि आप के बच्चे आप का कहा मानें, सही रास्ते पर चलें तो आप को स्वयं बच्चों के सामने एक मिसाल बनना होगा, बच्चे उपदेश से नहीं उदाहरण से सीखते हैं.

इंगलैंड के करीब एक लाख स्कूल अध्यापकों के एक बड़े संघ ने कई बरसों की खोजबीन के बाद अपनी अव्यावसायिक पत्रिका 'रिपोर्ट' में कहा है कि पिछले 10 वर्षों में स्कूली बच्चों के व्यवहार में इतनी जबरदस्त असामाजिकता आई है कि कहना मुशकिल हो गया है कि वे किसी सभ्य संसार के प्राणी हैं. वे इतने झूठे और शरारती हो गए हैं कि अध्यापक के लिए भी जानना कठिन हो गया है कि क्या उन्हें शौच जाने की सचमुच आवश्यकता है या यह सिर्फ उसे चिढ़ाने या तंग करने का बहाना है.

यह तो इंगलैंड की बात थी, पर इधर भारत के स्कूल अध्यापकों की भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के बारे में भी यही राय है. शौच के बहाने कक्षा से छुट्टी ले कर स्कूल के स्नानघरों में बैठे चूइंगम चबाते या कामिक्स पढ़ते रहने से ले कर आपस में और भी न जाने कितने दूसरे खिलवाड़ तक नहीं करते, स्कूलों के बच्चे? शहरों के बच्चे तो गालियों का इस्तेमाल अपने मातापिता के सामने भी धड़ल्ले से करते हैं. गांवों में भी अश्लील गालियों से खुली गंदी हरकतों तक वे जो कुछ भी करते हैं, वह यदि उन के मांबाप देख लें तो उन्हें स्कूल भेजना बंद कर दें.

अपनी अध्यापिका को गाली देना, कमजोर साथियों को मारनापीटना, उन की किताबें कापियां नोच कर फाड़ देना, शीशे तोड़ना, स्याही और पेंसिल से दीवारें और फर्श गंदा करना, कक्षा में लगी तसवीरों, चार्टों, नक्शों को फाड़ देना, फर्नीचर को चाकू या ब्लेड से खुरच कर अपना या किसी लड़की का नाम लिखना, कक्षा में रखे गुलदस्तों को तोड़ना और फूलों को मसल कर फेंक देना, रजिस्टर, किताब और कापियां चुराना, दूसरे साथियों के डब्बों से पैसे उड़ाना, फर्श पर जूते घिसटते हुए चलना और दूसरों का खाना चुरा कर खाना या फेंक देना आदि बातें शहर और गांव दोनों तरह के स्कूली बच्चों की मामूली आदतें होती जा रही हैं.

मिठास और भोलापन, शिक्षक के प्रति आदर, स्कूल के प्रति गर्व, अनुशासनप्रियता तथा समय की पाबंदी आदि गुण लगभग समाप्त हो गए हैं.

गहराई से देखें तो लगभग हर बच्चा एक मनोवैज्ञानिक समस्या हो गया है. भूखा होते हुए भी खाना न खाना या प्यासा होते हुए भी पानी न पीना इस बात के संकेत हैं कि या तो वह बीमार है या किसी मानसिक तनाव में है. जिस पारिवारिक तथा सामाजिक परिवेश में वह पलबढ़ रहा है, कहीं उस की जड़ में ही तो कोई खोट नहीं?

इंगलैंड के स्कूली अध्यापक संघ ने वहां के स्कूली बच्चों के संदर्भ में इस के जो कारण गिनाए हैं, वे अब शायद हमारे ऊपर भी लागू होते हैं. उन का कहना है कि पहले तो मातापिता स्वयं अपने बच्चों के लिए सुंदर आचरण और शिष्ट भाषा की कोई मिसाल नहीं बनते, दूसरे, उन के सामने आदर्श जीवन तथा सही मूल्यों की कोई परिकल्पना भी नहीं रखते. बाल मनोविज्ञान का ज्ञान भी उन को नहीं के बराबर होता है. मनोरंजन का भी उन के पास बस एक ही आसान, सस्ता साधन है, टेलीविजन. इसलिए बच्चों और मातापिता के बीच कोई स्वस्थ भावनात्मक, मानसिक तालमेल का अभाव रहता है.

टेलीविजन का वही 'दानव' स्कूलों में भी बैठा है. अधिकतर स्कूलों में सप्ताह में पांच से सात पीरियड टेलीविजन को समर्पित होते हैं, जब वीडियो फिल्में दिखाई जाती हैं. बच्चे उन्हीं की पतीक्षा करते हैं. फिल्म के बाद कक्षा में जब कोई अध्यापक आ जाता है, तब उन का मन उस के प्रति अविश्वास और अनादर से भर जाता है. टी.वी. पर देखी हर चीज सही और शिक्षक से सुनी हर बात झूठी जान पड़ने लगती है. बच्चों को भी शिकायत है, अपने

स्कूल हो या घर बच्चों का आपस में लड़ना और गालीगलौच करना आजकल आम बात हो गई है. जरूर कहीं इन की परवरिश में कमी हो रही है. ▼

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

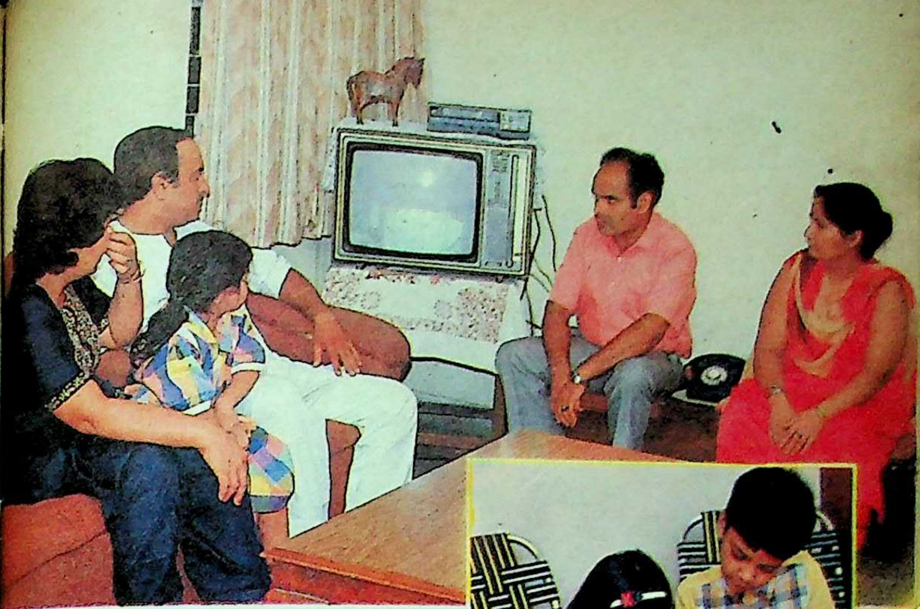

वीडियो शौक से देखिए लेकिन उस समय नहीं जब बच्चे पढ़ रहे हों वरना बच्चे भी वीडियो देखने की जिद करेंगे ही. ▲

मातापिता से. वे कहते हैं कि जो काम उन के बड़े खुद बड़ी शान के साथ करते हैं, वे ही बच्चों के लिए खराब समझे जाते हैं. क्या जरूरी है कि वे बड़ों के ही बताए और बनाए रास्ते पर चलें? अपनी राह खुद क्यों न निकालें? क्या इस से उन में आत्मविश्वास नहीं पैदा होगा?

बच्चे कहते हैं, "हमें रात को बाहर नहीं निकलने दिया जाता, जबकि मांबाप देर रात तक बाहर घूमते और गुलछर्रे उड़ाते रहते हैं. हमारी सुरक्षा और भविष्य को ले कर वे इतने परेशान रह कर व्यर्थ हमें भी परेशान करते रहते हैं. हमेशा डरेडरे रहना क्या कोई अच्छी बात है? फिर वे इतना डरते ही क्यों हैं? देखिए न, अधिकतर हत्याएं तो बड़े ही करते हैं और हत्याएं भी तो अधिकतर बड़ों की ही होती हैं और चोरीडाके भी तो उन्हीं का काम है. हमारे संसार में एकदूसरे के प्रति जो प्रेम और विश्वास है, वह बड़ों की दुनिया में कहां? हम कब पढ़ें, कब सोएं, कब गृहकार्य करें, ये सब भी क्या बड़े ही नहीं तय करते? तो फिर हम आदमी नहीं, चलतीफिरती कठपुतलियां ही तो हैं?"

अकसर अनेक मातापिता बैठक में ठाट से बैठे दोस्तों से गप्पें हांक रहे होते हैं, जबकि बच्चों को जा कर चाय बनानी पड़ती है और फिर यह भी कितनी बड़ी हिमाकत, कितना बड़ा अन्याय है कि चाय तो बनवा ली, पर यह भी कह दिया कि अब तुम अपने कमरे में जाओ, बड़ों की बातों में नहीं बैठना चाहिए.

बच्चे कहते हैं, "घर या स्कूल में, छात्रावास में अपने कमरों को भी हम अपने ढंग से नहीं रख पाते. मांबाप की रुचि चाहे जैसी भी हो, कमरों की सजावट का स्तर भी वे ही निर्धारित करते हैं, वे ही निरीक्षण करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, वे ही निर्णय करते हैं. इतना ही नहीं, हम आपस में लड़ते हैं तो हमारी पिटाई की जाती है, पर उन की आपस में लड़ाई हो जाए तो हम बोल भी नहीं सकते. पड़ोसियों, मित्रों और रिश्तेदारों की पीठ पीछे निंदा करना तो कोई बड़ों से सीखे. यह सब अपनी दुनिया में वे स्वयं तो रोज करते रहते हैं, पर हम से उम्मीद करते हैं कि हम आदर्श बालक बनें."

किस छुट्टी में पिकनिक के लिए कहां जाना है, कौन सी फिल्म देखनी है, किस के घर जाना है, किस के घर नहीं, किन बच्चों से बोलना है, किन से नहीं, यहां तक कि किस पड़ोसी को नमस्कार करना है, किस को नहीं, ये सब भी बच्चों के लिए बड़े लोग ही तय करते हैं.

एक किशोर कहता है, "हम तो जैसे कुछ हैं ही नहीं. हम बच्चे हैं, हमें अनुभव नहीं, हम सोच नहीं सकते, हम गलती करते हैं, हम धोखा खा जाएंगे, हमें कोई उठा ले जाएगा आदि न जाने कितनीकितनी बातें हमें बड़ों से रोज सुननी पड़ती हैं. ऐसे क्या हमारा आत्मविश्वास नहीं टूटेगा? आत्मसम्मान कम नहीं होगा? तो हम फिर क्या अपने छोटे से मानसिक दरबे में पड़े रहें?"

एक स्कूली बच्चे का कहना है, "हमारे मातापिता हमारे सामने झूठ बोलते हैं, हेराफेरी से पैसे कमाने की तरकीब सोचते हैं और वीडियो पर फिल्म देखते रहते हैं लेकिन फिर भी उम्मीद लगाए रहते हैं कि उन के बच्चे आगे चल कर आदर्श नागरिक बनेंगे."

एक दूसरा स्कूली बच्चा कहता है, "परीक्षा के दिन थे. हमारे मातापिता वीसीआर पर कोई फिल्म देख रहे थे और हम से कह रहे थे कि दूसरे कमरे में बैठ कर पढ़ो. हम ने कहा कि हम भी वही करेंगे जो आप कर रहे हैं तो हमें पीटा गया. परीक्षा में हमारे नंबर भी बहुत कम आए."

एक तीसरा स्कूली बच्चा कहता है, "कक्षा में मैं 12वें स्थान पर आया था. लेकिन मेरी मां ने सब से कह दिया कि पहले स्थान पर आया हूं. पड़ोसियों में मिठाइयां भी बंटवाई. मैं ने किसी से कह दिया कि मैं पहले नहीं, 12वें स्थान पर आया हूं तो मेरे पिताजी ने मुझे मारा."

दिल्ली में इन पंक्तियों का लेखक अनेक ऐसे परिवारों को जानता है जिन में बच्चे यह जीवन दर्शन ले कर आगे बढ़ रहे हैं कि हेराफेरी या चाहे जैसे भी कमाया हुआ पास में पैसा और कुछ जानपहचान हों तो कौन सा ऐसा काम है जो नहीं हो सकता? यह भी कि बदन पर कपड़े यदि शानदार हैं तो पढ़नेलिखने की भी जरूरत नहीं, सभ्यता अपनेआप आ जाएगी.

बच्चों पर अपने अनुभव न लादें

हमें ऐसा क्या करना चाहिए कि हमारे बच्चे लायक निकलें? सब से पहले उन के लिए हमें अच्छे साहित्य का चुनाव करना चाहिए. यदि हम नहीं जानते कि अच्छा साहित्य क्या है तो किसी जानकार व्यक्ति से सलाह लेने में हिचकना नहीं चाहिए. स्वस्थ मनोरंजन, खेलकूद, संगीत में रुचि आदि से भी बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होता है. उन्हें इस के लिए प्रेरणा तथा अनुकूल वातावरण दीजिए. बच्चों के सामने जीवन की सही तसवीर भी रखिए. वे छलना, भुलावे और मायावी दुनिया से दूर रहें तो ही अच्छा है. जीवन में सही आदर्शों तथा सही मूल्यों का होना बहुत ही जरूरी है. यह समझना कितना गलत होगा कि जीवन में पैसा ही सब कुछ है या पैसे से सब कुछ खरीदा जा सकता है.

जानेअनजाने कई गलतियां हम और भी करते हैं. जैसे, बच्चों पर अपने ही अनुभवों को लादने लगते हैं और उन में अपनी ही अपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति भी ढूंढ़ने लगते हैं. मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह एक खतरनाक स्थिति है. बच्चे अपने जीवन से स्वयं सीखें तो इस से बढ़ कर और क्या हो सकता है? उन के सामने सभ्यता से खानापीना, बातें करना, गरिमा के साथ रहना, उठनाबैठना या उन के साथ कभीकभी कैरम आदि खेलना और घूमने जाना अथवा साथ बैठ कर कोई अच्छी पुस्तक पढ़ना बच्चों के सही विकास के लिए जरूरी हो सकता है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप की सफाई दूसरों की नाराजगी तो नहीं

लेख • ऋतु श्रीवास्तव

माना कि सफाई पसंद होना अच्छी बात है लेकिन इस की सनक अनजाने में दूसरों की नाराजगी का कारण बन सकती है. वह कैसे? यह जान कर आप अपनी इस आदत में सुधार करने का यत्न करें.

राजेश के मित्र और उस की पत्नी ने अभी नाश्ता खत्म ही किया था कि राजेश की पत्नी नीरा झाड़ू ले कर वहां आ खड़ी हुई. बोली, "बच्चों ने कालीन पर नमकीन गिरा दिया, मैं फटाफट साफ कर देती हूं."

मित्र और उस की पत्नी को लगा कि नीरा यह जताना चाह रही है कि हम ने बच्चों को खाने का सलीका नहीं सिखाया.

राजेश ने स्थिति भांपते हुए कहा, "नीरा, थोड़ी देर रुक नहीं सकतीं."

फिर खिसियानी हंसी हंसते हुए बोला, "इन की तो आदत ही ऐसी है. किए कराए पर झाड़ू फेर देती हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

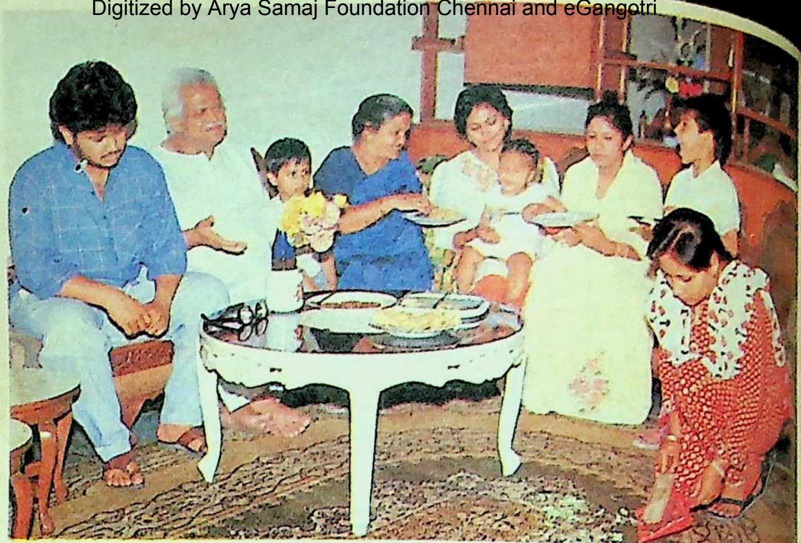

हालांकि नीरा का उद्देश्य किसी को चोट पहुंचाना नहीं था. लेकिन उस की जल्दबाजी ने रंग में भंग डाल दिया.

बेटे के आई.ए.एस. में चुन लिए जाने की खुशखबरी सुनाने के लिए माया राधा के यहां पहुंच गई. अभी वह अंदर जाने ही वाली थी कि राधा ने उसे रोकते हुए कहा, "माया, एक मिनट रुकना...फर्श गीला है."

माया का मुंह उतर गया. कितने उत्साह से वह खबर सुनाने आई थी, लेकिन राधा को उस के आने से ज्यादा अपने फर्श की चिंता थी.

ऐसा नहीं है कि नीरा जानबूझ कर मेहमानों को अपमानित करने के लिए झाड़ू लगाने आई थी या राधा माया को अंदर नहीं आने देना चाहती थी, बल्कि उन की सफाई की आदत ने दूसरों को नाराज कर दिया था.

यहां कहने का मतलब यह नहीं है कि सफाई करना गलत है, बल्कि सफाई से ही स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है, ऐसा डाक्टरों का मानना तो है ही, साथ ही यह जीवन का नियम भी है. यदि आप सफाई पसंद हैं तो बीमारी आप से कोसों दूर रहे.

पर जैसा कि कहा जाता है कि हर चीज की अधिकता बुरी होती है. इसी तरह साफ रहना अच्छी आदत जरूर है. लेकिन

मेहमानों के सामने आप का सफाई पसंद होना दर्शाना अप्रत्यक्ष रूप से मेहमानों की नाराजगी का कारण बन जाता है.

कई बार इस आदत के कारण दूसरों की नाराजगी भी उठानी पड़ती है.

जया अपनी बेटी के लिए एक लड़के के संबंध में बात करने नेहा के यहां गई. जया को बैठा कर पांच मिनट को कह कर नेहा रसोई में घुसी तो आधा घंटा होने पर भी निकलने का नाम नहीं ले रही थी.

जया के पुकारने पर 'बस, आ रही हूं' कहने के बावजूद नेहा नहीं निकली तो झुंझला कर जया रसोई में पहुंच गई. वहां जा कर देखा कि नेहा पूरी तन्मयता से गैस चमकाने में लगी है.

जया तमतमा कर बोली, "मैं इतने महत्त्वपूर्ण मसले पर बात करने आई हूं और मुझे वहां बैठा कर महारानीजी गैस में सिर खपा रही हैं."

अब यदि नीरा पांच मिनट बाद झाड़ू लगा देती या राधा माया को आदर सहित अंदर बुला लेती और नेहा थोड़ा रुक कर गैस साफ कर लेती तो कोई उन्हें गंदों का खिताब तो दे नहीं देता, उलटे उन के कारण दूसरों को ठेस जरूर पहुंची.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई घरों में सफाई को ले कर विशेष रूप से पोंछा लगाते समय तूतू मैंमैं हो ही जाती है या फिर बेटी के धुले कपड़े मां को पसंद नहीं आते या पत्नी को घर गंदा रखने के कारण पति की डांट सुननी पड़ती है.

घर के किसी न किसी सदस्य को सफाई की आदत चरम सीमा तक होती है कि बाकी सदस्य इस सफाई को 'सनक' तक बताने से नहीं चूकते.

हमारी मां भी सफाई की बीमारी से ग्रस्त हैं, जिस के कारण घर में झगड़ा तक हो जाता है.उस दिन की बात लें. बरसात के कारण मां ने अपने कमरे में तार बांध कर वहां कपड़े फैला रखे थे. तभी हमारी बूआ जरूरी फोन करने हमारे यहां आईं और फोन करने के लिए उसी कमरे की तरफ जाने लगीं. हमारी मां ने इतनी जोर से चीख कर उन्हें रोका, मानो उस कमरे में बम रखा हो. फिर बोलीं, "जरा मेरे कपड़े वहां पड़े हैं, उन्हें एक तरफ कर दूं."

इतना सुनते ही बूआ के तनबदन में आग लग गई और वह यह कहते हुए उलटे पैरों लौट गईं, "एक तुम ही सफाई पसंद हो न, बाकी सब तो गंदगी में लिपटे हैं."

यहां यह आशय नहीं है कि आप साफ रहना छोड़ दें और गंदे बने रहें. कहने का मतलब यह है कि सफाई की आदत जरूर बनाइए, लेकिन उसे सनक न बनने दें कि दूसरों को यह एहसास होने लगे कि उन्हें गंदा समझा जा रहा है.

अंजू का किस्सा तो और भी दिलचस्प निकला. एक दिन उस ने उदास स्वर में बताया कि उस के ससुराल वाले उसे बुराभला कहते हैं और उस का यहां आना पसंद नहीं करते. हम ने सोचा जरूर दहेज जैसा गंभीर मामला होगा, पर सचाई जान कर तो हम हतप्रभ रह गए. उस ने बताया कि उसे आदत है कि जैसे कोई जाने के लिए खड़ा होता है, वह फौरन कुशन और सोफे के गद्दे यथास्थान रखने लगती है, जो बैठने के कारण खिसक आते थे. यह बात उस के साससुसर को बड़ी बुरी लगती है कि बहू तो जैसे उन के उठने की प्रतीक्षा करती रहती है.

घर साफ रखना, कपड़े साफ पहनना, जैसी आदतें अच्छी जरूर हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि आप ने चमचम करती सफेद कमीज पहनी है तो सामने वाले की कमीज गंदी ही है.

अपने को और अपने घर को साफ जरूर रखें. लेकिन इस पर भी ध्यान दें कि कहीं आप की सफाई दूसरों को परेशान न कर दे.

घर आए मेहमानों के सामने बारबार चादर की सलवटें ठीक कर के, झाड़ू लगा कर यह न जताएं कि केवल आप अकेली ही सफाई पसंद हैं.

सफाई करनेकराने के लिए दूसरों को नाराज मत कीजिए. दूसरों की भावनाओं को चोट न पहुंचाएं. सफाई शौकीन जरूर कहलाएं, लेकिन सफाई की सनक हरगिज न पालें. •

विश्व बाल साहित्य

विश्व बाल पुस्तकें

आप के बच्चों के लिए अति आवश्यक

• मनोरंजक
• ज्ञानवर्द्धक
• मार्गदर्शक

आकर्षक रंगीन चित्रों में चीकू, चुंचू, पप्पू, पिंटू और मोती भी.
350 से अधिक हिंदी और अंग्रेजी की पुस्तकें
उपहार के लिए सब से उत्तम

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001
फोन : 3321313

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के मुख से

हमारे बच्चों की परीक्षा में स्वर्णिम सफलता पर मेरे पति के एक मित्र सपरिवार बधाई देने आए. बातों ही बातों में वह बोले, "अरे साहब, आप के बच्चों ने तो आप की नाक ऊंची कर दी."

यह सुन कर मित्र की सात वर्षीया पुत्री बड़े ध्यान से मेरे पति की नाक देखने लगी. वह बोली, "पिताजी, चाचाजी की नाक तो पहले जैसी ही है."
—अरुणा रस्तोगी

*

एक बार हमारे भैया और ताऊजी में किसी बात पर झगड़ा हो गया. झगड़ा बढ़ने पर ताऊजी ने उन्हें घर से चले जाने का फरमान जारी कर दिया.

पास में ही हमारी कुछ जमीन थी. उस पर भैया ने अपना मकान बनवा लिया. मकान बनने तक वह ताऊजी वाले मकान में ही रहे. जब वह जाने लगे तो सभी गंभीर थे. पर ताऊजी गुस्से में भिनभिना रहे थे.

अचानक मेरा चार वर्षीय भतीजा कुछ सोचता हुआ बोला, "मां, बाबा ने पिताजी को लड़ कर घर से निकाल दिया. तो पिताजी ने नया मकान बनवा लिया, क्योंकि उन के पास खूब सारे पैसे हैं, लेकिन अगर पिताजी नें मुझे घर से निकाला तो मेरे पास तो पैसे भी नहीं हैं, मैं कहां से मकान बनवाऊंगा."
—संजय कुमार गर्ग

*

मेरी ननद की शादी की बातचीत चल रही थी. उस दिन होने वाले वर का बहनोई मिलने आया हुआ था और अपने उस साले की प्रशंसा कर रहा था, "लड़का बड़ा ही सुशील है और सीधा तो इतना है कि जैसे गऊ."

मेरा पांच वर्ष का नवासा बड़ी तन्मयता से ये बातें सुन रहा था. अचानक वह बड़ी ही गंभीरता से पूछने लगा, "चाचाजी, क्या वह दूध भी देते हैं."
—रमाकुमारी श्रीवास्तव

*

उन दिनों मेरी बूआजी आई हुई थीं. हम सभी लोग उन के साथ बैठ कर खाना खा रहे थे. बूआजी ने मुझे चिढ़ाने के लिए कहा, "तू बड़ा हो कर ढोर (जानवरों का) डाक्टर बनेगा."

मैं चुप रहा, पर मेरा आठ वर्षीय भाई बोल पड़ा, "हां, फिर भैया, आप लोगों का इलाज मुफ्त में करेंगे."

यह सुन कर और तो सब लोग हंस पड़े पर बूआजी की शक्ल देखने लायक थी.
—शशिचंद्र शर्मा

*

एक बरात में मेरे साथ मेरा पांच वर्षीय चचेरा भाई भी गया था. वहां नाश्ता कर के भाई ने दोबारा मिठाई की मांग की तो मैं ने उसे आंखें दिखाते हुए कहा, "क्यों, क्या तुम्हारी मां ने दोबारा मिठाई मांगने से मना नहीं किया था?"

"मना तो किया था, पर उन्हें यह नहीं मालूम था कि प्लेट में इतनी कम मिठाई होगी." उस ने तपाक से जवाब दिया.
—अभयचंद्र गुप्त

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बात भेज सकते हैं. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली- 110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैर छूने की परंपरा

लेख ● जे.एस. बावा

पैर छूना भारतीय समाज में आदरसूचक माना जाता है. लेकिन इस के पीछे क्या आदर्श हैं उन्हें कोई नहीं जानता. बस भेड़चाल की तरह पैर छूने की परंपरा बनी हुई है. यदि दिल में इज्जत नहीं है तो फिर इस पैर छूने की ढकोसलेबाजी का क्या फायदा?

मेरे मातापिता जब मेरे ताऊजी के घर उन की बेटी की शादी के अवसर पर जालंधर गए तो बातचीत के दौरान मेरे ताऊजी ने अपने छोटे भाई यानी मेरे पिताजी से शिकायत भरे अंदाज में कहा कि 'सोहन, तुम ने अपने बच्चों को दूसरों की इज्जत करने की तमीज नहीं सिखाई.'

यह बात सुन कर मेरे पिताजी अवाक रह गए. हमारे घर में तो सब के सब उच्च शिक्षा के साथसाथ अच्छी तहजीब वाले लोग ही हैं जो कि अच्छे क्षेत्रों में कार्यरत हैं. फिर ताऊजी ने यह बात किस आधार पर कही? हमारे घर के सदस्य ने कभी किसी से ऊंची आवाज में भी बात नहीं की. मैं ने हैरान हो कर अपने पिता से पूछा तो वह बोले,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

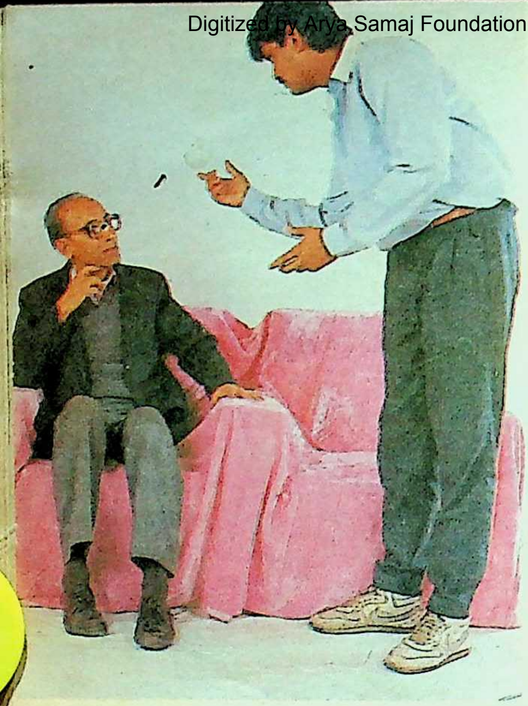

यदि पिता के प्रति आप के मन में ... उन से आप का झगड़ा रहता है तो उन के ... कर सम्मान प्रदर्शित करने का भी कोई ... नहीं है.

"तुम्हारे ताऊजी व ताईजी जब पिछली बार हमारे यहां आए थे तो तुम ने उन के पैर नहीं छुए."

मुझे यह जान कर आश्चर्य ही नहीं हुआ बल्कि हंसी भी आई. क्या किसी के पैर छूने मात्र से किसी की इज्जत हो जाती है. एकदूसरे के पैर छूने की परंपरा मैं ने या तो निरंकारी समाज में देखी है या फिर परंपरावादी समाज में, जहां कि पैर छूना एक ढर्रा बना हुआ है. जबकि पैर छूने का आदर्श क्या है, उस के पीछे मान्यताएं क्या हैं, इस की उन्हें कतई जानकारी नहीं.

मैं ने जिस कालिज से एम.काम किया, वहां मारवाड़ी समुदाय के लोगों का अधिक बोलबाला था और मैं ने पैर छूने की परंपरा को वहां सब से अधिक पाया. हालांकि राजस्थान के कुछ इलाकों में पैर छूने की तो नहीं मगर 'पगै लागूं सा' (यानी आप के पैरों को छूता हूं) बोलने की परंपरा सदियों से चली आ रही है. और जब आप किसी व्यक्ति को पगै लागूं सा बोलेंगे तो वह आप को 'जीवंता रहो, तरक्की करो, खुश रहो' जैसी ढेरों शुभकामनाएं दे डालेगा. इसी ... यहां (राजस्थान में) पैर छूने की परं... भेड़चाल के अलावा कुछ नहीं. यहां ... आगंतुक रिश्तेदार के आनेजाने पर पैरों ... छूना आदरभाव माना जाता है और पैर ... छूना असभ्यता का प्रतीक.

बिहार समुदाय का एक परिवार ... पड़ोस में रहता है. एक दिन मैं उन के ... बैठ कर गपशप कर रहा था. तभी ... मित्र के जीजाजी अपनी पत्नी के ... अचानक वहां आ गए. वे छपरा से आए ... जीजाजी ने आते ही अपने साले के पैर छू... मैं यह दृश्य पहली बार देख रहा था. ... द्वारा साले के पैर छूने की परंपरा तो ... पहले न कहीं देखी न सुनी थी. हालां... पत्रकारिता के सिलसिले में मैं बिहार ... तीन वर्ष रह चुका हूं, मगर वहां ... जिंदगी में ऐसा अवसर कभी नहीं आया ... ने अपने मित्र से पूछा तो बोले, "हमारे ... यह परंपरा सदियों से है कि जीजा जब ... घर आता है या साला उस के वहां जाए ... जीजा उस के पैर छूता है."

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या पैर छू... मात्र से ही व्यक्ति की इज्जत हो जाती है ... इस के लिए मैं आप के सामने एक उदाहरण रखना चाहूंगा. जब मैं एम.काम. फाइनल ... था, तब अपने मित्र के यहां पढ़ने जाया करता था. उन के घर के सदस्यों में भी बाहर ... आतेजाते वक्त मांबाप अथवा बड़े ... सदस्यों के पैर छूने की परंपरा थी.

एक दिन मैं ने उन के घर में देखा कि ... बड़े पुत्र ने अपने पिता को किसी बात पर ... थप्पड़ जड़ दिया. यह जंगली घटना उस घर ... में हुई जहां पिता प्रवक्ता है और घर के ... सदस्य बैंक में, एक टेलीफोन एक्सचेंज में ... और एक प्रधानाध्यापिका है. इस के ... आपसी झगड़े को ले कर बड़ा पुत्र घर छो...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र कहीं अलग रहते हैं. ज्यादा हैरानी की बात तो यह है कि आज भी बड़ा पुत्र जब भी उस घर में आता है तो अपने मांबाप के पैर छूता है.

एक दिन मैं ने अपने मित्र से पूछ ही लिया कि यह बेकार की ढकोसलेबाजी क्यों करते हो जबकि वास्तव में तो आप अपने पिता की बिलकुल इज्जत नहीं करते? तो वह बोले, "क्या करूं, हमारे समाज की परंपरा जो चली आ रही है. मैं कुछ बोला नहीं.

उस महाशय को यह परंपरा तो याद है मगर बाप पर हाथ उठाने की परंपरा क्या भारतवर्ष में कभी रही है, यह शायद उन्हें ज्ञात नहीं होगा.

भारतीय समाज दकियानूसी, रूढिवादी परंपराओं का त्याग क्यों नहीं कर पाया है, इस के पीछे अनेक कारण हो सकते हैं. मगर सब से बड़ा कारण हमारी स्वयं की बीमार मानसिकता है. प्राचीन काल में पैर छूने की परंपरा के पीछे एक अच्छी भावना थी. शिष्य गुरु से शिक्षा लेने के बाद उस की शुभकामना लेने के लिए उस के पैर छूता था. मांबाप जब औलाद को बाहर शिक्षा देने भेजते तो चरण छूने पर उसे शुभकामनाएं दिया करते थे. लेकिन हर छोटेबड़े के संबंधों को ध्यान में रख कर कोई पैर नहीं छूता था.

आज तो इस अंधपरंपरा की बीमारी की हालत यह हो गई है कि गाड़ी, बस आदि पर यदि किसी को छोड़ने जाओ तो वहां भी बुजुर्ग के पैर छुओ. 21वीं सदी की कल्पना करने वाले भारतवासियों की पुराने जमाने की परंपराएं न केवल खोखली हैं बल्कि निराधार भी. महज पैर छूने से मनुष्य की इज्जत नहीं हो जाती. यदि आप किसी को मुंह से ही राम राम, नमस्कार, पगै लागूं सा, पैरी पोना आदि कह दें तो भी उस का उतना ही सम्मान होगा जितना कि पैर छूने से.

अब हमारे ताऊजी यदि बैंक मैनेजर के पद पर रह कर भी पैर छूने की परंपरा को नहीं भूले हैं तो ऐसे समाज का कौन मालिक है? भारत के लगभग 23 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में मैं ने इस परंपरा को किसी न किसी रूप में पाया ही है. तब किसी से आप यह पूछें कि आप बड़ों के पैर क्यों छूते हैं तो वह एक ही बात कहेगा कि हमारे यहां ऐसी परंपरा है. और आप यदि उस से पूछें कि यह परंपरा क्यों है. इस का क्या फायदा है तो उत्तर के नाम पर उस की गरदन झुकी हुई मिलेगी. ●

समुद्र जल खतरे में

समुद्रों का जल कितना ही खारा या दैनिक जीवन के लिए अनुपयोगी क्यों न हो किंतु है महत्त्वपूर्ण. उस की महत्ता का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि विश्व के दस करोड़ से भी अधिक लोग समुद्रों से ही जीविकोपार्जन करते हैं. यही नहीं, मनुष्य के लिए आवश्यक जीव प्रोटीन का एक चौथाई भाग सागरों से ही मिलता है.

किंतु विगत दशकों से बढ़ते हुए रासायनिक और जैविक प्रदूषण समुद्रों के लिए खतरनाक साबित हो रहे हैं. तटीय विकास और मत्स्य शिकार से होने वाली हानि को पूरा करने की सामुद्रिक क्षमता निरंतर गिर रही है. बह कर आने वाले दूषित पानी, उर्वरक व अम्लीय वर्षा से विश्वभर में जल से आक्सीजन सोख लेने वाले पदार्थों की बढ़ोतरी के कारण कई बार समुद्री जल जहरीला भी हो जाता है.

ओजोन परत के फटने से पराबैंगनी विकिरण भी समुद्रों के लिए खतरा बनता जा रहा है. दूसरी ओर धरती का तापमान बढ़ने से सागर जल का स्तर भी बढ़ रहा है. पत्रिका 'वर्ल्ड वाच' में प्रकाशित एक रिपोर्ट में समुद्र जल के इन खतरों की ओर संकेत किया गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेह निमंत्रण

मैं भाषा जीवन की
तुम बनो मेरे व्याकरण,
मैं प्यासे चातक सी
तुम बन उतरो चंद्रकिरण.

स्वप्न हूं
साकार होना चाहती हूं,
तेरे नयनों का
मिले जो दर्पण.

सब्र के बांध
टूटना चाहते हैं,
तुम्हारी निगाहें
कब देंगी नेह निमंत्रण.

मन की गांठ
खोलो तो एक बार,
आओ सुलझा दूं
उलझे सभी समीकरण.

रूह को रूह में
लीन हो जाने दो,
सार्थक हो
मेरा अचल समर्पण.

—अर्पणा 'आस्था'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन दहाड़े

टना विगत 23 दिसंबर की है. सुबह के साढ़े नौ बजे थे. कनाट कस के प्लाजा बस स्टाप पर तीनचार क एक झोले में परचियां डाल कर टरी निकाल रहे थे. मेरे एक रिश्तेदार वहां खड़े थे. वह नई दिल्ली रेलवे शन से हमारे घर आ रहे थे. उन्हें बस का जार था.

उन में से एक युवक ने मेरे रिश्तेदार ओर परची बढ़ाते हुए पूछा, "भैया, ना इस में क्या लिखा है?"

मेरे रिश्तेदार ने पढ़ कर सहज भाव कहा, "20 का अंक लिखा है."

फिर वे युवक आपस में रुपयों का देन करने लगे. और परस्पर झगड़ते हुए रिश्तेदार से बोले, "भैया, आप के पास द रुपए हों तो इसे बदल दें." साथ ही होंने 100 रुपए का एक पुराना सा नोट रिश्तेदार की ओर बढ़ा दिया.

वह उन पर विश्वास करते हुए अपने ट की जेब से नोटों की गड्डी निकाल कर नोट बदलने लगा. इसी दौरान उन में से क ने झटका दे कर मेरे रिश्तेदार से नोटों गड्डी छीन ली. इस के साथ ही वे सब वहां नौ दो ग्यारह हो गए. —एस.एन. द्विवेदी

*

रास्ते में सवारी देख कर रिकशेवाले ने मुझ से पूछा, "बाबूजी, आप को तराज न हो तो यह सवारी बैठा लूं. दो पए बन जाएंगे."

मैं ने दूसरे सवार को बैठने के लिए गह दे दी. आगे चल कर वह पटेल चौक र उतर गया. थोड़ी दूर जा कर सब्जी मंडी क पर मैं भी उतरा.

रिकशे वाले को रुपए देने के लिए जेब में हाथ डाला तो पता चला कि मेरी जेब साफ हो चुकी थी. —आर.पी. गोविंद

*

मेरे पड़ोस में चाय की एक दुकान है. वहां किराए पर साइकिलें भी मिलती हैं.

एक दिन दुकान खुलते ही एक व्यक्ति आया. चाय पीने के बाद उस ने 10 रुपए दिए, उस समय दुकान में खुले पैसे नहीं थे, यह जान कर उस व्यक्ति ने कहा, "मैं तब तक साइकिल चलाना सीखता रहूंगा. बाकी रुपए बाद में दे दीजिए."

साइकिल सीखतेसीखते वह व्यक्ति ऐसा लापता हुआ कि बाकी रुपए लेने भी नहीं आया. दुकानदार को 10 रुपए में एक गरम चाय और एक साइकिल का सौदा बहुत महंगा पड़ा. —गणपति मूलेतोट

*

हम सपरिवार फिल्म देख रहे थे. मध्यांतर में हम ने चाय मंगवाई, साथ ही कुछ खाने को भी. मध्यांतर खत्म होते ही एक लड़का जूठे बरतन तथा खानपान के पैसे ले गया.

इस के करीब 10 मिनट बाद दूसरा आदमी आ कर पैसे मांगने लगा. जब हम ने उसे स्थिति बताई तो वह परेशान हो गया. खोजबीन करने पर जूठे बरतन तो एक सीट के नीचे मिल गए, मगर वह लड़का रुपए ले कर नौ दो ग्यारह हो चुका था. मजबूरन हमें दुकानदार को दोबारा भुगतान करना पड़ा. —रामजी लाल ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

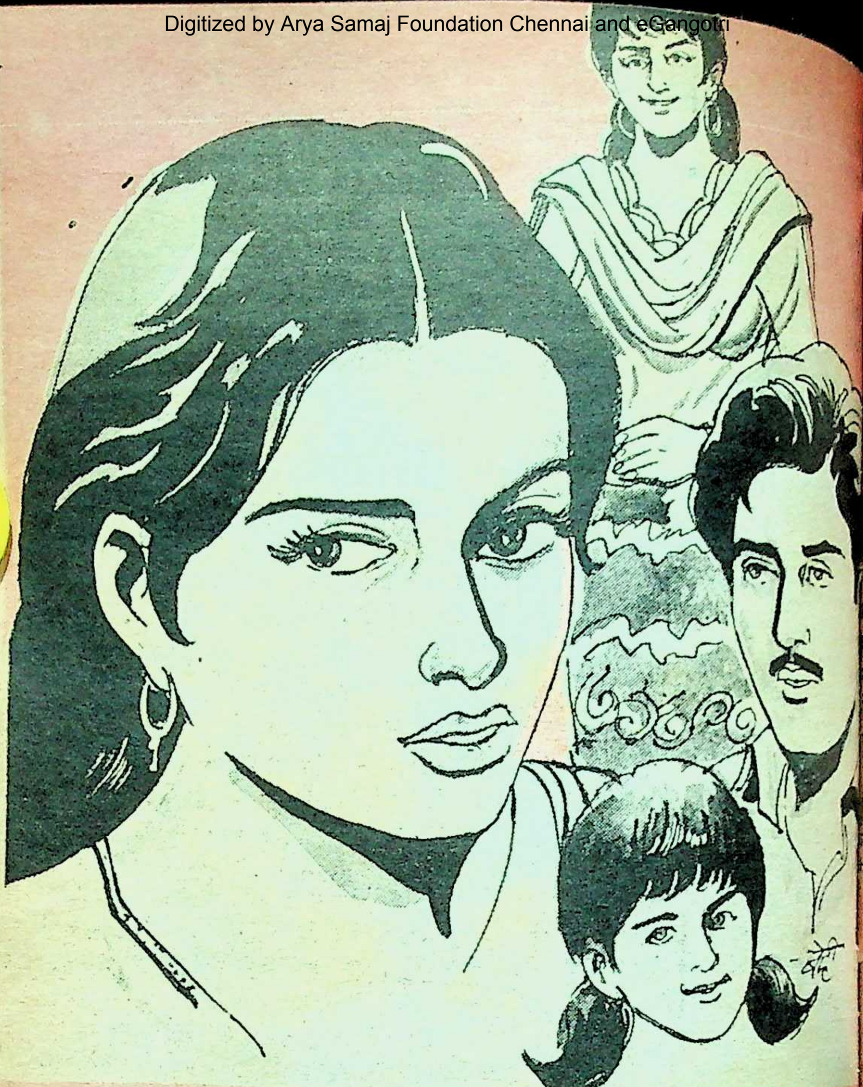

कीमत

कहानी • मसरूर अहमद

"नहींनहीं," माजिदा चीख उठी, "मैं अब तारिक से किसी भी कीमत पर शादी नहीं करूंगी. मुझे वह दिन याद है जब..."

"भूल जाओ उस दिन को," ह बेगम उस की बात काट कर समझाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ती, "हमें केवल आज पर नज़र रखनी
हिए. जो बीत गया, सो बीत गया. अब
रबार उसे दोहराने से क्या लाभ?"

"नहीं अम्मी," माजिदा शून्य में
ती हुई बोली, "मैं वह दिन कभी नहीं
ल सकती. मैं सारी जिंदगी कुंआरी रह
कती हूं, लेकिन तारिक से विवाह नहीं कर
कती."

"लगता है, तुम्हारा दिमाग कुछ
यादा ही खराब हो गया है." इस बार
मीदा बेगम क्रोधित हो गईं, "तुम्हें तो इस
त पर प्रसन्न होना चाहिए कि तारिक तुम
ही शादी करना चाहता है, वरना उस के
ए लड़कियों की क्या कमी है?"

"मैं भी यही कहती हूं कि उसे एक से
क सुंदर लड़कियां मिल सकती हैं, फिर भी
ह मुझ से ही क्यों शादी करना चाहता है?"
जिदा व्यंग्यपूर्वक बोली, "सिर्फ इस लिए
आज उस की नजरों में मेरी कीमत बढ़
ई है?"

*किन इस का मतलब यह नहीं कि मैं अपनी
सूरती के कारण कोई समझौता करने को
र हो जाऊं." माजिदा ने कहा.*

माजिदा की जिंदगी में एक दिन वह भी था जब तारिक ने उसे अस्वीकार कर दिया था अब एक दिन यह भी है जब तारिक उस की चौखट पर सिर रगड़ने को मजबूर हो गया है. आखिर माजिदा में अब वह क्या है जो पहले नहीं था?

"यही बात है." हमीदा बेगम एक लंबी सांस ले कर बोलीं, "और इसी वजह से तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, तुम्हारे मिजाज नहीं मिल रहे हैं." हमीदा बेगम का स्वर कुछ कठोर हो गया, "वरना यदि तुम एक बार आईना देख लो तो तुम्हारा क्रोध स्वयं ठंडा हो जाएगा."

माजिदा आईना देखने के लिए नहीं उठी. आईना देखने की अब आवश्यकता क्या थी? वह अब तक हजारों बार आईना देख चुकी थी और हर बार उसे दुख हुआ था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आईने कभी झूठ नहीं बोलते और वह एक बार फिर आईने की सच्ची बात सुन कर दुखी होना नहीं चाहती थी.

वह कुछ देर चुप बैठी रही. फिर बोली, "आईना देखने की क्या आवश्यकता है. मैं जानती हूं कि मैं खूबसूरत नहीं हूं. यदि होती तो आज यह स्थिति आती ही क्यों? लेकिन इस का यह मतलब नहीं कि मैं अपनी बदसूरती के कारण कोई समझौता करने को तैयार हो जाऊं.

"आप लोगों पर मेरा बोझ न पड़े, इस लिए मैं स्कूल में लड़कियों को पढ़ा कर अपना खर्च चला रही हूं. मैं अपने पैरों पर खड़ी हूं, किसी की मोहताज नहीं हूं. फिर मैं तारिक से शादी क्यों करूं? कोई समझौता क्यों करूं?"

हमीदा बेगम थोड़ी देर चुपचाप माजिदा की बातें सुनती रहीं. फिर उस के चुप होने पर समझाती हुई बोलीं, "लड़की की जब तक शादी नहीं हो जाती, वह तब तक मांबाप पर बोझ ही बनी रहती है. भले ही वह स्वयं ही कमा रही हो. हम लोगों ने तुम्हें पहले भी नौकरी करने से मना किया था, मगर तुम ने उस वक्त कहा था कि तुम यह नौकरी केवल समय गुजारने के लिए करना चाहती हो. यदि मुझे उसी समय यह बात मालूम हो जाती तो मैं तुम्हें कभी नौकरी करने की इजाजत नहीं देती. तुम्हें नौकरी करने की आवश्यकता ही क्या थी? मगर तुम ने उस समय भी हमारी बात नहीं मानी थी और इस समय भी मेरी बात मानने से इनकार कर रही हो.

"मांबाप सारी उम्र साथ नहीं दे सकते. तुम्हें अकेली रहने का अनुभव नहीं है, इसी लिए अभी मेरी बात समझ में नहीं आ रही है और तुम अपनी समझ में उचित फैसला कर रही हो. लेकिन एक दिन तुम्हें मेरी बात अवश्य याद आएगी."

माजिदा ने कोई उत्तर नहीं दिया. वह विचारमग्न हो गई थी. अतीत की घटनाएं एकएक कर उस के मस्तिष्क में चलचित्र की भांति घूमने लगी थीं.

रात के साढ़े आठ बजे थे. मा... पानी का गिलास ले कर सज्जाद साहब के कमरे की ओर बढ़ रही थी. खाना वह पहले ही रख आई थी. जैसे ही वह कमरे के दरवाजे पर पहुंची, उसे सज्जाद साहब की आवाज सुनाई पड़ी. वह हमीदा बेगम से कह रहे थे, "माजिदा के लिए हम काफी परेशान हो चुके हैं. इसलिए लगता है कि अब ... सही वक्त आ गया है."

पिता के मुख से अपना जिक्र सुन कर माजिदा दरवाजे पर ही रुक गई... उस के अंदर जाने से सज्जाद साहब का वार्तालाप रुक सकता था.

सज्जाद साहब आगे बोले, "... इत्तफाक से सादिक साहब से मुलाकात हो गई थी."

"कौन साजिद साहब?" हमीदा बेगम की आवाज सुनाई पड़ी, "वह तो ... इलाहाबाद में..."

"हांहां वही. वह आजकल दिल्ली ही आ गए हैं. उन के सब से छोटे बेटे की नौकरी यहीं लग गई है. शेष चारों बेटों की शादियां तो वह पहले ही कर चुके हैं. इसलिए वे सभी अपने बीवीबच्चों में मस्त रहते हैं. सादिक साहब के लिए ... उन के पास समय नहीं है. इसलिए आजकल वह तारिक के साथ ही रहते हैं."

"और उन की बेगम?"

"उन का इंतकाल हुए चार वर्ष हो गए. सादिक साहब और तारिक अकेले ही रहते हैं. अब उन्हें तारिक की शादी की चिंता है."

"ताकि इस आखिरी बेटे से भी हाथ धो बैठें." हमीदा बेगम हंस कर बोलीं.

"गंभीरता से सुनो," सज्जाद साहब झुंझलाए. शायद हमीदा बेगम की असमय हंसी उन्हें बुरी लगी थी, "मैं आज सादिक साहब के साथ उन के घर गया था. तारिक से भी मिला था. मेरा खयाल है कि वह माजिदा के लिए ठीक रहेगा..."

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माजिदा के हाथ से गिलास छूटतेछूटते बचा.

"सिर्फ हमारे खयाल करने से क्या होता है." हमीदा बेगम ने ठंडी सांस ली, "लड़के वालों की भी तो..."

"पूरी बात सुन कर फैसला किया करो." सज्जाद साहब फिर झुंझलाए, "मैं ने सादिक साहब से माजिदा के लिए बात कर ली है और वह राजी भी हो गए हैं. बात तारिक के चले जाने के बाद की थी, इसलिए अभी उस की मरजी का प्रश्न है. वैसे सादिक साहब को पूरी आशा है कि तारिक उन की बात मानने से इनकार नहीं करेगा."

सादिक साहब की मरजी जान कर माजिदा दिल ही दिल प्रसन्न हो गई थी. परंतु जब तारिक की मरजी का प्रश्न आया तो उस का चेहरा फिर मुरझा गया. वह

"जी मैं माजिदा के लिए बात करने आया हूं." तारिक ने कहा तो वे दोनों चौंक पड़े.

एकाएक भयभीत हो गई और सोचने लगी, मुझे अब तक कई लड़के आ कर देख चुके हैं और लगभग सभी ने मुझे नापसंद कर दिया. जिन्होंने मुझे पसंद भी किया, वे ऐसे थे, जिन्हें शायद कई लड़कियां नापसंद कर चुकी थीं. अब शायद तारिक भी...?"

"अरे माजिदा, अभी तक पानी नहीं लाई." हमीदा बेगम की आवाज से वह चौंक गई और जल्दी से गिलास ले कर अंदर चली गई."

जैसी कि माजिदा को आशा थी कि तारिक उसे देखने की इच्छा प्रकट करेगा, वैसा ही हुआ.

तारिक पढ़ालिखा, खूबसूरत और सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बढ़ कर रोजगार से लगा हुआ था. वह भला माजिदा को देखे बिना 'शादी के लिए कैसे राजी हो जाता?

वह इतवार की 'शाम थी. सादिक साहब और तारिक, सज्जाद साहब की बैठक में आ चुके थे और माजिदा अभी तक अपने कमरे में थी. वह सोच रही थी कि लड़की देखने की यह रस्म कितनी निरर्थक है. क्या किसी को दोचार मिनट देखने और दोचार बातें कर लेने से उस की अच्छाइयों और बुराइयों का पता चल सकता है? इतनी देर में किसी के गुणदोष देखे नहीं जा सकते. सिर्फ सुंदरता और कुरूपता ही परखी जा सकती है. लोग मुझ में केवल सुंदरता खोजने आते हैं और मुझे निराश कर के स्वयं भी निराश हो कर लौट जाते हैं. अब 'शायद एक बार फिर...?

"बाजी." आवाज सुन कर माजिदा चौंक गई. उस ने पलट कर दरवाजे की ओर देखा. उस की छोटी बहन साजिदा हाथों में नाश्ते की ट्रे सजाए खड़ी थी.

"बाजी, अम्मी ने कहा है कि यह ट्रे ले कर बैठक में चलिए."

साजिदा के साथ नाश्ते की ट्रे ले कर जब वह बैठक में गई तो सब से पहले उस की नजर तारिक पर ही पड़ी. तारिक ने भी उसे देखा था. फिर तो ऐसा लगा कि जैसे तारिक की नजर उस पर से हट ही न रही हो. उस ने जल्दी से निगाहें झुका लीं. उस का दिल धड़क उठा, 'क्या तारिक को मैं पसंद आ गई हूं?'

परंतु नाश्ते की ट्रे सजा कर जब माजिदा एक ओर बैठ गई और उस ने चुपके से फिर तारिक की ओर देखा तो उस का जी धक से रह गया. दिल पर जैसे किसी ने जोर से घूंसा मार दिया हो. तारिक उस की छोटी बहन साजिदा को बड़े ही गौर से देख रहा था, बिलकुल उसी प्रकार जिस प्रकार लोग कोई वस्तु खरीदने दुकान में जाते हैं. जब उन्हें कोई और अच्छी वस्तु दिखाई पड़ जाती है तो वह पहली वस्तु को भूल कर उसी का सौदा करने लगते हैं.

तारिक ने वहां बैठ कर साजिदा का सौदा नहीं किया था, न ही अपनी मर्जी बताई थी, लेकिन उस की आंखों ने सब कुछ कह दिया था. कुछ देर बाद वे लोग कुछ कहेसुने बिना ही चले गए थे.

वह जानती थी कि तारिक का निर्णय क्या होगा? और उस निर्णय को बदलना किसी के वश की बात नहीं थी.

तारिक का निर्णय जान कर हमीदा बेगम को सख्त गुस्सा आया था, "यह कैसे हो सकता है? जाइए, साफ इनकार कर दीजिए. माजिदा बड़ी है, पहले उस की 'शादी होगी." वह सज्जाद साहब से बोलीं.

परंतु सज्जाद साहब तो 'शायद कुछ और ही सोचे बैठे थे. तारिक जैसा अच्छा लड़का किसी और का दामाद बन जाए, यह उन्हें स्वीकार न था. इस लिए उन्होंने हमीदा बेगम से कहा, "इस में यों बुरा मानने की क्या बात है? तारिक ने साजिदा को पसंद कर के कोई बुराई नहीं की. मुझे यह रिश्ता स्वीकार है."

माजिदा को ऐसा लगा था, जैसे तारिक ने साजिदा को पसंद कर के उस का मजाक उड़ाया हो. उसे तारिक के साथसाथ अपने पिता से भी घृणा हो गई, जिन्होंने उस की भावनाओं का खयाल न कर के साजिदा का रिश्ता स्वीकार कर लिया था.

साजिदा, उस से चार वर्ष छोटी थी. उस का रंग भी गोरा था और चेहरे में भी बला का आकर्षण था. अब तक उस के कई रिश्ते आ चुके थे. परंतु माजिदा के कारण प्रत्येक रिश्ता अस्वीकार कर दिया जाता था.

माजिदा ने स्थिति पर गौर किया तो उसे आभास हुआ कि उस के पिता ने कोई गलत फैसला नहीं किया. आखिर उस के कारण साजिदा की 'शादी कब तक रोकी जा सकती थी? परंतु तारिक के बारे में सोच कर उस का दिमाग झनझना उठा. घृणा, केवल घृणा थी उस के दिल में, तारिक के लिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारिक और साजिदा की शादी काफी धूमधाम से हुई. माजिदा ने भी खूब बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया ताकि छोटी बहन को दुख न हो. उस के दिल में यह बात न आए कि माजिदा को उस का अधिकार छिन जाने का दुख है.

साजिदा की शादी के पश्चात माजिदा अकेली रह गई. अब वह 28 वर्ष की हो गई थी. शादी की आशा भी नहीं रही थी. अत: उस ने सोचा, 'मैं मांबाप पर बोझ नहीं बनूंगी, जल्दी ही कोई नौकरी ढूंढ़ लूंगी.'

उस का निर्णय जान कर सज्जाद साहब को बड़ा आश्चर्य हुआ, "बेटी, तुम्हें ऐसी किस बात की कमी है, जिसे पूरा करने के लिए तुम ने यह फैसला किया है?"

उस ने बहाना किया, "अब्बू, मैं अकेली रह कर ऊब जाती हूं. नौकरी कर लूंगी तो समय आसानी से कट जाया करेगा."

सज्जाद साहब राजी हो गए. माजिदा ने नौकरी के लिए आवेदनपत्र दिया. फिर शीघ्र ही उसे लड़कियों के एक स्कूल में नौकरी मिल गई. तनख्वाह इतनी थी कि अकेले उस का खर्च आसानी से चल सकता था.

समय गुजरता रहा. एक ही शहर में रहने के कारण साजिदा अकसर मायके आती रहती थी. वह आती थी तो तारिक का आना भी स्वाभाविक था. परंतु माजिदा को उस का आना जरा भी अच्छा नहीं लगता था. लेकिन वह उसे मना भी कैसे कर सकती थी. सिर्फ कुढ़ कर रह जाती और जहां भी वह बैठा होता, वहां से उठ कर चली जाती. उस के इस रवैए को सभी महसूस करते, परंतु उस से कोई कुछ न कहता.

लगभग एक वर्ष के बाद साजिदा ने एक सुंदर सी बच्ची को जन्म दिया. बच्ची का नाम समर रखा गया. माजिदा, जो साजिदा की शादी पर ही तारिक के घर गई थी, समर के जन्म के बाद अकसर वहां जाने लगी क्योंकि उसे समर से बहुत स्नेह हो गया था. वह अकसर उसे घर भी ले आती. इस

तेरा रूप

तेरा फूल सा रूप
और बदन की अंगड़ाई,
उठने नहीं देती नजर
झील के कमल की तरफ.
—कमल करमेले 'चिंतन'

कारण समर भी धीरेधीरे उस से खूब हिलमिल गई थी.

अब तारिक और माजिदा में कभी-कभार बात भी हो जाती थी, लेकिन बस औपचारिक सी. माजिदा का रवैया पूरी तरह नहीं बदला था. तारिक खुद भी इस बात को समझता था. इसलिए वह भी अधिक बात न करता. एक अजीब सा खिंचाव और तनाव रहता, दोनों के बीच.

समर अब तीन वर्ष की हो गई थी. साजिदा एक बार फिर मां बनने वाली थी. तारिक ने उसे निश्चित समय पर हस्पताल पहुंचा दिया, ताकि वहां वह सुकून से बच्चे को जन्म दे सके. परंतु वह एक नई जिंदगी को जन्म देने से पूर्व ही अपने जीवन से हाथ धो बैठी.

साजिदा की मृत्यु ने जैसे सब को तोड़ कर रख दिया. विशेषकर तारिक का हाल सब से खराब था. वह तो बिलकुल अकेला रह गया था. उस के पिता की तो उस की शादी के एक माह बाद ही मृत्यु हो गई थी.

और समर? वह बेचारी तो अपनी मां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मृत्यु से ही अनजान थी. माजिदा उस को वैसे भी बहुत स्नेह करती थी और अब तो यह स्नेह इतना बढ़ गया था कि वह अधिकतर समर को अपने ही पास रखती. खुद समर भी उस से इतनी घुलमिल गई थी कि वह अकसर जिद करती और तारिक को उसे ले कर आना पड़ता. "लीजिए, आप को बहुत याद कर रही थी." एक अस्वाभाविक मुसकान उस के अधरों पर बिखर जाती और वह समर को गोद से उतार कर खामोश खड़ा हो जाता.

समर दौड़ कर माजिदा से लिपट जाती और माजिदा भी उसे चिपटा लेती. वह भूल जाती कि तारिक अभी तक खड़ा है.

"अच्छा, मैं चल रहा हूं." तारिक अपनी उपस्थिति का आभास कराने के लिए कहता.

"बैठ जाओ." चंद औपचारिक शब्द बिना भाव के माजिदा के मुंह से निकल जाते.

"नहीं, मुझे अभी काम से जाना है. शाम को किसी समय आऊंगा और समर को ले जाऊंगा." कह कर वह चला जाता.

दिन गुजरते गए. समर पांच वर्ष की हो गई थी और खूब बातें करने लगी थी. वह अकसर तारिक से माजिदा की प्रशंसा करती रहती. बहुत सी छोटीछोटी बातें तारिक के लिए महत्त्वपूर्ण बनती जा रही थीं और उसे बहुत कुछ सोचने पर विवश कर रही थीं.

साजिदा की मौत के कुछ दिनों के बाद से ही तारिक के मित्रों ने उसे दूसरे विवाह का परामर्श देना आरंभ कर दिया था.

वह उन की बातें सुनता, गौर करता परंतु किसी निष्कर्ष पर न पहुंच पाता. दूसरी शादी उसे निश्चय ही एक समस्या लग रही थी.

पत्नी और बेटी दोनों के बीच सामंजस्य बैठाना कोई आसान काम न था. फिर पत्नी के रूप में ऐसी लड़की की आवश्यकता थी जो पत्नी और मां दोनों का कर्तव्य निभा सके. ऐसी लड़की ढूंढ़ना आसान नहीं था. इसीलिए मित्रों के कहने के बावजूद वह दूसरे विवाह के लिए सहमत न हुआ.

परंतु जैसेजैसे समय गुजर रहा था उसे ज्ञात हो रहा था कि दूसरा विवाह उस के लिए आवश्यक बनता जा रहा है क्योंकि समर के लालनपालन में उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था.

वह तो अच्छा होता कि समर अकसर अपने ननिहाल में रहने चली जाती थी, जिस से तारिक को कुछ छुट्टी भी मिल जाती थी वरना उसे और परेशानी होती.

तारिक जब भी दूसरी शादी के लिए किसी ऐसी लड़की की कल्पना करता जो पत्नी बनने के साथसाथ समर की मां भी बन सकती हो, उसे सच्चा स्नेह दे सकती हो तो अनायास ही माजिदा का चेहरा उस की निगाहों में घूम जाता.

माजिदा, तारिक के इस बदले नजरिए से अनभिज्ञ थी. वह नहीं जानती थी कि समर के प्रति उस के स्नेह का क्या अर्थ लिया जा रहा है. समर उस की बहन की बेटी थी. उस से स्नेह होना स्वाभाविक ही था.

तारिक माजिदा से शादी करने के बारे में गंभीरता से सोचता, किंतु उसे पुरानी बात याद आ जाती, जब उस ने माजिदा से शादी करने से इनकार कर दिया था और साजिदा से शादी कर ली थी. बस यही बात सोच कर वह दिल की बात जबान पर लाते हुए डरता था. परंतु अब उसे विवाह तो करना ही था. अतः बात करना जरूरी था.

एक दिन शाम को जब तारिक सज्जाद साहब के घर आया तो यही विषय ले बैठा. बात समर को ले कर आरंभ हुई. उस ने कहा, "समर के कारण मुझ पर भारी दायित्व आ पड़ा है. मैं चाह कर भी मां और बाप दोनों का फर्ज नहीं निभा सकता और इसलिए मजबूर हो कर मैं दूसरी शादी के विषय में सोच रहा हूं."

"तुम ठीक कहते हो," सज्जाद साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोले, "तुम चाह कर भी मां की कमी पूरी नहीं कर सकते. तुम्हें दूसरी शादी अवश्य कर लेनी चाहिए."

माजिदा उस समय घर पर नहीं थी. वह समर को साथ ले कर कुछ खरीदारी करने गई हुई थी. वह होती तो शायद तारिक अपनी बात न कर पाता. परंतु अब उसे अवसर मिल गया था.

वह बोला, "जी हां, इसी लिए मैं आप से माजिदा के लिए बात करने आया हूं."

सज्जाद साहब और हमीदा बेगम दोनों ही चौंक पड़े.

सज्जाद साहब बोले, "तुम यह क्या कह रहे हो? क्या तुम वह बात भूल चुके हो जब तुम ने..."

"नहीं, मुझे याद है." तारिक सिर झुका कर बोला, "परंतु अब उस बात को भूल जाना ही अच्छा है. आप को भी अब वह बात भुला देनी चाहिए."

सज्जाद साहब दूरदर्शी व्यक्ति थे. कोई भी फैसला जज्बात में नहीं करते थे. माजिदा के लिए वह सदा से ही चिंतित रहे थे और अभी तक उन की यह चिंता समाप्त नहीं हुई थी. वह तारिक को आश्चर्य से देख रहे थे और सोच रहे थे, 'कैसी विडंबना है कि कई वर्ष पूर्व मैं ने माजिदा की शादी तारिक से करनी चाही थी परंतु उस समय तारिक ने ही इनकार कर दिया था और आज वही तारिक माजिदा को अपनाना चाहता है, मगर क्यों?'

उन्होंने पूछा, "मगर बेटे, माजिदा में अब ऐसी क्या बात हो गई है जो तुम...?"

"आप नहीं समझ सकते," तारिक बोला, "पिछले कितने ही दिनों से मैं महसूस कर रहा हूं कि माजिदा का अस्तित्व मेरे लिए अहम बनता जा रहा है. समर के प्रति उस के असीम स्नेह को देख कर मुझे लगता है कि समर की मां की कमी यदि कोई लड़की पूरी कर सकती है तो वह माजिदा ही है. जैसा प्यार माजिदा समर को दे रही है, शायद दूसरी कोई लड़की नहीं दे सकेगी. इसी लिए मैं उस से विवाह करना चाहता हूं."

सज्जाद साहब और हमीदा बेगम दोनों आश्चर्यचकित थे. माजिदा की कीमत तारिक की दृष्टि में यों बढ़ जाएगी, यह तो उन्होंने कभी सोचा ही नहीं था.

हमीदा बेगम बोलीं, "ठीक है. लेकिन माजिदा की मरजी जाने बिना हम लोग कुछ नहीं कह सकते."

तारिक बोला, "मैं आज रात को ही एक हफ्ते के लिए कलकत्ता जा रहा हूं. इस बीच आप माजिदा से बात कर लें और...."

"क्या सोच रही हो?" हमीदा बेगम ने माजिदा को खयालों के भंवर से खींच लिया.

"कुछ भी नहीं." माजिदा ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया.

"क्या तुम्हें समर का भी खयाल नहीं है?" हमीदा बेगम बोलीं, "जिसे तुम बेहद प्यार करती हो और जो तुम्हारे बिना रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती?"

माजिदा सिर झुकाए कुछ देर बैठी रही, फिर सिर उठा कर धीरे से बोली, "हां, यह सही है कि मैं समर को चाहती हूं, परंतु

विवाह में निषिद्ध धुनें

आयरलैंड के जो युगल 'हेल्प मी इट थ्रू द नाइट' जैसे गानों की तेज धुनों पर अपना विवाह रचाने की आशा करते हैं, उन्हें अब निराश होना पड़ेगा. डबलिन के रोमन कैथोलिक पादरियों ने 30 जानेमाने गानों को जो अब तक विवाह के अवसर पर खूब गाएबजाए जाते थे, निषिद्ध कर दिया है. इन पादरियों का कहना है कि इन गानों का धर्म से कोई सरोकार नहीं है. इसलिए इन्हें विवाह की रस्मों के समय गानाबजाना ठीक नहीं है. इन गानों में आयरलैंड के गायक किश डी बर्ग का विश्वविख्यात गाना 'लेडी इन रेड' भी शामिल है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर को प्रेम करने का यह मतलब तो नहीं कि मैं उस की खातिर तारिक से विवाह कर लूंगी? मैं समर को इसलिए चाहती हूं कि वह मेरी बहन की बेटी है. क्या भानजी से प्रेम करना अपराध है?

"तारिक समर के प्रति मेरे इस स्नेह का यह अर्थ लगा रहा है कि मैं उस की पत्नी बनना चाहती हूं, परंतु मैं उस का यह भ्रम तोड़ दूंगी." माजिदा क्रोधित हो कर बोली.

"तारिक ने ऐसी कोई बात नहीं कही है." हमीदा बेगम उसे समझाती हुई बोलीं, "मैं फिर कहती हूं कि मेरी बात मान लो और..."

"नहीं, कभी नहीं." माजिदा सिर झटक कर बोली, "मैं ऐसा कभी नहीं करूंगी. यह मेरा आखिरी फैसला है."

सज्जाद साहब और हमीदा बेगम माजिदा को समझा कर हार गए, परंतु उस का फैसला नहीं बदला. आखिर उन्होंने उसे उस के हाल पर छोड़ दिया.

माजिदा की कीमत आज तारिक की नजरों में बढ़ गई थी. कीमत बढ़ी थी तो दिमाग चढ़ना भी जरूरी था. इस लिए कोई बात उस की समझ में नहीं आ रही थी.

वह सोचती, 'आज तारिक के लिए मैं कीमती वस्तु हो गई हूं, इसलिए कि मैं समर को चाहती हूं और इसी लिए वह मुझ से शादी भी करना चाहता है क्योंकि मैं समर की देखभाल अच्छी तरह कर सकूंगी. क्या यही है, मेरी कीमत?

'नहीं, मैं तारिक को बता दूंगी कि मैं सारी जिंदगी कुंआरी रह सकती हूं, परंतु ऐसा समझौता कभी नहीं कर सकती. मैं समर को प्यार अवश्य करती हूं, परंतु उस की मां का स्थान नहीं ले सकती. उसे पालने की जिम्मेदारी मेरी तो नहीं है. यह तारिक की जिम्मेदारी है. वह उसकी किसी भी तरह परवरिश करे, किसी से भी शादी करे, मुझे उस से कोई मतलब नहीं.'

तारिक अभी कलकत्ता से नहीं आया था. हमीदा बेगम और सज्जाद साहब, माजिदा की जिद [illegible] जरूर परंतु जबरदस्ती भी नहीं कर सकते थे.

उस दिन सुबह माजिदा स्कूल देर से पहुंची. सभी अध्यापिकाएं अपनीअपनी कक्षाओं में जा चुकी थीं. कार्यालय में केवल प्रधानाचार्या शारदा और संध्या बैठी हुई थीं.

संध्या भी उसी स्कूल की अध्यापिका थी. वह भी अत्यंत साधारण रूपरंग की लड़की थी. आयु 30 वर्ष से ऊपर हो चुकी थी. परंतु विवाह अभी तक नहीं हो सका था. कारण, वही सुंदरता की कमी और दहेज का अभाव.

वह शारदाजी से कह रही थी, "आप ठीक कहती हैं, दीदी. मगर मैं भी क्या करूं? कब तक प्रतीक्षा करूं? मैं तंग आ गई हूं इस जीवन से. मेरे मातापिता मुझे कमाने की मशीन समझते हैं. उन्हें कभी भी मेरी चिंता नहीं होती. आज तक वे मेरे लिए कोई उचित वर नहीं खोज सके.

"दीदी, इसी लिए मैं ने मजबूर हो कर यह फैसला किया है. मेरे मातापिता इस के विरुद्ध हैं, परंतु मैं अब किसी की नहीं सुनूंगी..."

संध्या कुछ और भी कहती, परंतु माजिदा के पहुंच जाने से उस ने बात अधूरी ही छोड़ दी थी. थोड़ी देर बाद वह उठकर चली गई.

संध्या के जाने के बाद शारदाजी स्वयं ही माजिदा से बोलीं, "माजिदा, संध्या अब हम लोगों से शीघ्र ही बिछुड़ने वाली है क्योंकि उस का विवाह होने वाला है."

"अच्छा." माजिदा ने प्रसन्नता प्रकट की, "बड़ी खुशी की बात है. लड़का कौन है? कहां रहता है?" उस ने उत्सुकतावश पूछा.

"लड़का." शारदा एक गहरी निश्वास छोड़ कर बोलीं, "उसे लड़का नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसकी आयु 55 वर्ष से किसी भी तरह कम नहीं है."

"क्या?" माजिदा ने चौंक कर शारदाजी को देखा.

शारदाजी बोलती रहीं, "पहली पत्नी

(शेष पृष्ठ 171 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

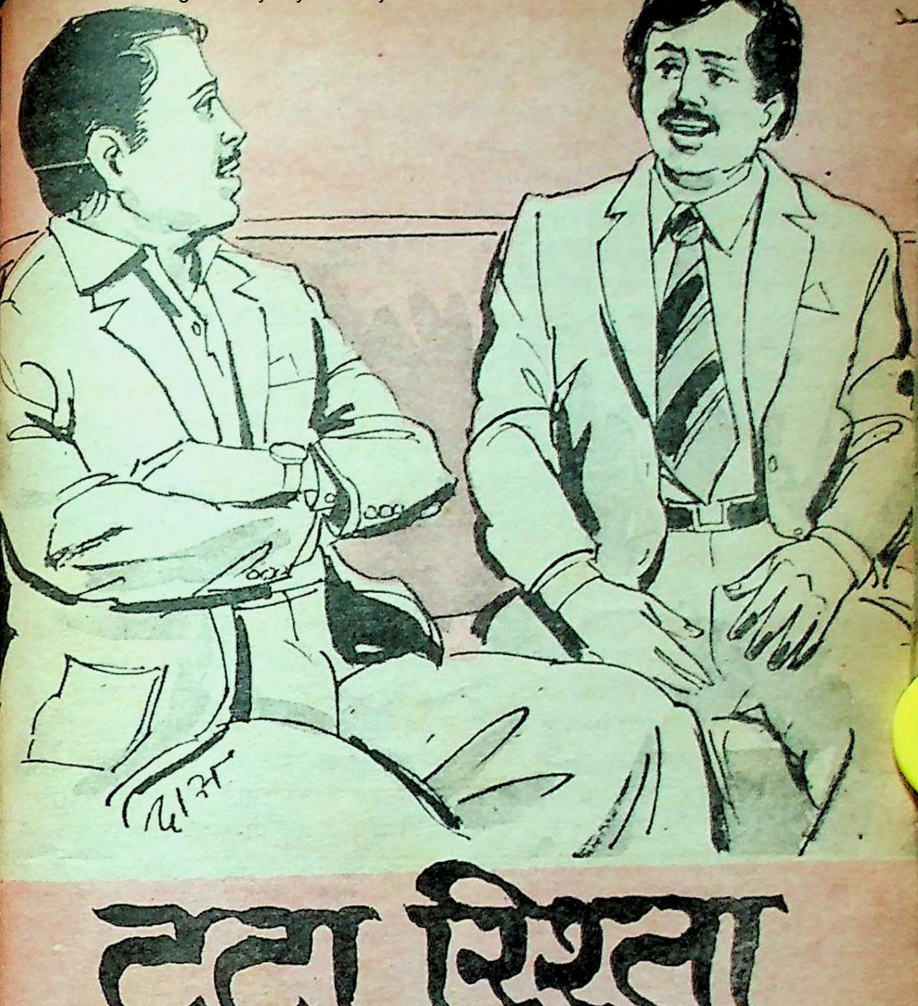

टूटा रिश्ता

कहानी • सुरेशकुमार गोयल

हमारे विभाग का एक सहायक प्राध्यापक नौकरी छोड़ कर किसी अमरीकी विश्वविद्यालय में चला गया. उस की जगह पर हमें कोई उचित प्रोफेसर नहीं मिल पाया. सोचा, क्यों न कनाडा से बाहर ही खोज की जाए. हम ने ब्रिटेन के एक अखबार में विज्ञापन दिया और ब्रिटेन, भारत, आस्ट्रेलिया के कई विश्वविद्यालयों में उस विज्ञापन की प्रतियां भेज दीं.

हमारे पास 25 से अधिक उम्मीदवारों ने अपने आवेदनपत्र भेजे. सात भारत से भी आए थे. अपने विभाग के अध्यक्ष की हैसियत से यह मेरी ही जिम्मेदारी थी कि 10-15 उम्मीदवारों की सूची तैयार कर के अपने विभाग की चयन समिति के सामने पेश करूं, जिस से कि उन पर अच्छी तौर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमल मुझे अपने कालेज के लिए हर तरह से उपयुक्त व्यक्ति लगा था लेकिन उस के मुंह पर वंदना का नाम आते ही मैं सकपका गया. क्यों? यह तो मैं खुद भी नहीं जानता था.

गौर कर के हम पांचछः उम्मीदवारों से साक्षात्कार करने की कोशिश करें. हमें किसी उम्मीदवार को तुरंत ही नियुक्त करने की कोई जल्दी नहीं थी. हम तो बस योग्य उम्मीदवार की खोज में थे.

विभागीय चयन समिति ने कई बार विचारविमर्श करने के पश्चात सात लोगों को चुना, जिन के साथ हमें गंभीरता से बात करनी थी. उन सात लोगों में दो भारत के, एक आस्ट्रेलिया का तथा चार ब्रिटेन के थे. उन लोगों को मांट्रियल साक्षात्कार के लिए बुलाने पर तो हमारा विभाग लुट ही जाता. यह तय हुआ कि विभाग के लोग आए दिन विदेशों में सभाओं और गोष्ठियों में जाते ही रहते हैं, क्यों न उस समय उन लोगों से मिल कर बात कर ली जाए. एक बार जब किसी से कोई विभाग का सदस्य मिल लेगा तो विभाग की चयन समिति को अपनी रिपोर्ट दे देगा.

इस तरीके को अपनाने से एक हानि यही थी कि उम्मीदवार से विभाग का केवल एक आदमी ही मिल पाएगा. साधारणतया विभाग के सब सदस्य नौकरी के उम्मीदवार से मिलते हैं, तभी किसी को स्थायी पद मिल पाता है. इस समस्या का हल यह निकाला गया कि जिस उम्मीदवार को चुना जाएगा, उस से केवल एक साल का अनुबंध किया जाएगा. अगर उम्मीदवार पसंद नहीं आया तो एक साल बाद उस की छुट्टी या उस को नियमित साधारण तरीके का दो साल का अनुबंध दे देंगे.

हमारे विभाग के एक प्रमुख प्राध्यापक लंदन किसी सम्मेलन के लिए जा रहे थे. वे रहने वाले भी ग्लास्गो के थे. शायद सोचा होगा कि विश्वविद्यालय के खर्चे पर तो लंदन पहुंच ही जाएंगे. फिर वहां से चार सौ मील के बस, रेल या हवाई जहाज के सफर के ही तो पैसे खर्च करने पड़ेंगे. थोड़े से पैसे अपनी जेब से खर्च कर के घर वालों से भी मिलना हो जाएगा. ऐसा मौका पड़ने पर हर कोई ऐसा ही करता है. हम भी खुश थे, उन पर ब्रिटेन के चार उम्मीदवारों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात्कार करने की जिम्मेदारी डाल दी गई.

मुझे भारत के उद्यमी अनुसंधान समुदाय के सालाना जलसे में जमशेदपुर जाना था. उस में एक शोधपत्र पढ़ना था. भारत के दो उम्मीदवारों से मैं मिल ही लूंगा. केवल आस्ट्रेलिया का उम्मीदवार ही बचा. हम लोगों ने यह निर्णय किया कि पहले इन छः से मिल लेते हैं अगर इन में से कोई भी नहीं जंचा तो सातवें को मांट्रियल ही बुला लेंगे.

दिसंबर के दूसरे हफ्ते में मुझे भारत जाना था. चार हफ्ते का कार्यक्रम बनाया. पांच दिन तो सम्मेलन में ही निकल जाने थे. एक दिन कलकत्ता में एक उम्मीदवार से मिलने में निकल जाएगा. वहां से दूसरे उम्मीदवार को मिलने बंबई जाने का इरादा था और फिर बंबई से दिल्ली.

कुछ दिन घर वालों के साथ बिता कर मांट्रियल जनवरी के पहले हफ्ते के अंत में आने का इरादा था. सोचा, दिल्ली में कई दिन तो खरीदारी में ही निकल जाएंगे. पत्नी और बच्चों ने चीजों की लंबी सूची बना कर दी थी. अगर कोई भी चीज नहीं ले गया तो घर में भी नहीं घुसने देंगे.

भारत पहुंच कर जब तीसरे ही दिन जमशेदपुर के लिए रेलगाड़ी से जाने लगा तब पिताजी को अच्छा न लगा. वर्षों बाद भारत आया था. अभी तो वह मुझे ढंग से देख भी न पाए थे कि चल दिया.

जमशेदपुर में सम्मेलन का मजा आ गया. आयोजकों ने खूब खातिरदारी की. बड़ा अच्छा प्रबंध था. वहां की स्थानीय टाटा कंपनियों की तरफ से खानेपीने का पूरा खयाल रखा गया. सम्मेलन में हिस्सा लेने तीनचार लोग ही विदेशों से आए थे.

सम्मेलन के बाद हवाई जहाज से कलकत्ता गया. कलकत्ता में होटल में ठहरा था. एक रात वहां बितानी थी. कलकत्ता में डाक्टर विमल कुमार साक्षात्कार के लिए तीन बजे होटल में आने वाले थे. होटल साढ़े

नरेंद्र कुमार के घर हुई बैठक में पिताजी ने वंदना को देख कर मन ही मन में उसे अपनी पुत्रवधू बनाने का निर्णय कर लिया था. ▼

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारह बजे पहुंच गया. जमशेदपुर में इतने दिन काफी भारी खाना खाया था इस लिए सोचा, आज दोपहर के खाने की छुट्टी ही कर ली जाए. चार बजे के लगभग डाक्टर विमल कुमार के साथ चाय पी ही जाएगी.

कुछ देर के लिए लेट गया. बड़ी मीठी नींद की झपकी आ गई. दो बज गए थे, जब सो कर उठा. बाहर खिड़की से झांक कर देखा, लोगों की भीड़ कलकत्ता की दिसंबर की धूप में चमक सी उठी थी. लगता था, जैसे कोई फुटबाल का खेल खत्म हो गया हो और लोगों की भीड़ अपनेअपने घर जा रही हो.

डाक्टर विमल कुमार के आने में अभी आधा घंटा था. मैं समय बिताने के लिए जमशेदपुर में ही खरीदा अखबार पढ़ने लगा. इतने वर्ष विदेश में रहने के कारण भारत के अखबार पढ़ने में मन ही नहीं लगता. दोचार नामों को छोड़ कर सभी नाम अजनबी से लगते हैं. कमरे के रेडियो पर विविध भारती का कार्यक्रम सुनने लगा.

थोड़ी देर बाद दरवाजे पर दस्तक हुई. बाहर डाक्टर विमल कुमार खड़े थे. मैं ने दरवाजा खोल कर उन से हाथ मिलाया. डाक्टर विमल कुमार की उम्र 40 वर्ष के आसपास ही थी. मेरी ही उम्र के थे. काफी प्रभावशाली व्यक्तित्व था उन का. वहीं कलकत्ता में उप प्राध्यापक के पद पर काम कर रहे थे. उन को लगभग 15 वर्ष का पढ़ाने और शोध कार्य करने का अनुभव था.

विमल कुमार से लगभग दो घंटे तक बातें होती रहीं. मुझे उन्होंने काफी प्रभावित किया. उन्होंने जितने शोधपत्र लिख रखे थे, उन के आधार पर उन को अमरीका और कनाडा के किसी भी विश्वविद्यालय में काफी अच्छी नौकरी मिल सकती थी. उन्होंने शायद कई बार विदेशों में आवेनदनपत्र भेजे भी थे, पर साक्षात्कार की नौबत नहीं आ पाई. विदेशी भारत से साक्षात्कार के लिए पैसे खर्च कर के उम्मीदवार को बुलाना नहीं चाहते और यहां से अपने खर्च पर विदेश साक्षात्कार करने की कौन हिम्मत कर सकता है?

मैं ने विमल कुमार के कुछ शोधपत्र, जो उन्होंने आवेदनपत्र के साथ ही भेजे थे, मांट्रियल में पढ़े थे. कुछ और उन्होंने मुझे दिखाए. वह अपने सारे शोधपत्रों की कापियां लाए थे. कुल मिला कर उन के 50 से ऊपर शोधपत्र भारत और विदेशी पत्रपत्रिकाओं में छप चुके थे. उन के जितने शोधपत्र तो हमारे विभाग में किसी के भी नहीं थे. मुझे विमल कुमार अपने विभाग के लिए अत्यंत उपयुक्त लगे, परंतु मैं उन को अधिक कुछ न कह सका. बाकी उम्मीदवारों से जब मिल लेंगे तभी कुछ सही ढंग से कहा जा सकता था. मैं ने हर किसी उम्मीदवार के पूरे विवरण पढ़े थे. विमल कुमार उन सब से आगे ही थे.

विमल कुमार बाहर नौकरी करने को बहुत आतुर थे. उन के साथ साक्षात्कार तो समाप्त हो ही गया था, सोचा कि कहीं चल कर चाय पी जाए. मैं ने उन को कह दिया कि अब साक्षात्कार समाप्त हो गया है. अब इधरउधर की ही बातें करेंगे. खाने के लिए चाय पर बंगाली मिठाई का आर्डर दिया. मांट्रियल में मिठाई तो घर पर ही बनाते हैं, रसगुल्ले और चमचम घर पर बने अच्छे तो होते हैं पर कलकत्ता की अच्छी दुकान पर बनी इन चीजों का स्वाद ही अनोखा होता है. मेरे तो मुंह में पानी आ ही रहा था. सोचा, दोपहर का खाना नहीं खाया इसलिए इस समय मिठाई अधिक खाई जा सकती है.

विमल कुमार कानपुर के रहने वाले थे. उन के पूछने पर मैं ने बताया कि हम तो खानाबदोश ही रहे. पिताजी भिलाई के स्टील संयंत्र में काम करते हुए सेवानिवृत्त हुए. वैसे रहने वाले देहरादून के थे.

विमल कुमार भिलाई के स्टील संयंत्र का नाम सुन कर चौंक गए, "वहां तो मेरे ससुर भी काम किया करते थे. वह वहां पर मुख्य लेखा अधिकारी थे."

"मैं तो खुद वहां कभी नहीं रहा. बाहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही पढ़ता रहा [illegible] की [illegible] में बदला जाता था. आप के ससुर का नाम नरेंद्र कुमार तो नहीं?" पता नहीं कहां से नरेंद्र कुमार का नाम मेरे दिमाग में अब तक रह गया था. इतने वर्ष बीतने पर भी यह नाम नहीं भूल पाया था.

"हां, यही नाम है, मेरे ससुर का. शायद आप ने वंदना को देखा होगा. वैसे वह लखनऊ में ही पढ़ी थी, अपने नाना के पास." विमल कुमार को लगा कि शायद इस पुरानी जानपहचान से ही कुछ लाभ हो जाए, "आप के पिताजी भी क्या उसी विभाग में थे?"

"नहीं, पिताजी तो इंजीनियर थे. पर ब्रिज बहुत खेला करते थे. उस सिलसिले में नरेंद्रजी से उन की मुलाकात होती ही रहती थी. मैं भी शायद एकाध बार खेला हूं उन के साथ. जब चार खेलने वाले नहीं मिलते थे तो पिताजी मुझे बुला भेजते थे." मेरे सामने नरेंद्र कुमार का चेहरा एक पल में घूम गया.

"हां, ब्रिज तो वह अब भी बड़े शौक से खेलते हैं. सेवानिवृत्त होने के बाद क्लब तो छूट गया पर घर में अपने जैसे लोगों को इकट्ठा कर के खूब ताश खेलते हैं." विमल कुमार ने कहा, "फिर तो आप शायद वंदना से भी मिले होंगे."

"नहीं, वंदना से कभी मिलना नहीं हुआ." मैं ने सत्य बात ही कही.

"तब आज आप वंदना से मिल लीजिएगा. आज शाम का खाना आप हमारे साथ ही खाइए. इनकार मत कीजिएगा." विमल कुमार ने विनती की.

"अब देखिए, सात बज गए हैं, खाना बनाने में देर हो जाएगी. मुझे कल तड़के की हवाई उड़ान से बंबई जाना है. अगर आप मांट्रियल आ गए तो फिर जी भर कर आप के यहां खाना खाऊंगा." मैं ने नम्रता से विमल कुमार का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया. हम दोनों ही चाय पी चुके थे. मैं ने बिल अदा किया और वहीं से विमल कुमार से विदा ले ली.

दर्द के नगमे

दर्द के नगमे खुशी से
गुनगुनाए जा रहा हूं,
मैं किसी के गम को
सीने से लगाए जा रहा हूं,
हो न जाए वो कहीं
बदनाम मेरे आंसुओं से,
इसलिए गम को
तबस्सुम से दबाए जा रहा हूं.

—प्रदीप वर्मा 'सोना'

होटल उस रेस्तरां से दो मील दूर होगा, विमल कुमार के साथ तो यहां तक टैक्सी से आया था. सोचा, पैदल ही होटल वापस जाया जाए. कुछ तो मिठाई पचेगी ही. जब बंगाली मिठाई सामने होती है तब मैं बिलकुल ही बच्चा बन जाता हूं और बिना अपने पेट और भूख का ध्यान कर के मिठाई खाता हूं.

पैदल चलतेचलते मेरा ध्यान बरसों पुरानी बात पर केंद्रित हो गया. पिताजी की ब्रिज की बैठक एक दिन नरेंद्र कुमार के घर थी. वहीं शायद पिताजी ने वंदना को देख लिया.

उन्होंने मां को वंदना के बारे में बताया. मां ने भी वंदना को उस के घर किसी बहाने से जा कर देख लिया. मां और पिताजी को वह भा गई.

उन दिनों मां और पिताजी मेरे लिए उचित संबंध की तलाश कर ही रहे थे. छोटी बहन करुणा ने ही बताया था कि पिताजी ने नरेंद्र कुमार से वंदना का रिश्ता करने की बात की थी परंतु नरेंद्र कुमार ने दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूक जवाब दे [illegible] दूसरी बात है, 'शादीब्याह तो जातबिरादरी देख कर ही किए जाते हैं. पिताजी ने तो कभी सोचा भी नहीं था कि वह उतने रूढिवादी हैं. खैर, इस किस्से का नतीजा यह हुआ कि पिताजी ने नरेंद्र कुमार के साथ ब्रिज खेलना बंद कर दिया. 'शायद यह कहना अधिक ठीक होगा कि नरेंद्र कुमार ने ही अपनी दोस्ती का हाथ पीछे खींच लिया. वे काफी ऊंचे पद पर थे.

करुणा ने जब सारी कहानी सुनाई तो मैं ने अनसुनी सी कर दी. जाति को ले कर कई बार मैं अपमानित हो चुका था. पिताजी और मां बेकार में ही मेरे कारण अपमानित हुए, यह सोच कर मन दुखी हुआ.

मैं सोच रहा था कि विमल कुमार के बारे में जो रिपोर्ट दूंगा, उस से विभाग के लोग भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे. बंबई वाला उम्मीदवार तो विमल कुमार के आगे काफी हलका महसूस होता है. देखो, ऊंट किस करवट बैठता है.

न जाने क्यों मुझे वंदना को देखने की इच्छा तीव्र हो उठी. सोचने लगा, विमल [illegible] स्वीकार कर लिया होता. अच्छी तो लगती ही होगी, क्योंकि मां और पिताजी को तो वह बहुत पसंद आई थी. क्या वंदना को मेरे बारे में किसी ने बताया होगा. 'शायद नहीं बताया होगा. मातापिता ऐसी बातें लड़कियों को कहां बताते हैं, मैं सोचने लगा.

अगर विमल कुमार को हमारे विभाग ने नौकरी देने का निर्णय कर लिया तो कितनी अजीब बात हो जाएगी. विभाग के सदस्य होने के कारण और वह भी भारतीय, हमारे घर आनाजाना तो होगा ही. 'शायद वंदना को यह बात कभी भी मालूम न हो सकेगी कि जिस घर में वह एक मेहमान की तरह आजा रही है, उस घर की वह मालकिन हो सकती थी. अगर उसे मालूम हो जाए कि कभी उस का रिश्ता मेरे साथ होने की बात चली थी, तब उसे हमारे घर में आना कितना विचित्र लगेगा. वह कम से कम उस टूटे रिश्ते का जिक्र विमल कुमार से तो बिलकुल नहीं करेगी. बिलकुल उसी तरह, जिस तरह मैं अपनी पत्नी से वंदना के बारे में कुछ भी नहीं कह सकूंगा. ●

सबसे सुंदर,
सबसे अनूठे!

पॉलिएस्टर ड्रेस मटीरियल्स
सिल्क-एन-सिल्की शिफ़ॉन,
आलमंड, मोहिनी,
सजनी,
सूमा एवं मारवल.

दावणगेरे
फ़ैशन फ़ैब्रिक्स

निर्माताः दि दावणगेरे कॉटन मिल्स लिमिटेड, दावणगेरे-५७७ ००२.

शोरूमः ● कावेरी भवन, बंगलोर-५६० ००९. ● दाजीबनपेट, हुबली-५०० ०२०.
● होलालकेरे रोड, चित्रदुर्गा-५७७ ५०१. ● चित्रदुर्गा रोड, दावणगेरे-५७७ ००२.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसकाना सीख लो

गीत मेरे किसी को उदास मत करना
किसी नैन गागर में नीर मत भरना.

दुख अपना तू मन के शीशे में जड़ कर
मुसकाना सीख ले खुशी से बिछड़ कर
पीड़ा की चाप अधर द्वार मत धरना.

संगम हृदय का हृदय से कराने
द्वेष आंधियों में प्रेम दीपक जलाने
मरने से भी तू सौ बार मत डरना.

कंठ मौन होगा, ये स्वर मौन होंगे
एक दिवस जब मेरे अधर मौन होंगे
पतझड़ के फूलों सा तू मत बिखरना.

—जया 'नर्गिस'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविभाजित प्यार

कहानी • डा. क्षमा चतुर्वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ में लिया उपन्यास कामिनी ने नीचे रख दिया था. लगा कि घंटे भर का समय यों ही बरबाद किया. कभी इसी तरह के उपन्यास और कहानियां उसे कितनी पसंद थीं. हाथ में इस तरह की कोई किताब आ जाए तो खानापीना और सोना तक भूल कर वह पहले किताब ही पूरी पढ़ती थी. पर अब? अब तो जैसे उम्र के साथसाथ पसंद भी बदलती जा रही थी.

सिर में फिर दर्द होने लगा था. पता नहीं क्यों, आजकल तबीयत भी गिरीगिरी सी रहने लगी थी. परसों ही तो डाक्टर निर्मल को दिखा कर दवाई लाई थी. कल ठीक रही और आज फिर शरीर सुबह से ही टूटटूटा सा लग रहा है. घड़ी देखी, 12 बजने वाले थे. एक बजे बच्चों की बस आती है. टीनू और बबली को बस स्टाप से लेती आएगी और सामने ही डाक्टर निर्मल की डिस्पेंसरी है. अभी तो मिल जाएंगे. तब तक अधूरा स्वेटर ही पूरा कर ले, सोच कर बुनाई उठाई थी, पर मन भटकता रहा.

कभी उपन्यासों की ये रोमानी बातें मन को कितना गुदगुदा जाती थीं. घंटों वह उन्हीं खयालों में डूबी रहती थी. पढ़ाई लड़कियों के स्कूल में शुरू हुई थी. फिर लड़कियों के ही कालिज में आ कर खत्म भी हो गई थी. फिर भी कालिज के दिनों में वह सोचा करती थी कि उस का भी कोई अधीर प्रेमी होता. अकसर उस की सहेलियां बातें करती हुई एकदूसरे को छेड़तीं, 'सुना कामिनी तू ने, कल नीलू का देवदास आया था. कालिज गेट के सामने घंटों खड़ा रहा बेचारा, एक झलक नीलू की देख पाने को.'

तब उस के मन में अनजाने ही कहीं कुछ छू जाता. काश, उस का भी कोई

कामिनी सोचती थी कि अभय को उस से प्यार नहीं है. पर अभय का प्यार उस गहरे सागर की भांति था जिस की थाह गहरे जा कर ही पता लग सकती थी.

[illegible]

फिर बी.ए. करते ही उस की सगाई हो गई और महीने भर बाद ही शादी. शादी के पहले अभय को देख कर वह उस के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रही थी. आकर्षक, पढ़ालिखा इंजीनियर. हां, ऐसे ही तो सपनों के राजकुमार की उस ने तमन्ना की थी.

शादी के बाद ससुराल आ कर जरूर माहौल बिलकुल बदला हुआ लगा था. अपने घर में वह इकलौती बेटी थी. मांबाप के खूब लाड़प्यार में पल कर बड़ी हुई. जो फरमाइश मुंह से निकलती, तुरंत पूरी हो जाती थी. इतनी बड़ी होने पर भी मां तो उसे निरी बच्ची ही समझती थीं.

पर यहां तो जैसे आते ही एकदम से बड़ी बन गई थी. अभय घर का बड़ा बेटा था. पिताजी का काफी समय पूर्व देहांत हो चुका था. मां, छोटे भाई विनय और बहन विभा की जिम्मेदारी भी उस पर ही थी. इसलिए शायद उस के सोचनेसमझने का ढंग भी ससुराल में आते ही परिपक्व हो चला था.

यों ससुराल में आते ही उसे खूब सम्मान मिला था. अभय और वह कशमीर घूमने गए थे. पर उसे बारबार लगता कि अभय उस का वैसा आतुर प्रेमी नहीं है, जैसा कि वह अपने उपन्यासों, कहानियों में पढ़ा करती थी. उस की बातें कहीं से भी क्यों न प्रारंभ हों, मां, बहन, भाई का जिक्र आ कर ही समाप्त होती थीं. उन से संबंधित साधारण सी घटनाओं को भी वह इतना रस ले ले कर सुनाता कि कामिनी को उकताहट होने लगती.

पहाड़ों पर घूमते समय जब वह सोचती कि यहां अभय सिर्फ उसी के बारे में सोचे, उसी के बारे में बोले, वहां अभय का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहना, 'कामिनी, यहां से लौटते समय मां के लिए एक अच्छा सा शाल ले लेना. अगली बार जब कभी आएंगे तो विभा को भी साथ ले आएंगे. उस की बड़ी इच्छा थी, पहाड़ों पर गिरती बर्फ देखने की.'

बातें भले ही यों ही कही गई हों, पर उस के मन में चुभने लगती थीं. उसे लगता कि अभय के प्यार की वह एकमात्र अधिकारिणी नहीं है. अभय का प्यार बंट गया है. मां, भाई, बहन और उस के बीच. उस प्यार का एक छोटा सा टुकड़ा वह पा सकी है.

घर आ कर फिर धीरेधीरे कई जिम्मेदारियां कामिनी को संभालनी पड़ीं. आदत न होते हुए भी आदत तो डालनी ही थी. वह सब कुछ शायद उसे अधिक अखरता भी नहीं, परंतु अभय का व्यवहार जरूर कई बार जानेअनजाने में आहत कर जाता था. कई बार तो उसे लगता, जैसे वह कामकाज में उसे बिलकुल ही भूल गया हो. सुबह फैक्टरी गया हुआ रात तक लौटता था. दिन का खाना भी फैक्टरी में ही मंगवा लेता था.

उस की सहेलियां भी तो हैं. कितना रस लेले कर अपनी शादी के किस्से सुनाती थीं कि पति दफ्तर जाने का नाम ही नहीं लेते. जाते भी हैं तो जल्दी लौट आते हैं. मायके नहीं जाने देते. पर यहां तो ऐसा लगता कि लोहे के कारखाने में काम करतेकरते अभय के दिलदिमाग सभी लोहे की ही भांति सख्त हो गए हैं. नईनई शादी हुई है, घर में बीवी है, उस के प्रति भी कुछ दायित्व है, जैसे वह सब कुछ भूल गया हो.

सास तो सुबह ही उसे नहाधो कर नई साड़ी, आभूषण पहन कर सजनेसंवरने को कह देतीं, पर वह सोचती कि अभय भी कभी उसे इस सजेसंवरे रूप में देखे, पर वह घर पर रहे तब न.

जब कभी मायके जाने की बात आती तब भी वह सोचती कि उस की सहेलियों के पतियों की भांति अभय भी उसे टोकेगा, जल्दी लौट आने को कहेगा. परंतु वह तो शांत स्वर में कह देता, 'जितनी इच्छा हो, उतने दिन रह आना, यहां ऊब जाती होगी.' और वह चुप रह जाती.

मन ही मन तब वह कितना कुढ़ा करती थी. कई बार झल्ला कर कहती, 'तुम मुझे बिलकुल प्यार नहीं करते.'

'कैसी बातें करती हो कामिनी. तुम से प्यार नहीं करता तो और किसे करता हूं.' वह अचरज में भर कर पूछता और कामिनी का गुस्सा और बढ़ जाता.

मायके गई थी तो कामिनी मां से लिपट कर खूब रोई थी, 'मां, यह मुझे बिलकुल प्यार नहीं करते.'

मां हंस पड़ी थीं, 'तू तो पगली है. यहां इस घर में इतने दिन अकेली रही है न और वहां इतने लोग हैं, इसी लिए तुझे ऐसा लगता है. अभय तो हीरे सा लड़का है. अब ऐसे कुढ़कुढ़ कर रहोगी तो अपनी सेहत तो खराब करोगी ही, आने वाले बच्चे पर भी बुरा असर पड़ेगा.'

तब बबली का जन्म होने वाला था. वह किसी तरह अपनेआप को खुश रखने का प्रयास करती.

बबली के दो साल बाद ही फिर टीनू आ गया था. दोनों बच्चे मायके में ही हुए थे.

घर में धीरेधीरे और भी परिवर्तन हुए थे. विनय की डाक्टरी की पढ़ाई पूरी हो गई थी. उसे नौकरी मिल गई. पिछले साल उस का विवाह भी हो गया. घर में देवरानी आ गई. विभा की भी छः महीने पहले शादी हो गई. बड़ी बहू, बड़ी जेठानी, बड़ी ननद सब का दायित्व निभाती वह भी वैसे बड़ी और परिपक्व बनती जा रही थी. पहले जो छोटीछोटी बातें मन को घंटों आहत किए रहती थीं, अब वह उन से अप्रभावित ही रहती थी. किसी किताब में उस ने पढ़ा था कि शादी के छःसात वर्षों बाद वह ललक नहीं रहती, जो पहले होती है. शायद यही सच हो. उस की भी तो शादी को सात बरस होने को आए हैं. वह अकसर ऐसा सोचती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

maj Foundation Chennai and eGangotri

"यहां से लौटते समय मां के लिए शाल ले लेना" अभय का यह कहना कामिनी के मन में चुभन पैदा कर देता.

हां, जब से विनय और विभा के विवाह हुए थे, अभय के व्यवहार में जरूर थोड़ा परिवर्तन आया था. विनय की शादी को तब शायद कुछ ही दिन हुए थे. सुबह नाश्ते के समय खाने की मेज पर विनय और रीता को न देख कर अभय ने जोर से आवाज लगाई थी.

"सोने दो न." कामिनी ने धीरे से कहा था.

"अरे, अभी तक सो रहा है. हस्पताल नहीं जाएगा क्या?"

"नई शादी हुई, नहीं जाएगा तो छुट्टी ले लेगा."

अभय तब देर तक उसे देखता रहा था. वह चुप थी. याद आया कि वह तो अपने उन दिनों में भी सुबह जल्दी उठ कर मांजी के पास चली जाया करती थी और छुट्टी की तो अभय कभी सोच भी नहीं सकता था.

रीता को हर समय सजाधजा देख कर अभय ने भी कामिनी की सूती साड़ियों को लक्ष्य कर के कहा था, "तुम भी नई बहू की तरह सजीधजी रहा करो न. तुम कौन सी पुरानी हो गई हो."

कामिनी का मन हुआ था कि कोई तीखा सा उत्तर दे कि जब इतना चाव था सजनेसंवरने का तब तो तुम्हें इधर झांकने की भी फुरसत नहीं थी. अब देखो, विनय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और रीता कितने अलग ढंग से रहते हैं.

विनय का तबादला हो गया और दूसरे शहर जाना पड़ा तो रोज उस के रीता के नाम फोन और लंबेलंबे खत आते. फिर महीने-भर के अंदर ही उस ने वहां मकान ले कर रीता को भी बुलवा लिया था.

रीता का प्रसव काल नजदीक ही था. विनय स्वयं ही डाक्टर था. वहां अधिक सुविधा रहती. इसलिए आग्रह कर के उस ने मांजी को भी बुलवा लिया था. दो महीने के लिए गई थीं. पिछले हफ्ते घर का पुराना नौकर रतन भी किसी शादी में 10 दिन की छुट्टी ले कर चला गया था. घर का सारा कामकाज कामिनी के ही जिम्मे आ गया था.

"पड़ोस में शोभाजी रहती हैं न, उन की महरी को बुलवा लो." अभय ने उसे अकेले सारे काम से जूझते देख कर सलाह दी थी.

"अब महरी कोई 10-15 दिन को थोड़े ही आएगी. काम भी तो कम ही रह गया है. मैं खुद ही कर लूंगी." कामिनी ने कहा था.

पर सुबह से शाम तक काम करतेकरते कामिनी भी थकने लगी थी. सुबह दोनों बच्चों को तैयार कर के उन्हें बसस्टाप तक छोड़ने जाना, फिर अभय को नाश्ता करा कर फैक्टरी भेजना. घर की झाड़पोंछ और सफाईधुलाई करना. दोपहर में अभय का खाना फैक्टरी में भिजवाना. बच्चों को उन के बस स्टाप से ला कर खाना खिला कर गृहकार्य कराना. फिर शाम के काम.

काम से भी वह नहीं थकती थी. पर इधर दो दिनों से जोर का जुकाम हो गया था. उस के साथ ही साथ शरीर भी टूटता रहता.

घड़ी ने एक का घंटा बजाया तो कामिनी की तंद्रा टूटी थी. हाथ में बुनाई लिए उस का मन पता नहीं, कहांकहां भटकता रहा था. साड़ी बदल कर उस ने शाल कंधे पर डाल ली थी. दरवाजा बंद कर के बाहर आई तो शरीर में फिर से झुरझुरी दौड़ गई थी. आंखें भी भारीभारी सी हो रही थीं. बस स्टाप पर पहुंची तो बस आ चुकी थी.

"मां, तुम्हारा चेहरा लाललाल क्यों हो रहा है?" बबली ने उसे देखते ही कहा था.

"डाक्टर साहब से दवाई लिए चलते हैं." कहती हुई वह बच्चों को लिए ही डाक्टर निर्मल के क्लिनिक में आ गई थी.

"अरे भाभीजी, आप को तो तेज बुखार है. परसों ही मैं ने कहा था कि आप आराम कीजिए और दवा नियमित रूप से लीजिए. मैं शाम को फिर देख लूंगा. अभय को भी सूचना दूंगा कि आप इतनी लापरवाह हैं." डाक्टर निर्मल ने उसे हलकी सी झिड़की दी थी.

बच्चों को लिए कामिनी घर आ गई थी. उस का सिर बुरी तरह चकरा रहा था.

"तुम लोग खुद ही हाथमुंह धो कर कपड़े बदल कर खाना खा लो... मैं लेटूंगी."

•

बच्चों से कह कर वह पलंग पर जैसे गिर पड़ी थी. बबली ने ही फिर पानी के गिलास के साथ उसे गोली पकड़ाई थी और कंबल ओढ़ाया था. पता नहीं, बुखार की बेहोशी थी या गोली का असर, वह देर तक सोती रही थी. अभय की आवाज से ही नींद टूटी थी. वह माथे पर हाथ रख कर धीरेधीरे पूछ रहा था, "अब कैसी तबीयत है, कामिनी?"

"आप...आप कब आए?" वह हैरान हुई थी. अभय तो शाम के सातआठ बजे से पहले फैक्टरी से लौट ही नहीं पाता था.

"मुझे तो डाक्टर निर्मल ने फोन किया था कि तुम्हें तेज बुखार है और तुम बुखार में ही बच्चों को लेने बस स्टाप पर भी गई. तुम ने सुबह मुझे बताया क्यों नहीं कि तुम्हारी तबीयत खराब चल रही है. परसों भी शायद तुम दवाई लाई थीं."

"मुझे क्या हुआ? जुकाम ही तो था." कामिनी ने अटकते स्वर में कहा था.

"जुकाम नहीं, तुम्हें तेज बुखार भी है." और देखो. सांस कितनी तेज चल रही है." अभय ने घबराए स्वर में कहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

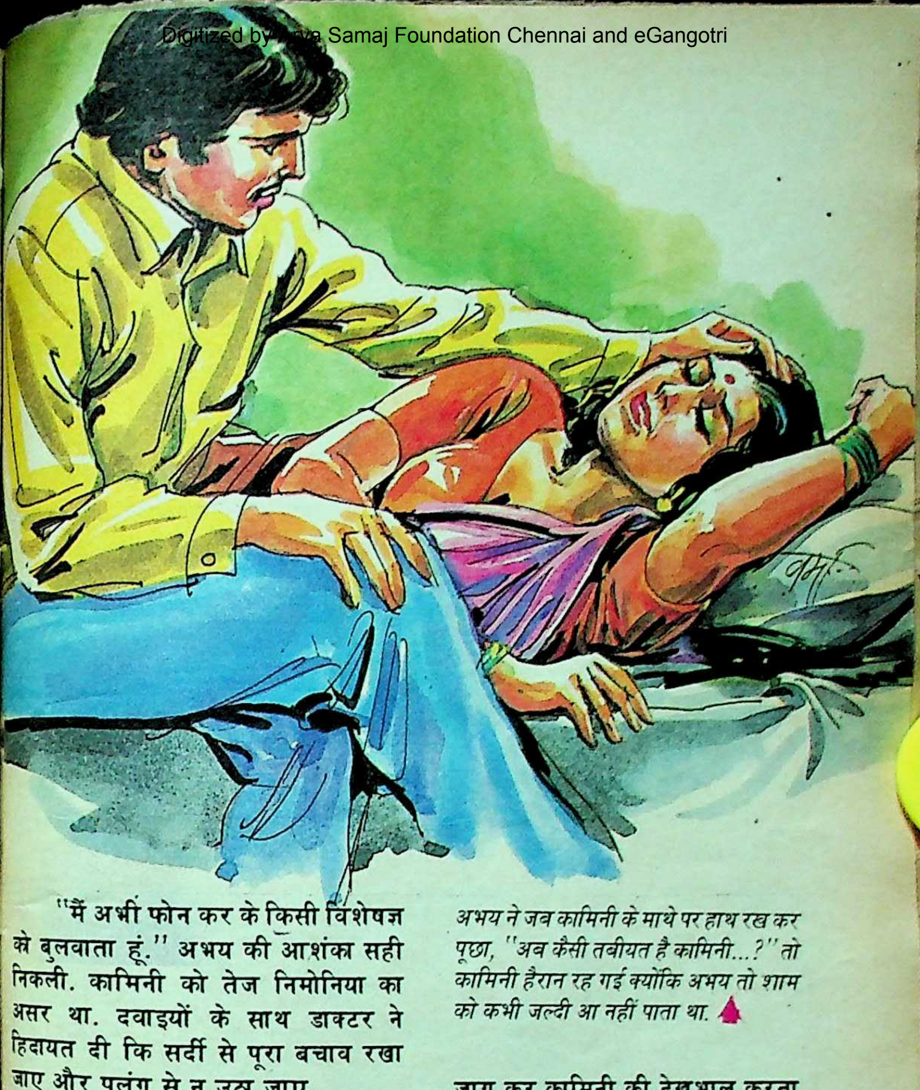

अभय ने जब कामिनी के माथे पर हाथ रख कर पूछा, ''अब कैसी तबीयत है कामिनी...?'' तो कामिनी हैरान रह गई क्योंकि अभय तो शाम को कभी जल्दी आ नहीं पाता था.

''मैं अभी फोन कर के किसी विशेषज्ञ को बुलवाता हूं.'' अभय की आशंका सही निकली. कामिनी को तेज निमोनिया का असर था. दवाइयों के साथ डाक्टर ने हिदायत दी कि सर्दी से पूरा बचाव रखा जाए और पलंग से न उठा जाए.

कामिनी तो और घबरा गई, ''बच्चों के इम्तहान चल रहे हैं. रतन है नहीं, कैसे काम होगा?''

''मैं तो हूं.'' अभय ने सिरहाने बैठ कर उस का सिर सहलाते हुए कहा तो कामिनी ने आंखें मूंद लीं.

दो दिन वह तेज बुखार में ही जकड़ी रही थी. अभय ने फैक्टरी से छुट्टी ले ली थी. शोभा ने अपनी महरी भेज दी थी. बच्चों को अभय खुद संभाल रहा था. रातरात भर जाग कर कामिनी की देखभाल करता.

''अब कैसी तबीयत है, कामिनी.'' उस के आतुर चिंतित स्वर से रात के गहरे सन्नाटे में भी कामिनी की नींद खुल जाती. अभय का हाथ सहलाता सुखद स्पर्श जैसे मन के किसी पुराने घाव को भी धीरेधीरे सहलाता सा प्रतीत होता.

तीसरे दिन कामिनी का बुखार जरा हलका हुआ था.

''सच तुम ने तो मुझे डरा ही दिया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां तो बीमार पड़ती ही नहीं थी और पड़ी तो ऐसी कि मेरी जान ही निकाल कर रख दी. तुम्हें कुछ हो जाता तो...'' अभय ने कहा.

''हो जाता तो क्या फर्क पड़ता?''

''श...श...'' अभय ने उस के होंठों पर उंगली रख दी थी. कान के पास झुक कर कहने ही जा रहा था कि दरवाजे पर शोभा की आवाज गूंजी.

''तुम अब शोभाजी से बात करो, मैं तब तक तुम्हारे लिए दूध गरम करता हूं.'' कहता हुआ अभय अंदर चला गया था.

''आइए...'' कामिनी ने शोभा को देख कर बिस्तर पर बैठने का प्रयास किया.

''न...न... लेटी रहिए. आप ने तो सचमुच ही हम सब को डरा दिया और अभयजी तो पिछले दो दिनों से पूरे ही देवदास बन गए हैं. देखा नहीं, बिखरे बाल, बढ़ी दाढ़ी...''

''मैं ने कितना कहा कि मैं ही संभाल लूंगी कामिनी को, पर माने नहीं. बहुत प्यार करते हैं न आप को.'' शोभा उसे देख कर हंसी थी.

'देवदास' शब्द देर तक घंटी की तरह कामिनी के कानों में गूंजता रहा था. थोड़ी देर बैठ कर शोभा हालचाल पूछ कर जा चुकी थीं. अंदर बच्चों को गृहकार्य करने बैठा कर अभय कामिनी के लिए दूध और दवाई ले आया था.

''दूध पीने का बिलकुल मन नहीं है. मुंह कड़वाकड़वा सा हो गया है.'' कामिनी ने बच्चों की सी जिद की थी.

''अरे मुंह का स्वाद तो बुखार की वजह से खराब हो गया है. अब बिना दूध के दवाई कैसे लोगी...ठीक कैसे होगी?'' कहते हुए अभय ने खुद ही दूध का गिलास उस के मुंह से लगा दिया था.

''बुखार तो अब ज्यादा नहीं है, पर सिर दर्द करता रहता है.''

''तुम लेट जाओ, मैं सिर दबा देता हूं. नींद आएगी तो आराम मिलेगा.''

अभय ने तकिया खींच कर कामिनी को लिटा दिया था और चादर कंधे तक खींच दी. अभय के हाथों के सुखद स्पर्श से सचमुच कामिनी की पलकें झपकने लगी थीं. फिर भी उसे लग रहा था कि जैसे अभय का आज एक नया ही रूप वह खुली आंखों से देख रही है और देख पा रही है, उस प्यार का रूप जो उम्र के साथ कभी घटता नहीं, कभी बंटता नहीं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

हमारे यहां मूल नक्षत्र में बच्चे का जन्म होने पर मां और बच्चा 27 दिन तक एकदूसरे को नहीं देख सकते. साथ ही, 27वें दिन पूजा समाप्ति पर मां जलते हुए चारमुखी दीपक के तेल में बच्चे की परछाईं देखती है.

तदानुसार हमारी पड़ोसिन बच्चे को दीए की लौ के नजदीक लाई ताकि परछाईं स्पष्ट दिख सके. इस चक्कर में बेचारे शिशु का सारा मुंह जल गया. काफी इलाज किया पर कामयाबी न मिली. आज भी उस बच्चे के चेहरे पर जलने के निशान मौजूद हैं. —पूनम कु. श्रीवास्तव

*

जल देवता को प्रसन्न करने के लिए शिशु जन्म पर हमारे यहां मातापिता और शिशु को कुएं पर ले जाने की प्रथा है. वहां मां एक ओर से कुएं के आरपार बच्चे को फेंकती है और पिता दूसरी ओर से बच्चे को पकड़ लेता है.

मेरे चचेरे भाई के जन्म पर चाचीजी ने उसे फेंका तो वह कुएं में ही गिर पड़ा और उस की मृत्यु हो गई.

इस कुप्रथा ने मात्र मेरे चचेरे भाई की जान ही नहीं ली, अपितु चाचीजी भी सदमें में पागल हो गईं. —चिराग गोस्वामी

*

हमारे गांव के बाहर एक मंदिर है, और उस मंदिर को गांव से जोड़ने वाली पगडंडी ऊंची व संकरी है.

एक प्रथानुसार विवाहोपरांत नववधू को मंदिर से गांव तक पैदल चल कर आने की मनाही है. संयोग से एक विवाह में डोली का अभाव था. अतः उस का पति उसे स्कूटर पर बैठा कर गांव जा रहा था कि अचानक संकरी पगडंडी पर स्कूटर का संतुलन बिगड़ गया. परिणाम स्वरूप वधू को काफी चोटें आईं.

उस समय ससुराल ले जाने के बजाय उसे हस्पताल पहुंचाया गया. जहां काफी प्रयास के बावजूद उसे अपाहिज होने से नहीं बचाया जा सका. —शशि वर्मा

*

हमारे यहां गंगा मेले के दिन पूर्व दिशा को प्रस्थान करना अशुभ माना जाता है.

पिछले गंगा मेले के दिन मेरे चाचाजी की तबीयत खराब हो गई. हस्पताल हमारे घर से पूर्व दिशा में स्थित है. इसलिए दादीजी की जिद पर चाचाजी को समय पर डाक्टर के पास नहीं पहुंचाया जा सका. घर पर हालत और खराब हो गई और शाम तक चाचाजी की मृत्यु हो गई.

—रागिनी त्रिपाठी

*

हमारे यहां यज्ञोपवीत के अवसर पर बालक को गाय के मूत्र, गोबर व दही का मिश्रण पिलाने का रिवाज है. हमारे मित्र के लड़के ने अपने यज्ञोपवीत के अवसर पर वह मिश्रण पीने से इनकार कर दिया. किंतु उसे जबरदस्ती वह मिश्रण पिलाया गया.

इस नासमझी का परिणाम यह हुआ कि वह लड़का अगले एक महीने तक पूर्ण रूप से स्वस्थ न हो सका.—डा.अजय जोशी

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःस्वप्न के बाद

समस्या कथा ● मैत्रयी पुष्पा

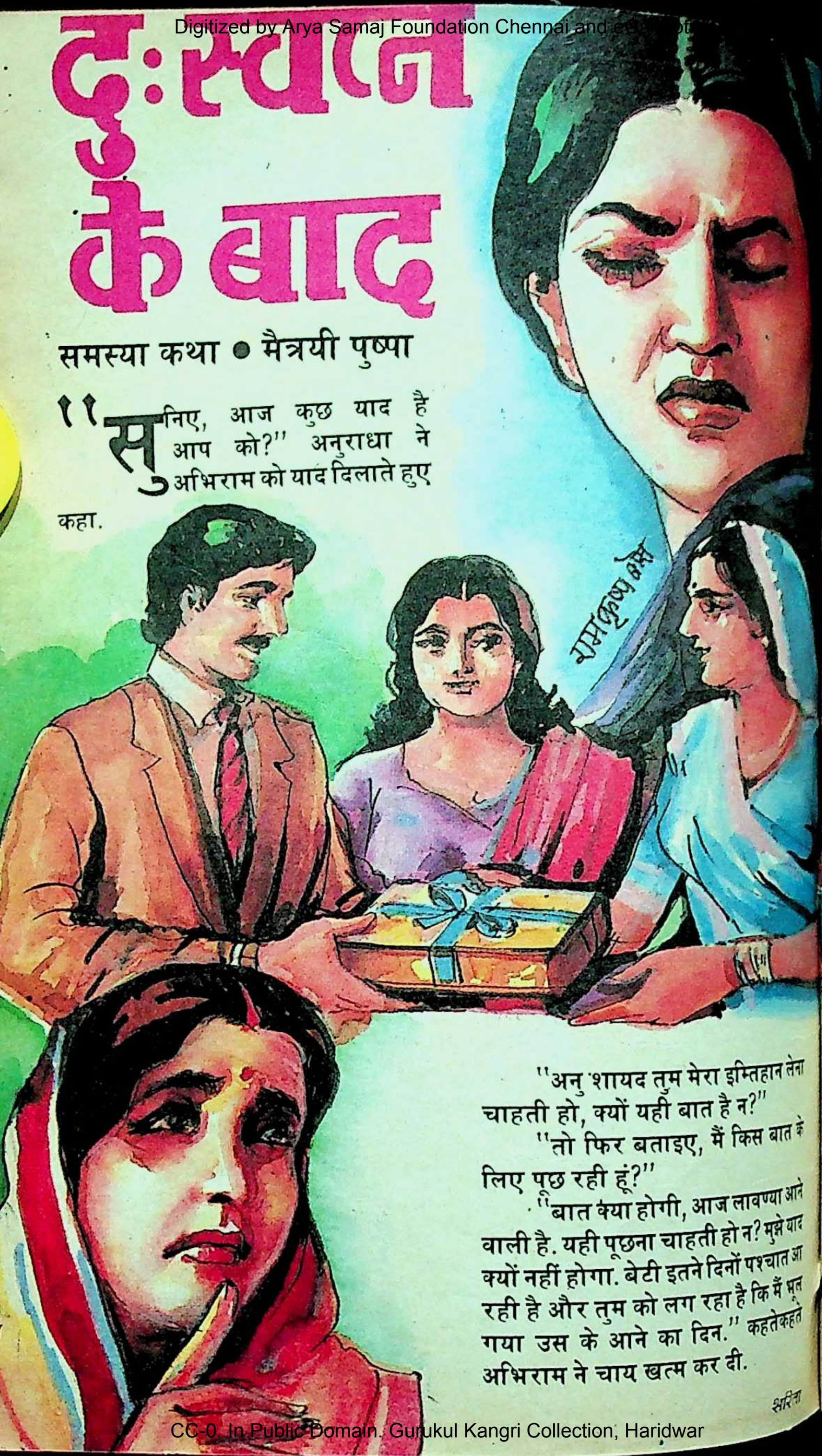

"सुनिए, आज कुछ याद है आप को?" अनुराधा ने अभिराम को याद दिलाते हुए कहा.

"अनु शायद तुम मेरा इम्तिहान लेना चाहती हो, क्यों यही बात है न?"

"तो फिर बताइए, मैं किस बात के लिए पूछ रही हूं?"

"बात क्या होगी, आज लावण्या आने वाली है. यही पूछना चाहती हो न? मुझे याद क्यों नहीं होगा. बेटी इतने दिनों पश्चात आ रही है और तुम को लग रहा है कि मैं भूल गया उस के आने का दिन." कहतेकहते अभिराम ने चाय खत्म कर दी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

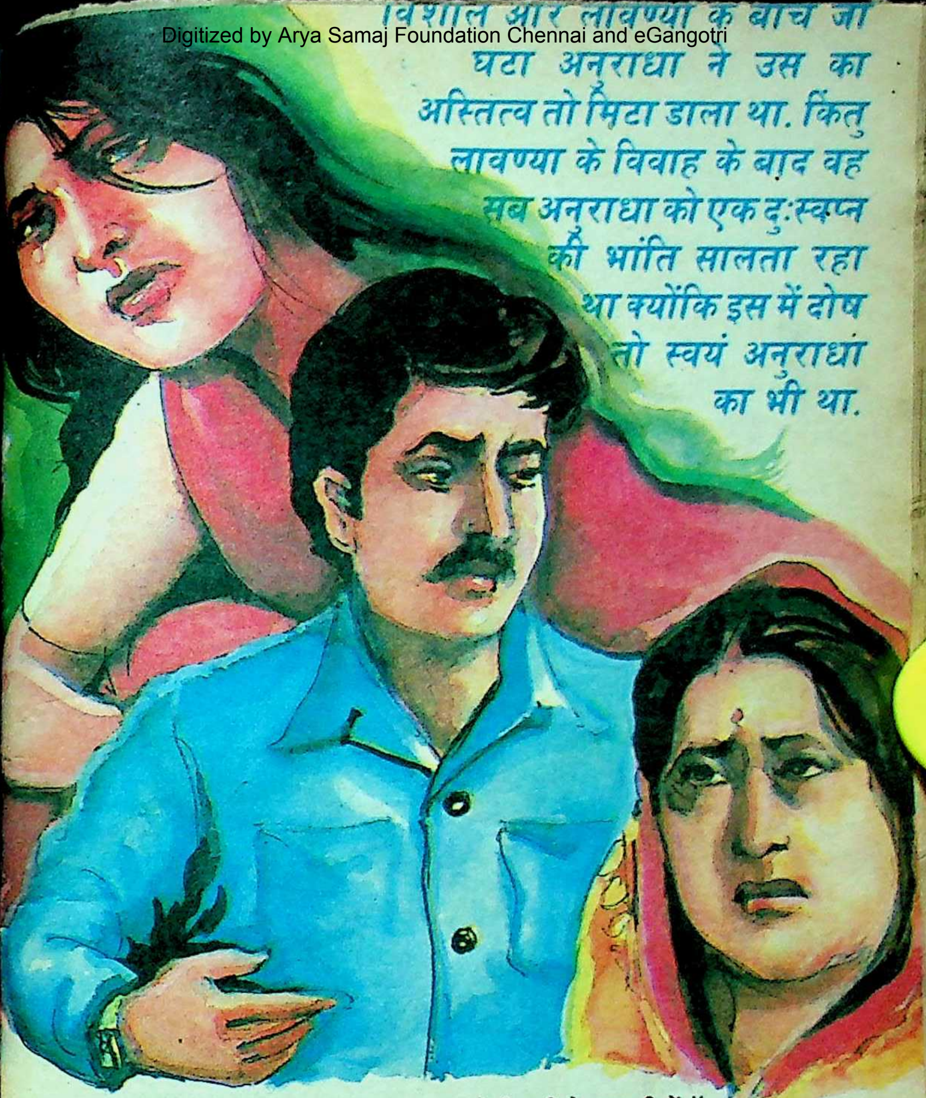

"तुम्हें दोषी ठहरा ही कौन सकता है, बेटा. सारा दोष तो लावण्या का है जिस के शरीर पर सब के सामने गर्भचिह्न प्रकट होंगे." अनुराधा ने विशाल से कहा.

"पूरे दो बरस बीत गए उस से मिले हुए." अनुराधा ने एक लंबी सांस खींची और आगे बोली, "जबजब यहां आने के लिए उसे खबर भेजी है, कोई न कोई व्यस्तता उसे रोके रही है...शादी के बाद ऐसी रमी है गृहस्थी में."

अनुराधा उठ कर रसोई में चली गई और जल्दीजल्दी काम निबटाने लगी. महरी आ चुकी थी. उस को वह अतिरिक्त सफाई के निर्देश देने लगी. अभिराम को भी सवेरेसवेरे बाजार दौड़ा दिया.

अभिराम ने जाने में आनाकानी की थी, "मैं लावण्या को लेने स्टेशन जाऊंगा कि तुम्हारी तरकारीभाजी में लगा रहूंगा."

"नहीं, आप को स्टेशन कहां जाना है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है, आप ने दामाद रंजन का पत्र अच्छी तरह पढ़ा ही नहीं है. उस में साफ लिखा है कि पिताजी को परेशान न कीजिएगा, हम स्वयं स्कूटर से चले आएंगे. आप चुपचाप बाजार चले जाइए." अति उमंग में अनुराधा कहे जा रही थी.

घर शीशे सा दमक रहा था. बैठक में सोफे पर बैठी अनुराधा खिले फूलों को गुलदस्ते में सजा रही थी. 'लावण्या का नन्हा भी तो इन्हीं फूलों जैसा प्यारा होगा,' सोचती हुई वह रसोई की ओर भागी. मारे खुशी के उस के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे.

अभिराम बाजार से लौट चुके थे. नहाने की तैयारी में गुनगुनाते हुए स्नानघर की ओर बढ़ ही रहे थे कि तिपहिया स्कूटर घर के द्वार पर आ कर रुका.

"अनु, लावण्या आ गई." कहते हुए अभिराम बेटी और दामाद के स्वागत के लिए बाहर की ओर चल पड़े.

अनुराधा ने भी जल्दी से गैस बंद की और बाहर की ओर भागती सी आई. फिर बेटी को देख कर ठिठकी सी वहीं खड़ी रह गई. आंखों में भर आए आंसू सामने का रास्ता धूमिल करने लगे. सीढ़ियां धुंधलके में खो गईं. लावण्या ही आगे बढ़ी और मां के गले से लिपट गई. मन में उठता तेज उफान आंसुओं का समंदर बन कर दोनों के कंधों पर बिखरने लगा.

"यहां आ कर तो ऐसे रो रही हो और इतने दिनों से मैं यहां आने की कह रहा था तो आती नहीं थी." रंजन ने लावण्या से आश्चर्यमिश्रित आवाज में कहा.

"कौन? यह लावण्या नहीं आती थी?" अभिराम अचरज से पूछ रहे थे.

"सच पिताजी, मैं इस को जबरदस्ती लाया हूं. यह आती ही कहां थी. मेरी मां इसे महीनों से यहां आने के लिए मना रही थीं, तब जा कर कहीं अब समय निकाल पाई है यह आप की लाड़ली बेटी."

"क्यों री शैतान, हमें इतना पराया समझ लिया था." पिता ने बेटी के सिर पर हलकी सी चपत लगाते हुए कहा.

"अब बाहर ही खड़ेखड़े सारी बातें करते रहोगे? स्कूटर वाला कब का सामान उतार कर चला गया. अंदर चलो." कह कर अनुराधा सामान की ओर बढ़ने लगी.

"अरे मां, यह क्या कर रही हैं?" कह कर रंजन ने एक हाथ से अटैची और दूसरे से बैग पकड़ लिया. अभिराम ने नन्हे को उठा लिया था.

अभिराम बेटी और दामाद से कुशलक्षेम पूछ कर दफ्तर चले गए. लावण्या उस मैली सी अटैची को बारबार खोलने का प्रयत्न कर रही थी, लेकिन ताला था कि खुल ही नहीं रहा था. फिर रंजन ने न जाने कैसे खोल दिया था. बेटी ने अपने कपड़े निकालने शुरू किए तो मां की उत्सुकता न रुक सकी. वह अटैची के अंदर रखी साड़ियां ध्यान से देखने लगीं. सभी साड़ियां बेहद मामूली सी थीं.

दो दिन बाद इस की मौसी के यहां विवाह है, क्या एक भी ढंग की साड़ी नहीं लाई? इसी ऊहापोह में पड़ी अनुराधा चिंतित हो उठी थी कि रंजन ने उस की चोर नजरों को पकड़ लिया था. वह बोल उठा, "मां, इस लावण्या ने एक भी ढंग की साड़ी अपने पास नहीं रखी. अपनी सारी नई साड़ियां मेरी बहन की शादी में दे दीं. मां ने बहुत समझाया, लेकिन यह कहां मानने वाली थी. जहां तक इस का बस चला, बाजार में हमें खर्च करने ही नहीं दिया. घर में से ही निकालनिकाल कर अपना सामान देती रही.

"मेरी मां तो इसे देख कर फिर से जी उठी हैं, वरना उन के जीवन में बीमारी और दुखों ने एक मौन सन्नाटा खींच दिया था. अब जब भी उन्हें मुसकराते देखता हूं तो मेरा मन लावण्या का ऋणी हो जाता है. मैं प्यार के सिवा इसे दे भी क्या सकता हूं."

यह सब सुन कर अनुराधा अभिभूत हो उठी थी. अकेली नन्हे को गोद में लिए बैठी न जाने कब वह अतीत की सीढ़ियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"[illegible] भी प्रशिक्षण लिया है. मां, हम तो आप की शिष्या के प्रशंसक हो गए हैं." रंजन ने मां से कहा तो अनुराधा के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई. ▼

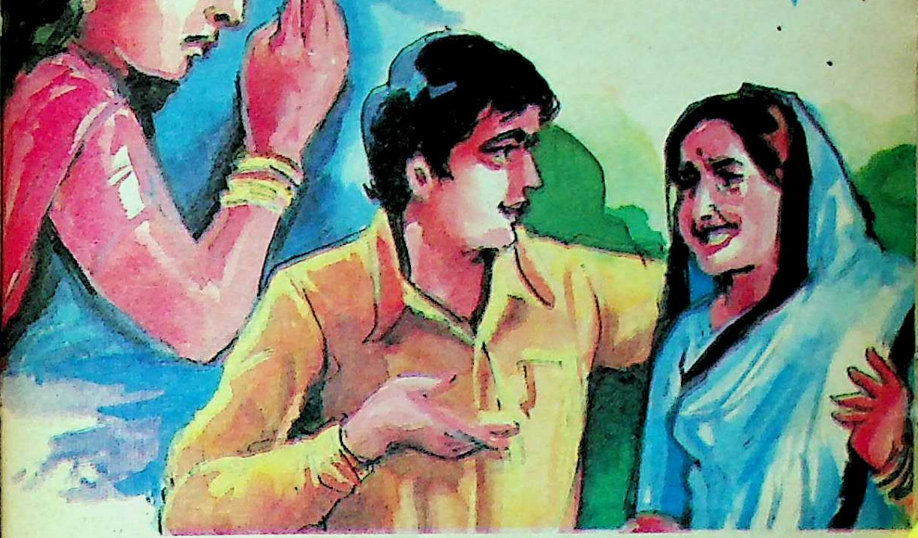

उतरने लगीं.

कैसे थे वे दिन? कैसा समय था? उन के घर से तीसरे मकान में ही तो रहते थे चेतन साहब. उन का बेटा विशाल कैसा सौम्य, विनम्र और सुंदर था. लावण्या ने ही तो मां का उस से परिचय कराया था. "मां, यह विशाल है और विशाल, यह मेरी मां हैं."

"नमस्ते चाचीजी, यहीं रहता हूं, आप के बिलकुल नजदीक तीसरे मकान में."

"अच्छा, फिर तो आया करो बेटे." अनुराधा ने कहा था.

"मां, यह अभीअभी बैंक में अफसर के पद पर नियुक्त हुआ है. मिठाई देने भी आएगा." लावण्या ने चुटकी ली.

दूसरे दिन विशाल मिठाई का पैकेट लिए अनुराधा के समक्ष खड़ा था, "नमस्ते चाचीजी," कह कर उस ने अनुराधा के हाथ में मिठाई का डब्बा पकड़ा दिया.

"यह तुम ने उलटा काम किया है, विशाल. अरे पगले, मिठाई तो बड़े खिलाते हैं. यह काम तो हमारा था."

"कोई बात नहीं चाचीजी. जब आप खिलाएंगी तो मैं जरूर खाऊंगा."

विशाल ने अनुराधा और उन के परिवार के प्रत्येक सदस्य को प्रभावित किया था. वे विपत्ति के दिन आज भी अनुराधा को याद हैं. अभिराम को दिल का दौरा पड़ा था. विशाल रातदिन उस की सेवा में लगा रहता. रात को वहीं हस्पताल में रुकता. अनुराधा सोती तो वह जागता. वह सोता तो अनुराधा जागती. अनुराधा को लगता कि इतना तो उस का बेटा विपुल भी नहीं कर पाता.

अभिराम ठीक हो कर घर आ गए थे. हस्पताल की भागदौड़ तो खत्म थी, लेकिन घर में उतना ही काम बढ़ गया था. डाक्टर ने ही सलाह दी थी, "आप इन्हें कहीं शहर से बाहर ले जाइए. यहां यह पूरा आराम नहीं कर पा रहे हैं."

अनुराधा की बहन रीता ने कहा था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अनु दीदी, जीजाजी को ले कर मां के पास बंगलौर चली जाओ, लावण्या और विपुल की देखभाल मैं कर लूंगी."

"अरे चाचीजी, मैं तो हूं ही...आप को चिंता किस बात की? कोई परेशानी नहीं होने दूंगा इन दोनों को. बीच में ही विशाल बोल उठा था.

अनुराधा को विशाल पर पूरा भरोसा था. उस ने रीता से कह दिया, "कभीकभी देख जाया करना लावण्या और विपुल को. तेरे छोटेछोटे बच्चे हैं... कहां रोजरोज परेशान होगी."

अनुराधा और अभिराम करीब डेढ़ माह बंगलौर रहे थे. लावण्या के पत्र आते रहे थे. उस के अनुसार सब कुछ बिलकुल ठीक चल रहा था. अनुराधा भी निश्चिंत थी. लौट कर घर आई तो सब कुछ इतने सलीके से संभला हुआ मिला कि वह अपनी 17 साल की बेटी की सुघड़ता पर स्वयं मुग्ध हो गई.

अभिराम की बीमारी के कारण उस साल विपुल का जन्मदिन मनाने का अनुराधा का बिलकुल भी मन नहीं था लेकिन विशाल कहां माना था. लावण्या, विपुल और विशाल होटल में जन्मदिन मना कर आए थे.

"मां, विशाल भैया के कारण ही मेरा जन्मदिन मना है, नहीं तो आप पूरी तरह टाल चुकी थीं." विपुल ने अनुराधा से कहा था.

"बेटा, अगली बार तेरा जन्मदिन खूब धूमधाम से मनाएंगे."

"मुझे मत भूल जाना चाचीजी." विशाल तपाक से बोला था.

"विशाल बेटे, यह क्या कहते हो, तुम्हें भला क्यों भूल जाऊंगी?"

लेकिन विपुल का वह जन्मदिन कहां आ पाया. तब तक तो ऐसा झंझावत आया जो विश्वास के घरोंदे को अपने साथ उड़ा ले गया. उस गाज के असह्य आघात को अनुराधा ने कैसे झेला था, उस दिन.

"मां," एकाएक एक करुण पुकार भर कर रह गई थी लावण्या.

"क्या हुआ? लावण्या, कुछ कहना चाहती हो...ऐसे कराह क्यों रही हो बेटी?"

"कुछ नहीं मां." कह कर वह औंधी पलंग पर गिर पड़ी थी.

"क्या हुआ? कुछ बताएगी नहीं?" अनुराधा घबरा उठी थी. बेटी का चेहरा अपनी ओर किया तो वह फफक कर रो पड़ी. अनुराधा किसी अव्यक्त डर से घिरती जा रही थी.

"मां...मैं...मां..."

"क्या? क्या कह रही है...पागल हो गई है." इस से अधिक कुछ कहने की शक्ति अनुराधा में अब आगे नहीं थी. स्तब्ध सी यों ही बुत बनी वहीं बैठी रही. वह पल स्मरण करते आज भी अनुराधा दहल जाती है.

न जाने कितनी देर बाद अनुराधा हिम्मत बटोर पाई थी. वह धीरे से बोली, "लावण्या, सच बताना बेटी, इस के लिए तेरे सिवा दूसरा कौन जिम्मेदार है? बोल, सच बोल दे, डरना नहीं."

लेकिन वह कहां कुछ बोली थी. अनुराधा के दोनों पैर पकड़ कर वहीं पलंग पर लेटीलेटी रोती रही थी. अनुराधा द्वारा प्यार से पूछने पर ही वह बोली थी और जो बोली थी, उस पर अनुराधा एकाएक विश्वास न कर सकी थी, क्योंकि वह दूसरा नाम लावण्या के साथ विशाल का था.

अनुराधा ने तुरंत लावण्या से गर्भ का समय पूछा. लेकिन समय सुना तो जोर से एक झटका और खाया. बहुत देर हो चुकी थी. वह गुस्से से बोली, "तभी क्यों नहीं बताया, मूर्ख लड़की."

"मां, विशाल कहता था कि कुछ नहीं होगा और जब हो गया तो कहने लगा कि बताना मत किसी को. तुम्हारी मां को पता चला तो वह तुम्हें ही डाटेंगी. मुझे तो वह कुछ नहीं कह सकतीं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह नादान लड़की डर के मारे उस समय को भी निकाल गई, जिस वक्त वह इस कलंक से आसानी से मुक्ति पा सकती थी. अब अनुराधा के लिए रात भर छटपटाते रहने के सिवा और चारा ही क्या था. अभिराम दिल के मरीज थे. उन्हें वह अपने टुकड़ेटुकड़े हृदय को समेटने को कह नहीं सकती थी.

अनुराधा सोचने लगी थी कि सारा दोष लावण्या का नहीं है, वह स्वयं भी तो उस की अपराधिनी थी. मां हो कर क्यों आंखों पर पट्टी बांधे रही. क्यों भूल गई कि किशोरावस्था का अपरिपक्व मन और कोमल भाव क्या जाने कि किस दिशा को जाना है. बेटी को दिशा ज्ञान तो उसे ही कराना था.

अनुराधा को विशाल के दफ्तर जाना पड़ा था. अब वह घर आता ही कहां था और पास वाला मकान छोड़ कर वे लोग दूसरी जगह रहने लगे थे.

"चाचीजी, आप?" वह अपनी पूर्व शालीनता के साथ उठ खड़ा हुआ था.

"बैठो बेटे, कैसे कहूं तुम से...तुम्हें तो शायद वह पल याद भी नहीं होगा जो लावण्या के जीवन पर अमरबेल सा चढ़ता चला जा रहा है. यह क्या हुआ, बेटे? कैसे...यह सब?"

"क्या कह रही हैं, चाचीजी, मैं ने तो कुछ नहीं किया. हमेशा आप की ही मदद करने की सोचता रहा हूं. लावण्या ने यह बात मुझ से भी कही थी, जिस की ओर आप का संकेत है. लेकिन सच मानिए, मेरा इस में कोई दोष नहीं."

"तुम्हें दोषी ठहरा ही कौन सकता है, बेटा. सारा दोष तो उस लावण्या का है, जिस के शरीर पर सब के सामने गर्भ चिह्न प्रकट होंगे. विशाल, शादी कर लो उस से. सब ढक जाएगा. हमारी लाज रख लो बेटा."

"नहीं चाचीजी, शादी तो मैं करूंगा ही नहीं. यह नहीं कि लावण्या से ही परहेज है, मैं किसी भी लड़की से कभी भी शादी नहीं करूंगा."

उस का दो टूक उत्तर सुन कर अनुराधा क्या कहती. विशाल की मां को पत्र लिखा था. उन्होंने भी कोई अन्य लड़की अपने बेटे के लिए खोजने की बात चलाई थी. पत्र का उत्तर तो कुछ दिया नहीं था.

लावण्या अलग जिद किए बैठी थी कि शादी करेगी तो विशाल से, चाहे जान रहे या चली जाए. अनुराधा ने उसे कितना ही समझाया, लेकिन वह अपनी जिद पर अड़ी थी. अनुराधा ने एक दिन झल्लाहट में उसे झिड़क डाला, "इतना गलत काम कर के कहती है कि शादी उसी से करूंगी. उसे तुझ से शादी करनी होती तो ऐसे संबंध तुझ से नहीं बनाता और न इस तरह कायरों का सा नाटक करता. दिनरात उसी का नाम रट रही है. शर्म नहीं आती तुझे?"

लावण्या ने खानापीना भी लगभग त्याग सा दिया था. अनुराधा भी कितना पछताई थी. एक दिन वह अपने शयनकक्ष में घुसी तो देखा कि लावण्या हाथ में नींद की गोलियां लिए मुंह खोलने ही जा रही थी. अनुराधा ने झपट कर उस के हाथ से गोलियां गिरा दीं. उस दिन से अनुराधा ने उसे कभी अकेला नहीं छोड़ा.

अब सारे द्वार बंद हो चुके थे. अनुराधा चुपचाप उसे एक निपुण महिला डाक्टर के पास ले गई थी. सारी बात उन्हें साफसाफ बता दी थी.

> एक पाठिका की समस्या पर यह समस्या कथा आधारित है. समस्या का उत्तर कहानी का तानाबाना बुन कर विस्तारसे दिया गया है, क्योंकि 'पाठकों की समस्याएं' स्तंभ में समस्याएं संक्षेप में ही सुलझाई जा सकती हैं. पाठक अपनी गूढ़ समस्याओं को विस्तार से लिख कर भेज सकते हैं, जिन का कहानियों के माध्यम से हल दिया जाएगा. पता है : समस्या कथा, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिलसिला

कोई शिकायत, जब कोई
गिला रहा नहीं बाकी,
समझो तब प्यार का
सिलसिला रहा नहीं बाकी.
—सवि सिंह 'सविता'

उस डाक्टर ने भरपूर प्रयत्न कर के लावण्या को उस अनचाहे गर्भ से मुक्ति दिला दी थी.

अपनी बहन रीता के माध्यम से ही उन्हें रंजन मिल गया था. लेकिन लावण्या तैयार कहां होती थी विवाह के लिए. एक ही धुन जो लिए बैठी थी, विशाल की.

"देख लावण्या, इस लड़के से शादी तुझे करनी ही पड़ेगी. भूल जा विशाल को. उस ने तेरी कोई खोजखबर ली है? तेरा जीवन बरबाद होने में कोई कमी नहीं रह गई थी."

"मां? आप जो कहेंगी मैं करूंगी." आखिर लावण्या शादी के लिए मान गई थी.

रंजन से शादी तय हुई तो अभिराम बहुत बिगड़े थे, "मेरी बेटी को कहां ब्याह रही हो, हमें लड़कों की कमी है क्या?"

अनुराधा कैसे सत्य उगल देती. सारा जहर अपने कंठ में ही भरे बैठी थी. 'अभिराम, तुम्हारे बिना ही इस धधकती रेत में घिसट रही हूं. क्या कहूं तुम से?'

"सब संयोग की बात है." कह कर भी वह अभिराम को समझा कहां पाई थी. वह तो अंत तक असंतुष्ट ही बने रहे थे.

शादी हो गई. रंजन देखने में बेहद मामूली शक्लसूरत का था. छोटी सी ही उस की नौकरी थी. लेकिन वह इनसानियत का धनी, स्वाभिमानी और शालीन लड़का था.

"लावण्या बेटी, सुन ले...सब की सेवा करना. सेवा का प्रभाव सारे दोषों को धो डालता है." यही एक सीख की दौलत अनुराधा ने बेटी की गांठ बांध दी थी.

"मां, क्या बनाया है?" कह कर रंजन अनुराधा के पास ही आ बैठे थे. वह हड़बड़ा कर इधरउधर देखने लगी.

"मां, हम कब से नहाधो कर बैठे आप की प्रतीक्षा कर रहे हैं और आप हैं कि न जाने किस सोच में डूबी हैं." कह कर लावण्या ने मां के गले में बांहें डाल दीं.

सब लोग नाश्ता करने लगे. रंजन हंसते हुए बोले, "अब समझा, बेटी ने मां से ही प्रशिक्षण लिया है. तभी इतना अच्छा खाना बनाती है. मां, हम तो आप की शिष्या के प्रशंसक हो गए हैं."

यह सुन कर अनुराधा के चेहरे पर खुशी और संतोष की लहर सी दौड़ गई.

"मां, आप ने अभी तक कार नहीं ली. आप तो तभी लेने वाली थीं. लावण्या की बात सुन कर अनुराधा चुप हो गई. रंजन उठ कर हाथ धोने चले गए.

"बेटी, तू अभावों में रहे और मैं असीमित सुखसुविधाएं जोड़ लूं, ऐसा कैसे हो सकता है. जो कुछ तेरे जीवन में हुआ, उस अपराध की भागीदार मैं भी हूं. फिर दंड की सहभागी भी तो मुझे होना चाहिए. यही मेरा प्रायश्चित्त होगा." अनुराधा ने बेटी के सिर पर हाथ फेरते हुए धीरे से कहा. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिमटती आ रही है जिंदगी

पहले कभी हौले से उतर आई थी.
जिंदगी चांदनी बन आंगन पर.
मोतियों सी बिखर पड़ी थी फर्श पर,
जैसे सुबह की ओस पड़ी हो पत्तों पर.

चुनना था उन्हें पर,
वाष्प बन गई जैसे रेत पर.
घटनाओं के फेरे में,
उलझ पड़ी है गुलच्छोंसी

सिमटती आ रही है जिंदगी,
कागज के हाशिए सी.

आज फिर झांक रही है झरोखे से
जिंदगी पूनम सी चांदनी.

ढूंढ़ रही है फिर वही आंगन,
पर फर्क बस अब यही है राही.
जिंदगी टंगी है एक विराम सी.

—डा. सुरेंद्र शर्मा राही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

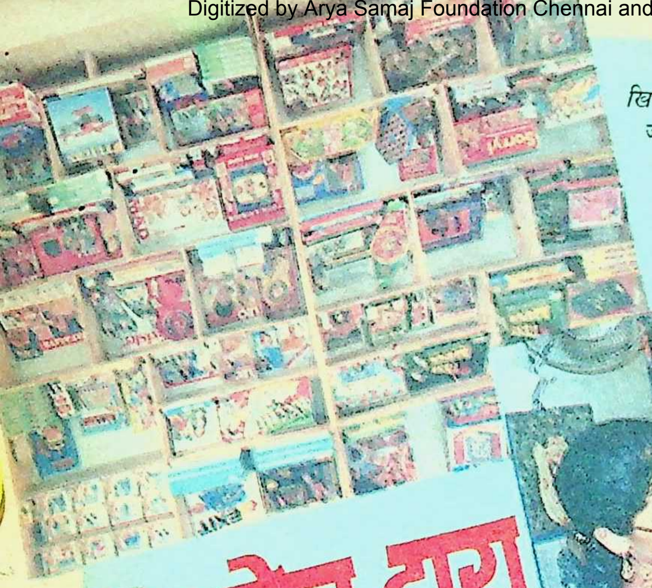

खिलौने उतने ही जरूरी है, जितना जरूरी दूध हैं (बाएं). हसरत भरी नजरों से न देखो ये सब खिलौने तुम्हारे ही लिए हैं (नीचे).

चिल्ड्रेन टाय फाउंडेशन: खिलौनाघर खोलो आंदोलन

लेख ● शांति स्वरूप त्रिपाठी

मानव के जीवन का सब से बढ़िया समय है उस का बचपन. न कोई चिंता, न किसी उत्तरदायित्व का भार और न ही किसी प्रकार की मर्यादा का बंधन. कली जैसी मुसकान, गुलाब जैसा खिला चेहरा और मुक्त सरल हंसी—ये बचपन की विशेषताएं हैं और इन विशेषताओं को प्राप्त करने में खिलौनों का योगदान सब से अधिक है.

खिलौना एक खेलने की चीज है. उदाहरण के तौर पर एक छोटा बच्चा टिन के डब्बे को रस्सी से बांध कर जमीन पर घसीटता है. यह उस के लिए एक खिलौना है. तो दूसरी तरफ एक बुद्धिमान व्यक्ति 'रूबिक क्यूब' को हल कर के खेलता है, यह भी एक खिलौना है. इस तरह 'गेम पजल', 'शैक्षणिक किट' आदि सभी खिलौनों की श्रेणी में आते हैं.

खिलौने मनोरंजन के साथसाथ बुद्धि के विकास में भी सहायक होते हैं. खिलौनों के माध्यम से खोजी दिमाग का विकास होता है. खेल व खिलौने बच्चों के जीवन के अनिवार्य अंग हैं. ये बच्चों के मानसिक, बौद्धिक व भावात्मक स्तर को विकसित करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलौने बच्चों के मानसिक, बौद्धिक व भावनात्मक स्तर को विकसित करते हैं. लेकिन आर्थिक अभावों की वजह से मातापिता हर तरह का खिलौना अपने बच्चों को नहीं दे पाते. पर मन मसोसने की कोई जरूरत नहीं, खिलौना घर के सदस्य बनिए और मनचाहे खिलौनों से खेलिए.

बच्चे का आधिकांश व्यक्तित्व छः वर्ष तक की आयु में ही आकार लेता है. इस उम्र में बालक अनौपचारिक शिक्षा पद्धति को खूब अच्छी तरह ग्रहण कर पाता है, जिस में खिलौने सर्वाधिक सहायक होते हैं. बच्चे को जन्म के साथ ही खिलौना देना अनिवार्य हो जाता है.

हमारा मिशन है ज्यादा से ज्यादा खेल खिलौने बच्चों तक पहुंचाना तथा बच्चों में सहयोगात्मक प्रवृत्ति पैदा करना.

लेकिन जिंदगी की अन्य आवश्यक वस्तुओं के साथ ही खिलौने भी महंगे होते जा रहे हैं. हालांकि कई तरह के खिलौनों से बाजार भरे पड़े हैं. पर सामान्य स्तर के मातापिता आर्थिक अभावों के कारण बच्चों को खिलौने नहीं दे पाते. यही नहीं अच्छी आर्थिक स्थिति वाले परिवारों का बच्चा भी हर तरह का खिलौना नहीं खेल पाता. अकसर बच्चे हसरत भरी नजर से खेलखिलौनों की दुकानों को देखा करते हैं.

तो फिर क्या बच्चे खिलौनों से वंचित रह जाएं? इस का कोई तो विकल्प हो, समाधान हो, ताकि हताश बच्चे भी मनपसंद खिलौनों से खेल सकें. बस उसी फिर का जवाब है-'खिलौना घर'. जी हां,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सलोने खेलखिलौनों का एक घर है, जहां से बच्चे अपनी पसंद के खेलखिलौनों को चुन कर घर ले जा कर खेलें. जी भर जाने पर बदल कर दूसरा ले आएं. ठीक उसी तरह जैसे पुस्तकालय से पुस्तक लाते हैं.

आज देश के कुछ बड़े शहरों में इस तरह की परिकल्पना को साकार करने के लिए 'खिलौना घर' (टाय लाइब्रेरी) खोले गए हैं. आज पूरे भारत में 75 खिलौना घर हैं, जिन में से 35 महाराष्ट्र में और 4 गुजरात में हैं. बंबई में खिलौना घरों की संख्या 25 है, जिन में से पांच खिलौना घर तो 'प्रार्थना समाज' क्षेत्र में ही हैं. महाराष्ट्र सरकार भी चाहती है कि 'खिलौना घर' संस्कृति तेजी से फैले और इस उद्देश्यपूर्ण

"मैं ने बच्चों की खुशी के लिए खुद को समर्पित किया है"

देवेंद्र देसाई

प्रश्न : 'चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन' संस्था बनाने की बात आप के दिमाग में कैसे आई?

उत्तर : मैं बचपन से ही खेलों का शौकीन रहा हूं. इस के अलावा मुझे समाज सेवा में भी रुचि है. समाज के लिए मैं कुछ करना चाहता था. इसलिए विनोबा आश्रम, पवनार भी गया. 'बंबई सर्वोदय मंडल' के साथ जुड़ा रहा. 'गोवध' के खिलाफ सत्याग्रह किया, पर आत्मसंतोष नहीं मिल रहा था. मैं बेचैन था. इसी दौरान मेरी मुलाकात मणिभाई से हो गई, जो बांदरा में खिलौना घर चलाते हैं. मुझे उन का कार्य पसंद आया. बच्चों की खुशी के लिए सब से पहले मैं ने अपने घर के पास आपेरा हाउस में एक खिलौना घर खोला. फिर 1983 में 'चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन' नामक संस्था बना कर 'खिलौना घर खोलो' को एक आंदोलन का रूप दिया. मुझे खुशी है कि छः वर्ष के अंदर हम पूरे देश में 75 खिलौना घर खोलने में कामयाब हुए हैं.

प्रश्न : 'चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन' का उद्देश्य...?

उत्तर : संस्था का उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा बच्चों तक ज्यादा से ज्यादा खिलौने पहुंचाना है. हमारा मिशन है लोगों को इस लायक बनाना कि वे क्षमता के अनुरूप ज्यादा से ज्यादा खेलखिलौने बच्चों तक पहुंचाएं. हम चाहते हैं कि हर शहर, हर गांव व हर कसबे में खिलौना घर खुले. हमारा उद्देश्य है 'साथ में खेलो, साथ में रहो.' बच्चों और खेलों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय एकता स्थापित करो, खेल खेलो, नएनए खेलों की खोज करो और दूसरों को खेलने के लिए प्रेरित करो.

देश में अधिक से अधिक खिलौना घर खोलने के लिए हम लोगों को प्रेरित करते हैं. इस के लिए हम तकनीकी जानकारी देते हैं. खिलौना घर खोलने और फिर उसे चलाने में भी आवश्यक सहयोग देते हैं. समयसमय पर खिलौना घरों का निरीक्षण कर के उचित सहयोग, सहायता, सलाह देते हैं.

प्रश्न : खिलौना घर खोलने की जरूरतें?

उत्तर : खिलौना घर खोलने के लिए बहुत बड़ी धनराशि की जरूरत नहीं होती. 3-6 आयु वर्ग के 100 और 6-12 आयु वर्ग के 100 बच्चों के लिए खिलौना घर खोलने के लिए कुल 30 हजार रुपए चाहिए. 10 हजार रुपए खिलौनों के लिए, 10 हजार खेलों के लिए, 5 हजार फर्नीचर तथा 5 हजार अन्य खर्चों के लिए. इस से कम खर्च में भी खिलौना घर खोला जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य में समाज सेवी संस्था 'चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन' का बहुत बड़ा योगदान है.

सब से पहले खिलौना घर की स्थापना अमरीका के लास एंजलस शहर में हुई थी. खिलौने किराए पर देने का यह सिलसिला इतना लोकप्रिय हुआ कि जल्दी ही आसपास कई और खिलौना घर खुल गए. इस के बाद तो पश्चिम बर्लिन, इटली, नार्वे, डेनमार्क, इंगलैंड, जापान, भारत आदि देशों में भी कई खिलौना घर खुल गए.

भारत में पहला खिलौना घर

भारत में सब से पहला खिलौना घर खोलने का श्रेय खेलों के शौकीन पत्रकार वीरेंद्र अढ़िया को जाता है. उन्होंने कनाडा

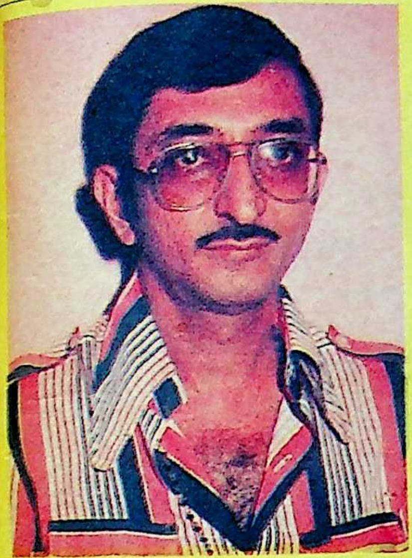

देवेंद्र देसाई : इस संस्था का उद्देश्य बच्चों तथा खेलों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय एकता स्थापित करना है.▲

200 वर्ग फुट की जगह के साथ पांचछः कार्यकर्ताओं की भी आवश्यकता पड़ती है. लेकिन इन आवश्यकताओं को कमज्यादा किया जा सकता है.

स्कूल, हस्पताल, बाल भवन, वृद्धाश्रम, विकलांग बाल संस्थान और अन्य समाज-सेवी संगठनों के कार्यालयों में भी खिलौना घर आसानी से खोले जा सकते हैं.

प्रश्न : खिलौना घर कैसे कार्य करते हैं?

उत्तर : बच्चे अकेले या अपने अभिभावकों के साथ सप्ताह में एक दिन वहां आते हैं. दूसरे बच्चों के साथ खेल खेलते हैं. फिर अपने मनपसंद खिलौने को घर ले जा कर एक सप्ताह तक खेलते हैं और एक हफ्ते बाद वापस कर देते हैं. इस के लिए बच्चों को कुछ जमा राशि, प्रवेश शुल्क और मासिक शुल्क देना पड़ता है.

प्रश्न : खिलौना घर के फायदे अथवा उपयोगिताएं?

उत्तर : खिलौना घर में हम सभी प्रकार के खेलखिलौने बच्चों को उपलब्ध करा सकते हैं. अभिभावकों के मार्गदर्शन में बच्चे जनता की वस्तुओं को सावधानी से उपयोग करना और लौटाना सीखते हैं. बच्चों में वस्तुएं बांट कर इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति विकसित होती है. पारिवारिक स्नेह बढ़ता है. बच्चों को ढेर सारा मनोरंजन और शिक्षा दी जा सकती है. बच्चे अपने मनपसंद खिलौने खेल कर, देख कर खरीद सकते हैं. बच्चों की कल्पना शक्ति बढ़ती है. वीडियो पार्लर व वीडियो फिल्मों के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए वीडियो गेम्स भी उपलब्ध किए जा सकते हैं. खेलों द्वारा योग आदि का प्रशिक्षण भी दे सकते हैं.

प्रश्न : भविष्य की योजना?

उत्तर : 'टाय फाउंडेशन' की योजना को आगे बढ़ाने के लिए वीडियो फिल्में बना कर पूरे देश के शहरों में वीडियो शो प्रस्तुत करने, खिलौना घर को ले कर गोष्ठियां आयोजित करने तथा खेल म्यूजियम बनाने की योजना है. खेल म्यूजियम में खेलों से संबंधित शोध कार्य करने की सुविधा भी होगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

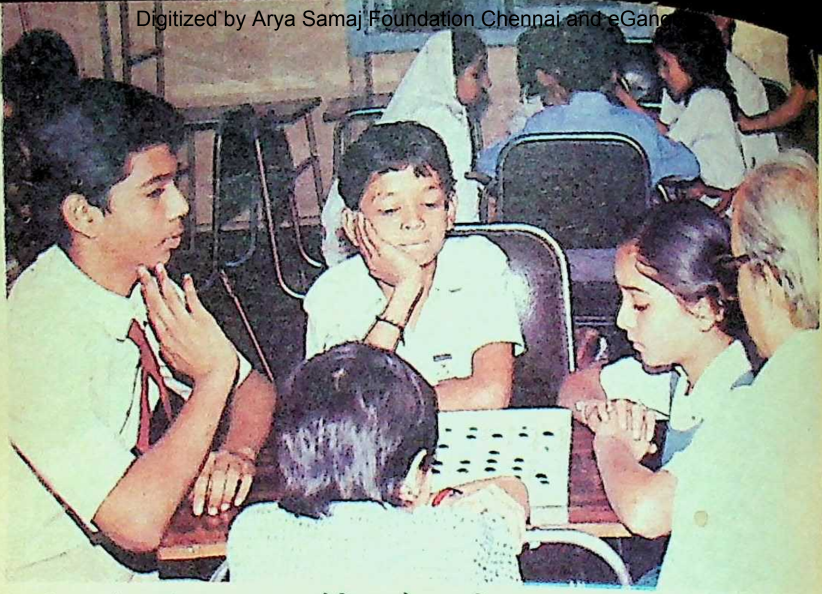

खिलौना घर से सब से बड़ा फायदा यह है कि इस से बच्चों में वस्तुएं बांट कर इस्तेमाल करने की प्रवृत्ति विकसित होती है. ▲

और डेनमार्क से खिलौने ला कर 25 जनवरी 1965 में दिल्ली में पहला खिलौना घर खोला था.

फिर बच्चों की मासूम दुनिया में खुशियों का दूसरा धमाका 19 जुलाई 1966 के दिन हुआ, जब बंबई शहर के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता मणिभाई और बांदरा आर्ट स्कूल के सहयोग से बांदरा (बंबई) में 'चाचा नेहरू टाय लाइब्रेरी' की स्थापना की गई. मणिभाई पिछले 23 वर्षों से इस खिलौना घर के विकास के लिए सक्रिय हैं.

भारत में 'खिलौना घर' को समृद्ध करने के लिए वीरेंद्र अढ़िया ने 1967 में कनाडा से एक हजार खिलौने उपहारस्वरूप भिजवाए थे. श्रीमती सुमतिबेन मोरारजी और भूतपूर्व प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई ने भी इस आंदोलन को प्रोत्साहन दिया.

5 अगस्त 1967 को दिल्ली में एक सेमिनार आयोजित किया गया जिस का निष्कर्ष था—खिलौने उतने ही जरूरी हैं, जितना जरूरी दूध है. नवंबर 1968 में कनाडा के बच्चों द्वारा प्रेषित एक हजार खिलौने पुनः भारत आए. इस के बाद वीरेंद्र अढ़िया ने 1969 में कनाडा से चार हजार खिलौने भेजे.

चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन की शुरुआत

इस तरह भारत में खिलौना घर संस्कृति की शुरुआत 1965 में हो गई थी. लेकिन दिल्ली में एक और बंबई में एक खिलौना घर खुलने के बाद यह अभिनव प्रयोग इन्हीं दो खिलौना घरों तक सीमित हो कर रह गया था. 'खिलौना घर' की बढ़ोतरी की तरफ किसी का ध्यान नहीं जा रहा था. उधर बांदरा (बंबई) स्थित 'चाचा नेहरू टाय लाइब्रेरी' के मणिभाई को ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जो कि इस दिशा में कार्य करने के लिए सेवा भाव से अपने आप को समर्पित कर सके.

तभी 1982 में उन की मुलाकात कागज के व्यापारी और समाज सेवक देवेंद्र देसाई से हुई, जो खुद शतरंज के कुशल खिलाड़ी व खेलों के शौकीन हैं. दोस्ती ने देवेंद्र भाई को खिलौना घर पहुंचा दिया. बड़े चाव से उन्होंने वहां के सारे खेलों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीखा, और फिर अधिक से अधिक बच्चों को ज्यादा से ज्यादा खुशियां प्रदान करने के लिए उन्होंने 1983 में 'चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन' की स्थापना की. तब से उन का एकमात्र उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा खिलौना घर खोलना बन गया है.

दवेंद्र देसाई और उन की संस्था 'चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन' के प्रयासों से अब तक पूरे भारत में 75 'खिलौना घर' खुल चुके हैं. बंबई में इस फाउंडेशन ने न जाने कितनों को नए खिलौना घर खोलने में सहायता दी है. खुद भी नई से नई चीजें, खेलखिलौने मंगवाने में तत्पर है. संस्थापक देवेंद्र ने अपने मित्र अरुण मेहता के साथ मिल कर 'ताश' को मूल आधार ले कर एक नई खोज की है. जिस के सहारे ताश के 52 पत्तों से कुल 51 खेल खेले जा सकते हैं.

बालकों के जीवन में खेलखिलौने के महत्त्व को महाराष्ट्र सरकार ने भी स्वीकार किया है. यही वजह है कि 8 जनवरी 1990 के दिन बोरीवली के अशोकवन में सरकार ने जिन नौ समाजसेवी संस्थाओं को फ्लैट प्रदान किए हैं, उन में से एक संस्था 'चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन' भी है. सरकार ने इस संस्था को दो फ्लैट दिए हैं. अब देवेंद्र देसाई लोगों से दानदक्षिणा ले कर अत्याधुनिक खिलौना घर स्थापित करना चाहते हैं. अपने कसबे या शहर में खिलौना घर खोलने के इच्छुक लोग देवेंद्र देसाई, चिल्ड्रन टाय फाउंडेशन, अली बिल्डिंग, 72, शहीद भगतसिंह मार्ग, फोर्ट, बंबई-400023 के पते पर संपर्क कर सकते हैं. ●

बहादुर हैं तो सिगरेट पीजिए और पुरस्कार पाइए

सिगरेट कंपनी द्वारा धूम्रपान को बहादुरी से जोड़ने का घृणित प्रयास

आप में से बहुतों ने सिनेमाघरों में वह फिल्म देखी होगी जिस में चोरी, डकैती, बलात्कार आदि से बचाने वाले को अंत में एक विशेष ब्रांड की सिगरेट पीते दिखाया जाता है. सिगरेट निर्माता लोगों के मन में यह भाव बैठाना चाहते हैं कि सिगरेट पीने वाले ही बहादुर होते हैं. जो सिगरेट न पिए वह कैसे बहादुर हो सकता है?

अब इस प्रचार को अश्लीलता की सीमा तक ले जाने के लिए इस कंपनी ने बहादुरी के विशेष पुरस्कार देने आरंभ किए हैं. इस सिगरेट के निर्माता गौडफ्रे फिलिप्स ने आम जनता से ऐसे लोगों के बारे में अनुमोदन आमंत्रित किए हैं जिन्होंने बहादुरी का काम किया हो.

सिगरेट के बारे में अब यह सिद्ध हो चुका है कि यह अप्राकृतिक व असामयिक मौत का सब से बड़ा कारण है. इस से न केवल हृदय व फेफड़ों के कैंसर होते हैं,यह अन्य कई बीमारियों की जड़ है. दूसरी तरफ इस सिगरेट के निर्माता कहना चाहते हैं कि सिगरेट पीने से बहादुरी का जोश पैदा होता है.

इस प्रकार के पुरस्कार का विरोध होना चाहिए चाहे इस का अंतिम लक्ष्य कैसा भी हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

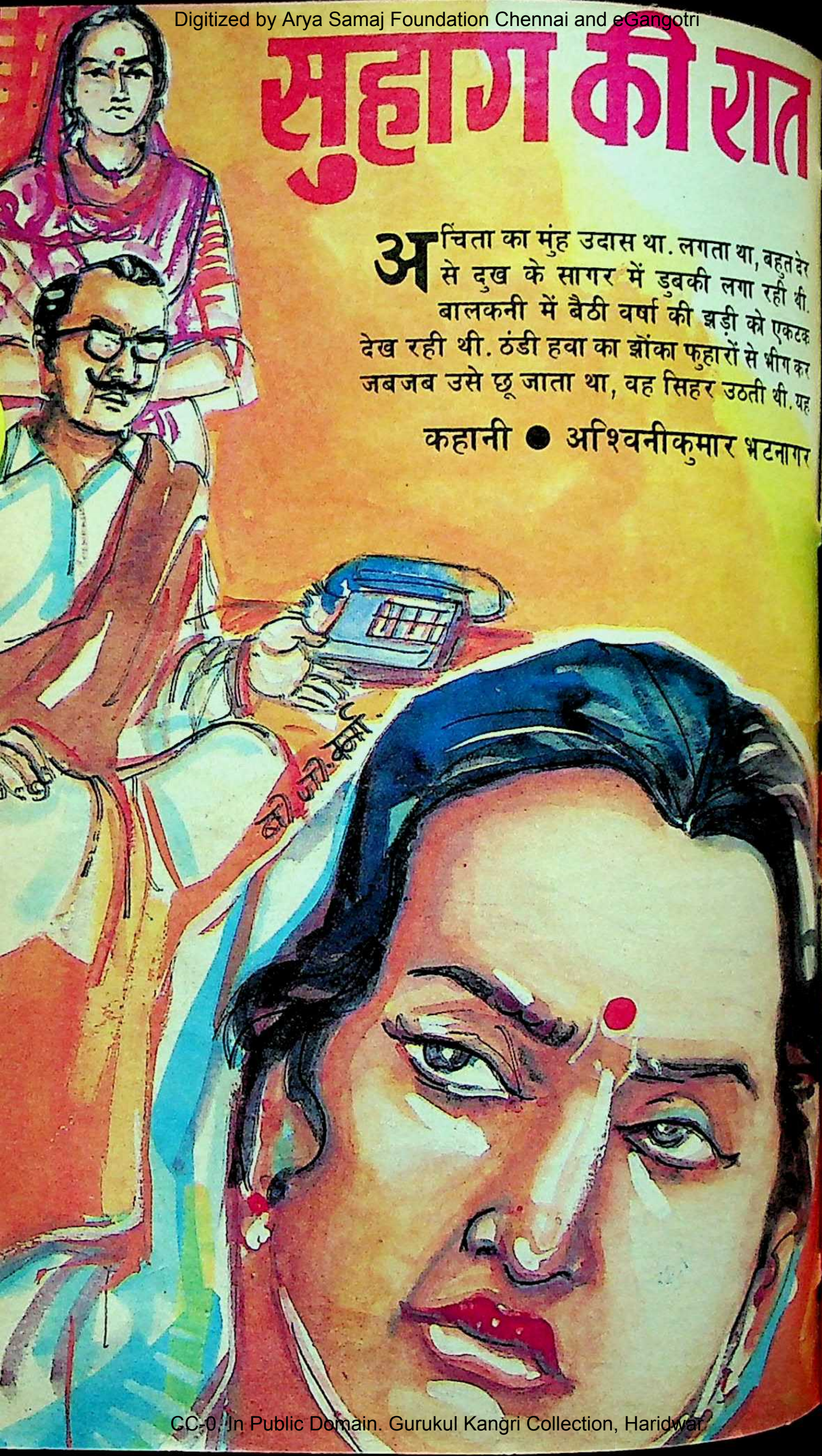

सुहाग की रात

अचिंता का मुंह उदास था. लगता था, बहुत देर से दुख के सागर में डुबकी लगा रही थी. बालकनी में बैठी वर्षा की झड़ी को एकटक देख रही थी. ठंडी हवा का झोंका फुहारों से भीग कर जबजब उसे छू जाता था, वह सिहर उठती थी. यह

कहानी ● अश्विनीकुमार भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचिंता ने विवाह को ले कर अनेक सपने सजोए थे लेकिन सुहाग की रात को ही उस के सारे सपने चूरचूर हो गए. इस के लिए अचिंता किसी को दोष भी नहीं दे सकती थी क्योंकि दोषी तो वह स्वयं थी. अपनी खुशियों में ग्रहण उस ने खुद ही लगाया था.

सिहरन भी कितनी अनोखी थी जो उस के मन को झंझोड़ जाती थी. और फिर सपनों की तरह बिखर जाती थी.

कुछ ही समय पहले तो उस की सुहागरात थी और किसी नटखट ने एक कैसेट चला दिया था, जिस में से एक दर्द भरा गीत उभर रहा था, "सुहाग की रात सजनी, काहे भरे तोरे नयना?"

लेकिन उस की आंखों में तो एक भी आंसू नहीं था. न वह रो रही थी, न हंस

"एक साथ इतने सवाल." अचिंता के उतावलेपन पर तकिए को सीने से लगा खिलखिला कर करुणा बोली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी. मन में न दुख का अहसास था, न सुख का. न तो प्रतीक्षा में खोई हुई थी और न कोई आशा उसे आकुल कर रही थी.

विवाह के बाद विदा होते हुए भी रूदन, क्रंदन बिछड़ने की पीड़ा आदि कुछ भी तो न हुआ. बस एक घर छोड़ कर अचिंता दूसरे घर आ गई थी.

पिछले वर्ष उस ने करुणा से खोदखोद कर पूछा था, "मैं तो तेरे ब्याह में न आ सकी थी, पर तेरी याद हर क्षण आ रही थी. अच्छा बता, क्या तू रोई थी?"

करुणा स्वभाव से बहुत चंचल थी. हंसी उस के अधरों पर मानो सदा फूट पड़ने को मचलती रहती थी. रोने से कोसों दूर थी, इसलिए अचिंता का यह प्रश्न स्वाभाविक था.

करुणा खिलखिला कर हंस पड़ी, "मुझे पूरा विश्वास था कि मैं नहीं रोउंगी. रोने वाले मुझे सब कद्दू लगते हैं. भला कहीं रोने से जीवन की गाड़ी खिचती है?"

अचिंता ने घूरते हुए कहा था, "अब यह सब कहानी छोड़ और सीधेसीधे मेरे प्रश्न का उत्तर दे."

"सच कहूं?"

"और क्या?"

"न चाहते हुए भी मैं बिलखबिलख कर रो पड़ी थी. मां का विलाप मेरे दिल को छू गया. पिता, जिन्हें मैं ने सदा हंसते मुसकराते देखा था, आंखों से आंसू टपका रहे थे. छोटी बहन से शर्त थी कि अगर वह रोएगी तो मुझे सौ रुपए देगी. जानती है न, हम दोनों कितना लड़ती थीं? वह लड़ाकू भी फूटफूट कर रो रही थी. अचिंता, मैं वर्णन नहीं कर सकती, पर यह सच है कि मांबाप, घरद्वार छोड़ते हुए बरबस रुलाई आ ही जाती है. मैं तो रोना चाहती भी न थी. नहीं रोऊंगी, ऐसा मेरा विश्वास भी था. पर हार गई. लेकिन यह बात कहते और मानते हुए मुझे कोई शर्म नहीं."

"अच्छा बाबा, मान लिया कि तू बेशर्म है और बेशर्मों की तरह रोई. अब यह बता, बताएगी न... पूछूं?"

"हांहां, पूछ के देख." करुणा ने आराम से टांगें पसार कर गोदी में तकिया रखते हुए कहा.

"अचिंता ने पास आ कर उस के कानों में फुसफुसा कर पूछा, "तेरी सुहागरात कैसी रही? हनीमून कैसा रहा? गई थी कहीं?"

तकिए को छाती से भींचते हुए करुणा फिर खिलखिला पड़ी, "एकसाथ इतने सवाल?"

"बच्ची, अब जवाब देती है या नहीं?"

"यह महसूस करने की बात है. इसे बयान करने के लिए किसी भी भाषा में कोई शब्द अभी तक गढ़े नहीं गए हैं." करुणा के अधरों पर एक मादक मुसकान थी.

अचिंता एक झटके से उठ खड़ी हुई और करुणा को गुदगुदी मचाते हुए बोली, "मुझे मूर्ख बना रही है?"

करुणा गुदगुदी से खिलखिलाती हंस कर बोली, "बताती हूं बाबा, पहले छोड़ तो मुझे."

अचिंता ने उसे छोड़ तो दिया, पर ऐसी मुद्रा में हाथ की उंगलियां फैला कर खड़ी हो गई कि बात न मानने पर फिर से करुणा पर टूट पड़ेगी. करुणा की सांस फूल गई थी. वह धीरे से बोली, "पहले सांस तो लेने दे."

अचिंता का चुपकेचुपके राजेश के साथ रोमांस चल रहा था. अंतरंग सहेली होने के बावजूद करुणा को इस का पता न था. यद्यपि करुणा उसे अपनी पूरी बात बता देती थी कि कैसे पत्राचार से उस का विवाह पक्का हुआ, कैसे उस ने अपने होने वाले पति को देखा, प्रथम दर्शन से उस ने कैसा महसूस किया आदिआदि.

एक दिन उस के होने वाले पति ने एक प्रणय पत्र लिखा और उत्तर भी मांगा. वह पत्र भी करुणा ने अचिंता को दिखाया था. दोनों पढ़ते हुए हंसहंस कर लोटपोट हो गई थीं. करुणा ने अचिंता की सहायता से उत्तर लिखने के कई प्रयत्न किए, परंतु कोई उत्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

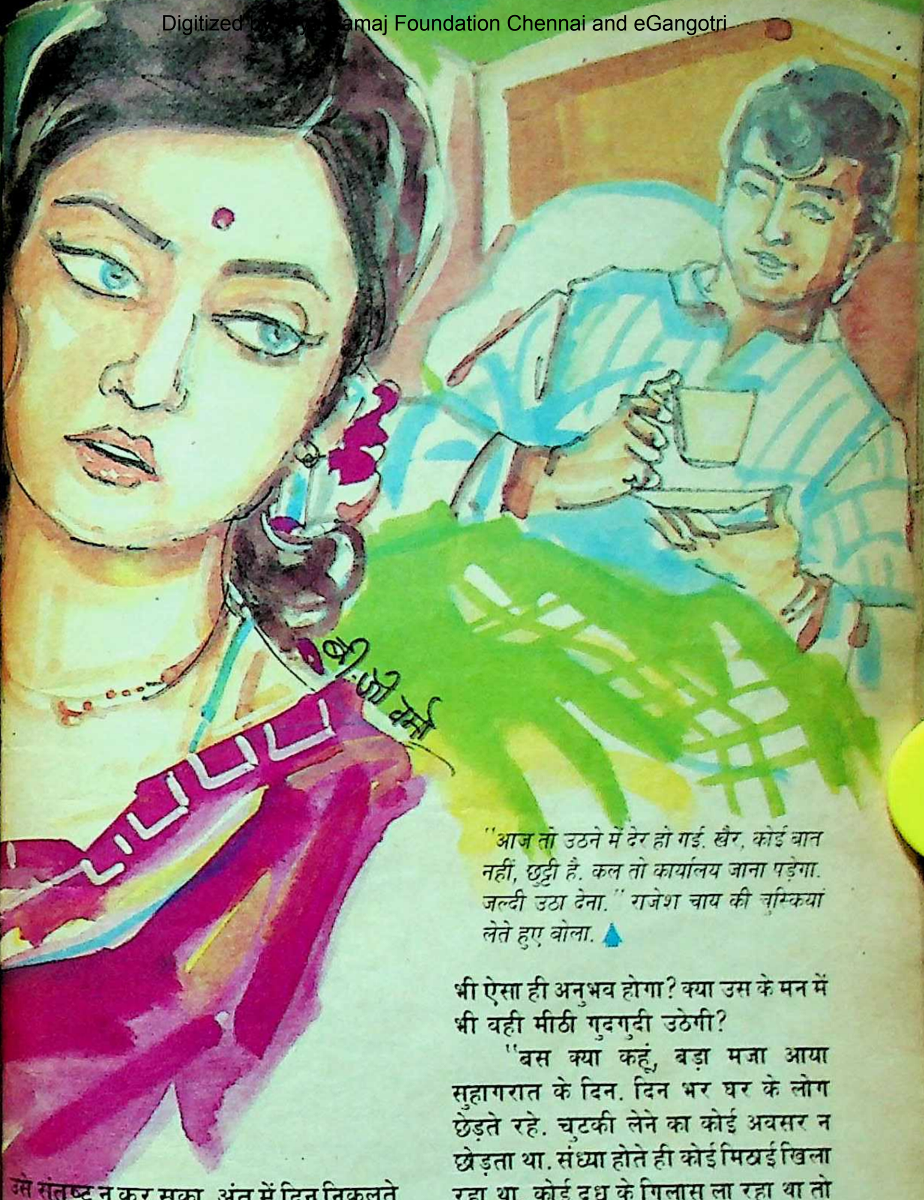

"आज तो उठने में देर हो गई. खैर, कोई बात नहीं, छुट्टी है. कल तो कार्यालय जाना पड़ेगा. जल्दी उठा देना." राजेश चाय की चुस्कियां लेते हुए बोला. ▲

उसे संतुष्ट न कर सका. अंत में दिन निकलते गए और कभी भी उस ने उस पत्र का उत्तर नहीं दिया.

अचिंता को बड़ी उत्सुकता थी कि करुणा से विवाह के पहले और बाद के हर क्षण की समीपता का वर्णन सुने और अहसास करे कि क्या उसे और राजेश को भी ऐसा ही अनुभव होगा? क्या उस के मन में भी वही मीठी गुदगुदी उठेगी?

"बस क्या कहूं, बड़ा मजा आया सुहागरात के दिन. दिन भर घर के लोग छेड़ते रहे. चुटकी लेने का कोई अवसर न छोड़ता था. संध्या होते ही कोई मिठाई खिला रहा था, कोई दूध के गिलास ला रहा था तो कोई पलंग पर नारियल फोड़ रहा था. मैं तो शर्म से गड़ी जा रही थी."

"चल हट बेशर्म कहीं की."

"सच, झूठ नहीं बोलती. लज्जा से गड़ी जा रही थी. पति, जिन्हें कभी आंख उठा कर भरपूर नहीं देखा था, न जाने क्यों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक अपने से लगने लगे. कमरा खाली होने में जैसे कई वर्ष बीत गए. फूल मालाओं से कमरा और पलंग सजे हुए थे. कोने से धीमा संगीत व सुगंध उभर रहे थे. सच, बड़ा ही नशीला वातावरण था. मन में डर भी था कि न जाने क्या विस्फोट होने वाला है."

अचिंता ने करुणा की ठोडी पकड़ कर हिलाते हुए हंस कर पूछा, "फिर क्या विस्फोट हुआ?"

"पता नहीं."

"पता नहीं? फिर झूठ."

"सच कहती हूं, सारी रात जागते ही गुजर गई. न जाने कब हम दो शरीर एक हो गए. आज भी लगता है कि वह रात एक सपना थी. काश, हर रात एक सपना सा होती."

"तुझे एक अजनबी से प्यार करते झिझक नहीं हुई?"

"पगली, वह अजनबी लगे कब? वह तो पहले दिन से ही, पहले क्षण से ही ऐसे लगे मानो बहुत पुराने साथी हों."

"लगता है, तू कालिदास का 'मेघदूत' पढ़ रही है. अच्छा, फिर क्या हुआ?"

"फिर क्या, फिर 15 दिन के लिए हम लोग मसूरी चले गए. सच कहती हूं, एकएक क्षण जैसे प्यार का लावा था. मन करता है कि जीवन यात्रा बस केवल मधुरात्रि और हनीमून तक ही महदूद रहे. इस के पहले का जीवन कुछ नहीं और बाद का तो केवल मिट्टी रह जाता है... केवल यादों की बरात." करुणा अचानक सपनों में खो गई.

करुणा का विवाह परंपरागत हुआ था. इस कारण वह हर अनुभव के बीच से गुजरी थी. हर क्षण स्मृतियों की माला का एक मोती था.

राजेश और अचिंता की विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में भेंट हुई थी. फिर पुस्तकों का आदानप्रदान आरंभ हुआ. विषयों का गंभीर विश्लेषण उन्हें कुछ अधिक समीप ले आया. काफी हाउस के अंधेरे कोने में वे खोने लगे और उन की मुलाकातें रोमांचक क्षणों में बदलने लगीं. जब राजेश ने अपनी मुट्ठी में अचिंता का हाथ कस लिया तो उस समय जिस सिहरन से अचिंता का सारा शरीर हिल उठा था, वह उस की अपनी अनोखी अनुभूति थी, लेकिन कभी उस की पुनरावृत्ति नहीं हुई.

"मैं तुम से विवाह करना चाहता हूं," राजेश ने आंखें बंद कर के कहा, "तुम कहीं इनकार न कर दो, इस डर से मेरी आंखें बंद हो गई हैं."

"आंखें खोल लो." अचिंता ने हंस कर कहा, "न करने के अवसर व अधिकार दोनों से ही मैं कभी की हाथ धो चुकी हूं."

"हाय, तुम कितनी अच्छी हो," राजेश ने आंखें खोल कर अचिंता का हाथ कस कर पकड़ लिया, "जो हाथ अब मैं ने अपने हाथों में ले लिया है, वह कभी नहीं छूटेगा."

अचिंता ने सोचने की मुद्रा में कहा, "यह संवाद मैं ने किसी फिल्म में सुना है याद नहीं आ रहा."

"याद करने की क्या आवश्यकता है? ऐसा संवाद तो हिंदी की हर फिल्म में होता है."

"यह बात भी ठीक है. फिर मेरे घर यह घोषणा करने कब आ रहे हो?"

"जब कहो, तब ही आ जाऊंगा. तुम्हारे पिताजी तो अवकाशप्राप्त कर्नल हैं न, इसलिए डर लगता है. हमेशा दोनाली साफ करते रहते होंगे. कहीं उन की दृष्टि में आ गया तो तुम्हारा सुहाग बसने से पहले ही उजड़ जाएगा." राजेश ने नाटकीय मुद्रा में कहा.

"ये सब फिल्मी बातें हैं." अचिंता ने हंसते हुए कहा, "वह अब एक कुशल व्यापारी हैं. शेअर बेचते और खरीदते हैं. उन का इमारती लकड़ी का गोदाम है. दिनभर टेलीफोन के पास बैठे रहते हैं."

"तब तो उन्हें यह भी पता होगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन की प्यारी पुत्री क्या गुल खिला रही है?"

"बिलकुल नहीं. उन के गुलिस्तां में कोई गुल नहीं. मां तो किटी पार्टी में व्यस्त रहती हैं. जितनी गति से रुपया आता है, उस से दोगुनी गति से बाहर निकालने का ही उन के जीवन का अंतिम लक्ष्य है. भाई श्रीनगर में इंजीनियरिंग पढ़ रहा है. रुपया भेज देते हैं, इसलिए छुट्टियों में भी कभी घर नहीं आता."

"ओह," राजेश ने गंभीरता से पूछा, "तब तो तुम्हें घर से बाहर निकालने में उन्हें कोई झिझक नहीं होगी. सोचेंगे, चलो पीछा छूटा."

"कभीकभी मुझे भी ऐसा ही लगता है, पर बुनियादी तौर से वे दोनों बड़े रूढ़िवादी हैं. मुझे यह सोच कर आश्चर्य होता है कि वे अपने जीवन का सामंजस्य रखते कैसे हैं? कभी एकदम प्रगतिशील और दूसरे ही क्षण दकियानूसी."

"होता है, ऐसा भी होता है... तो फिर कोई दिन बताओ, जब उन दीवारों को गिराने के लिए इस हीरो का आगमन हो."

"पहले अपने घर वालों को तो फुसलाओ. मेरा क्या, मैं तो घर से भाग भी सकती हूं. कानूनी तौर से वयस्क हूं न. तुम कहां जाओगे?"

सिर खुजाते हुए राजेश ने कहा, "सो तो है. एक तरकीब करते हैं. मैं तुम्हें एक दिन अपने घर ले चलूंगा. सब से अपने मित्र के रूप में परिचय दूंगा. दोचार बार आओगी तो सब समझ जाएंगे.

"चलेगा." अर्चिता ने सहमति में सिर हिलाया.

दोतीन बार घर जाने से राजेश के परिवार के लोग शीघ्र ही अर्चिता से परिचित हो गए और अर्चिता के संकोच पर से अंकुश भी हट गया. सब लोग इतना घुलमिल गए कि अर्चिता परिवार का अंग लगने लगी. अब तो वह अपनी मरजी से जब चाहे आ जाती थी. यह आवश्यक नहीं था कि राजेश घर पर ही हो. मां अगर रसोई में

तेरी खातिर

तेरी जुल्फों के साए में
कुछ यूं मचल जाएंगे हम,
हमदम मेरे तुझ को
तुझ से ही चुरा लाएंगे हम,
आए हैं इस जमाने में
तेरी ही खातिर, ऐ सनम,
तेरी ही खातिर इस जहां
से भी चले जाएंगे हम.

—अभय शर्मा 'अंजुमन'

होती थी तो निस्संकोच उन की सहायता करने लगती थी. देवर से चुटकी और ननद से चुहल अब उस के जीवन का सुखद भाग हो गए थे. सब ने न केवल उसे समझ लिया था बल्कि स्वीकार भी कर लिया था.

राजेश के पिता का वर्षों पूर्व देहांत हो चुका था. इस कारण उस की मां को ही अर्चिता के घर जाना पड़ा. अर्चिता को स्वयं अपने मातापिता से कहने का साहस न हुआ.

"श्रीमती सुभद्रा यही नाम है न आप का?" कर्नल ने पूछा.

"जी."

"आप ने यह सोचा है कि हम लोग एक बिरादरी के नहीं हैं?"

"हम इस पर विचार कर चुके हैं. आप की पुत्री हमें पसंद है और हमें कोई आपत्ति नहीं है."

अर्चिता की मां ने कुछ कड़वाहट से कहा, "बहनजी, आप हमारी बिरादरी की नहीं हैं, यह सब से बड़ी बाधा है. शुरू में सब आदर्शवादी होते हैं, पर यथार्थ के आगे दम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोड़ते देर नहीं लगती. [illegible] के लिए लड़का देख रखा है. 'शादी की तारीख ही 'तय करनी है.''

कर्नल ने टेलीफोन की ओर देखा और फिर घड़ी पर निगाह डाली. उन्हें किसी की प्रतीक्षा थी. अनमने स्वर में कहा, ''हां, बस तारीख ही तय करनी है.''

राजेश की मां को लड़के की मां होने के नाते उन का व्यवहार बड़ा अपमानजनक लगा. वह तो आना भी न चाहती थीं. बस अपने बच्चों की हठ के आगे विवश हो गई थीं. उन्होंने उठने का प्रयास करते हुए कहा, ''आप सोच लीजिए, कोई जल्दी नहीं है. बच्चों के भविष्य की बात है. अगर वे दोनों इस विवाह से सुखी होते हैं तो हमें क्या आपत्ति हो सकती है? सूचना की प्रतीक्षा करूंगी.''

अचिंता के पिता घंटी बजते ही टेलीफोन पर झपटे. राजेश की मां उठ खड़ी हुईं और अपना 'शाल समेटने लगीं.

चलतेचलते अचिंता की मां ने कहा, ''देखिए, हम लोग कोई दहेज नहीं देंगे. यह नहीं कि हम दे नहीं सकते, लेकिन हम दहेज देने में विश्वास नहीं करते.''

ये 'शब्द इतनी रुखाई से कहे गए थे कि राजेश की मां के दिल में तीर की तरह लगे. उन्होंने तीखे स्वर में कहा, ''दहेज की बात आप ने कही है, मैं ने नहीं.''

जब राजेश की मां ने सारा वार्त्तालाप आ कर सुनाया तो घर में उदासी छा गई. लगता था, अचिंता के मांबाप विवाह में काफी अड़चनें पैदा करेंगे. राजेश की मां के दिल में एक बार यह बात भी आई कि क्यों व्यर्थ में इस झंझट में पड़े.

अचिंता का उदास होना ठीक ही था. घर में बहुत डांट पड़ी. यह बात उस के मातापिता के दिल में कभी नहीं आई कि इतना समय बीतने पर भी उन्होंने अचिंता के विवाह या भविष्य के बारे में कभी सोचा नहीं. यह तो एक अवसरवादी झूठ था कि उस के लिए लड़का देखा जा चुका है और केवल तारीख [illegible] करना बाकी है. लड़का दूसरी बिरादरी का है, यह जान कर तो वे और भी उखड़ गए थे.

डांट खा कर अचिंता को मुंह खोलना पड़ा. उस ने भी हठीले स्वर में कहा, ''मैं केवल राजेश से विवाह करूंगी, चाहे आप सहमत हों या नहीं.''

मां ने तुर्शी से कहा, ''क्या नाक कटाएगी हमारी? सारे रिश्तेदार क्या कहेंगे? लड़कियों को घूमनेफिरने की स्वतंत्रता दी जाए तो इस तरह उस का नाजायज फायदा तो नहीं उठाना चाहिए?''

''मैं अपना अच्छाबुरा समझती हूं. आप की इज्जत पर कोई आंच नहीं आएगी. मैं राजेश के सारे परिवार को अच्छी तरह समझती हूं और जिस प्यार की मुझे तलाश है, वह मुझे वहीं पर मिलेगा.''

''जब तुम ने तय ही कर लिया है तो फिर हमारी सहमति का तो प्रश्न ही नहीं उठता.''

''इतनी औपचारिकता तो निभानी ही पड़ेगी.'' अचिंता के स्वर में तनिक व्यंग्य था.

पिता ने सिगार झाड़ते हुए कहा, ''इस औपचारिकता और सूचना के लिए तुम्हें धन्यवाद तो देना ही पड़ेगा. अब तारीख भी तय कर लेना और वह भी हमें बता देना. हमारे योग्य कोई सेवा हो तो बताना, भरसक प्रयत्न करेंगे.'' जैसे ही टेलीफोन बजा और वह दूसरी दुनिया में खो गए.

मां ने सिर झटक कर कहा, ''हूं... कैसी औलाद है.''

राजेश और अचिंता अगले दिन काफी हाउस में बैठे सोच रहे थे कि उन की क्या योजना होनी चाहिए.

अगले महीने राजेश के कार्यालय वालों ने दक्षिण भारत के भ्रमण का कार्यक्रम बनाया था. जाने वालों में सातआठ परिवार व कुछ अविवाहित लड़केलड़कियां भी थे. पूरी बस किराए पर ली थी. राजेश ने अचिंता को साथ चलने के लिए राजी कर

(शेष पृष्ठ 180 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज का सिनेमा सैडिस्ट है"

सदाशिव अमरापुरकर

भेंटवार्त्ता • अशोक राणे

"आज का खलनायक सैडिस्ट है. आज का सिनेमा सैडिस्ट है. उस का नायक तक सैडिस्ट है. उन सब को परपीड़न में ही सुख का अनुभव होता है." हिंदी फिल्मों के आज के व्यस्त खलनायक सदाशिव अमरापुरकर का यह कहना है.

"फिलम का विषय ही कुछ इस तरह का सोचा जाता है मानो इस धरती की नहीं, किसी दूसरे लोक की कहानी हो. इस धरती से, इस मिट्टी से, दर्शकों की भावना से उस का कोई ताल्लुक नहीं होता. कामेडी भी भोंड़ी होती है और खलनायक को तो सैडिस्ट होना ही चाहिए. यह सब करते समय मुझे बड़ी तकलीफ होती है. 'हुकूमत' में बड़ी तकलीफ हुई." वह कहते हैं.

"ऐलाने जंग में मैं नायक की मां के दोनों हाथ काट कर बड़ी शान से उसे भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता हूं तो देखा आप ने, इन फिल्मों ने खलनायक को क्या बना दिया है?"

उन की बातों से एक बात साफ झलकती है कि वह अपने काम को ले कर गंभीरता से सोचते हैं, उस का विश्लेषण करते हैं और फिर भी उसी माहौल का एक अंग बन कर रह जाते हैं.

वह कहते हैं, "ऐसी फिल्में मैं खुद नहीं देखता. अपनी फिल्में सिर्फ 'डबिंग' के समय देखता हूं. वरना फिल्में देखने का शौक भी मुझे नहीं है. फिल्मों में काम करना मेरा व्यवसाय है." जब वह ऐसा कहते हैं तो लगता है, वह वैचारिक उलझन के शिकार हैं.

कोई भी बुद्धिवादी व्यक्ति जब हिंदी की बेसिरपैर की फिल्मों के वातावरण का हिस्सा बन जाता है तो उस का व्यक्तित्व

हुई लग सकती है लेकिन है यह एक मेहनती, निश्चयी, पागल कलाकार की अविरल तपस्या.

स्कूल में 8वीं तक नाटकों से उन्हें कोई लेनादेना नहीं था. 8वीं में थे तब एक मराठी नाटक देखा था 'वाहतो ही दुर्वांची जुडी.' इस नाटक ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि स्कूल के नाटकों में भाग लेना शुरू कर दिया. कालिज में क्रिकेटर भी बनना चाहते थे, लेकिन नाटक का माहौल ज्यादा था. मराठी के प्रसिद्ध रंगकर्मी प्राध्यापक मधुकर तोरडमल का मार्गदर्शन मिला. नाटकों के नाट्य स्पर्धाओं का सिलसिला शुरू हो गया.

इस बीच शादी हुई. एम.ए. की पढ़ाई की. जी भर कर साहित्य पढ़ा. परभणी के आकाशवाणी केंद्र पर नौकरी की और

एक तरफ तो सदाशिव अमरापुरकर व्यावसायिक फिल्मों के विरुद्ध आक्रामक और साहसिक वक्तव्य दे जाते हैं और दूसरी तरफ उन्हें समर्थन भी देते हैं. आज के सिनेमा उद्योग के बारे में उन की क्या राय है, आइए उन्हीं की जुबानी जानें.

इसी तरह दो हिस्सों में बंट जाता है. स्प्लिट पर्सनैलिटी. जो अच्छा नहीं लग रहा है, वही काम वे व्यवसाय मान कर करते चले जाते हैं और अपने 'व्यावसायिक' होने की दलील देते हैं लेकिन विचार के स्तर पर अपने इस रूप को वे बराबर नकारते रहते हैं.

बाल की जड़ तक पहुंचने वाले सदाशिव अमरापुरकर जब ऐसे वक्तव्य देने लगते हैं तो बड़े उथले भी लगते हैं लेकिन जो बोलते हैं दिल की तह से, शिद्दत से बोलते हैं.

बंबई से दूर अहमदनगर (महाराष्ट्र) में शौकिया नाटक करतेकरते राज्य नाट्य स्पर्धा और व्यावसायिक रंगमंच से होते हुए सदाशिव 'अर्धसत्य' की दहलीज पर आ खड़े हुए और देखते ही देखते अमिताभ, धर्मेंद्र जैसे बड़े नायकों के सामने खलनायक के रूप में खड़े होने लगे. ऊपरी तौर पर देखने वाले को यह सफलता रातोरात मिली

वापस अहमदनगर का अपना यात्री निवास चलाने का प्रयास भी किया लेकिन इन गतिविधियों के बीच नाटक कहीं भी रुका नहीं.

महाराष्ट्र की राज्य स्तरीय नाट्य स्पर्धा में उन के नाटक 'काही स्वप्न विकायचीत' (कुछ सपने बेचने हैं) में उन के अभिनय और निर्देशन को प्रथम पुरस्कार मिला. इस के बाद मराठी के व्यावसायिक रंगमंच की तरफ से बुलावे आने लगे और सदाशिव अमरापुरकर ने उन का स्वागत किया. तय कर लिया कि अब अहमदनगर वापस नहीं जाएंगे. उन के द्वारा निर्देशित मराठी नाटक 'छिन्न' में स्मिता पाटिल ने भूमिका की. फिर तो कई नाटकों में अभिनय किया. कइयों का निर्देशन किया.

"मैं ने नाटक के सभी रूप कर के देखे." वह कहते हैं, "विजय तेंडुलकर का नाटक इसलिए नहीं किया कि वह विजय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाशिव अमरापुरकर : अभिनय का एक अंदाज यह भी.

तेंडुलकर का है बल्कि इसलिए किया क्योंकि वह विषय महत्त्वपूर्ण लगा. मैं अपनेआप से एक सवाल पूछता हूं. 'क्या यह नाटक समाज में आ रहे परिवर्तनों का आईना बन रहा है?' बस, इसी कसौटी पर नाटक चुनता हूं."

इस तरह व्यावसायिक रंगमंच पर निर्देशक की हैसियत से स्थापित हो ही चले थे कि गोविंद निहलानी ने 'अर्धसत्य' के लिए बुला लिया. गोविंद ने 'कन्यादान' नाटक में उन के द्वारा अभिनीत दलित युवक को देख 'अर्धसत्य' के रामा शेट्टी की भूमिका के लिए उन्हें चुना था. 'अर्धसत्य' बाक्स आफिस पर बेहद सफल हुई और बाक्स आफिस पर जो कामयाब होता है, पूरी इंडस्ट्री उस के पीछे भागती है. सदाशिव अमरापुरकर के साथ यही हुआ. वह हिंदी फिल्मों के जंगल में घुस गए और नाटक रुक गया.

"शुरू में समझ में नहीं आ रहा था, मैं ने गोविंद और तेंडुलकर से पूछा तो वे बोले, 'ऐसा ही होता है, अब तुम्हीं को तय करना होगा.' पल भर के लिए सोचा, तय कियां. कुछ समय तय कर के देख ही लिया जाए."

और वह दिल खोल कर हंस पड़े. उस समय नहीं समझ पाए थे, अब खूब समझ गए हैं. एक बार इंडस्ट्री में कदम रखा तो फिर यह इंडस्ट्री का हो जाता है. तब फिर तय करने का काम इंडस्ट्री खुद ही करती है.

फिर पहली फिल्म मिली 'हुकूमत'. खूब हिट रही और मांग बढ़ती गई. अमरापुरकर घने जंगल में घुसते ही चले गए.

"एक बात बताता हूं. मैं ज्यादा फिल्में नहीं देखता. कलाकारों को पहचानना तक नहीं आता मुझे. नाम भी नहीं जानता उन के. 'हुकूमत' की शूटिंग के लिए हम लोग नैनीताल गए थे. होटल पर अपने कमरे में गया तो वहां एक लड़की मेकअप कर रही थी. साथ में एकदो औरतें. मैं बाहर आ कर बैठ गया. निर्देशक अनिल शर्मा से कहने लगा, 'यार, कोई लड़की मेरे कमरे में बैठी है.'

"उस ने अंदर झांका और वह बोला, 'अरे, वह तो अपनी हीरोइन है-रति अग्निहोत्री.'"

वैसे यह घटना सुनाते समय भी उन्हें रति अग्निहोत्री का नाम फिर याद नहीं आ रहा था. इंटरव्यू के दौरान उन की बेटी ने बता दिया.

"फिर धीरेधीरे मैं इंडस्ट्री की जानकारी इकट्ठी करने लगा. अंगरेजी फिल्में देखने लगा. तकनीक समझने की कोशिश करने लगा. टेरिटरीज, डिस्ट्रिब्यूशन, एक्जिबिटर आदि सारे तत्त्वों से जानपहचान कर ली.

"शुरुआत 'अर्धसत्य' से हुई थी. उस का सारा माहौल नाटक का सा था. इसलिए पहलेपहल फिल्म में कदम रखने वाले नए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलाकार में जो हीनता का भाव आ जाता है. वह मुझ में नहीं आया. नाटक की आदत की वजह से किसी भी बड़े अभिनेता के सामने खड़े होते हुए मुझे डर नहीं लगा."

"लेकिन नाटक के अनुशासित वातावरण से फिल्मों के बेतरतीब माहौल में आने पर तकलीफ नहीं हुई. जो कलाकार, निर्देशक रंगमंच पर एक विचार, एक तर्क ले कर जिया है, वह कैसे फिल्मों के बेतरतीब, बेसिरपैर के माहौल का हिस्सा बन जाता है?" मैं ने पूछा.

"शुरू में तो मैं बहुत बेचैन हुआ करता था. अपनी तरफ से सुझाव देता था. गलत को सही करने की कोशिश करता था लेकिन उन लोगों के कान पर जूं भी नहीं रेंगती थी. एक बार एक निर्देशक को बताने लगा कि 'आप गलती कर रहे हैं. पिछले शाट की मेरी हरकत से इस शाट का कोई ताल्लुक नहीं है.'

"मुझे इस तरह बेचैन देख कर सेट पर मौजूद एक बड़े स्टार ने मुझ से कहा, 'यहां आप को पैसे किस चीज के मिलते हैं?'

"मैं ने कहा, 'एक्टिंग के.'"

फिर वह बोले, "निर्देशक को सुझाव देने के पैसे अलग से मिलते हैं?"

मैं देखता ही रह गया. मेरी पीठ थपथपाते हुए उन्होंने कहा, "जिस काम के पैसे नहीं मिल रहे, वह काम हम क्यों करें?" मैं समझ गया.

"शुरू में फिल्म साइन करते समय मैं पूछताछ किया करता था कि कहानी क्या है. निर्देशक कौन है लेकिन अब समझ गया हूं, इन बातों में कुछ धरा नहीं है."

वह ऐसे हंस देते हैं मानो अब इन बातों का उन्हें कोई मलाल नहीं है.

"हिंदी फिल्मों के बेतरतीब माहौल की बात छोड़िए, अपने अंदर के कलाकार की बेचैनी का क्या कीजिएगा? अपने प्लसमाइनस पाइंट्स यानी खूबियों और कमजोरियों का क्या?" मैं ने पूछा.

बोले, "एक माइनस पाइंट था. शाट से बस 15 मिनट पहले संवाद मिलते थे. इतने थोड़े समय में उन्हें कैसे याद किया जाए? वह भी हिंदी में? उस पर 'अर्धसत्य' से ले कर मुझे लंबेचौड़े संवाद ही मिलने लगे थे. भाषा का भी सवाल था लेकिन फिर खयाल आया, जबान मुझे वैसी की वैसी रखनी होगी. धर्मेंद्र, जितेंद्र पंजाबी लहजे में हिंदी बोलते हैं और रजनीकांत, श्रीदेवी दक्षिण भारतीय शैली में, अकेले अमिताभ शुद्ध हिंदी बोलते हैं. यानी हिंदी फिल्मों में टिकना हो तो अपना स्टाइल होना चाहिए, खासियत होनी चाहिए. शत्रुघ्न सिन्हा अपने अभिनय के बल पर थोड़े ही चले हैं? वह तो अपने स्टाइल की वजह से लोकप्रिय हुए थे. निर्देशक अनिल शर्मा ने मुझ से कहा, 'आप जो गलत हिंदी बोलते हैं वही आप की खासियत है. इसी स्टाइल को पक्का कर दो.' बात मुझे भी जंच गई. फिर मैं ने हिंदी अध्यापक से हिंदी सीखनेवीखने की जहमत नहीं उठाई."

"ठीक है. मराठी लहजे वाली हिंदी आप की खासियत बन गई लेकिन कभी अन्य बोलीभाषाओं का लहजा पकड़ने की कोशिश की आप ने?"

"अनिल सूरी की फिल्म में हैदराबादी किरदार किया है मैं ने. बड़ी मेहनत की. देवेन वर्मा की 'दाना पानी' में साउथ इंडियन झोंपड़पट्टी दादा बना-कुट्टी शेट. 'फरिश्ते' में संस्कृत मिश्रित हिंदी बोलने वाला राजा बना और 'लश्कर' में बंबई का मराठी इंस्पेक्टर बना."

"लेकिन ये अलगअलग मौके भी बड़ी मुशकिल से मिलते हैं. ज्यादातर तो होती है कोरी हिंसा, गोलियों की बौछार और धुआंधार घुड़दौड़!" मैं ने टोका.

"लेकिन इस के लिए हम उन्हें दोष नहीं दे सकते." बड़ी सहजता से बोले वह. "क्योंकि अगर कोई अच्छी फिल्म बनाना चाहता भी है तो क्या वह उस के लिए संभव है? मैं खुद ऐसी एक फिल्म बनाना चाहता हूं. भारत चीन युद्ध पर, इंदिराजी की हत्या पर, फौज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर फिल्में बनाना चाहता हूं लेकिन क्या मेरे लिए यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म 'अर्धसत्य' की सफलता से सदाशिव अमरापुरकर की अभिनय क्षमता को हिंदी फिल्म जगत में पहचान मिली और उन्हें हिंदी फिल्मों में काम करने का सुनहरी मौका. ▲

संभव है? सेंसर इतनी भयानक चीज है कि मत पूछिए. वहां बैठे हुए मुट्ठी भर लोग तय करते हैं कि देश की करोड़ों की जनता को क्या देखना चाहिए. यह तय करने वाले वे होते कौन हैं आखिर? मान लीजिए, इस देश के लोग सेक्सी, भोंडी, गंदी फिल्में देखना चाहते हैं तो देखने दीजिए न उन्हें. तब वे इसी लायक हैं."

सेंसर को ले कर अपनी तीखी प्रतिक्रिया इस प्रकार प्रकट करतेकरते, लोगों पर भी टिप्पणी कर ही गए हैं. एक गलत बात भी उन्होंने की कि, 'लोग जो पसंद करते हैं, वही निर्माता उन्हें देता है.' गलत इसलिए, क्योंकि अगर लोगों की पसंद को देख कर फिल्में बनाई जातीं तो शुक्रवार को रिलीज हो कर वे सोमवार को सिनेमाघर से उतर क्यों जातीं?

मगर सदाशिव अमरापुरकर तैश में आ गए और बोले, "ये लोग कहते हैं, फिल्मों में अंधश्रद्धा मत दिखाइए मगर दूरदर्शन पर दिखाई जाती है. हिमालय से कन्याकुमारी तक और गुजरात से बंगाल तक फैले इस विशाल देश की विभिन्न जातियों, विभिन्न धर्मों, विभिन्न प्रदेशों के लोग क्या पसंद करते हैं कैसे पता चले?"

"सेंसर के होते हुए भी फिल्में इतनी गंदी, वीभत्स हैं, सेंसर न हो तो क्या होगा? कलाकार सेंसर के खिलाफ ही होगा. शिक्षित समाज भी समझ सकेगा, लेकिन हिंदी फिल्मों में ऐसे जिम्मेदार, सुसंस्कृत कलाकार कितने हैं? फिल्म को कला न मान कर बाजारू चीज बना देने वालों को यों खुला छोड़ दिया जाए तो क्या होगा?" मैं ने पूछा.

"लोग खुद ही तय कर लेंगे." उन्होंने कहा.

खैर सेंसर की गहमागहमी से थोड़ा हट कर मैं ने उन से उन के निर्देशकों के बारे में पूछना चाहा तो वह बोले :

"निर्देशिका अमाल अलाना मुझे बहुत पसंद आईं. महाराष्ट्र की ज्यादा जानकारी नहीं रखतीं फिर भी 'राज से स्वराज तक' सीरियल में उन्होंने लोकमान्य तिलक का जमाना खूब उभारा है. श्याम बेनेगल अच्छे लगते हैं. उन की 'भारत एक खोज' में मैं फिर एक बार तिलक बना था. बड़े सहनशील निर्देशक हैं श्याम. कलाकार की क्षमता का खयाल कर उस से काम करवाते हैं. इस से ठीक विपरीत हैं गोविंद निहलानी. बला के गुस्सैल. हिटलर! जैसा वह चाहेंगे वैसा ही करना पड़ता है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाशिव अमरापुरकर : मराठी लहजे में हिंदी बोलने का अंदाज ही खासियत बन गया.

"बस सिर्फ तीन?" मैं ने पूछा तो थोड़ी देर वे चुप रहे. फिर एक ठहाका गूंजा. मैं समझ गया.

"अच्छा ऐसा कौन सा निर्देशक आप को पसंद है. जिस के साथ आप ने काम नहीं किया है?"

"अपर्णा सेन." वह तपाक से बोले, "उन की 36 चौरंगी लेन', 'परोमा' बहुत अच्छी लगीं. मैं ने उन्हें संदेश भी भेजा कि मैं उन की फिल्मों में काम करना चाहूंगा."

अमरापुरकर ने अपने जिन पसंदीदा निर्देशकों के नाम गिनाए वे सारे एक अलग समांतर धारा के निर्देशक हैं जबकि वह खुद व्यस्त हैं फार्मूला फिल्मों में. क्या उन्हें समांतर सिनेमा में बुलाया नहीं जाता?

"समांतर सिनेमा है कहां?" वह कहने लगे, "मेरी राय में ऐसा कुछ नहीं है. फिल्में सिर्फ दो तरह की होती हैं-अच्छी या बुरी. एक अच्छी बात है कि हिंदी फिल्म वाले कोई दिखावा नहीं करते. वे अपने प्रति साफ हैं. जिसे श्रेष्ठ मान कर करते हैं, वह दरअसल कमजोर होता है और उस का अंतिम उद्देश्य होता है व्यावसायिक सिनेमा में प्रवेश. क्या नसीर और ओम पुरी नहीं चाहते कि वे अमिताभ बनें? क्या केतन मेहता व्यावसायिक फिल्म नहीं बनाते?"

"लेकिन उधर सत्यजीत राय, कुमार शहानी, मणि कौल, अदूर गोपालकृष्णन, अरविंदन भी तो हैं." मैं ने याद दिलाया.

"बस ये दोचार नाम हैं. बाकी कुछ नहीं. गोविंद निहलानी की नई फिल्म में विनोद खन्ना और डिंपल हैं. बस एक सत्यजीत राय हैं और एक विजय तेंडुलकर क्योंकि वे बुरा कुछ बना ही नहीं सकते, बुरा लिख ही नहीं सकते."

मराठी रंगमंच से आए हुए अमरापुरकर से मैं ने मराठी फिल्मों के बारे में पूछना चाहा तो बड़ी सनसनीखेज बात कह बैठे, "मेरी राय में मराठी सिनेमा शुरू से ही द्वितीय श्रेणी के निर्माता निर्देशकों के हाथ में रहा है. 'प्रभात' की फिल्मों से ले कर जब्बार पटेल की फिल्मों तक, इन में निर्देशन जैसा कुछ था ही नहीं. वी. शांताराम मुझे कभी महान नहीं लगे. उन्हें ख्वाहमख्वाह बड़प्पन दिया गया."

बड़ा साहसिक वक्तव्य था. मैं ने कहा, 'आदमी (माणूस), 'दुनिया ना माने' (कुंकू)...' तो तपाक से बोले, "ये फिल्में अच्छी बनीं क्योंकि टीम अच्छी थी. टीम के बिखर जाने के बाद वी. शांताराम कहां कोई अच्छी फिल्म दे पाए? सत्यजीत राय और राज कपूर ने भी बुरी फिल्में बनाईं मगर उन का भी एक स्टैंडर्ड था, स्तर था. वी. शांताराम की 'झंझार' का स्तर क्या है?"

खैर! समस्त मराठी फिल्म जगत सेकंड ग्रेड निर्माता निर्देशकों के हाथ में है. कहने वाले सदाशिव अमरापुरकर अपनी पहली फिल्म मराठी में ही बनाना चाहते हैं.

एक तरफ वह आज की व्यावसायिक फिल्मों को 'सैडिस्ट' भी कहते हैं, दूसरी तरफ उन्हीं को समर्थन भी देते हैं. आक्रामक और साहसिक वक्तव्य दे जाते हैं. लगता है यह आत्मविश्वास और टक्कर की यह चाह ही उन की पहली खासियत है और उन की सफलता की वजह भी. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रकांत यानी चंद्रमा की कांति

चुनाव में खड़े होने वाले प्रत्याशी के सितारे जब धुंधले पड़ने लगते हैं तो सड़कों पर जलने वाले बल्ब भी हां में हां मिलाने लगते हैं. बंबई उपनगर 'मलाड' की एक कालोनी का नाम है 'एवरशाइन नगर' वहां से लोक सभा के प्रत्याशी थे कांग्रेस सदस्य चंद्रकांत गोसालिया. उन के एवरशाइन यानी हमेशा चमकते रहने वाले नगर में कई साल से सड़कों पर रोशनियां नहीं जलती थीं. चुनाव प्रचार का अवसर आया तो उन्होंने जगहजगह कपड़े की पट्टियां लटकवाईं, पोस्टर चिपकवाए कि चंद्रकांतजी अपने खर्चे से रोशनी ला रहे हैं.

वहां के नागरिकों ने पूछा, "खंभे तार तो पहले ही थे, आप के खर्चे का सवाल कहां से उठता है? और अगर यह खर्चा करना ही था तो अब तक क्यों नहीं किया?" विडंबना यह थी कि मात्र उसी सड़क पर रोशनी आई थी जिस पर चंद्रकांत रहते थे. लोगों ने पूछा, "बाकी सड़क वालों के वोट नहीं चाहिए."

चुनांचे चुनाव से तीन दिन पहले और सड़कों पर भी बल्ब जलने लगे. चुनाव का दिन निकल गया. उन्हें किसी ने वोट नहीं दिया. सड़कों की रोशनियां फिर से बुझनी शुरू हो गईं. अब तो शायद वहां के विजेता संसद सदस्य भाजपा के राम नायक ही वहां की समस्या पर प्रकाश डाल पाएंगे.

सौ प्रतिशत वोट

आप माने या न मानें बंबई उपनगर बोरिवली पश्चिम क्षेत्र के गोविंद नगर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूथ नंबर 91 पर 660 मतदाताओं के नाम थे और 656 ने वोट डाले. बाकी चार वोट उन लोगों के थे जो पोलिंग ड्यूटी पर दूसरी जगहों पर तैनात किए गए थे.

गोखले गोखले गोखले

इसी महानगर के इस स्तंभ में आप तीन 'शरद' नाम की चुटकी ले चुके हैं. अब तीन गोखले नाम की कहानी पढ़िए. इस बार उत्तर बंबई से लोक सभा के लिए जीते हैं भाजपा के विद्याधर गोखले. इन का नंबर तीसरा है. पहले थे गोपाल कृष्ण गोखले जिन्होंने इस सदी के शुरू में सरकार के बजट का आपरेशन कर के ब्रिटिश सरकार को नंगा कर दिया था. दूसरे गोखले थे ह.र. गोखले जिन्होंने इंदिरा के आपात काल के दौरान नागरिक स्वतंत्रता के हनन में खूब नाम कमाया था.

यह तीसरे विद्याधर गोखले पहले 'दैनिक लोक सत्ता' (मराठी) के संपादक थे. संपादक से ज्यादा उन्होंने नाम कमाया मराठी के संगीत नाटकों को पुन:स्थापित करने में. वह बहुभाषी विद्वान हैं. संस्कृत भी पढ़ते बोलते हैं और उर्दू अकादमी के भी सदस्य हैं. शेरोशायरी का खूब मजा लेते हैं. जो मुंह में आता है वह बेधड़क बोल जाते हैं. खइके पान बनारस वाला बड़ीबड़ी सभा सोसाइटियों में जातेआते हैं. हिंदी प्रवाह के साथ बोल कर उत्तर भारतीयों के बीच चुटकियों में घुलमिल जाते हैं. मछुओं के क्षेत्र में अपना चुनाव प्रचार करने गए तो उन्हीं जैसी लुंगी पहनी, उन्हीं की भाषा बोली. तमिल भाषियों के क्षेत्र में गए तो तमिल में बातें कीं और अपना सिक्का जमा कर ही लौटे.

साढ़े तीन फुट चौड़ी जलेबी

बच्चों के लिए मीठी टिकिया, बिस्कुट आदि बनाने वाली संस्था ने 'पारले लिमका बुक आफ रिकार्डस' की स्थापना की. समारोह मनाया ताजमहल होटल में. उस अवसर के लिए 16 फुट लंबी काजू बरफी, साढ़े तीन फुट चौड़ी जलेबी और पांच फुट लंबी नान बनाई गई. बरफी के लिए 120 किलोग्राम काजू, 100 किलोग्राम शक्कर और 1,000 चांदी के वरक काम में आए. बरफी का वजन 220 किलोग्राम हुआ. जलेबी को कड़ाही से उठाने के लिए छः पाकशास्त्रियों को अपने हाथ लगाने पड़े. नान के संबंध में होटल के पाकशास्त्रियों—सतीश अरोड़ा, कमलदेव शर्मा तथा रणजीतसिंह राणा का कहना है कि वह और भी बड़ी बनाई जा सकती थी अगर और बड़े तंदूर का इंतजाम हो जाता.

जनता की सुखसुविधा के नाम पर

पश्चिम रेलवे के अंतिम स्टेशन चर्चगेट के बाहर की सड़कों पर बेहद भीड़भड़क्का रहता है. स्टेशन के बाईं तरफ वाली सड़क के नीचे से लगभग 20 साल पहले एक सुरंग बनाई गई थी ताकि वाहनों के आनेजाने में कोई व्यवधान न पड़े. स्टेशन के सामने एक उद्योगपति ने पैदल पुल बना दिया था. यानी वाहनों के लिए कोई भी रुकावट नहीं रही थी.

मगर आम लोगों ने उस पुल पर चढ़नेउतरने के बजाय सड़क पार करना ही आसान समझा. पुलिस ने भी पुल की उपेक्षा को स्वीकारा और भीड़ नियंत्रण के लिए हर समय छहछह सिपाही तैनात किए. अब महानगर पालिका उस सड़क के नीचे भी सुरंग बनवा रही है. सब रास्ते बंद करवा दिए गए हैं. कम से कम बरसात आने तक यह काम चलता ही रहेगा.

लोग पूछते हैं, उस सुरंग की जरूरत क्या थी? पुल तो वहां पर पहले से ही है. सीढ़ियां चढ़ना उतरना तो सुरंग में भी पड़ेगा ही. जो सुरंग पहले से है उस का उपयोग करने में भी लोग हिचकते हैं क्योंकि उस में बाजार बस गया है. चलने वालों के लिए बस एक बटिया मात्र रह गई है. बोली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

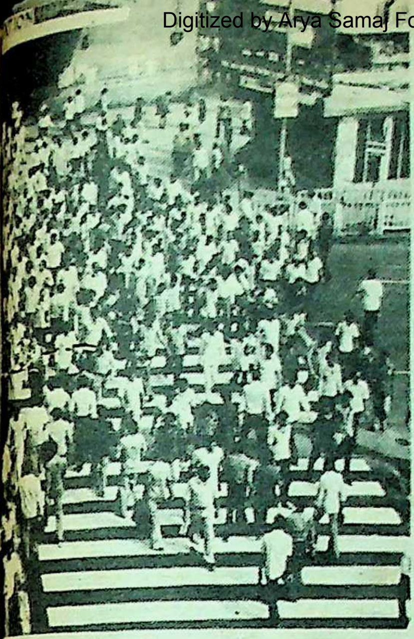

[illegible] स्टेशन के सामने पैदल पार पथ सुरंग बनी है लेकिन लोग फिर भी ऊपर से ही सड़क पार करते हैं. अब महानगर पालिका एक और सुरंग बना रही है, पर उस का फायदा?

लगाने वालों का इस कदर शोर रहता है कि राह चलने वालों को कान पर हाथ रख लेने पड़ते हैं. इन सुरंगों में आए दिन अपराध भी होते रहते हैं.

कुछ साल पहले भीषण वर्षा ने महानगर के तमाम तहखानों को पानी से भर दिया था. यह सुरंग भी लबालब भर गई थी. उसे साफ करने और उपयोग लायक बनाने में महीनों लगे थे और अनापशनाप खर्चा दिखाया वह अलग. उन तमाम कड़वे महंगे अनुभवों के बावजूद ठेकेदारों का फायदा कराने के लिए महानगर पालिका कमर कसे हुए है.

शरद पूर्णिमा: स्वयंवर समारोह

बंबई में रहने वाले लिंगायत वर्ग के लोगों ने शरद पूर्णिमा को स्वयंवर पूर्णिमा के रूप में मनाना शुरू कर दिया है. उस रात वरवधू की खोज का पर्व मनाया जाता है. इसलिए उस का नया नामकरण किया गया है: खोजगिरी पूर्णिमा. उस रात को जब संपन्न लोग सागर किनारे रेतीले मैदानों में पिकनिक मनाते हैं, नाचगा कर आमोदप्रमोद का वातावरण तैयार करते हैं तब लिंगायत वर्ग की वीरशैव सभा स्वयंवर रचाती है.

इस वर्ष इस स्वयंवर समारोह के लिए स्थल तय किया गया था 'माटुंगा' उपनगर में लखमशी नप्पू हाल, जहां पर्याप्त रोशनी का इंतजाम होता है. वरवधू ठीक तरह से एकदूसरे को देख सकते हैं. यह काम खुले रेतीले मैदान में चांद की रोशनी में नहीं हो सकता.

लड़केलड़कियों के साथ उन के अभिभावक भी आते हैं. बंबई जैसे विलायती शहर में रहने वाले लड़केलड़कियां काफी आजाद खयाल के होते हैं, मगर सब नहीं. कुछ लड़कियां तो बंबइया होने के बावजूद अपनी मांओं के पल्लू में लिपटी रहती हैं. बहुत सजधज कर आना उन के संस्कारों में नहीं होता. नप्पू हाल के दो हिस्से हैं. एक में पूरे परिवार जमा होते हैं, दूसरे में केवल वही जा सकते हैं, जो उम्मीदवार होते हैं.

वीरशैव सभा की अनुभवी कार्यकर्त्ता महिलाएं शर्मीली लड़कियों को खुद प्यार से अपने साथ उम्मीदवारों के हाल में ले जाती हैं जहां उन्हें अभिभावकों के बंधन से मुक्त कर के आजादी के साथ लड़कों को देखने और बातें करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है. शरमाने का ठेका लड़कियों ने ही नहीं लिया होता. ऐसे झिझकू लड़कों को भी वे अनुभवी युवतियां बातें करती हुई अपने साथ ले कर आती हैं, लड़कियों से परिचय कराती हैं और फिर दूसरे शर्मीले लड़कों को साहसी बनाने के लिए आगे बढ़ जाती हैं.

एक लड़की शरमाती हुई बोली, "बाई साहब, मुझ से बातें नहीं होंगी. आप ही कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लो." उसे जवाब मिला, "तब तो तुम्हारी जगह शादी भी मैं ही कर लूंगी." लड़की मुंह दबा कर हंसी थी.

उस रेवड़ में कुछ ऐसे लड़केलड़की भी होते हैं जिन्होंने पहले भी एकदूसरे को कहीं देखा होता है. उन का काम आसान हो जाता है. 'अरे मुझे तो पता ही नहीं था तुम भी... वरना पहले ही...' लड़की बीच में बोल पड़ती है, 'मुझे भी कहां पता था. तुम पर यह गुलाबी बैज देखा तो...' गुलाबी बैज इस बात का सूचक होता है कि अमुक व्यक्ति एक उम्मीदवार है.

आयोजकों में से एक ने बताया कि उन की जाति के लोग बहुत ही दकियानूसी होते हैं. इसलिए बड़ेबूढ़ों को समझाने के लिए उन से मिलना पड़ता है. उन्हें आश्वस्त करना पड़ता है कि हम हर सावधानी बरतते हैं. हर लड़के, लड़की के साथ अभिभावक को इसी लिए बुलाते हैं कि किसी भी तरह की अनैतिकता की बात न हो जाए.

जगद्गुरु काशीराज की तसवीर को पुष्पमाला पहना कर हाल में स्थापित किया जाता है. मौके के अनुरूप करनाटकी संगीत वातावरण को रंगीन बनाता रहता है. लिंगायत वर्ग के जो संपन्न लोग हैं उन्हें आमंत्रित किया जाता है जिस से सभा को सम्मानित स्तर मिले. विवाह कराने वाले सम्मानित पंडितों को बुलाया जाता है. इस साल पूना के पंडित चंद्रकांत शास्त्री कसबेकर को बुलाया गया था. महाराज देहीवाडुकर भी निमंत्रित थे. उन्होंने अपने प्रवचन में सभा को परामर्श दिया कि जातपांत के बंधन खोल कर प्रगति के पथ पर अग्रसर हों और नवदंपती के सुखों का मार्ग प्रशस्त करें.

जातपांत का भेद नहीं

उस मेले में शामिल होने वालों से जातपांत नहीं पूछी जाती. अलबत्ता शेष तमाम जानकारी के साथसाथ ऐसे दो सम्मानित भद्र परिवारों के नाम बताने पड़ते हैं जिन से उन के हर कथन की पुष्टि कराई जा सके.

वीरशैव सभा ने अब तक बंबई में तो ऐसे मेलों का आयोजन किया है. पूना, चंद्रपुर, सतारा, अहमदनगर, कोल्हापुर, नागपुर में भी मेले आयोजित किए जा चुके हैं.

सभी नगर महाराष्ट्र संस्कृति के गढ़ हैं. वीरशैव सभा ने सामूहिक विवाहों के आयोजन भी किए हैं. मगर इन मेलों को जो सफलता बंबई में मिली है वह और जगह नहीं.

सभा के एक आयोजक श्री खड़के ने बताया कि मेले में शामिल होने के लिए जो परिवार दूरदराज से आते हैं उन के रहनेखाने की व्यवस्था भी की जाती है. इन मेलों से बहुत सा खर्चा बच जाता है. वरवधू की खोज में अकसर मांबाप को दूरदूर के चक्कर लगाने पड़ते हैं. यहां एक ही जगह पर सब जमा हो जाते हैं. अकसर लड़की वालों को दूसरों के घर बहुत नाचीज बन कर जाना होता है. अपमान जैसा भी सहना पड़ता है. उस से बचाव हो जाता है, दस जगह जाने का समय और खर्च तो बचता ही है.

मेले में शामिल होने की फीस भी 5 रुपए प्रतिव्यक्ति है. उससे चायनाश्ते का इंतजाम किया जाता है. बाकी तमाम खर्च सभा करती है. खैराती मनोरंजन कार्यक्रमों से सभा को आमदनी होती है.

अब आइए एक उम्मीदवार से मिलें. उन की उम्र है 30 वर्ष. वह टीवी प्रचार फिल्में बनाने वाली एक यूनिट में शामिल हैं. सुंदर और स्वस्थ हैं इसलिए किसी हीरोइन जैसी सुंदरी की ही तलाश करना कोई गैरवाजिब बात भी नहीं लगती. कई जगह मातापिता के माध्यम से बातें चलीं. कई मेलों में खुद गए. अभी तक मंजिल नहीं मिली. मेलों में आना उन्हें अच्छा लगता है क्योंकि यहां न वह किसी पर बोझ बनते हैं, न किसी को नापसंद कर के कष्ट पहुंचाते हैं.

—महेंद्र सरल •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमत

(पृष्ठ 124 का शेषांश)

के मरे हुए कई वर्ष बीत चुके हैं, जिस से उस के तीन बेटे और दो बेटियां हैं. सब से बड़ी लड़की का विवाह हो चुका है. दूसरी भी जवान है. बड़े बेटे की आयु 14 वर्ष और..."

शारदाजी बोलती रहीं. माजिदा का सिर चकराने लगा, 'संध्या ऐसी तो नहीं है जो वह इतने आयु के पुरुष से विवाह करे. फिर भी वह यह विवाह करने पर विवश हैं. क्यों?'

"संध्या को ऐसा नहीं करना चाहिए." अनायास ही उस के मुंह से निकल गया.

शारदाजी ने फिर एक लंबी सांस छोड़ी, "हां, उस के साथ अन्याय हो रहा है. वह उस अधेड़ उम्र के पुरुष के योग्य नहीं है, बल्कि मुझे यों कहना चाहिए कि वह पुरुष संध्या के योग्य नहीं है. परंतु इस अन्याय को कौन रोक सकता है?

"संध्या. अपनी आयु के तीन दशक पार कर चुकी है. वह कब तक किसी उचित वर की प्रतीक्षा करती? किसी न किसी का हाथ तो उसे थामना ही है.

"फिर अभी तो उसे कोई मिल भी रहा है. कुछ दिन और बीत जाने पर उसे ऐसा रिश्ता भी मिलना कठिन हो जाएगा, जैसा अब मिल रहा है. तब वह किस के सहारे जीवन व्यतीत करेगी? अकेली कब तक रहेगी?

"मान लो, अभी वह नौकरी कर रही है. किसी तरह अकेली रह कर गुजर कर लेगी. लेकिन बुढ़ापे में वह किस से सहायता मांगेगी? कहां जाएगी?"

शारदाजी, संध्या के बारे में अपने विचार प्रकट कर रही थीं. परंतु माजिदा को लग रहा था, जैसे वह उस की वास्तविक कीमत बता रही हों.

शारदाजी की बातों ने माजिदा की विचारधारा ही बदल दी. वह सोचने लगी, "समर को प्रेम करने के कारण आज निस्संदेह तारिक की दृष्टि में मेरी कीमत बढ़ गई है, परंतु कोई दूसरा आज भी मेरी कीमत नहीं समझता. इसलिए मेरे लिए यही उचित है कि इस से पहले यह कीमत भी गिर जाए, मुझे तारिक का प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिए.

शारदाजी ठीक ही कह रही हैं. हर वस्तु की अपनी कीमत होती है. समय के साथसाथ कीमत गिरती ही जाती है. फिर एक समय ऐसा आता है, जब वस्तु बिलकुल बेकार हो जाती है. उसे कोई भी नहीं पूछता.

'एकांत रह कर जीवन बिताना बहुत दुष्कर हो जाएगा. यदि अभी मैं ने तारिक का प्रस्ताव स्वीकार न किया तो मेरी कीमत घट जाएगी. फिर मुझे या तो कोई रिश्ता ही नहीं मिलेगा, अगर मिला भी तो कोई ऐसा ही अधेड़ या बूढ़ा, जैसा आज संध्या को मिल रहा है. फिर क्यों न मैं पिछली बातें भूल कर तारिक का प्रस्ताव स्वीकार कर लूं?'

"क्या सोचने लगीं?" शारदाजी बोलीं.

"कुछ नहीं." माजिदा सिर झुका कर धीरे से बोलीं, "सोच रही थी कि मैं भी अब आप लोगों से शीघ्र ही बिछुड़ जाऊंगी?"

"क्या?" शारदाजी आश्चर्यचकित रह गईं.

"जी हां. मैं शीघ्र ही विवाह कर रही हूं." वह सिर झुका कर बोली. ऐसा कहते समय उस का चेहरा शर्म से सुर्ख हो गया था.

"मगर कहां? किस के साथ?" शारदाजी ने उत्सुकता से पूछा.

"तारिक को आप जानती ही हैं, बस वही हैं..." फिर अपनी बात अधूरी छोड़ कर शारदाजी को अचंभे में डाल कर माजिदा अपनी कक्षा की ओर बढ़ गई. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाग

सरिता, बीस साल पहले,
अप्रैल (द्वितीय) 1970

कहानी • अवतार सिंह

दोपहर का समय था. चिड़ियाघर में इक्कीदुक्की, रंगबिरंगी टोलियां ही दीख रही थीं. उन में भी अधिकतर विदेशी—आंखों पर काला चश्मा, सिर पर अजीब किस्म की छतरीनुमा टोपियां और कंधे पर लटकते कैमरे. वे लोग गरमीसरदी की परवा कब करते हैं!

दामोदर धूप की तपिश से चेतनाशून्य सा हो रहा था. चलते हुए वह इधरउधर झोंके खाता था. सड़क अंगारों सी तप रही थी. धूल के कण उस के फटे जूतों में घुस कर उस के तलवों को भून रहे थे. दो फरलांग का रास्ता उसे दो मील से कम नहीं लग रहा था.

एक प्लास्टिक के थैले में लिपटे मांस के कुछ टुकड़े दामोदर के पास थे जिन्हें उसे जा कर रानी और महेंद्र को देना था. चलते हुए वह तीन पैसे का एक गिलास पानी देने वाले छोकरे के पास रुका. दामोदर ने प्लास्टिक का लिजलिजा थैला उस की गाड़ी पर पटक दिया. बड़ी उंगली से माथे से पसीने की धारियां पोंछते हुए वह बोला, "चल बे, पिला पानी!"

"क्या बात है, दामोदर! एक तो ऊपर की गरमी, फिर तुम्हारे अंदर भी गरमी बरस रही है!" पानी का गिलास देते हुए छोकरे के होंठों पर मुसकान की रेखा खिंच गई.

दामोदर ने कोई उत्तर नहीं दिया. उस ने गटागट दो गिलास पानी के पिए और थैला उठाए आगे बढ़ गया. पानी पिलाने वाले छोकरे से उस की जानपहचान हो गई थी इसलिए पैसे देने का प्रश्न ही नहीं उठता था.

जब वह रानी और महेंद्र के जंगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक पहुंचा तो उन्हें देखने वालों की भीड़ प्रायः छंट चुकी थी. केवल दो व्यक्ति रंगबिरंगे अक्षरों में बोर्ड पर लिखा सफेद शेरों का इतिहास पढ़ रहे थे. फिर वे बड़े बोर्ड की टांगों के बीच में लगे छोटे बोर्ड की ओर देखने लगे जिस पर लिखा था—'रीवां के महाराज की ओर से भेंट.'

रानी और महेंद्र सफेद शेरों की तेजी से लुप्त हो रही दुर्लभ नस्ल के अंतिम चिह्न थे इसलिए उन का विशेष ध्यान रखा जाता था. कितने ही कैमीकल्स में धुल कर तीन बार स्क्रीन हो कर उन के खाने के लिए मांस तैयार होता था.

रानी एक बार चार बच्चों को जन्म दे चुकी थी, लेकिन पैदा करते ही उस ने अपनी संतान से मुख फेर लिया था. 'बोटल

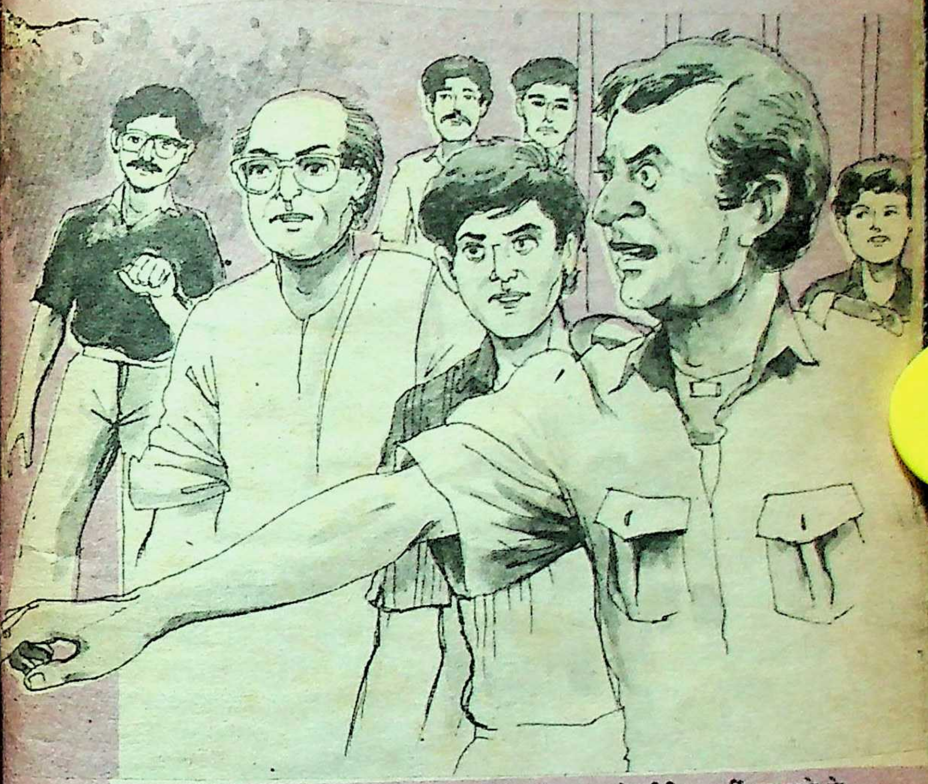

जब दोतीन दर्शकों ने पूछा कि 'आखिर क्या हुआ' तो दामोदर ने खूब नमकमिर्च लगा कर पूरी घटना दर्शकों के सामने दोहरा दी.

फीडिंग' पर बच्चे जीवित नहीं रह सके थे. आजकल रानी फिर गाभिन चल रही थी.

गरमी के कारण रानी की जीभ बाहर निकली हुई थी. महेंद्र पेड़ की

दामोदर ने अपनी नौकरी के रिकार्ड में लगने वाले दाग को तो बचा लिया था पर जो दाग उस के अंतर्मन पर लगा वह आखिर तक उस का पीछा करता रहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाया में शांत बैठा था. दामोदर उन्हें देखते ही गरमी की सारी तपिश भूल गया. रानी और महेंद्र भी उसे पहचानते हैं. महेंद्र ने हलकी गर्जना कर दोपहर के भोजन की मांग की. दामोदर ने मुसकरा कर उसे प्लास्टिक का थैला दिखाया.

शेरों के मुख्य बड़े जंगले के साथ एक छोटा सा कठघरा था. कठघरे और जंगले को लोहे की छड़ों से बना एक भारी स्लाइडिंग गेट अलग करता था. कठघरे का ताला खोल दामोदर ने उस में मांस के टुकड़े रख दिए. बाहर आ कर उस ने फिर दरवाजे पर ताला लगा दिया. लोहे की चरखियों पर से गुजरती हुई जंजीर खींच कर उस ने गेट ऊपर उठा दिया.

रानी और महेंद्र भव्य चाल से चलते हुए कठघरे के अंदर आ गए और पंजों में दबा कर मांस खाने लगे. वातावरण में मांस की गंध फैल गई, जो दामोदर को भली लगती थी लेकिन जिस के कारण दर्शक नाक पर रूमाल रख लेते थे.

तभी गजब हो गया!

अनजाने ही दामोदर का हाथ झटके से जंजीर पर जा पड़ा. जंजीर खुल गई. तुरंत ही आवाज करता हुआ लोहे का भारी गेट नीचे गिर गया. साथ ही महेंद्र ने एक धीमी करुण कराह भरी और मुंह में दबाया मांस का लोथड़ा वहीं छोड़ दिया. दामोदर ने देखा, महेंद्र की पूंछ का लगभग छः इंच का टुकड़ा गेट के नीचे आ कर कट गया है और अलग पड़ा तड़प रहा है.

दामोदर का दिल दहल उठा. उसे अनुभव हुआ, सामने शेर की पूंछ नहीं, उस की नौकरी की तरक्की कटी छटपटा रही है. उस के शरीर का रोमरोम किसी अज्ञात आशंका से कांप उठा.

सात वर्ष की नौकरी पर इतना बड़ा दाग! अगले महीने दामोदर को आठ रुपए महीने की तरक्की मिलने वाली थी. अब वह कैंसिल हो गई समझो. इस पूंछ को आज ही कटना था.

आठ रुपया महीना यानी 100 रुपए सालाना का सीधा नुकसान. दामोदर करे तो क्या करे?

हवा के तेज झोंके से उस की सुध लौटी. दामोदर ने एक बार नए सिरे से विचार किया कि उस के हाथ से क्या घटित हो चुका है! सफेद शेर की पूंछ नहीं रही. अब महेंद्र पूंछकटा है और इस की पूरी जिम्मेदारी दामोदर पर ही है. तरक्की गई ही, सार्वजनिक संपत्ति के साथ लापरवाही बरतने के आरोप में सुपरिंटेंडेंट साहब स्टेटमेंट लेने के चक्कर में न जाने कितने दिन परेशान करें! और कोई जानवर होता तो बात आईगई कर दी जाती लेकिन सफेद शेर! दुर्लभ नस्ल!

दामोदर अर्धविक्षिप्त सा हो उठा. उस ने महेंद्र की ओर देखा. महेंद्र ने मांस को मुंह नहीं लगाया था. देख कर रोना आ जाए, ऐसी दयनीय दृष्टि से वह अपनी कटी हुई पूंछ को देख रहा था जो गेट के उस तरफ शांत, स्थिर पड़ी थी. उसे जैसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह कटी हुई पूंछ कुछ देर पहले उसी के शरीर का अंग थी.

बिजली की चमक की तरह बचाव का साधन दामोदर के सामने आया. सोचने का समय नहीं था. किसी भी क्षण लड़के जंजीर पर से हाथ उठा सकते थे. पलक झपकते बाज की तरह झपट्टा मार कर दामोदर ने दसबारह वर्ष की उमर के उन दो लड़कों को जा पकड़ा जो जंजीर से खेल रहे थे. दोनों के कोमल गालों पर दामोदर के खुरदुरे हाथ का चांटा पड़ा.

"हरामखोर, निकम्मे, गधे, कमीने!"

दामोदर दोनों को बेतहाशा पीट रहा था और जो मुंह में आए, बके जा रहा था. "सालो, तुम तो शाम को अपनी मां की गोद में बैठ कर गरमगरम रोटियां खा लोगे, मैं क्या करूंगा? मेरे पेट का भी तो कुछ होना है!"

कड़ी धूप में भी तमाशबीनों की भीड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

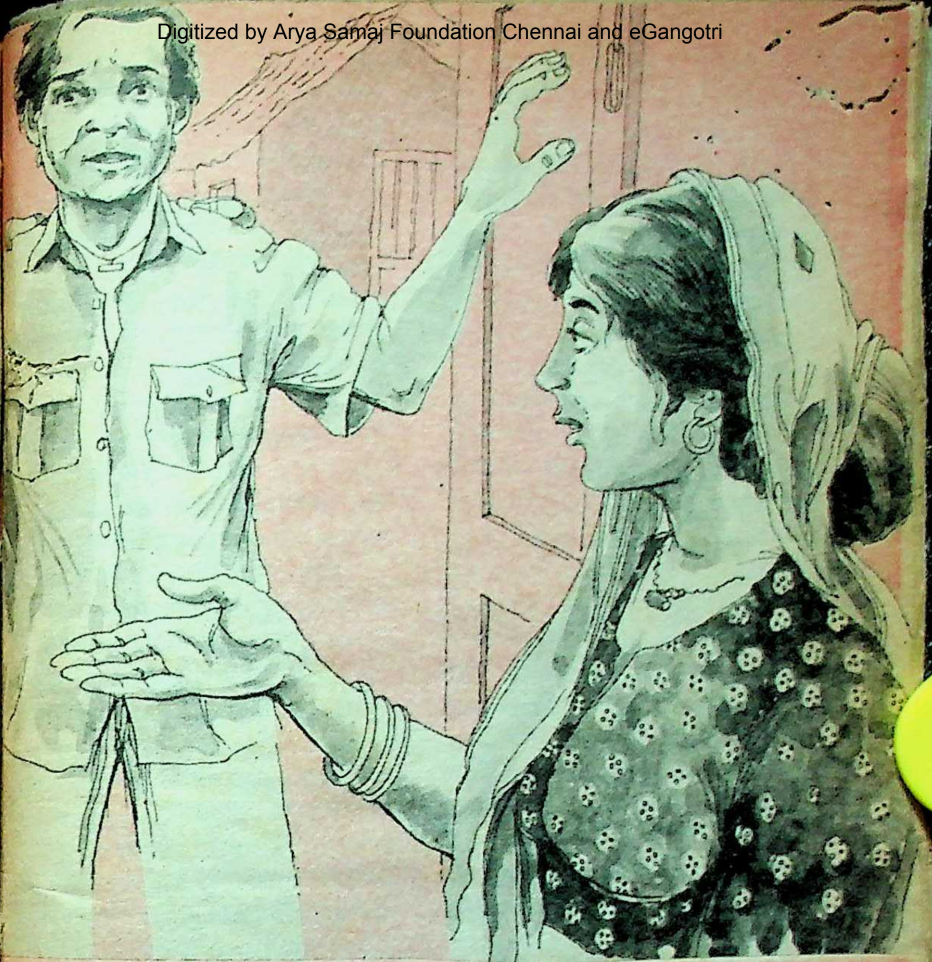

लीला ने सिसकियों के बीच उस को बताया कि राजकुमार को पुलिस ने पकड़ कर हवालात में बंद कर दिया है.

जुटते देर न लगी. दामोदर लड़कों को पीट रहा था ताकि दर्शकों को बच्चों का अपराध जघन्य होने में कोई संदेह न रहे. शायद गवाही की भी जरूरत पड़े. लड़के चीख रहे थे, चिल्ला रहे थे लेकिन किसी भी दर्शक की दामोदर से पूछने की जुर्रत नहीं हुई कि भई, तुम इन बच्चों को क्यों पीट रहे हो?

थक कर दामोदर रुक गया. उस का चेहरा क्रोध से तमतमा गया था. मौके की नजाकत भांप कर उस ने खुद ही सफाई दी, "हरामजादो, तुम ने मेरे पेट पर लात मार दी! तुम्हें किस ने कहा था जंजीर से खेलने को?"

अब दोतीन दर्शकों ने बीच में पड़ कर पूछा कि आखिर हुआ क्या? दामोदर ने खूब नमकमिर्च लगा कर पूरी घटना दर्शकों के सामने दोहरा दी. जनमत उस के पक्ष में था.

लड़कों को पहली बार पता चला कि उन का अपराध क्या है? एक रोता हुआ बोला, "हम ने खटका नहीं गिराया. हम सच कहते हैं. हम पहली बार यहां आए हैं. हम सच कहते हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दामोदर ने उस की पीठ पर एक तगड़ा धौल जमाया, गुस्से की आवाज में वह चीखा, "झूठ तो हम बोलते हैं! अभी सुपरिंटेंडेंट के पास ले जाऊंगा तो पता चलेगा. वह तो शुक्र मनाओ की जानवर की पूंछ ही खटके के नीचे आई और सफेद शेर की नस्ल बच गई. खटके में धड़ आता तो धड़ ही बैठ जाता और पैर आता तो पैर की छुट्टी हो जाती. एक पूरी नस्ल का सफाया हो जाता. तेरे बाप के घर से क्या जाता?"

अधिक बोलने के कारण दामोदर के होंठों के किनारों पर थूक के सफेद कतरे चमकने लगे थे. एक तमाशबीन ने अपना ज्ञान बघारा, "बिलकुलजी, सफेद शेर तो सिर्फ दिल्ली के चिड़ियाघर में हैं."

जनता की सहानुभूति पूरी तरह जीतने के विचार से दामोदर कहने लगा, "महीना भर पहले की बात है. एक रखवाला नीलगाय को एक टैम खाना देना भूल गया. इत्ती सी बात पर उस की आठ दिन तक 'स्टेटमेंट' फाइल होती रही थी."

अब तक बच्चों को यह विश्वास हो चला था कि किसी तरह भी हो, पूंछ कटने में उन का योगदान अवश्य है. वे अब दामोदर से माफी मांग रहे थे. एक ने उस के पैर पकड़ लिए थे. लेकिन दामोदर जरा भी विचलित नहीं हुआ.

एक दर्शक ने बड़े दीख रहे बच्चे से पूछा, "तुम दोनों भाईभाई हो?"

दोनों ने स्वीकृति में सिर हिलाया.

उसी दर्शक ने पूछा, "तुम्हारे नाम क्या हैं?"

लड़कों को सहायता की आशा हुई. रोतेरोते उन की हिचकियां बंध गई थीं. एक ने हिचकियां रोकने का प्रयत्न करते हुए कहा, "मेरा नाम संजीवकुमार है. इस का राजीवकुमार."

"बाप क्या करता है?"

"टैक्सी चलाता है."

सुनते ही दर्शक का मुंह गोल हो गया. उस की मुखमुद्रा कठोर हो गई.

"इन टैक्सीड्राइवरों की मदद करना अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी मारना है. दुनिया की बदमाशियां यह ड्राइवरों की कौम करती है. मनमाने रूट की सवारी लेंगे और किराया भी डबल!" दर्शक यों बिदक कर बोला मानो बच्चों का बाप नहीं, वे स्वयं टैक्सी चलाते हों.

एक भावुक किस्म के तामशबीन ने दामोदर से कहा, "चल, यार, छोड़ दे अब. बहुत सबक मिल गया इन्हें."

दामोदर ने तमक कर उत्तर दिया, "वाह भैया, खूब कही! बिना साहब के पास रिपोर्ट किए मैं इन्हें कैसे छोड़ दूं? अभी तो मुझे नौकरी करनी है."

शेष तमाशबीनों ने सुझाव देने वाले साहब को ऐसी भर्त्सना की नजरों से घूरा कि वह चुपचाप वहां से खिसक लिए.

दामोदर ने बच्चों को बांह पकड़ कर खींचा, "चलो सालो, तुम्हारा फैसला भी करवा दूं."

लड़के नए सिरे से रोने और माफी मांगने लगे. दामोदर उन्हें लगभग घसीटता हुआ सुपरिंटेंडेंट के आफिस तक ले गया. तमाशबीनों में से अधिकांश साथ हो लिए. लेकिन धीरेधीरे भीड़ छंटती गई. आफिस तक पहुंचतेपहुंचते कच्ची उमर के केवल दोचार आवारा किस्म के लड़के साथ रह गए थे.

सफेद शेर की पूंछ कट गई, यह सूचना पाते ही सुपरिंटेंडेंट साहब कुरसी से यों उछल पड़े जैसे उन के पुत्र की बांह कटने का समाचार उन्हें सुनाया गया हो. आधे घंटे तक वह कठोर और रूखे स्वर में दामोदर को डांटते रहे कि तुम ने बच्चों को जंजीर पर हाथ रखने ही क्यों दिया? क्रोध का आवेश कम हो जाने पर सुपरिंटेंडेंट साहब ने दामोदर के दोष का हिस्सा कम करते हुए स्वीकार किया कि चौबीसों घंटे तो जंजीर पर निगरानी रखी नहीं जा सकती.

साहब के सामने पेशी के बाद बच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना कि सचमुच उन्होंने कोई भयानक अपराध कर डाला है. वे पड़ चुकी मार की पीड़ा से या भावी अकल्पनीय यंत्रणा के भय से लगातार रोए जा रहे थे, बारबार माफी मांग रहे थे. कभी चिड़ियाघर न आने की कसमें खा रहे थे.

उन की रींरीं से तंग आ कर सुपरिटेंडेंट दहाड़ा, "चुप!"

दोनों बच्चे एकदम सहम कर चुप हो गए.

सुपरिटेंडेंट ने एक चपरासी बच्चों के बाप को बुलाने भेजा.

दो बजे दामोदर की ड्यूटी खत्म होती थी, तीन बजे तक उस ने बच्चों के बाप के आने की प्रतीक्षा की. फिर सुपरिटेंडेंट साहब से पूछ कर वह अपने घर चल दिया.

दामोदर वहां से चला तो उस के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे. उस के चेहरे पर विजय की मुसकराहट फैली हुई थी. किस सफाई से उस ने अपनी नौकरी पर लगता दाग बचा लिया था. लेकिन बड़ी विचित्र बात थी कि दामोदर को अनुभव हो रहा था मानो वह उस दाग को पूरी तरह नष्ट नहीं कर सका है और वह दाग उस के चरित्र पर आ चिपका है. दामोदर बारबार उस दाग की ओर से दिमाग हटाना चाह रहा था पर वह ध्यान से उतरता ही न था. जैसे नाक पर बैठी कोई हठी मक्खी बारबार हटाने पर भी वहीं आ चिपकती है.

दामोदर ने बलपूर्वक उस खयाल को दिमाग से बाहर निकाल दिया. सोचने लगा कि घर जा कर वह अपनी पत्नी को खूब चटकारे लेले कर अपनी चतुराई की बात सुनाएगा, लीला सुन कर कितनी प्रसन्न होगी!

दामोदर ने घर में कदम रखा तो उस ने देखा कि लीला बहुत ही गमगीन बैठी है. उस का सारा उत्साह जाता रहा. दामोदर ने कारण पूछा तो लीला धाड़ें मारमार कर रो पड़ी. सिसकियों के बीच उस ने बताया कि राजकुमार को पुलिस ने पकड़ कर हवालात में बंद कर दिया है.

दामोदर सन्न रह गया. राजकुमार दसवीं में पढ़ने वाला उस का बेटा था. दामोदर ने आकुलता से विवरण पूछा. लीला ने बताया कि कालिज के पास सैकड़ों लड़के 'डी.टी.यू.' की बसें रोक कर उन पर पथराव कर रहे थे. पुलिस आई तो सब भाग निकले. राजकुमार उस समय स्कूल से लौट रहा था. पुलिस वालों ने दोचार दूसरे लड़कों के साथ उसे भी पकड़ लिया. रुलाई रोकने की असफल कोशिश करते हुए लीला बोली, "मेरा लाल एकदम निर्दोष है!"

दामोदर को लगा कि एक काला सा दाग है जो निरंतर फैल रहा है और उसे चारों ओर से जकड़ रहा है. जैसे स्विच दबा कर खट्ट से अंधेरा कर दिया जाए, ऐसे ही उस की आंखों के आगे एकाएक अंधेरा छा गया. गिरते हुए दामोदर को संभालने के लिए लीला ने जो चीख मारी, वह भी दामोदर को सुनाई नहीं दी. ●

यह अंक आप को कैसा लगा?

सरिता आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरीपूरी कोशिश करते हैं कि सरिता का प्रत्येक अंक आप की रुचि के अनुसार रहे और उस से आप को अधिक से अधिक संतोष हो और वह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे.

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिए. कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई. आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना चाहेंगे. हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे. अपनी आलोचनाएं व सुझाव निम्न पते पर भेजें:

सरिता,
ई-3, दिल्ली प्रेस, झंडेवालान एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं 22 वर्षीय विवाहित सुरक्षा बल में कांस्टेबल हूं. समस्या यह है कि मेरे भीतर ही कोई दोष है, जिस के कारण संतान नहीं हो सकती. इतनी दवा ली, पर लाभ न हुआ. मैं घर में अकेला लड़का हूं. हमारा वंश कैसे चलेगा? कई बार मन करता है कि आत्महत्या कर लूं. बताइए, क्या करूं?

जब डाक्टरी मुआयने से पता चल गया है कि आप के संतान नहीं हो सकती तो फुजूल दवा खाने से क्या लाभ है. आप चाहें तो कहीं से बच्चा गोद ले कर अपना वंश चला सकते हैं.

मैं 18 वर्षीया लड़की हूं. हाथपांव पर घने बाल हैं और शादी होने वाली है. डर है, शादी के बाद मेरे हाथपैरों से मेरे पति घृणा न करें. मेरी सहेली ने वैक्सिंग व इलेक्ट्रोलिसिस के बारे में बताया है, क्या करूं?

हाथ व पैर के लिए वैक्सिंग ही सर्वोत्तम विधि है. आप किसी भी ब्यूटी पार्लर में जा कर वैक्सिंग करवा लें, हाथ व पैर अच्छे हो जाएंगे.

मेरा 20 वर्षीय भाई विज्ञान का छात्र है. कई बार उस की कमीज पर खून के धब्बे नजर आते हैं. पूछने पर कहता है कि एसिड के धब्बे हैं जो त्वचा के संपर्क में आने से खून के धब्बे नजर आते हैं. मुझे शक है. कृपया बताएं क्या कोई एसिड ऐसा होता है जिस का खून जैसा रंग हो जाए. मुझे लगता है मुझ से वह कुछ छिपा रहा है, शीघ्र समाधान करें.

कोई भी एसिड ऐसा नहीं होता जिस का रंग त्वचा के संपर्क में आने से लाल हो जाए, शायद आप को ज्ञात हो कि एसिड कोई भी हो कपड़े पर पड़ते ही कपड़ा जल सा जाता है. लिहाजा एसिड से कपड़े पर कोई धब्बा नहीं लगता बल्कि उतना कपड़ा जल जाता है. इसलिए भविष्य में जब भी ऐसा दाग नजर आए तो आप उस धब्बे को डाक्टर को दिखा कर पुष्टि करवा सकती हैं, इस बीच भाई को अपने तरीके से विश्वास में ले कर सब कुछ पूछ सकती हैं

याद रखिए, फटकार से नहीं मनुहार से आप समस्या सुलझा सकती हैं. यह अवश्य पता कर लें कि ये लाल निशान इंजेक्शन के तो नहीं हैं. आजकल काफी युवा इंजेक्शन द्वारा मादक दवाएं लेते हैं.

मैं 24 वर्षीया अविवाहिता हूं और भाभी के इकलौते भाई से प्रेम करती हूं. वह पास तो नहीं रहते पर जब भी यहां आते हैं तो एकांत के क्षणों में हम मिले बिना नहीं रहते. दोनों शादी करना चाहते हैं पर उन के पिताजी बीच में दीवार हैं और मेरे प्रेमी अपने पिता के बहुत आज्ञाकारी पुत्र हैं. पर मैं ही दिल पर काबू नहीं रख पा रही हूं. क्या कोई उपाय है कि हम एक हो जाएं.

आप का यह प्रेमी बहुत ही व्यावहारिक है क्योंकि वह यह जानता है कि विवाह संभव नहीं है. आप को उस में मात्र विपरीत सेक्स का आकर्षण नजर आता है और इसलिए आप उस के लिए बेचैन हैं. वरना शादी के लिए वह भी घरवालों को समझा सकता था. अब स्थिति यह है कि आप अपना विवाह कहीं अन्यत्र कर सकती हैं. आप के बीच जो रिश्ता है, उस का कोई महत्त्व नहीं है. जो अब तक घटित हुआ वह क्षणिक सम्मोहन द्वारा हुआ. इस से विवाह पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन भूल कर भी अपने पति से इस का जिक्र न करें, वरना जीवन दूभर हो जाएगा.

मेरे मुंह पर जलने से चार काले निशान बन गए हैं जो देखने में बहुत खराब लगते हैं. कोई उपाय बताइए जिस से चेहरा सुधर जाए.

आप के निशान किसी घरेलू इलाज से दूर नहीं होंगे, आप किसी भी बड़े हस्पताल के प्लास्टिक सर्जरी विभाग में अपनी प्लास्टिक सर्जरी करवा लीजिए, इस का एक मात्र यही इलाज है. वैसे यह उपचार युवतियों को ही कराना चाहिए, युवकों को नहीं.

मैं राजस्थान का रहने वाला पोलियो के कारण विकलांग युवक हूं, कई पत्रिकाओं में पढ़ा है कि विकलांगों के खेलकूदों की राष्ट्रीय व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता होती रहती है. मेरी खेलों में रुचि है और मैं खेल भी सकता हूं. इस संबंध में कहां से सूचना प्राप्त करूं?

इस संबंध में निम्न स्थानों से सूचना प्राप्त की जा सकती है:—

निदेशक, समाज कल्याण विभाग, जयपुर, और निदेशक, समाज कल्याण विभाग, केनिंग लेन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली.

मैं 19 वर्षीया अविवाहिता हूं और थोड़ी मोटी भी हूं. समस्या यह है कि मेरे पेट के निचले हिस्से, पीठ के निचले हिस्से और स्तनों पर भी सफेद रंग की धारियां हो गई हैं, शीघ्र विवाह भी होने वाला है. कहीं मेरे पति गलत न समझें. क्या करूं?

कई बार माहवारी होने के कुछ समय बाद ये हलकी सी धारियां शरीर के इन हिस्सों पर हो जाती हैं, अगर आप को लगता है कि ये बहुत ज्यादा हैं तो आप किसी स्थानीय लेडी डाक्टर की राय ले सकती हैं. विवाह के बाद यदि पति कोई शक करें तो उन्हें किसी भी डाक्टर के पास ले जाएं जो समझा देगी कि इस प्रकार के निशान ऊपरी त्वचा के सिकड़ने व फैलने से होते हैं.

मैं 13 वर्षीया लड़की हूं. मेरे हाथों में पोलियो है, एक हाथ लुंज भी है, पैर ठीक है. मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूं, वहां ठीक पढ़ाई नहीं होती. कृपया कोई ऐसा स्कूल बताएं जहां अपाहिजों को पढ़ाया जाता हो और साथ में होस्टल भी हो?

चूंकि आप ने अपनी पसंद के शहर या प्रदेश का नाम नहीं लिखा है इसलिए राजधानी के ऐसे स्कूल का पता दे रहे हैं जिस में होस्टल भी है.

होस्टल फार फिजीकली हैंडीकैप्ड, ए ब्लाक, जनता क्वार्टर्स, जहांगीरपुरी, दिल्ली-110042

मैं 23 वर्षीया विवाहिता हूं. शादी को आठ साल हो गए. एक सात साल की लड़की भी है. मेरे पति दूसरा बच्चा नहीं चाहते पर मैं चाहती हूं. मुझे कापर टी लगाए चार साल हो गए पर कापर टी बदला नहीं. आप की पत्रिका में पढ़ा कि इस का असर ढाई साल तक रहता है तो पति से कहा इसे बदलवा दें पर वह टाल जाते हैं. कापर टी लगने के बाद भी, शायद इस का असर कम हो गया था, मैं पांच बार गर्भवती हुई और पति ने गर्भपात करा दिया. अब मैं कापर टी के साथ गर्भवती होना चाहती हूं, कोई ऐसी दवा बता दें.

आप को कापर टी के बारे में काफी गलतफहमी है. कापर टी लगे होने पर यदि गर्भ ठहर जाए तो इस का अर्थ है कि कापर टी या तो है ही नहीं, या बेकार हो गई. वैसे गर्भपात के समय कापर टी भी निकाल दी गई होगी. अब जब आप के कापर टी है ही नहीं तो गर्भ कभी भी ठहर सकता है.

मैं 25 वर्षीया विवाहिता हूं. सात वर्ष पूर्व शादी हुई थी. समस्या यह है कि पति मुझ से जबरदस्ती यौन संबंध करते हैं और मुझ से मदद भी मांगते हैं, मना करने पर भी नहीं मानते. शुरू में सहयोग दिया पर अब तनाव होता है, शर्म से कुछ कह नहीं पाती, क्या करूं?

कुछ पुरुषों को जबरदस्ती में विशेष आनंद आता है. हो सकता है आप के पति भी ऐसे ही हों. फिर भी यह निरंतर होना ठीक नहीं है. आप सहयोग का अंदाज बदल लीजिए, मसलन कई बार रोमांच के क्षणों में स्वयं ही निमंत्रण दे डालिए, हो सकता है इस से वह स्वाभाविक हो जाएं. आप इस बारे में किसी डाक्टर से भी बात कर सकती हैं.

मैं 19 वर्षीय इंटर का छात्र हूं. समस्या यह है कि किसी भी महिला या सहपाठिनी या अन्य किसी लड़की से बात करने की हिम्मत नहीं कर पाता. तभी सब मुझे डरपोक कहते हैं. यह शर्मीलापन कैसे खत्म करूं? ठीक से मजाक भी नहीं कर पाता, डर है कि उलटासीधा बोल गया तो लेने के देने पड़ जाएंगे. बताइए क्या करूं?

आजकल के परिप्रेक्ष्य में देखें तो लड़का-लड़की के व्यवहार में अंतर नहीं है. आप मजाक की बात ही क्यों सोचते हैं, कोई छोटीमोटी बात कर के हिम्मत जुटा सकते हैं. किसी भी गंभीर विषय पर बात करें. एकदो बार में ही आप की शिकायत दूर हो जाएगी. लड़कियां कोई कौतुक तो नहीं, फिर हिम्मत वाली बात कहां आती है. आप स्वाभाविक रह कर बातचीत कर सकते हैं.

—कंचन

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जासकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुहाग की रात

(पृष्ठ 160 का शेषांश)

लिया. उस के हां कहते ही राजेश ने दोनों का नाम व अग्रिमराशि दे दी.

जब अचिंता के मातापिता को मालूम हुआ तो वे बहुत झुंझलाए. पर वे जानते थे कि उन का क्रोध व्यर्थ और बेमानी था. सुन कर उन्होंने न तो सहमति दी और न ही मना किया. अचिंता उन का मुंह देखती रही और अंत में उन की चुप्पी को सहमति मान कर चली गई.

इस भ्रमण के दौरान अचिंता और राजेश ने बहुत आनंद उठाया. प्रेमी युगल के रूप में उन की एक अलग पहचान बन गई. संगीसाथियों ने उन्हें सिर पर उठाया और स्त्रियों व लड़कियों ने तो अचिंता का मन जीतने का मानो एक प्रण ले लिया था. अनेक मुद्राओं में स्थानस्थान पर उन के चित्र खींचे गए, जो बाद में एक पूरे अलबम में भी न समा पाए. राजेश और अचिंता यथार्थ में ही स्वयं को पतिपत्नी समझने लगे. इस समीपता के कारण नोकझोंक होतेहोते दोनों में कभीकभी झगड़ा भी हो जाता था और फिर रूठने, मनाने का नाटक करना पड़ता था. जो भी हो, इस का भी एक विचित्र आनंद था.

भ्रमण से लौटने के बाद दोनों की व्याकुलता इतनी बढ़ गई कि उन्होंने तुरंत ही विवाह करने का निश्चय कर डाला. मां ने तिथि निकलवाई और अचिंता के मांबाप को सूचना दे दी.

विवाह हुआ, पर कोई धूमधाम या रौनक न थी. इस शादी की पृष्ठभूमि दूरदूर तक रिश्तेदारों में चर्चित हो चुकी थी, इस कारण दोचार लोगों को छोड़ कर कोई विवाह में नहीं आया. जो आया, वह भी पछताया, क्योंकि उन का कोई स्वागत सत्कार नहीं हुआ. मामूली सा मंडप बना दिया और पंडित को आज्ञा दी कि आधे घंटे में विवाह संपन्न कर दें. विवाह के समय भोजन के लिए लगभग 40 व्यक्ति ही मौजूद थे. खाना भी साधारण था. चहलपहल, सजावट या बाजा आदि कुछ भी न था. भोजन के बाद फौरन अचिंता को विदा कर दिया गया.

बाबुल का घर छोड़ दिया, पर न रुदन न क्रंदन. मां ने दिखावे के लिए अचिंता को गले लगाया. पिता ने दूर से ही सिर हिला दिया. करुणा तो कहती थी कि बरबस रुलाई छूट जाती है, पर अचिंता की आंखों से तो आंसू कोसों दूर थे.

विवाह के बाद अचिंता ससुराल पहुंची. सब ही कुछ तो जानापहचाना था. वह तो पहले ही इस घर का एक सदस्य बन चुकी थी. औपचारिकता के लिए सास ने आरती की थाली हाथ में ले कर वरवधू का स्वागत किया.

सब लोग रात भर जागे थे. इस समय भोर हो चुकी थी. वधू का स्वागत कर के जल्दीजल्दी सब लोग सोने का प्रबंध कर रहे थे. अचिंता को लोग भूल रहे थे. शायद सोचा होगा कि वह भी अपना कोना ढूंढ़ लेगी. अंत में बैठक में ही सोफे पर पीठ टिका कर उस ने आंखें मूंद लीं. राजेश का कहीं पता नहीं था. कोई खाली स्थान न पा कर वह मां के बिस्तर में ही लुढ़क गया था.

खिड़की से झांकती सूर्य की किरणें जब अचिंता की पलकों पर पड़ीं तो वह हड़बड़ा कर उठ बैठी. आंखें मसल कर समय देखा तो सुबह के साढ़े नौ बज रहे थे. वह सोचने लगी कि राजेश को आ कर उसे जगाना चाहिए था. सब अपनेअपने काम में व्यस्त थे. लगता नहीं था कि विवाह के बाद नववधू घर में आई है. इधरउधर घूम कर उस ने देखा तो राजेश को मां के बिस्तर पर सोता पाया. अचिंता ने उसे झकझोर कर उठाया.

राजेश ने आंखें खोल कर मुसकराहट बिखेरते हुए पूछा, "क्या चाय लाई हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी लाती हूं."

अचिता रसोई में चली गई. चाय बना कर एक प्याला राजेश को दिया और एक स्वयं हाथ में ले कर उस के बराबर बैठ गई.

"पता ही नहीं लगा," राजेश ने कुहनी से अचिता को दबाते हुए कहा, "और देखते ही देखते हम दोनों पतिपत्नी बन गए."

"अच्छा," अचिता के स्वर में हलका सा व्यंग्य था.

"आज तो उठने में देर हो गई. खैर, कोई बात नहीं, छुट्टी है. कल तो कार्यालय जाना पड़ेगा. जल्दी उठा देना."

"क्या? कल से ही कार्यालय जाओगे?" अचिता ने आश्चर्य से पूछा.

"हां, बहुत काम जमा हो गया है. इधर कई दिनों से मौजमस्ती जो मार रहा था."

"कहीं चलोगे नहीं?"

"क्या मतलब?"

"शादी के बाद तो पतिपत्नी हनीमून के लिए किसी पहाड़ पर जाते हैं. घूमतेफिरते हैं. ये दिन फिर लौट कर कब आते हैं?"

राजेश खिलखिला कर हंस पड़ा, "देखो, रोमांस तो हम पहले ही लड़ा चुके हैं. रही हनीमून की बात, सो क्या हम लोग दक्षिण भारत के भ्रमण को नहीं गए थे?"

"दक्षिण भारत का भ्रमण? पर वह तो शादी से पहले की बात है. और वह भी हम लोग 20-25 लोगों के साथ थे."

"अरे, उसे ही हनीमून मान लो न. अब छुट्टी है कहां मेरे पास? चलूं, नहाधो कर तैयार होना है."

राजेश उठ खड़ा हुआ. अचिता राजेश को विस्मय से देख रही थी. अचानक राजेश ने मुड़ कर कहा, "याद है न, यार लोग रात में खाने पर आ रहे हैं? जरा मजेदार खाना हो जाए."

अचिता सोचने लगी कि आज तो पहला ही दिन है और दावत का भार भी उस के कंधों पर आ पड़ा है. क्या वह नववधू नहीं है? इस घर में भी तो कहीं कुछ ऐसा नहीं दिखाई दे रहा है. न कोई सजावट, न चहलपहल. बस, एक घर से निकल कर दूसरे घर में आ गई है. राजेश भी मानो एक दिन का नहीं बल्कि वर्षों पुराना पति है. क्या यह सब शादी से पहले समीपता हो जाने के कारण है?

ननद और देवर कालिज जा चुके थे. राजेश बाजार से सामान लेने की सूची ले कर चला गया. अचिता ने रसोई में झांक कर देखा तो सास खाना बना रही थीं. वह मुसकरा कर बोलीं, "आओ बहू, दालचावल चढ़ा दिए हैं. राजेश आए तो गरमगरम फुलके सेंक देना."

अचिता के दिल को धक्का लगा. ससुराल में शादी के बाद पहला दिन और खाने में बस दाल, चावल और रोटी. लगता था विवाह से पहले प्रेम करने और इस घर का सदस्य सा हो जाने के कारण कोई तनिक सी औपचारिकता भी नहीं निभाना चाहता.

रात का भोजन हो चुका था. अचिता को काफी परिश्रम करना पड़ा था. यार लोग खापी कर मूंछों पर ताव देते हुए जा रहे थे. ननद के साथ उस ने मेज साफ की. राजेश के कमरे से बहुत खटपट और तरहतरह की आवाजें आ रही थीं. लगता था, सुहागरात के लिए कमरा सजाया जा रहा है. एक आशा मन में जगी. क्या कहा था करुणा ने?

"बहू," सास ने पुकारा.

"जी, मांजी."

"बहुत देर हो रही है. जाओ, सो जाओ. हां, राजेश के लिए एक गिलास दूध लेती जाना."

अचिता फिर सोच में डूब गई कि क्या दूध भी उसे ले जाना पड़ेगा? चलो, यह भी सही. मिठाई? हां, मिठाई भी तो खाते हैं. करुणा ने बताया था न, कि मिठाई ही मिठाई थी, उस कमरे में. शायद राजेश ले गया होगा. अब मैं दूध ले जा रही हूं तो मिठाई तो वह लाएगा ही. एक फीकी मुसकान उस के अधरों पर मचल गई.

जैसे ही अचिता ने कमरे में पैर रखा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप यूरोप जा रहे हैं?

नया संशोधित संस्करण

मूल्य : 22 रुपये

...यूरोप में देखने योग्य स्थानों में मुख्यतया गिरजाघर एवं हवेलीनुमा इमारतों में सजे संग्रहालय हैं. परन्तु स्विट्ज़रलैंड की प्राकृतिक छटा, वेनिस की पानी की सड़कें, लंदन के बाजार, जरमनी का आधुनिकीकरण एवं पेरिस का फैशन भी हृदय पर अपनी न भूलने वाली छाप छोड़ देते हैं... आपकी यात्रा सुखद बनाने के लिये प्रस्तुत है

यूरोप की यात्रा कैसे करें

दिल्ली बुक कंपनी

एम- 12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली.

रकम अग्रिम भेजने पर डाक खर्च केवल रु. 3/-वी. पी. पी. द्वारा मंगवाने के लिए रु. 5/-अग्रिम भेजें.

[illegible] रुक गई. वही परिचित कमरा, जहां वह बीसियों बार जा चुकी थी. वही पलंग, वही तसवीरें, वही वातावरण. न कोई सुगंध, न गुलदस्ते, न कहीं धीमा मादक संगीत. करुणा ने बताया था न कि कैसे सारा कमरा व पलंग फूलों से सजा हुआ था. ठिठक कर द्वार पर ही उस के पैर रुक गए.

"अरे, जल्दी आओ न," राजेश ने बेसब्री से कहा, "अब सोना भी है या नहीं? मालूम है, कल दफ्तर जाना है?"

सुहागरात का पहला वार्त्तालाप. न कहीं उत्साह, न उमंग. अर्चिता के मन से किसी ने कहा, परंपराओं को रूढ़िवादिता की तराजू में नहीं तोलना चाहिए. कुछ मर्यादाएं, कुछ परंपराएं ऐसी होती हैं जो सदा मन को गुदगुदाती रहती हैं, उन्हें संकीर्णता या रूढ़िवादिता नहीं कहना चाहिए.

"खड़ी क्यों हो?" राजेश ने पूछा.

"दूध." अर्चिता ने कहा.

"यह मां भी बस... मालूम तो है कि मैं रात को दूध नहीं पीता. रख दो, सुबह चाय बन जाएगी."

अर्चिता ने दूध का गिलास रख दिया और बत्ती बुझा कर धीरे से राजेश के पास लेट गई. राजेश ने उसे एक बांह में लपेट लिया. प्रथम स्पर्श? नहीं, यह प्रथम स्पर्श नहीं था. यह एक परिचित स्पर्श था, इस कारण उस के शरीर में कोई सिहरन पैदा नहीं हुई. शरीर में बिजली के नंगे तार छू जाने से जो झनझनाहट पैदा होती है, न तो वैसा अनुभव हुआ और न ही कोई सुखद पीड़ा हुई.

राजेश की नाक हलकेहलके बज रही थी. वह गहरी नींद में सो रहा था और अर्चिता रात भर जागती रही थी.

क्या कहा था करुणा ने?

"सुहाग की रात सजनी, काहे भरे तोरे नयना?" नहीं, शादी के दिन अर्चिता की आंखें सूखी थीं, पर सुहागरात को गीली थीं. शादी का मजा ही किरकिरा हो गया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ किशन कन्हैया

निर्मातानिर्देशक : राकेश रोशन
संगीत : राजेश रोशन
मुख्य कलाकार : अनिल कपूर, माधुरी दीक्षित, शिल्पा शिरोडकर, बिंदु, अमरीश पुरी, रंजीत, डा. श्रीराम लागू, दिलीप ताहिल और कादर खान.

'राम और श्याम' की नकल पर बनी इस फिल्म को यदि मनोरंजन की दृष्टि से देखा जाए तो इसे कुछ हद तक मनोरंजक कहा जा सकता है. फिल्म का गीतसंगीत अच्छा है. छायांकन त्रुटि रहित है, कुछ सेट अच्छे कहे जा सकते हैं, मगर कहानी में कोई नवीनता नहीं है और अभिनय पक्ष भी साधारण है. तकनीकी दृष्टि से फिल्म साधारण ही कही जाएगी.

किशन और कन्हैया (अनिल कपूर) जुड़वां भाई हैं. किशन की परवरिश उस की सौतेली मां कामिनी (बिंदु) और मामा गेंदामल (अमरीश पुरी) करते हैं. तो कन्हैया हवेली के नौकर भोलाराम (सुर्जनकुमार) के घर पलता है. बड़ा हो कर कन्हैया आवारा नौजवान बनता है. उस से प्रेम करती है अंजू (माधुरी दीक्षित) और किशन एक गंवार युवक बनता है. गेंदामल किशन की शादी राधा (शिल्पा शिरोडकर) से कर देता है और उस की सारी जायदाद हड़पने की योजना बनाता है. वह किशन से जबरदस्ती जायदाद के कागजों पर अंगूठा लगवा कर उसे मारपीट कर नदी में फेंक देता है. उधर कन्हैया को असलियत मालूम होती है. वह किशन बन कर हवेली में आता है और गेंदामल और कामिनी के साथ वही सलूक करता है जो वे कभी कन्हैया के साथ करते थे. किशन, जो मरता नहीं, बच जाता है. को भी कन्हैया ढूंढ़ निकालता है. अंततः वह गेंदामल और कामिनी को अपने इरादों में नाकामयाब बना देता है. दोनों भाई अपनीअपनी पत्नियों के साथ सुख से रहने लगते हैं.

जुड़वां भाइयों की कहानी पर अब तक न जाने कितनी फिल्में बन चुकी हैं. उन में से कुछ ही सफल हो पाई हैं. दरअसल इस फिल्म की पटकथा ठीक ढंग से लिखी गई है. पटकथा में कहीं लोच नहीं आ पाई है. इसलिए इस में थोड़ी सी जान आ गई है.

फिल्म का निर्देशन अच्छा है. वैसे भी राकेश रोशन को अब निर्देशन का अच्छाखासा अनुभव हो चुका है. उस ने बी और सी क्लास के दर्शकों के लिए फिल्म में थोड़ा सा सेक्स मसाला भी डाला है. शिल्पा शिरोडकर को उस ने झीनी साड़ी पहना कर झरने के नीचे ठीक उसी तरह नहलाया है जैसे राज कपूर ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

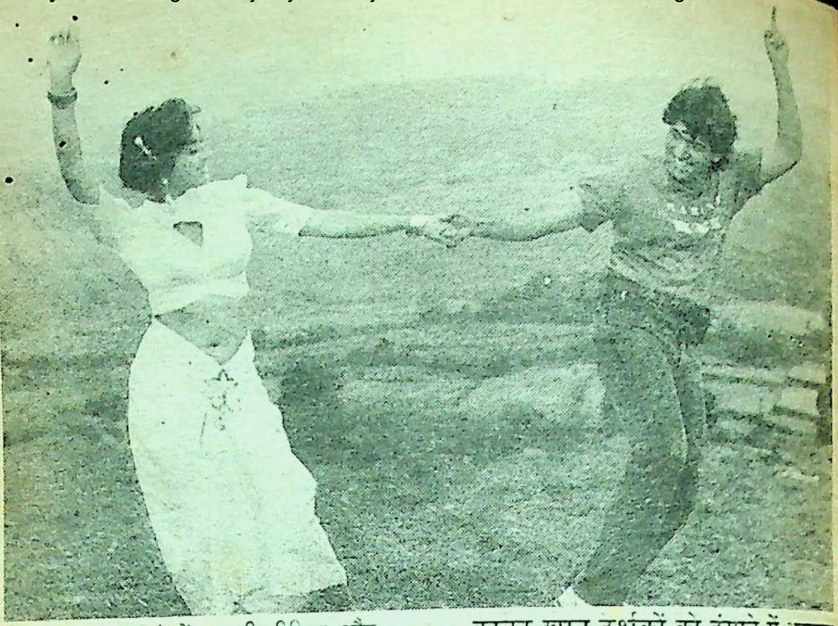

फिल्म 'इज्जतदार' में माधुरी दीक्षित और गोविंदा : चालू लटकेझटके.

'राम तेरी गंगा मैली' में मंदाकिनी को नहलाया था.

फिल्म के संवाद कादर खान ने लिखे हैं. उस ने अपने लिए तो घटिया से घटिया संवाद प्रयुक्त किए हैं, शेष पात्रों के लिए जो संवाद लिखे हैं, वे भी साधारण स्तर के हैं. दो एक नृत्य तथा सेट अच्छे बन पड़े हैं.

अभिनय की दृष्टि से अनिल कपूर ने राजकपूर, देवआनंद की नकल की है. अपनी पिछली फिल्म 'ईश्वर' में वह राजकपूर की एक्टिंग की नकल करने के कारण चर्चा का विषय बना था. दर्शकों को बारबार नकलची एक्टिंग अच्छी नहीं लगती. माधुरी दीक्षित का चेहरा भारी हो गया है. वैसे अभिनय उस ने खुल कर किया है. शिल्पा शिरोडकर भोलीभाली लगती है, मगर सेक्सी दृश्य देने में वह बहुत आगे है. अमरीश पुरी ने अपने संवादों में पंजाबी भाषा का प्रयोग कर थोड़ा बदलाव लाने की कोशिश की है. कादर खान दर्शकों को हंसाने में असफल रहा है. उलटा उस की हरकतें फूहड़ लगती हैं. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म का छायांकन अच्छा है. गीत इंदीवर, अनवर सागर ने लिखे हैं, जिन्हें राजेश रोशन ने अच्छा संगीत दिया है. चार गीत अच्छे बन पड़े हैं और चल निकलेंगे, ऐसी आशा है.

O इज्जतदार

निर्माता : सुधाकर बोकाड़े
निर्देशक : के. बापैय्या
संगीत : लक्ष्मीकांत प्यारेलाल
मुख्य कलाकार : दिलीपकुमार, गोविंदा, माधुरी दीक्षित, अनुपम खेर, शफी ईनामदार, शक्ति कपूर, भारती, असरानी, स्वप्ना, टीना घई और रघुवरन.

'इज्जतदार' देखने पर लगा कि निर्देशक के. बापैय्या थक चुके हैं और उन की निर्देशन देने की प्रतिभा चुकती जा रही है. कमजोर कथानक वाली यह फिल्म दिलीप कुमार के होते हुए भी लचर हो कर रह गई है, लगता है फिल्म नहीं, कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक को देख रहे हैं.

ब्रह्मदत्त (दिलीप कुमार) और प्रेमचंद (शफी ईनामदार) पार्टनर हैं तथा गहरे दोस्त हैं. ब्रह्मदत्त की बेटी सोनू (स्वप्ना) उस की मरजी के खिलाफ विवाहित इंद्रजीत से शादी कर लेती है. इंद्रजीत ब्रह्मदत्त और प्रेमचंद को आपस में लड़वाता है, फिर प्रेमचंद की हत्या कर ब्रह्मदत्त को फंसवा देता है. वह किसी भी हालत में सारी दौलत हथियाना चाहता है. सोनू को जब इस बात का पता चलता है तो वह उसे भी मार डालता है. प्रेमचंद की बेटी मोहिनी (माधुरी दीक्षित) को पाने के लिए वह उस के पीछे पड़ जाता है. उधर इंद्रजीत की पहली पत्नी (टीना घई) से उत्पन्न उस का बेटा विजय (गोविंदा) अपराधी बन चुका होता है. वह मोहिनी से प्रेम करता है. इधर ब्रह्मदत्त की सजा भी खत्म हो जाती है. वह विजय को रास्ते पर लाता है. दोनों मिल कर इंद्रजीत को खत्म कर देते हैं.

फिल्म की पटकथा काफी बिखरी-बिखरी है. मध्यांतर से पहले तो अच्छीखासी बोरियत है. फिल्म में घटनाएं तो हैं परंतु उन में तारतम्य नहीं है. निर्देशन तो खैर घटिया है ही, संपादन भी काफी खराब है. संवाद भी ढीलेढाले हैं. फिल्म में जो गीत हैं वे ठूंसे हुए लगते हैं. प्रासंगिक स्थिति से उन का कोई लेनादेना नहीं है.

अभिनय की दृष्टि से दिलीप कुमार ने निराश ही किया है. इस से पहले वह 'कानून अपनाअपना' में दर्शकों को निराश कर चुके हैं. ऐसी बकवास फिल्म उन्होंने साइन कैसे कर ली, समझ में नहीं आया. गोविंदा अपने नाचगाने वाले अभिनय से आगे नहीं बढ़ पाया है. माधुरी दीक्षित ने भी निराश ही किया है. कहींकहीं उस ने विशेष कपड़े पहन कर शरीर के उभारों को दिखाने की कोशिश की है. रघुवरन दक्षिण भारत का कलाकार है. अपनी आंखें झपकाने की अदा से उस ने खलनायक बनने की असफल कोशिश की है. फिल्म का गीतसंगीत पक्ष भी साधारण है. ●

पिछले बारह महीनों में

★★ सौतन की बेटी, अपने बेगाने, नकाब, बंटवारा, चांदनी, मैं आजाद हूं, चालबाज, मैं ने प्यार किया.

★ यतीम, आसमान से ऊंचा, कहां है कानून, रुखसत, प्रेम प्रतिज्ञा, रखवाला, जैसी करनी वैसी भरनी, बड़े घर की बेटी, हम भी इनसान हैं, ताकतवर, दाता, त्रिदेव, मुजरिम, मिट्टी और सोना, लव लव लव, जादूगर, एलाने जंग, कालाबाजार, शहजादे, परिंदा, कसम वर्दी की, अब मेरी बारी है, भ्रष्टाचार, जख्म, रिहाई, आवारगी, बाप नंबरी बेटा दस नंबरी, जीने दो, बहूरानी.

○ फर्ज की मांग, पुरानी हवेली, हथियार, गैर कानूनी, नफरत की आंधी, पांच फौलादी, हम इंतजार करेंगे, हलाल की कमाई, राख, निशानेबाजी, पाप की सजा, बिल्लू बादशाह, क्लर्क, उस्ताद, इलाका, आखिरीबाजी, पांच पापी, महादेव, पराया घर, गरीबों का दाता, कानून की आवाज, गूंज, जंगबाज, सच्चाई की ताकत, सौ साल बाद, आखिरी गुलाम, अभिमन्यु, नाइनसाफी, खोल दे मेरी जुबान, हिसाब खून का, जेंटलमैन, दोस्त, दानापानी, तूफान, लश्कर, निगाहें, तू नागिन मैं सपेरा, मोहब्बत का पैगाम, आग से खेलेंगे, सिक्का, गवाही, सिंदूर और बंदूक, गोला बारूद, कानून अपना अपना, देश के दुश्मन, घबराहट, खोज, लड़ाई, पाप का अंत, घर का चिराग, जुर्रत, आग का गोला, प्यार के नाम कुरबान, महासंग्राम, तकदीर का तमाशा, खतरनाक, विद्रोही, अग्निपथ, मजबूर, जहरीले, वफा, खूनी मुरदा, शानदार, प्यार का कर्ज.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वर चाहिए

सरयूपारीय ब्राह्मण, 29, 152 सें.मी., एम.एससी., एम.एड, गौरांग, पूर्वी उत्तरप्रदेशीय, सरकारी सेवारत, 3,000/-, शिक्षित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर. लिखें : वि.नं. 7007, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप, कहार धीवर, 25, 150, एम.काम., पब्लिक स्कूल अध्यापिका, दिल्लीवासी, गेहुआं, गृहकार्यकुशल कन्या हेतु कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7008, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 22, 155 सें.मी., एम.एससी., गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु स्वजातीय, इंजीनियर, डाक्टर या समकक्ष अधिकारी, सुयोग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 7009, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सारस्वत वसिष्ठ गोत्र, स्वस्थ, सुघड़, गृहकार्य में कुशल, एम.ए., बी.ए., आयु 24, 22, लंबाई 160, 158, दो सगी बहनों के लिए योग्य वर. जातिबंधन, दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 7010, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, एम.ए., 25, 160, कार्यरत कन्या हेतु सनाढ्य या गौड़ ब्राह्मण वर चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7011, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए., गर्ग गोत्र अग्रवाल, सुंदर कन्या, गृहविज्ञान, पाककला, सिलाई, कढ़ाई आदि गृहकार्यों में दक्ष, पी.सी.एस., परीक्षा दी जा चुकी, परीक्षा फल अभी नहीं. आई.ए.एस. परीक्षा हेतु आवेदित, कुशाग्र बुद्धि, सामाजिक रीतिरिवाज के अनुसार विवाह हेतु योग्य वर चाहिए. जन्मपत्रिका सहित पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 7012, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 21, 157, एम.ए., बी.एड., रंग साफ, स्लिम, सुंदर कन्या हेतु सरकारी सेवारत या इंजीनियर, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7013, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उत्तर प्रदेश निवासी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 23, 163, बी.ए. अध्ययनरत, गोरी, दुबली, पतली, मृदुभाषी, अल्पभाषी, सुंदर, पूर्णरूपेण घरेलू कन्या वास्ते किसी प्रांत के, कोई ब्राह्मण, ब्राह्मणोचित संस्कारमय परिवार का, पुलिस, सेना के किसी अंग, सिविल, फारेस्ट, बैंक, कालिज, ख्याति प्राप्त लिमिटेड [illegible] अधिकारी या समकक्ष वेतनवाले, दहेजविरोधी लड़का चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी, शीघ्र शादी. लिखें : वि.नं. 7014, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 155, मैट्रिक, अति सुंदर, गृहकार्य निपुण, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7015, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 163 सें.मी., 2, 200/-, बैंक कार्यरत, निर्दोष तलाकशुदा, आत्मनिर्भर, स्वतंत्र, ब्राह्मण कन्यार्थ कार्यरत, कोर्ट मैरिज को सहमत, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. सविवरण लिखें : वि.नं. 7016, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 162 सें.मी., डबल एम.ए., इतिहास, साइकोलोजी, एम.एड., डिप्लोमा मार्केटिंग मैनेजमैंट, स्लिम, लंबी, गोरी, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील, प्रतिभावान, वैश्य विश्नोई कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. विवाह सामान्य. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7052, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 22 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.बी.बी.एस., इंटर्नशिप कर रही, मेधावी कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7053, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मित्तल, 22, 148 सें.मी., बी.ए., गृहकार्यदक्ष, सुशील, सुंदर, मंगली कन्या हेतु प. उत्तरप्रदेशीय, बिहार में स्थापित, शाकाहारी, निर्व्यसनीय, आत्मनिर्भर, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7054, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, जैन, 156 सें.मी., स्नातकोत्तर, अत्यंत गोरी, इकहरी, स्मार्ट, प्रतिष्ठत कन्यार्थ सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 7055, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोत्र गोयल, 22, 163, एम.एससी. (गणित), एम.फिल. (गणित), रंग साफ, गृहकार्य-निपुण कन्या हेतु शिक्षित एवं प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7056, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए., पी.एच.डी., प्रतिष्ठित कुमाऊंनी ब्राह्मण परिवारीय, गोरी, आकर्षक कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, बैंक अधिकारी, 30 वर्ष तक का निर्व्यसनी वर चाहिए. कन्या के पिता-भाई डाक्टर, उत्तम विवाह, प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 7057, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गृहकार्यदक्ष, 22, 157, एम.ए. फर्स्ट क्लास, सरल मृदुभाषी, अग्रवाल लड़की हेतु वर चाहिए. पूर्वपति 5 माह विवाहोपरांत निधन, निस्संतान. लिखें : वि.नं. 7058, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25½, 165, 2,500/-, बी.ए., पंजाबी. रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

काउंट्स में कार्यरत कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. व किसी भी मंडल जोन [illegible] स्थानांतरित. लिखें : वि.नं. 7059, सरिता, नई दिल्ली-110055.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माहौर कोरी, 24, 152, गौरवर्ण, एम.ए. बी.एड., दिल्ली प्रशासन विद्यालय में पी.जी.टी., 2,900/- मासिक, पिता आई.जी.आई. एयरपोर्ट पर कस्टम अधीक्षक, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. दिल्लीवासी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7060, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, एम.एससी. कंप्यूटर साइंस में डिप्लोमा, 23, 160, गौरवर्ण, इकहरी, गृहकार्यदक्ष, स्मार्ट, सुंदर, प्रतिभावान कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7061, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 19, बी.कॉम., बी.एड., 158 सें.मी., स्लिम, स्मार्ट, सुंदर कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7062, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 25, 161 सें.मी., एम.ए., बी.एड., अध्यापिका, 1,800/-, अति गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवार कन्यार्थ उपयुक्त वर लिखें : वि.नं. 7063, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण सरयूपारीण, 25, 153 सें.मी., एम.ए., आंशिक मांगलिक, गोरी, सुंदर, स्मार्ट, अमरीका ग्रीनकार्ड धारक (1990) कन्या हेतु साइंस ग्रेजुएट/पोस्टग्रेजुएट/इंजीनियरिंग वर. शीघ्र विवाह, पूर्ण विवरण सहित संपर्क करें. लिखें : वि.नं. 7064, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 160 सें.मी., गृहकार्यदक्ष, बी.ए. फाइनल में अध्ययनरत, गौरवर्ण, प्रतिष्ठित परिवारीय नाई कन्या हेतु सजातीय, उच्च पदाधिकारी वर चाहिए. शीघ्र विवाह. पूर्वी राजस्थानी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7065, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी, गौरवर्ण, अतिसुंदर, स्नातकोत्तर, पाक विशेषज्ञ कन्या 24, 165, हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7066, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 157 सें.मी., स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, एम.बी.बी.एस. (अंतिम वर्ष), बिहार प्रदेशीय, पिता-भाई प्रथम श्रेणी पदाधिकारी, जाति गोंड, कन्यार्थ स्वजातीय वर. सविवरण लिखें : वि.नं. 7067, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राष्ट्रीयकृत बैंक के शाखा प्रबंधक की 22 वर्षीया, एम.ए., गेहुआं रंग, आकर्षक नैननक्श, 160 सें.मी., 45 किलो., वैश्य, मांगलिक, इकलौती बहन हेतु सजातीय, सरकारी, बैंक सेवारत वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7068, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य ब्राह्मण, मांगलिक, 26 वर्षीया, 165 सें.मी., बी.ए., गृहकार्यदक्ष, सुंदर कन्या हेतु ब्राह्मण वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7069, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22, 160 सें.मी., राजपूत, देहरादून निवासी, बी.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7070, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, बीसा अग्रवाल, 24, 157, एम.ए., सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 7071, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 155 सें.मी., बी.ए., बी.एड., गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सरयूपारीण ब्राह्मण, कन्या हेतु सेवारत या स्वव्यवसायी, कुलीन ब्राह्मण वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7072, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी सारस्वत ब्राह्मण, 26 वर्षीया, एम.ए., बी.एड., अध्यापिका कन्यार्थ अधिकारी वर चाहिए. शीघ्र, उत्तम शादी. लिखें : वि.नं. 7073, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मध्य प्रदेश पदस्थ केंद्रीय सरकारी ब्राह्मण अफसर की कन्या, शासकीय कालिज में प्रोफेसर (गणित), 23, 160, गोरी, सुंदर, इकहरा बदन, हेतु मध्य प्रदेश पदस्थ सजातीय, राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7074, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार (पटना) निवासी, ब्रह्म भट्ट ब्राह्मण, 24 वर्षीया, एम.बी.बी.एस. (हाउस सर्जन) कन्यार्थ योग्य वर चाहिए. मेडिको/व्याख्याता/राजपत्रित पदाधिकारी को वरीयता. उपजातीयबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7075, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 21 वर्षीया, बी.ए. अध्ययनरत, सुंदर कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. जन्मपत्र विवरण भेजें. लिखें : वि.नं. 7076, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, गोयल, 150 सें.मी., एम.एससी. (गणित), बी.एड., सदैव प्रथम श्रेणी, कानवेंट शिक्षित, सुंदर, गृहकार्यकुशल कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 7077, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 162 सें.मी., बी.ए., पंजाबी, गौरवर्ण, अति सुंदर कन्यार्थ प्रतिष्ठित वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7078, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मौर्य 20, 155 सें.मी., इंटर, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7079, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 157 सें.मी., गौरवर्ण, इंटर पास, ठाकुर राजपूत, तलाकशुदा (निस्संतान) हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7080, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 एवं 18 वर्षीया, गौरवर्ण, गृहकार्यनिपुण, बारहवीं की छात्राएं, जाति स्वर्णकार, पिता मध्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेश में केंद्रीय सेवारत [illegible] उत्तम शादी. जाति, प्रांत बंधन नहीं. सेवारत को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 7081, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, बी.ए. (आनर्स), साफ गेहुआं रंग, 157 सें.मी., लंबी, छरहरी, तीखे नाकनक्श, गृहविज्ञान, संगीत और कला में विशेष अभिरुचि वाली, स्वर्णकार कन्या के लिए सजातीय, योग्य वर चाहिए. इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7082, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजस्थानी, प्रतिष्ठित, उच्च व्यवसायी, अग्रवाल परिवारीय, 23 वर्षीया, 155 सें.मी., 42 किलो., स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, आकर्षक व्यक्तित्व, उच्च नक्षत्री (बृहस्पति केंद्रीय), एम.काम., फर्स्ट डिविजन, चार्टर्ड एकाउंटेंसी (इंटरमिडिएट उत्तीर्ण) अध्ययनरत कन्या हेतु अति सुंदर, सुयोग्य, सजातीय (सिंहल गोत्र छोड़ कर), उच्च अधिकारी/प्रोफेशनल/व्यवसायी वर चाहिए. वर्षांत तक बेहतरीन विवाह. विज्ञापन मात्र उत्तम चयन हेतु. इच्छुक जन्मकुंडली, पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7083, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत, 26, 156 सें.मी., बी.ए., लिपिक, केंद्रीय कर्मचारी, स्लिम, स्मार्ट, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सेवारत, गुण संपन्न वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7084, सरिता, नई दिल्ली-110055.

39½ वर्षीया, अविवाहित, सामान्य जाति, 145 सें.मी., रंग साफ, स्लिम, स्थायी सेवारत, 4,000/- मासिक, म.प्र. निवासी हेतु योग्य वर, अंतर्जातीय एवं निस्संतान विधुर भी विचारणीय. कन्या विवाहोपरांत सर्विस छोड़ने हेतु बाध्य नहीं. सविवरण शीघ्र आमंत्रित. लिखें : वि.नं. 7085, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.ए., पंचायत इंस्पेक्टर, बौद्धधर्मीय, मराठी भाषी, सुंदर, गौरवर्णीय कन्या हेतु दहेजरहित प्रथम/द्वितीय श्रेणी अधिकारी वर चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7086, सरिता, नई दिल्ली-110055.

161, 26 वर्षीया, सनाढ्य ब्राह्मण, डबल एम.ए., बी.एड., गोरी, स्मार्ट, लंबी, आकर्षक व्यक्तित्व, शाकाहारी कन्यार्थ सुयोग्य, इंजीनियर, प्रोफेसर, मेडिकल आफीसर, बैंक आफीसर इत्यादि सरकारी सेवारत, सनाढ्य/गौड़ ब्राह्मण वर चाहिए. इंजीनियर को वरीयता. लिखें : वि.नं. 7087, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 23½, 170, सुंदर, स्मार्ट, स्लिम, अति आकर्षक, कानवेंट पढ़ी, एम.ए., गोल्ड मेडिलिस्ट, प्रतिष्ठित, शिक्षित परिवार की कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7088, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, 164 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, इलेक्ट्रानिक इंजीनियर, भारतीय सेवा, 4,000/- मासिक, कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7089, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया वस्तुत: गोरी, सुंदर, स्लिम, बी.ए., बी.एड., 160, स्नातकोत्तर, राज्य सेवा प्रतिस्पर्धारत राजपूत कन्या हेतु उत्तम चयनार्थ दहेजविरोधी राजपूत, डाक्टर, इंजीनियर, सुंदर, स्वस्थ, प्रथम श्रेणी अधिकारी वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7090, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 157 सें.मी., वास्तविक सुंदर, गोरी, मंगली, कानवेंट शिक्षित, एलएल.बी., कन्या हेतु दृढ़ विश्वासी, स्मार्ट, नम्र स्वभाव, अफसर वर. पिता गजेटेड अफसर. शादी साधारण. आर्मी, एयरफोर्स डाक्टर को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7154, सरिता, नई दिल्ली-110055.

113331

कुमाऊंनी राजपूत 33, 151, बी.एससी., गौरवर्ण, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, कुमाऊंनी/गढ़वाली वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7155, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, पंजाबी शर्मा (भारद्वाज), राजस्थान निवासी, सिस्टर ट्यूटर राजकीय सेवारत, वेतन 2,500/-, रंग गेहुआं, सुंदर, सुशील कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. उच्च विचारशील, बैंक सेवारत, रेलवे या राजकीय सेवारत को प्राथमिकता, सेवा भारत में कहीं भी स्थानांतरित, शीघ्र विवाह, उपजाति पंजाबी (शर्मा) भी स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 7156, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्ष, 153 सें.मी., उत्तर बिहार निवासी, अग्रवाल गर्ग, इंटर, सुंदर, गृहकार्यदक्ष हेतु शिक्षित, सुयोग्य, व्यवसाय/नौकरी, कार्यरत, सजातीय वर. लिखें : वि.नं. 7157, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन, 25, 165, इंटरमीडिएट, दिल्ली निवासी, आकर्षक, गृहकार्य, सिलाई, कढ़ाई निपुण, मधुर स्वभाव, तलाकशुदा, निस्संतान कन्या हेतु वर चाहिए. विधुर, तलाकशुदा स्वीकार्य. निस्संतान को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7158, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 152 सें.मी., ग्रेजुएट, कार्यरत 2,700/-, सुंदर पासी अ. जाति कन्या हेतु वर चाहिए. अच्छी शादी. लिखें : वि.नं. 7159, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, राजपूत कन्या 27, 160, एम.ए., हेतु वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7160, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सनाढ्य, 22, 152, गौरवर्ण, एम.ए. (हिंदी), बी.एड. अध्ययनरत हेतु सेवारत यू.पी., शाकाहारी, सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह. विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7161, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर, जैन, (मित्तल), 21½, 158, एम.ए. (अंगरेजी), गृहकार्यनिपुण, गोरी, (चेहरे पर मामूली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेचक के निशान), कन्या हेतु सी.ए., बैंक आफिसर, उत्तम व्यवसायी वर चाहिए. अति उत्तम विवाह. अग्रवाल, दिगंबर जैन ही पत्रव्यवहार करें. लिखें : वि.नं. 7162, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत क्षत्रिय, 20 वर्षीया, 160 सें.मी., बी.काम., इंगलिश मीडियम शिक्षा प्राप्त, स्लिम, आकर्षक, स्मार्ट, प्रतिष्ठित, उद्योगपति परिवारीय, घरेलू व समझदार कन्यार्थ वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7163, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18½ वर्षीया, 163 सें.मी. बी.ए., अध्ययनरत, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, एवमं संपन्न, कलकत्ता नजदीक निवासी, जैन दिगंबर कन्या हेतु सुयोग्य, स्वस्थ, सजातीय एवं आत्मनिर्भर, वर चाहिए. उत्तम विवाह. पूर्ण विवरण, व पारिवारीक विवरण सहित तुरंत लिखें : वि.नं. 7164, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अरोड़ा, 30, 157, बी.ए., रंग साफ, गृहकार्यनिपुण, संतानोत्पत्ति असमर्थ कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. एक या दो बच्चों वाले विधुर स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 7165, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 24, 165, हायर सेकेंड्री, रंग साफ, इकहरी, गृहकार्यदक्ष, कन्या हेतु व्यवसायरत या सरकारी सेवारत, दहेजविरोधी, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7166, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 150 सें.मी., एम.ए., माथुर कायस्थ, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7167, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गोरी, 24, 152, पीएच.डी. अध्ययनरत, शाकाहारी, गौड़ ब्राह्मण कन्या हेतु वर. लिखें : वि.नं. 7168, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन मित्तल, 25, 157 सें.मी., गृहकार्यदक्ष, संतानोत्पत्ति में असमर्थ, उ.प्र. निवासिनी कन्यार्थ 35 वर्ष तक संतानयुक्त, विधुर या तलाकशुदा, सजातीय, सुसंपन्न वर चाहिए. लिखें : वि.नं. 7169, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 20, 162 (यू.पी.), गौरवर्णीय, सुंदर, स्नातक, गृहकार्यनिपुण, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सरकारी सेवारत, सजातीय वर चाहिए. इंजीनियर, बैंक अधिकारी, पी.सी.एस. अधिकारी को वरीयता. उत्तम विवाह. लिखें : वि.नं. 7170, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, 158 सें.मी., वैश्य गोत्र सिंगल, कंप्यूटर प्रोग्रामर, मासिक वेतन 15,000/-, कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, टेक्निकल शिक्षित अथवा सी.ए. वर चाहिए. जो डेनमार्क में रहने का इच्छुक हो. लिखें : RAJ GUPTA, KILDEAGER 59, 2700 COPENHAGEN. DEN MARK.

[illegible] दक्ष, 155, 30 वर्षीया, अग्रवाल, एम.ए., एलएल.बी., एडवोकेट हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7171, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

25, 172 सें.मी., 65 कि.ग्रा., रु. 2,000/-, मैकेनिकल डिप्लोमा धारक, सेवारत, व्यसनहीन हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, पंजाबी कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6968, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भूतपूर्व फौजी अफसर, अब मेडिको, 41 वर्ष, 181 सें.मी. लंबाई, स्वस्थ, हंसमुख स्वभाव को आवश्यकता है ऐसी युवती की जो सर्वप्रथम दोस्त, सुशील, स्वस्थ, स्वभाव से सुंदर, मृदुभाषी, गृहकार्य में दक्ष, सेवा भावना, प्रेम-सहानुभूति रखने वाली, साहसी, निस्संकोची, संकीर्ण, धार्मिक रूढ़िवादी विचारों से मुक्त, बाल लंबे, थोड़ी अंगरेजी भाषा का ज्ञान हो तो अच्छा है. गरीब बेसहारा अवश्य पत्रव्यवहार करें. युवती स्वयं पत्रव्यवहार करे. RAJA SHARMA, P.O. BOX 8175 STN—F EDMONTON, ALTA, CANADA, T 6 H 4 P 1

यादव, 25, 170, बैंक में प्रोबेशनरी अधिकारी, सुंदर, स्वस्थ युवक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. जाति कोई बंधन नहीं. प्रथम बार सविवरण लिखें : वि.नं. 6985, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.ए., स्मार्ट, प्रतिष्ठित, गौड़ ब्राह्मण, उच्च व्यवसायी, युवक हेतु अति सुंदर, सजातीय, सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 6991, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू युवक, 22, 183, 5,000/-, धनी परिवार, अपना मकान, अनुशासित, स्वस्थ, संगीत में पारदर्शी, लेकिन जन्म से एक आंख, हेतु अच्छी स्वभाव की आकर्षक कन्या, मामूली विकलांग भी स्वीकार्य. दहेज, जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 6992, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, मांगलिक, 27 वर्षीय, 180 सें.मी., ग्रेजुएट, कलकत्ता में व्यवसायरत, मध्यमवर्गीय, आमिष, निरामिष, छोटा परिवार, स्मार्ट, सुंदर, श्याम वर्ण, व्यवसायी के एकमात्र पुत्र के लिए वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. गोरी, सुंदर, पढ़ीलिखी, गृहकार्यदक्ष, मांगलिक हो या न हो, जन्मपत्री के साथ प्रथम बार में पूर्ण विवरण साथ लिखें. विज्ञापन उत्तम चयन वास्ते. जायसवाल को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7025, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत (महरा कहार धीवर), इंजीनियर (मैकेनिकल डिप्लोमा), 26, 165, 3,000/-,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं बी.काम., 24, 170, 6,000/-, दिल्ली निवासी, सम्माननीय परिवार, हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधुएं चाहिए. लिखें : वि.नं. 7026, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, अति संपन्न परिवारीय, 27, 166, शिक्षित, रंग साफ, श्रेष्ठ खानदान, सुव्यवस्थित व्यवसाय, अच्छी मासिक आय चार अंकीय एवं प्रापर्टी वाले स्मार्ट, नवयुवक हेतु गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज एवं जातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7027, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 170, 1,200/-, बी.काम., प्राइवेट नौकरी, सदाचारी ब्राह्मण युवक हेतु वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7028, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42, 3,000/-, केंद्रीय कार्यरत, विधि स्नातक, तलाकशुदा, (एक 16 वर्षीय पुत्र साथ), शाकाहारी हेतु वधू चाहिए. सीधीसादी, मृदुभाषी, शाकाहारी, आत्मविश्वासी, विधवा, तलाकशुदा, शिक्षित, बेसहारा, स्वयं निर्णायिका को प्राथमिकता. जाति, प्रांत, दहेजबंधन नहीं. बिना खर्चे की शादी. लिखें : वि.नं. 7029, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 168, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, बी.टेक., असिस्टेंट इंजीनियर (राजपत्रित) उत्तर प्रदेश (पिता राजपत्रित, प्रतिष्ठित परिवार) युवकार्थ अति सुंदर वधू. लिखें : वि.नं. 7030, सरिता, नई दिल्ली-110055.

निगम कायस्थ, झांसी मंडल निवासी, एम.ए., 26 वर्षीय, सेवारत, आय 1,500/-, हेतु शिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7031, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25, 168, 3,000/-, बी.काम., स्मार्ट युवक के लिए सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 7032, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सौम्य, शालीन, संस्कारित, न्यायाधीश युवक, आंशिक विकलांग, दाहिना पांव पोलियो ग्रस्त, 25, 161, 3,200/-, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7033, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मैढ राजपूत, 21 वर्षीय, निजी व्यवसायरत, हर तरह से सुविधासंपन्न लेकिन चलनेफिरने में असमर्थ, रंग साफ, युवक हेतु वधू चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7091, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 29, 170, अंगरेजी माध्यम शिक्षित, आय चार अंकीय, व्यवसायी, सुंदर, संपन्न परिवार, पिता अवकाश प्राप्त केंद्रीय सरकार के एक भाई बैंक में प्रथम श्रेणी अधिकारी, हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए, उत्तम तथा शीघ्र विवाह, दहेज तथा जातिबंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7092, सरिता, नई दिल्ली-110055.

[illegible] बेटियों की तलाश है. कन्याएं इज्जतदार (चाहे गरीब) परिवार की, सुंदर, समझदार, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक विचार वाली होनी चाहिए. उचित कन्याएं मिलते ही साधारण विवाह तीन कपड़ों में शीघ्र. अमरीका में बसे, हिंदी एवं पंजाबी भाषी, देहलवी, पूर्णतया भारतीय विचारधारा वाले, बहुत प्यार देने वाले, संपन्न परिवार में मातापिता एवं हैंडसम, कंप्यूटर प्रोफेशनल, 32, 178 सें.मी., एवं 26, 180 सें.मी., दो पुत्र, कोई बंधन नहीं. कन्या मुख्य, प्रथम बार संपूर्ण पारिवारिक जानकारी, जन्मतिथि, ताजा फोटो आवश्यक. इच्छुक परिवार अथवा कन्याएं निस्संकोच विश्वास के साथ लिखें : DEAR PARENTS, BOX 16363, ATLANTA, GA 30321, USA.

राधास्वामी, सत्संगी परिवारीय, ऋषिकेश (जिला) देहरादून निवासी, स्वव्यवसायरत, 24 वर्षीय, 168 सें.मी., बी.ए., गौरवर्ण, सुंदर, ब्राह्मण, भारद्वाज युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, ब्राह्मण वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7093, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विधुर, 26, 1,500/-, पुत्र 4 वर्षीय, गुप्ता, निजी मकान, हेतु वधू. प्रांत, जातिबंधन नहीं, घरजंवाई बन सकता है. लिखें : वि.नं. 7094, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जैन ओसवाल, मैट्रिक, 27, 170, 1,200/-, दिल्ली फर्म कार्यरत, निजी मकान बहादुरगढ़ हरियाणा, मध्य परिवारीय युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, वधू सजातीय चाहिए. लिखें : वि.नं. 7095, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 40 वर्षीय, एम.काम., बैडमिंटन के सर्वोच्च अधिकारी एवं स्वव्यवसायरत, मासिक आय पांच अंकीय, अविवाहित हेतु 20-25 वर्षीया, कम से कम इंटर, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, सजातीय वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 7096, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, इंजीनियर आफीसर, 25, 163, 5,500/-, हैंडसम, स्मार्ट युवक हेतु वास्तविक सुंदर, सुशिक्षित, स्मार्ट, आकर्षक, प्रतिष्ठित परिवारीय सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7097, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता के हरियाणा प्रवासी गौड़ (भारद्वाज) 26 वर्षीय, ग्रेजुएट, व्यवसायी युवक हेतु सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7098, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, जैन, हरियाणा निवासी, बी.ए., निजी कनफैक्शनरी की दुकान, मासिक आय 2,000/- से अधिक, हेतु सुंदर, अग्रवाल जैन, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7099, सरिता, नई दिल्ली-110055.

लोधी क्षत्रिय, एम.बी.बी.एस., 30 वर्षीय, 167

U3331

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सें.मी., हैंडसम, जमींदार परिवार, लड़के हेतु शिक्षित कन्या की आवश्यकता है. केवल कन्या को वरीयता. लिखें: वि.नं. 7100, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य 35, 165, 2,500/-, राजस्थान राजकीय परिवहन, ड्राइवर पद पर कार्यरत युवक हेतु वधू चाहिए. दहेज अनावश्यक. लिखें : वि.नं. 7101, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 160 सें.मी., निजी व्यवसाय, कलकत्ता में. खंडेलवाल हेतु वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. सविवरण लिखें : वि.नं. 7102, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34, 165, एक पैर में नाममात्र कमी, एम.ए., जिला मुख्यालय पर स्थायी सेवारत, वेतन 2,800/- मासिक, जाट युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित वधू चाहिए. अन्य कोई बंधन नहीं. दहेजरहित, शीघ्र, सादा विवाह. इच्छुक लिखें : वि.नं. 7103, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 27 वर्षीय, 162 सें.मी., स्नातक, सिविल इंजीनियर, शासकीय सेवारत युवक हेतु सुयोग्य वधू. इंजीनियर, डाक्टर को प्राथमिकता. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7104, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीय, राज्य कर्मचारी, पूर्ण एकाकी ब्राह्मण विधुर को जीवनसाथी की आवश्यकता है. विधवा, निराश्रिता, तलाकशुदा को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7105, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 167 सें.मी., अग्रवाल, गोयल, एम.काम. (प्रीवियस), आकर्षक, सौम्य, निजी व्यवसाय, हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7106, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 36 वर्षीय, 178 सें.मी., 3,500/- मासिक, इंटर, व्यवसायरत, अविवाहित, स्वस्थ, सुंदर, शुद्ध शाकाहारी युवक हेतु सजातीय, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू. भाई वरिष्ठ सरकारी बैंक तथा सरकारी प्रतिष्ठान में अधिकारी. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 7107, सरिता, नई दिल्ली-110055.

44, 4,000/-, एकाकी अग्रवाल (कहीं भी रहने को तैयार) हेतु गरीब वधू. जाति, आयु, एक बच्चा स्वीकार्य, बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7108, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 27, 165 सें.मी., एम.ए., इटावा में व्यवसायरत, उच्च आय, स्मार्ट युवक हेतु, परिवारीय, सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7109, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32, 163, 3,500/-, गौरवर्ण, राष्ट्रीयकृत बैंक सेवारत, 8 वर्ष पूर्व दाएं पैर में पैरेलाइसिस के हलके असर के बाद पूर्ण स्वस्थ, मांगलिक, श्रीवास्तव कायस्थ वर हेतु गृहकार्यदक्ष, सुशिक्षित, सुंदर, लंबी, पूर्ण स्वस्थ, शाकाहारी, मंगली वधू. बैंक, एल.आई.सी. सेवारत को प्राथमिकता. उपजातिबंधन नहीं. प्रथम बार में ही जन्मपत्री सहित पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 7110, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन (अग्रवाल गोयल), 26, 172, 5,000/-, ग्रेजुएट, सुंदर, स्मार्ट, निजी व्यवसाय, हेतु शिक्षित, सुंदर, स्मार्ट, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 7111, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भट्ट ब्राह्मण, 22, 162 सें.मी., रंग गेहुआं, बेसहारा युवक हेतु सुयोग्य, सजातीय वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं, प्रथम बार सविवरण लिखें : वि.नं. 7112, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बरनवाल, 26, 165, आकर्षक व्यक्तित्व, शिक्षित, स्वव्यवसायरत, वाराणसी में निजी दो आवास, युवक हेतु प्रतिष्ठित परिवारीय, सुंदर, तीखे नाकनक्श, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, मधुरभाषिणी की. दहेज, जातिबंधन नहीं. शीघ्र लिखें : वि.नं. 7113, सरिता, नई दिल्ली-110055.

आदिगौड़ ब्राह्मण, 28, 170, 4,000/-, मध्य प्रदेश विद्युत बोर्ड में इंजीनियर युवक हेतु मांगलिक वधू चाहिए. उपजातिबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7114, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 176 सें.मी., अग्रवाल, दिल्ली में सरकारी नौकरी, हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7115, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, 27 वर्षीय, जमीनजायदाद, थोक व्यापारी, हाल ही पत्नी स्वर्गीय, 4 वर्षीय एक पुत्र, एक पुत्री, हेतु इकहरी, सुंदर, सौम्य, संभ्रांत, सजातीय परिवार की वधू चाहिए. दहेज का प्रश्न नहीं. कन्या ही मुख्य. कृपया लिखें : वि.नं. 7116, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गढ़वाली ब्राह्मण, 26, 160, 2,400/-, उ.प्र. सरकार सेवारत, इलेक्ट्रानिक्स तकनीशियन हेतु सुंदर, गढ़वाली ब्राह्मण, शिक्षित कन्या चाहिए. सेवारत को वरीयता. लिखें : वि.नं. 7117, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 173 सें.मी., बी.काम., महेश्वरी, बड़ौदा निवासी, स्मार्ट, गेहुआं रंग, वजन 69 किलो., लिमिटेड कंपनी में डायरेक्टर युवक हेतु अच्छे परिवारीय, सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 7118, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, 26, 160 सें.मी., बी.काम., सरकारी प्रतिष्ठान में सेवारत, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सेवारत, दिल्ली निवासी वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7119, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, 27, 154, 4,000/-, निजी व्यवसाय, दिल्ली में अकेला, हेतु सरकारी सेवारत, कायस्थ वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7120, सरिता, नई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली-110055.

कायस्थ, 25, 178, बी.टेक., आई.आई.टी., एम.एस., यू.एस.ए., वर्तमान में बहुराष्ट्रीय संस्थान यू.एस.ए. में कार्यरत, युवक हेतु योग्य, सुंदर, लंबी कन्या चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर, एम.एससी. को प्राथमिकता. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 7121. सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज उपमन्यु, 26, 172, 3,000/-, रेलपथ निरीक्षक, सिविल डिप्लोमा, स्नातक, आकर्षक युवक हेतु स्नातक, अति सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. रेलवे में कार्यरत को वरीयता. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 7122, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय, स्वर्णकार, 26, 157, 2,500/-, उ.प्र. सरकार सेवारत, इंस्ट्रूमेंट तकनीशियन हेतु सुंदर, सजातीय, शिक्षित कन्या चाहिए. सेवारत को वरीयता. लिखें : वि.नं. 7123, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सारस्वत ब्राह्मण, पंजाबी, 25, 158, 2,500/-, उ.प्र. सरकार सेवारत हेतु शिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 7124, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 165 सें.मी., एम.काम., बीसा अग्रवाल, सिंघल गोत्र, मध्य प्रदेश निवासी, निजी व्यवसाय में कार्यरत, उच्च चार अंकीय आय, युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. लिखें : वि.नं. 7125, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन युवक, 27, 157 सें.मी., एम.ए., संगीत शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय (पंजाब में), वेतन 1,700/-, हेतु शिक्षित कन्या चाहिए. मामूली विकलांग, निस्संतान तलाकशुदा, विधवाएं भी, जाति, दहेज नहीं. लिखें : वि.नं. 7126, सरिता, नई दिल्ली-110055.

केंद्रीय सेवारत, 27, 168, 1,600/-, एम.ए., शाक्य कुलीन नेत्रहीन युवक हेतु मृदुभाषी, विचारशील, साक्षर वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 7127, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, 35, 180, 2,500/-, बी.ए., एलएल.बी., हरियाणा सरकार में सेवारत. स्थायी संपत्ति, हरियाण[illegible]तु वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7128, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा, 2,600/-, 35 वर्षीय, स्नातकोत्तर, माध्यमिक शिक्षक हेतु दहेज, बंधनादि मुक्त, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि.नं. 7129, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, 28, 175, 5,000/-, उत्तरप्रदेशीय, व्यापारी/मोटर मैकेनिक, को दहेज-विरोधी, सुशिक्षित कन्या चाहिए. सैनिक परिवारों को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 7130, सरिता, नई दिल्ली-110055.

[illegible] वर्षीय, विधुर चार [illegible] लड़की, 15, 13, 9, लड़का 11 वर्ष, लखनऊ निवासी, निर्व्यसनी, संभ्रांत परिवार, निजी आवास, कार, टेलीफोन, व्यवसायी, आय पांच अंकीय, हेतु घरे[illegible] गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी चाहिए. कुंआरी, निस्संतान विधवा, तलाकशुदा, संतानोत्पत्ति असमर्थ तथा भविष्य में संतान अनिच्छुक चाहिए. प्राथमिकता संतानोत्पत्ति असमर्थ तथा भविष्य में संतान अनिच्छुक को/दहेज, जातिबंधन नहीं, निस्संकोच लिखें : वि.नं. 7131, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 167 सें.मी., अनुसूचित जाति, मासिक आय चार अंकों में, विदेश में कार्यरत, विधुर हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, स्टाफ नर्स, अध्यापिका, सरकारी नौकरीशुदा, 30-35 वर्ष तक की विधवा, निस्संतान तलाकशुदा, बच्चों में रुचि रखने वाली सजातीय ही जीवनसंगिनी चाहिए. दिल्ली, राजस्थान, हरियाणावासी को प्राथमिकता. लिखें : THE ADVERTISER, P.O. BOX-35790, JALA[illegible] B.B. ALI, SULTANATE OF OMAN.

क्षत्रिय राजपूत (ठाकुर), बिहारवासी, [illegible] वर्षीय, स्नातक, साइंस एवं ला, आकर्षक, गेहुआं [illegible] 167 सें.मी., सरकारी पदाधिकारी, मासिक आय 6,800/-, शहर एवं देहात में मकान, जमीन, [illegible] पूर्व पत्नी की अक्षमता के चलते निस्संतान विधुर [illegible] सजातीय, सुंदर, सुशील, शिक्षित, पारिवारिक, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेजरहित, [illegible] साधारण विवाह माल्यार्पण से मंदिर में, प्रथम बार [illegible] पूर्ण विवरण सहित लिखें : विज्ञापन उत्तम चयन [illegible] लिखें : वि.नं. 7132, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 167, बंसल, रूपवान, गोरे, बी.एस[illegible], एलएल.बी., लियो प्रेसीडेंट, तीन फैक्ट्रियां, [illegible] फार्म, प्लाट, दुकान, कोठी, कारें, आयकर दाता [illegible] वास्तविक सुंदर, गोरी कन्या. लिखें : वि.नं. 71[illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, 164 सें.मी., ब्राह्मण, मैट्रिक [illegible] बेरोजगार, सुंदर, स्वस्थ युवक हेतु कन्या [illegible] अभिभावक रोजगार में नियोजित [illegible] घरजंवाई बनना स्वीकार्य, शीघ्र विवाह, जाति [illegible] नहीं, यदि आवश्यक समझें तो अदालती विवाह संभव/युवक स्वयं निर्णायक, विधवा, तलाकशुदा [illegible] स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 7134, सरिता, [illegible] दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 28½, दिल्ली में अपना मकान, दुका[illegible] स्नातक, 3,500/-, राजकीय कर्मचारी, निस्संतान तलाकशुदा, हेतु केवल सुशील, स्वस्थ वधू. आप[illegible] सहमत चाहिए. जातिबंधन नहीं. अदालती विवाह स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 7135, सरिता, [illegible] दिल्ली-110055.

23, 165 सें.मी., बी.ई., मेकेनिकल, संभ्रांत, शिक्षित परिवारीय, श्वेतांबर जैन, [illegible]

शरि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113331

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar